श्रीगणेशाय नमः

महाभारत भाषा

अश्वमेध पर्व

जिसमें

श्रीकृष्णचन्द्रके उपदेशसे अर्जुन व भीमसेन व नकुल व सहदेवको चारों दिशाओंमें जाकर सम्पूर्ण राजाओंको युद्धमें पराजयकरना और अश्वमेध करनेकेलिये द्रव्यलाना और कृष्णचन्द्र व भीमसेन व अर्जुनको जरासन्धके स्थानपर जाकर उससे युद्धदान मांगना और भीमसेनसे युद्धहोना पश्चात् राजा युधिष्ठिर को अश्वमेध यज्ञ करना इत्यादि कथायें वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा

जनवरी सन् १८८६ ई०

पहलीबार ६००

महाभारतों की फ़ेहरिस्त ॥

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

—※—

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै वरन बहुधालोग इस विचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदबताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससेछूट नहींगई मानोयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० वर्षकेबीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ीथे परनहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेख़ाने में छपी थी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारख़ानेकादस्तूर रहै ॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़ेहरफ़ों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै ॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसार अलग२भी मिलतेहैं ॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) बनपर्व्व ॥

दूसरेभागमें (४)विराटपर्व्व(५)उद्योगपर्व्व(६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व ॥

तीसरेभागमें (८)कर्णपर्व्व(९)शल्यपर्व्व(१०)सौप्तिकपर्व्व (११) योषिक व विशोकपर्व्व (१२) स्त्रीपर्व्व (१३) शान्तिपर्व्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में(१४)शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व्व(१५) आश्रमबासिकपर्व्व(१६) मुसलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व॥

अथ महाभारत भाषा अश्वमेधका सूचीपत्र प्रारम्भः ॥

—※—

अश्वमेध भाषाका सूचीपत्र ।

इतिमहाभारत भाषा अश्वमेध का सूचीपत्र समाप्त ॥
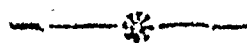
—— ※ ——

महाभारतभाषा अश्वमेधपर्व्व ॥

—— ✻ ——

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रविम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंवन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमंजुलअश्वमेध भाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ अश्वमेधपर्वप्रारम्भः ॥

नारायणको अर्थात् पुरीरूपशरीरोंमें निवास करनेवाले चिदा-त्माको नरोंमें उत्तमनरको औरसरस्वतीदेवीको अर्थात् तीनोंस्वरूप जीव ईश्वर और ब्रह्मको प्रकट करने वाली देवीको नमस्कारकरके उसके जयनाम महाभारतको अर्थात् वेद और स्मृतियों के सारको कीर्त्तनकरे १ अश्विनीकुमारोंकी प्रशंसाकेपीछे अष्टावक्रकेआख्या-नमें वेदान्त विद्याको संक्षेपसे बर्णन किया सनत सुजातिमें उसकी टीकाकरी और गीतामें उसको पूरापूरा बर्णन किया मोक्ष धर्म में नानाप्रकारके इतिहासोंसे आत्म तत्त्वको बर्णन किया फिर जिज्ञा-

सूके चित्तकी पवित्रता के लिये उसपर कृपाकरके जप दानादिक बर्णन किये जहांपर बड़े भारी लाभ और बैराग्य उदय होनेके निमित्त कौरवोंका नाशबर्णन कियाहै अब इस पर्व में तीन आख्यानों से वेदान्त बिद्याका बर्णन करतेहैं वह आख्यानयहहैं प्रथम सम्बर्त्त स्मृति दूसरे श्रीकृष्ण और युधिष्ठिरकीवार्त्तालाप तीसरे श्रीकृष्ण अर्जुनका प्रश्नोत्तर इनमें से प्रथम में काशीजी के मध्यमें मरनेकी मुक्ति प्रकट करेंगे कि ईश्वरके पूजनादि धर्मोंसे धनको पाकर चित्तकी पवित्रताके अर्थ यज्ञकरना चाहिये दूसरे आख्यानमें शास्त्रार्थबर्णन करेंगे और तीसरे में उसकी टीका करेंगे इसके पीछे उञ्छवृत्ती उत्तंक आदिक आख्यानों से ज्ञानकी उपकारी गुरुसेवाके माहात्म्य और हिन्सात्मक यज्ञादिकी निन्दा आदिक को वर्णन करेंगे बैशंपायन बोले कि व्याकुल चित्त महाबाहु युधिष्ठिर उस जलदानादिक्रियासे निवृत्तहो राजाधृतराष्ट्रको आगे करके जल से बाहर निकले २ अश्रुपातों से व्याकुलनेत्रवाला बीर युधिष्ठिर निकलकर गंगाके किनारे पर ऐसेगिरपड़ा जैसेकि बधिक के हाथसे घायल होकर हाथी गिरपड़ताहै ३ श्रीकृष्णजी की प्रेरणा से भीमसेन ने उस पीड़ामान युधिष्ठिर को पकड़ लिया और शत्रुओंकी सेनाके पीड़ादेने वाले श्रीकृष्णजी ने युधिष्ठिर से कहा कि तुम इसप्रकार पीड़ा न करो ४ हेराजा सबराजाओंने उस धर्म पुत्र युधिष्ठिर को पीड़ित पृथ्वीपर गिराहुआ बारंबार श्वासोंका लेनेवाला देखा ५ फिर पुत्रोंके शोकसे पीड़ामान बड़े ज्ञानी बुद्धि रूपनेत्र रखने वाले राजाधृतराष्ट्र नेयुधिष्ठिरसे यह बचनकहा ६ कि हेकौरव्य कुन्तीके पुत्र उठो और करनेके योग्य कर्मोंको निस्सन्देह होकर करो तुम ने इसपृथ्वीको क्षत्रीधर्मसे बिजय किया है ७ हे धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर तुमभाइयों और सुहृदों समेत इस पृथ्वीकोभोगो मैं तेरेशोचके योग्य किसीबातको नहीं देखताहूं ८ हेमहीपति मुझको और गान्धारीको शोचकरना उचितहै क्योंकि जिनके सौ पुत्र ऐसे नाश होगये जैसे कि स्वप्न का पायाहुआ धननाश होजाता है मैं

दुर्बुद्धी उसवृद्धिचाहनेवाले महात्मा बिदुरजीके उनबचनोंको जिनके अर्थ और आशय बहुत बड़ेथे न सुनकर इनदुःखोंकोपारहाहूं ६।१० दिव्यदर्शन धर्मात्मा बिदुरने जो मुझसे कहाथा कि तेरा सबकुल दुर्योधनके अपराधसे नाशको प्राप्तहोगा ११ हे सूक्ष्म दर्शी राजा जो तू अपनेकुलकी कुशल चाहताहै तो मेरे बचनको कर कि इस दुर्बुद्धी अभागे राजादुर्य्योधनको त्यागकरना योग्यहै १२ कर्ण और शकुनीको तुमकभीभी मतदेखो और इन दुराचारियोंके अत्यन्त द्यूत कोउनके अपवादों समेत रोको १३ धर्मात्मा राजायुधिष्ठिरको राज्याभिषेक कराओ वह जितेन्द्री होकर इस पृथ्वीको पालन करेगा१४ और जो तुम इस कुन्तीके पुत्र राजायुधिष्ठिरको नहीं चाहतेहो तो मेधीभूत होकर तुम आपही राज्यकोलो १५ हे राजा भाइयोंसमेत सब बिरादरीके लोग तुझ सबजीवमात्रों में समान कर्म करनेवाले के पीछे अपनी अपनी जीविका पूर्व्वक निर्वाहकरेंगे १६ हे कुन्तीके पुत्र उस दूरदर्शी बिदुरके बचनोंको तिरस्कार करके मैं पापी दुर्य्योधनकी बुद्धिके अनुसार कर्म करनेवाला हुआ १७ मैंने उस बड़े विद्वान् दूरदर्शीके वचनोंको न सुनकर और बड़े दुःख रूप तुझको पाकर शोक समुद्रमें डूबाहूं १८ हे राजा युधिष्ठिर अब तेरे दोनों पिता माता वृद्धहैं हम दोनों दुखियाओंको देखो और तुमको इस स्थानपर शोचकरना न चाहिये १९ ॥

इति श्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि राजाधृतराष्ट्र से इसप्रकार वैराग्य प्राप्तहोनेके सिद्ध करनेकी बातोंको सुनकर वह बुद्धिमान् युधिष्ठिर मौन होगया इसके पीछे केशवजीने उससे कहा १ कि हे राजामनसे किया अत्यन्त शोक उसके पूर्व्व मरेहुये पितामहादिकों को दुःख देताहै २ इस हेतुसे पूर्ण दक्षिणावाले नाना प्रकारके अनेक यज्ञोंसे पूजनकरो और अमृतसे देवताओंको तृप्त करके स्वधासे

पितरों को तृप्त करो ३ खानपान की वस्तुवों से अतिथियों को अकिंचन महात्माओं को और अन्य लोगों को अभीष्टदानों से तृप्त करो तुमने जाननेके योग्यकोजाना और करनेके योग्यको भी किया ४ और श्री गंगाजी के पुत्र भीष्मपितामह, व्यास, नारद और बिदुरजीसे सब राजधर्मोंको भी सुना ५ तुम अज्ञानोंकी इस रीति पर कर्म करनेको योग्य नहींहो अपने बाप दादोंके चलन रीतिपर नियत होकर राजधर्मके भारको अपने ऊपर धारणकरो ६ उत्तम कीर्तिसे युक्त क्षत्रियोंके समूह निस्सन्देह स्वर्गको गये और शूर बीरोंमेंसेभी यहांयुद्धमें कोईपराङ्मुखनहींहुये ७ इससे हे महाराज आप शोकको दूरकरो यह ऐसाही होनेवालाथा जो इस युद्धमें मारे गये उनको तुम फिर किसी प्रकारसे भी नहीं देख सक्के ८ महातेजस्वी गोविन्दजी युधिष्ठिर से इतना कहकर मौन हुये तब उस युधिष्ठिर ने उनसे कहा ९ कि हे गोविन्दजी मुझ में आपकी जो प्रीति है वह मुझ को ज्ञात है आप प्रीति और शुभचिन्तकता से सदैव मुझपर करुणा पूर्वक दया करतेहो १० हे श्रीमान् चक्र गदाधारी यादव नन्दन मेरा सब प्रकार का उत्तम कल्याण आपहीके करनेसे हुआहै और होगा ११ आप अपनी प्रसन्नतासेमुझ को तपोबन में जानेकी आज्ञा दो क्योंकि मैं पितामह को मारकर शांतीको नहींपाताहूं १२ युद्धोंमें पराङ्मुख न होनेवाले पुरुषोत्तम कर्णको मारकर शान्ती कोनहीं देखताहूं हे जनार्दनजी जिसकर्मके द्वारा इन सब पापोंसे मैं छूटजाऊं १३ उसकोकर्मसेहीकरो जिससे कि मेराचित्त पवित्रहोजाय तब महाधर्मज्ञतेजस्वी बिश्वासदेनेवाले ब्यासजीने उस इसप्रकार कहनेवाले १४ राजायुधिष्ठिरसे यह सार्थक और कल्याणकारी बचन कहा कि हेतात तेरी बुद्धि ठीकनहीं है फिर तू अपनी बालकपनेकी बुद्धिसे मोहको पाताहै १५ कैसी२ मूर्त्ति और चेष्टावाले हमलोग तुझको बारंबार समझाते हैं वह क्षत्रीधर्म्म भी तुम जानते हो जिन्होंकी जीविका युद्ध से है १६ इसप्रकार के कर्म करनेवाले राजामानसी शोकों में नहीं फंसते हैं

और जैसेप्रकार के सब मोक्षधर्म हैं उन सबप्रकारों को भी तुमने सुनाहै १७ मैंने तेरी इच्छासे उत्पन्न होनेवाले अनेक सन्देह भी वारंबार निवृत्त किये निश्चय करके तू श्रद्धासे रहित दुर्बुद्धी और स्मरण शक्ती से बिहीनहै १८ हे निष्पाप तू ऐसामतहो ऐसाअज्ञानी होना तुमको उचित नहीं है सबप्रकार के प्रायश्चित्तों को भी तुम जानतेहो १९ तुमने सब राजधर्म और दानधर्म सुने हे भरतबंशी सबधर्मोंके ज्ञाता और शास्त्रोंमें कुशल होकर भी तुम अज्ञानसे कैसे मोहित होरहे हो २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

व्यासजी बोले कि हे युधिष्ठिर मैं जानताहूं कि तेरी बुद्धि पूर्ण नहीं है कोई मनुष्य स्वतन्त्र होकर कर्म को नहीं करताहै १ ईश्वर की प्रेरणासे यह मनुका पुत्र मनुष्य शुभाशुभकर्मों को करता है इसमें क्या बातहै २ हे भरतवंशी जो तुम अपनेको पाप करनेवाला मानते हो इसस्थान में वह रीति सुनो जिससे कि पापसे छूटो ३ हे युधिष्ठिर जो मनुष्य पापोंको करतेहैं वह तप यज्ञ और दानोंकेद्वारा सदैव उससे छूटतेहैं ४ हे नरोत्तम राजा युधिष्ठिर पाप करनेवाले लोग यज्ञ तप और दानसे पवित्र होतेहैं महात्मा देवता और असुर पुण्यके अर्थ यज्ञकर्मोंमें उपाय करतेहैं इसीहेतुसे यज्ञहीरक्षा का स्थानहै ५। ६ महात्मा देवता लोग यज्ञोंसेही विजयीहुये इस हेतुसे यज्ञादिक करनेवाले देवताओंने दानवोंको पराजयकिया ७ हे भरतवंशी तुम राजसूय, अश्वमेध, सर्वमेध और नरमेध यज्ञको करो ८ नानाप्रकारकी दक्षिणा रखनेवाले बहुतसी भोजन की वस्तु और प्रयोजनके धनसे संयुक्त अश्वमेध यज्ञसे ऐसे पूजनकरो जैसे कि दशरथके पुत्र श्री रामचन्द्रजीने कियाथा ९ और जैसे कि शकुन्तलाके पुत्र संपूर्ण पृथ्वी के राजा महापराक्रमी तेरे पितामह राजा भरतने कियाथा १० युधिष्ठिरनेकहा कि निस्सन्देह अश्वमेध

यज्ञ राजाओंको पवित्र करताहै परन्तु जो मेरे चित्तका प्रयोजन है उसको आप सुननेको योग्यहो ११ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ज्ञातिवालों के इस बड़े भारी बिनाशको करके थोड़ेदानके भी करनेको समर्थ नहींहूं क्योंकि मेरे पास धन नहींहै १२ और मैं इन अन्त ज्वरवाले ताड़ित दुःखोंमें बर्त्तमान अनाथ और बालक राजाओंसे धनमांगने में उत्साह नहीं करताहूं १३ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मैं आप इस संपूर्ण पृथ्वीके लोगोंकानाश करके शोकसे पूर्ण होकर यज्ञके अर्थ किस प्रकारसे राज्यके अंशको प्राप्त करसक्ताहूं १४ हे श्रेष्ठ मुनि यह पृथ्वी और पृथ्वीभर के सब राजालोग दुर्योधन के अपराधोंसे हमको अपकीर्त्ति में डालकर नाश होगये १५ दुर्योधनने राज्यके करोंके लेनेसे सब पृथ्वीको धनसे रहित करदिया और उस दुर्बुद्धी धृतराष्ट्रके पुत्रका भी धनागार खाली होगया १६ इस यज्ञमें पृथ्वी का दक्षिणामें देना यह प्रथम बिधिहै यह बुद्धमानोंसे देखीहुईहै शेषरीति बनाई हुईहै १७ हे तपोधन मैं उस बनाई रीतिको नहीं करना चाहताहूं हे भगवान् आप इस स्थानपर मेरे सलाहकार होनेको योग्यहो राजा युधिष्ठिरके इनबचनोंको सुनकर ब्यासजीने एकमुहूर्त्त बिचारकर यह बचन कहा १८।१९ हे राजा यह खाली धनागारभी धनसे पूर्ण होगा हिमालयपर्व्वत में नियत धन बर्त्त-मानहै २० महात्मा मरुत्के यज्ञमें ब्राह्मणोंसे त्याग कियाहुआहै हे कुन्तीके पुत्र उसको लावो वही बहुतहोगा २१ युधिष्ठिर ने कहा कि हे बक्ताओंमें श्रेष्ठ वह धन राजा मरुत्के यज्ञमें कैसे इकट्ठा हुआ था और वहराजा किससमय में हुआ था २२ ब्यासजी बोले कि हे राजा जो तुमको सुननेकी इच्छा है तो उस मरुत्का वह वृत्तान्त सुनो कि जिससमय में वह बड़ा पराक्रमी और अति धनाढ्य राजा हुआथा २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिसंवर्त्तमरुत्तीयेतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

—※—

चौथा अध्याय॥

युधिष्ठिरबोले कि हे निष्पाप व्यासजी उस धर्मज्ञ राजर्षिमरुत् की कथाको मैं सुनाचाहताहूं उसको आप कृपाकरके वर्णनकीजिये१ व्यासजी बोले हे तात सतयुग में दण्डधारी प्रभुमनुजी हुये उनका पुत्र महाबाहु प्रसन्धी, नामसे विख्यात हुआ २ प्रसन्धी का पुत्र क्षुप हुआ क्षुपका पुत्र इक्ष्वाकु हुआ ३ हे राजा उसके बड़े धर्मात्मा सौ पुत्र हुये प्रभु इक्ष्वाकुने उन सबको देशोंका राजा किया ४ उन सबमें बड़ा पुत्र विंशनाम बड़े धनुषधारियोंका रूपथा हे भरतवंशी उस विन्शकापुत्र कल्याणरूप विविंश हुआ ५ हे राजा विविंशके पन्द्रह पुत्रहुये वह सब धनुषविद्यामें पराक्रमी वेद ब्राह्मणोंकेरक्षक सत्यवक्ता ६ दान धर्ममें प्रवृत्त शान्तरूप और सदैव प्रिय मधुर-भाषीथे उनका बड़ाभाई खनीनेत्रनामथा उसनेउनसबको पीड़ामान किया ७ पराक्रमी खनीनेत्र अकंटक राज्यको विजय करके उसकी रक्षामें समर्थनहींहुआ और प्रजानेउससे सुख चैन नहीं पाया ८ हे राजेन्द्र राज्यके अधिकारी नौकरोंने उसको अधिकार से रहितकरके उसके पुत्र सुवर्चसनामको उस राज्यपर नियतकरनेकोअभिषेक क-राया तब सब बहुत प्रसन्न हुये ९ उसने अपने पिताकेविपरीत कर्म औरराज्यसे पृथक्होनेको देखकर बड़ी सावधानीसेसबप्रजाके वृद्धि की इच्छासे राज्यकर्म किया १० वह वेदब्राह्मणोंका रक्षक सत्य-वक्ताबाहरभीतरसेपवित्र औरबाह्याभ्यन्तरसे जितेन्द्रीथा उस सदैव धर्मकेकरनेवाले बुद्धिमान् राजासे अत्यंतप्रसन्न हुई ११ उस धर्मा-भ्यासी राजाकाधनागार धनसेरहितहुआ सवारीनहींरहीं और जिन राजाओंकादेश उसके राज्यकी सीमासे मिलाहुआथा उन्होंने उस धनसेरहित धनागारवालेराजाको चारोंओरसे पीड़ामानकिया १२ क्षन घोड़े और सवारियोंसेरहित और बहुतसे शत्रुओंसेपीड़ित उस राजाने राज्यके अधिकारी सेवकों समेत बड़ी पीड़ाको पाया १३ हे युधिष्ठिर वह शत्रुसेनाकेमरनेपर भी उसके मारनेको समर्थनहींहुये

क्योंकि वह राजा नेकचलन और सदैव धर्मका करनेवालाथा जब इस राजाने अपने पुरके लोगों समेत बड़ीपीड़ाकोपाया तब उसने अपनी प्रजासे कर मांगा उससे सेना प्रकट हुई १४ । १५ और उस सेनाके द्वारा सब शत्रुओंको बिजयकिया हे राजा इसीहेतुसे वह करंधमनामसे प्रसिद्धहुआ १६ उस करंधमकापुत्र त्रेतायुगकेप्रारंभ मेंहुआ जो इन्द्रकेसमानधनी और देवताओंसे भी कठिनतासे बिजय करनेकेयोग्यथा १७ तब सब राजा उसके आधीन होगये वह अपने पराक्रम और नेकचलन से उन सबका महाराजा होगया १८ वह अविक्षन्नामधर्मात्मा शूरतामेंइन्द्रके समानहुआ धर्ममेंप्रवृत्त यज्ञोंका अभ्यासी धैर्य्यवान् जितेन्द्री १९ तेजसे सूर्यकेसमान क्षमामें पृथ्वीके समान बुद्धिमें बृहस्पतिजीकेसमान औरमनकी स्थिरतामें हिमालय पर्व्वतके समानथा २० उस संपूर्ण पृथ्वीके राजाने मन वाणी कर्म्मसे बाह्याभ्यन्तरकी जितेन्द्रियतासे प्रजाकेमनको प्रसन्नकिया २१ जिस प्रभुनें बुद्धिके अनुसार सौअश्वमेध यज्ञोंसेपूजनकिया और आपमहा-ज्ञानी अंगिरा ऋषिने जिसको यज्ञकराया २२ उसकापुत्र मरुत्नाम धर्मज्ञ कीर्त्तिमान जो चक्रवर्तीराजाथा उसनेभी अपनेगुणोंसेपिताको उल्लंघनकिया अर्थात् पितासे भी अधिकहुआ २३ दशहजार हाथीके समान पराक्रमी साक्षात् दूसरे बिष्णुके समानथा उस पूजनकरनेके अभिलाषी धर्म्मात्मा ने स्वर्णमयी २४ और रजतमयी हजारों पात्र बनवाये और हिमालय पर्वतके उत्तरीयपक्षमें मेरुपर्वतकोपाकर २५ जिसस्थानपर कि बहुत बड़ा सुवर्णका वृक्षहै वहां यज्ञकर्म करनेका प्रारंभ किया इसके अनन्तर कुंड, पात्र, पिठर और आसनोंको २६ जितनेसुबर्ण कर्त्ताओंनेबनाया उनकीसंख्या असंख्यहै उसीकेसन्मुख यज्ञका बाढ़हुआ २७ वहां उस संपूर्ण संसारकेस्वामी धर्मात्माराजा मरुत्ने सब राजाओं समेत बिधिपूर्व्वक यज्ञकिया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेअश्वमेधिकेपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

—※—

पांचवां अध्याय॥

युधिष्ठिरनेकहा कि हे बक्ताओंमें श्रेष्ठ व्यासजी वह राजा कैसा पराक्रमीहुआ और किसप्रकार बड़ा धनवान्हुआ १ हेभगवन् वह धन अब कहां वर्त्तमानहै और हे तपोधन वह हमको किसप्रकारसे मिलसक्ताहै २व्यासजीवोले हेतात दक्षिणप्रजापतिकीसन्तानमेंबहुत से देवता और असुरहुये उन्होंने परस्परमें ईर्षाकरी ३ उसीप्रकार अंगिराऋषिकेदोपुत्रहुये जो ब्रतोंमेंसमानथे उनमेंएकतो बड़े तेजस्वी बृहस्पतिजी और दूसरेबड़ेतपोधन संवर्त्त थे ४ हे राजापरस्पर ईर्षा करनेवाले वह दोनों पृथक् २ होगये उन बृहस्पतिजीने सम्वर्त्त को बारंबार कष्टदिया ५ हे भरतबंशी बड़े भाईसे बारंबार कष्टपानेवाले सम्वर्त्त नेसंसारी पदार्थोंको छोड़ मनसे उदासहो दिगम्बरहोके बन में बासकरनाअंगीकार किया ६ इन्द्रने भी सबअसुरोंको बिजयकर लोकोंमें इन्द्रकीपदवीको पाकर फिर ७ अंगिराऋषिके बड़े पुत्र वेद पाठियोंमें श्रेष्ठ बृहस्पतिजीको अपना पुरोहित किया पूर्वसमय में राजा करन्धम अंगिराऋषिका यजमानथा ८ वह राजा लोकमें चा-लचलन और पराक्रमसे अनुपम इन्द्रके समान तेजस्वी धर्मात्मा और तेजव्रत रखनेवालाथा ९ हे राजा जिसकी सवारी बड़े २ योधा और नानाप्रकारके उत्तम मित्र औरबहुमूल्यवालेपलंग यह सब१० ध्यान और सुख वायु से उत्पन्न हुये उस राजाने अपने गुणों से सब राजाओंको अपने स्वाधीन किया ११ और यथेच्छ समयतक जीवता रहकर इसी शरीर समेत स्वर्गको गया उसका पुत्र ययाति के समान महाधर्मज्ञ १२ उदक्षिण नाम हुआ उस शत्रुबिजयीने पृथ्वीको अपने आधीनकिया वह राजा पराक्रम और गुणोंसे पिता केही समान हुआ १३ उसका पुत्र इन्द्रके समान पराक्रमी मरुत् नामहुआ चतुस्समुद्रान्त पृथ्वी उसकी आज्ञावर्त्तीहुई १४ हे पांडु-नन्दन वह राजा सदैव देवराजसे ईर्षाकिया करतेहैं और इन्द्रभी मरुत्के साथ ईर्षा करताथा १५ वह पृथ्वीभरका राजा मरुत् बड़ा

पवित्र और गुणवान्‌ तथा उपाय करनेवाला इन्द्र भी जिसको न मारसका १६ मारनेमें असमर्थ होकर उस इन्द्रने देवताओं समेत वृहस्पतिजीको बुलाकर यहवचनकहा १७ हे वृहस्पति जो मेरा प्रिय चाहतेहो तो तुम किसी दशामें भी राजामरुत्‌को श्राद्ध और यज्ञमत्त करावो १८ हे वृहस्पतिजी मुझ अकेलेनेही तीनोंलोकमें देवताओंके इन्द्र पदको पाया और मरुत्‌ केवल पृथ्वीका ही राजा है १९ हे ब्राह्मण तुम देवता के राजा अमृत्य अमरनाम इन्द्रको यज्ञ कराके निश्शंक होकर मरण धर्म्मवाले मरुत्‌को कैसे यज्ञ कराते हो २० आपकाकल्याणहोय आपकैतो मुझीकोयजमानबनावो अथवा राजा मरुत्‌हीको बनावो—अथवा मरुत्तकोत्यागकर मुझीको सुखसेसेवन करो २१ हे कौरव्य इन्द्रके इस वचनको सुनकर वृहस्पतिजीने एक मुहूर्त्त भर बिचारांश करके इन्द्रसेकहा २२ कि तुम जीवधारियोंके स्वामीहो और सब सृष्टि तुममें नियतहै तुम नमुचि विश्वरूप और बलिको मारनेवालेहो २३ तुम अकेले बीरने देवताओंकी श्रेष्ठ लक्ष्मी को प्राप्त किया हे बलिके मारनेवाले तुम सदैवपृथ्वीकी सब सृष्टि और स्वर्गका पालन करतेहो २४ हे देवताओंके ईश्वर इन्द्र में आपका पुरोहितहोकर किसरीतिसे मनुष्य मरुत्‌को यज्ञ कराऊं २५ हे देवेन्द्र तुम निश्चय रक्खो मैं कभी भी मनुष्यके यज्ञ सम्बन्धी स्रुवापात्रको नहीं पकडूंगा २६ चाहैं अग्नि शीतल होजाय पृथ्वी चलायमान होकर सूर्य्यसे रहित होजाय परन्तु मैं सत्यतासे नहीं हटसक्ता २७ वैशंपायन बोले कि मत्सरता रहित वृहस्पति जी के इस वचन को सुनकर और उनकी बहुत प्रशंसा करके इन्द्र अपने भवनमें गया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

व्यासजीबोले कि इस स्थानपर मैं उसप्राचीन इतिहासको भी कहताहूं जिसमें कि बुद्धिमान्‌ मरुत और वृहस्पतिजीका प्रश्नोत्तर

है १ राजा मरुत्ने उस नियमको जोकि देवराजने बृहस्पतिजीके साथ कियाथा सुनकर श्रेष्ठ यज्ञकी तैयारीकरी २ उस वार्त्तालाप में सावधान करन्धम के पौत्र मरुत्ने चित्तसे यज्ञका संकल्पकर बृहस्पतिजीके पासजाकर यह वचन कहा हे तपोधन भगवान् बृहस्पतिजी मैंने पूर्व्वसमय में जो आपसे मिलकर आपहीके वचन से यज्ञ करने की इच्छाकरीथी ३। ४ मैं उसको करना चाहताहूं मैंने यज्ञकी सब सामग्री इकट्ठी करलीहै और हे साधु मैं आपका यजमानहूं इसहेतु से आप मेरी यज्ञशाला में चलो और यज्ञकरावो ५ बृहस्पतिजी बोले हे पृथ्वीपति मैं तुमको यज्ञ कराना नहीं चाहताहूं क्योंकि देवराज इन्द्रने मुझको पुरोहित बनायाहै और मैंने उससे प्रतिज्ञा करलीहै ६ मरुत्ने कहा कि मैं आपके पिताका क्षेत्रहूं आपकी बड़ी प्रतिष्ठा करताहूं और आपका यजमान हूं जैसा कि मैं आपको चाहताहूं उसीप्रकार आप भी मुझ को चाहो ७ बृहस्पतिजी बोले कि मैं देवताको यज्ञकराके मनुष्य को कैसे यज्ञकरा सक्ताहूं हे मरुत् तुमजावो अथवा बैठो मैं यज्ञ नहीं कराऊंगा ८ मैंतो आपको यज्ञनहीं कराऊंगा हे महाबाहो आप जिसको चाहो उसको अपना उपाध्याय बनालो वही तेरे यज्ञको करेगा ९ व्यासजी बोले कि बृहस्पतिजीके ऐसे २ वचनोंको सुनकर वह राजा मरुत् बड़ालज्जायुक्त हुआ और व्याकुलचित्त होकर वहांसे लौटा दैवयोग से मार्गमें उसने नारदजीको देखा १० उनके दर्शनकर उनसे बिधिपूर्व्वक मिल हाथ जोड़कर सन्मुख खड़ाहुआ तब नारदजीने उससे कहा कि ११ हे राजर्षि तू अधिक प्रसन्न नहींहै हे निष्पाप तेरा कल्याण पूर्व्वक कुशल मंगलहै तू कहां गयाथा और किसकारण से तुझको यह अप्रसन्नता प्राप्तहुई १२ हे राजा तू मेरे कहने को योग्य अपने वृत्तान्तको कह हे श्रेष्ठ मैं सबप्रकारकी रीतिसे तेरे दुःखको दूरकरूंगा १३ नारदजीके इसप्रकारके वचन को सुनकर राजा मरुत्ने उपाध्यायकी ओरसे सबप्रकारकी निराशाको वर्णन किया १४ मरुत्ने कहा कि मैं यज्ञके अर्थ ऋत्विज

देखने के लिये अंगिराबंशी देवगुरु बृहस्पतिजी के पास गया था उसने मुझ को अप्रसन्न करदिया १५ अब उत्तर पाने से मैं अपना जीवननहीं चाहताहूं हे नारदजी मुझ को गुरूने त्यागकर दोषी ठहराया है १६ ब्यासजी बोले कि हे महाराज राजा मरुत् के इसप्रकारबचनों को सुनकर अपने बचनोंही से सजीव करते हुये नारदजीने उस राजा मरुत् को उत्तरदिया १७ हे राजा अंगिराका पुत्र धर्मात्मादिगम्बरधारी संवर्त्त नाम सृष्टिको मोहित करता सब दिशाओं में घूमताहै १८ जो बृहस्पतिजी तुझ यजमान को नहीं चाहताहै तो तू उसके पासजा वह बड़ातेजस्वी प्रसन्नचित्त संवर्त्त तुझ को यज्ञ अच्छेप्रकार से करावेगा १९ मरुत् ने कहा कि हे बक्ताओंमें श्रेष्ठनारदजी मैं आपके इसबचनसे सजीव होगया अब आप यह बताइये कि मैं संवर्त्त को कहांजाकर खोजकरूं २० और उनकोमिलकर उनसे किसरीतिसे बार्त्तालापकरूं ऐसीयुक्ति बतला-इये कि जिससे वहभी मुझको नहींत्यागदे कदाचित् वहभीमुझको निषेध करदेंगे तोभी मेरा जीवना नहीं होसक्ता २१ नारदजी बोले हेमहाराज महेश्वरजीके दर्शनोंका अभिलाषी उन्मत्त रूपधारी वह सम्बर्त्त काशीपुरीमें सुखपूर्बक घूमताहै हे राजा उस काशीके द्वार को पाकर कहीं किसी मृतक शरीरकोरखदो उसको देखकर जोलौट जाय वही सम्बर्त्त है फिर जहां वह पराक्रमी संबर्त्त जाय वहां तुम भी उसके पीछे २ चलेजाना जब तुम उसको किसी एकान्तस्थानमें देखोतबहाथ जोड़कर उसकीशरणलो २२।२३।२४ जोकदाचित् वह तुझसे पूछे कि किसने तुमको मुझे बतायाहै तब तुम कहना कि हे सम्बर्त्त मुझकोनारदजीने तुमको बताया है २५ कदाचित् वह मेरे पीछे चलनेकी इच्छासे तुझको वार्त्तालापमें प्रवृत्तकरे तो तुम नि-स्सन्देह कहदेना कि नारदजी अग्निमें प्रवेशकरगये ब्यासजीबोले कि वह राजऋषि ऐसाही करूंगा यह कहता नारदजीका पूजनकर बिदाहोकर बाराणसीपुरीकोगया २६।२७ वहांपहुंचकर नारदजी के बचनोंको स्मरण करतेहुये उस बड़ेबुद्धिमान् राजाने ऋषिकी आज्ञा-

नुसार पुरीकेद्वारपरएकमृतक शरीरको स्थापित किया २८ सम्बर्त्त ब्राह्मण भी उसी समय उस द्वारपर आया और उसमृतक शरीरको देखकर अकस्मात् लौटा २६ वह राजा मरुत् उस लौटानेवाले को देखकर हाथजोड़ेहुये प्रार्थनाकरनेकी इच्छासे उस सम्वर्त्त केपीछे २ चला ३० उस ब्राह्मणने उस राजाको एकान्त स्थानमें देखकर धूल कीचरेत और थूकसे लिप्तकरदिया ३१ सम्वर्त्त के इसप्रकारअवज्ञासे दुःखित राजा हाथजोड़कर उसऋषिको प्रसन्न करताहुआ पीछे २ चला ३२ फिर वह थकाहुआ संवर्त्त लौटकर एक बड़े सघन वृक्षकी छाया को आश्रयलेकर उसके नीचे वैठगया ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

संवर्त्त ने कहा कि मुझको तैंनेकैसेजाना और मेरेपतेकोतुझेकिस ने वतायाहै जो तू मेरा प्रिय चाहताहै तो इस मुख्य वृत्तान्त को तुम मुझसेकहो १ तुझसत्यवक्ता के सबचित्तके मनोरथ प्राप्तहोंगे और मिथ्या वोलनेवालेका शिर विदीर्ण होजायगा २ मरुत् बोला कि मार्गमें जातेहुये नारदजीने आपको मुझेवतायाहै आप मेरे गुरू के पुत्रहो इसीहेतुसेतुममें मेरीवड़ीप्रीतिहै ३ संवर्त्त नेकहाकितुमने यह सत्य कहाहै वह नारदही मुझ कपटरूप धारीको जानते हैं सोतुम उनकोवतलाओ कि वह नारदजी अवकहांहैं ४ राजाने कहा किवह देवऋषियोंमें श्रेष्ठ नारदजी आपको मुझे वताकर और मुझे विदा करके अग्निमें प्रवेश करगये ५ व्यासजी बोले कि संवर्त्त ने राजाके इस बचनकोसुनकर बड़ेआनन्दको पाया और कहाकि मैंभीइसीप्र-कार इसके करनेको समर्थहूं ६ हेराजा इसकेपीछे बचनोंसे घुड़क कर उस उन्मत्त ब्राह्मणने दुखी होकर बारंबार यहबचन कहा ७ किमुझउन्मत्त अपने चित्तके अनुसार कर्मकरने वाले और ऐसे रूप वालेसे कैसेयज्ञ कराना उचितहै ८ मेराभाई बड़ासमर्थहोकर इन्द्र सेमिलाहुआहै और यज्ञ करानेमें बड़ाकर्म कर्त्ताहै तुम उससे अप-

ना यज्ञ कराओ ९ जोकिगृहस्थियोंके होमादिक कर्मऔर सबग्रह देवता आदिक स्थापननामकर्महैं उनकाज्ञाताहै और मेरायहशरीर बड़े भाईसे निन्दित होकर पुरोहिताईसे जुदाकिया गयाहै १० हे अविक्षतके पुत्रमैं उसअपने भाईकी आज्ञाकेबिना कभी किसीदशा मेंभी तुझको यज्ञनहीं करासक्ता वही बृहस्पति मेरा बड़ापूज्यहै ११ सोतुम बृहस्पतिजीके पासजाओ औरउससे पूछकरआओ इसकेपीछेजो तूयज्ञकराना चाहताहै तोमैं तुझको यज्ञकराऊंगा १२ मरुत् नेकहा कि हे सम्बर्त मैं प्रथम बृहस्पतिजीके पासगयाथा उसकावृत्तान्त आपसुनिये कि वह इन्द्रकोप्रसन्नताके निमित्तमुझको यजमान नहीं बनाया चाहते १३ वह कहते हैं किमैं देवताको यजमान बनाकर फिर मनुष्यको यज्ञनहीं कराऊंगा क्योंकि मुझको इन्द्रने निषेध करदियाहै कि मनुष्यको यज्ञमत कराओ १४ हे वेदपाठी वह देवराज सदैव मुझसे ईर्षाकिया करताहै इसीसे आपके भाई ने भी उससेप्रतिज्ञाकरलीहै किमैं मनुष्य को यज्ञ नहीं कराऊंगा १५ हे मुनियोंमें श्रेष्ठवह बृहस्पतिजीदेवराजकेपास स्थितहोकर मुझ प्रेम पूर्व्वक पास जानेवालेको यजमान करनानहीं चाहतेहैं १६ सोमैं आपके द्वारा अपने संपूर्ण धनसेभी यज्ञकरना चाहताहूं आपहीके गुणोंके द्वारामैं इन्द्रसेभी अधिकहुआ चाहताहूं १७ बिनाअपमान करनेकेबृहस्पतिजीने मुझ को यही उत्तर दियाहै हेब्रह्मन्इसीहेतुसे उनकेपास जानेको मैं इच्छापूर्व्वक उत्साह नहींकरता हूं १८ संबर्त ऋषिने कहाकि हे राजाजो तुममेरे सबमनकी इच्छाको करोगे तो तुमजैसा करना चाहतेहो वहसब निर्विघ्नतासे होगा १९ अब मैं केवल इसएकबात कोही शोचताहूं कि अत्यन्त क्रोधयुक्त बृहस्पति और इन्द्र मुझयाचकके द्वारा यज्ञ करानेवाले तुमको मुझसेविरुद्ध करावेंगे २० इसीमें मेरेचित्तकी दृढ़तान्यूनहोतीहै इससे निश्चय करके मेरे चित्तकी दृढ़ताको तुमकरो नहींतो मैं क्रोधयुक्त होकर बांधवोंसमेत तुझको भस्म करदूंगा २१ मरुत्ने कहा कि जबतक कि सूर्य्य प्रकाशको करताहै और पर्व्वतभी नियत हैं तबतकमैं लोकों

को न पाऊं जो मैं अपने प्यारे मित्रको त्यागकरूं २२ किसी समयमें भी श्रेष्ठ शुभबुद्धिको न पाऊं और विषयोंमें प्रवृत्तहोजाऊं जो अपने प्रियमित्रको त्यागकरूं २३ संवर्त्त ने कहा हे राजा मरुत् सब कर्मोंमें तेरी शुभ बुद्धिहोय इस प्रकारसे यज्ञ कराना मेरे हृदयमें भी वर्त्तमानहै २४ हे राजा मैं तेरे उत्तम धनको अविनाशी करूंगा जिसके द्वारा तू देवता गन्धर्वों समेत इन्द्रको तिरस्कारकरेगा २५ मेरी बुद्धि और धन अन्य यजमानोंमेंनहीं प्रवृत्तहै परन्तु अपनेभाई बृहस्पति और इन्द्र इन दोनोंकाअप्रिय करूंगा २६ निश्चय करके इन्द्रकेसाथमें तेरे समानता प्राप्तकराऊंगा और तेराअभीष्ट करूंगा यह तुझसे मैं सत्य २ ही कहताहूं २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

इस अध्यायमें प्रथमश्लोकसे तेंतीसश्लोकतकसुवर्णके इच्छावान् पुरुषका जपके योग्य स्तोत्रहै उसका ऋषि सम्वर्त्त है हिरण्यबाहु रुद्र देवताहै अनुष्टुप छन्दहै और सौनानहैं—

स्तोत्र

संवर्त्तउवाच ॥ गिरेर्हिमवतःपृष्ठे मुंजवान्नामपर्वतः । तप्यतेयत्र भगवांस्तपोनित्यमुमापतिः १ वनस्पतीनांमूलेषुशृंगेषुविषमेषुच । गुहासुशैलराजस्यरमतेसमयथासुखम् २ उमासहायोभगवान् यत्रनित्यंमहेश्वरः । आस्तेशूलीमहातेजानानाभूतगणावृतः ३ तत्ररुद्राश्च साध्याश्चविश्वेथवसवस्तथा । यमश्चवरुणश्चैवकुबेरश्चसहानुगः ४ भूतानिचपिशाचाश्चनासत्यावश्विनौतथा । गन्धर्वाप्सरसश्चैवयक्षा देवर्षयस्तथा५ आदित्यामरुतश्चैवयातुधानाश्चसर्वशः । उपासन्तेम हात्मानंवहुरूपमुमापतिम्६ रमतेभगवांस्तत्रकुबेरानुचरैस्सह । विकृतैर्विकृताकारैः क्रीडद्भिःपृथिवीपते ७ श्रियाज्वलन्दृश्यतेवै बालादित्यसमद्युतिः । नरूपंशक्यतेतस्य संस्थानंवाकदाचन ८ निर्देष्टुं प्राणिभिःकैश्चित्प्राकृतैर्मांसलोचनैः । नोष्णंनशिशिरंतत्रनवायुर्नचभा

स्कर: ९ नजराक्षुत्पिपासेवानमृत्युर्नभयंनृप । तस्यशैलस्यपार्श्वेषुसर्वे षुजयतांवर १० धातवोजातरूपस्यरुक्ममयःसवितुर्यथा । रक्ष्यन्तेतेकुबे रस्यसहायैरुद्यतायुधैः ११ चिकीर्षद्भिःप्रियंराजन् कुबेरस्यमहात्म नः । तस्मैभगवतेकृत्वानमःशर्वायवेधसे १२ रुद्रायशितिकंठायपुरु षायसुवर्चसे । कपर्द्दिनेकरालायहर्य्यक्षणेबरदायच १३ त्र्यक्षणेपूष्णो दंतभिदेवामनायशिवायच । याम्यायाव्यक्तरूपायसद्वृत्तेशंकरायच १४ क्षेम्यायहरिकेशायस्थाणवेपुरुषायच । हरिकेशायमुंडायकृशायोत्तार णायच १५ भास्करायसुतीर्थायदेवदेवायरंहसे । उष्णीषिणेसुवक्त्राय सहस्राक्षायमीढुषे १६ गिरिशायप्रशांतायपतयेचीरवाससे । बिल्वदं डायसिद्धायसर्वदंडधरायच १७ मृगव्याधायमहतेधन्विनेथभवाय च । वरायसौमवक्त्रायसिद्धमंत्रायचक्षुषे १८ हिरण्यबाहवेराजन्नुग्राय पतयेदिशाम् । लेलिहानायगोष्ठायसिद्धमंत्रायवृष्णये १९ पशूनां पतयेचैवभूतानांपतयेनमः । वृषायमातृभक्तायसेनायेमध्यमायच २० स्रुवहस्तायपतयेधन्विनेभार्गवायच । अजायकृष्णनेत्रायविरूपाक्षा यचैवहि २१ तीक्ष्णदंष्ट्रायतीक्ष्णायवैश्वानरमुखायच । महाद्युतयेनंगाय शर्वायपतयेदिशाम् २२ बिलोहितायदीप्ताय दीप्ताक्षायमहौजसे । ब सुरेतःसुवपुषे पृथवेकृत्तिवाससे २३ कपालमालिनेचैव सुवर्णमुकुटा यच । महादेवायकृष्णाय त्र्यंवकायानघायच २४ क्रोधनायानृशंसाय मृदवेवाहुशालिने । दंडिनेतप्ततपसे तथैवाक्रूरकर्मणे २५ सहस्रशि रसेचैव सहस्रचरणायच । नमःस्वधास्वरूपायबहुरूपायदंष्ट्रिणे २६ पिनाकिनंमहादेवं महायोगिनमव्ययम् । त्रिशूलहस्तंबरदं त्र्यंवकंभु वनेश्वरं २७ त्रिपुरघ्नंत्रिनयनंत्रिलोकेशंमहौजसम् । प्रभवंसर्वभू तानां धारणंधरणीधरम् २८ ईशानंशंकरंसर्वं शिवंबिश्वेश्वरंभवम् । उमापतिंपशुपतिं बिश्वरूपंमहेश्वरम् २९ बिरूपाक्षंदशभुजं दिव्य गोवृषभध्वजं । उग्रंस्थाणुंशिवंरौद्रंशर्वंगौरीशमीश्वरम् ३० शितिकंठ मजंशुक्रंपृथुंपृथुहरंबरम् । बिश्वरूपंबिरूपाक्षंबहुरूपमुमापतिम् ३१ प्रणम्यशिरसादेव मनंगांगहरंहरम् । शरण्यंशरणंपाहिमहादेवंचतु र्म्मुखम् ३२ एवंकृत्वानमस्तस्मै महादेवायरंहसे । महात्मनेक्षि

तिपते तत्सुवर्णमवाप्स्यसि ॥ इति सुवर्णपुरुष स्तोत्रं समाप्तम् ॥

अब इसका अर्थ लिखतेहैं ॥

सम्वर्त्त ने कहा कि हिमालय पर्व्वतकी पृष्ठपर मुंजमान नाम पर्व्वतहै जिसपर भगवान् शिवजी सदैव तपस्या किया करतेहैं १ वृक्षोंके मूल गिरिराजके शिखर गुफा और दुर्गम्य स्थानों में सुख पूर्व्वक रहतेहैं २ जहां अनेक प्रकारके भूतगणोंसे युक्त शूलधारी महातपस्वी भगवान् महेश्वरजी उमादेवी समेत सदैव निवास करतेहैं ३ वहां ग्यारह रुद्र साध्य गण विश्वेदेवा अष्टवसु यमराज वरुण कुबेर अपने साथियों समेत ४ भूत पिशाच अश्विनी कुमार गन्धर्व अप्सरा यक्ष देवऋषि ५ द्वादश सूर्य्य उनचास मरुत और सब प्रकारके यातुधान उस भवरूप महात्मा शिवजीकी उपासना करतेहैं ६ वहां बिकृतबिकृताकारभूतगणभीक्रीड़ाकरतेहैं उनकेसाथ में वह सूर्य्यके समान तेजस्वी शिवजी अपनी शोभासेही प्रकाश मान दृष्टि गोचर होतेहैं ७ जिनकारूप और आकार कभी मांस चर्म दृष्टी प्राकृत पुरुषोंसे दृष्टि आना असंभवहै वहां न गरमीहै न सर्दी है न हवाहै न सूर्य्यहै ८ नवृद्धावस्थाहै न क्षुधाहै न तृषाहै न मृत्युहै और न भयहै हे बिजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ राजामरुत उस शैलके सबपार्श्वोंमें अर्थात् ओरोंमें ९।१० जातरूप सुवर्णकी ऐसी धातुहैं जैसे कि सूर्य्यकी किरणें होतीहैं उनधातुओंके रक्षाकरनेवाले कुबेर के वह शस्त्रधारी लोगहैं ११जोकि महात्मा कुबेरजीके प्रियकरने के अभिलाषीहैं हेराजा उसषड़ैश्वर्य्यके स्वामीसृष्टिके पालनऔर संहारकरनेवाले शिवजीको नमस्कार करकेरुद्र, नीलकंठ, पुरुष, सुवर्चस, कपर्द्दिन, कराल, पिंगल नेत्र, वरदाता १२।१३ अक्षण, पूषा दन्तबिदारण, वामन, शिव, याम्य, अव्यक्तरूप, सद्वृत्त, शङ्कर १४ क्षेम्य हरिकेश, स्थाणु, पुरुष, हरिकेश, मुंड, कृश, उत्तारण १५ भास्कर, सुतीर्थ, देवदेव, अंहस, उष्णीषिण, सुवक्र, सहस्राक्ष, मीढुष, गिरिश, शान्तरूप, संन्यासी, चारवस्त्रधारी, बिल्वदंडधारी, सिद्ध, सर्वदंडधारी १६।१७ यज्ञरूप मृगव्याध, महत, धन्वी, भव, बर,

चन्द्रमुख, सिद्धमन्त्र, चक्षुष १८ हिरण्यबाहु, उग्र, दिशापति, लेलिहान, गोष्ठ, सिद्धमन्त्र, वृष्णी, १६ पशुपति और भूतपतिको नमस्कार वृष, मातृभक्त सेनानी, मध्यम, २० स्तुवहस्त पति, धनुषधारी, भार्गव, अज, कृष्णनेत्र, बिरूपाक्ष २१ तीक्ष्णदंष्ट्र, तीक्ष्ण, वैश्रवा, नरमुख, महाद्युति, अनंग, शर्व, विशास्पति २२ त्रिलोहित, दीप्त, दीप्ताक्ष, महौजस, वसुरेत, सुवपुष, पृथु, कृत्तिवास २३ कपालमाली, सुवर्णमुकुट, महादेव, कृष्ण, त्र्यंबक, अनघ २४ क्रोधन, अन्नृशंस, मृदु, बाहुशाली, दंडी तपस्वी, अक्रूरकर्मा २५ सहस्रशीर्ष, सहस्रपाद, स्वधास्वरूप, बहुरूप नृसिंहरूप, २६ के अर्थ नमस्कारकरके उस पिनाकधनुषधारी महादेवयोगी, न्यूनतासे रहित त्रिशूलधारी बरदाता त्र्यंबक भुवनेश्वर २७ प्रलयकर्त्ता त्रिपुर त्रिनेत्र सब सृष्टिका ईश्वर महातपस्वी सबमात्रका उत्पत्तिस्थान, आश्रयस्थान, पृथ्वीको धारण करनेवाले २८ ईशान, शंकर, सर्व, शिव, बिश्वेश्वर, भव, उमापति, पशुपति, बिश्वरूप, महेश्वर २६ बिरूपाक्ष, दशभुजाधारी, दिव्यनन्दीश्वरको ध्वजारखनेवाले, उग्र, स्थाणु, शिव, रौद्र, शर्व, गौरीश, ईश्वर ३० नीलकंठ, अज, शुक्र, पृथु, पृथुहर, बर, बिश्वरूप, बिरूपाक्ष, भवरूप, उमापति, अनङ्गांगहर अर्थात् कामदेवके शरीरके नाशक ३१ रक्षाश्रय, शरण्यरूप, महादेव और चतुर्मुख देवताको शिरसेदण्डवत् करके शरणागतहोजाय ३२ इसप्रकार उस महादेव रंहस, महात्मा, पृथ्वीपतिके अर्थ नमस्कार करके उस सुवर्णको पावेगा ३३ सुवर्ण लानेवाले तेरे मनुष्य वहां जायँ और सुवर्णलावें उसका रंधभ के पुत्रने उसके कहेहुये बचनको उसीप्रकार से किया ३४ उसीसे यज्ञकी सब बिधि देवताओंके समानकरी वहां उत्तम २ कारीगरोंने सबसुवर्णके पात्र बनाये ३५ बृहस्पति ने राजामरुतके उस बड़ेभारी धन को जोकि देवताओं सेभी अधिकथा देख सुनकर बड़ा दुःख किया ३६ और महादुःखित होकर उनके मुखकी चेष्टा बिगड़कर बड़ी कृशता को पाया यहशोचकर कि मेराशत्रु सम्वर्त्त बड़ाधनाढ्यहोगा ३७ तब

देवराजइन्द्रने बृहस्पतिजीकी उसदशाको देखकर अत्यंत दुःखमाना उससमय देवताओं समेत इन्द्रने मिलकर यह वचनकहा ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणि अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

इन्द्र बोलेकि हे बृहस्पतिजी तुम सुखपूर्व्वक सोतेहो और आप की सेवाकरनेवाला चित्तके अनुसार आज्ञाकारीहै तुम देवताओंका सुखचाहने वालेहो हे वेदपाठी देवता तुम्हारा पालन करते हैं १ बृहस्पतिजीने कहा कि हे देवराज मैं शयनपर सुखसे सोताहूं मेरे सेवाकरनेवाले भी मेरी इच्छाके अनुसार कामकरते हैं देवताओंके सुखका चाहने वालाहूं और देवताभी मेरा सदैव पालनकरतेहैं २ इन्द्रनेकहा कि जब सबसुखवर्त्तमानहैं तो यह चित्तमेंखेद और शरीरकीवेदनाकैसेहै काहेसे आपकापांडुवर्णं और स्वरूपमें रूपांतरहै हेब्राह्मण आप अवश्यमुझसेकहो मैं आपके दुःखदेनेवाले सब शत्रुओंकोमारूंगा ३ बृहस्पतिजीबोले हेइंद्रराजामरुत उत्तमदक्षिणावाले बड़ेभारीयज्ञसेपूजनकरेगा और सम्बर्त्त पूजनकरावेगा यहमैंनेसुना है सो मेरीइच्छाहै अर्थात् मैंचाहताहूं कि वह सम्बर्त्त उसको पूजन न करावे ४ इंद्रबोले हे वेदपाठी तुमसबअभीष्ट मनोरथोंकेप्राप्तकरने वालेहो काहेसे कि आप देवताओं के मंत्री और पुरोहित होगयेहो आपकेजरामरण दोनों नाशहुये अब सम्बर्त्त आपका क्या करसकेगा ५ बृहस्पतिजी ने कहा कि तुम जहां जहां जिस२ शत्रुकोबृद्धि युक्त होतादेखतेहो वहांअपनेदेवताओं समेततुमउन२असुरोंकोपराजयकरके उनकेसाथियोंकोभी मारना चाहतेहो क्योंकि शत्रुकीबृद्धि काहोनादुःखरूपहै ६ हेदेवेन्द्र मेराशत्रु बृद्धिकोपाताहै उसीके सुनने से मेरीयह रूपान्तर दशाहै हेइन्द्रसब उपायोंसे राजामरुतअथवा संवर्त्त को बिजयकरो ७ इन्द्रबोलेकि हेअग्नि यहांआओ आपराजा मरुतसे कहदो कि आप अपना ऋत्विज बृहस्पति जीको बनाओ यही बृहस्पतिजी तुमको यज्ञकरावेंगे और अमर करदेंगे ८ अग्नि

ने कहाकि हे इन्द्र बहुत अच्छा अबमैं दूतबनकर बृहस्पति जीको
राजा मरुतका ऋत्विज बनानेको और आप के बचन के सत्यकरने
को जाताहूं क्योंकि मैंभी बृहस्पतिजीसेही पूजनकराना चाहताहूं ६
व्यासजीबोलेकि ऐसाकहकर वहअग्नि देवता वन,बेलि,लताआदि-
कोंका मर्दनकर बड़ीइच्छासे हिमालय के समीप घूमतेहुये वायुके
समान गर्जनाकरते लड़कियोंको उल्लंघनकरते जलतेहुये महात्मा
अग्नि चलदिये १० मरुतने कहा कि हे संबर्त्त जी अबमैं अपूर्वरूप
के शरीरधारी आतेहुये अग्नि देवताको देखताहूं हे मुनिआपआसन
जलपाद्य और गौको सन्मुख लाओ ११ यहबात सुनकर अग्निने
राजा मरुत से कहा कि हे निष्पाप मैं तेरे इस जलपाद्यादिक को
अंगीकार करूंगा परन्तु अभीमैं इन्द्रकी आज्ञासे दूतहोकर तेरेपास
आयाहूं १२ मरुतने कहाकि हे अग्नि देवता वह श्रीमान् देवराज
प्रसन्नहै हमसेप्रीति करताहै उसके आधीनदेवता अच्छीरीतिसे हैं
आप इस सबवृत्तान्तको मुझसेकहो १३ अग्निबोले हेमहाराजइन्द्र
बहुत सुखीहै वह तुझसे अजर अमर प्रीतिको चाहताहै सब देवता
उसके आधीन होकर आज्ञावर्त्तीहैं हे राजा अबतुम देवराजकेसन्देश
को मुझसे सुनो १४ हे राजा वृहस्पतिजी के ऋत्विज करनेके अर्थ
मुझको तेरेपासभेजाहै औरवहीवृहस्पतिजीतुमकोयज्ञ करावेंगे और
तुझ मरण धर्मवालेको अमरकरेंगे १५ मरुतने कहा कि यह संबर्त्त
ब्राह्मण मुझको यज्ञकरावेंगे उसकाभी नमस्कार बृहस्पति जीकोहै
यह वृहस्पतिजी महाइन्द्रको यज्ञ कराकर मनुष्य को यज्ञ कराने से
शोभानहींपावेंगे १६ अग्निने कहाकिनिश्चयकरकेदेवलोकमें जो बड़े
लोकहैं तुमउनलोकोंको देवराजकी कृपासे पावोगेजो वृहस्पतिजी
तुमको यज्ञ करावेंगे तो अवश्य तुम शुभकीर्त्ति से संयुक्त होकरस्वर्ग
को बिजय करोगे १७ इसीप्रकार जो मनुष्य दिव्यलोक प्रजापति
के बड़ेलोकहैं वहसब और इनके सिवाय देवताओंका सब राज्यभी
तुमविजय करोगे हेराजा जोवृहस्पतिजी तुमको यज्ञकरावें १८ फि
रसम्बर्त्तने कहा हे अग्नि इसरीतिसे फिरआप कभीकभी बृहस्पति

जीको मरुतके ऋत्विज करानेके निमित्त न आना नहींतो मैंक्रोधरूप होकर तुमको अपने भयानक नेत्रोंसेही भस्म करदूंगा तुम इसको निश्चयही जानना १९ व्यासजी बोलेकि सम्बर्त्तकेइसवचनके सुन-तेही पीपलके वृक्षके समान पीड़ित और कंपायमान और भस्महोने से भयभीत होकर अग्निसब देवताओंकेपास गये महात्मा इन्द्रने उसअग्निको देखकर वृहस्पतिजीके सन्मुख यह वचनकहा २० कि हेअग्नि जो आप हमारेभेजेहुये यज्ञकरनेके इच्छावान् राजामरुत के पास बृहस्पति जीके ऋत्विज होनेके निमित्त गयेथे उस राजाने क्या कहा क्या वह उसबचनको अंगीकार करताहै २१ अग्निनेकहा कि राजा मरुत तेरे उस बचन को अंगीकार नहीं करता है उसने वृहस्पतिजीकेलिये अंजली भेजीहै अर्थात् नमस्कार कियाहै और मुझसमेत उसराजानेबारंबार यहबचनकहा कि मुझकोयज्ञसम्बर्त्त करावेगा २२ और उस प्रसन्नचित्त ने कहाहै कि जो वह बृहस्पति जी मुझको मिलकर उन मानसदिव्य और प्रजापतिजी के भी बड़े लोक दिलानेको कहैं तो भी मैं नहीं चाहता २३ इन्द्रने कहा कि तुम फिर जाकर उसराजासे मेरे सार्थक बचनोंको कहो जो आपके समझानेपर भी वह राजामरुत मेरे वचनको नहीं करेगा तो फिर उसपर मैं अपनेवज्रका प्रहार करूंगा २४ अग्निनेकहा कि हे इन्द्र इन गंधर्व्वराजको दूतवनाकर आपभेजिये मैं वहां जानेसे भयभीत होताहूं ब्रह्मचारी ब्रह्मचर्य्य में प्रवृत्त क्रोधयुक्त तीव्रक्रोधी सम्वर्त्त ने मुझसे यहवचन कहाहै २५ किजो तुम इसप्रकार से किसी दशामें भी राजामरुतके ऋत्विज वनानेको बृहस्पतिके कहनेको आओगे तो मैं अत्यन्त क्रोधित होकर अपने भयानक नेत्रसे तुमको भस्म करदूंगा यह उनकाकथनहै २६ इन्द्रनेकहा कि हे अग्नितुमहीं तो सबको भस्म करनेवाले हो तुम्हारे सिवाय और कौन दूसरा भस्म करनेवालाहै सबसंसार तेरेस्पर्शमात्रसेही डरतेहैं हेअग्नि तुम्हारा कहना श्रद्धाके योग्यनहींहै २७ अग्निने कहा हे देवेन्द्र तुम अपने वल पराक्रमसे स्वर्ग और पृथ्वीको लपेटो पूर्वसमयमें इसबृत्रासुर

ने तुझसरीके इन्द्रके स्वर्गको कैसे बिजय करलियाथा २८ इन्द्रने कहा हे अग्नि मैं पर्व्वतादि कोभी मक्षिका आदिकके समान छोटा करसक्ताहूं परंतु शत्रुके अमृतकापात नहीं करूंगा मैंनिर्बल परबज्र का प्रहार नहीं करूंगा कौनसा मनुष्य अपने सुखके लिये मुझपर प्रहार करसक्ता है २६ पृथ्वीपर कालिकेय नाम असुरों को पृथक् करदूं दानव लोगोंको अन्तरिक्षसे दूरकरदूं आकाशके शब्दकानाश करदूं मेरेऊपर प्रहार करनेकी किसमनुष्यकी सामर्थ्यहै ३० अग्नि नेकहा जिस स्थानपर कि राजा सर्य्यातको यज्ञ करातेहुये अकेले च्यवन ऋषिने अश्वनीकुमारों के निमित्त अमृत को हाथमें लिया उस समय क्रोधयुक्त ऋषिने प्रथमही तुमको रोकाथा हे महाइन्द्र सर्य्यात के उसयज्ञका स्मरणकरो ३१ उससमय हे इन्द्रतुमनेअपने भयानक और भयकारीरूप बज्रको लेकर च्यवन ऋषिके ऊपर प्रहारकरना चाहाथा तबक्रोधयुक्त वेदपाठी उसच्यवन ऋषिने अपने तपके प्रभावसे बज्रसमेततेरी भुजाको रोक दियाथा ३२ फिर उस ऋषिने क्रोधसे तेरेशत्रु मदनाम असुर जो कि सबओरसे भयानक रूपथा उसको उत्पन्नकिया तुमने जिसबिश्वरूप असुरको देखकर दोनोंनेत्र बन्दकरलियेथे ३३ उसबड़े दानवका नीचेकाओष्ठपृथ्वी पर नियत और ऊपर का ओष्ठस्वर्ग में बर्त्तमान था उसके हजार दांत सौ योजन लंबे अत्यन्त तीक्ष्ण महा भयानकरूपथे ३४ और उसकी चार डाढ़ें दोसौ योजन लंबी गोलमोटी चांदी के स्तंभकी सूरतथीं वहअपने भयानक दांतोंको कटकटाकर अपने शूलकोउठाकर मारनेकी इच्छासे तेरेसन्मुखदौड़ा ३५ तबतुमने उस घोररूप दानवको देखा और सब लोगोंनेभी तुझ देखनेके योग्य को देखा हेदानवोंके नाशकरनेवाले इसीहेतुसे तुम भयभीतता पूर्व्वक हाथ जोड़कर महर्षीकोशरणमेंगये ३६ब्राह्मणकाबलक्षत्रीके बलसेबड़ाहै ब्राह्मणसेउत्तम और बड़ादूसराकोईनहीं है सोहेइन्द्रमैंब्रह्मतेजको निश्चयऔरठीकजानकरसम्बर्त्त कोबिजयकरनानहींचाहताहूं ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिसम्बर्त्तमरुत्तीयेनवमोऽध्यायः ६॥

दशवां अध्याय ॥

इन्द्रने कहा कि तुम्हारा कहना यथार्थहीहै ब्राह्मणका बलबड़ाहै ब्राह्मणसे वृद्धतम कोईनहींहै परन्तुमें राजामरुतके बलपराक्रमको नहीं सहसक्ताहूं मैं इसपर घोर वज्रका प्रहार करूंगा हेधृतराष्ट्र गन्धर्व तुमहमारे भेजेहुये जाकर सम्बर्त्त समेत राजामरुत से कहो कि हेराजा तुम वृहस्पतिको ऋत्विजकरो नहींतो इन्द्र तुम्हारेऊपर घोरवज्रको छोड़ेगा १ । २ व्यासजी बोलेकि इसके पीछे धृतराष्ट्र नेजाकर राजामरुतसे यहइन्द्रका बचन कहा ३ कि हेमहाराजमैं धृतराष्ट्रनाम गन्धर्व आपसे वार्त्तालाप करनेको आयाहूं हेराजाओं में श्रेष्ठ उसलोकेश्वर महात्मा इन्द्रने जो वचनकहाहै उसको मुझसे सुनों ४ अर्थात् इन्द्रनेकहा है कि कैतोतुम बृहस्पतिजी को अपना ऋत्विज बनाओ औरजोमेरेइसकहनेको नमानेगा तोमैं तुझपर घोर वज्रकाप्रहार करूंगा उसध्यानसेपरे कर्मकरनेवालेदेवराज इन्द्रका यह कहा हुआ वचनहै ५ मरुतने कहा कि इसबातकोतुमइन्द्रबिश्वे-देवा और अश्विनीकुमार भी जानतेहो कि इसलोक में मित्रकेसाथ शत्रुता करने में ब्रह्महत्या के समान ऐसाबड़ा पापहै कि जिसका प्रायश्चित्तभी नहीं होसक्ता ६ वृहस्पतिजी उस देवताओं में और बज्रधारियों में श्रेष्ठ महाइन्द्रको यज्ञकरावैं और मुझको सम्बर्त्त ही यज्ञकरावेंगे हेगन्धर्वराज मैं तेरे अथवा उसइन्द्रके बचनको अच्छा नहींमानताहूं ७ गन्धर्व बोला हेराजाओं में श्रेष्ठ इससमयआकाश में गर्जना करने वाले इन्द्रके भयकारी शब्दोंको सुनों वह महा-इन्द्र अवश्य तुझपर अपने वज्र का प्रहार करेगा हे राजा अपनी कुशलको बिचारो अबयही समयहै ८ व्यासजीबोले हेराजाधृतराष्ट्र के इसप्रकारके बचनोंके पीछे मरुतने गर्जते हुये इन्द्रके शब्दको सुनकर उसधर्मज्ञोंमें श्रेष्ठ सदैव तपस्वी सम्बर्त्त से इन्द्रके इस बचनको जाकरकहा ९ अर्थात् मरुतनेसम्बर्त्त से कहा कि अब ब-हुत शीघ्रही मैं अपने इस शरीर को डूबा हुआही मानताहूं उस

इन्द्रकोइतना मार्गदूरनहींहै इससेहेऋषि मैं आपसेअपनाकल्याण चाहताहूं हे वेदपाठियों में श्रेष्ठ इस हेतुसे आप मुझको निर्भयता दो १० क्योंकि यह बज्रधारी इन्द्र घोर और दिव्य रूपसे दशों दिशाओंको प्रकाशित करता हुआ आताहै इसशब्दसे ब्राह्मण भय-भीतहैं ११ सम्बर्त ने कहा हेराजाओं में श्रेष्ठ इन्द्रसे तेरा भयदूर होजाय मैं अभी इस घोर भयको नाश करदूंगा अर्थात् बहुत शीघ्र स्तंभनी बिद्यासे उसको रोकूंगा तुम बिश्वास युक्तहोकर इसकेतिर-स्कार सेमत डरो १२ हेराजा मैं इसको रोकताहूं तुम इन्द्रसेकभी मतडरो मैंने सब देवताओंके शस्त्रों को निरर्थक अर्थात् बेकाम कर दिया १३ बज्र दिशाओंको सेबनकरेगा बायु चलेगी और मेघ अन्न होकर बनोंमें बर्षाकरेगा और अन्तरिक्ष में जोजलहोगा वह निर-र्थक होजायगा जोतुमको बिजली दिखाई पड़े उससे तुमकभी मत भयकरो १४ अग्निदेवता सबओरसे तेरी रक्षाकरेंगे और इन्द्रतेरी सबअभिलाषाओंको वर्षावेगा इसीप्रकारजलोंसे ढकाहुआमहाघोर बज्रमारने के निमित्त नियत बना रहैगा १५ मरुतने कहा कि यह बड़ा भयकारी बड़ा शब्द सुनाजाताहै यह बायुसे मिलेहुये बज्र का शब्दहै मेरा चित्त बारंबार पीड़ापाताहै हेवेदपाठी अभी मेरे चित्तमें बिश्वास और दृढ़तानहीं होती है १६ सम्बर्त ने कहा हे महाराज अबबड़े भयानक बज्रसे तेराभयदूर होय मैं बायु रूप होकर उस बज्रको दूरकरताहूं अबतुम अपनेभयको त्यागकर दूसरे बरकोमां-गो औरजोतूचाहैगा मैं उसी तेरे अभीष्टकोचित्तसे पराकरूंगा १७ मरुतने कहा हेवेदपाठी यहइन्द्र शीघ्रतासे साक्षात्मेरे सन्मुखआवे और यज्ञमें हव्यको अंगीकारकरे देवता लोगभी अपने२ स्थानोंपर नियत होकर होमे हुये हव्यको अंगीकार करें १८ सम्बर्त नेकहा हेराजामेरे मन्त्रसे बुलाया हुआ तीक्ष्ण बक्रा देवताओंसे स्तूयमान यह इन्द्र हरिजातवाले घोड़ों की सवारी से इस यज्ञमें आताहै अबतुम इसको मन्त्रोंकरके सुस्त शरीर देखोगे १६ इसकेपीछे उस अतुल पराक्रमी राजा मरुतके अमृतके पानकरने का अभिलाषी

देवराज घोड़ोंमें उत्तम हरिनाम घोड़ोंको रथमें जोतकर देवताओं समेत यज्ञमें आया २० तब प्रीतिमान राजा मरुतने पुरोहित और देवताओंके समूहों समेत आयेहुये इन्द्रको अभ्युत्थान पूर्व्वक प्रतिष्ठाकरी और शास्त्रकी विधिके अनुसार देवराजका उत्तम पूजन किया २१ और सबप्रकार से पूजन करके मरुतने कहा कि हेइन्द्र आपका आना कल्याणकारीहो हेज्ञानी आपकी वर्त्तमानतामें यह यज्ञ शोभापावेगा हेबलि और वृत्रासुरके मारनेवाले मेरे दियेहुये अमृतको आप पानकरो २२ और यहभी कहा कि हेदेवराज आप मुझको अपने कल्याण रूपनेत्रोंसे देखो तुमको नमस्कारहै मैंनेयज्ञ प्राप्तकिया अब मेराजीवन सफलहै वृहस्पतिजी का छोटाभाई वेद पाठियोंमें श्रेष्ठ सम्वर्त्त इस मेरे यज्ञको करताहै २३ इन्द्रने कहा हेमहाराज मैं तेरे इस गुरूको जोकि तपका धन रखनेवाला बड़ा तेजस्वी और वृहस्पतिजी का छोटाभाईहै अच्छी रीतिसे जानताहूं मैं उसीके बुलानेसे आयाहूं अब तुझमें मेरीप्रीतिहै क्रोध दूरहोगया २४ सम्वर्त्तने कहा हेदेवराज जोतुम प्रसन्नहो तो आपयज्ञमें तैयारी कराओ और देवताओ तुमसब मिलकर भागोंका विचार करो और यह सब संसार इसविषयके प्रयोजनको जानो २५ व्यासजी कहते हैं कि अंगिरा बंशी सम्वर्त्त के इस प्रकारके बचनोंको सुनकर इन्द्रने आपही सब देवताओंको आज्ञाकरी कि अपूर्व्वरूप और धनसे वृद्धियुक्त सभा और हजारों उत्तम २ स्थानादिक तैयारकरो २६ और शीघ्रही गन्धर्व और अप्सराओंके चढ़नेके योग्य स्तंभ वाले ऐसे स्थान बनाओ जिनमें सब अप्सरा नृत्यकरें और यज्ञके बाड़ेको स्वर्गके समान करदो २७ हेमहाराज इन्द्रके इस वचनको सुनतेही बड़े प्रसन्न चित्त देवताओंने उनके कहतेहीशीघ्र उनकी आज्ञाको पूराकिया तदनन्तर बड़े प्रसन्न और पूजित इन्द्रने राजा मरुतसे यह बचन कहा २८ कि हे महाराज मैं यहां तुझसे मिलकर और जो दूसरे तीसरे वृद्धलोग हैं उन समेत सब प्रीतिमान देवतातेरे हव्यको स्वीकार करें २९ हेराजा लाल और नीला

भूरूप अग्नि और बिश्वेदेवासे संबंध रखने वाला यज्ञके निमित्त चलायमान लिङ्गेन्द्री वाला ब्राह्मणोंसे आज्ञादियाहुआबैल बलिदानकरो ३० इसके पीछे हेराजा वह यज्ञ बृद्धियुक्त हुआ जिसमें कि आप देवता लोगोंने भोजनकी वस्तुओंको लिया और जिसमें ब्राह्मणोंसे पूजित हरि बाहन देवराज इन्द्र सदस्य हुआ ३१ तदनन्तर यज्ञ शालामें बर्त्तमान दूसरी प्रज्वलित अग्निके समान अत्यन्त प्रसन्न मन महात्मा सम्बर्त्त ने देवताओंके समूहोंको बुलाया और मन्त्रसे हव्यको अग्निमें होमा ३२ इसके पीछे इन्द्र और अन्य २ देवताओं के समूह उत्तम अमृतको खानपान करके राजा से बिदा पूर्व्वक वह सबतृप्त और प्रीतिमान होकर सुखसे चलेगये ३३ इसके पीछे प्रसन्न मन राजामरुतने प्रत्येक स्थानपर सुबर्णकेढेरकरवाये फिरवह शत्रुहन्ता राजामरुत ब्राह्मणोंकेनिमित्त बहुतसे धनको देताहुआ कुबेरजी के समान शोभायमानहुआ ३४ फिर नानाप्रकारके धनोंको रक्षाके स्थानोंमें रखवाकर उत्साहके अनुसार अपने धनागारको पूर्ण करके अपने गुरूकी आज्ञा लेकर अर्थात् गुरूसंबर्त्तकी आज्ञानुसार राजामरुतने वहांसे लौटकर इस सब सागराम्बरा पृथ्वीपर राज्यकिया ३५ वह राजाऐसा गुणवान् हुआ जिसके यज्ञमें वह सुबर्ण प्रकटहुआ हे महाराज उस धनको लेकर तुम बुद्धि से देवताओं को तृप्त करतेहुये पूजनकरो ३६ बैशंपायन बोले कि इसके पीछे प्रसन्न मूर्त्ति राजायुधिष्ठिरने ब्यास जीके बचनोंको सुनकर उस धनसे यज्ञ करनेका बिचारकिया और मन्त्रियोंसे भी सलाहकरी ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिसंबर्त्तमरुत्तीयेदशमोऽध्यायः १०॥

ग्यारहवां अध्याय॥

बैशंपायनबोलेकि अपूर्व्वकर्मी ब्यासजी करके इसप्रकारसे राजा के समझानेपर महातपस्वी ब्यासजीने यह बचन कहनाचाहा १ श्री कृष्णजीने उस राजायुधिष्ठिरको जिसके कि बांधव और जात

वाले मरगयेथे दुखीमन राहुसेग्रसेहुये सूर्य्यके स्वरूपअथवासधूम अग्निके समान व्याकुल चित्त जानकर उस धर्म पुत्रको बिश्वास पूर्व्वक यह वचन कहना प्रारम्भकिया २ किवृद्धोंके हजारोंउपदेश और हजारों यज्ञोंसेभी शोकनहीं निवृत्त होसक्ता केवल ब्रह्मज्ञानसे दूरहोसक्ताहै इस बातके प्रकट करनेको बासुदेवजी बोले कि सब प्रकारके कामादिक मृत्युकेस्थानहैं अर्थात् संसारमेंही प्रवृत्तकरने अथवा फंसानेवालेहैं और शमदमादिक सत्यबोलना ब्रह्मपदहै अर्थात् मुक्तिका देनेवालाहै इतनाही ज्ञानका विषयहै बहुतसी अन्य वार्त्तावृथाहैं ३।४ तुमने कर्मका अनुष्ठाननहींकियातुमने शत्रुबिजय नहीं किये तुम अपने शरीरके बसनेवाले शत्रुरूप अज्ञानको कैसे नहीं जानतेहो ५ यहांधर्मऔरज्ञानके अनुसार मैं तुझसे उसप्रकार को कहताहूं जिसप्रकारसेकि काम क्रोधादिक धर्मवाले जड़चैतन्य के समूहरूप अहंकार से और अन्तर्वर्त्ती चिदात्मासे युद्ध वर्त्तमान हुआ ६ हे राजा निश्चय करके पूर्व्व समयमें स्थूल शरीर रूप वृत्रासुरसे व्याप्तहुये सूक्ष्म शरीरकोआत्मारूपसे अंगीकृत देखकर और गंध विषय में शरीरके नियत करनेपर ७ अनात्मरूप बिषय अर्थात् ब्रह्माण्ड उत्पन्नहुआ जो कि स्थूल शरीरको आत्मारूपमानने से अनात्मारूप दुर्गन्धथा गन्ध बिषयके प्राप्त करनेपर भीतर के चिदात्माने क्रोधकिया ८ इसके अनन्तर महाक्रोधीने वृत्रासुरके ऊपर आगेके अध्याय के लिखेहुये बिवेकरूप बज्रको छोड़ा बड़ेउग्र और तेजस्वी वज्रसे घायल वह वृत्रासुर अकस्मात् जलरूप दूसरे दिव्यभोगवाले सूक्ष्म शरीरमें प्रवेश करगया अर्थात् उस शरीरको आत्मारूपजाना और उसीसे बिषयको प्राप्तकिया फिर अभिमानी दिव्यशरीरहोने और रसबिषयकदिव्यलोकमेंममताकरनेपर ९।१० अत्यन्तक्रोधयुक्त इन्द्रने उसके ऊपर बज्रको छोड़ा उस समय बड़े तेजस्वी बज्रसे घायल वह वृत्रासुर अकस्मात् तैजसरूप ज्योतिमें प्रवेशकरगया अर्थात् उस शरीरका अभिमानीहुआ और उसीसे बिषयको प्राप्तकिया अर्थात् अपने पहले सूक्ष्म शरीरको प्राप्तकिया

वृत्रासुर से तैजस शरीर के व्याप्तहोनेऔर रूप विषयमें ममताहोने पर ११।१२ अत्यन्त क्रोधयुक्त इन्द्रने उसपरवज्रको छोड़ाउससमय उस बड़े उग्र बज्रसे घायल वह वृत्रासुर अकस्मात् समष्टि लिंग शरीर रूप बायुमें प्रवेश करगया अर्थात् शरीर का अभिमानीहुआ और उससे बिषय प्राप्तकिया उस समष्टिनाम सूक्ष्मशरीरको आत्मा रूपमानने और मानसी रूपस्पर्श बिषयमें ममताहोने पर १३।१४ अत्यन्त क्रोध युक्त इन्द्रने उसपर वज्र का प्रहार किया तब उस बड़े तेजस्वी बज्रसे पीड़ित वह वृत्रासुर १५ आकाश अर्थात् अब्याकृत सुषुप्ती नाम अज्ञान की ओर दौड़ा और उससे भी बिषय को प्राप्त किया फिर आकाश के वृत्रासुर रूपहोने और शब्द बिषय में ममता होने पर १६ अत्यन्त क्रोध युक्त इन्द्रने उसपर वज्रछोड़ा उस समय बड़ा तेजस्वी बज्र से घायल वह वृत्रासुर १७ अकस्मात् इन्द्र में प्रवेश करगया अर्थात् चिदात्मा के ऐश्वर्य्यका अभिमानी हुआ उस वृत्रासुरके व्याप्त होनेसे इन्द्र को बड़ामोह उत्पन्न हुआ १८ हेतात बशिष्ठ अर्थात् गुरूने रथान्तर अर्थात् माया रूप रथसे जुदाकरनेवाला अहं ब्रह्म इस महावाक्यसे उसको जगाया अर्थात् द्वैतताद्दूर करने से उसको निर्भय किया अर्थात् निराकार ब्रह्मकिया १९ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ इसके पीछे इन्द्र अर्थात् चिदात्माने बज्रके द्वारा शरीरमें गुप्त होनेवाले वृत्रासुर रूप अहंकारको मारा यह हमने सुनाहै २० इन्द्रने इस धर्मको गुप्त वार्त्ताको महर्षियों के मध्यमें बर्णन करी और ऋषियों ने मुझसे कही इसको तुमजानो २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिकृष्णधर्मसंबादेएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय ॥

बज्रनाम बिवेक प्रकट करने को बासुदेवजी बोले कि दोप्रकार का रोग उत्पन्न होताहै प्रथम शरीर सम्बन्धी दूसरा मानसी उन दोनोंकी उत्पत्ति परस्परमेंहै इसीसे उनकी एकताहोना सिद्धनहीं

होता अर्थात् सतोगुणादिसे उत्पन्न लिंगशरीरहै उसके बिनास्थूल शरीर नहींहै और इस शरीरकेबिना उन गुणोंकी प्राप्तिनहींहै १ शरीरमें जो रोग उत्पन्न होताहै वह शरीरक रोग कहाताहै और जो चित्तमें रोग उत्पन्न होताहै वह मानसीरोग कहाताहै २ हेराजा बात पित्त कफ नाम गुण शरीरसे उत्पन्नहैं जिसके शरीर में उन तीनों गुणोंकी समताहै उसकोही नीरोगता कहतेहैं ३ शीतता ऊष्णतासे दूरहोतीहै और उष्णता शीततासे निवृत्तहोतीहै सत्व, रज, तम, नाम तीनों कारण शरीर के धर्मकहेजातेहैं ४ जो उनगुणों की समताहै तब तो उसको सुखचिह्नवाला कहतेहैं उन्होंमें एकके भी न्यूनाधिकहोनेमें उपाय बतायाजाताहै ५ शोक प्रसन्नतासे दूर होताहै और प्रसन्नता शोकसे निवृत्तहो जातीहै ६ कोई तो दुःखमें पड़ाहुआ मनुष्य पिछले सुखको और कोई सुखमें पड़ाहुआ पिछले दुःखोंको स्मरण करताहै अर्थात् एकके स्मरण करनेसे दूसरे का नाश होताहै ७ हे कुन्तीनन्दन सो तुम दुःखी नहींहो दुःखका स्मरणनकरो न सुखी होकर सुखका स्मरणकरो किन्तु दुःखकी भ्रान्ती से दूसरा जो ब्रह्महै उसीका ध्यानकरो ८ हे राजेन्द्र अथवा तेरी ऐसीही प्रकृतिहै जिससे आकर्षण किया जाताहै तोभी तुम शोक युक्त होनेके योग्य नहीं हो क्योंकि वह शोक निवृत्तहोगया पांडवों के देखते हुये ९ एक वस्त्रा रजस्वला द्रौपदीको सभामें वर्त्तमान देखकर उसके देखने को योग्यनहीं हो नगरसे बनको भेजना मृग चर्म्मादिक धारण करना और जो महावनोंमें निवास हुआ उस के स्मरण करने को योग्य नहीं हो १० जटासुरसे महापीड़ा चित्रसेन गन्धर्वसे युद्ध और राजा जयद्रथसे जोदुःखहुये उसके स्मरण करने को योग्यनहींहो ११ हे राजा उसीप्रकार अग्निपात चर्य्यामें अर्थात् अज्ञात लाक्षागृहादि निवासमें कीचकने द्रौपदीकोचरणों से घायल किया उसको भी स्मरण करने के योग्य नहीं हो १२ हे शत्रुबिजयी भीष्म और द्रोणाचार्य्य के साथ तेरा युद्धहुआ परंतु जिस युद्धमें अहंकार पूर्व्वक लड़ावही युद्ध तेरे सन्मुख वर्त्तमान

नियतहुआ १३ हेभरतबंशी इसीकारणसे युद्धके अर्थसन्मुखहोना चाहिये मायारूप चित्तसे परे ब्रह्मको योग और पवित्र कर्मोंसे प्राप्तकरो १४ जिस युद्धमें बाण शूरबीर औरबान्धवों से कुछकाम नहींहै केवलअकेले मनहीसे लड़ताहै वह तेरा युद्ध सन्मुख बर्त्तमान हुआ१५उसयुद्धके बिजयन करनेपर किसदशाको पावेगा मायारूप चित्तको जानकर कार्योंसे निवृत्त होगा अर्थात् कृतकृत्य होगा १६ जीवों की उत्पत्ति और नाशको मायासे जानकर और इस बुद्धोको निश्चय करके बापदादों के राज्यपर जैसा योग्य है वैसा राज्य शासनकरो १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिकृष्णधर्मसंवादेद्वादशोऽध्याय:१२॥

तेरहवां अध्याय॥

वासुदेवजी बोले कि हे भरतबंशी बाहरी धन अर्थात् राज्यादि को त्यागकर सिद्धी अर्थात् मोक्ष नहीं होतीहै कामादिक धनको त्यागकर सिद्धी प्राप्त होतीहै अथवा बिवेक रहित केवल बैराग्य-वान् होनेसे नहीं होतीहै १ बाहरके धनसे पृथक् शरीर सम्बन्धी धनमें प्रवृत्तचित्त मनुष्यका जो धर्म और सुख होय वह शत्रुओंका होय अर्थात् वह धर्म और वह सुख अधर्म और दुःखके मूलरूपहैं २ दो अक्षर मृत्युके होयं और तीन अक्षर सनातन ब्रह्मकेहों मम, अर्थात् मायाके धनादि बस्तुको अपना मानना मृत्यु होतीहै नमम अर्थात् यह मेरा नहींहै यह सनातन ब्रह्म होताहै ३ हेराजा इसी हेतुसे संग असंग नाममृत्यु और ब्रह्मचित्तमेंही नियतहै वह दोनों दृष्टिसे गुप्त होकर निस्सन्देह जीवोंको लड़वातेहैं ४ हे भरतबंशी जगतकी इस सत्ताका नाश नहींहै यह निश्चयहैतो धर्मयुद्धमें जीव धारियोंके शरीरोंको भी मारकर अहिंसा कोही पाताहै ५ स्थावर जंगम सृष्टी समेत इस संपूर्ण पृथ्वीको पाकर जिसकी ममता नहीं होय वह पृथ्वीको क्या करेगा ६ हे राजा अथवा बनमें निवास और मूलफलसे निर्बाह करनेवाले जिस मनुष्यकी ममता द्रव्योंमेंहै

वह मृत्युके मुखमें वर्त्तमानहै हेभरतवंशीबाह्याभ्यन्तरके शत्रुओंका आत्मा मायारूपदेखो७अर्थात् ध्यानसे साक्षात्कार करो जो पुरुष उस मायाको नहीं देखता है अर्थात् चिन्मात्र रूपसे नियत होता है वह संसारके बड़े भयसे निवृत्त होताहै ८ लोक में इच्छावान् पुरुष की प्रशंसा नहीं करते हैं यहां कोई काम इच्छा से रहित नहींहै सब अंगोंकी इच्छा मनरूपहैं अर्थात्मनसे इच्छा इच्छासे काम और काम से दुःख उत्पन्न होता है जिनको कि विचारकर पंडित त्यागता है अर्थात् अपने मनको रोकता है ९ बहुत जन्मों के अभ्यास से शुद्ध चित्त योगी मोक्षमार्ग को विचारकर इच्छा-दिकोंकोत्यागकरे १० दान, वेदपाठ,तप,सफल कर्म, वैदिक कर्म्म, व्रत, नियम और यज्ञादिक कर्मों को ध्यान योग तक जानकर इच्छा से प्रारंभ करता है और यह जिस २ को चाहता है वह धर्म नहीं है जो इच्छादिकों को रोकता है वही धर्म्म है और उस मोक्षका बीज है ११ प्राचीन वृत्तान्तोंके जाननेवाले मनुष्य इस स्थान पर कामदेव के गायेहुये इन श्लोकों को कहते हैं उनश्लो कोंको मैं तुझसे कहताहूं हे युधिष्ठिर उनको संपूर्णता से सुनो १२ निर्ममता और योगाभ्यासके विना किसी उपाय करके भी मुझको कोई जीव नहीं मारसक्ता जो मनुष्य जपरूपी शस्त्रमें बल जानकर मेरे मारनेमें उपाय करताहै १३ मैं उसके उस जपरूप शस्त्रमें प्रकट होताहूं अर्थात् उससे कहलाताहूं कि मैं सबसे उत्तम जप करनेवालाहूं उसबातसे उसके जपको निष्फल करताहूं जो मनुष्य नाना प्रकारकी उत्तम दक्षिणावाले यज्ञोंकेद्वारा मेरे मारनेमें उपाय करताहै १४ मैं फिर उसके मनरूपी शस्त्रमें प्रकट होताहूं अर्थात् वह शोचताहै कि मैं चेष्टा करनेवाले जीवोंमें धर्मात्माहूं जो मनुष्य वेद वेदांत और सदैव साधुओंकेद्वारा मेरे मारनेमें उपाय करताहै १५ मैं उसके चित्तरूपी शस्त्रमें प्रकट होताहूं अर्थात् वह मनुष्य कहताहै कि मैं स्थावर जीवोंमें जीवात्माहूं जो सत्य पराक्रमी युद्ध और पराक्रम में धैर्ययुक्त होनेसे मेरे मारनेमें उपाय करताहै १६

मैं उसका चित्त होताहूं अर्थात् धैर्य के द्वारा सब प्रकारके लोगों के विजय करने को अभिमान करता हूं वह मुझको नहीं जानताहै जो ब्रतमें स्तुतिमान् मनुष्य तपकेद्वारा अर्थात् योगबलसे मेरे मारने में उपाय करताहै १७ तब मैं उसके तपमें प्रकट होताहूं अर्थात् आत्मा आदिक ऐश्वर्य्योंमें उसकी इच्छा उत्पन्न होतीहै जो पंडित मनुष्य आत्माको न जानकर मोक्षमार्ग में नियत होकर मेरे मारनेमें उपाय करताहै १८ उस मोक्षमें प्रवृत्त चित्त मनुष्यको देखकर नाचताहूं और हंसताहूं मैं अकेला सनातन सब जीवमात्रोंसे अवध्य हूं १९ हेमहाराज इसी हेतुसे तुमभी नाना प्रकारकी दक्षिणावाले यज्ञोंसे उस कामको धर्म्म नियत करो वहांपर वहतेरा होगा अर्थात् यज्ञसे चित्तशुद्धी और चित्तशुद्धी के द्वारा ममतासे रहितयोगाभ्यास और योगाभ्याससे काम विजय होगा फिर मोक्ष प्राप्त होगा २० दक्षिणा रखनेवाले अश्वमेध और पूर्ण दक्षिणावाले वृद्धियुक्तनाना प्रकारके अन्य२यज्ञोंसे बिधिके अनुसार पूजनकरो २१ मृतकबांधवोंको देखकर बारंबार तुझको दुःख नहोय जो इस युद्धभूमिमें मारे गयेहैं वह फिर देखने को असंभव हैं २२ सो तुम वृद्धि युक्त पूर्ण दक्षिणावाले महायज्ञों में पूजनकर लोक में उत्तम कीर्त्ति को प्राप्त करके श्रेष्ठ गतिको पाओगे २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकपर्व्वणिकृष्णधर्मसंवादेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि जिसके बांधव मारेगये वह राजा युधिष्ठिर इस प्रकार उन तपोधन मुनियोंके बहुत प्रकार के बचनोंसे बिश्वास युक्तहुआ १ आप भगवान् बिष्टरश्रव ब्यास प्रभु देवस्थान २ नारद, भीमसेन, नकुल, द्रौपदी, सहदेव, बुद्धिमान अर्जुन ३ और अन्य २ शास्त्रज्ञ पुरुषोत्तम ब्राह्मणों से समझाये हुये राजायुधिष्ठिर ने शोकजन्य दुःख और चित्तके बिषादको त्याग किया ४ उसराजा युधिष्ठिरने बांधवोंके प्रीतिकर्म्मों को करके फिर देवता और ब्राह्मणों

को पूजन किया और फिर उस धर्मात्माने सागररूप सागराम्बरा पृथ्वीपर राज्यकिया ५ फिर शान्त होकर उस शान्तचित्त राजायुधिष्ठिरने अपने शुद्ध राज्यको पाकर व्यास नारद और अन्य ऋषियोंसे कहा ६ कि पूर्व्वमें मुझको आप वृद्ध और श्रेष्ठ मुनि लोगोंने विश्वास कराया है अब मुझको थोड़ीभी शोकजनित पीड़ा नहींहै मैंने बड़ाधन पायाहै उसी से मैं देवताओंका पूजन करूंगा अब आपको अग्रगामी अर्थात् सन्मुखस्थ करके यज्ञ को प्राप्तकरूंगा ७।८ हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ पितामह आपकी रक्षामें होकर हम हिमालय पर्व्वतको जायंगे वह देश बड़े२ अद्भुत पदार्थोंका रखने वाला सुनाजाताहै ९ इसप्रकार भगवान् देवऋषि नारद और देव स्थान से अपूर्व्व कल्याण रूप बहुतसे वचन कहे १० कि बिना प्रारब्धके कोई मनुष्यभी दुःखको पाकर इसप्रकार के शुभचिन्तक साधुओंके अंगीकृत गुरुओंको नहीं पाताहै ११ राजासे इसप्रकार कहे हुये वह सबदेवर्षि राजा युधिष्ठिर श्रीकृष्ण और अर्जुन से कहकर सबके देखते हुये उसीस्थानपर गुप्त होगये इसकेपीछेवह धर्मपुत्र प्रभुराजा युधिष्ठिर उसी स्थानपर बैठगया १२।१३ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ तब भीष्मजीके मरनेपर इसप्रकार शौचकर्म करके और भीष्म कर्ण आदिक कौरवों के कर्मसे सम्बन्ध रखनेवाले दानब्राह्मणोंके निमित्तदेते उन पांडवोंका वह बड़ा समय समाप्तनहींहुआ अर्थात् थोड़ा समय व्यतीत हुआ १४। १५ उस राजा युधिष्ठिरने धृतराष्ट्र समेत श्राद्धादिसे संबन्ध रखने वाला दानदिया इसकेपीछे बहुतसाधन वेदपाठी ब्राह्मणों को देकर धृतराष्ट्र को आगे करके हस्तिनापुरमें प्रवेश किया १६ उस धर्मात्मा युधिष्ठिर ने भाइयों समेत ज्ञानचक्षु रखनेवाले ताऊ राजा धृतराष्ट्र को विश्वास देकर पृथ्वीपर राज्य किया १७।१८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिचतुर्दशोऽध्यायः १४॥

—※—

पन्द्रहवां अध्याय॥

राजाजनमेजयनेपूछा कि हेब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ पांडवोंकेबिजयी और शान्त चित्त होनेपर बीर बासुदेव और अर्जुनने देशमें क्याकिया १ बैशंपायन बोले हेराजा पांडव के बिजयी और शान्तचित्त होनेपर देशमें अर्जुन और बासुदेवजी प्रसन्न हुये २ उन आह्लाद युक्तोंने ऐसे बिहारकिया जैसे कि स्वर्गमें दोदेवराज नन्दनवनमें अश्विनी-कुमार और विचित्र बनमें शिखरधारी पर्वत होतेहैं ३ पवित्र तीर्थ पल्वल और नदियोंपर घूमते अत्यन्त प्रसन्न ४ महात्मा श्रीकृष्ण और अर्जुन इन्द्रप्रस्थमें रहनेलगे उस सुन्दर सभामें प्रवेश करके देवताओंके समान बिहार किया ५ हे राजा वहां बिहार करतेहुये सदैव प्रत्येक कथा में अपूर्व युद्धके बृत्तान्त और कष्टोंको बर्णन किया ६ प्रसन्न मन महात्मा पुराण ऋषियोंमें श्रेष्ठ उन दोनों श्री कृष्ण और अर्जुनने ऋषि और देवताओंके वंशोंका बर्णन किया ७ उस निश्चय चाहनेवाले केशवजीने अपूर्व अर्थ पद निश्चयात्मक और अपूर्व चित्तरोचक कथाओंको अर्जुनके सन्मुख बर्णनकिया ८ शूरवंशी श्रीकृष्णने हज़ारों बिरादरीवाले और पुत्रोंके शोकसे दुःखी रूप उस अर्जुनको कथाओंके द्वारा शान्तकिया ९ बिज्ञानके ज्ञाता महातपस्वी उस श्रीकृष्णने बुद्धिके अनुसार उस अर्जुनको बिश्वास देकर अपनेबोझ कोनिवृत्तकरके बिश्रामलिया १० इसकेपीछे शुद्ध और मधुरभाषण से बिश्वास कराते गोबिन्दजीने कथाके समाप्त होनेपर अर्जुनसे यह सहेतुक बचन कहा ११ हे परम तप अर्जुन धर्मपुत्र राजायुधिष्ठिरने तेरे भुजबलमें आश्रित होकर यह सब पृथ्वी बिजयकी १२ हे नरोत्तम वह धर्मराजयुधिष्ठिर इनभीमसेन नकुल और सहदेवके प्रभावसे इस शत्रुसे रहित पृथ्वीको भोगता है १३ हे धर्मज्ञ राजाने धर्म पूर्वक इस अकंटक राज्यको प्राप्त किया और वह राजासुयोधन युद्धमें धर्मसे मारागया १४ अधर्ममें प्रवृत्त लोभी सदैव अप्रिय कहनेवाले दुर्बुद्धी धृतराष्ट्र के पुत्र अपने

सहायकों समेत गिरायेगये १५ हे कौरव अर्जुन धर्मपुत्र राजायुधिष्ठिर तुमसेरक्षित होकरइनउपद्रवादिकोंसे रहित संपूर्ण पृथ्वीको भोगताहै १६ हे पांडव मैं तेरे साथ वनों में भी रमताहूं और हे शत्रुओंके विजय करनेवाले जहांपर यह सब इष्टमित्र नातेदार आदिक समेतकुन्तीहै वहां मैं कैसे निवासनकरूं १७ जहांपर कि धर्मसुत राजा युधिष्ठिरहै बड़ापराक्रमी भीमसेनहै और नकुलसहदेवभी वर्त्तमानहैं वहां मेरी बड़ी प्रीतिहै १८ हे निष्पाप कौरव उसीप्रकार स्वर्गके समान सुन्दर और पवित्र स्थानवाली सभा में मुझ तेरे साथी का बड़ा समय व्यतीत हुआ जो कि मैं बसुदेवजी वलदेवजी और अन्य२ श्रेष्ठ वृष्णियोंके दर्शनसे रहितहूं १९।२० सो मैं द्वारकापुरीमें जायाचाहताहूं हेपुरुषोत्तम तुमको भी मेराजाना स्वीकार होय २१ राजायुधिष्ठिरको मैंने जहां तहां अनेक प्रकारसे समझायाहै और भीष्मजीके शोकस्थानपर भी हमने समझाया२२ सब पर प्रतापी और पंडितहोना भी हमने राजाको सिखाया और उसमहात्माने हमारा वह वचन अच्छीरीतिसे स्वीकार किया २३ धर्म्मज्ञ कृतज्ञ और सत्यवक्ता धर्म्मपुत्र युधिष्ठिरके चित्तमें धर्म्मकी सत्यता उत्तम बुद्धि और मर्यादा सदैव नियतहै २४ हे अर्ज्जुन जो तुमको स्वीकारहै तो उस महात्मा राजासे वह वचन कहो जो कि हमारे प्रस्थान करने से सम्बन्ध रखताहै २५ हे महाबाहु प्राण त्याग दशामें भी उसका अप्रिय नहीं करूंगा फिर द्वारकापुरीजाने में कैसे करूंगा २६ हे कौरव अर्ज्जुन मैं यह सब तेरी प्रीति के अर्थ कहताहूं यह सत्य२ है किसीप्रकारसे भी मिथ्या नहीं है २७ हे अर्ज्जुन यहां मेरे निवास करनेसे बड़ा प्रयोजन प्राप्तहुआ राजा दुर्य्योधन अपनी सब सेना और साथी सहायकों समेत मारा गया २८ हेतात सागराम्बरा पृथ्वी पर्व्वत वन और काननों समेत धर्म्मपुत्र युधिष्ठिर के आधीन होकर आज्ञावर्त्ती है २९ हे पाण्डव अर्जुन कौरवराजकी वहपृथ्वी बहुत प्रकारके रत्नोंसेसंयुक्तहै उसको धर्म्मज्ञ राजालोग सब प्रकार से रक्षा करें ३० हे भरतबंशी जो

कि श्रेष्ठ महात्मा सिद्ध और मुनियों के साथ बैठनेवाला और सदैव बंदीजनोंसे स्तूयमानहै उससे ३१ हेश्रेष्ठ अब तुम मेरेसाथ चलने के बिषयमें राजायुधिष्ठिरसे जाकर पूछो ३२ हे अर्जुन यह शरीर और जोधन मेरे घरमेंहै वह मैंने राजायुधिष्ठिरकी भेंटकिया यह कौरवोंका स्वामी बड़ा बुद्धिमान् युधिष्ठिर सदैव मेरा प्यारा होकर पूजन के योग्य है ३३ हे राजकुमार मेरे निवास करने में तेरे सिवाय दूसरा कोई और हेतु नहींहै हेअर्जुन तेरे बड़ेभाई श्रेष्ठ चलन युधिष्ठिर के आज्ञावर्त्ती होकर यह पृथ्वी नियतहै ३४ इस प्रकारके महापराक्रमी प्रतापी श्रीकृष्णजीके इनसब वचनोंको सुन कर उस अर्जुनने श्रीकृष्णजीका पूजन करके बड़े दुःखसे यह बचन कहा कि ऐसाही होय ३५॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिके पर्व्वणिपंचदशो ऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय॥

अथ ब्राह्मण गीता॥

जनमेजयने पूछा कि हे ब्राह्मण शत्रुओंकोमारकर उससभामें नियत उन महात्मा केशवजी और अर्जुनकी कौनरसी कथा हुई १ वैशंपायन बोले कि उस अर्जुनने निष्कंटक राज्यको पाकर बड़ी प्रसन्न चित्ततासे श्रीकृष्णजीकेसाथ उसदिव्यसभामें बिहारकिया २ हे अर्ज्जुन वह दोनों प्रसन्न चित्त अपने इष्टमित्र भाई बन्धु आदि से युक्त दैवयोगसे उस स्वर्गके मुख्य स्थान के समान सभा में पहुंचे ३ इसके अनन्तर श्रीकृष्णजी समेत पांडव अर्जुननेउस सभा को देखकर यह बचन कहा ४ कि हे महाबाहु श्रीकृष्णजी युद्धके वर्त्तमान होनेपर जो आपने अपना माहात्म्यऔरईश्वररूप मुझ- से कहाथा ५ अर्थात् हे पुरुषोत्तम केशवजी पूर्व्व समयमें भगवान् ने जो वह परमार्थविद्या बर्णन करीथी वह सब मुझ चित्तसे उदा- सीनको विस्मरण होगईहै ६ हे लक्ष्मीपति उन प्रयोजनोंमेंही मेरी बारंबार प्रीति उत्पन्न होती है और आप बहुत थोड़ेही काल पीछे

द्वारकाको जावोगे ७ वैशंपायन कहतेहैं इसप्रकार अर्जुन के वचन को सुनकर महातेजस्वी वक्ताओंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णजीने उस अर्जुनको स्नेहपूर्व्वक यह उत्तर दिया ८ अर्थात् बासुदेवजीने कहा कि हे अर्जुन मैंने तुमको गुप्तरहस्य सुनाया सनातन पुरुष जतलाया सुंदररूपधर्म और सब सनातन लोकोंकाभी वर्णन किया ६ तुमने अपनी निर्बुद्धिता से जो उस को अपने चित्त में धारण नहीं किया वह मुझको वहुत बुरा मालूमहुआ अब वह मेरी स्मृति फिर प्रकट नहीं होगी१० हे पांडव अर्जुन निश्चय करके तू श्रद्धासे रहित और दुर्बुद्धीहै वह परमार्थ विद्या संपूर्णता पूर्व्वक फिर कहना असंभव है ११।१२ मुझ योगसे संयुक्तने वह परब्रह्म वर्णनकियाथा अबउसी प्रयोजनसे मैं उस प्राचीन इतिहासको वर्णन करूंगा१३ जिससे कि तुम बुद्धिसे नियतहोकर श्रेष्ठगतिकोपावोगे हेधर्मधारियोंमें श्रेष्ठ मेरे सब बर्णनको सुनो १४ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले एक अजेय ब्राह्मणस्वर्गलोक और ब्रह्मलोकसेआया उसकाहमनेपूजनकिया१५ हे भरतर्षभ हमसे मिलकर हमलोगों से जो उस ब्राह्मणने अपनी दिव्यबुद्धिसे जो कहाहै उसको तुम किसीप्रकार के संकल्प विकल्प कियेबिनासुनो १६ हेपरमात्मा श्रीकृष्णआपने मोक्षधर्मसे आश्रित होकर जीवोंपर करुणा करनेके प्रयोजनसे जो पूछाहै वह मोहका दूर करनेवालाहै १७ हे मधुसूदन उसको मैं ठीक २ तुमसे कहता हूं हे लक्ष्मीपति तुम सावधान होकर उस कहे हुये को श्रवण करो १८ कि तपसे पूर्ण किसी धर्मज्ञ कश्यपगोत्री ब्राह्मणने दूसरे किसीऐसे अन्यगोत्री ब्राह्मणको पाया जो कि शास्त्रों के गुप्तरहस्यों का जाननेवालाथा १६ जन्म मरणके विषयमें शास्त्रके अनुमानसे उत्पन्न ज्ञान और योगजन्य विज्ञान इनदोनोंमें कुशललोकके सिद्धांत में सावधान सुख दुःखादिका जाननेवाला २० जन्ममरण,के मूल सिद्धांतोंका ज्ञाता पापपुण्य, के जाननेमें पंडित कर्मजन्य, जीवोंकी छोटी बड़ी गतियोंका देखनेवाला २१जीवन, मुक्तके समान घूमने वाला सिद्ध, शान्तरूप, श्रेष्ठजितेन्द्री, शम दमादिब्राह्मणोंकी लक्ष्मी

से प्रकाशमानसबकाउद्धार करनेवाला २२ अन्तर्द्धान गतिका ज्ञाता इसीप्रकार चक्रधारी सिद्धोंके साथमें जानेवालाथा काश्यपने उस को मूल समेत सुनकर २३ उन सिद्धों समेत एकान्तबासी वार्त्ता करनेवाले बायुके समान असंग ऋषिको दैवयोगसे पाया २४ तब उस बुद्धिमान् बड़े साधुब्राह्मण तपस्वी सावधान बड़ी भक्तिसे युक्त धर्मके इच्छावान् काश्यपने उसको पाकर न्यायके अनुसार उसके चरणोंकोपकड़ा २५ काश्यप उस उत्तम ब्राह्मणकोदेखकर आश्चर्य्य युक्त हुआ और उस गुरुरूपको बड़ी सेवासे प्रसन्नकिया २६ हे परंतप शास्त्र और अनुष्ठानसे संयुक्त वह सब उसका किया हुआ कर्म उसने अंगीकार किया तब उसने उसकोभी प्रीतिपूर्व्वक गुरुवृत्तीसे प्रसन्नकिया २७ उस प्रसन्न और तृप्त ऋषिने उस शिष्यके अर्थ जो बचन कहा हेश्रीकृष्ण तुम उसउत्तमसिद्धोकोदेखकर मुझसे सुनो २८ सिद्धने कहा कि हे तात इसलोकमें मनुष्य नानाप्रकारके कर्म और पवित्र पुण्योंसे गतिको और देवलोकमें निवासको पाते हैं २९ परन्तु कहींभी अत्यन्त सुख नहींहै और नकहीं सदैवकेलिये स्थितिहै इच्छा और क्रोधसे पूर्णलोभसे मोहित होकर पापसेवनसे मैंने बारंबार उत्तम स्थानसे पतनहो महादुःखोंकोपाकर शुभाशुभ दुःखरूपी गतियोंको प्राप्त किया बारम्बार जन्म और बारम्बारही मरण हुआ नानाप्रकार के आहारों का भोजन किया नानादेह धारियोंके स्तनों का पान किया ३० । ३१ । ३२ अनेक प्रकारके माता पिता देखे और हे निष्पाप मैंने बिचित्र सुख दुःखभी देखे ३३ बहुधा अपने प्यारे लोगों से पृथक्ता और अप्रिय लोगों के साथ निवास किया दुःख से धनको पाकर भी उस धनका नाश प्राप्त किया ३४ राजासे और ज्ञातिबंधु आदिक से कठिन अपमान और महाअसह्यचित्तऔर देहकी पीड़ाओं को भी प्राप्तकिया ३५ कठिन अपमान असह्य दूसरे का पकड़ना मारा जाना नरक में गिरना और यमलोकमें अत्यन्त कठिन पीड़ाओंको प्राप्तकिया ३६ मैंने इसलोकमें सदैव जरावस्थारोग और शर्दी गर्मी आदिकयोगों

से उत्पन्न अनेक दुःखों को भी देखा ३७ फिर कभी दुःखसे कठिन पीड़ित और असंप्रज्ञात समाधीको पाकर ब्रह्मभाव में आश्रितहो-कर मैंने वैराग्यसे इसद्वैततासे उत्पन्न लोक तन्त्रको चारोंओर से त्यागकिया ३८ फिर मैं लोकमें इस योगमार्ग को जानकर उसमें सदैव अभ्यास करनेवाला हुआ उस अनुष्ठान और चित्तकी शुद्धी से मैंने यह सिद्धीप्राप्तकी ३९ मैं अब फिरयहांमोक्षतक नहीं आऊंगा अपनी शुभगतियोंको और सृष्टिकी उत्पत्तितक सब संसार के जी-वोंको देखताहूं अर्थात् ब्रह्मज्ञान के फलसे शुद्धमोक्ष और सर्वज्ञता मुझको प्राप्तहै हे ब्राह्मणोत्तम इसप्रकार से यह उत्तमसिद्धी मैंने प्राप्तकी अब यहांसे सत्यलोकको जाऊंगा तब वहां जाकर कैवल्य मोक्षकोपाऊंगा जोकि दृष्टिसे गुप्त ब्रह्मलोकहै उसमेंतुमको सन्देह न करना चाहिये हे परंतप फिरमैं इसनरलोक में न आऊंगा ४०।४१। ४२ हे स्थानसे रहित महाज्ञानी मैं तुझपर प्रसन्नहूं अबजो तू मांगे उसको मैं करूंगा अर्थात् जो तेरी इच्छा है उसकोकहो अब उसका यह समय वर्त्तमान हुआहै ४३ मैं उस प्रयोजन को अच्छीरीतिसे जानताहूं जिसके निमित्त तू मेरे पास आयाहै मैं शीघ्रही जाऊंगा इसीहेतुसे तुझको प्रेरणा करताहूं ४४ हे पंडितमैं आपके चलनसे अत्यन्त प्रसन्नहूं तुम ब्रह्मज्ञानको पूछोवह तेरेमनका प्रिय हैउसको मैं कहूं ४५ मैं तेरीइस बुद्धिको बड़ी मानताहूं और अत्यन्त प्रशंसा करताहूं जिसके द्वारा तुमने मुझको जाना हे काश्यप तुम बड़े बुद्धिमानहो ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअनुगीतासुषोडशोऽध्यायः १६ ॥

सत्रहवां अध्याय ॥

वासुदेवजी बोले कि इसके पीछे काश्यपने उसकेचरणोंको स्पर्श करके बड़े कठिन२प्रश्नोंकोपूछा और उसधर्म धारियों में श्रेष्ठसिद्धने उनधर्मोंको वर्णन किया १ काश्यपने कहा कि शरीरकैसे गिरताहै१ कैसे प्राप्तहोताहै २ और किसप्रकार ३ दुःखरूप संसार से पृथक्

होकर चारों ओरसे मुक्तहोताहै २ जीवात्मा ४ प्रकृति अर्थात् मल अज्ञानको त्यागकरके उससे उत्पन्न स्थूल शरीर को किसरीतिसे छोड़ताहै और शरीर से पृथक् ५ होकर किसप्रकारसे ब्रह्मको प्राप्त करताहै ३ यह जीवात्मा ६ अपने किये हुये शुभाशुभ कर्मको कैसे भोगताहै और उस शरीरसे जुदेका कर्म अर्थात् बीजरूप संसार कहां नियत होताहै ४ ब्राह्मणनेकहा कि हे श्रीकृष्णजी इसप्रकार से कर्ममें प्रवृत्त उस सिद्धने उन प्रश्नोंको क्रमपूर्व्वक बर्णन किया उनको मुझसे सुनो ५ सिद्ध बोला कि इसलोकमें जिसजन्मकेमध्य में आयुर्दा और शुभकीर्त्ति उत्पन्न करनेवाला जिन कर्मोंको करता है उन सब कर्मोंका फल समाप्त होनेपर आयुर्दासे नाशयुक्त शरीर वालामनुष्य बिपरीत कर्मको करताहै और नाशके वर्त्तमान होनेपर उसकी बुद्धि बिपरीत होजातीहै ६।७ वह ब्रह्मज्ञानसे रहित अपनी अवस्था शरीर बल और समयको जानकरभी वहुतकालतक अपने स्वभाव से बिपरीत बिषयोंको भोगताहै ८ जबयह अत्यन्तदुःखकारी कर्मों को करताहै तब बहुत खाताहै अथवा कभीनहींभी खाताहै ९ दूषित भोजन मांस और पीनेकी बस्तुपरस्पर बिरुद्ध भोजनशरीरका भारी करनेवाला भोजन और नियत परिमाण से अधिक खाताहै और फिर अच्छे परिपाक होनेपर नहींखाताहै १० कठिन परिश्रम करताहै अपने बित्तसे अधिक संभोग करताहै और मूत्र बिष्ठाके वेग को लोभकरके सदैव रोकताहै ११ रस से संयुक्त भोजनकी बस्तु को खाताहुआ प्रतिदिन शयन करताहै फिर कुसमयपर भोजनादि को करनेसे वह भोजन परिपाक अवस्थामें दोषरूप होकर अर्थात् बात पित्त कफ इनतीनोंके दोषोंको करताहै १२ अपने बात पित्तादि के दोषोंसे मरणान्तक रोगोंको प्राप्तकरताहै और यहभी होता है बिरुद्ध रीतिसे ग्रीवाआदिमें फांसीलगाकरमरजानेको निश्चयकरता है १३ तब उन सब कारणोंसे जीवात्माका शरीर और ऊपर लिखे हुये जीवन का नाश होताहै उसको तुम बुद्धि के अनुसार सुनो १४ कठिनवायुसे चलायमान अत्यन्त वृद्धियुक्त ऊष्मा शरीरको व्याप्त

करके सबइन्द्रियोंको रोकतीहै १५ अत्यन्त बलिष्ठ और शरीर में चारों ओरसे बढ़ीहुई ऊष्मा जीवात्माके मर्मस्थलोंको पीड़ित करके तोड़तीहै उसको तुमभूल समेत समझो १६ इसके पीछे मर्मस्थलोंके टूटने पर वह पीड़ामान जीवात्मा शीघ्रही शरीर से जुदा होताहै अर्थात् शरीरको त्यागकरताहै १७ क्योंकि वह पीड़ाओं से पूर्णशरीर होताहै हे श्रेष्ठब्राह्मण इसकोजानों और हे द्विजोत्तम सदैव जन्म मरणसे व्याकुलचित्त सबजीवधारी १८ शरीरोंको त्याग करते देखनेमें आतेहैं फिर गर्भ संक्रमण और पूर्वजन्म के कर्म से संयुक्त होनेमें मनुष्य १९ उसीप्रकारकी पीड़ाको पाताहै टूटेजोड़ और हड्डीवाला वह मनुष्य जलोंसे वृद्धिको पाताहै २० शरीर में शीतसे क्रोध मिश्रित और कठिन वायुसे प्रेरित ऊष्मा जैसे जैसे कि पांचोंतत्त्वोंमें प्रवेशकरती है उसकोसुनों २१ जो वायु कि ऊपर की ओर अपनीगति रखनेवाली पांचोंतत्त्व और प्राण अपान में नियतहै वहबड़ी कठिनतासे जीवात्माको त्याग करके जातीहै २२ इसप्रकार से जब वह शरीर को त्याग करता है और वह शरीर निर्जीव होकर विश्वास दृष्टि पड़ता है ऊष्मा और श्वासाओं से रहित अशोभित जड़रूप २३ ब्रह्म से वहिष्कृत वह मनुष्य मृतक कहाताहै यह जीवात्मा जिन शरीरके छिद्रोंसे इन्द्रियों के विषयों को जानता है उन्हींसे उन भोजनसे प्रकट होनेवाले प्राणों कोभी जानताहै जो जीव उस शरीरमें कर्मकरता हैवह सनातनहै २४।२५ इसीप्रकार किसी २ स्थानपर दोनाड़ीकेमिलनेमेंजो २ जोड़होगये उसीउसी को मर्मस्थल जानो इसप्रकार से हमने शास्त्र में देखाहै फिरमर्मस्थलोंको टूटनेपर वहप्राण शब्दकरताहुआजीवके हृदयमें प्रवेशकरके शीघ्रही चित्तको रोकताहै इसी हेतुसे वह चैतन्य जीव कुछनहींजानताहै२६।२७मर्मोंके रुकजानेपर मोहसे गुप्तहुआ ज्ञान और निवास स्थान न रखनेवाला वह जीव बायुसे प्रेरित चलायमान किया जाताहै २८ इसके पीछे वह बायु उस लंबीश्वासा लेनेवाले जीव को कठिनता से सहनेके योग्य बहुत श्वासोंकोदि-

लाकर शरीरसे निकालता शीघ्रही इस अचेत शरीरको कंपायमान करताहै २९ शरीरसे जुदा और अपने कर्मोंसे युक्त वह जीवचारों ओरको अपने पाप और पुगयसे संयुक्त होताहै ३० बुद्धिके अनुसार शास्त्र को निश्चय करने वाले ज्ञानी ब्राह्मण अर्थात् अन्य शुभक- र्मी मनुष्य लक्षणोंसे उस जीवको जानते हैं ३१ जैसेकि नेत्रयुक्त मनुष्य अंधेरे में वर्त्तमान खद्योत अर्थात् पटवीजनो को जहां तहां देखतेहैं उसी प्रकार ज्ञान रूपी नेत्र रखने वाले ३२ सिद्ध लोग अपने दिव्यनेत्रसे उस शरीरसे पृथक् गर्भमें आये हुये जन्मलेने वाले जीवको देखते हैं ३३ यहां शास्त्रके द्वारा उसके स्थान तीन प्रकारके देखे गयेहैं यह पृथ्वी कर्म भूमिहै जिसमें कि जीवनियत होतेहैं ३४ सब शरीर धारी शुभाशुभ कर्मों को करके उसके फल कोपातेहैं और यहांही अपने कर्मोंके अनुसार छोटे बड़े भोगोंको प्राप्त करके भोगतेहैं ३५ यहांही बुरेकर्म करनेवाले मनुष्य अपने ही कर्म के द्वारा नर्क को गये यह वह रूप पिछली गतिहै जिसमें कि मनुष्य पकतेहैं ३६ इसी हेतुसे मोक्ष अत्यन्त दुर्लभहै औरउस नर्कसे आत्माकी रक्षाकाकरना अवश्ययोग्यहै ३७ जीवधारी ऊपर की ओर जाकर जिन स्थानोंपर नियतहैं उन स्थानोंको मैं मूल- समेत तुमसे कहताहूं ३८ इसकेसुननेसे नैष्ठिक बुद्धि और कर्मकी निश्चलता को जानोगे जहांपर चन्द्रमंडल है और जिस लोक में सूर्य्य मंडल अपने तेजसे प्रकाशमान है उसस्थान में जोसब नक्षत्र रूप स्थानहैं उनसबको पवित्र कर्मी मनुष्योंके स्थानजानो ३९।४० वहसब अपने २ कर्म फलके समाप्त होनेपर बारंबार गिरते हैं वहांस्वर्ग में भी उत्तम मध्यम और निकृष्ट पदहैं ४१ वहांभी दूसरे की बड़ी प्रकाशमान लक्ष्मी को देखकर सन्तोष नहीं होताहै यह सबगति मैंने तुमसे पृथक् २ वर्णनकी ४२ हेब्राह्मण इसकेपीछे मैं गर्भकी उत्पत्ति का वर्णन करताहूं उसकोभी तुमबड़ी सावधानी से सुनो ४३ ॥

इतिश्रीमन्महाभारते आश्वमेधिकेपर्वणि अनुगीतासु सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

अठारहवां अध्याय॥

दूसरेप्रश्नके उत्तर में ब्राह्मणने कहा कि यहां इसलोक में शुभा-
शुभकर्मोंका नाश नहींहै सबजीव शरीरोंको बारंबार पाकर फलको
पातेहैं १ जैसेकि अच्छा सींचा हुआ वृक्ष बहुत से फलोंको देताहै
उसीप्रकारपवित्रमनसे कियाहुआकर्म बड़ेफलवाला होताहै २ इसी
प्रकार पाप चित्तसे किये हुये कर्मकाभी फलपापों से युक्त होताहै
आत्माइसमनको अग्रवर्त्तीकरकेकर्म में प्रवृत्त होताहै तात्पर्य्य यहहै
कि मनही प्रधानहै कर्मकी प्रधानता नहीं है क्योंकि जैसी चित्तकी
शुद्धी औरमलिनता होगी उसीप्रकारथोड़े पुण्य और पापसेभीबड़ा
फलहोगा ३इच्छा और अज्ञानसे घिराहुआ जीवताहुआ कर्मसेफंसा
हुआ जीवात्माजैसी रीतिसे गर्भमें प्रवेशकरताहै उसप्रश्नकेभी उत्तर
कोश्रवणकरो४ रुधिरसे संयुक्त औरस्त्रीकेगर्भाधानमेंवर्त्तमान बीर्य्य
कर्मजन्यशरीरको उत्पन्नकरताहै वहकर्मशुभ औरअशुभजैसाहोय५
अब शरीर प्राप्तकरनेवाले जीवात्माके मुख्यरूपको कहतेहैं—ब्रह्म
ज्ञानी अपनीसूक्ष्मता और अव्यक्त भावसे कहीं और का और नहीं
होताहै उससनातन ब्रह्म को जानकर मनोभीष्टको पाकर असंग
होताहैवह ब्रह्म सबजीवों के प्रगट होने का कारणहै उसीसे जीव-
धारीसजीव रहतेहैं ब्रह्मरूप होता हुआ वह जीव उसगर्भ के सब
अंगोंमें विभागीपनेसे प्रवेश करके ६। ७ उपाधिरूप चित्तसेइन्द्री
रूपी गोलकमें नियत होकर अभिमान को धारण करताहै उस
धारणासे वह सबउसके अंगबहुत शीघ्र चलायमान होतेहैं अर्थात्
वह गर्भ चैतन्य होताहै ८ सूक्ष्मरूप कैसे शरीरयुक्त होताहै दृष्टिसे
गुप्त कैसे प्रत्यक्षताको पाताहै और असंग कैसे संगी होजाताहै इन
तीनों संदेहोंकोतीनश्लोकोंसेदूरकरतेहैं—जैसेकि थोड़ासाभीसुवर्ण
का जल तांबेकी मूर्त्तिको स्वर्णमयी कर देताहै उसीप्रकार उस
सूक्ष्मजीव का गर्भमें जानाजानो ९ जिसप्रकार दृष्टिसे गुप्त अग्नि
लोहमयी पिण्डमें प्रवेश करके उसको अच्छे प्रकारसे तपाता है

उसीप्रकार तुमभी उस दृष्टिसे गुप्तजीवात्मासे गर्भका चैतन्यहोना जानो १० जिसप्रकार स्थानमें प्रकाशितदीपक देदीप्यमान होताहै उसीप्रकार सबसे पृथक् जीवात्मा स्थूलादि शरीरोंको प्रकाशित करताहै ११ अब दीपकके समान असंग जीवात्माके दुःखादि का कारण कहतेहैं कि वहजो २ शुभाशुभ कर्म करताहै उस पूर्व शरीर के किये हुये कर्म फलोंको अवश्य भोगताहै आशय यह है कि जैसे नियत शरीर न रखने वाली दीपक की ज्योति अंगुष्ठादि उपाधियों के कारण टेढ़ी सीधी मालूम होतीहै उसीप्रकार कर्मजन्य दुखके प्रकट करने वाले चित्तमें दुःख का अंग प्रकट होताहै वास्तव में नहीं है १२ जोउस उपभोगसे खाली होताहै वो फिर दूसरे उपकर्म को तबतक इकट्ठा करता है जब तक कि उस मोक्षयोग में नियत धर्मको नहींजानताहै १३ तीसरे प्रश्न काउत्तर इसस्थानपर उसकर्मको कहताहूं जिसकर्मसे विपरीतयोनियोंमें भ्रमणकरनेवाला वह जीव सुखी होताहै १४ दान, व्रत, ब्रह्मचर्य्य, वेदपाठअथवा उपदेशके समानजप, जितेन्द्री, शान्ती, जीवोंपर दयाकरना १५ चित्तकी एकाग्रता, दया, दूसरेके धनलेनेमें निषेध, पृथ्वी पर चित्तसेभी कभीजीवों के अप्रिय का न करना १६ माता पिता की सेवा, देवता अतिथियोंकापूजन, गुरु पूजन, करुणा, बाह्याभ्यन्तर की पवित्ता, सदैव इन्द्रियोंको आधीनरखना १७ शुभकर्मोंमें प्रवृत्ति यहसब सत्पुरुषों के व्रत कहाते हैं इससे वह धर्म प्रकट होता है जोकिप्राचीन सृष्टियोंको रक्षाकरताहै १८ इसप्रकार के गुणसदैव सत्पुरुषोंमें देखेहैं वहांभी यह मर्य्याद प्राचीन है कि आचार उस धर्मकोही कहताहै जिस में कि शान्त पुरुष नियतहैं १९ उन्हों- में वहीकर्म नियत कियाहै जोकि सनातन धर्महै जो उसको अच्छी रीतिसे प्राप्तकरताहै वह दुर्गति को नहीं पाताहै २० धर्ममार्ग में क्षीणता पानेवाली सृष्टिइसी आचारसे सुमार्ग मेंलायीजाती है जो योगीहै वही मुक्तहै क्योंकि वहकर्म कर्त्ताओं से अधिकहै २१ धर्मसे कर्मकर्त्ता लोगोंका जहां जिसप्रकार से कल्याणहोताहै उसीप्रकार

संसारसेभी उसका उद्धार बहुत काल में होगा अर्थात् कर्मकर्त्ता लोगोंकी मुक्ति बड़ी विलम्ब से होती है २२ इसीप्रकार जीवात्मा पूर्ब जन्मके कियेहुये कर्मको सदैव प्राप्त करताहै सब हेतु वहहै जिस के कारणसे ब्रह्मरूप होनेवाले जीवात्माने यहां आकर जीवरूपको पाया २३ इसके शरीरका होना प्रथम किससे कल्पना कियागया है ऐसा सन्देहजो संसार में है उसकोभी में अब वर्णन करताहूं २४ सब लोक का पितामह माया सबलब्रह्म है उस का पिता शुद्धब्रह्महै उसने अपने शरीर अर्थात् अव्याकृत आकाशको उत्पन्न करके सूत्र आत्मारूप फिर तीनोंलोकों को और स्थावर जंगम जीवोंको उत्पन्न किया २५ इसकेपीछे सब सृष्टिमें व्याप्त होनेवाले जीवों के शरीर प्रकट करनेके कारणरूप अग्नि जल और अन्नादिकों को प्रकटकिया उसी शरीररूप प्रकृतिसे यह सब व्याप्तहै उसीको लोकमें उत्तमजानो २६ इसशरीरको जड़कहते हैं दूसरा जीव ईश्वर रूप धारण करनेवाला है उसकोही अबिनाशी कहते हैं क्षर अक्षर शुद्ध अर्थात् शरीर प्राण और ब्रह्म के मध्य में क्षर अक्षर नामयोग सब जीवों में पृथक् २ है जोकि मोक्षदशा में रस्सीमें कल्पित सर्पकी समान नाशको पाताहै २७ वेदमेंदृष्टिआने वाले अद्वितीय अद्वैतने सब स्थानपर जंगम जीवोंको उत्पन्नकिया है अर्थात् वह एक अकेलाही अधिक रूपों से उत्पन्न हुआ २८ इस प्रकारसे एकताको सिद्ध करके ब्रह्मकी रूपान्तर दशा जीव नामकी अल्पकालीनता सिद्धकरतेहैं उस शुद्धब्रह्मने उस शरीर धारणकरने का समय नियतकिया जोकि देवता मनुष्य पशु पक्षी आदिजीवोंके शरीरों में घूमताहुआ बारंबार जन्मलेताहै २९ जिसप्रकार इस संसारकी अविनाशतामें कोईबुद्धिमान् पूर्व्वजन्मका दृष्टात्माहुआहै उसकोमें वर्णन करताहूं ३० जैसे कि सुख दुःखादिक नाशमान हैं जो उनको अच्छीरीति से देखताहै अथवा अपवित्र वस्तुओं के सं-ग्रहरूपशरीरको और कर्मजन्य नाशको जानताहै ३१ और जो कुछ सुखादिकहैं वहसब दुःखरूपहैं ऐसाजानकरबिचारकरताहुआ ज्ञानी

होताहै तौभी यह भयकारी संसारसागर बड़ा दुर्गम होगा ३२ प्रधान पुरुष को जाननेवाला और जरा मरण और रोगों से पूर्ण मनुष्य सब चैतन्यवान् शरीरों में एक चैतन्य को देखताहै ३३ उस एकत्व दृष्टिसे सबके लयस्थान रूप ज्योति स्वरूपको निश्चयकरता हुआ बैराग्यवान् होताहै हे बड़ेसाधू उसके उपदेशको मैं बड़ी सत्यतासे बर्णन करूंगा ३४ हे वेदपाठी इस सदैव बर्त्तमान न्यूनता से रहित का जो उत्तम ज्ञानहै उस मेरे कहेहुयेको संपूर्णता पूर्व्वक समझो ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअनुगीतासुअष्टादशो ऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

ब्राह्मणनेकहा कि जो ज्ञानी एकब्रह्ममेंलय और मौन अर्थात् यह सब मैं हूं यह अभिमान न करनेवाला अथवा इससे प्रकटहूं यह कुछ न बिचारता तीनों शरीरोंको क्रम पूर्व्वक परस्पर लय करके ब्रह्मरूप नियत होजाय वह संसारके बंधनसे छूटजाताहै १ सबका मित्र सहनशील इन्द्रियों को आधीन रखनेवाला जितेन्द्री प्रत्यक्ष भयको अर्थात् योगसिद्धी और कर्मसे च्युत और इतने कालपर्य्यन्त भी योग सिद्ध नहीं हुआ इस दुःखका त्याग करनेवाला मनका जीतनेवाला मनुष्य मुक्त होताहै २ जोनियममानपवित्रअहंकारादि से रहित मनुष्य सब जीवधारियों में आत्माके समान बिचरे वह सबओर से मुक्त है ३ जीवन मरण और सुख दुःखादि हानि लाभ और प्रिय अप्रियमें जोसमानहै वह मुक्तहोताहै ४ जोकिसी बस्तुकी इच्छा नहीं करताहै किसीका अपमान नहींकरताहै सुख दुःखादि योगोंसे रहित और संसारकी प्रीतिसे पवित्र चित्तहै वह मुक्त होता है ५ जो शत्रु न रखनेवाला भाई बेटोंसे जुदा धर्म्म अर्थ कामको त्याग करनेवाला अर्थात् केवल मोक्षमार्ग्ग में नियत और अनिच्छावान्है वह मुक्त होताहै ६ अब ज्ञानफलको कहतेहैं जो धर्माधर्मसे, रहित पूर्वोपचित कर्मका त्यागनेवाला शरीरों का स्वामी,

तत्त्वोंके नाशमें शान्तचित्त और अद्वैतहै अर्थात् सबका आत्मारूपहै वह मुक्तहोता है ७ जो अनिच्छावान् संन्यासी सदैव इसजगत्को बिनाशमान और पीपलके वृक्षकी समान जन्म मृत्यु और जरावृद्धा से संयुक्त देखे ८ वैराग्यरूप बुद्धि रखनेवाला सदैव आत्म दोषों का त्यागनेवाला है वह पुरुष थोड़ेही काल में आत्म बंधनसे छूटनेवालाहै ९ अर्थात् गन्ध रस स्पर्श शब्द और परिग्रहसे पृथक् अरूप बुद्धिसे परे चिदात्मा को देखकर संसारसे छूटताहै १० जो पुरुष पंचतत्त्वोंके गुणोंसे रहित अर्थात् स्थूल शरीरसेपृथक् अमूर्त्ति अर्थात् सूक्ष्म शरीरसेरहित कारणनामशरीर न रखनेवाला निर्गुण गुणभोक्ता परमात्मा को देखताहै वह मुक्त होता है ११ अर्थात् शरीर और बुद्धिके द्वारा चित्तके सब संकल्पोंको त्याग करके बड़ी सुगमता से ऐसे निर्वाण मोक्षको पाताहै जैसे कि इंधन से रहित अग्नि होय १२ सब संस्कारोंसे पृथक् सुखदुःखादि योगोंसे जुदा स्त्री आदिक परिग्रह न रखनेवाला जो पुरुष तपस्याकेद्वारा इन्द्रियों के समुदाय को आत्मामें लयकरे वह मुक्तहीहै १३ तदनन्तर सब संस्कारों से रहित वह पुरुष उस सनातन ब्रह्मको पाताहै जोकि सब से परे शान्त अचल सदैव रहनेवाला और अविनाशीहै १४ इसके अनन्तर अब उस योगशास्त्रको वर्णन करताहूं जिससे उत्तम कोई नहींहै उसीकेद्वारा योगीजन ध्यानसे शुद्ध आनन्दरूप ब्रह्मकोदेखते हैं १५ मैं उसके उपदेशको ठीक२ कहूंगा उसको तुम चित्तसेसुनो जिन उपायोंसे चित्तको शरीरमें अन्तर्मुख करता हुआ उस आदि अन्तरहित परमात्माको देखताहै १६ प्रथम इन्द्रियोंको अपने २ बिषयों से हटाकर चित्तको आत्मारूप क्षेत्रज्ञमें धारण करे अर्थात् प्रथम अपने धर्मका अभ्यासरूप तपको तपकर फिर मोक्षयोगको अभ्यास करे १७ तपस्वी सदैव आत्मामें तन्मय बुद्धिमान् ब्राह्मण आत्माको आत्मामें देखता चित्तसे योगशास्त्रका अभ्यास करे १८ जो यह साधूआत्माको आत्मामें प्रवेश करनेवाला होताहै तब वह एकान्त अभ्यासी मनुष्य अपनी आत्मामेंही देखताहै १९ नियम-

वान् सदैव योगमें प्रवृत्तचित्त बुद्धिमान् जितेन्द्री होकर जो पुरुष इसरीतिसे परमात्मामें तदाकार है वह आत्मा ब्रह्माकार बुद्धिसे आत्माको देखताहै २० जिसप्रकार कि स्वप्नमें स्थूलशरीरसे पृथक् यह मनुष्य देखकर फिर जाग्रत अवस्थामें भी देखताहै जैसे कि ऊषाने स्वप्नमें अनरुद्धको देखाथा उसीप्रकार अच्छायोगी समाधी में अपने आत्माको विश्वरूप देखकर व्युत्थान दशामें भी विश्वको आत्मारूप देखताहै २१ जैसे कि कोई मनुष्य सींकको मूजसे खेंच कर देखे उसीप्रकार योगीभी शरीरसे आत्माको जुदाकरके देखता है २२ मूजको शरीरकहा सींकको आत्मारूपकहा यह श्रेष्ठ दृष्टांत बड़े उत्तम योगीलोगों से जानागया है २३ जब जीवात्मा अपने आत्माको परमात्मामें अच्छीरीतिसे संयुक्त देखताहै तब एकत्वता से इससंसारमें उसका कोई ईश्वर नहींहै जोकि तीनोंलोकोंकाभी स्वामीहै वहभी नहीं २४ वह योगीअपनी इच्छाके अनुसार देवता गन्धर्व और मनुष्योंके शरीरोंको प्राप्तकरताहै और जरा मरणदशा ओंसे पृथक् होकर न शोचताहै न प्रसन्न होताहै २५ वह इन्द्रियों को स्वाधीन रखनेवाला योगी देवताओं के देवभाव को भी प्राप्त करताहै और इस बिनाशवान् शरीरको त्यागकरके अबिनाशी ब्रह्म कोपाताहै अर्थात् विदेहकैवल्य तकही ऐश्वर्यहै २६ जीवों के नाश-वान् होनेमें उस विदेह मुक्तयोगी को भयनहीं उत्पन्न होताहै दुःखी जीवोंके मध्यमें वह किसीसे कष्ट नहीं पाताहै २७ अनिच्छावान् शान्तचित्त योगी उन दुःख शोक और भयसे कुमार्गी नहीं होताहै जो कि संसारके स्नेह और प्रीतिसे प्रकट और भयकारीहैं २८ न शस्त्रसे वहमरसक्ताहै और न उसकी मृत्युहोतीहै यहांलोकमें इससे अधिक सुख कहींदेखनेमें नहींआताहै २९ वह आत्माको अच्छीरीति से मिलकर आत्मामें तन्मय होकर नियत होताहै जरा मरण आदि दुःखोंसे रहित वह योगी बड़े आनन्दपूर्वक सोताहै ३० वह योगी इस मनुष्य शरीरको त्यागकरके इच्छाके अनुसार देवता और म-नुष्यादिकोंके शरीरोंको प्राप्तकरताहै परन्तु किसी दशामें भी योगके

ऐश्वर्य्यभोगनेवाले योगीको योगसे अप्रीति करना योग्य नहींहै ३१ जब आत्माको परमात्मा में अच्छीरीतिसे तन्मय करके अपने को देखताहै तब साक्षात् इन्द्र और इन्द्रके पदकी भी इच्छानहीं करतेहैं अर्थात् अपूर्णयोगमेंही भोगोंकीइच्छा होतीहै पूर्णयोगमेंनहीं होती है ३२ ब्रह्मप्राप्ती करनेवाला ध्यानका अभ्यासी पुरुष जिसप्रकार योगको पाताहै और वेदान्त श्रवणकेसाथ उपदेशको युक्तिसेबिचार कर जिस पुर अर्थात् शरीरमें नियत करे उसकोभी सुनो ३३ उस पुरके भीतरही चित्तको नियत करनाचाहिये बाहर न करनाचाहिये पुरके मध्यमें नियत होता हुआ जिस स्थानपर निवासकरे उस स्थानके बाहर और भीतर चित्तका धारण करना योग्यहै ३४इसका वह चित्त जिससमय चक्र स्थानपर पूर्णब्रह्मको ध्यान करके नियत होताहै उस समय पर पूर्णब्रह्मके सिवाय कुछनहीं है ३५ मनुष्यों से रहित निश्शब्द बनमें इन्द्री समूहों को आधीन करके एकाग्र-चित्त करके शरीर के बाहर और भीतर पूर्णब्रह्म को ध्यान करे३६ अब इस योगके साधनोंको कहतेहैं दांतोंसे भोजनको विचारे अ-र्थात् शुद्ध आहारकरे क्योंकि आहार शुद्धी से चित्तशुद्धी चित्तशुद्धी से स्मरण और स्मरण से सब सन्देहों की निवृत्ती होतीहै तालु और जिह्वाको ध्यान करे क्योंकि तालू आधार और जिह्वाधारण होनेके योग्यहै जैसे कि ईश्वरका बचनहै कि मुखमें जो ऊंचागर्त्त है उसमें उलटी जिह्वाको विचारपूर्व्वक संयुक्त करे वह खेचरीमुद्राहै और तैत्रेयजीका भी बचनहै कि कपालके छिद्रमें उलटी जिह्वाको लगावे और दोनों भृकुटियोंके मध्यमें अपनी दृष्टि नियत करे इस को खेचरीमुद्रा कहतेहैं जिह्वाके मूलसे नीचेका जो भागहै उसको ग्रीवा कहते हैं और उससे नीचे कण्ठ तालुहै उन दोनों से नीचे कण्ठ कूपहै उससे नीचेपुष्पहै उसको भी ध्यानकरे वहांपर धारणा योगमें निश्चय करातीहै और कण्ठ कूप पर धारणा होनेसे क्षुधा तृषा दूर होजातीहै हृदयके आश्रय स्थान ब्रह्मको और उसीप्रकार हृदयी बंधन रूप उन एकसौ एक नाड़ियोंको जो कि ऊपरके लोकों

के जाने के मार्गहैं ध्यानकरे ३७ हे मधुसूदनजी मेरे इसप्रकार के वचनों को सुनकर उस शिष्यरूप ब्राह्मणने के विद्या में निश्चय रखनेवालेसम्बन्धसे प्रयोजनको वर्णनकिया अर्थात् फिरइसीकठिन मोक्ष धर्मको पूछा ३८ कि श्लोक सैंतीस में पांचप्रयोजन हैं उनमें सेश्लोककी आदिकेतीन प्रयोजनोंको पूछताहै कि यहबारंबारखाने की वस्तु उदरके पक्काशयमें कैसे पकतीहै कैसे रसरूपता को पाती है कैसे रुधिर रूपको प्राप्त करती है ३९ और इसीप्रकार मांस मज्जा नस और हाड़रूपको कैसे पाती है जीवोंके यह सब शरीर स्त्रीके उदर में किसरीतिसे ४० वृद्धिको पातेहैं और बड़े होनेवाले को बल कैसे बढ़ताहै और रुकेहुये मल मूत्रका पृथक् २ निकलना कैसे होताहै ४१ मनुष्य किसप्रकारसे श्वासको छोड़ताहै अथवा फिर किसरीतिसे श्वासको आकर्षण करताहै तीसरेबातको योगमें निष्प्रयोजन जानकर उसको न पूछकर चौथेको पूछताहै—यह आत्मा शरीरके भीतर किस स्थानमें प्रवेश करके नियत होताहै— अब पांचवें को पूछताहै किजो चेष्टावान् जीवशरीरको धरण करता है वह नाड़ीके मार्गोंके द्वारा किसप्रकार से सूक्ष्म शरीरको प्राप्त करताहै वह नाड़ी मार्ग कैसेरंगवालेहैं और उनमार्गोंसे कैसे शरीर में प्रवेश करताहै (आशय) इन सब प्रश्नोंमें से दोप्रश्नोंके निश्चय करने के अर्थ ब्राह्मणगीताहै दूसरे दोको कहनेवाला गुरु शिष्य का प्रश्नोत्तरहै पांचवां जहां तहां सिद्धकिया ४२ । ४३ हे निष्पाप भगवन् इस को यथार्थ कहने को आप योग्य हो हे लक्ष्मीपति शत्रुओं के बिजय करनेवाले महाबाहु श्रीकृष्ण जी इसप्रकार उस ब्राह्मण से संयुक्त होकर मैंने ४४ शास्त्रके अनुसार उत्तर दिया कि जैसे घरका स्वामी अपने धनागार में बर्त्तन भांड़ोंको रखकर फिर उसमें जाकर उन सब अपने पात्रादिकोंका जाननेवाला होताहै ४५ उसीप्रकार योगी अचलेन्द्रियों के द्वारा मनको शरीर में रोककर वहां आत्मा को खोजकरे और चारों ओर से मोह अर्थात् भूलको त्यागकरे ४६ इसरीति से सदैव योगका अभ्यास करनेवाला शुद्ध

चित्त मनुष्य थोड़ेही समयमें उस ब्रह्मको पाताहै जिसको कि देख कर प्रधानका जाननेवाला होताहै ४७ यह ब्रह्म नेत्रोंसे देखने में नहीं आता किसी इन्द्रीसेभीनहीं जानाजाता यह बड़ा श्रेष्ठ आत्मा केवल चित्तरूपी दीपकही से देखने में आताहै वह निराकार होकर भी सब ओरको हाथ पैर नेत्र शिर और मुखरखनेवालाहै ४८ सब ओरको कान रखनेवालाहै लोकमें सबको व्याप्त करके नियत है यह जीव संप्रज्ञातदशा में शरीर से पृथक् होनेवाले आत्माको देखताहै ४६ तब वह जीवात्मा उस सगुणब्रह्मको लयकरके शरीर में चित्तको रोकता और चित्तसेही हँसताहुआ निर्गुण ब्रह्मको देखताहै इसरीति से उस ब्रह्मको आश्रय स्थान करके फिर अहं ब्रह्मास्मि नाम महावाक्यार्थमें मोक्षको पाताहै ५० हे श्रेष्ठ ब्राह्मण यह सब मैंने गुप्तरहस्य तुझसे कहा अब मैं तुझसे पूछकर बिदाहुआ चाहताहूं मैं धारण करूंगा हे ब्राह्मण तुम सुख पूर्व्वक जावो ५१ हे श्रीकृष्ण जबमैंने इसप्रकारके वचन कहे तब वह महातपस्वी तेजव्रत शिष्यरूप ब्राह्मण अपनी इच्छाके अनुसार चलागया ५२ वासुदेवजी बोले कि हे राजा तब वह मोक्षधर्म में अच्छीरीति से आश्रित उत्तम ब्राह्मण मुझसे इसवचन को कहकर उसी स्थानपर अन्तर्द्धान होगया ५३ हे अर्ज्जुन क्या तुमने चित्तकी एकाग्रतासे इसकोसुना और तब उससमय रथपर नियत होकरभी तुमने इसी ज्ञानकोसुनाथा ५४ हेअर्जुन एकाग्रचित्तकिये बिना यह ज्ञान ऐसे मनुष्यको अच्छीरीतिसे नहींआसक्ता जो कि अन्तःकरणसे म्लानहै और जिसने विद्याकी संप्रदायको नहीं जानाहै ५५ हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ यह देवताओंका गुप्तसेगुप्त ज्ञान मैंने तुझसे कहा हे अर्जुन यह ज्ञान कभी किसी मनुष्यने नहीं सुना है ५६ हे निष्पाप तेरे सिवाय दूसरा मनुष्य इसकेसुननेको योग्य नहीं है अब यह ज्ञान बिना एकाग्रचित्त किये जाननेके योग्य नहींहै ५७ हे कुन्तीके पुत्र यज्ञादिक कर्म्म करनेवाले मनुष्यों से देवलोक पूर्ण होरहा है यह मनुष्य शरीर से छूटना देवताओंको प्रिय नहीं है ५८ हेअर्जुन वह

गति सबसेपरहै जिसको कि सनातनब्रह्म कहतेहैं शरीर त्यागनेके पीछे जिसमें प्रवेशकरके अविनाशीपनेकोपाताहै और सदैवआनन्द रूपरहताहै ५६ जो स्त्री वैश्य और शूद्र पापयोनी होते हैं वह भी इसआत्मदर्शननाम धर्ममें नियत होकर मोक्षकोपातेहैं ६० हे अर्जुन फिर बहुत शास्त्र जाननेवाले अपने धर्ममें तत्पर सदैव ब्रह्मलोकको चाहनेवाले ब्राह्मण और क्षत्रीलोग क्योंनहींपावेंगे ६१ यह सहेतुक ज्ञानका उपदेश किया और उसके साधन में जो उपाय हैं और जो सिद्धी फल मोक्ष और दुःखका निर्णयहै वह भी वर्णन किया ६२ हे भरतर्षभ इससे बढ़कर और परे कोई सुख नहीं है हे पाण्डव जो बुद्धिमान् श्रद्धामान समर्थ मनुष्य इसलोक के धनादिक सुखोंको असार रूप तृणकी समान त्यागकर देताहै वह इन शम दमादि उपायोंसे परमगतिको पाताहै ६३ । ६४ इतनाही कहना उचितहै इससे अधिक कुछनहींहै हे अर्जुन सदैव योगमें प्रवृत्तचित्त मनुष्य का योग छः महीने में सिद्ध होता है ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकपर्व्वणिअनुगीतायामेकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

वासुदेवजी बोले कि मैं वैश्वानर रूप होकर प्राण अपान को साथलेकर चारप्रकारके भोजनोंको पचाताहूं इसबिषय से संबंध रखनेवाले उस प्राचीन इतिहासको भी कहताहूं हे भरतर्षभ अर्जुन जिसमें कि स्त्री और पुरुषका प्रश्नोत्तरहै १ किसीब्राह्मणीस्त्रीने ज्ञान बिज्ञानमें पूर्ण एकान्त में बैठेहुये अपने पति ब्राह्मण को देखकर यह बचन कहा २ कि अग्निहोत्रादिक त्याग करनेवाले निर्दयी मेरी अनन्यगतिसे अज्ञान तुझ पतिके पास शरणागत होनेवाली मैं किसलोकको जाऊंगी ३ भार्य्या अपने पतिके कर्मसे प्राप्तहोनेवाले लोकोंको पातीहैं यह हमने सुनाहै मैं वहां तुझ पतिको पाकर कौ-नसी गतिको पाऊंगी ४ इसप्रकारके भार्य्याके बचनोंको सुनकर

उस शान्तात्मा हंसते हुये ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि हे निष्पाप सुभगे मैं इस तेरेबचनकी निन्दा नहींकरताहूं ५ जो यह सत्य कर्म प्रत्यक्ष दृष्टिके आगे नियत दीक्षा ब्रतादिक बर्त्तमानहै उसकोकर्म कर्त्ता लोग कर्म्म अकर्म्म निश्चय करतेहैं ६ ज्ञानसे रहित मनुष्य कर्मके द्वारा मोहको पाते हैं इसलोक में एक घड़ी भर भी कर्म्मके बिना मोक्ष आश्रम संन्यास प्राप्त नहीं होते हैं ७ जीवधारियों में शुभाशुभकर्म मन और बाणीसे जन्मस्थिति नाश और योनियोंके बहुतसे प्रकार बर्त्तमान होते हैं ८ सामान रखनेवाले सोमयज्ञादिक कर्म मार्ग राक्षसोंसे भ्रष्ट और नाशहोनेपर उनसे प्रीतिको हटाकर मैंने दोनों भृकुटियों के मध्य में नियत अव्यक्तनाम स्थान कोदेखा ९ जहांपर वह अद्वैत ब्रह्महै और जहांपर इड़ापिंगलानाम नाड़ीहैं बुद्धिको प्रेरणा करनेवाला बायुजीवोंको धारण करताहुआ सदैवजिसस्थानपर चेष्टाकरताहै १० ब्रह्माआदिक योगीजिसस्थान पर जिसअबिनाशी ब्रह्मकी उपासनाकरतेहैं ११ वह अबिनाशीब्रह्म घ्राणेन्द्रीसे सूंघनेके योग्यनहीं जिह्वासे स्वादुलेनेके योग्यनहींस्पर्श इन्द्रीसे छूने में नहीं आता केवल मनसेही जानाजाताहै १२ जोनेत्रोंसे दृष्टिमें नहींआता बुद्धिसेभी परेहै रूपरसगन्ध स्पर्श और शब्दनाम लक्षणोंसे रहितहै १३ यहसृष्टि जिससे प्रकटहोतीहै औरजिसमेंनिबासकरतीहै प्राण अपान समान ब्यान उदान १४ यहपांचों जिससे प्रकटहोतेहैं और उसीमें प्रवेश करजातेहैं अर्थात् उनका प्रकटहोना और कर्ममें प्रवृत्तहोना यहतो उत्पत्तिहै और उसमें प्रवेश होजाना ही प्रलयहै प्राण और अपान यहदोनों समान और ब्यानकेमध्य में चेष्टा करनेवाले हैं समान नाभिमंडलमें नियतहैब्यान सबशरीर में ब्यापकहै १५ दोनोंभृकुटियोंमें अपान और प्राणके रुकजानेपर समान और ब्यानभी रुकजातेहैं परन्तुसब जोड़ों में नियत उदान उनप्राण और अपानके मध्यमेंब्याप्त होकर नियतहै इसीहेतुसेयह प्राण और अपान सोनेवाले मनुष्यको त्यागनहीं करतेहैं १६ प्राणों के चलायमान होने को उदान कहते हैं अर्थात् जीवात्माओंकी

उपाधीसब प्राणएकही उदानमें नियतहैं इसीहेतुसे ब्रह्मबादीपुरुष प्राणोंके बिजयी तपको अथवा तप के बिचारने को मुझमेंही निष्ठा पानेवाला निश्चय करतेहैं १७ मुझशब्दके अर्थरूप बैश्वानर नाम अग्निकोदिखातेहैं परस्पर भोजनरूप और शरीरमें भ्रमण करने-वालेउन सब प्राणोंके मध्यमें अर्थात् नाभिमंडल में वैश्वानर नाम अग्नि सातरूपसे क्रीड़ा करताहै १८ घ्राण जिह्वा चक्षुत्वक् श्रोत्र यहपांचों इन्द्रियां और मनबुद्धि उसवैश्वानर नाम अग्निकीजिह्वा हैं १९ शब्दस्पर्श रूपरस गन्ध और मानने जाननेकेयोग्यप्रत्येक दोदोस्पर्शवाले समेतमुझ बैश्वानररूप अग्नि की समिध हैं २० शब्दस्पर्श रूपरस गन्ध मानना जानना नाम सातोंबिषयकेस्वादु लेनेवाले यहसातो श्रेष्ठऋत्विज होतेहैं २१ हेसुभगे तुमसदैव इन सातोंको शब्दस्पर्श रस रूप गन्धको मानने और जाननेमेंदेखो२२ घ्राणेन्द्री आदिके अभिमानी देवतारूप सातअग्नियोंमें गन्धादिक सातोंबिषयोंके होमनेवाले पुरुष अभिमानी होतेहैं और ज्ञानी उन अभिमानोंको अपनेसे जुदामानकर उनब्रह्म से उत्पन्न होनेवाली अग्नियोंमें आगेके श्लोकमें लिखेहुये पृथ्वी आदिकको उत्पन्नकरते हैं २३ पृथ्वी आकाश जल अग्नि मनबुद्धि यह सातों संघात रूप प्रत्यक्ष स्थान रूप चैतन्य कहेजातेहैं२४ हव्यरूपसेसब बिषयउस गन्धादिककाज्ञान रखवाले उसीवृत्ती में प्रवेश करतेहैं अर्थात् जो स्वप्नावस्थामें रूपादिक बासना रूपसे नियत होतेहैं वह जाग्रत अवस्थामें फिरप्रकट होतेहैं २५ वहसब उस सृष्टि के स्वामी सब के आवागमन के आश्रय रूपमेंही लयहोतेहैं इसीसे गन्ध उत्पन्न होताहै उसीसे रसरूप स्पर्श और शब्द प्रकट होताहैउसीमें संश-यात्मक चित्तभी उत्पन्नहोताहै २६।२७ उसीसे निश्चयत्मिका बुद्धि उत्पन्न होतीहै इसउत्पत्तिको सातप्रकारकाजानो २८ इसीमार्ग से प्राचीन ऋषियोंने घ्राणादिक इन्द्रियोंका रूपवेदसे जानाहैमान अर्थात् परिमाणमेह अर्थात् परिमाणके योग्य माता अर्थात् संख्या करनेवाला इनतीनोंसेपूर्णजो ब्रह्महै उसके आह्वानोंसे पूर्णतीनों

लोक अपने ज्योतिरूप आत्मासेपूर्ण होतेहैं अर्थात् यह सब सृष्टि ब्रह्मदृष्टिसेही प्रकटहै २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांविंशतितमोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय ॥

ऊपरकहाहै कि मैंद्रष्टा आदिक हूं यहअभिमान रखनेवाला उन इन्द्रियोंको कल्पना करके फिर उनको तृप्तकरताहै अब कहतेहैं कि प्राणोंसेदेवता और देवताओंसे लोक प्रकटहुये अर्थात् इन्द्रियांही अपने कल्पित देवताओंकेद्वारा कल्पित लोकोंको तृप्त करतीहैं इस वचनसे भूतात्मामें कल्पना नहींहै किन्तु जड़मेंहै इसके निश्चय करनेको ब्राह्मणने कहा कि ईश्वरकी दृष्टिसे संबन्ध रखनेवाली इस उत्पत्तिके विषयमें इसप्राचीन इतिहासकोभी कहताहूं अवदश होताओंका जैसा विधान होताहै उसकोसमझो १ हेतेजस्विनी श्रोत्र, त्वक्,चक्षु, जिह्वा,नाक,दोनोंचरण,दोनोंहाथ,लिंग,गुदा, यहदशों इन्द्रियां दशहोताहैं २ शब्द,स्पर्श,रूप,रस, गन्ध,वचन,कर्म गति, वीर्य मूत्र और विष्टाका त्यागना यही दशहव्यहैं ३ दिशा, वायु, सूर्य्य,चन्द्रमा,पृथ्वी,अग्नि,विष्णु,इन्द्र,प्रजापति, मित्र यह दश अग्निहैं ४ हे तेजस्विनी दशोंइन्द्रियां होताहैं दशहव्यहैं औरविषयनाम समिध दशों अग्नियोंमें होमीजातीहैं ५ चित्तनाम श्रव और अग्नि दक्षिणारूपधन जिनको कि हवन करनेके पीछे त्यागकरते हैं इसीप्रकार इन्द्रियोंकोभी उनके विषयों समेत आत्मामें लयकरके मनकी उत्पत्तिके कारणरूप पाप पुण्य कोभी त्यागकरे इसकेपीछेजो शेषरहताहै अवउसको कहतेहैं वहज्ञान स्वरूपहै जोकिअसंग और अन्तवालाहै ज्ञानसेपृथक् यह चित्तादिक सब समानहीजगत नामसे प्रसिद्धहुआ यहीज्ञानहै ६ सबजाननेके योग्य चित्तही है उसका प्रकाशक ज्ञान केवल साक्षीहै क्योंकि वीर्य्यसे उत्पन्न होनेवाले स्थूल शरीरका अभिमानी जीवात्मा सूक्ष्म शरीरोंकाभी अभिमानी होताहै अभिमान जुदानहींहै ७ शरीरका अभिमानीजी-

वात्माहै और उसगृहपतिका निवाश स्थान हृदयहै उस हृदयसेही दूसरामन प्रकट होताहै और वही मन मुखहै जिसमें हव्य अर्थात् अग्नि जल अग्नि डालाजाताहै आशयंयहहै कि चित्त अन्नरूपहैप्राणजलरूपहै बचन अग्निरूपहै क्योंकि हव्यका तेज जठराग्निको पाकर शीघ्रही बचन रूपसे विपरीत दशा करताहै ८ उस्से वेदप्रकट हुआ उसके पीछे पृथ्वी संबंधी चित्त उत्पन्न हुआ इसीहेतुसे चित्तरूप सूत्रात्मा वेदके वचनोंकोबिचारताहै तबप्राण नाम बायु जो कि पीत नीलादिबर्णसे पृथक् प्रकटहोताहै वहचित्तकाकर्त्ता अथवा चित्त प्राणका आगेपीछे होताहै अर्थात् मनके रुकनेपर प्राण और प्राणके रुकनेपर मनभी रुकजाताहै ९ ब्राह्मणी किस कारण प्रथम बचन प्रकटहुआ और किसहेतुसे मन उत्पन्नहुआ जब कि मनसे बिचाराहुआ बचन प्रकट होताहै १० किस प्रमाणसे प्राण मनके आश्रयहै सुषुप्तिअवस्थामें वृद्धप्राणने बिषयों को क्यों नहीं प्राप्त किया और उसदशामें इसकीज्ञान शक्तिको कौन दूरकरता है ११ ब्राह्मणबोला कि सुषुप्तिअवस्था में अपान प्राणका स्वामी होकर उसको अपने आधीन करताहै इसीहेतुसे प्राण सुषुप्ति अवस्था में चित्तके लय होनेपर आप लय नहीं होता परन्तु अपानको अपनी स्वाधीनतामें करकेसमाधिअवस्थामें मनकेलयहोने में आपभी लय होजाताहै उसप्राणनाम गतिको मनकीगति कहते हैं अर्थात् वही बाहरजानेका साधनहै इसीहेतुसे चित्तवेदको बिचारता है १२ तुम जिसमनके कारणरूपबचनको मुझसेपूछतीहो इसहेतु से उनदोनों केपरस्पर प्रश्नोत्तरोंको तुझसे कहताहूं १३ दोनों बाणी और मनने जीवात्माके पास जाकर पूछा कि हेप्रभु हम दोनोंमें जो श्रेष्ठ होय उसको आप कहिये और हमारे चित्तके सन्देहको दूर करो१४तब जीवात्माने कहा कि मन श्रेष्ठहै फिर सरस्वती रूप बाणीने कहा मैं तेरी कामधुकहूं १५ तब मन रूप ब्राह्मणने कहा कि स्थावर अर्थात् बाह्य न्द्रीसे जाननेके योग्य प्रत्यक्ष सृष्टि जंगम अर्थात् इन्द्रियोंसे परे स्वर्गादिक इन दोनोंको मेरा मन जानो प्रत्यक्ष सृष्टि

मेरी दृष्टिके सन्मुखहै और स्वर्गादिक तेरा मुद्रकहै १६ जो मन्त्र वर्ण स्वर उन स्वर्गादिक स्थानोंको प्राप्तकरे उसको मन्त्रादिकसे जाननेवाला मन जंगमनाम कहा जाताहै इस हेतुसे बचनभी वृद्ध अर्थात् श्रेष्ठहुआ १७ हेशोभायमान जिस कारणसे तू अपने आप सन्मुख आकर अपनेपक्षको दृढ़ करताहै इसीहेतुसे अन्तर्मुख श्वास को पाकर तुझ सरस्वतीसे कहताहूं हेमहाभाग यह देवी सरस्वती उन प्राण अपानके मध्यमें जो कि मनकी मुख्य वृत्तीहैं सदैवनियत रहतीहैं बिना प्राणोंके चलायमानभी अपने प्रकट होनेमें असमर्थ सरस्वती ब्रह्माजीके पासगई और कहा कि हेभगवन् आप प्रसन्न हूजिये १८।१९ इसके पीछे वाणीकी वृद्धि करताहुआ प्राण प्रकट हुआइस हेतुसे बचन प्राणकी आकर्षणताकोपाकरकभी बार्त्तालाप नहीं करताहै २० वह बचनरूप बाणी सदैव दो नामोंसे वर्त्तमान होतीहै प्रथम घोषणी अर्थात् शब्दायमान दूसरी अघोषा अर्थात् शब्दरहित इन दोनोंके मध्यमें घोषणीसे अघोषा श्रेष्ठहै क्योंकि घोषणी प्राणोंकी वृद्धि चाहतीहै और हंस मन्त्ररूप अघोषा सब दशाओंमें वर्त्तमानहै इस हेतुसे वह श्रेष्ठहै २१ उत्तम रससे स्तूयमान बचनरूप गौ मनोरथोंको देतीहै यह ब्रह्मवादिनी अर्थात् उपनिषद बचनरूप उस नित्य सिद्ध मोक्षको देतीहै अर्थात् बचनरूप गौ के यह चार थनहैं स्वाहाकार,स्वधाकार, नहुतकार, हंतकार वषट्कार २२ हेपवित्र मुसकानवाली दिव्य बचनरूप गौ इन दो प्रभावोंसेयुक्तहै दिव्य अर्थात् देवताओंका आह्वानअदिव्य अर्थात् व्यवहारादिक इनदोनोंचलायमान औरसूक्ष्मबचन औरचित्तके अन्तरकोदेखो२३ब्राह्मणीबोली कि तवबचनोंकेउत्पन्नहोनेपर बार्त्तालापकरनेकी इच्छासे चलायमान देवी सरस्वतीने प्रथम किसतत्त्व कोअधिकतम आश्रय स्थानकिया२४ ब्राह्मणनेकहा कि जो बचन शरीरमेंप्राणसे प्रकट होतेहैं वहप्राणसे चलायमान होकर नाभिके स्थानपर अपानसे एकताप्राप्तकरतेहैं फिर उदानके स्थानपर आकरउससे भी एकताकरके शरीरकोछोड़करव्यान रूपसेसबआकाश

वात्माहै और उसगृहपतिका निवाश स्थान हृदयहै उस हृदयसेही दूसरामन प्रकट होताहै और वही मन मुखहै जिसमें हव्य अर्थात् अग्नि जल अग्नि डालाजाताहै आशयहहै कि चित्त अन्नरूपहैप्राणजलरूपहै बचन अग्निरूपहै क्योंकि हव्यका तेज जठराग्निको पाकर शीघ्रही बचन रूपसे विपरीत दशा करताहै ८ उस्से वेदप्रकट हुआ उसके पीछे पृथ्वी संबंधी चित्त उत्पन्न हुआ इसीहेतुसे चित्तरूप सूत्रात्मा वेदके वचनोंकोबिचारताहै तबप्राण नाम वायु जो कि पीत नीलादिबर्णसे पृथक् प्रकटहोताहै वहचित्तकाकर्त्ता अथवा चित्त प्राणका आगेपीछे होताहै अर्थात् मनके रुकनेपर प्राण और प्राणके रुकनेपर मनभी रुकजाताहै ९ ब्राह्मणी किस कारण प्रथम बचन प्रकटहुआ और किसहेतुसे मन उत्पन्नहुआ जब कि मनसे बिचाराहुआ बचन प्रकट होताहै १० किस प्रमाणसे प्राण मनके आश्रयहै सुषुप्तिअवस्थामें वृद्धप्राणने बिषयों को क्यों नहीं प्राप्त किया और उसदशामें इसकीज्ञान शक्तिको कौन दूरकरता है ११ ब्राह्मणबोला कि सुषुप्तिअवस्था में अपान प्राणका स्वामी होकर उसको अपने आधीन करताहै इसीहेतुसे प्राण सुषुप्ति अवस्था में चित्तके लय होनेपर आप लय नहीं होता परन्तु अपानको अपनी स्वाधीनतामें करकेसमाधिअवस्थामें मनकेलयहोने में आपभी लय होजाताहै उसप्राणनाम गतिको मनकोगति कहते हैं अर्थात् वही बाहरजानेका साधनहै इसीहेतुसे चित्तवेदको बिचारता है १२ तुम जिसमनके कारणरूपबचनको मुझसेपूछतीहो इसहेतु से उनदोनों केपरस्पर प्रश्नोत्तरोंको तुझसे कहताहूं १३ दोनों बाणी और मनने जीवात्माके पास जाकर पूछा कि हेप्रभु हम दोनोंमें जो श्रेष्ठ होय उसको आप कहिये और हमारे चित्तके सन्देहको दूर करो १४ तब जीवात्माने कहा कि मन श्रेष्ठहै फिर सरस्वती रूप बाणीने कहा में तेरी कामधुक्हूं १५ तब मन रूप ब्राह्मणने कहा कि स्थावर अर्थात् बाह्यन्द्रीसे जाननेके योग्य प्रत्यक्ष सृष्टि जंगम अर्थात् इन्द्रियोंसे परे स्वर्गादिक इन दोनोंको मेरा मन जानो प्रत्यक्ष सृष्टि

मेरी दृष्टिके सन्मुखहै और स्वर्गादिक तेरा मुद्रकहै १६ जो मन्त्र वर्ण स्वर उन स्वर्गादिक स्थानोंको प्राप्तकरे उसको मन्त्रादिकसे जाननेवाला मन जंगमनाम कहा जाताहै इस हेतुसे बचनभी वृद्ध अर्थात् श्रेष्ठहुआ १७ हेशोभायमान जिस कारणसे तू अपने आप सन्मुख आकर अपनेपक्षको दृढ़ करताहै इसीहेतुसे अन्तर्मुख श्वास को पाकर तुझ सरस्वतीसे कहताहूं हेमहाभाग यह देवी सरस्वती उन प्राण अपानके मध्यमें जो कि मनकी मुख्य वृत्तीहैं सदैवनियत रहतीहैं बिना प्राणोंके चलायमानभी अपने प्रकट होनेमें असमर्थ सरस्वती ब्रह्माजीके पासगई और कहा कि हेभगवन् आप प्रसन्न हूजिये १८।१६ इसके पीछे वाणीकी वृद्धि करताहुआ प्राण प्रकट हुआइस हेतुसे बचन प्राणकी आकर्षणताकोपाकरकभी वार्त्तालाप नहीं करताहै २० वह बचनरूप बाणी सदैव दो नामोंसे बर्त्तमान होतीहै प्रथम घोषणी अर्थात् शब्दायमान दूसरी अघोषा अर्थात् शब्दरहित इन दोनोंके मध्यमें घोषणीसे अघोषा श्रेष्ठहै क्योंकि घोषणी प्राणोंकी वृद्धि चाहतीहै और हंस मन्त्ररूप अघोषा सब दशाओंमें वर्त्तमानहै इस हेतुसे वह श्रेष्ठहै २१ उत्तम रससे स्तुय-मान बचनरूप गौ मनोरथोंको देतीहै यह ब्रह्मवादिनी अर्थात् उप-निषद् बचनरूप उस नित्य सिद्ध मोक्षको देतीहै अर्थात् बचनरूप गौ के यह चार थनहैं स्वाहाकार, स्वधाकार, नहुतकार, हंतकार वषट्कार २२ हेपवित्र मुसकानवाली दिव्य बचनरूप गौ इन दो प्रभावोंसेयुक्तहै दिव्य अर्थात् देवताओंका आह्वानअदिव्य अर्थात् व्यवहारादिक इनदोनोंचलायमान औरसूक्ष्मबचन औरचित्तके अ-न्तरकोदेखो२३ब्राह्मणीबोली कि तबबचनोंकेउत्पन्नहोनेपर वार्त्ता-लापकरनेकी इच्छासे चलायमान देवी सरस्वतीने प्रथम किसतत्त्व कोअधिकतम आश्रय स्थानकिया२४ ब्राह्मणनेकहा कि जो बचन शरीरमेंप्राणसे प्रकट होतेहैं वहप्राणसे चलायमान होकर नाभिके स्थानपर अपानसे एकताप्राप्तकरतेहैं फिर उदानके स्थानपर आ-करउससे भी एकताकरके शरीरकोछोड़करव्यान रूपसेसबआकाश

को व्याप्त करतेहैं २५ इसके पीछे फिर पूर्व्वकेसमान समान में नियत होतेहैं इसप्रकारसे बचनोंने अपने प्रथम प्रकटहोने कीरीति कोबर्णन किया इसी हेतु से चित्त स्थावर रूप होने से श्रेष्ठहै उसी प्रकार बचन भी जंगम रूप होने से श्रेष्ठहै २६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुएकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय॥

ब्राह्मणनेकहा कि हे सुभद्रे इसचित्त और बचन के विषयमेंइस प्राचीन इतिहासको भी बर्णन करताहूं इस में सात होताओंका जैसा विधानहै उसको सुनो १ नाक आंख जिह्वा चर्म कान मन बुद्धि यह सातों पृथक् २ स्थित होकर होताहैं २ वह सब सूक्ष्म स्थानपर नियत परस्पर में एक एक को नहीं देखतेहैं हे सुन्दरि तुम इन सात होताओंको स्वभावसे जानो ३ ब्राह्मणी बोली हे भगवन् वह सूक्ष्म स्थान में नियत होकर परस्पर में क्यों नहीं देखतेहैं उनका स्वभाव कैसाहै हे प्रभु उसको मुझसे कहो ४ ब्राह्मणने कहा कि गुणोंकोबिज्ञता, अविज्ञता, विज्ञान, अविज्ञान, यह चारों गुणहैं वह सातों होता किसी समय पर भी एक दूसरे के गुणोंको नहीं जानतेहैं ५ जिह्वानेत्र कान बचन मन बुद्धि यह गन्धोंको नहीं प्राप्त करते परन्तु घ्राणेन्द्री गन्धोंको प्राप्त करतीहैं ६ नाक आंख कान बचन मन बुद्धि रसोंको प्राप्तनहीं करतेहैं परन्तु जिह्वा उनको प्राप्त करतीहै ७ नाक जिह्वा कान बचन मन बुद्धि रूपोंको प्राप्त नहीं करतेहैं परन्तु आंख उनको प्राप्त करतीहै ८ नाक जिह्वा कान नेत्र बुद्धि मन यह सब स्पर्श गुणको नहीं प्राप्त करते परन्तु त्वगेन्द्री उनको प्राप्त करती है ९ नाक जिह्वा आंख त्वक् मन बुद्धि यह सबशब्दोंको नहीं प्राप्तकरतेहैं परन्तु कान उनको प्राप्त करताहै १० नाक जिह्वा आंख त्वचा कान बुद्धि यहसब संशयको नहीं प्राप्तकरतेकेवल मनही उसकोप्राप्त करताहै ११ नाक जिह्वा आंख त्वचाकान मन यह सब निष्ठाको प्राप्त नहीं करते हैं

उसको केवल बुद्धिही प्राप्तकरतीहै १२ हे तेजस्विनी इस स्थानपर
इस प्राचीनइतिहासको भी कहताहूं जिसमेंकिमन और इन्द्रियोंका
प्रश्नोत्तरहै१३ मनने कहा कि मेरे बिना घ्राण इन्द्री नहीं सूंघती है
जिह्वारसको नहीं पासक्तीहै नेत्ररूपको नहींदेखते त्वक् इंद्रीस्पर्श
को नहीं जानती १४ और कान भी मुझसे पृथक् होकर किसी
दशामें शब्दको नहीं जानताहै मैं सब जीवोंकेमध्यमें श्रेष्ठतम और
प्राचीनहूं मुझसे पृथक् होकर इन्द्रियां ऐसे प्रकाशित नहीं होतीं
जैसे कि उजड़े हुये स्थान और बिना ज्वलित अग्नि१५।१६ मनसे
रहित इंद्रियां आर्द्र और शुष्क काष्ठके समान होतीहैं सबजीवमात्र
मेरे बिना उपाय करनेवाली इंद्रियों के द्वारा विषयोंको प्राप्तनहीं
करतेहैं १७ इन्द्रियां बोलीं कि यह इसीप्रकार सत्य होय जैसे कि
आप इसको मानतेहैं जो आपहमारे बिना हमारे विषयादिकभोगों
को भोगतेहैं १८ जो हमारे लयहोजाने पर प्राणोंकी तृप्ती और
स्थितिहै और आप भोगोंको भोगतेहैं उसदशामें जैसा आपमानते
हैं वह सत्यहै १९ जो हमारे लयअथवा बिषयों में नियत होनेपर
आप संकल्प मात्रसे भोगोंकोयथेच्छ भोगतेहैं २० औरजो हमारे
विषयोंमें सदैव सिद्धी मानतेहो उसदशामें घ्राणेन्द्रीसेरूपको और
नेत्र से रसको प्राप्तकरो २१ कानसे गन्धोंको जिह्वासे स्पर्शों-
को त्वचासे शब्दोंको और बुद्धि से स्पर्शको प्राप्तकरो २२ बल-
वान् लोग नियम से रहितहैं निर्बलही लोगोंके नियमहैं तुम अनु
पम भोगोंको प्राप्तकरो उच्छिष्ट भोजन करनेके योग्य नहींहै२३
जैसे कि शिष्य वेद प्राप्त करनेकेमनोरथ से गुरूके पास जाताहै
और उस गुरूसे वेदको पढ़कर वेदार्थको बिचारताहै २४ उसी
प्रकार स्वप्न और जाग्रत अवस्थामें हमारे दिखाये हुये व्यतीत अ-
थवा आगे होनेवाले बिषयोंको अपना मानतेहो २५ छोटे चित्त-
वाले जीवोंके बेमनहोनेमें हमारे निमित्त कर्म करने पर प्राणकी
स्थिति दिखाई देतीहै २६ बहुत से संकल्पोंको मनसे करके और
स्वप्नको देखकर तृषासेदुखी मनुष्य बिषयोंकी ओरको दौड़ताहै

वाह्येन्द्री रूप द्वारोंसेरहित स्थान अर्थात् हार्दाकाश अथवा सुषु-प्त्यवस्था अथवा मोक्षमें प्रवेश करके फिर व्युत्थान दशामें बिषय बासनासे वंधेहुये संकल्पसे उत्पन्नहुये बिषयों को भोगकर मनके नाशके समय सुषुप्तिदशा अथवा संप्रज्ञात दशामें ऐसे शान्तीको पाताहै जैसे कि लकड़ियोंके भस्महोजानेपर अग्नि शान्तहोजाता है २७। २८ चाहै हमारा संग अपने बिषयों में होय चाहै परस्पर बिषयों की प्राप्ती न होयपरन्तु हमारे बिनातुम प्राप्तनहीं होसक्ते केवल इतनाहीहै कि बिना तेरे किसी प्रकारकी प्रसन्नता नहीं प्राप्त होसक्ती यह अहार शुद्धीसे संवंध रखनेवाला प्रश्नसमाप्त हुआ २६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांद्वाविंशोऽध्यायः २२॥

तेईसवां अध्याय॥

अब तालु और जिह्वासे संबन्ध रखने वाला दूसरा प्रश्न दो अध्यायोंमें बर्णन करतेहैं छांदोग्य उपनिषदमें पुराणाग्निहोत्र वि-द्यामें प्राण अपान व्यान उदान समान इन पांचोबायुओंको अधि-लोक और स्वर्ग पृथ्वीदिशा अकाश इनको बिजली रूप कहाहै इनमें से प्राण अपान परस्पर एक दूसरेके आधीन हैं क्योंकि पूरक रेचकमें अपानक्रिया रुकजातीहै और रेचक अपानमें प्राणगतिरुक-जातीहै मूल बिन्दुसे एक होनेवाले पहले दोनोंकी गति ऊपरको होजातीहै वह दोनोंउदानके आधीनहैं इसीप्रकार परिजन्यकेद्वारा यज्ञ परस्पर रक्षाश्रित स्वर्ग और पृथ्वीदोनों आकाशके आश्रित हैं उसी प्रकारसे नाभिस्थानपर बर्त्तमान समान उसव्यानके स्वा-धीनहै जोकि सब अंगोंमें व्याप्त है व्यानभी सब योगोंमें व्याप्त उदानसेंही प्रेरणा पूर्व्वक चलायमान कियाजाताहै उसके व्याप्त होनेसे उदानभी चेष्टाकरताहै इसीप्रकार बिजली दिशाओंमें और दिशा आकाश में आश्रितहैं सब प्राण उदानके स्वाधीनमें हैं जब उदान नाक और दोनों भृकुटियों में रुकजाताहै तब उसस्थान के

नियत ब्रह्ममें स्वर्ग पृथ्वी आदिके साथ आकाश लयहोजाता है इस प्रकार उसदशामें सब प्रपंचके लयहोजानेसे योगी कृतकृत्य होजाताहै ऐसा होनेपर तीन भावना होतीहैं प्रथम प्राणाग्निहोत्र करनेसे तीनोंलोक तृप्तहोतेहैं और इसीसे चित्तशुद्ध होता है इनके दोषों से लिप्त नहीं होता है दूसरे चंचल चित्तको खेचरी मुद्रा और हठ योगसे रोकनाचाहिये तीसरे सब प्रपंचको लयता यह तीनों अधिकारके विचारसेहैं इसकेप्रकटकरनेको ब्राह्मणनेकहाकि इस चित्त के नाश करनेको इस प्राचीन इतिहासको बर्णन करताहूं हे भाग्यवान् इसमें पांच होताओंका जैसा बिधानहै उसको श्रवण करो १ प्राण अपान उदान समान और व्यान इन पांच होताओंको ज्ञानी लोग परम ज्ञानतेहैं २ ब्राह्मणी बोली कि स्वभावसे सात होता हैं यह मेरा मुख्यमतहै जैसेकि पांच होताहैं और जैसा उनका परम भावहै उसको बर्णनकरो ३ ब्राह्मणने कहाकि प्राणसे पोषण किया हुआ अपान नाम प्रकट होताहै अपान से पोषित व्यान वर्त्तमान होताहै ४ व्यानसे पोषित उदाननाम वर्त्तमान होताहै उदानसे पोषण कियाहुआ समान नाम प्रकट होताहै ५ पूर्व्व समयमें उन प्राणोंने प्रथम उत्पन्न होनेवाले ब्रह्माजीसे पूछाकि हमसबमें जो बड़ाहै उसको आप कहिये वही हमारा उत्तम और श्रेष्ठ होगा ६ ब्रह्माजीने कहा कि जीवोंके शरीरोंमें जिसके लयहोनेपर सबप्राण लय होजातेहैं और जिसके चेष्टावान् होनेसे सब प्राण चलायमान होकर चेष्टा करतेहैं वही श्रेष्ठ है अब आपकी जहां इच्छा है वहां जाइये ७ अब इसको सिद्धकरते हैं कि प्राणोंमेंसे एक प्राणके भी अत्यन्त नाश होनेपर दूसरे प्राणोंका भी नाश होजाता है प्राण बोला कि जीवों के शरीरों में मेरे लय होनेपर सब प्राण लयता को पाते हैं और मेरे चलायमान होनेपर फिर चेष्टा करने लगते हैं मैं उत्तमहूं मुझ लयहुयेको देखो ८ब्राह्मणबोला इसकेपीछे प्राण लयहुआ और फिर चेष्टा करनेवालाहुआ फिर समान और उदान ने यह बचन कहाकि ९ यहां हमजिसरीतिसे सबको व्याप्त करके

नियत हैं उस प्रकार तूनहींहै हेप्राण तूहमसे उत्तम नहींहै केवल अपानही तेरे आधीनहै प्राण चेष्टाकरने लगातब अपानने उससे कहा १० सबजीवोंके शरीरों में मेरेलय होनेपर सबप्राण लयको प्राप्त होते हैं और फिर जबमैं चेष्टाकरने लगताहूं तबवहभी चेष्टा करते हैं मैं सबसे उत्तमहूं मेरे लयको देखो ११ ब्राह्मण बोला कि इसके पीछे व्यान और उदानने उस बर्त्तालाप करने वाले अपान सेकहा कि हे अपान तुम श्रेष्ठ नहींहो केवल प्राणही तेरे आधीन है १२ अपान चेष्टा करनेवाला हुआ तबव्यानने उससे कहा किमैं जिसकारण से सबमें श्रेष्ठहूं उसको सुनों १३ जीवोंके शरीरों में मेरे लयहोनेपर सब प्राण लयहोजाते हैं और मेरे चेष्टा करनेपर फिर चेष्टाकरने लगते हैं मैं उत्तमहूं मेरे लय होनेको देखो १४ ब्राह्मणने कहा यहकहकर व्यान लयहोगया और फिर चेष्टाकरने लगा प्राण अपान उदान और समाननेउससे कहा १५ किहेव्या-नतूहमसे श्रेष्ठ नहींहै समानही तेरे आधीनहै फिर व्यानचेष्टाकरने लगा तब समान ने कहा सुनों मैं इस कारण से सब में श्रेष्ठहूं १६ जीवोंके शरीरोंमें मेरे लयहोनेपर सब प्राण लयहोते हैं और मेरे चेष्टावान् होनेपर वह सब भी चेष्टा करने वाले होते हैं मैं श्रेष्ठहूं मुझलय होनेवालेको देखो १७ इसके पीछे समान चेष्टाकरनेलगा और उदानने उस से कहा कि सुनों मैं इस कारणसे सबमें श्रेष्ठ हूं १८ प्राणियोंके शरीरों में मेरे लय होनेपर सब प्राणलयताको पातेहैं और मेरे चेष्टावान् होने पर वह भी चेष्टाकरने लगतेहैं मैं सबसेश्रेष्ठहूं मेरी लयकोदेखो १९ तब उदान लयहोकर फिर चेष्टा करनेलगा इसके पीछे प्राण अपान समान और व्यानने उससे कहाकि हेउदान तूश्रेष्ठ नहींहै केवल व्यान ही तेरे आधीनहै २० इसके पीछे प्रजापति ब्रह्माजीने उन एकत्र नियत प्राणोंसे कहा कि तुम सब श्रेष्ठहो अथवा अस्वतंत्र होनेसे श्रेष्ठ नहींहो और सब परस्पर धर्म रखने वालेहो २१ तुमसब अपने २ विषयमें उत्तमहो और सब परस्पर सम्बन्ध रूप धर्म रखनेवालेहो प्रजापति ब्रह्मा-

जीने उन एकत्र नियत होनेवाले प्राणों से यहकहा २२ कि एकही प्राण नियत और चेष्टा करने वालाहै वही अपने मुख्य गुणसे पंच प्राणरूप होताहै इसीप्रकार मेरा एक आत्मा बहुत रूपसे भोगता और भोगरूपको प्राप्त करताहै २३ तुम परस्पर प्रीतिमान होकर अन्योन्य मित्रहो तुम्हारा कल्याण हो तुम आनन्द और कुशलसे जाओ और परस्पर पोषण करो २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुत्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

ब्राह्मणने कहाकि इसस्थानपर उसप्राचीन इतिहासकोभीकहताहूं जिसमेंकि नारद और देवमत ऋषिका संवादहै १ एक आत्मा को अध्यारूपा वादसे बहुत्वरूप कहनेके लियेदेव मतनेकहा कि समष्टिव्यष्टि शरीरकेस्वामी जन्मलेनेवाले जीवधारीके प्राणअपान समान व्यान अथवा उदान मेंसेआदि कौनउत्पन्न होताहै २ नारद जी बोलेकि जिसकारणसे यहजीव उत्पन्नकिया जाताहै उसकारण से दूसराभी आदिकारण रूपसे उसको प्राप्तहोताहै प्राणको द्वन्द्व जानना योग्यहै और जो तिर्य्यग योनि मनुष्यादिक उन्नत देवता आदिक और नीचा पशु आदिकहैं इनसबका रूपभी जाननेकेयोग्य है ३ देवमतने पूछाकि यहजीव किससे उत्पन्न कियाजाताहै और कौनदूसरा कारण रूपसेउसको प्राप्तहोताहै द्वन्द्वप्राण और दूसरे जो तिर्य्यग ऊंचा नीचाहै उस सबको मुझ से कहो ४ नारदजी बोलेकि जिस आनन्द रूप ब्रह्मसे सबजीवधारी उत्पन्न होतेहैं उसके आनन्दका भाग संकल्पकेद्वाराजीवरूप से प्रकट होताहै और वेदमन्त्ररूप शब्दसेभी वहतत्त्वोंकी उत्पत्ति जोकि प्रलयकी अग्नि में भस्महोगईथी वहऐसे उत्पन्न होतीहै जैसेतक्षक से काटाहुआ वटकावृक्ष काश्यपकेमन्त्रसे प्रकटहुआथा और रसरूपविषय बासनासेभी उत्पत्ति होतीहै ५ शुक्र अर्थात् दृष्टिसे गुप्त प्रारब्ध और शोणित अर्थात् रागादिक इनदोनोंके मिलनेसे प्रथमलिंगशरीररूप

प्राण उत्पत्तिके करनेको कर्मकरताहै उसीप्रकारप्राणसे जन्मादिक के द्वाराउस बिपरीत दशाओंसे संयुक्त बासना रूपी कर्मसे उत्पन्न शरीरमें अपान उत्पन्न होताहै ६ फिरउस जन्ममें प्राप्त होनेवाले प्रारब्ध और बासनासेभी उत्पन्न होताहै यहउदानकारूप अर्थात् ब्रह्मकारूप आरोपित नामहै क्योंकि वह आनन्द स्वरूप कारण रूपब्रह्म कार्य्य के मध्यमें आनन्दको व्याप्तकरके नियतहै ७ इच्छा से अज्ञान उत्पन्न होताहै और इच्छाहीसे रजोगुण उत्पन्न होता है प्रारब्ध और रागादिक समान व्यान से अर्थात् सम्बन्धवान् विद्युत और श्रोत्र इन्द्रीसे उत्पन्न हुआहै ८ प्राण अपान अर्थात् इच्छा और प्रीति युक्ता यहद्वन्द्वहै अर्थात् जोड़ा है जीवात्मा की उपाधी प्राण अपानहै यहअवाक् और ऊपरको जातेहैं और व्यान समान अर्थात् देखाहुआ और सुनाहुआ यहदोनों ऊर्ध्व गति से रहित द्वन्द्व रूप कहेजातेहैं यहदोनों ब्रह्मकी प्राप्तीनहीं करातेहैं ९ अग्नि अर्थात् परमात्माही सब देवता रूपहै यहवेदकी आज्ञाहै जो ब्रह्मज्ञानीहै उसका परम ज्ञान उसी वृत्तिसे युक्त होकर उसीवेदसे उत्पन्न होताहै १० जैसेकि धुआं और भस्म अग्नि रूपसे बाहरहैं उसी प्रकार लयक्षेपके कारण रजोगुण तमोगुणभी चैतन्य रूपसे बाहरहैं जिसअग्निमें हव्यडाला जाताहै उसीसे सबउत्पन्न होताहै ११ जीव ब्रह्मकी ऐक्यताकरनेवाला जो योगहै उसकेज्ञातालोगोंने उसको जानाहै कि समान व्याननाम सबदेखा और सुनाहुआ बुद्धि सत्वसेउत्पन्न होताहै प्राण औरअपान यह आज्य भागअर्थात् घृत के भागहैं इनदोनोंको होमकरनेसे उनके मध्य में उदाननाम पर-ब्रह्मप्रकाशमानहोताहै वही इसहोमहुये सब दृश्यपदार्थों को भोज-न करताहै १२ इसउदान के परम रूपको ब्रह्मज्ञानी लोगोंनेजाना है अबजो द्वन्द्वसे पृथक्‌है उसको मुझसे श्रवणकरो १३ यहदिनरा-त्रिअर्थात् विद्या अविद्या वा जाग्रत और स्वप्नावस्था अथवा उत्प-त्ति और नाश द्वन्द्वहैं उनके मध्यमें कार्य्यकारण को अपने में लय करनेवाला शुद्ध ब्रह्महै उस अधिकतर चेष्टादेनेवाले ब्रह्मका आनंद

रूप ब्रह्मज्ञानी लोगोंने जानाहै १४। १५ उनसे बढ़कर ब्रह्मसंकल्प के द्वारा समान व्यान अर्थात् कार्य्य कारणरूप होताहै उसीका-रणसे यह कर्म्म विस्तृत किया जाताहै तात्पर्य्य यहहै कि संकल्प रोकना चाहिये फिर तीसरा रूप ब्रह्म समान अर्थात् उपलक्षणसे ऐसे निश्चयकियाजाताहै जैसे कि वृक्षकी डालीपर चन्द्रमाहोताहै व्यान समान सनातन ब्रह्म इन तीनोंका समुदाय त्रिशान्ती नाम अर्थ रखनेवाला है क्योंकि ब्रह्म शान्ती रूप है इस शुद्धब्रह्मके आनन्द रूपको ब्रह्मज्ञानियों ने जानाहै १६ । १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

इसरीतिसे सदुपदेशसे अद्वैतब्रह्मकोकहकर सिद्धकरनेकी उत्त-मता वर्णन करनेको ब्राह्मणने कहा कि इसस्थानपर मैं एकचातुर-होत्र विधान नामइतिहासको कहताहूं जिसमें अपूर्वरीतिसे ब्रह्मका जतलानाहै १ उस सब ज्ञात और अज्ञातकी रीति अनुष्ठान विधिके समान उपदेश किया जाताहै हे कल्याणिनि मेरे कहेहुये इस अपूर्व्व और गुप्तरहस्यको सुनो २ हे शुद्धभाव,करण,कर्म,कर्त्ता और मोक्षयहचारोंहोताहैंइन्हींसे यहसबजगत्व्याप्तहै घ्राणादिकइंद्रियों के जो हेतुहैं उनके सब साधनोंको संपूर्णतासेसुनो ३ घ्राण जिह्वा चक्षु त्वक् श्रोत्र मन बुद्धि यहसातों अविद्यासेउत्पन्नहैं अर्थात् जैसे रस्सीमें अविद्या सर्पकी समान कल्पितहै उसीप्रकार उसका दृश्य पदार्थ भी देखनेके समय प्रकट होनेवालाहै ४ गंध, रस,रूप,शब्द, स्पर्श,मानना,जानना यहसातों कर्म्मसे उत्पन्नहैं अर्थात् सब स्थूल कर्मजन्य फलहै ५ सूंघनेवाला खानेवाला दृष्टा वक्ता सुननेवाला माननेवाला जाननेवाला यह सातों कर्त्तापनेकेहेतुहैं अर्थात् कर्त्ता-ही भोक्तारूप खाने पीनेवाला आदिक होताहै ६ यह घ्राणादिक जो कि सूंघने आदिक विषय रखनेवाले और उन्होंके साधकहैं वह अपने शुभाशुभ गन्धादिक गुणोंको भोगते हैं यह घ्राणादिक सातों

मोक्षके हेतुहैं अर्थात् सुनने सूंघने देखने बोलने आदिके अभिमान का त्यागकरनाही मोक्षहै और मैं गुणोंसे पृथक् और असंख्यहूं ७ पूर्ण बुद्धिमानी ब्रह्मज्ञानियोंको खानेआदिकी प्रशंसा नहींहै क्योंकि घ्राणादिक इन्द्रियोंका स्थान विधिके अनुसार अविद्या आदिक है वही देवतारूप घ्राणादिक सदैव हव्यको भोगतेहैं आत्मा नहीं भोगताहै ८ अज्ञानीलोग रूप रस आदिक भोजनकी वस्तुको भोजन करता अर्थात् भोक्तापनेका अभिमान करता भोगमें ममता करताहै केवल अपनेही निमित्त अन्नको पकाताहुआ ममतासे युक्त होताहै और फिर नाशको पाताहै ९ जो वस्तु खाने के योग्य नहीं है वह और मद्यपानादिक उसको नाशकरतेहैं वह अकेला भोजन करताहुआ अन्नको नाश करताहै और अन्न उसको मारताहै तब वह अन्नको मारकर फिर आप मारा जाताहै १० जो ब्रह्मज्ञानी इस सब प्रपंचरूप अन्नको अपनेमें लय करता ईश्वर होता फिर उसको उत्पन्न करताहै उस भोजनसे कुछ अल्प पापभी उत्पन्न नहीं होता ११ अब अन्न शब्दके अर्थको वर्णन करतेहैं जो मनसे जानाजाताहै जो वाणीसे कहाजाताहै जो कानसे सुनाजाताहै जो नेत्रसे देखनेमें आताहै १२ जो त्वचासे स्पर्श होताहै जो घ्राणसे सूंघा जाताहै यह सब हवनके योग्य पदार्थ हैं जब कि मन समेत छओं इन्द्रियोंको स्वाधीन करताहै १३ होमका अधिष्ठान मेरा कारण ब्रह्मरूप गुणवान् अग्नि जीवात्माकेभीतरक्रीड़ाकरताहै १४ मेरा योगरूप वह यज्ञ जारीहुआ जिसमें ज्ञानही गुणहै और उस गुणसे उस ज्ञान यज्ञकी प्रकटताहै प्राणस्तोत्रहै अपानशस्त्रहै और सर्व त्यागही दक्षिणाहै १५ अहंकार मनबुद्धि यह तीनों ब्रह्मरूप होता अध्वर्य्यु और उद्गाताहैं उपदेश करनेवालेका जो सत्यबचन है वह शस्त्रहै और कैवल्यमोक्ष उसकी दक्षिणाहै १६ पूर्वसमय में वेदअथवाआत्मारूप नारायणको जाननेवाले पुरुषोंने नारायणकी प्राप्तीके अर्थ जो इन्द्रियोंको आधीन किया वह उस यज्ञमें ऋचाओं को वर्णनकरतेहैं १७ वहां आत्मलाभसे प्रसन्न ज्ञानी सामवेदकी

ऋचाओं को गाते हैं उन ऋचाओंमें उपमा कहीहैं हेभीरुस्त्री उस सबके आत्माऔर देवता नारायणको जानो १८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिके पर्व्वणिब्राह्मणगीतायांपंचविंशोऽध्यायः २५॥

छब्बीसवां अध्याय॥

नारायण स्वरूप वर्णन करनेके अर्थ ब्राह्मणने कहा कि जो हृदयमें शयन करनेवालाहै वही अन्तर्यामी प्रधान स्वामीहै दूसरा नहीं है मैं उसकी कृपासे बचन कहताहूं औरजैसे कि निचाईसे जल छोड़ाजाता है इसीप्रकार उसका प्रेरणाकिया हुआ मैं उस प्रकार कर्मकर्त्ताहोताहूं जैस किउससेआज्ञप्तहुआहूं १ एकहीगुरूहै उससे अन्य दूसरा नहींहै जो कि हृदयमें शयन करनेवाला है उसीकी कृपासे मैं कहताहूं कि बान्धव रखनेवाले और बान्धवरूप ईश्वर से आज्ञापानेवाले सातऋषि स्वर्गमें प्रकाशमान हैं २ एकही श्रोता है उसका दूसरा नहींहै जो कि हृदयमें शयन करनेवाला है मैं उस की कृपासे कहता हूं इन्द्रने उस गुरू के पास निवास करके सब लोकोंमें अमर पदवीको पाया ३ वही अकेला द्वेष्टाहै अर्थात् रक्षक है उससे दूसरा नहीं जोकि हृदयमें शयन करनेवालाहै मैं उसकी कृपासे कहताहूं उस गुरूसे उपदेश पानेवाले सर्पों ने संसार में विरुद्धताकोपाया ४ मार्ग दिखानेवाले एकगुरूकेहोनेपर शिष्योंकी बुद्धिका जो विपर्य्ययहै उसमें मैं इसप्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें ब्रह्माजीके पासदेवता ऋषि और सर्पोंकी शिक्षा पानाहै ५ समीप बैठेहुये देवताऋषि नाग और असुरों ने ब्रह्माजी से पूछा कि हे ब्रह्मा आप हमारा कल्याण वर्णन कीजिये ६ भगवान् ब्रह्माजीने ओम् इस एक अक्षर ब्रह्मको ही उन प्रश्नकर्त्ताओं का कल्याणकारी कहा उन्होंने उस को सुनकर बहुत मार्गों को प्राप्तकिया ७ अपने उपदेशके निमित्त अर्थको बिचारनेवाले उन सर्पोंका चित्त प्रथमही काटनेमें प्रवृत्तहुआ अर्थात् ओम्शब्दकेकहने में मुखके खोलने और बन्द करनेको देखकर उस स्वभावको प्राप्त

किया ८ और ओष्ठोंकी चेष्टापर दृष्टिकरनेवाले असुरोंका चित्तदम्भ, में प्रवृत्त हुआ जोकि उनके स्वभाव से उत्पन्नहै देवताओंनेदानको निश्चय किया महर्षियोंने दम अर्थात् इंद्रियोंकी निद्राको स्वीकार किया६ उनसबदेवता ऋषि दानव और सर्पोंने एक मार्गदिखानेवाले को पाकर एकही शब्द के श्रवण करने वालोंने उसएक शब्दको बहुतप्रकारका निश्चयकिया १० इसीहेतुसे आपही अपना गुरूहै इस-कावर्णनकरतेहैं यहगुरूकेकहे हुयेको सुनताहै और यथातथ्यवाद करताहैइसकेपीछे वह पृच्छकअपने शिष्योंको उपदेश करताहैउस-केसिवाय दूसराकोई गुरूनहीं बर्त्तमानहै ११ इसके पीछे उसकी आज्ञासे कर्मजारी होताहै बुद्धिमान् श्रोता विरुद्ध कर्त्ता और गुरू सब हृदयसे प्रकटहैं १२ इस संसारमें पापकर्मकर्त्ता पापचारीहोता है १३ जब इन्द्रियोंके सुखमें प्रवृत्त होताहै तब इच्छापूर्वक काम चारी होताहै जो इन्द्रियोंके जीतनेमें प्रवृत्तहै वह सदैव ब्रह्मचारी है १४ ब्रत और कर्मोंसे रहित केवल ब्रह्ममें नियत और लोकमें ब्रह्मरूप घूमता यह पुरुष ब्रह्मचारी होताहै १५ उसकी समिध अर्थात् हवनकी लकड़ी ब्रह्महीहै अग्निभी ब्रह्महै जलभी ब्रह्मसे प्रकट है और गुरूभी ब्रह्महै क्योंकि वह ब्रह्ममें समाधि करनेवालाहै१६ ज्ञानियोंने इस ऐसे सूक्ष्म ज्ञानको ब्रह्मचर्य्य जानाहै तत्त्वदर्शीगुरूसे आज्ञापाये हुये महात्माओंने उसको जानकर प्राप्तकियाहै १७

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांषड्विंशोऽध्यायः २६॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

जबकि आत्मापाप कर्मका अभ्यासी है फिर ब्रह्मचर्य्य से क्या लाभहै इसशंकाको करके आत्माके असंग सिद्ध करनेको बनअध्याय का प्रारम्भ करतेहैं ब्राह्मणने कहा कि जिस संसार मार्गमें संक-ल्पहीडांस,मच्छरहैं सुखदुःख यहदोनों शरदी और धूपहैं अपराध और भूल अन्धकारहै लोभ और रोग सर्प बिच्छू आदिक जीवहैं १ जो अधिकतर बंधनमें डालनेवाला अकेलेसे उल्लंघन करनेकेयोग्य

इच्छा और क्रोधसे रुकनेवाला दुर्गम्य संसारमार्ग है उसको व्य-तीत करके मैंने महाबन अर्थात् सगुणब्रह्ममें प्रवेश कियाहै २ ब्रा-ह्मणी बोली हे महाज्ञानी वह वन कहां है उसमें कौनसे वृक्ष नदी और पर्व्वत हैं और कौनसे मार्गमें है ३ ब्राह्मणने कहा उस ब्रह्मसे पृथक् कोई दूसरा न प्रकाशहै न सुख है अर्थात् सत्ता और सुख सब सृष्टिभरमें ब्रह्महीहै जो कदाचित्कहो कि आकाशादिक इससे जुदेनहींहैं यह भी नहीं होसक्ता क्योंकि ब्रह्म और जगत्के समान मृत्तिका और घटनहींहै किन्तु सीपमें चांदीकेसमानभ्रान्तीहै इसके सिवाय कुछ दुःख भी नहीं है ४ न उससे कोई लघुहै न वृद्धतर है न उससे सूक्ष्मतरहै और न उसके समान कोई दूसरा सुखहै ५ ब्राह्मण उसमें प्रवेशकरके न शोचतेहैं न प्रसन्नहोते हैं न किसीसे भयकरते न उनसे कोई भयकरताहै ६ उसबनमें रात्रिरूप सात बड़े वृक्ष महत्तत्त्व अहंकार और पंचतन्मात्राहैं उनके कारण प्रकट होनेवाले यज्ञादिक सातफलहैं उनके उत्पत्तिकेहेतुरूपसातअतिथि यज्ञ क्रियादिकहैं उसके उत्पत्तिके हेतु सात आश्रमकर्त्ता कर्मादिक हैं उसके उत्पत्ति स्थान रागादिक सात समाधि हैं उन्होंका मूल दीक्षाहै यह सातों वन रूप हैं ७ उस वनमें मन वृक्ष बीजरंगदार द्रव्य शब्दादिक पांचों विषय फूल और उनसे उत्पन्न प्रीति आदिक फलोंको उत्पन्न करते उस वन को व्याप्त करके नियत हैं ८ वहां नेत्रादिक वृक्ष श्वेत पीतादिक रंगोंसे शोभित सुख दुःखादि के विभागसे दो रंगके फूल और फलोंको उत्पन्नकरते उस बनको व्याप्त करके नियत हैं ९ और यज्ञादिक वृक्ष सुगन्धित रंगदार स्वर्गादिकफूल फलोंको उत्पन्न करते उसवनको व्याप्तकरके नियत हैं १० और ध्यानादिक सुगन्धित वृक्षकेवल सुखरूप फूल फलों को उत्पन्नकरते उसवनको व्याप्त करके नियतहैं ११ मन बुद्धिरूपी दो बड़े वृक्ष उन बहुतसे फूल फलोंको जिनका स्वरूप प्रकट नहीं और ज्ञानियों के मनोरथमात्रहैं पैदाकरते उसवनको व्याप्तकरके नियतहैं १२ इस महावन में एक आत्माही अग्निहै मन और बुद्धि

स्त्रुक, स्त्रव, नाममात्र के स्थानापन्नहैं ब्रह्मज्ञानी होताहै पांचों इन्द्रियां समिधहैं उन्होंके होम करनेसे सात मोक्ष प्रकट होतीहैं मुक्तपुरुषोंकी वह दीक्षा सफल होतीहैं वह फिर शरीरको नहीं प्राप्त करातीहैं क्योंकि वह अनुपम और अदभुतहैं परन्तु देवता आदिकही उनको प्राप्त करनेवालेहैं ईश्वर बादी कर्त्ता नहीं करसक्ते जैसे कि वेदमें लिखाहै कि उस महात्माके शुभकार्मोंको उसके मित्र और पापकर्मों को उसके शत्रुलोग प्राप्त करतेहैं वह पुण्य पापसे पृथक् होकर मोक्षको पाताहै१३ वहां वहां महर्षीअर्थात् इन्द्रियोंके अधिष्ठाता देवता अतिथि नाम पूजनको स्वीकार करतेहैं उन पूजित देवताओंके लयादिक होनेपर उनसे दूसरा अद्वितीय वन प्रकाशित होताहै १४ जो वृक्ष शान्तीनाम छायासे युक्त मोक्षनाम फल और तृप्तीनाम जल रखनेवाला शास्त्र गुरु उपदेशमें आश्रित है और सूर्य्य आत्माहै १५ जो सन्त उस वृक्षको प्राप्त करतेहैं फिर उनको किसीप्रकार का भय नहीं है क्योंकि ऊपर बाईं और तिरछी ओर उसका अन्त नहीं पायाजाता है अर्थात् सबको चिन्मात्र रूप देखता हुआ निर्भय होता है क्योंकि द्वैतभावही भयका कारण है १६ अब जीवन्मुक्त के ऐश्वर्य्य को कहते हैं वहां सात स्त्री अर्थात् मन बुद्धि और इन्द्रियों की वह वृत्तियां निवास करती हैं जो कि संकल्प सिद्ध हैं और ज्ञानी को अपना आज्ञावर्त्ती न करनेसे लज्जितहैं चैतन्य ज्योतिरूप में और सृष्टिके निमित्त बिषयसे उत्पन्न सब सुगन्धियोंको भोगतेहैं यहांपर सत्य और मिथ्याका जो अन्तर है वही ज्ञानी और अज्ञानीका अन्तरकहाहै १७ उस यज्ञकर्त्ता में वषट् आदिक इन्द्रियरूप सातऋषि लय होतेहैं और फिर उसीसे प्रकट होतेहैं १८ यश, तेज, ऐश्वर्य्य, बिजय, सिद्धी, कान्ति, ज्ञान यह सातों नक्षत्र क्षेत्रज्ञ नाम सूर्य्यकेसाथी और आज्ञावर्त्तीहैं १६ उस यतीमें पर्व्वत नदी और ब्रह्मसेप्रकट जलको बहानेवाली नदियां सूक्ष्मरूप से नियतहैं २० जिसमें योग यज्ञका बिस्तारहै उस अत्यन्त अज्ञान हार्दाकाशमें नदियोंकासंगम

है उस मार्गसे वह योगी जोकि अपनी आत्मामें तृप्तहैं साक्षात् ब्रह्मा जीकेपास जातेहैं २१ वहलोकके जीतनेवाले सुन्दरव्रती तपसेपापों के भस्म करनेवाले ज्ञानी आत्माको आत्मामें प्रवेश करके ब्रह्मकी उपासना करतेहैं २२ ब्रह्मज्ञानी पुरुष वाह्य इन्द्रियोंके जीतनेकीही प्रशंसा करतेहैं क्योंकि उसमें आकांक्षी होकर भिन्नबुद्धि चिदात्माके समान ऐश्वर्य्यमान होताहै २३ ब्रह्मज्ञानियोंने इसप्रकारके इस पवित्रबनको जानाहै इसको शास्त्रसे जानकर ब्रह्मरूप क्षेत्रज्ञ के द्वारा शम दमादि कर्मोंको करतेहैं २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

ब्राह्मणने कहा मैं गन्धोंको नहीं सूंघता रसोंको नहीं चाटतारूप को नहीं देखता स्पर्शको नहीं करता नानाप्रकार के शब्दोंको नहीं सुनता और कुछ संकल्पभी नहीं करताहूं तात्पर्य्य यहहै कि जैसे किसान जब अपने खेतकी स्वत्वताको छोड़ देताहै तब उसकी वृद्धि और हानिसे उसको प्रसन्नता और शोकनहीं होताहै उसीप्रकार जो एकान्तमें आत्माका दर्शनकरनेवालाहै उसका अनुराग विषयों से नहीं होता १ बुद्धिआदिकका स्वभाव प्यारे विषयोंको चाहताहै और अप्रियविषयोंसे घृणा करताहै इच्छा और अनिच्छाके अप्रकट होनेके स्वभावहीसे प्राण और अपान जीवोंके शरीरोंमें प्रवेशकरके भोजनादिक करतेहैं मैं नहीं करताहूं २ उन वाह्यइच्छासे जो दूसरी बासनारूप इन्द्रियांहैं और उनमेंसे जो अधिष्ठानमें वर्त्तमान भावहैं उनसेभी दूसरे भूतात्माको योगीलोग शरीर में देखें उस भूतात्मामें नियत होताहुआ मैं किसीदशामेंभी इच्छा क्रोध जरावस्था और मृत्यु के पास नहीं बैठताहूं मुझ सब इच्छाओंसे रहित अप्रिय में दोष न लगानेवालेकी लिप्तता बुद्धि आदिकके स्वभावसे ऐसे नहीं होतीहै जैसे कि कमलोंपर जलकणकी लिप्तता नहीं होती ३।४ इस अविनाशी ब्रह्मज्ञानीके सत्यसंकल्प होनेमें और कर्म

करनेकीदशामें प्रत्यक्ष संसारका भोगजाल जोकि इन्द्री मन और बुद्धिका स्वभावहै ऐसे उस ज्ञानीमें संयुक्त नहीं होताहै जैसे कि आकाश में सूर्य्यकी किरणों का जाल संयुक्त नहीं होताहै ५ आत्माके असंग होनेमें इस प्राचीन इतिहास को कहताहूं जिसमें अध्वर्य्य ब्राह्मण और संन्यासी का प्रश्नोत्तरहै हे यशस्विनी उसको सुनो ६ यज्ञकर्ममें प्रोक्षण कियेहुये पशुको देखकर निन्दा करते बैठे हुये संन्यासीने उस अध्वर्य्युसे यह बचन कहा कि यह हत्याहै ७ अध्वर्य्युने उसको उत्तर दिया कि इस बकरेका नाश नहीं होता है यह जीव कल्याण युक्त होगा क्योंकि यह श्रुति ऐसीहीहै अर्थात् श्रुतिमें लिखाहै कि जो पशु बिधिके अनुसार यज्ञमें देवताओं की भेंट कियाजाताहै वह स्वर्गको जाताहै ८ इसके शरीरमें जो पृथ्वी का भागहै वह पृथ्वीमें मिलजायगा जो जलका भागहै वह जलमें मिलेगा ९ इसकी चक्षुरिन्द्री सूर्य्यमें श्रोत्रइन्द्री दिशामें और प्राण आकाशमें लय होकर मुझ शास्त्ररीतिके कर्मकर्त्ताको कोईप्रकारका दोष नहींहै १० संन्यासीबोला जो प्राणके पृथक् होनेमें बकरेका कल्याण देखताहै तब यज्ञ बकरेहीके निमित्त जारीहै आपका कौन प्रयोजनहै ११ इस पशुकेही भाई माता पिता और मित्र तेरे कर्म को स्वीकार करेंगे मुख्यकर इस नाथवानको उनसे कहकर सलाह करो १२ कदाचित् वह इसप्रकार स्वीकारकरें आप उनके देखने को योग्यहो उन्होंके बिचारको सुनकर बिचार करना संभवहै १३ तुमने इस बकरेके चक्षुरादिक प्राणभी उनके उत्पत्तिस्थान सूर्य्यादिकोंमें प्रविष्टकिये तो अब केवल एक निश्चेष्ट शरीरही शेष रह गया १४ काष्ठादिकके समान जड़रूप शरीरसे हिंसा प्राप्तकरनेके इच्छावान मनुष्योंका इंधन पशु नामहै १५ सब धर्मोंमें अहिंसा श्रेष्ठहै यह वृद्धोंकी आज्ञाहै जो हिंसासे रहित कर्म होय उसको करना योग्यहै यह हम जानतेहैं १६ जो कि यह हिंसा जाननेके योग्यहै इसीहेतुसे आपको कहताहूं कि करनेके योग्यकर्ममें दोष लगाना संभवहै १७ सब जीवोंकी हिंसा न करना सदैव हमको

स्वीकृतहै जिसका कि फल प्रत्यक्षहै उसका अभ्यास करतेहैं और जिसका फल अदृष्टहै उस कर्मको नहींकरते १८ अध्वर्य्य बोला कि आप पृथ्वीके गन्ध गुणको भोगतेहो जल रूप रसको पानकरतेहो प्रकाशमान शरीरोंके रूपको देखतेहो वायुसे उत्पन्न गुणको स्पर्श करतेहो १६ आकाशजन्य शब्दोंको सुनतेहो चित्तसे विचारतेहो यह सब प्राणोंकी प्रत्यक्षता है यहभी मानतेहो २० आप हिंसाके त्यागनेवाले हो परन्तु हिंसाही में कर्म कररहेहो क्योंकि विना हिंसाके चेष्टा नहींहै हे ब्राह्मण तुम हिंसा को कैसे मानतेहो २१ संन्यासीने कहा कि आत्मा का यह प्रत्यक्ष अक्षर और क्षरनाम दोभेदोंकाहै उसमें अक्षर चिदात्मा सत्‌रूपहै और क्षरतीनोंकालमें भी मिथ्यारूप कहाजाताहै २२ जो गुणनाम मायाके साथ नियत प्राण अपान और मन सत्‌भाव रूपमें अर्थात् भ्रान्तीसे युक्त सत् ही व्यवहाररूपहै जो इन प्राणादिकोंसे छुटे सुख दुःखादिक योगों से पृथक् अनिच्छावान् २३ सब जीवधारियोंमें समदर्शी ममतासे रहित मनका जीतनेवाला होकर चारोंओरसे मुक्तहै उसको भय कहींभी वर्त्तमान नहींहै २४ अध्वर्य्य बोला कि हे बुद्धिमानोंमें श्रेष्ठ इसलोक में सत्पुरुषोंके साथ निवास करना उचितहै आपके सिद्धान्तको सुनकर मेरी बुद्धि प्रकाश करतीहै २५ हे भगवान् मैं आपकी बुद्धिसे संयुक्त होकर कहताहूं हे ब्राह्मण मुझ वेदमन्त्रके अनुसार व्रत करनेवालेका अपराध नहींहै २६ ब्राह्मण बोला कि इसके पीछे वह संन्यासी इस वेदयुक्तीसे मौन होगया और मोहसे रहित अध्वर्य्यभी अपनेवड़े यज्ञकर्म में प्रवृत्तहुआ २७ इसप्रकार ब्रह्मज्ञानियोंने इसरीतिकी अत्यन्त सूक्ष्मताको जानाहै और अर्थ दर्शी क्षेत्रज्ञके द्वारा उसको जानकर शम दमादिक गुणों के करने वाले होतेहैं २८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिब्राह्मणगीतायांअष्टाविंशोऽध्यायः २८॥

———

उन्तीसवां अध्याय॥

इन्द्रियोंका जीतनाही बड़ी शूरताहै उसकेप्रकटकरनेको ब्राह्मणने कहा कि इसस्थानपर इसप्राचीन इतिहास को कहताहूं हे भावनी जिसमें राजासहस्त्रबाहु और समुद्रका संवादहै १ सहस्त्र भुजाधारी कार्त्तवीर्यार्जुन नाम एक राजाहुआ जिसने धनुष से चतुस्समुद्रान्त पृथ्वी को विजयकरलिया था २ किसीसमय समुद्रके समीप घूमते उस बलसे अहंकारी राजाने सैकड़ों बाणों से समुद्रकोढकदियातब हाथजोड़ नमस्कार करके समुद्रने उससे कहा कि हेबीर अब बाणों को मतछोड़ो जो तेरा अभीष्ट होय उसको मैं करूं ३।४ हे राजाओं में श्रेष्ठ तेरे छोड़े हुये बड़े बाणोंसे मुझमें निवास करनेवाले जीव मरतेहैं हे समर्थ उननिरपराधियों को निर्भयकरो ५ कार्त्तवीर्यार्जुन ने कहा जो किसी स्थानपर कोई धनुषधारी युद्धमें मेरेसमान वर्त्त-मान होय तो उसको मुझसे वर्णनकर जोकि युद्ध में मेरे सन्मुख होय ६ समुद्रबोला हे राजा जो तुमने जमदग्नि महर्षी सुनेहैं उस का पुत्र तेरा आतिथ्य बिधिपूर्व्वक करनेको समर्थ और योग्य है ७ फिर बड़ा क्रोधयुक्त वह राजावहां से चलदिया उसने उनकेआश्रम को पाकर परशुरामजी को देखा ८ तब उसनेबान्धवोंसमेत परशु रामजी के अप्रियकर्मकिये अर्थात् महात्मा परशुरामजी के दुःखों को उत्पन्न किया ९ हे कमललोचने तब उस बड़ेतेजस्वीपरशुराम-जी कातेज शत्रुकी सेनाओं को भस्मकरता देदीप्यअग्निके समान हुआ १० और उन परशुरामजीने फरसा लेकर अकस्मात् उस सहस्त्र भुजाधारी राजाकी भुजाओं को ऐसाकाटा जैसे कि बहुतसी शाखारखनेवाले वृक्षको काटते हैं ११ उस मृतक और गिरेहुये को देखकर इकट्ठे होनेवाले सब बान्धव खड्ग और शक्तियोंको लेकर चारोंओरसे भार्गवजीकी ओर दौड़े १२ तब धनुषको लेकर रथपर सवार बाणोंकी बर्षा करते परशुरामजीने भी राजाओंकी सेनाओं को मारा १३ तदनन्तर परशुरामजी के भयसे पीड़ामान होकर

कुछेक क्षत्रीधर्म को त्यागपर्व्वतों के बड़े दुर्गम्य स्थानोंमें ऐसे छिप गये जैसे कि सिंहसे पीड़ामान मृगछिपजातेहैं १४ उन राजाओं और ब्राह्मणों के न देखनेसे प्रजालोगोंने शूद्रभावकोपाया १५ इस प्रकार की विपरीत कर्मतासे उन द्रविड़ भीर पुंड्रदेशी क्षत्रियों ने शवरोंके साथ शूद्रभावको पाया १६ फिर क्षत्रियाओं के विधवा होनेपर ब्राह्मणोंसे मिले झुले क्षत्रियों को परशुरामजीनेमारा १७ इक्कीसवें युद्धके अन्तहोने पर बड़ी मधुर आकाशवाणीने जिसको कि सबलोग सुनतेथे परशुरामजी से यह वचन कहा १८ हे राम हे राम तुमकर्म को त्याग करो हेतात इन क्षत्रीजातों को बारंबार प्राणों से पृथक् करके आप किसगुण को देखतेहो १६ हे महाभाग इस प्रकार से ऋचीक आदिक पितामहाओं ने उन महात्मा परशुरामजी से यह कहा कि हिन्सा को त्यागो २० अपने पिता के मरणको न सहकर परशुरामजी ने उनऋषियों से कहा कि यहां आप मुझको निषेधकरने को योग्यनहीं हो २१ पितर बोले कि हे विजय करनेवालों में श्रेष्ठ तुमक्षत्रियों के मारनेको योग्य नहीं हो तुझसत्पुरुष ब्राह्मण से यहां राजाओं का मारना उचितनहींहै २२॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांएकोनत्रिंशोऽध्यायः २६॥

तीसवां अध्याय॥

पितर बोलेहे ब्राह्मणोत्तम इसहिंसाके निषेधमें एक प्राचीन इतिहासको कहताहूं उसको सुनकर तुमको वैसाही करना उचितहै १ अलर्क नाम राजर्षि बड़ातपस्वी धर्मज्ञ सत्यवक्ता महाबुद्धिमान् और दृढ़व्रतवालाहुआ २ उसने धनुषसे इस पृथ्वी को चारोंसमुद्र तक विजयकर अत्यन्त कठिन कर्म करके मनको बिचारमेंनियतकिया ३ हे बुद्धिमान् बड़े २ शत्रु विजय आदिक रूप धर्मों को करके वृक्षके मूलपर नियत उस राजाकी चिन्ता ब्रह्मप्राप्तीके अर्थहुई ४ अलर्क बोला कि मेरा अन्तःकरण संबंधीबल उत्पन्नहुआ निश्चय चितको जीतकर मेरी बिजयहै बाहरके शत्रुओंके सिवाय अपनी इन्द्रीरूप

शत्रुओंसे घिराहुआ मैं उन बाणोंको चलाऊंगा ५ जिनको कि सब जीव चाहतेहैं यह कर्म चपलतासे है मैं तीक्ष्णनोकवाले बाणोंको चित्तपर छोडूंगा अर्थात् हठयोग और बायुनिरोधसेबिजयकरूंगा६ चित्तने कहा कि हे अलर्क यह बाण किसीदशामें भी मुझको बिजय नहीं करसक्ते किन्तु तेरेही मर्मस्थलोंको छेदेंगे तब तुम मर्मस्थलों से बिदीर्ण होकर मरजावोगे अर्थात् हठयोग में मृत्यु अवश्य होती है ७ अब तुमदूसरे बाणोंको बिचारोजिनसे कि तुम मुझकोमारोगे राजा ने उसके बचन को सुनकर और बड़े बिचार पूर्व्वक उससे फिर यह बचन कहा ८ कि अनेक गन्धियोंको सूंघकर उनमेंही लोभ करतेहैं इसहेतुसे मैं घ्राण इन्द्रीपर अपनेतीक्ष्णबाणमारूंगा९ तब घ्राणइन्द्री बोली हे अलर्क यह बाण किसीदशामें भी मुझको बिजयनहीं करसक्ते तेरेही मर्मस्थलों को तोड़ेंगे फिर मर्मोंसे घायल होकर तू मरजायगा १० अन्य बाणोंको बिचारो जिससे कि मुझको तुममारोगे राजाने उसको सुन बिचार पूर्व्वक फिर यह बचन कहा ११ आप उत्तम स्वादुयुक्त रसोंको खाकर उनमें लोभ होताहै इसहेतुसे मैं जिह्वाग्रवर्त्ती रसना इन्द्रीपर अपने तीक्ष्णबाण छोडूंगा १२ रसनाने कहा हे अलर्क यह बाण किसीप्रकारसे मुझको बिजय नहीं करसक्ते तेरेही मर्मोंको काटेंगे और मर्मोंसे बिदीर्णहोकर तू मरजायगा १३ दूसरे बाणोंको बिचारकरो जिनसेकिमुझको मारोगे उसने उसको सुन और बिचार करके फिर बचन कहा १४ त्वक्इन्द्री अनेकप्रकारके स्पर्शोंको स्पर्शकरके उनमेंहीलोभ करती है इसहेतुसे नानाप्रकार के बाणों से अपनी त्वक् इन्द्री को छेदूंगा १५ त्वक्इन्द्री ने कहा हेअलर्क यहबाण किसीदशामें मुझको बिजय नहीं करसक्ते तेरेही मर्मोंको काटेंगे तब मर्मोंसे भिदाहोकर मरजायगा १६ दूसरे बाणोंको बिचारो जिनसे कि मुझको मारोगे उसने उसको भी सुनकर बिचार पूर्व्वक फिर बचन कहा १७ कि नानाप्रकार के शब्दोंको सुनकर उनमेंही लोभ करती है इसहेतुसे श्रोत्रइन्द्री पर अपने बाणोंको छोडूंगा १८ श्रोत्रइन्द्रीने कहाकियह

बाण किसीदशामें भी मुझको विजय नहीं करसक्के तेरेही मर्मोंको काटेंगे जिससे तू मरजायगा १९ इससे तुम दूसरे बाणोंको बिचारो जिनसे कि मुझको मारोगे फिर उसने उसको भी सुनकर बिचार करके बचनकहा कि यह चक्षुरिन्द्री २० बहुतसे रूपोंको देखकर उनमेंही लोभकरतीहै इसहेतु से अपने तीक्ष्णबाणोंसे मैं चक्षुरिन्द्रीको मारूंगा २१ चक्षुरिन्द्री बोली हेअलर्क यह बाणमुझको किसीप्रकारसे भी नहीं मारसक्के तेरेही मर्मोंको काटेंगे उन कटेमर्मोंसे तू मरजायगा २२ अन्यबाणोंको विचारो जिनसे कि तू मुझको मारसके उसने उसको सुन बिचारपूर्वक फिर वचन कहा २३ यह बहुतप्रकारकी निष्ठा बुद्धिसे निश्चय कीजातीहै इसहेतुसे मैं तीक्ष्ण बाणोंको बुद्धिपर छोड़ूंगा २४ बुद्धिनेकहा हे अलर्क यह बाण किसी दशामेंभी मुझको विजय नहीं करसक्के तेरेही मर्मोंको काटेंगे जिन के विदीर्ण होनेसे तू मरजायगा दूसरे बाणोंको विचारो जिनसे कि तूमुझको मारसके २५ ब्राह्मणनेकहा इसके पीछे अलर्कने वहां दुःखसेकरनेके योग्य घोरबिचारमें नियतहोकर इनसातोंपर चलाने के लिये किसी बाणकोभी ऐसा नहीं पाया जोकि सामर्थ्यमें सब से श्रेष्ठहो २६ उस सावधान चित्त समर्थने वारंवार विचार किया उस द्विजन्मावुद्धिमानोंमें श्रेष्ठअलर्कने बहुत कालतकविचारकर २७ राजयोग से परमकल्याणको नहीं पाया तब वह निश्चेष्ट अपने मनको स्वरूपमात्र निष्ठावाला करके योगमें नियतहुआ २८ पराक्रमीने एकही बाणसे शीघ्रता पूर्वक इन्द्रियोंकोमारा औरयोग से परब्रह्म में प्रवेशकरके परमसिद्धी को पाया २९ उस आश्चर्य्य युक्त राजऋषिने इस श्लोकको गाया कि बड़े कष्टका स्थानहै कि जिसप्रकार हमनेसब बाह्यकर्मकिया ३० संसारी भोगोंकी इच्छासे युक्तमैंने प्रथमराज्यके पीछेसेजाना कि योगसेबढ़करकोई सुखनहीं है ३१ पितर बोले हे परशुराम इसको तुमभी जानो और क्षत्रियों को मतमारो घोर तपस्यामें नियत होजावो इसके पीछे कल्याणको पावोगे ३२ पितामहाओंके इसप्रकारकेबचनोंको सुनकर वह महाबाहु

परशुरामजी घोरतप में नियत हुये और महा दुष्प्राप्य सिद्धीको पाया ३३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिब्राह्मणगीतायांत्रिंशोऽध्यायः ३०॥

इकतीसवांअध्याय॥

अब हृदय बन्धन नाम तीन गुण जोकि मोक्षाभिलाषीपुरुषोंको त्याग करनेके योग्य हैं उनको प्रकट करनेके लिये ब्राह्मण ने कहा कि इसलोक में तीन बड़ेशत्रुहैं वह गुणरूप वृत्तिभेद से नौ प्रकार के कहेहैं--प्रहर्ष, अर्थात् आगे प्राप्त होनेवाले प्रिय में सुखप्रीति, अर्थात्प्राप्तहुये प्रियकासुख आनन्द, अर्थात् प्रियके भोगकासुख यह तीनों सात्त्विक गुणहैं १ लोभ, क्रोध,शत्रुता अथवा ईर्षा,यह तीनों राजसी गुण कहेजाते हैं परिश्रम अथवा शोक, आलस्य,मोह, यह तीनों तामसीगुणहैं २ धैर्य्यमान,निरालस्य, शान्तचित्त, इन्द्रियोंका जीतना, मनुष्यको उचितहै कि शमादिकनाम बाणोंकेसमूहों से इन सबको काटकर दूसरोंके बिजयकरनेमें उत्साहकरताहै ३ पूर्वकल्पके ज्ञातालोग इसस्थानपर उनश्लोकों को कहतेहैं जोकि पूर्व्वसमय में शान्तरूप होनेवाले राजा अम्बरीषने गायेहैं ४ रागादिक दोषोंके प्रकटहोने और शम दमादिगुणों के बिदितहोजानेपर बड़ेकीर्त्तिमान अम्बरीषने स्वाराज्यनाम परमानन्द को प्राप्तकिया अपने दोषोंको आधीनकर गुणोंका अभ्यासकरके बड़ीसिद्धीको पाया और इनश्लोकोंको कहा५।६बहुतसे दोष बिजयकिये सब शत्रुओंको मारापरन्तु जो एक बड़ादोष मारनेके योग्यथा वह मैंने नहीं मारा ७ जो यह कर्ममेंप्रवृत्त जीवात्मा निर्लोभताको नहीं प्राप्तकरताहै और लोभसे पीड़ित होकर इसलोक में दौड़ता हुआ बुरेकर्मोंको नहीं जानता है ८ जिसहेतुसे इसलोकमें प्रवृत्त मनुष्य न करनेके योग्य कर्मको भी करताहै तीक्ष्णखड्गोंसे मारडालनेवाले उस लोभको मारो ९ लोभसेही इच्छा उत्पन्न होतीहै उससे शोच होताहै वह इच्छावान् बहुतसे राजसीगुणोंकोपाताहै उनके मिलनेपर बहुत तामसीगुणोंको

प्राप्तकरताहै १० उनगुणोंसे संयुक्त शरीररूप बन्धन रखनेवाला वह मनुष्य बारंबार जन्म लेताहै और कर्मकरता है फिर मृत्युके समयपर जीवात्मासे पृथक् गिरेहुये शरीरवाला वह मनुष्यजन्मकी आदिसे मृत्युको प्राप्तकरताहै ११ इसहेतुसे इसलोभको अच्छीरीति से बिचारकर धैर्य्यसे आत्मामें रोककर स्वाराज्यनाम परमानन्द को चाहै इसलोकमें यही राज्य है दूसरा राज्य नहीं है आत्माही ठीक२ राजा जाना गयाहै १२ अकेले लोभको मारनेवालेकीर्त्तिमान् राजाअम्बरीषनेब्रह्मानन्दकोप्रत्यक्षकरके इनश्लोकोंकोगायाहै १३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुएकत्रिंशोऽध्यायः३१॥

बत्तीसवां अध्याय॥

ब्राह्मणने कहा हे भावनी मारनेके योग्य लोभके विषयमें इस प्राचीन इतिहासको भी कहतेहैं जिसमें राजाजनक और ब्राह्मणका सम्वादहै १ राजाजनकने किसी अपराधी ब्राह्मणको उसकेअपराध की पवित्रताके निमित्त आज्ञादी कि मेरेदेशमें निवास न करनाचाहिये २ इसरीतिसे कहेहुये ब्राह्मणने उस श्रेष्ठराजाको उत्तरदिया कि हे राजाबिषयरूपी देशवाशब्दादिक ममता और बन्धनकेस्थान को वहांतक वर्णनकरो जहांतक तेरीआज्ञाके आधीनहै ३ हेसमर्थ सो मैं दूसरेराजाके देशादिक विषयमें निवासी होना चाहताहूं हे राजा शास्त्रके अनुसार तेरीआज्ञाका प्रतिपालन करना चाहताहूं ४ तब यशस्वी ब्राह्मण से इसरीतिपर कहेहुये राजाने बारंबार उष्ण श्वास लेकर कुछ उत्तर नहीं दिया उसशोचते बैठेहुये महातपस्वी राजाको अकस्मात् ऐसे मूर्च्छा आगई जैसेकि सूर्य्यमें राहु आजाताहै ५।६ फिर मूर्च्छाके दूर होजाने पर राजाने एकमुहूर्त्त मेंही उस ब्राह्मणको बिश्वास करके यह बचन कहा ७ कि मैं बाप दादोंके राज्यमें देशके आज्ञावर्त्ती होनेपरभी संपूर्ण पृथ्वीको खोजताबिषयरूपीबन्धनमें करनेवाले ममता के स्थानको नहीं पाताहूं ८ जबमैंने पृथ्वीके विषयमें बिषयकोनहीं पाया तब मिथिलापुरीमें खोजा जब

उसमेंभी बिषयको नहीं पाया तब मैंने शरीरके सुखादिक रूपप्रजा में बिचारसे खोजा ६ जब मैंने उसमेंभी बिषयको नहीं पाया तब मुझको मूर्च्छा प्राप्तहुई फिर मेरी मूर्च्छाके अन्तहोनेमें बुद्धिउत्पन्न हुई १० तबमैं बिषयको नहीं मानताहूं अर्थात् जैसेकि रक्तपीतादिक उपाधिमें बर्त्तमान स्फटिक वास्तवमें रंगसे रहित है इसीप्रकार आत्मा बिषयोंसे संबन्ध नहीं रखता अथवा सब बिषय मेराहै यह चिदाभास समेत अहंकारभी मेरा स्वरूप नहींहै अथवा सब पृथ्वी मेरा स्वरूपहै क्योंकि मुझ आत्मासे जुदा कुछ नहींहै ११ और जिसप्रकार मेरी है उसीप्रकार दूसरेकीहै हे ब्राह्मण श्रेष्ठ मैं इसको मानताहूं जबतक आपकी प्रसन्नता होय तब तक निवास करो और भोग करो १२ ब्राह्मणने कहा कि बाप दादोंके राज्यमें देशके आज्ञावर्त्ती होनेपर तुमने किसबुद्धी में नियत होकर ममता को त्यागकिया उसको कहिये १३ और किस बुद्धिमें आश्रित हो- कर सब बिषय तेराहीहै जिसहेतुसे बिषय को प्राप्त नहीं करताहै और बिषय तेराहै उसको भी कहो १४ जनक बोलेयहां धनाढ्यता और दरिद्रताआदिक सबदशा बिनाशवान् हैं इसीहेतुसे मैंने सब कर्मोंमें ममताको नहीं प्राप्तकिया जिससे यह बातहो कि यह मेरा है १५ यह किसकाहै और धनकिसकाहै अर्थात् किसीका नहींहै यह वेदका बचन है मैंने बुद्धीसे उसको नहीं पाया जिसमें कि बुद्धी से यह मेरी ममता होय १६ मैंने इस बुद्धि में आश्रित होकर ममताको त्यागाहैसुनो जिस बुद्धीकोजानकरसर्वत्र मेराबिषयहै १७ घ्राणेन्द्रीमें बर्त्तमान गन्धोंको अपने अर्थ नहीं चाहताहूं इसीहेतुसे मेरी बिजय कीहुई पृथ्वी सदैव मेरी आधीनता में नियत है अर्थात् मैं उनके आधीन नहीं हूं १८ मुखमें बर्त्तमान रसोंको भी अपने निमित्त नहीं चाहता इसीहेतुसे मुझ से बिजय कियाहुआ जल सदैव मेरी आधीनतामें नियतहै १९ मैं रूप और चक्षुकी ज्योति को अपने लिये नहीं चाहता हूं इसीहेतुसे मुझसे बिजय की हुई ज्योति सदैवमेरी आधीनतामें बर्त्तमानहै २० जो स्पर्श करनेवाली

त्वगिन्द्री जिसमें बर्त्तमानहैं मैं उनको अपने निमित्त नहीं चाहता इसहेतुसे मुझसे बिजयकीहुई बायु सदैव मेरे आधीन नियतहै २१ मैं श्रोत्रइन्द्री के बर्त्तमान शब्दादिकों को अपने लिये नहीं चाहताहूं इसहेतुसे मुझसे बिजय कियेहुये शब्द सदैव मेरे आधीन बर्त्तमानहैं २२ मैं सदैव मनकेसंकल्पको अपने निमित्त नहींचाहता इसकारण बिजयकियाहुआ मन सदैव मेरे अधीन बर्त्तमानहै २३ देवता पितृ भूत और अतिथियों के अर्थ चाहताहूंऔर सबकर्मों के प्रारंभ इसी निमित्त होतेहैं २४ इसके अनन्तर ब्राह्मणने हँसकर राजाजनक से कहा यहां अब तुम अपनी परीक्षाके लिये आये हुये मुझ धर्मको जानो २५ तुम्हीं एकअकेले इस चक्र अर्थात् ममतासे रहित ज्ञानरूप प्रवृत्तिके जारी करनेवाले हो जो कि ब्रह्ममें लय होनेका कारण न रखनेवाला सीमाके अन्तपर पहुंचनेवालाहै और जिसकी नेमि सतोगुणहै २६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांद्वात्रिंशोऽध्यायः३२॥

तेंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्मविद्या समाप्तहुईसाधनों समेत जीवन्मुक्त की दशा कहने को ब्राह्मणने कहा हे भीरु मैं लोक में इसरीतिसे नहीं विचरताहूं जैसे कि तुम अपनी वृत्तीसे निन्दाके निमित्त मुझको संगी कहतेहो मैं वेदपाठी हूं मुक्तहूं बनचारीहूं और ब्रत करनेवाला गृहस्थीहूं १ हे सुन्दरमुखी मैं वैसा नहींहूं जैसा कि तुम मुझको देखती हो यहसब प्रत्यक्ष जो कुछ ब्रह्माण्डमेंहै मुझसेव्याप्तहै अर्थात् मैं सबकाआत्माहूं २ लोकमें जो स्थावर जंगमजीवहैं उनका लयकरनेवालामुझको ऐसा जानो जैसे कि लकड़ियोंका लय करनेवाला अग्नि होताहै ३ उसीप्रकार यह बुद्धी जानतीहै कि सब पृथ्वी और स्वर्गमें भी मेरा राज्यहै और बुद्धि ही मेराधनहै ४ ब्रह्मज्ञानी ब्राह्मणोंका ज्ञानरूप मार्ग्ग एक है जिससे कि गृहस्थ बनबास ब्रह्मचर्य्य और संन्यास आश्रमोंमें लोग चलतेहैं ५ बहुत प्रकारके दृढ़ चिह्नोंसे एकहीबुद्धि

उपासना कीजातीहै बहुतप्रकारका चिह्नरखनेवाले जिन आश्रमों की बुद्धि बिजयकीहुई बाह्य न्द्री रूपहै वह अद्वैत ब्रह्मभावको ऐसे पातेहैं जैसे कि नदियां समुद्रको पातीहैं यह मार्ग बुद्धीसे मिलताहै शरीरसे नहीं प्राप्त होता ६। ७ सब कर्म आदि अन्त रखनेवालेहैं शरीर कर्म्मों से बंधा हुआहै ८ हे सुभगे इसीसे अनात्मलोक से उत्पन्न तेरा भय नहीं है मुझसे एकता प्राप्त करनेमें प्रवृत्त तुम मेरी आत्माको प्राप्त होगी ९॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांत्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३॥

चौंतीसवां अध्याय॥

ब्राह्मणी बोली कि यह बहुत थोड़ा किन्तु संक्षेप ज्ञान निर्बुद्धी और म्लानअन्तःकरणवालोंसे जानना संभव नहींहै मेराज्ञान नाशमानहुआ १ अब उस उपायको मुझसे कहो जिससे कि यह बुद्धि प्राप्त कीजातीहै और उसहेतुको भी मैं तुमसे जानना चाहतीहूं जिससे कि यह बुद्धि बर्त्तमान होतीहै २ ब्राह्मणने कहा हे ब्राह्मणी बुद्धिको अरणीकाष्ठ जानो और उसका गुरू ऊपरका अरणीकाष्ठहै तब मननआदिक बिचार और वेदांतका श्रवण दोनों इसको मथते हैं उससे ज्ञानाग्निकी उत्पत्ति होतीहै ३ ब्राह्मणी बोली यह जो जीवात्मानामहै वह असंग ब्रह्मका स्वरूपहै वह कहां अर्थात् नहीं होसक्ता क्योंकि जिससे उसका स्वरूप जानना संभव हो उसका स्वरूप कहां देखागया अर्थात् कहीं नहीं देखागया ४ ब्राह्मण ने उत्तर दिया कि जो यह क्षेत्रज्ञ कहाहै वह चिह्न से रहित है क्योंकि निर्गुणहै इसके सगुणहोनेका कारण दिखाई नहीं पड़ताहै अर्थात् भ्रान्तिरूप है सच्चानहीं है मैं अब उस उपायको कहताहूं जिससे कि वह जानाजाय अथवा बिनाचित्तशुद्धी भ्रान्तीके दूर न होनेसे न जानाजाय५ वेदान्त शास्त्रादिकोंका श्रवणरूप पूर्ण उपाय देखा जैसे कि पुष्पके भीतर नियतहुये भ्रमरोंको सुगन्ध दृष्टपड़ती है उसीप्रकार आत्माभी समाधि शास्त्रादिकोंसे दिखाई देताहै कर्म

से पवित्र जो बुद्धिहै वही पूरा उपायहैउस बुद्धीकेन होनेसे अज्ञानी पुरुष उस ज्ञानके चिह्नोंमें नियत आत्माको संगीमानतेहैं ६ यह कर्त्तव्यहै यह अकर्त्तव्यहै यह बात मोक्षके धर्नीमें उपदेश नहीं की जातीहै क्योंकि यह ब्रह्मज्ञान उस त्याग और स्वीकार से रहित सच्चिदानन्दसे सम्बंध रखनेवालाहै द्रष्टाऔर श्रोता मनुष्यकी बुद्धि जिसबातके धर्नीमें प्रकट होतीहै तात्पर्य्य यह है कि उस स्थानपर शुद्ध ब्रह्मके सिवाय कुछ बाकी नहीं रहता ७ जहांतक संभव होयँ उतनेहीअंशोंकोकलपनाकरे जो कि अव्यक्त अर्थात् अविद्याआदिक माया शब्दादिक व्यक्तरूप और वृत्तिभेदसे सैकड़ों और हजारोंहैं तात्पर्य्य यह है कि वह सब मनहीकेविचार हैं सत्य नहीं हैं ८वह सब नानाप्रकारके अर्थोंसे युक्तऔर प्रत्यक्षताके कारण रखनेवालेहैं शम दमादि गुणोंके अभ्यास होनेपर अधिकारी पुरुष वह वस्तुहोगा जिससे कि कोई दूसरा वर्त्तमान न होय तात्पर्य्य यहहै कि ब्रह्म प्राप्तीउसप्रकारकीहै जैसे कियादसे भूलीहुईकंठगतमालाका स्मरण आवे ६ श्रीभगवान् बोले कि इसके पीछे परमात्मा में जीवात्मा के लय होनेपर उस ब्राह्मणीकी ब्रह्माकार बुद्धि उत्पन्नहोगई क्षेत्रकेही ज्ञानसेक्षेत्रज्ञसेभी बड़ा अर्थात् ब्रह्म प्रकट होता है आशय यह है कि जीवात्माही उपाधिके लय होजाने से ब्रह्मरूप है १० अर्जुनने पूछा हे श्रीकृष्णजीवहब्राह्मणी कहांहै और वह श्रेष्ठ ब्राह्मण कहांहै जिन्होंने कि यह सिद्धीप्राप्तकी हे अबिनाशी उनदोनोंका वृत्तान्त मुझसे कहिये ११ श्रीभगवान् बोले कि हे अर्जुन मेरे चित्तकोही ब्राह्मण जानो और मेरी बुद्धिको ब्राह्मणी जानो और जिसको क्षेत्रज्ञ वर्णन कियाहै वह मैंही हूं १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

ब्रह्मरूप मन और बुद्धिसे ब्रह्मजानाजाताहै उन दोनोंका साक्षी चैतन्यात्माहै वहांपर प्रपंच और साक्षीदो हुये वह दोनों ब्रह्म हैं

अथवा उनदोनोंमें जो ब्रह्महै उसके पूछने को अर्जुनने प्रश्न किया कि जो सबसे परे ब्रह्म जाननेके योग्यहै उसको मुझसे कहने को आप योग्यहैं आपकी कृपासे मेरी बुद्धि उस प्रपंचसे रहित होकर ब्रह्ममें रमतीहै २ बासुदेवजी बोले इसस्थानपर उस प्राचीन इतिहासको कहताहूं जिसमें मोक्षसम्बन्धी शिष्य गुरूका सम्बाद है शास्त्रोंको स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी शिष्यने किसी बैठे हुये बड़े ब्रतनिष्ठ प्रशंसनीय आचार्य्य ब्राह्मण से पूछा कि हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले कल्याण क्याहै ३ मैं मोक्षाभिलाषी होकर भगवान्‌की शरणमें आयाहूं हे वेदपाठी शिरके बल आपसे प्रार्थना करताहूं किजो मैं पूछूं उस को आप मुझसे बर्णन कीजिये ४ हे अर्जुन तब उस गुरूने इसप्रकार से प्रार्थना करनेवाले शिष्य से कहा हे ब्राह्मण जिस२ में तुझको संशयहै वह सबतुझसे कहूंगा ५ हे कौरवों में श्रेष्ठ बड़े बुद्धिमान् अर्जुन गुरूसे इसप्रकार आज्ञप्त गुरूके प्यारे शिष्यने हाथ जोड़कर जो २ प्रश्न किये उनको तुम मुझसे सुनो ६ शिष्यनेकहा कि मैं कहांसे आया तुम कहांसे प्रकट हुये इन दोनों से परे जो अबिनाशी ब्रह्महै उसकोकहिये आकाशादिक तत्त्व और पंच भूतात्मक सृष्टिजोकि स्थावर और जंगम नाम से प्रसिद्धहै वहां से उत्पन्न हुये ७ वह दोनों प्रकारके जीवकिससे जीवते रहते हैं उनसे परे और उनके लयका स्थान कौन है सच्चे फलवाला कौनसा कर्महै कायिक बाचिक मानसिकनाम तप क्याहै और सत्पुरुषों से कहेहुये सत्त्वादिगुण कैसे स्वरूपवाले हैं ८ हे भगवन् कल्याण मार्ग कौनसेहैं सुखक्या है पाप क्याहै हे श्रेष्ठब्रत इन प्रश्नोंको यथार्थता पूर्व्वक ९ मूल समेत आप मुझसे कहनेको योग्यहैं हे ब्रह्मऋषि आप के सिवाय कोई इन प्रश्नोंके कहने को योग्य नहीं है १० हे धर्मज्ञों में श्रेष्ठ मुझको बड़ा शोच है इससे अवश्यकहो आप सबलोगों में मोक्षधर्म और अर्थमें पूर्ण कहेजाते हो ११ आपके सिवाय सब सन्देहोंका निवृत्त करनेवालाकोई वर्त्तमान नहींहै और हम संसार से भयभीत और मोक्षके अभिलाषी

हैं १२ वासुदेवजी बोले हे कौरवों के कुल में श्रेष्ठशत्रु. विजयी अर्ज्जुन उस बुद्धिमान् व्रत धारी गुरूने उस शरणागतकी बुद्धि के अनुसार गुणवान् शान्तरूप अपने अभीष्ट कर्ममें प्रवृत्त छायारूप इन्द्रियों के जीतनेवाले यती ब्रह्मचारी के अर्थ उन सब प्रश्नोंको अच्छी रीति से वर्णन किया १३ । १४ गुरू बोले कि यह सब तेरे प्रश्न वेद विद्या में आश्रित होकर उत्तम ऋषियों से अभ्यास कियेहुये ब्रह्माजी के वर्णन किये हुयेहैं और जिसमें ब्रह्मज्ञान रूप अर्थ का विचार है १५ परब्रह्मसे सम्बन्ध रखनेवाला ज्ञान श्रेष्ठ है संन्यासनाम तप उत्तम है जो पुरुष अपने पूर्ण निश्चय के द्वारा उस पीड़ा आदिक से रहित ज्ञान तत्त्वको जानताहै औरजो संपरिज्ञात दशामें सब जीवोंमें नियत आत्माको जानताहै वह सब मनो रथोंको सिद्ध करताहै १६ जो ज्ञानी संपरिज्ञात दशामें जड़ चैतन्य को एकत्वभाव तं पदार्थ ज्ञानमें पृथक्ताको देखताहै इसीप्रकार जीव ईश्वरकी एकताकोभी देखताहै और व्यवहार में उन दोनोंके बहुतसे भेदोंको देखताहै वह दुःखसे छूटताहै १७ जो किसीप्रकार कोभी इच्छानहीं करताहै अर्थात् ममतासे रहितहै निरभिमानी अर्थात् अहंकारसे रहितहै वह इसीलोकमें नियत ब्रह्मभावके योग्य है अर्थात् जीवन मुक्त है १८ माया और सत्वादिक गुणोंके मूलका जाननेवाला सब जीवोंके उत्पत्ति कारण से विदित अहंकार ममता से रहित पुरुष निस्सन्देह मुक्त होताहै १९ जिसवड़े वृक्षका उत्पन्न होना अज्ञाननामबीजसेहै महत्तत्त्वरूप बुद्धिही उसकीशाखाहै महा अहंकार उसके पत्र समूहहैं इंद्री रूप अंकुर जिसके छिद्रोंमेंहैं २० आकाशादिक महाभूत उसकी निविड़ता स्थूल सृष्टी रूप उसकी छोटी २ शाखाहैं संकल्प रूपी सदैव रहनेवाले पत्ते और फूलोंका रखनेवाला और सुखादिक कर्म्म फल रखनेवालाहै यह वृक्षसदैव उत्तमफलोंका उदयकरनेवालाहै २१ इसके विशेष जीवात्मासेलेकर सब दृश्य पदार्थोंकाबीज सनातनब्रह्महै इसको मूलसमेत जानकर और ज्ञानरूपी उत्तम खड्गसे मायारूपी वृक्षकोकाटकर अविना-

शताको प्राप्तकरके जन्म और मृत्युको त्यागकरताहै तात्पर्य यहहै कि ज्ञान खड्गकीओर दृष्टि करके सब तत्त्वादिक अज्ञानकी प्रकटतासे उत्पन्न हैं २२ जिसमें भूत बर्तमान और भविष्यत आदिक और धर्म अर्थ कामादिकका निश्चयहै और सिद्धोंके समूहोंसेजाना गया उस सनातन २३ और उत्तम ज्ञानके लय स्थानरूप ब्रह्मको अब तुझसे कहताहूं हे महाभागिनी इस लोकमें ज्ञानी पुरुष जिस बुद्धिसे मुक्तहोतेहैं, २४ पूर्वसमयमें सबकर्मगतिरूपमार्गोंमें बारंबार चलकर अपने कर्मोंसे थकेहुये परस्पर ब्रह्मज्ञान के अभिलाषी इन सन्तानवाले भरद्वाज गौतम भार्गव बशिष्ठ कश्यप विश्वामित्र और अत्रि इन सब ऋषियोंने इकट्ठे होकर २५ । २६ वृद्ध अंगिरस ऋषि को अग्रवर्त्ती करके ब्रह्मलोकमें उसपाप रहित ब्रह्माजी को देखा २७ नम्रतायुक्त महर्षियोंने उस सुखपूर्वक बैठे हुये महात्माको दण्डवत् करके इस परम कल्याणको पूछा २८ कि कैसे शुभ कर्म करे कैसे पापसे निवृत्तहोय हमारे कल्याणमार्ग कौनसेहैं कौनसा सत्यकर्म्म है और कौनसा पापकर्महै २९ उत्तरायन दक्षिणायन दोनों कर्म्म मार्गों को कौन प्राप्त करताहै प्रलय मोक्ष और जीवोंका जन्म मरण किस रीतिसे होताहै ३० उत्तम मुनियों के ऐसे बचन सुनकर उन ब्रह्माजी ने जो उत्तर दिया उस सबको मैं शास्त्रके अनुसार तुझसे कहताहूं हे शिष्य श्रवणकरो ३१ ब्रह्माजी बोले कि तीनों कालमें जो रूपान्तर दशासे रहितहै उस ब्रह्मसे अव्यक्त भूतादिक आकाशादि, स्थावर, जरायुजादिक चर उत्पन्न हुये और कर्म्म से प्राणी जीवतेहैं अपने उत्पत्ति स्थान ब्रह्मको उल्लंघनकर अर्थात् धर्म्मसे च्युत होकर विक्षेपदशामें अपने कर्मपर कर्मकर्त्ता होतेहैं हे सुन्दर ब्रतवाले ऋषियो इसको यथार्थही जानो ३२ वह निर्गुण ब्रह्म जब गुणसे युक्त होताहै तब निश्चयकरके पांच लक्षणवाला है ३३ ब्रह्म सत्यरूप तप सत्य रूप और प्रजापति अर्थात् जीवात्मा सत्यरूप है सत्य ब्रह्मसे पंचभूत उत्पन्नहुये यह जगत भी सत्यरूपहै ३४ इसी हेतु से सदैव योगमें नियत क्रोध दुःख से रहित नियमवान्

धर्मसेतु वेदपाठी ब्राह्मणभी सत्य प्रधान होतेहैं ३५ मैं परस्परीय ज्योतिसे धर्मपर नियत विद्यावान् धर्म मर्यादा जारी करनेवाले जगतके पिता उन सनातन ब्राह्मणोंको वर्णन करताहूं ३६ ज्ञानियों ने सदैव एक धर्मको चार चरण रखनेवाला कहाहै धर्म अर्थ काम मोक्षके देनेवाले विद्याको चारों वर्ण आश्रमोंके विषयमें पृथक् २ वर्णन करताहूं ३७ हेऋषियो मैं कुशल मंगल उत्पन्न करनेवाले कल्याणरूप मार्गको तुमसे कहताहूं निश्चय करके वह पूर्वसमय में ब्रह्मज्ञानकेनिमित्त ज्ञानियोंसे प्राप्तकिया गयाहै ३८ हे भाग्य-वान् बोलनेवाले ऋषियो अब यहां मुझसे उस मार्गको संपूर्णता समेत जानो और उसके द्वारा दुर्ज्ञेय सबसे परे बड़े लयस्थान ब्रह्मको जानो ३९ ब्रह्मचर्य्य नाम आश्रमको ब्रह्ममें लय होनेकी पहली रीति कही गृहस्थाश्रम दूसरा है उसके पीछे वाणप्रस्थ आश्रमहै ४० उससेपरे संन्यास आश्रमको परमपद जानना योग्य है अग्नि आकाश सूर्य्य वायु इन्द्र और प्रजापति यह तबतकही दृष्टिगोचर होतेहैं जबतक कि संन्यास के साथ ब्रह्मज्ञानको प्राप्त नहीं करताहै और फिर उनको नहीं देखताहै ४१ उसके उपायको वर्णन करताहूं प्रथमही उसको समझो वनमें रहनेवाले फलमूल और वायुके भोजन करनेवाले मुनि ४२ रूप तीनों द्विजका वाण-प्रस्थ धर्म दिखाई देताहै और वह गृहस्थाश्रम सब वर्णोंका धर्म रूप कहाजाताहै ४३ जो श्रद्धा अर्थात् आस्तिक्य बुद्धिहै वही धर्म को जतलाने वालीहै पंडितलोग उसीको धर्म कहतेहैं इस प्रकार देव यानमार्ग मिलने के उपाय तुमसे कहे जोकि सत्पुरुष पंडितों से अभ्यास किये हुयेहैं और वह पंडित कर्मोंके द्वारा धर्मके सेतु-रूपहैं ४४ जो व्रत में प्रशंसनीय मनुष्य इन धर्मोंमेंसे एक धर्मको अभ्यास करताहै वह समयपर अर्थात् क्रमपूर्व्वक मनकी पवित्रतासे सदैव जीवधारियोंकी उत्पत्ति और नाशको जानताहै ४५ इसका-रण युक्तिसे उन तत्त्वोंको पूरा२ वर्णन करताहूं जोकि सब वुद्धियों में नियत और भागी होकर वर्त्तमानहैं ४६ अव्यक्त, महत्तत्त्व, अ-

हंकार, पंचभूत, दशोइन्द्री, मन ४७ पंचतत्त्वोंके शब्दादिक बिषय यहचौबीस तत्त्वोंको उत्पत्ति और पुरुष समेत तत्त्वोंकी संख्याबर्णन करी ४८ जो मनुष्य सब तत्त्वोंकी उत्पत्ति और लयको जानता है वह पंडितसब तत्त्वोंमें मोहको नहीं प्राप्त होताहै ४६ जो पुरुषसब गुणतत्त्व और अखिल देवताओं को ठीक२ जानताहै वह पापसे रहित संसार बंधनसे छूटकर सर्वात्मारूप होनेसे सब निर्मललोकोंको भोगताहै ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व णिब्राह्मणगीतायांगुरुशिष्य संबादेपंचत्रिंशोऽध्याय: ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय॥

तत्त्वोंकी व्याख्या करनेको ब्रह्माजी बोले कि वह तीनोंगुणोंका समूह गुप्त अव्यक्त सबमें व्यापक अबिनाशी और निश्चलहै उसको शरीर रूपीपुर जानों उसके नौ द्वारहैं पांचोंइन्द्री मन बुद्धि प्राण और अहंकार और जिसमें पांचतत्त्वहैं १ बिषय भोगबासनासे जीवको चलायमान करनेवाली ग्यारहइन्द्री जिसमेंहैं और मनसेप्रकट होने वाले बिषय जिसमें नियतहैं और उसकी बुद्धिस्वामिनीहै वह शरीर रूपी पुरी ब्रह्मरूपहै जो ग्यारहवां मनहै वही सबका रूपहै २ उस मनमें तीननदियांहैं प्रथम कठिन नाम हिंसासे रहित धर्म रूप नदीदूसरी कृष्णा नाम हिन्साप्रधाननदी तीसरी शुक्लकृष्णनाम हिन्सासे युक्त प्रवृत्ति प्रधाननदी यह तीनों नदियां बारंबार वृद्धि पातीहैं त्रिगुणरूप संस्कार स्वरूप तीननाड़ियांहैं यह नदियांउनसे जारीहोतीहैं ३ अव्यक्तके अंगरूप सत्वरजतमहैं इन्हींको गुण कहते हैं वह सब परस्पर मिलेहैं अर्थात् स्त्री पुरुषके समान एक सृष्टिको उत्पन्न करतेहैं और बीजअंकुरके समान परस्पर जीवतेरहनेवाले हैं ४ परस्पर आश्रयस्थानरूप स्वामी सेवकके समान परस्परबर्तनेवाले और परस्पर एक एकमें मिलेहुयेहैं और पंचतत्त्वतीनों गुणोंके रूपहैं ५ सतोगुण तमोगुणका जीतनेवालाहै रजोगुण तमो-

गुणका जीतने वाला और सतोगुण रजोगुणका विजय करने वाला होताहै तमोगुण सतोगुणका जीतनेवालाहै ६ जिसस्थान परतमोगुण दूरहोताहै वहां रजोगुण बर्त्तमान होताहै और जहांपर रजोगुण दूरहोताहै वहांसतोगुण वर्त्तमान होताहै ७ तमोगुणकोरात्रिरूपजाने जो पापकर्मोंमें प्रवृतहैं उन्होंके तीनोंगुण मोहनाम और धर्मनाम लक्षण रखने वालेहैं ८ सब जीवोंमें प्रवृत्त दृष्टआने वाले रजोगुणकी उत्पत्तिके चिह्नको स्वभाव रूप और विरोधीकरने वाला कहतेहैं ९ सब जीवोंमें जो प्रकाशश्रद्धा और धर्म ज्ञानादिकोंमें सावधानी है यहीसतोगुणका रूपहै औरधर्मज्ञानादिकोंमें सावधानी साधुओंकी स्वीकृत है १० इन गुणोंसे सृष्टिके गुणजो कहेहैं वह ब्योरे समेतहैं और सहेतुक बर्णन किये जातेहैं उनको मूल समेत जानो ११ पूर्णमोह, अज्ञान, त्यागकेयोग्य को न त्यागना कर्मोंका बिचार न करना शयन, अहंकार, भय, लोभ, शोक, अपने कर्म में दोषलगाना १२ भूलजाना, संशय,नास्तिकता,दुराचार योग्या, योग्य में बिवेक न होना सब इन्द्रियोंसे, अन्धापन होना बुरेगुण, हिन्सा, अपवित्रता,आदिकमेंरहना १३ कामकी अपूर्णतामेंपूर्णता मानना अज्ञान,को ज्ञान जानना,मित्रताकात्याग,धर्ममें, अप्रवृत्तिता अश्रद्धा, अज्ञानता, १४ कुटिलता, अचेतता,पापकर्म, बिस्मरणता, आलस्यादिक, देवताआदिकोंमें भक्तिका न होना अजितेन्द्री,तुच्छ कर्ममेंप्रीति, १५ यह सब गुण और चलन तामसीहैं इस लोकमें जो दूसरे भाव नियतहुयेहैं वह सब तामस गुण जहां तहां नियम से प्रत्यक्षमें नियत होतेहैं १६ सदैव देवता और ब्राह्मणोंको निन्दासे युक्त निन्दा बचन कहना त्यागकरनेके योग्य गुणोंकोन त्यागना मोह, क्रोध, अशान्ती, १७ जीवोंपर ईर्षा यह सब तामसी चलन कहे जाते हैं जो कि प्रारंभकर्म निरर्थकहैं और निष्फलदान हैं १८ जो निरर्थक भोजनहैं इसको तामसी चलन कहतेहैं कठोर बचनादिक अशान्ती ईर्षा अहंकार १९ अश्रद्धा यह भी तामसगुण कहे जातेहैं इस लोकमें जो कोई मनुष्य इस प्रकार के पाप कर्म

करनेवाले २० मर्यादासे रहित हैं वह सब तामसीहैं अब इनपाप करनेवालोंकी निश्चित योनियोंको बर्णन करताहूं अर्थात् नर्कमें जानेके निमित्त नीचे और तिरछेनर्कोंमें जानेवाले स्थावर, पशु, सवारी के पशु, कच्चेमांसभक्षी, सर्पादिक, कृमि, कीट, परण्ड, अंडजजीव, सब प्रकार के पशु २१।२२ उन्मत्त बधिरमूक और जो २ अन्य पाप योगीहैं अज्ञानमें डूबेदुराचारीअपनेकर्मोंका चिह्नरखने वाले २३ जिनके चित्तका प्रवाह अधोगतिके योग्यहै यह तामसी मनुष्य तमोगुणमें डूबेहुयेहैं २४ अब इसके पीछे इनकी रीतें प्रताप और पुण्यके उदयकोबर्णन करताहूं जैसे कि वहपवित्र कर्मीहोकर शुभ कर्मियोंके लोकोंको प्राप्तकरतेहैं २५ जो जीवस्थावर शरीर वृक्षादिक और तिरछे चलनेवाले पशुपक्षीआदिक योनियोंमें नियत हैं वह अग्नि होत्रादिकके निमित्त अपने धर्ममें प्रवृत्त शुभ चिन्तक ब्राह्मणों के हाथसे घायल होकर २६। २७ सन्स्कार से ऊपरके लोकोंमेंजातेहैं फिर वहांसे क्षीणपुण्यहोकर च्युतहोके ब्राह्मणादिक बर्णोंको प्राप्त करके उपाय करनेवाले होकर स्वर्गमें देवताओंकी सालोक्यताको प्राप्तकरतेहैं यहवेदकी श्रुतिहै २८ वह स्थावरजीव पशु पक्षी ऊपरलिखेहुई रीतियोंसे अपने कर्मोंमें सावधान होतेहैं वहइसलोकमें न परावृत्ती नाम धर्मवाले मनुष्य होतेहैं २९ पाप योनिमें वर्त्तमान चांडाल और गूंगेमनुष्य और दूसरे बर्णोंको भी क्रमपूर्वक प्राप्तकरतेहैं ३० शूद्रबर्णको उल्लंघनकर वैश्यादिकको योनिप्राप्त होनेमें जो दूसरे तामसगुणहैं वह तामसीइन्द्रीमें प्रवेश करकेवर्त्तमान होतेहैं ३१ स्त्री आदिक अभीष्टवस्तुओंमें जो स्नेहहै वह महामोहनाम कहाजाताहै सुखके चाहनेवाले ऋषि मुनि और देवता इसमें मोह को पाते हैं ३२ तम, मोह, महामोह, क्रोधनाम तामिश्र, मरणनाम अन्धतामिश्रहै परन्तु तामिश्र क्रोध कहाजाताहै अर्थात् तामिश्र और अन्धतामिश्र यह दोनों द्वेष और अभिनिमेष नाम कहेजाते हैं ३३ हे ब्राह्मणो यह सब बर्णगुण योनितत्त्व से तमोगुणहीहै जो कि बुद्धिके अनुसार मैंने तुमसे कहा कौन इसको

अच्छी रीतिसे जानताहै और कौन इसको अच्छे प्रकारसे देखताहै जो पुरुष अतत्त्व में तत्त्वको देखता है वही तमो गुण का लक्षण है ३४। ३५ तमके गुण बहुत प्रकारके बर्णन किये और वह उत्पादक और उत्पाद्य रूप तम भी ठीक कहा जो मनुष्य इन गुणोंको जानताहै वह सब तामसी गुणोंसे छूटजाताहै ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंबादेषट्त्रिंशोऽध्यायः ३६॥

सैंतीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले हे महाभाग ऋषियो जैसाकि रजो गुणहै उसको भी मैं यथार्थतासे कहताहूं तुम राजसी चलनको समझो १ सन्ताप, रूप, परिश्रम, सुख, दुख, शीत, उष्ण, ऐश्वर्य्य, बिग्रह, सन्धि, हेतुवाद, रति, क्षमा, २ बल, शूरता, मद, रोष, व्यायाम, कलह, ईर्षा, ईप्सा, पिशुनता, युद्ध, ममता, शरीरादिकका पालन ३ मरण, और बन्धनका दुःख मोलवेच, काटो छेदो घायलकरो इस प्रकार दूसरेके मर्मस्थलोंको काटना ४ कठोर वचन, धिक्कार देकर वोलना, गालीदेना, पराये छिद्रका कहना, लोकचिन्ताकी चिन्ता, मत्सरता, परिपालन, मृषाबाद, मृषादान, विकल्प, निन्दायुक्त दुर्बाद, प्रशंसा प्रताप, परिधर्षण अर्थात् दूसरेको विजयकरना ५। ६ परिचर्य्या अनुशुश्रूषा, सेवा, तृष्णा, व्यपाश्रय, अर्थात् व्यवहारमें सावधानी नीति शास्त्र, प्रमाद, परिवाद, परिग्रह ७ लोकमें जो सन्स्कार मनुष्यस्त्री अन्यजीव द्रव्य, और रक्षकोंमें वर्त्तमानहोतेहैं ८ पश्चात्ताप, अबिश्वस्यता, व्रत, नियम, आशीर्वादात्मककर्म, नानाप्रकारके कर्म, बापी, कूपादिकोंका बनवाना ९ स्वाहाकार, नमस्कार, स्वधाकार, बषट्कार, याजन, अध्यापन, यज्ञकरना कराना वेदका पढ़ना पढ़ाना १० दानदेना दानलेना प्रायश्चित्त, मंगलकर्म, यहमेराहै यह मेराहो गुणसे उत्पन्न प्रीति ११ शत्रुता, माया अर्थात् छलनिकृति, अर्थात् फरेब, अहंकार, चोरी, हिन्सा, निन्दा, अपने इष्ट मित्रोंकी व्याकुलतासे चित्तमें जलन जागरण, १२ पाखंड, गर्व, प्रीति, भक्ति,

स्नेह, प्रमोद द्यूत जन बाद और जो स्त्री संबंधी नातेदारीहैं १३ और जो कोई नृत्य गान और बाजोंकी संगतिहैं हे ब्राह्मणलोगो यह सब गुण राजसी कहेजाते हैं धर्म अर्थ काम त्रिवर्ग पृथ्वीपर प्रकट भूत भविष्य वर्त्तमानको उत्पन्न करनेवाले और सदैव उन में प्रीति करनेवाले हैं १४।१५ काम व्रत अर्थात् अध्याश मनुष्य सब इच्छाओंकीवृद्धि से प्रसन्न होतेहैं यह रजोगुणी मनुष्य स्वर्गसेनीचे पृथ्वीपर निवास करनेवाले हैं १६ वह बारम्बार जन्मलेनेवाले लोग इसलोक में आनन्द करतेहैं और इस जन्म और दूसरेजन्म की कुशलताको चाहते हैं १७ दान करतेहैं दान लेतेहैं तर्पणकरते नित्य नियम करते और हवन करते हैं १८ रजोगुणके अनेक प्रकारकेगुण तुमसेकहे और उस गुणकी रीतियांभी यथार्थ वर्णन करीं जो मनुष्य इन गुणोंको जानताहै वह सदैव सब राजसीगुणों से छूटजाताहै १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसम्बादेसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीबोले कि इसकेपीछे अब में तीसरे उत्तम गुणको वर्णन करताहूं जोकि सब जीवोंका हितकारी निर्दोष और लोक में सत्पुरुषोंका धर्महै १ आनन्द, प्रीति, उद्रेक, अर्थात् प्रतापका उदय सब प्राणीमात्रोंसे हितकरना सुख उदारता, निर्भयता, सन्तोष, श्रद्धा, २ क्षमा, धैर्य, अहिन्सा, सबमें एकभावहोना सत्यता सत्य बोलना क्रोध न करना दूसरेको दोष न लगाना बाह्याभ्यन्तरकी पवित्रता सावधानी पराक्रम ३ यह गुणसतोगुण कहलातेहैं जो ज्ञानचलन सेवा और प्रीति निरर्थकहैं उनको जानकर जो योग धर्मपर चलताहै वह आत्मामें अविनाशी पनेको पाताहै ४ ममता, अहंकार और आशासे रहित सबओर से समदर्शी और अनिच्छा वान्हो यह सत्पुरुषोंका सनातन धर्महै ५ विश्वास, लज्जा, क्षमा, त्याग, बाह्याभ्यन्तर, की पवित्रता निरालस्यता, दया, विमोहनहोना

जीवोंपर दया करना किसीकी निन्दा न करना ६ पुत्रादिके जन्मसे उत्पन्न सुख, सन्तोष, प्रसन्नमुख रहना, नम्रता, मधुरप्रिय भाषी मुक्तिके उपायमें पवित्रता, सुबुद्धिता, जीवनमुक्ती ७ उदासीन होना ब्रह्मचर्य्य, सर्वत्याग, ममता और इच्छा न होना धर्ममें पूर्णता ८ और उसमोक्षमार्गमें दानयज्ञ वेदपाठ व्रतदानलेनाधर्मऔर तपको निरर्थक न जानना ६ इस लोकमें सतोगुणमें आश्रितवेद और सगुण ब्रह्ममें नैष्ठामान जो कोई ब्राह्मण ऐसा चलनरखने वालेहैं वहीपंडित और साधुदर्शीहैं १० वह शोकरहित पंडित मनुष्य सबराजसी तामसीकर्म रूप वा पापोंको त्याग करके स्वर्गको प्राप्तहोकर फिर योगबलसे वहुत प्रकारके शरीरोंको उत्पन्न करतेहैं ११ जो ईशित्व अर्थात् सवपर शासन वशित्व, अर्थात् सबका अधिकारी और मनसे लघुत्व अर्थात् सूक्ष्मता उत्पन्न अथवा प्राप्तकरतेहैं वहस्वर्ग वासी देवताओं के समान हैं १२ यह ऊपरके लोकों में जानेवाले वैकारिक नाम देवता कहेजाते हैं भोगजन्य संस्कारके द्वारा फिर भोगकेलिये अपनी प्रकृतिको विपर्य्ययकरनेवाले स्वर्गमें वर्त्तमान वह योगी १३ जो २ चाहतेहैं वहसव अपने आप प्राप्त होतेहैं और दूसरेके भी अभीष्टको देतेहैं हे ऋषियो यह सात्विकी चलन मैंने तुमसे कहा १४ मुख्य करके सात्विकीगुण वर्णन किये और गुणों का ठीक २ चलनभी कहा जो मनुष्य इन गुणोंको जानता है वह सदैव गुणोंको भोगताहै और गुणोंमें आशक्त नहीं होता १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंवादेअष्टत्रिंशोऽध्यायः३८॥

उन्तालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीबोले कि सबगुणपृथक् २ वर्णनकरने असंभवहैं क्योंकि रजोगुण सतोगुण तमोगुण यह तीनोंसंयुक्त दिखाईपड़तेहैं अर्थात् यह जो कहाजाताहै कि यह सतोगुणहै यह रजोगुणहै यहतमोगुण है यह बात उनकी प्रधानतासे है १ वह सब परस्पर प्रीतिकरतेहैं परस्पर अभीष्टप्राप्तकरनेवाले परस्पर आश्रित और परस्पर सहा-

यताकरनेवालेहैं २ जितना सतोगुणहै उतनाही रजोगुण वर्त्तमान होताहै अर्थात् अधिकता प्राप्त करनेवाला तमोगुणवृद्धिमान् सतोगुणको बिजयकरताहै इसहेतुसे निस्सन्देह उनकीबराबरीहोजाती है यहां जितना सतोगुण और तमोगुण है उतनाही रजोगुण कहा जाता है अर्थात् वह रजोगुण उन दोनोंको बिजय करके बराबरी प्राप्तकरताहै ३ वह इकट्ठे रहनेवाले तीनों गुण मिलकर साथही व्यवहार करतेहैं साथ रहनेवाले यह सब हेतुसे और बिना हेतुसे बिरुद्ध कर्मकरतेहैं ४ अधिकता न रखनेवाले परस्पर सहायक सब गुणोंका वह रूप न्यूनाधिकतासेरहित अर्थात् समान कहाजाताहै ५ जिसमें तमोगुणअधिक है वह तिरछे चलनेवाले जीवोंके शरीर में वर्त्तमान् हुये उसशरीरमें रजोगुण थोड़ासा और सतोगुणबहुतही कम जाननाचाहिये ६ जिस जीवमेंरजोगुण अधिकहै वह मनुष्य शरीर को प्राप्त करनेवाला होताहै उसशरीर में तमोगुणकम और सतोगुणबहुत कमजानो ७ जबसतोगुण अधिकहै तब वह ऊपर के लोकमें नियत होनेवालाहै उस शरीरमें तमोगुण कम औररजोगुण बहुतहीकमजाननाचाहिये८सतोगुण इन्द्रियोंका उत्पत्ति स्थान और इन्द्रियोंके द्वारा उनके बिषयोंको प्रकट करनेवाला होकरअहंकार से सम्बन्ध रखनेवालाहै सतोगुणसे अधिककोई दूसरा धर्मनहींकहा जाताहै ९ सतोगुणमें नियतहोकर जीवधारी ऊपरकेलोकोंको जाते हैं रजोगुणी नरलोकमें नियतहोतेहैं छोटेगुणसे युक्त तामसीमनुष्य अधोगतिको पातेहैं१०शूद्रमें तमोगुण क्षत्रीमें रजोगुण और ब्राह्मणमें उत्तम सतोगुणहै इसरीतिसे तीनोंगुण और तीनोंबर्णों में वर्त्तमान होतेहैं वह साथ बिचरनेवाले सतोगुण रजोगुण और तमोगुण दूरसेही दिखाई पड़तेहैं उनको पृथक् २ नहीं सुनतेहैं क्योंकि तमोगुणी शूद्रमें भी रजोगुण और सतोगुण दिखाई देतेहैं ११।१२ उदय हुये सूर्य्य को देखकर चौरादिकोंको भय होताहै और गरमीसेदुःख पानेवाले विदेशी संतप्तहोतेहैं१३सूर्य्य सतोगुणहै जोकि समानबुद्धि में अधिकहै और चौरादिक तमोगुणहै विदेशियोंका दुःख रजोगुण

का धर्म कहाजाताहै १४ सतोगुण रूपसूर्य्य वह गुणरखताहै जिस-सेकि विषयोंका और शास्त्र का प्रकाश होताहै सन्ताप रजका गुणहै पर्व्वों में तमोगुण इससतोगुण रूपीसूर्य्य का ग्रहणजानना योग्यहै १५ इसप्रकार तीनोंगुण सब जीवधारियों में क्रम पूर्व्वक नियत होतेहैं और जहांतहां उसी २ प्रकार से पृथक् होतेहैं १६ स्थावर जीवोंके मध्यमें तमोगुणकी आधिक्यता दिखाई देतीहै रजो-गुणी ऐसे विपरीत दशा करतेहैं जैसेकि दूधसे दही औरसात्विक गुणघृतरूपहै क्योंकि प्रकाश की वृद्धि का कारणहै १७ दिनतीन प्रकारका जाननाचाहिये और इसीप्रकार रात्रिमहीनापक्ष वर्षऋतु और सन्धियह तीन २ प्रकार की कहीजातीहैं १८ दानतीनप्रकार के दियेजातेहैं तीनप्रकार का यज्ञजारी होताहै लोकतीनप्रकार के हैं देवता विद्या और गतिभी तीन२ प्रकार कीहैं १९ भूतवर्त्तमान भविष्य धर्म अर्थ काम प्राण अपान उदान यहभी तीनोंगुणकेरूप हैं २० वह जहां तहां उस२ प्रकार से वर्त्तमान होतेहैं इसलोकमें जो कुछहै वहसबयह तीनोंगुणहीहैं सत्त्वरज तम अव्यक्त रूपतीनों गुण सदैव वर्त्तमान् होतेहैं यह गुणोंकी उत्पत्ति प्राचीनहै २१।२२ तम,अव्यक्त,शिव, धाम,रज, सनातनयोनि, प्रकृति, विकार, प्रलय प्रधान, जन्म, मरण २३ सत्, असत्, यहसब तीनगुण रखनेवाला अव्यक्तकहा जोकि न्यूनाधिकतासे रहित निष्कंप अचेष्ट औरअवि-नाशीहै अर्थात् वह अव्यक्त रस्सीमें सर्पके समान कल्पित है सत्य पदार्थ नहींहै क्योंकि न्यूनाधिकता आदिक सत्य पदार्थों में होते हैं २४ ब्रह्मविद्याके विचारकरनेवाले मनुष्योंको यह नाम जानने के योग्यहै २५ जो पुरुष अव्यक्तके इनगुणोंके नाम और शुद्धब्रह्म से सम्बन्ध रखनेवाले सबगुणोंकोमुख्यतासे जानताहै वहविभागके मूलको जाननेवाला शरीर से छूटकर उपाधिसे पृथक् पुरुष सब गुणोंसे छूटजाताहै २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंवादे एकोनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९ ॥

चालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजीबोले कि अव्यक्तसे महत्तत्त्व उत्पन्नहुआ जो कि सब सृष्टिके गुणोंका आदि महान् आत्मा महामतिनाम और आदिमें प्रकाशहोनेवाला कहाजाताहै १ महान् आत्मा, मति, विष्णु, जिष्णु पराक्रमी, शम्भु, बुद्धि, ज्ञानप्राप्ती प्रसिद्धी धैर्य्य सम्वर्त्ती २ इन परियाय बाचक शब्दोंसे वह महान् आत्मा कहाजाताहै ज्ञानी ब्राह्मण उसको जानकर मोहको नहींपाताहै आशय यहहै कि विष्णु और शम्भुदोनों देवता महत्तत्त्वरूप बर्णनकिये इसीसे दोनोंएकहैं ३ वह सब ओरको हाथ पांव आंख शिर मुख और कान रखनेवाला लोक में सबको व्याप्तकरके नियतहै ४ वह बड़े प्रभाववाला पुरुष सबके हृदयमें नियतहै अणिमा लघिमा और प्राप्तीनाम विभूती वही अविनाशी ज्योतिरूप ईश्वरहै ५ लोकमें जो बुद्धिमान् सद्भावमें प्रवृत्त ध्यानमें मग्न सदैव योगी सत्य संकल्प और इन्द्रियों के जीतनेवालेहैं ६ और जो कोई ज्ञानी निर्लोभ क्रोधके जीतनेवाले शुद्ध चित्त पण्डित ममता और अहंकारसे पृथक् ७ और विमुक्त हैं यह सब महत्तत्त्वको प्राप्तहोतेहैं जो कि महानात्माको पवित्र और उत्तमगतिको जानतेहैं ८ अहङ्कारसे पंचतत्त्व उत्पन्नहुये पृथ्वी अप तेज वायु आकाश ९ सबप्रकट होनेवाले उन पांचोंतत्त्वों में प्रवेश करतेहैं और वह पंचतत्त्व शब्द पुरुष रूप रस गन्धकी क्रियाओंमें लयहोते हैं १० हे पंडित लोगो प्रलयके समय पंचतत्त्वकी प्रलय वर्त्तमानहोनेपर सबजीवमात्रोंको बड़ाभय उत्पन्नहोताहै ११ परन्तु जो ज्ञानीहै वह सबलोकोंमें मोहको नहीं पाताहै उत्पत्तिकी आदिमें विष्णु भगवान् अपनेआप प्रकटहोतेहैं १२ इस रीतिसे जो पुरुष उस वेदरूप गुफामें शयन करनेवाले सबसेपरे प्राचीन प्रभु शरीरों में निवासी विश्वरूप सुवर्ण वर्ण बुद्धिमानोंकी परम गतिको जानताहै वह बुद्धिमान् बुद्धिको उल्लंघन करके नियतहोताहै १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंबादेचत्वारिंशोऽध्यायः ४० ॥

एकतालीसवां अध्याय॥

कार्य्य कारणकी एकता सिद्धकरनेको ब्रह्माजीबोले कि प्रथम-
ही जो महत्तत्त्व उत्पन्नहुआ वही अहंकार कहाजाताहै मैंहूं इसशब्द
से प्रकटहुआ वह दूसरा प्रत्यक्ष कहाजाताहै १ पंचतत्त्वोंकी आदि
वह अहंकार विकारक नाम महत्तत्त्वसे उत्पन्नकहा उसीका नाम
रजोगुणहै वह प्रवृत्तिरूप तेजकी रूपान्तर दशाहै तेजसे चेतना
धातु और चेतना धातुसे प्रजाओंकी उत्पत्ति होतीहै इसीहेतुसे यह
प्रजापतिहै २ वह ईश्वर संसारके सब पदार्थों समेत देवताओंका
और मनका उत्पन्नकरनेवालाहै वह मैं सबमें वर्त्तमानहूं इसप्रकार
अभिमान करनेवाला वह अहंकारनाम कहाजाताहै ३ जो अध्यात्म-
ज्ञानसे तृप्तपवित्रात्मा वेदपाठ और यज्ञसे शुद्ध मुनियोंका यह स-
नातन लोकहै अर्थात् आवागमन का स्थानहै आशय यहहै कि इ-
सको समष्टिरूप अनरुद्धभी कहतेहैं ४ तीनोंगुणोंके रूप अहंकारसे
शब्दादिक विषयोंको भोगकरनेके इच्छावान् पुरुषका वह आदितत्त्व
तामसी अहंकार आकाशादिक को उत्पन्न करताहै इस हेतुसे वह
पंचतत्त्वोंका उत्पन्न करनेवाला है सब इन्द्रियों को उत्पन्न करके
उनसे देखने और स्पर्शादिक क्रिया करने वालाहै और इस सबको
चेष्टादेता है कर्मेन्द्री और पंचप्राणोंको उत्पन्न करके इनसे सब
भोक्ताओंको प्रसन्न करताहै ५॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंवादेएकचत्वारिंशोऽध्यायः ४१॥

बयालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि तामसी अहंकारसे यह पंचभूत उत्पन्न हुये
पृथ्वी अपतेज बायु आकाश १ उन पंचतत्त्वोंमें जो स्पर्शरूप रस
गन्धकी क्रियाहैं उनमें सब सृष्टिभरके जीव अचेत होतेहैं २ हे पं-
डित लोगोमहाभूतों के बिनाशके समय स्थूल शरीर रूप पंचतत्त्व
के प्रलय बर्त्तमान होनेपर सबजीवोंको बड़ाभय उत्पन्न होताहै ३

जो २ भूत जिस२से उत्पन्न होताहै वह उसी२ में लय होजाता है फिर वह क्रमसे उत्पन्न होतेहैं परन्तु क्रमपूर्व्वक लयनहीं होतेहैं ४ इसीहेतुसे जिसपुरुषने योग सामर्थ्यसे स्थूलपंच महा भूतोंको सूक्ष्म महाभूतों में लय कियाहै तब सूक्ष्म शरीर होनेके कारण वह अपनी स्मरण शक्तीसे प्रशंसनीय योगीभी नाशको नहीं पातेहैं ५ शब्द स्पर्श रूप रस और गन्ध और उनको प्राप्तकरनेवाली क्रिया यह सब नित्यमनके अविनाशी होते हैं अथवा हार्दाकाश नाम सगुण ब्रह्मरूप से अबिनाशी होतेहैं और स्थूलरूप बिनाशवान् होतेहैं६ अब बिनाशवानोंके लक्षण बर्णनकरते हैं लाभकी इच्छासे जो कर्म सफल हैं उससे प्रकट मुख्यतासे रहित रस्सीके सर्पके समान तुच्छपदार्थमांस रुधिरके समूह परस्पर के मांससे जीवते रहनेवाले ७ स्थूल शरीर रोगादिकोंमें फंसेहुये बाह्य साधनों से जीवन करतेहैं ८ प्राण अपान उदान समान और ब्यान यह पंच-प्राण मनबाणी और बुद्धिकेसाथ अन्तरात्मा अर्थात् चैतन्यछायासे युक्त अहंकारनाम जीवमें नियम पूर्व्वक बंधेहुये हैं इनआठोंका इकट्ठाहोना जगत्है अर्थात् यहसब मोक्षतक नियतहैं ६ स्पर्श, त्वक् श्रोत्र, घ्राण, रसना, बाणी यहसब जिसके आधीन हैं और जिसका मन अत्यन्तपवित्रहै और डामाडोलनहींहै १० यह आठोंगुणसदैव जिसको जलतेहैं वह उस शुभब्रह्मको पाताहै जिससे अधिक तम दूसरा बर्त्तमान नहींहै ११ हे ब्राह्मण लोगो जिन सब इन्द्रियों को ग्यारह कहाहै वह सब अहंकारसे उत्पन्न हुईहैं उनको अबक-हताहूं१२श्रोत्र,त्वक्,चक्षु,घ्राण,रसना,दोनों हाथ,दोनों चरण लिंग गुदा और दशवींबाणी है १३ यह इन्द्रियों का समूहहै इनकाग्यार हवां मनहै प्रथम उसइन्द्रियोंके समूहको बिजयकरे उससे ब्रह्म प्र-काशकरताहै १४ पांचज्ञानेन्द्री पांच कर्मेन्द्री बर्णनकरीं श्रोत्रादिक पांचों ज्ञानेन्द्रियोंका मुख्यतापूर्व्वक बुद्धिसे संयुक्त बर्णन किया १५ जो दूसरी कर्मेन्द्रियांहैं इन दोनोंमें मनको संयुक्त जानना चाहिये बुद्धि बारहवींहुई १६ यह ग्यारहों इन्द्रियोंको क्रम पूर्व्वक आत्मामें

वर्णन किया पंडितइनको जानकर कृतकृत्यहोतेहैं १७ सबइन्द्रियां नाना प्रकारकी हैं प्रथमतत्त्व आकाशहै उसमें श्रोत्र अध्यात्मकहा जाताहै १८ इसीप्रकार शब्द अधिभूत है उसमें दिशा अधिदैवहै दूसरा तत्त्व वायुहै उसमें त्वक् अध्यात्म प्रसिद्ध है १६ स्पर्श अधिभूतहै विजली उसमें अधिदैव है तीसरा तत्त्व अग्निहै उसमें चक्षु अध्यात्म कहाजाता है २० रूप अधिभूत है उसमें सूर्य्य अधिदैवहै चौथातत्त्व जलजानना चाहिये जिह्वा अध्यात्म कहीजाती है २१ उसमें रस अधिभूतहै उसमें चन्द्रमा अधिदैवहै पांचवां तत्त्व पृथ्वी है घ्राणइन्द्री अध्यात्मा कहीजाती है २२ गन्ध अधिभूतहै हवा उसमें अधिदैवहै इनपांचोंतत्त्वऔर अध्यात्म अधिभूत अधिदैवइन तीनोंमें जो बुद्धिहै वह वर्णन करी २३ इसके पीछे सब कर्मेन्द्रियों को जोकि नानाप्रकारकी हैं वर्णन करताहूं तत्त्वदर्शी ब्राह्मणों ने दोनों चरणोंको अध्यात्मकहा २४ चलना अधिभूत है विष्णु उसमें अधिदैवहै अधोगति रखनेवाली अपाननाम वायुइन्द्री अध्यात्मकही जातीहै२५ फोकका निकालना अधिभूतहै मत्सर उसमेंअधिदैवहै सबजीवोंकी उत्पत्तिका कारण उपस्थइन्द्री अध्यात्मकहोजाती २६ वीर्य्य अधिभूतहै प्रजापति अधिदैवहै योगी मनुष्योंने दोनोंहाथोंको अध्यात्मकहा कर्म अधिभूतहै २७ इन्द्र उसमें अधिदैव है इसलोकमें संपूर्ण विश्वकी देवी प्रथम वाणी अध्यात्मकही जातीहै २८ कहनेके योग्य वाणी अधिभूतहै अग्नि इसमें अधिदैवहै पंचभूतोंसे उत्पन्न जीवोंको कर्ममें प्रवृत्त करनेवाला मन अध्यात्म कहा २६ संकल्प अधिभूतहै चन्द्रमा अधिदैवहै उसीप्रकार सब संस्कारोंका उत्पन्न करनेवाला अहंकार अध्यात्महै ३० अभिमान अधिभूत है रुद्रउसमें अधिदैव है छहोंइन्द्रियोंकी बिचारनेवाली जो बुद्धिहैउसको अध्यात्मकहा ३१ चित्तमें बिचारकरना अधिभूतहै ब्रह्मा इसमें अधिदैवहै जीवोंके निवासस्थान तीनहैं चौथा बिदित नहींहोता ३२ स्थलजल आकाश जन्म भी चारप्रकारकाहै अंडेसे उत्पन्न पृथ्वीसे प्रकट पसीनेसे पैदा और जरायुज ३३ यह चार प्रकारकी उत्पत्ति

जीव समूहोंको देखनेमें आतीहै इसीप्रकारजो छोटे२ जीव आकाश चारीहैं ३४ उनको और सब सर्पादिकके प्रकारको अंडेसे उत्पन्न जाने पसीने से उत्पन्न जीवधारी क्रमसे कीटादिक कहे ३५ यह द्वितीयजन्मनिकृष्टतर कहाजाताहै को अपने नियत समयपर पृथ्वी को फाड़कर उत्पन्न होते हैं ३६ हे ऋषियो उन जानदारों को उद्भिज कहा जीव द्विपाद बहुपाद रखने वाले और तिरछे चलनेवालेहैं ३७ जो कि जरायुज और विकृत नाम भी कहे जाते हैं हे बड़े साधू ब्राह्मणों ब्रह्मकी ऐक्यताका स्थान जो सनातन ब्राह्मण जन्म है वह दो प्रकारकाहै प्रथम तो मातापितासे दूसरा संस्कारसे३८ उसमें करनेकेयोग्य कर्म्म यहहै तप पुत्र कर्म्म नाना प्रकारका कर्म्म पूजन दान जो यज्ञमें होताहै जानना चाहिये यह ज्ञानियोंकी नीति है ३९ द्विजन्माका वेदपाठ वा जप पवित्रहै यह वृद्धोंका उपदेशहै हे ऋषियो जो इसको बुद्धिके अनुसार जानताहै वह योगी होताहै औरवहसब पापोंसे मुक्तहै इसको निश्चय जानो पहिला तत्त्व आकाश है श्रोत्र अध्यात्म कहाजाता है ४० । ४१ शब्द अधिभूत है इसमें दिशा अधिदैव है दूसरातत्त्व वायुहै उसमें त्वक् इन्द्री अध्यात्म प्रसिद्धहै ४२ स्पर्श अधिभूत है उसमें बिजली अधिदैव है तीसरा तत्त्व अग्निहै उसमें चक्षुरिन्द्री अध्यात्म कही जातीहै ४३ रूप अधिभूतहै सूर्य्य उसमें अधिदैवहै चौथा तत्त्वजल जानना चाहिये जिह्वा अध्यात्म कहीजातीहै ४४ चन्द्रमाकोअधि भूत जानना चाहिये जल उसमें अधिदैवहै मैंने यह अध्यात्मविधि ठीक २ तुमसे कही ४५ हे धर्मज्ञ ऋषियो यहां इसका ज्ञान ज्ञानी लोगोंको प्राप्तहुआ इन्द्रियां, इन्द्रियोंकेविषय, पंचतत्त्व इन सबको एक निश्चय करके मनके साथ धारण करे अर्थात् केवल मनसेही नियत होय ४६ इस मनमें सब इन्द्रीआदिके नाश होनेपर और फिर उसमनके भी लयहोनेपर निर्बिकल्प सुखकाअनुभवकरनेवाले पुरुषको संसारी सुख अर्थात् पुत्रऔर स्त्रीआदिके मिलनेकाआनन्द प्यारा नहीं लगताहै वह सुख उन ज्ञानियोंका अंगीकृतहै जिनकी

बुद्धि आत्म अनुभवसे संयुक्त है ४७ उसके पीछे मनको सूक्ष्मकर-नेवाली निवृत्ती रूप वाणीको वर्णन करताहूं जो कि मनकी इच्छा और दृढ़योगसे सब ब्राह्मण आदिक जीवोंमें अभ्यास करनेकेयोग्य है ४८ जिसमें शूरताआदिक गुण अहंकारके कारण होनेसे निर्गुण हैं और वह अभिमानादिकसे रहितहै और जिसमें एकान्त निवा-सिताहै और भेदसे रहित है और जिसमें ब्राह्मण ज्ञाति प्रधान है इस रीति को सब सुखोंका निवास स्थान कहा ४९ जैसे कि कछु आ सब अंगोंको समेट लेताहै उसीप्रकार जो ज्ञानी अपनी इच्छा-दिकोंको सब प्रकारसे रोककर रजोगुण से रहित सब ओरसे मुक्त है वह मनुष्य सदैव सुखीहै५० इच्छादिकोंको आत्मामें लय करके अनिच्छावान् सावधान सबजीवोंका शुभचिन्तक मित्र मनुष्यब्रह्म-भावके योग्य होताहै५१इन्द्रियों के विषयाभिलाषी सब इन्द्रियोंके रोकने और सब ब्रह्माण्ड त्यागकरनेसेमुनिको विज्ञान रूप अग्नि अच्छी वृद्धिको पातीहै ५२ जैसे कि ईंधनसे वृद्धि पानेवाली अग्नि अच्छी ज्योति रखनेवाली होकर प्रकाशकरतीहै उसीप्रकार इन्द्रि-योंके रोकनेसे महानात्मा प्रकाश करताहै ५३ निर्मल चित्त योगी जब सम्परिज्ञात दशामें अपने हृदयके मध्य जीवोंको देखताहै तब वह स्वयंज्योति रूप होताहै और हार्दाकाशसे परमज्योतिकोप्राप्त करता है ५४ जिस कालचक्र में रूप अग्निहै रुधिरादिक जलहै स्पर्शवायुहै पृथ्वी घोरकीचहै श्रोत्र आकाशहै ५५ वह रोगशोकसे पूर्ण पंचेन्द्री रूप नदियोंसे संयुक्तहै पांचों तत्त्वोंसे युक्तहै दो कान दो आंख दो नाक मुख दो नीचेके छिद्र यह नव द्वार रखनेवालाहै जीव ईश्वरनाम जिसके दो देवताहैं५६ रजोगुणसे युक्तहै अमंगल रूप होनेसे देखनेके योग्य नहीं तीनगुण रखनेवालाहै अर्थात्दृष्टि करतेही देखनेवालोंके सुख दुःख औरमूलको उत्पन्न करनेवालाहै त्रिधातुका रखनेवालाहै भोजनकी वस्तु आदिक अभ्याससे रमने-वाला जड़ रूप शरीर के समान रूपहै ५७ जोकि कष्टसे नियत होनेवाला और इस सब लोकके मध्यबुद्धिमें आश्रितहै इसलोकमें

बाल्यावस्थादिक समयसेसंयुक्त यहकालचक्र वर्त्तमानहोताहै ५८ यह बड़े समुद्रकी समान भयका उत्पन्न करनेवाला अथाह मोह नामहै देवताओं समेत इस जगत्को जानकर त्याग और लयादिक करे ५६ शरीर त्याग करनेवाला मनुष्य इन्द्रियोंके जीतनेसे इन कठिनत्याग इच्छा क्रोध भय लोभ शत्रुता और मिथ्यापनेकोत्याग करताहै६०यह तीनोंगुण और पंचतत्त्वलोकमें जिसकेबिजयकियेहुये हार्द्दाकाश में उसका अपार ब्रह्मलोक दिखाईदेता है ६१ पंचेन्द्री रूप बड़ा किनारा और मनकी तीव्रताके समान बड़ाजल और मोह रूप ह्रद रखनेवाली नदीको पार होकरदोनों इच्छा औरक्रोध को बिजय करे ६२ फिर सब दोषों से निवृत्त वह योगी मनको हृदयकमल में धारणकर शरीर में आत्माको देखता उस ब्रह्मको देखताहै ६३ सब जीवमात्रों में ब्रह्मको देखनेवाला एकरूपअर्थात् तत्पदार्थका साक्षात्कार भूरूप बिश्वरूप से जहां तहां रूपान्तर दशा करनेवाला वह योगी आत्मामें आत्माको जानताहै ६४ निश्चय करके वह बहुत रूपोंको देखताहै अर्थात् आत्म रूपसे उन में ऐसे नियत होताहै जैसे कि एक दीपकसे सैकड़ों दीपक प्रकाशित होयं वही योगीबिष्णुहै वही सूर्य्य, बरुण, अग्नि और प्रजा पतिहै ६५ वही धाताहै वहीविधाता है वही प्रभुहै और वही सब ओरको मुखरखनेवालाहै वही सबजीवोंका हृदय वही महानात्मा और प्रकाश करताहै ब्राह्मण देवता असुर यक्ष पिशाच पितृ गरुड़ आदिक राक्षसगण भूतगण और सब महर्षी सदैव उसकी स्तुति करतेहैं ६६ । ६७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिके पर्वणिगुरुशिष्यसंबादेद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तैंतालीसवां अध्याय॥

इस सबके स्वामी योगीका ऐश्वर्य्य प्रकट करने को ब्रह्माजीने बिभूतियों को बर्णन किया मनुष्यों का राजा क्षत्रीहै जोकि रजोगुण प्रधानहै सवारी के जीवोंका राजा हाथी वनवासी जीवोंका

सिंह १ सब पशुका राजाअवि बिलेशय जीवोंका सर्प गौवोंका बैल और स्त्रियोंका स्वामी पुरुषहै२ बट,जामन, पीपल, शाल्मली शिंशप, मेषशृंग, कीचकनाम बांस अर्थात् जो वायुसे शब्दकरते हैं ३ यह सब निस्सन्देह इस लोकमें वृक्षोंके राजाहैं हिमवान् पारिपात्र, सह्य, विन्ध्य, त्रिकूटाचल, श्वेत, नील, भास, कोष्ठवान् गुरुस्कंध,महेन्द्र,माल्यवान्४।५ यहसव पहाड़ बहुत पर्वतसमूहोंके राजाहैं सूर्य्यग्रहोंका चन्द्रमा नक्षत्रोंका राजाहै ६ पितरोंका राजा यमराजहै नदियोंकास्वामीसागरहै जलोंकाराजावरुणहै मरुद्गणों काराजा इन्द्रकहाजाताहै ७ उष्णकिरणवालोंका राजासूर्यहै नक्षत्रों काराजा चन्द्रमाकहाजाताहै अग्नितत्त्वोंका राजाहै ब्राह्मणोंकाराजा बृहस्पतिहै ८ चन्द्रमा औषधियोंका राजाहै पराक्रमियों का राजा विष्णुहै रूपोंका राजा त्वष्टाहै पशुओं के ईश्वर शिव हैं ९ दीक्षित पशुओंकाराजा यज्ञहै१० देवताओंका राजा इन्द्रहै दिशाओंकाराजा उत्तर दिशाहै प्रतापवान् चन्द्रमा ब्राह्मणोंका राजाहै सब रत्नोंका स्वामी कुबेरहै इन्द्र देवताओंका स्वामी है यह जीवधारी मात्रोंका स्वामी प्रजापति सब प्रजाओंका राजाहै ब्रह्मारूप में सब जीवोंका बड़ाराजाहूं मुझसे और विष्णुसे अधिक कोईनहींहै ११।१२ब्रह्मरूप बिष्णु सब सृष्टिभरके राजाधिराजहैं उस पैदाकरनेवाले स्वयंसिद्ध हरिको सबका ईश्वरजानो १३ वही नर,किन्नर,यक्ष, गन्धर्ब्ब,उरग राक्षस, देवता, नाग और सबका ईश्वर है १४ आकांक्षी लोग जिनको यादकरतेहैं उनसब स्त्रियोंकीस्वामिनी महेश्वरी महादेवी पार्वतीजी कहीजातीहैं १५ उमादेवी को स्त्रियोंमें उत्तम और शुभ-जानो प्रीति और आनन्द के मध्यमें जो सुख प्रीति अहंकार और धनकी प्राप्तीसे युक्तहै वही बड़ा है स्त्रियों में अप्सरा श्रेष्ठ हैं १६ राजालोग धर्म के अभिलाषी हैं ब्राह्मणधर्मके सेतुहैं इसी हेतुसे राजा ब्राह्मणोंकी रक्षामें अनेक उपायकरे १७ साधू मनुष्य जिन राजाओं के देशमें कष्टपातेहैं वह अपने सबगुणोंसे रहित मरकर नरकगामी होतेहैं १८ साधूलोग जिनराजाओंके देश में चारोंओर

सेरक्षितहैं वह राजाइसलोक में आनन्द करतेहैं और परलोकमें सुखकोपातेहैं १६ महात्मा योगीज्ञानी इसप्रकारसे विश्वके ऐश्वर्य्य को पातेहैं हे ऋषियो तुम इसको निश्चयही जानो अब इसके पीछे नियम संयुक्त धर्मलक्षणको वर्णन करताहूं २० अहिंसाधर्म सर्वोत्तम है हिंसा अधर्मका चिह्नहै देवता प्रकाशका चिह्नरखने वालेहैं मनुष्य कर्मचिह्नरखनेवालेहैं २१ आकाश और बायुशब्द स्पर्श लक्षण रखनेवाले हैं ज्योति लक्षणरूप है जलका लक्षणरस है २२ सबजीवोंको धारण करनेवाली पृथ्वी गन्धरूप लक्षण रखनेवालीहै स्वरव्यंजनके संस्कार संयुक्त बाणी शब्दरूप लक्षण रखनेवालीहै अर्थात्दूसरे की विद्या शब्दसेही जानी जातीहै २३ मनका लक्षणचिन्ताहै चिन्ताका लक्षण बुद्धिहै क्योंकि मनसेशोचे हुये अभीष्टोंको बुद्धिसे निश्चयकरताहै २४ निस्सन्देह बुद्धिनिश्चय से दिखाईदेतीहै मनका लक्षण ध्यान है पुरुष का लक्षण अव्यक्त है २५ कर्म प्रवृत्तिलक्षणवालेहैं ज्ञान संन्यास का लक्षणहै इसलिये बुद्धिमान् इसलोकमें ज्ञानको मुख्यकरके संन्यास लेवे २६ सन्मान व असन्मानता आदिकयोगोंसे रहित तमोगुण जरामरणसे पृथक् ज्ञानसे युक्त संन्यासी परब्रह्मको पाताहै और उसमें प्रवेश करता है २७ मैंने तत्त्व और इन्द्रियोंका धर्म लक्षण और संयोगबुद्धि के अनुसार तुमसे कहा अब इसके पीछे बिषयों को प्राप्त होनेवाली रीतोंको अच्छीरीतिसे कहताहूं २८ पृथ्वीसे सम्बन्ध रखनेवाली गन्धनाम वस्तु घ्राणइन्द्रीसे प्राप्त कीजातीहै उसीप्रकार घ्राणेन्द्री में नियतबायु गन्धज्ञानमें सहायक होताहै २९ जलों का जो सार रसहै वह सदैव जिह्वा से प्राप्त कियाजाताहै उसीप्रकार जिह्वा पर नियतचन्द्रमा ज्ञानमें सहायता करताहै ३० अग्निका जो गुण रूपनामहै वह चक्षुरिन्द्री से प्राप्त किया जाताहै तब चक्षुमें नियत सूर्य रूप ज्ञानमें सहायता देताहै ३१ बायुका जो गुण स्पर्शहैवह सदैव त्वगेन्द्री से जानाजाताहै जो वायु जिसमें सदैव स्पर्शेन्द्री वर्त्तमानहै वह स्पर्श करनेमें सहायक होताहै ३२ आकाशका गुण

शब्दहै वह वायुके सम्पर्कसे प्राप्तहोताहै श्रोत्रमें नियत्त होकरउस में सब दिशा सहायकहैं ३३ मनका गुण चिन्ताहै वह बुद्धिसे प्राप्त होताहै हृदयमें नियत चिन्ताधातु ज्ञानमनमें सहायता करताहै ३४ बुद्धि निश्चय स्वरूपसे प्राप्त होतीहै उसीप्रकार महान् शुद्ध सतो गुण रूप स्वरूपसे प्राप्त होताहै निश्चय करके उनबुद्धि और महत्तत्त्व का प्राप्त करना यद्यपि प्रकट है परन्तु अव्यक्तही है क्योंकि वह निस्सन्देह इन्द्रियोंसे रहित हैं ३५ इन्द्रियों से रहित और अपनेही तेजसे प्रकाशित उनदोनों का जो प्राप्त करनेवालाहै उसको कहतेहैं वह निर्गुण रूपजीवात्मा सदैव बुद्ध्यादिकके विषयसे रहितहै इसहेतुसे वह चिह्न रहित आत्मा केवल ज्ञानरूप लक्षण रखनेवालाहै ३६ साक्षीमें उसशरीर रूप चिह्नमें स्थित सृष्टि के कारण उत्पत्ति और नाश पकड़नेमें न आनेवाले अव्यक्तको सदैव देखताहूं जानताहूं और सुनताहूं ३७ पुरुष अर्थात् आत्मा उस अव्यक्त को जानताहै इस हेतुसे क्षेत्रज्ञ ज्ञाताहै वह क्षेत्रज्ञगुणोंके विशेषण अर्थात् प्रकाश प्रवृत्ति और मोहादिकको और चरित्रको चारोंओरसे देखताहै ३८ वारंवार विपरीतरूप करनेवाले गुणोंने निर्विकार आत्माको नहींजाना किन्तु आत्माही उस उत्पत्ति स्थिति और लयमें विपरीत दशामें लगानेवाली मायाको प्रकट करता है ३९ कोई आत्माको नहीं जानताहै क्षेत्रज्ञही जानताहै वह गुण भोग पदार्थोंसे परे और वृद्धतम है ४० इस हेतुसे धर्मज्ञ दोष और गुणोंसे पृथक् आत्मा इसलोक में बुद्धि और गुणोंको त्याग करके परमात्मामें प्रवेश करताहै ४१ वह क्षेत्रज्ञ सुख दुःखादियोगों से रहित नमस्कार और स्वाहाकारसे रहित निश्चेष्ट और स्थानसे रहित श्रेष्ठतर और सबका स्वामीहै ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसंवादेत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

बर्णनसे पूर्व आत्मस्वरूप मोक्ष मिथ्यावस्तु कर्मसे प्राप्तके बर्णन

करनेको ब्रह्माजी बोले जो आदि मध्य और अन्तसे बन्धन किये हुये अर्थात् जन्मादिकरखनेवाला बन्धनमें नियतनाम और लक्षण से संयुक्तहै उस सबको मुख्यता समेत कहताहूं १ आदि में दिवस फिर रात्रि महीना शुक्लादिक पक्ष श्रवणादि नक्षत्र शिशिरादिक ऋतु वर्णन किये २ गन्धोंकी आदिपृथ्वीहै रसोंकाआदिजल रूपों काआदि अग्नि और सूर्य्य और स्पर्शोंकाआदि बायु कहाजाताहै ३ शब्दकाआदि आकाशहै यह पंचभूतोंके गुणहैं इसके पीछे जीवोंके उत्तम आदि रूपको बर्णन करताहूं सब तेजवान् शरीरोंका आदि सूर्य्य चारों प्रकारोंके जीवोंका आदि जठराग्नि कहाता है सब वि-द्याओंमें सावित्री और देवताओंमेंप्रजापति आदिहै ४।५सबवेदोंका आदि प्रणवहै बचनोंका आदि प्राणहै इस लोकमें जो मन्त्र जपके योग्यहै वह सब सावित्रीकहाजाताहै ६ छन्दोंका प्रथम गायत्री है सृष्टिका प्रथम उत्पत्ति काल कहाजाताहै पशुओं में प्रथम गौ और मनुष्योंमें प्रथम ब्राह्मणहैं ७ पक्षियोंका प्रथम बाजपक्षी है यज्ञोंका आदि वह होमहै जोकि अग्नि अथवा ब्राह्मणके हाथमें कियागया है ऋषिलोगो बिच्छूआदिक विषधरों में सर्प सबसे बड़ा है ८ सब युगोंका आदि सतयुगहै सब रत्नोंकाआदि सुवर्ण है औषधियोंका आदि यवान्नहै ९ भक्षण और भोजन की सब बस्तुओं में अन्न उत्तम कहाजाताहै सब पीनेकी बस्तुओंमेंजल श्रेष्ठहै १० मुख्यकर सब स्थावर वस्तुओं में प्लक्षनाम ब्रह्मक्षेत्र प्रथम और धर्म्मकी वृद्धिका हेतुकहाहै ११ सब रक्षक और स्वामियोंका आदि निस्स-न्देह मैं ब्रह्माहूं वह बुद्धिके बिषयसे परे अपने आप उत्पन्न होने वाला बिष्णु मेराआदि कहागया १२ सब पर्वतोंमें महामेरु पहाड़ सृष्टि की आदिकहा दिशा और बिदिशाओं में ऊर्ध्वदिशा और पूर्व दिशाप्रथम कही १३ उसीप्रकार स्वर्गपृथ्वी पाताल नाम मार्गमें वर्त्तमान गङ्गाजी सब नदियों में प्रथमसृष्टि कही उसीप्रकार सब सरोवर और कूपादिकोंमें सागर प्रथमसृष्टिहै १४ और इनदेवता दानव,भूत,पिशाच,उरग,राक्षस, नर, किन्नर और यक्षों का ईश्वर

है १५ वहब्रह्मरूप विष्णु इस विश्व जगत् का आदि और वृद्ध है इस त्रिलोकी में जिससे परे कोई प्रकट नहीं है सब आश्रमों में गृहस्थाश्रम उत्तम और प्रथम है निस्सन्देह लोकोंका और सबका आदि अव्यक्तहै और वही अन्तहै १६। १७ दिनोंका अन्त सूर्य्यास्तहै रात्रिका अन्त सूर्य्योदय है सदैव सुखका अन्त दुःख है और दुःखकाअन्त सदैव सुखहै १८ यह सब समुदाय विनाशको अन्तमें रखनेवाले हैं और सब उदय क्षीणताको रखनेवाले हैं सब योग वियोगको और जीवन मृत्युको अन्त रखनेवालाहै १९ सब कर्म्म नाशमान है उत्पन्न होनेवाले का मरना निश्चयहै इसलोकमें जड़ चैतन्य जीव सदैव नाशमान है २०जो यज्ञ दान तप वेद पाठ और नियमहैं नाशको अन्तमें रखनेवाला यह सब समूह ज्ञानके अन्तमें वर्त्तमान नहीं रहताहै २१ इसीहेतुसे शान्तचित्त जितेन्द्री ममता अहंकारादि से रहित पुरुष शुद्ध ज्ञानके द्वारा सब पापोंसे निवृत्त होताहै २२॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसम्वादेचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

आगेके दो अध्यायोंमें ज्ञानके उपाय वर्णन करनेके इच्छावान् ब्रह्माजीने अज्ञानियोंको कालचक्र अर्थात् शरीरके आधीनमें कहना प्रारम्भ किया जिसमें बुद्धि अंगीकार के योग्यहै मन स्तंभ और इन्द्री समूह बन्धनहै और वह पांचों इन्द्री परिस्कन्ध और निमेष परिवेशनहै १ वह जरा शोकसे पूर्ण रोग और दुःखोंकी उत्पत्ति का स्थानदेश कालसे विचरनेवाला दुर्गन्ध स्थानपर जाना आदिक और उससे उत्पन्न जो दुःखहै वही जिसमें शब्द का हेतुहै २ दिन और रात्रिको चेष्टा देनेवाला शीतोष्णरूप मंडल रखनेवाला सुख दुःख रूप सन्धी और क्षुधातृषा रूप शंकुरखनेवाला ३ छायाऔर धूपरूप विलेखरखनेवाला निमिष उन्मिष नाम समय में व्याकुल होनेवाला दोषयुक्त शोकके अश्रुपातोंसे युक्तसदैव चलनेवालाजड़४

महीना और पक्ष आदिक समयसे गिनती में आनेवाला प्रत्येक समयपर मनुष्य पशु आदिक का रूपप्राप्त करनेवाला ऊपरनीचे के लोकादिकोंमें घूमनेवालाहै तमोगुणसे जो कर्म ज्ञानकी रुकावट है वही जिसमें पापकामूलहै और सतोगुण तमोगुणसे संयुक्त रजोगुणकी तीव्रता जिसके मध्यमें निषिद्ध कर्मोंमें प्रवृत्त करनेवालीहै बड़े अहंकार से चैतन्यहै सत्त्वादिक गुणोंसे जिसकी स्थितिहै अभीष्ट लाभके न मिलनेमें जो दुःखहैं वही उसमें रस बन्धन है और जो मृत्युके शोकसेजीवताहै ५।६ क्रियाकारणसे संयुक्त रागसेविस्तार युक्त लोभ और इच्छा जिसमें बैठने उठनेके स्थान हैं तीन गुण के रूपहोने से अपूर्व्व जोअज्ञानहै वही उसका उत्पादकहै ७ भय और मोहसे घिराहुआ जीवोंको अचेतकरनेवाला बाहरके सुखों के अभ्यास से घूमनेवाला इच्छा और क्रोधमें बंधा हुआ ८ महत्तत्त्व से लेकर स्थूल पिंडतक का रूप किसी स्थानपर एकक्षणभर भी न रुकनेवाला जीवोंकी चेष्टा का कारण सब प्रकट होनेवालों का हेतु संसारहै वहमन के समान शीघ्रगामी स्वेच्छाचारी होकरकाल चक्र भ्रमण करता है ९ मान अपमानादिकसे संयुक्त विना चैतन्य इसकालचक्र को जाने और देवताओं के साथ इस जगत्को त्याग और लयादिक करे १० जो मनुष्य सदैव कालचक्र की प्रवृत्ति और निवृत्तिके कारण को मुख्यता समेत जानताहै वह इस प्रत्यक्षादि मायामें अचेतनहींहोताहै ११ सबसंस्कारोंसेछुटा सुखदुःखादियोगोंसे पृथक् सब पापोंसे मुक्त मनुष्य परमगतिकोपाताहै १२ गृहस्थ,ब्रह्मचारी,बानप्रस्थ, संन्यासी यहचारों आश्रम कहेहैं उन सबका मूल गृहस्थ है १३ इस लोकमें जो कोई शास्त्र वर्णन किये उसके अन्तपर पहुंचना कल्याणहै यह सनातन कीर्ति है १४ प्रथम संस्कारों से संस्कृत विधि के अनुसार ब्रत करनेवाला ब्रह्म ज्ञानी मनुष्य जोकि ज्ञाति और गुणोंसे प्रतिष्ठा युक्तहोय ब्रह्मचर्य्य की समाप्ति का स्नानकरे १५ अपनी स्त्री पर प्रवृत्त उत्तमआचार रखनेवालाजितेन्द्री श्रद्धामान मनुष्य इसलोकमें सदैव पांचयज्ञोंसे

पूजनकरे १६ देवता और अतिथि से शेष बचे हुये अन्नादि का खानेवाला वेदोक्तकर्म में प्रवृत्त और सामर्थ्यके अनुसार सुखपूर्वक यज्ञ दानमें प्रवृत्त होवे १७ मुनि और हाथ पांव आंख अंग और वाणी से चपलनहोय यह शिष्य कीरीति और लक्षणहै १८ सदैव यज्ञोपवीती श्वेत पोशाक और पवित्र व्रतवाला इन्द्रियों में प्रवृत्त दानका नियम रखनेवाला शिष्य सदैव उत्तम पुरुषोंके पासबैठे१६ लिंग और उदर को वशीभूत करनेवाला सबकामित्र, उत्तम पुरुषों के आचारसे युक्त शिष्य बांसका दण्ड और जलसे पूर्ण कमण्डलको धारणकरे २० वेद पढ़कर पढ़ावे यज्ञकरे और करावे दानदेवे और लेवे इस छःप्रकारके कर्म्मको करै २१ नीचेलिखेहुये तीन कर्म्मों को ब्राह्मणों की आजीविका जानो यज्ञकराना पढ़ाना और शुद्ध मनुष्यसे दानलेना २२ फिर जो शेषबचेहुये तीनकर्म्म अर्थात् दान वेदपाठ और यज्ञनामहैं वह धर्म्मसे संयुक्तहैं २३ धर्म्मज्ञ जितेन्द्री सबके मित्र क्षमावान् सब जीवोंमें समदर्शी मुनि उन तीनोंकर्म्मों में असावधानीसे भूल न करे २४ इसप्रकार पवित्र व्रतनिष्ठ वेदपाठी गृहस्थी इस सबको अपनी सामर्थ्य के अनुसार करता स्वर्ग को विजय करताहै २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिगुरुशिष्यसम्वादेपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय ॥

ब्रह्माजी बोले कि इसप्रकार प्रथम विधिके अनुसार इसवर्णन कीहुई रीतिसे सामर्थ्यके अनुसार वेद पढ़नेवाला ब्रह्मचारी१ अपने धर्म्म में प्रवृत्त बुद्धिमान् सावधानचित्त सत्यधर्म्म में प्रवृत्त पवित्र और गुरूके प्यारे अभीष्टोंमें प्रवृत्तमुनि २ गुरूकी आज्ञालेकर भोजनकी बस्तुओंकी निन्दा न करताहुआ भोजनकरे हविष्यनाम भोजनकी बस्तुको खाकर भी गुरूके स्थान आसनपर बिहार करने वाला ३ पवित्र और सावधान होकर दोनोंसमय अग्निहोत्र करने वाला ब्रह्मचारी बेल और पलाश के दण्डको धारणकरे ४ उस

ब्रह्मचारीकी पोशाक बल्कल, सन, कपास, और मृगचर्म से बनीहुई सब गेरुआवर्ण रक्त होनाचाहिये ५ मूंजकी मेखलाहोय सदैवजटा और जल रखनेवाला वेदपाठ करनेवाला लोभसे रहित यज्ञोपवीतधारी और व्रतका नियम करनेवालाहोय ६ नियमवान् ब्रह्मचारी सदैव प्रीतिपूर्वक पवित्र जलकेद्वारा देवताओंका तर्पण करता प्रशंसनीय होताहै ७ इसप्रकार प्रवृत्त जितेन्द्री बानप्रस्थ लोकोंको बिजय करताहै और बड़ेस्थानमें आश्रितहोकर शरीरोंमें प्रवेशनहीं करताहै ८ सब संस्कारोंसे संस्कृत ब्रह्मचारीमुनि ग्रामोंसे निकलकर संन्यासीरूप होकर बनमें निवासकरे ६ मृगचर्म और बल्कलकी पोशाक रखनेवाला प्रातःकाल सायंकाल स्नानकरे सदैव वनबासी होकरफिरग्रामोंमेंनहींप्रवेशकरे १० बानप्रस्थफल मूलपत्रऔरशामाकसेनिर्बाह करतासमयपरअतिथियोंको पूजताउनको निवासस्थान भीदेवे ११ आलस्यसे रहित वह बानप्रस्थदीक्षाके अनुसार क्रमपूर्वक भोजनकरे चलतीहुई बायुजल औरसबजंगली फलादिक को काममें लावे १२ वह निरालस्य बानप्रस्थमूल फलनाम भिक्षाओं से आयेहुये अतिथियोंकोपूजे और जोअपने खानेकीबस्तुहोय उसी से भिक्षादे १३ बाणीका, जीतनेवाला, ईर्षासे, रहित मन कल्याण प्राप्त, देवतामें, आश्रित वह बानप्रस्थ सदैव देवता और अतिथिके पीछे भोजननकरे १४ जितेन्द्री, सबकामित्र, क्षमावान् वेदपाठ का अभ्यासी सत्यधर्म परायण केशडाढ़ी मूछकोरखता हवनकरता १५ पवित्र शरीर सदैव सावधान बनबासी इन्द्रीजीतनेमें कुशल ऐसा बानप्रस्थ स्वर्गको बिजयकरताहै १६ गृहस्थी ब्रह्मचारी बानप्रस्थ यहतीनों जो मोक्षमें नियतहोना चाहैं वहउत्तमवृत्ती में आश्रित होजांय १७ फिर सब जीवमात्रों को निर्भयता देकर संन्यासले सब जीवोंको सुख देनेवाला सर्वमित्र सब इंद्रियोंका जीतनेवाला मुनि १८ मध्याह्नके समय जब कि सबकेघरनिर्धूमहोंय और मनुष्य भोजन करचुके होंय उस भिक्षाको करके भोजनकरे जोकि बिना याचनाकिये अपनेआप प्राप्तहो और किसी देवताके नामसेकल्पित

नहो१९ वह मोक्षका ज्ञाता टूटे और पड़ेहुये मृत्तिकाके पात्रमें भिक्षा को चाहै मिलने से प्रसन्न होय और न मिलने से उदास भी न होय २० अलगहोनेका अभिलाषी ब्रह्मसमाधिमें नियतसंन्यासीलयके समय ब्रह्मको चाहता भिक्षाकरे साधारणलाभकोनचाहै और पूजित अन्नको न खाय अर्थात् जिसमें संन्यासीपनेके भोजनकी मुख्यता नहींहै मिलजाय लेलेना वही साधारण है २१ वह संन्यासी पूजित लाभ से निन्दित होताहै कषैलेकड़ुये जोभोजनहैं उनको खाकर २२ खाता हुआ स्वाद न लेवे और मीठेरसों काभी स्वाद नलेवे केवल शरीरके निर्बाह और प्राणकेयोग्यभोजन करे २३ वहमोक्षकाजानने वाला भिक्षाकरता जीवोंके विनाकष्टकी आजीविका को चाहै इसके सिवाय किसीदशामेंभी अन्यप्रकारके भोजनको न चाहै २४ धर्मको प्रकट नहींकरे और विमुक्त होनेपर रजोगुणसे रहित होकर बिचरे उजाड़, स्थान, बन, वृक्षकीजड़, नदी २५ अथवा पहाड़कीगुफाको अपने निवासकेलिये सेवनकरे उष्णऋतुमें एकरात्रि गांवमें निवास करे बर्षाऋतुमें एकहीस्थानमें निवास करतारहै २६ सूर्य्यसे दिखाया हुआजोमार्गहै उसमें कीटकेसमान अर्थात् धीरेसे पृथ्वीपरचले और जीवोंकी दयाके बिचारसे पृथ्वीको देखकरचले २७ वस्तुओंको संचय अर्थात् इकट्ठा न करे प्रीति से जो निवासहै उसको त्यागकरे वह मोक्ष का ज्ञाता सदैव पवित्र जलों से स्नानादिक करे २८ वह पुरुष सदैव कूपादिकोंके जलोंसे आचमनादिक करे अहिन्सा, ब्रह्मचर्य्य, सत्य, सत्यवक्ता २९ क्रोधनकरना दूसरेके गुणोंमें दोष न लगाना सदैव जितेन्द्री चुगली न करना इन आठोंगुणों से युक्त और इन्द्रियोंकानिग्रह करनेवालाहोवे ३० पाप, शठता, और कुटिलतासे रहितहोकर सदैव आचारवान् और अनिच्छावान् सदैव भोजनकेयोग्य प्राप्तहुये ग्रासको सेवनकरे ३१ केवल निर्बाह और शरीरसमेत प्राणकी रक्षाके निमित्त भोजन करे धर्मसे प्राप्तहुये को खाय अपनी इच्छा के समान स्वतन्त्रकर्मी न होवे ३२ किसी दशमेंभी आवश्यकवस्त्र और नियत भोजनसे अधिक नले वेजितना

खाय उतनाहीलेवे अधिक न ले ३३ किसीदशामें भी किसी से दान लेना वा दूसरेको दान देना आवश्यक नहीं ज्ञानीपुरुष जीवोंकी कंगाली और कष्टके कारण उनको भागदेकर ३४ दूसरेके धनोंको न ले और बिनामांगाहुआ भी न लेवे किसी बिषय को भोगकर फिर उसकी इच्छा न करे ३५ आवश्यकता रखने वाला उन मिट्टी जल फूल फल पत्र और अन्यप्रकारके भोजनकी वह बस्तुलेवे जिनका कोई रक्षक नहोय और यह संन्यासी आदि के निमित्त निषेधहैं ३६ हाथकी शिल्पजीविका से निर्बाह न करे सुबर्णको न चाहै शत्रुता और शत्रुताका उपदेश यह दोनों न करे भूषणादिक कभी न पहरे ३७ जो भोजनकी बस्तु श्रद्धासे पवित्रहैं उनको भोजनकरे शकुनोंका बर्णन अर्थात् ज्योतिषशास्त्रकी रीतिसे अच्छी बुरी होनहारके कहने को त्यागकरे स्वधावृत्ति संसारकी बस्तुओंमें असक्तचित्त संन्यासी सबजीवों करके त्यागीहुई बस्तुको भी त्यागकरे ३८ जो कर्मकि फल प्राप्तकरनेको इच्छासे हिन्सायुक्त हैं और जो धर्मलोक संग्रहहैं उनको न आपकरे न दूसरेको करा-वे३९सब मनकी इच्छाओंको त्यागकरके चिन्ता और शोचसेरहित होजाय—और सब जड़ चैतन्य जीवोंमें संन्यासीको समदर्शी होना योग्यहै ४० न किसी दूसरेको डरावे न आप किसीसे डरे सबजीव धारियों में बिश्वास पात्र होय ऐसा मोक्षकाज्ञाता श्रेष्ठ कहाजाता है ४१ वह कालको चाहनेवाला सावधान संन्यासी अभ्युत्थानका बिचार नकरे गतबातको न शोचे बर्त्तमानको त्यागकरे४२नेत्र मन और बाणीसे कहीं किसीको दोष न लगावे प्रत्यक्षमें अथवा परोक्ष में थोड़ाभी बुराकर्म नकरे ४३ जैसे कि कछुआ शरीरके सबअंगों को समेटलेताहै उसीप्रकार इन्द्रियोंको लयकरके इन्द्री मन और बुद्धिका नाशकर्त्ताहोकर अनिच्छासे सबतत्त्वोंका जाननेवाला४४ सुख दुःखादिक योगोंसे रहित नमस्कार और स्वाहाकारका त्यागी ममता और अहंकारसे पृथक् प्राप्त और अभीष्ट रक्षासे जुदा ब्रह्म ज्ञानी ४५ अनिच्छावान् गुणोंसे पृथक् जितेन्द्री संसार से प्रीति

का त्यागनेवाला स्थान रहित आत्माका प्यारा तत्त्वज्ञानी निस्स-न्देह मुक्तहोताहै ४६ जो ज्ञानी उस आत्माको हाथ पांव पीठ शिर उदर न रखनेवाला गुण और ओर कर्मसे रहित एक निर्मल नि-यत ४७ गन्ध रस स्पर्श रूप शब्द न रखनेवाला लयके योग्यमाया रहित निर्मांस ४८ चिन्ता न्यूनतासे रहित दिव्य सदैव निर्विकार रूपान्तर दशारहित और सबजीवों में नियत देखतेहैं वह मृतक नहीं हैं अर्थात् जीवन्मुक्तहैं ४६ उस आत्मामें बुद्धिलय होतीहै न इन्द्री न देवता वेदयज्ञ लोक तप और व्रतभी नहीं प्रवेश करते ५० इसमें जो ज्ञानियोंकी प्राप्तिहै उसको चिह्न रहित लयता कहतेहैं इसी से उस चिह्न रहित के धर्मको जाननेवाला ज्ञानी धर्मतत्त्व को अभ्यासकरे ५१ गुप्तधर्म में नियत ज्ञानी गुप्त आचरणकरे और धर्मको दोष न लगाता वह ज्ञानी अज्ञानी रूपसे विचरे ५२ जिसप्रकार अन्य मनुष्य सदैव उसको तिरस्कार करतेहैं वैसीरीति रखनेवाला जितेन्द्री सत्पुरुषों के धर्मकी निन्दा न करताहुआ बि-चरे ५३ जो ऐसी रीतिका करनेवालाहै वह उत्तम मुनि कहाताहै इन्द्री इन्द्रियोंके, अर्थ पंचतत्त्व ५४ मन, बुद्धि, अहंकार, और अव्यक्त पुरुष इनसबको तत्त्व निश्चयसे अच्छेप्रकार से ठीक जानकर ५५ फिर सब बन्धनों से छुटा होकर स्वर्गको पाताहै वह तत्त्वज्ञानी आत्म मर्य्यादमें इसप्रकार जानकर ५६ एकान्तवासी होकर ध्यान करे वह सबसे जुदाहै जैसे कि आकाश में वर्त्तमान वायुहोती है उसीप्रकार सब प्रीतियोंसे पृथक् और किसीस्थानपर नियत न होने वाला ज्ञानी मुक्तहोताहै ५७ जिसके मनोमय आदिक कोश खाली हुये वह भयादिकोंसे छुटाहोकर परमपदको पाताहै ५८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुगुरुशिष्यसंवादेषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६॥

सैंतालीसवां अध्याय॥

ब्रह्माजीबोले कि निश्चितदर्शी वृद्धलोगोंने संन्यासको तपकहा ब्रह्मयोनियोंमें नियत ब्राह्मणोंने ब्रह्मज्ञान को श्रेष्ठ जाना १ वह

ब्रह्ममाया और बहुतदूर वेदविद्या में नियत सुख दुःखादि योगोंसे छुटा निर्गुण सदैव वर्त्तमान बुद्धिसेपरे गुणयुक्त और सबसे वृद्धतमहै २ स्वच्छमन पवित्र रजोगुण रहित निर्मलज्ञानी लोग ज्ञान और तपकेद्वारा उस परब्रह्म को देखतेहैं ३ जो मनुष्य सदैव संन्यासमें प्रवृत्त और ब्रह्मज्ञानीहैं वह तपकेद्वारा उस कल्याणमार्ग परमेश्वरको प्राप्तहोतेहैं ४ तपको उत्तम दीपक कहा धर्म्म पूर्वक आचार साधकहै ज्ञानको उत्तमजानें संन्यास उत्तमतपहै५ जो ज्ञानी तत्त्व निश्चयसे उस उपाधियोंसे रहित ज्ञानरूप सबजीवोंमें नियत आत्माको जानताहै वह कृतकर्मी होकर अभीष्टको प्राप्तकरताहै ६ जो ज्ञानी मायाब्रह्मकी एकता और व्यवहारमें वियोगको देखता है इसीप्रकार जीव ईश्वरकी ऐक्यता और बहुतसे प्रकारोंकोजानता है वह दुःखसे छूटताहै ७ जो कुछ इच्छानहीं करताहै और न किसी का अपमान करताहै वह इसीलोक में नियत ब्रह्मभाव को प्राप्त होताहै ८ मायाके गुणोंकी मुख्यता जाननेवाला सब जीवोंके उत्पत्ति कारणसे विदित ममता अहंकारसे जुदाहोकर निस्संदेहमुक्त होताहै ९ जो सुख दुःखादिक योगोंसे छुटा नमस्कार और स्वधाकारसे रहितहै वह शान्तासेही उस ब्रह्मकोपाताहै जो कि निर्गुण सदैव सुख दुःखादिक योगों से जुदाहै १० सब गुणरूप और कर्म से उत्पन्न शुभाशुभ फलको त्याग दोनों सत्य मिथ्याको छोड़कर निस्संदेह मुक्तहोताहै ११ वह बड़ा वृक्ष जिसका अंकुर और मूल अव्यक्तहै महत्तत्त्व जिसकी शाखाहै और महा अहंकार पत्र समूह हैं इन्द्रीरूप अंकुर जिसके छिद्रोंमेंहैं १२ पंचतत्त्व जिसके सदाफूल हैं और सूक्ष्म महाभूतोंकी उत्पत्ति जिसकी छोटीशाखाहैं सदैवपत्र पुष्प रखनेवाला और शुभाशुभ फलका उदय करनेवालाहै१३ सब जीवोंका जीवनमूल सनातन वृक्षहै ज्ञानीब्रह्म ज्ञानरूपी खड्गसे इसप्रकारके वृक्षको काट छेदकर १४ जन्ममृत्यु और जरावस्थाको उदय करनेवाली स्नेहरूप फांसीको त्यागकर ममता अहङ्कार से जुदाहोकर मुक्तहोताहै इसमें संदेहनहींहै १५ यहजीव ईश्वरनाम

दोनों पक्षी प्राचीनरूपमें लय होनेवाले अथवा परस्पर मित्र और छायारूप होनेसे प्रकट हैं इन दोनों से विशेष जो परब्रह्म है वह चेतनावान् कहाजाताहै १६ जिन शरीरादिक उपाधियों से जीव पृथक्‌गिनेजातेहैं उनसे छुटाहुआ जीवात्मा उस पदार्थ वस्तुको जो कि बुद्धिसे परेहै और क्षेत्ररूप होकर बुद्ध्यादिक को चैतन्य करताहै उसे प्राप्तहोता है वही क्षेत्रज्ञ सब बुद्धियों का ज्ञाता और गुणोंसे जुदाहोकर सबपापोंसे छूटताहै १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुगुरुशिष्यसंवादे सप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७॥

अड़तालीसवां अध्याय॥

इसप्रकार साधनों समेत ब्रह्मविद्याको समाप्त करके शिष्यकी बुद्धिकी परीक्षाके अर्थ मिले हुये वचनोंसे ब्रह्माजी बोले कि कोईतो इस संसार वृक्षको ब्रह्मरूप कहतेहैं अर्थात् ब्रह्मही जगत् रूप से रूपान्तर दशा करताहै कोई अव्यक्त ब्रह्म कहते हैं कोई सब उपाधियोंसे रहित परब्रह्म कहतेहैं(आशय यहहै कि जगत् स्वप्नकेसमान कल्पितहै अब सांख्यमत को कहते हैं) और कोई मानते हैं कि अब यह सब अव्यक्तसे प्रकट होनेवाला औरउसीमें लयहोनेवाला है १ जो उपासक अन्तसमयपर एक दम भी ब्रह्मरूप होय वह हार्द्दाकाश में ब्रह्मकी उपासना करके ब्रह्मलोकके मार्ग से मोक्षके योग्य होता है २ सिवाय उपासना के जो पलमात्रभी आत्माको आत्मामें लयकरे तब ब्रह्माकार मनकीस्वच्छतासेज्ञानियोंका लय स्थान कैवल्यमोक्षको पाताहै ३ वह बारंबार प्राणायामों से प्राणरूप इन्द्री मन और बुद्धिको रोककर चौबीसवेंसे परे आत्माको पाताहै वह प्राणायाम यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, विहार, धारणा, ध्यान, समाधि, त्याग, वैराग्य इनभेदोंसे दश हैं अथवा मैत्रेय करुणादिक से बारह हैं अथवा पांचयम पांचनियम छःप्राणायामादिक, चार मैत्रीआदिक दो तर्क, वैराग्य इनभेदोंसे

बाईस हैं ४ इसप्रकार शुद्ध सतोगुण रखनेवाला योगी योग सामर्थ्य से जो जो चाहताहै उस उसको पाताहै जब अव्यक्तको पाकरसतोगुण श्रेष्ठतम होताहै तब अविनाशीपनेके योग्य होताहै ५ सतोगुणसे श्रेष्ठ कोई दूसरा नहींहै यहां उसके जाननेवाले पुरुष उसकी प्रशंसा करतेहैं—हम अनुमानसे पुरुषको सतोगुणमें नियत जानते हैं हेऋषियो पुरुषको दूसरे प्रकारसे पाना संभवनहींहै ६ शान्ती, धैर्य्य, अहिंसा, समता, सत्यता, सत्यबोलना, ज्ञान, तर्क, संन्यास यह सतोगुणी रीति प्रीतिके योग्य कीजातीहै ७ तार्किकलोग इसी अनुमानसे सतोगुण और पुरुषको एकही मानते हैं इसमें बिचार करना नहींहै ८ बुद्धिमान् तार्किक जो ज्ञानमें नियतहैं क्षेत्रज्ञआत्मा और सतोगुणकी ऐक्यता कहते हैं परन्तु यह सिद्ध नहींहोताहै ९ इसलिये सतोगुण आत्मा से पृथक् है तार्किक पुरुषों ने उसको नहीं बिचारा उनकी पृथक्ता और ऐक्यता मुख्यता से जाननी योग्यहै (आशयार्थ) सतोगुण और पुरुष समुद्र और समुद्र की लहरोंके समानहैं कि दोनों पृथक् बिदित होतेहैं जैसे कि लहरके गुप्तहोनेपर समुद्र बाकी रहताहै उसीप्रकार मोक्षदशा में सतोगुण नियत नहीं रहता १० इसरीतिसे सतोगुण और पुरुषके एकजात होनेपर जड़ औरचैतन्यका बिभाग नहींहोताहै यह शङ्काकरके कहते हैं कि जैसे गूलर और उस के भीतर नियत होनेवाले भुनगों में एकता और पृथक्ता भी दिखाईपड़तीहै उसीप्रकार सतोगुण और पुरुषकी ऐक्यता और पृथक्ताभी कही जातीहै यह ज्ञानियोंकी युक्तिहै दूसरा अर्थ जैसेकि गूलरके फलमें बाहरी बस्तुओंका प्रवेश नहोनेसे भुनगा उसीका अंग और उससे दूसरी जातहै इसीप्रकार चैतन्य का बिलास सतोगुण उससे पृथक् होकर जड़रूपसे प्रकट होताहै ११ जिसप्रकार जलसे दूसरी मछली जलहीके मध्यमेंहोय उसीप्रकार इन दोनोंकी भी ऐक्यताहै और जैसे कि कमलपत्रपर जलकणों की स्थिति होतीहै उसीप्रकार उनकाभी योग सम्बन्धहै अर्थात् पुरुष असंगहोनेसे सतोगुण धर्मोंसे लिप्तनहीं होताहै उसकी

लिप्तता मानोंहुईहै १२ गुरूजी बोले कि तब इसप्रकार शिक्षाकिये हुये सन्देह में पूर्ण उत्तम मुनियोंने लोकके पितामह ब्रह्माजी से फिर पूछा १३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांगुरुशिष्यसंवादेअष्ट चत्वारिंशोऽध्यायः ४८॥

उनचासवां अध्याय॥

इसप्रकार सन्दिग्ध चित्तमनुष्य प्रथमशास्त्रोंमें तर्कना करते हैं उसकेप्रकट करनेको ऋषिबोलेकि इसलोकमें प्रवृत्तिनिवृत्तधर्मरूप कर्मोंमेंसेकौनसाकर्म पूरेअभ्यासके योग्यमानाहै हमनानाप्रकारकी धर्मगतियोंको एकदूसरेकी खंडनकरनेवाली देखतेहैं १ कोईकहते हैं कि शरीरके नाशहोनेके पीछेभी आत्माहीहै और कोई कहते हैं कि यहनहींहै कोई सबको सन्देहयुक्त कहतेहैं कोई २ सन्देहसे रहितभी कहतेहैं २ कोई तार्किकआदि कहतेहैं कि यह बिनाशमानहै अर्थात् उत्पत्ति और नाशसेसंयुक्तहै कोई मीमान्शक कहतेहैंकियहसबनित्य प्रवाहहै और कोई २ शून्यवादी कहतेहैं कि नहींहै और सौगतमत वाले कहतेहैं कि है परंतु एक २ क्षणमें उत्पन्न नियत और नाश होने वालाहै और योगाचार्य्यकहतेहैं कि वह एकरूपविज्ञानहीदोप्रकार काहोगयाहै कोईइड़लोम मतवाले कहतेहैं कि वह मिला और अनमिलाहै ३ जोशास्त्रज्ञ अपरोक्ष ज्ञानवाले ब्राह्मणहैं वह मानतेहैं कि एक ब्रह्महीहै और सगुण उपासक उसको पृथक् कहते हैं और परमाणुवादी कारणोंकी आधिक्यतावर्णनकरतेहैं ४ कोई ज्योतिषी दोनोंदेश और कालको कहतेहैं और कोईजटामृगचर्मधारी वृद्धलोग कहतेहैं कि यह सब प्रत्यक्ष संसार तीनोंकाल मेंभी नहींहै स्वप्नके राज्यकी समान केवल चिदात्मा का बिलासहै ५ कोईनैष्ठिक ब्रह्मचर्य्यको चाहतेहैं कोई गृहस्थाश्रमको इच्छाकरतेहैंहे देवता ब्रह्मज्ञानी तत्त्वदर्शी ब्राह्मण इसप्रकार मानतेहैं ६ कोई आहारकोचाहते हैं कोईभोजनके त्यागनेमेंप्रवृत्तहैं कोई कर्मकी प्रशंसा करतेहैं कोई

संन्यासको अच्छा कहतेहैं ७ कोई दोनों देश और कालको कहते हैं कोई कहतेहैं यह नहींहै कोई मोक्षकी प्रशंसा करतेहैं कोई पृथ- क् २ प्रकारके भोगोंको श्रेष्ठ कहतेहैं ८ कोई धनोंको चाहतेहैं कोई निर्द्धनताको चाहतेहैं कोई ध्यानादिक साधनोंको करके कहतेहैं कि यह नहींहै अर्थात् आत्माके सिवाय सबमिथ्याहै ९ कोई हिंसा के त्यागनेवालेहैं कोई हिंसामें प्रवृत्त हैं कोई पुण्य और शुभकीर्त्ति में प्रवृत्तहै कोईकहतेहैं कि पुण्यादिक नहींहै १० सतभाव में प्रवृत्तहैं कोईसन्देहोंमें नियतहैं कोई मनुष्य कहतेहैं कि दुःखकीनिवृत्ति और सुखकी प्राप्तिके अर्थध्यान करना चाहिये कोई अनिच्छा कर्म फल को अच्छाकहतेहैं ११ कोई ब्राह्मण यज्ञकोअच्छा कहतेहैं कोई दान की प्रशंसा करतेहैं कोई तपको कोई वेदपाठको अच्छाकहतेहैं १२ कोई कहतेहैं कि वह ज्ञानस्वरूप संन्यासहीसे प्राप्तहोताहै औरवि- भूत चिन्तकलोग कहतेहैं कि बहुतसाधन करने से ज्ञान प्राप्तहोता है कोई सब को अच्छाकहते हैं कोई उसके बिपरीत हैं १३ हेश्रेष्ठ देवता इसरीतिसे धर्ममें अनेक प्रकारका ज्ञान बिपरीतकर्मता होने पर अत्यन्त अज्ञानी हमलोग निश्चयकोनहींपातेहैं यह कल्याणका- र्य्यहै इसप्रकार बारंबार लोगपरस्पर बिपरीत बार्त्ताकरतेहैं जोजिस धर्ममें प्रवृत्तहै वहउसीको अच्छाकहताहै १४। १५ इसीहेतुसे तुमने हमारी बुद्धिको अशिक्षित वर्णनकिया और मन बहुतप्रकारकाहुआ हे बड़ेसाधु देवता हम इसको जानना चाहतेहैं कि कल्याण क्या है १६ इसके अनन्तर जोगुप्त पदार्थहै आपउसके कहनेकोयोग्यहैं सतोगुण और आत्माका संयोगभी किसीहेतुसेहै १७ उनब्राह्मणों के ऐसे २ बचनोंको सुनकर उस धर्मात्मा बुद्धिमान् संसारके कर्त्ता भगवान् ब्रह्माजीने इन सब बातोंके ठीक २ उत्तर उन ब्राह्मणों को दिये १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतासुगुरुशिष्यसंबादएकोन पंचाशत्तमोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि हे बड़े साधुओ बहुत अच्छेप्रश्न तुमने पूछेहैं उनकाउत्तर जैसे गुरूने शिष्यको पाकर कहाहै उसको मैं तुमसेकहताहूं १ यहां तुम उस सबको सुनकर अच्छी रीतिसे धारण करो सब जीवोंकी हिन्सा न करना नाम कर्म कल्याणमाना है २ यह अहिन्सा कर्म ब्रह्म से मिलानेवाला निर्भय श्रेष्ठ और धर्मरूप लक्षण रखनेवाला है मुख्यता के जाननेवाले वृद्धों ने ज्ञानको ही कल्याणरूप कहाहै ३ इसीहेतुसे शुद्ध ज्ञानके द्वारा सब पापोंसे रहितहोताहै जो मनुष्य हिन्सामें प्रवृत्तहैं और जो नास्तिक चलन रखनेवालेहैं और जो लोभ और मोहसे संयुक्तहैं वह सब नरकगामीहैं ४ जो निरालस्य मनुष्य सफलकर्म करते हैं वह बारंबारजन्म लेनेवाले होकर इसलोकमें आनन्द करते हैं ५ जो श्रद्धावान् पंडित अनिच्छा पूर्व्वक योगयुक्त होकर इच्छासे रहित कर्म करते हैं वह बुद्धिमान् और सदाचारीहैं ६ हे बड़ेसाधु ऋषियो इसकेपीछे सतोगुण और क्षेत्रज्ञकी ऐक्यता और पृथक्ता जैसेप्रकारकी है उसको मैं कहताहूं तुम चित्त लगाकर समझो ७ यहां यह बिषय और विषयिक नाम संबंध कहाजाता है पुरुष सदैव बिषयी और सतोगुणविषय है ८ पूर्वकल्पसे वर्णन कियागया है कि सदैव जड़रूप सतोगुण ऐसे अपने को भोजन रूप नहीं जानताहै जैसे कि गूलर भुनगों को अर्थात् सतोगुण गूलर के समान आपको और अपने भोजन करनेवाले को नहीं जानता है और भोक्ता पुरुष भुनगेकी समान दोनोंको जानताहै जो इसप्रकार जानताहै वहक्षेत्रज्ञहै९सतोगुण सदैव सुख दुःखादिक रूपान्तरदशासे युक्तहै और क्षेत्रज्ञ सदैव इनयोगोंसे छुटाहुआ उपाधिसे पृथक् निर्गुण और प्राचीनहै अर्थात् उनका सम्बन्ध मुख्यनहींहै कल्पित है ज्ञानियोंने इसको कहाहै १० वह क्षेत्रज्ञ अपने अधिष्ठान सतोगुण से बराबरी और एक नामता प्राप्त करनेवाला और सर्वत्र नियत है सदैव सतोगुणको ऐसे भोग-

ताहै जैसे कि जलसे पृथक् कमलकापत्र जलको भोगताहै ११ ज्ञानी सबगुणोंसे युक्त होकर भी ऐसे लिप्त नहींहोताहै जैसे कि कमलपत्र पर नियत चलायमान अंबुकण उससे किंचित्भी लिप्तनहींहोते१२ इसीप्रकार पुरुषभी सतोगुणसे निस्सन्देह जुदारहताहै परन्तु सतोगुण और पुरुष दोनोंमिलकर द्रवमात्र अर्थात् निश्चयकरके सतोगुणरूपहुये(तात्पर्य्य)जैसे कि रस्सी और रस्सीमें नियत सर्पकी भ्रान्ति दोनों सर्पमात्र होतेहैं १३ जिसप्रकार द्रव और कर्त्ताहैं उसीप्रकार उन दोनोंका मिलापहै वह तीनोंमिलकर द्रवरूप होतेहैं फिर द्रवसे पुरुषका बियोग कैसे है उसको कहते हैं जैसे कि कोई बड़ा दीपक लेकर अंधेरे में जाता है उसीप्रकार सतोगुणरूपी दीपक से ब्रह्म के चाहनेवाले चलतेहैं अर्थात् सतोगुण के रूपान्तर ब्रह्मज्ञान से सतोगुण और पुरुषको पृथक् जानतेहैं १४ जबतक तेल और बत्ती है तबतक दीपक प्रकाश करताहै उन तेल और बत्तीके समाप्तहोने पर दीपककी ज्योतिगुप्त होजातीहै यही सतोगुण का वृत्तान्तहै१५ इसप्रकार सतोगुण प्रकटहै और पुरुष गुप्तहै जो कि अभीष्टहै हे ब्राह्मणो इसको जानो अर्थात् समाप्त होनेके पीछे अथवा कर्म के नाश होनेमें वह सतोगुण आपबिजयी होजाताहै और पुरुषसमाधि सुषुप्ती और सुखका साक्षीहै और तुम से कहताहूं १६ कि दुर्बुद्धी मनुष्य हजारों दृष्टान्तोंसे भी बुद्धिको नहीं पाताहै और बुद्धिमान् चौथाई शिक्षासे भी सुखसे वृद्धिपाताहै १७ इसप्रकार उपायसेधर्म का पूरासाधन जानना योग्यहै उपाय का ज्ञाता बुद्धिमान् पुरुष असंख्य सुखको पाताहै १८ जैसे कि मार्ग का खर्च न रखनेवाला मनुष्य किसीमार्ग में बड़े कष्टसे जाताहै और वह मार्ग के मध्यमें नाशभी होजाताहै १९ उसीप्रकार ज्ञानसाधनकर्मों में भी जानना योग्यहै फल होताहै और नहीं होताहै अर्थात् बहुत पुण्यरखनेवाला पूर्णयोगको पाताहै और थोड़ा पुण्यरखनेवाला योगसे पूर्वही मर जाताहै पुरुषका कल्याण चित्तमेंही है और शुभाशुभ कर्म दृष्टान्त रूपहैं २० जैसे कि न देखे हुये बड़ेमार्गको बिचारकिये पैरोंसेजाता

है वैसाही योगरहित भी होताहै २१ और जिसप्रकार उसीमार्गको शीघ्रगामी और घोड़ोंसे युक्त रथकी सवारी से जाताहै उसीप्रकार योगीलोगोंकी भी गतिहै (अर्थ) शास्त्ररूपरथसे संसाररूपी मार्ग उल्लंघन करना योग्यहै २२ परम्पद रूपी ऊंचे पर्व्वतपर चढ़कर रथसे दुःख पानेवाले अपूर्णयोगी को देखते शास्त्ररूपी पृथ्वीको नहीं देखते २३ जबतक रथ का मार्गहै तबतक वह योगी रथ की सवारीसे जाताहै और रथमार्गके न होनेपर रथको छोड़कर चलता है अर्थात् चित्तकी पवित्रतातक शास्त्रकी आज्ञापर कर्महोताहैपरंतु फिर वह तत्त्वको जानता क्रम पूर्व्वक हंसऔर परमहंस आश्रम को अच्छीरीति से जानकर प्राप्त करताहै २४ इसप्रकार योग में बुद्धिमान् तत्त्वबुद्धी को जाननेवालायोगी जाताहै और अच्छेप्रकार से जानकर एक मार्गसे दूसरे उत्तम मार्गपर चलताहै २५ जैसे कि नौका न रखनेवाला मनुष्य भूलसे बड़े भयकारी समुद्रको भुजाओं से मझाताहै वह निस्सन्देह मृत्युको चाहताहै २६ और जिसप्रकार भेदोंका जाननेवाला योगी श्रेष्ठवल्ली रखनेवालीनौकाकेद्वारा आनन्दसे जलमें चलताहै वह शीघ्रही हृदसे पारहोताहै (तात्पर्य)रथ रूपी गुरूके विनामार्ग व्यतीत नहीं होताहै २७ वहपार होनेवाला ममतासे रहित योगी नौकाको छोड़कर संसारसागर के अन्तपर जाताहै रथ और पदाती का जैसा वृत्तान्तहै वह प्राचीन शास्त्र से मैंने वर्णन किया २८ जैसे कि मोहसे नौकामें डूबताहै उसीप्रकार गुरूआदिक की प्रीतिसे अचेत और ममता से आधीन होता हुआ उसी संसारसागरमें घूमताहै २९ जैसे नौकापर सवारहोकरस्थल पर घूमना असंभवहै उसीप्रकार रथपर सवारहोकर जलमें चलना नहीं होताहै तात्पर्य्ययहहै कि कर्माधिकारीको योग और योगाधिकारीको कर्म करना उचितनहीं ३० इसप्रकार नानाप्रकारका कर्म फल पृथक् २ आश्रममें नियतहै जैसाकर्मकाफलहै लोकमें वैसाही प्राप्तहोताहै ३१ जो गन्ध रस रूप शब्द स्पर्श न रखनेवाला और जानने के योग्यहै मुनिलोग उसको बुद्धिसे जानतेहैं और प्रधान

कहते हैं ३२ उस स्थानपर प्रधान अव्यक्तहै अव्यक्तका अव्यक्तसे उत्पन्न महत्तत्त्वहै और प्रधानरूप महत्तत्त्वसे उत्पन्न अहंकारहै ३३ अहंकारसे पंचतत्त्वकेशब्दादिक बिषय प्रकटहुये वही बिषय पंचतत्त्वोंकेपृथक्२गुण कहेजातेहैं ३४ उसीप्रकार अव्यक्त उत्पाद्य उत्पादक रूपहै ३५ महत्तत्त्वभी उत्पादक उत्पाद्यरूपहै अहंकारभी उत्पादक और बारम्बार उत्पाद्यरूप है यह हमने सुना है ३६ पंचतत्त्व भी उत्पादक उत्पाद्यरूप हैं पंचतत्त्वोंके शब्दादिक गुण उत्पादकरूप और उत्पाद्यरूप भी होते हैं उन्होंके भेदोंका कारण चित्त है ३७ उनमें आकाश एकगुण रखनेवाला वायु दोगुण रखनेवाला कहा जाताहै अग्नि तीनगुण रखनेवाला और जल चारगुण रखनेवाला है ३८ स्थावर जंगमजीवोंसे पूर्ण सब जीवोंकी उत्पन्न करनेवाली शुभाशुभ कर्म्म फलकी दिखानेवाली देवी पृथ्वीको पांचगुण रखनेवाली जानना चाहिये ३९ हे बड़ेसाधु ऋषियो शब्द स्पर्श रूपरस गन्ध यह पांचगुण पृथ्वीकेजाननेयोग्यहैं ४० पृथ्वीकामुख्यगुणगन्ध है वह बहुत प्रकारकाकहा उसगन्धके बहुतसे गुणोंको ब्योरेसमेत कहताहूं ४१ इष्ट,[1] अनिष्ट,[2] मधुर,[3] अम्ल,[4] कटु,[5] निर्हारी,[6] संहत,[7] स्निग्ध,[8] रूक्ष[9] बिशद,[10] इसप्रकारपृथ्वीकी गन्धकोदशप्रकारकाजाननाचाहिये शब्द स्पर्शरूप रसयहजलकेगुणहैं ४२।४३ अबरसज्ञानकोकहताहूंवहरस बहुतप्रकारका कहाहै मधुर, अम्ल, कटु, तीक्ष्ण, कषैला, निमकीन ४४ इसप्रकारसे जलकारस गुणछःप्रकारकाहै शब्दस्पर्श और रूप यह तीनगुण रखनेवाला अग्नि कहाजाताहै ४५ अग्निका मुख्यगुण रूपहै वह रूप बहुतप्रकारका कहाहै श्वेत, कृष्ण, रक्त, नीला, पीला, अरुण ४६ ह्रस्व, दीर्घ, कृश, स्थूल, चतुरस्र, वृत्तसम इसप्रकार अग्निकारूप बारहप्रकारका कहाताहै ४७ धर्म्मज्ञ सत्यवक्ता वृद्ध ब्राह्मणोंसे जाननेके योग्यहै शब्दस्पर्श जाननेचाहियें क्योंकि बायु भी दोगुण रखनेवालाहै ४८ बायुका मुख्यगुण स्पर्श है वह स्पर्श

१ प्रिय २ अप्रिय ३ मीठा ४ आंबिल ५ करुआ ६ हिम्वादिक ७ चित्रगंध ८ चिकना ९ रूखा १० उज्ज्वल ॥

अनेकप्रकारकाहै रूखा, शीतोष्ण, स्निग्ध, बिशद ४९ कठोर, चिक्कण, श्लक्ष्ण, पिच्छल, दारुण, मृदु इसप्रकार बायुका गुण बारह प्रकारका कहाता है ५० धर्मज्ञ तत्त्वदर्शी सिद्धब्राह्मणों से बुद्धिके अनुसार जानागया ५१ उनमें आकाश एकगुण रखनेवालाहै उसको शब्द कहते हैं उस शब्दके बहुत गुणोंको ब्योरेसमेत कहताहूं ५२ खड्ज, ऋषभ, गान्धार, मध्यम, पंचम, निषाद, धैवत, इष्ट, अनिष्ट, संहतनाम प्रकार रखनेवाला जाननेके योग्य है ५३ इसप्रकार आकाशसे प्रकट शब्द दशप्रकारका जाननायोग्यहै आकाश उत्तम तत्त्वहै उससे श्रेष्ठ अहंकार है अहंकारसे उत्तमबुद्धि है बुद्धिसे श्रेष्ठ महत्तत्त्वहै उससेश्रेष्ठ अव्यक्तहै अव्यक्तसे श्रेष्ठतम पुरुषहै ५४।५५ जो ज्ञानी भूतोंके परापरका ज्ञाताहै सब कर्म्मोंकी रीतोंका जाननेवाला और सृष्टिभरेका आत्मारूपहै वह न्यूनतासे रहितआत्मा को प्राप्तहोताहै ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्राह्मणगीतायांगुरुशिष्य संवादेपंचपंचाशतमोऽध्यायः ५० ॥

इक्यावनवां अध्याय॥

ब्रह्माजी बोले कि जिसप्रकार मन पंचभूतोंका ईश्वर है और उत्पत्ति वा नाशमें भी मनही जीवधारियोंका ऐसे स्वरूप है जिस प्रकार कुण्डलादिक का सुवर्ण स्वरूप है १ उसीप्रकार वह मन सदैव बड़े भूतोंकाभी निमित्त कारणहै व्यक्तसे उत्पन्न बुद्धि मनका ऐश्वर्य्य कही जातीहै वहीमन जीवात्माकहाताहै २ मनही इन्द्रियों को शरीररूपी रथमें ऐसेजोड़ताहै जैसे कि सारथी उत्तम घोड़ों को जोड़ताहै—और इन्द्री मन और बुद्धि सदैव क्षेत्रज्ञमें मिलजातेहैं ३ इंद्रीनाम घोड़ोंसेयुक्त बुद्धिरूप सारथीसे पकड़ाहुआ जो रथहै शरीराभिमानी जीवात्मा उसपर चढ़कर सुखकी इच्छासे चारोंओरको दौड़ताहै(तात्पर्य) जो इन्द्री मन और बुद्धिसे वहिर्मुखहैं वह आत्मा कोजीवनाम करतेहैं और जो अन्तर्मुखहैं वह उसके ब्रह्मभाव को

प्रकट करतेहैं अगलेश्लोकमें देखो ४ इन्द्रीजित रूप घोड़े मन रूप सारथी बुद्धिरूपी चाबुकसे संयुक्त बड़ारथ ब्रह्मरूपहै ५ इसरीतिसे जो योगीसदैव ब्रह्मरूप रथको जानताहै वह ध्यानका अभ्यासी सब सृष्टिमें मोहको नहींपाताहै ६ अव्यक्तसे लेकर शब्दादिकविषयतक और जड़ चैतन्य जीवभी जिसका स्वरूपहै और जिसमें सूर्य्य और चन्द्रमाकी किरणोंसे दीखताहै और ग्रह नक्षत्रादि से शोभायमान है ७ नदी और पर्व्वतोंके जालोंसे सबओरको अलंकृतहै उसीप्रकार नानाप्रकार का होकर नानाप्रकार के जलोंसे सदैव अलंकृतहै ८ सबजीवोंके जीवनका कारण और सब प्राणीमात्रों की गतिहै यह प्राचीन ब्रह्मबन कहाता है उसमें क्षेत्रज्ञ आत्मा बिचरताहै ९ इस लोकमें जो स्थावर जंगमजीव हैं वह प्रथमलय होतेहैं उसके पीछे शब्दादिक गुणलय होतेहैं उनगुणोंकेपीछे सूक्ष्म महाभूत लय हो-जातेहैं यह स्थूल सूक्ष्मशरीररूपदोनों प्रकारके महाभूतोंका लयहो कर चिन्मात्ररूप से नियतहोनाहै १० देवता मनुष्य गन्धर्व पिशाच अप्सरा राक्षस यह सब स्वभावसे उत्पन्न हुयेहैं यज्ञादिकोंसे नहीं हुयेहैं और न ब्रह्मादिक सृष्टिकर्त्ताओं से ११ हे ब्राह्मणो यहसृष्टि का कर्त्ता और मरीच्यादिक ऋषि बारंबार प्रकट होतेहैं वहसब भूत उनही पांचोंतत्वों में नियत समयपर ऐसे लय होजाते हैं जैसे कि समुद्रमें तरंगलयहोजातीहैं १२ इनसृष्टिकर्त्ता स्थूल महाभूतोंसे श्रेष्ठ सूक्ष्म महाभूतहैंयोगीउन सूक्ष्म महाभूतोंसे छुटेहुयेभी परमगतिको पातेहैं १३ प्रभुब्रह्माने इससब को संकल्परूप मनसेही उत्पन्न किया है उसीप्रकारऋषियोंने वेदोंको मन इन्द्रियोंके एकत्र होनारूप तप सेही प्राप्तकिया १४ उसीप्रकारफलखानेवाले सिद्ध और संकल्पक्रम द्वारासमाधियुक्त ऋषि तपके द्वारा तीनोंलोकोंको देखतेहैं १५ औषधी नीरोगता आदिक अनेक प्रकारकी सबबिद्या तपसेही सिद्ध होतीहैं साधनका मूलतपहै १६ जोदुष्प्राप्य इन्द्रादिक पदहैं और जो वेदा-दिकहैं जो दुराधर्ष अग्निआदिकहैंऔर जो महाप्रलयादिकहैं वहसब तपसेही सिद्धहोतेहैं तप बड़ी कठिनतासे प्राप्तहोताहै १७ मद्यपान

ब्राह्मण का मारनेवाला चोर भ्रूणहत्या करनेवाला गुरु की स्त्री से भोगकरनेवाला यहसब अच्छेतपेहुये तपसेही उस पापसे छूटते हैं १८ मनुष्य पितरदेवता पशुमृगपक्षी और जो अन्यस्थावर जंगम जीवहैं १६ वहसदैव तपकोही श्रेष्ठ माननेवालेहैं और तपसेही सदैवसिद्धहोतेहैं उसीप्रकार बड़ीमायावाले देवता तपके द्वारा स्वर्ग को गये २० आलस्यसे रहित अहंकारयुक्त मनुष्य अपनी इच्छासे कर्मोंको करतेहैं वह प्रजापतिके लोकमें जाते हैं २१ ममता और अहंकार से रहित महात्मा लोग शुद्धध्यान के द्वारा महत्तत्त्व योग से संवन्ध रखनेवाले उत्तमलोकको प्राप्त करते हैं २२ सदैव शुद्ध मन बुद्धिवाले पूर्ण योगी मनुष्य ध्यानयोग को प्राप्त करके उस अखंड आनन्द स्वरूप निराकार ब्रह्ममें प्रवेश करते हैं जिससे सब संसार के सुखों की वृद्धिहै २३ ममता और अहंकार से जुदेमनुष्य पूर्ण ध्यानयोगको न पाकर उस अव्यक्तमें अर्थात् प्रकृति माया में प्रवेश करते हैं जोकि महत्तत्त्वादिक तत्त्वोंका श्रेष्ठ लोकहै २४ जो अव्यक्त सेही प्रकट हुआ था फिर अव्यक्त रूपको पाया तमोगुण रजोगुणसेछूटा सबपापोंसेजुदा मनुष्य शुद्ध सतोगुणमें नियतहोकर सबको उत्पन्न करताहै उसको ईश्वरजाने जो उसको जानताहै वह वेदका जाननेवाला है २५।२६ मनके द्वारा ज्ञानकोपाकर सावधान मुनि होताहै जो चित्तहै उसीका रूपहोताहै अर्थात् जिस रूपका ध्यानकरताहै वही होताहै वह स्थिर प्राचीन और गुप्तहै२७ अव्यक्त सेलेकर शब्दादिक तक अविद्याका चिह्न कहा उसीप्रकार गुणोंसे इस लक्षणको जानो २८ दो अक्षर मृत्युहोतेहैं और तीन अक्षर अविनाशी ब्रह्म हैं मम अर्थात् मेराहै यहमृत्युहै और न मम अर्थात् मेरानहीं यह सनातन ब्रह्महै २६ कोईनिर्बुद्धी मनुष्य कर्मकी प्रशंसा करतेहैं जो महात्मा वृद्धहैं वह कर्मकी प्रशंसानहीं करते ३० कर्म-हीसे अर्थात् पञ्चतत्त्व दशों इन्द्रियों और मन इन सोलहवस्तुओं का रखनेवाला शरीर है उसका धारण करनेवाला जीव उत्पन्न होताहै परन्तु ब्रह्मविद्या उससोलह अंगरखनेवाले पुरुषको निगल

जातीहै वह बिद्या उनकी स्वीकृतहैं जो कि देवता आदिकसे शेष बचेहुये अमृतको भोजन पान करनेवालेहैं ३१ इसलिये जो कोई दूरदर्शी हैं वे कर्मोंमें प्रीतिनहीं करते यह पुरुष बिद्यारूपहै कर्म रूप नहीं कहाजाताहै ३२ जो इसप्रकार उस बंधनसे जुदा अवि-नाशी प्राचीन सदैव रहनेवाले असंग आत्माको जानताहै वह चित्त का जीतनेवाला ज्ञानी सदैव जीवन्मुक्त होताहै ३३ जो इस प्रकार इस अनुपम अकल्पित प्राचीन अजित बन्धनसे रहित ईश्वरकोभी अपने में लयकरनेवाले परमात्माको जाने वह उन आगेलिखे हुये कारणों के बन्धनसे रहित अबिनाशी और अचेष्ट होताहै ३४ वह मैत्री आदिक सब संस्कारों को दृढ़ करके चित्तको हृदय कमलमें रोककर उस शुद्धब्रह्मको पाताहै जिससे श्रेष्ठ और वृद्ध कोई बर्त्त-माननहींहै ३५ चित्त शुद्धीमें शान्ती प्राप्तकरे चित्तकी शुद्धीकाचिह्न उस प्रकारका है जैसे कि स्वप्नका देखना होताहै (तात्पर्य्य) जैसे कि स्वप्नमें शरीरके स्नेहसे जुदा होकर निवासहै उसीप्रकार जब चित्तयोग युक्तिके द्वारा बाहिरी बस्तुओं से रहित अन्तरचारी हो-ताहै वह शुद्धताका चिह्नहै ३६ यह चित्त शुद्धी मुक्त पुरुषोंकी गति है जो ज्ञानमें निपुण और पूर्णहैं वह उन भूतभबिष्य बर्त्तमान इन तीनों कालकी बस्तुओंको देखतेहैं जो कि रूपान्तर दशासे उत्पन्न हैं ३७ बिरक्त पुरुषोंकी यह गतिहै यह सनातन धर्महै यह मिलना ब्रह्मज्ञानियोंका है यह रीति निर्दोषहै ३८ जो सब जीवों में एकसा भाव रखनेवाला अनिच्छावान् मनोभिलषित को न चाहनेवाला और सर्वत्र समदर्शीहै उसको इसगतिका प्राप्तहोना संभवहै ३९ हे बड़ेसाधु ब्रह्मऋषियो मैंने यह सब तुमसे कहा इसपर शीघ्र ध्यानकरो इसीसे सिद्धीको पावोगे ४० गुरूने कहा ब्रह्माजीसे इस प्रकार कहेहुये उन महात्मा मुनियों ने उसीप्रकार से कर्म किया और उसी से ब्रह्मलोकको पाया ४१ हे पवित्रात्मा भाग्य शील शिष्य तुमभी मुझसे कहेहुये इस ब्रह्माजीके बचनको अच्छीरीतिसे काममें लाओ इसीसे अवश्यसिद्धीको पावेगा ४२ बासुदेवजी बोले

कि हेकुन्तीके पुत्र तब गुरुसे इसप्रकार शिक्षापाये हुये उस शिष्यने सब उत्तम धर्मोंका अभ्यास किया उससे उसने मोक्षको पाया ४३ हेअर्जुन तबउसकृतकृत्य शिष्यने उसलयकेस्थानब्रह्मकोप्राप्तकिया जिसमेंप्राप्तहोकर फिर नहीं शोचकरताहै ४४ अर्जुनने कहा हेदुष्टसंहारी श्रीकृष्णजी यहब्राह्मण कौनहै और शिष्यकौनहै हे प्रभुजो यह बातमेरे श्रवण करने के योग्यहै तो आप उसकोमुझसे कहिये ४५ वासुदेवजी बोले हे महाबाहु अर्जुनक्षेत्रज्ञ होकर मैंहीं गुरुहूं औरमेरेही मनकोशिष्य जानो मैंने तेरी प्रीतिसे इस गुप्त रहस्यको वर्णन किया ४६ हे सुंदरब्रतवाले अर्जुन जो सदैव तेरी प्रीतिमुझ मेंहै तब तुम इस ब्रह्मज्ञान को सुनकर अच्छीरीति से अभ्यास करो अर्थात् यम नियमों पर प्रवृत्त होजावो ४७ हे शत्रुबिजयी फिरतुम इस धर्मके अच्छे प्रकार अभ्यास करने पर सब पापों से मुक्तहोकर कैवल्यमोक्षको पावोगे ४८ प्रथमयुद्धके वर्त्तमानहोनेके समयपरभी मैंनेयही ज्ञानतुझसे कहाथा हे महाबाहु इसीहेतुसेइस में चित्तको लगावो ४९ हे भरतर्षभ अर्जुनमैंने बहुतसमयसे अपने प्रभुपिताको नहीं देखाहैमैंतेरे सम्मतसे उनको देखनाचाहताहूं ५० वैशंपायन बोले कि इसबचनके कहनेवाले श्रीकृष्णजीको अर्जुनने उत्तरदिया कि हेश्रीकृष्णजी हमअबहीं हस्तिनापुर को चलेंगे ५१ वहांधर्मात्मा राजायुधिष्ठिरसे मिलकर और पूछकर आप अपनी पुरीमें जानेको योग्यहो ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअनुगीतासुगुरुशिष्यसंवादेएकपंचाशत्तमोऽध्यायः ५१

इतिब्राह्मणगीतासमाप्तम् शुभंभूयात् ॥

बावनवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले इसकेपीछे श्रीकृष्णजीने दारुकसारथीको आज्ञा करी कि रथतैयारकरो तबदारुकने दोहीघड़ीमें प्रार्थनाकरी कि रथ तैयारहै १ इसीप्रकार पांडव अर्जुनने सेनाको आज्ञाकरी कि तैयार हो हमहस्तिनापुर कोजायँगे २ हेराजा इसप्रकारसे आज्ञाकोपाकर

वह सेनाके लोग सबतैयार होगये औरबड़े तेजस्वी अर्जुनसे बिनय करी कि सेनातैयार है ३ हे राजा इसके अनन्तर वह प्रसन्नचित्त श्रीकृष्ण और अर्जुनरथमें सवार होकर अपूर्व वार्त्तालाप करतेहुये चले ४ हे भरतर्षभ महातेजस्वी अर्जुनने इनसवारहुये बासुदेवजी से फिर यह बचनकहा ५ हे श्रीकृष्णजी राजा युधिष्ठिरने आपकी कृपासे बिजय पाई शत्रुभी मारेगये अब यह राज्य निष्कंटक प्राप्त हुआ ६ हेमधुसूदनजी पांडव आपसेही सनाथहैं नौकारूपी आप-कोपाकर कुरुरूपी सागरसे पारहोगये ७ हे संसारकेकर्त्ता जगदा-त्माबिश्वरूप तुमको नमस्कारहै जिसप्रकार आपसबके अंगीकृतहो उसीप्रकार मैंभी आपको जानताहूं ८ हेप्रभु मधुसूदनजी यहजी-वात्मासदैव आपके तेजसे प्रकटहै आपकी उत्पत्तिक्रीड़ा निवास और नाशरूपहै औरदोनों संसार आपकी मायामेंहैं ९ जो यहस्थावरजंगम नाम संसारहै वहसब आपकेरूप है तुमहीं चारोंप्रकार के सबजीव समूहोंको उत्पन्न करतेहो १० हेमधुसूदन तुम पृथ्वी अन्तरिक्ष और स्वर्गको उत्पन्न करतेहो निर्मल चांदनी आपका ईषद्धास्यहैऔरसब ऋतु इंद्रियांहैं ११ सदैवचलनेवाला बायुआपका प्राणहैऔरआपका क्रोधही प्राचीनमृत्युहैऔरप्रसन्नतामें लक्ष्मीहै हेमहाज्ञानीवहलक्ष्मी सदैव आपके पासहै १२ हेनिष्पाप प्रीति आदिक रति सन्तोषादिक तुष्टि धैर्यादिक धृति क्षमा क्षान्ति ज्ञान स्मरणादिक मति इन्द्रियों काजीतना आदिक शान्ति और तुमहीं स्थावर और जंगमहोअर्थात् आपकेही तेजसे प्रकटहैं और युगोंके अन्तमें तुमहीं नाशकियेजातेहो अर्थात् उनको अपने रूपमें लयकरतेहो १३ आपके गुण चिरकालमें भी मुझसे कहने असंभवहैं तुमहीं आत्माहो परमात्माहो हेकमल-लोचन तुमको नमस्कार १४ हेअजेय आप नारद, देवल, व्यास और भीष्मजी के कहनेसे मुझको बिदितहुये १५ सब भूत तुमहींमें प्रबिष्ट हैं अकेले तुमहीं सबके ईश्वरहो हेपापोंसे रहित तुमनेअनु-ग्रहसे युक्त जो यह ज्ञान बर्णन किया १६ हेजनार्दनजी मैं इस सब को अच्छी रीतिसे अभ्यास करूंगा तुमनेहमारे प्रियकरनेकी इच्छा

से यह अत्यन्त अपूर्वकर्म किया १७ जो युद्धमें वह पापी कौरव दुर्योधन मारागया मैंने तुमसे भस्मकरी हुई वहसेना युद्धमें बिजय करी १८ दुर्योधनके युद्धमें आपने वह कर्मकिया जिससे बुद्धिकेद्वारा आपके बलसे मैंने बिजयपाई १९ आपनेही कर्ण पापी जयद्रथ और भूरिश्रवाके मारनेका उपाय बतलाया २० हे देवकीनन्दन तुझप्रीतिमान्ने जो मुझसे कहाहै मैं उसको अवश्य करूंगा इसमें मुझको किसीबातका बिचार नहीं करनाहै २१ हे धर्मज्ञ निष्पाप मैं धर्मात्मा राजा युधिष्ठिरको पाकर आपके द्वारका जानेके विषय में प्रार्थनाकरूंगा २२ हे प्रभु जनार्द्दनजी यह आपका द्वारका को जाना मुझको स्वीकारहै आपमेरे मामाजीको शीघ्र देखोगे २३ अजेय बलदेवजी को और उत्तम वृष्णियोंको देखोगे इसप्रकारकी वार्त्ता करनेवाले वहदोनों रथमें बैठेहुये हस्तिनापुरपहुंचे २४ और उसी प्रकार से वहदोनों उसनगर में घुसे जोकि अत्यन्त प्रसन्न लोगोंसे परिपूर्णथा हेमहाराज उन दोनोंने प्रथम इन्द्रभवनके समान धृतराष्ट्र के महल में जाकर २५ राजा धृतराष्ट्र कोदेखा बड़े बुद्धिमान् बिदुर राजायुधिष्ठिर २६ अजेय भीमसेन पांडव नकुल सहदेव बैठेहुये धृतराष्ट्र अजेय युयुत्सु २७ बड़ी बुद्धिमान् गान्धारी कुन्ती तेजस्विनी द्रौपदी और सुभद्रा आदिक उनसब भरतबंशियों की स्त्रियोंको २८ और गान्धारीकी दासी स्त्रियोंको देखा तदनन्तर उन शत्रुबिजयी श्रीकृष्ण और अर्जुनने राजाधृतराष्ट्र के पासजाकर २९ अपने नामकहकर उसके दोनों चरणोंको पकड़ा दोनों महात्माओंने गान्धारीकुन्ती धर्मराज युधिष्ठिर ३० और भीमसेन के चरणोंको स्पर्श किया और बिदुरजी से भी मिलकर कुशलक्षेम पूछी ३१ फिर उन सब समेत दोनोंने राजाधृतराष्ट्र केपासही अपनी वर्त्तमानता रक्खी इसकेपीछे महाराज बुद्धिमान् युधिष्ठिरने रात्रिके समय उन पांडव ३२ और श्रीकृष्णको निवास स्थानपर जानेको बिदाकिया राजाकी आज्ञा पाकर वहसब अपने२ निवास स्थानोंकोगये ३३ पराक्रमी श्रीकृष्णजी अर्जुन के घर गये वहां न्यायके अनुसार पूजित सब अभीष्ट

वस्तुओंसे तृप्त ३४ बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी अर्जुन समेत सोये प्रातःकालसंध्या आदिक कर्म दिनके प्रथम भागमें करके ३५ पोशाकआदिक से अलंकृत वह दोनों धर्मराज के भवनमेंगये जिसमें कि बड़ेबली धर्मराज अपने मन्त्रियों समेत बैठेथे ३६ उन दोनों महात्माओं ने उस अत्यन्त अलंकृत भवनमें प्रवेशकरके धर्मराजको ऐसेदेखा जैसे कि अश्विनीकुमार देवराजको देखते हैं ३७ वह श्रीकृष्ण और अर्जुन राजाको पाकर उसकी प्रीतिपूर्व्वक आज्ञाको पाकर आसनों परबैठगये ३८ फिर उस बक्ताओंमें श्रेष्ठ बुद्धिमान् महाराज युधिष्ठिरने उनदोनोंको वार्त्तालाप करनेका अभिलाषीदेखकर यहबचन कहा कि तुमदोनों यादव और पांडवको मैं वार्त्तालाप करनेका अभिलाषी मानता हूं किहौमैं तुम्हारे सब प्रयोजनोंको शीघ्रतासेकरूंगा विचार न करो राजाको इसप्रकारकी आज्ञापाकर बार्त्तालाप करनेमें चतुर अर्जुनने बड़ी नम्रताके साथ समीप आकर धर्म्मराजसे बचन कहा ३६।४०।४१ कि हेराजा यह प्रतापवान् बासुदेवजी बहुत काल तक यहां स्थितरहे अब आपकी आज्ञालेकर अपने पिताको देखना चाहतेहैं ४२ जो आपआज्ञादें तो वह आपकी आज्ञानुसार द्वारका पुरीकोजायँ उनको आप आज्ञादेनेको योग्यहो ४३ युधिष्ठिरबोलेहे कमललोचन प्रभु मधुसूदनजी आपका कल्याणहोय अबतुम अपने पिताके देखनेको द्वारकापुरी अवश्यजावो ४४ हे महाबाहु केशवजी आपकाजाना मुझको स्वीकारहै तुमनेमेरे मामा और देवीदेवकी को बहुतकालसे नहीं देखा ४५ हेबड़ाई देनेवाले बुद्धिमान् तुम जाकर मेरे मामा और बलदेवजी से मिलकर मेरे बचनसे उनका यथोचित पूजनकरना ४६ हेमहाभाग प्रशंसनीय तुम सदैव पराक्रमियोंमें श्रेष्ठभीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव और मुझकोभी सदैव स्मरण रखना ४७ हे निष्पाप महाबाहु तुम आनर्त्त देशियोंको और वृष्णिबंशियोंको देखकर फिर मेरे अश्वमेध यज्ञमें आवो ४८ हेयादवजी जो आप नानाप्रकारके रत्न और धनोंको और अन्य २ अपनी अभीष्ट वस्तुओंको भी लेकर मामाकोदेखो ४६ हेबीर केशवजी

आपकीही कृपासे यह संपूर्ण पृथ्वी हमको प्राप्त हुई है और शत्रु भी मारेगये ५० इसरीतिसे कौरव धर्मराज युधिष्ठिरके कहनेपर पुरुषोत्तम वासुदेवजीने यह बचन कहा ५१ हे महाबाहु अब रत्न सिद्धि धन और सम्पूर्ण पृथ्वी आपहीकीहै हे महाराज मेरे घरमें जो कोई प्रकारका भी धनहै उसके तुमहीं सदैव स्वामीहो ५२ तब बहुत श्रेष्ठहै इसप्रकार धर्मपुत्रसे कहेहुये और आशीर्वाद पाये हुये पराक्रमी श्रीकृष्णजीने विधिपूर्व्वक अपनी फूफीको दण्डवत्‌करी फिर फूफीसे आशीर्वाद पायेहुये श्रीकृष्णजीने उनकी परिक्रमाकरी ५३ इसकेपीछे उससे अच्छेप्रकार आशीर्वाद पाकर और विदुरादिक सब कौरवोंसे बिदाहोकर चतुर्भुज श्रीकृष्णजी आप दिव्यरथकी सवारीपर चढ़कर हस्तिनापुर से बाहर निकले ५४ महाबाहु श्रीकृष्णजी युधिष्ठिर और फूफीकी सलाहसे अपनी बहिन सुभद्राको रथमें बैठाकर राज्यके कार्य्य कर्त्ताओंसे घिरेहुये नगरसे बाहरनिकले ५५ वानर ध्वजाधारी अर्जुन सात्यकी नकुल सहदेव और बड़ेभारी बुद्धिमान् गजराजके समान पराक्रमी भीमसेन यह सब उन श्रीकृष्णजीके पीछे चले ५६ इसके पीछे पराक्रमी श्रीकृष्णजी ने उनसब पांडव और पराक्रमी विदुरको लौटाकर शीघ्रही दारुक सारथी और सात्यकीसे कहा कि घोड़ोंको चलायमान करो ५७ इसकेपीछेशत्रुसमूहों के मारनेवाले श्रीकृष्णजी जिनकेपीछे सात्यकीथा द्वारकापुरीको ऐसेगये जैसे कि शत्रुओंके समूहोंको मारकर इन्द्र स्वर्गको जाताहै ५८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिश्रीकृष्णप्रयाणेद्विपंचाशत्तमोऽध्यायः ५२॥

तिरपनवां अध्याय॥

विश्वरूप दर्शन विद्याका फलहै गुरुकीसेवा बिद्याका साधन है इसबातके प्रकट करनेको वैशंपायन बोले कि शत्रुबिजयी भरतर्षभ पांडव इसप्रकारसे जानेवाले श्रीकृष्णजीसे स्नेह पूर्व्वक मिलकर सब साथियों समेत लौटे १ अर्जुन बारम्बार श्रीकृष्णजी से

मिला और अपनी दृष्टिके अन्ततक उसने उनकोदेखा २ तदनन्तर अर्जुनने गोविन्दजीमें लगीहुई और उनमें प्रविष्टहुई उस अपनी दृष्टिको बड़े दुःखसे लौटाया और अजेय श्रीकृष्णजीनेभी इसीप्रकारकिया ३ उसमहात्माके चलेजानेमें जो बहुतसे अपूर्व अद्भुत रूपके चमत्कारहुये उनको मुझसे सुनो ४ कि वायु रथके आगे २ मार्ग को कंकड़ धूल से रहित बिना कंटक करताहुआ बड़ी तीव्रता से चला ५ इन्द्र ने भी पवित्र सुगन्धितजल और दिव्य फूलों को शार्ङ्ग धनुषधारी के आगे बरसाया ६ वह महाबाहु रेतलेस्थान की समान भूमिवाले मार्ग में चले फिर मुनियों में श्रेष्ठ बड़े तेजस्वी मुनियों में श्रेष्ठ उत्तंक ऋषिको देखा ७ उस कमललोचनतेजस्वी श्रीकृष्णजी ने मुनिको दण्डवत् करके उनसे आशीर्वाद लिया और आशिषयुक्तने उनके कुशल क्षेमके समाचार पूछे ८ उससे कुशल क्षेम पूछे हुये उन ब्राह्मणोत्तम उत्तंकने उस लक्ष्मीपति श्रीकृष्णको पूजकर यह पूछा ९ कि हे श्रीकृष्ण तुमने कौरवों के और पांडवों के स्थानपर जाकर जैसे उनके भाईपने की प्रीतिको दृढ़किया वह सब मुझसे कहनेके योग्य हो १० हे वृष्णियोंमें श्रेष्ठ तुम अपने प्यारे नातेदार बीरोंको सदैव सन्धिमें नियत करके लौटकर आये हो ११ हे परन्तप पांचों पांडव और धृतराष्ट्र के सबपुत्र तेरे साथ लोकोंमें बिहार करेंगे १२ हेकेशव तुझनाथके द्वारा कौरवोंकेशान्त रूप होनेपर राजालोग अपनेदेशोंमें सुखको पावेंगे १३ हेतातजो मेरा बिचारसदैव तेरेरूपमेंथा वह तुमने भरतबंशियोंकेऊपर सफल किया १४ श्रीभगवान्बोले मैंनेपहले कौरवोंकी सन्धिमेंबिचार पूर्वक उपाय किया जब वह सन्धिमें नियत न होसके १५ फिरउन सबने पुत्र और बान्धवों समेत मृत्युको पाया बुद्धिऔर पराक्रमके द्वारा प्रारब्ध उल्लंघन नहीं होसक्ता १६ हे निष्पाप महर्षी फिर यहसब तुमकोबिदितहै उन्होंने भीष्म बिदुर और मेरे भी कहनेको स्वीकार नहीं किया १७ इसी हेतु से वह परस्पर सन्मुख होकर यमलोककोगये पांचोंपांडव जिनके कि शत्रु और पुत्र मारेगये वही

शेष रहगये १८ सब धृतराष्ट्रके पुत्र अपने पुत्र और बान्धवोंसमेत मारेगये श्रीकृष्णके इस बचनके कहने पर अत्यन्त क्रोधयुक्त और क्रोधसे बिस्तीर्ण नेत्र उत्तंकने उनसे यह बचनकहा १९ हे श्रीकृष्णजी जिसहेतुसे कि तुझ समर्थने अपने प्यारे नातेदार कौरवों में श्रेष्ठ लोगोंकी रक्षानहीं करी इस हेतुसे मैं तुमको शापदूंगा २० हे मधुसुदन जिसनिमित्त तुमने हठ और जबरदस्ती से उनकोधिक्कार देकर निषेध नहीं किया उसहेतुसे क्रोधमें भराहुआ मैं तुमकोशाप दूंगा २१ हे लक्ष्मीपति तुझछलयुक्त कर्मवाले समर्थ से त्यागे हुये वह कौरवोत्तम अत्यन्त नाश होगये २२ वासुदेवजी बोले हेभृगुनन्दन इसको आपमूल समेत मुझसे सुनिये और अनुनयकोभीस्वीकार कीजिये हे भार्गव आपतपस्वी हो २३ अबमुझसे उसब्रह्मज्ञान को सुनकर शापको त्यागकरोगे मनुष्य थोड़ेतपसे मेरेबिजयकरने को समर्थनहींहै २४ हे तपस्वियोंमें श्रेष्ठ मैं तेरेतपका बिनाशनहीं चाहताहूं क्योंकि तेरातप बड़ा प्रकाशित है तुमने गुरुलोगोंको भी प्रसन्न किया २५ हे ब्राह्मणोत्तम तेराब्रह्मचर्य्यमें लड़कपनकीदशा से जानताहूं इसलिये दुःख से प्राप्त होनेवाले तेरेतपका नाशनहीं चाहताहूं २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिउत्तंकोपाख्यानेत्रिपंचाशत्तमोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय॥

उत्तंकने कहा हेदुष्टोंके पीड़ादेनेवाले केशव तुम निर्दोष ब्रह्मबिद्याको मूल समेत कहो उसको सुनकर तुमको आशीर्वाद दूंगा अथवा शापदूंगा १ वासुदेवजी बोले हे ब्राह्मण तमोगुण रजोगुण और सतोगुण नाम इन तीनोंको मुझी में आश्रय भूत जानो और इसी प्रकार ग्यारह रुद्र और अष्टवसुओं को भी मुझसे ही प्रकट जानो २सब जीवधारी मेरे रूपमें नियतहैं और मैंभी सब जीवों में नियत हूं इसमें तुम किसी बात का सन्देह न जानो ३ हे ब्राह्मण इसीप्रकार सब दैत्य यक्ष गन्धर्व राक्षस नाग और अप्सराओंके

समूहोंको भी मुझसे प्रकट जानो ४ और जिसको अव्यक्त अक्षर सत् व्यक्त क्षर और असत्कहाहै यहसबभी मेरेही स्वरूपहैं ५ हे मुनिआश्रमोंमें जो चारप्रकारकेधर्म जानेगये उनको औरसबवेदोक्त कर्मों को मेरारूपजानो ६ जो शशविषाण के समान असत् और घटादिके समान सदसत्से परे अव्यक्तहै वहतीनों मुझ देवताओंके देवता सनातनसे पृथक् प्रकटनहींहैं ७ हेभार्गव तुम उनसब वेदोंका जिनका आदिप्रणवहै उनको भी मुझी से जानो यज्ञमें यज्ञस्तंभ सोम, चरु, होम, देवताओंकी तृप्ति यहसबभी मुझीकोजानो ८ हे भृगुनन्दन होता और हव्यभी मुझीसे जानो अध्वर्यु कल्पक और अच्छा संस्कृत हव्यभी मैंहीहूं ९ उद्गाताभी बड़े यज्ञ में गीतों के शब्दोंसेमेरीही प्रशंसाकरताहै हेब्राह्मणवर्य्यजो मंगलवाचक शांती हैं वह प्रायश्चित्तों में १० सदैव मुझसृष्टिके कर्त्ताको स्तुतिकरतेहैं श्रेष्ठब्राह्मण धर्मपुत्र नाम प्रथम सृष्टिको भी मुझेही जानो ११ हे ब्राह्मण जोकि संकल्पसे उत्पन्न प्यारा और सब जीवोंका कृपारूपहै उस धर्ममें नियत और अनियत मनुष्योंके कारणसे १२ रक्षा और धर्मकी स्थितिके अर्थ बहुतसे अवतार धारण करताहूं १३ हेभार्गव मैं तीनोंलोकों के मध्यमें उन२ रूप और वेशसे प्रकट होताहूं मैंहीं बिष्णुहूं मैंहीं ब्रह्माहूं इन्द्रहूं और उत्पत्ति प्रलय का कारणहूं १४मैं अबिनाशी सबजीव समूहोंका कर्त्ताहूं और अधर्ममें प्रवृत्त होनेवाले सब जीवधारियों का नाशकर्त्ताहूं १५ प्रत्येक युगके अन्तपर सृष्टिके प्रियकी इच्छासे उन२ शरीरोंमें प्रवेशकरके धर्मका सेतुबांधताहूं १६ हेभृगुनन्दन जबमैं देवताके शरीर में बर्त्तमान होताहूं तब निस्सन्देह देवताके समान सबकर्मोंको करताहूं १७ हेमुनि जबमैं गन्धर्व शरीरमें बर्त्तमान होताहूं तब निश्चय करके गन्धर्वके समान सबकर्म करताहूं १८ जबमैं नागशरीर में वर्त्तमान होताहूं तब नागके समान कर्म करताहूं यक्ष राक्षसके शरीर मेंभी उसीप्रकार कर्मकरताहूं १९ मनुष्य शरीर में बर्त्तमान मुझसे लाचारकी समान प्रार्थना किये गये उनमोहोंसे पूर्ण अचेतोंने मेरे बचनको अंगीकार नहीं किया २०

फिर क्रोधयुक्त मैंने बड़ाभारी भयप्रकट करकेभी उनकौरवोंको डरा-
या और फिर ऐश्वर्य्यवान् होकर होनहारसेभी वारम्बार विदित
किया २१ अधर्मसे युक्त और कालधर्मसे घिरेहुये वह सब युद्ध में
धर्मसे मारेगये और निस्सन्देह स्वर्गको गये २२ और पांडवोंनेलोकों
में कीर्त्ति और यशको पाया हेद्विजवर्य्य जोतुम मुझसे पूछतेहो वह
सब मैंने तुमसे कहा २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणि उत्तंकोपाख्यानेचतुःपंचाशत-
मोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

उत्तंकने कहा हेजनार्दन मैं तुमको संसारका कर्त्ता जानताहूं
निश्चयकरके यह आपकी कृपाहै इसमें सन्देह नहींहै१हेअविनाशी
मेराचित्त अत्यन्त प्रसन्न और आपके स्वरूपमें नियत हुआ मैंने उस
चित्तको शापदेनेसे लौटाया हे परन्तप इसको आप जानिये २ हे
जनार्दन जोमैं तुमसे कुछ अनुग्रहके योग्य समझाजाऊं तोमैं आपके
विश्वरूप को देखना चाहताहूं आप अपने उसरूपको दिखाइये ३
वैशंपायनबोलेकि इसके अनन्तर उस प्रसन्नचित्त बुद्धिमान् श्रीकृष्ण-
जीने वह सनातन विष्णुरूप दिखाया जिसकोकि अर्जुननें देखाथा४
उसने उस महाबाहु महात्माको विश्वरूप हजार सूर्य्यके समान
प्रकाशित अग्निके समान सब आकाशको ढककर नियत सब ओर
मुख रखनेवाला देखा उत्तंक ब्राह्मणने विष्णुकेउसअद्भुत और श्रेष्ठ
विष्णुरूपको देखकर और उसपरमेश्वरका दर्शनकरकेआश्चर्य्यको
पाया ५।६ तबउत्तंकने कहाहे सृष्टिके कर्त्ताविश्वात्मा सबजड़चैत-
न्यके कारण तुमको नमस्कारहै तेरे चरणोंसे पृथ्वी और शिरसे
आकाश व्याप्तहै हेअविनाशी पृथ्वी और आकाशका जो अन्तरहै
वह आपके उदरसे घिरा हुआ है भुजाओंसे सब दिशा व्याप्त हैं
यहसब तुमहींहो ७।८ हेदेवता तुम फिर इस अविनाशी और श्रेष्ठ
रूपको अन्तर्द्धान करो मैं फिर तुझ अविनाशी को निजरूप से

देखना चाहताहूं ६ वैशंपायन बोले हे जनमेजय तब प्रसन्न-
चित्त गोविन्दजीने उससे कहा कि बर मांगो तब उत्तंकने उससे
यह वचन कहा १० हे महातेजस्वी पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी आ-
पसे वहीवरदान बहुतहै जो आपके इस स्वरूपको देखताहूं ११
फिर श्रीकृष्णजीने उससे कहा कि तुम इसमें विचार न करो यह
अवश्य करना योग्यहै क्योंकि मेरादर्शन सफल है निष्फल नहीं
है १२ उत्तंकने कहा हेप्रभु जो आप इसको मानतेहो कि अ-
वश्यही करनेके योग्यहै तो मैं जलको चाहता हूं अर्थात् इस
मरुस्थली नाम भूमिमें जहां इच्छाहो वहां जलका मिलना कठिन
है १३ इसके पीछे उस ईश्वरने उसतेजको अपने में लयकरके
उत्तंकको उत्तरदिया कि जलकी इच्छा होनेपर मैं ध्यानके योग्य
हूं यह कहकर द्वारकाको चलदिये १४ इसके पीछे कभी उत्तंक
क्षुधितृषित होकर जलकी इच्छा से मरुभूमिमें घूमनेलगे और
श्रीकृष्णजी को स्मरणकिया १५ फिर बुद्धिमान् ने मातंग नाम
चांडालको उस मरुभूमिमें देखा जोकि नङ्गा और मलिन शरीर
कुत्तोंके समूहोंसे व्याप्त १६ भयकारी रूपखड्ग और धनुषबाण
धारण कियेथा उसउत्तम ब्राह्मणने उसके चरणोंके नीचे मूत्रसे
उत्पन्न बहुत जलको देखा १७ हंसते और स्मरण करते हुये
मातंगने उससे कहा हे भार्गव मुझसे जलको लो यह बात उचित
है १८ तुझ तृषितको देखकर मुझ को बड़ी करुणा है उसके
उस बचनको सुनकर उस मुनिने उसजलको श्रेष्ठ नहीं मानकर
अंगीकार नहीं किया १६ बुद्धिमान् ने कठोर बचनोंसे उसवर
दाता श्रीकृष्णकी निन्दाकरी मातंगने बारंबार उससे कहा कि
आपजलपान कीजिये २० उस क्रोधयुक्तने अन्तरात्मासे तृषित
होकरभी पान नहींकिया हे महाराज उस निश्चयसे उसमहा-
त्मासे उत्तर पायाहुआ वह मातंग २१ अपने कुत्तोंसमेत उसी
स्थानमें गुप्तहोगया उसको उस प्रकारका देखकर लज्जित चित्त
उत्तंकने २२ अपनेको उस शत्रुसंहारी श्रीकृष्णसे ठकाहुआ माना

फिर उसीमार्गसे शंख चक्र गदाधारी २३ बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी भी आपहुंचे उत्तंकने उनसे कहा कि हे प्रभु पुरुषोत्तम आपको उत्तम ब्राह्मणोंके निमित्त मातंग स्रोतसे उत्पन्न हुआ जलदेना उचित नहींहै बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्णजी ने यह बचन कहनेवाले २४ २५ उसउत्तंकको साफ़२ मीठेवचनोंसे बिश्वास कराकर यह कहा कि यहां जैसेरूपसे जलका देना उचितहै २६ निश्चय करकेवैसा ही जलतुझको दियातुमने उसको नहीं जाना वज्रहाथमें रखनेवाले प्रभु इन्द्रसे तेरे निमित्त मैंने कहाथा २७ कि उत्तंकके निमित्तजल रूप अमृतदो उसदेवराजने मुझसेकहा कि मनुष्य अमरपदवी को नहीं पाताहै २८ उसको दूसरा वर दीजिये यह बारंबार कहा हे भृगुनन्दन तव मैंने यही कहाकि उसको अमृतहीदो २९ उसदेवराजने मुझको प्रसन्न करके फिर यह कहा हे बड़े बुद्धिमान् जो अवश्य ही देनेके योग्यहै तो मैं मातंगरूप ३० होकर महात्मा भार्गवके अर्थ अमृतदूंगा जोवह भार्गव अब इसरीतिसे अमृतको लेलेगा ३१ तो यह अमृत मैं भार्गवके देनेको जाताहूं हे प्रभु जो वह इसको नहींलेगा तो फिरमैं उसको कभी न दूंगा ३२ वह इन्द्र इसप्रकार नियम करके उसरूपसे तुम्हारे सन्मुख आया और अमृतकोदेता था परन्तु तुमने निषेध युक्त उत्तर दिया ३३ जो भगवान् इन्द्र चांडाल रूपथा यही तेरीवड़ी बिपरीत बुद्धि है फिर भी जिस कारण मुझसे तेरा अभीष्ट करनाउचितहै ३४ इससेमैं तेरी इसकठोरजल की इच्छाको सफल करूंगा हे ब्रह्मन् जिनदिनोंमें तेरीजलकीइच्छा होगी ३५ तब इस मरुभूमिमें बादल जलसे पूर्णहोंगे और हेभृगुनन्दन वहबादल तुझे रसयुक्त जलदेंगे ३६ वह उत्तंकनाम बादल तेरे नामसे प्रसिद्धीको पावेंगे श्रीकृष्णजी के ऐसे बचनको सुनकर वह ब्राह्मण प्रसन्न हुआ हेभरतर्षभ अबभी उत्तंकनाम मेघ मरुभूमिमें बर्षाकरतेहैं ३७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्यानेपंचपंचाशत्तमोऽध्यायः ५५ ॥

———❋———

छप्पनवां अध्याय॥

जनमेजयने पूछाकि बड़े मनवाला उत्तंक किस तपसे संयुक्तथा जोकि बहुत प्रकारके अवतार लेनेवाले बिष्णुको भी शाप देने को इच्छावान् हुआ १ वैशंपायन बोले कि उत्तंक बड़े तपसेयुक्तहै वह तेजस्वी गुरुका भक्तहै उसने गुरुके सिवाय किसीको नहीं पूजा २ हे भरतबंशी सब ऋषियोंके पुत्रोंको यह चित्तसे इच्छाहुई कि हम उत्तंकके समान गुरुभक्ति परायण होकर गुरुवृत्तीको प्राप्तकरें ३ हे जनमेजय तब बहुत शिष्योंके मध्यमें उत्तंकपर गौतम ऋषिकीप्रीति और स्नेह अधिकहुआ ४ वह गौतम उसके जितेन्द्रीपन औरबाह्या-भ्यन्तरकी पवित्रता धैर्य्यकर्म और पूरी सेवासे प्रसन्न हुआ तब ऋषिने हजारोंशिष्योंको अपने २ घरजानेकी आज्ञादी परन्तु बड़ी प्रीतिसेउत्तंक को आज्ञादेनानहीं चाहा ५।६ हेतात क्रम२सेवृद्धाव-स्था उसकोप्राप्तहुई तब उसगुरुबत्सल मुनिने उसको नहींजाना ७ हे राजेन्द्र इसके अनन्तर किसी समय उत्तंकलकड़ियोंके लानेको गया ८ और बहुतबड़भारीलकड़ीके बोझेकोलाया हेशत्रुबिजयी उस भारसे थकितशरीर होकर उसउत्तंकने उसलकड़ीके बोझेको पृथ्वी परडाला उससमय उसकीजटा जोकि चांदीके समान श्वेतथी उस लकड़ीके गट्ठे में लिपटगई ९।१० तब वह लकड़ियोंसमेत पृथ्वीपर गिरपड़ा हे राजातबभारसे चूर्ण दुर्बलतासे भराहुआ वह ऋषि ११ उस वृद्धावस्था को देखकर बड़े कष्टित शब्द के समेत रोनेलगा इसकेपीछे उसके गुरुकी पुत्री जोकि कमलपत्रके समान मुखरखने वाली १२ दीर्घनेत्र और धर्म के जानने वालीथी उसशिरसे झुकी हुईने पिताकी आज्ञासे अश्रुपातोंको हाथमें लिया १३ उनअश्रुपा-तोंके जलकणोंसे भस्महुये उसके दोनोंहाथ पृथ्वीपर गिरपड़े और पृथ्वीभी उनगिरनेवाले अश्रुपातोंके सहनेको समर्थनहीं हुई १४ तब प्रसन्नचित्त गौतमने उत्तंक ब्राह्मणसे कहा हे तात अब यहां किस कारणसे यहतेरा बचन शोकसे पूर्णहै हेब्रह्मऋषितुम इच्छा-

पूर्वककहो मैं उसको मूलसमेत सुनना चाहताहूं १५ उत्तंक बोला आपको प्रिय करनेकी इच्छासे आपके स्वरूपमें प्रवृत्तचित्त आपके भक्तऔर आज्ञाकारी १६ मैंने यह वृद्धावस्था नहीं जानी मैंने सुख कोभी नहीं जाना आपने मुझ सौवर्षसे निवास करने वालेकोआज्ञा नहींदी १७ मेरे सन्मुख दूसरे शिक्षापाये हुये सैकड़ों हजारों शिष्योंको आपने आज्ञादीन्ही १८ गौतमने कहा हे ब्राह्मणोत्तम तेरी प्रीतिसे युक्त मैंने तेरी गुरुसेवाके कारणसे बहुतसा समय व्यतीत होता हुआ नहीं जाना १९ हे भार्गव अब क्याकियाजाय जो घर जानेमें तेरी श्रद्धाहै तो तुम आज्ञालेकर अपने घरको जावो बिलम्ब मतकरो २० उत्तंकने कहा हे ब्राह्मणश्रेष्ठ मैं किस गुरुदक्षिणाकोदूं जो आप आज्ञाकरें मैं उसीको भेट करके आपकी आज्ञा पाकर अपने स्थानको जाऊं गौतमने कहा कि सत्पुरुषों का बचन है कि गुरुओंका प्रसन्नकरनाही दक्षिणाहै हेब्रह्मन् मैं निश्चयकरके तेरी सेवाहीसे बहुत प्रसन्नहूं २१।२२ हे भार्गव मुझको ऐसाप्रसन्नजानो कि जो तुम सोलहवर्षकी अवस्थाके होकर तरुण होगे २३ हेश्रेष्ठ ब्राह्मण मैं अपनीपुत्री कन्याका तेरेसाथ बिवाहकरूंगा इसके सिवाय दूसरी कोईभी स्त्री तेरेतेजके सेवन करनेको योग्य नहीं है २४ इसकेपीछे उत्तंकने तरुणरूप होकर उस यशवन्ती कन्याको प्राप्त किया फिर गुरुसे आज्ञापाये हुयेने गुरुपत्नीसे यह बचन कहा २५ कि आपको कौनसी गुरुदक्षिणादूं जो आपकी इच्छा होय उसको आप मुझे आज्ञाकरें मैं प्राणसे और धनसे आपके मनके अभिलाषितको चाहताहूं २६ इसलोक में जो अत्यन्त अपूर्व बड़ा रत्न दुष्प्राप्यहोय उसकोभी मैं तपके निस्सन्देह लासक्ताहूं२७ अहल्या बोली हेनिष्पाप ब्राह्मण मैं तेरी इस भक्तिसेही अत्यन्तप्रसन्नहूं यही गुरुदक्षिणा बहुतहै हेपुत्रतेरा कल्याण होय तुम अपनी इच्छाके अनुसार जावो २८ वैशंपायन बोले हे महाराज उत्तंक ऋषिने फिर बचनकहा कि हेमाता मुझको आज्ञादो मुझेतेरा प्रिय करना अवश्य योग्यहै २९ अहल्या बोली तेरा कल्याण होय जो तू

दक्षिणाही दिया चाहताहै तोराजा सौदासकी स्त्री जिन दिव्यमणि कुण्डलोंको धारण करतीहै उन को लावो उनसे गुरुदक्षिणा देना श्रेष्ठहै ३० हेजनमेजय तब उत्तंकने कहा कि तथास्तु ऐसा प्रणकरके गुरुपत्नीके अभीष्टके अर्थ उन कुंडलोंके लानेको चला ३१ इसके पीछे वह ब्राह्मणोत्तम उत्तंक उस पुरुषाद अर्थात् मनुष्यों के खाने वाले राजा सौदाससे मणि कुंडलकी भिक्षा मांगनेको शीघ्रतासे चला ३२ गौतमने पत्नीसे कहा कि अबउत्तंक दृष्टनहीं पड़ताहै इस प्रकारसे पूछीहुई उस अहल्याने कुंडलके निमित्त जानेवाले उत्तंक को वर्णनकिया फिर उस ऋषिने अपनी स्त्रीको उत्तरदिया कि यह तुमने अच्छा नहीं किया निश्चय करके शापदिया हुआ वह राजा उस ब्राह्मणको मारेगा ३३ । ३४ अहल्या बोली हे भगवन् मुझ अज्ञात से वह ब्राह्मण आज्ञा दियागया है आपकी कृपासे उसको कुछभी भय न होगा ३५ पत्नीके इसप्रकारके बचन सुनकर गौतमने अपनीस्त्रीसे कहा कि इसीप्रकार होय उत्तंकने भी निर्जनबन में उस राजाको देखा ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्यानेषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले उसब्राह्मणने उसप्रकारके भयकारी दर्शनवाले बड़ी डाढ़ी मूछ रखनेवाले और मनुष्यों के रुधिरसे लिप्तशरीरउस राजाको देखकर १ चित्तमें खेदनहीं किया उस बड़े पराक्रमी भयकारी यमराजके समान राजाने उससे कहा २ हेकल्याणरूप ब्राह्मणर्षभ तुम प्रारब्धसे छठवें समय मुझ भोजनके अभिलाषी अन्वेषण करने वालेके पास आयेहो ३ उत्तंकने कहा हेराजा गुरुदक्षिणा के निमित्त बिचरते यहां आयेहुये तुममुझको जानो ज्ञानियोंने गुरुदक्षिणाके लिये उपाय करने वाले शिष्यको नहीं मारनेके योग्य कहा है ४ राजाबोले हे ब्राह्मणोत्तम छठवें समयपर मेरा आहार नियतहै अब मुझसे आप त्यागकरनेको असंभवहो ५ उत्तंकनेकहा

हेमहाराज इसी प्रकारहो मुझसे नियमकरलीजिये मैं गुरुदक्षिणा देकर फिर आपकी आधीनतामें आऊंगा ६ हेश्रेष्ठ राजामैंने जोगुरु दक्षिणा देनेकी गुरूसे प्रतिज्ञा करीहै हेराजेन्द्र वहतेरे आधीनमें है मैं उसको तुमसे भिक्षामांगताहूं७ तुमसदैव रत्नोंको उत्तम ब्राह्मणों के अर्थदिया करतेहो हेनरोत्तम तुम पृथ्वीपरपात्ररूप और दाताहो हेश्रेष्ठ राजा मुझको भी दानलेने में पात्र जानो ८ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले राजेन्द्र तेरेदियेहुये धनको गुरूकीभेंटकरके फिर यहां प्रतिज्ञासे तेरे आधीनहूंगा ६ मैं सत्यप्रतिज्ञाकरताहूं इसमें किसी प्रकारका मिथ्यापन नहींहै मैंने प्रथम अपनी स्वतन्त्र दशा मेंभी कभी मिथ्या बचन नहीं कहा फिर दूसरी दशामें कैसेकहसं-काहूं १० सौदासने कहा जोतेरे गुरूका प्रयोजन मेरे आधीन है वह मुझे अवश्य कर्त्तव्यहै जोतुममुझसे कहसक्तेहो तो उस सबवृत्ता न्तको मुझसेकहो ११ उत्तंकने कहा हेपुरुषोत्तम मैंने आपको सदैव प्रार्थनाके योग्यमानाहै इसीसे मैं आपसे मणिकुंडल भिक्षामांगनेको आयाहूं १२ सौदासने कहा कि हेब्रह्मर्षी वह मणि कुंडल मेरीही स्त्रीके योग्यहैं तुमदूसरे अभीष्टको मांगो हेसुन्दर ब्रतऋषि वह मैं तुमकोदूंगा १३ उत्तंकनेकहा हेराजा जोहमारा तुमको प्रमाणहैतो बहानामत करो और मणि कुंडल मुझकोदो और सत्यवक्ताहो १४ बैशंपायन बोले कि इसप्रकार के बचन सुनकर राजाने उस उत्तंक से फिर यह बचनकहा कि हेवड़े साधूतुम जाकर मेरे बचनसे देवी सेकहना कि मणि कुंडल देदे १५ हेब्राह्मणोत्तम वह देवीमेरे कहे हुये बचन से आपके कहनेपर पवित्र ब्रतवाली दोनों कुंडल निस्स न्देह तुमको देगी उत्तंकने कहा हेराजा आपकी स्त्रीको मैंकैसे देख सक्ताहूं आपही अपनी स्त्रीकेपास क्योंनहीं जातेहो१६।१७सौदासने कहाकि अब आप उसको किसी जलके झिरने केपास देखोगे अब छठवें समयपर मैं उसको देखनहीं सक्ता १८ बैशंपायन बोले कि हेभरतर्षभ इसप्रकार से उसके बचनको सुनकर वह उत्तंक उसके पास गया औरउस मदयन्ती रानीको देखकर अपना प्रयोजन उस

से प्रकट किया १९ हेजन्मेजय उस दीर्घ लोचना मदयन्तीने राजा सौदासके बचनको सुनकर बड़े बुद्धिमान् उत्तंकको उत्तरदिया किहे निष्पाप ब्राह्मण जोआपने कहासो सत्य और यथार्थहै आपमिथ्या नहीं कहतेहो आप उनकीप्रसन्नता का कोई चिह्न लानेको योग्य हो २० । २१ मेरेयहमणि कुंडल दिव्यहैं देवता यक्ष और महर्षी बड़े २ उपायोंसे इनके हरनेकी इच्छा करके अवकाशों को इच्छा किया करते हैं २२ इनरत्नोंको पृथ्वीपर रक्खा हुआ देखकरसर्प हरण करेंगे और निद्रा और मोहके बशीभूत मनुष्यसे देवता चुरा लेजाते हैं और उच्छिष्ट में रक्खे हुयेको यक्षहरले जाते हैं २३ हे ब्राह्मणोत्तम यहदोनों कुंडलोंको इन अवकाशोंमें सदैव देवताराक्षस और नागहरना चाहते हैं इन कुंडलोंको सदैव सावधान मनुष्यही धारणकर सक्ताहै २४ हेब्राह्मणर्षभ यहकुंडल अहर्निशसुबर्ण उगलते हैं औररात्रिके समय ग्रह नक्षत्रादिकोंके प्रकाशों को तिरस्कार करके बर्त्तमान होतेहैं २५ हे भगवन् इनको कर्णभूषण करकेक्षुधा तृषा आदिकभी नहीं होतीहै इनके धारण करने वालेको बिष और अग्निसे कभी भयनहीं उत्पन्न होताहै २६ जब छोटा मनुष्य इनको धारण करताहै तबयह छोटेहोजाते हैं और जबउनके योग्य रूप वाला कोई पुरुष उनको धारण करताहै तब वह उस प्रमाण वाले होजातेहैं २७ यहमेरे कुंडल इसप्रकारके महापूजित औरतीनों लोकोंमें बिख्यात हैं इसहेतुसे तुमउनके अंगीकार करनेकी अभिज्ञा अर्थात् मंजूरीको लाओ २८ ॥

इतिश्रीमन्महाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्यानेसप्तपंचाशत्तमोऽध्यायः ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि उसने राजाके पास जाकर अभिज्ञा चिह्न अर्थात् मंजूरीके निशानको मांगा उसइक्ष्वाकुबंशियों में श्रेष्ठराजाने उसको मनहीसे मंजूरीका चिह्नदिया १ सौदासबोला यहराक्षस

योनिरूपगति कल्याणरूप नहींहै दूसरी गतिनहींहोसक्ती अर्थात् राक्षसयोनिसे छूटनानहीं होसक्ता इस मेरेमतको जानकरतुममणि कुंडलोंको देदो२इसप्रकार कहेहुये उत्तंकने उसरानीसेउसके पति काबचन कहातबउसने सुनकर वहमणिकुण्डलदेदिये३उत्तंकने वह दोनों कुंडल पाकर फिर राजासे आकर कहा हे राजा यह गुप्त बचन आपका क्याहै मैं उसको सुनना चाहताहूं ४ सौदासने कहा कि क्षत्री लोग संसारकी उत्पत्तिके प्रारंभ से ब्राह्मणों को पूजतेहैं और ब्राह्मणोंसे भी बहुत से शापादिक दोष प्रकट होतेहैं ५ सो ब्राह्मणों के अर्थ सदैव से झुके हुये मैंने ब्राह्मणसेही दोषको पाया मदयन्तीको साथ रखनेवाला मैं दूसरी गति अर्थात् मुक्तरूपगति को नहीं देखताहूं ६ हे ब्राह्मणोत्तम मतिमानोंमें श्रेष्ठ स्वर्गद्वारपर जाते अथवा यहां नियत होतेहुये मैं दूसरी बुद्धिकोभी नहीं देखता हूं ७ मुख्य करके ब्राह्मणों के विरोधी राजालोगोंको इस लोकमें नियत रहना अथवा परलोकमें सुखसे वृद्धिपाना असंभवहै अर्थात् कहीं आनन्दनहीं पासक्ता ८ इसी हेतु सेयह मैंने अपने बड़े प्रिय कुंडल आपको दियेहैं अबआपने जो प्रतिज्ञा मुझसे करीहै उसको मेरे साथ सफलकरो ९ उत्तंकने कहा हे राजा यहां मैं उसीप्रकार कर्म करूंगा अर्थात् फिर तेरे आधीन बर्त्तमानहूंगा हेपरन्तप कुछ प्रश्न तुझसे पूछने के लिये मैं लौटाहूं १० सौदासनेकहा हे ब्राह्मण इच्छा पूर्व्वक पूछो मैं तेरे प्रश्नका उत्तरदूंगा अब तेरे सन्देहको मैं निस्सन्देहदूर करूगा इसमें किसीप्रकारका विचार न करूंगा ११ उत्तंकने कहा कि धर्मके पारांगतहोनेवालोंने वेदपाठी ब्राह्मण को सत्यवक्ता कहाहै और जो मनुष्य अपने मित्रोंका बिरोधीहै उसको चोरजानो१२हे राजा सो अब आपने मेरी मित्रताको प्राप्त किया हे पुरुषोत्तम सो तुम अच्छे लोगोंके अंगीकृत मतको मुझसे कहो१३ अब मैं अभीष्ट सिद्ध करनेवालाहूं और आप मनुष्य भक्षी हैं आपके सन्मुख मेरा आना योग्यहै या नहीं १४ सौदासने कहा हे ऋषियोंमें श्रेष्ठ जो यहां उचितही मतकहना योग्यहै तो हे द्विज

वर्य्य किसीदशामेंभी मेरे सन्मुख तुम को न आना चाहिये १५ हे भार्गव इसरीति सेमैं तेरे कल्याणको देखताहूं हे ब्राह्मणजोतू आवेगा तो अवश्य निस्सन्देह तेरी मृत्युहोगी १६ बैशंपायन बोलेकि तब वह बुद्धिमान् नरोत्तम उत्तंकराजा सौदाससे इसप्रकार उचित शिक्षापायाहुआ उसराजासे पूछकर अहिल्याकी ओरको चलागुरुपत्नीको प्रियकरनेवाला वह ऋषि दोनों दिव्य कुंडलोंको लेकर बड़ी तीव्रतासे गौतमके आश्रमकी ओरकोचला १७।१८मदयन्तीने जिस २ प्रकार से उनकुंडलोंकी रक्षाकरनी कहदीथी उसीप्रकारसे उनकुंडलोंको मृगचर्ममें बांधकर लेचला १९ उस क्षुधा युक्त ब्रह्मऋषिने किसी बनमें फलोंके भारसे संयुक्त विल्वके वृक्षको देखा और उसपर चढ़ा २० हे शत्रु बिजयी राजा तब उस श्रेष्ठब्राह्मण ने उसवृक्षकी शाखामें उस मृगचर्मसे बँधेहुये कुंडलोंको लटकाकर विल्व फलोंको गिराया २१ हे प्रभु फिर विल्व फलों की ओर दृष्टि करनेवाले और गिरानेवाले उस ऋषिके वह विल्वफल मृगचर्मपर गिरे २२ तब जिस मृगचर्ममें वह कुंडल बांधेथे उनकी ग्रन्थीखुल गई २३ औरवह मृगचर्म अकस्मात् कुंडलों समेत वृक्षसे खुलकर नीचे पृथ्वीपर गिरा उस बड़े दृढ़ बंधेहुये मृगचर्मके ग्रन्थीखुलकर पृथ्वीपर गिरनेसे २४वहांकिसी ऐरावतवंशी सर्पने उनमणिकुंडलों कोदेखा तब वहशीघ्रगामी होकर २५ मुखसे कुंडलोंको पकड़कर कुंडलों समेत बामीमें प्रवेशकरगया सर्पसेहरणकियेहुये कुंडलोंको देखकर २६ वहउत्तंकव्याकुल और अत्यन्त क्रोधितहोकर वृक्षसे गिरा और बड़ीसावधानी से उसने एकलकड़ीकोलेकर २७ पैंतीस दिनतकउससर्पकीबामीको खोदा उससमयमें वहब्राह्मणक्रोध और अशान्तीपनेसे महादुःखितथा२८काष्ठयष्ठीसेटूटेअंगवाली अत्यन्त व्याकुल पृथ्वी उसके हस्तकी लाघवता औरअसह्य पराक्रमको न सहकर कंपायमान हुई इसके पीछे निश्चयसे नागलोकका मार्ग करनेकी इच्छासे ब्रह्मऋषिके हाथसे पृथ्वीके खोदनेकी दशामें२९ महा तेजस्वी बज्रधारी इन्द्रहरिजातके अश्वयुक्त रथकी सवारीसे

उसदेशमें गये और वहांउस श्रेष्ठ ब्राह्मणकोदेखा ३० वैशंपायनबोले कि उसके दुखसे दुःखीउस इन्द्रने ब्राह्मणरूप होकर उस उत्तंक से यह बचनकहा कि यह तुझसे करनासंभव नहींहै ३१ क्योंकि यहांसे नागलोक हजारों योजन दूरहै मैं लकड़ीसे इसतेरे कामकरने को पूराहोताहुआ नहीं मानताहूं उत्तंकने कहा कि हे ब्राह्मण जो नागलोकमें ३२मुझेकुंडल नहीं मिलसक्ते हैं तो हेश्रेष्ठ ब्राह्मण मैं तेरे देखतेहुये अपनेप्राणोंको त्यागूंगा ३३ वैशंपायन बोले कि जब वह वज्रधारी इन्द्रउसके निश्चयको मिथ्या करनेमें समर्थ नहीं हुआतब वज्रास्त्रसे दण्डको संयुक्तकिया ३४ हे जन्मेजय उसकेपीछे उसबज्र से आघातित पृथ्वीमें नागलोकका मार्गउत्पन्न किया ३५ तबवह उसमार्गसे नागलोक में पहुंचा और हजारों योजनके बिस्तृत नागलोकको देखा ३६ हे महाबाहु जोकि मणिमोती से अच्छा अलंकृत दिव्य सुवर्ण के अनेक कोटोंसे संयुक्तथा ३७ स्फटिक की सीढ़ियोंसे युक्त बावड़ी वा निर्मल जलरखने वाली नदियां और नाना पक्षियोंके समूहोंसे युक्तवृक्षोंको देखा ३८ उसभार्गवने वहां जाकर उस नागलोकके द्वारको देखा ३९ जो कि पांचयोजन चौड़ा और सौयोजन लंबाथा तबउत्तंक नागलोक को देखकर दुखीहुआ ४० और कुंडलोंके फिर मिलनेसे निराशहुआ हे कौरव वहांतेजसे ज्वलितरूप रक्तनेत्र और मुखयुक्त कृष्ण श्वेत पूछरखने वाले घोड़ेने उससेकहा ४१कि हे वेदपाठी तुममेरे अपानवायु स्थानको फूंको इसके पीछे तुम कुंडलोंको पाओगे ४२ ऐरावत के पुत्रने तेरे दोनों कुंडल हरणकियेहैं हे पुत्र तुम इसप्रयोजन में किसी प्रकारकी निन्दा नकरना क्योंकि तुमने गौतमऋषिके आश्रममें भी इसकर्मको कियाहै ४३ उत्तंकनेकहा कि मैं गुरूके आश्रममें होनाआपका कैसे जानूं मैंने प्रथम जो आश्रममें कियाहै उसको सुनना चाहताहूं ४४ घोड़ाबोला मुझको तुम अपने गुरूका गुरूअग्निदेवता जानो हे ब्राह्मण तैंने गुरूके निमित्त सदैव मुझकोपूजा ४५ हे भृगुनंदन ब्राह्मण मैं तुझ पवित्रात्मासे सदैव बिधिपूर्वक पूजागया

हूं इसीहेतुसे तेराकल्याण करूंगा शीघ्रतासे मेरा कहनाकरो बिलंब मतकरो ४६ अग्निकेउस बचनको सुनकर उत्तंकने उसी प्रकार से किया और प्रीतिमान् अग्नि देवता भी नागलोकके भस्मकरने की इच्छासे प्रचंड रूपहुये ४७ हे भरत बंशी इसके पीछे उसके फूंकेहुये रोमकूपोंसे नागलोकमें महाभयकारी धुआं उत्पन्नहुआ ४८ हे महाराज उसबड़े वृद्धियुक्त धुएंसे उसनाग लोकमें कुछनहींजाना गया ४९ हेभरतबंशी जन्मेजय उससमय ऐरावतके सबगृहमेंहाहाकारमचा औरधुएंसे व्याप्त होकरबासुकी आदिक सर्पोंकेमकान ऐसे गुप्तहोगये जैसेकि कुहरेसे ढकेहुये बन औरपर्व्वतहोतेहैं ५० । ५१ धुएंसेरक्तनेत्र औरतीक्ष्ण अग्निसेसंतप्त वहसबनागमहात्माभार्गवका निश्चय जाननेकोआये ५२ उसबड़ेतेजस्वी महर्षी का निश्चयसुनकरभ्रांतियुक्तनेत्रवालेसबनागोंने बिधिपूर्व्वकउनकापूजनकिया ५३ वृद्ध औरबालक जिनके अग्रवर्तीथे ऐसेउनसबनागोंने शिरोंसे दंडवत्पूर्बकहाथोंको जोड़करकहाकि हे भगवन्आपप्रसन्न हूजिये ५४ उनसब सर्पों ने ब्राह्मणको प्रसन्न कर पाद्यर्घदान देकर उन बड़े दिव्यपूजित कुंडलोंको देदिया ५५ इसकेपीछे नागोंसे पूजित वह प्रतापवान् उत्तंक अग्निको प्रदक्षिण करके गुरूके स्थान को चला ५६ हे निष्पाप राजाजन्मेजयउसने शीघ्रही गौतमजीकेस्थान पर जाकर वहदिव्य कुंडल अहल्याकोदिये ५७ और गुरूके पास जाकर उसउत्तंकने बासुकीआदिक सबसर्पोंके सत्य २ वृत्तान्त को कहा ५८ हे जन्मेजय इस प्रकार वह महात्मा तीनों लोकों को भ्रमण करके उनमणि कुंडलोंको लाया ५९ हे जन्मेजय जिस को तुमने मुझ से पूछाहै वह उत्तंक मुनि ऐसे प्रतापवाला होकर तपसे युक्तहै ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिउत्तंकोपाख्यानेअष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः ५८ ॥

उन्सठवां अध्याय ॥

जन्मेजयने कहाकि हे ब्राह्मणोत्तम महाबाहु यशवान् गोबिन्द

जीनेउत्तंकको बरदेकरफिरक्याकिया १ बैशंपायननेकहाकिगोबिन्द जी उत्तंकको बरदेकर सात्यकी के साथ शीघ्रगामी बड़े घोड़ों की सवारीसे द्वारकाको चले २ और सरोवर नदीबन और पर्व्वतों को व्यतीत करके सुन्दरद्वारका पुरीको पाया ३ हे महाराज तब रैवत पर्व्वतकाउत्सव वर्त्तमानहोनेपर श्रीकृष्णजी जिनका कि अनुगामी सात्यकीथा वहां जापहुंचे हे पुरुषोत्तम वह पर्वत अनेक प्रकार के अद्भुत रूपोंसे अलंकृत और रत्नरूप वस्तुओंके ढेरोंसेयुक्तशोभाय मानहुआ ४।५ वहबड़ा पहाड़ सुवर्णकीमाला,उत्तमफूल,वस्त्र,कल्प वृक्ष ६ और सुवर्णकेदीपक और वृक्षोंसे क्रमपूर्वकशोभितथा गुफा और झिरनाओंके स्थानोंमें दिवसके समान अथवा सूर्य्यके समान प्रकाशमानथा७घंटारखनेवाली बिचित्रित पताकाओं से चारोंओर को शोभायमानथा स्त्री और पुरुषोंके शब्दोंसे शब्दायमान सरोद गानकेउत्तम स्थानके समान होगया ८ और ऐसा अत्यन्त देखने के योग्यथा जैसेकि मुनियों के समूहोंसे युक्त मेरु पर्व्वत होताहै हेभरतवंशी मद्यपानके आवेश से मत्तप्रसन्नमूर्ति गानेवाले स्त्री पुरुषोंके ६ और गुंजनेवाले पर्वतके शब्दस्वर्गको स्पर्श करनेवाले हुये वहपर्वतबाजे आदि कलगानेसे प्रवृत्त मदोन्मत्ततासे अचेत प्र-सन्नमनुष्योंकेसिंहनाद और परस्परकी आकर्षणतासेपूर्णहुआ १० उसी प्रकार किलकिला नामशब्दों सेभी शब्दाय मानहोकर चित्त रोचक हुआ और मोलवेचकी वस्तु रखनेवाली और क्रीड़ायोग्य भक्ष्य भोज्य पदार्थों की वेचनीवाली हट्टा अर्थात् दूकानों से शो-भित औरविहार स्थानवालाथा ११ वस्त्र और मालाओंके समूहों से संयुक्त वीणा बांसुरी मृदंग रखनेवाला सुरामैरेय से युक्तभक्षण और भोजन की वस्तु जोकि सदैव दुखी अन्धे और दरिद्रियों को दीजातीथीं उनसेशोभित उसबड़े पर्वतका वह कल्याणरूप उत्सव शोभायमानहुआ१२।१३हेवीर रैवतकपर्व्वतकेउत्सवमें वृष्णीबीरों का वह बिहार पवित्रस्थान रखनेवाला होकर शुभकर्मियोंसे सेवित था १४ स्थानादिकोंसे युक्त वह पर्व्वत देवलोकके समान शोभा-

यमान हुआ हे भरतर्षभ उससमय वह गिरिराज श्रीकृष्णजीकी समीपताको पाकर १५ इन्द्रभवनके समान शोभायमान हुआ इसके पीछे अच्छी रीतिसे पूजित होकर वह गोविंदजी शुभ भवनमें प्रवेशितहुये १६ और सात्यकीभी अपने भवनको गया बहुतकालसे विदेशवासी प्रसन्नचित्त श्रीकृष्णजीने वहां ऐसे प्रवेशकिया जैसे कि बहुत कठिनकर्मोंको करके इन्द्रदानवोंमें प्रवेश करताहै—भोज वृष्णी अंधकवंशी उस पास आनेवाले महात्मा श्रीकृष्णजीके १७। १८ सन्मुख ऐसेगये जैसे कि देवतालोग इन्द्रके सन्मुख जाते हैं उस समय उन बुद्धिमान् श्रीकृष्णजीने उनका यथोचित सत्कार पूजनपूर्व्वक कुशलमंगल पूछके अप्रसन्नहोकर अपने माता पिताको दण्डवत्करी उनसे मिलकर बिश्वासयुक्त वह महाबाहु उनसब समीपबैठेहुये वृष्णियोंके मध्यवर्त्तीहुये१९।२० और उनसबनेउनको परिधिके समान घेरलिया पितासमेत उस चरण धोनेवाले बिश्रांत रूप महातेजस्वी श्रीकृष्णजीने वहांके सब लोगोंसे उस सब महाभारतके युद्धका वृत्तान्त वर्णनकिया २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकपर्व्वणिरैवतकवर्णनेएकोनषष्ठितमोऽध्यायः ५९ ॥

साठवां अध्याय ॥

बसुदेवजी बोले हे श्रीकृष्ण मैंने सदैव मनुष्योंके मुखसे अत्यंत अपूर्व्व युद्धको सुनाहै सो वहां उन कौरव और पांडवोंमें कैसे युद्ध हुआ १ हेनिष्पाप महाबाहु तुम प्रत्यक्षमेंदर्शी और भूतज्ञहो इस हेतुसे मैं पूछताहूं कि जैसे कौरव और पांडवोंका युद्धहुआ उसको यथातथ्य वर्णनकरो २ अर्थात् जिस प्रकार महात्मा पांडवोंका वह उत्तम युद्ध उनभीष्मकर्णकृपाचार्य्य द्रोणाचार्य्य औरशल्य आदिकके साथमें हुआ ३ और बहुतदेशोंकी सूरत रखनेवाले नानाप्रकारके देशोंकेरहनेवाले महाअस्त्रज्ञ अन्य२ क्षत्रियोंकेभी साथ जैसेहुआ ४ उसको वर्णनकीजिये—वैशंपायन बोलेकि माता पितासे इसप्रकार आज्ञस श्रीकृष्णजीने जैसे जैसे कि कौरव बीरोंका युद्धमें मरना

हुआ वहसब उनकेआगे बर्णनकिया ५ बासुदेवजी बोले किमहात्मा क्षत्रियोंकेकर्म अत्यन्तअद्भुतहैं असंख्यहोनेसे सैकड़ोंवर्षोंमेंभी बर्णन नहीं किये जासक्ते ६ हे देवताके समान तेजस्वी मुझ प्रधानता पूर्व्वक कहनेवाले के मुखसे आप राजा लोगोंके कर्मोंको ठीक २ श्रवणकरो ७ ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी कौरव भीष्मजी कौरवेन्द्रोंके ऐसे सेनापति हुये जैसे कि देवताओंका स्वामी इन्द्र होताहै ८ सातअक्षौहिणी सनाका स्वामी बुद्धिमान् शिखंडी श्रीमान् अर्जुनसे रक्षितहोकर पांडवोंका सेनापतिहुआ ९ उन महात्मा कौरव और पांडवोंका वह महायुद्ध दशदिन तक रोमांचोंका खड़ा करनेवालाहुआ १०इसके पीछे शिखंडीने अर्जुनकी सहायतासे बड़े युद्ध में लड़नेवाले भीष्मको बहुत बाणोंसेमारा ११ इसके पीछे उस शर शय्यापर वर्त्तमान भीष्मरूप मुनिने दक्षिणायन सूर्य्य को व्यतीत करके उत्तरायण सूर्य्य वर्त्तमान होनेपर अपने शरीरको त्याग किया १२ फिर अस्त्रज्ञोंमें श्रेष्ठ बड़े वीर द्रोणाचार्य्यजी कौरवेन्द्रोंके ऐसे सेनापति हुये जैसेकि दैत्य राजोंके शुक्रजी सेनापति थे १३ वह युद्धमें प्रशंसनीय ब्राह्मणोत्तम द्रोणाचार्य्य शेषबची हुई नौ अक्षौहिणी सेनासे युक्त कर्ण कृपाचार्य्य आदिक बीरोंसे रक्षित हुये १४ महा अस्त्रज्ञ बुद्धिमान् धृष्टद्युम्न पांडवोंका सेनापति हुआ वह धृष्टद्युम्न भीमसेनसे ऐसे रक्षितथा जैसेकि मित्रसे रक्षितबरुण हुआथा १५ सेनासे घिरेहुये बड़े साहसी द्रोणाचार्य्य के चाहने वाले उस धृष्टद्युम्नने अपनेपिताकी पराजय आदिको ध्यानकरके युद्धमें बड़ा कर्मकिया १६ द्रोणाचार्य्य और धृष्टद्युम्न के उस युद्धमें बहुधा वह बीर राजा मारेगये जोकि बहुत दिशाओंसे आयेथे १७ पांचदिन तक वह बड़ा असह्य कठिन युद्धहुआ फिरथके हुये द्रोणाचार्य्य धृष्टद्युम्न के आधीन हुये १८ इसके पीछे युद्धमें शेषबची हुई पांच अक्षौहिणी सेनासे युक्त कर्ण दुर्योधनकी सेनामें सेनापति हुआ १९ पांडवोंकी तीन अक्षौहिणी सेना जिनमें बहुधा बीरमारेगये अर्जुनसे रक्षित होकर नियतहुई२० इसके पीछे जैसे कि पतंगनास

पक्षी अग्निमें प्रवेश करताहै उसी प्रकार भयकारी कर्ण अर्जुनके सन्मुख होकर दूसरे दिन मारागया २१ कर्णके मरनेपर अप्रसन्न नाश युक्त बल पराक्रमवाले कौरवोंने तीन अक्षौहिणी सेनाकेसाथ राजा शल्यको अपना सेनापति बनाया २२ जिनकी बहुत सवारी नाश होगईं उन अप्रसन्न पांडवोंने शेषबची हुई एक अक्षौहिणी सेना समेत युधिष्ठिरको सेनापति किया २३ तब कौरवराज युधिष्ठिरने उस युद्धमें बड़े कठिन कर्मको करके मध्याह्नके समय राजा शल्यकोमारा २४ शल्यके मरनेपर बड़े साहसी और पराक्रमी सहदेवने उस द्यूत खेलनेवाले उपद्रवके मूलरूप शकुनीको मारा २५ शकुनीके मरनेपर महादुखीचित्त गदा हाथमेंलिये राजा दुर्योधन जिसकी बहुतसी सेनामारीगई थी वहांसे भागगया २६ अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतापवान् भीमसेन उसके पीछे दौड़ा और ब्यास हृदके जलमें नियत उस दुर्योधनको देखा २७ फिर प्रसन्न चित्त पांचों पांडव मरनेसे शेषबचीहुई सेनाके साथ उस हृदमें नियत दुर्योधनको चारोंओरसे घेरकर बैठगये २८ जलको मझाकर बाणी रूपीबाणसे अत्यन्त घायल गदाहाथ में रखने वाला वह दुर्योधन शीघ्रहीजल सेबाहर निकलकर युद्धके निमित्त सन्मुख नियतहुआ २९ फिरवह राजा दुर्योधन उसबड़े युद्धमें पराक्रम करके राजाओंके देखते हुये भीमसेनके हाथसे मारागया ३० इसके अनन्तर वह पांडवी सेना रात्रिके समय डेरोंमें शयन करनेवाली हुई और पिताके मरनेको न सहनेवाले अश्वत्थामा के हाथसे मारीगई ३१ जिनके पुत्र सेना और शत्रुमारेगये वह पांचों पांडवमेरे और सात्यकीकेसाथ शेषरहगये ३२ कृतवर्मा और कृपाचार्य्य समेत अश्वत्थामा और कौरव्य युयुत्सूभी पांडवोंके पास शरण लेनेसे मुक्तहुये अर्थात् छोड़दियेगये ३३ साथियों समेत कौरव राज सुयोधन अर्थात् दुर्योधनके मरने पर बिदुर और संजय धर्मराजके पास नियत हुये ३४ हेप्रभु इस प्रकार वह महायुद्ध अठारह दिनतक हुआ युद्धोत्सव में मरनेवाले उन राजाओंने स्वर्गको पाया ३५ बैशंपायन बोले हेमहाराज तब

उसरोंमाच खड़ा करनेवाली कथाके सुनने वाले वृष्णी बंशियोंके दुःखशोक और पीड़ा उत्पन्न हुई ३६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिवासुदेववाक्येषष्टितमोऽध्यायः६०॥

इकसठवां अध्याय॥

बैशंपायनबोले कि पिताकेआगे महाभारतके युद्धकोकहतेप्रतापवान् बड़ेबुद्धिमान् वीर वासुदेवजीने कथाके अन्तपर१अभिमन्युके मरनेका वृत्तान्तकहना त्याग किया अर्थात् बड़े बुद्धिमान् श्रीकृष्ण ने यह शोचकरनहीं कहाकि बसुदेवजी के अप्रिय बातको क्यों कहना चाहिये २ क्योंकि बसुदेवजी बड़े नाश युक्त दौहित्रके मरनेको सुनकर दुःख और शोकसे पीड़ित होंगे इसहेतुसे उनके शोचकरने के अर्थ बड़े ज्ञानीने यह शोचा ३ सुभद्राने युद्धमें मरनेवाले पुत्रको जिसकोकि श्रीकृष्ण ने नहीं कहाथा पूछाकि हे कृष्ण अभिमन्युके मरण को बर्णन करो यह कहकर पृथ्वीपर गिरपड़ी तब बसुदेवजी ने पृथ्वीपर गिरीहुई उस सुभद्राको देखा उसको देखकर वह भी दुखसे मूर्च्छामान होकर पृथ्वीपर गिरपड़े ४। ५ हे महाराज उस दौहित्रके मरने के दुख और शोकसे घायल उन बसुदेवजीने श्री कृष्णसे यह वचन कहा ६ हे शत्रुओंके नाश करनेवाले श्रीकृष्ण निश्चय करके आप इस पृथ्वीपर सत्यवक्ता प्रसिद्धहो जोकि अब मेरे दौहित्रके मरने को नहीं कहतेहो ७ हेसमर्थ अब अपने भानजे के मरण का ठीक २ वृत्तान्त मुझसे कहो वह तेरेसमान नेत्ररखनेवाला युद्धमें कैसे शत्रुओंके हाथसे मारागया ८ हे वृष्णिवंशी असमयपर मनुष्यका मरना कठिनसमझा जाताहै क्योंकि ऐसेस्थान पर भी मेरा हृदय खंड २ नहीं होता हे कमललोचन उसमेरेप्यारे लाल लाल नेत्रवालेने युद्धमें सुभद्रामाताके और मेरे बिषयमें तुम से क्या कहा९।१०हे गोबिन्दवह युद्धसे मुखमोड़कर तो शत्रुओं के हाथसे नहीं मारागया उसने युद्धभूमिमें अपना रूपान्तरतो नहीं किया ११ हे कृष्ण बालकपन से मेरे आगे अपनी प्रशंसा करते

उस बड़े तेजस्वी समर्थने अपनी शिक्षाका वर्णन किया १२ हे के शव वह बालक द्रोणाचार्य्य कर्ण और कृपाचार्य्यादिकसे छला और माराहुआ तो पृथ्वीपर नहीं शयन करताहै उसको मुझसेकहो १३ वह मेरा दौहित्र सदैव पराक्रमियों में श्रेष्ठ द्रोणाचार्य्य भीष्म और कर्णसे ईर्षाकरताथा १४ तब अत्यन्त दुखीरूप गोबिन्दजीने इस प्रकारके अनेक रूपोंसे बिलाप करनेवाले अत्यन्त दुखित अपने पितासे यह बचनकहा १५ कि उसनेयुद्धके मुखपर होकर भी अपने रूपान्तरको नहीं किया औरपीछेकी ओरसे घायलभीनहींहुआ उस पराक्रमीने बड़ा कठोर युद्धकिया १६ लाखों राजाओंके समूहोंको मारकर द्रोणाचार्य्य और कर्ण से दुखित होकर दुश्शासनके पुत्रके स्वाधीनहुआ १७ हे प्रभुजी कदाचित वह अकेला किसी एककेही साथमें युद्धकर्त्ता होता तो वह युद्धमें बज्र धारी इंद्रसेभी नहीं मर सक्ताथा १८ संसप्तके क्षत्रियों करके अर्जुन को युद्ध भूमिसेहटाले जानेपर युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्तद्रोणाचार्य्यादिकोंने उस अभिमन्यु को घेरलियाथा १९ हेपिता इसकेपीछे वह आपका दौहित्र युद्धमें शत्रुओंकाबड़ाभारी बिध्वंसकरकेदुश्शासनकेपुत्रके आधीनहुआ २० हेबड़े बुद्धिमान् निस्सन्देह वह अभिमन्यु स्वर्गको गया आप शोक को दूरकरो बुद्धिमान्‌लोग दुःखकोपाकर पीड़ामाननहीं होतेहैं २१ युद्धमें द्रोण कर्णादिक जिसके सन्मुखहुये वह महा इन्द्रके समान कैसे स्वर्गको नहीं पावेगा २२ हे अजेय पिताजी आप शोचको त्यागो दुःखके आधीनमतहोउसशत्रुओंकेपुरोंके बिजयीनेशस्त्रोंसेपबित्रगति को पाया २३ उस बीरके मरनेपर दुःखसे पीड़ामान यहमेरी बहिन सुभद्रापुत्रको पाकर कुररी पक्षीके समान पुकारनेलगी २४ इसदुखी ने द्रौपदीकोपाकर पूछाकिहे आर्य्या वहसबपुत्रकहांहैं मैंउनको देखा चाहतीहूं उसके बचनको सुनकर कौरवोंकी वहसबस्त्रियां बड़ेदुखी के समान भुजाओंसे उसको पकड़कर पुकारीं २५ । २६ उत्तरा से कहाकि हे कल्याणिनि वह तेरापति कहां गया तू शीघ्रही उस के आनेको मुझसे कह २७ निश्चय करके उत्तरा मेरेबचनको सुनकर

शीघ्रही महल से दौड़तीथी हे उत्तरातेरापति किस हेतुसे सन्मुख नहीं आताहै २८ हे अभिमन्यु तेरेमहारथी मामा प्रसन्न हैं सबने तुझ युद्धाभिलाषी और यहां आनेवालेको अपनी क्षेमकुशल कही है २९ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले अब पूर्बके समानयुद्ध का बर्णन मुझसे करोअब यहांइस प्रकार बिलाप करनेवाली मुझ को किस हेतुसे उत्तर नहीं देताहै ३० बड़ेदुखसे पीड़ित कुन्तीने इस सुभद्राके इस प्रकारके और अन्य २ प्रकारके बिलापों को सुनकर धीरेपनेसे यहवचनकहा ३१ कि हेसुभद्रा जो बालक युद्धमें बासुदेव सात्यकी और पितासे भी रक्षित किया गया वहकाल धर्म से मारागया ३२ हे यादवनन्दिनी यह मनुष्यताका धर्मऐसाहीहै शोच मतकर तेरे अजेय पुत्रने परमगतिको पाया ३३ हे कमलदल लोचन रखनेवाली तू महात्मा क्षत्रियोंके वड़ेऊंचे कुलमें उत्पन्नहै उस चपलाक्ष पुत्रको मतशोच ३४ हे शुभदर्शनतुमइस गर्भवती उत्तरा को देखो यह भाविनी उस अभिमन्यु के पुत्रको शीघ्रही उत्पन्न करेगी ३५ हे यादव कुन्तीने इस प्रकार से उसको विश्वास देकर और बड़े शोकको त्याग करके उसके श्राद्ध का बिचार किया ३६ उस धर्मज्ञने राजा युधिष्ठिर भीमसेन और अश्विनीकुमार के समान नकुल और सहदेवको बतलाकर बहुत से दानदिये ३७ हे यादवजी इसकेपीछे सुभद्रानेबहुतसी गौओंका ब्राह्मणोंको दानकर के प्रसन्नता पूर्बकउत्तरासे यह बचनकहाकि ३८ हे निर्दोष बिराट पुत्रीयहां तुमको अपने पतिका शोक न करना चाहिये हे सुन्दरी गर्भमें नियत अपने पुत्रकी रक्षाकर ३९ हे महातेजस्वी वहकुन्ती इस प्रकार कहकर फिर मौनहोगई मैं उससे पूछकर इस सुभद्रा को यहां लायाहूं ४० हे बड़ाई देनेवाले इस प्रकार से आपके दौहित्रने मरणकोपाया इसबड़े शोकको त्यागकरो और शोचसमुद्रमें मतडूबो ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिबासुदेवबाक्येएकषष्टितमोऽध्यायः ६१ ॥

———*———

बासठवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोलेकि तबधर्मात्मा वसुदेव जीने पुत्रके इसबचनको सुनकर शोकको त्यागकर उसका उत्तम श्राद्धकिया १ उसी प्रकार बासुदेवजीनेसदैवपिताकेप्यारे अपने भानजे महात्मा अभिमन्युका श्राद्धादिक कर्मकिया २ बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णने साठलाख ब्राह्मणों को बिधिके अनुसार वह भोजन करवाये जो कि सबगुणोंसे संयुक्त थे ३ महाबाहु श्रीकृष्णजीने उनभोजनकियेहुये ब्राह्मणोंकोपोशाकें पहिराकर ब्राह्मणोंके अभीष्टधनोंका प्रबन्ध किया वह कर्म उस प्रसन्नता का करनेवाला हुआ जिसमें लोमहर्षण होताहै ४ तब ब्राह्मणोंने उससुबर्णगौरुथान और पोशाकोंकेदानकोपाकर आशीर्बाद दिया कि तुम्हारी वृद्धिहोय ५ तबदाशार्ह देशी बासुदेव बलदेव सात्वकी और सत्यकने अभिमन्युका श्राद्धकिया ६ परन्तुवह दुःखसे अत्यन्त पीड़ामान थे इस्से सुखको नहींपाया उसी प्रकार अभिमन्युसे जुदे होकर बीर पांडवोंने हस्तिनापुरमें ७ शान्तीकोन हींपाया हे राजेंद्र पतिके शोकसे पीड़ामान उत्तराने बहुत दिनतक ८ नहींखाया वहबड़ा करुणापूर्वक दुःखका स्थानहुआ और उसकाउदरवर्ती गर्भभीअबिदितसा हुआ ९ इसकेपीछे बड़े तेजस्वीव्यासजी दिव्यनेत्रोंसे उसको जानकर आये औरवहां आकर उस बुद्धिमान्ने कुंतीसे और उत्तरासे मिलकर यह बचन कहा कि १० तुमको यहशोक दूरकरना चाहिये हे यशस्विनी तेरापुत्र बड़ा तेजस्वी होगा ११ यह वासुदेवजीके प्रभाव और मेरे बचनसे पांडवों केपीछे संसारकी रक्षा और पोषण करेगा १२ हे भरतबंशी उनको प्रसन्न करते अर्जुनको देखकर धर्मराजके सुनतेहुये इस बचनकोकहा १३ कि तेरापौत्र भाग्यवान् और बड़ा साहसी होगा औरचारो समुद्रतक पृथ्वीको धर्मसे पालेगा १४ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले कौरव्य अर्जुन इसहेतुसे तुम शोकको दूरकरो इसमें तेराकोईबिचार नहींहै यह सत्य २ हीहोगा १५ हे कौरव नंदन पूर्बसमयमेंजो

कृष्णोबीर श्रीकृष्णने कहाहै वह उसी प्रकारसे होनहार इसमेंतेरा बिचारना कुछनहीं चाहिये १६ जो अपने पराक्रमसे बिजयकरकेअ बिनाशी लोकोंको गया वह अभिमन्युभी तुमसे और अन्यसबकौरवोंसे शोचनेके योग्यनहींहै १७ हे महाराज तब धर्मात्मापितासे इसप्रकार समझाया हुआ अर्जुनशोकको त्यागकर प्रसन्न मुखहुआ १८ हेबड़े बुद्धिमान् धर्मज्ञ जन्मेजय तेरापिताभी उसगर्भमें इच्छानुसार ऐसे वृद्ध हुआ जैसेकि शुक्लपक्षमें चंद्रमा १६ उसकेपीछेब्यासजीने अश्वमेध यज्ञके निमित्त उसधर्मपुत्र राजा युधिष्ठिरको प्रेरणा पूर्व्वक आज्ञादी औरवहांहीं अन्तर्द्धान होगये २० हेतात बुद्धिमान धर्मराजनेभी ब्यासजीके उसबचनको सुनकर धनलानेकेलिये उसपर्व्वत पर जानेका बिचारकिया २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिब्यासउपदेशेद्विषष्टितमोऽध्यायः ६२ ॥

तिरेसठवां अध्याय ॥

जन्मेजयनेकहा कि हेब्राह्मण तबराजा युधिष्ठिरने अश्वमेधयज्ञ के विषयमें महात्मा ब्यासजीसे कहेहुयेइसबचनको सुनकरफिरक्या कहा १ हेब्राह्मणोंत्तम राजामरुतने जो रत्न पृथ्वी में गाड़े उन को किस२प्रकारसे पायाउसकोमुझसे वर्णनकरो २ वैशंपायन बोले कि धर्मराज युधिष्ठरने ब्यासजीका बचनसुनकर और अर्जुन भीमसेन नकुलसहदेवइन सबभाइयोंको बुलाकर यहबचन कहा कि हे बीर लोगो तुमनेवह बचनसुनाहै जो कि शुभचिन्तकतासे ३ । ४ कौरवोंका भलाचाहनेवाले बुद्धिमान् तपोवृद्ध महात्मा भक्तों का सुख चाहनेवालेब्यासजीने कहाहै ५ धर्मके अभ्यासी अपूर्व्वकर्म्मी गुरू ब्यास बुद्धिमान् गोबिंदजी और भीष्मजीसे कहा गयाहै ६ सो हे महाज्ञानीपांडव लोगोंमें उसको स्मरणकरके अच्छे प्रकारसे काम में लायाचाहताहूं वह तीनोंकामोंमें सबका हितकारीहै ७ और पुत्र पौत्रादिकोंमें कल्याणहै जिसकोकि ब्रह्मबादी कहतेहैं हे कौरव यह सबपृथ्वी रत्नोंसे रहितहै ८ हेराजाओ तब ब्यासजीने राजा मरुत

केधनकाबर्णनकिया जो यह तुम्हाराबहुत अंगीकृतहै और जो उस-
को उचित और योग्यमानतेहोतो उसीप्रकारहो ६ जैसाकि उपदेश
कियागयाहै हेभीम अथवातुमधर्मसे उसको किनप्रकार कामानतेहो
हेकौरव्य राजाके इसबचनके कहनेपर १० भीमसेनने हाथजोड़कर
उस श्रेष्ठराजासे यह बचनकहा कि हेमहाबाहु यहमुझको स्वीकार
है ११ जो तुमनेव्यासजीके बतायेहुये धन लानेके बिषयमें कहाहै
हेप्रभु जो यहांराजा मरुतके उसधनको हमप्राप्तकरें १२ तब हमारा
अभीष्ट प्राप्तहोय हेमहाराज इसमें मेरा यहबिचार है कि हमलोग
शिवजीको पूजकर उस महात्मा गिरीशकेधनको १३ उनकीकृपासे
लावें आपकाकल्याणहोयनिश्चयकरकेहमउस देवेश्वर और उसके
अनुचरोंको १४बुद्धि मन बाणी औरकर्मसेप्रसन्नकरके धनकोपावेंगे
जो उसधनकीरक्षा करतेहैं वह भयकारी दर्शनवालेकिन्नरहैं १५
वह सबकिन्नर शिवजी महाराजके प्रसन्न होनेपरस्वाधीनहोंगे हे
भरतबंशीउसभीमसेनके इस शुभबिचारपूर्व्वकबचनको सुनकर१६
धर्मपुत्र युधिष्ठिर अत्यन्त प्रसन्नहुये औरअर्जुन आदिक अन्य सब
लोगोंनेभी इसी बचनको कहा १७ तब सब पांडवोंने रत्नलानेको
निश्चय करके उत्तरायण रोहिणी नक्षत्रमें रबिवारके दिन सेनाको
आज्ञादी १८ इसके पीछे पांडवलोगोंने प्रथमही देवताओंमें श्रेष्ठ
महेश्वरजी को पूजकर ब्राह्मणोंसे स्वस्तिवाचन कराके यात्राक-
री १९ मोदक तस्मै और मांस पूप आदिकसे महात्माको पूजबहुत
स्तुतिकरके अत्यन्तप्रसन्नहोकरचले२०वहांअत्यन्तप्रसन्नचित्त उन
नगरबासी श्रेष्ठब्राह्मणोंने उन यात्रा करनेवाले पांडवोंकेशुभमंगल
बर्णनकिये फिरवहपांडव अग्नि औरब्राह्मणोंकोप्रदक्षिणाकर शिरोंसे
दण्डवत करकेचलदिये२१।२२ पुत्रोंकेशोकसे घायलराजा धृतराष्ट्र
और गान्धारी और दीर्घ नेत्रवाली कुन्तीको जतलाकर २३ धृत-
राष्ट्र केपुत्र कौरव युयुत्सुको वृद्धोंके पास छोड़कर पुरबासी और
ज्ञानी ब्राह्मणों से आशीर्वाद युक्त होकर पांडवोंने यात्राकरी २४॥
इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिरत्नार्थयात्रायांत्रिषष्टितमोऽध्यायः ६३॥

चौंसठवां अध्याय॥

बैशंपायन बोले कि इसके पीछे बहुत आनन्दसे भरे हुये सब मनुष्य औरसवारी रखनेवाले वहपाण्डव रथके बड़े शब्दोंसे पृथ्वी को शब्दायमानकर चलदिये १ सूतमागध और बन्दीजनों की स्तुतियों से स्तुयमान औरजिसप्रकार सूर्य्य अपनी किरणोंसे घिरा हुआ होताहै उसीप्रकार अपनी सेनाओं से चारों ओर को व्याप्त होकर पांडवलोगचले २ उससमय युधिष्ठिर मस्तक पर श्वेत छत्र धारण किये हुये ऐसाशोभित हुआ जैसे कि पूर्णमासीकेदिन चन्द्रमा शोभित होताहै पुरुषोत्तम पांडव युधिष्ठिरने मार्गमें अत्यन्त प्रसन्न चित्त मनुष्यों के विजय के आशीर्वाद न्याय और बिधिके अनुसारलिये ३। ४ हे राजा उसीप्रकार जो सेनाके लोग राजा के आगेपीछे थे उनका हलहला शब्दआकाशको पूर्णकरकेनियतहुआ ५ तब महाराजने सरोवर नदीबन उपवनों को व्यतीत करके उस पर्व्वतकोभी प्राप्तकिया ६ हे राजेन्द्र उसदेश में जहांपर कि वह उत्तमद्रव्य था वहां राजायुधिष्ठिर ने कल्याणरूप समधरातल स्थानपर सेनाके लोगोंसमेत निवासकिया हे भरतर्षभोंमेंश्रेष्ठ कौरव ७ वहां तप बिद्यासे पूर्णजितेन्द्री ब्राह्मणोंको और वेद वेदाङ्गसे युक्त धौम्य पुरोहितको आगे करके निवासकिया पुरोहित समेत ब्राह्मण और क्षत्रियोंने ८ न्यायके अनुसार शान्ति करके राजाको और उसके प्रधान मन्त्रियों को बिधिके अनुसार मध्यवर्त्ती नियत करके ९ छः राजमार्ग और नौखण्ड रखनेवाला सेनाका निवास स्थान बनाया फिर उस राजेन्द्रने बिधिपूर्बक मतवाले हाथियोंका निवासस्थान बनवाकर ब्राह्मणों से यह बचनकहा कि हे उत्तम ब्राह्मणलोगो इसकर्मके बिषयमें जैसा आपकीबुद्धिमें शुभदिनऔर नक्षत्र ठहरे उसमें १० जैसा आपकहैं वैसाही हमको करनायोग्य होगा यहां बिचार करनेवाले हमलोगोंका समय व्यतीतनहोजाय ११ हे ऋषियो इसको ऐसा बिचार पूर्ब्बक निश्चयकरो जिसको

बहुत शीघ्र करना योग्य होय धर्मराज का प्रिय चाहनेवाले प्रसन्न ब्राह्मणोंने पुरोहित समेत राजाके इस बचन को सुनकर यह उत्तर दिया कि १२ अबहीं पवित्रदिन और नक्षत्र है आपअपने उत्तमतर कर्म में उपायकरें हे राजा अबयहां केवल जलपानही करनेसे निवासकरें और आपभी इसीप्रकार से स्थितिकरो १३ उन उत्तम ब्राह्मणों के बचन को सुनकर ब्रत करनेवाले प्रसन्न चित्तवह पांडव रात्रिके समय कुशासनों पर ऐसे नियतहुये जैसे कि यज्ञमें देदीप्त अग्नि १४ । १५ इसके अनन्तर ब्राह्मणों के बाक्योंके सुननेवाले उन महात्माओंकी वह रात्रिव्यतीत होगई फिर प्रातःकालके समय ब्राह्मणोंने राजायुधिष्ठिरसे यह बचनकहा १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिपर्वतस्थितिवर्णनेचतुष्पष्ठितमो ध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

ब्राह्मण बोले कि हे राजा प्रथम उन महात्मा शिवजीकी भेंट कीजिये भेंटदेनेके पीछे अपने प्रयोजनमें उपायकरें १ युधिष्ठिरने उन ब्राह्मणोंके बचन को सुनकर शिवजीकी भेंट न्यायके अनुसार निवेदन करके अर्पणकरी २ हे राजा फिर वह पुरोहित बिधिके अनुसार संस्कार किये हुये घृतसे अग्निको तृप्तकर चरुको मन्त्रसे सिद्धकरचला ३ वहां जाकर उसने मन्त्रसे पवित्र पुष्पोंको लेकर मोदक तस्मै और मांसों से बलिप्रदान किया ४ उस वेद पारग पुरोहित ने अपूर्व्व पुष्प और नानाप्रकारके पदार्थों समेत खीलसे सबस्विष्ठ तम करके ५ किंकर लोगों का उत्तम बलिदान किया यक्षराज कुबेर और मणिभद्रके निमित्त बलिदानकिया६ इसीप्रकार अन्ययक्ष और भूतपतियों के अर्थ कृषरान्न मांस और कालेतिलों समेत दानोंसे बलिदानकिया ७ फिर पुरोहित ओदननाम भोजन कीबस्तुओंको शकटोंमें तैयार करकेलाया और राजानेहजारों गौवें ब्राह्मणोंको दानदेकर ८ निशाचर भूतोंको बलिदिया हे राजाधूप गन्धसेपूर्ण और पुष्पोंसेयुक्त ६ वहशिवजीका स्थान अत्यन्त शो-

भायमानहुआ राजायुधिष्ठिर सबरुद्रगणों समेत शिवजीकी पूजा करके १० व्यासजीको आगेकरके रत्नोंकेभंडार अर्थात् खजाने के पासगया संसारके सबधनके अधिपति कुवेरजीको पूजकर दंडवत् नमस्कार करके ११ बिचित्र, पुष्प, अपूप, और कृषरसेशंखआदिक सबनिधियों समेत निधिपालोंको पूज १२ पवित्र ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराके वह पराक्रमी राजा उनके पुण्याह घोष और अपनेतेज समेत नियतहुआ १३ और प्रसन्न होकर युधिष्ठिरनेउस धनकोखुदवाया तब स्त्रवास्थाली आदिकपात्रलोटा कमंडलछोटा-कलशनामककादिक जोकि चित्तरोचक और अनेक प्रकारकेथे १४ भृंगार, अर्थात् सुबर्णकीझारी आदि कराह अर्थात् कढ़ाव कलश आदिक वर्द्धमानकान् अर्थात्घटादिकबहुतसेविचित्र हजारों भाजनों को धर्मराज युधिष्ठिरने निकलवाया और सन्दूकोंमें उनको भर-वाया १५।१६ और उष्ट्रआदिकोंपर वहबांधाहुआ बोझा दोनोंओरको बराबरहुआ हेराजावहां राजायुधिष्ठिरके उष्ट्रादिभार बाहक इतने थे१७कि छयासठ हजारऊंट उनसे दूनेघोड़े और ग्यारहलाख हाथी १८ छकड़े रथ और हथिनियांभीउतनीहीथीं खिच्चर और मनुष्योंकी संख्या अगणितथी १९ वहधन इतना था जिसको कि युधिष्ठिरनेलिया जिसमें सुवर्ण से भरे हुये आठहजारऊंट सोलह हजार छकड़े और चौबीसहजारहाथीथे २० पांडवयुधिष्ठिर इनसब सवारियोंपरधनको भरकरऔरफिर महादेवजीकोपूजकर हस्तिना-पुरकीओरचला फिर व्यासजीसे आज्ञालेकर वह पुरुषोत्तम युधि-ष्ठिर पुरोहितको आगेकरके प्रतिदिन दोकोशचलकर निवासीहुआ २१ । २२ हेराजाधनकेभारसे महा पीड़ित वह बड़ीसेना पांडवोंको प्रसन्नकरतीहुई बड़ीकठिनतासे राजधानीके सन्मुखचली २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिधनाहरणेपंचषष्ठितमोऽध्यायः ६५ ॥

छासठवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोलेकि उसीसमयपरपराक्रमीबासुदेवजीभी वृष्णियों

समेत हस्तिनापुरमेंआये १ वहपुरुषोत्तम द्वारकाजानेके समयजिस प्रकार राजायुधिष्ठिरसे सलाह करगयेथे उसीसमयपर अश्वमेधके नियमको जानकर २ प्रद्युम्न, युयुधान, चारुदेष्ण, साम्ब, गद, कृत-बर्म्मा, ३सारण, बीरनिष्ठऔर उल्मुकसमेत बलदेवजीको अग्रभागमें करके सुभद्रा समेत ४ द्रौपदी उत्तरा और कुन्तीके दर्शनाभिलाषी और जिनके स्वामीमारे गये उनक्षत्रियाओंको बिश्वासदेनेके अर्थ आपहुंचे राजाधृतराष्ट्र और बड़ेसाहसी बिदुरजीने उन आयेहुओं को देखकर न्यायके अनुसारलिया ५। ६ महातेजस्वी बिदुर और युयुत्सूसे अच्छेप्रकार पूजित पुरुषोत्तम श्रीकृष्णजी वहांठहरे ७ हे जनमेजय वहां श्रीकृष्णजीके निवासकरनेपर शत्रुओंकेवीरोंकोमार-नेवाले तेरे पिता परीक्षित ने जन्मलिया ८ हेमहाराज ब्रह्मअस्त्रसे पीड़ामान वह राजा परीक्षित मृतक और अचेष्ट होकर प्रसन्नता और शोक का बढ़ाने वाला हुआ वहां प्रसन्न मनुष्यों के सिंहनादसे उत्पन्न शब्द सबदिशाओं में प्रवेशकरके फिर बन्दहोगया ९। १० तब इन्द्री और मनसे महाब्याकुल श्रीकृष्णजी शीघ्रही सात्यकीको साथलेकर स्त्रियोंके महल में पहुंचे ११ तदनन्तर वहां शीघ्र आने वाली और बारंबार बासुदेवजी को पुकारती और दौड़ती हुईअपनी फूफी कुन्तीको देखा १२ और पीछेकी ओरसे यशवन्ती द्रौपदीसुभ-द्रा और बान्धवोंकी स्त्रियोंकोकरुणा पूर्व्वक बिलाप करता हुआ दे-खा १३ हेराजेन्द्र तब राजा कुन्तभोजकी पुत्री कुन्तीने श्रीकृष्णको पाकर उष्ण अश्रुपातों से युक्त गद्गद बाणी समेत यह बचन क-हा १४ हेमहाबाहु बासुदेव तुमसे देवकी सुपुत्रवतीहै तुम्हींहमारी गति और प्रतिष्ठाहो यह बंशतेरेहीस्वाधीनहै १५ हेप्रभु यदुबीरजो यह तेरेभानजेका पुत्रहै वह अश्वत्थामाके अस्त्रसे मृतक उत्पन्नहुआ है हे केशव उसको जीवदानदो १६ हेप्रभु यदुनन्दन तुमने अश्व-त्थामाके अस्त्रफेंकने के समयमें यह प्रतिज्ञाकीहै किमैं मृतक उत्पन्न होनेवाले बालकको सजीव करूंगा १७ हेपुरुषोत्तम सोयह मृतक उत्पन्न हुआहै हेतात इसको देखो हे लक्ष्मीपति तुम इस उत्तरा

सुभद्रा द्रौपदी और मुझसमेत १८ युधिष्ठिर भीमसेन नकुल सहदेव को रक्षा करनेको योग्यहो १६ हेश्रीकृष्ण पांडवोंके और मेरेप्राण इसकेही आधीन हैं इसीप्रकार मेरे सुसर और पांडवोंका पिंड इस में नियतहै २० हेजनार्द्दन तेरा कल्याण होय अबतुम उस अपनेस- मान बल पराक्रमी मृतक हुये प्यारे अभिमन्युके प्यारे अभीष्टको उत्पन्नकरो २१ हेशत्रुओंके नाशकरनेवाले श्रीकृष्ण यह उत्तरापूर्व समय में प्यारसे अभिमन्युके कहे हुये बचनको निस्सन्दे होकर कहतीहै २२ हेश्रीकृष्ण तब निश्चय करके अभिमन्युने उत्तरासेकहा था कि हेकल्याणिनि तेरापुत्र मेरेमामाके कुलकोजायगा २३ वृष्णी अन्धक कुलोंमें जाकर धनुर्वेद विचित्र अस्त्र और शुद्धनीतिशास्त्र को पढ़ैगा २४ हेतात उस शत्रुओंके मारनेवाले अजेय अभिमन्युने बड़े बिश्वास पूर्व्वक कहाहै और यह इसीप्रकार है इस में किसी बातका सन्देह नहींहै २५ हेमधुसूदन हमसब तुमको प्रणामकरके प्रार्थना करतेहैं कि आप इसकुलकी रक्षाके निमित्त उत्तम कल्याण करो २६ बड़े नेत्रवाली कुन्ती श्रीकृष्णसे इस प्रकारकी बातें कह- कर और दुःख से पीड़ित अन्य२ स्त्रियांभी भुजाओंको उठाकर पृथ्वी पर गिरपड़ीं २७ हेसमर्थ महाराज अश्रुओं से ब्याकुल नेत्रवाली उन सबस्त्रियों ने कहा कि वासुदेवजी के भानजे का पुत्र मृतक उत्पन्न हुआ २८ हेभरतवंशी इस बचनके कहनेपर श्रीकृष्णजी ने उस पृथ्वीपर पड़ी हुई कुन्तीको उठाया और बिश्वास दिया २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिपरीचितजन्मकथनेषट्षष्ठोऽध्यायः ६६॥

सड़सठवां अध्याय॥

बैशंपायनबोले कि तब कुन्तीके उठनेपर सुभद्रा भाईको देखकर दुःख से पीड़ामान होकर पुकारी और यह बचन बोली कि हेपुंडरी काक्षपौत्र तुमबुद्धिमान् अर्जुन के पुत्रको देखो जोकि कौरवोंकेनाश होनेपर बिना अवस्थाकेनाश होगया १।२ अश्वत्थामा ने एकसींक भीमसेन के निमित्त उठाई वह उत्तरा, अर्जुन, और मुझपर गिरी ३

हेकेशव वहीसोंक मुझ बिदीर्ण चित्तके हृदय में नियतहै जोमैं उस अजेय अभिमन्युको उसके पुत्र समेत नहींदेखतीहूं४धर्मात्मा धर्म-राज युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेव इस अभिमन्युके मृतक हुये पुत्रको सुनकर क्या कहेंगे हे श्रीकृष्ण पांडवलोगों को अश्वत्थामाने नाशकरदिया५।६ हेयदुनंदन वह अभिमन्यु निस्संदेह पांचों भाइयोंका प्याराथा उस को पांडवलोग अश्वत्थामा के अस्त्र से बिजयकिया हुआ सुनकर क्या कहैंगे ७ हे जनार्दन शत्रुओं के बिजयकरनेवाले श्रीकृष्ण अभिमन्युके मृतक पुत्र उत्पन्नहोनेके सि-वाय बढ़कर कौनसा दुःखहोगा ८ हे श्रीकृष्ण सोअब शिरसे झुकी हुई मैंकुन्ती और यह द्रौपदी तुम को प्रसन्न करती हैं हे पुरुषोत्तम इनसबको देखो ९ हे शत्रुओंके मर्द्दनकरनेवाले लक्ष्मीपति जब अ-श्वत्थामा पांडवोंके गर्भको नाशकरताथा उससमयपर भी निश्चय करके तुझक्रोधयुक्तने कहाथा कि १० हे ब्रह्मबन्धो नराधम मैंतु-झको कामनासे रहित करूंगा और अर्जुनके पौत्रको सजीव करूं गा ११ हे अजेय इसबचनको सुनकर तेरे पराक्रमको जानने वाली मैं तुझको प्रसन्न करतीहूं अभिमन्युका पुत्रजीउठे १२ हे श्रीकृष्ण जोतुम इसशुभ बचनकी प्रतिज्ञा करके सफल नहीं करोगे तो मुझ कोभी मरा हुआही जानो हे बीरजो तेरे जीवते हुये यह अभिमन्यु कापुत्रनहीं जीवसक्ताहै तोमैं तुझसे कौनसा प्रयोजन चाहूंगी १३ हे अजेयबीर तुमइस अभिमन्युके मृतक पुत्रको जोकि तेरे समान नेत्ररखनेवाला है ऐसे सजीवकरो जैसे कि इन्द्रबर्षा करके खेतीको सजीव करताहै १४ । १५ हे शत्रुंजय केशवजी तुमधर्मात्मा सत्य-वक्ता और सत्यपराक्रमीहो तुम अपने शुभबचनके पूरेसच्चेकरनेको योग्यहो तुमजो चाहोतो इनमरेहुये तीनोंलोकोंकोभी जिलासक्तेहो फिर अपनेभानजेके प्यारेमरेहुये पुत्रकोकैसे न जिलाओगे१६।१७ हे श्रीकृष्ण मैं तेरे प्रभावको जानतीहूं इसहेतुसे मैं प्रार्थना करती हूं कि यह तुम्हारा पांडवोंके ऊपर बड़ा अनुग्रहहोगा १८ मैं तेरी छोटीबहिन हूं मृतक पुत्रवालीहूं और तेरेपास शरणमें आईहूं हे

महाबाहु इसकोजानकर करुणा करके दयाकरनेके योग्यहूं ९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिपरीक्षितजन्मकथनेसप्तषष्ठितमोऽध्यायः ६७ ॥

अड़सठवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हे राजेंद्र दुःखसेमूर्च्छीमान इसप्रकारसे कहेहुये केशीके मारनेवाले श्रीकृष्णाने उनसव स्त्रीपुरुषोंको प्रसन्न करते हुये वड़ेउच्चश्वरसे कहा कि ऐसाही होय १ तबउस प्रभु पुरुषोत्तम ने इसवचनसे उनसबको ऐसेप्रसन्नकिया जैसेकि धूपसे पीड़ामान मनुष्यको जलदेनेसे प्रसन्न करतेहैं २ इसकेपीछे वहश्रीकृष्णशीघ्र ही तेरे पिताके उसमहलमें प्रवेशकरगये हे पुरुषोत्तम जोकि श्वेत मालाओंसे विधिके अनुसार शोभायमानथा ३ हे महाबाहुसब दिशाओंमें रक्खेहुये जलसे पूर्णघट घृत तिल तन्दुल और सरसों ४ चारोंओर रक्खेहुये अग्नि और निर्मल अस्त्रोंसे रक्षित औरसेवाके निमित्तस्वरूपवान् वृद्धस्त्रियोंसेयुक्त ५ चारोंओर को वड़े २ बिद्वान् वैद्यचिकित्सकोंसे व्याप्तथा हे बुद्धिमान् उसतेजस्वीने विधिकेअनुसार सावधान मनुष्योंसे नियतकी हुई राक्षसोंकी नाशकरनेवाली सबद्रव्योंकोभीदेखा६।७आपकेपिताकाजन्म महलउसप्रकारकादेख करश्रीकृष्णजीप्रसन्नहुये औरवहुतश्रेष्ठहैबहुतहीश्रेष्ठहैयहवचन कहा तबअत्यन्त प्रसन्नमुख श्रीकृष्णके इसप्रकारके कहनेपर ८ द्रौपदीने शीघ्र जाकर उत्तरासे यह बचन कहा कि हेकल्याणिनि यह प्राचीन ऋषि बुद्धिसेपरे स्वरूपवाला अजेयश्रीकृष्ण तेरा सुसर तेरे सन्मुख आताहै देवताके समान श्रीकृष्णजीके दर्शन करनेकी अभिलाषा रखनेवाली वह देवी नेत्रों में अश्रुभरेहोने के कारण गुप्त अर्थ वाले बचन और आंसुओंकोरोककर बस्त्रसे अपने शरीरकोढक मृतकपुत्र कोगोदमेंरखकरबैठगई उसतपस्विनीने उसप्रकार दुखीहृदयकेसाथ ९।१०।११उन आतेहुये गोबिन्दजीको देखकरकरुणापूर्व्वक बिलाप किया कि हे दुष्टसंहारी हार्दाकाश निवासी श्रीकृष्णजी तुम इस बालकसे रहित अभिमन्युको और मुझको सदैव मृतक देखो १२

हेमधुसूदनबीर श्रीकृष्ण मैं तुमको शिरसेप्रणामपूर्व्वक प्रसन्नकर-
तीहूं अश्वत्थामाके अस्त्रसे भस्महुये इसमेरे पुत्रको सजीवकरो१३
हेपुंडरीकाक्ष जो धर्मराज और भीमसेन और आपसे मैंने कोईवचन
कहाहोय तो हेप्रभु यहबज्र मुझकोमारडाले मैंहींमरजाऊं परन्तुयह
बालक ऐसीदशावालानहोय१४।१५ निर्द्दय बुद्धिवाला अश्वत्थामा
ब्रह्मअस्त्रसे इस गर्भमें बर्त्तमान बालकके मारनेसे क्या फलपावेगा
१६ हे शत्रुहन्ता गोबिन्दजी सो मैं तुमको शिरसे दण्डवत् पूर्व्वक
प्रसन्नकरके प्रार्थना करतीहूं कि जो यह बालक नहीं जियेगा तो
मैं अपने प्राणोंको त्यागूंगी १७ हेमाधवजी इसबालकमें मेरे बहुत
मनोरथथे वहसब अश्वत्थामाने नाशकिये अबमैं जीकर क्याकरूंगी
१८ हे श्रीकृष्णजी मेरी सलाहथी कि भरी गोदसे तुझ जनार्द्दन
श्रीकृष्णको दंडवत् करूंगी १९ वह भी बिपरीत हुआ हेमधुसूदन
निश्चय करके वह चपलनेत्रवाला आप का अत्यन्त प्याराथा तुम
उसके पुत्रको ब्रह्मअस्त्रसे गिराहुआदेखो २०।२१ यह उसप्रकारका
उपकार भूलजानेवाला और निर्द्दयहै जैसाकि इसका वह पिताथा
जोकि पांडवोंकी लक्ष्मीको त्यागकरके यमलोकको गया २२ हेबीर
केशवजी युद्धके मुखपर अभिमन्युके मरनेपर मैंने यह प्रतिज्ञाकरी
थी कि मैं थोड़ेही कालपीछे तेरे पास आऊंगी २३ हे श्रीकृष्णजी
बनकोप्यारा जाननेवाली निर्द्दयी मैंने उस कर्मको नहींकिया अब
वहां जानेवाली मुझको वह अभिमन्यु क्याकहेगा २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकपर्व्वणिअष्टषष्ठितमोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय ॥

बैशंपायनबोले कि वह महादुखी पुत्रकी चाहनेवाली तपस्विनी
उत्तरा बिक्षिप्तोंके समान अनेकप्रकारके करुणा बिलापकरके पृथ्वी
में गिरपड़ी१ दुखसे पीड़ामान कुन्ती और भरतबंशियोंकी सबस्त्रियां
उस मृतकपुत्रवाली पृथ्वीपर पड़ीहुई उत्तराकोदेखकर पुकारीं२ हे
राजेन्द्र पांडवोंका महल दोमुहूर्त्ततक दर्शनके अयोग्य और शोकोंके

शब्दोंसे शब्दायमानरहा ३ हेवीरजनमेजय वहउत्तरापुत्रके शोकसे पीड़ितहोकर दोघड़ीतक अचेतरही फिर उस उत्तराने सचेत होकर पुत्रकोबगलमें लेकर यहवचनकहा ४।५ किहेधर्मज्ञकेपुत्र तुमअधर्म कोनहीं जानते हो जो श्रीकृष्णको दण्डवत् नहीं करतेहो हेपुत्र तुम जाकर अपने पितासे यह मेरावचन कहो कि हेवीर किसीदशामेंभी बिनासमयके जीवोंका मरनाअसंभवहै ६।७ जोमैं अब यहांतुझपुत्र और अपनेपतिसे रहितहोकर अकुशलता और निर्द्धनताको प्राप्त होकरमरनेके योग्यहोकरभी जीवतीहूं ८ हेमहाबाहु अथवा धर्मरा- जसे आज्ञालेकर मैंअसह्य विषको खाऊंगी वा अग्निमें प्रवेशकरूं- गी ६ हेतात यहमरना बड़ाहीकठिनहै जोतुझपुत्र और पतिसेरहित का हृदय खण्ड खण्ड नहींहोता १० हेताउठो इस दुःखीपीड़ामान आपत्तियुक्त शोकसागर में डूबीहुई परदादीको देखो ११ तपस्विनी आर्य्या सुभद्रा द्रौपदी और व्याधासे घायल मृगी के समान मुझ दुःख से पीड़ामान को देखो १२ उठो और लोकनाथ आनन्दस्व- रूपका मुख जोकि कमलदलके समान चपलनेत्र रखने वाला है उसको देखो १३ इसके पीछे सब स्त्रियोंने इस प्रकार बिलापकरने वाली पृथ्वीपर गिरीहुई उस उत्तराको देखकर फिर उठाया १४तब राजा विराटकी पुत्रीनेधैर्य्यसे उठकर हाथ जोड़कर श्रीकृष्णजीको पृथ्वीपरपड़कर दण्डवत्करी १५ उसपुरुषोत्तम श्रीकृष्णजीनेउसके बड़े बिलापको सुनकर आचमन करके उस ब्रह्मअस्त्र को दूरकिया १६ उस पवित्रात्मा अविनाशी श्रीकृष्णने उसके जीवनकीप्रतिज्ञा करी और सब संसारको सुनाकर कहा कि १७ हेउत्तरा मैं मिथ्या नहीं कहताहूं यह सत्यही होगा मैं इसको सब जीवोंके देखते हुये सजीव करताहूं १८ मैंने जैसे पूर्व स्वतन्त्रदशाओंमेंभी मिथ्यानहीं कहा है और कभी युद्धसे मुखभी नहीं मोड़ाहै इसी प्रकार यह स- जीव होजाय १९ जैसे कि धर्म और मुख्यकर ब्राह्मण मेरे प्यारे हैं उसी प्रकार मृतक उत्पन्नहुआ यह अभिमन्यु का पुत्र भी जी उठे २० जैसे कि मैं कभी अर्जुनसे बिरोधता नहीं किया चाहताहूं

उस सत्यतासे यह मृतक बालक जी उठे २१ जिस प्रकार सत्यता और धर्म सदैव मुझ में नियत है उसी प्रकार यह मराहुआ अभिमन्युका बालक पुत्रजी उठे २२ जैसे कि कंस और केशीको मैंनेधर्म से मारा अब उसी सत्यतासे यह बालक भी जीउठे २३ हेभरतर्षभ बासुदेवजी के इस बचनके कहतेही वह बालक चैतन्य होकर धीरे२ चेष्टा करने लगा २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिपरीक्षितसंजीवनेएकोनसप्ततितमोऽध्यायः ६९ ॥

सत्तरवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि हेराजा जब श्रीकृष्णजी ने ब्रह्म अस्त्रको निवृत्त किया तबवह महल तेरे पिताके तेजसे अत्यन्त प्रकाशमान हुआ १ इसकेपीछे सबराक्षस उस स्थान को छोड़ छोड़कर नाशमान होगये और अन्तरिक्षमें यह शब्द हुआ कि हेकेशवजी धन्यहै धन्य है २ तबवह प्रकाशमान अस्त्रभी ब्रह्माजी के पासगया हेराजाफिर तेरे पिताने प्राणोंको प्राप्तकिया ३ और वह बालक पराक्रम प्रसन्नताके समान चेष्टाकरनेलगा इसके पीछे वह भरतबंशियोंकी स्त्रियां प्रसन्न हुईं ४ फिर गोबिन्दजीकी आज्ञासे ब्राह्मणोंसे स्वस्तिबाचन कराया फिर उन सब प्रसन्नस्त्रियोंने श्रीकृष्णजीकी प्रशंसाकरी ५ जैसे कि नौकाको पाकरपार पहुंचनेवाला प्रसन्नहोताहै उसीप्रकार भरतबंशियोंकी स्त्रियां कुन्ती, द्रौपदी सुभद्रा, उत्तरा ६ और नरोत्तम लोगोंकी अन्य२स्त्रियां प्रसन्नचित्त होगईं वहांपर मल्ल नट ज्योतिषी सौख्य शावक ७ सूत और मागधोंके समूहोंनेउन श्रीकृष्णजी की स्तुतिकरी हेभरतबंशियों में श्रेष्ठ कौरवोंकी प्रशंसा कीर्त्ति और आशीर्बादोंसेभी श्रीकृष्णजी को प्रसन्न किया ८ फिर प्रसन्नचित्त उत्तराने अपनेपुत्रसमेत उठकर समयके अनुसार श्रीकृष्णजीको दंडवत्करी तबप्रसन्नहोकर श्रीकृष्णजीने बहुतसे रत्न उसकोदिये और इसीप्रकार अन्य२ यादवोंनेभी दिये हे महाराज प्रभु सत्यसंकल्प श्रीकृष्णजीने इसतेरे पिताकानाम नियतकिया अर्थात् अभिमन्युका

पुत्रनाशयुक्त कुलमेंउत्पन्नहुआहै ९।१०।११ इसहेतुसे इसकानाम परीक्षितहो हे राजा फिरवह तेरा पिता समयके अनुसार बड़ाहुआ और सबसंसारके चित्तका प्रसन्न करनेवालाहुआ हे बीर भरतबंशी जबतेरा पिता एकमहीनेका हुआ १२ । १३ तबपांडव बहुतरत्नोंको लेकर आये सब श्रेष्ठ वृष्णी लोग उन समीप आनेवाले पांडवोंको सुनकर नगरसेबाहरनिकले १४ मनुष्योंने मालाओंके समूहबिचित्र पताकाऔर नानाप्रकारकी ध्वजाओंसे हस्तिनापुरकोअलंकृतकिया पुरवासी और राज्यसेव कोंने अपने २ स्थानोंको अच्छेप्रकार से सुशोभित किया फिर बिदुरजीने पांडवोंके प्रियअभीष्टोंकी इच्छासे देवमन्दिरोंमें अनेक प्रकारके पूजनकरनेकी आज्ञादी औरराजमार्ग पुष्पोंसे अलंकृतहुये वह नगरभी समुद्रकी समान शब्दायमान होकर शोभायमानहुआ नाचनेवालेनर्त्तक और गानेवालोंके शब्दों से १५।१६।१७।१८ वह नगर कुबेर भवनोंके समानशोभायुक्तहुआ हेराजा स्त्रियों समेत सबबन्दीजनोंसे१९जहां तहांएकान्तस्थानभी शोभायमानहुये तबचारोंओरको वायुसे कंपायमान पताकाओंने२० उत्तरकौरव और दक्षिणकौरवनाम सूक्ष्म देशोंको दिखलाया उस समय राज्यके प्रबन्धक लोगोंने मनादीकी कि अब सब देशोंकी बिहार भूमि रत्न और भूषणोंसे अलंकृत होय २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिपांडवगमनेसप्ततितमोऽध्यायः ७० ॥

इकहत्तरवां अध्याय ॥

शत्रुविजयी वासुदेवजी उनसमीप आनेवाले पांडवों को सुनकर प्रधानमन्त्री और नातेदारों समेतचले १ वहसब मिलकर दर्शन की इच्छासे न्यायके अनुसार आगे चलके लेनेकोगये हे राजा वह पांडवधर्मके अनुसार वृष्णियोंसेमिलकर २ एक साथही हस्तिना- पुरमेंआये उसबड़ी सेनाके रथोंकी नेमि और घोड़ोंके खुरोंकेशब्दों से सब पृथ्वी आकाश और स्वर्ग पूर्ण होगये तब वह प्रसन्नचित पांडव प्रधान और मित्रोंसमेत धनोंको आगेकरके अपनेपुरमें प्रवे-

शितहुये औरन्यायके अनुसार राजाधृतराष्ट्र से मिलकर ३।४।५ अपनानाम वर्णनकरनेवालोंने उसके दोनोंचरणों को दंडवत्किया हेभरतर्षभ फिरउनलोगोंने धृतराष्ट्रकेपीछे गांधारी ६ और कुन्तीको नमस्कारकिया फिर वह बीरबिदुर और युयुत्सुकोपूजकर ७ उनसे पूजितहोकर शोभायमान हुये हेभरतवंशी तबउन बीरोंने तेरेपिता के उसअत्यन्तविचित्र और बड़ेअद्भुत अनुपमजन्मकोसुनाऔरज्ञानी बासुदेवजीके उसकर्मको सुनकर ८।९ पूजनके योग्य देवकीनन्दन श्रीकृष्णका पूजनकिया फिर थोड़ेदिनोंके पीछे बड़े तेजस्वी सत्यवतीकेपुत्र व्यासजी १० हस्तिनापुर नगरमें आये तब सब पांडवों ने वृष्णी और अंधकों समेत न्यायके अनुसार उनकापूजनकिया ११ और बर्त्तमानताकरी फिर वहां धर्म पुत्र राजा युधिष्ठिर ने नाना प्रकारकी कथाओंको अच्छीरीति से कहकर १२ व्यासजीसे यह बचन कहा कि हे भगवन् जो यह रत्नलाये गयेहैं वह सबआपही की कृपासेहैं १३ हे मुनि श्रेष्ठ मैं उन रत्नादिकोंको अश्वमेधनाम यज्ञमें व्ययकिया चाहताहूं और आपसे उसकी आज्ञाचाहताहूं हम सब आपके और महात्मा श्रीकृष्णजीके आधीनहैं १४ व्यासजी बोले कि जो शीघ्रकरना चाहतेहोतोमैं तुमको आज्ञादेताहूं कि करो दक्षिणावाले अश्वमेध यज्ञसे बिधिके अनुसार पूजनकरो १५ हे राजेन्द्र अश्वमेध यज्ञ सब पापोंका नाशकरनेवालाहै तुम इस यज्ञ से पूजन करके निस्सन्देह पापोंसे छूट जावोगे १६ वैशंपायनबोले कि हे कौरव्य व्यासजीके इसबचनको सुनकर उसकौरवराजयुधिष्ठिरने अश्वमेध यज्ञ करनेका बिचार किया १७ वार्त्तालाप करने में सावधान राजा युधिष्ठिरने वह सबव्यासजी को जतलाकर और बासुदेवजीसे मिलकर यह बचनकहा १८ हे पुरुषोत्तम देवीदेवकी तुमसरीखे शुभकीर्त्ति मान् पुत्रके होनेसे सुपुत्रवती बिख्यातहै हे महाबाहु जो मैं आपसेकहूं हे अबिनाशी इसस्थानपर उसकार्य्यको करो १९ हे यादवनन्दन हम आपके प्रभावसे इकट्ठे भोगोंकोभोगतेहैं आपकेही पराक्रम और बुद्धिसे यह पृथ्वी बिजय हुई है २०

तुम अपने को दीक्षितकरो आपही हमारे परमगुरूहो हे श्रीकृष्णा-जी आपके यज्ञकरनेपर मैं पापोंसे मुक्त होजाऊंगा २१ तुम्हींयज्ञहो अबिनाशीहो सर्बज्ञहो तुम धर्महो प्रजापतिहो और तुम्हींसबजीव-धारियोंके लय स्थानहो यह मेरी दृढ़बुद्धिहै २२ वासुदेवजी बोलेहे शत्रुबिजयी महाबाहु तुम्हीं ऐसा कहनेके योग्यहो तुम सवजीवोंकी गतिहो यह मेरीदृढ़बुद्धिहै २३ अब तुम कौरवबीरोंके धर्मसेविराज-मानहो हेराजा हम तुम्हारे आज्ञाकारीहै तुमहमारेराजा औरपरम गुरूहो २४ मेरी आज्ञासे तुम पूजनकरो यह यज्ञ तुमसे प्राप्तहोने केयोग्यहै हे भरतवंशी आप जहांचाहैं तहां हमको कार्य्यमें प्रवृत्त करो २५ हे निष्पाप राजायुधिष्ठिर मैं तुझसे सत्य २ प्रतिज्ञा करताहूं मैं तेरी सब आज्ञाओंको करूंगा तेरे पूजन करनेपर भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेवभीपूजन करनेवाले होयंगे२६॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिव्यासागमनेएकसप्ततितमोऽध्यायः ७१॥

बहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि श्रीकृष्णके इस प्रकारके बचनों को सुनकर धर्मपुत्र बुद्धिमान् युधिष्ठिरनेव्यासजीको समझमें करके यह बचन कहा १ कि जब आप अश्वमेध यज्ञका समय सिद्धांतसे जानतेहो तब मुझको दीक्षित करो मेरा यज्ञ आपके आधीनहै २ व्यासजी बोले कि हे कुन्तीके पुत्र मैं पैल और याज्ञवल्क्य तीनों मिलकर इस सब यज्ञको करेंगे जैसी जैसी कि बिधि समयके अनुसारहै ३ चैत्रकी पूर्णमासी के दिन तेरी दीक्षाहोगी हे पुरुषोत्तमतुम यज्ञके निमित्त सबसामग्री इकट्ठीकरो ४ अश्वबिद्या के ज्ञाता सूत और उसबिद्याके जानने वाले ब्राह्मणभी तेरी यज्ञसिद्धीके निमित्त उस पबित्रघोड़ेकी परीक्षाकरेंगे५शास्त्रके अनुसार उसघोड़ेको छोड़कर फिरवह घोड़ा तेरी प्रकाशमान शुभकीर्त्तिको दिखाता सागराम्बरा पृथ्वीपर घूमेगा ६ बैशंपायन बोले हे राजेंद्र इसप्रकारके व्यास-जीके बचनोंको सुनकर उस पृथ्वीपति युधिष्ठिरने बहुतअच्छा कह

कर जैसा जैसा कि ब्रह्मबादी व्यासजीने कहा वह सबकिया ७ हे राजा सबसामान भी तैयारहुये तबउसबड़े बुद्धिमान् धर्मपुत्र युधि-ष्ठिरने सामग्री इकट्ठीकरके ८व्यासजीसे प्रार्थनाकरी फिर महात-पस्वी व्यासजीने धर्मपुत्र युधिष्ठिर से कहा ६ कि हेकौरव हमसम-य और योगके अनुसार तेरेदीक्षित करनेमें तैयारहैं खड्ग लकड़ी कूर्च अर्थात् आसनके निमित्त पूर्णकुशा और जो अन्य प्रकार की बस्तुहैं वहभी स्वर्णमयी होनीचाहिये और जो२सुवर्णकी बस्तुहोयं उनकोभी तैयारकरवाओ और अब बिधिपूर्व्वक घोड़ाभी पृथ्वीपर छोड़दो १०।११ वहघोड़ा शास्त्रऔर बिधिके अनुसार अच्छीरीतिसे रक्षितहोकर चलेगा १२ युधिष्ठिर बोलेकि हेब्राह्मण जिसप्रकार यहछोड़ा हुआ घोड़ा इच्छानुसार इसपृथ्वीपर घूमेगा वहतन्त्रबि-धान कीजिये १३ हेमुनि पृथ्वीपर घूमनेवाले स्वेच्छाचारी उस घोड़ेकी कौनरक्षा करेगा आपउसके कहनेके योग्यहो।१४वैशंपायन बोले हे राजेन्द्र इसप्रकार युधिष्ठिरके बचनको सुनकर व्यासजीने उत्तरदिया कि भीमसेनका छोटाभाई सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ १५ बिजयका अभ्यासी क्षमावान् बुद्धिमान् जो अर्जुनहै वहइसकीरक्षा करेगा निबात कवचोंका मारने वाला वह अर्जुन पृथ्वीके भी बिज-य करनेको समर्थहै १६ उसकेपास दिव्यअस्त्र दिव्यकवच दिव्यध-नुष और दिव्यही दोतूणीरहैं वहउसके पीछे जायगा १७ हे श्रेष्ठ राजावही धर्मअर्थमें कुशल सब बिद्याओं मेंभी पंडित अर्जुन शास्त्र कीरीतिके अनुसार तेरे घोड़ेको घुमावेगा १८ वह श्याम कमल लोचन महाबाहु राजपुत्रअभिमन्युका पिता अर्जुन इसकीरक्षाकरे-गा १६ हे राजा तेजस्वी और बड़े पराक्रमी भीमसेन और नकुल देशकीरक्षामें समर्थहैं २० हे कौरव बुद्धिमान् बड़ा शुभ कीर्तिमान् सहदेव सबघरके कामोंका प्रबन्धकरेगा २१ इसप्रकार कहेहुये युधिष्ठिरने सब बातोंको न्यायके अनुसार किया और अर्जुनकोभी घोड़ेकी रक्षाके निमित्त शिक्षाकरी २२ युधिष्ठिर बोले हेबीर अर्जुन यहांआवो इसघोड़ेकी रक्षाकरो क्योंकि सिवायतुम्हारे दूसराकोई

मनुष्य घोड़ेकी रक्षाके योग्यनहींहै २३ हे पापोंसे रहित महाबाहु जो राजा तेरे सन्मुख होयंगे उनके साथमें जैसे प्रकारसे युद्ध न होय वही कामकरना चाहिये २४ हेमहाबाहु आपको सबराजाओं से यह कहनाभी योग्यहै कि यह मेरा यज्ञसब प्रकार राजाओंसेही है इस निमित्त समयपर आइये २५ वैशंपायन बोले कि उस धर्मात्मानेइस प्रकार अर्जुनसे कहकर भीमसेन और नकुलको नगरकी रक्षापर नियत किया २६ तब युधिष्ठिरने राजा धृतराष्ट्रसे पूछकर युद्ध करनेवालोंके अधिपति सहदेवको घरके कार्य्योंके प्रबन्ध करने में नियत किया २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिद्विसप्ततितमोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले इसके अनन्तर दीक्षावर्त्तमान होने के समय उन बड़े ऋत्विजोंने विधिके अनुसार राजाको अश्वमेध यज्ञके निमित्त दीक्षित किया १ वह महा तेजस्वी धर्मराज पांडवनन्दन युधिष्ठिर दीक्षित होके और पशु बन्धादिक धर्मोंको करके ऋत्विजों समेत शोभायमान हुआ २ आप बड़े तेजस्वी ब्रह्मबादी व्यासजीने अश्वमेधके लिये शास्त्र की बिधि से घोड़े को छोड़ा ३ हेराजा तबवह सुवर्णकी माला और कंठा रखनेवाला दीक्षित धर्मराज युधिष्ठिर देदीप्य अग्निके समान शोभायमान हुआ ४ फिर वह काला मृगचर्म पट वस्त्रसे अलंकृत दंड हाथ मेंलिये तेजस्वी धर्मपुत्र ऐसे शोभित हुआ जैसे कि यज्ञमें प्रजापति शोभित हुयेथे ५ हेराजा उसी प्रकार एकसी पोशाक रखनेवाले इसके सब ऋत्विज और अर्जुन भी देदीप्य अग्निके समान शोभायमान हुआ ६ हे भरतवंशी वह श्वेत घोड़े रखनेवाला अर्जुन उस श्यामकर्ण घोड़ेके पीछे चला ७ हे राजा प्रसन्नतायुक्त गोधांगुलित्र अर्थात् हस्तत्राणसे हाथोंको शोभित करनेवाला अर्जुन गांडीव धनुषको टंकारता उस घोड़े के पीछे चला ८।९ तब उस कौरवोत्तम चलनेवाले अर्जुनके देखनेके अभि-

लाषी नगरके बाल वृद्ध युवा सब स्त्री पुरुष वहां आये १० उस घोड़ेको और उसके पीछे चलनेवाले अर्जुनके देखनेके अभिलाषी लोगोंके परस्पर मर्द्दनसे ऊष्मा उत्पन्नहुई ११ हे महाराज इसके पीछे कुन्तीपुत्र अर्जुनके देखने वाले मनुष्योंके यह शब्द दिशा और आकाशको व्याप्त करके प्रकटहुए १२ कि यह तेजस्वी घोड़ा जाताहै १३ जिसके पीछे २ महाबाहु अर्जुन धनुषको स्पर्श करता हुआ जाताहै यह कहकर आशीर्वाद देनेलगे कि हे भरतबंशी तेरा कल्याण होय तुम कुशल पूर्व्वकजावो और फिर आनन्द पूर्व्वक आवो इसप्रकार कहनेवाले उन मनुष्योंकी बार्त्ताओंको बड़े बुद्धिमान् अर्जुनने सुना १४।१५ हे महाराज फिर दूसरे मनुष्योंने यह बचन कहा कि यह धनुष जो दृष्ट पड़ताहै इस धनुषको हमने किसी युद्धमें भी नहींदेखा १६ यह गांडीवधनुष भयकारी शब्दोंका रखनेवाला प्रसिद्धहै निर्भयता पूर्व्वक मार्गमें कुशलसे जावो विघ्न कोई मतहो १७ इसतेरे लौटने को देखेंगे निश्चय करके तू मंगल पूर्व्वक फिर आवेगा बड़े बुद्धिमान् भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ अर्जुननेमनुष्योंके और स्त्रियोंके ऐसे २ अनेक आशीर्वादात्मक बचनोंको सुना याज्ञवल्क्यका शिष्यजोकि यज्ञकर्ममें सावधान१८।१९ और वेदमें पूर्णथा वह शान्तीकेनिमित्त अर्जुनके साथचला हेराजा बहुतसेवेदके पारगामी ब्राह्मण और क्षत्रीलोग उसमहात्माके पीछेचले २० अर्थात् वह सब धर्मराजकी आज्ञासे बिधिपूर्व्वक साथचले हेमहाराज यह घोड़ा पांडवोंके अस्त्रोंके तेजसे बिजय किया हुआ पृथ्वीपर किसीदेशमें चला २१ हे बीर वहां अर्जुन के जो युद्धहुये उनबिचित्र और बड़े युद्धोंको तुझसे कहताहूं २२ अर्थात् हे राजा उस घोड़ेने पृथ्वीकी परिक्रमा इसक्रमसे प्रारंभकरी कि प्रथम उत्तरको ओर चला २३ वहां वह श्रेष्ठ घोड़ा राजाओंके देशोंको मर्द्दन करता हुआ धीरे२ चला तब महारथी अर्जुनभी उसके पीछेचला २४ हे महाराज वहां वह असंख्यक्षत्री जिनके बांधव पूर्व्वयुद्धमें मारेगये थे युद्ध करने लगे २५ किरात यवन आदिक बहुत धनुषधारी और

अनेक प्रकारके अन्य २ म्लेच्छ जो कि पूर्व युद्धमें बिजय कियेगये थे २६ और युद्ध दुर्मद अत्यन्त प्रसन्न चित्त सवारी रखनेवाले बहुतसे आर्य राजा लोग भी पाण्डव अर्जुनके सन्मुख आये २७ हे राजा इसप्रकार जहां तहांअर्जुन का युद्ध बहुत देशके राजाओं से हुआ २८ हे निष्पाप राजा जनमेजय अर्जुनके जोयुद्ध दोनों ओर सेबड़े प्रबल और अपूर्व्व हुये उनको मैं तुमसे कहताहूं २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेत्रिसप्ततितमोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि महारथी प्रसिद्ध पराक्रमी पांडवों के हाथ से जो त्रिगर्त्त देशीमारे गये उनके पुत्र और पौत्रोंसेभी अर्जुनका युद्धहुआ १ उनवीरोंने देशकी हद्द पर आनेवाले यज्ञके उत्तम घोड़े को जानकर कवचधारी शस्त्रयुक्त होकर चारोंओरसे घेरलिया२ हे राजा उन तूणीर बांधनेवाले रथ सवारोंने अच्छे अलंकृत घोड़ों के द्वारा घोड़ेको घेरकर पकड़ना प्रारंभ किया ३ हे शत्रुओंके बिजयकर्त्ता इस के पीछे वहां अर्जुनने उन्होंके कर्म करने की इच्छा को बिचारकर मधुरवाणीके साथ उन बीरोंको निषेधकिया ४ परंतु तमोगुण रजो गुणसे आच्छादित बुद्धिवाले उन सबने उसकीशिक्षा को तिरस्कार करके उसको बाणोंसे घायल किया तब अर्जुन ने उनको रोका ५ हेभरतबंशी फिर हंसतेहुये अर्जुनने उनसे कहा कि हे धर्मके नजाननेवालो लौटजावो जीवन ही अच्छाहै क्योंकि उसबीरको चलते समय धर्मराजने निषेध करदियाथा कि हे अर्जुन जिनके बान्धव मारे गयेहैं उन राजाओंको तू मतमारियो६।७तब उस अर्जुन ने बुद्धिमान् धर्मराजके बचनको स्मरण करके उनसे कहा कि लौटो परन्तु वह नहीं लौटे ८ इसके पीछे युद्धमें अर्जुन अपने बाणजालोंके द्वारा त्रिगर्त्त के सूर्य्यबर्मानामराजाको बिजय करके हंसने लगा ९ फिर वह त्रिगर्तदेशी रथ और रथ की नेमियोंके शब्दोंसे दिशाओं को शब्दायमान करते अर्जुनके सन्मुख

दौड़े १० इसके पीछे अस्त्रकी तीव्रता दिखाते हुये सूर्य्यबर्मा ने टेढ़े पर्ववाले सौ बाण अर्जुन पर छोड़े ११ इसीप्रकार जो दूसरे धनुषधारी उनके पीछेकी ओरथे उन लोगोंने भी अर्जुन के मारने की इच्छासे बाणोंकी बर्षाकरी १२ हे राजा फिर पांडव अर्जुनने धनुषकी प्रत्यंचासे छोड़ेहुये बहुत से बाणोंसे उनके बहुत बाणोंको काटा तब वह पृथ्वीपर गिर पड़े १३ फिर उनका छोटा भाई युवा-वरुथा तेजस्वीकेतुबर्मानाम अपने भाईके अर्थ उस कीर्त्तिमान् अ-र्जुनसे लड़नेलगा १४ युद्धमें सन्मुख आनेवाले उस केतुबर्माको देखकर शत्रुहन्ता अर्जुनने तीक्ष्ण बाणोंसे घायल किया १५ केतु-बर्माके घायल होनेपर महारथी धृतबर्माने रथकी सवारी से शीघ्र सन्मुख आकर बहुत से बाणोंसे अर्जुनकोढकदिया१६ महातेजस्वी पराक्रमी अर्जुन उसबालक धृतबर्माकी तीब्रता को देखकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ१७तब अर्जुनने उसकोबाणलेता और चढ़ाता हुआ नहीं देखा किन्तुबाणोंको छोड़ताही देखा१८युद्धमें अत्यन्त प्रसन्नहोकर अर्जुनने दोमुहूर्त तक मनसेउस धृतबर्माकी प्रसंशाकरी १९ फिर मंद मुसकानकरतेकौरवबीर महाबाहु अर्जुनने पतंगके समान उसक्रोध युक्त बालकको प्रीतिपूर्व्वक प्राणोंसे रहित नहीं किया २० तब उस प्रकार बड़े तेजस्वी अर्जुनसे रक्षित धृतबर्माने प्रकाशित बाणको अर्जुनपर छोड़ा २१ वह अर्जुन शीघ्रही उस बाणसे हाथपर घायल हुआ और गांडीवधनुष भी हाथसे छूटकर पृथ्वीपर गिरा २२ हे समर्थ भरतबंशी अर्जुन के हाथसे गिरते हुये धनुष का रूप इन्द्र-धनुषके समान हुआ २३ हेराजा उस बड़े युद्धमें उसबड़े दिव्य धनुषके गिरनेपर धृतबर्मा बड़े शब्दके साथहँसा२४तब तो क्रोधसे पीड़ित अर्जुनने हाथसे रुधिरको पोंछकर उस दिव्यधनुष को लिया और बाणोंकी बर्षा करने लगा २५ तबउस कर्मको प्रशंसा करनेवाले नाना प्रकारके जीवधारियोंके हलहला शब्द स्वर्गके स्पर्श करनेवाले हुये २६ इसके पीछे त्रिगर्त्तदेशी शूरबीरोंने उस कालरूप अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनको देखकर चारोंओर से घेर

लिया २७ फिर उनलोगोंने धृतबर्माकी रक्षाकेनिमित्त उसके सन्मुख जाकर बाणोंकी बर्षाकरी वहां अर्जुन क्रोध युक्त हुआ २८ उस समय अर्जुन ने इन्द्र बज्रके समान बहुतसे लोहे के बाणोंसे उनके अठारह शूरबीरोंको बड़ी शीघ्रता से मारा २९ उन छिन्न भिन्नोंको देखकर हंसते हुये शीघ्रता करनेवाले अर्ज्जुनने बिषैले सर्प्पोंकी सूरत बाणोंसे मारा ३० हेराजा अर्जुनके बाणोंसे पीड़ामान टूटे चित्त वह सब त्रिगर्त देशी दिशाओंको भागे ३१ और शपथखाने-वाले क्षत्रियोंके मारनेवाले उस पुरुषोत्तम अर्जुनसे कहा कि हम सब तेरे आज्ञाकारी हैं और तेरी आधीनता में नियत हैं ३२ हे कौरवनन्दन अर्जुन हम झुके हुये नियत आज्ञाकारियोंको आज्ञा दो हमतेरे सब अभीष्टोंको करेंगे ३३ तब अर्जुनने उनके इसबचन को सुनकर उनसे कहा कि हेराजालोगो तुम अपने जीवनकीरक्षा करो और मेरी आज्ञाको स्वीकार करो ३४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेचतुःसप्ततितमोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इसके पीछे वह उत्तम घोड़ा प्राग्ज्योतिष देशमें पहुंचकर घूमा वहां भगदत्तका पुत्रजोकि युद्धमें बड़ासाहसी था नगरसे बाहर निकला १ हेभरतबंशी वहराजा बज्रदत्तदेशकी सीमापर बर्त्तमान घोड़ेको देखकर युद्धकरने लगा २ वह राजा बज्रदत्त नगरसे बाहर निकलकर आतेहुये घोड़े को लेकर नगरकी ओरकोचला तब कौरवों में श्रेष्ठ महाबाहु अर्जुन उसको देखकर गांडीवधनुषको टंकारता शीघ्रही उसकेसन्मुखगया३।४फिरगांडीव धनुष से छूटेहुये बाणोंसे मोहित वह बीर राजा उस घोड़े को छोड़ कर अर्जुनके सन्मुखगया ५ फिर युद्धमें साहसी वह राजा नगरमें प्रवेशकर अपने कवचको धारण करके बड़े हाथी पर चढ़कर निकला६वह महारथी मस्तक पर पांडुरबर्ण छत्रको धारण किये चलायमान श्वेत चमरसे शोभायमानथा ७ फिर उसने पांडवोंके

महारथी अर्जुन को पाकर लड़कपन और अज्ञानता से उसको युद्धमें बुलाया ८ उस क्रोधयुक्त राजा ने गंडस्थल से मद झाड़ने वाले पर्वताकार हाथीको अर्जुनकेऊपरपेला ९ वह बड़े बादल के समान मद झाड़नेवाला शत्रु के हाथियों का रोकनेवाला शास्त्रके अनुसार तैयार युद्ध में दुर्म्मद और स्वाधीनता में न होनेवाला था १० तब उस राजा के अंकुशसे चलायमान वह बड़ा पराक्रमी हाथी बादलकी समान उड़ताहुआ दिखाई पड़ा ११ हे भरतवंशी राजा जनमेजय उसपृथ्वीपर नियत क्रोधयुक्त अर्जुनने उस आते हुये हाथीको देखकर उस गजारूढ़से युद्धकिया १२ तबक्रोधयुक्त बज्रदत्तने टीड़ियोंके समान शीघ्रगामी अग्निके समान तोमरों को शीघ्र अर्जुनपर छोड़ा १३ तब अर्जुनने गांडीव से उत्पन्न आकाश-गामी बाणोंसे आकाशहीमें उन अपने पास न आनेवाले बाणोंको दोदो तीन२ खंडकरदिये उस भगदत्तकेलड़केने उसप्रकार काटेहुये उन तोमरोंको देखकर शीघ्रही पारहोनेवाले बाणों को अर्जुन पर चलाया१४ । १५ तदनन्तर अत्यंत क्रोधयुक्तअर्जुनने शीघ्रही सुबर्ण पुंखसीधे चलनेवाले बाणोंको उसबज्रदत्त पर चलाया १६ उसबड़े युद्धमें बाणोंसे घायल और अत्यन्त घातित वह महातेजस्वी बज्र-दत्त पृथ्वीपर गिरपड़ा परन्तु स्मरणशक्ति और चित्तकी सचेतताने उसको त्याग नहीं किया १७ इस के पीछे उस सावधान बिजया-भिलाषीराजाने उस श्रेष्ठतमहाथीको युद्धमेंफिर अर्जुनपरभेजा १८ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने अग्निकेसमान बिषैले सर्पोंकी समान बाणोंकोउसपर चलाया १९ तबउससे घायलवहबड़ाहाथी रुधिरको गिराता ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि जल रखनेवाला गेरूकापर्वत धातुओंसे युक्तबहुत से झिरनोंको गिराताहुआ शोभित होताहै २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेपंचसप्ततितमोऽध्यायः ७५ ॥

—※—

छिहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे भरतर्षभ इस प्रकार से अर्जुनका वह युद्ध राजा वज्रदत्तके साथतीन दिनतक ऐसाहुआ जैसेकि इन्द्रका और वृत्रासुरका युद्धहुआथा १ फिर चौथेदिन बड़ापराक्रमी वज्रदत्त बड़ेशब्दसे हंसा और यहबचन बोला कि २ हेअर्जुन ठहरो मुझसे जीवता नहीं छूटेगा में तुझको मारकर विधिके अनुसार पिताका तर्पणकरूंगा ३ तेरेपिताका मित्र मेरापिताभगदत्त तेरेहाथसे मारा गया इसवृद्ध व्यवहारकेद्वारा तुममुझ बालकसे युद्धकरो ४ हे कौरव अत्यन्त क्रोधयुक्त राजावज्रदत्तने इसप्रकारसे कहकर हाथीको अर्जुनके ऊपर भेजा ५ बुद्धिमान् वज्रदत्तका भेजा हुआ गजराज आकाश को उछलता अर्जुन की ओरको दौड़ा ६ उस गजराजने सूंड़से छोड़े हुये जलकणों से अर्जुन को ऐसे भिगोया जैसे कि बादल नीलपर्व्वत को भिगोताहै ७ उस राजाका भेजा हुआ बादल की समान अत्यन्त गर्जता हुआ वह हाथी मुख के बड़े शब्दको करके अर्जुन केसन्मुखदौड़ा ८ हे राजा वज्रदत्तके प्रेरित नाचतेहुये उस गजराजने शीघ्रही कौरवोंके महारथी को पाया ९ वह शत्रुओंका मारनेवाला पराक्रमी अर्जुन उस आतेहुये बज्रदत्त के हाथीको देखकर अपने गांडीव के आश्रित होकर कंपायमान नहींहुआ १० हेभरतबंशी राजा जनमेजय वह पांडव अर्जुन अपने विघ्नकर्त्ता और प्राचीन शत्रुता को स्मरण करके उस पर अत्यन्त क्रोध युक्तहुआ ११ इसकेपीछे क्रोधभरे अर्जुननेबाण जालोंसे उस हाथी को ऐसेरोंका जैसेकि समुद्रको मर्यादा रोकतीहै १२ अर्जुन से रोकाहुआ वहहाथियोंमें श्रेष्ठतम शोभायमान हाथी बाणोंसेबिदीर्ण अंगऐसे नियतहुआ जैसेकि शलाकामें पिरोयाहुआ स्वाविtनाम मृगहोताहै १३ फिर क्रोधसे मूर्च्छामान राजावज्रदत्तने उस रोकेहुये हाथीको देखकर अर्जुनपर तीक्ष्णबाणोंको छोड़ा १४ महाबाहु अर्जुननेभीशत्रुओंके नाशकरनेवालेबाणोंसेउनबाणोंको हटाया

वह आश्चर्यसाहुआ १५ इसकेपीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्राग्ज्योतिषके राजाने पहाड़के समान हाथीको भेजा १६ इंद्रके पुत्रपराक्रमी अर्जुनने उसआतेहुये हाथीकोदेखकर अग्निकेसमान नाराच नामबाणोंको हाथीपरछोड़ा १७ हेराजाउससे मर्मस्थलोंपरघायल होकर वहहाथी अकस्मात् पृथ्वी परऐसा गिरपड़ा जैसेकि बज्रसे टूटा पर्वतगिरताहै १८ अर्जुनकेहाथोंसे घायल वहहाथी गिरता हुआ ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि बज्रसे पीड़ामान पृथ्वीपरगिरताहुआ बड़ा पर्वत होताहै १९ बज्रदत्तके उस हाथीके गिरनेपर अर्जुनने उस पृथ्वीपर वर्त्तमान राजासे कहा कि डरना न चाहिये २० महातेजस्वी युधिष्ठिरने मुझचलनेवालेसे कहाहै कि हेअर्जुन तुमको किसी दशामें भी राजालोगोंको मारना उचितनहींहै २१ हेनरोत्तम अर्जुन युद्धमें शूरबीर लोगोंको भी तुझको मारनायोग्य नहींहै इतनेही कर्मसे यहसब होताहै २२ सब राजाओंको उनके मित्र बांधवों समेत समझाना चाहिये कि युधिष्ठिर का अश्वमेध यज्ञ आपलोगोंसे सुशोभितहोय २३ हेराजा भाईके इसबचनको सुनकर मैं तुझको नहीं मारताहूं उठ तुझको भयनहींहै कुशलपूर्वक जावो २४ हेमहाराज चैत्रमहीनेकी पूर्णमासीको युधिष्ठिरका यज्ञ होगा उस समय आप लोगोंको आना योग्यहै २५ तब अर्जुन से पराजितहोकर अर्जुन केइस बचनकोसुनकर राजाबज्रदत्त ने कहा कि ऐसाही होगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकपर्वणिअश्वानुसारबज्रदत्तपराजयेषटसप्ततितमोऽध्यायः७६॥

सतहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायनबोले हेमहाराज इसकेपीछे अर्जुनकायुद्ध उनसिंधदेशियोंकेसाथहुआ जो कि मरनेसे शेषबचे और मरनेवालोंके सैकड़ों नातेदारथे १ यहराजालोग अर्जुनको देशमें प्रवेशितहुआ सुनकर उसको न सहकर उसके सन्मुखगये २ उनविषके समान राजाओं

ने देशकी सीमापर उस घोड़े को पकड़कर भीमसेन के छोटे भाई अर्जुनसे भय नहीं किया ३ उन्होंने यज्ञके घोड़ेकेपास पदाती नियत हुये धनुषधारी अर्जुनको पाया ४ प्रथम युद्धमें पराजित बिजयके अभिलाषी बड़े पराक्रमी उनराजाओंने उस नरोत्तम अर्जुनको चारों ओरसे घेरलिया ५ तब अपने नाम गोत्र और नानाप्रकारके अपने कर्मों को बर्णन करते उन राजाओंने बाणोंकी बर्षा से अर्जुन को ढकदिया ६ हाथियोंके रोकनेवाले बाणसमूहोंको फैलातेयुद्धमें बिजय चाहते उनलोगोंने अर्जुनको चारोंओरसे घेरलिया ७ उनसब रथसवार बीरोंने युद्धमें उस असह्यकर्मी अर्जुनको बिचारकर उस पदातीसेही युद्धकिया ८ उन्होंने उस निवातकवचोंके संसप्तकोंके और जयद्रथके नाशकर्त्ता बीर अर्जुनको घायलकिया फिर हजार रथ और दशहजार घोड़ोंसे उस अर्जुनको घेरकर अत्यन्त प्रसन्न चित्त हुये ९। १० हे कौरव युद्धमें सिन्धके राजा जयद्रथ के उस मारनेको स्मरण करते उनसब बीरोंने ११ बादलकी बर्षाकेसमान बाणोंकीवर्षाकरी उनबाणोंसे ढकाहुआ अर्जुनऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि बादलके मध्यमें सूर्य शोभित होताहै १२ हे भरतबंशी बाणों से ढकाहुआ वह अर्जुन ऐसा दिखाई दिया जैसे कि पिंजरेमें घूमनेवाला पक्षीहोताहै १३ फिर बाणोंसे अर्जुनके पीड़ामान होनेपर सबत्रिलोकी हाहाकार रूपहुई सूर्य्य की प्रभाजाती रही १४ इसके अनन्तर रोमांचका खड़ा करनेवाला बायुचला और एकहीसमयमें राहुने सूर्य्य और चंद्रमाको ग्रसा १५ हेराजा उल्का सूर्य्यको घायलकरके चारोंओरकोफैलगई इसीहेतुसे कैलासनाम बड़ापर्बत कंपायमान हुआ १६ भयभीत औरदुःख शोकसे युक्त सप्तऋषि और देवऋषियों नेभी अत्यन्त उष्णश्वासाओंको छोड़ा १७ तदनन्तर उल्का चन्द्रमंडलको चीरकर आकाशसे गिरी और सब दिशा भी बिपरीत रूपऔर सधूम होगईं १८ धुंधले और अरुण बर्ण वाले इन्द्रधनुष औरबिजलीसे युक्तबादलोंने आकाशकोव्याप्तकरके मांस और रुधिरको बरसाया १९ हे भरतर्षभ उस बाणोंकी बर्षा

से बीर अर्जुनके ढकजानेपर ऐसा वृत्तान्त हुआ यहबड़ा आश्चर्य्य साहुआ २० उस बाणजालसे सबओरको ढकजानेवाले उस अर्जुन के मोहसे गांडीवधनुष गिरपड़ा औरहाथसे हस्तत्राणभी गिरपड़ा २१ तबसिंधु देशियोंने शीघ्रही उस मोहयुक्त अचेत महारथी पर बाणजालोंकोछोड़ा २२ इसके पीछेचित्तसेभयभीत देवता अर्जुनको अचेत जानकर उसकीशान्ती करने वालेहुये २३ फिर सबदेवऋषि सप्तर्षि और महर्षियोंने बुद्धिमान् अर्जुनकी पूर्ण बिजयका जय किया २४ हे राजाफिर देवताओंसे अर्जुन तेजप्रकाशमान होनेपर वहमहाअस्त्रज्ञ बुद्धिमान् अर्जुन युद्धभूमिमें पर्व्वतके समान खड़ाहुआ २५ और शीघ्रही अपने धनुषको खेंचा उसका बड़ाभारी शब्द बारंबार यन्त्रके समान हुआ २६ फिर उससमर्थ अर्जुनने धनुषसे बाणोंकी बर्षाको शत्रुओंके ऊपर ऐसे बरसाया जैसे कि इन्द्रजलकी वर्षाको करताहै २७ इसके पीछे वहसब सिंधुदेशी शूरबीर अपने२ राजाओं समेत बाणोंसे ढकेहुये ऐसेदिखाई नहीं दिये जैसेकि टीड़ियोंसे युक्त वृक्ष अदृष्टहोतेहैं सबलोग भयसेपीड़ित होकर भागे बहुतसे शोकसे दुःखीलोगोंनेनेत्रोंसे अश्रुपात किया और शोकभी किया २८।२९ हेनरोत्तमराजा जनमेजयवहपराक्रमीअर्जुनअलातचक्र के समान उन सब सिंधुदेशियों के चारोंओर को घूमा और बाणजालोंसे ढकदिया ३० उसशत्रुहन्ता अर्जुनने वज्रधारी इन्द्रके समान उस बाणजालको जोकि इन्द्रजालके समानथा सबदिशाओं में फैलाया ३१ वह कौरव्य अर्जुन उस मेघजालरूपी सेनाको बाणोंसे चीरकर ऐसे शोभायमानहुआ जैसे कि शीतऋतुमें कुहरको काटकर सूर्य्यशोभित होताहै ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेसैंधवयुद्धे सप्तसप्ततितमोऽध्यायः ७७ ॥

अठहत्तरवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोलेकि इसकेअनन्तर युद्धमें निर्भय गांडीवधनुषधारी शूर अर्जुन युद्धके लिये सन्मुख नियत हिमालय पर्व्वतके समान

शोभायमान हुआ १ हे भरतबंशी वह सिन्धुदेशी शूरबीर फिर भी नियतहुये और बड़े क्रोधित होकर बाणोंकी बर्षाको छोड़ा २ महा बाहु अर्जुनने हंसकर उनफिर सन्मुख होनेवाले मरणकी इच्छावाले शूरबीरोंसे मधुर भाषणसे यह बचनकहा कि बड़ीसामर्थ्यसेयुद्धकरो मेरे विजय करनेमें उपायकरो ३ सबकर्मोंको करो तुमको बड़ाभय उत्पन्न हुआहै मैं इस बाणबन्धन को हटाकर सबसे युद्धकरूंगा ४ युद्धमें प्रवृत्त होकर नियत होजाओ मैं तुम्हारे अभिमानोंको दूरकरूंगा तब कौरव अर्जुनक्रोधसे इतना कहकर उस बड़े भाईके बचन को स्मरण करके कि हे तात बिजयाभिलाषी क्षत्री युद्धमें न मारने चाहिये ५।६ औरमहात्मा धर्मराजनेयहभीसमझायाहै किबिजयकरना चाहिये तब उसपुरुषोत्तम अर्जुनने यहबिचारकियाकि मुझसे महाराज युधिष्ठिरने ऐसा कहाहै कि राजा लोगोंको न मारना चाहिये धर्मराजका यहशुभ बचन कैसे मिथ्या होगा ७।८ राजालोग न मारेजायें और राजायुधिष्ठिरकीआज्ञामानीजाय तब उस धर्मज्ञपुरुषोत्तम अर्जुनने ऐसाबिचारकर उनयुद्धमें दुर्मद सिन्धु देशियोंसे यह बचनकहाकि मैं तुम्हारी वृद्धिको कहताहूंकि मैं तुमसब नियतोंको नहीं मारूंगा ९।१० युद्धमें पराजितहोकर जो पुरुषकहैगा कि मैं तेरा हूं उसकोनहीं मारूंगा इसमेरे बचनकोसुनकर अपनी कुशलबिचारो ११ उसके बिपरीतकर्मीहोनेपर तुम आपत्तिमें फंसकर मुझसेपीड़ित होगे उनवीरोंसे ऐसाकहकर अत्यन्त क्रोधयुक्त कौरवोत्तमअर्जुन १२ उन अत्यन्तक्रोधभरे बिजयके अभिलाषी सिन्धुदेशियोंके साथयुद्ध करनेलगा हेराजा तबसिन्धुदेशियोंने दृढ़पर्ववाले एकलाखबाणअर्जुन परछोड़े उसअर्जुनने धनुषसे निकलनेवाले निर्दयी बिषैलेसर्पकीसमानबाणोंको १३।१४ अपनेतीक्ष्णबाणोंसेमध्यहीमेंकाटा उनतेजधार बाणोंकोशीघ्रकाटकर १५ युद्धमें प्रत्येकको तीक्ष्णबाणोंसे छेदाइसके पीछेसिन्धुदेशी राजाओंनेमरेहुये जयद्रथको स्मरणकरके फिर प्रास औरशक्तियोंको अर्जुनपरफेंका १६ महाबली अर्जुनने उन सबकेसंकल्पोंको निष्फल किया १७ तब पांडव उनसबको मध्यमेंही काटकर

गर्जा उसीप्रकार उन विजयाभिलाषी आतेहुये शूरबीरोंके शिरोंको भी टेढ़पर्ववाले भल्लोंसे गिराया फिरभी उनभागते सन्मुखदौड़ते १८।१९ और लौटते शूरबीरोंके शब्दपूर्ण समुद्र के समान हुये तब बड़े तेजस्वी अर्जुनसेघायल उन लोगोंने पराक्रम और प्रसन्नताके समान अर्जुनसे युद्धकिया फिर वह लोग युद्धभूमि में अर्जुन के टेढ़े पर्ववालेबाणोंसे२०।२१बहुधामरेअचेतम्लान सवारी औरसेनावाले हुये तबधृतराष्ट्रकीदुःशलानाम पुत्री उनसबकोपरिश्रमसे पीड़ामान जानकर २२ अपनेपौत्र सुरतके पुत्रबीर बालकको लेकर रथकी स वारी से चली २३और सब जीवोंकी शान्तीके अर्थ पांडव अर्जुनके पासगई और अर्जुनके पास जाकर बड़े शब्द से रोनेलगी प्रभु अ- र्जुननेभी उसको देखकर धनुषको रखदिया और धनुषको छोड़कर विधिके अनुसार अपनी बहिनसे कहा २४ । २५ कि क्याकरूं तब उसने उत्तरदिया कि हे भरतबंशियों में श्रेष्ठ अर्जुन तेरे भानजेका यह पुत्रबालक २६ तुझको नमस्कार करताहै हे पुरुषोत्तम तुमइस को देखो तब इस प्रकार कहेहुये अर्जुन ने उसके पिताका वृत्तान्त पूछा २७ कि वह कहांहै फिर दुःशलाने कहा कि पिताके शोकसे दुःखी और अचेततासे पीड़ामान इसका पिता२८ बीरजैसे किमृत्यु बशहुआ उसको तुम मुझसे सुनो हे निष्पाप वह प्रथम युद्धमें तेरे हाथसे मराहुआ अपनेपिताको सुनकर २९ औरतुझको यज्ञके घोड़े के पीछे आयाहुआ सुनकर पिताके शोक रूपी रोगसे पीड़ितहोकर अपने प्राणोंका त्यागकिया ३० हे निष्पाप अर्जुन आया इसप्रकार तेरे नामको सुनतेही अचेततासे पीड़ामान मेरा पुत्र पृथ्वीपर गिरा और मरा ३१ हे प्रभुवहां उस गिरेहुये को देखकर और उसके पुत्रको लेकर अवशरणकी इच्छासेतेरे पासआईहूं ३२ उसधृतराष्ट्र की पुत्रीने इसप्रकार के वचनोंको कहकर पीड़ित शब्दोंको किया और महादुःखोंने उसनीचाशिर करनेवाले अर्जुनसे यह बचनकहा ३३ हेधर्मज्ञ अर्जुन अपनी बहिन और भानजेके पुत्रको देखो और करुणा करने के योग्यहो ३४ उस दुर्योधन और अभागे जयद्रथ

को बिस्मरण करके दयाकरो जैसे कि अभिमन्युका पुत्रशत्रुओंके बीरोंका नाश करनेवाला परीक्षित उत्पन्न हुआहै ३५ उसीप्रकार सुरथासे यह मेरा पौत्र बीर उत्पन्न हुआहै हे नरोत्तममैं उसकोले-कर सब शूरबीरोंकी शान्तीके लिये तेरे पास आई हूं ३६ इस मेरे बचनकोसुन हे महाबाहु उस अभागेका यह पौत्र आयाहै ३७ इस हेतुसे तुम इसबालकपर कृपाकरने को योग्यहो हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले यह बालक शान्तीके लिये शिरसे प्रसन्न करके ३८ तुम से प्रार्थना करताहै कि हे महाबाहु अर्जुन शान्तीको प्राप्त होजाओ हे धर्मज्ञ अर्जुन इस मृतक बान्धववाले अज्ञान बालकके ऊपर ३९ कृपाकरो क्रोधके बशीभूत मतहो इसके उसनीचनिर्दयीबड़े अपराधी पितामहको बिस्मरण करके ४० कृपाकरने के योग्यहो इसप्रकार दुःशलाके करुणा बिलाप करनेपर ४१ दुःखशोकसे पीड़ामानक्षत्री धर्मकी निन्दा करतेहुये अर्जुनने राजा धृतराष्ट्र और देवीगान्धारी को स्मरण करके यह कहा कि ४२ मैंने जिस क्षत्रीधर्मके कारण से सबबांधव यमलोकमें पहुंचाये उसको धिक्काररहोय इसप्रकारके अनेकविश्वासित बचन कहकर अर्जुनने कृपाकरी ४३ और बहुत प्रसन्नतासे उससे मिलकर उसको घरमें भेजदिया ४४ शुभमुखी दुःशलाभी उनशूरबीरोंको युद्धसे हटाकर और अच्छीरीतिसेपूजकर घरको गई ४५ वह अर्जुन इस प्रकार से उन सिन्धुदेशी बीरोंको विजय करके उस स्वेच्छानुसार बिचरते और दौड़नेवाले घोड़ेके पीछेदौड़ा ४६ इसके अनन्तर वह बीर विधिके अनुसार उसघोड़ेके पीछे ऐसे चला जैसे कि पिनाकधनुषधारी देवता आकाशमें मृग रूपी यज्ञके पीछे चलेथे ४७ वह घोड़ा अर्जुनके कर्मकी वृद्धि करता इच्छा और अभीष्ट के अनुसार क्रमपूर्वक उन २ देशोंमें घूमा हे पुरुषोत्तम वह इस प्रकारसे घूमता हुआ घोड़ा अर्जुन समेत राजा मणिपुरके देशमें आया ४८।४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेसैंधवपराजयोनामअष्टसप्ततितमोऽध्यायः ७८ ॥

उन्नासीवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोलेकि राजा बभ्रुवाहन आयेहुये पिताको सुनकर बड़ी नम्रता पूर्वक नगरसे निकला जिसकेअग्रवर्त्ती ब्राह्मण लोग और धनथा क्षत्री धर्मको स्मरण करते उस बुद्धिमान् अर्जुनने इस प्रकारसे आयेहुये राजा बभ्रुबाहनको प्रसन्न नहींकिया१।२उसक्रोध युक्त धर्मात्मा अर्जुनने कहाकि यहतेराकर्म अयोग्य नहींहै तू क्षत्री धर्मसे रहितहै ३ हेपुत्र युधिष्ठिरके अश्वमेध यज्ञके रक्षाकरने वाले और देशकी सीमापर मुझ आनेवालेसे युद्ध क्योंनहीं किया४ तुझ दुर्बुद्धी क्षत्री धर्मसे रहितको धिक्कारहै जोयुद्धके निमित्त सन्नद्ध मुझ आनेवाले को सामधर्मसेही लिया हे दुर्बुद्धी नीच मनुष्य जो शस्त्र से रहित मैं तुझसे मिलताता यह तेराकर्म योग्यथा पतिसे कहेहुये उस बचनको जानकर सर्पकीपुत्री५।६।७उलूपी उसबचनको न सहती पृथ्वीको चीरकर पासआई और हेराजा वहां आकर उसने नीचाशिर कियेहुये विचार करतेहुये अपने पुत्रको युद्धाभिलाषी अपने पितासे बारंबार धिक्कार युक्त देखा इसके पीछे उस प्रसन्नाङ्ग सर्पकी पुत्री उलूपीने उस धर्ममें सावधान अपने पुत्रसे यह धर्मरूप बचन कहाकि हेपुत्र तुम मुझ सर्पकी पुत्री उलूपीको अपनीमाताजानो८।९।१०पिताका कहनाकरो तेराबड़ाधर्महोगा तूइसयुद्धदुर्मदअपने पिता अर्जुनसे युद्धकर११यह इसीरीतिसे तुझपरनिस्सन्देह प्रसन्न होगा हे भरतर्षभ इसप्रकार मातासे दुर्मन्त्रित महातेजस्वी राजा बभ्रुबाहनने १२ युद्धके निमित्त बिचारकिया सुबर्णका कवच और सूर्य्य की समान प्रकाशमान शिरस्त्राणको शरीरमें शोभित करके सैकड़ों उत्तम तूणीरोंसे युक्त उस उत्तम रथपर चढ़ा जोकि सर्व युद्धके सामानोंसे युक्त और मनके समान शीघ्रगामी घोड़ोंसे युक्त १३।१४ चक्रादिक सामानों समेत शोभायमान होकर सुबर्ण के भूषणोंसे अलंकृतथा वह राजा बभ्रुवाहन अत्यंत पूजित सुबर्ण की सिंह ध्वजा को ऊंचा करके १५ और अर्जुन को शत्रुमानकर

यात्रा करनेवालाहुआ इसके पीछे उस बीरने समीप आकर अर्जुन से रक्षित उस यज्ञके घोड़ेको १६ उन मनुष्योंसे पकड़वाया जोकि अश्वशिक्षा में कुशलथे उस प्रसन्नचित्त पृथ्वीपर नियत अर्जुनने पकड़ेहुये घोड़ेको देखकर १७ युद्धमें रथारूढ़ अपने पुत्रको रोका वहां उस बीर राजाने उस बीर अर्जुनके तीक्ष्ण और विषैले सर्पके समान बाणोंके समूहोंसे पीड़ितकिया उन प्रीतिमान दोनों पिता पुत्रोंका बड़ायुद्ध बहुत बढ़कर देवासुरोंके युद्धके समान हुआ उसहंसतेहुये बभ्रुबाहनननेनरोत्तमअर्जुनको टेढ़ेपर्ववालेबाणसे यन्त्रस्थानपर घायल किया वह बाण पुंखसमेत उसके यन्त्रस्थानमें ऐसे समागया जैसेकि बामीमें सर्प समाजाताहै १८ । १६ । २० २१ वह अर्जुनको घायल करके पृथ्वी में प्रवेश करगया उसके बाणसेअत्यन्तपीड़ामानबुद्धिमानअर्जुन उत्तमधनुषकासहारा लेकर हार्द्दाकाशनिवासी ईश्वरमें प्रवेश होकर मृतकके समान होगया २२ फिर उस महा प्रतापी इन्द्रके पुत्र पुरुषोत्तम अर्जुनने सचेतता को पाकर पुत्रकी प्रशंसा करके यह बचन कहा हेचित्राङ्गदाकेपुत्र महाबाहु प्यारेपुत्र धन्यहैधन्यहै तेरे कुलकेसमान कर्मको देखकरमैं प्रसन्नहूं २३।२४ अबमैं तुझपर बाणोंकोछोड़ताहूं हेपुत्रयुद्धमें नियत होजाओ वह शत्रुओंका नाशकरनेवाला इसप्रकारसे कहकर नाराचों की बर्षा करनेलगा २५ उस राजाने गांडीव धनुषसे छोड़े हुये वज्र बिजलीके समान प्रकाशित सब नाराचोंको अपने भल्लोंसे टुकड़े २ करदिया २६ अर्जुनने दिव्य बाणोंसे उसकीध्वजाको जोकि स्वर्णमयी और सुवर्णके तालवृक्षके समानथी रथसे काटकर गिरादिया २७ हेशत्रुओंकेजीतनेवाले राजाजनमेजय हंसतेहुये अर्जुनने उसके वह घोड़े जोकि बड़ेऊंचे और शीघ्रगामीथे उनको निर्जीवकिया २८ उस अत्यन्त क्रोधयुक्त राजानेरथसे उतरकर पदाती होकर अपने पिता अर्जुनसे युद्धकिया २९ उस बज्रधारीके पुत्र पांडवों में श्रेष्ठपुत्र के पराक्रमसे प्रसन्न अर्जुनने अपने पुत्रको अत्यन्त पीड़ामानकिया ३० पिताको बिमुख मानतेहुये उस पराक्रमी बभ्रुबाहनने बिषैले

सर्पकी समान बाणोंसे पिताको फिर पीड़ामानकिया ३१ इसकेपीछे उस बभ्रुबाहनने बालकपन से सुन्दरपुंखवाले तीक्ष्णबाणोंके द्वारा अर्जुनको हृदयपर कठिन घायलकिया ३२ हे राजा वह अत्यन्त पीड़ा उत्पन्न करनेवाला बाण मर्मस्थलको काटकर अर्जुन केशरीर में प्रवेश करगया उस पुत्रपर अत्यन्त क्रोधयुक्त वह कौरवनन्दन ३३ अर्जुन मोहसे पीड़ामान अचेतहोकर पृथ्वीपर गिरपड़ा फिर उस कौरवोंके धुरन्धरबीर के गिरने पर ३४ उस चित्रांगदाके पुत्रने भी अचेतताको पाया, अर्थात् युद्धमें परिश्रमकरके औरपिताको मृतक हुआ देखकर ३५ पहलेही अर्जुन के बाण समूहोंसे अत्यंत घायल वह राजाभी युद्धमें पृथ्वीका सहारा लेकर गिरपड़ा ३६ पतिको मृतक और पुत्रको पृथ्वीपर गिराहुआ देखकर बड़ी शीघ्रतासे चित्रां-गदा युद्धभूमिमें आई ३७ शोकसे अत्यंतदुखी रुदनकरती अत्यंत कम्पायमान बभ्रुबाहनकी माता ने मृतक पतिको देखा ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअश्वानुसारेअर्जुनपराजयएकोनाशी-तितमोऽध्यायः७९ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि इसके अनन्तर वह कमल लोचनाभी बहुत प्रकारका बिलाप करके दुखसे पीड़ित और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी १ उस दिव्यरूपरखने वाली देवीने सचेतताकोपाकर उस सर्पकी पुत्री उलूपीसे यह बचनकहा २ कि हेउलूपी तेरेकारण मेरे पुत्रके बाणसे युद्धमें मृतक शयन करने वाले मेरे पतिको देख ३ निश्चय करके तू धर्मज्ञोंमें श्रेष्ठ होकर पतिव्रताहै जो तेरे कारणसे युद्धमेंमराहुआ यहतेरापति पृथ्वीपरगिरा हुआहै ४ अबजो तेरीबुद्धि से यहअर्जुन यद्यपिअपराधीभीहै तौभीइसको क्षमाकर औरइसको सजीवकर ५ हेश्रेष्ठ शुभस्त्री निश्चय करके तुम धर्मकी जाननेवाली और तीनों लोकोंमें प्रसिद्धहो जो पुत्रके हाथ से पतिको मरवाकर शोचनहीं करतीहो ६ हे सर्पनन्दिनी मैं अपने मरेहुये पुत्र को नहीं

शोचतीहूं मैंपतिही कोशोचतीहूं जिसका कि यहअतिथि कियागया है ७ तबउस यशवन्तीने सर्पकी पुत्रीसे इसप्रकार कहकर पतिके पास जाकर यह कहा ८ कि हे प्यारे उठो तुम युधिष्ठिर के और मेरे प्रियहो हे महाबाहु यह तेरा घोड़ामैंने छोड़ दियाहै ६ हे प्रभु निश्चयकरके तुमको इसधर्मराजकेयज्ञके घोड़ेकेपीछे चलनाउचित है सोतुम इसपृथ्वीपर क्योंसोतेहो १० हे कौरव नन्दन मेरे औरकौरवोंके प्राणतेरे आधीनहैं सो दूसरेके प्राणदाता होकर तुमने किस हेतुसे अपने प्राणोंको त्यागकिया ११ फिर चित्राङ्गदाने उलूपी सेकहा कि हे उलूपी इसपृथ्वीपर पड़ेहुये पतिको देखो इस पुत्रको उत्साह देकर और पतिको मरवाकर शोच नहीं करतीहै १२ चाहे मृत्यु बश होकर यह बालक पृथ्वीपर शयनकरे परंतु यह रक्तनेत्र रखनेवाला बिजयी अर्जुन जीउठे १३ हे सौभाग्यवंती मनुष्योंकी बहुतसी स्त्रियोंका होना पाप नहींहै परंतु यहदोष स्त्रियोंका होता है तेरी बुद्धि ऐसी मतहोय १४ ईश्वरने इसमित्रताको प्राचीनऔर अबिनाशी कियाहै तुम मित्रताको अच्छे प्रकारसे जानो तेरामिलाप सत्यहोय १५ जोतू अबइस मेरेपतिको पुत्रसे मरवाकर मुझको जीवता नहीं दिखावेगी तोमैं अबअपने जीवनकोत्यागकरूंगी १६ हे देवी सोमैं अपनेपुत्र औरपतिसे रहित दुःखसे संयुक्त होकरयहां हीं तेरे देखते शरीर त्यागनेकी इच्छासे अपना खाना पीना त्याग करूंगी १७ हेराजा वहचित्राङ्गदा अपनीसौत उलूपीको इसप्रकार की बातैं कहकर शरीर त्यागनेकी इच्छा से आसनपर बिराजमान होकर मौनहोगई १८ वैशंपायनबोले कि इसकेअनन्तर वह दुखी पुत्रकीइच्छावान् वैराग्यवान् चित्राङ्गदा बहुतबिलापकरके पतिके चरणोंको पकड़कर स्वासलेतीहुई बैठगई १९ इसकेपीछे उस राजा बभ्रुबाहन ने चेतको पाकर और युद्ध भूमिमें अपनी माताको देख करकहा २० किइससे अधिक कौनसा दुःखहै जो सुख से बृद्धिमान मेरीमाता पृथ्वीपर गिरेहुये मृतक बीर पति के पास शयन करती है २१ औरयुद्धमें मेरे हाथसे मृतक इसशस्त्र धारियोंमें श्रेष्ठ युद्धमें

शत्रुओंके नाशकरनेवाले अर्जुनको देखतीहै हाय मरना बड़ाकठिन है २२ आश्चर्य्यकी बातहै कि इस महाबाहु मरेहुये अपने पतिको देखनेवाली इसदेवीका हृदय बड़ाकठोर औरदृढ़है जो नहीं फटता है २३ कालके बिना मनुष्यका मरना कठिन मानताहूं जिस स्थान परकि मेरी माता और मैं जीवनसे पृथक् नहींहोते हाय२ इसमरे हुये कौरववीर अर्जुनके स्वर्णमयी कवचको धिक्कारहै कि मुझ पुत्र के हाथसे माराहुआ पृथ्वीपर दीखता है २४।२५ हेब्राह्मणलोगो मुझ पुत्रसेमारेहुये औरवीर शय्यापर शयन करनेवाले मेरेवीर पिताको पृथ्वीपर देखो हे ब्राह्मण वर्य्य लोगो उपदेशकरो अबयहांमुझ नि-र्दयी पापी और युद्धभूमिमें पिताके मारनेवालेका क्या प्रायश्चित्त है २६।२७हेद्विजवर्य्यो अर्जुनके औरघोड़ेकेपीछे चलनेवालेजोलोग मरनेसेबचरहेहैं वह युद्धेच्छाकी शांतीकरतेहैं जो यहयुद्धमें मेरेहाथ सेमारागया२८ अबपिताकोमारकर इसअपने पिताका शिर कपाल धारण करनेवाले और उसचर्मसे युक्तशरीर मुझनिर्दयीके बारहवर्ष कठिनतासे कटनेवालेहैं क्योंकि अपने पिताको मारकर हत्यारेपने के सिवाय अबमेरा दूसराकोई प्रायश्चित्त नहींहै२९।३०हे सर्पराज की पुत्री मेरेहाथसे मरेहुये अपने पतिको देखो अब मैंने युद्धमें अर्जुनको मारकरतेरा अभीष्ट कियाहै ३१ सोमैं अब पितृलोकको जाऊंगा हे मंगलरूप मैं आत्मासे आत्माके धारण करनेको समर्थ नहींहूं३२हेदेवी मातासो तुम अर्जुनके और मेरे मरनेसे प्रसन्नहो मैं सत्यतासे आत्माकी शपथ खाताहूं ३३ हेमहाराज इसके पीछे दुःखशोकसे पीड़ित उस राजाने यहकहकर आचमन करके कष्टसे यहवचनकहा ३४ हेसर्पिणीमाता सबअस्थावर जंगम जीवोंसमेत तुम मेरे सत्यसत्य वचनोंको सुनो जो कदाचित् मेरा नरोत्तमपिता अर्जुन नहींउठताहै तोमैं इसी युद्धभूमिमें अपनेशरीरको सुखाऊंगा ३५।३६ पिताको मारकर मेरा किसी प्रकारसे प्रायश्चित्तनहीं होसक्ता निश्चयकरके गुरूके मारनेसे पीड़ामान मैं शरीरको त्यागकरूंगा ३७ वीर क्षत्रीको मारकर सौगौदान करके पापसे निवृत्त होताहै

परन्तु इसप्रकार पिताको मारकर मेरा प्रायश्चित्त बड़ाघोरहै ३८ यह मेरा पिता पांडव अर्जुन अनुपम महातेजस्वी और धर्मात्मा है उस मुझ अपराधीका प्रायश्चित्त कैसे होसक्ताहै ३६ हेराजा जनमेजय अर्जुनका वह बड़ापुत्र राजा बभ्रुबाहन इसप्रकार कहकर आचमन करके मौनहुआ और शरीरत्यागपर्यंत के लिये खानपान त्याग बैठा ४० बैशंपायन बोले तब पुत्रत्वभावके शोकसे पूर्ण शत्रुओंका विजय करनेवाला राजा बभ्रुबाहन और उसकी माताके भोजनपान त्यागनेपर ४१ उलूपीने सजीवनमणिको स्मरण किया तब सर्पोंके जीवनका हेतु वहमणि बर्त्तमान हुई ४२ हेकौरव सर्प राजकी पुत्री उस उलूपीने उस मणिकोलेकर सेनाके लोगोंकेचित्तोंका प्रसन्न करनेवाला यह बचनकहा ४३ हेपुत्र उठ शोचमतकर यह अर्जुन तुमने विजय नहीं किया यह मनुष्य तो क्या इन्द्रादिक देवताओंसेभी अजेयहै४४ अब मैंने तेरा यशमान् पुरुषोत्तम पिता के प्रिय करनेके निमित्त यह मोहिनीनाम माया दिखलाईहै ४५ हेराजा युद्धभूमिमें युद्ध करनेवाले तुझ पुत्रकी परीक्षा लेनाचाहता यह शत्रुओंका मर्द्दन करनेवालाबीर कौरव अर्जुनयहां आयाहै४६ हेपुत्र इसलिये मैंने तुझ को युद्धके लिये प्रेरणाकरीथी हेसमर्थपुत्र तू अपने थोड़ेसे पापको मत ध्यानकर ४७ हे पुत्र यह महात्मा ऋषि प्राचीन होकर सदैव नियत और अविनाशीहै इन्द्रभी युद्धमें इसके विजय करनेको समर्थ नहीं है ४८ हे राजा मैंने यह दिव्य मणि मंगाईहै जो कि सदैव मरे हुये सर्प राजोंको सजीव करती है ४६ हेसमर्थ तुम इसको अपने पिता की छातीपर नियतकरो तब तुम अपने पिता पांडव अर्जुनको जीवताहुआ देखोगे ५० तब इस प्रकार आज्ञप्त हुये उस बड़ेतेजस्वी निष्पापराजाने पितात्वभावकी प्रीतिसे उस मणिको अर्जुन की छातीपर नियत किया ५१ उसमणिके रखने से सजीव होनेवाला वह स्वच्छ रक्त नेत्र रखने वाला प्रभु बीर अर्जुन बड़ो बिलम्बतक शयन करनेवाले के समान उठबैठा ५२ बभ्रुबाहनने उस उठेहुये सचेत सावधान महात्मा

आणधारी अपने पिताको देखकर दण्डवत्करी ५३ हे समर्थ फिर उस समर्थ शोभायमान के उठने पर इन्द्रने पवित्र और दिव्यपुष्पोंको बरसाया ५४ बादलके समान शब्दायमान बिना बजाये दुन्दुभियां बजनेलगीं और आकाश में बहुतभारी धन्य २ काशब्द हुआ ५५ स्थिर स्वभाववाले महाबाहु अर्जुनने उठकर बभ्रुबाहन से मिलकर मस्तक पर सूंघा ५६ और कुछ दूर इसकी माताको शोक के पंजेमें फंसी हुई उलूपीके साथ नियत देखा फिर अर्जुनने पूछा ५७ कि हे शत्रुओंके नाश करनेवाले यह युद्धभूमि आनन्दशोक और आश्चर्य्य युक्त होने वाला दिखाई देताहै यह क्याबात है जो तुम जानतेहो तोमुझसे वर्णन करो ५८ तेरी माता किस निमित्तइस युद्धभूमिमें आई और सर्पराज की पुत्री उलूपी यहां क्यों आई ५९ मैं जानताहूं कि तुमने मेरे कहनेसे यह युद्धकिया है स्त्रियोंके आने का कारण जानना चाहताहूं ६० तब इस प्रकारकी अर्जुनकी बातोंको सुनकर बुद्धिमान् राजा बभ्रुबाहन ने शिरसे प्रसन्न करके अर्जुनसे कहा कि इस बातको आप उलूपीसे पूछिये ६१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेअर्जुनप्रत्युज्जीवनेअशीतितमोऽध्यायः ८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

अर्जुन बोले कि हे कौरवीय कुलकी प्रसन्न करनेवाली उलूपी युद्धभूमि में तेरे और राजा बभ्रुबाहनकी माताके आनेका क्याप्रयोजनहै १ हेचपलापाङ्गी सर्पकी पुत्रीक्या तुम इस राजाके कुशलकी चाहनेवालीहो अथवा मेरे शुभको चाहतीहो २ हेप्रियदर्शन सुन्दरी क्यामैंने वाइस बभ्रुबाहनने अज्ञानतासे तेराकोई अप्रिय कर्म कियाहै ३अथवा तेरी सौत चित्रबाहनकी पुत्री राजपुत्री सुन्दरी चित्राङ्गदा तेरा कोई अपराध तो नहीं करतीहै ४ हंसती हुई सर्पराजकी कन्याने उसको उत्तर दिया कि नतो तुमने मेरा अपराध किया और न बभ्रुबाहन मेराकोई अपराध करताहै ५ उसीप्रकार इसकी

यह माताभी जो कि दासीके समान नियतहै मेरा किसी प्रकारभी अपराधनहीं करतीहै अब जैसे कि यह सबकर्म मैंने कियाहै उसको सुनो ६ हेसमर्थ अर्जुन तुमको मुझपर क्रोध न करना चाहिये मैं तुमको शिरसे प्रसन्नकरतीहूं मैंने आपकेअभीष्टके निमित्तयह सब कर्म कियाथा ७ हे महाबाहु अर्जुन अबजो मूलहेतुहै उसकोयथार्थ-तापूर्वक ब्यौरे समेत सुनो हेस्वामी जो तुमने महाभारत के युद्धमें राजाभीष्मको अधर्मसे मारा८उसका यह प्रायश्चित्त कियाहै हेवीर तुमने सन्मुख लड़नेवाला भीष्मपितामह नहींमारा ९तुमने शिखंडी के पक्षमेंहोकर उससे युद्धमें प्रवृत्तहुये भीष्मकोमाराहै जोतुमउसका प्रायश्चित्तकियेविना इसजीवनकोत्यागकरोगे १० तोउसपाप कर्मसे अवश्यनर्कमेंगिरोगे इसलिये यहप्रायश्चित्त विचारकियाहै जिसको कितुमने अपनेपुत्रसे प्राप्तकियाहै ११ हे बड़ेवुद्धिमान् संसारके पोषण पालनकरनेवाले अर्जुनपूर्वसमयमें गंगाजीकेतटपर बसुओंने शापदियाथा उसको मैंने बसुओंसे सुना था और उन्होंने कहाथा अर्थात् हे राजा भीष्मके मरनेपर बसुदेवताओंने गंगा के तटपर आकर १२ स्नानपूर्वक महानदी श्री गंगाजी से मिलकर उस के संमतसे यहभयकारी बचन कहाथा कि १३ हे भाविनी अर्जुन से युद्ध न करता दूसरेके सन्मुखयह शन्तनुका पुत्रभीष्म अर्जुनकेहाथ से मारागयाहै इसकारण अबहम १४ इसबहानेसे अर्जुनको शाप देतेहैं तबउस गंगादेवीनेकहा कि ऐसाहीहोय तबमैंअपने स्थानमें प्रवेश करके और पितासे कहकर ब्याकुलचित्तहुई १५ मेरेपिताने भी उसको सुनकर बड़ी ब्याकुलताको पाया मेरे पिताने बसुओंके पासजाकर तेरेनिमित्त १६बारंबार प्रसन्नकरके उनसे प्रार्थनाकरी तब उन्होंने यहबचन कहा कि हेमहाभाग उस अर्जुनका तरुणपुत्र मणिपुरका राजाहै १७ वह युद्धभूमिमें नियत होकर बाणोंसे इस को पृथ्वीपर गिरावेगा हेनागेन्द्र ऐसाहोने से वहशाप से निवृत्त होगा १८ फिरवह बसुदेवताओंसे बिदाहोकर आया और यहसब वृत्तान्त उसने मुझसेकहा उसको सुनकर मैंने तुमको उस शापसे

निवृत्तकियाहै १६ देवराजभी तुझकोयुद्धोंमेंपराजयनहीं करसक्ताहै पुत्र आत्मारूपहै इसीहेतुसे उससे पराजय हुआहै २० हेप्रभु मेरा दोषनहीं है अथवा आप किसप्रकारसे मानते हैं यहबात सुनकर प्रसन्नचित्त अर्जुनने कहा २१ कि हेदेवी यहसब जो तुमने किया है वह सब मेरा प्रियकरहै तबउस अर्जुनने यहकहकर चित्रांगदा और उलूपीके सुनतेहुये राजा बभ्रुवाहन से यहबचन कहा कि हे राजाचैत्र महीनेकी पूर्णमासीको युधिष्ठिरका अश्वमेध होगा २२ हेपुत्र तुम अपनी दोनोंमाता और मन्त्रियोंसमेत वहांजाना अर्जुन की इसआज्ञाको सुनकर नेत्रोंमें जल भरकर राजाबभ्रु बाहन ने पितासे यहबचनकहा २३ कि हेधर्मज्ञ मैं आपकी आज्ञासे अश्वमेधनाम महायज्ञमें जाऊंगा और ब्राह्मणों का परोसनेवाला बनूंगा २४ हे धर्म्मज्ञ तुम मेरे अनुग्रहकेलिये अपनी दोनों भार्य्याओं समेत अपनेनगरमें प्रवेशकरिये इसमें आपकिसीबातका बिचार न करें २५ हे बिजयशालियोंमें श्रेष्ठ प्रभु यहांअपनेभवनमें एकरात्रि सुखसे निवासकरके फिरघोड़ेकी अनुगामिता करनेकोयोग्यहो२६ तबपुत्रके इसप्रकारके बचनसुनकरमन्दमुसकानकरते बानरध्वजाधारी अर्जुनने राजाबभ्रु बाहन को उत्तरदिया २७ हेमहाबाहु तुझे बिदितहै कि जैसे मैं यज्ञके निमित्त दीक्षितकियागयाहूं हे आयतनेत्रपुत्र तबतक तेरेनगरमें प्रवेशनहीं करूंगा २८ हे नरोत्तम यह यज्ञका घोड़ा अपनी इच्छाके अनुसार चलताहै तेरा कल्याण होय मेरानिवास संभव नहीं है अब जाऊंगा २९ फिरउससे श्रेष्ठ बिधि पूर्वक पूजित और दोनोंस्त्रियों से बिदाहोकर वहभरतर्षभ इन्द्रका पुत्र चल दिया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअश्वानुसारेएकाशीतितमोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले हेराजा वहघोड़ा समुद्र पर्य्यन्त इस पृथ्वीपरघूम करउस ओरको लौटाजिधर कीओर हस्तिनापुरथा १ फिर घोड़े के

पीछे चलताहुआ अर्जुनभी लौटा तब ईश्वरकी इच्छासे राजगृह नामीनगरको पाया २ हेप्रभु क्षत्रीधर्ममें नियत उसबीर सहदेवके पुत्रने उससमीप नियतहुये अर्जुनको देखकर युद्धकेनिमित्त बुलाया इसके पीछे रथधनुष बाण और हस्तत्राण धारी वह पदाती राजा मेघसिन्ध नगरसे बाहर निकलकर उस अर्जुनकेसन्मुखगया ३।४ हे महाराज महातेजस्वी मेघसिन्धने अर्जुनको पाकर लड़कपन और अज्ञानतासे यह कहा ५ कि हे भरतवंशी यह स्त्रियोंके मध्यमें नियत करके क्याघुमाया जाताहै मैं इसघोड़ेकोहरूंगा तुम इसके छुटानेमें उपायकरो ६ जो तुम युद्धमें मेरे वृद्धोंसे शिक्षा पानेवाले नहींहुयेहो तोमैं तेरा आतिथ्यकरूंगा तू प्रहारकर औरमैंभी प्रहार करताहूं ७इसप्रकारके बचनसुनकर हंसते हुये अर्जुनने उसकोउत्तर दियाकि बिघ्नकर्त्तालोगमुझसे हटानेके योग्यहोतेहैं मेरा यहनियत व्रतहै ८ हे राजानिश्चय करके मेरे बड़ेभाईनेभी उसको जानाहै सामर्थ्यके अनुसार प्रहारकर अभीमेरा क्रोधबर्त्तमान नहींहै ९ इस प्रकार कहतेहुये हजारों बाणछोड़ते राजामगधने प्रथम अर्जुन पर ऐसे प्रहारकिया जैसे कि हजारनेत्र रखनेवालाइन्द्र जलकी बर्षाको छोड़ताहै १० हे भरतर्षभ इसके पीछेशूर अर्जुनने गांडीव धनुषके चलाये हुये बाणोंसे शत्रुके बाणसमूहोंको निष्फल किया ११ उस बानर ध्वजाधारीने उसके बाणोंको निष्फल करके सर्पोंके समानप्र काशमानमुखवालेबाणोंकोछोड़ा१२ध्वजा,पताका,रथकादण्ड,यन्त्र, घोड़ेऔरअन्यअन्य रथके अंगोंपर बाणोंकोछोड़ा परन्तु राजामगध औरसारथी पर नहीं छोड़े सव्यसाची अर्जुनसेभी रक्षितशरीर और अपने पराक्रमको मानते उस राजामगधने बाणोंको छोड़ा १३।१४ इसकेपीछे राजामगध से अत्यन्त घायल अर्जुन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि बसन्तऋतुमें फूलाहुआ पलाशवृक्षहोताहै१५हे जन मेजय उस बिना घायल हुये राजामगधने अर्जुनपर प्रहार किया इसीहेतुसे वह राजा उसलोकबीर अर्जुनके सन्मुख नियतरहा१६ फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त अर्जुनने बड़े क्लिष्ट धनुष को खैंचकर घोड़ों

को निर्जीवकरके सारथी का शिरकाटा १७ और उसके बड़े अपूर्व धनुषको भी क्षुरनाम बाणसे काटा और इसके हस्तत्राण और पताकासमेत ध्वजाको भी गिराया १८ घोड़े धनुष और सारथीसे रहित व्याकुलचित्त तीव्रता से युक्त वह राजा गदा को लेकर अर्जुन के सन्मुख दौड़ा तब अर्जुनने उसशीघ्रतासे आनेवाले राजाकी स्वर्णमयी गदा को उन बहुत बाणोंसे अनेक खण्ड करदिये जो कि गृद्ध पक्षसे संयुक्तथीं १९।२० जिसके मणिबंधनखुलगये वह खंडितगदा पृथ्वीपर ऐसेगिरपड़ी जैसे कि कांचली से रहित सर्पिणी गिरती है बानरध्वजाधारी अर्जुनने उसरथ धनुष और गदा से रहित राजा से मधुर भाषणके साथ यहबचनकहा कि २१।२२ हेराजा यहक्षत्री धर्म दिखलाया यही बहुतहै हेपुत्र जावो युद्धमें तुझबालकका यही कर्म बहुतहै २३ हे राजा युधिष्ठिरकी यह आज्ञाहै कि राजालोग न मारना चाहिये इसीहेतु से अपराधी होकर भी तुम इसबड़ेयुद्ध में जीवतेहो २४ तब राजा मगधने अपने को निषेध किया हुआ मानकर हाथ जोड़कर उसके पास आकर उसकी प्रतिष्ठाकरी और कहा आपका कहना सत्य है २५ आपको भलाहोय मैं तुमसे पराजितहूं मैं तुम से अब लड़ने को उत्साह नहीं करता हूं अबआपकी जो आज्ञा होय सो कहिये और उसको कियाहुआही जानो २६ अर्जुनने उसको बिश्वास देकर फिर यहबचनकहा कि चैत्रकीपूर्णमासीको हमारे राजाके यज्ञमें आपको आनायोग्यहै २७ इसप्रकार आज्ञा पाकर उसहसदेवके पुत्रने बहुत अच्छा कहकर अंगीकार किया और घोड़े समेत शूरबीर अर्जुनको बिधिपूर्वक पूजनकिया २८ इसके पीछे वह घोड़ा फिर अपनी इच्छाके अनुसार चला फिरवह समुद्रके किनारे पर बंग, पौण्ड्र, और कौशल देशों में गया २९ अर्जुनने जहां तहां गांडीव धनुषसे म्लेच्छोंकी बहुत सेनाओंको बिजयकिया ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वानुसारेमागधपराजयेद्व्यशीतितमोऽध्यायः ८२ ॥

—※—

तिरासीवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हे राजा राजामगध से पूजित पांडव अर्जुनने दक्षिणदिशामें नियत होकर उस घोड़ेको चलाया१इसकेपीछे उस स्वेच्छाचारी घोड़ेनेघूमकर चन्देरी देशियोंकी शुक्तिनाम सुन्दरपुरी को पाया २ तबवहां वह बड़ापराक्रमी अर्जुन उस शिशुपालकेपुत्र शरभसे युद्धकेद्वारा पूजितहुआ ३ हेराजा तब वह पूजित श्रेष्ठघोड़ा काशी,अंग,कोशल,किरात, और तंगण देशोंको गया ४ वह कुन्ती का पुत्र अर्जुन न्यायके अनुसार पूजालेकर दशार्णदेशोंको गया ५ वहां पराक्रमी शत्रुओंका पराजय करनेवाला चित्रांगद नाम राजा था उसके साथउस अर्जुनका युद्ध अत्यन्त भयकारी हुआ६ पुरुषोत्तम अर्जुन उसकोभी आधीन करके निषादोंके राजा एकलव्य नाम राजाके देशोंमें गया ७ तब एकलब्यके पुत्रने युद्धके साथ उसको लिया वहां उसने निषादोंके साथ युद्धकिया वह युद्धभी रोमहर्षण करनेवालाथा ८ इसके पीछे युद्धोंमें अजेय निर्भय अर्जुनने यज्ञके विघ्नके लिये सन्मुख आनेवाले उस निषादको युद्धमें बिजयकिया ९ हेराजा वह इन्द्रका पुत्र उस निषादके पुत्रको बिजय कर और उससे पूजितहोकर दक्षिणी समुद्रकोगया१० वहांभी अर्जुनकायुद्ध द्रविड़,अन्ध्र, माहिषक, कोल्लगिरि निवासियोंके साथ हुआ ११ अर्जुन साधारणतासे उनकोभी बिजय करके आधीन न होनेवाले घोड़ेके साथ सुराष्ट्र देशोंके सन्मुख गया १२ गोकर्ण को पाकर प्रभासक्षेत्रकोभी गया इसके पीछे युधिष्ठिर के उस शोभायमान यज्ञके घोड़ेने वृष्णी बीरोंसे रक्षित सुन्दर द्वारकाको पाया यादवोंके बालक उस श्रेष्ठ घोड़ेको पकड़कर चलेगये १३ । १४ हे राजा तब राजा उग्रसेनने उनको निषेधकिया तब वृष्णी और अंधकबंशियोंके स्वामी उग्रसेनने १५ अर्जुनके मामा बसुदेवजी समेत पुरसे बाहर निकलकर दोनों विधिपूर्व्वक अर्जुनसे मिलकर १६ बड़ी पूजासमेत अर्जुनके सन्मुख नियतहुये फिर उनसेभी बिदाहो

कर अर्जुन उधरको चला जिधर घोड़ा गया १७ फिर वह अलंकृत घोड़ा क्रमपूर्व्वक पश्चिम देशोंको चला फिर पंचनद अर्थात् पंजाब देशमेंगया १८ हेकौरव तब वहघोड़ा वहांसेभीचलकर इच्छाकेअनुसारगान्धारदेशकोगया जिसका कि अनुगामीअर्जुनथा फिरप्राचीन शत्रुताकेसमान कर्मकर्त्ता गान्धार देशके राजा शकुनीके पुत्रकेसाथ युद्धहुआ वह युद्धभी भयका उत्पन्न करनेवालाथा १९ । २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्वणिअश्वानुसारेत्र्यशीतितमोऽध्याय ८३ ॥

चौरासीवां अध्याय ॥

बैशंपायन बोले कि गांधार देशियोंका महारथी शकुनीका पुत्र बीर घोड़े हाथी और रथसे संयुक्त पताका ध्वजा ध्वजाकी माला रखनेवाली बड़ी सेनासे ब्याप्त अर्जुनके सन्मुखचला राजाशकुनी के मरण को नसहते १।२ धनुष पकड़नेवाले वह शूरबीर सब मिल कर अर्जुनके सन्मुखगये उसअजेय धर्मात्मा अर्जुनने उनसे युधिष्ठिर का बचन कहा परन्तु उन्होंने अपने कुशल रहनेका युधिष्ठिर का बचन स्वीकार नहींकिया मधुर बाणीके साथ अर्जुनसे रुकेहुये क्रोधयुक्त वहलोग ३।४ घोड़ेको घेरकरचले इसी हेतुसेअर्जुन क्रोधयुक्त हुआ तदनन्तर पांडव अर्जुनने साधारण रीतिके द्वारा धनुषसे छोड़े हुये प्रकाशमान् नोकवाले क्षुरनाम बाणों से उन्होंके शिरोंको काटा हे महाराज बाणोंकी बर्षासे अत्यन्त पीड़ामान और अर्जुनके हाथसे घायल वह सेनाकेलोग भयभीत होकर घोड़ेको छोड़कर लौटे उन गांधारियोंसे रुकेहुये तेजस्वी अर्जुनने भी५।६।७नाम लेलेकर उनसबके शिरोंको गिराया युद्धभूमिमेंचारोंओरसे गांधारियों के मारे जानेसे उस शकुनी के बेटेने अर्जुन कोरोका अर्जुनने उस युद्ध करनेवाले क्षत्रीधर्ममें नियत राजासे कहा ८।९ कि राजा युधिष्ठिरकी आज्ञासेमैं किसी राजाको मारना नहीं चाहता हेबीर तुम युद्धको त्यागो अबतेरी पराजय नहोय तब इसप्रकार शिक्षित होकर भी अज्ञानता से कर्म करने वाले उस

राजाने उस बचनको भी तिरस्कार करके इन्द्रके समान कर्मी अर्जुनको बाणोंसे ढकदिया १०।११ बड़े बुद्धिमान् अर्जुनने अर्धचन्द्र नाम बाणसे उसके शिरस्त्राणको ऐसे गिराया जैसे कि जयद्रथ का शिर गिराया था १२ उनसब गान्धारीयोंने उस कर्मको देखकर आश्चर्य्य किया और यह जाना कि उस इच्छावान् अर्जुनने राजा को नहीं मारा १३ भागने में प्रवृत्तचित्त गान्धार देशी राजाका पुत्र नीच मृगोंके समान भयभीत होकर सेनाके लोगों समेत चल दिया १४ वहां अर्जुनने टेढ़े पर्बवाले बाणोंसे शीघ्रही उन चारों ओर घूमनेवालोंके शिरोंकोकाटा १५ कितनेही मनुष्योंने अर्जुनके हाथसे चलायमान गांडीव धनुषसे छोड़ेहुये बड़े बाणोंसे काटीहुई बड़ी भुजाको नहींजाना १६ जिसके मनुष्य हाथी घोड़े भ्रांतीसे युक्तथे वह भागीहुई सेना गिरी और बहुतसी सेना मृतक और आपत्ति युक्तहोकर लौटी १७ उस उत्तम कर्मी बीरके आगे गिरेहुये शत्रुओंमें से कोई शत्रुऐसानहीं दिखाई दिया जो कि उस अर्जुनको सहसके १८ इसके पीछे गांधारके राजाकी माता जिसके अग्र-गामी वृद्ध मन्त्रीथे उत्तम अर्थको आगे करके नगरके बाहरनिकली १९ उसने सावधान और युद्धमें दुर्मद पुत्रको रोका और उसअर्जुन को जिसके आगे सब कर्म साधारणहैं प्रसन्नकिया २० प्रभु अ-र्जुनने उसको पूजकर कृपाकरी और शकुनीके पुत्रकोभी विश्वास कराके यह बचन कहा २१ हे महाबाहु मेरा अभीष्ट नहींथा जो तुमने सन्मुख लड़नेका बिचारकिया हे नाश करनेवाले निष्पाप तुम मेरेभाई हो २२ हेराजा मैंने गांधारी माताको स्मरण करके धृतराष्ट्र के हेतुसे तुमको नहींमारा इसी कारणसे तुम जीवते हो तेरे साथीही मारेगये २३ ऐसी दशावाला तूमतहो अपने चित्तसे शत्रुता दूरकरो तेरी बुद्धि ऐसी मत हो तुम चैत्र महीनेकी पूर्णिमासीको हमारे राजाके अश्वमेध यज्ञमें जाना २४॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्बणिअश्वानुसारेचतुराशीतितमोऽध्यायः ८४॥

—※—

पञ्चासीवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि ऐसाबचन अर्जुन कहकर स्वेच्छाचारी घोड़े के पीछेचला फिरघोड़ा हस्तिनापुरको ओर लौटा १ युधिष्ठिर ने दूतकेद्वारा उसलौटेहुये अर्जुनको सुना वह अर्जुनको कुशल मंगल पूर्वक सुनकर प्रसन्न हुआ २ तब युधिष्ठिर गान्धार और अन्य २ देशोंमें अर्जुनके उसकर्मको सुनकर अत्यन्त प्रसन्नहुआ ३ हे कौरव उसीसमय पर धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ महातेजस्वी धर्मराज युधिष्ठिरने माघके शुभपक्षकी द्वादशी और पुष्य नक्षत्रको पाकर ४ भीमसेन नकुल सहदेव इनसब भाइयोंको बुलाकर उस महाबक्ता ने उस प्रहारकर्त्ताओंमें श्रेष्ठ भीमसेनको समयपर सावधान करके यह बचनकहा कि ५। ६ हे भीमसेन यहतेरा छोटाभाई अर्जुन घोड़ेके साथ ऐसेआताहै जैसे कि अर्जुनके साथी दूतोंने मुझसे कहाहै ७ यह समय सन्मुखआया और घोड़ाआताहै हेभीमसेन यह माघकी पूर्णमासीहै आजसे एकमहीना शेषरहाहै ८ इसहेतुसे वेद में पूर्णज्ञानी पंडित ब्राह्मणजायँ और अश्वमेधकी सिद्धीके निमित्त यज्ञ करनेकेयोग्य देशकोदेखें ९ इसप्रकारसे आज्ञादियेहुयेउसभीम सेनने राजाकी आज्ञाको किया और आयेहुये अर्जुन को सुनकर प्रसन्नहुआ १० इसकेपीछे वह भीमसेन यज्ञ कर्मों में कुशल और सावधान ब्राह्मणोंको आगेकरके पूर्ण बुद्धिमान् कारीगरोंको साथ में लेकर यात्राका करनेवाला हुआ ११ भीमसेनने बिधिके अनु- सार उस यज्ञभूमिको नपवाया जोकि बहुतसे स्थानोंसे युक्त और शोभायमानथी और जिसमें बाजारके मार्ग वर्त्तमानथे उसभूमिको बिधिपूर्वक सैकड़ों मन्दिरोंसे युक्त उत्तम मणियों से जटित सुवर्ण और मणियोंसे अलंकृत करवाया १२ सुवर्ण से खचित स्तंभ और बड़े तोरणको अर्थात् स्तंभ के ऊपर सिंहाकार काष्ठ को बनवाया और यज्ञके स्थानोंपर शुद्धसुवर्णकोजड़वाकर १३।१४ फिर धर्मात्माने नाना प्रकारके देशोंसे आनेवाले राजाओंके निवासस्थानोंको जहां

तहांबिधिपूर्बक बनवाया१५ अर्थात् उसकुन्तीके पुत्रने नानादेशों से आनेवाले ब्राह्मणोंके स्थानोंको बिधिपूर्बक बनवाया वह अनेकप्रकारकेथे १६ हेमहाबाहु यहसब स्थान तैयार करवा के राजाकी आज्ञासे दूतोंको समर्थ राजाओंके पास भेजा १७ हेबड़े साधुराजा जनमेजय दूतों के पहुंचतेही वह राजालोग युधिष्ठिरकी प्रसन्नता के अर्थ उसके अभीष्ट प्रिय रत्न स्त्री घोड़े और धनुषआदिक शस्त्रों को लेकरआये १८ उन सुन्दर निवासस्थानोंमें प्रवेशकरतेहुये उन राजाओंके शब्द स्वर्गको ऐसे स्पर्श करनेवाले हुये जैसे कि गर्जते हुये समुद्रके शब्द स्वर्गके स्पर्श करनेवाले होतेहैं १६ राजा युधिष्ठिरने उन आनेवाले राजाओंकेनिमित्त खाने पीनेकीबस्तु और शय्याआदिक दिव्यपदार्थोंको आज्ञादी २० उसभरतर्षभ धर्मराजने घोड़े आदिकेलिये नानाप्रकारको शालाओंको जोकि धानतृण और गोरससे युक्तथीं बतलाई २१ इसीप्रकार उस बुद्धिमान् धर्मराज के बड़े यज्ञमें बहुतसे ब्रह्मबादी मुनिलोगोंके समूह आये २२ हेराजा वहांपर जो महाउत्तम ब्राह्मणथे वह अपने शिष्यों समेतआये २३ युधिष्ठिरने उनको बड़े आदर सत्कार के साथ अभ्युत्थान पूर्व्वक प्रीतिके साथ लिया महातेजस्वी युधिष्ठिर दंभको त्यागकर आपही निवासस्थानों तक उनके साथ गया २४ इसके पीछे कारीगर और जोअन्य२ प्रकारके शिल्प बिद्याके लोग वहां बर्त्तमान थेउन्हों ने सब यज्ञ बिधिको बनाकर धर्मराजसे निवेदन किया २५ आलस्यसे रहित प्रतिष्ठा युक्त राजा युधिष्ठिर उस सबको तैयार सुन कर भाइयों समेत बहुत प्रसन्नचित्त हुआ २६ बैशंपायन बोले कि उस यज्ञके जारीहोनेपर वार्त्तालापमें सावधान परस्पर बिजयाभिलाषी हेतुबादी ब्राह्मणोंने अर्थात् न्यायशास्त्रवालोंने बहुतसे हेतु बादोंको बर्णन किया २७ हेभरतबंशी सब राजाओंने भीमसेनकी रचीहुई उस उत्तम यज्ञबिधिको देखाजोकि देवेन्द्रकी यज्ञकी समान थी२८उन्होंने जहांपरसुबर्णके तोरणोंको और बहुतसे शय्याआसन बिहारोंको जो कि मनुष्यों के समूहोंसे युक्तथे देखा राजाओंने घट,

पात्र, कढ़ाव, कलश, बर्द्धमानक इत्यादि किसी सामानकोभी बि-नासुवर्णका नहीं देखा २६ । ३० शास्त्रके अनुसार उन यज्ञस्तंभोंको देखा जोकि काष्ठसे निर्मित सुवर्णसे खचित और अलंकृत बड़ेप्रकाशमान् बिधिपूर्व्वक बनायेथे ३१ हे समर्थ वहां राजाओंने उन सब बिषयोंको भी बर्त्तमान देखा जोकि जल और स्थलमें उत्पन्न होनेवालेथे ३२ । ३३ गौ भैंस वृद्धस्त्रियां जलजीव पशु पक्षी जरायुज अंडज स्वेदज और उद्भिज अर्थात् पृथ्वी से उत्पन्न औषधी पर्व्वत और अनूप देशोंमें उत्पन्न होनेवाले जीवोंकोभी राजाओंने देखा३४ इसप्रकार राजाओंने पशु गोधन और धान्यसे प्रसन्न सब यज्ञशालाको देखकर बड़े आश्चर्य्यको पाया ३५ ब्राह्मणोंके और बैश्योंके वह निवासस्थान बहुत स्वच्छ खानेपीनेकी बस्तु और धनोंसे पूर्ण थे वहां भोजन करनेवाले वेदपाठी ब्राह्मणोंका एकलक्ष संख्या पूर्ण होनेपर ३६ बादलकेसमान शब्दायमान दुन्दुभी बारंबार बजाईगईं और प्रत्येक दिनके बर्त्तमान होनेपर प्रतिक्षण शब्द करनेवाली हुईं ३७ बुद्धिमान् धर्मराजका वह यज्ञ इसप्रकार जारी और बर्त्त-मानहुआ हेराजा मनुष्योंने भोजनकी बस्तुओंके ढेर ३८ दहीके कुंड और घृतकेहृददेखे हेराजा नानादेशोंसेयुक्त सम्पूर्णजंबूद्वीप ३९ उस राजाके महायज्ञ में एकत्र बर्त्तमान दिखाईपड़ा हे भरतर्षभ जहां तहांसे मनुष्योंको हजारों जातें ४० बहुतसे पात्रोंको लेकर वहांगये उन सब मालाधारी और बहुत स्वच्छ मणि कुंडल रखने-वालोंने ४१ उनसैकड़ों और हजारों ब्राह्मणोंके आगे नानाप्रकारके खाने पीनेके पदार्थों को परोसा जोमनुष्य कि इसकार्य्यपर नियतथे उन्होंने राजाओं के योग्य भोजनोंकी बस्तुओंको ब्राह्मणोंके आगे परोसा ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणियुधिष्ठिरअश्वमेधेपंचाशीतितमोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि राजायुधिष्ठिरने आयेहुये वेदपाठी ब्राह्मणों

को और पृथ्वीपति राजाओंको देखकर भीमसेनसे कहा किजो यह पृथ्वीपति राजालोग पास आयेहैं उन्होंका पूजाकरना योग्य है क्योंकि सब राजालोग पूजनके योग्य हैं १।२ यशवान् महाराजसे आज्ञा दियेहुये उस महातेजस्वी पाण्डव भीमसेनने नकुल सहदेव समेत उसी प्रकारसे किया ३ इसके पीछे सब जीवधारियों में श्रेष्ठ गोविन्दजी बलदेवजीको आगेकरके सात्यकी, प्रद्युम्न, गद, निशठ, साम्ब, कृतवर्मा इत्यादिक सब वृष्णियों समेत धर्मराजके पास आये ४।५ महारथी भीमसेनने उन्होंकोभी उत्तमपूजाकरी वह सब रत्नोंसेपूर्ण अपने २ निवासस्थानोंकोगये ६ मधुसूदन श्रीकृष्णजीने कथाके अन्तपर बहुतसे संग्रामोंसे कर्षितहोना अर्जुनका वर्णन किया ७ धर्मराज कुन्ती पुत्र युधिष्ठिरने उस इन्द्र के पुत्र अर्जुनसे बारंबारपूछा और जगत्पतिने उसको अच्छोरीतिसे वर्णनकिया ८ हेराजाएक द्वारकावासी बड़ा विश्वस्थ मनुष्य आयाथा जिसने कि बहुतयुद्धोंसे कर्षित उस अर्जुनको देखाथा ९ हे प्रभु उसने महाबाहु अर्जुनको समीपही आनेवाला मुझसे कहा हे युधिष्ठिर तुम अश्वमेधकी सिद्धीकेलिये करनेकेयोग्य कर्मोंकोकरो १० इसप्रकार के बचनसुनकर धर्मराज युधिष्ठिरनेउनको उत्तर दिया कि हेलक्ष्मी पति वह अर्जुन प्रारब्धसेकुशल पूर्वक आताहै ११ हेयादवनन्दन पांडवी सेनाके स्वामी उस अर्जुनने जो आप के पास समाचार भेजे हैं वह मैं आपसे जानना चाहताहूं १२ तब धर्मराजके इसप्रकार पूछने पर बड़ेबक्ता श्रीकृष्णजीने धर्मराज युधिष्ठिरसे यह बचन कहा१३ कि हे महाराज अर्जुनके वचनको स्मरण करतेहुये मनुष्यने यह आनकर कहा कि हेश्रीकृष्ण और युधिष्ठिर समय पर यह मेरा बचन कहनेके योग्यहै १४ हे कौरवोत्तम सब राजालोग आवेंगे उन आनेवाले राजाओंकी बड़ीपूजा करनी चाहिये यह हमकोउचितहै १५ हेबड़ाई देनेवाले उस राजायुधिष्ठिरको इसमेरे बचनसे विदित करना योग्यहै कि कोईनाश उत्पन्न करनेवालाकर्म न होय जोकि राजसूय यज्ञमें राजाओंके मध्य पूजनमें हुआथा १६

राजा उसके करनेको योग्यहै आपभी उसको अंगीकारकरैं हेराजा यह प्रजालोग राजाओंकी बिरुद्धता और शत्रुता को नहींदेखें १७ हेराजा युधिष्ठिर उस मनुष्यने अर्जुनके इस दूसरे बचन कोभी कहाहै उसकोभी मुझसे सुनो १८ कि मेराप्यारा पुत्र बड़ातेजस्वी बभ्रुबाहन नाम मणिपुरका राजाभी हमारे यज्ञमें आवेगा १९ आप उसको मेरेअभीष्ट और प्रियकेलिये उसको बिधिपूर्व्वक पूजन करें हेप्रभु वह सदैव मेराभक्त और प्रीतिमानहै २० धर्मराज युधिष्ठिरने उसके इस बचनको सुनकर उसके इस बचनकी प्रशंसा करके यह बचन कहा २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणियुधिष्ठिरअश्वमेधेषडशीतितमोऽध्यायः८६ ॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

युधिष्ठिर बोले हेप्रभु श्रीकृष्ण मैंने यहप्रिय बचनसुना जिसके आप कहने को योग्यहो वह पबित्र अमृत रस मेरे चित्तको प्रसन्न करताहै १ हेइन्द्रियों के स्वामी निश्चय करके अर्जुन के बहुतसे युद्ध जहांतहां राजाओंके साथहुये और मैंनेभी उनको सुनाहै २क्या कारणहै कि जोवह अत्यन्त बिजयी बुद्धिमान् अर्जुन सदैव सुखसे रहितहै यहबात मेरे मनको खेदित करतीहै ३ हेजनार्द्दन मैं उसबिजयके अभ्यासी अर्जुनको एकान्त में शोचताहूं वह पांडुनन्दन बारंबार अत्यन्त दुःखोंका पानेवालाहै ४ सब शुभ चिह्नोंसे शोभित उसके शरीरमें कौनसा चिह्न अप्रियहै हेश्रीकृष्णजी जिसके कारणसे कि वह दुःखको भोगताहै५ वह कुन्तीनन्दन बारंबार दुःखपाने वालाहै और मैं उस अर्जुनके अंगोंमें कोई दोषका चिह्न नहींदेखताहूं जो यह बातमेरे सुनने के योग्यहोय तो आप उसके कहनेको योग्य हैं ६ इस बातको सुनकर इन्द्रियों केस्वामी यादवोंके वृद्धि कर्त्ता बिष्णुजीने बहुत बड़े उत्तरको बिचार करके राजासे यह बचन कहा ७ हेराजा मैं इस पुरुषोत्तमके किसी अंगको मिलाहुआ अप्रकटनहीं देखताहूं सिवाय इसके कि इस नरोत्तम के दोनों पिण्डिक

नियत संख्यासे अधिक हैं ८ वह पुरुषोत्तम उनदोनों अंगोंके कार
णसे सदैव बिदेशोंकी यात्रा करताहै इसके सिवाय किसी ऐसेदूसरे
चिह्नको नहींदेखताहूं जिससे कि यहदुःखका भागीहोय हेप्रभु ज-
नमेजय इस प्रकारके श्रीकृष्णजी के बचनको सुनकर पुरुषोत्तमधर्म
राजने उत्तरदिया कि यह इसीप्रकार है ९ कृष्णा द्रौपदीने गुणमें
दोष लगानेवाले श्रीकृष्णजीको तिरछा देखा केशीदैत्यके नाशक
मित्रके मित्र इन्द्रियोंके स्वामी साक्षात् अर्जुनके समान श्रीकृष्ण
जीने उसकी उस प्रार्थनाको स्वीकार किया अर्थात् दोष प्रकटकर-
नेसे मौनता धारण करलीनी वहांपर कौरव याचक ब्राह्मण और
भीमसेनादिक पांडव १० । ११ अर्जुनकी उस बिचित्र और शुभ
कथाको सुनकर प्रसन्न हुये अर्जुनकी कथाके बर्णनकरतेही समय
में १२ महात्मा अर्जुनकीआज्ञासे दूतआया उस बुद्धिमान्‌ने समीप
आकर युधिष्ठिरको नमस्कार करके पासआनेवाले नरोत्तमअर्जुन
को बर्णनकिया तब उसको सुनकर प्रसन्नताके अश्रुओंसे व्याकुल
युधिष्ठिरने १३ । १४ इस शुभ वृत्तान्तके बदले में उसको बहुतसा
धनदिया फिर दूसरे दिन कौरवोंके धुरंधर नरोत्तमके आनेपर बड़ा
वृद्धिकारी शब्द हुआ फिर समीप आनेवाले उसअर्जुनके घोड़ोंकी
उठाई धूलऐसे शोभायमानहुई १५ जैसे कि उच्चैश्रवा को होतीहै
वहां अर्जुनने मनुष्योंके आनन्द दायक बचनोंको सुना १६ कि
वह अर्जुन प्रारब्धसे कुशल पूर्वक है राजा युधिष्ठिर प्रारब्धी है
अर्जुनके सिवाय कौनसाबीर राजाओंको बिजयकर संपूर्ण पृथ्वीको
जीतकर १७ इस उत्तम घोड़े को घुमाकर फिर लौटकर आसक्ता
है जो सगर आदिक महात्मा पूर्वसमय में हुयेथे १८ हमने कभी
उनकाभी ऐसा कर्म नहीं सुना अब आगे भविष्यतकाल में दूसरे
राजालोग इसकर्मको नहीं करेंगे १९ । २० जिसको कि हेकौरव
कुलभूषण तुमने कियाहै धर्मात्मा अर्जुन इस प्रकारसे कहने
वाले उन मनुष्योंकी बार्त्तालापोंको जो कि कानोंको सुखदेनेवाली
थीं २१ । २२ सुनता हुआ यज्ञशालामें पहुंचा तब मन्त्रियों समेत

राजा युधिष्ठिर और यदुनन्दन श्रीकृष्णजी धृतराष्ट्रको आगे करके अगमानी लेनेको गये फिर अर्जुन वहां आकर पिताके और बुद्धिमान् धर्मराजकेचरणोंको दंडवत्करके२३।२४ और भीमसेनादिक भाइयोंको अच्छीरीतिसे पूजकर केशवजीसे मिलाउन सबसेमिलकर और उनसे पूजित होकर उस महाबाहुने उनको बिधिपूर्बक पूजकर २५ ऐसे बिश्रामकिया जैसे कि पारजानेवाला दूसरे किनारेको पाकर बिश्रामलेता है उसी समय पर वह बुद्धिमान् राजा बभ्रुबाहन २६ दोनों माताओं समेत कौरवोंके पासआया वहांउस महाबाहुने वृद्ध कौरवों को और अन्य राजाओंको बिधिपूर्वक नमस्कारकर २७ उनसे आशीर्वादलेकर अपनीदादी कुन्तीके महलोंमें प्रवेशकिया २८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिबभ्रुवाहनागमनेसप्ताशीतितमोऽध्यायः ८७

अट्ठासीवां अध्याय॥

बैशंपायन बोले कि उसमहाबाहुने पांडवों के महल में प्रवेश करके सुन्दर और मधुर बचनोंसे दादीको दंडवत्की १ इसकेपीछे देवी चित्राङ्गदा और उलूपी दोनों नम्रतापूर्बक कुन्ती और द्रौपदी के पासगईं २ सुभद्रादिक जो दूसरी कौरवोंकी स्त्रियांथीं उन के पासभी न्यायके अनुसार गईं हे राजा द्रौपदी सुभद्रा और जो अन्य २ यादवोंकी स्त्रियांथीं उन्होंने उनदोनोंको नानाप्रकारकेरत्न दिये अर्जुनके प्रियकरनेकी इच्छासे कुन्तीसे पूजित३।४ वहदोनों देवी बहुमूल्यवाले शयन आसनपर बैठगईं वह बड़ातेजस्वी और पूजित बभ्रुबाहन ५ बिधिकेअनुसार राजाधृतराष्ट्र के सन्मुखनियत हुआ अर्थात् नमस्कारादिककरी फिर महातेजस्वीने राजा युधिष्ठिर और भीमसेनादिक पांडवोंके ६ पासजाकर नम्रतासे दंडवत् की वह उन्होंसे प्रेमके साथ प्रेमपूर्बक मिलकर बिधिके अनुसार पूजितहुआ७उनप्रीतिमान् महारथियोंने उसको बहुतसा धनदिया उसी प्रकार राजा बभ्रुबाहन नम्रताके साथ उस चक्र गदाधारी

श्रीकृष्णजीके सन्मुख ८ ऐसेनियत हुआ जैसे कि प्रद्युम्नगोबिन्द-
जीकेपास नियत होताहै श्रीकृष्णजीने उसराजा को एकऐसारथ
दिया जोकि बहुमूल्य अथवा वृद्धोंके योग्य बड़ापूजित ६ सुबर्ण के
सामानों से अलंकृत और दिव्य घोड़ों से युक्त होकर अति उत्तमथा
धर्मराज भीमसेन और नकुल सहदेवनेभी पृथक् २ उसको धन
से सत्कार किया १० इसके पीछे बार्त्तालाप करने में सावधान
व्यास मुनिने तीसरेदिन युधिष्ठिर से मिलकर यह बचन कहा कि
अबसे लेकर पूजनकरो तेरेयज्ञके समयका मुहूर्त्त बर्त्तमान हुआ
याजक ब्राह्मणआज्ञाकरतेहैं ११।१२ कि हे राजेन्द्रबहुतसेसोमयज्ञों
का समूह अथवा द्रव्यादिक से संयुक्त यह तेरायज्ञरचनाको प्राप्त
होय जोकि सुबर्णकी आधिक्यतासे भू सुबर्ण के नाम से बिख्यात
होय १३ हे महाराज यहां दक्षिणाको त्रिगुणित करो जिससे कि
तेरायज्ञ त्रिगुणताको पावे ब्राह्मणही इसमें कारणहैं हे राजायहां
तुमबहुत दक्षिणावाले तीन अश्वमेधोंको अच्छीरीतिसे प्राप्त करके
बिरादरी के मारने के पापोंको दूरकरोगे १४।१५ हे कौरवनन्दन
जो तुम अश्वमेधके औभृत स्नानको प्राप्त करोगे वह बड़ी पवि-
त्रताका करने वाला और उत्तमहै १६ बड़े बुद्धिमान् व्यासजी से
आज्ञापावह बड़ातेजस्वी धर्मात्मा युधिष्ठिर अश्वमेधकी प्राप्तीके
निमित्त दीक्षित हुआ १७ फिर उस महाबाहु राजाने उस महा
यज्ञ अश्वमेध को बहुत भोजनकी बस्तु समेत बड़ी दक्षिणारखने
वाला और सब अभीष्ट गुणोंसे संयुक्त किया १८ हे राजा वहां
सर्वज्ञ वेदपाठी चारों ओर घूमनेवाले याजक ब्राह्मणोंने वेदोक्तकर्मों
को विधि के अनुसार किया १९ उन्हों का वह कर्म जिसको कि
गुरू और साधुओंसे सीखाथाकुछभी नाशमान और वेदकेविपरीत
नहींहुआ बड़े उत्तम ब्राह्मणोंने बड़ी विधिसे योग्य कर्म को किया
२०हेराजा उन बड़ेसाधू ब्राह्मणोंने प्रबर्ग्यनाम धर्मको विधिके अनु
सारकरके अभिषव कोभी किया २१अर्थात् (सोमबल्लीको ओख-
लीमें साफ़ करना)हे राजा सोमपान करनेवालों में श्रेष्ठ और शास्त्र

के अनुसार कर्म करनेवाले उन ब्राह्मणोंने सोम बल्लीका रस निकाल कर फिरक्रम पूर्व्वक प्रातस्सवनादिक कर्म किया २२वहां कोईभी मनुष्य दुखीदरिद्री और निर्बलनथा २३ शत्रुओंके नाश कर्त्ता बड़े तेजस्वी भीमसेनने राजाकी आज्ञासे सदैव याचक लोगों को भोजन दिया संस्तर अर्थात् स्थंडिल रचनामें सावधानयाच कों ने प्रतिदिन शास्त्रके अनुसार सबकार्य्य किये २४।२५ यहां उस बुद्धिमान्‌का कोई सदृश्य ऐसानहीं हुआजोकि छओं अंगोंका ज्ञाता और वार्त्तालापमें सावधान नहोय और जिसका गुरूभी नहोय२६ हे भरतर्षभ इसकेपीछे स्तंभ खड़ेहोनेके समय पर याजकों नेबि- ल्व काष्ठके छःस्तंभ खदिर काष्ठके छःस्तंभ और उतने ही यूप पलाशके २७ देवदारुके दो स्तंभ और श्लेष्मान्तक का एक स्तंभ यह सबयुधिष्ठिरके यज्ञमें खड़ेकिये २८ हेभरतर्षभ उस भीमसेनने धर्मराजकी आज्ञासे दूसरे सुवर्णस्तंभोंकोशोभाके अर्थखड़ाकरवाया २९हेराजऋषि वह वस्त्रोंसे अलंकृत स्तम्भऐसेशोभायमान हुयेजैसे- कि सप्तऋषियों समेतदेवता महाइन्द्रके आगेपीछेशोभायमानहोते हैं ३०चयनके अर्थसुवर्णकी ईटेंभी तैयार कीथीं वहां वह चयन ऐसा शोभायमानहुआ जैसा कि दक्ष प्रजापति काचयन शोभित हुआ था ३१उसका वहयज्ञ स्थान चार वेदी रखनेवालाथा और अठारहहाथ विस्तृत त्रिकोण गरुड़रूप स्वर्णमयी पक्ष रखनेवाला बनाथा ३२ इसके पीछे ज्ञानी ब्राह्मणोंने उस२ देवताका नामलेकर वह शास्त्र की विधिसे विचार कियेहुये पशु पक्षी भेटकिये ३३ शास्त्रमें पढ़े हुये जो उत्तम पशु पक्षी और जल के जीवहैं उनसबकोउस अग्नि चय कर्म में विचार किया ३४महात्मा युधिष्ठिरके यज्ञमें स्तंभों के समीप तीनसौ पशु जिनमें प्रथमरत्न घोड़ाथा बिचार हुये ३५साक्षात देव ऋषियोंसे पूर्ण गन्धर्बों के गीत अप्सरा गणोंके नृत्यों से युक्तकिं पुरुषों समेत किन्नरोंसेशोभित और सिद्ध ब्राह्मणोंकेनिवासस्थानों से चारों ओरको घिराहुआ वह युधिष्ठिरका यज्ञशोभायमान हुआ इस यज्ञशालामें ३६।३७व्यासजीकेशिष्य सर्वशास्त्रदर्शी यज्ञरचनामें

कुशलश्रेष्ठब्राह्मणसदैव नियत रहे यहांनारदजी महातेजस्वी तुंबुर विश्वावसु चित्र सेनऔर सरोदमें पूर्ण अन्य बहुतसे गन्धर्व नियत थे उन्होंने यज्ञकर्म केअवकाशों के समयमें उन ब्राह्मणों को प्रसन्न चित्त किया ३८। ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअष्टाशीतितमोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय॥

वैशंपायनबोले कि उत्तम ब्राह्मणोंने बिधिके अनुसार दूसरे पशुओंको पकाकर शास्त्रके अनुसार उस घोड़ेका घातकिया १ हेराजा इसके पीछे याजकोंने घोड़ेको शास्त्रकी बिधिसे मारकर बिधिपूर्वक तीन कलाओंसे युक्त उस स्वच्छ चित्तवाली द्रौपदीको वहां बैठाया २ हेभरतर्षभ फिर सावधान ब्राह्मणोंने उस घोड़े के बपाको शास्त्र के अनुसार निकालकर बिधि के अनुसार पकाया तब धर्मराजने अपने सबछोटे भाइयों समेत बपाके उस धुएंकी गन्धिको जोकि सब पापोंकी दूरकरनेवालीथी शास्त्रके अनुसार सूंघा और हेराजा उस घोड़के जो शेषबचेहुये अंगथे ३। ४। ५ उनसब अंगों को सब बुद्धिमान्ऋत्विजोंने शास्त्रकी विधिसे अग्निमें होमा इन्द्रके समान तेजस्वी राजा युधिष्ठिर के उस यज्ञको इस रीतिसे नियत करके ६ शिष्यों समेत भगवान् व्यासजीने उस राजाको आशीर्वाद किया फिर युधिष्ठिरने विधिके अनुसार ब्राह्मणोंके अर्थ ७ हजार कोटि निष्कदिये और व्यासजीको पृथ्वीदीहेराजा सत्यवतीके पुत्रव्यासजीने पृथ्वी को ८ लेकर उस भरतर्षभ धर्मात्मा युधिष्ठिर से यह बचनकहा किहे बड़े साधूराजा युधिष्ठिर यहपृथ्वी आपकीहोय मैंने त्याग की ६ मुझको इसका मूल्य दीजिये क्योंकि ब्राह्मण धनके अभिलाषीहैं बड़े साहसी बुद्धिमान् युधिष्ठिरने भाइयों समेतमहात्मा राजाओंके मध्यमें उन ब्राह्मणोंसे कहा कि महायज्ञअश्वमेध यज्ञमें पृथ्वीही दक्षिणा कही है १०। ११ यह अर्जुन से बिजयकी हुई पृथ्वीमैंने ऋत्विजोंको दानकीहै हे उत्तम वेदपाठियो मैं बनमें

प्रवेश करूंगा तुमइसपृथ्वी को बिभागकरो १२ तुम चातुर्होत्र के प्रमाणसे पृथ्वीके चार विभाग करके बांटलो हे बड़े साधू ब्राह्मण लोगो मैं ब्राह्मणों का धनलेना नहीं चाहताहूं १३ हे वेदपाठियो मेराऔरमेरेभाइयोंका यह सदैवचित्तहै उसके उसप्रकार कहनेपर सबभाई और द्रौपदीने कहा कि यह इसीप्रकारहै वह बचनरोमांचों काखड़ा करनेवालाहुआ हे भरतबंशी फिर पृथ्वी और आकाशके मध्यमें धन्यधन्य शब्दहुआ १४।१५ उसीप्रकार प्रशंसाकरनेवाले ब्राह्मणोंके समूहों के शब्दभी शोभायमानहुये तब व्यास और श्री-कृष्णजीने फिर युधिष्ठिरको समझाया १६ अर्थात् वेदपाठीब्राह्मणों के मध्यमें प्रशंसाकरते व्यास मुनिने यह बचन कहा कि आपने यह पृथ्वी मुझकोदी और मैं इसको लौटाकर तुमको देताहूं १७ इन ब्राह्मणोंके लिये सुवर्ण दीजिये पृथ्वी तेरीहोय बीर बासुदेव-जीने धर्मराज युधिष्ठिरसे यहकहा १८कि भगवान् व्यासजीनेजैसा कहाहै तुम उसी प्रकार करनेके योग्यहो इसप्रकार आज्ञादियेहुये उस प्रसन्नचित्त युधिष्ठिरने भाइयोंसमेत१६ यज्ञकी त्रिगुणितदक्षिणा दी जो कि असंख्यथी इस लोकमें इसको कोई दूसरा राजानहींक रेगा २० अर्थात् राजा मरुतके पीछे कर्मकर्त्ता युधिष्ठिरने जोकिया उसको आगेकोई राजा नहींकरेगा व्यास मुनिने उनरत्नोंकोलेकर २१ ऋत्विजोंको दिया और उन्होंने चारविभाग किये भाइयोंसमेत राजा युधिष्ठिर पृथ्वीका मूल्य उस सुवर्णको देकर २२ पापसेमुक्त और स्वर्गका बिजय करनेवाला होकर प्रसन्नहुआ इसीप्रकार उन ऋत्विज ब्राह्मणोंने उस असंख्य सुवर्णकेढेरको २३ प्रसन्नता और आनन्द पूर्वक ब्राह्मणोंको विभागकिया यज्ञके वाड़ेमें जोकुछसुव-र्ण भूषण २४ तोरण,यज्ञस्तंभ,घट और सुवर्णकी ईंटेंथीं उनसबको भी युधिष्ठिरकी आज्ञासे उन सबको विभाग किया २५ ब्राह्मणोंके पीछे क्षत्रियोंने धनकोलिया इसीप्रकार वैश्य और शूद्रोंकेसमूहोंने और अन्य म्लेच्छ जातोंनेभी उसधनको लिया २६ इसके पीछेबु-द्धिमान् धर्मराजके उसधनसे तृप्त होकर प्रसन्नतासे सबलोगअप-

नेरघरको गये २७ भगवान् व्यासजीने अपना भाग प्रतिष्ठा पूर्वक कुन्तीको दिया अर्थात् महातेजस्वी व्यासजीने सुवर्णोका ढेरउनको दिया २८ उस प्रसन्नचित्त कुंतीने स्वसुरसे उसप्रीतिके भागको पाकर उस धनसे बहुत बड़ेबड़े पुरायके कामकिये २६ राजायुधिष्ठिर भाइयों समेत यज्ञको प्राप्त करके अौभृत स्नानमें ऐसा शोभायमानहुआ जैसे कि देवताओंसे सेवित महाइन्द्र शोभितहोता है ३० हे महाराज इकट्ठे होनेवाले राजाओंसे घिरेहुये पांडवलोग ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि सब ग्रह नक्षत्रगणोंसे शोभित होतेहैं ३१ फिर राजाओंके निमित्तभी नानाप्रकारके रत्न हाथीघोड़े भूषण स्त्रियां वस्त्र और सुवर्ण दिया ३२ हेराजावह पांडव युधिष्ठिर राजमंडलमें उस असंख्य धनको देताहुआ कुवेर देवताकी समानशोभायमानहुआ३३ तव उसीप्रकार बीर राजाबभ्रुबाहनको बुलाकर बहुत सा धनदेकर घर जानेको विदाकिया ३४ हेभरतर्षभ उसबुद्धिमान् युधिष्ठिरने बहिनकी प्रीतिसे उस दुःशलाके पौत्र बालकको उसके राज्यपर नियतकिया ३५ उस कौरवराज युधिष्ठिरने उन सबभाग पानेवाले और पूजित राजाओंको विदाकिया ३६ हेमहाराज उस शत्रुबिजयी राजा युधिष्ठिरने भाइयों समेत उन महात्मा गोविन्दजी महाबली बलदेवजी और प्रद्युम्नादिक हजारों वृष्णी बीरोंको बिधिके अनुसार पूजकर विदाकिया३७।३८बुद्धिमान् धर्मराजका वह यज्ञ इसप्रकारके धन रत्नोंके ढेर और भोजनोंके बड़ेश्पर्वताकार ढेरोंका रखनेवालाथा जिसमें सुरा और मैरेयनाम आशवोंके सागरथे ३६ हेभरतर्षभ जिस यज्ञमें घृतकी कीच रखनेवाले ह्रद और भोजनकी बस्तुओंके पर्वतथे और जिनमें रसोंकी कीचहोयऐसी नदियांथीं४० मनुष्योंने खांडव रागादिक भोजन कीबस्तुओंका तैयार होना और घात होतेहुये पशुओंका अन्त नजाना ४१ तब आशवोंके मदसे उन्मतरूप स्त्री पुरुषोंकी रखनेवाली वह यज्ञशाला मृदंग और शंखोंकी ध्वनियों से चित्तरोचक हुई ४२ दानकरो और दिनरात विना रोक टोक श्रेष्ठ अन्नोंको भोजन करो इस शब्दसे युक्त प्रसन्न

चित्त हृष्टपुष्ट मनुष्योंसे पूर्ण बड़े उत्सव रूप उस जिवनार स्थान को नाना प्रकारके देशवासी मनुष्योंने कीर्त्तन किया ४३ तब वह भरतबंशियोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर अभीष्टरत्न और और धनकी धाराओं सेबर्षा करने वाला होकर पापसेरहित मनोरथोंको सिद्ध करके नगर मेंप्रवेश करनेबाला हुआ ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिअश्वमेधसमाप्तोनामएकोननवतितमोऽध्यायः८९ ॥

नब्बेका अध्याय ॥

जनमेजय ने पूछा कि मेरे पितामह बुद्धिमान् धर्मराज केयज्ञमें जोकुछ अपूर्व और अद्भुत वृतान्त हुआ उसको आप मुझसे कहने को योग्यहैं १ वैशंपायन बोले हे प्रभु राजेन्द्र उस बड़े अपूर्व वृत्तांत को सुनो जोकि यहा यज्ञके अन्तमें हुआहै २ हे भरतबंशियोंमें बड़े साधू तब ऋषिजातवाले भाई बन्धु दुखी और दरिद्रियोंके तृप्तहोने और ३ सब दिशाओंमें बड़े भारी दानकी बिख्यात कीर्त्ति होनेपर धर्मराजके शिरपर पुष्पोंकी बर्षा होनेलगी ४उस समय नीलेनेत्र और सुबर्ण अर्द्धाङ्ग रखनेवाले एक नौलेनेबज्र और बिजलीकेसमान एक शब्द किया हे निष्पाप राजा जनमेजय ५ पशु पक्षियों को भयभीत करते उस बुद्धिमान् नौलेने एकबार अपने शब्दको करके मनुष्य बाणीमें कहा ६ हेराजाओ यह तुम्हारा यज्ञ उस ब्राह्मणके एक प्रस्थ परिमाण शक्तु दानके समान नहींहै जो कि कुरुक्षेत्र निवासी उञ्छवृती होकर दानका अभ्यासीथा७ हे राजा उसनौलेके शब्द और बार्त्ताको सुनकर उन सब ब्राह्मणोंने बड़े आश्चर्यकोपा- या ८ तब उन ब्राह्मणोंने उस नौलेसे समीप जाकर पूछा कि जिस यज्ञमें साधु लोगोंकामिलाप होताहै उसयज्ञमें तू कहांसे आयाहै ९ तेरा उत्तम पराक्रम क्याहै कौन शास्त्र पढ़ाहै और किस शास्त्र का तुझको ज्ञानहैकौन इष्टदेवहै आपको हम कैसे जाने जो हमारे यज्ञ की निन्दा करतेहो १० सब शास्त्रोंको लोप न करके नानाप्रकारकी यज्ञ बिधियोंसे कर्म किया गयाहै जो शास्त्र और न्यायके अनुसार

करना योग्यथा उसको उसी प्रकारसे कियाहै ११ इस यज्ञ में शास्त्रकी परिक्षा और विधिके अनुसार पूजनके योग्योंका पूजन किया गयाऔर मन्त्रकी आहुतियोंसे अग्निमें हवन किया और ईर्षा रहित होकर देनेके योग्य दान किया १२ यहां नानाप्रकारके दानों से ब्राह्मण तृप्तहुये क्षत्री लोगोंको उत्तम युद्धोंसे और पितामहा दिकोंको श्रेष्ठ श्राद्धोंसे तृप्तकिया १३ वैश्य लोग पालन करनेसे और स्त्रियां अपनेअभीष्ट पदार्थोंके मिलने प्रसन्न हुईं इसीप्रकार शूद्रलोग कृपा और पारितोषिकोंसे प्रसन्नहुये और साधारण मनुष्य देनेके योग्य शेष बचीहुई अभीष्ट बस्तुओंसे तृप्तहुये१४।१५हमारे राजाकी वाह्याभ्यन्तरीय पवित्रतासे बिरादरीवाले और नाते रिश्तेदार प्रसन्नहुये देवता पवित्र हव्योंसे और शरणागत लोग रक्षाओं से तृप्तहुये १६ यहां जो तुमने जैसा जैसा देखा और सुनाहै उसको ब्राह्मणोंके मध्यमें सत्य२ वर्णनकरो १७ तुमश्रद्धाके अनुसार बचन कहनेवाले और बुद्धिमान् हो और दिव्यरूप धारण करतेहो अब तुमब्राह्मणोंसे मिलेहो इस्से उसकेकहनेको योग्यहो उन ब्राह्मणोंके बचनोंको सुनकर और उनके बारंबार पूछने पर हंसतेहुये नौलेने उत्तर दिया हे ब्राह्मणलोगो मैंने अभिमान से यह बचन नहीं कहा है १८।१९ मैंने जो यह बचन कहा और तुमनेभी सुनाहै मैं यथार्थ कहताहूं कि यह तुम्हारा यज्ञ उसब्राह्मणके एकप्रस्थ सत्तू दानके समान नहींहै २० हे साधू ब्राह्मणो अब मुझको यह बात आप लोगोंसे अवश्यही कहना उचितहै तुम एकाग्रचित्त होकर उस सत्य बचनको मुझसे सुनो २१ मैंने कुरुक्षेत्र निवासी उंछवृती दानके अभ्यासी ब्राह्मणका जो अपूर्व और उत्तम वृत्तान्त देखा और समझा २२ और जिस कर्मसे उस ब्राह्मणने स्त्री पुत्र और पुत्रकी बधू समेत स्वर्गको पाया और जिस प्रकारसे यह मेराआधा शरीर सुवर्णका होगया २३ हे ब्राह्मणो न्यायके अनुसार उस वेदपाठी ब्राह्मण के उद्योगसे बहुत थोड़ेसे सत्तू दानके उत्तम फलको वर्णन करता हूं २४ किसी समय बहुतसे धर्मज्ञ लोगोंसे युक्त धर्म-

क्षेत्र कुरुक्षेत्रमें कोई उंछवृती ब्राह्मण कापोतीबृत्ति रखने वाला हुआ २५ वह हिंसासे रहित जितेन्द्री सुचाल रखनेवाला धर्मात्मा अपनी स्त्री पुत्र और पुत्र बधू समेत तपस्या में नियतथा २६ वह सुन्दरब्रतवालाब्राह्मण उनसबको साथलेकर छठवेंदिनसदैवभोजन किया करताथा परन्तु कभी २ छठवेंदिनभी उसकोभोजननहीं प्राप्त होता था २७ तब वह ब्राह्मण दूसरे छठवेंदिन भोजन करताथा हे राजा एक समय बड़ा दुर्भिक्ष होनेपर उस धर्मात्माको २८ उस नियत समय परभी भोजन नहींमिला तब औषधियोंसे रहित आश्रम होनेपर वह ब्राह्मण अकिंचन अर्थात् खाली हाथ होगया २६ प्रत्येक समयके वर्त्तमान होनेपर उसको भोजन नहीं मिलताथा इस हेतुसे वह सब क्षुधासे पीड़ित होकर वहांसे चलदिये ३० तब तपस्या में युक्त वह ब्राह्मण शुक्लपक्ष में मध्याह्नके समय अनाज के दानोंको इकट्ठा करता हुआ क्षुधासे पीड़ामान हुआ ३१ क्षुधा औरपरिश्रमसे युक्त उस ब्राह्मणने अपनी उंछको नहींपाया—अपने बाल बच्चोंसमेत क्षुधासे महादुखी प्राण उस उत्तमब्राह्मणने उस समयको ब्यतीतकिया फिर छठवेंदिनके नियत समय पर एक प्रस्थभर जव उसको प्राप्तहुये ३२।३३ उन तपस्वियोंने उसीएकप्रस्थ जवका सत्तू बनाया फिर जपादिक नित्य कर्म करनेवाले उन सब तपस्वियोंने बिधि पूर्व्वक अग्नि में हवन कर ३४ एक २ ग्रास आपस में बिभाग किया उसी समय भोजनकी इच्छा करनेवाला कोई अतिथि ब्राह्मण उन तपस्वियों के पास आया ३५ वह उस आयेहुये अतिथिको देखकर प्रसन्न हुये और उन सबने अतिथिको नमस्कार पूर्व्वक कुशल क्षेम पूछकर ३६ अत्यन्त पवित्र चित्त जितेन्द्री श्रद्धा और शान्तीसे युक्तदूसरेके गुणोंमें दोषनलगाने वाले क्रोध और ईर्षासे रहित ३७ अहंकार और ममताके बिना उन धर्मज्ञ ब्राह्मणोंने अपने गोत्रको ब्रह्मचर्य्य समेत उसके सम्मुख बर्णन करके ३८ उस क्षुधासे पीड़ामान अतिथिको अपनीकुटी में बुलालिया और कहाकि हे निष्पाप प्रभु ब्राह्मणतेरा भलाहोय

यह अर्घपाद्यहै और यह आपका कुशासनहै ३६ और नियम से प्राप्तहुये यह पबित्र सत्तू हैं मेरेदिये हुये इन सत्तुओंको अंगीकार करो ४० हे राजा इसप्रकार से कहेहुये उस ब्राह्मणने एककुड़ब सत्तू लेकर खाया परन्तु उतने सत्तू से तृप्त नहीं हुआ ४१ उस-उंछवृत्ती ब्राह्मणने उस क्षुधायुक्त ब्राह्मणको देखकर आहार का बिचारांश किया कियह ब्राह्मण किस रीतिसे तृप्त होसक्ताहै ४२ तब उसकी स्त्रीने बचन कहा कि मेराभाग दीजिये जिससे कियह श्रेष्ठ ब्राह्मण तृप्तहोकर जाय ४३ उसबड़े साधू ब्राह्मणने इसप्रकार बार्त्ता करनेवाली उस पतिब्रता भार्य्याको क्षुधायुक्त जानकर उस के भागको देना अंगीकार नहीं किया इसके पीछे अपने बिचारसे उसको क्षुधासे पीड़ित दुर्बल शरीर वृद्ध तपस्विनी दुखियाजानते उस बुद्धिमान् उत्तमवेदपाठीने ४४।४५ उसकंपितत्वचा और अस्थि मात्रोंसे युक्त अपनी भार्य्यासे यह बचन कहा कि हेसुन्दरी कीट पतंग और मृगोंकीभी स्त्रियां ४६ रक्षा और पोषणके योग्यहैं तुम इसप्रकार कहनेकोयोग्य नहींहो स्त्री पर पुरुषको सदैव दयाकरनी योग्यहै वहस्त्री उस पुरुषसे रक्षित और पोषित होतीहै ४७ धर्म-कार्य्य, काम, अर्थ, वृद्धोंकीसेवा, सन्तान,कुल और अपना वा पितरोंका धर्म स्त्रियोंके आधीनहै जोपुरुष रक्षामें समर्थ नहींहै वह कर्मसे भर्य्याको नहींजानताहै ४८ और बड़ी अपकीर्ति को प्राप्त करताहै अथवा अपनी प्रकाशित शुभकीर्त्ति को नाश करनेवालाहै और उत्तम लोकोंको नहीं पाताहै इस प्रकारकी बातें सुनकर उस स्त्रीने उत्तरदिया कि हेब्राह्मण हमदोनोंके धर्म अर्थ समानहैं ४६ मुझपर प्रसन्न होकर और एकप्रस्थ सत्तूके इस चतुर्थांशको ग्रहण करो हेब्राह्मणों में श्रेष्ठ सत्य, प्रीति, धर्म और पतिब्रत नामगुणसे बिजय होनेवाला स्वर्ग ५० और पतिका बिश्वास यहसब स्त्रियोंका अभीष्टहै माताके रुधिर और पिताके वीर्यसे उत्पन्न पतिबड़ा देवता है ५१ स्त्रियोंको पतिकी प्रसन्नतासे सुख और प्रीतिपूर्बक स्नेह सेपुत्र फल प्राप्तहोताहै तुम पोषण करनेसे मेरे भर्त्ताहो और रक्षा

करनेसे पतिहो ५२ और पुत्रदेनेसे बरदाताहो इसहेतुसे मेरेसत्तूको लीजिये जबकि तुमभी वृद्ध निर्बल क्षुधासे पीड़ामान अत्यन्त पराक्रम हीन ५३ ब्रतसे खेदित और कषाङ्गहो उस स्त्रीसे इसप्रकारके बचनोंको सुनकर उसऋषिने सत्तूलेकर उसअतिथिसे यह बचन कहा ५४कि हेबड़ेसाधू ब्राह्मण फिरतुम इन सत्तुओं कोलो ब्राह्मणने उनको लेकर और खाकर तृप्तीकोनहीं पाया ५५ उंछवृत्ती ब्राह्मण उसको देखकर शोच युक्त हुआ ५६ फिर पुत्रबोला हेबड़े साधू पिताआप इन सत्तुओंको लीजिये और ब्राह्मणकोदो मैं इसकोशुभ कर्म मानताहूं इसहेतुसे इसको करताहूं ५७ मुझको सदैव पूर्ण उपायोंके द्वारा आपकी सेवाकरनी उचितहै क्योंकि वृद्ध पिताका पालन करना साधुओंका अभीष्टहै ५८ हे ब्रह्मर्षि वृद्धावस्था में जोपालन करताहै यही पुत्रत्वभाव होनेका नियत फलहै औरयह सनातनश्रुतितीनोंलोकोंमेंप्रसिद्धहै ५६केवलप्राणोंकीरक्षाकेद्वाराही तुमसे तप करना संभवहै प्राणही परमधर्महै जोकि जीवधारियों के शरीरमें नियतहै ६० पिताने कहाकि तू हजार बर्षकाभी होकर मेरी दृष्टिमें बालकही माना जायगा पितापुत्रको उत्पन्न करके उस पुत्रके द्वाराकृत कृत्य होजाताहै ६१ हेसमर्थ बेटा मैं यह जानताहूं कि बालकोंको क्षुधा बड़ीप्रबलहै मैंवृद्धहूं इससे क्षुधाको सहसक्ता हूं और हेपुत्र तुम बल वानहो ६२ हेपुत्र वृद्धावस्था और क्षुधा मुझकोपीड़ानहीं देतीहैं मैंनेबहुत कालतक तपकियाहै इससेमुझको मरनेसे भी भयनहींहै ६३ पुत्रनेकहा मैं आप काबेटाहूं बेटाबाप कीरक्षाकरनेसेही पुत्रकहाताहै वहबेटा अपनाही स्वरूपकहाजाता है इसीहेतुसे आपअपनीही आत्मासे रक्षाकरो ६४ पिताने कहा हे पुत्रतुम रूप, स्वभाव और जितेन्द्रीपनेसे मेरेसमानहो क्योंकिमैंने बहुधा परीक्षा करीहै इससे अबतेरे सत्तू लेताहूं ६५ तबउसप्रसन्नचित्त हंसतेहुये उत्तम ब्राह्मणने यहकहकर उनसत्तुओंको लेकरउस ब्राह्मणको दिया ६६ वहउन सत्तुओंकोभी खाकर तृप्तनहीं हुआ तबउस उंछवृत्ती धर्मात्मा ब्राह्मणने लज्जाको पाया ६७ फिरवहां

परनियत पतिव्रता अत्यन्त प्रसन्नचित्त पुत्रबधूने ब्राह्मण के प्रिय करनेकी इच्छासे अपनेसत्तू लेकर उसअपने ससुरसेयह बचनकहा कि हे वेदपाठी आपकी सन्तान से मेरी सन्तान होगी तुमइन मेरे सत्तुओंकोलेकर अतिथि ब्राह्मणकोदो६८।६९निश्चयकरके आपकी कृपासेमेरे अबिनाशीलोक बर्त्तमान हुये उनको पौत्रके द्वारापाताहै और जिन में जाकरफिर मनुष्य शोचनहीं करताहै ७० पुत्र अपने वृद्ध पितरोंको अऋण करताहै यहहम सुनते हैं निश्चय करकेपुत्र और पौत्रकेद्वारा साधूउत्तम लोकोंकोभोगताहै७१।७२ ससुरनेकहा हेसुन्दरव्रत आचारवाली मैं तुझको हवा और धूपसेशुष्काङ्ग रूपान्तर निर्बल और क्षुधासे ब्याकुलचित्त देखकर किसप्रकार से धर्मकानाशकहोकर सत्तू को लेसक्ताहूं हेनेकचलन कल्याणिनि तुमको ऐसाकहना योग्यनहींहै ७३।७४ हेशुभबधू मैं तुझ ब्रतकरनेवाली बाह्याभ्यन्तरीय पवित्रतासेयुक्त सुन्दर स्वभाववाली और तपसे संयुक्त और दुःखसे निर्बाह करनेवालीको किस प्रकार छठवें दिन परभी निराहार देखूंगा ७५ क्षुधासे पीड़ामान बालास्त्री तुमसुझसे सदैव रक्षाके योग्यहो तुमबान्धवोंको प्रसन्न करनेवाली और ब्रतखिन्न चित्तहो ७६ बधूबोली तुममेरे गुरूकेभी गुरू देवताके भी देवता और सबसेपरे देवताहो हे प्रभुइस हेतुसे तुममेरे सत्तू को लो ७७ यहशरीर प्राण और धर्मगुरूकीही सेवाकेअर्थहै हेवेदपाठी हम आपकी कृपासे शुभलोकोंको पावेंगे ७८ हेब्राह्मण तुमने यह बिचार करके कियह पालनके योग्य दृढ़भक्ति रखनेवाली और परीक्षाके योग्यहै परीक्षा लेनेके लिये ऐसा कहा है तुमसत्तू लेने के योग्यहो ७९ ससुरबोला तुम पतिव्रता होकर सदैव इस श्रेष्ठ स्वभाव और चलनसे शोभापातीहो जोधर्मव्रतसे संयुक्त तुम गुरुवृत्तीकोही बिचारतीहो इसहेतुसे तुम्हारे भी सत्तूलूंगा हे महाभाग धर्मधारियोंमें श्रेष्ठबधू तुमसमझकर छलकरने के योग्य नहींहो यह कहकर उसके सत्तू लेकर ब्राह्मणको दिये ८०।८१ उस कर्मसे वह अतिथि ब्राह्मण उसमहात्मा साधुके ऊपर प्रसन्नहुआ और उसप्र-

सन्नचित्त श्रेष्ठवक्ताओंमें श्रेष्ठनर रूपधारी धर्मने उस उत्तमब्राह्मणसे यहबचन कहा कि हे श्रेष्ठब्राह्मण न्यायसे इकट्ठे कियेहुये और धर्मसे सामर्थ्यके अनुसार तेरे दियेहुये सिद्धदानसे ८२।८३ मैं बहुत प्रसन्नहूं आश्चर्यहै कि स्वर्गमें स्वर्गबासियोंको तेरेदानकी प्रसिद्धी बिख्यातकी जातीहै ८४ आकाशसे गिरीहुई इसपुष्पोंकी बृष्टिको देखो देवऋषि देवता गन्धर्व औरजो देवताओंके अग्रवर्त्तीहैं ८५ और देवदूत तेरी प्रशंसा करते हुयेनियत होकर दानसे आश्चर्ययुक्तहैं और जोब्रह्म-ऋषि विमानोंमेंबैठेहुये ब्रह्मलोकचारीहैं ८६ वह तेरे दर्शनके अभि-लाषीहैं हे उत्तमब्राह्मण स्वर्ग लोककोजाओ पितृलोक लोकमें वर्त्त-मान सबपितरोंको तुमने उद्धारकिया ८७ और बहुत अगले पित्रों को तुमने अपनेब्रह्मचर्य दान यज्ञ तप औरशुद्धधर्मसे बहुत युगोंतक स्वर्गबासी किया इसहेतुसे तुम स्वर्गकोजाओ हेसुन्दर ब्रतजो तुम बड़ी श्रद्धासे युक्त तपस्या करतेहो ८८।८९ हेब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ इसी हेतुसे देवताभी तेरे दानसे प्रसन्नहुये जिस कारण से कि तुमने दुःख के समय परभी शुद्धचित्तीपनेसे यह सबदान किया उस कर्म से तुमनेस्वर्गको बिजय किया यह क्षुधा बुद्धिको नाशकरतीहै और धर्मबिधिको दूरकरतीहै ९०।९१ क्षुधासे युक्तज्ञानभी धैर्यको त्याग करदेताहै जो मनुष्य क्षुधाको जीतताहै वह अवश्य स्वर्गको बिजय करताहै ९२ जबदानमें प्रीतिमान होताहै तब धर्म पीड़ा नहीं पाताहै तुमने अपने पुत्र और स्त्रीकी प्रीतिको बिचार न करके ९३ धर्महीको बड़ाउत्तम जानकर अपनी क्षुधाको ध्याननहीं किया मनुष्यों की धन प्राप्ती बड़ी कठिनहै पात्रको दानदेना उससे बढ़करहै ९४ दानसे उत्तम फलहै उस्से बढ़करश्रद्धाहै और स्वर्गका द्वार अत्यन्तसूक्ष्महै वह मनुष्योंको मोहके कारण दिखाईनहीं पड़ताहै ९५ और स्वर्गके द्वारकीजो अर्गलाहै उसकाउत्पत्ति स्थान लोभहै वहअर्गला इन्द्रि-यों के विषयोंकी प्रीतिसे रक्षित और दुष्प्राप्यहै उसको वहमनुष्य देखतेहैं जोकि क्रोध और इन्द्रियोंकेजीतनेवाले ९६ ब्रह्मज्ञानी और सामर्थ्य के अनुसार दान करनेवालेहैं हजार देनेकी सामर्थ्य रखने

वाला सौ दे और सौकी सामर्थ रखनेवाला दश देवे ६७ और जो अपनी सामर्थ्यके अनुसार जलदान करे वह सब एकसेही फलवाले कहेजातेहैं हे वेदपाठी कुछ पासनरखनेवाले रन्तिदेवने पवित्र चित्तसे जलदान कियाथा इसी हेतुसे स्वर्गको गया है तात बड़ेफ-ल देनेवालेदानोंसे वह धर्म वैसा प्रसन्न नहींहोता ६८।६६जैसाकि न्यायसे प्राप्त श्रद्धासे पवित्र सूक्ष्म दानोंसे वह धर्म प्रसन्नहोताहै राजा नृगने हजारों गोदान ब्राह्मणोंको दिये १०० उसने एक पर-लोक साधक गौको दानकरके नर्कको प्राप्तकिया सुन्दर व्रतवाला उसी नरका पुत्र राजा शैव्य अपने शरीरके मांसके दानसे १०१ शुभकर्मियोंकेलोकोंको पाकरस्वर्गमें आनन्द करताहै सत्पुरुषोंकी सामर्थ्यसे अच्छा इकट्ठा कियाहुआ धन १०२धर्मकीवृद्धिकाकारणहै मनुष्यों का ऐश्वर्य कारण नहीं है क्योंकि जैसा न्याय पूर्वक इकट्ठे कियेहुये धनके द्वारा फलमिलताहै वैसा नाना प्रकारके यज्ञोंसेभी नहीं मिलताहै क्रोध दानके फलका नाश करताहै लोभसे कोईभी स्वर्गको नहीं जाताहै १०३ । १०४ न्याय रूप आजीविका रख-नेवाला दानका जानने वाला मनुष्य तपके द्वारा स्वर्गको भोगताहै यह तेरा कर्म फल बड़ी दक्षिणा वाले बहुतसे राजसूय और अश्व-मेधोंके समान नहींहै किन्तु उनसेभी बहुत बड़ाहै तुमने प्रस्थभर सत्तूके दानसे वह अविनाशी ब्रह्मलोक बिजय कियाहै जोकि रजो गुणसेरहितहै तुमसुखपूर्व्वक ब्रह्मलोकको जाओ हेश्रेष्ठब्राह्मणो तुम सबके लिये श्रेष्ठ और दिव्यबिमान सन्मुख बर्त्त मानहैं १०५।१०६ हेब्राह्मण मैं धर्महूं मुझको देखो और इच्छाके अनुसार बिमानों पर चढ़ो तुमने अपने शरीरको उद्धार किया तेरी शुभकीर्ति लोकमें नियतहै १०७ तुम अपनी स्त्री पुत्र और पुत्रबधू समेत स्वर्गको जाओ धर्मकेइसबचनके कहनेसे वहब्राह्मण बिमानपर चढ़कर१०८ स्त्रीपुत्र और अपनी पुत्रबधू समेत स्वर्गको गया तब उस पुत्रको और पुत्रबधू समेत उस ब्राह्मणके स्वर्ग जानेपर मैं अपने बिलसे बाहर निकला और सत्तूकी सुगन्धि जलकी तरी दिव्य पुष्पोंके

मर्द्दन और साधुओंके उन सत्तुओंके कणाकोंसे और उस ब्राह्मणके तपसे मेराशिर सुबर्णका हुआ १०६ । ११० । १११ हेब्राह्मणोउस सत्य संकल्प ब्राह्मणके सत्तू दानसे मेरा आधाशरीर सुबर्णका होगया ११२ उस बुद्धिमान्के तपसे इस बड़ेफलको देखो हेब्राह्मण लोगोमैं प्रसन्नचित्त होकर यह इच्छा करके किमेरा यह शेषबचा हुआ आधा अंगभी सुबर्णका होजाय बारंबार तपोबन और यज्ञों में जाताहूं उसी प्रकार मैं इस बुद्धिमान् युधिष्ठिर के इस यज्ञको सुनकर११३।११४बड़ी आशासे यहां आयापरन्तु मेराशेष आधाअंग सुबर्णका नहींहुआ हेश्रेष्ठ ब्राह्मणो इसहेतुसे मैंनेहंसकर यहबचन नहीं कहाहै ११५ यह यज्ञ किसी दशामेंभी उस एक प्रस्थभर सत्तू दानके समान नहींहै क्योंकि उस समय उन प्रस्थभर सत्तू के गुणोंसे मेरा आधा शरीर सुबर्णका हुआ ११६ इससे मेरेमतसे यह बढ़ायज्ञ उस सत्तू दानके समान नहींहै वह नौला उस यज्ञमें उन सबब्राह्मणों से ऐसे २ बचन कहकर उनकी दृष्टियोंसे गुप्त होगया और वह ब्राह्मण अपने २ घरोंको गये ११७ बैशंपायन बोले हेशत्रुओंके पुरोंके बिजय करनेवाले राजा जनमेजय उस बड़ेमहाअश्वमेध यज्ञ में जोअद्भुत बृत्तान्त हुआ वह मैंने तुझसे कहा ११८ हे राजा तुमको यज्ञमें किसीप्रकारसेभी आश्चर्य्य न करनाचाहिये वह हजारोंकोटि ऋषिहैं जो तपके द्वारास्वर्गको गये११९ सबजीवमात्रोंसे शत्रुता न करना सन्तोष, सुस्वभाव,सत्यकथन,तप, इन्द्रियों का जीतना,सत्यता और दान यहसब समानहैं १२० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिनकुलाख्यानेनवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानबेका अध्याय ॥

जनमेजयनेकहाकि हेप्रभुराजा लोग यज्ञमें प्रवृत्तहैं महर्षी तपमेंप्रवृत्तहैं वेदपाठीब्राह्मण शान्तीमेंनियतहैं औरइन्द्रियोंका जीतनाबाह्याभ्यन्तरसे होताहै१इसहेतुसे इसलोकमें यज्ञकेफलोंके बराबरदूसरी बात नहीं दिखाईदेती यह मेरा मतहै और निस्सन्देह इसीप्रकार

काहै २ हे श्रेष्ठराजा अनेक राजाओंने बहुतरसे उत्तम यज्ञोंसे पूज कर इसलोकमें बड़ीर शुभ कीर्त्तियोंकोप्राप्तकरके शरीर त्यागने के पीछेस्वर्गकोपाया महातेजस्वी सहस्रनेत्रधारी प्रभु देवराजने बड़ी दक्षिणावाले यज्ञोंसे देवताओंके संपूर्णराज्य कोपाया ३।४ जब भीमसेनसमेतअर्जुनको आगेरखनेवाला राजायुधिष्ठिर पराक्रमऔर ऐश्वर्य्यसे देवराजकेसमानहै ५ फिरकिस कारणसे उसनौलेने म-हात्माधर्मराजके उसमहाअश्वमेध यज्ञकीनिन्दाकरी ६ वैशम्पायन बोले कि हे भरतबंशी राजाजनमेजय यहां अब तुममुझसे यज्ञकी उत्तमरीति और फलोंको यथार्थतासे श्रवणकरो ७ पूर्वसमय में यज्ञ कर्मके विस्तारपाने और इन्द्रके पूजनकरनेपर सब महर्षियोंने यज्ञ कर्ममेंप्रवृत्त ऋत्विजोंके मध्यमेंउसको वर्णनकियाहै गुणवान् हवन में अग्नि और देवताओंका आह्वानहोने और महर्षियों के नियत होनेपर उस पशुघातक्रियाके समयपर अत्यन्त प्रसन्न श्रेष्ठवेदज्ञसुं-दर शब्द अव्यग्रचित्त तेजस्वी उत्तम अध्वर्य्य ब्राह्मणोंसे पशुओं के पकड़नेपर महर्षीलोग दयासेयुक्तहुये ८।९।१०।११ हेमहाराजउन तपोधन ऋषियोंने दुखीपशुओंको देखकर इन्द्रसे मिलकर कहा कि यहयज्ञबिधि शुभनहींहै१२ हेइन्द्रतुझधर्मके चाहनेवालेका यहबड़ा अज्ञानहैयज्ञमें पशुसमूहोंका माराजाना बिधिमें नहींदेखागया १३ हे प्रभुयह तेराप्रारम्भकर्म धर्मका नाशकरनेवालाहै क्योंकि हिन्सा धर्मनहीं कहाती है इससेयह यज्ञधर्मरूप नहींहै जो चाहताहै तो तू अपने यज्ञकोशास्त्रके अनुसारकर १४ हेसहस्राक्ष तीनवर्षके पुराने अन्नसे यज्ञकरो शास्त्रके अनुसार होनेवाले यज्ञसे तेराबड़ा धर्म होगा १५ हेइन्द्रयह बड़ाधर्महै और बड़ेगुण वा फलका उदयकरने-वालाहैतत्त्वदर्शी ऋषियों से उस बचन को सुनकर इन्द्रने अंगीकार नहींकियाऔरअहंकारसे मोहकेआधीनहुआ हेभरतबंशीउसइन्द्रयज्ञ में तपस्वियोंका बड़ा शास्त्रार्थ इसविषय में हुआ कि पशुओंसे यज्ञ करना चाहिये अथवा जव आदिक अन्नकी बस्तुओंसे करनायोग्यहै तवबाद करने से दुखितरूप उन तत्त्वदर्शी ऋषियोंने १६।१७।१८

इन्द्रसे मिलकर राजावसुसे पूछाकि हे महाभाग श्रेष्ठराजा यज्ञोंके बिषयमें शास्त्रकी क्याआज्ञाहै औरकौन शास्त्रहै उत्तम पशुओंसेयज्ञ करनाचाहिये वा जवघृतादिकसे करनाउचितहै १९।२० राजा बसुने उनके उसवचनको सुनकर बिनाबलाबल बिचारे यह उत्तर दियाकि जो समयपर बर्त्तमानहोय उसीसे यज्ञकरनाचाहिये २१ वह चंदेरी देशोंका ईश्वर प्रभुराजा बसु इसप्रकारके बिपरीत प्रश्नको कहकर रसातलमें भेजागया २२ इसहेतुसे प्रभुस्वयंभू ब्रह्माजी के सिवाय किसी अकेले बहुत जाननेवाले को सन्देह स्थान में उत्तर देना न चाहिये २३ क्योंकि पापात्मा बुद्धिवाला मनुष्य जो दान देताहै वह सब बड़ेदानभीउसको तिरस्कारकरके नाशहोजातेहैं २४ उसअधर्म में प्रवृत्त दुर्बुद्धी अशुद्ध अन्तःकरण हिन्सा करनेवाले मनुष्य की अपकीर्त्ति दानसेहीदोनोंलोकोंमें होतीहै २५ जोधर्ममेंसन्देह करने-वाला अज्ञान मनुष्यअनीतिसे प्राप्तहुये धनको सदैव यज्ञोंमें व्यय करताहै वह धर्मकेफलको नहींपाताहै २६ जो पापात्मानीच पुरुष धर्मकेबेचनेवालेहैं और संसारके बिश्वासकेलिये वेदपाठी ब्राह्मणो के अर्थदानदेतेहैं और जो वेदपाठी पापकर्मसे धनको पाकरनिर्भय राग और मोहसेसंयुक्तहैं वह अन्तमें नर्कको पातेहैं २७।२८ धन के संचयमें प्रवृत्तचित्त मनुष्य भी लोभ और मोह के आधीन होता है और अपवित्र बुद्धिपापीसे सबजीव भयकरतेहैं जो मनुष्य इस प्र-कार धनको पाकर मोहसे दानकरे अथवा यज्ञकरे वहपाप रूप धनकी आमदनीसे परलोकमें उसदानादिकके फलको नहींभोगता है २९।३० तपोधन धर्मके अभ्यासीमनुष्य अपनी सामर्थ्यके अनुसार इनमूल फल शाक जलादिककोपात्रकेअर्थ दानदेकर स्वर्गको जाते हैं ३१ धर्म,महायोग, दान, जीवोंपरदया, ब्रह्मचर्य्य,सत्यता, दया, धैर्य्य, शान्ती ३२ यहसब उसप्राचीन धर्मके मूलरूपही सुनेजाते हैं आगेके समयमें बिश्वामित्र आदिक राजाहुये ३३ बिश्वामित्र, असित, राजाजनक, कक्षसेन, अरष्टिसेन, राजा सिन्धुद्वीप, इत्या-दिक अनेकराजाओंने परमसिद्धीको पाया राजाओंने और तपोधन

ब्राह्मणोंनेसत्यकर्म और न्यायसे प्राप्तहोनेवाले दानों से परमसिद्धी को पाया ३५ जो ब्राह्मणक्षत्री वैश्य और शूद्र तपमें आश्रितहैं वह दानधर्मकी अग्नि से पवित्र होनेवाले लोगस्वर्गको जातेहैं ३६ ॥

इति श्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिएकनवतितमोऽध्यायः ९१ ॥

बानबेका अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्न किया कि हे भगवन् जोधर्मसे प्राप्तहोनेवाले धन धामसेही स्वर्गहै तो इससबको आपमुझसे वर्णन कीजियेक्यों कि आपबर्णन करनेमें कुशलहैं १ हे ब्राह्मणउस उंछवृत्ती ब्राह्मण के सत्तू दानसेजो बड़ाफल उत्पन्नहुआ वह आपने मुझसे कहायह निस्सन्देह सत्यहै २ हे उत्तम ब्राह्मण सवयज्ञोंमें पूर्ण निश्चय कैसे होताहै इसको आप संपूर्णतासे कहनेके योग्यहैं ३ वैशंपायन बोले हे शत्रुबिजयी महाराज जनमेजय इसस्थानपर में इसप्राचीनइति हासको कहताहूं जोकि पूर्बसमय में अगस्त्य ऋषि के महायज्ञ में उत्पन्नहुआ ४ हे महाराज पूर्बसमयमेंवह महातेजस्वी सबजीवोंकी वृद्धिमें प्रवृत्त अगस्त्य ऋषि बारहबर्षकी दीक्षामें नियतहुये५ महा- त्माके उस यज्ञमें वहलोग होताथे जोकि अग्नि रूप मूल फलों का आहार करनेवाले पत्थरपर कूटकर खानेवाले केवल चन्द्रमा की किरणोंके पानकरनेवाले ६ पूछकर लेनेवाले बैघसिक भोजन के पीछे खानेपीनेकी बस्तुओंके पात्रोंको खालीकरने वाले यती और संन्यासीथेवहइसयज्ञमें चारोंओरनियतहुये७वहसबप्रत्यक्षधर्मवाले क्रोध और इन्द्रियोंके जीतनेवाले जितेन्द्रीपनेमें नियतथेसबहिंसा और छल आदिकसे रहित ८ सदैवपवित्र रीतिमें नियत और इन्द्रियोंसेभी अजितथे पूजन करतेहुये वहमहर्षी उस यज्ञमें नियत हुये ९ भगवान् ऋषिने उनखानेकी बस्तुओंकी सामर्थ्यके अनुसार इकट्ठाकिया और जो योग्यरीतिथी वही उस समय उस महात्मा के यज्ञ में हुई १० उसी प्रकार बहुतसे मुनियोंने बड़े २ यज्ञ किये हे भरतर्षभ उस समय उस प्रकारका अगस्त्यजीका यज्ञवर्त्तमान

होनेपर इन्द्रनेबर्षा नहींकी ११ हेराजा इसी हेतुसे महात्मा अगस्त्य के यज्ञकर्मोंकेअवकाशमें पवित्रात्मामुनियोंकी यहबार्त्तालापहुई १२मत्सरतासेरहितहोकर यहयजमान अगस्त्यअन्नकोदेताहै और परजन्य मेघ बर्षाको नहीं करताहै फिर अन्न कैसेहोगा हे ब्राह्मणो मुनिका यह यज्ञ बारह बर्षकाहै १३ देवता इन बारह बर्षोंमें बर्षा नहींकरेगा आप इसको बिचार कर इस बुद्धिमान महा तपस्वी अगस्त्य महर्षीके ऊपर अनुग्रह करनेके योग्यहो १४ तबइस बचनके कहने पर उस प्रतापवान् अगस्त्यने १५ शिरसे मुनियोंको प्रसन्न करके यह बचन कहा कि जो इन्द्र बारहबर्ष तक बर्षानहीं करेगा १६ तोमैं बड़े ब्रतवाले दूसरे यज्ञोंको ध्येय द्रव्यसेही करूंगा अर्थात् सिद्ध द्रव्यके न होनेपर ध्यानमात्र सेही द्रव्योंको इकट्ठा करूंगा यह बीज मैंने बहुत बर्षोंके लिये जारी कियाहै १७।१८।१९ उसको बीजोंसे ही करूंगा इसमें बिघ्न नहींहोगा यह मेरायज्ञ किसी दशामेंभीनिष्फल नहीं होसक्ता २० देवता कैतो बर्षाही करेगा अथवा वह नहीं रहैगा अर्थात् नाशको प्राप्तहोगा २१ अथवा इन्द्र अपनी इच्छासे मेरी प्रार्थनाको नहीं करेगा तब मैं आप इन्द्र होजाऊंगा और सृष्टिका जीवन करूंगा जो जैसे आहारवाला उत्पन्न हुआहै उसको वैसाही आहार मिलैगा २२ मैं बारंबार इससे अधिकभी करूंगा अब यहां सुबर्णादिक अन्यधनभी बर्त्तमान होयं २३ तीनों लोकोंमें जो पदार्थहैं वह अपने आपयहां आवो अप्सरावोंके दिव्यसमूहकिन्नरों समेत गंधर्बोंके समूह २४ बिश्वावसु आदिक जो अन्य २ गन्धर्बहैं वह सबभी मेरे यज्ञमें आकर बर्त्तमान होयं और उत्तर कौरवदेशों मेंजोकुछ धनबर्त्तमानहै २५ वहसब अपने आप इस यज्ञमें सन्मुख आकर बर्त्तमान होय स्वर्ग२की सभाऔर धर्मयह सब अपने आप बर्त्तमानहोयं २६ ऐसेकहनेपर उसप्रकाश अग्निके समान चित्तवाले अत्यन्त तेजस्वी अगस्त्यमुनिके तपसे वह सबहुआ २७ इसकेपीछे उनप्रसन्नचित्त मुनियोंने तपके बलकोदेखा और सब आश्चर्य्ययुक्त ऋषियोंने बड़े अर्थवाला यह बचनकहा २८ कि हमआपके बचन

से प्रसन्नहैं परन्तु आपके तपका नाशनहींचाहते हमउन यज्ञोंसेही प्रसन्नहैंऔर न्यायसेही २६ यज्ञदीक्षाहोम और जो दूसराप्रयोजन ढूंढ़तेहैं उसको चाहतेहैं हम न्यायसे भोजन इकट्ठा करनेवाले और अपने कर्मोंमें प्रवृत्तहैं ३० हम ब्रह्मचर्य्य और न्यायोंसे वेदोंकोचाहते हैं और न्यायसेही भविष्य कालको चाहते हमघरसे निकलेहैं ३१ और धर्मसेदेखीहुई रीतियोंसेतपकरेंगे आपका यज्ञपूर्णहै और आपकी बुद्धिहिन्सासे रहित है ३२ हे प्रभु तुम सदैव यज्ञों में अहिन्सा को वर्णनकरो हे उत्तम ब्राह्मण हम उससे प्रसन्न होंगे ३३ यज्ञके समाप्त होनेपर हमलोग इस यज्ञ शाला से जायंगे इसप्रकार उन ऋषियोंके वार्त्तालाप करनेपर बड़े तेजस्वी देवराजने ३४ उसके तपो बलको देखकर वर्षाकरी हे जन्मेजय बड़ा पराक्रमी परिजन्य देवता उस यज्ञके समाप्त होनेतक ३५ इच्छाके अनुसार वर्षाकरने वालाहुआ हे राजऋषि आप इन्द्रदेवताने वृहस्पतिजीको आगे करके समीप आकर उस अगस्त्य ऋषिको प्रसन्नकिया ३६। ३७ इसके पीछे अत्यन्त प्रसन्न अगस्त्य ऋषिने यज्ञके समाप्त होनेपर उन महा मुनियोंको विधिपूर्वक पूजनकरके विदाकिया ३८ जनमेजयने प्रश्नकिया कि इस सुवर्णके शिर नौलेके रूपमें होकर किस देवताने यह मनुष्यके समान बचन कहाहै इसको आप मेरे पूछने से वर्णन कीजिये ३६ वैशंपायन बोले कि तुमनेप्रथम यहबात हम से न पूछी और न हमने आपसेवर्णनकिया यह नौलाहै और जिस रीतिसे उसका मनुष्यताका बचनहै उसको आप सुनिये ४० निश्चय करके पूर्व समयमें जमदग्निऋषिने श्राद्धका संकल्पकिया होमकी गौ उनके पासआई आपही उसको दुहा और दूधको दृढ़ और नवीन पवित्र पात्रमें रक्खा धर्मदेवताने क्रोधके रूपसेउसपात्र में प्रवेश किया ४१।४२ वह धर्म देवता उसश्रेष्ठ ऋषिकी परीक्षा लेनेका अभिलाषीथा कि यह अप्रिय करनेपर क्याकरैंगे यह विचारकर उस धर्मने उस दूधकोपीलिया ४३ उस मुनिने उसक्रोध को जानकर उसपर क्रोध नहींकिया हेराजाफिर वह क्रोधब्राह्मण

मूर्ति में नियतहुआ ४४ उसके बिजय होनेपर उस अशांतचित्तने उस उत्तमभार्गवसेकहा ४५ हेश्रेष्ठ भार्गव लोकमें जोयह बार्तालाप पर रूपरहेताहै कि भार्गव ब्राह्मण अत्यन्त क्रोधीहैं वह मिथ्याहैइसीसे मैंआपसे पराजय हुआहूं४६ अबमैं तुझशांतिरूप महात्माकेआधीन हूं हेसाधो मैं आपके तपसे डरताहू हेप्रभु मुझपर कृपाकरो ४७ जमदग्निजी बोले हेक्रोध मैंने नेत्रोंसेतुमको देखा तुमयहांसे विगत ज्वर होकरजाओ क्योंकि इससमय तुमने मेरा अपमान नहींकिया मुझको क्रोधनहींहै ४८ मैंने जिनका नाम लेकर इस दूधका संकल्प कियाहै वह महाभाग पितृदेवताहैं उन्हींसे जाकर समझो ४९ इस प्रकार के बचन सुनकर वह क्रोध महाभयभीत होकर उसी स्थानमें गुप्तहोगया और उसने पितरोंके शापसे नौलेके रूप कोपाया ५० उसने शापके दूरहोनेके निमित्त पितरोंको प्रसन्न किया तब उन्होंने उससे कहाकि तूधर्मको निन्दा करता हुआ शापसे छूटेगा ५१ उन पितरोंके इसबचनके कहनेपर यज्ञदेशऔर धर्मारण्योंमें दौड़ते और निन्दाकरते उस नकुलरूप क्रोधने उस यज्ञको पाया ५२ फिर वह क्रोध एकप्रस्थ परिमान सत्तू दानकी कथासे धर्मपुत्रकी निन्दाकरके उस शापसे निवृत्त हुआ क्योंकि युधिष्ठिरभी धर्मथा ५३ इसप्रकार उस महात्माके यज्ञमें यह चमत्कारी अद्भुत बातहुई फिर हमसब लोगोंके देखते हुये वह नौलाभी अन्तर्द्धान होगया ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्वमेधिकेपर्व्वणिनकुलोपाख्यानेद्विनवतितमोऽध्यायः ९२ ॥

इति अश्वमेध पर्व्व समाप्तम् ॥

—✱—

मुंशीनवलकिशोर के छापाख़ानेमें छापीगई
जनवरी सन् १८८६ ई०

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० ग्रोषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व्व १२
१० शांतिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुसलपर्व्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिवंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से मालूमहोगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) वन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म (७) स्त्री, (८) स्वर्गारोहण, (९) द्रोण, (१०) कर्ण, (११) शल्य, (१२) गदा येपर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व्वमिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाशयोंको मिलसक्के हैं कृपा करके भेजदेवें तो छापेजावें ॥

महाभारत वार्त्तिक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषा में होगयाहै और आदि पर्व्व से लेके हरिवंश पर्य्यन्त सम्पूर्ण उन्नीसों पर्व्व छपगयेहैं ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सार भूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्या दि गुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोह नाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकरायाहै वही उक्त भगवद्गीता वजवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे२ शास्त्रवेत्ताअपनी वुद्धिसे पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेकी सामर्थ्य है वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं और यहप्रत्यक्षहीहै किजबतक किसी पुस्तक अथवा किसी बस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्तपादाब्ज रसिक जनोंकेचित्तानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्तत धर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्वविद्यावि- लासी भगवद्भक्त्यनुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ई ने बहुतसा धनव्यय कर फ़र्रुखाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषा में तिलकरचा नवलभाष्य आख्यसे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसकोभाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं॥

जबछपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यह विचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व ग्रन्थकी भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाकेसाथ और इस ग्रन्थके टीकाकारोंकी टीका भी जितनीमिलें शामिलकीजावें जिसमें उन टीकाकारोंके अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसका- रणसे श्रीस्वामीशंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थित है॥

श्रीगणेशाय नमः

महाभारत भाषा

आश्रमवास व मुशल व महाप्रस्थान व स्वर्गारोहणपर्व्व

—※—

जिसमें

युधिष्ठिरादि पांचो पांडवोंका आश्रममें बासकरने पश्चात् छत्तीसवां वर्ष वर्त्तमान होनेपर अपशकुन दृष्टिआना व यदुवंशियों को मदोन्मत्तहो परस्पर युद्धकर नाशहोना व श्रीकृष्णचन्द्र के पैरमें जरानाम केवट को बाणमारना व श्रीकृष्ण बलदेव को परम धामजाना व युधिष्ठिरादि पांचोपांडवोंको महाप्रस्थान यात्रा कर स्वर्गगमन इत्यादि कथायें बर्णितहैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

—•—

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा

जनवरी सन् १८८६ ई०

पहलीबार ६००

इस यन्त्रालय में जितने प्रकार की महाभारतें छपी हैं
उनकी सूची नीचे लिखी है ॥

महाभारतदर्पण काशीनरेशकृत ॥

—※—

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादिक कवीश्वरोंने अनेक प्रकार के ललित छन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंश को निर्माण किया यह पुस्तक सर्बपुराण और वेदकासारहै बरन बहुधालोग इस बिचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेदबताते हैं क्योंकि पुराणान्तर्गत कोईकथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससेछूट नहींगई मानोयह पुस्तकवेदशास्त्र का पूर्णरूपहै अनुमान ६० बर्षकेबीते कि कलकत्तेमें यहपुस्तक छपीथी उस समय यहपोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्त में मनुष्य ५०) रु० देनेपर राज़ीथे परनहीं मिलतीथी पहलेसन् १८७३ ई० में इस छापेख़ाने में छपी थी और क़ीमत बहुत सस्ती याने वाजिबी१२)थे जैसा कारख़ानेकादस्तूरहै ॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़ेहरफ़ों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्द कियाहै और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्तीहै ॥

इसमहाभारतके भागनीचेलिखे अनुसार अलग२भी मिलतेहैं ॥

पहले भागमें (१) आदिपर्व (२) सभापर्व (३) बनपर्व॥

दूसरेभागमें (४)विराटपर्व(५)उद्योगपर्व(६) भीष्मपर्व (७) द्रोणपर्व ॥

तीसरेभागमें (८)कर्णपर्व(९)शल्यपर्व(१०)सौप्तिकपर्व (११) ऐषिक व विशोकपर्व (१२) स्त्रीपर्व (१३) शान्तिपर्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म, मोक्षधर्म्म ॥

चौथेभाग में(१४)शान्तिपर्व दानधर्म्म व अश्वमेधपर्व(१५) आश्रमबासिकपर्व(१६) मुसलपर्व (१७) महाप्रस्थानपर्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व॥

श्रीगणेशाय नमः

महाभारत भाषा

आश्रमवास पर्व

—o—

जिसमें

पाण्डवों का विधिपूर्वक धृतराष्ट्र और गांधारीकी सेवाकर पुत्रा-
दिकोंका शोक निवारण करना, युधिष्ठिर, कुन्ती और धृतराष्ट्र से
व्यासकावार्त्तालाप और कुन्ती सहित धृतराष्ट्र और गांधारी
कावनमेंजाकर देहकी उत्पन्नअग्निसेभस्महोना यहवृत्तांत
सुनकर युधिष्ठिरादिको शोक और नारदजीके द्वारा शोक
निवारण होना इत्यादि कथा वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी
(सी, आई, ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि
चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से
संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक
श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

—※—

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेखाने में छपा

जनवरी सन् १८८९ ई०

पहलीबार ६००

अथ महाभारत भाषा आश्रमवास पर्व्वका सूचीपत्र ॥

इतिमहाभारत भाषा आश्रमवासका सूचीपत्र समाप्त ॥

—※—

श्रीगणेशाय नमः

महाभारतभाषा आश्रमवास पर्व्व ॥

---*---

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वाराणमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंवन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं बन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंआश्रमवासपर्व्वभाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ आश्रमवासपर्व्व प्रारम्भः ॥

श्री गणेशजीको नमस्कार श्री नारायण नरोत्तम और सरस्वती देवीको नमस्कार करके जयनाम इतिहासको बर्णन करताहूं १ पूर्वमें अंग उपाङ्गों समेत ब्रह्मविद्याको समाप्त कियाउसमें भोगके त्यागनेके द्वारा बनबासियोंको समदमआदिक की प्राप्ति होतीहै उसको धृतराष्ट्र का आचारदिखलानेसे प्रकट करतेऔर उससे प्राप्तहोनेके योग्य जीवईश्वरकेतत्त्वको अपूर्वचमत्कारोंके दर्शन द्वारा सिद्ध करते कथाको प्रारंभकरते हैं जन्मेजय ने पूछा कि मेरे पितामह महात्मा पांडवोंनेराज्यकोपाकर उस महाराज

महात्मा धृतराष्ट्र से किस प्रकारका उपकार पूर्वक वर्त्तावकिया १ जिसकेपुत्र और मन्त्री मारेगये वह रक्षाका आश्रय न रखने-वाला ऐश्वर्य्यसे रहित राजाधृतराष्ट्र और यशस्विनी गान्धारी किस दशावालेहुये २ वह मेरे पूर्व पितामह पांडव कितने समय तक राज्यपर नियतरहे इसको आप मुझसे कहनेको योग्यहैं ३ वैशंपायनवोले कि जिनके शत्रुमारे गये उन महात्मा पांडवों ने राज्यकोपाकर धृतराष्ट्र को अग्रवर्त्ती करके सब पृथ्वीकापालन पोषण किया ४ हे कौरवोत्तम वह संजय बुद्धिमान युयुत्सु और दासी पुत्र बिदुर उस धृतराष्ट्र के पास वर्त्तमान होकर सेवाकरने-वालेहुये ५ पांडवोंने पन्द्रहवर्षतक सब राज्यके कार्य्य उसराजा धृतराष्ट्र से पूछे और उसकी ही आज्ञानुसार सब किये ६ धर्म-राजकी आज्ञामें नियत उन वीरोंने सदैव उनके पासजाकर च-रणोंको दण्डवत करके उस राजाको प्रतिदिन हाजिरी दी ७ मस्तकपर सूंघेहुये उन पांडवों ने सब राज्यके कार्य्य किये और कुन्तीभी गान्धारीके पास वर्त्तमान रहकर आज्ञानुसारिणी रही द्रौपदी सुभद्रा और पांडवोंकी अन्य सब स्त्रियोंने विधि पूर्व्वक उन दोनों सासससुरके साथ अच्छा वर्त्तावकिया ८।९ युधिष्ठिरने राजाओंके योग्य बहुमूल्य बस्त्र भूषण पलँग और नानाप्रकारके भक्ष्य भोज्यके सब पदार्थ १० धृतराष्ट्र को भेट किये उसी प्रकार कुन्तीने भी गान्धारी के साथ गुरुवृत्ती का बर्त्तावकिया ११ हे-कौरव बिदुर संजय और युयुत्सूने उसवृद्ध राजाकी उपासनाकरी जिसके कि सब पुत्र मारेगयेथे १२ और वह जो द्रोणाचार्य्यके साले ब्राह्मणोंमें उत्तम बड़े धनुषधारी कृपाचार्य्यजी उस राजाके साथ प्रीति करनेवालेहुये १३ देवता ऋषि पितृ और राक्षसोंकी कथा कहते पुराण ऋषि भगवान व्यासजीने भी सदैव राजाकी समीपता करी १४ फिर धृतराष्ट्र की आज्ञानुसार बिदुरजीने उन कर्मोंको कराया जो कि धर्म व्यवहारसेसंयुक्तथे १५ बिदुरजीकी श्रेष्ठ नीतिसे इस धृतराष्ट्र के बहुतसे अभीष्ट कार्य्य थोड़ेही धनके

द्वारासामन्तोंसे प्राप्तहोते थे राजा धृतराष्ट्रने कारागृह निवासियों का बंधमोक्ष और मारनेके योग्य मनुष्यों को छोड़ा परन्तु राजा युधिष्ठिरनेकभी कुछनहींकिया १६। १७ फिर कौरवराज महातेजस्वी युधिष्ठिरने बिहार यात्राओंमें सब अभीष्ट पदार्थ राजाधृतराष्ट्रके भेट किये १८ आरालक अर्थात् शाकादिक बनानेवाले सूपकारअर्थात् रसोई बनानेवाले रागखांडुकअर्थात् सोंठशर्करासे युक्त यूप बनानेवाले आदिकलोग राजाधृतराष्ट्र के पास पूर्व्वकेही समानर्नियत हुये १९ पांडवोंने बहुमूल्य वस्त्र और नानाप्रकारकी फूलमाला न्यायकेअनुसार प्रतिदिन नवीन२धृतराष्ट्रकोभेटकरीं २० मैरेयनाम आशव मांस मत्स्य खाने पीनेकी वस्तु और अपूर्व २ प्रकारके भोजन प्रथमही के समान उसराजाको निवेदनकिये २१ जो राजा लोग जहां तहांसे आये वह सब पूर्वकेही समान कौरवेन्द्र धृतराष्ट्र के पास वर्त्तमान हुये २२ कुन्ती द्रौपदी यशस्विनी सुभद्रा नागकन्या उलूपी देवी चित्राङ्गदा २३ धृष्टकेतुकी बहिन और जरासन्धकी पुत्री आदिक और इनके सिवाय अन्य बहुत सी स्त्रियां २४ यह सब सेवा करनेवाली होकर उसगान्धारी के पास वर्त्तमानहुईं इस निमित्त ऐसी सेवाकरी कियह पुत्रोंसे रहित धृतराष्ट्र किसी प्रकार कादुःख नपावे २५ युधिष्ठिरने भी सदैव अपने भाइयों को यही आज्ञादी तबभीमसेनके सिवाय तीनों पाण्डवों ने इसप्रकार धर्म्मराज के सार्थक वचन को सुनकर २६ अधिकतासे उपकार किया उसवीर भीमसेन के हृदयसे वह बात दूरनहीं होतीथी जो कि धृतराष्ट्र की दुर्मतिसे द्यूतके द्वारा उत्पन्न हुईथी २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि इसप्रकार पाण्डवों से पूजित ऋषियों के साथ बैठे हुये उसराजा धृतराष्ट्र ने पूर्वकेही समान बिहार

किया १ उस कौरवने ब्राह्मणों के देनेके योग्य देवपूजा आदिक दीं राजायुधिष्ठिरने उस सबकोभी बिधिके अनुसार उपस्थित किया तब उस दयावानप्रीतिमान धर्मराज राजा युधिष्ठिरने भाइयों और मन्त्रियों से यह बचन कहा २।३कि यहराजाधृतराष्ट्र मुझसे और आपलोगोंसे पूजनकरनेके योग्यहै जो मनुष्य धृतराष्ट्र की आज्ञामें नियत रहताहै वह मेरा प्यारा है उसके बिपरीतकर्म करनेवाला मनुष्य मेरा बिरोधीहोकरदण्डके योग्य होगा पुत्रोंके श्राद्ध कर्ममें ४।५और सबज्ञातिबांधववानातेदारोंके श्राद्धमें जितने कर्म करने की इसकी इच्छाहोय वह सब इसको दो इसके पीछे उसबड़े साहसी राजा धृतराष्ट्र ने ६ ब्राह्मणों के अर्थ उनकी योग्यताके अनुसार बहुतसा धन दिया धर्मराज भीमसेन अर्जुन और नकुल सहदेवने भी ७ उसका प्रियकरने की इच्छासे उसकी सब प्रकारकी आज्ञाओंको किया पुत्र पौत्रोंके मरनेसे पीड़ामान वह वृद्ध राजा ८ किसी प्रकारसेभी हमारे शरीरों से उत्पन्न हुये शोकसे नहीं मरे इस बातको बिचारकर उन्होंने बड़ी रक्षाकरी कि उस जीवते पुत्रवाले कौरव बीरका जितना सुखथा ९ उस से भी अधिक अन्य २ भोगोंको प्राप्तकरे वह सब पाण्डव इस निश्चयवालेहुये इसी हेतुसेउसप्रकार स्नेहभाव रखनेवाले वह पांचों भाई पाण्डव सब मिलकर १० अच्छीरीति से धृतराष्ट्र की आज्ञा में नियतहुये धृतराष्ट्र भी उन सबको नम्रता युक्त नियम में नियत ११ औरशिष्यताकी रीतिसेयुक्त देखकर गुरुकेसमान बर्त्ताव करनेवालाहुआ उसगांधारीनेभी पुत्रोंके अनेक प्रकारके श्राद्ध में१२ वेद पाठी ब्राह्मणोंको अभीष्ट वस्तुओंको देखकर अऋणताप्राप्तकी इसप्रकार धर्म धारियों में श्रेष्ठ बुद्धिमान युधिष्ठिरने भाइयों समेत होकर उसराजाका पूजन किया १३ वैशंपायन बोले कि इसके पीछे उस महातेजस्वी कौरव कुलके पोषण करनेवाले वृद्ध राजा धृतराष्ट्र ने पाण्डुनन्दन युधिष्ठिर में कोई अप्रिय बातनहीं देखी १४ माहत्मा पांडवों के शुभरीति कर्मों

होनेपर वह अम्बिका का पुत्र राजा धृतराष्ट्र प्रसन्नहुआ १५सौ-बलकी पुत्री गान्धारी भी उस पुत्रशोकको दूरकरके सदैव ऐसी प्रीतिमान हुई जैसेकि अपनेपुत्रोंपर होतीथी १६कौरवोंके पोषण करने वाले पराक्रमी राजा युधिष्ठिर ने राजा धृतराष्ट्रके अभीष्ट हीकिये १७ हेमहाराज जन्मेजय राजा धृतराष्ट्र और तपस्विनी गान्धारी यह दोनों जो कुछ छोटा बड़ा कार्य्य कहतेथे शत्रुओं के नाश करनेवाले पांडवोंके धुरंधर राजा युधिष्ठिरने उसके वचनोंकी प्रशंसा करके उस२ कार्य्यको किया १८।१९ वहराजा उसके उसचलनसे अत्यन्त प्रसन्नहुआ और उसनिर्बुद्धी अपनेपुत्र दुर्योधन को स्मरण करके पश्चात्ताप करनेवालाहुआ प्रातःकालके समय उठकर स्नान जपादिक से निवृत्त वह राजा धृतराष्ट्र सदैव पांडवोंको यह आशीर्वाद दियाकरताथा कि युद्धोंमें इनकी विजयहोय २०।२१ उसराजाने ब्राह्मणों से स्वस्तिवाचन कराके और अग्निमें हवन करके पाण्डवोंकी दीर्घायुको चाहा २२उस समय उस राजा धृतराष्ट्र ने पांडवों से जैसी प्रसन्नता को पाया वैसी कभी अपने पुत्रोंसे नहीं पाईथी २३ और वह जैसाकि ब्राह्मण और क्षत्रियोंका प्याराथा वैसाही वैश्य और शूद्रोंके भी समूहोंका प्याराथा २४ उस समय जोकुछ धृतराष्ट्र के पुत्रोंनेपाप कियेथे उन पापोंको हृदय में धारणन करके वह राजा युधिष्ठिर उस राजा धृतराष्ट्र का आज्ञा कारी हुआ २५ जोकोई मनुष्य उस राजा धृतराष्ट्र का अप्रिय काम करताथा वह बुद्धिमान युधिष्ठिर की शत्रुताको प्राप्तकरताथा २६ किसी मनुष्यनेभी युधिष्ठिर के भयसे राजा धृतराष्ट्र और दुर्योधनके बुरेकर्मोंको नहींकहा २७ हे शत्रुंजय वह गान्धारी और विदुर उस महाराज युधिष्ठिरके बाह्याभ्यन्तरीय धैर्य और पवित्रतासे प्रसन्न हुये परन्तु भीमसेनके गुणोंसे नहीं प्रसन्न हुये २८ निश्चय करनेवाला धर्मपुत्रभी उस राजा धृतराष्ट्रके अनुसार कर्म करनेवाला हुआ और धृतराष्ट्र को देखकर सदैव चित्तसे दुखीहोताथा २९ वह शत्रुओंका विजयक-

रने वाला हृदयसे हाराहुआ धृतराष्ट्र उस अपने आज्ञाकारीधर्म पुत्रराजा युधिष्ठिरके समान कर्मकरने वाला हुआ ३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः२॥

तीसरा अध्याय॥

वैशंपायन बोलेकि सम्पूर्ण राज्यमें सब मनुष्योंने राजा युधिष्ठिर और दुर्योधनके पिताकी प्रीतिमें अन्तर नहीं देखा १ जब जबवह कौरव राजाधृतराष्ट्र अपने दुर्बुद्धी पुत्रको यादकरता था उस उससमयपर हृदयसे भीमसेनको गालियां दियाकरता था २ हेराजा उसीप्रकार भीमसेनने भी सदैव बिरुद्ध चित्तसे राजाधृतराष्ट्र को नहींसहा ३ भीमसेनने इसके गुप्त अप्रिय कर्मकिये और राज्यसेवकोंके द्वारा इसकी आज्ञाओंको भी बिपरीत किया ४ फिर उसके दुराचार और बुरे चलनोंको स्मरण करते भीमसेनने सुहृद जनोंके मध्य में भुजाका शब्दकिया ५ क्रोधयुक्त अशांत चित्त भीमसेन ने अपने शत्रुदुर्योधन कर्ण और दुश्शासन को याद करके धृतराष्ट्र और गान्धारीके सुनतेहुये ६ इस कठोर बचनको कहाकि मुझपरिघ के समान भुजा रखनेवालेने अन्धे राजाके सबपुत्र ७ जोकि नानाप्रकारके शस्त्रोंसे लड़नेवालेथे उनको परलोकमें पहुंचाया यहमेरी दोनोंभुजा परिघरूप महादुर्जय हैं ८ जिनदोनों भुजाओंके मध्यकोपाकर धृतराष्ट्र के पुत्रोंकानाश हुआवहमेरी भुजापूजनेके योग्य चन्दनसे चर्चितहैं९ जिनकेद्वारा दुर्योधन पुत्र और बान्धवों समेत नाशकियागया हेराजा ऐसे २ अनेकवचन बाणरूप उसने कहे १० भीमसेनके उनवचनों को सुन कर धृतराष्ट्रने बैराग्यको पाया उस बुद्धिमान समयकी लौटपौट की जाननेवाली ११सर्वधर्मज्ञगान्धारीने उनअप्रियबचनोंकोसुना और पन्द्रहवांबर्षब्यतीत होनेपर १२ भीमसेनके बचनरूपीबाणों से पीड़ामान राजा धृतराष्ट्र ने बैराग्यको पाया परन्तु कुन्ती के पुत्रराजा युधिष्ठिरने उसको नहींजाना १३अर्जुनकुन्ती यशस्विनी

द्रौपदी और धर्मज्ञनकुल और सहदेव उसराजाके चित्तकोइच्छा के समान कर्मकरने वालेहुये १४ राजाके चित्तकी रक्षाकरते हुये उनलोगोंने कुछअप्रिय कभीनहींकहा फिर धृतराष्ट्र ने अपनेभाई बन्धुनातेदारआदिकका अच्छीरीतिसेपूजनकिया १५ और अश्रु को नेत्रोंमें भरकर बड़े शोकयुक्त होकर उनसे यहवचनकहा कि यह आपको बिदितहै कि जिसप्रकारसे कौरवोंका नाशहुआ १६ कौरवोंने उससब नाशको मेरेही अपराधसे जानाहै जो मुझ नि-र्बुद्धीने उस दुर्बुद्धी बिरादरीके भयके वृद्धिकरनेवाले दुर्योधन को कौरवीय राज्यपर अभिषेक कराया १७ जो मैंने वासुदेवजी के उनसार्थक बचनोंको नहींसुना कि अच्छाहोगा कि यह दुर्बुद्धी पापी दुर्योधन सन्त्रियोंसमेत बन्धनमें कियाजाय १८ और बिदुर भीष्म द्रोणाचार्य और कृपाचार्य नाम ज्ञानियों नेभी मुझपुत्र की प्रीतिमें फंसेहुयेसे अनेक हितकारी बचन कहे १९ और प्र-त्येक स्थानोंमें महात्मा व्यास संजय और गान्धारीनेभी मुझको समझाया वहीबातें अबमुझको दुखदायीहोकर पश्चात्तापकराती हैं २० जोमैंनेबापदादोंकी यहप्रकाशमान सम्पत्ति महात्मापांडवों को नहींदी यहबात मुझको दुखदेतीहै २१ उस दुखदायी दुरा-चारी सबराजाओंके होनेवाले नाशको जानकर श्री कृष्णजीने इसराज्यके बिभाग होजानेको बहुत कल्याण रूपमाना २२ सो मैं इनभूल कालके शूलरूपी अपनेकियेहुये हजारोंदोषोंको अपने हृदयमें धारण करताहूं २३ अबपन्द्रहवें बर्षमें अधिकतर देखता हूं इसहेतुसे मैं दुर्बुद्धी इसपापकीशुद्धीके लियेनियम करनेवाला हूं २४ चौथेदिन और कभी २ आठवें दिनभी इतनाही भोजन करताहूं जिससे कि केवल सुवादृशावन्द होय और शरीर बना रहे गान्धारी उसमेरे ब्रतको जानतीहै २५ सबभाई बन्धुनातेदार युधिष्ठिरके भयसे यही जानते हैं कि यह सदैव आहार करताहै क्योंकि मेरे भूखे रहनेको सुनकर वह पांडव युधिष्ठिर अत्य-न्त शोचयुक्त होताहै २६ मैं जप में प्रवृत्त होकर नियमके बहाने

से पृथ्वीपर मृगचर्मके आसनोंपर सोताहूं और इसीप्रकार यश-स्विनी गांधारी भी सोतीहै २७ जिनदोनोंके युद्धमें मुख नमोड़ने वाले सौपुत्रमारेगये मैं उनका शोचनहीं करताहूं क्योंकि उसको क्षत्रीधर्मज्ञाताहै२८ कौरव धृतराष्ट्र ने यह कहकर धर्मराजसे कहा किहे कुन्तीकेपुत्र तेराकल्याणहो तुममेरे इसवचनको समझो २९ हेपुत्र तुझसे सेवाकियाहुआ मैंसुखसे ठहराहुआहूं और बारंबार बड़े२ दानऔर श्राद्धभी मैंनेकिये ३० हेपुत्र मैंने बलके समान बड़ा सुकृत प्राप्तकियाहै यह गांधारी जिसके सौपुत्र मारेगये हैं धैर्य सेमेरी ओरको देखतीहै ३१ द्रौपदी के अप्रिय करनेवाले और तेरा ऐश्वर्य्य हरनेवाले वह सब निर्दयी व्यतीत हुये और युद्धमें अपने धर्मसे मारेगये ३२ हे कौरवनन्दन उन्हेंाके विषयमें प्राय-श्चित्तादिक कर्मोंको नहीं देखताहूं क्योंकि सन्मुख युद्धकरने-वाले वहसब शस्त्रोंसे विजयकियेहुये लोकोंकोगये ३३ हे राजेंद्र अबअपना और गांधारीका हित करनेवाला पवित्र कर्म करनेके योग्यहै तुमउसकी आज्ञादेनेको योग्यहो ३४ तुम धर्म्म धारियोंमें श्रेष्ठ और सदैव धर्मवत्सल हो प्राणियोंके राजा औरगुरुहो इस लिये मैं इसको कहताहूं ३५ हे वीरतेरी आज्ञानुसार मैं वनोंमें निवास करूंगा हे राजाइस गांधारी समेत मैं चीर वल्कलधारी होजाऊं ३६ हे भरतर्षभ तात युधिष्ठिर मैं तुझको आशीर्वाददेता हुआ वनचारी होऊंगा हमारे कुलमें वृद्धावस्थामें ऐसे वनवास करना सबको योग्यहैं ३७ कि अवस्थाके अन्तपर अपने पुत्रोंको ऐश्वर्य्यदेकर वनकोजायँ हेराजा वहां जाकरमैं वायुभक्षी अथवा निराहार होकर भी निवास करता ३८ इस अपनी पत्नी समेत उत्तमतपको करूंगा हेवीरपुत्र तुमभी तपस्यासे फलपानेवाले होगे क्योंकि राजाहो और राजालोग प्रजाके शुभाशुभ कर्मके फलके भागीहैं ३९ युधिष्ठिरने कहा हेराजा आपके इसप्रकार दुःखी होनेपर राजसे मुझको आनन्द नहीं होताहै मुझ अत्यन्त दुर्बुद्धी अचेत और राज्यमें प्रवृत्तचित्तको धिक्कारहै४० जो भाइयों समेत

मैं इसदुखसे पीड़ामान बलकारलेसे अत्यन्त दुर्बल और सुधाकेजीत-नेवाले पृथ्वीपर सोनेवाले को नहीं जानता ४१ पश्चात्तापहै कि मैं अज्ञानी तुझ गंभीर बुद्धीवालेसे ठगागया जो प्रथम मुझको बिस्वास देकर इसदुखको भोगतेहो ४२ हे राजा मुझको राज्य, भोग, यज्ञ और सुखसे क्याप्रयोजनहै जिसमेरे आपतरीकेवृद्धनेइन दुःखोंको पाया ४३ हे राजा तुझ दुखियाके इस वचनसे सम्पूर्ण राज्यसमेत अपनीआत्माकोभी पीड़ामान जानताहूं ४४ आपपिता हो आपमाता हो आप हमारे परमगुरुहो आपसे पृथक् होकर हम कहांरहेंगे ४५ हेराजाओंमेंबड़ेसाधू आपका और सपुत्र युयुत्सुहै हे महाराज वहराजा होय अथवा आपजिस किसी अन्य कोचाहतेहो वहराजा कियाजाय४६मैं वनकोजाऊंगा आपराज्य में राजशासन करो फिर आपमुझ अपकीर्त्तिसे भस्महोनेवालेको भस्म करनेके योग्य नहीं हो ४७ मैं राजा नहींहूं आप राजाहो मैं आपसे सनाथहूं मैं कैसे तुझ धर्मज्ञगुरुको आज्ञा देनेको उत्साह करसक्ताहूं ४८ हे निष्पाप हमारे हृदयमें दुर्य्योधनकी ओरसेकुछ भी क्रोधनहींहै वह उसी प्रकार होनहारथा हम और अन्य सब मोहसे अचेत होगये ४९ हम आपके वैसेही पुत्रहैं जैसे कि दुर्योधनादिकथे गान्धारी औरकुन्तीमें किसीप्रकारका भी भेदनहींहै यह मेरामतहै ५० हे राजेन्द्रजो आप मुझको छोड़कर जाओगे तो शपथ से कहताहूं कि मैं आपके पीछे २ चलूंगा ५१ धन से पूर्ण सागररूप मेखला रखनेवाली यह पृथ्वी मुझ आपसेजुदेकी प्रसन्नता करनेवाली नहींहोगी ५२ हे राजेन्द्र यह सब आपकाहै मैं आपको शिरसे प्रसन्न करताहूं हम आपके आधीनहैं आपके चित्तका संताप दूरहोय ५३ हे राजा मैं मानताहूं कि तुमने होनहारको प्राप्तकिया मैं प्रारब्धसे आपकी सेवाकरके चित्तके ताप को दूरकरूंगा ५४ धृतराष्ट्र बोले हे कौरवनन्दन प्रभु युधिष्ठिर मेरा चित्त तपमें प्रवृत्तहै और वनमें जाना हमारे कुलके योग्यहै ५५ हे पुत्रमैंने बहुत कालतक निवास किया और तुमने भी बहुत

तक सेवाकरी हे राजा तुम मुझ वृद्धको आज्ञादेनेके योग्यहो ५६ वैशंपायन बोले कि उस कंपायमान और आशीर्वाद देनेकेलिये अंजुली करनेवाले राजा धृतराष्ट्र ने धर्मराजसे यह कहकर ५७ महारथी कृपाचार्य्य और संजय से भी यह वचन कहा कि मैं आप दोनोंके द्वारा राजा युधिष्ठिरको समझाया चाहताहूं ५८ बड़ी अवस्थासे और वार्त्तालाप करनेसे यह मेरा चित्तग्लान होताहै और मुख सूखाजाताहै५९ उस धर्मात्मा वृद्ध और बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्र ने यह कहकर अकस्मात निर्जीवके समान होकर गान्धारीका सहारालिया ६० शत्रुओंके विजय करनेवाले राजा युधिष्ठिरने उस अचेत बैठेहुये राजाको देखकर बड़ी कठिनपीड़ा को पाया ६१ युधिष्ठिर बोले कि जिसका बल पराक्रम साठ हजार हाथीके समानथा वह राजाधृतराष्ट्र स्त्रीका सहारा लेकर शयन करताहै ६२ जिसने पूर्व्व समय में भीमसेनकी वह असल धातुलोहेकी मूर्त्तिको चूर्णकरडाला वह अबला स्त्री के आश्रयमें हुआ ६३ मुझ धर्मसे अज्ञानको धिक्कारहोय मेरीबुद्धि और ज्ञान को धिक्कारहोय जिसके कारणसे यह राजा इस दशाके अयोग्य होकर शयनकरताहै ६४ मैं भी इसीकेसमान उपवासकरूंगा जैसा कि यह मेरा गुरु करताहै अर्थात जो राजा धृतराष्ट्र और यह यशस्विनी गान्धारी भोजन नहीं करतेहैं तो मैं भी भोजन नहीं करूंगा ६५ वैशंपायनबोले हे राजाजन्मेजय इसकेअनन्तर धर्मज्ञ राजायुधिष्ठिरने शीतलजल और हाथसे उसकी छाती और मुख को बड़े धीरेपनेसे स्पर्शकिया ६६ राजा युधिष्ठिरके उसहाथके स्पर्शसे जो कि रत्न औषधियों से युक्त पवित्र और सुगन्धित था उसराजा धृतराष्ट्रने सचेततको पाया ६७ धृतराष्ट्र बोले हे कमल लोचन पांडव फिर तुम हाथसे मुझको स्पर्शकरके मिलो मैं तेरे अत्यंत स्पर्शसे सजीव होताहूं ६८ हे राजामैं हाथोंसे तुमको स्पर्श करता और तेरे मस्तकको सूंघना चाहताहूं इसमें मेरा बड़ा आनन्दहै ६९ हे कौरवोंमें श्रेष्ठ अब आहार न करनेवालेका यह

आठवांदिनहै जिसके कारणसे अधिक चेष्टाकरनेको समर्थ नहीं हूं ७० तुझ से प्रार्थना करनेवाले मैंने यह कठिन परिश्रम किया है हे तात इसी हेतुसे निर्बल चित्त होकर अचेतके समान होगया हूं ७१ हे कौरव कुलके उद्धारकरनेवाले समर्थयुधिष्ठिर मैं मानताहूं कि अमृत रसकी समान इसतेरे हाथकेस्पर्शको पाकर सजीव होगयाहूं ७२ वैशंपायन बोले हे भरतबंशी ताऊके इसप्रकार के कहेहुये बचनों को सुनकर युधिष्ठिर ने पितापनेकी प्रीतिसे उसके सब अंगोंको बड़े धीरेपनेसे स्पर्शकिया ७३ फिर राजा धृतराष्ट्र ने प्राणोंको पाकर युधिष्ठिरको भुजाओं से अपनी बगलमें लेकर मस्तकपरसूंघा ७४ फिर अत्यन्त दुःखी होकरवह बिदुरादिक रोदन करनेलगे औरबड़े दुःखसे राजायुधिष्ठिरको कुछनहीं कहा ७५ हे राजा चित्तमें कठिन दुःखपानेवाली धर्मज्ञ गान्धारी ने उन दुःखोंको सहा और कहा कि इसप्रकार से दुःखी नहोना चाहिये ७६ कुन्ती समेत अत्यन्त दुःखीहुसरी सबस्त्रियाँ अश्रुओंसे नेत्रोंको पूर्ण करके उसको घेरकरचारों ओरको नियतहुई ७७ इसके पीछे धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिरसे फिर यह बचन कहा कि हे भरतबंशियों में श्रेष्ठराजा युधिष्ठिर मुझको आज्ञादो मैं तपकरूंगा ७८ हे तात मुझ बारम्बार बार्त्तालाप करनेवालेका चित्त भयभीत होकर उचाटन होताहै हे पुत्र अब इसके पीछे तुम मुझको दुःख देनेके योग्य नहींहो ७९ उस युधिष्ठिरसे उसकौरवेन्द्रके इस प्रकार कहनेपर सबजीवधारियों के बड़े दुःखकारी शब्द उत्पन्न हुये ८० धर्म्म पुत्र युधिष्ठिर ने इसदशाके अयोग्य बिपरीत रूप दुर्बल ब्रतसे अत्यन्तक्षीण केवल अस्थिचर्मसे युक्तशरीर महाप्रभु अपने ताऊकोदेखकर और शोकजन्य अश्रुपातोंको करके फिर यह बचनकहा ८१ । ८२ हे परन्तप नरोत्तम राजा धृतराष्ट्र मैं उतना अपने जीवन और संपूर्ण पृथ्वी के राज्यको नहीं चाहताहूं जितनाकि आपका प्रियकरना चाहताहूं ८३ जोमैं पोषण के योग्यहूं और आपका प्याराभीहूं तो भोजन कीजिये इसकेपीछे

आपकी दूसरी बातोंकोजानूंगा और सुनूंगा ८४ तब महातेजस्वी धृतराष्ट्र ने कहा हे बेटा मैं चाहताहूं कि मैं तेरी आज्ञासे भोजन करूं ८५ युधिष्ठिरसे महाराज धृतराष्ट्र के इसप्रकार कहने पर सत्यवतीकेपुत्र व्यासऋषिने सन्मुख आकर यह वचनकहा ८६ ॥

श्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांआश्रमवासकेपर्व्वणितृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय॥

व्यासजी बोले कि हे महाबाहु कौरवनन्दन युधिष्ठिर महातेजस्वी धृतराष्ट्रनेजैसाकहा उसमेंकिसीप्रकारका विचारन करता हुआ तू उसकोकर १ यह राजावृद्धहैं मुख्यकर इसके पुत्रमारे गये यह ऐसेऐसे दुःखोंके भोगनेको नहीं सहसकेगा यह मेरामत है २ हे महाराज यह ज्ञानवान् दयालुचित्त भाग्यवान् गान्धारी भी अपने पुत्रोंके कठिन शोकोंको बड़े धैर्य्यसेसहतीहै ३ मैं भीतुम से यही कहताहूं तुम मेरा वचनकरोकि तुम इसको आज्ञादोनहीं तो यहयहांही व्यर्थमरजायगा४यह राजाप्राचीनराज ऋषियोंकी की गतियोंकोपावेगा अवस्थाके अन्तपर सबराजऋषियोंकावनवास होताहै ५ वैशंपायनबोले तब अपूर्वकर्मी व्याससे इसप्रकार शिक्षा पानेवाले उस महातेजस्वी धर्म्मराज ने महामुनिको उत्तर दिया ६ कि भगवानही हमारे बड़ेहैं भगवानही हमारे गुरुहैं भगवानही इसराज्य और कुलके रक्षाश्रयहो ७ मैं आपका पुत्रहूं हेभगवान आपही मेरे पिता राजा और गुरुहो पिताकी आज्ञा पर चलनेवालाही मनुष्य धर्म्मसेपुत्रहोताहै ८ वैशंपायन बोले इस प्रकार कहेहुये उस वेदज्ञोंमें श्रेष्ठ महातेजस्वी महा कविव्यासजीने उस युधिष्ठिर से फिर वचनकहा ९ हे महाबाहु यह इसीप्रकारहै जैसा कि आपकहतेहो परन्तु इसराजानेवृद्धावस्थाकोपाया और उपनिषद मत में नियतहै १० सो मेरी और तेरी दोनोंकी आज्ञा पाकर यह राजा अपने चित्तके अभीष्टकोकरो तुम इसके विघ्न कर्त्ता मतहो ११ हे युधिष्ठिर राजऋषियोंकापरमधर्म यहीहै कि

युद्धमें अथवा वनमेंविधिकेअनुसारही अपना शरीर त्यागकरे १२ हेराजेन्द्र यह राजाधृतराष्ट्र तेरे उस पिताराजापांडुसे पूजनकिया जाताथा जो कि शिष्यताकी रीतिसे इस धृतराष्ट्रको अपने गुरुके समान उपासना करताथा १३ आपलोगोंने रत्नों के पहाड़ोंसेशो- भायमान दक्षिणावाले यज्ञोंसे पूजनकिया पृथ्वीको भोगा और प्रजाका पालनकिया १४ तेरे वनवासीहोनेपर इसधृतराष्ट्र ने पुत्र की स्वाधीनता में नियत होकर इस बड़े राज्य को तेरहवर्षतक भोगा और नानाप्रकारका धन दानकिया १५ हे निष्पाप नरोत्तम भृत्यादिकों समेत तुमने गुरुसेवासे राजाधृतराष्ट्र और यशस्विनी गान्धारी आराधन किये १६ हे राजा अब अपने ताऊको आज्ञा करो क्योंकि तपकरनेका इसका समयहै इसकी कोई अल्पमृत्यु भी वर्त्तमान नहींहै१७ वैशंपायन बोले कि इतना वचनकह राजा को आशीर्व्वाद देकर और राजा युधिष्ठिरसे यह कहवाकर कि ऐसाही होगा व्यासजी वनको चलेगये १८ वैशंपायनबोले तव भगवान् व्यासजी के चलेजानेपर झुकेहुये राजा युधिष्ठिरने वृद्ध ताऊसे यह वचन कहा १९ कि भगवान् व्यासजीने जो कहा और जो आपकी भी चित्तकी इच्छाहै और जिसप्रकार बड़ेधनुषधारी कृपाचार्य विदुर युयुत्सु और संजयनेभीकहाहै मैं शीघ्रही इसको करूंगा इसकुलकी वृद्धि चाहनेवाले आपसबलोग मुझसे पूजनके योग्यहैं २० ।२१ हे राजा शिरसे झुकाहुआ मैं आपसे यह प्रार्थना करताहूं कि जबतक आप आश्रम को न जायँ तबतक आहार पानादिक करना चाहिये २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४

पांचवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि राजा युधिष्ठिरसे बिदा किये हुये प्रताप- वान् राजा धृतराष्ट्र जिसके पीछेको और गान्धारीथी अपने महल को गये १ जैसे कि वृद्ध गजराज होता है उसीप्रकार

शिथिलेन्द्री बुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्र बड़े कष्टसे पैरोंको उठातेहुये चले २ ज्ञानी बिदुर सूतसंजय,और वह बड़े धनुषधारी शारद्वत कृपाचार्य भी उसकेपीछे२चले ३ हे राजा तब उसने महल में प्रवेश कर दिनकेप्रथमभाग को संध्यादिक क्रियाकोकरके और उत्तम ब्राह्मणोंको तृप्त करके भोजन किया ४ हे भरतवंशी सेवकोंकी सेवासे पूजित धर्म्मज्ञ सावधान चित्त गांधारीने भी कुन्ती और सब बंधुओं समेत भोजनकिया ५ भोजन करनेवाले उन सब बिदुर आदिक पांडवोंने उसभोजनसे निवृत्तहुये राजाधृतराष्ट्रको हाजि-रीदी ६ हे महाराज इसकेपीछे पास बैठेहुये युधिष्ठिर की पृष्ठपर हाथसे स्पर्शकरके धृतराष्ट्रने यह वचनकहा ७ हे राजर्षभ कौरव-नन्दनजिसमें धर्म मुख्यतासेहै उसआठअंग अर्थात् स्वामीआमात्या दिकसे युक्त राज्यके मध्यमें तुमको सब दशामें सावधानी करनी उचितहै ८ हे महाराज पांडवनन्दन युधिष्ठिर वह रक्षा राजधर्म्म से होनी संभवहै तुम बुद्धिमान् हो उसको समझो ९ हे युधिष्ठिर तुम सदैव उनकी उपासना करो जोविद्यासे वृद्धहैं वह जो २ आज्ञा करें उसकोसुनो और बिनाविचार कियेही उसको करो १० हे राजा प्रातःकाल उठकर उनको बुद्धिके अनुसार पूजनकर कर्मका समय होनेपर अपने कार्य्यको उनसेपूछो हेराजा तुम्ह इच्छावान् सफलकर्मीसे पूजित होकर वह करनेके योग्य कर्मको कहेंगे हे भरतवंशी वह धर्म सबदशामें तेरे अभीष्टका देनेवालाहै ११।१२ सबइंद्रियोंको घोड़ेकी समान रक्षाकरो वहतेरे मनोरथ सिद्धकरने के कर्मोंको ऐसेकरें जैसे कि रक्षित धन १३ बापदादोंसे प्राप्त छल हीन पवित्रजन्म,शिक्षायुक्त,पवित्र मंत्रियोंको सब अधिकारोंपर नियतकरो १४ शत्रुओंसे परोक्ष होकर तुम उन दूतोंसे समाचार मँगवावो जोकि बहुतप्रकारसे परीक्षा कियेहुये और अपनेदेशके वासीहोयँ १५ तेरानगर सब दिशाओंमें दृढ़प्राकार तोरण और नगर के बाहरीद्वार से युक्त अट्टाट्टालकों से सम्बन्धित अर्थात् उत्तमस्थानों समेत श्रेष्ठ रीतिसे रक्षितहोय १६ उसके सब बड़े २

द्वारसबदोषोंसेरहित सबओरसे शोभायमान रचना और उपायोंसे रक्षितहोय कुल और स्वभावमें परीक्षाकियेहुये मनुष्योंसे तेरेराज्य केकार्य्य शोभाको पावें हे भरतवंशी भोजनादिकमें सदैव अपना शरीररक्षाकेयोग्यहै १७।१८ विश्वासित और वृद्धपुरुषोंकेआधीन तेरी स्त्रियां बिहार भोजन और पुष्पशय्याआदिकोंपर निवास करनेके समयभी अच्छीरक्षितहोंय १९ हे युधिष्ठिर सुन्दरस्वभाव युक्त ज्ञानी और कुलीन ब्राह्मणों को मन्त्रीबनावो जो ब्राह्मण पंडित बिद्यावान् शान्त प्रकृति कुलीन धर्म अर्थ में सावधान और सत्यबक्ताहोंय तुम उनके साथ सलाहकरो बहुतसे मनुष्यों से मतकरो —किसी बहानेसे सबमंत्रियों समेत अच्छेसुरक्षित बिचारालय में अथवा किसीस्थलमें नियत होकर प्रत्येककेसाथ सलाह करो २०।२१।२२ वृक्षादिकोंसे रहितबनमेंसलाहकरोपरंतु किसीदशामें भी रात्रिके समय सलाह मतकरो बन्दर पक्षी और जो मनुष्य दूतहैं अथवा जो विक्षिप्त और कुटिल मनहैं यह सब सलाहकरनेके स्थानमें न बुलाने चाहियेंराजाओंकेमन्त्रभेद मेंजो दोषहोतेहैं वह किसीप्रकार सेभी दूरनहीं होसक्तेयहमेरामतहैतुम मन्त्रियों के मंडलमें मंत्रभेद के दोषोंको वर्णन करो २३।२४।२५ हे शत्रुओंके विजय करनेवाले राजा युधिष्ठिर मंत्र भेद न होने में जो गुण हैं उनको वारम्बार वर्णन करो पुरवासी और देश वासियोंकेशौचाशौच जैसे विदितहोंय हेराजा उसीप्रकारकरना चाहिये हे कौरव तेराव्यवहार अर्थात मुकद्दमोंका फैसला सदैव विश्वासित सेवकलोगोंकी आधीनता में नियतहोंय हे भरतबंशी युधिष्ठिर तेरेकार्यकर्त्ता न्यायके अनुसार अपराधके परिमाणको जानके अपराधियोंपर दंड नियतकरें २६।२७ आदानी अर्थात रिशवतलेनेवाले दूसरेकी स्त्रीसे कुकर्मकरनेवाले २८ कठिनदंडको उत्तमजाननेवाले अधिकारी हाकिम, न्यायबिरुद्धी, अर्थात कानून से बिपरीत वार्त्तालाप करनेवाले अपकीर्त्ति देनेवालेआदिलुब्ध, लोभीधनहर्त्ता अर्थात चोर, बिनाध्यानकिये कर्मकरनेमें प्रवृत्त २९

सभा और बिहार स्थानके बिगाड़नेवाले और वर्णों के बिगाड़ने वाले यह सबमनुष्य देशकालकेसमान हिरण्यदंड अर्थात् जुर्माना और मारनेकेदंडसे संयुक्त करनेयोग्यहैं ३० प्रातःकालही उनको देखो जो तेरे खजानेके रक्षकहैं फिर भोजनकरो और पोशाक आदिकसे अलंकृत शरीरको करो ३१ इसकेपीछे सबको प्रसन्न करतेहुये तुम सेनाके लोगोंको सदैव देखाकरो तेरेदूत और चर अर्थात् जासूसोंके देखनेकासमय प्रदोषकालहोय ३२ सदैवरात्रि कोपिछलेपहरमें तेरेकार्यार्थकानिर्णयहोय मध्यरात्रिमेंतेराविहार होय ३३ हे भरतर्षभ करनेके योग्य कर्मोंकेसबसमय युक्ति और उपायोंसे प्राप्तहैं हे बड़ीदक्षिणा देनेवाले उसीप्रकार राज्यकी पोशाकोंसे अलंकृत होकर समयपर अपने राज्य सिंहासन पर बैठो ३४ हे तात राज्यके कार्य्यों का क्रम और अवकाश सदैव चक्रके समान दृष्ट पड़ताहै हे महाराज तुम सदैव न्याय के अनु- सार नानाप्रकार के खजानेके इकट्ठे करनेका उपाय करो ३५ और बिपरीतकर्म को त्यागकरो हे राजा जो मनुष्य राजाओं के छिद्रचाहनेवाले और शत्रुहैं उनको दूतों के द्वारा जानकर ३६ उनको विश्वासित मनुष्योंके द्वारा दूरसेही मरवावो हे कौरव तुम कर्मको देखकर सेवकोंको नियतकरो ३७ जो अधिकारी न्याय से कर्मकरनेवाले हैं उनसे राज्यके कार्य्यों को पूरा करवावो हे तात तेरी सेनाका अधिपति दृढ़व्रत रखनेवाला ३८ शूर दुःखों का सहनेवाला शुभचिन्तक और भक्तमनुष्य होय हे पांडव सब देशवासी कारीगर आदिक तेरेकर्मों को शीघ्रता पर्व्वक अपने धनके समानकरें हे युधिष्ठिर अपने नौकरचाकर और शत्रुओंमें अपना और शत्रुका छिद्र ३९ । ४० तुमको सदैव देखना योग्य है अपने कर्मों में उपाय करनेवाले देशवासी शुभचिन्तक मनु- ष्य४१उचित उपायों के द्वारा तुमसे चेंटी के समान रक्षा और कृपाकरनेके योग्य हैं हे राजा ज्ञानी राजाको गुण ग्राही मनुष्यों का गुण प्रकट करना उचितहै पर्व्वतके समान अपने कर्म

पर उनलोगोंका नियत करना तुमको उचित है ४२। ४३॥

इतिश्रीमहाभारते आश्रमवासकेपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः५॥

छठवां अध्याय॥

धृतराष्ट्रबोले हे भरतर्षभ अपने और शत्रुओंके सबमंडल अर्थात अपने और शत्रुओंके मित्रादिक और मध्यस्थ व उदासीनोंके मंडलोंको जानो १ हेशत्रुओंके बिजय करनेवाले अपने शत्रुको और उत्पन्न जो शत्रुके मित्रादिक चारराजाहैं उनकोभी जानोमित्र और मित्रका मित्रभी तुमको जाननायोग्यहै हे कौरव्य उसीप्रकार मन्त्रीदेश नानाप्रकारके गढ़और सेनाभी जानमेके योग्यहैं क्योंकिउन्होंका बिरोधादिकइच्छाके समान होताहै २।३ हेकुन्तीकेपुत्रराजाओं केबिषयरूपी वहबिरोधादिक बारहहैं हेप्रभुसन्धि प्रधानगुण बहत्तरहैं ४ नीतिकेपूर्ण ज्ञातालोगोंने इसकोमंडलकहा है उससेराज्यकीरक्षाके छः उपाय नियतहैं उसकोभी समझनाबहुतयोग्यहै ५ हे कौरवोंमेंबड़े साधू महाबाहु वृद्धि क्षय और स्थान उनबहत्तर गुणोंके द्वाराजाननेके योग्यहैं फिर राज्यकी रक्षासे उत्पन्नहुये उपायोंसे छःगुण जाननेकेयोग्यहैं ६ जबअपनापक्षप्रबलऔरशत्रुका पक्षनिर्बलहै तबशत्रुओंसे बिरोधकरके राजाबिजय करनेकेयोग्यहै ७ जबशत्रु प्रबलहै और अपना पक्ष निर्बलहै तब निर्बल बुद्धिमान राजा शत्रुओंसे सन्धिकरे इसी प्रकार द्रव्योंका बहुत समूहसंचय करनायोग्यहै हे भरतबंशी जब चढ़ाईके लिये समर्थहोयतब थोड़ेही समयमें ८।९ सबकर्म पूरेकरनेके योग्यहोते हैं वहराजा अपने निवास सेही उसको बिचारे हे भरतबंशी शत्रुकोवहपृथ्वी देनीचाहिये जिससे कि बहुतसी पैदावारी होयँआपसन्धिमें सावधान राजा शत्रुसे नीचेलिखी हुईवस्तुओंको लेवे सुवर्णादि, बहुतसी धातुऔर युद्धमेंनाश हुयेअपनेमित्र हाथीऔर घोड़ोंका बदलालेवे १०।११ हे भरतर्षभ सन्धिके बिश्वासके लिये शत्रुकेराजकुमारको अपनेपास ठहरावे हेपुत्रइसके बिपरीत कर्म

करजाउसकोवृद्धि दायकनहींहै अर्थात् किसी आपत्ति में फंसाता है१२उपाय समेत सलाहका जाननेवाला राजाउसप्राप्तहुई आपत्ति कोभी दूरकरनेका उपायकरै हेराजेंद्रप्रजाके मध्यमें जोअन्धेवधिर मूकादिकहैं राजाउनका पोषणकरै १३ बड़ावलवान् राजा क्रम क्रमसे अथवा एकही समयमें सर्वनिग्रह करै औरअपने राज्यकी रक्षाकरनेवाले राजाकोउपाय पूर्व्वक शत्रुओंको पीड़ादेना पकड़ लेना और खजानेकी बरबादी करना योग्यहै वृद्धिके चाहनेवालेराजाके आश्रितहोनेवाले शूरवीर मारनेके योग्यनहींहैं१४। १५ हेकुन्तीकेपुत्र जोराजासंपूर्ण पृथ्वीभरको विजयकिया चाहताहै वहअपने शरणागतोंको नहींमारै तुममंत्रियों समेत शत्रुओं के समूहोंके परस्पर बिरोधी करनेमें उपायोंको करो १६ इसी प्रकार उत्तमकर्मियोंका पोषण और अपराधियोंके दण्डदेनेसेप्र बन्धकरो बलवान् राजाकीओरसे निर्बल शत्रुभी उपेक्षा करनेके योग्यनहींहै१७ हेराजेंद्र तुमबेत वृक्षकीरीतिपर नियतहोकरनिवा सकरो जोबलवान् राजातुझ निर्बलके सन्मुखआवै १८ तोतुमक्रमपूर्व्वक सामादिक उपायोंके द्वारा उसकोलौटाओ सन्धि करने में समर्थन होनेवाला राजा मन्त्री १९ खजाना पुरवासी सेनाऔर जो उसके हितकारीहैं उनके साथयुद्धकेलिये प्रस्थानकरै उनसब के नहोनेपरकेवल शरीरहीसे युद्धकेलिये नियत होय इसरीतिसे शरीरत्यागनेसे देहकी मुक्तिहोतीहै २०॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय॥

धृतराष्ट्र बोलेहेराजाओं में बड़ेसाधू युधिष्ठिर इसस्थान परसन्धि और विग्रहकोभी बिचारो जिस के उत्पत्ति स्थानदो हैं अर्थात् शत्रुका बलवान् वा निर्बलहोना और नाना प्रकार के उपायों समेत अनेकरीतें रखनेवाले हैं १ हे कौरव तुमनियत होकरअपने बलाबलको बिचारकर शत्रुओंका सेवनकरो जबशत्रु प्रसन्न और

बलपराक्रम रखनेवाली सेनाका रखने वालाहै तबबुद्धिमान राजा विजयके उपायोंको विचारे २ हेराजेन्द्र शत्रुके समीप वर्त्तमान होनेके समय विपरीत कर्मकिया जाताहै और युद्धकेसमय शत्रुसे पृथक्‌होजाय फिर शत्रुओंके दुःख, विरोध, अपनीओरका आकर्षण, भयदिखाना और युद्धमें उसकोसेनाका नाशकरावे ३।४ शास्त्र में कुशल चढ़ाई करनेवाला राजाअपनी और शत्रुकी तीनप्रकार की सामर्थ्यको विचारकरे ५ हेभरतवंशी उत्साह प्रभुशक्ति और मन्त्र शक्तिसे संयुक्त राजा चढ़ाई करे इनके विपरीत चढ़ाई को नकरे ६ हेसमर्थ वहराजा धनबल, मित्रबल, अटवीबल, भृतबल और श्रेणीबलको साथमें रक्खे ७ हेराजा उनसबमें धनबल और मित्रविशेष कहाताहै श्रेणीबल और भृतबल यहदोनों मेरेमत में समानहैं ८ हेराजाइसीप्रकार दूतबलभी परस्पर समानहैंवहनाना प्रकारका बलबहुत समयोंमें प्रत्येक समयके वर्त्तमान होनेपरराजा को जानना योग्यहै ९ हेराजा बहुतरूप रखनेवाली आपत्ति जाननेके योग्य हैं हेकौरव्य राजाओंकी जो वह आपत्ति प्रकट होतीहैं उनको पृथक् २ श्रवणकरो आपत्तियों का होना बहुत प्रकारकाहै राजा उनको सदैवसामादिक उपायोंसे विचारे १०।११ हेपरन्तप वहराजा सेना, सत्पुरुष, देशकाल और अपने गुणोंसे युक्तहोकर यात्राकरे १२ हेपांडव राज्यकी वृद्धिमें प्रवृत्त बलवान प्रसन्न और पराक्रमी सेनाका रखनेवाला राजा शिशिरआदिक ऋतुओंमें भी चढ़ाईकरे १३ राजाशत्रुओं के नाशकरने के लिये उस नदीको जारीकरे जिसमें तृण पाषाणहैं हाथी और रथ प्रवाहहैं ध्वजारूप वृक्षों से युक्त किनाराहै पदाती और हाथियों से बहुत कीचकी रखनेवाली है १४ हेभरतवंशी फिर समय के अनुसार शकट पद्म और वज्रनाम व्यूहोंको अलंकृत करे हे प्रभु जिसशास्त्रको शुक्रजी जानतेहैं उसमें यहसब कहाहै १५ दूत के द्वारा शत्रुकी सेनाको जानकर और अपनी सेना को देखकर अपनी पृथ्वी और शत्रुकी पृथ्वीपर युद्धकरे १६ राजा अपनी

सेनाको प्रसन्नकरे और बलवान् मनुष्योंको अधिकारी अफ्सर नियत करे वहांअपने मौक़े को जानकर साम आदिक उपायोंके द्वारा कर्मका प्रारंभकरे १७ हेमहाराज यहां सब दशामें अपने शरीर की रक्षाकरे और इस लोक परलोक में अपना परम कल्याण करना उचितहै १८ हेमहाराज राजा इसकर्मको अच्छी रीतिसेकरके धर्मसे प्रजापालन करताहुआ शरीर त्यागनेके पीछे स्वर्गको पाताहै १९ हे कौरवनन्दन तुमको दोनों लोकोंकी प्राप्ति के लिये सदैव इसप्रकारसे वह कर्म करनाउचितहै जोकि प्रजाकी वृद्धिका करने वालाहै २० हेभरतर्षभ भीष्म श्रीकृष्ण और विदुरने सब प्रकारसे तुमको समझायाहै मुझकोभी तेरी प्रीतिसे अवश्य कहना योग्यहै २१ हेबड़ी दक्षिणा देनेवाले इस सबको न्यायके अनुसार करो उस प्रकारसे प्रजाके प्यारे होकर तुमस्वर्ग में सुख पाओगे २२ जो राजा हजार अश्वमेधसे पूजन करे और धर्मसे प्रजाका पालनहीं करे और जो धर्मसे प्रजापालन करे अश्वमेध नहींकरे उनका फलसमान होताहै २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्वणिसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

युधिष्ठिरबोले हेराजा जैसा आपने मुझसेकहाहै मैं उसीप्रकार से करूंगा हेराजाओंमें श्रेष्ठ मैं फिरभी आपकी शिक्षाओंके सुनने के योग्यहूं भीष्मजीके स्वर्ग में जाने और श्रीकृष्ण विदुर संजयके यहांसे चले जानेपर दूसरा कौन मुझे शिक्षाकरनेके योग्यहै १।२ हेराजा अब मेरी वृद्धिमें नियत होकर आप जो२ मुझको शिक्षा-करतेहो मैं उसकोकरूंगा आप निवृत्ति मार्गको नियतहो ३ वैशं-पायन बोले हेभरतर्षभ बुद्धिमान धर्मराज युधिष्ठिरसे इसप्रकार कहेहुये उस राजर्षिने युधिष्ठिर को आज्ञा देनाचाहा ४ हेबेटा तकुछ काल शान्तहो मेरी थकावटभी बड़ी प्रबलहै यह कहकर राजा गान्धारीके भवन में चलागया ५ समयको जानने वालीधर्म

की करने वाली देवी गान्धारी ने उस आसन पर वर्त्तमान प्रजा-पतिके समान अपने पतिसे समय पर यह बचनकहाहै कि आप-को व्यास महर्षीने आप आकर आज्ञादीहै सोतुम युधिष्ठिरकी सलाहसे कबवनको जाओगे ७ धृतराष्ट्रने कहा हेगान्धारी मुझको आप महात्मा पिताने आकर आज्ञादीहै थोडेही समयमें युधिष्ठिर कोसम्मतसे बनको जाऊंगा ८ मैं उस समयतक उनदुर्मति द्यूतखेलने वाले सब पुत्रोंका श्राद्धादिक करना चाहताहूं यह कहकर अपने-महल में सब नौकर चाकर और प्रजाको वर्त्तमान करके ९ धृत-राष्ट्रने धर्मराजके पास दूतको भेजा उसने उसकी आज्ञाके अनुसार सब सामान राजाके समीप लाकर वर्त्तमान किया १० इसकेपीछे कुरुजांगल देशी प्रसन्नचित्त ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्र वर्त्त-मान हुये ११ तब राजाने उस अन्तःपुर से बाहर निकलकर उन सब मनुष्य और सब राज्यके नौकर चाकरोंको देखा १२ अर्थात इकट्ठे होनेवाले उन पुरवासी और देश बासियों को देखा हेराजा उन सब समेत अपने इष्टमित्र नातेदारों को और बहुत प्रकारके देशोंसे आनेवाले ब्राह्मणोंको देखकर बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्रने यहकहा१३।१४कि आप और कौरवलोग बहुत काल तक साथमें रहे परस्पर शुभ चिन्तक और परस्पर की वृद्धिमें प्रवृत्तहो १५ अब मैं इससमयकी वर्त्तमानतामें जो कहूं आपलोगों को उसीप्रकारसे करना उचितहै मेरा बचन बिचार करने के योग्य नहींहै १६ ब्यास ऋषि और राजायुधिष्ठिर की सलाह से मेरा बिचार गान्धारी समेत बनजानेकाहै १७ आप भी मुझको बिना बिचारकिये बनजाने की आज्ञा दो और हमारी तुम्हारी जो यह प्राचीनप्रीतिहै १८ वैसीप्रीति अन्यदेशों में किसी दूसरे राजाकोनहींहै यहमेरासिद्धान्तहै मैं इस वृद्धावस्थासे थकगयाहूं और पुत्रोंसे भी रहितहूं १९ और गान्धारी समेत ब्रतों करके दुर्बल शरीरहूं हे निष्पापलोगो मैंने युधिष्ठिरके राज्यके नियत होनेपर बड़ा सुखपाया है २० हे साधूलोगो में मानताहूं कि यह

सुख दुर्योधनके भी ऐश्वर्य्यसे अधिकहै परन्तु मुझअन्धे वृद्ध और सन्तान रहित की सिवाय बनजाने के दूसरी गतिनहींहै २१ हे भाग्यवान लोगो इससे आपलोग भी मुझको आज्ञादेने के योग्य हो हेभरतर्षभ उन सब कुरुजांगल देशियोंने उसके उस वचनको सुनकर नेत्रोंमें आंसुओंको भरकर बड़ी डींग मारकर रोनाप्रारंभ किया फिर महातेजस्वी धृतराष्ट्रने उन कुछ कहनेवाले शोकयुक्त सब मनुष्यों से यहकहा २२।२३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्रबोले कि राजा शान्तनुने इसपृथ्वीको विधिके अनुसार पालन पोषण और रक्षणकिया उसीप्रकार भीष्मजी से रक्षित राजाविचित्रवीर्य्य ने भी तुम्हारा पोषणकिया १ और यहबात भी निस्संदेह सबको प्रकटहै कि जैसा मेराभाई पांडु तुम सब लोगोंका प्यारा था २ उसनेभी विधिके अनुसार रक्षा और पोषणकिया उसकोजानतेहो और हेनिष्पापो मैंनेभी आपलोगों की अच्छी सेवाकरी ३ अथवा नहींकरी हेभाग्यवानों तुम सावधान लोगोंको वह क्षमाकरना योग्यहै जब दुर्योधनने इसनिष्कंटक राज्यको भोगा ४ वहां भी उसदुर्बुद्धी अभागेने तुम्हारा कोई अपराध तो नहींकिया उस दुर्मतिके अपराध राजाओं के अपमान ५ और अपने करेहुये अन्यायसे यह बड़ाभारी युद्धहुआ सो मैंने यह शुभकर्म वा अशुभकर्म किया ६ उसको तुमलोगों को हृदयमें धारण नहीं करना चाहिये मैंने यही अंजुली बांधी है मैं वृद्धहूं नाशवान सन्तानहूं दुखीहूं ७ प्रथम राजाओंकापुत्रहूं इससे मुझको विचारकर बनजानेकी आज्ञादो और महादुखी नाशमान सन्तान वृद्धा तपस्विनी ८ पुत्रोंके शोकसे पीड़ामान गांधारी मेरे साथमें तुमसे प्रार्थना करतीहै कि हम दोनोंको मृतकहुये पुत्र और वृद्धजानकर ९ आज्ञादो तुम्हारा भलाहोय हमतुम्हारीशर-

गाहैं कि यह कुन्तीका पुत्र कौरव राजायुधिष्ठिर १० आनन्दके और आपत्तिके दोनों समयोंमें तुमसबसे देखनेकेयोग्यहै वहकभी आपत्ति को नहीं पावेगा ११ इसके वह चारोंऔर भाई मन्त्री हैं जो कि बड़ेतेजस्वी लोकपालों के समान सब धर्म अर्थको देखने वालेहैं जैसेकि सब जीवों समेत जगतके स्वामी भगवान् ब्रह्माजी पोषणाकरतेहैं उसीप्रकार यहमहातेजस्वी युधिष्ठिर आपकापालन करेगा१२।१३मुझको अवश्य कहनायोग्यहै इसीहेतुसेतुमसे कहताहूं कि मैंने यह धरोहड़रूप युधिष्ठिरआप सबको सिपुर्दकिया है १४ मैंने आपलोगोंकोभी इस वीरके धरोहड़ रूप कियाहै मेरे उन पुत्रोंसे जो कुछ आपका अपराधबनाहै अथवा मेरे अन्य २ नातेदारोंने जो तुम्हारा अपराध कियाहै उसको आपलोगक्षमा करने के योग्यहो आप लोगोंने पूर्व्व कभी किसी दशामें भी मुझपर क्रोधनहीं कियाहै अत्यन्त गुरुभक्तरूप आप लोगोंसेयह मेरी प्रार्थनाहै कि मैं गान्धारी समेत उन बुद्धिसे व्याकुल लोभी स्वेच्छाचारी पुत्रोंके कारणसे तुम सबसे प्रार्थना करताहूं१५।१६। १७उसके इस वचनको सुनकर नेत्रोंसे अश्रुपात युक्त उन पुरवासी और देशवासियोंने कुछनहींकहा और एकने दूसरे कोदेखा १८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासिकेपर्व्वणिनवमोऽध्यायः ९॥

दशवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि हेकौरव उसवृद्ध राजासे कहेहुये वह पुरवासी और देशवासी अचेतोंके समान होगये १ उन मौन और अश्रुपात करनेवाले लोगोंसे राजा धृतराष्ट्रने फिर यह वचन कहा कि हे बड़े साधूलोगो इस धर्म पत्नी समेत मुझ नानाप्रकार के करुणा और विलाप करनेवाले नाशमान सन्तान वृद्ध राजाको जानेकेलिये आज्ञादो २। ३ हे धर्मज्ञलोगो आप पिता व्यासजी और धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिरने वनमें निवास करनेके निमित्त आज्ञादीहै ४ हे निष्पापो सोमैं वार वार शिरसे झुकताहूं कि गा-

न्धारी समेत मुझको आज्ञादो ५ वैशंपायनबोले कि इकट्ठेहोने-
वाले वह सब कुरुजांगल देशी उस धृतराष्ट्रके उन करुणा युक्त
वचनों को सुनकर रुदन करनेलगे ६ शोकसे दुखी वह लोग दा-
हिने हाथों से मुखोंको ढककर एक मुहूर्त्ततक माता पिताके
समान रोदन करनेवाले हुये ७ वह धृतराष्ट्रके वियोग से उत्पन्न
दुखको शून्य हृदयों में धारण करके अचेतोंकी समान होगयेतब
उन्होंने राजा धृतराष्ट्र के वियोग जन्य दुःखको सहकर धीरे २
अपने २ मतोंको वर्णन किया ८। ९ हेराजा इसके अनन्तर वह
सब परस्पर सलाह करके और अपने सबबचनोंको एकब्राह्मण
में नियत करके राजाको उत्तर देनेवालेहुये १० हे राजा फिर
अच्छा आचरण रखनेवाला वेदपाठी सबका अंगीकृत अपने नि-
यत कर्म में सावधान बहुत ऋचा जाननेवाले शंबनाम ब्राह्मणने
कहना प्रारंभ किया ११ हे महाराज उससभाको पूजकर और
प्रसन्न करके उसतत्काल उत्तर देनेवाले बुद्धिमान वेदपाठी
ब्राह्मणने राजासे कहा १२ हेवीर राजा धृतराष्ट्र इन सब मनु-
ष्योंके सबबचनमेरे सिपुर्द हुयेहैं मैं उनको कहताहूं आप उनको
सुनिये १३ हेराजेंद्र जैसाआपने कहावह सब निस्सन्देह उसी प्र-
कार काहै इसमें कोईबात मिथ्या नहींहै हमारी मित्रतापरस्पर
है १४ इसवंशके राजाओंमें कभीकोई ऐसाराजा नहींहुआहै जो
प्रजाका दुखदायी होकर अप्रिय हुआहोय १५ आप हम को
मातापिता और भाईके समान पालन करतेहो राजादुर्योधननेभी
कोई अयोग्य कर्म नहीं किया १६ हेमहाराज सत्यवती के पुत्र
धर्मात्मा व्यासमुनि जैसाकहतेहैंआपउसी प्रकारकरो हमारीबुद्धि
से वहीबड़ा कर्महै १७ हेराजा आपके सैकड़ों गुणोंसे संयुक्तआप
से जुदे होकर हमलोग बहुत कालतक शोक से पूर्णरहेंगे १८ हे
राजाजैसे कि हमराजाशान्तनु चित्रांगद और भीष्मकी सामर्थ्य
से रक्षित आपके पिता विचित्रवीर्य्यसे रक्षितहुये १९ और आप
केस्मरण करने समेत राजा पांडुसे पोषण कियेगये उसीप्रकार

राजा दुर्योधन सेभीरक्षित होकरपोषण पानेवालेहुये २० हेराजा आपके पुत्रदुर्योधननेथोड़ासाभी अप्रियनहींकिया और हमलोगों नेभी उसराजासे विश्वासकिया जैसा कि पितामें करतेहैं २१ हम जैसे अच्छीरीति से रहतेथे वहसब आपको विदितहै हेराजाउसी प्रकार धैर्यमान बुद्धिमान राजायुधिष्ठिर से पोषण कियेहुये हम लोगहजारोंबर्षतक सुखपावेंगे यहबड़ीदक्षिणादेनेवाला धर्मात्मा युधिष्ठिर नीचेलिखेहुये राजाओंकी रीतियोंपरचलताहै अर्थात् जैसे आपके वृद्ध पवित्रकर्मी प्राचीन राजऋषि कुरु, संवरण, बुद्धिमान् भरतादिकथे उसीप्रकार २२।२३। २४ हे महाराज इस राजामेंभी कोईजरासीभी अयोग्य बात कहनेको नहींहै और इस बिरादरीके नाश दुर्योधनके विषयमें जो कहा जाताहै २५।२६ हे कौरवनन्दन उस विषयमें आपकोभी समझाऊंगा वह दुर्योधन का कर्मनहींहै और न वह आपकी ओरसे किया गयाहै और न वहकर्ण और शकुनिसे कियागयाहै जो कौरवोंने नाशको पाया उसको हम होनहार और ईश्वरकीइच्छा जानतेहैं उसका रोकना असंभव है क्योंकि उपायों से भावीका रोकना असंभव है २७।२८ हे महाराज अठारह अक्षौहिणी सेना इकट्ठीहुई और अठारहही दिनके मध्यमें कौरवोंके इन उत्तम शूरवीरोंके हाथोंसे मारीगई उनके नाम भीष्म, द्रोणाचार्य्य, कृपाचार्य्यादिक, महात्माकर्ण, वीरसात्यकी, धृष्टद्युम्न २९। ३० भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव नाम चारोंपांडव हेराजा होनहारकी प्रबलताके बिना किसी दूसरे से यह विनाश नहींहुआ ३१ क्षत्रीको मुख्य करके युद्धके समय अवश्यही नाशकरना योग्य और क्षत्रीबांधवों को युद्धमें मरनाही योग्यहै ३२ विद्या पराक्रम और भुजबल से युक्त उनपुरुषों के हाथसे यह संपूर्ण पृथ्वीके लोगघोड़े रथ और हाथियों समेत नाश कियेगये ३३ महात्मा राजाओंके मरनेमें आपकापुत्र कारण नहीं है न आप सेनाके लोग न शकुनि और न कर्णहै ३४ जो श्रेष्ठ कौरव और हजारों राजा मारेगये उसको होनहार से

कियाहुआ मानों इसमें कौनक्या कहनेके योग्यहै ३५ आप इस संपूर्ण जगतके प्रभुऔर गुरुहो इसीहेतुसे हमआपके पुत्रकोभली- त्भांजानतेहैं ३६ वहराजाअपने साथियोंसमेत बीरलोकोंको पावै औरऋषियोंसे आज्ञाहोकर सुखसे स्वर्गमें आनन्दकरै ३७ आप धर्म में स्थितिको करकेसब धर्मऔर वेदोंके पुण्यको प्राप्तकरोगे आप अच्छीरीतिसे श्रेष्ठव्रतकरनेवालेहो आपको औरसे हमको पांडवोंपर दृष्टिकरनेवाला करनाव्यर्थहै क्योंकिजबवह स्वर्गको भी रक्षाकरनेको समर्थ हैं फिर इस पृथ्वीकी रक्षाकरना उनको कितनी बड़ीबातहै ३८।३९ हे कौरवकुलमें श्रेष्ठबुद्धिमान् धृतराष्ट्र सब प्रजासुख दुःखोंमें उनपांडवोंके साथीहोगी क्योंकि वह सब पांडवसुन्दर स्वभावरूप भूषणोंसे अलंकृत हैं ४० यहराजा युधि- ष्ठिर ब्राह्मणों के देनेके योग्य देवपूजा आदिक और बहिन बेटोंको देनेके योग्य भरत आदिक और पूर्वके राजाओंके दिये हुये दानोंको नियतरखताहै ४१ यहबड़ा साहसी दूरदर्शी राजा युधिष्ठिर मृदुलस्वभाव इंद्रियोंका जीतनेवाला सदैव कुबेरकेसमान होकर बड़ेकुलीन बुद्धिमान् मन्त्रीरखने वालाहै ४२ फिरयहभर- तर्षभ सबका मित्रदयावान् पवित्र और बुद्धिमान्है सीधी दृष्टिसे देखताहै और पुत्रकी समान हमको पालताहै ४३ हेराजर्षि उसी प्रकार भीम और अर्जुन आदिकधर्म पुत्रके सत्संगसे इन मनुष्यों काअप्रिय नहींकरेंगे ४४ हे कौरव्य वहपुरवासियोंकी बुद्धिमेंप्र- वृत्त पराक्रमी महात्मा पांडवमृदुस्वभाव वालोंमें मृदु और तीक्ष्ण स्वभाववाले मनुष्योंमें विषधरसर्पके समानहैं ४५ इससमयकुन्ती द्रौपदी उलूपी औरसुभद्रा किसीदशामेंभी अप्रियनहीं करेंगी आ पने जोयहप्रीति करीऔर युधिष्ठिरने जोउसको वृद्धिकी उसको पुरवासी औरदेशवासी कभीनहींभूलेंगे ४६।४७ महारथी कुन्तीके पुत्र धर्मात्मा होकर अधर्मियोंकाभी पालनकरेंगे ४८ हेराजासो तुमयुधिष्ठिरकी औरसेचित्तके खेदकोदूरकरके धर्मसंबन्धी कर्मों कोकरो हेपुरुषोत्तम तुमको नमस्कारहै ४९ वैशंपायन बोले कि

उनसब मनुष्योंने उसके उत्तमधर्मरूप औरगुणोंसे वचनोंकी बहुत प्रशंसाकरके उसको स्वीकार किया ५० तबधृतराष्ट्र ने उसवचन की बारंबार प्रशंसाकरके धीरेधीरे उनसब सेवकलोग और प्रजा आदिकोंको बिदाकिया ५१ हे भरतर्षभ उनसे अच्छीरीतिसे पूजित कल्याण रूपनेत्रोंसे देखेहुये हाथजोड़ेहुये उसधृतराष्ट्र ने उस सज्जन समूहोंका पूजन किया ५२ फिरगान्धारी समेतनिजभवन में प्रवेशकिया और रात्रिके व्यतीतहोनेपर जोकियाउसकोआगेकहतेहैं ५३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि फिर रात्रि व्यतीत होनेपर अम्बिका के पुत्र धृतराष्ट्रने बिदुरजी को युधिष्ठिरके स्थान पर भेजा १ तब बुद्धिमानों में श्रेष्ठ महातेजस्वी उस बिदुरने उसधृतराष्ट्रकी आज्ञासे उस धर्मसे अच्युत राजा युधिष्ठिरसे यहबचन कहा २ कि हेराजा वनवास करनेकेलिये दीक्षितमहाराजा धृतराष्ट्र इससमीपहीवर्त्तमान कार्त्तिकी पूर्णमासी को बनमें जायगा ३ हेकौरव कुलभूषण वह कुछ अपना प्रयोजन चाहताहै और नीचे लिखे हुये मनुष्यों का श्राद्ध किया चाहता है महात्मा भीष्म ४ द्रोणाचार्य्य,सोमदत्त,बुद्धिमान् बाह्लीक सब पुत्र और जो अन्य२ नाते रिश्तेदार मारेगये और जोतुम अंगीकार करतेहो तोराजा जयद्रथ काभी श्राद्ध करना चाहते हैं बिदुरजी के इस बचनको सुनकर प्रसन्न होकर युधिष्ठिरने ५।६ औरपांडवअर्जुनने उस बचनकी प्रशंसाकरी लेकिन कोधयुक्त और दुर्योधनके कर्मको स्मरण करते महा तेजस्वी भीमसेननें बिदुरजीके उसबचनको अंगीकार नहीं किया अर्जुन ने भीमसेन के उस चित्तके बिचारको जानकर ७। ८ और कुछ झुकाकर उस नरोत्तमसे यह बचन कहाकि हेभीमसेन बनको निवास करनेको दीक्षित हमारा वृद्धताऊ राजाधृतराष्ट्र ९ सब

नाते रिश्तेदारों का श्राद्ध किया चाहताहै हेमहाबाहु आपके पराक्रमसे उपार्जित हुये धनको भीष्मादिक के श्राद्ध में देनाचाहताहै १० आप उसको आज्ञा देनेको योग्यहो हेवीर अब वह राजा धृतराष्ट्र प्रारब्धसे प्रार्थना करताहै ११जिसको कि पूर्वसमय में हम प्रार्थना करतेथे समयकी विपरीतताको देखो कि अन्य लोगोंके हाथसे जिसके पुत्रादिक मारेगये वह राजा धृतराष्ट्र संपूर्ण पृथ्वीका स्वामी होकर १२ वनको जानाचाहता है हेपुरुषोत्तम अब धनदेनेके सिवाय तेरा दूसरा बिचार मतहो १३ हेमहाबाहु इसके बिशेष जोकोई कामहोगा वह महा अधर्म रूप और अपकीर्त्ति का देनेवाला होगा अपने बड़ेभाई राजा युधिष्ठिरको सिखालो १४ हेभरतर्षभ तुम देनेके योग्यहो लेनेके योग्य नहींहो धर्मराजने भी इस प्रकारसे कहनेवाले अर्जुनकी प्रशंसा करी १५ तब क्रोधयुक्त भीमसेनने यह बचन कहाकि हेराजा हम भीष्मजी का श्राद्ध करेंगे १६ राजा सोमदत्त,भूरिश्रवा, राजर्षि बाह्लीक, महात्मा द्रोणाचार्य्य १७और अन्य२सब नातेदारोंकाश्राद्धकरेंगे कुन्ती कर्णका श्राद्ध करेगी हेपुरुषोत्तम वह राजा धृतराष्ट्र श्राद्ध नकरे १८ यह मेरामतहै कि हमारे शत्रु प्रसन्न न होंय दुर्योधनादिक सब भाइयोंको कठिनदुःख प्राप्तहोय जिन कुलकलंकियों से यह संपूर्ण पृथ्वी के लोगों का नाश हुआ तुम बारह वर्षकी शत्रुता१९।२० और द्रौपदीका शोक बढ़ाने वाले महाकठिन गुप्त निवासका दुःख भूलकरके कैसे सोतेहो तब राजाधृतराष्ट्र की प्रीति कहांथी जबकि उसने हमारा तिरस्कार कियाथा २१काले मृग चर्म से गुप्त शरीर भूषण वस्त्रों से रहित द्रौपदी समेत तुम राजाके पासगये२२तब द्रोणाचार्य्य भीष्म और सोमदत्त कहांथे जहां तुमने तेरह वर्षतक वनमेंबनके फल मूलोंसेही अपनानिर्वाह किया २३ तब ताऊ तुमको पितापनेकी प्रीतिसे नहीं देखता था हे राजा क्या आपने उनबातोंको विस्मरण करदिया जो इस कुल कलंकी २४ दुर्बुद्धीने विदुरजीसे पूछाथा कि द्यूतमें क्याजीता यह

भीमसेनके बचन सुनकर घुड़कतेहुये कुन्तीकेपुत्र राजा युधिष्ठिर ने भीमसेनसे कहा कि अब मौनहोना चाहिये २५ ॥

इति श्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिएकादशोऽध्यायः ११ ॥

बारहवां अध्याय॥

अर्जुनबोले हे भीमसेन तुममेरे बड़े भाई और गुरुहो इसहेतुसे मैं दूसरी बात कहनेको साहस नहीं करसक्ता राजऋषि धृतराष्ट्र सब दशामें हमको पूजनके योग्यहैं १ मर्य्यादापर चलनेवाले साधु श्रेष्ठ लोग दूसरेके अपराधोंको स्मरण नहीं करते हैं किन्तु उनके उपकारोंको याद करते हैं २ कुन्तीके पुत्र धर्मात्मा युधिष्ठिरने उस महात्मा अर्जुन के बचनको सुनकर बिदुरजीसे कहा कि हे बिदुरजी आपमेरे बचनसे राजा धृतराष्ट्रको यहबचनकहो कि वह जितने धन से पुत्रोंका श्राद्धकरना चाहताहै मैं उतनाही देताहूं ३।४ कृतकृत्यकर्म भीष्मादिक सबनाते रिश्तेदारों के श्राद्ध को मेरे खजानेसेदो और भीमसेन चित्तसे दुखीनहोय ५ वैशंपायन बोले कि धर्मराजने यहकहकर उस अर्जुनकी प्रशंसा करी फिर भीमसेनने तिरछी निगाह से अर्जुनकी ओर देखा ६ फिर उस बुद्धिमान् युधिष्ठिर ने बिदुरजीसे यह बचनकहा कि वहराजा धृतराष्ट्र भीमसेन के ऊपर क्रोध करनेको योग्य नहीं हैं ७ यह बुद्धिमान् भीमसेन बर्षा बरफ और घामादिक अनेक प्रकार के दुक्खोंसे बनमें दुखितहुआथा वहसब आप जानतेहैं ८ हेभरतर्षभ आप मेरे बचनसे राजा धृतराष्ट्र से कहो कि जो २ उनको इच्छा है वह सब मेरे खजानेसे लो यह अत्यन्त दुखी भीमसेन जो ईर्षा से क्रोध करता है उसको दिलमें कभी न शोचना चाहिये ऐसा आपको समझनायोग्यहै ९।१० जोकुछ धनमेराहै और अर्जुनके घरमें है उसका स्वामी महाराजहै उसराजाको इसप्रकारसे समझाना योग्यहै कि अब वह राजा वेदपाठी ब्राह्मणों को दानकरे और चित्तकी इच्छानुसार खर्चकरे और अपने पुत्र बांधवों की

अज्ञाताको पाओ ११।१२ हेराजा यह मेरा शरीर और सब धन भीआपकेआधीनहै उसको निस्संदेह अपनाही जानिये १३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिद्वादशोऽध्यायः१२॥

तेरहवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि राजासे इसप्रकार कहेहुये बुद्धिमानों में श्रेष्ठ विदुरजीने धृतराष्ट्रके पासजाकर इसप्रकार बड़ा सार्थकशब्द कहा १कि हेराजा आपका बचन प्रारंभसेही राजा युधिष्ठिरको सुनाया उस बड़े तेजस्वीने सुनकर आपके बचनकी प्रशंसाकरी२ महातपस्वी अर्जुन घरों को और उसके घरमें जो धनहै उसको और शुद्ध प्राणोंको भी आपकी भेंट करताहै ३ हे राजऋषि आपका पुत्र धर्मराज भी राज्य प्राण धन और जो २ अन्यप्रकार की वस्तु हैं उन सबको आपकी भेंट करता है ४ बहुत दुःखों को स्मरण करके श्वासलेते महाबाहु भीमसेन ने दुःख से अंगीकार किया ५ हे राजा वह महाबाहु भीमसेन उस धर्मके अभ्यासी राजायुधिष्ठिर और अर्जुनसे शिक्षा दिया गया और आपकी आज्ञापालनमें भी नियतकियागया धर्मराजनेआप सेकहाहै कि भीमसेनने उसशत्रुताको स्मरणकरके जोन्यायकेविपरीतबार्त्तालाप करीथीआपको उसपरक्रोध न करना चाहिये ६।७ हेराजाक्षत्रियोंका यहधर्म ऐसाहीहै यह भीमसेनयुद्ध औरक्षत्रीधर्म में प्रवृत्त है अर्जुनने बारम्बार भीमसेनके विषयमें कहाहै कि हे राजा मैं प्रार्थनाकरताहूं कि प्रसन्न हूजिये यहांहमारा जो धनहै उसकेआप स्वामीहैं८।९ हेभरतवंशी राजाधृतराष्ट्र आप उसधनको जितनाचाहतेहो उतनादान करो तुमइस राज्यकेऔर प्राणोंकेभी स्वामीहो१०वह कौरवोत्तम यहांसे रत्न गौ दासी दास भेड़ बकरी आदिको ब्राह्मणोंके देनेके योग्य देवपूजा आदिक और पुत्रोंके श्राद्धादिकोंमें ब्राह्मणोंके अर्थदानकरो हेराजा तुमजहां तहांदीन अन्धे औरदुखीलोगोंकोभी११।१२बहुतसी खानेपीनेकी वस्तुओं

से पूर्णसभा अर्थात गरीबखाने बिदुरजीके द्वाराबनवाओ गौओं की जलप्रपा अर्थात प्याऊ और नाना प्रकारके अन्य पुण्यार्थ कार्य्योंकोभी करो १३ राजा युधिष्ठिर और पांडव अर्जुनने मुझसे यहबारंबार कहाहै कि यहांजो२करनायोग्यहै उसको बहुतभी-घ्रतासे आपकरनेको योग्यहैं१४हे जनमेजय बिदुरजीके इसप्रकार से कहनेपर धृतराष्ट्रने उनपांडवोंको आशीर्वाददेकर कार्त्तिकम-हीनेकी पूर्णमासी के दिन महादान करने का चित्तसे बिचार किया १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्वणित्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हेराजा बिदुरसे इसप्रकार कहेहुये राजाधृतराष्ट्र युधिष्ठिर और अर्जुनके कर्मपर प्रसन्नहुये१इसके पीछेभीष्मपिता-मह और अपने सब पुत्र इष्ट मित्र नातेदार आदिकों के निमित्त ऋषियों में श्रेष्ठ श्राद्धके योग्य हजारों ब्राह्मणों को बिचारकर२ खाने पीनेकी वस्तुओं को तैयार कराके सवारी पोशाक सुवर्ण मणि रत्न दासी दास भेड़ बकरी ३ पट वस्त्र ऊर्णावस्त्रादिक गांव, खेत, भेड़,बकरी, और भूषणोंसे अलंकृत हाथी घोड़े कन्या और श्रेष्ठ स्त्रियोंको वर्त्तमानकरके ४ उस श्रेष्ठ राजाने नामलेलेकर सब के निमित्त श्राद्ध दान दिया द्रोणाचार्य्य भीष्मपितामह सोमदत्त बाह्लीक५जयद्रथ आदिक सब नातेदार और राजादुर्योधन आ-दिक सब पुत्रोंका पृथक् २ नामोच्चारण करके श्राद्ध किया तब बहुत धनकी दक्षिणा रखनेवाला और अनेक धन रत्नोंकेसमूहोंसे संपूर्ण वह श्राद्धयज्ञ युधिष्ठिरकी सलाहसे जारीहुआ।जिसमें सां-ख्यक और लिखनेवाले लोगोंने युधिष्ठिरकी आज्ञा से बारंबार उसराजासेपूछा६।७।८ कि आप आज्ञा दीजिये कि इन ब्राह्मणों को क्या दान कियाजाय वहसबयहां वर्त्तमानहैं तब आज्ञाहोनेपर दान कियागया बुद्धिमान राजायुधिष्ठिरकीआज्ञा से सौरुपयेदेने

के स्थानपर हजार और हजारके स्थान में दशहजार दानदिये जातेथे ९।१० इसप्रकार धनरूपी धाराओं से वर्षा करनेवाले उस राजरूपी बादलने वेदपाठी ब्राह्मणोंको ऐसे तृप्त किया जैसे कि वर्षाकरनेवाला बादल खेतीको तृप्तकरताहै ११ हे बड़े बुद्धिमान् जनमेजय इसके पीछे उसश्राद्ध यज्ञमें राजाधृतराष्ट्रने सबवर्णोंको भोजनमें खानेपीने कीवस्तु और रसोंके समूहोंसे तृप्तकिया १२ वस्त्रधन और रत्नोंकी लहर रखनेवाले मृदंगों से शब्दायमान गौ घोड़ेरूप मगरोंकी लौटपौट से युक्तरत्नोंकी बड़ीखान रखने वाले १३ साफ़कियेहुये गांवरूप द्वीपों समेत मणि सुवर्णरूपीजलसेपूर्ण धृतराष्ट्ररूप नौकासे संयुक्त उसमहासागरनेजगतको व्याप्तकिया १४ हेमहाराज इसप्रकार अपनेपुत्र पौत्र पितर और गांधारी समेत अपनेभी श्राद्धादिकोंको किया १५ जबवह बहुतदानों को देताहुआ थकगया तब उसराजाने दानयज्ञकोसमाप्तकिया १६ इस प्रकार उसराजा धृतराष्ट्रने बड़ा दानयज्ञ किया जोकि नट नर्त्तकोंके गान नृत्योंसे और बाजों से युक्त और बहुतसी खाने पीनेकी वस्तुओं समेत दक्षिणारखने वालाथा १७ हेभरतर्षभ इस प्रकार राजा धृतराष्ट्र दशदिन तक दान देकर पुत्र पौत्रोंसेअऋण होगया १८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले इसके अनन्तर प्रातःकाल के समय वनवास में समय पानेवाले बुद्धिमान अम्बिका के पुत्रधृतराष्ट्रनेवीरपांडवों को बुलाकर १ गान्धारी समेत होकर विधिपूर्व्वक उनकोआशीर्वाददिया कार्त्तिककी पूर्णमासीको ब्राह्मणोंसेइष्टीयज्ञकराके २ अग्निहोत्रको आगे करके वल्कल और मृगचर्मों से अलंकृत शरीर बांधवों से घिरेहुये राजा धृतराष्ट्र भवनसे बाहर निकले ३ तब कौरव और पांडवोंकी स्त्रियां और जो कौरव वंशीअन्य २

स्त्रियांथीं उनके बड़े शब्दराजा धृतराष्ट्र के बनजानेके समयहुये४ फिर वह नरेन्द्र राजा धृतराष्ट्र खील और बिचित्र पुष्पोंसेउसघर कोपूजकर और सेवकोंके समूहों को पारतोषिक आदिसेप्रसन्न करके और उनको बिदाकरके यात्रा करनेवाला हुआ ५ इसके पीछे हाथजोड़ अश्रुओंसे युक्त गद्गदकण्ठ राजा युधिष्ठिर उच्च स्वरसे बड़े शब्दको करके अपने साधुतासे बोले कि कहां जाते हो यह कहकर शोकसे पृथ्वीपर गिरपड़े ६ उस प्रकार कठिन दुःखसे संतप्त बारंबार श्वासाओंको लेता भरतर्षभ अर्जुन युधिष्ठिर सेबोलाकि ऐसा मतकरो यहकहकर और पकड़कर बड़े दुःखी के समान पीड़ामान हुआ ७ बीर भीमसेन, अर्जुन, नकुल, सहदेव, बिदुर, संजय, युयुत्सु, कृपाचार्य्य, धौम्य, और अश्रुओंसे गद्गद कण्ठ बहुतसे अन्य २ ब्राह्मणभी उसके पीछे चले ८ कुन्ती और कन्धेपर हाथको सहती नेत्रबांधेहुये गान्धारीभी साथचली प्रसन्न चित्त धृतराष्ट्र गान्धारीके कन्धेपर हाथरखकर चलदिये ९ उ-सीप्रकार कृष्णाद्रौपदी, सुभद्रा, बालक पुत्ररखनेवाली उत्तरा, उलू-पी चित्राङ्गदा, और जो२ अन्यस्त्रियांथीं वह सबभी अपने बन्धु-जनोंके साथ राजा धृतराष्ट्रके साथचलीं १० हे राजा तब उन दुःखसे रोनेवाली स्त्रियोंके शब्द कुररीनाम पक्षिणी के समान उच्चस्वरसे प्रकट हुये उसके पीछे ब्राह्मण क्षत्री वैश्य और शूद्रों की स्त्रियां चारोंओर से दौड़ीं ११ हे राजा उसके यात्रा करने पर हस्तिनापुर में पुरवासियों का समूह ऐसे दुःखी हुआ जैसे कि पूर्व्वसमय में द्यूतहोने के समय पांडवों के बन जानेपर कौर-वीय सभाको दुःख उत्पन्न हुआथा १२ हे नरेन्द्र उस नगर में जिन स्त्रियोंने कभी चन्द्रमा और सूर्य्यको भी नहीं देखाथा वह स्त्रियां कौरवेन्द्र धृतराष्ट्रके बन जानेपर शोकसे पीड़ामान होकर राजमार्गपर आ पहुंचीं १३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकपर्व्वणिपंचदशोऽध्यायः १५॥

सोलहवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हे राजा इसकेपीछे महलोंकी अटारियोंपर और पृथ्वीपर स्त्रीपुरुषोंके बहुतबड़े शब्दहुये १ वह कम्पायमान हाथ जोड़ेहुये बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्र उन स्त्री पुरुषोंके जमघट रखनेवाले राजमार्ग की बड़ी कठिनतासे हस्तिनापुरके बर्द्धमान नाम द्वारमें होकर बाहर निकला उसने उन मनुष्योंके समूहोंको बारम्बार बिदाकिया २ । ३ विदुरजी और गौलगणके पुत्र महा आमात्य सूत संजयने राजाकेसाथ बन जानेका समयजाना ४ राजाधृतराष्ट्रने महारथी कृपाचार्य्य और युयुत्सूको युधिष्ठिरके सुपुर्द करके लौटाया ५ तब पुरवासियों के समूहोंके लौटनेपर धृतराष्ट्रकी आज्ञानुसार राजा युधिष्ठिरने स्त्रियों समेत लौटना चाहा ६ उसने उस बनको जानेवाली कुन्तीसे यह बचनकहा कि मैं राजाके साथ जाऊंगा आप लौटिये ७ हे रानी बधुओं समेत तुम नगरजानेको योग्यहो तपस्वियोंके व्रतमें निश्चय करनेवाला यह धर्मात्मा राजा बनकोजाय ८ तब धर्मराजसे इसप्रकार कही हुई अश्रुओंसे व्याकुलनेत्र कुन्ती गान्धारीको पकड़कर चलीगई अर्थात लौटनेको अंगीकार नहींकिया ९ कुन्तीबोली हे महाराज कहीं सहदेवके पोषणमें भूलमत करना हेराजा यह सदैव मुझसे और तुझसे प्रीति रखनेवालाहै १० युद्धोंमें मुखन फेरनेवाले कर्ण को सदैव स्मरण करना उससमय वहवीर युद्धमें दुर्बुद्धितासे मारा गया ११ निश्चय करके मुझ अभागिनी का हृदय कठोरहै जो सूर्यसेउत्पन्न अपनेपुत्रको मुझ न देखनेवालीकायहहृदय सौटुकड़े नहीं होताहै १२ हे शत्रुओंके विजय करनेवाले ऐसीदशामें मुझसे क्या करना संभवहै यह मेरा बड़ा अपराधहै कि इस अपनेसूर्य्य पुत्रको मैंने प्रकट नहींकिया १३ हे शत्रुओंके मारनेवाले बीर युधिष्ठिर भाइयों समेत तुम उस सूर्य्य पुत्रके निमित्त उत्तम दान दो १४ हे शत्रु संहारी तुमको सदैव द्रौपदीके प्रिय करनेमें प्रवृत्त

होना योग्य है हे कौरवों के उद्धार करनेवाले यह भीमसेन अर्जुन नकुल १५ तुमसे विश्वासयुक्त होकर पोषण करने को योग्यहैं हे युधिष्ठिर अब तेरे ऊपर कुलकाभार नियतहै और मैं धूल मट्टीसे लिप्तशरीर तापसीरूप होकर अपने साससुरके चरणोंकीसेवा करतीहुई गान्धारीके साथवन में निवास करूंगी १६ वैशंपायन बोले कि इसप्रकार आज्ञापानेवाले धर्मात्मा बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिरने भाइयोंसमेत व्याकुलहोकर और कुछनहींकिया फिर वह दुःखी और चिन्तासे शोकयुक्त धर्मराज युधिष्ठिर एकमुहूर्त्तध्यान करकेमातासेबोला १७।१८ तुमने यह क्या निश्चयकियाहै तुमको ऐसा कहनायोग्य नहींहै मैं तुमको आज्ञानहींदेताहूं क्योंकि तुम कृपाकरनेके योग्यहो १९ हे प्रियदर्शन तुम पूर्व्वसमय में शत्रुकी सन्मुखतामें उत्सुक हमलोगोंको प्रतीकारके वचनोंसे उत्साहदिलाकर अब हमारे त्यागकरनेके योग्य नहींहो २० मैंने नरोत्तम वासुदेवजीसे आपकेविचारको सुनकर और राजाओंको मारकर इसराज्यकोपायाहै२१वह आपकी बुद्धिकहांहै जो अब आपकी यह बुद्धिहै जिसको कि अभी मैंनेसुना क्षत्रीधर्म में नियतहोनेका उपदेशकरके अब उससे पृथक् करनाचाहतीहो २२ हे यशावन्ती तुम इन पुत्र वधुओंको और हमसमेत सबराज्यको छोड़कर किस प्रकारसे इस दुर्गम्यवनमें निवास करोगी अब मुझपर आपप्रसन्न होजावो २३युधिष्ठिरके इनवचनोंको जोकि नेत्रोंके जलसे मधुर और अज्ञात प्रयोजन वालेथे सुनतीहुई अश्रुओंसे पूर्ण वह कुन्ती चलदी तब भीमसेनने उससे यहकहा २४हे कुन्ती जब पुत्रसे विजय कियाहुआ यह राज्यभोगनेके योग्यहै और राजधर्म प्राप्तकरनेके योग्यहै तब तुमको ऐसीबुद्धिकहांसे उत्पन्न हुईहै २५ पूर्वसमयमें हमलोगोंको तुमने संसारके नाशके हेतु रूप क्योंकिये और अब किसहेतु से हमको त्यागकरके किसनिमित्तसे बनकोजाना चाहतीहो २६ आप हम बालकों को और शोक दुःख से पूर्ण दोनों माद्री के पुत्रों को बनसे नगरमें क्यों लाई २७ हे यशावन्ती माता

प्रसन्न हूजिये अब तुम बनको मतजाओ हे माता कुछ कालतक पराक्रमसे इकट्ठे कियेहुये युधिष्ठिर के शुद्ध धनको भोगो बनमें निवास करनेकेलिये निश्चय करलेनेवाली वह प्रीतिमान कुन्ती शीघ्रतासेचली और बहुतप्रकारके बिलापकरनेवाले पुत्रोंकेवचनों को नहीं अंगीकारकिया २८।२९ तब बिपरीतहृदयरोतीहुई द्रौपदी सुभद्रासमेत उस बनबासकेलिये जानेवाली कुन्तीकेपीछे चली ३० बनबासका निश्चय करनेवाली बड़ीबुद्धिमान अपने सब पुत्रोंको बारम्बार देखती और रोतीहुई वह कुन्ती चलदीनी ३१ पांडव अपनी सबस्त्रियों और सेवकोंसमेत उसके पीछेचले फिर उसने अपने नेत्रोंके जलको रोककर पुत्रोंसे यह बचनकहा ३२॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिषोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

कुन्तीबोली हे वीरपांडवो यहऐसाहीहै जैसा कि तुम कहतेहो हे राजाओ मैंने पूर्वसमयमें तुम पीड़ामानोंके साहसोंकी वृद्धिकी १ द्यूतखेलनेमें राज्यहारजानेवाले सुखसेरहित और बिरादरीवालों से पराजित तुम लोगों को साहसदिया २ हे पुरुषोत्तमो मैंने यह शोचकर कि पांडुकी सन्तान किसीप्रकारसे नाशको न पावे और तुम्हारी शुभकीर्त्तिका क्षय न होय इसहेतुसे तुमको सत्यधर्म पर प्रवृत्त किया ३ तुम सब इन्द्रके समान और देवताओंके सततुल्य पराक्रमी हो दूसरोंका मुख देखनेवाली न होजाऊं इसप्रकारका बिचारकर मैंने वह कर्मकिया ४ धर्मधारियोंमेंश्रेष्ठ इन्द्रकीसमान तुम राजालोग किसप्रकारसे दुःखी न होते यह बिचारकर तुम सबको साहस दिलवाया ५ दशहज़ार हाथी के समान बिख्यात पराक्रमी यह भीमसेन नाशको नहीं पावे यह शोचकर मैंने सदैव उत्साहदिलाया ६ उसीप्रकार यह भीमसेनसे छोटा इन्द्रके समान अर्ज्जुन नाशको न पावे यह शोचकर उत्साह दिलाया ७ इसी प्रकार यह दोनोंगुरुभक्त नकुल और सहदेव किसीप्रकारसे क्षुधा

से पीड़ित न होय यहशोचकर मैंने उत्साह दिलाया ८ यह बड़ी श्यामा दीर्घ नेत्रवाली द्रौपदी सभाके मध्यमें निरर्त्थक दुःखित न होय यहशोचकर वह कर्मकिया ९ हे भीमसेन जब दुश्शासन ने अज्ञानतासे तुम्हारेदेखते इसद्यूतमेंहारीहुई अपविघ केलेकेसमान कम्पायमान रजस्वला द्रौपदी को १० दासीके समानखैंचा तबहीं मुझको बिदित होगयाथा कि यह घराना नाश होनेवालाहै ११ जबहीं नाथको चाहनेवाली द्रौपदीने कुरीकेसमान विलापकिया तब मेरे ससुर आदिक कौरवलोग व्याकुल हुये १२ हे राजा जब इसद्रौपदीकी चोटीको उसपापीदुश्शासनने पकड़ाथा उसीसमयमें अचेत होगईथी १३ तब मैंने तुम्हारा तेज बढ़ानेके लिये उनप्रती-कार अर्थात बदलेके बचनोंसे तुमको उत्साह दिलाया हे पुत्र इन सब बातोंकोजानो १४ पांडुका यहराजा और बंशमें मेरे पुत्रोंको प्राप्त होकर किसी प्रकारसे नाश न होय इसहेतुसे हे पुत्रो मैंने तुमको उत्साह दिलाया १५ हे कौरवो जिनराजाओंके कारणसे कुलकानाशहोताहै वह राजालोग अपने पुत्रपौत्रोंसमेत शुभलोकों को नहीं पाते हैं १६ हे पुत्रो मैंने पूर्व्व समय में अपने पतिके बड़े२ राजफलों को भोगा है बड़े दानदिये और बिधिपूर्व्वक अमृतपान किया १७ मैंने अपने फलके बदलेकेलिये उनबचनों से बासुदेवजी को नहीं चलायमान किया वह कर्म्म मैंने केवल बंशकी रक्षाके निमित्त किया १८ हे पुत्रलोगो मैं पुत्रोंसे बिजय कियेहुये लोकों को नहींचाहतीहूं १९ हे धर्मराज मैं अपने तपकेद्वारा अपने पतिके शुभलोकों को चाहतीहूं हे युधिष्ठिर मैं इनवनवासी सास ससुरकी सेवाकरके तपसे अपने शरीरको शुष्क करूंगी २० हे कौरवोत्तम तुम भीमसेनादिकों समेतलौटो तेरी बुद्धि धर्म्ममें नियत होय और तेरा चित्त उत्साह युक्त होय २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिसप्तदशोऽध्यायः१७॥

*

अठारहवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले हे राजाओं में श्रेष्ठ वह निष्पाप लज्जायुक्त पांडव कुन्तीका बचन सुनकर द्रौपदी समेत लौटे १ इसके अनंतर इसप्रकार जानेवाली उस कुन्तीको देखकर रुदन करनेवाली सब स्त्रियोंके बड़े शब्दहुये २ तब पांडव राजाकीपरिक्रमा और दंडवत करके कुन्तीकोभी न लौटाकर आपलौटआये ३ फिर महातपस्वी अंबिकाके पुत्र धृतराष्ट्र ने गांधारी और बिदुरको प्रत्यक्ष सन्मुख और खड़ा करके यह बचन कहा ४ कि बहुत श्रेष्ठहै कि युधिष्ठिरकी माता देवी लौटजाय क्योंकि जैसा युधिष्ठिरने कहाहै वह सबसत्यहै कौनसी स्त्रीपुत्रोंके इस बड़े फलरखनेवाले महाऐश्वर्यको त्यागकर अज्ञानोंके समान पुत्रोंको तर्क करके दुर्गम्य बनकोजातीहै ५।६ अब इसराज्यमेंनियतहोकरकुन्तीको बड़ीतपस्याकरना और बड़े दान ब्रतादिकोंकाकरना संभवहै मेरे बचनकोसुनो ७ हेधर्मज्ञ गान्धारी मैं इसवधूकी सेवासे बहुत प्रसन्नहूं इसलिये तुम इसको आज्ञादेने के योग्यहो ८ राजाके ऐसे बचन सुनकर गान्धारीने राजाका वह सब बचन और मुख्यता से युक्त अपना बचन उस कुन्तीसे कहा ९ परन्तु वह गान्धारी उसधर्म में प्रवृत्तचित्त पतिब्रता और बनबासके निमित्त निश्चयबिचार नियतकरलेनेवाली कुन्तीके लौटानेको समर्थनहोहुई १० तब कौरवीय स्त्रियां उसके उस निश्चय और दृढ बुद्धीपने को जानकर और लौटे हुये पांडवोंको देखकर रोदन करनेलगीं ११ तब बड़ा बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्र उन पांडवों समेत सब बधू स्त्रियोंके लौट जानेपर बनको गया १२ उससमय अत्यन्त दुःखी और दुःखशोकसे पूर्ण वह सब पांडव स्त्रियों समेत सवारियोंके द्वारा अपने नगरमें आये १३ वह हस्तिनापुर नगर बालक बृद्ध और स्त्रियों समेत अप्रसन्न उत्साह से रहित के समान होगया १४ कुन्तीसे रहित सब पांडव उत्साह सेरहित बिनाक्रोध बड़े दुःखसेऐसे पीड़ामानहुये जैसे कि माताओं

से पृथक् बछड़े दुःखी और हिरासा होतेहैं १५ प्रभुधृतराष्ट्रने उस दिन बहुतचलकर गंगाजीके तटपर निवास किया १६ उस तपो वनमें जहांतहां वेदपारग ऋषियोंसे न्याय के अनुसार प्रकटहोने वाली अग्नियां शोभायमानहुईं १७ तबवह वृद्धराजाभी अग्निका प्रकटकरनेवालाहुआ हे भरतवंशी वहां जाकर उसराजाने अग्नि योंकी उपासनाकर विधिपूर्व्वक हवनकरके संध्यामें वर्त्तमानहुये सूर्य्यका उपस्थानकिया उसीप्रकार विदुर और संजयने उस कौ- रव बीरराजाकी शय्याको कुशाओंसे तैयार किया और उसी के पास गान्धारीकीभी शय्या बनाई—साधु ब्रतमें नियतयुधिष्ठिरकी माता कुन्ती गान्धारी के पासही सुखपूर्व्वक कुशासनपर बैठगई और बिदुर आदिक सब उनके पास बैठगये १८।१९।२०।२१ और जो याचक और ब्राह्मण साथमें थे वह भी अपने २ योग्य स्थानोंमें बैठगये उन्होंकी वह प्रीतिबढानेवाली रात्रि ब्राह्मीनाम हुई जिसमें उत्तम ब्राह्मण पढते थे और अग्नियां प्रकाशमानथीं फिर रात्रिके व्यतीत होनेपर दिनके पूर्व्वाह्न कालकी क्रिया संध्यादिकसे निवृत्तहो २२।२३ वह सब विधिके अनुसार अग्नि में हवनकर ब्रतकरनेवाले होकर उत्तरकी ओरको देखते क्रमपूर्वक चले २४ पुरबासी और देशवासियोंसे शोचित और आप शोचने वाले उनलोगोंका निवास प्रथम दिनमें बड़ा दुःखरूप हुआ २५॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिअष्टादशोऽध्यायः १८॥

उन्नीसवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि फिर विदुरजीके मतमें नियत राजायुधि- ष्ठिरने श्रीगंगाजीके तटपर पवित्रलोगों के योग्यमहापवित्रस्थान पर निवास किया १ हे भरतर्षभ वहांबनवासी ब्राह्मण क्षत्री बैश्य और शूद्रोंके बहुत समूह इसके पास आकर वर्त्तमान हुये उन्होंसे व्याप्त उस राजाने कथाओं के द्वारा उनको प्रसन्न करके और विधिके अनुसार पूजकर शिष्यों समेत बिदा किया २। ३ फिर

उस राजाने सायंकाल के समय श्रीगंगाजी पर जाकर यशवन्ती गांधारी समेत विधि पूर्वक शौचक्रिया करके स्नानादिक किया ४ और विदुर आदिक अन्य सबलोगोंने पृथक् २ तीर्थों पर स्नान करके सब जपादिक क्रियाओं को किया ५ हे राजा फिर कुन्ती उस स्नान कियेहुये वृद्ध ससुर और गांधारी को गंगा के किनारे पर लाई ६ वहां राजाके याचक लोगोंने वेदी तय्यारकरी तब उस सत्यसंकल्प राजाने उस वेदीपर अग्नि में हवनकिया ७ फिर वह नियमवान् जितेन्द्री वृद्ध राजा धृतराष्ट्र अपने साथियों समेत गंगाकिनारेसे कुरुक्षेत्रको गया ८ उस बुद्धि-मान् राजाने वहांपर आश्रममें पहुंचकर शतयूपनाम राजऋषि कोपाया ९ हे शत्रुओंके जीतनेवाले वह राजऋषि केकयदेशोंका बड़ा राजाथा वह अपने पुत्रको राज्यदेकर बनबासीहुआ यह राजा धृतराष्ट्र उसके साथ व्यास आश्रम में गया वहां राजऋषि शतयूपने इस धृतराष्ट्रको विधिके अनुसार उपदेशकिया १०।११ तब उस कौरवनन्दन राजाधृतराष्ट्रने वहां दीक्षाको पाकर शतयूप के आश्रममें निवासकिया १२ हे महाराज तब बड़ेबुद्धिमान् राजऋ-षिने व्यासजीकी सलाहसे बनबास संबंधी सब विधियोंको उस राजाके सन्मुख वर्णनकिया १३ तब उस बड़े साहसी राजाधृत-राष्ट्रने इसप्रकार अपने समेत उन सब साथियों को तपसे संयुक्त किया १४ हे महाराज उसीप्रकार बल्कल मृगचर्म्म धारण करने वाली देवीगांधारी कुन्ती समेत राजाकेही समान ब्रत करनेवाली हुई हे राजा वह दोनों कर्म मन चक्षु और वाणीकेद्वारा इन्द्रियों के समूह को रोककर उत्तम तपमें नियत हुईं १५।१६ जिसके शरीर में केवल अस्थि और चर्म शेष रहगया मांस शुष्क होगया उस जटा मृगचर्मधारी बल्कलसे गुप्तशरीर मोहसे रहित राजा ने वहां महर्षी के समान कठिन तपस्या को किया १७ तब धर्म अर्थ के ज्ञाता बुद्धिके स्वामी श्रेष्ठ घोर तपस्वी बाह्या-भ्यन्तर से जितेन्द्री दुर्बलांग बल्कल चीरधारी विदुरजीने संजय

समेत होकर उस राजा और गान्धारी की सेवाकरी १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिएकोनविंशतितमोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायनबोले कि फिर मुनियोंमें श्रेष्ठमहातपस्वी नीचेलिखे-हुये ऋषि राजाको देखनेकेनिमित्तआये नारद, पर्वत, देवलशिष्यों समेत व्यासजी, अन्य बहुतसे ज्ञानी सिद्ध वृद्ध और बड़ा धर्मात्मा राजऋषि शतयूप २ हे महाराज कुन्तीने विधिके अनुसार उनका पूजनकिया वह तपस्वी भी उसकी सेवासेप्रसन्नहुये ३ हेतात वहां महात्मा राजा धृतराष्ट्र को प्रसन्नचित्त करते हुये उन महर्षियों ने धर्मरूपकथावर्णनकी ४ फिर सब वृत्तान्तोंके प्रत्यक्ष देखनेवाले देवऋषि नारदजीनेकिसीकथाके मध्यमें इसकथाकोवर्णनकिया५ नारदजीबोले कि शतयूपका पितामह श्रीमान् सहस्रचित्य नाम केकय देशियोंका राजाथा जो कि सब ओरसे निर्भयथा ६ वह धर्मात्माराजा सहस्रचित्य अपने बड़े पुत्र धर्मात्माके आधीन राज्य को करके वनमें यात्रा करनेवालाहुआ ७ उस महातेजस्वी राजाने प्रकाशमान तपके फलको पाकर इन्द्रलोकको पाया ८ हेराजा प्रथममहाइन्द्रके भवनमें जातेहुये मैंने वह राजा बहुतबार देखाजि-सकेपाप तपकेद्वाराभस्महोगये ९ उसीप्रकार भगदत्त का पितामह राजा शैलालय तपकेही बलसे महेन्द्र भवनकोगया १० हेराजेन्द्र उसीप्रकार वज्रधारीके समान राजा प्रसध्र हुआ वह भी तपहीके द्वारा यहांसे स्वर्गकोगया ११ हेराजा इसी वनमें मान्धाताके पुत्र राजा पुरकुत्सने भी बड़ी सिद्धीको पाया १२ नदियोंमें श्रेष्ठ नदी नर्मदा जिसकी भार्य्याहुई वहराजा भी इसवनमें तपको तपकर स्वर्गकोगया १३ हेराजा राजाशशलोमा बड़ा धर्मात्माहुआ उसने इस वनमें अच्छे प्रकारसे तपस्या को करके स्वर्गको पाया १४ हेराजा तुमभी व्यासजीकी कृपासे इस दुष्प्राप्य तपोवनको पा-कर उत्तम गतिको पावोगे १५ और तपस्याके अन्तपर लक्ष्मीसे

संयुक्तहोकर गान्धारी समेत उन महात्माओं की गतिको पावेगी १६ हे महाराज इन्द्रके सन्मुख वर्त्तमान राजा पांडु सदैव तेरा स्मरण करताहै वह सदैव तुमको कल्याणसे युक्त करेगा १७ यह तेरी बधू यशावन्ती कुन्ती भी तेरी और गांधारीकी सेवासे पति की सालोक्यताको पावेगी १८ जोकि युधिष्ठिरकी माताहै और वह युधिष्ठिर सनातन धर्महै हेराजा हम दिव्यनेत्रोंसे इसबातको देखतेहैं १९ कि विदुर इसमहात्मा युधिष्ठिरके रूपमें प्रवेशकरेगा और संजय उसके ध्यानसे स्वर्गकोजायगा २० वैशंपायनबोले कि महात्मा धृतराष्ट्र अपनी पत्नी समेत इस वर्णनको सुनकर प्रसन्न हुआ फिर उस बुद्धिमानने नारदजीके बचनोंकी प्रशंसा करके उनकी बड़ी पूजाकरी २१ हेराजा फिर सब ब्राह्मणोंके समूहोंने नारदजीका अत्यन्त पूजनकिया तब वह नारदजी राजा धृतराष्ट्र की प्रीतिसे बारंबार प्रसन्नहुये २२ वैशंपायनबोले कि बड़े साधू ब्राह्मणोंने नारदजीके बचनों की स्तुतिकरी तब राजऋषि शत-यूपने नारदजीसे यह बचन कहा २३ हे महातेजस्वी बड़ी कृपाहै कि भगवानकी ओरसे इस कौरवराज धृतराष्ट्र समेत इसके सब मनुष्योंकी और मेरी श्रद्धावृद्धि करीगई २४ हे लोकपूजित देव-ऋषि इस राजा धृतराष्ट्र की ओरसे कुछ प्रार्थना करनेकी इच्छा है उसको आपमुझसे सुनिये २५ आप दिव्यनेत्रोंके द्वारा सबमूल वृत्तान्तों के ज्ञाताहो हे ब्रह्मऋषि योगसे संयुक्त होकर आप मनुष्योंकी उन गतियोंको देखतेहो जो कि नानाप्रकार की हैं २६ हे महामुनि तुमने राजाओं की गति महाइन्द्र की सालो-क्यता वर्णन करी परन्तु तुमने इसराजाके लोक वर्णन नहीं किये २७ हे प्रभु मैं इस राजा का स्थान भी सुना चाहताहूं कि वह कैसाहै और तुमने कबदेखाहै उसको मूलसमेत मुझसे कहौ २८ उसके इसप्रकारसे पूछनेपर दिव्यदर्शी महातपस्वी नारदजीने सभामें बैठकर सबका चित्त विनोदक वचनकहा २९ नारदजी बोले हेराजऋषि मैंने दैवइच्छा से इन्द्रलोक में जाकर

वहांपर शचीपति इन्द्र और राजा पांडुकोदेखा ३० हेराजा वहां पर इसकी उस कठिन तपस्याका प्रसंगहुआ जिसको कि यह तपताहै ३१ वहां मैंने निज इन्द्रके मुखसे यहसुना कि इसराजाकी अवस्थाके तीनबर्ष बाकीहैं ३२ फिर यह राजा धृतराष्ट्र गान्धारी समेत कुबेरके लोककोजायगा राजाओंकेराजा कुबेरजीसेसत्कार पाकर ३३ तपसे भस्मीभूत पापहोके प्रारब्धवान् दिव्य भूषणोंसे अलंकृत यह धर्म्मात्मा ऋषिपुत्र उस स्वेच्छाचारी बिमानकी सवारीसे ३४ अपनीप्रीति और अनुरागकेसाथ देवता गन्धर्व और राक्षसोंके लोकोंमें घूमेगा जो आपने मुझसे पूछाहै ३५ इसीसेमैंने देवताओंकी इसबड़ी गुप्तबार्त्ताको अत्यन्त प्रीतिपूर्वक तुमसेबर्णन किया आपलोग शास्त्ररूप धन रखनेवाले और तपसे पापोंके सुखानेवाले हैं ३६ वैशम्पायन बोले कि वह राजा धृतराष्ट्र और सब ब्राह्मणलोग देवऋषि के मधुर और प्रिय बचन को सुनकर अत्यन्त प्रसन्नहुये ३७ सिद्धगतिमें प्राप्त वह ऋषि इसप्रकार से कथाओंके द्वारा धृतराष्ट्र को बिश्वासयुक्त करके अपनी इच्छाके अनुसारचलेगये ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिविंशतितमोऽध्यायः२० ॥

इक्कीसवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले हेराजा राजाधृतराष्ट्र के बनकोजानेपर दुःख शोकसेसंयुक्तपांडव माताकेशोकसेब्याप्तहुये १ वहां राजाधृतराष्ट्र केविषयमें बार्त्तालाप करनेवाले ब्राह्मण और सब पुरवासी उस राजाको शोचतेहुये निवासकरनेलगे २ किवह वृद्धराजा निर्जन बनमेंकिस प्रकारसे निवासकरताहै वह सौभाग्यवती गान्धारी और कुन्तीकैसे निवासकरतीहैं ३ वह सुखके योग्य महादुःखी मृतकपुत्रवाला अंधाराजऋषि उसबड़ेमहाबन कोपाकर किसदशामें प्राप्तहोगा ४ पुत्रोंकोनदेखती कुन्तीने बड़ाकठिन कर्मकिया जिसने राजलक्ष्मीको त्यागकरके बनवासको अंगीकारकिया ५ आईकी

सेवाकरनेवाला ज्ञानीविदुर कौनसीदशामेंहै और स्वामीका शुभ चिन्तकवहबुद्धिमान संजयकैसेप्रकारसेहै ६ वहपुरवासीबालकों समेत इनसबकेशोकोंसेदुःखितहुये और परस्पर मिलकरजहांतहां वार्त्तालाप करनेलगे ७ अत्यन्तशोकयुक्त वहसब पांडववृद्ध माता को शोचतेबहुत थोड़े समयतक पुरमें वास करने वालेहुये ८ उसी प्रकारमृतकपुत्रवालेवृद्ध ताऊ राजाधृतराष्ट्र, सौभाग्यवतीगांधारी और बुद्धिमान विदुरजीकाभी शोचकिया ९ तब उन्होंका शोच करनेवाले इनपांडवोंकी प्रीति उस राज्यवेदपाठ और स्त्रियोंपर नहींहुई १० बिरादरी वालोंके उसघोरनाश को बारंबार स्मरण करते और राजाकोशोचते पांडवोंने बड़ेवैराग्यकोपाया ११ सेना मुखपरबालक अभिमन्युकानाशयुद्धमें न भागनेवालेबीर कर्णका मरना १२ उसीप्रकार द्रौपदीकेपुत्र और अन्यनातेदारोंकेमरनेको स्मरणकरते वहबीर शोक युक्तहुये १३ हे भरतवंशी बीरो और रत्नोंसेरहित पृथ्वीको सदैवशोचते हुये उन पांडवोंने शान्ती को नहींपाया १४ तबपुत्रोंसेरहितद्रौपदी और सुभद्रादोनोंदेवीअप्रसन्नों के समान अधिक प्रसन्नतासेयुक्तनहींहुई १५ आपके उनपूर्वपिता महाओंने उत्तराकेपुत्रआपकेपिता परीक्षितको देखकर प्राणोंको धारण किया १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासिकेपर्व्वणिएकविंशतितमोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि माताको प्रसन्न करनेवाले वह बीर पुरुषो-त्तम पांडव इसप्रकार माताकोस्मरण करतेअत्यन्त दुःखीहुये १ जो पूर्वसमय में राज्यके कार्य्यों में सदैवप्रवृत्तथे उन्होंने फिर उस राजधानी में बैठकर राज्यके कार्य्यों को अच्छे प्रकार से नहीं किया २ शोकसेयुक्त उनलोगोंने किसी वस्तुको भी स्वीकारनहीं किया और समक्ष कियेहुये उन्होंने किसीकी वार्त्तालापको भी स्वीकार नहीं किया ३ शोक के कारण विज्ञान से रहित और

गंभीरतामें सागरके समानवह अजेयवीर पांडव अचेतोंके समान होगये ४ फिर उनपांडवोंने माताकीचिन्ताकरी, कि वह अत्यन्त दुर्बल शरीरवाली कुन्ती किस प्रकारसे दोनोंवृद्धसास सुसरोंकी सेवा करतीहै ५मृतकपुत्रवाला और आश्रयस्थान न रखनेवाला वह अकेला राजा अपनी पत्नीसमेत हिंसस्वापद जीवोंके निवास स्थान वनमें कैसे निवास करताहै ६ वह भागवन्ती मृतकबान्धव-वाली देवी गांधारी निर्जन वनमें किसप्रकारसे अपने अन्धेपति के पास रहतीहै ७ तब इसप्रकार कहनेवाले उन पांडवों को शोच उत्पन्न हुआ और धृतराष्ट्र के देखने की इच्छासे वनजाने का विचार हुआ तबसहदेवने राजाको दण्डवत करके यह बचन कहा कि बड़ी प्रसन्नता का स्थानहै मैंने वन जानेके बिषयमें आपका हृदय देखा ८९ हेराजेन्द्र मैं आपकी वृद्धतासे शीघ्रवन जानेके बिषयमें आपसे कहनेको समर्थ नहीं हुआ वहीबात अब प्रत्यक्षहुई १० मैं प्रारब्धसे उसकुन्तीको देखूंगा जोकि तपस्विनी तापसी जटासे युक्त वृद्धाकाश कुशाओंसे घायलशरीर और सास सुसरकी सेवामें प्रवृत्तहोगी ११महलोंकी अटारीमें बढ़ीहोनेवाली अत्यन्तसुख भागीमाताको जोकि वनमें अत्यन्त दुखी और थकी हुई है कवदेखूंगा १२ हेभरतर्षभ निश्चय करके मनुष्योंकेकर्मा-दिकोंके फल विनाशमान हैं जिस स्थानपर कि राजपुत्री कुन्ती वनमें महादुखीहोकर निवासकरतीहै १३ स्त्रियोंमें श्रेष्ठदेवीद्रौपदी ने सहदेवका वचन सुनकर राजाको नमस्कार और पूजनकर के कहा १४ हेराजामैं उसदेवीको कवदेखूंगी जोवह कुन्ती जीव-तीहोगी तोनिश्चय करकेवह जीवतीहुई मुझपर प्रीतिकरेगी १५ हे राजेंद्र सदैव आपकाभी विचारहोय और आपकाचित्त धर्ममें प्रवृत्तहोय जोअब तुमहमको कल्याणसे संयुक्त करोगे १६ हेम-हाराज तुमइन बधुओंको जोकि कुन्तीगांधारी औरससुरके दर्श-नकी इच्छा रखतीहैं हमसे आगेनियत जानो हे भरतर्षभ देवीद्रौ-पदीके ऐसेबचनको सुनकर उसराजाने सबसेनाके प्रधान लोगोंको

बुलाकरयहआज्ञाकरीकि १७।१८ बहुत रथहाथीरखनेवालीमेरी सेना को सन्नद्धकरो कि मैं वनमें निवास करनेवाले राजाधृतराष्ट्र को देखूंगा १९ फिरराजाने महलोंके सेवक लोगोंको आज्ञाकरी किमेरी नाना प्रकारकी सबसवारी औरहज़ारों पालकियोंकोतै-यारकरो २० छकड़े,दूकानें,खज़ाने, कारीगर,खज़ानेके नौकरचा करकुरुक्षेत्रके आश्रमकोचलो २१ जोकोई पुरवासी राजाकोदेख-ना चाहताहै वहभी अच्छे प्रकारसे सावधान होकरचले २२ रसो-इयां और रसोई खानेके प्रबन्धक सब रसोईखाना औरनानाप्र-कारकेमेरेभक्ष्य भोज्योंको छकड़ोंपर लादकरलेचलो और प्रातः-कालकेसमय हमारी यात्राकरनेकी नगरमें प्रसिद्धीकरो बिलम्ब मतकरो अबमार्गमें भी नानाप्रकारके निवास स्थानबनाओ २३। २४ हेराजा वहराजा युधिष्ठिर इसप्रकारसे आज्ञादेकरप्रातःकाल के समय भाइयों समेत यात्रा करनेवाला हुआ जिसके अग्रभागमें स्त्री और वृद्ध मनुष्यथे २५ वह राजा नगरसे बाहर पांचदिनतक मनुष्योंके समूहोंकी प्रतीक्षा करताहुआ निवासीरहा फिर बन-को गया २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिद्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले इसकेअनन्तर भरतवंशियों में बड़े साधू युधि-ष्ठिरने लोकपालोंके समान अर्जुन आदिक वीरोंसे रक्षितसबप्रजा प्रकोष्ठि तिसे यह आज्ञाकरी १ कि सबलोग घोड़ोंको जोड़ २ कर तैयार होंय हे भरतर्षभ इस आज्ञाको सुनतेही घोड़ेके तैयारकरने सवारोंके तैयारी करनेके बड़े शब्दहुये २ कोई तो रथकीसवा-रीसेचले कोई प्रकाशित अग्निके समान सुवर्णके रथोंकी सवा-रीसेचले ३ हे राजाइसीप्रकार बहुतसेलोग गजेन्द्रोंकी सवारी से चले कोई ऊंटोंकी सवारीसे चले और इसीप्रकार नखर और प्राससे युद्धकरनेवाले बहुतसे मनुष्य पदातीहीचले ४ और पुरवासी

देशबासी धृतराष्ट्रके दर्शनकी अभिलाषासे बहुतप्रकारकी सवारि-यों पर सवारहोकर युधिष्ठिरकेपीछे २ चले और वह सेनाध्यक्ष गौतम कृपाचार्य भी राजाकीआज्ञानुसार सबसेनाको साथलेकर आश्रमको चले५।६ इसकेपीछे ब्राह्मणोंसे युक्त बहुतसे सूत मागध और बन्दियोंसे अस्तुतिमान ७ मस्तकपर पांडुवर्णा छत्रसे शोभित कौरवराज युधिष्ठिर बड़ी रथों की सेना समेत चले ८ जिसका कि कर्मभयकारीहै वह वायुकापुत्र भीमसेन उनहाथियोंसे व्याप्त होकर चला जो कि सजेहुये यन्त्र और धनुष आदिकसे युक्त और पर्व्वताकार थे ९ उसीप्रकार पोशाक आदिसे अच्छे अलं-कृत सजीहुई ध्वजा और कवच रखनेवाले तीव्रगामी घोड़ोंपर सवार दोनों नकुल और सहदेव भी चले १० जितेन्द्री महातेज-स्वी अर्जुन रथकी सवारीसे राजाके पीछेचला वह रथ दिव्य श्वेत घोड़ोंसे युक्त और सूर्य्यके समानतेजस्वी था ११ अन्त:पुरके सेवक लोगोंसे रक्षित पालकीमें सवारहुई द्रौपदी आदिक स्त्रि-योंके समूहभी असंख्य धनको दानकरतीहुई चलीं १२ हेभरतर्षभ उससमय वह पांडवीसेना रथहाथीघोड़ोंसे वृद्धियुक्त बांसुरीऔर बीणाओंसे शब्दायमान होकर महा शोभायमानहुई १३ हेराजा वह श्रेष्ठ कौरवलोग क्रीड़ाके योग्य नदी और सरोवरों के तटों पर निवास करके क्रमपूर्व्वक चले १४ महातेजस्वी युयुत्सु और धौम्य पुरोहितने युधिष्ठिर की आज्ञासे नगरकी रक्षाकरी १५ फिर राजा युधिष्ठिर कुरुक्षेत्रमें पहुंचे वहां महापवित्र यमुनानदी को क्रम पूर्व्वक उतरकर १६ उसराजाने दूरसेही उस बुद्धिमान राजऋषि शतयूप और धृतराष्ट्र के आश्रम को देखा १७ हे भरतर्षभ इसके पीछे उन सब मनुष्योंने अत्यन्त प्रसन्नचित्त बड़े शब्दोंसे शब्दायमान करते उस बनमें प्रवेशकिया १८॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणित्रयोविंशतितमोऽध्यायः २३॥

चौबीसवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि फिरवह नम्रतायुक्त पांडव दूरसे उतरकर पैदलहोकर राजाके आश्रममेंगये १ वहसब सेनाकेलोग देशवासी और उत्तम कौरवोंकी स्त्रियां पैदलही उनके पीछेचलीं २ वहां जाकर उन पांडवोंने धृतराष्ट्र के आश्रमको देखा जो कि मनुष्योंसे रहित मृग समूहोंसे व्याप्त और केलोंके वनोंसे शोभाय-मान था ३ फिर व्रतमें सावधान प्रथमके तपस्वी लोग आये हुये पांडवों के देखने को वहां आये ४ तब अश्रुओं से पूर्णनेत्र होकर राजायुधिष्ठिरने उनसे पूछा कि यह हमाराताऊ कौरववंश का पोषण करनेवाला कहां गया५ हे राजा तब उनसबमुनियोंने उस-से यह वचन कहा कि यमुनाजीमें स्नान करने और पुष्पों समेत जलघटलानेकोगयाहै ६ तब वह पैदल पांडव उनकेबताये हुयेमार्ग से वहां को शीघ्रचलेऔर उनसबको थोडोही दूरपरदेखा ७ फिर ताऊ के दर्शनों केअभिलाषी वह पांडव बडी शीघ्रतासेचले और सहदेव कुन्तीकोऔर बडीतीव्रतासे दौडा ८ वह बुद्धिमानमाताके चरणोंका स्पर्शकरता बडे स्वरसे रोदन करनेलगा अश्रुपातों से युक्त मुख उस कुन्तीनेभी अपने प्रिय पुत्रको देखा ९ भुजाओं से पुत्रको मिलकर और उठाकर इस सन्मुख नियत्त सहदेवको गा-न्धारीसेकहा १० इसकेपीछेकुन्ती राजायुधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन और नकुलको देखकर बडीशीघ्रतासे सन्मुख गई ११ वह कुन्ती उन दोनों सास सुसरोंको खेंचती उन मृतपुत्रवाले दोनोंस्त्री पुरुषों के आगे चलतीथी वह सब पांडव उसको देखकर पृथ्वीपर गिर पड़े १२ बुद्धिमान प्रभु राजा धृतराष्ट्रने उनको शब्द और स्पर्श सेजानके अच्छेप्रकार विश्वास दिया १३ फिर वह महात्मा पांडव आंसुओं को डालकर राजाधृतराष्ट्र गान्धारी और अपनी माता कुन्तीकेपास विधिकेअनुसार नियत हुये अर्थात दण्डवतकरी १४ तब सचेतहोकर मातासेविश्वासयुक्त उन पांडवोंनेसबकेजलकलशों

का आपलेलिया १५ तब उसीप्रकार से नरोत्तमों की पत्नियों ने अन्य राजाओंकी स्त्रियोंने और पुरवासी देशवासी आदिक स्त्री पुरुषोंनेभी उस राजाको देखा १६ उस राजा युधिष्ठिरने उन सब मनुष्यों का नाम और गोत्र से राजाधृतराष्ट्र के सन्मुख विदित किया और उसने उनका सत्कार किया १७ उनसे घिरेहुये और प्रसन्नता के अश्रुपातों से युक्त राजाधृतराष्ट्र ने अपनेको घरमेंही ऐसा वर्त्तमानसा माना जैसे कि पूर्व्व समय में हस्तिनापुरकेमध्यमें वर्त्तमानथा १८ द्रौपदी आदिक वधुओंसे दण्डवत् कियाहुआ वह बुद्धिमान् धृतराष्ट्र गान्धारी और कुन्तीसमेत प्रसन्नहुआ १९ फिर उस आश्रममें चलागया जो कि सिद्ध चारणोंसे सेवित और देखनेवाले मनुष्यों से ऐसे पूर्णथा जैसे कि तारागणों से आकाश पूर्ण होताहै २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि हेभरतर्षभ तब उस राजा धृतराष्ट्र ने उन कमल लोचन नरोत्तम पांचों भाइयों समेत आश्रम में निवास किया १ कौरवपति के पुत्र बड़े वक्षस्थल रखनेवाले पांडवों के देखनेको बहुतप्रकार के देशोंसे आनेवाले महाभाग तपस्वियों के साथ आसनोंपर बैठे २ वह बोले कि हम जानना चाहतेहैं कि इन में कौनसे युधिष्ठिर हैं भीमसेन अर्ज्जुन और नकुल सहदेव कौनसे हैं और यशवन्ती द्रौपदी कौनसी है ३ तब सूत संजयने उन सब पांडवोंको—और द्रौपदीको आदि लेकर सब कौरवों की स्त्रियों को उन तपस्वियोंके सन्मुख वर्णनकिया ४ संजयने कहा कि जो यह शुद्ध जाम्बूनद सुवर्णके समान गोरा शरीर महासिंह के समान उच्चशरीर सुन्दर नासिका और बड़े आयत रक्तनेत्र रखनेवालाहै यह कौरव राज युधिष्ठिर है ५ यह मतवाले गजेन्द्र के समान चलनेवाला तप्त शुद्ध सुवर्णके समान गौर वर्ण बड़े लम्बस्कन्ध

और भुजाओं का रखनेवाला यह भीमसेन है इसको देखो ६ इसके समीपमें जो यह बड़ाधनुषधारी श्यामवर्ण तरुणगजेन्द्रकी समान शोभायमान सिंहके समान ऊंचे कन्धेरखनेवाला गजखेल के समान गवन करनेवाला और कमलके समान बड़े दिव्य नेत्र रखनेवालाहैयहवीर अर्जुनहै ७कुन्तीके सन्मुख यहविष्णुरूपमहा- इन्द्रके समान पुरुषोत्तम नकुल और सहदेव हैं स्वरूप बल और सुन्दर स्वभावमें जिनके समान इस सब नरलोकमें कोई नहींहै ८ फिर यहकमल के समान दीर्घनेत्र कुछ मध्यदशाको स्पर्शकरने- वाली नीले कमल के समान तेजस्विनी सुरदेवी के तुल्य द्रौपदी साक्षात् स्वरूप धारण करनेवाली लक्ष्मीके समान नियतहै ९ हे ब्राह्मण लोगो इसके समीपमें जो यह उत्तम सुवर्णकेसमान तेज- वान् चन्द्रमाकी किरणों के समान रूपवाली मध्यमें नियतहै वह उस अनुपम चक्रधारी श्रीकृष्णजीकी बहिनहै १० यह जाम्बूनद नाम शुद्ध सुवर्णके समान गौरांगसर्पराजकी कन्या उलूपीअर्जुन की भार्य्याहै जो यह उत्तम मधुपुष्पके समान शरीर रखनेवाली राजकन्या चित्राङ्गदाहै यह भी अर्जुन की भार्य्याहै ११ यहबड़े नीले कमल दलके समान वर्ण रखनेवाली उसराजाचमूपतिकी बहिन है जिसराजाने सदैव श्रीकृष्णजीसे ईर्षाकरी यहभीमसेनकी उत्तम पटरानीहै१२यहचंपककेपुष्पऔर पुष्पकेसमानगोरी औरजरासंध नामसेविख्यात मगधदेशकेराजाकीपुत्रीहै यह माद्रीके छोटेपुत्र सहदेवकीभार्य्याहै १३ जो यह कमलके समान श्यामवर्णनियतहै और जिसकेसमान पूर्वमेंभी कोई पृथ्वीपर नहींहुई यह कमलके समान दीर्घ नेत्रवाली स्त्री माद्रीके बड़े पुत्र नकुलकी भार्य्याहै १४ यह राजा विराटकी पुत्री तपायेहुये सुवर्णके समान गोरी अपने पुत्रके साथ नियतहै यह अभिमन्यु की भार्य्याहै जो कि युद्धमें रथसे विहीन होकर रथसवार द्रोणाचार्य्यादिकोंके हाथसेमारा गया १५ यह श्वेत ओढ़नी रखनेवालीं राजपत्नी इसवृद्धराजा धृतराष्ट्र और गांधारीकी पुत्रवधूहैं जो कि संख्यामें सौसेअधिक

हैं और जिसकेपुत्र और पति वीरोंके हाथोंसेमारेगये १६ ब्राह्मण भावसे सत्य बुद्धि शुद्ध सतोगुण युक्त यह सब राजपत्नी मुख्यता पूर्वक आपसे वर्णनकरीं १६। १७ वैशंपायनबोलेकिरक्कौरवोंमें श्रेष्ठ वह राजा धृतराष्ट्र इसप्रकार उन राजकुमारों से मिला और सब तपस्वियोंके चलेजानेपर उसने कुशलक्षेमको पूछा १८ सवा रियोंको छोड़कर उस आश्रम मंडलसे पृथक् सेनाके समूहोंके नियत होने और स्त्री बालक वृद्धोंके अच्छेप्रकारसे बैठ जानेपर योग्यताके समान सबसे कुशल क्षेमको पूछा १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय ॥

धृतराष्ट्र बोले हेमहाबाहुयुधिष्ठिर तुम सब भाई पुरवासी और देशवासियों समेत कुशल पूर्वक हो १ हे राजाजो तेरे आश्रयसे अपनी जीविका करतेहैं वह मंत्री नौकरचाकर और तेरेगुरु भी नीरोगहैं २ वह प्रजालोग भी तेरे देशमें नीरोगता पूर्वक निर्भय होकर निवासकरतेहैं क्या तुम राजऋषियोंसे कियेहुये शुभफल देनेवाले प्राचीन व्यवहारोंपर चलते हो क्या न्याय पूर्वक तेरे खज़ाने पूर्णहोतेहैं शत्रु मित्र और उदासीन राजाओंमें उचितवास और व्यवहारोंकोवर्त्तताहै३।४ हे भरतर्षभ क्या तुमअग्रहारोंसेयुक्त दानों समेत ब्राह्मणोंका दर्शन करतेहो वह तेरे सुन्दरस्वभावसे प्रसन्न होतेहैं ५ शत्रुभी तेरेउत्तमस्वभावसे प्रसन्नहैं फिर पुरवासी और राज्यके सेवक आदि और नातेरिश्तेदार क्योंन प्रसन्नहोंगे हे राजेन्द्र श्रद्धावान् तुम क्या देवता पितरोंको पूजतेहो ६ यह भरतवंशी क्यातुमखानेपीनेकी वस्तुओंसे अतिथियोंको पूजतेहो क्या तेरे देशवासी ब्राह्मण नीतिमार्ग और अपने कर्मसे प्रवृत्तहैं ७ बाल बच्चेवाले क्षत्री वैश्य और शूद्र भी अपनी रीतियोंपर नियतहैं क्यातेरे बालक, स्त्री और वृद्धनहीं शोचते और प्रार्थना

करतेहैं ८ हे नरोत्तम क्या तेरेघरमें बहिन बेटी और बधू आदि पूजितहैं हे महाराज क्या यह राजऋषिवंश तुम्हराजाको पाकर उचितरीतिपर नियतहै ९ और तुम्हारी अपकीर्त्ति तो नहींहोतीहै वैशंपायन बोले कि उसज्ञानी न्याय पूर्व्वक वार्त्तालापमें कुशल राजा युधिष्ठिरने इसप्रकार से पूछनेवाले उसराजाधृतराष्ट्रसे कुशल क्षेम पूर्व्वक यह बचन कहा १० युधिष्ठिरने कहा हे राजा क्या आपका तप बृद्धिको पाताहै और आपको बाह्याभ्यन्तरसे जिते-न्द्रीपन प्राप्तहै और सेवा करनेवाली यह मेरी माता थकावट से रहितहै ११ हे राजा इसका बनबास सफल होगा यह मेरीताई शीतबायु और मार्गचलने से दुर्बल शरीर १२ घोरतपसेयुक्त देवी गान्धारी अपने उन मृतक पुत्रोंको तो नहीं शोचतीहै जोकिबड़े पराक्रमी और क्षत्रीधर्म में नियतथे १३ क्या वह सदैवहम पापि-यों को शापतो नहीं देतीहै हे राजा वह बिदुरजी कहांहैं हम उन को देखेंगे वहसंजय कुशलसे होकर तपमें नियतहै १४ वैशंपायन बोले इसप्रकारके युधिष्ठिर के वचनों को सुनकर धृतराष्ट्रने राजा युधिष्ठिर को उत्तरदिया कि हे पुत्रबिदुर कुशलसेहै और घोरतप में नियतहै १५ वह बायुभक्षी निराहार दुर्बल शरीर हाड़ियों से तना हुआ बिदुर इस निर्जनबनमें कभी२ किसीब्राह्मणकोदिखाई पड़ताहै १६ उसके इसप्रकार वार्त्ताकरते जटाधारी बैठामुखदुर्बल शरीरनंगा बनकी धूलीसे लिप्तांग मलिन शरीर १७ बिदुरदूर से ही दिखाई पड़ा तब राजासे सबने कहा कि हे राजा वह बिदुर आश्रमकी ओर दृष्टि को करता अकस्मात लौटाहै १८ अकेला राजा युधिष्ठिर घोरबनमें प्रवेशकरनेवाले उस बिदुरके पीछेदौड़ा जोकि कहीं दिखाई देताथा और कहींदृष्टिसे गुप्तहोजाता था १९ वहां जाकर राजाने कहा हे बिदुरजी मैं आपका प्यारा राजायु-धिष्ठिरहूं इसप्रकार कहता हुआ राजा युधिष्ठिर उपाय पूर्व्वक उसकेपीछे दौड़ा २० फिर बनकेमध्यमें एकान्त स्थानमें वह बुद्धि-मानोंमें श्रेष्ठ बिदुरजी किसीवृक्षका आश्रय लेकर नियतहुये २१

बड़े बुद्धिमान् राजा युधिष्ठिरने उस अत्यन्त दुर्बल और केवल स्वरूपसेही विदित होनेवाले बड़े बुद्धिमान् विदुरजीको पहचाना २२ और कहाकि मैं युधिष्ठिरहूं राजा विदुरजी के कान में यह वचन कहकर आगे नियत हुआ और उनको प्रणामकिया २३ फिर उसनेनेत्रों को फैलाकर राजाको देखा दृष्टिमें कुशल बुद्धिमान् विदुरजीने उसमें दृष्टि लगाकर २४ अंगों से अंगों में प्रवेश करकेप्राणोंको प्राणोंमें और इन्द्रियोंको इन्द्रियों मेंप्रवेशकिया २५ तेजसे अग्निरूप विदुरजीने योगबलमें नियत होकर धर्मराज राजायुधिष्ठिरकेशरीरमें प्रवेशकिया तव धर्मराजयुधिष्ठिरनेविदुर जीके शरीरको उसीप्रकार नेत्र खुलेहुये वृक्षके आश्रयसे नियत निश्चेष्टरूपदेखा २६।२७ तवमहातेजस्वी धर्मराजने अपनेकोबहुत गुना बलवानमाना हेराजाफिर उसमहातेजस्वी विद्यावान् पांडवने अपने उनसवप्राणायोग और धर्मोंकोस्मरणकिया जैसेकिव्यासजी नेकहाथा२८।२९तवबुद्धिमानधर्मराजइसकेसंस्कार और दाहकरने काअभिलाषीहुआ तव आकाशवाणीने कहा किहेराजा यहविदुर नाम तुमको दाह न करनाचाहिये यहां इसीप्रकार इसकोछोड़ो यही सनातन धर्महै ३० । ३१ हे भरतवंशी इसके लोक सन्तानक नाम होंगे इसने संन्यास धर्मको प्राप्तकिया हे शत्रुओंके जीतने वाले यह विदुरशोचनेके योग्य नहींहै ३२ फिर इसप्रकारसे कहे हुये उस धर्मराजने लौटकर उस सब वृत्तांतको राजा धृतराष्ट्र के सन्मुख वर्णनकिया ३३ तब वहतेजस्वी राजाधृतराष्ट्र और भीमसेनादिक पांडवों समेत सब मनुष्य अत्यन्त आश्चर्य युक्तहुये ३४ राजाने उसकोसुनकर और प्रसन्नहोकर धर्मपुत्रसे यहवचनकहा कि यह मेरे जल फल और मूलको लीजिये ३५ हे राजा मनुष्य जिस खाने पीनेकी वस्तुको अपने पास रखताहै उसको अतिथि भी उसी सामानवाला होताहै ३६ यह सुनकर धर्मराजने राजासे कहा कि यथार्थहै ३७ और सबछोटे भाइयों समेत राजाके दिये हुये फल मूलों को भोजन किया इसके पीछे वृक्षों के मूलोंपर

निवास करनेवाले और फल मूल जल भोजन करनेवाले वह सब उस रात्रिको वहांहीं बसे ३८ ॥

श्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांआश्रमवासकेपर्व्वणिषड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले कि हे राजा इसकेपीछे इनपवित्रकर्मी पांडवों की वह कल्याणरूप नक्षत्रोंसेयुक्त रात्रि उसी आश्रम में व्यतीत हुई १ फिर वहांपर उन्होंकी वह कथाहुई जो कि धर्म्म अर्थ का लक्षण रखनेवालीं विचित्र पदों से युक्त और नानाप्रकार की श्रुतियोंसे संयुक्तथीं २ हे राजा तब पाण्डवों ने बहुमूल्यवाले शयनों को त्याग करके माताके चारोंओर पृथ्वीपरही शयन किया ३ बड़े साहसी राजाधृतराष्ट्र ने जो आहार किया उसी आहार के करने वाले वह नरवीर उस रात्रिमें स्थितहुये रात्रि व्यतीत होनेपर दिनके पूर्व्वाह्न कालके जपादिकसे निवृत्तहोकर राजायुधिष्ठिर ने भाइयों समेत आश्रम मण्डल को देखा ४ । ५ रानी आदिक स्त्रियों और दास दासी पुरोहित समेत वह राजा युधिष्ठिर राजाधृतराष्ट्र की आज्ञा से सुख पूर्व्वक इच्छानुसार विहार करनेवालाहुआ ६वहां उन वेदियोंको देखा जिनपरअग्नि अच्छे प्रकार से प्रकाशितथीं और उन अग्नियों के पास अभि- षेक और होम करनेवाले मुनि नियतथे ७ मुनियोंके समूहोंकी वह वेदियां वन फूलों के ढेर और ऊंचे उठे हुये धूमके धुंए समेत ब्राह्मय शरीरसे संयुक्तथीं ८ हेप्रभु जहां तहां निर्भय मृगोंके यूथ और शरोदगानेवाले निर्भय नीलकंठादिक पक्षियोंकेकेका शब्द और दात्यूहनाम पक्षियोंके शब्दकरना और चित्तकोसुखदाईको किलाओंकी कुहूवाणी से युक्त ९।१० वेदपाठकरनेवाले फलमूला- हारी महर्षियों के शब्दसे भी कहींकहीं अलंकृत और शोभाय- मान था ११ हे राजा फिर उसराजाने वहां उनतपस्वियोंके नि- मित्त भेटकरीं सुवर्णके कलश तांबेकेघट १२ मृगचर्म, छत्र, कंबल,

स्क, स्रुव, कमंडल, स्थाली, पिठर १३ लोहेकेपात्र, नानाप्रकार के पात्र, हे भरतवंशी राजा जनमेजय जो जो साधू जितनाचाहता था और जो अन्यप्रकारकेपात्रथे वह भी दिये १४ इसप्रकार वह संपूर्ण पृथ्वी का स्वामी धर्मात्मा राजायुधिष्ठिर आश्रम मंडलमें घूमकर उससबधनको बांटकर फिर लौटकरआया १५ तबजपादिकसे निवृत्त सवधन महाराजा धृतराष्ट्र को गान्धारी समेतबैठा हुआ देखा १६ धर्मात्मा युधिष्ठिरने शिष्य के समान झुकी हुई समीपमें नियत शुकशिर्योंके आचरणोंसेयुक्त अपनीकुन्तीमाताको देखा १७ वह उस राजा की प्रतिष्ठा करके अपना नाम सुनाकर बैठने की आज्ञापाकर कुशासनपर बैठगया १८ हे भरतर्षभ भीमसेनादिक पांडव भी दंडवतकरके चरणछूकर राजाकीआज्ञासे बैठ गये १९ उन पांडवोंके मध्यवर्त्ती होकर वह राजा धृतराष्ट्र ऐसा अत्यन्त शोभायमान हुआ जैसे कि ब्राह्मणोंकी लक्ष्मीको धारण करते वृहस्पतिजी देवताओं के मध्यमें शोभायमान होते हैं २० उसरीतिसे उनके बैठ जानेपर शतयूप आदिक कुरुक्षेत्र निवासी राजाऋषि और महर्षिलोग वहां आये २१ देवऋषियों के समूहों से सेवित शिष्योंसमेत महातेजस्वी भगवान व्यासऋषिनेभी आकर राजा को दर्शनदिया फिर उस राजाधृतराष्ट्र और पराक्रमी युधिष्ठिर और भीमसेनादिकोंने उठकर ऋषियोंको दण्डवत की २२।२३ फिर शतयूप आदिक से व्याप्त और मिले हुये व्यासजी ने राजाधृतराष्ट्र से कहाकि बैठो २४ तब व्यास उस उत्तम कुशासनपर जोकि मृगचर्म से युक्त उनके निमित्त बिचार किया गया था बैठगये २५ व्यासजी की आज्ञानुसार बड़ेतेजस्वी वह सबश्रेष्ठ ब्राह्मण चारोंओर बिस्तरोंपर बैठगये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्वणिसप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

——*——

अट्ठाईसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि फिर महात्मा पाण्डवों के अच्छे प्रकार बैठजानेपर सत्यवतीके पुत्र व्यासजी ने यह बचन कहा १ कि हे वीर राजाधृतराष्ट्र क्या तेरा तप होताहै और तेरा मन बनवासमें प्रसन्न होताहै २ हे निष्पाप राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंके नाशसे उत्पन्न शोक तो तेरे हृदय में नहीं है और तेरे सब ज्ञान शुद्ध हैं ३ क्या तुम बुद्धिको दृढ करके बनबासकी रीतिपर प्रसन्न होतेहो और गान्धारी बधू तो शोकसे पूर्ण नहीं होती ४ यह बड़े ज्ञानवाली बुद्धिमान् धर्म्म अर्थ की ज्ञाता उत्पत्ति नाशकी मुख्यता को जाननेवाली शोच तो नहीं करती है और हे राजा अहंकार से रहित यह कुन्ती तुम्हारी सेवा करती है जो कि अपने पुत्रों को छोड़कर गुरुकी सेवामें तत्परहै ५।६ क्या यह बड़ मन और बुद्धि का रखनेवाला धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर भीमसेन अर्जुन नकुल और सहदेवभी विश्वासयुक्त धैर्य्यवालेहैं ७ क्यातुम इनको देखकर प्रसन्नहोतेहो क्यातेराचित्तनिर्मलहै हेराजा क्यातुमज्ञानी और शुद्ध चित्तहो ८ हे भरतवंशीमहाराजा धृतराष्ट्र यह तीन बातें सबजीवों मेंश्रेष्ठहैं शत्रुता न करना,सत्यता,क्रोध न करना ९ हे भरतर्षभ क्या बनबाससे तेरामोह नहीहै और मूलफलादिक भोजनकी बस्तु तेरे आधीनहैं क्याब्रतभी होताहै १० हे राजेन्द्र ईश्वरबिधिसे उसबड़े महात्मा और बुद्धिमान धर्मावतार बिदुरका लयहोना भी तुमको बिदित है ११ बड़े बुद्धिमान् महायोगी महात्मा मनके जीतनेवाले धर्मने मांडव्यऋषिके शापसे बिदुर शरीरको पायाथा १२ देवता ओंमें बृहस्पति असुरोंमें शुक्र उसप्रकारके बुद्धिमान् नहींहैं जैसा कि वह बिदुर बुद्धिमानथा १३ तब वह बहुतकालसे इकट्ठाकिया हुआ सनातन धर्म तपोबलको व्यय करके मांडव्यऋषि के शाप सेपराजय हुआ १४ पूर्वसमयमें ब्रह्माजीकी आज्ञानुसार वह बड़ा बुद्धिमान निज बलसे राजा बिचित्रवीर्य्य के क्षेत्रमें मुझसे उत्पन्न

हुआ १५ हे महाराज वह देवताओं का भी देवता सनातन तेरा भाई था परिडतोंने मनसे ध्यान करने केद्वारा जिसको धर्म जाना १६ जो तपसे युक्त सनातन धर्म सत्यता और बाह्याभ्यन्तर से इन्द्रीजित होकर दान और अहिन्साके द्वारा अच्छीवृद्धि को देताहै जिसज्ञानी बड़े बुद्धिमान के योगबलसे कौरवराजयुधिष्ठिर उत्पन्न हुआ यह साक्षात धर्महीहै १७ । १८ जैसे कि अग्नि और वायुसर्ब्बत्रहैं और जिसप्रकार जल पृथ्वी और आकाश सबस्था-नोंपर बर्त्तमानहैं उसीप्रकार धर्मभी इसलोक और परलोकमें नि-यतहै १९ हे राजेन्द्र सब स्थावर जंगम जगत को व्याप्त करके सर्वत्रवर्त्तमान वह धर्म उनको दिखाई देताहैजोकि देवताओं के भी देवता और सब पापोंसे रहित होकर सिद्ध हैं २० जो धर्महै वह बिदुरहै जो बिदुरहै वह युधिष्ठिर है हे राजा वह धर्मका अवतार पांडव तेरे प्रत्यक्षमें सेवक के समान बर्त्तमानहै २१ वह बुद्धिमानों में श्रेष्ठ महात्मा तेराभाई इस महात्मायुधिष्ठिर को देखकर और बड़ेयोग से युक्त होकर इसमें प्रवेश करगया २२ हे भरतर्षभ तुम को भी थोड़ेहीसमयमें कल्याण से युक्तकरूंगा हे पुत्र सन्देह नि-वृत्तकरनेकेलिये मुझको आयाही जानाकरो २३ पूर्वसमय में जो तपरूप फलवाला अपूर्वकर्म जो लोकमें कहीं किसी ऋषि और महर्षियोंसे नहीं कियागया वह तुमको दिखलाताहूं २४हे निष्पाप राजाधृतराष्ट्र तुम मुझसे कौनसा अभीष्ट देखना सुनना और प्राप्त करना अथवा पूछना चाहते हो मैं उसको अवश्य करूंगा २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिअष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

उन्तीसवां अध्याय ॥

जनमेजयने पूछा कि कुन्ती बधूसेयुक्त भार्य्यासमेत नरोत्तम राजाधृतराष्ट्र के बनबासी होने १ बिदुरजी के सिद्ध और धर्म-राजमें प्रवेशकरने और आश्रम मंडल में सब पांडवों के नियत होनेपर २ बड़े तेजस्वी व्यासमहर्षि ने जो वह वचन कहा कि मैं

अपूर्व कर्मकरुंगा उसको मुझसे कहिये ३ तब वह धर्मसे अच्युत कौरव राजा युधिष्ठिर कितने समयतक अपने सब साथियोंसमेत आप वहां निवासी हुआ ४ हे प्रभु वहां महात्मा पांडव सेना और स्त्रियोंसमेत किस आहारसे निवासीहुआ हे निष्पाप उसको मुझसे कहो ५ वैशम्पायनबोले कि हे राजा उस राजाधृतराष्ट्रकीआज्ञा-नुसार वह पांडव विश्राम करके नानाप्रकारकी खाने पीनेकी वस्तुओंको भोजन करतेथे ६ हे निष्पाप उन लोगोंने सेना और स्त्रियां समेत एक महीना वनमें विहारकिया फिर वहां व्यासजी आये उनका वृत्तान्त मैंने तुझसेकहा ७ हे राजा कथाओंकेद्वारा राजाके सन्मुख व्यासजीके पास उन सबके नियत होनेपर अन्य अन्य मुनिलोगभी आये ८ महातपस्वी देवल, पर्वत, नारद, वि-श्वावसु, तुम्बुरु, चित्रसेन—हे भरतवंशी ९ तब धृतराष्ट्रसे आज्ञापा-येहुये महातपस्वी कौरवराज युधिष्ठिरने न्यायके अनुसार उन्हें का पूजनकिया १० फिर वह सब युधिष्ठिर से पूजा पाकर उन आसनोंपर बैठगये जोकि पवित्र श्रेष्ठ और मोरपक्षियोंके परोंसे संयुक्तथे ११ हे कौरववहां उनकेबैठजानेपर वह बड़ाबुद्धिमानराजा धृतराष्ट्र पांडवोंके मध्यवर्त्ती होकर बैठगया १२ फिर गान्धारी द्रौपदी कुन्ती सुभद्रा और अन्यश्रेष्ठस्त्रियां सब मिलकरबैठगईं १३ हे राजा वहां उन्होंको वह कथादिव्य और धर्मसेसम्बन्ध रखने वालीहुई जो कि प्राचीनऋषियोंकीकथा देवता और असुरोंके वृत्तान्तों से संयुक्त थीं १४ इसके अनन्तर उस सब वेदज्ञोंमें उत्तम वक्ताओंमेंश्रेष्ठ महाप्रीतिमान व्यासजीने कथाकेअंतपर उसबुद्धि-रूपी नेत्ररखनेवाले राजाधृतराष्ट्रसे फिरवहवचनकहा १५ कि हे राजेंद्र मुझकोबिदितहै कि पुत्रशोकसेतुझजलतेहुयेकेहृदयमें जो कहनेकीइच्छाहै १६ और गांधारीकेहृदयमें जो दुःख सदैव नि-यतहै १७ और हे महाराज कुंती और द्रौपदीके हृदयमें जो खेद वर्त्तमानहै और श्रीकृष्णजीकीबहिन सुभद्रा पुत्रके नाशसे उत्पन्न जिस कठिन दुःखको रखती है वह भी मुझको बिदित है १८ हे

कौरवनंदनधृतराष्ट्र इसीहेतुसेमैं तुमसबकेइससंयोगकोसुनकर १९ सन्देह दूर करनेको आयाहूं अब यह देवता गन्धर्व्व और सब महर्षी २० लोग मेरे उस तपोबलको देखो जोकि बहुत कालसे इकट्ठाकियाहै हे महाराज अब तुम जो २कहो उस२ तेरी प्रार्थना को पूराकरूं२१मैं बरदेनेको समर्थहूं मेरे तपकेफलको देखो बड़े तपस्वी व्यासजीकेइसप्रकारकेबचनोंकोसुनकर उसराजेन्द्रने २२ एक मुहूर्त्त विचार करके कहना प्रारम्भ किया मैं धन्यहूं कृत-कृत्यहूंजो आपने मेरेऊपर कृपाकी मेराजीवन सफल है जो अब यहां मेरा संयोग आपसरीखे साधुओंकेसाथ हुआहै अबमैं आप महात्माकी कृपासे अभीष्ट गतिकोभी प्राप्तकरूंगा २३।२४हे तपो-धन ऋषियोजो मैं आपसरीखे ब्रह्मरूपोंसे मिला मैं आपकेदर्शनों सेही निस्सन्देह पवित्र हुआ २५ हे निष्पाप ऋषियो परलोक सेभी मुझको भय वर्त्तमान नहींहै परन्तु मुझलोभीका और पुत्रों के स्मरण करनेवाले का मन उस दुर्बुद्धी अभागे दुर्य्योधन के अन्यायोंसे सदैव दुःखपाताहै जिस पापबुद्धीसे यह पांडव छलेगये २६।२७ और जिसकेकारणसे यह सब संसारकेलोग घोड़े हाथि-यों समेत नाशहुये नानाप्रकारके देशोंकेस्वामी राजालोग २८मेरे पुत्रके निमित्त आकर कालके आधीनहुये यह सब शूर अपने वृद्धोंको स्त्रियोंको और मनसे प्यारे प्राणोंको २९ त्यागकरके यमलोककोगये हेब्राह्मणजोकि युद्धमेंमित्रकेलियेमारेगये उनकी कौनगतिहै ३० इसीप्रकार मेरे उनपुत्रपौत्रों की कौनगति होगी जोकि युद्धमें मारेगये शान्तनुकेपुत्र बड़ेपराक्रमी भीष्मजीको३१ और ब्राह्मणों में बड़े साधु द्रोणाचार्य्य को मरवाकर मेरा चित्त अत्यन्त दुःखपाताहै ३२ पृथ्वीके राज्य के चाहनेवाले, मित्रों के शत्रुमेरे अज्ञानी पुत्रसे, यह प्रकाशितबंश विनाश कियागया इस सबको स्मरण करके अहर्निश जलता ३३ दुःख और शोकसे घायलहोकर शान्तीको नहींपाताहूं मुझ पिताके शोचसे युक्तको शान्ती वर्त्तमाननहींहै ३४ वैशम्पायनबोले हे जनमेजय उस राज-

ऋषिके बहुत प्रकारके विलापको सुनकर गान्धारीकाशोक फिर नवीन होगया ३५ कुन्ती द्रौपदी सुभद्रा और धृतराष्ट्रकी सब बधू आदि स्त्री पुरुषोंका शोक फिर नवीन कियागया ३६ पुत्रशोक से व्याकुल हाथजोड़कर खड़ीहोकर गान्धारीने ससुरसे यह वचन कहा३७ कि हे मुनियोंमें श्रेष्ठ प्रभु व्यासजी मृतकपुत्रोंको शोचते हुये इस राजाके सोलहवर्ष व्यतीतहुये परन्तु इसको शान्ती नहीं होतीहै ३८ हे महामुनि पुत्रशोकसे पूर्ण बारम्बार श्वासलेता यह राजा धृतराष्ट्र सब रात्रियों में नहीं सोताहै ३९ तुम तपके बलसे दूसरे लोकोंके उत्पन्नकरनेकोभी समर्थहो फिरपरलोकमेंवर्त्तमान राजाकेपुत्रोंके दिखाने को क्यों न समर्थहोगे ४० सबपुत्र बधुओंमें बड़ीप्यारी यह कृष्णा द्रौपदी जिसके पुत्र और भाई आदिक मारे गयेअत्यन्त शोचकरतीहै४१इसीप्रकार कल्याणवचनरखनेवाली श्रीकृष्णकी बहिन प्रीतिमान सुभद्रा अभिमन्युके मरनेसे अत्यन्त शोचकरतीहै ४२ भूरिश्रवाकी अत्यन्त अंगीकृत यह प्रीतिमान भार्य्या पतिके शोकसे अत्यन्त पीड़ामान होकर अधिकता से शोचकरतीहै ४३ जिसका ससुर बुद्धिमान कौरववाह्लीक बड़े युद्ध में मारागया और पिता समेत सोमदत्तभी मारागया ४४ आपके इसबड़ेबुद्धिमान् धृतराष्ट्रके युद्धमेंमुख न मोड़नेवाले सौपुत्र युद्धभूमि में मारेगये ४५ उनकी यह सौभाग्या दुःख और शोकसे व्यथित बारम्बार मेरे और राजाके शोककी बढ़ानेवालीहैं४६हे महामुनि वह सब उसबड़े शोकके शब्दों समेत मेरेपास वर्त्तमान रहतीहैं जो शूर महात्मा महारथी मेरे ससुर ४७ सोमदत्त आदिक हैं हे प्रभु उनकी कौनगतिहै हे ब्राह्मणोत्तम यह राजा आपकीकृपासेशोक से निवृत्तहोय ४८ और इसीप्रकार मैं और आपकी यह कुन्ती बधू विनाशोक होंगी गान्धारी के इसप्रकार कहनेपर व्रतसे रूपांतर कुन्तीने४९ उस गुप्त जन्मलेनेवाले सूर्य्यके समान तेजस्वी पुत्र कर्णका स्मरणकिया दूरकीबातें सुनने और देखनेवाले वर- दाता व्यासऋषिने ५० उस अर्जुनकी माता देवी को महादुःखी

देखा तब व्यासजीने उससे कहा कि तुझको जिसबातका पूछना है ५१ और तेरे मनमें वर्त्तमानहै हे महाभाग तुम उसकोपूछो तब प्राचीन वृत्तांतको प्रकट करते लज्जायुक्त कुन्तीने शिरसे प्रणाम करके सशुरसे यह बचनकहा ५२। ५३॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिएकोनत्रिंशोऽध्यायः२९॥

तीसवां अध्याय॥

कुन्तीबोली हे भगवन् आप मेरे सशुरहोकर देवताके भी देवता हो सो हे मेरे बड़े देवता तुम मेरी सत्यबार्त्ताको सुनो१तपस्वी क्रोधी दुर्वासानाम ब्राह्मण मेरे पिताकेयहां भिक्षा करनेके लिये सन्मुख आये २ निरपराधिनी मैंने अपने चित्तकी बाह्याभ्यन्तर की पवित्रता से और अवगुणोंके त्यागनेसे उनको प्रसन्नकिया कभी क्रोध के स्थान पर क्रोधित नहीं हुई ३ वह अच्छा पूजित अत्यन्त प्रसन्न चित्त मुनि मुझको वरदेनेवाला हुआ उसने मुझसे यह बचन कहा कि तुझको अवश्य वरलेनाचाहिये ४ इसकेपीछे मैंने शापके भयसे उस ब्राह्मण से कहा कि जैसा आप चाहते हैं वैसाही होय तब उस ब्राह्मणने फिर मुझसे कहा ५ हे शुभमुखी कल्याणी तू धर्मकीमाताहोगी और जिन२ देवताओंको बुलावेगी वह सब देवता तेरे आधीनहोंगे ६ ब्राह्मण यहकहकर अन्तर्ध्यान हुआ तब मैं आश्चर्य्य युक्तहुई सत्यदशाओं में स्मरण शक्ती का नाश नहीं होताहै ७ फिर महलकी अटारीपर चढ़ीहुई उदय हुये सूर्य्यको देखकर मैंने ऋषिके उस बचन को स्मरण करके इच्छाकरी ८ उसमें दोषको न जानती लड़कपनसेनियतहुई इसके पीछे सहस्रांशु सूर्य्य देवता अपने शरीर के दोभाग करके एक शरीरसे आकाश में और दूसरे शरीर से पृथ्वीपर आकर मेरे सन्मुख वर्त्तमानहुये उन्होंने एक शरीरसे तो लोकोंको प्रकाशित किया और दूसरे शरीरसे मेरे पास आये ९।१० मेरे पास आकर मुझ कंपायमानसे कहा कि वरमांगो मैंने उनको शिर से प्रणाम

करके कहा कि जाइये११ उस तीक्ष्णांशुसूर्य्यने मुझसे कहा कि मेरा निरर्थक बुलाना योग्य नहींहै मैं तुझको और उस ब्राह्मण को भस्म करूंगा जिसने कि तुझको वरदिया है १२ फिर उस अभीष्ट करनेवाले ब्राह्मणको शापसे रक्षा करनेकेलिये मैंने सूर्य्य देवतासे कहा कि हे देवता मेरापुत्र तेरे समानहोय १३ फिरसूर्य्य ने तेजसे मुझमें प्रवेशकरके और मुझको मोहित करके कहाकि तेरापुत्र होगा यह कहकर स्वर्गको चलेगये १४ फिर महलों के भीतर पितासे गुप्त वृत्तान्त करनेवाली मैंने गुप्त जन्म लेनेवाले अपने बालक कर्ण को जलमें छुड़वादिया १५ फिर उस देवताकी कृपासे मैं कन्याहोगई हे वेदपाठी जिसप्रकार उस ऋषिने मुझसे कहाथा १६ मुझ अज्ञानीस्त्री से वह जानाहुआपुत्रभी त्यागकिया गया वह बात मुझको जलातीहै यह पापहोय वा न होय परन्तु मैंने उसको प्रकट करदिया हे भगवन् आप इसके दिखलाने की अभिलाषा को पूर्णकरो १७।१८ हे निष्पाप श्रेष्ठ मुनि इसराजाके हृदयमें जो इच्छानियतहै वह आपको विदित है यह राजा अभी उस अभिलाष को पावे १९ इसप्रकार के कुन्तीके वचन सुनकर वेदज्ञों में श्रेष्ठ व्यासजीने उत्तरदिया कि अच्छायह सब प्राप्तहोने के योग्यहै और यह इसीप्रकार है जैसा कि तुमने मुझसे कहा है २० तेरा अपराध नहींहुआ क्योंकि तू कन्याभावमेंथी ऐश्वर्य्य-मान देवता शरीरोंमें प्रवेश करतेहैं २१ वह देवताओं के समूहहैं जो कि संकल्प दृष्टि स्पर्श वाणी और भोग इन पांचों प्रकारोंसे सन्तानोंको उत्पन्न करतेहैं २२ हेकुन्ती तुझ मनुष्यधर्म्ममें नियत होनेवाली को मोह करना उचित नहीं है तेरे मनका सन्ताप दूर होय २३ बलवानों के सब कर्म्म शुभ फलदायी हैं बलवानों का सब पवित्रहै सामर्थ्यवानोंकाही सब धर्म्महै पराक्रमियोंकाही सब निजधनहै २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्वणित्रिंशोऽध्यायः ३० ॥

———※———

इकतीसवां अध्याय॥

व्यासजीबोले कि हे कल्याणी गान्धारी तू पुत्र भाई बान्धवों को पिताओं समेत ऐसेदेखेगी जैसे कि रात्रिव्यतीत होनेसे सोकर उठनेवालोंकोदेखतेहैं १ कुन्तीकर्णको सुभद्रा अभिमन्युकोद्रौपदी पांचों पुत्र पिता आदि अपने सब भाइयोंको देखेगी २ प्रथमही मेरे हृदयमें यह निश्चय नियतहुआथा जब कि मुझसे राजाधृतराष्ट्र कुन्ती और तुमने कहाथा ३ वह सब नरोत्तम क्षत्रीधर्म्ममें नियत महात्मा तेरे शोच करनेके योग्य नहींहैं क्योंकि उन सब गुणोंसेयुक्तहोकर उन्सबनेमरणकोपाया २ हेनिर्दोष वह देवकार्य उसीप्रकार से अवश्य होनहार था इसीहेतुसे देवताओं के सब अंशोंने पृथ्वीतलपर अवतार लियाथा ४।५ उनगन्धर्व्व अप्सरा पिशाच गुह्यक राक्षस पवित्र मनुष्य शुद्धदेवऋषि ६ देवतादानव और निर्मल देवऋषियोंने अवतार लिया उन्होंनेही कुरुक्षेत्रकी युद्धभूमि में मरणको पाया ७ धृतराष्ट्र नामसे प्रसिद्धजो बुद्धिमान् गन्धर्वराजहै वही धृतराष्ट्र नरलोकमें तेरापतिहै ८ पांडुको मरुद्गणसेजानो जो कि श्रेष्ठतमहोकर धर्मसे कभी च्युतनहींहोताथा बिदुर और राजा युधिष्ठिर धर्मकेअंशसे उत्पन्न हुये जानो ९ भीमसेन बायुगणसे जानो हेशुभदर्शन तुमदुर्योधनको कलियुगजानो शकुनीको द्वापर और दुष्शासनादिकोंको राक्षसजानो और इस पांडव अर्जुनको नररूप ऋषिजानो १०।११ श्रीकृष्णकोनारायण नकुल सहदेव को अश्विनीकुमार जानो और हे सुन्दरी अपनेदो शरीरोंसे संसारका प्रकाश करनेवाला कर्णको सूर्य्यरूपजानो १२ जोकि वह पाण्डव प्रसन्नताका उत्पन्न करनेवाला उत्पन्न हुआ वह पांडव अर्जुनका पुत्र अभिमन्यु छः महारथियोंके हाथसेमारा गया वह चन्द्रमा था अपने योगसेही दो रूपवाला होगया था १३।१४ जो धृष्टद्युम्न द्रौपदीके साथ अग्निसे उत्पन्न हुआ उसको अग्निका शुभभाग जानो और शिखण्डी को राक्षसजानो१५

द्रोणाचार्य्यको वृहस्पति का अंश और अश्वत्थामा को रुद्रसे उत्पन्न जानो गंगाजी के पुत्र भीष्म को मनुष्य शरीर प्राप्त करने वाला वसुदेवताजानो १६हे महाज्ञानी सुन्दरी इसप्रकार यह देवता मनुष्यशरीरोंको प्राप्तकरके कार्य्यके समाप्तहोनेपर स्वर्गकोगये१७ परलोकके भयसे सबके हृदय में जो यह दुःख बहुतकालसे नियत है अब मैं उसको निवृत्त करूंगा १८ आप सबलोग मिलकर गंगा जीके तटपर चलो वहां तुम उन सबलोगोंको देखोगे जो इसयुद्ध-भूमिमें मरेहैं १९ वैशम्पायन बोले कि सबलोग व्यासजीके इस वचनको सुनकर बड़े सिंहनाद करतेहुये श्रीगंगाजीके सन्मुख चले २० धृतराष्ट्र अपने मन्त्री, पांचों पाण्डव, श्रेष्ठमुनि और आये हुये गन्धर्वों समेत यात्रा करनेवालेहुये २१ फिर सब मनुष्यों के समूहने क्रमसे श्रीगंगाजी को प्राप्तहोकर सबने प्रीति और सुख पूर्व्वक निवास किया २२ उस बुद्धिमान् राजा धृतराष्ट्रने जिसके अग्रभाग में स्त्री और वृद्धलोगथे पांडव आदि सब साथियों समेत अभीष्ट स्थानपर निवासकिया २३ मृतक राजाओं के देखने के अभिलाषी रात्रिकी बाट देखते उनलोगोंका वह दिन सौवर्ष के समान व्यतीत हुआ २४ जब सूर्य्य देवता पर्वतों में श्रेष्ठ पवित्र अस्ताचल को गये तब अभिषेक करनेवाले उनलोगोंनेसंध्याआदिक कर्मोंको किया २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिएकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि फिर सायंकाल की संध्या करनेवाले वह सब जो कि वहां आयेथे रात्रिके प्रारम्भमें व्यासजीके पासगये १ तब धर्मात्मा पवित्रात्मा राजा धृतराष्ट्र पांडव और उन ऋषियों समेत व्यासजीके पास बैठगये २ और गान्धारी समेत स्त्रियांभी बैठगई पुरवासी और देशवासी सब मनुष्यभी अवस्था के क्रमसे यथायोग्य स्थानोंपर बैठगये ३ फिर महातेजस्वी महामुनिव्यास

जीने श्रीगंगाजीके पवित्र जलमें प्रवेश करके सब लोगोंका आ-
ह्वान किया ४ पांडव और कौरवों के जो जो शूरवीर युद्धकरने-
वालेथे वह सब और बहुत प्रकारके देशोंमें रहनेवाले महाभाग
राजा लोगों का ५ ऐसा कठिन शब्द जलके पास हुआ जैसे कि
प्रथम कौरवीय और पांडवीय सेनाओं में हुयेथे ६ इसकेपीछेवह
सब राजालोग जिनके अग्रगामी भीष्म और द्रोणाचार्य्यथे सेना
समेत जलसे बाहर निकले ७ दोनोंराजा विराट और द्रुपद अपने
पुत्र और सेना समेत बाहरनिकले द्रौपदीकेपुत्र, अभिमन्यु, घटो-
त्कचराक्षस ८ कर्ण, दुर्य्योधन, महारथी शकुनी, दुश्शासन आ-
दिक धृतराष्ट्र के महाबलीपुत्र, जरासन्धकेपुत्र भगदत्त, पराक्रमी
जलसिन्ध,भूरिश्रवा,शलशल्य,अपने छोटेभाइयों समेत वृषसेन ९
१० राजपौत्र लक्ष्मण,धृष्टद्युम्नकापुत्र,शिखण्डीके सबपुत्र, छोटे
भाइयों समेत धृष्टकेतु ११ अचल, वृषक, अलायुधराक्षस, सोम
दत्त, बाह्लीक, राजाचेकितान १२ यह सब और अन्य २ बहुत
से राजालोग जोकि अधिकयतासे वर्णन नहींकियेगये वह सब
तेजोमय शरीर धारणकियेहुये जलसे बाहर निकले १३ जिस
वीरकी जो २ पोशाक ध्वजा और जो २ सवारीथीं उनसब चि-
ह्नोंसमेत वह सब राजा दिखाईपड़े १४ वह सब दिव्यपोशाक
और प्रकाशमान कुण्डलोंसे अलंकृतथे और सबलोग शत्रुता अहं-
कार क्रोध और ईर्षासे रहितथे जिनके आगे गन्धर्व गानकरतेथे
और जो बन्दीजनों से स्तुतिमान दिव्यमाला और पोशाकों से
अलंकृत और अप्सरा गणोंसेयुक्तथे १५।१६ हे राजा तब प्रसन्न
चित्त व्यासमुनिने अपने तपोबलसे धृतराष्ट्र को दिव्यनेत्रदिये १७
दिव्यज्ञान और बलसेयुक्त यशवन्ती गान्धारीने उनसब पुत्रोंको
और जो अन्य लोग उस युद्धमें मारेगये उन सबकोभी देखा १८
आँखोंके बन्द न करनेवाले आश्चर्य्य युक्त उनसब मनुष्योंने उस
अपूर्व ध्यानसेपड़े रोमांचखड़ेकरनेवालेअद्भुत वृत्तान्तको देखा १९
स्त्री पुरुषोंसे पूर्णबड़े उत्सवरूप अद्भुत चमत्कारकायेसे देखा जैसे

दि कपड़ेपर लिखेहुये चित्रको देखतेहैं २० हे भरतर्षभ वह धृत-
राष्ट्र उन मुनिकी कृपासे उन सबको अपने दिव्यनेत्रोंसे देखकर
बहुत प्रसन्नहुआ २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिद्वात्रिंशतितमोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि इसके अनन्तर क्रोध ईर्षा और पापोंसे
रहित वह सब पुरुषोत्तम परस्परमें मिले ब्रह्मर्षि व्यासजी से
नियतकीहुई शुभ और उत्तम विधिमें नियतहोकर सब स्त्री पुरुष
ऐसे प्रसन्नचित्तथे जैसे कि देवलोकमें देवता प्रसन्नहोतेहैं १। २ हे
राजा पिता पुत्रसे स्त्रियां पतियोंसे भाई भाइयोंसे मित्र मित्रों
से स्नेहपूर्व्वक मिले ३ पाण्डव बड़ी प्रसन्नता समेत उस बड़े
धनुषधारी कर्ण अभिमन्यु और सब द्रौपदी के पुत्रों से अच्छी
रीति से मिले ४ हे राजा फिर वह प्रीतिमान् पाण्डव कर्ण
के साथ मिलकर भायपनेकी प्रीतिमें नियतहुये ५ हे भरतर्षभ
वह शूरवीर और अहंकारसे रहित सबो व्यास मुनिकी कृपासे
इसप्रकार परस्परमें मिलकर ६ शत्रुताको त्यागकरके मित्रता में
नियतहुये हेराजा इसप्रकारसे सब पुरुषोत्तम कौरव और अन्यर
राजालोग भी बांधवोंके समूह और पुत्रोंसे अच्छीरीति करके
मिले इसरीतिसे उनप्रसन्नचित्त राजाओंने उससब रात्रिमें बिहार
करके ७। ८ पर्म आनन्द और बिश्वासयुक्तता से उसस्थान को
स्वर्गभवनकी समानजाना हे भरतर्षभ्यायोंमें श्रेष्ठ वहां परस्पर
मिलनेवाले उन शूरवीरोंका शोकभय व्याकुलता अप्रीति और
अपकीर्त्ति यहसब नहीहुये ९ पिताआदिक भाई पति और पुत्रों
से मिलनेवाली उनस्त्रियोंने १० बड़े आनन्दको पाकर दुखको
त्यागकिया वह बीर और वह सबस्त्रियां एकरात्रि बिहारकर-
के ११ परस्पर मिलकर और एक २ कोपूछकर जैसे आयेथे उसी
प्रकार चलेगये इसके पीछे उस श्रेष्ठ मुनिने उनसब लोगोंको

विदाकिया १२ फिर वह सब महात्मा पवित्र नदी गंगाजीमें प्रवेश करके सबके देखतेहुये एक क्षणमेंही अन्तर्द्धान होगये १३ रथ ध्वजाओंसमेत अपने२ लोकोंको चलेगये कोई देवलोकको और कोई ब्रह्मलोक को चलेगये १४ कोई वरुणलोकको कोई कुबेर-लोकको और कितनेही राजाओंने यमलोक को पाया १५ कोई राक्षस और पिशाचोंके लोकको कितनेही उत्तर कौरव देशोंको गये कितनेही विचित्रगति वाले महात्मा राजा लोग देवताओं समेत जिनलोकोंको पाकर १६ सवारी और साथियों समेत आयेथे वह भी चलेगये उन सबके चलेजानेपर जलमें नियत १७ धर्मके अभ्यासी महातेजस्वी कौरवोंके हितकारी महामुनिने उन सब क्षत्रियाओं से जिनके कि स्वामीमारेगये थे यह बचन कहा १८ कि जो जो उत्तमस्त्रियां अपने पतियोंके लोकों को चाहतीहैं वह सावधान होकर शीघ्रही गंगाजल में प्रवेश करें १९ इसकेपीछे उनकेबचनको सुनकर श्रद्धामान उत्तम स्त्रियां सहुरसे पूछकर गंगाजलमें प्रवेशितहुईं २० हेराजा तब मनुष्य शरीरको त्यागकर वह पतिव्रता स्त्रियां अपने २ पतियोंसेजा मिलीं २१ इस क्रमसे मनुष्य शरीर को त्याग उनसब पतिव्रता क्षत्रियाओंने गंगाजलमें प्रवेश करके पतियोंकी सालोक्यता को पाया २२ वह इसप्रकार दिव्यरूप और दिव्य भूषणोंसे अलंकृत दिव्य माला और वैसीही पोशाक धारण करनेवाली हुईं जैसे कि उनके पतिथे २३ सुन्दर स्वभावों से युक्त थकावटसे रहित सब गुणोंसे संयुक्त बिमानों में नियत उन सब स्त्रियोंने अपने २ स्थानोंको पाया २४ उससमय पर जिसजिसकी जो २ इच्छाहुई वरदाता धर्मवत्सल व्यासजीने उसउसकी इच्छाको पूराकिया २५ नाना प्रकारके देशोंमें वर्त्तमान मनुष्य भी उनराजाओं के फिर आगमनको सुनकर प्रसन्न हुये २६ जो मनुष्य प्रियलोगों समेत इनके मिलापको अच्छेप्रकारसे सुनताहै वह इसलोक और परलोकमें सदैव अभीष्टोंको प्राप्त करताहै २७ धर्मके ज्ञाताओंमें श्रेष्ठ

जो ज्ञानी पुरुष इस कथाको सुनाता है २८ वह इस लोकमें शुभ-कीर्त्तिवान्होकर परलोकमें शुभगतिको पाताहै हे भरतवंशी वेद पाठी अथवा जपमें प्रवृत्त तपसे युक्त २९ साधुओंके आचार और इन्द्रीजित दानकेद्वारा पापोंसे मुक्त सत्यवक्ता पवित्र शान्तिहिन्सा और मिथ्या से पृथक् ३० । ३१ ईश्वर और परलोक को माननेवाले श्रद्धावान् धैर्य्यवान् यहसब लोग इसअद्भुत वृत्तान्तको सुनकर परमगतिको पावेंगे ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणित्रयस्त्रिंशोऽध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

सूतपुत्रनेकहा कि तब बुद्धिमान् राजाजनमेजय सब पितामहाओंके इसआवागमन को सुनकर प्रसन्नहुआ १ और प्रसन्नहोकर राजाने राजाओंके दुबाराआनेके विषयमें प्रश्न कियाकि शरीर त्यागनेवाले पुरुषोंका दर्शन दूसरी बार उसीरूपसे कैसेहोताहै २ इतनी बातको सुनकर वहवक्ताओंमें श्रेष्ठ ब्राह्मण व्यासके शिष्य प्रतापवान् वैशंपायनने फिरभी राजाजनमेजय को उत्तर दिया ३ हेराजा विनाभोग सब देव मनुष्यादिकजीवोंके कर्मोंका नाशनहीं है और सबशरीर और रूपउनकर्मोंसे उत्पन्नहैं ४ प्राणियोंका स्वामी जो ईश्वरहै उसकी शरणतासे द्वाद्वशामें नियत पुत्र पित्रादिक अविनाशी होतेहैं उनअविनाशी शरीरोंका संग विना भवान् शरीरोंकेसाथ संसारदशामें होताहै और जबवहअविनाशी शरीर विनाभवान् शरीरसे जुदेहोतेहैं तब उनका नाशनहींहोता५ जो निवृत्ति नाम कर्महै वह सत्य और श्रेष्ठ ऊपर लिखेहुये फल को प्राप्त करताहै और प्रवृत्ति कर्महै उनसे मिलकर आत्मासुख दुःखादिको भोगता है ६ इसप्रकार अपने स्वरूप में नियत क्षेत्रज्ञ आत्मभाव कर्मसे निश्चय करके नाशके योग्य नहीं है जैसे कि हमारे शरीरों का यह आत्मानाम प्रतिबिम्ब जीवात्मा दर्पणों को काई आदिक दशाको नहीं प्राप्तकरता है अर्थात् उसकेनाशसे

नाश नहीं होताहै इसप्रकार क्षेत्र और क्षेत्रज्ञका आत्मभाव भी जानना योग्यहै ७ जब तक शरीरका उत्पन्न करनेवाला कर्म्म भोगसे समाप्त नहींहोताहै तबतक उसमें आत्माका अध्यासहै जो मनुष्यलोक में कर्म्मों से क्षीण होताहै वह आत्मा रूप होताहै ८ अनात्मा रूप इन्द्री आदिक बहुत प्रकार इस शरीरको पाकर शरीररूप हुयेहैं जो योगी उन इन्द्रियादिकों को शरीरसे पृथक् जानतेहैं उनकी बुद्धिसे वह सब आत्मारूप होनेसे अविनाशी होते हैं ९ अश्वमेधयज्ञमें घोड़ा मारनेके विषय में यह श्रुतिहै कि उस घोड़ेके नेत्र सूर्य्य में और प्राणहवा में लय होते हैं इसीप्रकार शरीर धारियोंके वह प्राण दूसरे लोकमें भी अविनाशीहोतेहैं यह निश्चयहै १० हेराजा जो तेरा इसमें अभीष्टहै तो मैं इसतेरे सुख-दायीको कहूंगा तुमने यज्ञ रचना में वह देवयान मार्ग्ग हुने— अर्थात् ज्ञानमें तेरा अधिकार नहींहै इससे तुम उपासना के साथ कर्मको प्राप्तकरके देवयान मार्गमें आश्रयलो यह तेरे योग्यहै ११ जिस समय तुमने यज्ञकिया था उससमय देवतालोग तेरे मित्र होगये थे जब देवता संयुक्तहुये तब वह जीवोंकीलोक प्राप्तीमें ईश्वर हैं १२ इसीहेतुसे अविनाशी जीवात्मा यज्ञकरके अभीष्ट जीवनमुक्तीकोप्राप्तहोतेहैं यज्ञ न करनेवाले अन्यजीव उसगतिको नहीं पातेहैं अब डेढ़ श्लोकमें ज्ञाननिष्ठा को वर्णन करतेहैं जो पुरुष इस पंचभूतात्मक देववर्ग और आत्माके अविनाशी होने पर १३ इसजीवात्माके बहुतसे रूपांतरोंको देखताहै वह निरर्थक बुद्धिवाला है और पुत्रादि के शरीर नाशहोनेमें जो शोच करता है वह अज्ञानहै यह मेरा आशयहै १४ जो मनुष्य स्त्री आदिके वियोगमें दोष देखनेवालाहै वह उनके संयोगको त्यागकरे क्योंकि असंग आत्मामें अनात्माका योगनहींहै और बिनायोगके वियोग क्याहोगा और पृथ्वीपर प्यारे के वियोगहीसे दुख उत्पन्नहोता है १५ जिसने ज्ञाननिष्ठाको प्राप्तनहींकिया और केवल जीवईश्वर की भिन्नताका जाननेवाला होकर शरीरके अभिमानसे उपासना

के द्वारा पृथक्है वहयोगी सपुरा ब्रह्म होकर और बुद्धिसे निर्वि-शेष ज्ञानको पाकर मोह अर्थात् मिथ्या ज्ञानसे मुक्त होताहै १६ अब उसमुक्तिका लक्षण कहतेहैं जो दृष्टिदेवत शुद्धचैतन्य ब्रह्म है उससे प्रकटहुआ और फिर उसी में लयहुआ इसीहेतुसे मैं उसको नहीं जानताहूं क्योंकि वहबुद्धिरूपी और मनसेभी परेहै और वह मुझको नहीं जानताहै क्योंकि वहकारण रूपनहींहै फिरकहोकि तुम उसप्रकारके क्योंनहीं होतेहो इसका यह उत्तरहै कि मुझ को वैराग्य नहींहै अर्थात् वैराग्यही मोक्षका साधनहै १७ यह अस्व-तन्त्र जीवात्मा जिस २ शरीरसे जो २ कर्म करताहै उसउस शरीर से अवश्य उसकर्मफलको भोगता है मनके पापको मनहीसे पाता है और शरीरके पापको शरीरसेही पाताहै तात्पर्य यह है कि शरीर वाणी और चित्तकी चंचलताको त्याग करके प्राणों का निरोध करे १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्वणिचतुस्त्रिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले हे राजा जनमेजय राजा धृतराष्ट्रने पुत्रोंको चक्षु हीनता से पूर्वमें न देखकर और अब व्यासजीकी कृपा से दिव्य चक्षुके द्वारा सुन्दर रूपपुत्रोंके दर्शनको पाया १ उसनरोत्तमराजाने राजधर्म ब्रह्मउपनिषद और निश्चयात्मक बुद्धिको प्राप्तकिया २ महाज्ञानी विदुरने तपके बलसे सिद्धीको पाया और फिर धृतराष्ट्र ने तपस्वी व्यासजीको पाकर सिद्धी प्राप्तकी ३ जनमेजयने प्रश्न किया कि जो वरदाता व्यासजी मेरे पिताका भी वैसाही दर्शन करावैं जैसाकि उसकारूप भेषादिक और दशाथी वहीअबभीहोय तबमैं आपके सबबर्णनपर श्रद्धाकरूं ४ मेराअभीष्टसिद्धहोय और निश्चय करनेवाला मैं अपने मनोरथ को पाऊं इस उत्तम ऋषि की कृपासे मेराअभीष्ट मनोरथ प्राप्तहोय ५ तब सूतपुत्रने कहाकि उसराजाके इस वचनके कहनेपर — बुद्धिमान् प्रतापवान् व्यास-

जीने कृपाकरी और परीक्षित को आह्वान किया ६ फिर राजा जनमेजयने उसरूपऔर अपनी पूर्व्वदशा समेत स्वर्ग से आनेवाले श्रीमान् अपनेपिता परीक्षितको देखा ७ महात्मा शमीकऋषि और उसके पुत्र शृङ्गीऋषि को और जो राजाकेमन्त्रीलोगथे उन सबको देखा फिर उसराजाजनमेजयने यज्ञके श्रौभृतस्नानकेसमय अपने पिताकोदेखा तब बहुत प्रसन्न होकर स्नानकिया उससमय राजाने स्नान करके आस्तीक ब्राह्मण से यह वचनकहा कि हे आस्तीक यह मेरा यज्ञ नानाप्रकार का रखनेवालाहै यहमेरामत है ८। ९। १० इसहेतुसे कि जो मेरे शोकका मूल रूप यह पिता यहांआयाहै आस्तीकने कहा हे कौरवोत्तम जिसयज्ञमें यहतपके भंडाररूप प्राचीन ऋषि व्यासजी हैं उस यज्ञ करनेवालेके दोनों लोकबिजयहैं ११ हे पांडवनंदन तुमने बिचित्र कथासुनी सर्प भस्म किये और पिता की पदवी को प्राप्त किया १२ हे राजा तेरी सत्यता से किसी प्रकार करके तक्षक सर्प बचा सब ऋषि पूजन कियेगये और पिताका भी दर्शनकिया १३ इसपापनाशक इतिहासकोसुनकर बहुत बड़ा धर्मप्राप्तकिया और बड़ेलोगोंकेदर्शनसे हृदयकी गांठखुलगई १४ जो धर्ममें पक्ष नियतकरनेवालेहैं और श्रेष्ठ चलन में प्रीति करनेवालेहैं जिनको कि देखकर पाप दूर होताहै उनके अर्थनमस्कार करनाचाहिये १५ सूतपुत्रने कहा कि राजा जनमेजयने उस उत्तम ब्राह्मण से यह सब सुनकर बारंबार सत्कार पूर्वक उस ऋषिका पूजन किया १६ हेबड़े साधू उसधर्मज्ञ राजाने बनवासकी शेषबची हुई कथा उस धर्म्म से च्युत न होनेवाले वैशंपायन ऋषिसे पूछी १७॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणि पंचत्रिंशोऽध्यायः ३५॥

छत्तीसवां अध्याय॥

जनमेजयनेपूछा कि राजा धृतराष्ट्र और राजा युधिष्ठिरने पुत्र पौत्रोंको उनके साथियों समेत देखकर क्या किया १ वैशम्पायन

बोले कि वह राजऋषि राजा धृतराष्ट्र पुत्रोंका अपूर्वदर्शनकरके शोकसे निवृत्तहोकर फिर आश्रममें आया २ और अन्य सब लोग और वह महर्षी धृतराष्ट्र से पूछकर इच्छाके अनुसार चले गये ३ फिर महात्मा पाण्डव जिनके कि साथमें बहुतथोड़े सेना के मनुष्यथे स्त्रियों समेत उस महात्मा राजाके पासगये ४ लोक पूजित बुद्धिमान् ब्रह्मऋषि व्यासजीने उस आश्रमके स्थानमें वर्त्तमान धृतराष्ट्र से यह वचन कहा ५ कि हे महाबाहु कौरवनन्दन धृतराष्ट्र तुमने उन ऋषियोंके मुनते नानाप्रकारकी कथाओंको सुना जोकि ज्ञानमें वृद्ध पवित्रकर्मी महावृद्ध कुलके प्राचीन और वेदान्त धर्म्मके ज्ञाताहैं ६। ७ तुम शोकमें चित्त मतकरो क्योंकि बुद्धिमान् लोग होनहारमें दुखी नहीं होतेहैं तुमने देवताके समान दर्शन रखने वाले नारदजीसे देवताओंके गुप्त वृत्तान्त सुने ८ जो कि शस्त्रोंसे पवित्र होगये थे इस निमित्त उन्होंने क्षत्री धर्मसेउस शुभगतिकोपाया तुमने अपने पुत्र जिसप्रकारकेदेखे वह सब उसी प्रकारसे इच्छानुसार विहार करने वालेहैं ९ यहबुद्धिमान्युधिष्ठिर सब भाई स्त्री और सुहृदजनों समेत आपकी सेवामें बर्त्तमानहै १० इसको बिदा करो और यह जाकर अपने राज्यसास नादिक कर्म करे इनलोगोंको बनमें रहतेहुये कुछ ऊपर एक महीना व्यतीत हुआ ११ हे कौरवकुलके उद्धार करनेवाले राजा धृतराष्ट्र यह राज्यपद बहुत शत्रु रखनेवालाहोकर सदैवउपायोंसे रक्षाकरनेके योग्यहै १२ बड़े तेजस्वी व्यासजी से इसप्रकार समझायेहुये बड़े वक्ता राजा धृतराष्ट्र ने युधिष्ठिरको बुलाकर यहबचन कहा १३ हे अजातशत्रु तेराकल्याण होय तुम सब भाइयों समेत मेरे बचन को सुनों हे राजातेरी कृपासे शोकहमको पीड़ा नहीं देताहै १४ हे ज्ञानीपुत्र तुझ प्रियकर्मी नायके साथहोकर इसप्रकार रमताहूं जैसे कि हस्तिनापुरमें रमताथा १५ तुझसेही पुत्रभावके फलको पाया तुझमें मेरी बड़ी प्रीति है हे महाबाहु मेरा क्रोध नहींहै हे पुत्रजाओ अबविलम्ब न करो १६ यहां आपलोगोंको देखकर मेरे

तपकी हानिहोती है क्योंकि मैंने तुझतपसे संयुक्त को देखकर बिप्रवासकोप्राप्तकिया १७ इसीप्रकार यहतेरीदोनोंमातासूखेपत्तों को खाकर मेरे समान व्रत करनेवालीहैं हे पुत्र यह दोनोंबहुत कालतक नहीं जीवेंगी १८ मैंने व्यासजीके तपोबल और तुम्हारे मिलाप से दूसरे लोकमें वर्त्तमान दुर्योधनादिक पुत्र भी देखे १९ हे निष्पाप मेरे जीवन का प्रयोजन प्राप्तहुआ अब मैं उग्र तपमें अच्छीरीतिसे नियतहूंगा तुम मुझको आज्ञादेने को योग्यहो २० अब पिण्डकीर्त्ति और यह वंशतुझसे नियतहै हे वीर बेटा अब जावो अथवा प्रातःकाल जावो विलम्बन करो २१ हे भरतर्षभ तुमनेबहुतसी राजनीतिसुनीहै इससेमैं उपदेशके योग्यनहींदेखता हूं हे समर्थ तुमने मेरीबड़ी सेवाकी २२ वैशंपायन बोले कि राजा धृतराष्ट्र के इसवचनको सुनकर युधिष्ठिरने कहाकि हेधर्मज्ञआप मुझनिरपराधीके त्यागनेको योग्यनहींहो २३ हे सावधानब्रतचाहे मेरे भाइयोंसमेत सबसाथी चलेजायँमैं आपके और अपनी दोनों माताओंके साथरहूंगा २४ फिरगान्धारीने उससे कहाकिहे बेटा इसप्रकार मतकरो सुनोयह कौरव कुल और मेरे ससुरकापिण्ड तेरे आधीनहै २५ हे बेटाजावो इतनाही बहुतहै हम तुमसेपूजित हुये हे बेटा राजाने जो तुमसे कहावह पिताकी आज्ञाभी तुमको करनी चाहिये २६ वैशंपायन बोलेकि गान्धारीसे इसप्रकार कहे हुये युधिष्ठिर ने प्रीतिके जलोंसे पूर्णदोनों नेत्रोंको पोंछकररोती हुई कुन्तीसे यहकहा २७ किराजा धृतराष्ट्रऔर यशवन्तीगांधारी मुझको बिदाकरतेहैं आपमें चित्त लगानेवाला महादुःखीमैं कैसे जाऊंगा २८ हे धर्मचारिणीमैं तेरेतपके बिघ्न करनेमें प्रवृत्तनहीं हूं क्योंकि तपसे बढ़कर कोई बातनहींहै तपसेही मोक्षको पाता है २९ हे माता पूर्वकेसमान अबमेरी बुद्धिभी राज्यमें प्रवृत्त नहीं है और मेराचित्तभी तपमें प्रवृत्तहै ३० हेकल्याणी पूर्वकेराजाओं से रहित यह संपूर्ण पृथ्वीमेरे आनन्दकी देनेवाली नहींहै हमारे बान्धवनाशहुये हमाराबलपराक्रम पूर्वकेसमाननहींहै३१ पांचाल-

देशी अत्यन्त नाशयुक्त हुये कथामात्र बाकीहै हे कल्याणी उनके वंशकाचलानेवाला किसीकोनहीं देखताहूं ३२ वहसबयुद्धभूमिमें द्रोणाचार्यसेभस्मकियेगये और शेषबचेहुये रात्रिकेसमयअश्वत्थामाकेहाथसे मारेगये ३३ चंदेरीदेशी और मत्स्यदेशी भी मारेगये हमनेजिनको प्रथमनेत्रोंसेदेखा उनमेंसे केवलयादवोंका समूहवासुदेवजीकेबांधवभाईहोनेसे शेषबचाहुआहै ३४ आपकोदेखकर धर्म के निमित्त नियतहोना चाहताहूं राज्यकेनिमित्त नियतनहींहुआ चाहताहूं हमसबकोतुम कल्याणकारी नेत्रोंसेदेखो हमलोगोंको आपकादर्शनबड़ादुःप्राप्यहै ३५ राजाधृतराष्ट्रसहाअसह्यउग्रतपको प्रारंभकरेंगे उसबातकोसुनकर सेनाके बीरोंके प्रधान बीरसहदेव ने ३६ अश्रुओंसे व्याकुलनेत्र होकर युधिष्ठिरसे यह बचनकहा कि हेभरतर्षभ मैं माताओंके त्यागमें उत्साह नहीं करताहूं ३७ हेप्रभु आपशीघ्र जाइयेमैं तपको करूंगा मैं यहांही तपसे अपने शरीर को शुष्क करूंगा ३८ राजाधृतराष्ट्र और इनदोनों माताओं की चरणसेवामें प्रवृत्तरहूंगा फिरकुन्तीने उसबीरसहदेवसेमिलकर यह बचनकहा हे पुत्रजावो ऐसामतकहो तुममेरी आज्ञाकोकरो ३९ हे बेटातुम्हारे आगम कल्याणरूपहोंतुमस्थिरचित्तहो ४० तुम्हारे यहां इसप्रकार निवास करनेसे हमारे तपकी बड़ीरोक होगीतेरी स्नेहफांसीमें फंसकर मेराउत्तमतप नाशहो जायगा ४१ हे समर्थ पुत्र इसीहेतुसे तुमजावो हमारी आयुर्दाथोड़ीहीबाकीहै हे राजेन्द्र इसप्रकारके कुन्तीके अनेक प्रकारके बचनोंसे ४२ सहदेव और मुख्यकरराजा युधिष्ठिरका चित्तस्थिर हुआ फिर राजाधृतराष्ट्र और उनमाताओंसे आज्ञालेकर उनपांडवोंने४३ धृतराष्ट्रकोदण्डवतकरके पूछना प्रारंभकिया युधिष्ठिर ने कहा हे राजा आपके आशीर्वाद युक्त होकर हम राजधानी को जायँगे तुमसे आज्ञप्त पापों से रहित होकर हम जायँगे ४४ महात्मा राजासे कहे हुये उसराजऋषि धृतराष्ट्रने कौरव युधिष्ठिरको प्रसन्न करके आज्ञा दी ४५ राजा ने उस बलवानों में श्रेष्ठ भीमसेनको बिश्वासित

किया और उसबुद्धिमान् पराक्रमीनेभी उनको अच्छेप्रकारदण्ड-वत करी ४६ उस कौरव धृतराष्ट्र ने अर्जुन समेत नकुल सहदेवसे भी मिलकर बहुत प्रसन्न करके उनको आज्ञादी ४७ गान्धारीसे आज्ञप्त और चरणोंको दण्डवतकरनेवाले मातासे सूंघेहुयेमस्तक उनपांडवोंनेराजाधृतराष्ट्र की परिक्रमाकरी ४८ जैसेकिस्तन्यपान से रोकनेमें बछडे होतेहैं उसीप्रकार बारंबार देखते हुये उनसबने परिक्रमा करी ४९ फिर द्रौपदी आदिक सब कौरवीय स्त्रियां न्यायसेससुरमें भक्तिको नियतकरके सासको प्रणाम करकेचलीं दोनोंसासोंसे आज्ञप्त और मिलकर आशीर्वादोंको लेकर बहुत शिक्षाओंको पाकर वह द्रौपदी आदिक अपने पतियोंके साथ चलीं ५०।५१ फिर रथजोडनेवाले सूत व कारतेऊंट और हींसते हुये घोडोंकेभी शब्द प्रकटहुये ५२ फिर राजायुधिष्ठिर स्त्री सेना के लोग और बांधवों समेत वहांसे हस्तिनापुर नगरमें आया ५३

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिषड्त्रिंशोऽध्यायः ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले हे राजा हस्तिनापुर नगरमें पांडवोंके दोवर्ष व्यतीत होनेपर देवऋषि नारदजी राजायुधिष्ठिरके पास आये १ वक्ताओंमें श्रेष्ठकौरव राज वीरयुधिष्ठिरने उनको पूजकर फिर उस आसनपर बैठेहुये विश्वस्थ मुनिसे यह बचनकहा २ कि मैं सन्मुख नियत होनेवाले आपभगवान्को बहुतकालसे नहींदेखता हूं हे वेदपाठी क्या आपका कल्याणहै अथवा कल्याण सन्मुख हुआहै ३ कौन देशतुमने देखेहैं आपको जो आज्ञाहोय उसको मैं करूं हेश्रेष्ठ ब्राह्मण आप हमारी परमगतिहो इससे वर्णनकी जिये ४ नारदजीबोले हेराजा मैंने तुमको बहुत दिनमें देखाहैमें तपोवनसे आयाहूं मैंने गंगाजी समेत बहुतसे तीर्थ देखे ५ युधि-ष्ठिर बोले कि अब गंगाके तटपर रहनेवाले मनुष्य मुझसे कहते हैं कि महात्मा धृतराष्ट्र बड़े तप में नियतहैं ६ वहाँ वह धृतराष्ट्र

गान्धारी कुन्ती और सूतसंजयको आपने देखा होगा वहसब बहुत प्रसन्नहैं ७ हे भगवन् अब वह मेरेताऊ राजाधृतराष्ट्र कैसेप्रकारसेहैं इसकोमैं सुनना चाहताहूं जोआपने उस राजाको देखाहै तोउसकी कुशलक्षेम बर्णन कीजिये ८ नारदजीबोले हे महाराज तुम स्थिर चित्तहोकर उस वृत्तांतको सुनो जैसाकि मैंने तपोबन में देखा और सुनाहै ९ हे कौरवनन्दन राजायुधिष्ठिर बनबाससे आपके लौट आनेपर तेराताऊ धृतराष्ट्र कुरुक्षेत्रसे हरद्वारको गया १० वह बुद्धिमान धृतराष्ट्र गांधारी वधकुन्ती सूतसंजयऔर याजक ब्राह्मणों समेत अग्निहोत्रसे युक्त हरद्वार में पहुंचा ११ वह तपोधन रखनेवाला तेराताऊ कठिनतपस्यामें नियत मुखमें वीटा अर्थात बीड़ाको रखकर वायुभक्षी मुनि हुआहै १२ बनमें सबमुनियोंसे पूजित महातपस्वी वह धृतराष्ट्र जिसके शरीरमेंअस्थिचर्मही बाकीथे छःमहीनेतक ब्रतकरनेवाला हुआ १३ हे भरतवंशी वह गांधारी केवल जलका आहार करनेवाली और कुंती एकमहीने पीछे भोजन करनेवाली होगई है और संजयने छठवें दिनभोजन करनेसे अपने समयको व्यतीत किया १४ हे प्रभु याजकब्राह्मणोंने उस बनमें राजा के समक्षऔर परोक्षमें विधिपूर्वक अग्निमें हवनकिया १५ फिरवहराजास्थानसे रहित होकर बनचारी हुआ वह दोनोंदेवी और संजयभी उसके पीछे हुये १६ हेराजावह संजय समभूमि वा असमभूमिमेंराजाका मार्ग दर्शक और निर्दोष कुन्ती उस गांधारीकी मार्गदर्शक हुईहै १७ फिरकभी वह बड़ासाधू बुद्धिमान राजा धृतराष्ट्रकुछ गंगाकेपास गंगाजीमें स्नानकरके आश्रमकी ओरचला १८ वायु प्रकट हुई और दावानल नाम प्रचंड अग्निउत्पन्नहुई उसनेचारोंओरसे उस सबबनको घेरकरके भस्म करदिया १९ चारोंओर मृगोंके झुंड और सर्पोंके भस्म होने और तड़ागादिकोंमें शूकरोंके आश्रित होने २० उस बनके जलजाने और महादुःखके वर्त्तमान होनेसे आहार न करनेसेनिर्बल और चेष्टासे रहित २१वहराजा धृतराष्ट्र

और अत्यन्त दुर्बल वह आपकी दोनोंमाता वहां से हटजाने को समर्थ नहींहुईं फिर उस विजय करनेवालोंमें श्रेष्ठ राजाधृतराष्ट्रने समीपआनेवाली अग्निको ज्ञानसे जानकर २२ सूत संजयसे यह वचन कहा कि हेसंजय तुम वहांही लेजावो जहांपर कि तुमको अग्निनहीं भस्म करसके २३ यहां अग्निसे संयुक्तहोकर हमसब परमगतिको पावेंगे तबवक्ताओंमें श्रेष्ठ महाव्याकुल संजयने उस राजासेकहाकि २४ हेराजावृथाअग्निसे भस्महोकर यहआपकी मृत्यु अप्रिय होगी और अग्निसे बचने का भी कोई उपाय नहीं देखताहूं २५ अब यहां जो करनेके योग्य करना उचितहै उसके करनेमें विलम्बनकरनाचाहिये संजयसे इसबचनकोसुनकर राजा ने फिर यहबचनकहा कि अपने आप घरसे निकलनेवाले हमसब की यह मृत्यु अनुपकारी नहींहै जल,अग्नि,वायु,और अनसन-व्रत २६।२७ यहसब कर्म तपस्वीलोगोंके प्रशंसनीय होतेहैं हे संजय जावो देरनकरो तब राजाधृतराष्ट्र संजयसे यहकहकर औरचित्त को समाधीमें नियत करके २८ गान्धारी और कुन्तीसमेत पूर्वा-भिमुखहोकर बैठगया फिर उसको उसप्रकार देखकर परिक्रमा कर २९ बुद्धिमान् संजयने उससेकहा हे प्रभुआत्माको परमात्मा में लय करो उस बुद्धिमान् ऋषि के पुत्र राजाने उसके उस वचनको किया ३० तब इन्द्री समूहोंको रोककर काष्ठके समान हुआ और महाभागगांधारी और आपकी माताकुन्ती ३१ और आपका ताऊ राजा धृतराष्ट्र यह तीनों दावानल नाम अग्नि में संयुक्तहुये और सूत संजय उस दावानलसे पृथक् होगया ३२ मैंने गंगा तटपर उससंजयको तपस्वियोंमें बैठाहुआदेखा वहबुद्धिमान् तेजस्वी संजय यह सब वृत्तांत वर्णन करके और उनऋषियोंसे पूछकर ३३ हिमालय पर्वतको गया हे राजा इसप्रकार उस बड़े साहसी कौरवराज धृतराष्ट्र ३४ और तेरी दोनों माता गांधारी और कुन्तीने मृत्युको पाया हे भरतवंशी दैवइच्छासे जलतेहुये मैंने राजाकाशरीर ३५ और उनदोनोंदेवियोंके शरीरदेखे फिर

तपोवन ऋषि राजाधृतराष्ट्रकी उसमृत्युको सुनकर उसतपोवनमें आये उन्होंने उनकी गतियोंका शोच नहीं किया हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर वहां मैंने यहसब वृत्तांतसुनाहै३६। ३७ कि इसप्रकारसे राजा धृतराष्ट्र और वह दोनों देवी जलकर भस्म होगई हेराजा शोचन करनाचाहिये उसराजा ने ३८ और गांधारी समेत तेरी माता कुन्तीने अपने आपहीअग्निसंयोगको पाया वैशंपायनबोले कि धृतराष्ट्रके इस स्वर्गयात्राकोसुनकर उन सबमहात्मा पांडवों को बड़ाशोक उत्पन्न हुआ ३९ हेमहाराज तब राजाकी इसगति को सुनकर स्त्रियोंके और पुरवासियोंकेबड़े दुःखकेशब्द उत्पन्न हुये ४० हायधिक्कार है हमको इसप्रकार पुकारकर अत्यन्त दुःखी और ऊंचीभुजारखनेवाला राजायुधिष्ठिर माताकोस्मरण करताहुआ रोदन करनेलगा ४१ और भीमसेनादिक सबभाई भी रोनेलगे हे महाराज तब उसदशावाली कुन्तीकोसुनकर स्त्रियोंके महलोंमें बड़ेरोनेकेशब्दहुये उनसबने इसप्रकार भस्महोनेवालेउस वृद्धराजाको जिसके कि पुत्र मारेगयेथे ४२। ४३ और यशवन्ती गांधारीको शोचा हे भरतवंशी एक मुहूर्त्तमेंही उस शब्दके फिर होनेपर ४४ धर्मराजने धैर्य से नेत्रोंके आंसुओंको रोककर यह वचनकहा ४५॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमवासकेपर्व्वणिसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७॥

अड़तीसवां अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले हे ब्राह्मण हम बांधवलोगोंके नियतहोते वन मेंउस घोरतपमें नियत महात्मा धृतराष्ट्र की अनाथके समान इस प्रकार मृत्युहोनेपर १ ज्ञातहोताहै किपुरुषोंकी गति बड़ीकठिन-तासे जानीजातीहै यहमेरामतहै जिस स्थानपर यह राजाधृतराष्ट्र उसवनकी अग्निसे भस्महुआ २ जिस बाहुशालीकेसौपुत्र श्रीमान् थे वह साठहज़ार हाथीके समान पराक्रमी राजावनकी अग्निसे भस्महोगया ३ पूर्व्वसमयमें उत्तम स्त्रियों ने तालव्रतनाम पंखोंसे

जिसकी हवाकरी अब दावानलसे घिरेहुये उसराजाकी वायुगृद्ध पक्षिओं ने करी ४ जो शयनस्थान से सूत और मागधों के द्वारा जगायाजाताथा वह राजा मुझपापीके कर्म्मोंसे पृथ्वीपर शयन करताहै ५ इसप्रकार पतिव्रतमें नियत पतिलोकमें वर्त्तमान यशवन्ती असंतान गांधारीको नहींशोचताहूं ६ कुन्तीकोही शोचता हूं जिसने कि पुत्रोंके बड़े प्रकाशमान और वृद्धियुक्त ऐश्वर्य्यको छोड़कर वनवासको स्वीकार किया ७ हमारे इस राज्यको बल पराक्रमको औरक्षत्री धर्मकोधिक्कारहै जिसके कारण हममृतक रूपहोकर जीवते हैं ८ हे ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ तम नारदजी निश्चय करके कालकीबड़ीसूक्ष्मगतिहै जो उसकुन्तीने राज्यकोत्यागकर वनबासको अंगीकार किया ९ युधिष्ठिर भीमसेन और अर्जुन कीमाता होकर कैसे अनाथके समान अग्निमें भस्महुई मैंइसको शोचताहुआ अचेतहुआ जाताहूं १० खांडव वनमें अर्जुनसेअग्नि देवता निरर्थक तृप्त कियागया वहउस उपकारको नजानता कृतघ्नीहै यहमेरामतहै ११ जिस स्थानपर उसभगवान् अग्निदेवताने अर्जुनकी माताको भस्मकिया जो कि कपटरूप ब्राह्मणहोकर भिक्षाका अभिलाषी होकर सन्मुख आया १२ अग्निको धिक्कार है और अर्जुनकी प्रसिद्ध सत्य संकल्पताको धिक्कारहै हे भगवन् यहदूसरा बड़ादुःख मुझको दिखाईपड़ताहै १३ जोकि उसतपस्वी राजऋषि कौरव राजा धृतराष्ट्र का संयोग वृथा अग्निसे हुआ है १४ इस पृथ्वीपर राज्यकरके महावनमें मन्त्रोंसे पवित्रउसकी अग्नियोंके वर्त्तमान होनेपर इसप्रकारकी मृत्यु कैसेहुई १५ वृथा अग्निसे युक्त होकर मेरे पिताने मृत्यु को पाया मैं मानताहूं कि हड्डियोंकी माला महा दुर्बल कुन्ती १६ बड़े भयके समय अवश्य यह पुकारी होगी कि हाय बेटाधर्मराज और भयसे इस प्रकार पुकारती भस्महुई कि हाय बेटा भीमसेन रक्षाकरो १७ मेरीमाता चारोंओरसे दावानलनाम अग्निसे घिरीहुई सहदेवउसको सबपुत्रों से अधिकतर प्यारा था १८ उस वीर सहदेवने भी उसको नहीं

निकासा इस बचनको सुनकर पांचो भाई परस्पर मिलकर ऐसे रोदनकरनेलगे १९ जैसे कि प्रलयकेसमय जीवधारी रुदन करते हैं उनरोनेवाले पुरुषोत्तमोंके शब्दमहलकी रानी आदिक स्त्रियों केरुदनसेवृद्धियुक्तहोकरपृथ्वी और आकाशमेंव्याप्तहोगये २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेआश्रमबासकेपर्व्वणिअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उन्तालीसवां अध्याय ॥

नारदजी बोले हे भरतवंशी यह राजा धृतराष्ट्र वृथा अग्निसे नहींभस्महुआ वहां मैंने जैसासुनाहै उसको मैं तुमसे कहताहूं १ इष्टी यज्ञकरके बनमें प्रवेशकरते उस बायुभक्षी बुद्धिमान्ने अग्नियोंका त्याग किया यह हमने सुनाहै २ हे भरतर्षभ फिर उसके याजक लोग बनमें अग्नियोंको छोड़कर इच्छानुसार चलेगये ३ निश्चयकरके वही अग्नि बनमें वृद्धियुक्त होगये और उस बनको उसने प्रज्वलितकिया ऐसा वहांके तपस्वियों ने कहा ४ हेभरत श्रेष्ठ वह राजाधृतराष्ट्र गंगाके सूखेबनमें आपही उस अग्निसेसंयुक्त हुआहै जैसेकि मैंने तुझसे कहाहै ५ हेनिष्पाप राजायुधिष्ठिर इस प्रकारसे उन मुनियोंने मुझसे कहाथा जिनको कि मैंने गंगा तट पर देखाथा ६ हेराजा इस प्रकारसे वह राजा अपनीही अग्निसे संयुक्त होगयाहै तुम उस राजाको मत शोचो उसने परम गतिको पायाहै ७ हेराजातेरी माताने गुरुकीसेवासे निस्सन्देह बड़ीसिद्धी को प्राप्तकिया ८ हेराजेन्द्र तुमसब भाइयों समेत उनकी जलदान क्रिया करनेको योग्यहो आपउसको अवश्य कीजिये ९ वैशंपायन बोले कि इसके अनन्तर पांडवोंका धुरन्धर नरोत्तम राजा युधिष्ठिर अपने सगेभाई और स्त्रियोंको साथलेकरचला १० एक वस्त्रसे युक्त शरीरवाले राजा भक्तपुरवासी और देशवासी गंगा जीके सन्मुख चले ११ फिर उन सब नरोत्तमों ने युयुत्सको आगे करके जलमें स्नानकर उस महात्माकेनिमित्त जलदानकिया १२ वहां वह नरोत्तम बिधि पूर्वक नाम और गोत्रसे गान्धारी और

कुन्तीके शौचकर्मको करतेहुये नगरसे बाहर निवासीहुये १३ उस नरोत्तमने विधिज्ञ सत्यकर्मी ब्राह्मणोंको हरद्वारकोभेजा जहांपर कि वह राजा भस्म हुआथा १४ तब राजा युधिष्ठिरने उन मनुष्यों को जिनकोकि देनेकेयोग्य सामानदेदियाथा आज्ञादीकि हरद्वार में उन्होंका क्रियाकर्म करना चाहिये बारहवेंदिन उसशौच प्राप्त करनेवाले राजा युधिष्ठिरने विधिपूर्वक उन धृतराष्ट्र आदिकोंके निमित्त ऐसेश्राद्धकिये जोकि दक्षिणासे संयुक्तथे१५।१६उस राजा नेधृतराष्ट्रके नामसे सुवर्ण चांदी गौ और बहुमूल्यवाली वस्तुओं कादानकिया १७ तेजस्वी राजाने गान्धारी और कुन्तीका नाम लेकर पृथक् २ बहुतसे उत्तम दानदिये १८ जो मनुष्य जो २ वस्तु जितनी चाहताथा उतनीही वह पाताथा शय्या भोजनमणि रत्न धन १९ सवारी वस्त्र भोग और अच्छी अलंकृत दासियां यहसब राजाने दोनों माताओंका नामलेकर दानकिया २० फिर वह राजायुधिष्ठिर बहुतसे दान देकर हस्तिनापुर नगरमें आया २१ वहमनुष्य भी जो राजाकी आज्ञासे हरद्वारकोगयेथे वह उन्हेंाके हाड़ों को इकट्ठा करके फिर गंगाजीपर आये २२ वहां आकर उन्हेंाने नानाप्रकारकीमाला और सुगन्धित वस्तुओंसे उनकेहा-ड़ोंका पूजनकर गंगामें पधराके राजासे आकर निवेदनकिया हे राजा देवऋषिनारदजीभी उसधर्मात्मा राजायुधिष्ठिरको विश्वास देकर अपने इष्ट स्थान को गये २३। २४ इसप्रकारबुद्धिमान धृत-राष्ट्रके पंद्रहवर्ष नगरमें और तीन वर्ष बनवासमें व्यतीतहुये २५ जिसकेपुत्र युद्धमेंमारेगये और जो सदैव अपने बिरादरी और सब नातेदारादिकोंके दानोंकोदेताथा २६ और जिसके ज्ञातिकेलोगों समेत बांधवमारेगये और जो अत्यन्तप्रसन्न चित्तनथा उसराजा युधिष्ठिरने राज्यका सब कार्यकिया २७ सावधान मनुष्यआश्रम वासपर्वके अन्तमेंभी ब्राह्मणोंको उत्तम भोजन करावे २८॥

महाभारतेशतसाहस्त्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांआश्रमबासकेपर्वणिएकोनचत्वारिंशोध्यायः

इति आश्रमबासपर्व्व समाप्तम्॥

श्रीगणेशाय नमः

महाभारतभाषा

मूसलपर्व

—०—

जिसमें

राजायुधिष्ठिरका दुःस्वप्नदेखना और अन्धक वृष्णियोंका परिवार सहित प्रभासक्षेत्रमें जाकर नाशहोना, श्रीकृष्णजी का बभ्रुको मराहुआदेख बलदेवजीसे कहके निजस्त्रियोंको पिताको सौंपकर बनमें देह त्यागकरना, अर्ज्जुनका बसुदेवजीसे द्वारकाडूबनेका वृत्तान्त कहना और बसुदेवजीका पुत्रादिकों का शोचकर देहत्याग, अर्ज्जुन का सबस्त्रियोंकोलेकर हस्तिनापुरमें पहुंचकर व्यासजीसे सम्पूर्ण हाल वर्णन करना इत्यादि कथा वर्णित हैं॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी (सी, आई, ई) ने अपनेव्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरेश्लोक श्लोकका भाषानुवाद कराया॥

—०—

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेखाने में छपा

जनवरी सन् १८८९ ई०

पहलीवार ६००

अथ महाभारत भाषा मूसलपर्व्व का सूचीपत्र प्रारम्भः ॥

इति मूसलपर्व भाषाका सूचीपत्र समाप्तम्

महाभारतभाषा मूसल पर्व्व ॥

—※—

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वारागमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रबिम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंवन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ कथानुगंमूसलपर्व्वभाषानुवादंविद धातिसम्यक् ५ ॥

अथ मूसलपर्व्व प्रारम्भः ॥

श्रीनारायण संयुक्त नरोत्तमों में भी उत्तमनर और सरस्वती देवीको नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहास को वर्णनकरता हूं १ आदिके पर्व्वोंमें जो धर्म अर्थ काममोक्ष वर्णनकिये उनमें से सभापर्व्व और बनपर्व्वमें यज्ञसत्यता धैर्य्य गुरुसेवन तीर्थसेवन आदिक सिद्धकिये विराट आदिक आठ पर्व्व में सेवा और नीतियोंका वर्णनकिया और हिंसा मिथ्या और कुलकेविनाश से जो प्रयोजन सिद्ध होताहै उसका हेतु शोक का होनाभी सिद्ध किया बारहवें तेरहवें और चौदहवें पर्व्वमें मोक्षके हेतु रूपदान

विद्या और वनवासादिक वर्णन करके पन्द्रहवें पर्व्वमें वनवासका फलवर्णन किया अब सोलहवें पर्व्वमें केवल संसारी सुखऐश्वर्य्यों में प्रवृत्त मनुष्य मद्यादिकपानसे उन्मत्त होकर परस्पर युद्धकरके नाशहुये सत्रहवें पर्व में अनिच्छा धर्म केफलऔर गृहके त्याग को वर्णनकरेंगे अठारहवेंपर्व्व में परिणामफल स्वर्गको वर्णनकरेंगे—

वैशंपायनबोले कि इसके पीछेछत्तीसवांवर्ष वर्त्तमान होनेपर कौरवनन्दन युधिष्ठिरने विपरीत शकुनों को देखा १ अर्थात् परस्पर युद्धकरनेवाली कंकड़ बरसानेवाली वायु चली उनपक्षियोंने जिनका वामओर को आना शुभ होताहै दाहिने मंडलकिये २ महानदियां उल्टीचलने लगींदिशाकुहरसे आच्छादित हुईं और अंगारों की वर्षाकरनेवाली उल्काआकाशसे पृथ्वीपरगिरीं ३ हे राजा धूल आंधी से सूर्य्य गुप्तमंडलवाला होगया और सदैव राहु केउदय और केतुग्रहोंसे आकाश शोभासेरहितहुआ ४सूर्य्य और चन्द्रमाके वहमंडलभयकारी दिखाईदेते थे जोकिकाले रूखेभस्म रंग और लालवर्णके थे ५ हे राजेन्द्र भयकारी चित्तके सन्देहोंके उत्पन्नकरनेवालेऐसे २ अनेक उत्पात दिखाई देतेथे ६ कुछकाल केपीछे कौरवराज युधिष्ठिरने मूसलसे प्रकटहोनेवाला वृष्णियों कामरणकानोंसेसुना ७ पांडवधर्मराजने वासुदेवजी और बलदेवजीकोउसविनाश से छुटाहुआ सुनकर भाइयोंको बुलाकर कहा कि क्या करनाचाहिये ८ वह सब पांडवपरस्पर मिलकर ब्राह्मणों केशापसे नाश होनेवाले वृष्णियोंको सुनकर पीडामान हुये उन वीरोंनेउस शार्ङ्ग धनुषधारी वासुदेवजी का मरना जो कि समुद्रके सूखजानेके समान असंभव था विश्वासनहीं किया९।१०वहपांडव मूसलसे होनेवाले नाश को चित्तमें नियत करके शोक दुःख से युक्त महाव्याकुलता पूर्वक हतसंकल्प होकर बैठगये ११ जनमेजयने पूछा हे भगवन् वासुदेवजी के प्रत्यक्षवर्त्ती वह अन्धक और भोजवंशी महारथी वृष्णियों समेत कैसे नाशको प्राप्त हुये १२ वैशम्पायन बोले कि छत्तीसवें वर्ष में वृष्णियों की बड़ी

अतीत हुई कालसे प्रेरित उनलोगोंने मुसलों से परस्परमें एकने एकको मारा १३ जनमेजयने पूछा कि किसके घोर शाप से उन वृष्णी अन्धक और भोजवंशी वीरोंने विनाशको पाया हे श्रेष्ठ ब्राह्मण इसको ब्योरे समेत मुझसे कहो १४ वैशंपायन बोले कि सारण आदिक वीरोंने द्वारकामें आनेवाले तपोधन विश्वामित्र, कण्व और नारदजी को देखा १५ दैवदण्ड से पीड़ामान उन कुमारोंने साम्बको स्त्रीके समान अलंकृत कर सबके अग्रभाग में करके ऋषियों के पास जाकर कहा १६ कि हे ऋषियो सन्तान की इच्छा रखनेवाली बड़े तेजस्वी बभ्रु की यह स्त्रीहै इसको आपलोग अच्छी रीतिसे जानों कि यह क्या उत्पन्न करेगी १७ हे राजा इसप्रकार के वचनों को सुनकर छलसे निरादर किये हुये उन मुनियोंने क्रोध करके जो उत्तरदिया उसको सुनो १८ अर्थात् उन्होंने कहा कि यह वासुदेवजी का पुत्र साम्ब वृष्णी और अन्धकोंके नाशके निमित्त बड़े भयकारी लोहेके मुसलको उत्पन्न करेगा १९ जिस मूसलसे अत्यन्त दुराचारी निर्दयी और अहंकारी तुमलोग श्रीकृष्ण और बलदेवजी के सिवाय संपूर्ण कुलभर को नाशकरोगे २० श्रीमान बलदेवजी शरीर को त्याग करके समुद्र को जायँगे और जरानाम बहेलिया पृथ्वीपर बैठे हुये महात्मा श्रीकृष्णको घायल करेगा २१ अर्थात् हे राजा उन दुराचारी दुष्टों से अपमान युक्त क्रोधसे रक्तनेत्र मुनियोंने परस्पर विचारकर यहशापदिया फिर उनमुनियोंने ऐसाकहकर चित्तसे केशवजीको स्मरण किया अर्थात् चित्तसे यह प्रार्थनाकरी कि हमने शापदिया है इसको आपक्षमा करें २२ कुलके नाश के ज्ञाता बुद्धिमान् मधुसूदन श्रीकृष्णजी ने सुनतेही उन वृष्णियों से यह कहा कि यह ऐसेही होनाथा २३ तब जगत् के स्वामी हृषीकेश श्रीकृष्णजी इसप्रकार कहकर अपने नगरमें गये और उस भावी मरण को विपरीत नहीं करनाचाहा २४ फिर प्रातःकाल के समय साम्बने उस मूसल को उत्पन्न किया जिससे

कि वृष्णी और अन्धक कुलोंके सब मनुष्योंका नाश हुआ २५ अर्थात् वृष्णी और अन्धकों के नाशकेअर्थ किंकरनाम यमदूत की सूरत शापसे प्रकट भयका उत्पन्न करनेवाला बड़ा मूसल उत्पन्न किया लोगोंने उस मूसल को लेजाकर राजा उग्रसेन के सन्मुख लाकर धरा २६ हे राजा तब व्याकुलरूप राजा उग्रसेनने उस मूसलको बहुत सूक्ष्म खंड२ करके महीनकरवाया और उस बुरादेको समुद्रमें डलवादिया २७ और सबलोगोंने राजा उग्रसेन श्रीकृष्ण बलदेवजी और महात्मा बभ्रु के वचनसे नगरमें मनादी करवादी २८ कि आजसे लेकर सब वृष्णी अन्धकोंके लोगोंको और सम्पूर्ण नगरनिवासियों को मद्यपान करनानहींचाहिये २९ जो कोई मनुष्य हमारी आज्ञा के बिना ऐसा करेगा वह अपने बान्धवों समेत जीवता शूली पर चढ़ाया जायगा ३० तब सब मनुष्योंने सुगमकर्मी बलदेवजी की आज्ञाको जानकर राज्यके भयसे नियम किया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसहस्र्यांसंहितायांमौसलपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशम्पायन बोले कि इसप्रकार अंधकोंसमेत नानाप्रकारके उपायकरनेवाले सबवृष्णियोंके घरोंमें वह कालपुरुष सदैव भ्रमण करनेलगा १ जो कि कराल, विकट, मुंड, कृष्ण और पिंगलवर्णथा वृष्णियोंके घरोंमें प्रवेशकरके कहीं दिखाईदिया कहीं नहीं २ लाखों धनुषधारियोंने उसकालपुरुष को बाणोंसे घायलकिया परंतुवहसबजीवोंकानाशकरनेवाला कालपुरुषकिसीप्रकारसे भी घायलनहींहुआ ३ प्रतिदिन वृष्णीऔर अन्धकोंके अर्थ महाभय कारी रोमांचको खड़ी करनेवाली बहुत कठिन वायु प्रकटहुई ४ मार्गोंमें चूहोंकीबड़ी वृद्धिहुई और वहीमार्गफूटेहुये मृन्मयपात्रों से युक्त हुये रात्रिके समय सोनेवाले पुरुषोंके शिरकेबाल और नख चूहेंसेकाटेजातेथे ५ वृष्णियोंके स्थानोंमें सारकनाम पक्षी चींची

कूची नामशब्दोंको करतेथेबकरोंने शृगालोंके समान शब्दकिये ६।७ तबवृष्णीऔरअन्धकोंके स्थानादिकोंमें कालसे प्रेरितपाण्डु आरक्तपाद और कपोत पक्षी भ्रमण करनेलगे ८ गौओंकेपेटोंसे गधे उत्पन्न हुये और खच्चरियोंमें ऊंट उत्पन्न हुये ९ तब भी वृष्णीलोग पापोंको करते लज्जित नहीं हुये ब्राह्मण पितर और देवताओं से बिरुद्धहुये १० गुरुओंका भी अपमान किया परन्तु श्रीकृष्ण और बलदेवजीने नहीं किया स्त्रियोंने पतियोंको और पतियोंने स्त्रियोंको बिपरीतकर्म दिखलाये ११ ज्वलितरूपअग्नि नीलेरक्त और मंजीठ वर्णकिरणोंको पृथक्२ प्रकट करता हुआ बामभागमें वर्त्तमान होताथा १२ उसपुरीमें सदैव उदय औरअस्त के समयशिरसे रहित मनुष्योंसे घिराहुआ सूर्य्य बारंबार मनुष्यों कोदिखाईपड़ा १३ हे भरतवंशी बड़े शुद्ध आसनोंपर सन्नद्धभोजन की वस्तुओंके लानेपर हजारोंकीट असंख्य दिखाईपड़े १४ महा-त्माओंके जपकरनेमें और पुण्याहवाचन में उनके सन्मुख पुरुष दौड़ते हुये सुनेजातेथे परन्तुकोई दिखाई नहीं दिया १५ उनसब यादवोंने बारंबार ग्रहोंसे परस्पर आघातित नक्षत्रोंको देखा परन्तु किसीदशामेंभी अपने नक्षत्रको नहीं देखा अर्थात् अपने नक्षत्रका न दीखना अपनी मृत्युको द्योतन करताहै वृष्णी और अन्धकों के स्थानोंमें पांचजन्य शंखके बजनेके समय उनगधों के शब्द होनेलगे जिनके कि शब्द महाभयकारीथे १६।१७ इसप्रकार समय की विपरीतता को देखतेहुये श्रीकृष्णजी उस तेरसके दिन जो कि मावसके स्थानापन्नथी उनयादवोंको देखकर बोले १८ कि शुक्लपक्षमें भी एक तिथिकमहुई अर्थात् चतुर्दशीकोही पूर्णिमा होगई और उसदशामें ग्रहणभीहुआ महाभारतके युद्धवर्त्तमानहोने पर ऐसा हुआथा अब वह हमारे नाशके अर्थसमक्षमें आयाहै १९ उस समयको बिचारते केशीदैत्यके संहारी श्रीकृष्णजीने अच्छे प्रकार ध्यानकरके छत्तीसवेंबर्षको बर्त्तमानहुआमाना२०जिसके बांधव मारेगये उसपुत्र शोकसेदुखी और पीड़ामानगांधारीने जो

शापदियाथा वहीशाप अबबर्त्तमानहोकर सन्मुखआया पूर्वसमय में सेनाओंके व्यूहित होनेपर भयकारी उत्पातोंको देखकर जिस को कहा था यहवही समय बर्त्तमान हुआ २१।२२ तब शत्रुओंके विजय करनेवाले उसके सत्य करने के अभिलाषी बासुदेवजी ने इसप्रकार कहकर तीर्थयात्रा करनेके अर्थ आज्ञाकरी २३ और सब लोगोंने केशवजीकी आज्ञासे मनादीकी कि हे पुरुषोत्तमो तुमको समुद्रकेपास तीर्थयात्रा करनी चाहिये २४॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २॥

तीसरा अध्याय॥

वैशम्पायन बोले कि रात्रिके समय स्वप्नमें स्त्रियोंके सौभाग्य मंगल सूत्रादिकों को चुराती और पांडुर वर्ण दांतों से हंसती हुई कालीदेवी द्वारकाके चारोंओरदौड़तीथी अग्निहोत्र शाला और रहने के स्थानादिकों में भयानक रूप गिद्धोंने स्वप्नदशामें वृष्णी और अन्धकोंको घायलकिया १।२ भूषण छत्रध्वजा और कवच यहसब भयानकरूपराक्षसोंसे लूटेहुये दिखाईपड़े ३ तब वृष्णियों केदेखते हुये श्रीकृष्णजीका चक्र जो कि अग्नि का दिया हुआ बज्रनाभ और लोहमयीथा वह आकाशकोचला ४ दारुकसारथी केदेखते वहचित्तके समान शीघ्रगामी चारोंउत्तमघोड़े उस दिव्य सूर्य्यवर्ण तैयार रथकोलेचले और सागर के ऊपर होकर चले गये ५ श्रीकृष्ण और बलदेवजीसे अच्छीपूजित और तालवगरुड़ जीसे चिह्नित जो वह बड़ी२ ध्वजाथीं उनको अप्सराओं ने ऊपर की ओरसे हरलिया और दिनरात यहीबचन कहा कितीर्थयात्रा कोजाओ ६ इसके अनन्तर चलनेके अभिलाषी उनवृष्णी और अंधक वंशी नरोत्तमोंने सब बालबचोंसमेत तीर्थयात्राकोचाहा ७ तब अंधक और वृष्णियोंने नानाप्रकारके भोजन और भक्षणकी बस्तु मांस और पीनेकीमद्यआदिक वस्तुतैयारकीं ८ फिरशोभा-यमान बड़ेतेजस्वी सेनाओंके समूहघोड़ेहाथी और रथोंकीसवारी

से नगरके बाहर निकले ९ तब बहुतसी खानेपीनेकी वस्तुरखने वाले यादवलोग स्त्रियों समेत राजाकी आज्ञानुसार प्रभासक्षेत्र में अपने निवासस्थानपर ठहरे १० मोक्षमें पंडित बडेयोगी वह उद्धव जी समुद्रकेपास उनयादवोंका शीघ्रही नाशमान देखकर उनवीरों को विदाकरके चलेगये ११ फिर वृष्णियोंके नाश जाननेवाले श्रीकृष्णजीने हाथजोड़कर जानेवाले उसमहात्माको रोकना नहीं चाहा १२ फिरमृत्युके पंजेमें फँसेहुये उनवृष्णी और अंधकमहारथि-योंने तेजसे पृथ्वी और आकाशको पूर्णकरके जानेवाले उसउद्धव को देखा १३ उन महात्माओंका वहभोजन जो ब्राह्मणोंके निमित्त तैयार हुआथा और मद्यकी गन्धिसे युक्तथा उसको बन्दरों को दिया १४ फिर प्रभासक्षेत्र नाम बड़े तीर्थमें उनबडेतेजस्वी यादवोंका मद्यपान करना प्रारंभहुआ जोकि सैकड़ों बाजोंसे नटोंसे और नर्त्त-कोंसे घिरेहुयेथे १५ श्रीकृष्णजीके सन्मुख बलदेवजी सात्यकीगद और बभ्रु ने कृतवर्मकेसाथ मद्यपानकिया १६ फिर मदसे चूर्ण सात्यकीने सभासदोंके मध्यमें कृतवर्माको हँसकर और अपमान करके कहा १७ कि हे कृतवर्मा कौन घायलहुआ क्षत्री मृतकके समान सोनेवालोंकोमारे जो कर्म तुमने कियाहै उस कर्मको यादव लोग नहीं सहनकरतेहैं १८ सात्यकीके इसप्रकार कहनेपर रथि-योंमें श्रेष्ठ प्रद्युम्नने कृतवर्माका अपमान करके उस वचनकी प्रशंसाकरी १९ इसके पीछे निन्दायुक्त दाहिने हाथसे दिखाते अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्माने उससे कहा कि २० युद्धमें टूटी भुजा शरीरके त्यागनेके अर्थ बैठाहुआ भूरिश्रवा तुझ निर्दयी वीरसे कैसे गिरायागया २१ उसके वचनको सुनकर वीरोंके मारनेवाले श्रीकृष्णजीने तिरछी दृष्टिसे देखा २२ जो वह स्यमन्तकमणि और सत्राजित था उसकीकथा सात्यकीने मधुसूदनजीको सुनाई २३ तब उसको सुनकर क्रोधयुक्त रोदन करतीहुई सत्यभामा श्रीकृष्णजीको क्रोधयुक्त करती उनके पास आई २४ फिर क्रोध युक्त सात्यकीने उठकर यह वचन कहा कि हे सुन्दरी मैं पांचों

द्रौपदीके पुत्र धृष्टद्युम्न और शिखण्डीके मार्गपर अर्थात् उन की पदवीपर चलताहूं और सत्यतासे शपथ खाताहूं कि जिस दुर्बुद्धी अश्वत्थामाकेसाथी पापीकृतवर्माने २५। २६रात्रिकेसमय सोतेहुये वीर मारे अब इसकी अवस्था और शुभकीर्त्ति समाप्तहुई २७ उस क्रोधयुक्त सात्यकीने इस प्रकारसे कहकर केशवजीके समीपसे उसके सन्मुख जाकर खड्गसे कृतवर्माके शिरकोकाटा२८ तब श्रीकृष्ण जी चारोंओर के अन्य मनुष्योंको भी मारनेवाले सात्यकीके रोकनेको दौड़े २९ हेमहाराज फिर समयकी विपरीततासे चलायमान सब भोज और अंधकवंशी इकट्ठे होगये और सात्यकीको घेरलिया ३० समयकी विपरीतपनेको जानते महातेजस्वी श्रीकृष्णजी उन क्रोधयुक्त शीघ्रतासे दौड़नेवालेयादवोंको देखकर क्रोधित नहींहुये३१ तब मद्यके मदसे चूर्णमृत्युके वशीभूत उनलोगोंने उच्छिष्ट पात्रोंसे सात्यकीको घायलकिया ३२ सात्यकीके घायल होनेपर क्रोधयुक्त और सात्यकीके छुड़ानेके अभिलाषी प्रद्युम्न अभिमन्यु उनके मध्यमेंआये ३३ वह सात्यकी भोज और अन्धकोंसे घिरगया भुज पराक्रम से शोभायमान वह दोनोंवीर ३४ श्रीकृष्णजी के देखतेहुये शत्रुओंकी आधिक्यताके कारणसे मारेगये तब यदुनन्दन केशवजीने सात्यकी समेत अपने पुत्र को मृतक देखकर ३५ क्रोधसे एकसाथही पटेलोंको हाथमें लिया वह सब मिलकर भयानक वज्रकी समान लोहे का मूसल हुआ फिर उसीसे श्रीकृष्णजीने उन सब सन्मुख होनेवालोंकोमारा तदनन्तर कालसे प्रेरित अन्धक, भोज, शिनी, और वृष्णी वंशियोंने ३६।३७युद्धमेंपरस्पर मूसलोंसेमाराहेराजाउन्हींमेंसे जिसकिसीक्रोध युक्तने पटेलेको लिया वह वज्ररूप दिखाई पड़ा हे समर्थ राजा जनमेजयवहांतृणभी मूसलरूपदीखा३८।३९अर्थातवहसब ब्रह्मशाप से होगयाथा इसको आपजानो जिसतृणको फेंकतेथे वह अवध्यों कोभीमारताथा४०हे भरतवंशी तबवह मूसलवज्ररूपदेखनेमेंआया पुत्रने पिताको और पिताने पुत्रकोमारा ४१ मदिरापानके मदसे

अचेत परस्पर युद्धकरनेवाले वह कुकुर, और अन्धकवंशी चारों ओरको दौड़े और ऐसेगिरे जैसेकि पतंगनाम पक्षी अग्निमेंगिरते हैं वहांकिसी घायलने भी भागनेकी बुद्धि नहींकी ४२ उस स्थान पर समयके बिपर्य्ययके जाननेवाले मधुसूदनजीने जिस मसलको देखा उसको पकड़कर नियतहुये ४३ फिरमाधवजी सांबु, चारुदेष्ण, प्रद्युम्न और अनिरुद्धको मराहुआ देखकर क्रोधयुक्तहुये४४तब पृथ्वीपर गिरेहुये गदको देखकर उस अत्यन्त क्रोधयुक्त शाङ्ग धनुषधारीने शेषबचेहुओं काभी नाशकरदिया४५शत्रुओंकेपुरोंके विजय करने वाले महातेजस्वी बभ्रु और दारुकने उनमारनेवाले श्री कृष्णजीसे जो कहा उसको सुनो ४६ बभ्रु ने कहाकि हे भगवन् तुमने बहुतसे मनुष्य मारे अब बलदेवजी को खोजकरें औरजहां वहहैं तहांचलें ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्वणितृतीयोऽध्यायः ३॥

चौथा अध्याय॥

बैशंपायनबोले कि इसकेपीछे शीघ्रगामी दारुक केशव और बभ्रुतीनों बलदेवजीके खोजने कोगये और अतुल पराक्रमीबलदेवजीको एक वृक्षके नीचे एकान्तमें बैठे ध्यानकरतेहुये देखा१ तब श्रीकृष्ण जीने महानुभाव बलदेव जीको पाकर दारुकको आज्ञाकरी कि तुम कौरवोंके पासजाकर यादवों के इसबड़ेबिनाशको अर्जुनके सन्मुख जाकर वर्णनकरो २ फिर अर्जुन ब्रह्म शापसे यादवोंको मराहुआ सुनकर शीघ्रतासे यहां आवेगा तब इसप्रकारसे आज्ञप्त वह बुद्धिमान दारुक रथकी सवारीसे कुरुदेशोंको गया ३ तब दारुकके चलेजानेपर केशवजीने बभ्रु कोअपने सन्मुख देखकर यह बचनकहा कि तुमशीघ्रतासे स्त्रियोंकी रक्षा कोजाओ चोरमनुष्य धनके लोभसे कहींउनको नहींमारें४केशव जीसे आज्ञा दियाहुआ मद्यसे उन्मत्त बिरादरीके मरनेसे पीड़ामान बभ्रुवहांसे चला और लुब्धकके लोहेके मुद्गरमें संयुक्त ब्रह्म

शापसे उत्पन्न मूसलने अकस्मात केशवजीके सन्मुख विश्राम लेनेवाले ब्राह्मणसे शापपाये हुये दुःपरिणाम अकेले बभ्रुको मारा ५ तदनन्तर बड़े तेजस्वी श्रीकृष्णने बभ्रुको माराहुआ देखकर बड़ेभाईसे कहा कि हे बलदेवजी मैं जबतक स्त्रियोंको अपने बिरादरी वालोंके सुपुर्द न कर आऊं तबतक तुमयहांहीं बैठेहुये मेरीबाट देखना ६ फिर जनार्दनजीने द्वारकामें प्रवेशकरके अपने पितासे यहबचन कहा कि आप अर्जुनके आनेतक हमारी सब स्त्रियोंकी रक्षाकरो ७ बलदेवजी मेरीबाट देखतेहुये बनमें नियत हैं अबमैं उनसे मिलूंगा मैंनेप्रथम राजा और कौरवोंका औरअब यह यादवोंका नाशदेखाहै ८ अबमैं यादवोंके बिनाइस यादवपुरीके देखनेकोभी समर्थ नहींहूं मैं बलदेवजीकेसाथ बनमें जाकर तपकरूंगा इसको आपजानें ९ श्रीकृष्णजी ऐसा कहकर अपने पिताके चरणोंको शिरसे स्पर्श करके शीघ्रही चले इसके पीछे स्त्री और बालकों समेत उसनगरके बड़ेशब्द प्रकटहुये १० फिर केशवजीने शोकयुक्त रोदन करनेवाली स्त्रियोंके शब्दोंको सुनकर वहांसे फिर लौटकर यहबचन कहा कि अर्जुन इसपुरीमें आवेगा वह नरोत्तम तुमको दुःखोंसे छुटावेगा ११ यह कहकरकेशव जीने बनके मध्यमें जाकर एकान्तमें अकेले बैठेहुये बलदेवजी को देखा फिर उसयोगसे संयुक्त बलदेवजीके मुखसे निकलने वाले बड़ेभारी श्वेत सर्पकोदेखा १२ तबवह अपने शरीरको छोड़कर रक्तमुख हजार शिरधारी पर्वत स्वरूप महानुभाव शेष नागजी देखतेहुये उधरकी ओरकोचले जिधर समुद्रथा१३ उनको देखकर समुद्रने उनकी अभ्युत्थान पूर्व्वक अग्रगामिताकी और दिव्यनाग, पवित्रनदियां, कर्कोटक,बासुकी,तक्षक,पृथुश्रव, बरुण, कुंजर१४ मिश्री,शंख,कुमुद,पुंडरीक,महात्मा धृतराष्ट्र,नागह्राद, क्राथ,बड़ा तेजस्वी शितिकंठ,चक्रमद,अतिखण्ड १५ नागोंमें श्रेष्ठ दुर्मुखअंबरीष और आप राजाबरुणनेभी उनकी अग्रगामिताकरके उनकी कुशलक्षेमपूछकर उनको प्रसन्नकिया उनसबोंने अर्घ्य पाद्यादिक

क्रियाओंसे पूजनकिया १६ फिर भाईके जानेपर सब गतियोंको जानते दिव्यदृष्टि महा तेजस्वी निर्जन बन में घूमते और चिन्ता करतेहुये बासुदेवजी पृथ्वीपर बैठगये १७ उन श्रीकृष्णजीने प्रथम तबही बिचार लियाथा जबकि गांधारीने कहाथा और उच्छिष्ट खीरको शरीरमें मर्द्दनकरने पर जो बचन दुर्वासाऋषिने कहाथा उसकोभी स्मरण किया १८ फिर अंधक वृष्णी और कौरवोंके नाशको शोचते हुये उस महानुभावने अपना परम धाम में जाने का समय माना और इन्द्रियोंका निरोधकिया १९ सबअर्थ तत्त्व के जाननेवाले उस देवताने भी त्रिलोकीके पालनार्थ दुर्वासाऋषि के बचनकी रक्षाके अर्थ अपने शरीर त्यागनेकी शुद्धताको चाहा २० इस निमित्त वाणी और मनके रोकनेवाले वह श्रीकृष्णजी महायोगको प्राप्तकरके सोगये तब भयकारी रूप शिकारके करनेका इच्छावान् जरानाम लुब्धक उस स्थानपर आया २१ मृग की शंका करनेवाले जरानाम लुब्धकने उस योगसे संयुक्त शयन करने वाले केशवजीके पैरके तलुयेको बाणसे घायल कियाऔर उसको पकड़नेका अभिलाषी होकर बड़ीशीघ्रतासे वहांगया २२ फिरउस लुब्धकने योगसे संयुक्त पीतांबर धारी अनेकभुजा रखने वाले पुरुषको देखा तब भयभीत जरानाम व्याधने अपनेको अपराधी मानकर उनके दोनों चरणोंको पकड़ लिया २३ तब उन महात्मा जीने उसको विश्वास कराया कि तुम अपने स्वभावसे पृथ्वी और आकाश को पूर्णकरके ऊपरके लोकों को जाओ तुमनेस्वर्गको प्राप्तकिया इन्द्र अश्विनी कुमार ग्यारहरुद्र द्वादश सूर्य्य अष्टवसु विश्वेदेवा २४ और उत्तम अप्सराओं समेत सिद्ध मुनि गन्धर्व उनको आगेसे लेनेको आये हे राजा फिर षडैश्वर्य्य केस्वामी बड़े तेजस्वी सब शरीर बासी उत्पत्ति और प्रलयके आश्रयस्थान २५ योगाचारी अचिन्त्य प्रभाववाले श्रीकृष्णजीने अपने प्रकाशसे पृथ्वी और आकाशको व्याप्तकरके अपनेलोक को पाया हे राजा फिर श्रीकृष्ण जी देवता ऋषि और चारणों

सेयुक्त २६ झुकेहुये गन्धर्वराज श्रेष्ठअप्सरा और साध्योंसे पूजित हुये देवताओंने भी उस ईश्वरकी स्तुतिकरी और श्रेष्ठमुनियोंने ऋग्वेदकी ऋचाओंसे स्तूयमान किया और प्रशंसा करनेवाले गन्धर्वभी उनके सन्मुख नियतहुये और इन्द्रने प्रीतिसे उनको प्रसन्नकिया २७॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४॥

पांचवां अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि दारुकनेभी कौरवोंसे मिलकर महारथी पाण्डवोंको देखकर मूसलके द्वारा वृष्णियोंके नाश होजानेका वृत्तान्त वर्णन किया १ भोज अन्धक और कुकुरों समेत मरने वाले वृष्णियोंको सुनकर शोकसे दुखी पाण्डव भयभीतचित्त हुये फिर केशवजीका प्यारामित्र अर्जुन उनसे पूछकर मामाकेदेखने को चला और कहा कि यह इसप्रकारसे नहीं है२।३हेप्रभु जनमे-जय उसवीर अर्जुनने दारुककेसाथ द्वारकामें जाकर अपने मामा को विधवा स्त्रीके समान देखा ४ पूर्व्व समयमें जो वह स्त्रियां लोकनाथ से सनाथथीं वह अनाथ स्त्रियां अर्जुनको देखकर पुकारीं ५ अर्थात वासुदेवजीकी जोसोलहहजार स्त्रियांथीं उन्हीं ने अर्जुनको आयाहुआ देखकर बड़ीपुकारकरी ६ अश्रुपातों से पूर्णनेत्र वह अर्जुन उन स्त्रियोंको जो कि श्रीकृष्ण और पुत्रोंसे रहितथीं देखतेही उनके देखनेको समर्थ नहीं हुआ ७ तब उस बुद्धिमान अर्जुनने वैतरणी नदीकेसमान उस भयानक द्वारकारूपी नदीकोदेखा जिसमें वृष्णी और अन्धकरूपी जलथा घोड़ेरूपी मत्स्य रथरूपी घिर्नई महलरूपी तीर्थ और बड़े हृदवालीथी ८ रत्नरूप शैवाल वज्रसे बनेहुये परकोटा रूपी माला मार्ग रूप झिरना और भवँरथे चौराहेरूपी तालाब श्रीकृष्ण और बलदेवजी बड़े ग्राह और कवन्धरूपी मगरथे वह नदी बाजे रथों के शब्दोंसे शब्दायमानथी ९।१० इसप्रकारसे उस उत्तम द्वारका

पुरीको अर्जुनने वृष्णियोंसेरहित ऐसेशोभासे रहित और आन-न्दहीनदेखा जैसे कि शिशिरऋतुमें कमलनी अशोभित दीखतीहै ११ उन स्त्रियोंके करुणा शब्दोंको और द्वारकाकी दशाको देखकरअर्जुन बड़ेशब्दसे विलापकरके अश्रुपातों समेत पृथ्वीपर गिरपड़ा १२ इसके अनन्तर सत्राजितकी पुत्री सत्यभामा और रुक्मिणीजी उसकेसमीप आनकररुदनकरनेलगीं १३ । १४ फिर वहपांडव अर्जुन गोविन्दजीकी स्तुति और कीर्त्तनकर स्त्रियों को आश्वासन करके मामाजीके देखनेको चला १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि अर्जुनने उस महात्मा वसुदेवजीको पुत्र शोकसे दुखित शयनकरतेहुयेदेखा १ हेभरतवंशी अश्रुसे पूर्णनेत्र बड़ी छाती और भुजाओंके रखनेवाले बड़े पीड़ामान अर्जुनने उन पीड़ित वसुदेवजीके चरणोंको पकड़ा २ उन शत्रुनाशक महाबाहु वसुदेवजीने उसअपने भगिनी पुत्रके मस्तकको सूंघना चाहापरन्तु सूंघनेको समर्थनहीं हुये ३ रोतेहुये सब पुत्र भाई पोते भानजे और मित्रों को स्मरण करते महाबाहु वृद्ध वसुदेवजीने भुजाओंसे अर्जुनको स्नेहकरके विलापकिया ४ वसु-देवजी बोलेकि हे अर्जुन जिन्होंने राजा लोगोंको और सैकड़ोंदै-त्योंको विजय किया उनको देखकर अबयहां फिर नहीं देखता हूं और कठिनता से मरनेवाला मैं जीवता हूं ५ हे अर्जुन जो प्रद्युम्न और सात्यकी तेरेशिष्य बड़ेप्यारे और सदैव अंगीकृत थे उनदोनोंके अन्यायसे सबवृष्णी मारे गये ६ जो वहप्रद्युम्न और सात्यकी दोनों वृष्णी वीरोंके अतिरथी मानेगये और तुमभी वार्त्तालाप करतेहुये जिनदोनों की प्रशंसाकरतेथे ७ हेश्रेष्ठकौरव अर्जुन वहदोनों सदैव श्रीकृष्णके प्रियकारी और बड़े प्रधानथे ८ हेअर्जुन मैं सात्यकी कृतवर्मा अक्रूर और प्रद्युम्नकी निन्दानहीं

करताहूं इस में केवल ब्रह्मशापही मुख्य कारणथा ९ हे राजा जिस जगतके प्रभुने पराक्रमके बलसे अहंकारी शिशुपाल, केशी और कंसको मारा १० निषादों के राजा एकलव्य कलिंग देशोंके राजा मगध गांधार काशी और मरु भूमिके जो २ राजा राजाथे उनकोमारा ११ उसीप्रकार पूर्वीय दक्षिणीय और पहाड़ी राजाओंको भीमारा उसमधुसूदनने बंशके लड़कोंके अपराधोंसे उत्पन्न इस बंश भरेके नाशका विचार नहीं किया १२ अर्थात उस प्रभु विष्णुने अपने बिरादरी वालों के नाशको जाना परन्तु उसमेरेपुत्रने सदैवउसकोनहींबिचारकिया१३। १४ हेपरन्तप गांधारीका और ऋषियों का जो वह बचनथा उसको उसजगत पतिने मिथ्या करना नहींचाहा१५हे परन्तप आपकेभी समक्षमें है कि अश्वत्थामाके अस्त्रसे मृतक तेरापौत्रभी उसीके तेजसेजीताहै १६ उसतेरे मित्रने इनअपने सजातियोंकी रक्षा करना नहीं चाहा फिर इनपुत्रपौत्र भाई और मित्रोंको १७ मृतक पृथ्वी पर पड़ाहुआ देखकर मुझसे यह बचन कहा कि अबइस कुलकानाश वर्त्तमान हुआ १८ सो अर्जुन इस द्वारकापुरीमें आवेगा उससे वृष्णियोंके इसबड़े नाशका वृत्तान्त तुमको कहना चाहिये १९ हे प्रभु वह महातेजस्वी अर्जुन यादवोंका नाश सुनकर निस्संदेहशीघ्रही आवेगा इसमें कुछ मुझको बिचारनानहींहै२०जोमैंहूं उसीको अर्जुन जानो और अर्जुन है वह मैंहूं वह जो आपसे कहे उसको उसी प्रकार करना आपको योग्यहै हे भरतर्षभ अर्जुन ऐसे श्रीकृष्णके बचनको जानो २१ वह पांडव अर्जुन समयपर वर्त्तमान होकर स्त्री बालकों समेत आपके क्रियाकर्मको करेगा २२ और यहांसे अर्जुनके चलेजाने पर परकोटा और अट्टालिकों समेत इसनगरको शीघ्रही समुद्र डुबादेगा २३ मैं किसी पवित्रदेश में बुद्धिमान बलदेवजी समेत नियममें प्रवृत्त होकर इस शरीरको त्याग करूंगा यह मैं सत्य २ कहताहूं २४ बुद्धिसेपरे पराक्रम करनेवाले प्रभुकेशवजी मुझसे ऐसा कहकर और बालकों समेत

मुझको छोड़कर किसी दिशाको चलेगये २५ सो मैं उन दोनों महात्मा तेरे भाइयोंको और भयकारी बिरादरीके नाशको शोचताहुआ शोकग्रस्त होकर भोजन नहीं करताहूं २६ हेपांडव अर्जुन मैं नभोजन करूंगा नजीवता रहूंगा तुम प्रारब्धसे आयेहो अब तुम जो २ श्रीकृष्णाने कहाहै उसको सम्पूर्णतासे करो २७ हे अर्जुनरूप श्रीकृष्णा यह राज्य स्त्री और रत्नादिक सब तेरेहैं मैं अब इन अपने प्यारे प्राणोंका त्याग करूंगा २८॥

इतिश्रीमहाभारतेमौसलपर्व्वणिषष्ठोऽध्यायः ६॥

सातवां अध्याय॥

बैशंपायन बोले कि हेपरन्तप मामासे ऐसे बचन सुनकर उस महा दुखीचित्त अर्जुनने उस दुखीचित्त बसुदेवजीसे यह बचन कहा कि १ हे मामाजी मैं यहां किसी दशामेंभी श्रीकृष्णा और बान्धवोंसे रहित पृथ्वीकेदेखनेको भी समर्थ नहींहोताहूं २ राजा युधिष्ठिर,पांडवभीमसेन,सहदेव,नकुल, मैं और द्रौपदी हम छओं एकमनहैं ३ हे कालबिदांबर निश्चयकरके राजायुधिष्ठिरके भी राज्य त्यागनेका समय वर्त्तमानहै उस समयको भी अब वर्त्तमान होजानो ४ हे शत्रुओंके बिजय करनेवाले मैं सब प्रकारसे वृष्णि-योंकी स्त्री बालक और वृद्धाओं को साथमें लेकर इन्द्रप्रस्थ में पहुंचाऊंगा ५ अर्जुन ने ऐसा कहकर दारुक से यह बचन कहा कि मैं वृष्णी वीरोंके मन्त्रियोंको देखना चाहताहूं बिलम्ब मत करो ६ वह शूर अर्जुन उन महारथियों को शोचता हुआ इस प्रकारके बचनको कहकर यादवोंकी सुधर्मानाम सभामें पहुंचा तब वहां सब मन्त्री और ब्राह्मण आसनोंपर बैठे हुये अर्जुन को मध्यवर्त्तीकरके सन्मुख नियतहुये ७।८ अत्यन्त दुःखी अर्जुनने उन दुखीचित्त सब सावधान लोगों से यह बचन कहा ९ मैं आप वृष्णी और अंधकोंकेबालबच्चोंको इंद्रप्रस्थ को लेजाऊंगा और इस सबनगरको समुद्र डुबादेगा १० अब तुम नानाप्रकारके रत्नों

समेत सवारियों को तैयार करो यह बज्रनाभ इन्द्रप्रस्थ में आप लोगोंका राजा होगा ११ हम सब सातवेंदिन सूर्य्यके उदयहोने पर नगरसेबाहर निवासकरेंगे अब शीघ्र तैयारी करो विलम्ब न करो १२ उसउग्रसकर्मी अर्जुनके इस बचनको सुनकर उन सबने शीघ्रही तैयारी करी क्योंकि वह सब भी अपनी सिद्धीके अर्थ इच्छावान् थे १३ तब अकस्मात बड़े शोक और मोहसे पूर्णअर्जुन उसरात्रिको केशवजीके स्थानपर निवासीहुआ १४ फिर प्रातः-काल शूरके पुत्र प्रतापवान् महातेजस्वी बसुदेवजी ने आत्माको परमात्मामें प्रवेश करके उत्तम गतिको पाया १५ फिर कठिन रोदन का बड़ा शब्द बसुदेवजी के महलमें प्रकट हुआ १६ शिर के बाल खुले भूषण मालाआदिक त्याग करनेवाली हाथोंसे छाती पीटनेवाली सब स्त्रियोंने करुणा पूर्वक महा बिलापकिया १७ तब स्त्रियोंमें श्रेष्ठ देवकी भद्रा रोहिणी और मदिरा उस बसुदेव अपने पतिकी चिताकेपास आकर नियतहुई १८ हे भरतवंशी तब अर्जुनने बसुदेवजीको बड़े बहुमूल्य बिमानमें बहुतसे मनुष्य और बाजेके साथ निकाला १९ और दुःखशोकसे महापीड़ित अनेक यूथयूथ होकर देशवासी द्वारकावासी पुरवासी यहसब लोग उनकेसाथचले २० फिर उस सवारीसे आगे अश्वमेधसंबंधी उनका छत्रदेदीप्य अग्नियां और याचक ब्राह्मणचले अच्छीअ-लंकृत वह देवियां हजारों बिधवाओंसमेत उसवीरके पीछेचलीं २१।२२ जीवतीहुईं उस महात्मा का जो प्रिय स्थानथा वहां जाकर उस स्थानका निर्णयकरके उसका पितृयज्ञ किया २३ पतिके लोककोचाहनेवालीं वहचारों स्त्रियां उसअग्निकीचिता में वर्त्तमान उस बीरबसुदेव के साथ सतीहुईं पांडव नन्दन अर्जुनने चारों स्त्रियों समेत उन बसुदेवजीको चन्दनआदिअनेकसुगन्धित वस्तुओंका दाह किया २४।२५ इसकेपीछे बढ़ीहुईअग्निसामग ब्राह्मण और रुदन करनेवाली स्त्रियोंके शब्द प्रकटहुये २६ फिर वृष्णी और अन्धकोंके सब कुमारोंने जिनमें बज्रप्रधानथा

और स्त्री वर्गोंने उन महात्माका जलदानक्रिया २७ हेभरतर्षभ तबवह अर्जुन जिसका कि धर्म लोपनहीं हुआ उसकर्मकोकरा- कर वहांगया जहां पर कि वृष्णी लोग मारेगयेथे २८ वहांवह अर्जुन युद्धमें उनको गिराहुआ देखकर अत्यन्त दुखीहुआ समयके और प्रधानताके अनुसार विधि पूर्वक उनकेभी क्रिया कर्म किये जो कि ब्रह्म शापके कारण पटेलोंसे उत्पन्न मूसलों से मारे गये थे २९। ३० फिर उस अर्जुनने वासुदेव और बलदेवजीके शरीरोंको तलाश करके सत्य औरठीककर्म के करनेवाले आप्त पुरुषोंके द्वारा उनका दाहकराया ३१ वह पांडव अर्जुन विधि पूर्वक उनकी क्रिया और कर्मोंको करके सातवें दिन बड़ीशीघ्रतासे रथकी सवारीमें सवार होकर चला ३२।३३ फिर रोदन और शोकोंसेयुक्त वह वृष्णीवीरोंकी स्त्रियां उनघोड़े बैल औरखचरोंसे युक्तरथोंकी सवारियोंमें उसमहात्मा पांडव अर्जुन के पीछे चलीं अन्धक और वृष्णियोंके जो सेवक और टहलुये सवार और रथीथे वह सबपुरवासीऔर देशबासी बीरोंसे रहित वृद्ध बालक और स्त्रियोंको चारोंओरसे मध्यवर्त्ती करके अर्जुनकी आज्ञानुसार चले ३४।३५ जो हाथीके सवारथे वह पर्वताकार हाथियोंकी सवारीसे हाथीके चरणरक्षक और शस्त्रधारी मनुष्यों समेतचले अर्जुन केसाथी अन्धक और वृष्णि- योंके सबपुत्र ब्राह्मण क्षत्री बड़े धनवान् वैश्य शूद्र३६।३७ औरबु- द्धिमान् वासुदेवजीकी सोलह हजार रानी अपने पोते वज्रनाभ को आगे करके चले ३८ भोज अन्धक और वृष्णियोंकी अ- नाथ स्त्रियां जो कि संख्यामें बहुत अर्बुद प्रयुत और सहस्रावधि थीं वह सब मिलकर द्वारकासे बाहर निकले ३९ रथियोंमें श्रेष्ठ शत्रुओंके पुरोंका विजय करनेवाला अर्जुन उससमुद्रके समान बड़ धनोंसे युक्त स्त्रियोंके समूहोंका लेचला ४० तबउन मनुष्योंके निकलजानेपर मकरादिक जीवोंके निवास स्थान समुद्रनेसबरत्नों से पूर्ण उस द्वारकाको डुबोदिया ४१ उस पुरुषोत्तम अर्जुनने

पृथ्वीके जिसजिस भागको त्यागकिया उस २ स्थानको समुद्रने अपने जलोंसे आच्छादितकिया ४२ द्वारकावासीलोग उसअपूर्व चमत्कारको देखकर होनहार को अद्भुतमानकर शीघ्रतासेचल-दिये ४३ वह अर्जुन क्रीड़ाके योग्य बनपर्वत और नदियों पर निवास करताहुआ वृष्णियोंकी स्त्रियोंको लिवालाया ४४ उस बुद्धिमान् धन समूहों के रखनेवाले प्रभुअर्जुनने पंचनदको पाकर गौ पशु और धान्यों से पूर्ण देश में अपना निवास किया ४५ हे भरतवंशी इसके अनन्तर अकेले अर्जुनसे उन स्त्रियोंकोलाया हुआदेखकर जिनके कि स्वामी मारेगयेथे चारोंको बड़ालालच हुआ ४६ फिर उनपापी लोभसे घायलबुद्धि अशुभदर्शन भीलोंने अपने मन्त्री लोगोंसे सलाहकी ४७ कि यह धनुषधारी अकेला अर्जुन हमको उल्लंघनकर अनाथ वृद्ध और बालकों को लिये-जाताहै और यह सबवीर पराक्रमोंसे रहितहैं ४८ फिर हाथमें यष्टीरूप शस्त्रधारण करनेवाले वह हजारों चोरवृष्णियोंकी उन स्त्री आदिकों की ओर दौड़े ४९ और प्रत्येक मनुष्यको बड़ेसिं-हनादोंसे भयभीत करते समयका विपरीततासे प्रेरित वहचोर मारनेके निमित्त सन्मुख आये ५० तबवह अर्जुन अपने साथियों समेत अकस्मात लौटा और हंसतेहुये महाबाहुने उनसे यहवचन कहा ५१ कि हे धर्म के न जाननेवालो जो अपना जीवन चाहते हो तो चलेजाओ नहींतो मेरे बाणोंसे घायल और टूटेअंगहोकर शोचकरोगे ५२ उसवीरसे इसप्रकार कहेहुये और बारंबाररोके हुयेभी वह अज्ञानी उसके वचनको तिरस्कार करके मनुष्योंकेसन्मु-खदौड़े ५३ फिर अर्जुनने विपरीति दशासेरहित दिव्य धनुषको चढ़ाना प्रारंभकिया और अनेक उपायोंसे किसीप्रकारसे तैयार भी किया और कठिन भयकेवर्त्तमान होनेपरशस्त्रोंका भी स्मरण किया परन्तु उनकोभी स्मरणनहीं करसका ५४।५५ भयसे उत्पन्न उस बड़ी व्याकुलताको और युद्धमें उस प्रकारके अपने भुजबल को देखकर दिव्य महा अस्त्रोंके भूलजानेसे अर्जुनलज्जा युक्त हुआ

५६ हाथी घोड़े और रथकी सवारीसे लड़नेवाले वृष्णियोंकेवह शूरवीर उन नाश होनेवाली स्त्रियोंके रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हुये ५७स्त्रियोंकी आधिक्यता और उनके जहां तहां दौड़नेपर अर्जुनने उनकी रक्षामें बड़े २ उपाय किये ५८ फिर सबशूरवीरोंके देखतेहुये वह उत्तम स्त्रियां चारों ओर को खेंचीगई और बहुत सी इच्छावान् होकर अपने आप चलीगई ५९ इसके पीछे व्याकुलता पूर्व्वक पांडव अर्जुनने वृष्णियोंके नौकरों की सहायतासे गांडीव धनुषके छोड़हुये बाणोंसे चारों को मारा ६० हे राजा तब उसके वह बाण एक क्षणभरमेंही समाप्त होगये पूर्व्व समयमें रुधिरके पान करनेवाले वह बाण अविनाशीहोकर अब नाशमान होगये ६१ उस इन्द्रके पुत्रने अपने बाणोंको नाशमान देखकर शोकदुःखसे व्यथितहोके धनुषकी कोटियोंसे चोरोंकोमारा ६२ हेजनमेजय फिर वहम्लेच्छअर्जुनके देखतेहुये चारोंओर को दृष्टिकरते वृष्णीऔर अन्धकोंकी स्त्रियोंको लेकर चलेगये ६३ फिर प्रभु अर्जुनने चित्तसे उस होनहारको शोचा और महाशोकसे युक्त होकर बारंबार श्वास लेनेवाला हुआ ६४ हेराजा वह अर्जुन अस्त्रोंकी निस्सरणता भुजबलकी न्यूनता धनुषकी अनाकर्षणता और बाणोंकी समाप्तीसे ६५ यह शोचा कि यह होनहार भावी है ऐसा जानकर उदास होकर लौटा और कहने लगा कि सब नाशमानहै ६६ फिर वह बड़ा बुद्धिमान् अर्जुनशेष बचीहुई उन स्त्रियोंको जिनके कि बहुतसे रत्न नाश होगयेथेअपने साथमें लेकर कुरुक्षेत्रमें उतरा ६७ इस प्रकार अर्जुनने उन वृष्णियोंकी स्त्रियोंको जो कि लुटनेसे बचरहींथी लाकर जहां तहां स्थानोंमें ठहराया फिर अर्जुनने कृतवर्माके लड़केको मार्त्तिकावत नगरका राजाकिया और शेषबचीहुई भोज राजकी स्त्रियोंको उसके सुपुर्दकिया६८।६९फिर उस अर्जुनने वीरोंसेरहित उन सब स्त्रियों और बालक वृद्धोंको लाकर इन्द्रप्रस्थमें ठहराया ७० धर्मात्माने सात्यकीके उस प्यारेपुत्रको जिसके अग्रभाग

में वृद्ध और बालकथे सरस्वतीके तटपर ठहराया ७१ रुक्मिणी, गान्धारी, शैव्या, हेमवती, देवी जाम्बवती, यह सब अग्नि में प्रवेश करगईं ७२ इसके पीछे उस शत्रुहन्ताने वज्रको इन्द्र-प्रस्थका राजा किया वज्रसे रुकीहुई अक्रूरकी स्त्रियांबनवासी हुईं ७३ हे राजा इसी प्रकार श्री कृष्णकी अंगीकृतकीहुईं सत्य भामाआदिक प्यारी स्त्रियां और अन्य २ स्त्रियां जिन्होंने तप-स्याके लिये निश्चयकरलियाथा बनमेंचलीगईं ७४ वहां जाकर वह स्त्रियां फल मूलादिक वस्तुओंको भोजन करनेवालीहरिके ध्यानमें सलग्न हिमालयकी परिक्रमा करके कलाप ग्राममें प-हुंचीं ७५ जो द्वारका बासी मनुष्य अर्जुनके सङ्गमें गये उनको अर्जुनने योग्यताके समान भागोंको देकर वज्रके सुपुर्द किया ७६ अश्रुसे पूर्णनेत्र उस अर्जुनने समयके अनुसार वह सब कामकरके कृष्णद्वैपायन व्यासजीको आश्रममें बैठाहुआ देखा ७७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांमौसलपर्व्वसप्तमोऽध्यायः ७ ॥

आठवां अध्याय ॥

वैशंपायनबोले हे राजा सत्यवक्ता ऋषिके आश्रममें प्रवेश करतेहुये अर्जुनने व्यास मुनिको एकान्तमें बैठाहुआ देखा १ तब वह अर्जुन उस धर्मज्ञ महाव्रतको पाकर उनके सन्मुख जाके यहबचनबोला कि मैं अर्जुनहूं यह कहकर दण्डवतकी २ व्या-समुनिने कहा तेरा आना शुभमंगलकारी होय और बड़े प्रसन्न मन से कहा कि बैठो ३ फिर व्यासजीने उस अर्जुनको उ-दासमन बारंबार श्वासलेनेवाला व्याकुलचित्त देखकर यह बचन कहा ४ कि हे अर्जुन बाल नख औरबस्त्रसे निचोड़ेहुये जलअथवा मुखकेशरिछद्रजलसे छिड़कागयाहै अथवा रजस्वलास्त्रीसेसंभोग कियाहैअथवा तुमनेब्राह्मणमारा है अथवा युद्धमें पराजितहुआहै जिससेकि तुम तेजहीन विदितहोतेहो परन्तु मैं तुमको पराजित नहीं जानताहूं हे भरतर्षभ यह क्या बातहै हे अर्जुन जोसेरे सुनाने

के योग्य बात होयतो मुझसे शीघ्रकहनेको योग्य हो ५।६ अर्जुनने कहा कि जो वह मेघवर्ण शोभायमान दिव्य कमललोचन श्रीकृष्णजीथे वह बलदेवजी समेत अपने शरीर को त्यागकर स्वर्ग को गये ७ फिर प्रभास क्षेत्रमें उस मूसलकी उत्पत्तिके द्वारा वृष्णी वीरोंका नाशहुआ जो कि ब्रह्मशापसे उत्पन्न नाश कारी और रोमांचका खड़ा करनेवालाथा ८ हे ब्राह्मणवर्य्य जो वह भोज वृष्णी अन्धक शूरवीर महात्मा बड़ेपराक्रमी और सिंहके समान अहंकारी थे उन्होंने युद्धमें परस्पर एकने एककोमारा ९ परिघकी समान भुजा रखनेवाले गदापरिघ और शक्तियोंके सहनेवाले वह सब लोग पटेलोंसे मारेगयेइस समयकी विपरीतताको देखो वह पांचलाख शूरवीर परस्परसन्मुखहोकरकालवश हुये१०।११मैं अब वारंवार चिन्ताकरताहुआ बड़ेपराक्रमी यादवों के और यशस्वी श्री कृष्णजी के नाशका नहीं सहसक्ताहूं१२ जिसप्रकार समुद्रको शुष्कता पर्व्वतकाचलना आकाशका गिरना और अग्निका शीतल होना असंभवहै उसी प्रकार १३ मैं शार्ङ्ग धनुष धारी श्री कृष्णके नाशको भी श्रद्धाके अयोग्य मानताहूं इस लोकमें मैं श्रीकृष्णसे जुदा नियत रहना नहीं चाहताहूं १४ इससे अधिकतमजो दूसरा दुःखहै हे तपोधन उसको सुनो कि जिसके कारण मुझ बारंवार चिन्ता करनेवाले का हृदय फटा जाताहै १५ हे ब्राह्मणवर्य्य पंचनद देशमें रहनेवाले हजारों आभीरोंने मेरे देखते हुये समीप आकर वृष्णियोंको हरण करलिया १६ मैं वहां धनुषके चढ़ानेमें भी असमर्थ होगया, जैसा कि पूर्व्व समयमें मेरी भुजाओंका भुजबलथा वह उस समय पर नहीं हुआ हे महामुनि मेरे नाना प्रकार के अस्त्र भी स्मरण में नहीं आये और मेरे बाण क्षणमात्र में भी चारों ओर से नाशमान हुये १७।१८ पुरी रूप शरीरों में नियत अप्रमेयात्मा शंख चक्र गदाधारी चतुर्भुज श्याम दलके समान नेत्र रखनेवाला पिताम्बरधारी १९ जो महातेजस्वी पुरुष मेरे रथके आगे शत्रुओंकी

सेनाको भस्मकरताहुआ वर्त्तमान होताथा मैं उस अविनाशीको नहीं देखता हूं २० जिसने प्रथमही अपने तेजसे शत्रुओंकी सेनाओंको भस्मकिया फिर मैंने उनको अपने गांडीवके छोड़हुये बाणोंसे नाशकिया २१ हे बड़ेसाधू उसको न देखता मैं ब्याकुल चित्त होकर घूमताहुआ शान्तीकोनहीं पाताहूं २२ मैं बिनावीर श्रीकृष्ण के अपना भी जीवननहीं चाहताहूं परम धाममें जानेवाले बिष्णुको सुनकर मेरी दिशा भी मोहित होगई २३ हे बड़े साधू आप मुझे कल्याणकारी उपदेश करनेको योग्य हो क्योंकि मैं बलपराक्रम से अपने सजातीय भाई बन्धुआदिकसे रहित औरअस्त्रादिकों से खाली होकर ब्याकुल हूं २४ ब्यासजीबोले हे कौरव्य ब्रह्म शापसे भस्मीभूत वृष्णी और अन्धक महारथी लोगोंका नाशहुआ उनको शोच करना तुमको योग्यनहींहै २५ वह उसीप्रकार होतब्यताथी क्योंकि उनमहात्माओंका वह प्रारब्धभी हीन होगया कि शापदूरकरने में सामर्थ्यवान् श्रीकृष्णजीनेभी ध्याननहीं किया २६ गोविन्दजी तीनों लोकोंकेभी संपूर्ण जड़चैतन्योंको बिपरीत दशामें करसक्तेथे फिर उनमहात्मा को शापका दूरकरना कितनी बड़ीबातथा जोवह चक्रगदाधारी पुराणपुरुष चतुर्भुज वासुदेवजी प्रीतिसे तेरे रथके आगे चलतेथे२७।२८उस बड़ेनेत्रधारी श्रीकृष्णजीने पृथ्वीकाभारउतार शरीर कोत्यागकर अपने परमधामको पाया२९हे पुरुषोत्तम महाबाहु अर्जुन तुमनेभी भीमसेन नकुल औरसहदेव समेतहोकर देवताओं का बड़ा कार्य्य किया ३० हे कौरवों में श्रेष्ठ मैं तुमको कृतकृत्य और अच्छा सिद्ध मानताहूं हे प्रभु तुम्हारा इससंसारका त्यागना समयके अनुसार कल्याणकारीहै ३१ हे भरतबंशी इससेपूर्व्वर्य के समयों में मनुष्योंकी बुद्धि तीक्ष्ण औरआगामी उत्पन्न होती है और नाशके समयपर नाशहोतीहै यह सब कालकोही मूल रूप रखनेवालाहै फिर कालही अपने आप इनसंसारके बीजरूप पंचतत्त्वोंको अपने में लयकरताहै३२।३३ वही काल पराक्रमीहो

कर फिर निर्बल होताहै वही इसलोकमें ईश्वर होकर दूसरोंकाभी आज्ञावर्त्ती होताहै अर्थात् विजय भी कालहीसे होतीहै ३४ अब वह अस्त्र कृतकर्मी होकर जहां से आयेथे वहीं को चलेगये जब समय होगा तब फिर तेरे हाथ में आवेंगे ३५ हे भरतवंशी आप लोगोंको भी मुख्य गतिमिलने का यही समयहै हे अर्जुन मैं इसी को आप सबलोगों का परम कल्याण मानताहूं ३६ वैशंपायन बोले कि बड़े तेजस्वी व्यासजीके इस बचन को जानकर उनसे आज्ञालेकर अर्जुन हस्तिनापुर नगरको चला ३७ और अर्जुन ने पुरीमें प्रवेश करके युधिष्ठिरके पास जाकर अन्धक वृष्णियोंका जैसा वृत्तान्तथा सब यथावस्थित वर्णन किया ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांमौसलपर्व्वणिअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

इति मूसलपर्व्व समाप्तः ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी

जनवरी सन् १८८६ ई० ॥

——॥——

श्रीगणेशाय नमः

महाभारत भाषा

प्रास्थानिक पर्व

—०—

जिसमें

द्रौपदी सहित पांचों भाइयोंका उत्तरदिशाकीओर गलनेकेलिये
जाना उनमें द्रौपदी, नकुल, सहदेव, अर्जुन और भीमसेन
का गलजाना और इन्द्रका विमान लाकर युधिष्ठिर
को सवार कराके सदेह परमधामको लेजाना
इत्यादि कथा वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोर जी
(सी,आई,ई) ने अपने व्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि
चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरण जी से
संस्कृत महाभारत का यथातथ्य पूरे श्लोक
श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

—※—

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा

जनवरी सन् १८८९ ई०

पहलीबार ६००

अथ महाभारतभाषा प्रास्थानिक व स्वर्गारोहणपर्व्वकासूचीपत्र प्रारम्भः ॥

इतिमहाभारत भाषा प्रास्थानिक व स्वर्गारोहणका सूचीपत्र समाप्त ॥

महाभारतभाषा प्रास्थानिक पर्व्व ॥

—*—

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनंसान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वारायमस्तकमालयलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रविम्वा ध्येयप्रभानः प्रतिभांव्यनक्तु २ पांडवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंवन्देवादरायणम् ३ विद्याविदग्रेसरभूषणेन विभूष्यतेभूतलमग्रयेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ तथैवप्रास्थानिकरम्यपर्व्वभाषानुवादं विदधातिसम्यक् ५ ॥

अथ प्रास्थानिकपर्व्व प्रारम्भः ॥

श्रीनारायणजी और नरोत्तम नरको और सरस्वती देवी को नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहासको वर्णन करता हूं कर्मोंसे कृतकृत्य महा असह्य दुःखोंमें फँसे हुये पुरुषोंको महा प्रस्थानादिक उपायोंसे शरीर का त्यागना योग्यहै इसको प्रकट करते हुये पर्वका प्रारंभ करते हैं इसमें स्वर्गके प्राप्तहोने के हेतुओंके गुण और स्वर्गकी रुकावट के दोषोंको वर्णनकरेंगे-जनमेजयने प्रश्न किया कि इस प्रकारसे अन्धक और वृष्णियोंके घराने में मूसल से संबन्ध रखनेवाले युद्धको सुनकर और

उस प्रकार श्रीकृष्णके स्वर्ग जानेपर पांडवोंने क्याकिया १ वैशं-पायन बोले कि कौरवराज युधिष्ठिर ने इसप्रकार वृष्णियोंका अत्यन्त नाश सुनकर और स्वर्गजाने के मनोरथके द्वारा घरसे निकलनेमें बिचार करके अर्जुनसे यहवचन कहा कि हे बड़ेबुद्धि-मान अर्जुन कालही सबजीवोंको अपने में लयकरताहै मैं काल फांसीको स्वीकार करताहूं तुमभी इसमें बिचार करने के योग्य हो २। ३ इसप्रकार आज्ञप्त और काल२ कहते हुये उस अर्जुनने बुद्धिमान बड़ेभाईके उस बचन को अंगीकार किया इसीप्रकार भीमसेन नकुल और सहदेवने अर्जुनके बिचारको मनसे जानकर उसी बचनको स्वीकार किया जोकि अर्जुनने कहाथा ४। ५ इस के पीछे धर्मकी इच्छासे राज्यको त्याग करते युधिष्ठिरने युयुत्सु को बुलाकर सब राज्य उसके सुपुर्दकिया ६ फिर दुःखसेपीड़ामान राजा युधिष्ठिरने अपने राज्यपर परीक्षितको अभिषेक कराके सुभद्रासे यह बचन कहा कि यह तेरा पौत्र कौरवराज होगा और नाशहोनेसे बचा हुआ बज्रनाभ यादवोंका राजा कियागया ७। ८ हस्तिनापुरमें राजा परीक्षित और इन्द्रप्रस्थ में यादवोंका राजा बज्रनाभ तुमसे रक्षाकरनेके योग्यहै अधर्म में कभी चित्तनकरना इसप्रकार के बचनोंको कह कर निरालस्य उस धर्मात्मा युधि-ष्ठिरने भाइयोंसमेत उन बुद्धिमान वासुदेवजी बलदेवजी वृद्धमामा और सब यादवोंका जलदान करके बिधिके अनुसार उनके श्रा-द्ध किये ९। १०। ११ उस उपाय करनेवाले युधिष्ठिरने हरिके नामसे व्यास नारद तपोधन मार्कण्डेय भारद्वाज और याज्ञवल्क्य-को उत्तमस्वादु युक्त भोजनकराके और शार्ङ्ग धनुषधारीका कीर्-र्त्तन करके रत्न वस्त्रग्राम घोड़े और रथ ब्राह्मणोंको दान कि-ये १२। १३ उस समय हजारों दासी दासभी ब्राह्मणों को दान किये हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ जनमेजय फिर गुरु कृपाचार्य्य जी जोकि पुरवासियोंके अग्रवर्त्तीथे उनकी पूजा करके १४ उनके शिष्य परीक्षितको उनके सुपुर्द किया फिर राजर्षि युधिष्ठिरने

सब राज्यको अधिकारी सेवक और प्रजाके लोगोंको बुला-
कर १५ अपनी इच्छाके सबकामोंको वर्णन किया उसके उस
वचनको सुनकर अत्यन्त व्याकुल चित्त पुरवासी और देश-
वासियोंने उस वचनको स्वीकार नहीं किया तब उन्होंने उस
राजासे कहा कि इस रीतिसे आप को न करना चाहिये तब
धर्मके और समय के ज्ञाता राजा युधिष्ठिर ने उस प्रकार से
नहींकिया और पुरबासी और देशबासी मनुष्यों को सलाह का
देनेवाला करके १६। १७। १८ चलने का विचार किया उससमय
इसके उन सब भाइयोंने भी उसके साथ चलना अंगीकार किया
फिर कौरव धर्मपुत्र राजायुधिष्ठिरने १६ भूषण और पोशाकको
अपने अंगोंसे उतारकर बल्कल बस्त्रोंको धारण किया हे भरत-
वंशियों में श्रेष्ठ वहनरोत्तम राज्यके त्यागने के समय विधि पू-
र्वक इष्टीयज्ञको करके२०।२१और सब अग्नियोंको जलमें छोड़-
कर चलदिये फिर सब स्त्रियां उन प्रस्थान करनेवाले नरोत्तमों
को जिनकी छठवीं द्रौपदी थी देखकर ऐसे विह्वल होकर रोने
लगीं २२ जैसे कि पूर्व समयमें द्यूतकर्म में हारेहुओं को देखकर
रुदन करनेवाली हुईथीं और चलने में सब भाइयोंकी प्रसन्नता
प्रकट हुई २३ वृष्णियों का नाशदेखकर और युधिष्ठिरकासम्मत
जानकर—पांचों भाई छठवीं द्रौपदी और सातवां बड़ा साधू
एक कुत्ताथा २४ अपने शरीरसे सातवां राजायुधिष्ठिर हस्तिना-
पुरसे निकला सब पुरवासी और स्त्रियां दूरतक उनके पीछे २
गईं २५ उससमय कोई मनुष्य भी राजा युधिष्ठिर से ऐसा कहने
को नहीं समर्थ हुआ कि आप लौटो इसके पीछे नगर निवासी
सब लोग लौट गये २६ कृपाचार्य्यादिकने युयुत्सुके पास अपनी
वर्त्तमानताकी और हे कौरव सर्पकी पुत्री उलूपी गंगामें प्रवेश
करगई चित्राङ्गदाभी मणिपुर नगरको गई शेषबची हुई अन्य
माताओंने परीक्षितकेपास निवासकिया २७।२८ हेकौरव फिर
उपवास करनेवाले महात्मा पाण्डव और यशस्विनी द्रौपदी पूर्व

की ओरको चले २९ योग से संयुक्त और धर्म संन्यास प्राप्त करने के इच्छावान् वह महात्मा बहुत से देशोंको देखते हुये नदी औरसागरों पर गये ३० युधिष्ठिर आगे चला और उसके पीछे भीमसेन उसके पीछे अर्जुन उसके पीछे नकुल और सहदेव ३१ और सबसे पीछे कमलदलके समाननेत्र रखनेवाली स्त्रियों में उत्तम श्यामा सुन्दरी द्रौपदी चलीं ३२ हे भरतवंशियों में बड़े साधू जनमेजय एक कुत्ता उनवनजानेवाले पांडवों के पीछे चला वह वीर इसक्रमसे लोहती सागरको गये ३३ हे महाराज अर्जुनने रत्नोंके लोभसे दिव्य धनुष गांडीव और अक्षय तूणी-रोंको त्याग नहीं किया वहां उन्होंनेसाक्षात पुरुष रूपसे पर्व्वत की समान आगे नियत मार्गको रोकेखड़ेहुये अग्निकोदेखा३४।३५ उसअग्नि देवताने पांडवों से यह कहाकि हे वीर पाण्डव लोगो में अग्निहूं ३६ हे महाबाहु युधिष्ठिर हे परन्तप भीमसेन हे वीर अर्जुन और नकुल सहदेव तुममेरे इसवचनको जानो ३७ हे उत्तम कौरव में अग्निहूं मैंने अर्जुन और नारायण के प्रभावसे खांडव वनको भस्म किया ३८ यह तुम्हारा भाई अर्जुन श्रेष्ठ अपने आयुध गांडीवको छोड़कर वनको जाय इससे अब कोई प्रयोजन नहींहै ३९ जो रत्नों का चक्र महात्मा श्रीकृष्णजी के पास था वहभी स्वर्गको गया फिर काल पाकर दूसरे अवतारमें उनके हाथ आवेगा ४० मैं पूर्व्वसमय में यह उत्तम गांडीव धनुष अर्जुन के निमित्त वरुणासे लायाहूं वह आप मुझको वरुणके देनेके लिये दीजिये ४१ फिर उन सब भाइयोंने अर्जुनको प्रेरणा करी उसने उस धनुषको और दोनों अक्षय तूणीरोंको जलमें डाल-दिया ४२ हेभरतर्षभ इसके पीछे अग्नि देवता वहांही अन्तर्द्धान होगये और वह वीर पाण्डव दक्षिण कीओर चलदिये ४३ इसके अनन्तर वह पाण्डव समुद्रके उत्तरीय तटसे दक्षिण और पश्चिम के कोणमें नैर्ऋतिदिशाको चले ४४ फिर पश्चिम दिशाको लौटनेवाले उन पाण्डवोंने सागरसे डूबीहुई द्वारका को

भी देखा ४५ पृथ्वीकी परिक्रमा करने के अभिलाषी योग धर्म धारी भरतवंशियों में बड़े साधू वह पाण्डव उत्तर दिशाको लौट कर चलदिये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेप्रास्थानिकेपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः१ ॥

दूसरा अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि फिर उत्तरदिशा में नियत सावधानचित्त योगसेसंयुक्त उन पाण्डवों ने हिमालय पर्व्वतको देखा १ उसको भी उल्लंघन करके पाण्डवोंने बालूके समुद्रको देखा और पर्व्वतों में श्रेष्ठ मेरुनाम बड़े पर्व्वतको भी देखा २ उन सब शीघ्र गामी योगधर्म रखनेवालों के मध्य में ध्यानसे चित्त हटानेवाली द्रौपदी पृथ्वीपर गिरपड़ी ३ महाबली भीमसेनने उस गिरीहुई द्रौपदीको देखकर और विचार करके धर्मराजसे यह कहा कि हेपरंतप इस पत्नीसे कभी कोई अधर्म नहीं हुआ फिर किस कारणसे द्रौपदी पृथ्वीपर गिरपड़ी ४।५ युधिष्ठिरबोले हेपुरुषों में बड़े साधू भीमसेन सुनो इसको प्रीति अधिकतासे अर्जुनमेंथी अब यह उसीके फलको भोगतीहै ६ वैशंपायन बोले कि भरतवंशियोंमें बड़े साधू बुद्धिमान् धर्मात्मा पुरुषोत्तम युधिष्ठिर इसप्रकार कहके और उसको न देखकर चित्तको समाधि में नियत करके चलदिया ७ फिर बुद्धिमान् सहदेव पृथ्वीपर गिरा भीमसेन ने उस सहदेवकोभी गिराहुआ देखकर राजासे कहा ८ कि जोयह सहदेव हम सबकी सेवाकरनेवाला अहंकारसे रहितहै वह सहदेव किसकारण से पृथ्वीपर गिरा ९ युधिष्ठिर बोले कि इसने अपने समान किसीकोभी बुद्धिमान नहीं माना इसीहेतु सेयह राजकुमार उस अपने दोषसे पृथ्वीपर गिरा १० वैशंपायन बोले कि यह कहकर वह कुन्तीका पुत्र युधिष्ठिर उस सहदेव कोभी छोड़कर भाइयों और कुत्तेसमेत चलदिया ११ द्रौपदी और पांडव सहदेवको गिराहुआ देखकर पीड़ामान बांधवोंका प्यारा

शूर नकुलभी गिरपड़ा १२ तब उस सुन्दर दर्शनवाले वीर नकु-
लके गिरने पर फिर भीमसेनने राजासे यह वचन कहा १३ जो
यह धर्म में पूर्ण गुरुका आज्ञाकारी स्वरूप से संसारभरे में अनु-
पम नकुलहै वह पृथ्वीपर गिरा १४ भीमसेन से इसप्रकारकहने
वाले सब बुद्धिमानों में श्रेष्ठ धर्मात्मा युधिष्ठिर ने नकुलके विषय
में उत्तर दिया १५ कि इसको यह निश्चयथा कि स्वरूप में मेरे
समान कोई नहींहै मैं अकेलाही रूपमें सबसे अधिकहूं यहइसके
चित्त में नियतथा १६ इसीहेतुसेनकुल गिरपड़ा हे भीमसेन तुमआवो
हे वीर जिसका जो कर्महै वह उसको अवश्य भोगताहै १७ फिर
उन तीनोंको गिराहुआ देखकर शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला
पांडव अर्जुन गिरपड़ा उस अजेय इन्द्रके समान तेजस्वी अर्जुनके
गिरने और मरनेपर भीमसेनने राजासेकहा १८।१९ कि मैंस्वत-
न्त्रताकी दशामें भी इसमहात्मा अर्जुनका कोई मिथ्याकर्म नहीं
स्मरणकरताहूं फिर यह कौनसे कर्मकेफलसे पृथ्वीपरगिरा २०
युधिष्ठिरनेकहा कि इसने कहाथा कि मैं एकहीदिनमें शत्रुओंका
नाशकरूंगा सो इसने उसकोनहींकिया इसहेतुसे अपनेकोशूरवीर
माननेवाला यह अर्जुन पृथ्वीपरगिरा २१ जैसा कि इस अर्जुनने
सब धनुषधारियोंका अपमान किया वैसा ऐश्वर्य्य चाहनेवाले
मनुष्यको करना योग्यनहींहै २२ वैशंपायनबोले कि राजा यह
कहकर चलदिया फिर भीमसेन गिरा तब उस गिरेहुये भीमसेनने
धर्मराजसे यहकहा २३ हे राजा देखो मैं आपकाप्याराहोकरभी
गिरपड़ा मेरेगिरनेका जो कारण आपजानतेहो तो मुझसेकहो २४
युधिष्ठिरबोले हेभीमसेन तुमने नियत परिमाणसे अधिक भोजन
किया और दूसरेको ध्यान में न लाकर तू अपने बलकी प्रशंसा
करताथा इसहेतुसे पृथ्वीपर गिराहै २५ महाबाहु युधिष्ठिर उससे
ऐसाकहकर उसकोभी नदेखताहुआ चलदिया और वह कुत्ताभी
उसके पीछेगया जिसको कि बारंबार मैंने तुमसेकहा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेमहाप्रास्थानिकेपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय॥

वैशंपायन बोले कि इसकेपीछे इन्द्र देवता अपने रथके शब्द से पृथ्वी और आकाशको शब्दायमान करते सन्मुखआये और उसयुधिष्ठिरसे कहा कि सवारहो १ भाइयों को गिरा देखकर शोकसे दुःखी युधिष्ठिरने इन्द्रसे यह वचनकहा २ कि हे देवेश्वर यहांपर मेरे सबभाई गिरेहैं वहभी मेरे साथजायँ मैं अपने भाइयों के विना स्वर्ग जाना नहीं चाहता ३ हे इन्द्र वह सुखके योग्यको-मल शरीरराजपुत्री द्रौपदीभी हमारे साथमें जाय आपइसहमारी प्रार्थनाको अंगीकार कीजिये ४ इन्द्रने कहा कि तुम स्वर्ग में अपने सबभाइयोंको देखोगे वह तुमसेभी पहले द्रौपदीसमेत स्वर्ग को गयेहैं हे भरतर्षभ तुम शोच मतकरो ५हे श्रेष्ठ वह तेरे सबभाई मनुष्यशरीरको त्यागकरके स्वर्गको गये और तुम इसीशरीरसे निस्सदेह स्वर्गको जावोगे ६युधिष्ठिर बोले कि हे भूत भविष्यके ईश्वर यह कुत्ता सदैवसे मेरा भक्तहै यहभी मेरे साथजाय इससमय मेरी बुद्धिदयासे पूर्णहै७ इंद्रबोले हे राजा अबतुमने मेरीसमानता, अमरपदवी,बड़ीलक्ष्मी, बड़ीसिद्धी, और स्वर्गके सुखोंको प्राप्त किया तुमकुत्तेको त्यागकरो इसमें निर्दयता नहींहै ८ युधिष्ठिर बोले हे श्रेष्ठ देवता इंद्र श्रेष्ठपुरुषसे नीचकर्म करना असंभव है चाहोउस लक्ष्मीकी प्राप्ती मुझको न होय जिसके कारण भक्त जनको त्यागकरूं ९ इंद्रबोले कि स्वर्गमें कुत्ते पालनेवालों का स्थाननहींहै क्योंकि क्रोधवशनाम देवता उस अपवित्र मनुष्य के इष्टापूर्त्त यज्ञ बावड़ी और कूपादिकोंको नष्टकरदेतेहैं हेधर्म-राज इसीहेतुसे विचार पूर्व्वक कर्म करो कुत्तेको त्यागो इसमें निर्दयता नहींहै १०युधिष्ठिर बोले हे महाइन्द्र भक्तका त्यागना बड़ा अधर्म्म कहाहै वह लोकमें ब्रह्महत्या के समान है इसीहेतुसे अब अपने सुखका चाहनेवाला मैं किसीदशा में भी इस कुत्तेको त्याग नहीं करूंगा ११ मैं अपनेप्राणोंके नाश होजानेपर भी

नीचे लिखे हुये लोगोंको त्याग नहीं करूंगा यह मेरा प्राचीनव्रत है भयभीत, भक्त, दूसरा मेरा रक्षास्थान नहींहै इसप्रकार कहने वाला शरणागत—पीड़ामान, घायल, प्राणकी रक्षा चाहने वाला १२ इन्द्रबोले कि क्रोधवशानाम देवता कुत्तेकी देखी हुई इनवस्तुको हरलेते हैं किया हुआ दान विस्तृत यज्ञ और होम इनसबको हरलेतेहैं इसहेतुसे इस कुत्तेको त्यागकरो तुम कुत्तेके त्यागने से देवलोकको पावोगे १३ हे वीर तुमने भाइयों को और द्रौपदी को भी त्यागकरके अपने कर्मसे लोकको पाया इसकुत्तेको क्योंनहीं त्यागतेहो तुमने जब कि सर्वस्व त्याग किया है तब कैसे मोहको प्राप्त होतेहो १४ युधिष्ठिर बोले कि लोकोंमें मर्य्यादहै कि मृतक मनुष्योंसे सन्धि और विग्रहनहींहै वह मुझसे सजीव करने असंभवहैं इसीहेतुसे उनको त्यागकियाहै जीवतेलो-गोंको नहीं त्यागाहै १५ शरणागतको भयभीत करना स्त्री का मारना ब्राह्मणोंका धनहरलेना मित्रसे शत्रुता करना यह चारों और एकभक्तका त्यागना समानहै यह मेरा मतहै १६ वैशंपायन बोले कि प्रीतियुक्त धर्मस्वरूप भगवान्‌ने धर्मराजके उसवचनको सुनकर प्रशंसायुक्त मधुरवचनों के द्वारा महाराज युधिष्ठिरसेक-हा १७कि हे भरतबंशी राजेन्द्र तुम बापदादोंकी रीतिबुद्धि और सबजीवोंमें नियत इसदयासे कुलीनहो १८ हे पुत्रइससे प्रथम द्वैत बनमें मैंने परीक्षा करीथी जहांपर जलके खोज करनेवाले तेरे भाइयों को मैंने मृतकरूप कियाथा जिस स्थानपर तुमने अपनी दोनोंमाताओंकी समानता चाहते हुये अपनेदोनों भाईभीमसेनऔर अर्जुनको त्यागकरके नकुलका जीवता रहना चाहाथा १९ । २० यह कुत्ताभक्तहै यहजानकर तुमने देवरथको त्याग किया हेराजा इसीहेतुसे स्वर्गमेंतेरेसमान कोईनहींहै २१हे भरतवंशी इसहेतुसेही तुमनेअपने इसीशरीरसे अविनाशीलोक प्राप्तकिये हे श्रेष्ठ तुमने दिव्य और उत्तमगतिको पाया२२ वैशंपायनबोलेकि इसके पीछे धर्मइन्द्र मरुद्गण अश्विनीकुमारदेवता और देवऋषिलोग युधि-

ष्ठिरको रथमेंसवारकर २३ अपने बिमानोंकी सवारीसे चलदिये जो कि वह सिद्ध स्वेच्छाचारी विहारकरनेवाले रजोगुण रहित पवित्र और पवित्रभावीहोकर उत्तमकर्म और बुद्धिके रखनेवाले थे २४ वह कौरव वंश भरका उद्धार करनेवाला राजायुधिष्ठिर उस रथमें सवारहोकरऔरअपनेतेजसेपृथ्वी औरआकाशकोपूर्ण करके ऊपरकीओरकोचला २५ इसकेपीछे सबसृष्टिकेज्ञाता महा तपस्वी ब्रह्मवादी और देवलोक में विराजते हुये नारदजीने बड़े उच्चस्वरसे यह बचन कहा २६ कि जो राजऋषिहैं उनसबको भी मैं जानताहूं परन्तु यह युधिष्ठिर उन सब लोगोंकीभी कीर्त्तिको ढककर सर्वोत्तम पदपरनियतहै२७युधिष्ठिरकेसिवाय ऐसे किसी दूसरे राजाको अपनेनिज शरीरसेही स्वर्गमें आनेवालानहीं सुनाहै जोकि अपने तेजशुभकीर्त्ति और गुरु सेवादिक रीतिसे लोकोंको व्याप्त करकेआयाहोय २८ धर्मात्मा राजायुधिष्ठिरने नारदजीका वह बचनसुनकर देवताओंको और अपने पक्षवाले राजाओं को समसमेंकरके यह वचनकहा कि २९ मेरे भाइयों का स्थानचाहै शुभअथवा पापरूपहै परन्तु मैं उसीको प्राप्तकरना चाहताहूं दूसरे कोनहीं चाहताहूं ३० देवराज इन्द्रने राजाका बचन सुनकर उस दयावान् युधिष्ठिरको यह उत्तरदिया३१कि हे राजेंद्र शुभकर्मों से विजय होनेवाले इस स्थानपर निवास करो क्या तुम अब भी मनुष्यभाव की प्रीति को काममें लातेहो ३२ हे कुरुनन्दन तुमने ऐसी परमसिद्धी को पायाहै जैसी कि किसी दूसरे मनुष्यने कभी कहीं नहीं पाईहै तेरे भाइयों ने उस स्थानको नहीं पाया ३३ हे राजा अब भी तुमको मानुषी प्रीति स्पर्शकरतीहै यह स्वर्गहैयहां देवऋषिलोग और स्वर्गवासी सिद्धोंको देखो ३४ बुद्धिमान् युधि-ष्ठिरने इसप्रकार कहनेवाले देवेश्वर इन्द्रसे फिर यह सार्थकवचन कहा ३५ हे दैत्य संहारी मैं उन अपने भाइयों के बिना यहां निवास करनेको उत्साह नहीं करता मैं वहांही जाना चाहताहूं जहां कि मेरेभाई गये ३६ और जहाँपर वह बृहतीपुष्पके समान

श्यामा बुद्धि और सतोगुणसे संयुक्त स्त्रियों में श्रेष्ठ द्रौपदी गईहै मैं वहां जाऊंगा ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्यांसंहितायांवैयासिक्यांमहाप्रास्थानिकेपर्व्वणि तृतीयोऽध्यायः ३॥

इति प्रास्थानिक पर्व्व समाप्तः॥

मुन्शी नवलकिशोर के छापेखाने में छपी
जनवरी सन् १८८६ ई०॥

श्रीगणेशाय नमः

महाभारत भाषा

स्वर्गारोहणपर्व

—o—

जिसमें

युधिष्ठिरका नारदजीसे कुरुक्षेत्रमें तनु त्यागेहुए शूरवीरों के निवास स्थान लोक पूंछना और देवताओं से अपने भाइयों के प्राप्तस्थान पूंछकर तनु त्याग के अर्ज्जुनादि के लोकों में प्राप्त होकर श्रीकृष्णचन्द्रजी के दर्शन करना—और स्वर्ग में रहने के स्थान और हरएक वीरके स्वर्गवासकी पृथक् पृथक् अवधि वर्णन और महाभारत के श्रवण करने व करानेका नियम इत्यादि कथा वर्णित हैं ॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस सकलकलाचातुरीधुरीण मुंशीनवलकिशोरजी (सी, आई, ई) ने अपनेव्ययसे आगरापुर पीपलमंडीनिवासि चौरासियागौड़वंशावतंस पण्डित कालीचरणजी से संस्कृत महाभारतका यथातथ्य पूरे श्लोक श्लोक का भाषानुवाद कराया ॥

—o—

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोरके छापेख़ाने में छपा

जनवरी सन् १८८९ ई०

पहलीबार ६००

महाभारतभाषा स्वर्गारोहणपर्व्व ॥

मंगलाचरणम् ॥

श्लोक ॥

नव्याम्भोधरवृन्दवन्दितरुचिं पीताम्बरालंकृतम् प्रत्यग्रस्फुटपुण्डरीक नयनं सान्द्रप्रमोदास्पदम् ॥ गोपीचित्तचकोरशीतकिरणं पापाटवीपावकम् स्वारायमस्तकमाल्यलालितपदं वन्दामहेकेशवम् १ याभातिवीणामिववाद यन्ती महाकवीनांवदनारविन्दे ॥ साशारदाशारदचन्द्रविम्बा ध्येयप्रभानः प्रतिभाव्यनक्तु २ पाण्डवानांयशोवर्ष्म सकृष्णमपिनिर्मलम् ॥ व्यधायिभारतं येन तंवन्देबादरायणम् ३ विद्याविदग्धेसरभूरणेन विभूष्यतेभूतलमद्ययेन ॥ तंशारदालब्धवरप्रसादं वन्देगुरुंश्रीसरयूप्रसादम् ४ विप्राग्रणीगोकुलचन्द्र पुत्रः सविज्ञकालीचरणाभिधानः ॥ तथैवस्वारोहणस्य पर्व्व भाषानुवादंविद धातिसम्यक् ५ ॥

अथ स्वर्गारोहण पर्व्व प्रारम्भः ॥

श्री नारायणको और नरोत्तमनरको और सरस्वतीदेवी को नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहासको वर्णन करताहूं — पहले पर्व में युधिष्ठिरके दृष्टांतसे धर्मके फलरूप त्याग दया आदिक गुण वर्णन किये अब उनका उत्तमफल प्रकट करनेको स्वर्गारोहण पर्व्व का प्रारम्भ करते हैं — जनमेजयने प्रश्नकिया कि मेरे पूर्व पितामह पांडव और धृतराष्ट्रके पुत्रोंने उसस्वर्गको जिस में फलको उत्तमतासे मानो तीनों भवन प्राप्त होते हैं पाकर किन२ स्थानोंको निवासस्थानकिया १ मैं इस सबवृत्तांतको सुना

चाहताहूं क्योंकि आप अपूर्व्वकर्मी व्यास महर्षीसे आज्ञा दिये हुये होकर सर्वज्ञहो यह मेरा मतहै २ वैशंपायनबोले कि तेरे पूर्व पितामह युधिष्ठिरादिकने स्वर्गभवनको पाकर जो कहाउसको सुनो ३ धर्मराज युधिष्ठिरने स्वर्गभवनको पाकर दुर्योधनको स्वर्ग लक्ष्मीसे सेवित और आसनपर बैठाहुआ देखा ४ जोकि सूर्य्य के समान प्रकाशमान वीरोंकी शोभासे संयुक्त प्रकाशमान देवता और पवित्रकर्मी साध्यलोगोंके साथ नियतथा ५ तब दुर्योधनको देखकर और उसके पास लक्ष्मीकोभी देखकर अशान्तचित्त युधिष्ठिर अकस्मात लौटा आशय यहहै कि स्वर्गमें भी क्रोध का त्यागना कठिनहै यह संस्कारोंकी अत्यन्त प्रबलता वर्णनकरी ६ अर्थात वह युधिष्ठिर उच्च स्वरसे इन वचनोंको कहता हुआ लौटा कि मैं इस लोभी दूरदर्शितासे रहित दुर्योधनके साथ लोकोंको नहीं चाहताहूं ७ जिसके कारणसे प्रथम महाबन में बड़े दुःखपानेवाले हमलोगोंने हठको करके सब पृथ्वीके मनुष्य मित्र नातेदार आदिकों को युद्धभूमिमें मारा ८ यह धर्मचारिणी निर्दोष अंग पांचाली द्रौपदी हमारी पत्नी गुरुजनोंके सन्मुख सभाके मध्यमें चरोंओरसे खैंचीगई ९ हे देवतालोगो दुर्योधनके देखने कोभी मैं नहीं चाहता मैं वहांही जानाचाहताहूं जहांपर वह मेरेभाईहैं १० तबहँसतेहुये नारदजीने युधिष्ठिरसेकहा ऐसानहीं कहना चाहिये हेराजेन्द्र इस स्वर्गभवन में शत्रुता आदिकभी दूर होजातीहैं ११ हेमहाबाहु युधिष्ठिर तुम राजादुर्योधन के विषय में किसी दशामेंभी ऐसा मतकहो अब तुम मेरे इस वचनको सुनो यह राजा दुर्योधन इन देवता और राज ऋषियोंसे सन्मान पूर्व्वक प्रतिष्ठा कियाजाता है जोकि यह स्वर्गबासी हैं १२।१३ युद्धमें इसने अपनेशरीरको होमकर वीरलोकको प्राप्त कियाहै यद्यपि देवताओंकेसमान तुम सबलोग सदैवइस दुर्योधनसे दुःख दिये गयेथे १४ तथापि इसने क्षत्री धर्मसे इस स्थानको पाया जोराजा बड़े भय में भी भयभीत नहीं हुआ १५ हे पुत्र जो

तुमको द्यूतसे दुःखप्राप्तहुआ उसको चित्तमेंनधारणाकरनाचाहिये और द्रौपदी के भी दुःखोंको स्मरणान करना चाहिये १६ और जो अपने बिरादरी वालोंसे उत्पन्न दूसरेभी दुःख युद्धों में अथवा अन्य स्थानों में प्राप्त हुये हैं उनको भी स्मरण करना तुमको योग्य नहींहै १७ हेराजा तुम न्याय के अनुसार राजा दुर्योधन से मिलो यह स्वर्गहै यहां शत्रुता नहीं होतीहै १८ नारदजीसे इसप्रकार आज्ञा पायेहुये बुद्धिमान् कुरुराज युधिष्ठिरने भाइयों को पूछा और यह वचन कहा १९ जो सब संसार और मित्रोंके शत्रु पापी अधर्मी दुर्योधनके यह सनातन बीरलोकहैं २० जिसके कारणसे यह सब पृथ्वीके लोग घोड़े मनुष्य और हाथियों समेत नाश होगये और शत्रुताका बदलालेनेके अभिलाषी हमलोग क्रोध से भस्महुये २१ जो मेरे वह भाई बीर महात्मा बड़े ब्रतधारी लोक में बिख्यात शूर और सत्यबक्ताथे अब उन्होंके कौनसे लोकहैं मैं उन लोकों को देखना चाहताहूं सत्यसंकल्प महात्मा भाई कर्ण २२।२३ धृष्टद्युम्न सात्यकी धृष्टद्युम्नके पुत्र और जिन राजा-ओंने क्षत्रीधर्मके द्वारा शस्त्रोंसे मरणको पाया २४ हे नारदजी वह सब राजा कहां हैं हे ब्रह्मन् मैं उनको नहीं देखताहूं बिराट द्रुपद धृष्टकेतु आदिक २५ पांचालदेशी शिखंडी सब द्रौपदीके पुत्र अजेय अभिमन्यु उन सबको देखना चाहताहूं २६॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणिप्रथमोऽध्यायः १॥

दूसरा अध्याय॥

युधिष्ठिर बोले हे देवता लोगो मैं यहां पर बड़े तेजस्वी कर्ण और दोनों भाई युधामन्यु और उत्तमौजसको नहीं देखताहूं जिन महारथियोंने शरीरोंको रणरूपी अग्निमें हवन करदिया और जो राजा और राजकुमार युद्धमें मेरे निमित्त मारेगये १।२ शार्दूलके समान पराक्रमी वह सब महारथी कहांहैं क्या उन बड़े साधुपुरुषोंसेभी यहलोक बिजयकियागयाहै ३ जो उन सब महा-

रथियोंने इनलोकोंको प्राप्तकियाहै तो हेदेवताओ मुझकोभी उन महात्माओं कोही साथ नियत जानो ४ जो उन राजाओंने यह अविनाशी शुभलोक नहीं प्राप्तकियाहै तो मैंभी उन राजा भाई और सजातीलोगोंके बिना यहां नहीं रहूंगा ५ जलदानके विषय में माताका वचन हुआथा कि तुम कर्णका जलदानकरो उसको सुनकर उस समय मैंने दुःख पाया ६ हे देवताओ मैं बारंबार यह पश्चात्ताप करताहूं कि जो मैं उस बुद्धिमानोंमें बड़े कर्णके दोनों चरणोंको माताके चरणकी समान देखकर ७ उस शत्रुओंकी सेनाओंके दुःखदायीके पास नहींगया जो वह हमारा साथीहोता तो इन्द्रभी कर्णसमेत हमलोगोंके विजयकरनेको समर्थ नहींहोता ८ मैं जहां तहां नियत होकर उस सूर्यके पुत्रको देखना चाहता हूं जिसको कि पहले मैंने नहींजानाथा वह अर्जुनकेहाथसे मारा गया ९ प्राणोंसेभी अधिकप्यारे भयकारी पराक्रमवाले भीमसेन को इन्द्रकी समान अर्जुनको और अश्विनीकुमारके समान दोनों नकुल सहदेवको १० और धर्मचारिणी द्रौपदीको देखना चाहताहूं यहांपर मैं निवास करनेकी इच्छा नहीं करताहूं यह सबमें आपसे सत्य सत्यही कहताहूं ११ हे श्रेष्ठ देवताओ मुझ भाइयोंसे वियोगवान् को स्वर्गसे कौन प्रयोजनहै जहांपर वह सब हैं वही स्थान मेरा स्वर्गहै मैं इस स्वर्गको स्वर्ग नहीं मानताहूं १२ देवता बोले हेपुत्र जोउस स्थान में तेरी श्रद्धाहै चलेजाओ बिलम्ब मत करो हम देवराजकी आज्ञासे तेरे प्रियहित में कर्म करनेवाले हैं १३ वैशंपायन बोले हेपरन्तप फिर देवताओंने इसप्रकार कह-कर देवदूतको आज्ञाकरी कि तुम युधिष्ठिरको इसकेभाईआदिक लोगोंको दिखाओ १४ हेश्रेष्ठ इसके पीछे राजा युधिष्ठिर और देवदूत दोनों साथहोकर वहां चले जहां कि वह पुरुषोत्तमथे १५ आगे देवदूत और पीछे राजा होकर उस मार्गमें चले जोमहा अ-शुभ दुर्गम्य पापोंका उत्पत्ति स्थान १६ अन्धकार से पूर्ण भय-कारी बालके समान रूप सिवार घास का रखनेवाला पापोंकी

गन्धियोंसे युक्तमांस रुधिरकी कीच रखने वाला १७ डांस उत्पा-
तक भल्लूक मक्खी और मच्छरोंसे व्याप्त होरहाथा इधर उधर
चारोंओर मृतकोंसे घिरा हुआ १८ अस्थि केशोंसे युक्त कृमि
कीटोंसे पूर्ण अत्यन्त प्रकाशमान अग्निसे चारोंओर को घिरा
हुआ १९ लोहेके समान तीक्ष्ण नोकवाले काक गिद्ध आदिक
का भ्रमण स्थान विन्ध्याचल पर्व्वतके समान सूची मुख प्रेतोंसे
संयुक्त २० रुधिर मज्जासे युक्त टूटे भुज हाथ उदर चरणवाले
जहां तहां पड़ेहुये प्रेतोंसे संयुक्तथा २१ मार्गमें बहुत विचारोंको
करता वह धर्मात्मा राजा युधिष्ठिर उस मार्ग में होकर चला जो
कि मृतकोंकी दुर्गन्धिसे संयुक्त अकल्याण रूप रोमांच का खड़ा
करनेवाला था २२ उष्णजलसे पूर्ण अत्यन्त दुर्गम्य नदीको भी
देखा तीक्ष्णधार क्षुराओंसे संयुक्त असिपत्रवाले वृक्षोंके जंगलको
भी देखा २३ श्वेत और सूक्ष्म गरम बालूको और लोहेकी शि-
लाओंको पृथक् २ देखा चारोंओर गरमतेलसे पूर्ण लोहेके क-
ड़ावोंको देखा २४ फिर युधिष्ठिरने पापोंके दण्ड स्थान उस कूट
शाल्मलिक वृक्षको भी देखा जोकि दुःखसे स्पर्शहोनेवाला और
तीक्ष्ण कंटक रखनेवालाथा २५ उसने उस दुर्गन्धी को देखकर
देवदूतसे कहा कि हमको ऐसे मार्गमें होकर कितना चलना पड़े-
गा २६ वहमेरेभाई कहांहैं उनको मुझे बताओ और यहदेवताओं
का कौनसा देशहै इसको जाननाचाहताहूं २७ वह देवदूत धर्म-
राजके वचन को सुनकर लौटा और कहने लगा कि तेरा जाना
केवल इसी स्थान तकहै २८ अब मुझको लौटनाउचितहै मुझको
देवताओंने इतनीही आज्ञादीहै हेराजेन्द्र जोआप श्रमित होगये
हो तो लौटआना योग्यहै २९ हेभरतवंशी उस दुर्गन्धीसेअचेतव्या-
कुल और लौटने को प्रवृत्तचित्त होकर राजायुधिष्ठिर लौटा ३०
अर्थात् दुःखशोकसे घायलहोकर वह धर्मात्मा लौटा और लौटते
समय उस स्थान में कहनेवालोंके इन दुःखोंके वचनोंको इसने
सुना ३१ कि हेपवित्र कुलवाले धर्मपुत्र राजर्षि पाण्डव तबतक

हमारे ऊपर अनुग्रह करनेके लिये एकमुहूर्त्तभर ठहरो ३२हेतात तुम्ह अजेयके आनेपर आपकी सुगन्धिसे संयुक्त होकर जो पवित्र वायु चलती है उससे हमको सुखहोता है ३३ हेराजाओं में बड़े साधू पुरुषोत्तम युधिष्ठिर सो हमतुमको देखकर बहुत कालतक सुखको पावेंगे ३४ हेमहाबाहु भरतवंशी कौरव एक मुहूर्त्त पर्य्यन्त यहां निवास करो तेरे नियत होनेपर दुःख दूरहोजानेसे यहां की वेदना हमको पीड़ानहींदेतीहै३५हेराजातब उसने उसस्थानपर चारोंओरसे कहनेवाले दुखिया लोगोंके इसप्रकारके अनेककष्ट युक्त बचनोंको सुना ३६ वह दयावान् युधिष्ठिर उन दुखियाओं के दुःखित बचनोंको सुनकर खड़ा होगया और कहा कि बड़ा खेदहै ३७ उसपांडवने प्रथमही बारम्बार सुनेहुये निर्बलदुखियाओंके बचनोंको नहींजाना ३८ उनबचनोंको न जानते हुये धर्मपुत्र युधिष्ठिरने कहाकि आप कौनहैं और यहां किस निमित्त नियतहो ३९ हेप्रभु राजाके इसबचनको सुनकर उनसबने चारों ओरसे उसको उत्तर दिया कि मैं कर्णहूं मैं भीमसेनहूंमैंअर्जुनहूं ४० मैं नकुलहूं मैं सहदेवहूं मैंधृष्टद्युम्नहूं मैंद्रौपदीहूं और हमद्रौपदी के पुत्रहैं वहसब इसरीतिसे पुकारे ४१ हेराजा तब उसराजायुधिष्ठिरने उसदेशके समान उन बचनोंको सुनकरबिचार किया कि यह क्या दैवकर्महै ४२ सुन्दरी द्रौपदी वा द्रौपदी के पुत्र और कर्णादिक महात्माओंसे वह कौनसा पापकर्म होगयाहै ४३ जो यह इस पापकी दुर्गन्ध रखनेवाले बड़े भयकारी देशमें नियतहैं मैं इनसब पवित्रकर्मी पुरुषोंके पाप कर्मको नहीं जानताहूं ४४ धृतराष्ट्रका पुत्र राजा दुर्योधन महापापात्मा अपने साथियोंसमेत कौनसा कर्मकरके उसप्रकार लक्ष्मीवान्है ४५ जोकि महाइन्द्रके समान लक्ष्मीवान और बड़ापूजितहै अब यहकिसकर्मका फलहै जो यह नरकमें वर्त्तमानहुये ४६ यहसब धर्मज्ञ शूरसच्चे शास्त्रोंके अनुसार कर्मकर्त्ता सन्तयज्ञोंके करनेवाले और बड़ी दक्षिणादेनेवालेथे ४७ क्यामैं सोताहूं जागताहूं और अचेतहूं बड़ा आश्चर्य्य-

कारी यह चित्तका विभ्रमहै अथवामेरे चित्तकीही भ्रान्तीहै ४८ दुःख और शोकसे पूर्ण सन्देहसे व्याकुलचित्त राजा युधिष्ठिरने इसरीतिसे अनेकप्रकारका विचार किया ४९ और बड़क्रोधयुक्त होकर उसने देवताओं समेत धर्मकी निन्दा करी ५० बड़ी कठिन दुर्गन्धिसे दुःखीउस राजाने देवदूतसे कहा कि तुम जिनके आज्ञा-वर्तीहो उनकेपासजाओ ५१ मैंवहांनहीं जाऊंगा यहांहीं नियतहूं हेदेवदूत तुमजाकर उनसे कहौकि यहमेरे भाई मेरी समीपता से सुखीहैं ५२ तब बुद्धिमान युधिष्ठिरकी आज्ञासे वहदेवदूतवहां गया जहांपर कि देवराज इन्द्रथे ५३ उसने वहां जाकर जैसा२धर्मराज ने कहाथा और जो २ उसके चित्तकी इच्छाथीं वह सब इन्द्रसे कहीं ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणिद्वितीयोऽध्यायः२॥

तीसरा अध्याय॥

वैशंपायन बोलेकि हे कौरव वहांएक मुहूर्त्ततक धर्मराजयुधि-ष्ठिरके नियतहोनेपर इन्द्रको आगेरखनेवाले सबदेवता उसस्थान पर आपहुंचे १ वहस्वरूपवान् धर्म देवताभी राजाके देखनेको वहां आयेजहांपर कि यहकौरवराज युधिष्ठिरथा २ हेराजाउनपवित्र कुल औरकर्मवाले प्रकाशरूपशरीर वालेदेवताओंकेआनेपर वह अन्धकार दूर होगया ३ औरपापियोंके दंडका स्थान वैतरणीनदी भी कूटशाल्मली वृक्षसमेतदिखाई नहींदी और जो चारोंओरको भयानकरूप उष्णतेलसे भरे लोहेके कड़ाव और भयकारीशिलाथीं वहभीदृष्टिसे गुप्त होगईं ४।५ हे भरतवंशी तब देवताओं के सन्मुख नियत अत्यन्त शीतस्पर्शसे सुखदायी पवित्र सुगन्धियोंसे भरी सुखदायक वायु चली इन्द्रसमेत मरुद्गणआठवसु अश्विनीकुमार ६।७ साध्यगण ग्यारह रुद्र द्वादशसूर्य्य और जो २ अन्य देवता सिद्ध और महर्षिहैं वह सब वहां आये जहांपर बड़ा तेजस्वी धर्म का पुत्र राजा युधिष्ठिर नियतथा उसके पीछे बड़ी शोभासे युक्त

देवराजइन्द्रने ८।९ विश्वासयुक्त युधिष्ठिरसे यह बचन कहा कि हे महाबाहु युधिष्ठिर तेरे लोक अविनाशीहैं १० हेपुरुषोत्तम आओ आओ इतनेहीसे कृतकृत्यता प्राप्तकी हेप्रभु तुमने सिद्धी प्राप्त की हेमहाबाहुइसीसे तेरेलोकभी अविनाशीहैं ११तुमको क्रोध न करना चाहिये मेरे इसबचनको सुनो हे तात सबराजा लोगोंको अवश्य नरकदेखनेके योग्यहै १२ हे पुरुषोत्तम शुभ और अशुभ कर्मोंके दोढेरहैं जोप्रथम उत्तमफलोंको भोगताहै वहपीछेनरकको भोगता है १३ और जो प्रथमही नरकभोगनेवालाहै वहपीछे स्वर्गकोपाता है जो बहुत पापकर्मी होताहै वह पहले स्वर्गको भोगताहै १४ हे राजाइसी हेतुसे मुझ शुभचिंतकने तुमको नरकमें प्रवेश किया तुमने अश्वत्थामाके विषयमें द्रोणाचार्यसे छलसंयुक्तबार्त्ताकी १५ हेराजा इसीहेतुसे अर्थात्तेरे इतनेछलकरनेसेहीतुझकोनरकदिखलाया जैसाकितुमने मिथ्यानरकदेखा उसीप्रकार भीमसेन अर्जुन नकुल सहदेव १६ और कृष्णा द्रौपदी भी नरक में वर्त्तमानहुये हे नरोत्तम आओ वहभी पापोंसे छूटे १७ जोतेरीओरके राजायुद्धमें मारेगये वहसब स्वर्गमेंआये हे पुरुषोत्तम अब उनकोभी देखो १८ जो कर्ण बड़ाधनुषधारी सब शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठथा उसने बड़ी सिद्धीकोपायाहै उसीकेलिये तूबड़ादुःखीहोताथा १९ हे महाबाहु प्रभुनरोत्तम उस पुरुषोत्तम सूर्यके पुत्रको अपने स्थानपर नियत देखो और शोकको दूरकरो भाइयोंको औरअपनेपक्षवाले अन्य राजाओंकोभी अपने २ स्थानपर बर्त्तमान देखोतेरेचित्त कातापदूरहोय २०।२१ हे कौरव प्रथम दुःखको पाकर अबसेलेकर विशोक और नीरोगहोकरमेरेसाथ बिहारकरो २२ हे महाबाहुतात राजा युधिष्ठिर अपनेतपसे पवित्र कर्मफलोंसे युक्त दानादिकोंके उत्तम फलोंको प्राप्तकरो २३ अबस्वर्ग में देवता गन्धर्व और दिव्यअप्सरा तुझ कल्याणरूप दिव्यपोशाक और भूषणधारी के आज्ञावर्त्ती होयँ २४ हे महाबाहु तुम आपही उन लोकोंको जो कि खड्ग बलकेद्वारा वृद्धियुक्त और राजसूय यज्ञसे

विजय किये हुयेहैं उनको और अपने तपके बड़ेफलको प्राप्त करो हे राजा युधिष्ठिर हरिश्चन्द्र के लोकों के समान तेरेलोक और अन्य राजाओंके भी लोक पृथक् २ हैं जिन में तुम विहार करोगे२५।२६ जिनमें राजऋषि मान्धाता राजाभगीरथ और दशरथका पुत्र भरतहै तुम उसमें विहार करोगे २७ हेराजेन्द्र युधिष्ठिर यह देवताओंकी पवित्र नदी तीनों लोकों की पवित्र करनेवाली आकाश गंगाहै तुम उसमें स्नान करके जाओगे २८ इसमें तुम्हें स्नान करने वालेका मनुष्यत्व दूरहोगा शोक व्याकुलता और शत्रुतासे रहित होगा २९ कौरवेन्द्र युधिष्ठिरसे देवराजके इसप्रकार कहनेपर साक्षात स्वरूपधारी धर्मने अपनेपुत्रसेकहा ३० हे बड़ेज्ञानीपुत्र राजायुधिष्ठिर तेरीभक्ति सत्यवक्तृत्वता सन्तोष और जितेन्द्रीपने से मैं प्रसन्नहूं ३१ हेराजा मैंने यह तेरी तीसरी परीक्षालीहै हेक्षत्री तुमराजाहोनेके कारणसे अपने स्वभावसेहटाने को असंभवहो ३२ मैंनेप्रथम द्वैतवनमें युग्म अरणी काष्ठके विषयमें याचना करनेके द्वारा तेरी परीक्षाली तुमने उसकोभी पूरा किया ३३ हेभरतवंशीपुत्र फिर वहां तेरे भाइयों और द्रौपदीके मृतक होजानेपर मुझ श्वानरूप प्राप्त करनेवालेसे तुमपरीक्षा लियेगये ३४ अबयह तीसरी परीक्षाहै जो तुम भाइयोंके लिये यहां नियत होना चाहतेहो हे महाभाग तुम अत्यन्त पवित्र निष्पाप औरसुखीहो ३५ हेराजा तेरेभाई नरकके योग्य नहींहैं देवराज इन्द्रने यह माया प्रकटकीहै ३६ हेतात सबराजाओंसे नरक अवश्य देखनेके योग्यहै इसी हेतुसे तुमने दो मुहूर्त्ततक यहबड़ा दुःख पाया ३७ हेराजा पुरुषोत्तम नकुल सहदेव भीमसेन और सत्यवक्ता शूरकर्ण बहुत कालपर्य्यन्त नरक के योग्य नहींहै ३८ हे युधिष्ठिर राजपुत्री द्रौपदी भी नरकके योग्य नहींहै हेभरतर्षभ आओ आओ तीनोंलोकमें वर्त्तमान इसआकाश गंगाकोदेखो ३९ हेजनमेजय इसप्रकारसेकहाहुआ वह तेरा पूर्व्वपितामह राजर्षि धर्मराज सब देवताओंके साथ होकर चला फिर राजाने ऋषि-

योंसे स्तूयमान पवित्र करनेवाली देवताओंकी पवित्र नदी गंगाजीमें गोतालगाकर मनुष्य शरीरको त्यागकिया फिर उसजलमें गोताल गानेवाला धर्मराज युधिष्ठिर प्रकाश रूप शरीर होकर शत्रुता और शोकसे निवृत्त हुआ ४० । ४१ । ४२ फिर देवताओंसे घिराहुआ महर्षियोंसे स्तुति युक्त वहबुद्धिमान् कौरवराज युधिष्ठिर धर्मके साथ वहांपर चला ४३ जहां परवह क्रोधसे रहित पुरुषोत्तम शूर पाण्डव और धृतराष्ट्रके पुत्र अपने २ स्थानपर नियत थे ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणियुधिष्ठिरतनुत्यागेतृतीयोऽध्यायः३॥

चौथा अध्याय ॥

वैशंपायन बोले कि इसके पीछे देवता ऋषि और मरुद्गणों से स्तूयमान राजा युधिष्ठिर वहांगयाजहांपर कि वह श्रेष्ठकौरवथे १ वहांपरजाकरउन गोविन्दजीको भी देखा जो कि ब्रह्माजीसे उपासना आदिके योग्य शरीरको धारण कियेहुयेथे और पूर्व्व देखेहुये उस शरीरसे दिखाई देतेथे २ अपने शरीरसेप्रकाशमान और दिव्य अस्त्र और भयानक पुरुष रूपधारी चक्रादि दिव्य आयुधों से सेवित ३ बड़े तेजस्वी वीर अर्जुनसे वर्त्तमान युक्तथे युधिष्ठिरने उसप्रकार के स्वरूपधारी मधुसूदनजी को देखा ४ देवताओंसे पूजित उन दोनों पुरुषोत्तमोंने युधिष्ठिर को देखकर विधिपूर्व्वक पूजन करके संमेलनकिया ५ फिर कौरवनन्दनने दूसरे स्थानपर शस्त्रधारियोंमें श्रेष्ठद्वादश सूर्य्यके समान कर्णको देखा ६ फिर अन्य स्थान पर मरुद्गणोंसे युक्त समर्थ भीमसेनकोभी उस शरीरसे युक्त देखा ७ जो कि मूर्त्तिमान् वायु देवताकी गोदीमें दिव्य मूर्त्तिधारी बड़ी शोभासेयुक्त परमसिद्धीको प्राप्तथा ८ फिर कौरवनन्दनने अश्विनीकुमारोंके स्थानपर अपने तेजों से प्रकाशमान नकुल और सहदेवको देखा ९ इसी प्रकार द्रौपदीकोभी ऐसे रूपसे देखा जोकि कमल उत्पल की माला

रखनेवाली सूर्यके समान तेजरखनी अपने तेजसे स्वर्गको व्याप्त करके नियतथी १० राजा युधिष्ठिरने अकस्मात सब वृत्तांतको पूछना चाहा फिर देवताओंके राजा भगवान् इन्द्रने उसके समक्ष में सब वृत्तांत बर्णन किया ११ हेयुधिष्ठिर यह बिना योनिके उत्पन्न होनेवाली लोककी प्यारी पवित्र गन्धवती द्रौपदी स्वर्गकी लक्ष्मीहै जिसने तेरे निमित्त मनुष्यशरीर धारण कियाथा १२ शिवजीने आपके सुखके अर्थ इस द्रौपदीको उत्पन्न किया वह राजा द्रुपद के घराने में उत्पन्न होकर आपके भोग में प्राप्तहुई १३ हेराजा यह आपके और द्रौपदी के पुत्र बड़े तेजस्वी अग्निके समान प्रकाशमान पांचोमहाभागगन्धर्वहैं १४ अबउन गन्धर्वोंके राजा बुद्धिमान् धृतराष्ट्रको देखो और तुम इस को अपने पिताका बड़ा भाई जानो १५ यह सौर्य्य कुन्तीका पुत्र अग्निके समान तेजस्वी राधेय नामसे प्रसिद्ध बड़ा श्रेष्ठ तेरा बड़ा भाईहै १६ यह सूर्यके समान कर्ण बिमानकी सवारी में चलताहै इस पुरुषोत्तमको देखो हेराजेन्द्र साध्यगण बिश्वेदेवा और मरुतनाम देवताओं के समूहों में बड़े पराक्रमी सात्यकी आदि बीर महारथीभोज अंधक औरवृष्णियोंको देखो १७।१८ सुभद्राकेपुत्र अजेय बड़े धनुषधारी चन्द्रमाकेसमान तेजस्वी अभिमन्युको चन्द्रमाके साथमें देखो १९ कुन्ती और माद्रीसे मिलने वाला यह तेरा पिता पांडु सदैव बिमानकी सवारीमें चढ़कर मेरे पासआताहै २० शन्तनुके पुत्र राजा भीष्मपितामहको बसुओंके साथमें देखो इस गुरु द्रोणाचार्य्यको बृहस्पतिकी सन्निकटतामें देखो २१ हेपांडव यह अन्य२राजा और तेरेशूरबीर यक्षपवित्र पुरुष और गन्धर्वोंके साथ बिमानकी सवारियोंमें जातेहैं २२ कितनेही राजाओंने गुह्यकोंकी गतियोंको पाया उन्होंने शरीरों का त्याग करके पवित्र बाणी कर्म और बुद्धि के द्वारा स्वर्गको बिजयकिया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणिचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवां अध्याय ॥

पिछलेअध्यायमें वर्णनहुआ कि जिसजिसने जिसजिस देवता के अंशसे अवतारलिया उस उसने शरीर त्यागनेकेपीछे उसी२ देवताकी समीपता प्राप्तकी वहांयह संदेह होताहै कि जिसप्रकार टहनीसेउत्पन्न वृक्ष अपने मूलसे पृथक्ही अपनी नियतता प्राप्त करते हैं उसीप्रकार उनअंशोंने भी पृथक् होकर अपनी नियतता नियतकी अथवा वह अपने२ मूलमें लयहोंगे प्रथम सन्देहयुक्त यहबातहै कि जो शरीर कर्म से उत्पन्नहै उसका नाश ब्रह्मज्ञानके बिनाहोना असंभवहै उसदशा में उनकीनियतता हम लोगोंके समानहोगी दूसरेसन्देहमें सिद्धहुआहै कि उन्होंनेनरअवतारमेंजोकर्मकिये उनकानाशहोना संभवहै इससंशयसेजनमेजयने प्रश्नकिया कि महात्माभीष्म द्रोणाचार्य राजाधृतराष्ट्रबिराटद्रुपद शंख उत्तर १ धृष्टकेतु जयत्सेन राजासत्यजित दुर्योधनकेपुत्रसौबल का पुत्रशकुनी२ कर्णके पराक्रमीपुत्र राजाजयद्रथ औरजोअन्य२ घटोत्कच आदिक वर्णननहीं किये ३ और जो दूसरे प्रकाशमान मूर्त्तिवाले वीरराजा वर्णनकिये वह स्वर्गमें गये वह कितने समय तकस्वर्गवासीरहे उसकोभी मुझसेकहो४हेब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ आश्चर्य हैकि वहांइन महात्माओंका प्राचीन स्थानहै इन नरोत्तमोंने कर्म फलकेसमाप्त होजानेपर किसगतिकोपाया अर्थात् कर्मफलके समाप्त होनेपर अपनेयोगसे एकत्वता को सायुज्यता को सनातन ब्रह्मको अथवा पृथ्वीपर जन्मको प्राप्तकिया ५ हे श्रेष्ठ द्विजवर्य्यमें इसको सुनना चाहताहूं क्योंकितुम अत्यन्त प्रकाशित अपनेतपके द्वारासब वृत्तान्तकोजानतेहो ६ सूतके पुत्रका वर्णन हैराजाराजा से इसप्रकारसे कहेहुये और महात्मा व्यासजीसे आज्ञालेकर उस ब्रह्मर्षिने वर्णन करना प्रारंभकिया ७ वैशंपायन बोलेकि हे राजा कर्मफलके समाप्तहोनेपर अपने मूलमेंसबका प्रवेशहोजाना संभवनहींहै अर्थात् कोईअपनेमूलकोपातेहैं कोईनहीं जोसबउसमें

होजायँतो ऐसीदशामें संसारकी नियतता किसीप्रकारसेभी नहीं होसक्ती और शास्त्रव्यर्थ होजायँ इसहेतुसे कोई२पुरुषही मूलमें लयहोताहै सब नहींहोसक्ते—परन्तु तुमनेयह अच्छा प्रश्नकिया ८ हेभरतर्षभ राजाजनमेजय देवताओंके इसगुप्त रहस्यको सुनोमहा-तेजस्वी दिव्यचक्षु रखनेवाले प्रतापवान् व्यासजीने इसकोवर्णन किया९हेकौरव जो प्राचीन मुनि पराशरजीके पुत्र बड़ेव्रतधारी अत्यन्त बुद्धिमान् सर्वज्ञ और सर्व कर्मफलों के भोगों से विदित हैं १० महातेजस्वी बड़ेपराक्रमी भीष्मजी वसुओंमें लयहोगये हे भरतबंशी आठही वसु देखाई देतेहैं अर्थात् नवांकोई नहींहै ११ द्रोणाचार्यजी उसअंगिरा बंशियोंमें श्रेष्ठ वृहस्पतिजीमें लयहोगये हार्दिक्यका पुत्र कृतवर्मा मरुद्गणोंमें प्रवेश करगया १२ प्रद्युम्न सनत्कुमारजीमें ऐसेप्रवेश करगये जैसेकि प्रकटहुयेथे धृतराष्ट्र ने उन कुबेरके लोगोंको पाया जोकि बड़ी कठिनतासे प्राप्तहोने के योग्यहैं १३ और यशवन्ती गान्धारीभी धृतराष्ट्रके साथ वहांगई राजा पांडुअपनी दोनोंस्त्रियों समेत महेन्द्रलोककोगया १४भूरि-श्रवा, शल,राजाभूरि, कंस,उग्रसेन, वसुदेव १५।१६अपने शंखभाई समेतउत्तर, यहसब नरोत्तम विश्वेदेवाओं में प्रवेश करगये १७ चन्द्रमाका पुत्रबड़ा तेजस्वी और प्रतापवान् वर्च्चानामथा वह अभिमन्यु नामसे नरोत्तम अर्जुनका पुत्रहुआ १८ वह महारथी धर्मात्मा क्षत्रीधर्म से युद्धको करके असादृश्य और अनन्य कर्म करके कर्मके अन्त पर चन्द्रमा में लयहोगया १९ हे पुरुषोत्तम कर्णभी अपने कर्मके अन्तपर सूर्य्यमें लय होगया शकुनने द्वापर को और धृष्टद्युम्न ने अग्नि को प्राप्तकिया २० धृतराष्ट्र के सब पुत्र बलमें प्रमत्त रूप सब राक्षस थे उन शस्त्रोंसे पवित्र लक्ष्मी-वान् महात्माओं ने स्वर्ग को प्राप्त किया २१ विदुर और राजा युधिष्ठिर धर्ममें लय होगये भगवान् अनन्तदेवता बलदेवजी रसातलमें प्रवेश करगये२२ जिसने ब्रह्माजीकी आज्ञासे योगसा-मर्थ्यके द्वारापृथ्वीको धारण किया और जो वह देवताओंका

भी देवतासनातन नारायण नामहैउसके अंशरूप वासुदेवजी कर्म के अन्तहोजानेपर उसीमेंप्रवेश करगये हे जनमेजय वासुदेवजीकी पत्नी सोलह हजार स्त्रियांथीं२३।२४बहुकालकी प्रेरणासे सरस्वती नदीमें डूबगईं वहां अपने २ शरीरोंको त्याग करके फिर स्वर्गमें वर्त्तमान हुईं और अप्सराह्रप होकर वासुदेवजीके पासगईं उस बड़ेयुद्धमें जो वीरमहारथी२५।२६घटोत्कचआदिक मारेगयेउन्हों- ने देवता और यक्षोंको सेवन किया हेराजा दुर्योधनके सबसाथी राक्षसथे २७ उनसबनेभी क्रमपूर्व्वक आगेलिखेहुये उत्तम२ लो- कोंको पाया अर्थात् वह पुरुषोत्तम महाइन्द्रके लोक बुद्धिमान् कुबेरके भवन २८ और वरुणके लोकोंमें चलेगये हे महातेजस्वी यह सब ब्योरेवार वृत्तान्त मैंने तुमसेकहा यह सब कौरव और पांडवोंका चरित्रहै आशय यहहै कि वह सब क्रमपूर्व्वक उत्तम गतियोंको प्राप्तकरके अन्तमें ब्रह्माजीके साथ मुक्तहोतेहैं इसी हेतुसे देवभाव मिलनेके निमित्त यज्ञ दान तप आदिक अवश्यकरने चाहिये इनऊपर लिखेहुये शूरवीर लोगोंके बिशेषजो अन्यशूर बीरहैं वह स्वर्गमें जाकरभी फिर इसी पृथ्वीपर गिरकर आते हैं २९ सूतके पुत्रका बर्णन हेश्रेष्ठ ब्राह्मण लोगोवह राजाजनमे- जय यज्ञकर्मोंके मध्यवर्ती समयोंमें इसइतिहासको सुनकर अत्य- न्त आश्चर्ययुक्तहुआ ३० फिरयाजक लोगोंने उसके उस कर्म को समाप्त किया आस्तीकभी सर्पोंको छुड़ाकर बहुत प्रसन्न हु- आ ३१ फिरउनसब ब्राह्मणोंको दक्षिणाओंसे प्रसन्न कियातब राजासे पूजितहोकर वह ब्राह्मणभी प्रसन्नहोकर अपने२ घरोंको चलेगये महराजा जनमेजयभी उन ब्राह्मणोंको बिदाकरकेतक्ष- शिलास्थानसे हस्तिनापुरको आया३२।३३ राजाजनमेजयके सर्प यज्ञमें ब्यासजीकी आज्ञासे बैशंपायनका बर्णन कियाहुआ और अपनाभी जानाहुआ यह सब इतिहास मैंने तुमसे बर्णन किया ३४ यह इतिहास नाम ग्रन्थबड़ापवित्र उद्धार करने वाला और महा श्रेष्ठ है जोकि सत्यवक्ता सर्वज्ञ धर्मज्ञानं संबन्धी सब रीतियों से

विदित सत्पुरुष इन्द्रियोंके जालोंसे निकलकर योग सामर्थ्य से सर्वदर्शन में सिद्ध तपसे शुद्धचित्त व्यासमुनिका बनाया हुआ है ३५ । ३६ ऐश्वर्यमान सांख्ययोगके कर्त्ता सब तन्त्रोंसे शुद्धलोकमें महात्मापांडव और बड़तेजस्वी दूसरे क्षत्रियोंकी कीर्त्ति को फैलानेवाले व्यासजीने दिव्यनेत्रसे देखकर इस इतिहासको बनाया ३७।३८जो बुद्धिमान् सदैव हरएक पर्वमें इसको सुनावेगा वह पापोंसे रहितस्वर्गको बिजयकरनेवाला मनुष्य ब्रह्मभावके योग्य होगा ३९जो सावधानमनुष्य इस सबवेदको आदिसे अन्ततक मूल समेतश्रवणकरताहै उसकेब्रह्महत्यादिक किरोड़ोंपाप नाशहोजाते हैं जोमनुष्यश्राद्धमेंसमीप बैठकर श्राद्धके ब्राह्मणोंको इसइतिहास का चतुर्थांशसुनावे उसकी श्राद्धसंबंधी खानेपीनेकी वस्तु अक्षय और अविनाशी होकर पितरोंके पास नियत होतीहैं४०।४१ जो पुरुषदिनमें इन्द्रियोंसे अथवा मनसेपाप करताहैवह सायंकालकी संध्यामें इस महाभारतके पढ़नेसे उस पापसे निवृत्त होताहै ४२ स्त्रियोंके समूहोंसमेत ब्राह्मणरात्रिके समय जो पाप करताहै वह प्रातःकालकी संध्यामें इस महाभारतको पढ़कर पापसे शुद्धहोता है ४३ अर्थ और आशयकी गुरुता और वृद्धिताके कारणसेयह भारतकहा जाताहै जो इसमहाभारत अथवा साठलाख महाभारत केमूलको जानताहै वहसब पापोंसे छूटजाताहै ४४ हेभरतवंशी श्रेष्ठधर्मअर्थकाम और मोक्षका विषयजो इसमेंहै वह दूसरे अष्टादशपुराणों में भीहै और जो इस में नहींहै वह कहीं भी नहीं है अर्थात् इसीकी छायासे सब पुराण बने हैं ४५ यह जय नाम इतिहास मोक्षके चाहनेवाले ब्राह्मण क्षत्री और गर्भवती स्त्री से सुननेके योग्यहै४६स्वर्गका अभिलाषी स्वर्गको विजयाभिलाषी विजयको और गर्भवतीस्त्री पुत्रकोअथवा सौभाग्यवती कन्याको पातीहै ४७ इसभारतकी नित्य सिद्धीकेवलमोक्षरूप प्रभुव्यासजीनेधर्मके जारीकरनेकी इच्छासेबड़ीचातुर्यतासेरचनाकीहै४८उन व्यासजीने चारोंवेदकेविशेष उसकेअर्थसे संयुक्त साठलाखसंहिता

को बनायाउसमेंसे तीसलाख तो देवलोकमें वर्त्तमानहै ४९ पन्द्रह लाखपित्र लोकमें और चौदहलाखयक्षलोकमें जानना योग्यहै और इसनरलोकमें एकलाखवर्णन करीहै ५० नारदजीनेदेवताओं को सुनाई असित देवल ऋषिने पितरोंको शुकदेवजीने राक्षस और यक्षोंको सुनाई वैशंपायनने मनुष्योंको सुनाया अर्थात् इन चारों पुरुषोत्तमोंने व्यासजीसे पढ़कर उन स्थानोंपर प्रकटकरी ब्राह्मणको आगेकरके जो मनुष्य इस पवित्र और वेदके समान बड़ेअर्थ रखनेवाले इतिहासको सुनताहै वह पुरुष इसलोक में सब अभीष्टसिद्धी और पदार्थोंको प्राप्तकरके शुभकीर्त्तिमान् होकर परम सिद्धीको पाताहै इसमें मुझको किसीप्रकार का भी सन्देह नहींहै इसपवित्र महाभारत के पढ़नेसे किन्तु चौथाई पुस्तक अथवा चौथाई श्लोकके पढ़नेवालेको वहफल प्राप्त होता है अथवा व्यासजीमें बड़ी श्रद्धाभक्ति करके जो मनुष्य इसको सुनाताहै उसकोभी वहीफल प्राप्तहोता है जिस व्यासजीने यह पवित्रसंहिता अपनेपुत्र शुकदेवजीको पढ़ाई५१।५२।५३।५४संध्या में भारतके पाठकी विधि वर्णनकरी अब भारतके साररूप चार श्लोकोंको कहतेहैं हजारों मातापिता सैकड़ों पुत्र स्त्री बहुत से जन्मोंमें प्राप्त किये जोकि होगये होतेहैं और आगे प्राप्तहोंगे५५ उसीके हजारों स्थल और भयके सैकड़ों स्थान प्रतिदिन अज्ञानियों में हुआ करतेहैं पण्डितों में नहीं होते ऊपरको भुजाउठाकर मैं पुकारताहूं और कोई मेरी बातको नहीं सुनताहै कि अर्थ और धर्म यहदोनों कामसे उत्पन्न होतेहैं वह धर्मके निमित्त अभ्यास नहीं किया जाता ५६। ५७ मनुष्यको उचितहै कि इच्छा भय और लोभसे कभी धर्मको न छोड़े और जीवनके निमित्तभी धर्मको नहीं छोड़े धर्म अविनाशीहै और सुख दुःखादिक नाशमानहैं जीवात्मा अविनाशीहै और उसका हेतु अर्थात् अविद्या नाशवानहै ५८ जोपुरुष प्रातःकाल उठकर इसचारश्लोकोंकी भारत सावित्रीका पाठकरे वहभारतके फलको पाकर परब्रह्मको

पाताहै ५६ जैसे कि भगवान् समुद्र और हिमालय पर्व्वत दोनों रत्नाकर प्रसिद्ध हैं वैसाही यह महाभारतभी विख्यातहै ६० जो अच्छा सावधान इसभारत इतिहासको पाठकरे वह निस्सन्देहपरम सिद्धीको पावे ६१ व्यासजीके दोनों ओष्ठोंसे निकली हुई पवित्र उद्धार करने वाली पापघ्नी कल्याण रूप अप्रमेयकहीहुई भारतकथाको जोसमझताहै उसको पुष्करादिक तीर्थोंके जलमें मन्त्र पूर्व्वक स्नान करनेसे क्या प्रयोजनहै ६२॥

इतिश्रीमहाभारतेस्वर्गारोहणपर्व्वणिपंचमोऽध्यायः ५॥

छठवां अध्याय॥

जनमेजयने पूछा हे भगवन् ज्ञानियोंको किस बिधिसे भारत का सुनना योग्यहै इसका फल क्याहै और उसकी पारणा में कौनसा देवता पूजनेके योग्यहै १ हे भगवन् प्रत्येक पर्व्वके समाप्त होनेपर क्या देना योग्य है इसमें कथाके वक्तासे कौनसा प्रश्न करना योग्यहै उसकोभी मुझसे कहो २ वैशंपायन बोले हेभरतवंशी महाराज जनमेजय इस विधिको सुनो और महाभारत सुननेसे जोफल होताहै उसकोभी तुम श्रवणकरो ३ हेराजा स्वर्ग में जोदेवताहैं वह क्रीडाकरनेको पृथ्वीपर गये और इस कार्य्यको करके फिर स्वर्गमें आये ४ सूर्य्यके पुत्र दोनों अश्विनीकुमार, देवता, लोकपाल, महर्षि, गुह्यक, गन्धर्व, नाग विद्याधर ५ सिद्ध धर्म, मुनियों समेत शरीर प्राप्तकरनेवाले ब्रह्माजी, पर्व्वत, सागर नदी, अप्सराओंके समूह ६ ग्रह, संवत्सर, अयन, ऋतु, स्थावर जंगम, सब जगत्, देवता, असुर ७ यहसब भारत में नियत दिखाई देतेहैं हेभरतर्षभ उनसबके अवतारको सुनकर नाम और कर्मके कहने से ८ मनुष्य घोर पापको भी करके उसके द्वारा शीघ्र पापसे निवृत्त होताहै इस इतिहासको विधिपूर्व्वक क्रमसे सुनकर ९ नियमवान् शरीर से पवित्र होकर भारतका पारायण करके भारतसुननेके पीछे उनका श्राद्धकरना उचित है १० हे भरतवंशी

सामर्थ्य और भक्तिके अनुसार नानाप्रकारकेरत्न और महादान ब्राह्मणोंको देने योग्यहैं ११ गौकांस्य दोहनपात्र अच्छी अलंकृत सब अभीष्ट गुणयुक्त कन्या नानाप्रकारकी खाने पीनेकीवस्तु १२ विचित्र स्थान पृथ्वीवस्त्र सुवर्णघोड़े मदोन्मत्त हाथी और अनेक प्रकारकी सवारियां देनीचाहिये१३पलंग पालकी अच्छे अलंकृत रथ और घरमेंजो कुछ उत्तम वस्त्रहैंऔर जो पृथ्वीसे उत्पन्न रत्नादिकहैं १४ यहसबवस्तु अपनाशरीर स्त्री और पुत्रादिक पर्य्यन्त ब्राह्मणोंको देनेचाहिये जोकि क्रमपूर्व्वक बड़ीश्रद्धासे दियाजाय उसके विषयकी सर्वविधिको सुनो अर्थात् वह भारतका पारगामी १५ शुद्धचित्त प्रसन्नमुख सामर्थ्यके अनुसार सेवा करनेवाला सन्देहसे रहित सत्य और सत्यवक्तापनेमें प्रवृत्त जितेन्द्रीबाह्याभ्यन्तरीय पवित्रतासे युक्त १६ श्रद्धावान और क्रोधका जीतनेवाला होकर जिसप्रकारसे सिद्धहोताहै उसको श्रवणकरो पवित्रसुन्दर मधुरभाषी आचारवान् श्वेतवस्त्र इन्द्रियोंका दमनकरनेवाला १७ संस्कारी सर्वशास्त्रज्ञ श्रद्धावान् पराये गुणमें दोष न लगानेवाला स्वरूपवान् ऐश्वर्य्ययुक्त प्रशंसित सत्यवक्ता जितेन्द्री१८ कथाका कहनेवाला ब्राह्मण कथाके कालमें दान और प्रतिष्ठासे कृपालु होताहैस्थिरचित्त और अच्छेप्रकारसे आसनपरबैठा अच्छा सावधानऐसा वक्ता ब्राह्मण कथाकहे जोकि विलम्बसे रहित मन्दशीघ्रता रहित धीरमूर्त्ति १९ और जिसके उच्चारणमें अक्षर और पद स्पष्ट विदितहोयँ स्वरभाव और तिरसठवर्णोंसेयुक्त आठस्थानोंसे समीरित अर्थात् कथितहो २० श्रीनारायण और नरोंमें उत्तम नर और सरस्वती देवीको नमस्कार करके फिर जयनाम इतिहासको वर्णन करे २१ हेभरतवंशी राजाजनमेजय ऐसे वक्तासे भारतकी कथाको सुनकर नियममें नियत कानोंको पवित्रकरताहुआ फलको पाताहै२२जो मनुष्यप्रथम पारणाको प्राप्तकरकेब्राह्मणोंको उनकी अभीष्टवस्तुओंसे तृप्तकरे वह अग्निष्टोमयज्ञके फलको पाकर २३ अप्सराओंके समूहोंसे युक्तबड़े उत्तम दिव्य

विमानकोपाताहै और बड़ेआनन्दपूर्व्वक देवताओंकेसाथविहार करताहै २४ और दूसरी पारणाको करके अतिरात्र यज्ञके फल को पाकर सब रत्नोंसे जटित दिव्यविमान पर सवार होताहै २५ दिव्यमाला और पोशाक रखनेवाला दिव्यसुगन्धियोंसे अलंकृत दिव्य बाजूबन्द धारण करनेवाला वह पुरुष सदैव देवलोकमें पूजितहोताहै २६ तीसरी पारणाको प्राप्त करके द्वादशाह यज्ञ के फलको पाताहै वह देवताके समान प्रकाशमान होकर अयुतों वर्षतक स्वर्गमें निवास करताहै २७ चौथीपारणामें वाजपेय यज्ञ के फलको और पांचवीं पारणामें द्विगुणित यज्ञके फलकोपाता है और उदयहुये सूर्यकी समान देदीप्यअग्निके सदृश विमानमें देवताओं के साथसवार होकर स्वर्गमें जाताहै वहांस्वर्गमें इन्द्र भवनोंमें अयुतों वर्षतक आनन्दकरताहै २८।२९ छठवीं पारणामें द्विगुणित फलहै सातवींमें त्रिगुणित फलहै कैलास शिखर के समान वैडूर्य मणिकी वेदीरखनेवाले ३० बहुतप्रकारसे चलायमान मणि मूंगोंसे अलंकृत स्वेच्छाचारी अप्सराओंके समूहोंसे संयुक्त विमानमें सवार होकर ३१ दूसरे सूर्यकी समान सब लोकों में घूमताहै आठवीं पारणामें राजसूय यज्ञके फल को पाताहै ३२ अर्थात् उदयमान चन्द्रमाके समान ऐसे प्रकाशमान सुन्दर विमानपर सवार होताहै जोकि चित्त के समान शीघ्रगामी और चन्द्रमाकी किरणोंके समान प्रकाशित घोड़ोंसे युक्त ३३ चन्द्रमुखी उत्तम स्त्रियोंसेभी सेवित होताहै और वह पुरुष श्रेष्ठस्त्रियों की क्रोड़में सुखसे सोयाहुआ स्त्रियोंकी मेखला और नूपुरों के शब्दोंसे जागताहै और हेभरतवंशी नवीं पारणामें यज्ञोंके राजा अश्वमेधके फलको पाताहै ३४।३५ सुवर्णस्तंभों से संयुक्त वैडूर्यमणिसे बनीहुई वेदीवाले सबओरको दिव्यस्वर्णमय जाली झरोखोंसे युक्त अप्सराओंके और स्वर्गचारी गन्धर्वोंके समूहोंसे सेवित विमानपर सवार होकर बड़ीशोभासे प्रकाशमान ३६। ३७ दिव्यमाला और पोशाक धारण करनेवाला दिव्य चन्दन से

अलंकृत दूसरे देवताके समान स्वर्गमें आनन्द करताहै ३८ दशवीं पारणाको प्राप्तकर ब्राह्मणों को नमस्कार करके क्षुद्रघंटिकाओंके जालसे शब्दायमान ध्वजा पताकादि से शोभित ३९ रत्नों की वेदीरखनेवाले वैडूर्य मणियोंकी बन्दनवारोंसे संयुक्त स्वर्णमयी जालों से चारोंओरको व्याप्त मणि और उत्तम पन्नों से बने हुये वल अर्थात् छज्जों से शोभित द्वारवाला ४० गान विद्या में कुशल गन्धर्व और अप्सराओं से शोभायमान शुभकर्म्मियों के विमानोंको सुखसे प्राप्त करताहै ४१ अग्नि वर्ण जांबूनद नाम सुवर्णसे अलंकृत जो मुकुटहै उससे अलंकृत दिव्यचन्दनसेलिप्तांग दिव्य मालाओंसे शोभित ४२ देवताओंकी क्रियाओं के कारण बड़ी शोभा और दिव्यभोगोंसेयुक्त वह पुरुष दिव्यलोकोंमें घूमताहै फिर यह पुरुष इसीप्रकार गन्धर्व्वोंकेसाथ इक्कीसहजारवर्ष तकस्वर्गलोकमेंपूजितहोताहै ४३।४४ और क्रीडाकेयोग्य इन्द्रपुरी में इन्द्रहीके साथविहार करताहै दिव्य विमानोंकी सवारीरखने वाले नानाप्रकार के देशोंकी दिव्य स्त्रियों से व्याप्त देवताओं के समान निवासकरताहै हेराजा फिर सूर्यलोक चन्द्रलोक ४५।४६ और शिवलोकमेंनिवासकरके विष्णुजीकी सायुज्यताको पाता है हे महाराज यहइसी प्रकारहै इसमें किसी प्रकारका विचार नकरना चाहिये मेरे गुरुका कथन है कि श्रद्धावान मनुष्य को शेष्ठवर्य्यमान होनासंभवहै और कथा कहनेवालेको वहवह पदार्थ देने चाहिये जिसजिसको वह मनसे चाहताहै ४७।४८ हाथीघोड़ा रथ मुख्यकर दूसरी अनेक सवारी कुंडल कंकड़ यज्ञोपवीत ४९ विचित्र पोशाक अधिकतर चन्दन आदिक सुगन्धित वस्तु देना योग्यहै उसको इसरीतिसे जो देवताके समान पूजन करताहै वह विष्णु लोकको प्राप्त करताहै ५० हेराजा अबमैं इसके पीछेउत्तम वस्तुओंको कहताहूं जोजो वस्तु वेदपाठी ब्राह्मणोंको कथाकी भेंट में देनेके योग्यहैं ५१ हे राजा स्वर्गवासी क्षत्रियों की जाति सत्यता दृढ़ता धर्म चलनको जानकर उनके नामसे ब्राह्मणोंको

देना उचितहै फिर कथाके जारी होनेपर प्रथम ब्राह्मणोंसे स्व-
स्तिवाचन कराके फिर पर्वसमाप्तहोनेपर अपनी सामर्थ्यके अनु-
सार ब्राह्मणोंका पूजनकरे ५२। ५३ हेराजा प्रथम पोशाक
आदिक सुगन्धित वस्तुओंसे अलंकृत कथा कहनेवाले को विधि
पूर्व्वक श्रेष्ठ तस्मै और मिष्ठान्न भोजन करावे ५४ फिर मूलफल
युक्त तस्मै घृत शर्करायुक्त करके आस्तिक्य ब्राह्मणको खिलावे
और गुडोदन नाम भोजनकी वस्तुओंका दान करै ५५ इसकेपीछे
सभा पर्वमें अपूप, पूप और मोदकसे युक्त हविष्य नाम भोजनकी
वस्तु ब्राह्मणों को खिलावे ५६ वनपर्व्वके समाप्त होनेपर मूल
फलोंसे ब्राह्मणोंको तृप्त करे और आरण्य पर्वको समाप्त करके
जलकुंभोंका दान करै ५७ उत्तम२ भोजनकी वस्तु वनके मूलफल
और सब अभीष्ट गुणोंसेयुक्त भोजनकी वस्तु वेदपाठी ब्राह्मणोंको
दे५८इसीप्रकार विराटपर्व्व समाप्तहोनेपर नानाप्रकारकेवस्त्रोंका
दानकरे हेभरतर्षभ उद्योगपर्व्वके समाप्त होनेपर सब अभीष्टगुणों
सेयुक्त५९ भोजन उन वेदपाठी ब्राह्मणोंको खिलावे जोकि चन्दन
और पुष्प मालाओंसे अलंकृत हैं और हेराजेन्द्र भीष्म पर्व्वके
अन्तमें अनुपम सवारीका दान करके ६० फिर सब गुणोंसे युक्त
श्रेष्ठ रीतिसे बनाई हुई भोजनकी वस्तुओंका देनाचाहिये हेराजा
द्रोणपर्व्व समाप्तहोनेपर वेदपाठी ब्राह्मणों के लिये अच्छापूजित
भोजन ६१ पलंग धनुष और उत्तम खड्ग देने योग्यहैं अच्छा साव-
धान चित्त मनुष्य कर्णपर्वके समाप्तहोनेपर सब उपकारी अभीष्ट
वस्तुओंसे युक्त ६२ अच्छी रीतिसे बनाहुआ भोजन वेदपाठी ब्रा-
ह्मणोंकोदे हे राजेन्द्र शल्यपर्व्व समाप्त होनेपर लड्डूगुडोदन ६३
अपूप और सब खाने पीनेकी वस्तुओं को देवे इसीप्रकार गदा
पर्व समाप्तहोनेपर मंगयुक्त अन्नका दान करे ६४ स्त्री पर्व समाप्त
होनेपर ब्राह्मणों को रत्नों से तृप्त करे ६५ फिर ऐषिक पर्व के
आरम्भ में घृतोदन का दान करे सर्व गुण युक्त श्रेष्ठ रीति से
बनाई हुई भोजनकी वस्तुयें देवे इसी प्रकार शान्तिपर्व समाप्त

होनेपर ब्राह्मणों को हविष अर्थात घृत युक्त वस्तुओंका भोजन करावे ६६ अश्वमेधपर्वको समाप्त करके सब अभीष्टवस्तुओंसेयुक्त भोजनदेवे इसीप्रकार आश्रमनिवासपर्व समाप्तहोनेपरभी ब्राह्मणों को हविषभोजनकरावे ६७ मूसलपर्व समाप्तहोनेपर सर्वगुणयुक्त गन्धमाला और चन्दनादिसे प्रसन्नकरे इसीप्रकारमहाप्रस्थानिक पर्वमें सब अभीष्टगुणयुक्तभोजनकोदेवे ६८ स्वर्गपर्व समाप्तहोनेपर ब्राह्मणोंको हविष्यान्नभोजनकरावे हरिवंश समाप्तहोनेपर हजार ब्राह्मणोंकोभोजनकरावे ६९ और निष्कसमेत एकगौभी ब्राह्मण कोदे हेराजा यह कहाहुआ दान दरिद्रीकोभी आधापर्वा करना योग्यहै ७० सावधान श्रोताप्रत्येक पर्वके समाप्तहोनेपर सुवर्णसे युक्त पुस्तकको कथाकहनेवालेके अर्थ भेंटकरे ७१ हेभरतवंशियों मेंश्रेष्ठराजा जनमेजय वहां हरिवंशपर्वके प्रत्येक पारणमें विधि पूर्वकतस्मैके भोजनकरावे शास्त्रमें सावधान रेशमी अथवा सनकी पोशाकसे अलंकृत श्वेत पोशाक धारणकरनेवाला मालाधारी अच्छा अलंकृत सावधान पुरुषशुभदेशमें बैठकर सबपर्वोंकोसमा-प्तकरके फिरवहनियमसंवान् अच्छा सावधान न्यायके अनुसार ग-न्धमालाओंसे पृथक्संहिताकी पुस्तकोंकापूजनकरे ७२ भक्षण की वस्तुमांसादिक और पीनेकीवस्तुआदि अनेकप्रकारके शुभ मनोरथोंसे तृप्तकरके हिरण्यनाम सुवर्णकी दक्षिणादेवे ७३ वह मनुष्य अतिरात्रयज्ञके फलकोपाताहै जो कि सब देवता और नर नारायणको कीर्तिनकरे फिर गन्ध और मालाओं से उत्तमब्रा-ह्मणोंको अच्छे प्रकारसे अलंकृत करके नानाप्रकारकी अभीष्ट वस्तुओंसेयुक्त बहुत प्रकारकेदानोंसे तृप्तकरे ७४ । ७५ हेभरतर्षभ इसप्रकारशुद्ध और स्पष्टअक्षरपदउच्चारणकरनेवाला वक्ताब्राह्म-णभी हरएक पर्वमें उसीप्रकारके फलको पावेगा ७६ हे राजावह ज्ञानीब्राह्मण भविष्यसमयसे संबंध रखनेवाली इसभारतकथाको सुनावे तब श्रेष्ठ ब्राह्मणोंके भोजन करनेपर विधिपूर्वकदानदे ७७ फिर वक्ताको अच्छीरीतिसे अलंकृतकर भोजनकोकराके उसके

प्रसन्न होनेपर शुभ और उत्तम प्रीति उत्पन्न होती है ब्राह्मणों
के प्रसन्नहोनेपर सब देवता प्रसन्न होजातेहैं ७८ हेभरतर्षभ इसी
हेतुसे साधुओंकी ओरसे न्याय और पृथक् २ विधिके अनुसार
सब अभीष्टवस्तुओंसे ब्राह्मणोंका तृप्तकरना योग्यहै ७९ हेद्विपा
दोंमें श्रेष्ठ यहविधि मैंने तुमसेकही श्रद्धामानहोसे कर्मकर्त्ताहोना
संभवहै ८० हे राजाओं में श्रेष्ठ जनमेजय परमकल्याणचाहनेवाले
सदैवउपाय करनेवाले मनुष्यको इस भारतके श्रवण करनेवाला
और पारणमें उपायकरनेवाला होनाचाहिये ८१ सदैव भारतको
सुने भारतहीको पाठकरे जिसकेस्थानमें महाभारतहै उसके हाथमें
विजय वर्त्तमानहै ८२ भारतबहुत उत्तम और पवित्रहै भारतमें नाना
प्रकारकी कथाहैं यह भारत देवताओंसेसेवनकिया जाताहै भारत
परमपदहै ८३ हेश्रेष्ठ भरतवंशी यह महाभारत सबशास्त्रोंमेंउत्तमहै
भारतहीसे मोक्षसिद्धीप्राप्तहोतीहै यहसिद्धांत मैं तुमसेकहताहूं ८४
महाभारतकी कथा पृथ्वी गौ सरस्वती ब्राह्मण और केशवजी
का कीर्त्तन करना यह सब कभी पीड़ा नहीं देतेहैं ८५ हेश्रेष्ठ वेद
रामायण और पवित्र महाभारतके प्रारंभ मध्य और अन्तमें सर्वत्र
हरिही गायेजातेहैं इसलोकमें परमपद चाहनेवाले मनुष्यको वह
भारत श्रवण करना योग्यहै जिसमें विष्णुकी दिव्य कथा और
सनातन सरस्वतीहैं ८६। ८७ यह परमपवित्रहै यही धर्मशास्त्रहै यही
सर्वगुण सम्पन्नहै यह भारतपुराण ऐश्वर्य्य चाहनेवाले को श्रवण
करनेके योग्यहै ८८ शरीर मन वाणी आदिकसे जो पाप इकट्ठा
कियाहुआहै वह ऐसे नाश होजाताहै जैसे कि सूर्य्योदय होनेसे
अन्धकारका नाश होजाताहै ८९ अठारह पुराणके श्रवण करने
से जो फल होताहै वह महाभारतके श्रवण करनेसे वैष्णव अवश्य
पाताहै ९० स्त्री और पुरुष वैष्णवपदकोप्राप्तकरें संतानचाहनेवाली
स्त्रियोंको हरिवंश सुननायोग्यहै ९१ पूर्व्वोक्त फलोंके इच्छावान्
पुरुष को यहां सामर्थ्य के अनुसार पांच निष्क सुवर्ण इसके
वक्ताको देना योग्यहै ९२ अपना कल्याण चाहनेवाले को स्वर्ण

शृङ्गी वस्त्रोंसे अलंकृत सवत्सा गौ कथा कहनेवाले वक्ताके अर्थ विधिपूर्वक देनीयोग्यहै ९३ हेभरतर्षभ हाथ और कर्णकेभूषण और मुख्यकरके भोजनकी भी वस्तुदेवे हेराजा उसवक्ता ब्राह्मण केअर्थ भूमिदान देना योग्यहै भूमिदानके समान दान न हुआ न होगा९४।९५ जोमनुष्य सदैव सुनताहै वा सुनाताहै वह सब पापोंसे छूटकर वैष्णव पदको पाताहै ९६ हे भरतर्षभ वह पुरुष अपने ग्यारहपुरुषोंसमेत स्त्री पुत्रकेसाथ अपनेको भी उद्धारकरताहै ९७ हेराजा इस पारणामें दशांश हवन करना भी योग्यहै हे नरोत्तम मैंने यह सब तेरे आगे वर्णन किया ९८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्र्यांसंहितायांवैयासिक्यांस्वर्गारोहणपर्वणिसर्वपर्वानुकीर्त्तनंनामषष्ठोऽध्यायः६ ॥

इति स्वर्गारोहणपर्व्व समाप्तः ॥

मुन्शी नवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी
जनवरी सन् १८८९ ई० ॥

—※—

महाभारत काशीनरेश के पर्व्व अलग २ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व्व १
२ सभापर्व्व २
३ वनपर्व्व ३
४ विराटपर्व्व ४
५ उद्योगपर्व्व ५
६ भीष्मपर्व्व ६
७ द्रोणपर्व्व ७
८ कर्णपर्व्व ८
९ शल्य ९ गदा व सौप्तिक १० ऐषीक व विशोक ११
स्त्रीपर्व्व १२
१० शांतिपर्व्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुसलपर्व्व १६ महा-
प्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८
१२ हरिवंशपर्व्व १९ ॥

महाभारत सबलसिंह चौहान कृत ॥

यह पुस्तक ऐसी उत्तम दोहा चौपाइयों में है कि सम्पूर्ण महाभारत की कथा दोहे चौपाई आदि छन्दों में है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्योंको भी भली भांति समझमें आतीहै इसका आनन्द देखनेही से मालूमहोगा ॥

(१) आदि, (२) सभा, (३) वन, (४) विराट, (५) उद्योग, (६) भीष्म (७) द्रोण, (८) कर्ण, (९) शल्य, (१०) गदा (११) स्त्री, (१२) स्वर्गारोहण, येपर्व्व छपचुके हैं बाकी जब और पर्व्व मिलेंगे छापे जावेंगे जिन महाश-योंको मिलसक्ते हैं कृपा करके भेजदेवें तौ छापेजावें ॥

महाभारत बार्तिक भाषानुवाद ॥

जिसकातर्जुमा संस्कृतसे देवनागरी भाषा में होगयाहै और आदि पर्व्व से लेके हरिवंश पर्य्यन्त सम्पूर्ण उन्नीसों पर्व्व छपगयेहैं ॥

भगवद्गीतानवलभाष्यका विज्ञापनपत्र।

प्रकटहो कि यहपुस्तक श्रीमद्भगवद्गीता सकल निगम पुराण स्मृति सांख्यादि सार भूत परमरहस्यगीताशास्त्रका सर्व्वविद्यानिधान सौशील्यविनयोदार्य्य सत्यसंगर शौर्य्या दिगुणसम्पन्न नरावतार महानुभाव अर्जुनको परमअधिकारी जानके हृदयजनित मोह नाशार्थ सबप्रकार अपारसंसार निस्तारक भगवद्भक्तिमार्ग दृष्टिगोचरकरायाहै वही उक्त भगवद्गीता वज्रवत्वेदान्त व योगशास्त्रान्तर्गत जिसको कि अच्छे २ शास्त्रवेत्ताअपनी बुद्धिसे पारनहींपासक्ते तब मन्दबुद्धी जिनको कि केवल देशभाषाही पठनपाठन करनेको सामर्थ्यहै वह कब इसके अन्तराभिप्रायको जानसक्तेहैं और यहप्रत्यक्षहीहै कि जबतक किसी पुस्तक अथवा किसी वस्तुका अन्तराभिप्राय अच्छेप्रकार बुद्धिमें न भासितहो तब तक आनन्द क्योंकर मिले इसकारण सम्पूर्ण भारतनिवासी भगवद्भक्त पादाब्जरसिक जनोंकेचितानन्दार्थ व बुद्धिबोधार्थ सन्मत धर्मधुरीण सकलकलाचातुरीण सर्वविद्यावि- लासी भगवद्भक्त्यानुरागी श्रीमन्मुन्शीनवलकिशोरजी सी,आई,ईने बहुतसा धनव्यय कर फ़र्रुखाबादनिवासि स्वर्गवासि पण्डित उमादत्तजी से इस मनोरंजन वेदवेदान्त शास्त्रोपरि पुस्तक को श्रीशंकराचार्य्यनिर्मित भाष्यानुसार संस्कृतसे सरल देशभाषा में तिलकरचायनवलभाष्य आख्यमे प्रभातकालिक कमलसरिस प्रफुल्लित करादिया है कि जिसकोभाषामात्रके जाननेवाले पुरुषभी जानसक्ते हैं ॥

जबछपनेका समयआया तो बहुतसे विद्वज्जन महात्माओंकी सम्मतिसे यह बिचार हुआ कि इस अमूल्य व अपूर्व्व ग्रन्थको भाष्यमें अधिकतरउत्तमता उससमय परहोगी कि इस शंकराचार्य्य कृत भाष्य भाषाकेसाथ और इस ग्रन्थके टीकाकारोंकी टीका भी जितनीमिलें शामिलकीजावें जिसमें उन टीकाकारोंके अभिप्रायकाभी बोधहोवे इसका- रणसे श्रीस्वामीशंकराचार्य्यजीकी शंकरभाष्यका तिलक व श्रीआनन्दगिरिकृत तिलक अरु श्रीधरस्वामिकृत तिलकभी मूल श्लोकों सहित इस पुस्तकमें उपस्थित है ॥

श्रीगणेशाय नमः

महाभारत हरिवंशपर्व भाषा॥

प्रथम भाग

जिसमें

एकसे एकसौछांछठ अध्याय पृष्ठ१से५५४तककीकथा-दक्षोत्पत्ति मारुतचरित्र, पृथूपाख्यान,द्वादशादित्योंकी जन्मकथा,श्राद्धफल अरु यदुवंशमें कृष्णजीका उत्पन्नहोके वसुदेवजीकेद्वारा मथुरा से गोकुलमें नन्दकेघरमेंपहुँचके कंसकेभेजेहुये पूतना,वत्सा-सुर, बकासुर, अघासुर, प्रलम्बासुर, केशी आदि का वध गोवर्द्धनोद्धारण अरु अक्रूरकेद्वारा मथुरामेंआके रजक धनुषभञ्जन,कुवलयापीड़हाथीऔरचाणूरमुष्टिकादि सहित कंसबध पुनि कृष्णकेविवाहादि अरु प्रद्यु-म्नजीको सूतिकागृहसे शम्बरद्वारा समुद्रमेंपात पुनि धीमरकेद्वारा मछलीके पेटसे प्रद्युम्नको रतिकेपास पहुँचके शम्बरराक्षसको बधक-रके स्त्रीसहित द्वारकागमन वर्णितहैं॥

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस मुंशीनवलकिशोर (सी आई ई) के व्ययसे ज़िला रोहतक बेरीग्रामनिवासी पण्डितरविदत्त वैद्यने अत्यन्त परिश्रमसे देवनागरी भाषामें उलथा रचना किया है॥

पहलीवार ६०० पुस्तकें

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छपी

एप्रिल सन् १८८८ ई०॥

भूमिका ॥

प्रकटहो कि महाभारतके अन्तमें हरिवंशपर्व्व जिसको हरिवंशपर्व्वभी कहते हैं, श्लोक संख्या १७५०० करके श्रीमहाराज व्यासजीने वर्णन किया है इसपर्व्वका माहात्म्य इतर पर्व्वोंसे विशेषतरहै-जब श्रीमहाभारतका आरम्भहोकर समाप्ति होतीहै तो अन्तमें निवारणार्थ इसीपर्व्वका पारायण कियाजाताहै और बहुधा वंशवृद्धि सन्तानोत्पत्तिकेलिये इसीपर्व्वका श्रवण स्त्री पुरुषआदि संसारिक जनकरते हैं-श्रीमद्वेदव्यासजी महाराजने अन्तको मूलतत्त्व इसीपर्व्वमें वर्णन कियाहै-क्योंकि श्रीसच्चिदानन्द आनन्द कन्द वृन्दावन बिहारी श्रीकृष्णचन्द्रके वंशका वर्णन विस्तार पूर्वक इसी एकपर्व्व में कियाहै और महाभारतके युद्धके विघ्नोंके निवारणार्थ किया गयाहै अन्यत्र किसी पुस्तक में मनोरंजन पुण्यदाता ऐसा चरित्र नहीं है जोकि संस्कृतमें यहपुस्तक अतीवक्लिष्टहै और बहुधा संस्कृतका प्रचारन्यून होगया है इसकारण श्रीमन्महाराजाधिराज बैकुण्ठनिवासि काशिनरेश ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह जीकी आज्ञानुसार रघुनाथ गोकुलनाथ गोपीनाथादि कवीश्वरोंने संस्कृतसे अनेक छन्दप्रबन्धोंमें उल्थाकिया-जिसका कि अतीवकालहुआ और दोबार इसयन्त्रालयमें छपी इनमहान् कवीश्वरोंने ऐसे प्रकारके छन्द प्रबन्धमें इस महाभारतका उल्थाकिया कि संस्कृत तो नहीं है परन्तु बहुधा शब्द विशेषतर क्लिष्ट हैं और कठिनछन्द हैं इस कारण अनेक पुरुषोंकी इच्छाहुई कि यहसम्पूर्ण पुराणोंकासार महाभारत इतिहाससरलभाषा वार्तिकमें उल्थाकिया जावे तो विशेषतर देशहितैषी होगा जबबहुधा सहस्रों पुरुषोंकी ऐसी आकांक्षाहुई तो इस शुभचिन्तकने वार्तिक सरलभाषामें रचना करनेकी आज्ञादी और ईश्वरकी कृपासे आदि, सभा, भीष्म, शान्तिपर्व्व, मोक्षधर्म्म, आपद्धर्म्म, राजधर्म्म, हरिवंशपर्व्व छप गये हैं और शेष पर्व्वोंमेंसे बहुतोंका उल्था होगयाहै जो छपरही हैं बहुत थोड़ाभाग बाकी है जिसका उल्था होरहाहै जो बहुत शीघ्रपूर्णहोंगे—

आशाहै कि विद्वज्जन ग्रहणकरेंगे जिस्से और कार्य्योंके करनेका विशेष साहस मिलेगा-जिन महाशयोंको इन पर्व्वों व अन्यपुस्तकोंकी आवश्यकताहो-मुन्शी नवलकिशोरके छापाखाना लखनऊ हजरतगंज व कानपुर सरसय्याघाटसे मँगवालेवें—

(नवलकिशोर)

नवलकिशोर यन्त्रालय लखनऊ
ता० २१ अप्रैल सन् १८८८ ई० ॥

—※—

अथहरिवंशपर्व भाषा प्रथमभागका सूचीपत्र॥

इति प्रथमभागसूचीपत्र समाप्त ॥

इश्तहार ॥

प्रकटहो कि महाभारत भाषा हरिवंशपर्व दो भागों में बिभागितहै प्रथमभाग में सिलसिलेवार पृष्ठाङ्क ऊपर पृष्ठ के दियेगये हैं और द्वितीयभाग में प्रथमाङ्क से पृष्ठके ऊपर लगेहुये हैं और प्रथम द्वितीयभाग के सिलसिलेवार पृष्ठाङ्क नीचे पृष्ठमें युक्त हैं ॥

नवलकिशोर
स्थान लखनऊ

पूर्ण जगत् पान करताहै ३ और सौगौवोंके सोंगोंको सुवर्णसे ...
कर और बहुश्रुतिवेदके जाननेवाले ब्राह्मणोंको देनेसे जो फलहोता
है सो पवित्र भारतकी कथासुननेसे भी वैसाहीफल मनुष्यकोप्राप्त
होजाताहै ४ और जो सौ अश्वमेध यज्ञोंका पुण्य है और जो चार
हज़ार इन्द्र यज्ञोंका फलहै सोफल हरिवंशपुराणके दानसे होजाता
है यह महर्षिव्यासजी महाराजकी कहाहै ५ और जो बाजपेय यज्ञका
फलहै और राजसूययज्ञ का जो फलहै और हस्तीरथ इन्होंके दान
काजोफलहै तिसको भी हरिवंशपुराणके दानसे प्राप्तहोजाताहै इस

में व्यासजीका बचनप्रमाण है और महर्षिवाल्मीकि जो कोभी क-
हाहै ६ और जो पुरुष हरिवंशपुराणको विधिसे लिखाताहै सोबड़े
तपवाला है और वह हरिके चरण कमलको ऐसे प्राप्त होताहै कि
जैसे कमलको लोभी भौंरा प्राप्तहोताहै ७ और जो महर्षिपितामह
अर्थात् ब्रह्मासे छठाहै और अक्षयविभूति करके जो युक्त है औरजो
नारायणके अंशसे उत्पन्न हुआहै और एकजिनके पुत्रहैं और वेदके
निधिऐसे व्यासजी महाराजको नमस्कार करके ८ और आद्यपुरुष
ईशान,पुरुहूत,पुरुष्टुत, सत्य,केवल, अविनाशी, व्यक्ताव्यक्त, सना-
तन, ९ असत्य,सत्यासत्य विश्वरूप,सत्य, असत्यसेपरे,परावरों के
रचनेवाले, पुराण, परम अव्यय,१० मंगल करनेवाले, मंगलरूप
ऐसे विष्णुभगवान् को नमस्कार करके और संपूर्णदेवताओं में मु-
ख्यपापसे रहित,पवित्र इन्द्रियोंके ईश्वर चराचरोंके गुरू ऐसेहरि-
भगवान् को नमस्कार करके ११ पश्चात् ऋषियों में मुख्य और
धर्म्मात्मा महामुनि ऐसे शौनकऋषि नैमिषारण्य क्षेत्रमें संपूर्णशा-
स्त्रोंके जाननेवाला सूतजीको पूछतेभये १२ अब शौनककहतेहैं कि
सूतजी आपने बहुतआख्यान वर्णनकियाहै संपूर्ण भारतबंशियों का
और अन्यसब राजाओंका १३ और देव,दानव, गंधर्व, उरग,राक्षस,
दैत्य, सिद्ध, गुह्यक, इनसंपूर्णों के १४ अद्भुत कर्म और पराक्रम
कोवर्णनकिए और धर्मनिश्चय,कथायोग,बहुत उत्तम सुख्यजन्म १५
ये संपूर्णकहे और सुंदरवाणी करके पवित्रपुराण कहे और तहांमन
को सुखदेनेवाला अमृतरूप १६ कुरुवोंका जन्मभी कहा परन्तु हेरो-
महर्षणके पुत्रवृष्णिऔरअंधक कुलोंका आख्याननहींवर्णनकियाअब
तिन्हों का वंशकहनेको आपयोग्यहै १७ अब सौति कहनेलगा कि
ऐसे सुनके सूतजीनेकहा कि हे शौनक जनमेजय राजाने जो धर्मके
जाननेवाले और व्यासजीके शिष्य ऐसेवैशंपायनजीसे पूछाहै सोही
वृष्णियोंका वंशआदिसे मैं तुम्हारे आगे वर्णनकरताहूं १८ हे शौनक
अतिबुद्धिवालाजनमेजय भारत राजाओंके संपूर्ण इतिहास सुनकर
वैशंपायन जीको कहतेभये १९ फिर जनमेजय कहनेलगा कि हे

ने महाभारतका आख्यान बहुत अर्थवाला विस्तार पूर्वक आपने
कहा और मैंने सुनाहै २० और तहां बहुत पुरुषर्षभ शूरवीर कहे हैं
और नामोंकरके कर्मोंकरके वृष्णि और अंधक महारथ कहे हैं २१
औरहे द्विजोत्तम तिन्होंके स्वच्छकर्म भी तहां तहां अल्परीति और
विस्तार से कहे २२ परंतु हे प्रभो पुरातन कथनमें मेरे तृप्ति नहीं
हुई और पांडव और वृष्णि एकही राशिमाने हैं २२ औरबंशमें कु-
शलतुम प्रत्यक्ष तिन्होंको दिखावतेभये हे तपोधन अब विस्तारक-
रके इन्हों के कुलको वर्णनकरो २३ और जिनजिन वंशमें जो जो
भयेहैं तिनसंपूर्णोंके जाननेकी इच्छा करताहूं सो हे महामुने २४
प्रजापति से लेकर तिन्होंकी आदि सृष्टिको चिंतवन करके संपूर्ण
वर्णनकरो २५ सूतजी शौनकऋषि से कहते हैं किहे शौनक ऐसे
सत्कार करके पूछाहुआ महातपा और महात्मा वैशंपायन विस्तार
से आनुपूर्वी तिसकथाको वर्णनकरते भये२६ वैशंपायन ऋषिने जन-
मेजयसे कहा कि हेराजन् मेरीकहीहुई दिव्य और पवित्र औरपापों
को नाशकरनेवाली विचित्र बहुत अर्थवाली वेद में मानी हुई ऐसी
कथाको श्रवणकर २७ और हे राजन् इसकथाको जो बारबार सु-
नतेहैं वे अपनेवंशको धारणकरके स्वर्गलोकमें आनंद करतेहैं २८
हे राजन् जो अव्यक्त, कारण, नित्य, सदसदात्मक, ब्रह्मतिससे प्र-
धानपुरुष ईश्वर जगत्को रचतेभये २९सो हे राजन् तिसकोअप-
रिमित पराक्रमवाला और संपूर्णभूतों को रचने वाला नारायण में
परायण ऐसा ब्रह्माजान३० महत्तत्त्वसे अहंकार उत्पन्न होताभया
और तिससे पंच महाभूत होतेभये और तिन्हों से प्राणियोंके भेद
होते भये ऐसे सनातनसर्ग होताभया ३१ और विस्तारसे बुद्धि के
अनुसारश्रवणकेअनुसारकहताहूंतुम पूर्वोंकेचरित्रोंको सुनोकीर्तिको
बढ़ानेवाले हैं ३२ और धनयशको बढ़ानेवाले हैं शत्रुको नष्टकरते
हैं स्वर्गमें प्राप्तकरतेहैं ३३ और योग्यके अर्थयोग्य हैं औरसंपूर्ण
पवित्रकेअर्थपवित्रहैं अब वृष्णिवंशसे लगाकर उत्तम भूतसर्ग कह-
ताहूं ३४ तिसके अनंतर स्वयंभू भगवान् प्रजारचनेकी इच्छाकरते

हुएआदिमें जलोंको रचतेभये पीछे तिनजलोंमें बीजडालते भये ३५ जलोंको नारकहतेहैं और जलोंको नरसूनूभी कहतेहैं वे जल तिस ईश्वरका पहले अयनहोते भये इसवास्ते नारायण कहतेहैं ३६ पश्चात् तिनजलोंमें हिरण्यवर्ण ब्रूह्माण्डहोताभया तिससेब्रूह्मा उत्पन्न होते भये ३७ पश्चात् हिरण्यगर्भ भगवान् परिवत्सर जलमें वासकरके तिसको दो करतेभये ३८ स्वर्ग और भूमितिन दोनों माहंसे प्रभु आकाशको रचते भये और जलोंमें पृथ्वीको रचते भये और दशदिशा रचताभया ३९ और पश्चात् काल, मन, बाणी, कामना, क्रोध, इति, इन्होंको रचताभया पश्चात् प्रजापतियों के रचने की इच्छा करता हुआ ब्रूह्मा तद्रूप सृष्टिको रचता भया४० पश्चात् मरीचि,अत्रि,अंगिरा, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, बड़े तेजवाले बशिष्ठजी,इनसात ऋषियोंको मनसे रचतेभये ४१ ये सातोंभगवत् विषय निश्चयको प्राप्तहोतेभये और पुराणोंमें ये सातब्रूह्माहीमाने हैं ४२ पश्चात् ब्रूह्माक्रोधहोकर पश्चात् क्रोधसेहै उत्पत्ति जिसकी ऐसे रुद्रको रचतेभये और पूर्वों के भी पूर्वसनत्कुमार प्रभुको रचते भये ४३ वैशंपायन कहतेहैं हेराजन् ये सातऋषि प्रजारचते भये और रुद्रभी रचतेभये और स्कंद सनत्कुमार रचताभया ४४ और तिन्हों के बहुत बड़े सातवंश होते भये दिव्य देवगणों करके सहित और क्रियावाले प्रजावाले महर्षियों करके भूषितहोतेभये ४५ औरबिजली,वज्र,मेघ,रक्तइंद्रधनुष,पक्षीइन्होंकोआदिमेंरचतेभये४६ औरयज्ञसिद्धिके अर्थऋचा,सामवेद, अथर्बवेद,इनकोरचतेभये और तिन्होंकरके साध्यवस्तुरचतेभये औरहेराजन् ऐसेसुनतेहैं कितिन्हों सेदेवताओंका यजनकरतेभये ४७ औरसंपूर्ण ऊंचेनीचे प्राणी तिस ब्रह्माकेगात्रसे उत्पन्नहोतेभये पश्चात् प्रजासर्गको रचताहुआ ब्रह्मा की ४८ जबरचीहुई प्रजानहीं चढ़तीभई तब अपने शरीरको दोबनाकर एकशरीरसे आधेका पुरुष ४९और आधेकी स्त्री रचताभया सोपुरुष अनेक प्रकारकी प्रजाकोरचता भया और तिसकी महिमा स्वर्ग और पृथ्वी तलपर फैलतीभई ५० बिराटको तो बिष्णुरचता

भया औरवह बिराट पुरुषको रचताभया सो हेराजन् तिसपुरुषको मनुजान और तिसीको मन्वंतरकहतेहैं ५१वहबिराटसे उत्पन्नहुआ प्रभुपुरुष प्रजासर्गको रचताभया ५२ इसको नारायण बिसर्गकहते हैं और यहप्रजायोनिसे नहींउत्पन्नभईहै इसकोश्रवण करनेवाला धनवान् आयुष्मान् कीर्त्तिवान् प्रजावान् ऐसाहोजाताहै ५३ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंश पर्व्व भाषायां आदि सर्ग कथने प्रथमोऽध्यायः १ ॥

दूसरा अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहतेहैंकिहेराजन् यहप्रजापति ऐसीसृष्टिको रच करपश्चात् अयोनिसे उत्पन्नभई सतरूपा स्त्रीको प्राप्तहोताभया१ और प्रजारचते हुएकिइसकी महिमास्वर्गमें जातीभई और हेमहाराज यहसतरूपा धर्मसे उपजतीभई २ पश्चात् यह दशहजारबर्ष बड़ा घोरतपकरके दीप्ततपवाले पुरुष भर्त्ताको प्राप्त होतीभई ३ हे तात सो पुरुष स्वायंभुवमनु कहा है और तिसके इकहत्तर युगको मन्वंतर कहतेहैं४ वैराज पुरुषसे बीरपुत्रकोसतरूपा उत्पन्नकरती भई यह कर्दमकी काम्या कन्याको बिवाहता भया इसके प्रियव्रत उत्तानपादऐसे दो पुत्रहोतेभये ५ और यह प्रियब्रत बशिष्ठमुनि की कन्या पाकर सम्राट्, कुक्षि, बिराट्, प्रभु,इन चार पुत्रोंको उत्पन्न करताभया ६ और उत्तानपादको पुत्रत्वकरके अत्रिप्रजापति ग्रहण करते भये ७ उत्तानपाद से चारपुत्रोंको सूनृता जनतीभई और यह धर्मकीकन्या बाजिमेधसे उत्पन्नहोतीभई८औरइसमें उत्तानपादजो हैध्रुव,कीर्तिमान्,आयुष्मान् वसु९इन्होंकोउत्पन्नकरताभयातिन्हों में हेराजन् ध्रुवमहत्यशको प्रार्थना करताहुआ देवताओंके तीनहजार बर्षतप करताभया १० तिसध्रुवजीको प्रभुब्रह्मा प्रसन्न होकर सप्तर्षियोंसे आगेअचल आत्मसमान स्थान देतेभये११और संपूर्ण देवताऔर असुरोंके आचार्यशुक्राचार्य इसकाअभिमान और समृद्धि और महिमाको देखकर १२श्लोक कहतेभये कि अहोदेखो इसके तपका प्रभाव और अद्भुत सुतका प्रभाव १३ कि जिस ध्रुव को

सप्तर्षि आगेकरके स्थित होरहेहैं तिस ध्रुवसे शंभुनामास्त्री श्लिष्टि और भव्यनाम पुत्रको उत्पन्न करतीभई १४ श्लिष्टिजो है सुच्छायास्त्रीविषे निर्मल पांचपुत्रोंको उत्पन्न करताभया रिपु रिपुंजय रिप्र, वृकल, वृकतेज १५ और रिपुवृहती स्त्रीसे संपूर्ण तेजवाले चाक्षुषको पैदाकरताभया और पुष्करणी स्त्रीविषे चाक्षुषमनुको उत्पन्नकरतेभये १६ पश्चात् अरण्यनाममहात्माप्रजापतिकीपुत्रीनड्वलाविषे बड़े तेजवाले दशपुत्रउत्पन्न होतेभये १७ ऊरुपूरुशतद्युम्न तपस्वी सत्यवाक्, कवि, १८ अग्निष्टुवति, रात्र, सुद्युम्न, अभिमन्यु, ये दश पुत्र बड़ा तेजवाले नड्वलासे होतेभये १९ और आग्नेयी स्त्रीऊरुसे बड़े तेजवाले छःपुत्रोंको उत्पन्न करतीभई अंग, सुमनस, स्वाति, क्रतु, अंगिरा, गय, २० इन्हों माहंसे अंग जोहै सुनीथा कन्याविषे एकबेनको उत्पन्न करताभया पश्चात् बेनके अपचारसे महान्कोप होताभया २१ पश्चात् ऋषि प्रजाकेवास्ते इसका दक्षिण हाथ को मथनेलगे मथतेहुए एकमहान्ऋषि उत्पन्न होताभया २२ तिसकोदेखकर संपूर्ण मुनिकहतेभये कि यह प्रजाको आनंदितकरेगा और यह बड़े तेजवाला महत् यशको प्राप्तहोवेगा २३ बेनके हाथसे उत्पन्न हुआ जो वह वेन्यहै तिसका पृथुनाम रखतेभये और अग्निकेसेतेजवाला पृथु धनुष और कवच धारणकरके और क्षत्रियों को आदिमें होनेवाला यह इस पृथ्वीकी रक्षा करताभया २४ राजसूय यज्ञोंसे अभिषिक्त राजाओंमें यह आद्य राजा होताभया और तिससे विपुल सूत मागध होतेभये २५ और हे राजन् तिस पृथुने पृथ्वीसेप्रजाकी वृत्तिकेअर्थ देवता ऋषिगण २६ पितृ दानव गंधर्व अप्सरागण सर्प राक्षस बेल पर्वत २७ इन्हों करके सहित पृथक् पृथक् पात्र पात्र बनाकर शस्यों को दुहतेभये और यह पृथ्वी दूहीहुई वांछित क्षीर देतीभई तिससे संपूर्ण प्राणधारण करतेभये २८ और पृथुराजाके धर्मके जाननेवाले अंतर्धान और पालि दोपुत्र होतेभये पश्चात् शिखंडिनी स्त्री अंतर्धान से हविर्धान को जनती भई २८ हविर्धानसे अग्निकीपुत्री धिषणा छः पुत्रोंको जनती भई प्राचीन बर्हि,

शुक्र, गय, कृष्ण, ब्रज, अजिन इन्हों को २६ तिन्होंमें प्राचीनवर्हि भगवान् प्रजापति होतेभये हेमहाराज तिसने हविर्धानसे यह संपूर्ण प्रजा बढ़ाईहै ३० हे जनमेजय इसको यज्ञोंसे पूर्व तरफहै अग्रभाग जिन्होंका ऐसीकुशा बिछाईहै इसवास्ते प्राचीन वर्हि विख्यातहै ३१ पश्चात् यह प्राचीनवर्हि समुद्रकीपुत्री सवर्णाको बिवाहताभया ३२ यह सवर्णा प्राचीन वर्हिसे धनुर्विद्या जाननेवाले संपूर्ण प्रचेतानामसे प्रसिद्ध ऐसे दश पुत्रोंको जनतीभई ३३ ये दशहू एक धर्म को आचरणकरके जलोंके विषे दश हजार वर्ष घोरतप करनेलगे ३४ इन्होंके तपकरतेहुए नहीं रक्षाकियेहुए वृक्ष पृथ्वीको दबातेभये और प्रजा नष्टहोतीभई पश्चात् चाक्षुषमन्वंतरमें प्रजा वृक्षोंकी दबाईहुई चेष्टाकरनेको नहीं समर्थहोतीभई ३५ और वृक्षोंने आकाशभीरोंक लिया इसवास्ते पवनचलने को नहीं समर्थ होतीभई ३६ जब दश हजार वर्ष प्रजाको नहीं चेष्टाकरी तब तपयुक्त प्रचेता यहसुन ३७ और क्रोधहोकर मुखसे अग्नि और वायु रचतेभये सो वायु वृक्षोंको उपाड़कर सुखानेलगा ३८ और अग्नि दग्धकरनेलगा जब कुछेक वृक्ष बाकीरहे ३९ तब सोमदेवता वृक्षोंकानाश जानकरआया और बचन कहनेलगा हे प्रजापतियो कोपकोत्यागो तुम प्राचीन वर्हिके पुत्र राजाहो ४० इसवास्ते बृक्षोंसे शून्यपृथ्वी मतकरो और अग्नि बायुको शांतकरो और यह वृक्षोंकी रत्नरूप कन्या तुम धारणकरो ४१ भविष्यत् जानके तुम्हारे वास्ते यह रक्खीहै और मारिषानाम कन्या यह रची है ४२ हे महाराजा यह तुम्हारी भार्या सोमबंश को बढ़ावेगी और इससे आधा हमारा तेजसे और आधा तुम्हारा तेजसे ४३ इसमें दक्षनामप्रजापति पुत्रहोगा और तुम्हारातेजरूप अग्निसेदग्धहुईइसपृथ्वीको४४फिर आपअग्निकेसमान होकर दक्ष बढ़ावेगा पश्चात् सोमके बचनसे ये प्रचेता तिस कन्याको ग्रहण कर ४५ वृक्षोंपर शांत होतेभये पश्चात् तिसमें मन से गर्भ धारण करातेभये ४६ पश्चात् तिनदश प्रचेताओं से और सोमके अंशसे बहुत तेजवाली प्रजाओंकापति, ऐसा दक्ष उत्पन्न होताभया ४७

पश्चात् हे राजन् यह दक्ष अचर चर द्विपद चतुष्पद इन भेदोंकरके मनसे पुत्र और स्त्रियों को रचताभया पश्चात् तिन्हों मांह से १० कन्या धर्मको और १३ कश्यपको ४८ बाकीरही नक्षत्राख्य सोम को देताभया तिन्होंकेविषे देवता पक्षी गौ नाग दितिज दानव४९ गंधर्व अप्सरा और जाति ये सम्पूर्ण उत्पन्नहोतेभये और हेराजन् तिससे आदिले मैथुनसे प्रजा होतीभई ५० और पूर्वोंकी प्रजा संकल्प दर्शन स्पर्शसेकहीहै ५१ इतनी सुन जनमेजयनेकहा हे भगवन् देव दानव गंधर्व उरग और महात्मा दक्ष इन्हों का सम्भव आपने पहिले कहाहै ५२ कि ब्रह्मा के दहिने अंगूठेसे दक्षभया और बामसे तिसकी पत्नी ५३ फिर कैसे यह महा तपा प्रचेताओं का पुत्रभया इस मेरे संशयको आप दूरकरो ५४ और सोमकादोहित्र रूप दक्ष फिर श्वशुर कैसे हुआ ५५ इतनी सुन बैशम्पायनजी ने कहा कि हे राजन् प्राणियों की उत्पत्ति और लयनित्यहै इस वास्ते यहां ऋषि और विद्वान् जन मोहित नहीं होते ५६ और युगयुगमें ये दक्षादिक राजाहोतेहैं पश्चात् नष्ट होजातेहैं यहां विद्वान्मोहित नहीं होता ५७ और हे राजन् पहिले बड़ापन और छोटापन नहीं होता भया किंतु तप बड़ा होता भया क्योंकि प्रभावही कारण है ५८ इस दक्षकी चराचर सृष्टिको जो जानताहै तिसकी संतति बढ़ा करती है और अंतमें स्वर्गको जाताहै ५९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांप्रजासर्गेदक्षोत्पत्तिकथनेद्वितीयोऽध्यायः २ ॥

तीसरा अध्याय ॥

जनमेजयने कहा हे ऋषे देव दानव गंधर्वउरग इन्होंकीउत्पत्ति बिस्तारसे कहो १इतनी कथासुन बैशंपायनजीनेकहा कि हे राजन् जब ब्रह्माने दक्षको प्रजा रचने की आज्ञादी तब दक्ष जैसे भूतोंको रचताभया तिसको सुन २ दक्ष जोहै आदिमें मनसे भूतोंको रचता भया पश्चात् ऋषि देव गंधर्व असुर राक्षस ३ यक्ष भूत पिशाच पक्षी पशु सर्प इन्होंको मनसे रचताभया और जब इसकी मानसी

प्रजा नहीं बढ़तीभई ४ तब प्रजाके हेतु यह धर्मात्मा चिंता करके मैथुन धर्मसे प्रजा रचनेकीइच्छा करताभया ५ पश्चात् तपसेयुक्त सती लोकोंको धारनेवाली ऐसीवीरणा प्रजापतिकी असिक्नी कन्या को विवाहकर ६ तिस विषे दक्षप्रजापति पांचहज़ार पुत्र उत्पन्न करताभया ७ प्रजा रचने की इच्छा करते हुए तिन महाभागोंको देखकर देवर्षि नारदमुनि यह प्रिय सम्बाद कहते भये ८ तिन्होंके नाशकेवास्ते और अपने शापके वास्ते जिस नारदको परमेष्ठी कश्यप उत्पन्न करताभया ६ सो दक्षके शापसे मुनि पहलेही ब्रह्माने दक्षकी पुत्रीके उत्पन्न कर दिया १० और फिर ब्रह्मा असिक्नी में तिसको उत्पन्न करताभया ११ तिसनारदने दक्षकेपुत्र हर्यश्वकोनष्ट किये १२ पश्चात् दक्ष तिसके मारने में उद्यम करनेलगा पश्चात् ब्रह्मा ब्रह्मर्षियों को लेकर याचना करनेलगा १३ जब ब्रह्मा को सामिल करके दक्षकहनेलगा कि महाराज यह मेरी कन्याविषेतेरा पुत्रहो १४ ऐसे कह दक्षने अपनी पुत्रीदई और दक्ष शापके भयसे तिसके नारदमुनि होताभया १५ इतनी सुन जनमेजय ने कहा हे भगवन् प्रजापति के पुत्र महर्षि नारदने कैसे नष्टकिये सो तत्त्वसे सुननेकी इच्छा करता हूं १६ इतनी सुन बैशंपायनजी ने कहा कि हे राजन् महावीर्य प्रजा रचने की इच्छावाले ऐसे दक्षके पुत्रों को नारद मुनि वचन कहताभया १७ हे दक्षके पुत्रो तुम मूर्खहो और प्रजा रचने की इच्छा करते हो और इस पृथ्वीका प्रमाण जानते नहींहो १८ और अंतर ऊर्द्ध अध इसको नहींजानते तो कैसेप्रजा रचोगे वेसंपूर्ण इनवचनोंको सुनकर दिशाओंको चलेगये१९ और अबतक भीनहींनिवृत्तहोतेहैं जैसेसमुद्रसे नदीजब येहर्यश्वनष्टहोगये तबप्रचेताका पुत्रदक्षप्रजापति २० वैरणी स्त्री विषे हज़ार पुत्रोंको रचताभया पश्चात् शबलाश्व संज्ञकयेपुत्र प्रजाबढ़ानेकी इच्छाकरतेभये २१ पश्चात् नारदमुनिके प्रेरेहुए परस्परमें बचनकहनेलगे कि नारदठीक कहताहै इसवास्ते २२ भ्राताओंकी पदवीको जाना योग्यहै इसमें संदेह नहीं और पृथ्वीका प्रमाण जानके सुखपूर्वक

पूजा रचेंगे २३ येसंपूर्ण एकागृचित्त करके स्वस्थ मनसे यथावत् विचारवेभी संपूर्णदिशाओंको गमन करतेभये २४ औरबैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् अबतक वे नहीं आये जैसे समुद्रसे नदी नहीं आती पश्चात् जब शबलाश्व नष्ट होगये तबदक्ष क्रोधकरके बचन कहताभया २५ कि हे नारदतूनाश को प्राप्तहोजाय और गर्भबास में बस ऐसे कहताभया बैशंपायनजी कहै हैं हे राजन् तिस दिनसे लेकेभ्राता जो है भ्राताको ढूंढ़ने नहीं जाय २६ औरजायतो नाशको प्राप्तहोजाताहै ऐसेदक्ष तिनपुत्रोंको नष्टजानकर २७ फिरबैरणी स्त्री केबिषे साठकन्याओंको उत्पन्न करताभयाऐसासुनेहै तिन्होंमाहसे कुछ भार्याधर्मसे समर्थ कश्यपमुनि२८और हेराजन्सोम,धर्म और महर्षिये ग्रहण करतेभये दक्षप्रजापति दश कन्या धर्मको देताभया और तेरह कश्यपको २९ सत्ताईससोमको औरचारि अरिष्टनेमिको और दोबहुपुत्रको दो अंगिराको ३० और दोबुद्धिमान् कृशाश्वको ऐसे देतेभये हेराजन् तिनकन्याओंके नामसुनो अरुंधती वसुयामी लंबाभानु मरुत्वती ३१ संकल्पा मुहूर्ता साध्या विश्वा हे राजन् ये दश धर्मकी पत्नी होतीभई अब तिन्होंकी संतति को सुनो ३२ बिश्वासे बिश्वेदेवा होतेभये और साध्या से साध्यहोतेभये और मरुत्वतीसे मरुत्वान् बसुसे बसव हे राजन् ३३ भानुसे भानव और मुहूर्त्तासेमुहूर्त्त और लंबासे घोष और यामिसे नागबीथी ३४ और पृथ्वीसंपूर्ण बिषय अरुंधतीसे उत्पन्न होताभया और संकल्पासे सर्व संकल्प होताभया ३५ और नागबीथी जामिनी इन्होंसे वृषलहोता भया और हे राजन् जो प्रचेता के पुत्रदक्ष सोम को कन्यादेते भये सो ३६ संपूर्णनक्षत्रनाम्नी ज्योतिषमें कहीहैं औरसंपूर्ण ज्योतिपुरोगमसे आदिलेकर आप बिख्यात है ३७ और बसुआठ कहे हैं अब तिनका विस्तार करते हैं आप, ध्रुव, सोम, धर, बायु, अग्नि ३८ प्रत्यूष, प्रभास,येआठवसु कहेहैं तिन्होंमें आपके पुत्रवैतंड्य, श्रम शांतमुनिये होते भये ३९ और ध्रुवका पुत्रलोकों को प्रेरनेवाला काल होता भया और सोमका पुत्रवर्चा जिससे मनुष्य वर्चस्वी

होजाताहै ४०सो होताभया और धरका पुत्र द्रविण और हुतहव्य वहहुए और मनोहरा से शिशिर,प्राण, रमण, ये पुत्रहोते भए ४१ और अनिलकी भार्या शिवासे मनोजव और अविज्ञात गति दो पुत्रहोते भये ४२ और अग्नि के कुमार पुत्रहोता भया सो शोभा करके युक्तशरके झूंड़ में प्राप्तकिया है और तिससे पश्चात् शाख, और बिशाख, नैगमेय ये होतेभये ४३ और कृत्तिकाओं की संतान होने से कार्तिकेय कहाये और स्कंद सनत्कुमार इन्हों चौथा भागके तेजसे रचते भये ४४ और प्रत्यूष के पुत्र देवल नाम ऋषि होतेभये और देवलके भी क्षमावाले और तपस्वी दोपुत्र होतेभये ४५ और श्रेष्ठ स्त्री ब्रह्मको जाननेवाली योग से सिद्ध संपूर्ण जगत् में असक्त बृहस्पति जीकी भगिनी ४६ यह आठवां बसु प्रभास की भार्या होती भई तिस बिषे महाभाग प्रजापति विश्वकर्मा होतेभये ४७ जोन से विश्वकर्मा हजारहों शिल्पों को करनेवाले और देवताओं के तक्षक और संपूर्ण भूषणों के करने वाले शिल्पकर्मवालों में श्रेष्ठ ४८ और संपूर्ण विमानों के रचने वाले ऐसे होतेभये और जिस विश्वकर्मा महात्माकी शिल्पविद्यासे मनुष्य आजीवन करतेहैं ४९ और महादेवजी की प्रसन्ननाम तप से सिद्धहुई सुरभी कश्यपसे एकादश रुद्रोंको रचतीभई ५० अजैक पाद अहिर्बुध्न्य त्वष्टा रुद्र ये होतेभये और त्वष्टासे बड़े यशवाला श्रीमान् विश्वरूप पुत्रहोताभया५१और हरबहुरूप त्र्यंबक अपरा जित बृषाकपि शंभु कपर्दी रैवत ५२ मृग व्याध सर्प कपाली हेरा- जन् ये त्रिभुवनों के ईश्वर एकादश रुद्रकहे हैं ५३ हे भरत श्रेष्ठ अमितहैं पराक्रम जिन्होंके ऐसे सौरुद्र पुराणोंमेंकहेहैं जिन्होंकरके चराचर लोकव्याप्त होतेभये हे भरतशार्दूल राजन् ५४ अब कश्य- पका बंशसुनो अदिति दिति दनु अरिष्टा सुरसा खसा ५५ सुरभि बिनिता ताम्रा क्रोधवशा ईरा कद्रू मुनि हे राजेंद्र ये कश्यपकी स्त्री होतीभईं अब इनकी संततिसुनो ५६ हे राजन् पूर्वपूर्व मन्वंतरवैव स्वतमें तुषितनाम बारहदेवता होतेभये सो आपसमें कहतेभये५७

कि हे देवताओ यशवाले चाक्षुषमन्वंतर में संपूर्ण लोकोंके हितके वास्ते आनकर आपसमें कहते भये ५८ कि हे देवताओ शीघ्रआवो अदितिमें प्रवेशहोकर जन्म लेवें जिससे हमारा कल्याण होवे ५६ वैशंपायनजीने कहा कि हे राजन् वे संपूर्ण देवता ऐसे कहकर चाक्षुषमन्वंतरमें मरीचिके पुत्र कश्यपजी करके दक्षकी कन्या अदिति से उत्पन्न होतेभये ६० और हेभारत तहां फिर इंद्र और विष्णु जन्मलेतेभये और अर्य्यमा धाता त्वष्टा पूषा ६१ विवस्वान् सविता मित्र वरुण अतितेजवाला अंशभग और बारह आदित्य येभी संपूर्ण उत्पन्न होतेभये ६२ और चाक्षुषमन्वंतर में जो पहले तुषित होते भये सो वैवस्वत मन्वंतर में बारह आदित्य कहे हैं ६३ और जो महाव्रत सत्ताईस सोमकी स्त्री होती भई तिन प्रकाशितों के दीप्त संतान होतीभई ६४ और अरिष्टनेमि की स्त्रियों के सोलह संतान होतीभईं और बहुपुत्र विद्वान्के चारतड़ित् होतीभई ६५ और प्रत्यंगिरासे ऋषियोंने सत्कार करीहुई श्रेष्ठ ऋचाहोतीभई औरकृशाश्व देवर्षि से देव प्रहरण पुत्रहोते भये ६६ ये संपूर्ण युगसहस्त्रकेअंत मे बारंबार जन्मतेहैं और तहांतेंतीस देवता कामसे उत्पन्न होते हैं ६७ और हे राजेंद्र तिन्होंकीभी यहांनिरोध और उत्पत्ति कहते हैं जैसेयहां गगनमें सूर्यका उदय और अस्तमन ६८ हे राजन् ऐसे देव समूह युग युगमें होतेहैं हेराजन् और भी कश्यप से दितिके दोपुत्र होतेभये ६९ हिरण्याक्ष और बीर्यवान् हिरण्य कशिपु और सिंहिका नामकन्या होती भईसोविप्रचित्तिकीस्त्री होतीभई ७० तिस के पुत्र बड़े बलवान् सौंहिकेय गणोंकरकेसहितदशहजारकहेहैं ७१ और हेराजन् तिन्होंके पुत्र और पौत्र सैकड़ों और हजारहों हुए हैं ऐसेइन्होंकी गिनतीनहीं हे महाबाहो अर्थात् लंबीभुजाओंवाले अब हिरण्यकशिपुका बंशसुनो ७२ विख्यात है बीर्य जिसकाऐसे हिरण्य कशिपु के चारपुत्र अनुह्राद ह्राद प्रह्राद संह्राद ये होते भये ७३ और ह्राद का पुत्रह्रद हुआ और संह्राद के सुंद निसुंद दोपुत्र होते भये ७४ और ह्रदके पुत्रआयु शिविकालये होतेभये और प्रह्रादका

पुत्र बिरोचन होताभया तिसके राजाबलि होतेभये ७५ हे राजन् बलिकेसौपुत्रहोतेभये तिनमें बाणासुर बड़ाहोताभया धृतराष्ट्र सूर्य चंद्रमा इंद्रतापन ७६ कुंभनाम गर्दभाक्ष कुक्षिइन्हों से आदिलेकर होतेभये और महाबलवाला इन्हों में बड़ाबाणासुर महादेवजी को अतिप्रियहोता भया ७७ जो बाणासुर पहले कल्पमें महादेवजीको प्रसन्नकर और यह बरदानमांगता भया कि तुम संपूर्णकालमें मेरे समीपहो ७८ और हेराजन् तिसबाणासुरके लोहितीभार्य्यासे इन्द्र दमन होताभया और सौहजार राक्षसोंसे समूह होतेभये ७६ और हिरण्याक्षके बड़े बलवाले पांचपुत्र झर्झर शकुनि भूतसंतापन ८० महानाभ विक्रांत कालनाभ ये होतेभये और हेराजन् तपस्वी बहु-तपराक्रमवाले महावीर्यवान् ऐसे सौपुत्र दनुकेहोतेभये ८१ तिन्हों माहसे प्रधानों को कहते हैं सुनो द्विमूर्द्धा शकुनि शंकुशिरा शंकुकर्ण विरोध गवेष्ठी दुंदुभि अयोमुख शंबर कपिल बामन ८२ मरीचिमघ-वान् इरा गर्गशिरा बृक विक्षोभण केतुवीर्य शतहृद ८३ इन्द्रजित् सर्वजित् बज्रनाभ महानाभ विक्रांत कालनाभ एकचक्र महाबाहु तारक वैश्वानर पुलोमा विद्रावण महाशिरा ८४ स्वर्भानु वृषपर्वा तुहुंगगंड सूक्ष्म निचंद्र ऊर्णनाभ महागिरि ८५ असिलोमा केशी शठबलक मद गगनमूर्द्धा कुंभनाभ ८६ प्रमद मय कुपथ हयग्रीववै सृप विरूपाक्ष सुपथ हराहर ८७ हिरण्यकशिपु शतमायशंबरशरभ शलभ विप्रचित्ति ८८ बड़े बीर्यवान् ये दनुके पुत्र संपूर्ण कश्य-पसे उत्पन्न होतेभये विप्रचित्ति है प्रधान जिन्हों में ऐसे महाबल वान् येदानव होतेभये ८९ और हे राजन् जो इनकी संतान पुत्र पौत्र हैं तिनकी संख्या करनेको मैं समर्थ नहीं ९० और स्वर्भानुके प्रभानाम कन्या होतीभई और पुलोमाके उपदानवी तीन कन्याहुईं हयशिरा, शर्मिष्ठा, वार्षपर्वणी ९१ और वैश्वानर के पुलोमा, का लिकादोपुत्री होतीभईं इन दोनोंको मरीचि के पुत्र कश्यपजी ब्या हते भये ९२ तिन दोनवों साठहजार दानोंनेको उत्पन्न करते भये और चौदहसौ दानवों को कालीसे उत्पन्न करतेभये ९३ और

पौलोम और कालके ये ये दानव बड़े बलवान् ६४ और हेराजन् ये हिरण्य पुरवासि दानव ब्रह्माकातप करके देवताओं से अवध्य होते भये और पश्चात् अर्जुन इन्हों को मारता भया ६५ और हे राजन् प्रभा से नहुष होताभया और सची से संजय धार्मिष्ठा पुरुको जनती भई और उपदानवी दुष्यंत को ६६ तिसके अनंतर सिंहिका के पुत्र बिप्रचित्ति से बड़ा बीर्यवाले अतिदारुण ६७ दैत्य दानव संयोगसे बहुत पराक्रम वाले सैंहिकेय नामसे बिख्यात ऐसे ये तेरह पुत्रहोते भये ६८ व्यशंशल्य बलिनभ महाबल बातापि नमुचि इल्वल खसृम ६९ आंजिकनरक काल नामराहु यह इन्हों मेंबड़ा और शूरबीर चंद्रमा सूर्यको मर्दनकरनेवाला ऐसाहोताभया १०० और शुकयोतरण बज्रनाभ हातेभये मूकतुहुंडये दोनोंह्रदकेपुत्र भये१०१और सुंदका पुत्र मारीच ताड़काबिषे होताभया ये संपूर्ण दानवदनुके बंशको बढ़ातेभये१०२और तिन्होंकेपुत्र और पौत्र सैकड़ोंहजारहों होतेभये और संह्राददैत्यके कुलमें निबातक वचसंज्ञक १०३ बड़े तपस्वी तीनकरोड़पुत्र मणिमतीमें बसनेयोग्य होतेभये सोभीस्वर्ग निवासी देवताओंसे अवध्यहोतेभये पश्चात्ये संपूर्ण अर्जुनकोमारेहैं। और बड़े पराक्रम बलीछःकन्या १०४ काकीश्येनी भासीसुग्रीवी शुचिगृधिकायेताम्रासे उत्पन्न होतीभई तिन्होंमेंकाकी काकोंको जनतीभई औरउलूकी उल्लुओंको १०५ श्येनी सिकरोंको भासी भासपक्षियोंको गृध्रिको गिरझोंको शुचीजलजीव औरपक्षियों कोऔरहेराजन् सुग्रीवी १०६ अश्वऔर गर्दभोंको इनसंपूर्णोंको ये उत्पन्न करतीभई ऐसेताम्राका बंशकहाहै और हे राजन् बिनिताके अरुण और गरुड़ दोपुत्रहोतेभये १०७ यहगरुड़ सुंदर पंखोंवाला पक्षियोंमें श्रेष्ठ अपनेकर्म करके दारुण ऐसाहोताभया और अपरिमितपराक्रम वाला एकहजार सर्पसुरसाके होतेभये१०८औरहेराजन् येसर्पअनेक शिरवाले होतेभये औरकद्रूके बड़ेबलवाले हजार पुत्रहोतेभये१०९ औरयेसंपूर्ण अनेक शिरवाले नागहोतेसो संपूर्ण गरुड़केवशहोते औरशेष,बासुकितक्षक,येइन्होंमेंप्रधानहोतेभये११०

ऐरावत, महा पद्म, कंबल, अश्वतर, एलापत्र, शंखककोंटक, धनं-
जय, १११ महानील महाकर्ण,धृतराष्ट्र, बलाहक, कुहर,पुष्पदंत,
दुर्मुख,सुमुख,११२ शंख,शंखपाल, कपिल,बामन,नहुष, शंखरोमा,
मणि,इनसे आदिलेकर बहुतनाग होतेभये ११३ और तिनक्रूरचौदह
हजारपुत्रपौत्रों कोगरुड़मारताभया नहींतोबहुत बढ़जाते ११४ और
हेराजन् इनसर्पोंका गणक्रोध बशजानो और जलस्थल केजीव और
पक्षी धराकेउत्पन्न होतेभये ११५ औरसुरभि गायभैंस इनको जन
तीभई औरवृक्षबेल,संपूर्णस्थाणु जाति,इन्होंकोइराजनतीभई ११६
औरयक्षरक्षमुनि अप्सराइन्होंको श्वसाजनतीभई औरबड़े पराक्रम
वाले गंधर्वोंको अरिष्टा जनतीभई ११७ हे राजन् येस्थावर जंगमक
श्यपके वंशमेंकहेहैं औरतिन्होंकेपुत्र पौत्रसैकड़ों हजारहों होतेभये
११८ हेराजन् यह सृष्टिस्वारोचिष मन्वंतरमेंकहीहै। और बैवस्वत
मन्वंतर में बिस्तृत वरुणकेयज्ञमें ११९ आहुतिदेते हुएब्रह्माकोसृष्टि
कहीहैपहलेजोसातब्रह्मर्षिभये तिन्होंको मनसे १२० ब्रह्मापुत्र भाव
कल्पना करताभयापश्चात् हेराजन् देवता और दैत्योंकाविरोध हुआ
१२१ तबदितिके संपूर्ण पुत्रनष्टकरदियेयहदितिदुःखितहुई आराधन
सेकश्यपजीकोप्रसन्न करतीभई १२२ कश्यपजीइसको बरसे लुभाते
भयेतबइसने कहामहाराजयहबरहै बड़े पराक्रमवालासमर्थ इन्द्रको
मारेऐसापुत्रदो १२३ येआराधित तपस्वी यहबरदेतेभये पश्चात् बर
देके और अव्यग्रचित्तहुए कश्यपजी दितिसे कहनेलगे १२४ कि हे
प्यारीजोइसव्रतकोशुद्धहोकरधारणकरेगीतोइन्द्रको तेरा पुत्रमारेगा
औरसौवर्षगर्भधारणकरेगी १२५ औरमहातपाकश्यपजीदितिसेकह-
नेलगे कि जो तू पवित्रहोकेव्रतकोधारण करेगी तोनिश्चय गर्भको
धारेगी तब अंगीकारकर और पवित्रहोके गर्भधारणकरतीभई १२६
और कश्यपजी कराते भये पश्चात् अमित पराक्रम वाले कश्यपजी
देव समूह को प्रकाश करतेहुए देवताओं से अबध्य १२७ दुर्द्धर्ष
तेजको दितिमें स्थापनकर तपकी इच्छा करके पर्वत में गमनकरते
भये पश्चात् इन्द्र अवकाश देखताहुआ ठहरताभया १२८ जब सौ

वर्ष में एकवर्ष रहा तब दिति भूलके बिना पैर धोये शयन करती भई १२६ यहअवसर इन्द्र देखसूक्ष्म शरीर धारणकर बज्रलेदिति के गर्भमें प्रवेशहोकर और गर्भके सातटुकड़े बनादिये१३०जब यह खण्डतकिया गर्भ रोताभया तब इन्द्रने फिर बज्रसे एकएकके सात सात टुकड़े बनादिये१३१हे राजन् वे मरुत्नाम उंचासदेवते होते भये १३२ हे राजन्प्राणी और देवताओंके समूहको प्रकाश करते हुए हरि इन सम्पूर्णोंको ब्रह्माको देते भये १३३ हे राजन् हरिही पुरुषहै वीरहै जिष्णुहै प्रजापतिहै१३४वही मेघरूपहै अग्निरूपहै औरयह सम्पूर्णजगत् तिसने रचाहै१३५और हे राजन् पुरुष इस मारुतोंके जन्मकोसुनैहैं तिन्होंको इसलोकमेंऔर परलोकमें किसी प्रकार का भयनहीं १३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांमारुतोत्पत्तिकथनेनामतृतीयोऽध्यायः ३ ॥

चौथा अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहते हैं कि हे राजन् ब्रह्मा आदि में बेनके पुत्र पृथुका राज्याभिषेककरके और पश्चात् क्रमसे राज्याभिषेक करते भये १ ब्राह्मण बेल नक्षत्र ग्रह यज्ञ तप इन्हों का राजा चन्द्रमा किया २ और जलोंका राजा वरुण और राजाओंका प्रभु वैश्रवण और अंगिराके पुत्र वृहस्पतिजीको विश्वेदेवोंका राजाकरताभया ३ और भृगुओंका राजा शुक्र किया और आदित्यों का राजा विष्णु किया और वसुओंकाराजा अग्नि ४ और प्रजापतियों का राजा दक्ष और मारुतोंका राजा वासव और दैत्यदानवों का राजा प्रह्लाद ५ और औरपितरोंकाराजा धर्म राजकिया और यक्षराक्षस ६ और संपूर्णभूत पिशाचों का राजा महादेवजी पर्वतों का राजा हिमाचल नदियों का राजा सागर ७ साध्यों का राजा नारायण रुद्रोंका राजा वृषभध्वज दानवों का राजा विप्रचित्ति ८ और गंध, मारुत भूत अशरीरी शब्द आकाशवान् इन्होंका राजा वायु करते भये ६ और सागर नद मेघवर्षा हुआ जल गंधर्व इन्हों का राजा

चित्ररथ करतेभये १० और नागोंका राजा बासुकि सर्पोंका राजा तक्षक संपूर्ण जाड़वालोंका राजा शेष ११ हस्तियोंका राजा ऐरावत घोड़ोंकाराजा उच्चैःश्रवा पक्षियोंका राजा गरुड़ १२ मृगोंका राजाशार्दूल गौवोंका राजा वृष वनस्पतियोंका राजा पिलखन १३ गंधर्ब अप्सराओं का राजा कामदेव और ऋतु मास दिन १४पक्ष रात्रि मुहूर्त्त तिथि पर्व घटी पल प्रमाण ऋतुओं का अयन १५ गिन्ती योग इन्हों का राजा सम्बत्सर करते भये हेराजन् ब्रह्मा क्रमसे ऐसे राज्य बांटकर १६ दिशापालोंको स्थापन करतेभये पूर्व दिशा में तो वैराज प्रजापति का १७ पुत्र सुधन्वा को दिशापाल करते भये और दक्षिण दिशाका राजा कर्दम प्रजापतिका १८ पुत्र शंखपदको करतेभये और पश्चिम दिशामें रजसकापुत्र १९ महात्मा केतुमान्को राजा करतेभये तैसेही उत्तर दिशामें पर्जन्य प्रजापतिका पुत्र २० हिरण्यरोमाको राजा करतेभये हे राजन् वे संपूर्ण अब भी सप्तद्वीप और पत्तन और देश इन्हों सहित पृथ्वीको धर्मसे पालना करते हैं २१ और ये संपूर्ण राजा राजसूय यज्ञकरके और वेदविधि करके पृथुको राजाओं का राजाकर २२ तिसके पश्चात् बड़े तेजवाला चाक्षुषमन्वंतर वर्तीत होतसंते २३ ब्रह्मा बैवस्वतमनुको राज्यदेतेभये हे राजन् अबबिस्तारसे बैवस्वतमनुको तेरेआगे कहूंगा २४ तेरेको अनुकूल्यहोनेसे क्योंकि जिससे तेरेको सुनने की बांछाहै हे राजन् ये चरित्र पुराणोंमें मानेहुए हैं २५ और धन आयु यश इन्होंको बढ़ाता है और स्वर्ग में बासकरता है शुभकेदेने वालेहैं २६ इतनी सुन जनमेजयनेकहा कि हेभगवन् वैशंपायनजी पृथुकाजन्म बिस्तारसेकहो और तिस महात्माने जैसे पृथ्वीदुही सो चरित्र भी कहो २७ और हे भगवन् जैसे पितर देवता ऋषि दैत्य नाग यक्ष वृक्ष २८ पर्वत पिशाच गंधर्व ब्राह्मण शूरबीर राक्षस ये संपूर्ण जैसे पृथ्वीको दोहतेभये २९ सो भी कहो और हे मुने इन्हों के पात्र विशेष वर्णनकरो और बत्स विशेष वर्णनकरो और क्रम से दूध विशेष और दोहनेवाले भी कहो ३० और हे तात जिसकारण

से क्रोधहुए महर्षियोंने वेनकाहाथ मथा सो कारण भी वर्णन करो ३१ ऐसेसुन बैशंपायनजीने कहा कि हे राजन् बड़े आनंदकीबार्त्ता है वेनकेपुत्र पृथुकोंबिस्तारसे तेरे आगे चरित्रकहूंगा आप सावधान होकर एकाग्र चित्तसे श्रवणकरो ३२ और हे राजन् अपवित्र तुच्छ मनवाला अशिष्य अव्रत कृतघ्न अहित इन्होंकेआगे ३३ स्वर्ग यश आयु धन इन्होंके देनेवाले और ऋषियों के कहेहुए ये चरित्र नहीं कहिये हे राजन् आपके आगे यथावत् कहता हूं ३४ हे राजन् जो पुरुष वेनकेपुत्र पृथुकेचरित्र नित्य ब्राह्मणोंको नमस्कारकरकेकहता है तिसको किसी प्रकारका दुःख नहीं होता ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्बभाषायांपृथूपाख्यानेचतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

पांचवांअध्याय ॥

बैशंपायनजी कहतेभये कि हे राजन् पहले अत्रिकेबंशमें उत्पंन हुआ और अत्रिकेसमान प्रभु धर्मकी रक्षाकरनेवाला ऐसाअंगनाम प्रजापतिहोताभया १ औरतिसके मृत्युकोपुत्री सुनीथाके विषेनहींधर्म का जाननेवाला प्रजापति वेनहोताभया २ यह कालात्मजाका पुत्र नानाकेदोषोंकरकेअपनेधर्मोंकोछोड़कर औरकामलोभोंमेंवर्त्तताभया ३ और यह राजा वेन अधर्म युक्त मर्यादा स्थापन करताभया और वेदधर्मोंको छोड़कर अधर्ममें मग्नरहताभया ४ और वेनके राज्यमें वेदनका पढ़ना देवताओंका पूजननहीं होताभया और यज्ञोंमें होमा हुआ देवताओं को अमृतभी नहीं मिलताभया ५ क्योंकि तिस वेन का काल समीप आने से यह खोटी प्रतिज्ञा होती भई कि कोई देवताओंका यज्ञमतकरो हवनमतकरो ६ और हे जनमेजय कहता भया कि मेराहीयज्ञकरना उचितहै और यज्ञकरनेवालाभीमैंहूं और यज्ञ रूपभी मैंहीहूं इसवास्ते मेरेहीविषे यज्ञ हवनकरने उचित हैं ७ ऐसी लंघित मर्यादाको ग्रहण करतेहुए वेनको बहुत दिनों मरीचि से आदि लेकर महर्षि कहते भये ८ हे वेन बहुत वर्षोंतक हम दीक्षा करेंगे और हे वेन यह अधर्म मतकर और यह सनातन धर्म नहीं

है ९ और तू अत्रिके बंशमें जन्माहै प्रजाओं का पतिहै और तैंने प्रतिज्ञा भी करलीहै कि मैं प्रजाओं को पालूंगा १० हे राजन् ऐसे कहतेहुए सम्पूर्ण ऋषियों के अर्थको अनर्थ जाननेवाला और दुर्बुद्धि वेन हंसके वचन कहताभया ११ किहेऋषियो तुम मूर्खहो और निश्चय करके मेरेको जानते नहींहो मेरेसेअन्य धर्मकाजाननेवाला कौनहै और मैं किसका क्या सुनूं क्योंकि श्रुत वीर्य तप सत्य इन्हों करके मेरे समान पृथ्वीपर कौनहै १२ और संपूर्ण प्राणी और धर्म इन्होंको मैं उत्पन्न करनेवालाहूं १३ और जो मैं इच्छा करूं तो पृथ्वीको दग्ध करदूं और जलोंसे डुबोदूं और पृथ्वी समुद्रको रोक दूं इसमें संदेह नहीं १४ हे राजन् जब राजा वेन मोह और गर्वसे नहीं नम्र होता भया तब महात्मा महर्षि क्रोध होकर १५ और फुरती करताहुआ इस महाबलवान्को पकड़ और क्रोधयुक्त ऋषि इसकी जंघाको मथनेलगे १६ मथते हुए राजा की जंघा से बहुत छोटा दृढ़ अंगवाला वहुत काला ऐसा पुरुष होताभया १७ हे जनमेजय पुरुष डरके और अंजलि बांधके स्थित होताभया तब अत्रि जी इसको विह्वल देखकर रेनिषीद अर्थात् ठहर ऐसे कहते भये १८ इसवास्ते वह पुरुष निषाद बंशका करनेवाला होताभया और वेनके पापसे उत्पन्न भए धीवरों को भी रचताभया १९ और बिंध्याचलमें रहने वाले जो अधर्म रुचि तुषार और तुंबरु इन संपूर्णों को वेनसे उत्पन्नहुए जानो २० पश्चात् महात्मा ऋषि क्रोधहोकर और अरणीकी तरह वेन के दहने हाथको मथतेभये २१ तिसहाथ से जलता हुआ साक्षात् अग्निकेसी कान्तिवाला २२ और धनुष कवच धारण किये बड़े यशवाला और बड़े शब्दवाला आजगव धनुष धारण किये २३ और रक्षाकेवास्ते दिव्य शरोंको धारणकिये उत्तम कान्तिवाला कवच धारण किये ऐसा पृथुराजा उत्पन्नहोता भया २४ तिसके उत्पन्न होतेही संपूर्णभूत प्रसन्न होकर आवतेभये २५ और हे राजन् तिस महात्मा सत्पुत्रके जन्मसे पुन्नाम नरकसे रक्षाकियाहुआ वेन स्वर्गका प्राप्तहोताभया २६ और तिसका अभि-

षेक के वास्ते संपूर्ण समुद्र नदी रत्न और जल लेकर चारोंतरफसे प्राप्त होतेभये २७ और संपूर्ण देवता और आंगिरसों करकेसहित भगवान्‌ब्रह्मा २८औरसंपूर्णस्थावर जंगमप्राणी येआनकरवेनकेपुत्र प्रजाको पालनेवाला उत्तम कांतिवाला ऐसे पृथु को राज्य तिलक देतेभये २९ और धर्मके जाननेवालों राजों के आदि राज्यविषे अभिषेक कियाहुआ और महातेजवाला प्रतापवान् ३० ऐसा वेनका पुत्रपृथुराजा पिताने दुःखित करी प्रजाको अनुरंजित अर्थात् सुखी करताभया ३१इसवास्ते अनुरागसे तिस पृथुकाराजानाम होताभया और तिसराजाके समुद्रकीतरफ जातेहुए जलथंभतेभये ३२औरपर्वत इस पृथु राजाको मार्गदेतेभये और इसकी ध्वजा कभी नहीं टूटती भई और तिसकालमें बिनाबोये अन्न उपजतेभये और अन्न चिंता करकेही सिद्धहोतेभये ३३ और गौ काम दुघाहोतीभई और पुटक रमें मधुहोताभया और इसीकालमें शोभन ब्रह्माके यज्ञमें ३४ सौ त्यदिनविषे बड़ी बुद्धिवाले सूतजी सूति नाम मातासे होतेभये और तिसी महायज्ञविषे बुद्धिमान् मागध भी उत्पन्नहोताभया ३५ और ये दोनों सुरर्षियोंने पृथुराजा की स्तुतिकेवास्ते बुलाये और तिन्हों को संपूर्णऋषि कहतेभये कि इसके कर्मोंके अनुरूप स्तुतिकरो ३६ ऐसे सुनकर सूत और मागध संपूर्ण ऋषियों को कहतेभये ३७ हे भगवन् हम तो अपने कर्मोंकरके देवता और ऋषियोंको प्रसन्नकरतेहैं हे द्विजाहो इस तेजस्वी राजाके कर्म लक्षण और यश हम नहीं जानते ३८जिससे स्तुतिकरें ऐसे ऋषिसुन कहनेलगे कि भविष्य अर्थात् होनेवाले इसके कर्मोंकरके स्तुतिकरो ३९ पश्चात् महाबल, सत्य बोलनेवाला दानकरनेके स्वभाववाला सत्यसंध नटोंका ईश्वर ४० श्रीमान् शत्रुओंको जीतनेवाला क्षमा शील धर्मज्ञ कृतज्ञ दयावान् प्रियभाषण ४१ करनेवाला मान्यको माननेवाला यज्ञोंका करनेवाला सत्यसंगर मनको रोकनेवाला शांत रतसे रहित व्यवहारमें स्थित ४२ ऐसा राजा पृथु जो जो कर्मकरताभया तिस से आदि लेकर हे राजन् जनमेजय सूत मागध बंदीजनों ने तिन

आशीर्वादोंकरके जनोंकी स्तुति करियेहै ४३ और हे राजन् स्तुति के अंतमें प्रजाके ईश्वर राजा पृथु तिन्होंपर प्रसन्नहोकर सूत को तो अनूपदेश देतेभये और मगधको मागधदेश देतेभये ४४ और हे राजन् तिस राजापृथुको देखकर परम प्रसन्नहुए ऋषि प्रजाओं को कहनेलगे कि हे प्रजाहो तुम्हारी वृत्तिका देनेवाला यह राजा होवेगा ४५ तिसके अनंतर हे राजन् संपूर्णप्रजापृथुको प्राप्तहोकर कहतीभई कि हे राजन् आप हमारे वृत्तिदो ऐसे प्रजाके बचनसुन ४६ और महर्षियोंके बचनसे प्रजाके हितकरनेकी इच्छाकरके प्रार्थनाकिये राजापृथु धनुष और बाणलेकर यह बली पृथ्वीको मर्दन करनेलगा तब वै ४७ पृथुकेभयसे ब्याकुलहुई पृथ्वी गौवनकर भागतीभईराजापृथुभी धनुषलेकर इसकेपीछेदौड़तेभये ४८यहवैन्य के भय से ब्रह्मलोक आदिलोकोंमें दौड़तीभई परंतु आगे धनुषलिये पृथुको देखतीभई ४९ पश्चात् जब यहअपनीशरण कहींनहीं देखतीभईतो वहत्रिलोकपूज्याय पृथ्वी अंजलीबांधकर प्रकाशित तीक्ष्ण बाणोंकरके दीप्त तेजवाला और सावधान महायोगवाला महात्मा देवताओंसे अजीत ५० ऐसे पृथुकोही प्राप्तहोकर बचन कहतीभई ५१ कि हे राजन् स्त्रीकावध यह अधर्म आपकरनेको नहीं योग्यहो और हे राजन् मेरेबिना पृथ्वीको कैसे धारण करेगा ५२ और हे राजन् मेरेविषे ये लोक स्थित हैं और यह जगत् भी मैंने धारण कियेहै सो हे राजन् जब मेरानाश होजायगा तब प्रजाका भी नाश होजायगा इसमें संदेह नहीं ५३ हे राजन् जो आप प्रजाके कल्याणकी इच्छाकरीहो तो मेरेको मारनेको नहीं योग्यहो और हेराजन् मेरे बचनसुन ५४ उपायसे प्रारंभकिये संपूर्णकार्य सिद्धहोतेहैं सो हे राजन् उपायकोदेख जिससे पृथ्वीकोधारणकरे ५५ और मेरेको मारके भी हे राजन् प्रजा धारणकरनेमें समर्थ न होवेगा और हे महाराज कोपकोत्याग मैं तेरेको अनुभूतहोंगी ५६ और हे राजन् पशु आदि योनियों में भी प्राप्तहुई स्त्री मारनीयोग्य नहीं इसवास्ते धर्म त्यागकरनेको योग्यनहीं हो ५७ हे राजन् जनमजय उदार

चित्त राजापृथु ऐसे बहुत प्रकारके पृथ्वीकेबचनसुन और धर्मात्मा राजापृथु क्रोधको रोक पृथ्वीके प्रतियह बचन कहताभया ५८ ॥

इतिश्री महाभारते हरिबंश पर्वं भाषायां पृथूपाख्याने पंचमोऽध्यायः ५ ॥

छठवां अध्याय ॥

राजापृथु कहने लगाकि हे भद्रे जो पुरुष एक अपने अर्थ अथवा दूसरेकेअर्थबहुत अथवाएक प्राणीको मारताहै तिसको पापलगता है १ और जिसएकके मारनेमें बहुतसुखीहोवें तिसके मारनेमेंपातक नहीं और उपपातक भी नहीं २ और जहांएक खलके मारनेसे बहु-तोंके आनंदहोवे सो बधपुण्यका देनेवाला होताहै ३ सो इसवास्ते जगत्के हितकरनेवाला मेरा वचन नहीं करेगी तो प्रजाके निमित्त तेरेको हनन करूंगा ४ और हे पृथ्वी मेरीशिक्षाको नहींमानेगी तो अबतेरेको बाणसे मारके औरप्रजाधारण करने वालेमें अपनेआत्मा को विख्यात करूंगा५इसवास्ते धर्मजानने वालोंमें श्रेष्ठ जो तू है मेरीशिक्षामानके और इसप्रजाको जिवा क्योंकि जिससेप्रजाधारण करने में तू समर्थ है ६ और तेरेमें पुत्रीभाव करूंगा और पश्चात् घोर दर्शन तेरेमारने वास्ते जो यहबाणहै तिसको त्यागदूंगा ७ हे जनमेजय ऐसे पृथुराजा के बचन सुन पृथ्वीने कहा हे शूरबीर यह संपूर्ण मैं धारण करूंगी इसमें संदेहनहीं परंतु संपूर्ण कार्यउपायसे किये सिद्धहोते हैं ८ हे राजन् ऐसाउपाय देख जिससे प्रजाओं को धारणकरे हे राजन् मेरा ऐसाबछड़ा देख जिससे मैं प्रसन्नहुई दुही जाऊं९और हे धर्मजाननेवालों में श्रेष्ठ सब जगह मेरेको एकसार कर जिससे झराहुआ मेरादूध संपूर्णको भिगोवे १०वैशंपायनजीने कहा हे राजन् तब यह राजाधनुष करके सैकड़ों हजारों पर्वतों को उखाड़ताभया ११ और पृथ्वीकोबराबर करताभया और हे राजन् मन्वंतर व्यतीत होते यहबिषमहोती भई १२ क्योंकि स्वभाव सेही इसके समबिषमहै औरपहलेचाक्षुष मन्वंतरमें समहोतीभई १३ औरहे राजन्पहले बिसर्गमेंपृथ्वीके बिषम होनेसेपुर और ग्रामोंकाबिभाग

भीनहीं होताभया १४ और खेती गोरक्षा बणिक्पथ सत्य असत्य लोभ मत्सरता १५ येभी संपूर्ण बस्तु पृथुसेही आदि लेकर होता भया १६ और जहांजहां पृथ्वी बराबर होतीभई वहांबहां प्रजा बसाताभया १७ और बड़ेकष्ट सेती प्रजाओंका आहारतब मूलफल होताभया हे राजन् ऐसेसुनतेहैं १८ हे पुरुषोंमें सिंहरूप जनमेजय पश्चात् यहप्रतापवान् पृथु स्वायंभुव मनुको बछड़ा बनाकर और अपने हाथमें पृथ्वीकोदुहता भया १९ तिससे येसंपूर्ण खेतीउत्पन्न होतीभईऔर तिसहीअंनसे अबभी संपूर्ण मनुष्यजीतेहैं २० पश्चात् हे राजन् यहऋषियों को दुहीहै तबचंद्रमा बछड़ाकिया और अंगिराके पुत्रवृहस्पतिजी दुहनेवाले हुए २१ और बेदपात्रबनाया और नित्यब्रह्म रूपदूधको दुहतेभये २२ पश्चात् इन्द्रआदि देबतादुहते भये तिन्होंने सुवर्णका पात्रबनाया २३ और इंद्रबछड़ा औरसबिता प्रभु दुहनेवाला किया और ऊर्ज करनेवाला अमृत दुहतेभये २४ पश्चात् यहपितरों को दुहीहै तिन्होंने चांदीकापात्र किया २५और प्रतापवान् बैवस्वत यमबछड़ा किया और स्वधादूधको दुहते भये और लोकोंको प्रेरणेवाला काल अंतक दुहनेवाला होताभया २६ पश्चात् नाग दुहतेभये तिन्होंने तक्षक बछड़ा किया और बंबीपात्रकिया और विष दूध दुहते भये २७ और हे राजन् नागों में और सर्पोंमें श्रेष्ठ प्रतापवान् ऐसे ऐरावत और धृतराष्ट्र दुहने वाले होतेभये २८ तिस बिषसेही महाकाय और तीव्र बिषवाले ऐसे नाग और सर्पजीवते हैं और इन्होंके तिस बीर्यकाही पराक्रमहै और तिसीके आश्र आश्रय है २९ पश्चात् हेराजन् यह असुरों को दुही है तिन्होंने लोहेका पात्र किया ३० और प्रह्लादजीके पुत्र विरोजन बछड़ाकिया और शत्रुओं को नाशकरनेवाली मायाको दुहतेभये और दैत्योंमें श्रेष्ठ द्विमूर्द्धा और मधु येबलवान् दुहनेवाले होतेभये ३१ हे राजन् तिसी मायाकरके अब भी माया वी असुरजीतेहैं और तिस मायासेही बलीहै और बुद्धिमान् है ३२ पश्चात् यक्षोंने पृथ्वी दुही है तिन्होंने कच्चा पात्रकिया ३३ और

कुबेर बछड़ाकिया और तीनशिरोंवाला तपस्वी तेजस्वी ऐसामणिव
कापिता रजतनाभ दुहनेवाला होताभया ३४ और हेराजन् अंत-
र्द्धान अर्थात् छुपना विद्या को दुहते भये ३५ पश्चात् राक्षस और
पिशाचोंने यह दुही है तिन्होंने मुरदे का कपालपात्र किया ३६
और रजतनाभ दुहनेवाला होताभया और सुमाली बछड़ाहोताभ-
या और रुधिर दूध दुहतेभये ३७ हे राजन् तिसी दूधसे यक्ष रा-
क्षस पिशाच भूतसमूह ये संपूर्ण देवताओंकी तुल्यहोकर वर्त्ततेहैं
३८ पश्चात् हे राजन् गंधर्व और अप्सरा दुहतीभई तिन्होंनेकम-
लपात्रकिया और चित्ररथ बछड़ाकिया और सुंदर गंधको दुहतेभ-
ये ३६ और तहां सूर्यकेसमान महात्मा अतिबलवान् गंधर्वोंकेराजा
ऐसे सुरुचि दुहनेवाले होतेभये ४० पश्चात् इसको पर्वत दुहते
भये ४१ तिन्होंने हिमवान् बछड़ाकिया और महागिरि सुमेरुदुहने
वाला और पर्वतही पात्रकिया ४२ और अनेकप्रकार का औषध
और रत्नोंको दुहतेभये तिसीकरके हे राजन् ये पर्वत स्थित हैं
पश्चात् इसको बनस्पतीदुहतीभई ४३ तिन्होंने पत्तोंका पात्रकिया
पिलखन बछड़ाकिया और फूलाहुआ शाल दुहनेवालाकिया और
कटाहुआ जलाहुआ काफिरजामनाको दुहतेभये ४४ हेराजन् सो
यह पृथ्वीधात्री और विधात्री चराचर जीवोंकीयोनि जीवोंकास्थान
रूप संपूर्ण कामोंको दुहनेवाली और संपूर्ण खेतियोंको उत्पन्नक-
रनेवाली ४५ समुद्र पर्यंत ऐसी पृथ्वी होतीभई और मेदिनी ऐसी
विख्यातभई और मधुकैटभके मेदसे व्याप्तहोनेसे ४६ इसको ब्रह्म-
वादि मेदिनी कहते हैं और हे राजन् राजा पृथु के योग से यह
पुत्रीभावको प्राप्तहोतीभई ४७ और तबसेही इसकोदेवी औरपृथ्वी
कहते हैं और हे राजन् पृथुसे सोधीहुई और बांटी हुई ४८ इस
पृथ्वीमें बहुतसी खेतियां और खानि होतीभई और बढ़तीभई और
पुर शहर ग्राम बहुतसे बसतेभये हे राजन् ऐसे प्रभाववाला और
राजाओंमें श्रेष्ठ पृथुराजा होताभया ४६ हे राजन् जीव समूहों ने
यह राजा पृथुही नमस्कारके योग्यहै और पूजनेकेयोग्यहै और वेद

वेदांगके जाननेवाले महाभाग ब्राह्मणोंनेभी यहीपूज्यहै ५० क्योंकि जिससे सनातन ब्रह्मयोनि है और राजापना को इच्छा करते हुए महाभाग राजाओं ५१नेभी यह महा प्रतापवान् आदि राजा वेन का पुत्र ऐसा पृथुहीपूजनेके योग्यहै और युद्धमें जीतनेकी बांछावाले योद्धाओंने भी यह पृथुही पूज्य है ५२ क्योंकि योद्धाओं में आदि योद्धा होनेसे हे जनमेजय जो योद्धा पृथुके गुणोंका कीर्त न करके युद्धमें जाताहै ५३ सो घोरयुद्धको तिरके और उत्तम कीर्त्ति को प्राप्त होताहै और हे राजन् दुकान वृत्तियोंवाले द्रव्ययुक्त वैश्योंनेभीयह वृत्तिका देनेवाला ५४ और बड़े यशवाला पृथुही पूज्यहै और हे राजन् त्रिवर्णकी शुश्रूषा करनेवाले शूद्रोंनेभी उत्तम कीर्त्ति केवास्ते यही सेव्यहै ५५ हे जनमेजय ये बछड़े और दोहनेवाले और दूध और पात्र ये सम्पूर्ण मैंने तेरेप्रति कहेहैं और क्याकहूं ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांपृथूपाख्यानेपृथिवीदोहेनामषष्ठोऽध्यायः ६ ॥

सातवां अध्याय ॥

ऐसे सुन जनमेजयने कहा हे तपोधन वैशंपायन जी सम्पूर्ण मन्वन्तर और तिन्होंका बिसर्ग विस्तार वर्णनकरो १ और जितने मनुहैं और जितना काल है और जितने मन्वन्तर हैं तिन्हों को श्रवण करनेकीइच्छा करूंहूं २ तब वैशम्पायन कहनेलगे हेराजन् विस्तारसे तो मन्वन्तरों का वर्णन सौ बर्षमें भी करनेको भी मैं समर्थनहींपरंतु संक्षेपसे कहताहूं श्रवणकरो ३ स्वायम्भुव,स्वारोचिष, औतमि, तामस, रैवत,चाक्षुष ४ वैवस्वत, हे राजन् यह मनु अब बर्तताहै सावर्णि,सौत्य,रौच्य,५ मेरु सावर्ण ऐसे चार मनुकहे हैं हे राजन् ये वदीतहुए और बर्त्तमान और आनेवाले संपूर्ण मनुतेरे से कहेहैं ६ अब इन्होंके ऋषि और पुत्र,और देवसमूह इन्होंकोबर्णन करताहूं श्रवणकरो ७ मरीचि,अत्रि,अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य, बशिष्ठ,ये सातब्रह्माके पुत्र ८ उत्तर दिशामें सप्तर्षि और यामानाम देवता ये संपूर्ण स्वायंभुव मनुमें होते भये ९ और आग्नीध्र, अग्नि

बाहु,मेधातिथि,बसु ज्योतिष्मान् द्युतिमान्, हव्य, सवन पुत्र १०ये स्वायंभुव मनुके बड़े पराक्रमी दशपुत्र होतेभये हेराजन् यह तेरे प्रति प्रथम मन्वंतर कहाहै ११ और बशिष्ठकापुत्र औ ऊर्बस्तंब, काश्यपु प्राण, वृहस्पति, दत्त,निश्च्यवन, १२ ये महाव्रत महर्षि और तुषित नामदेवता स्वारोचिष मन्वंतर में होतेभये १३ और हविध्र,सुकृति, ज्योति, आप,मूर्त्ति,अयस्मय, प्रथित, नभस्य, नभ, ऊर्ज, १४ हे-राजन् ये महीबीर्य पराक्रमवाले और महात्मा स्वारोचिष मनुके पुत्र कहेहैं १५ हे राजन् यह दूसरा मन्वंतर कहा है अब तीसरा मन्वंतरकहै हैं तिसके सुनो और वशिष्ठ जीके बाशिष्ठ नाम से वि-ख्यात सात पुत्रहुये और हिरण्यगर्भ के ऊर्ज नामसे बिख्यात १६ हे राजन् ये औत्तमिके दशमनोरम पुत्र हैं १७ ईष ऊर्ज तनूर्ज मधु माधव शुचि शुक्र सह नभस्य नभ १८ भानव दशपुत्र हुयेहैं अब चौथा मन्वंतर कहै हैं सुनो १९ काव्य, पृथु, अग्नि, जन्यु, धामा, कपीवान् ये संपूर्ण ऋषि २० और पुराणों में पुत्र पौत्र भी कहे हैं और सत्य देवगण ये तामस मन्वंतर में होतेभये २१ हे राजन् अ। इसके पुत्रकहतेहैं द्युति,तपस्य सुतपा,तपोमूल, तपोसन, २२ तपो रति, अकल्माष,धन्वी, तन्वी, परन्तप, ये महावलवान् तामस के दशपुत्र होतेभये २३ पवन देवताने ये कहे हैं हे महाराज अबपांच वां मन्वंतर कहैहैं वेदवाहु यद्बुध्र, वेदशिरा,२४ हिरण्यरोमा,पर्ज-न्य, सोमसे उत्पन्नहुआ ऊर्द्ध वाहु सत्यवादी आत्रेय येसप्तर्षि २५ और अभूत रजस्वभाव, पारिप्लव रैभ्य ये देवता पांचवें मन्वंतरमें होतेभये २६ अब रैवतकेपुत्र कहतेहैं धृतिमान्,अव्यय,युक्त,तत्त्वद-र्शी, निरुत्सक, २७ अरण्य, प्रकाश,निर्मोह,सत्यवान्,कृती,ये रैव-तकेपुत्रहैं हे राजन् यह पांच मन्वंतर में कहेहैं २८ हे राजन् अब छठा मन्वंतरकहते हैं भृगु, नभ, विवस्वान्, सुधामा, बिरजा, २९ अतिनामा, सहिष्णु, ये सप्तर्षि चाक्षुषमन्वंतरमेंहोतेभये ३० और आद्य, प्रभूत, ऋभु, पृथु, लेखा इन नामोंवाले पांच देवताओं के समूहहोतेभये ३१ और हे राजन् अंगिरा ऋषिकेपुत्र महात्मा महा-

तेजवाले नड्वलाकेपुत्रऊरुसे आदिलेकर दशहोतेभये ३२ हेराजन् यह छठा मन्वंतरकहाहै और अत्रि,बशिष्ठ,कश्यप,३३गौतम, भरद्वाज,विश्वामित्र,ऋचीककेपुत्र ३४जमदग्नि, येसप्तर्षि और साध्य, रुद्र, विश्वेदेवा, बसु, मरुत, ३५ आदित्य,अश्विनीकुमार,ये देवता वैवस्वतमें अब बर्तते हैं ३६ और इक्ष्वाकुसे आदिलेकर दशपुत्र ये सम्पूर्ण बिवस्वत मनुमें होतेभये ३७हे राजन् इनसात महर्षियोंके पुत्र और पौत्र सम्पूर्ण मन्वन्तरोंमें और सम्पूर्ण दिशाओं में ३८ लोक व्यवस्थाके वास्ते और लोक रक्षाकेवास्ते स्थितहोतेहैं और जब मन्वन्तर व्यतीत होजाताहै ३६ तब ये कार्यकरके स्वर्गमेंचले जातेहैं और तिन्होंसे अन्य तपकरके युक्त इनके स्थानपर आजाते हैं ४० हे राजन् ऐसे ब्यतीतहुए और वर्त्तमान सातमनु क्रमसेतेरे आगे कहेहैं ४१ हे राजन् अबआनेवाले छःमनु कहतेहैं हेराजन् तिन्होंमें पांच सावर्णसंज्ञक मनुजानो ४२ और एकवैवस्वततिन्हों में चार ब्रह्माके पुत्र सावर्णिताको प्राप्तहुए हैं ४३ येचारों दक्षके दौहित्र और प्रियाकेपुत्र होतेभये बड़ा तेज वाले ऋषि मेरुपर्वत में तप करतेभये ४४ और रुचि प्रजापतिकेपुत्र रौच्यमनु होतेभये और भूतिनाम स्त्रीके विषे रुचिकापुत्र भौत्य मनु होताभया ४५ अब सावर्णि मनुकोकहतेहैं ४६ परशुराम,व्यास,अत्रिकापुत्र द्रोणाचार्य अश्वत्थामा ४७ कृपाचार्य, कौशिक,गालव,ये सातों ब्रह्माके सदृश और धन्य ४८ और जातितप मंत्र व्याकरण इन्होंसे ब्रह्मलोकमें प्रतिष्ठित ४६ भूतभव्य भव इन्होंको ज्ञान तपसे प्रसिद्ध और चिंतक ५० और इन्होंको ऐश्वर्यकेद्वारा ज्ञानकेगृहस्थीप्रणाम करते हैं ५१ और सात गुणोंकरके युक्त और दीर्घआयुवाले और दीर्घनेत्रोंवाले५२ बुद्धिकरके प्रत्यक्षधर्मोंवाले और कृत आदियुगों में ५३ गोत्रोंको प्रावृत करनेवाले और वर्णाश्रम को प्रवर्तनेवाले और सत्यधर्ममें परायण ५४ और दूसरोंके अर्थ बरको देनेवाले ऐसे भविष्यसप्तर्षि कहेहैं ५५ ऐसे सप्तर्षियों का आख्यानकहा अबसावर्णमनुके भविष्य पुत्रोंकोसुनो ५६ ऊर्ध्व,कश्यप, बरीयान्,

अम्बरीयान्, संमत, धृतिमान्, बसु, चरिष्णु, आर्य, धृष्णु, बाज, सुमति, ५७ हे राजन् ये सावर्णि मनुकेपुत्रकहे हैं अब मेरु सावर्णी को कहते हैं सुनो ५८ मेधातिथि, पौलस्त्य, वसु, काश्यपु, भार्गव, अंगिरा ५९ वाशिष्ठ, पौलह, ये सप्तर्षि रोहित मन्वन्तरमें हुएहैं ६० औरदक्षकेपुत्र रोहितके देवताओंके तीनगण ६१ और धृष्टकेतु, पंचहोत्र, निराकृती, पृथुश्रवा, भूरिधामा, ऋर्वाक, अष्टहत, गय, ६२ ये प्रथम सावर्णिके तेजस्वी नौपुत्र होतेभये अबदशवां मनुकहतेहैं ६३ हविष्मान्, पौलह, सुकृति, भार्गव, आपुमूर्त्ति, आत्रिय, वशिष्ठ ६४ और पौलस्त्य, प्रामति, नभोग, काश्यप, अंगिरा, नभस, सत्य ये परमर्षि होतेभये ६५ और ऋषियों के मंत्र देवताओं के गुणहोते भये और उत्तम, कुनिषंग, ६६ शतानीक, निरामित्र, वृषसेन, जयद्रथ, भूरिद्युम्न, सुवर्चा, ये दशपुत्र होतेभये ६७ और ग्यारहवें मन्वन्तरमें जो सप्तर्षि कहेहैं तिन्हों को सुन ६८ काश्यप, भार्गव, और आत्रेय, अंगिरा, पौलस्त्य, निश्चर, पुलह, ६९ ये सप्तर्षि हैं और ब्रह्माकेपुत्र तीन देवताओं के समूह होतेभये ७० और सम्बर्तंग, सुशर्मा, देवानीक, पुरुवह, ७१ क्षेमधन्वा, दृढ़ायुध, आदर्श पंडक, मनु, ये नौपुत्र होते भये और चतुर्थ सावर्णा में द्युति, सुतपा ७२ अंगिरा, काश्यप, पौलस्त्य, पौलह, तपोरवि, भार्गव, येसप्तर्षि होतेभये और ब्रह्माकेपुत्र पांच देवताओं के समूह होतेभये, ७३ और देववायु, अहर, देवश्रेष्ठ, विदूरथ, मित्रवान्, मित्रदेव, मित्रसेन, मित्रकृत ७४ मित्रवाहु, सुवर्चा, ये बारहपुत्र होतेभये और तेरहवेंमनुमें ७५ अंगिरा, पौलस्त्य, पौलह, भार्गव ७६ निष्प्रकंपु कश्यप, वाशिष्ठ ये सप्तर्षि, ७७ तीन देवताओंके गणहोतेभये और ये तेरह रुचिकेपुत्र होतेभये ७८ चित्रसेन, विश्वचित्र, नय, धर्म्मभृत, धृत, सुनेत्र, क्षत्रवृद्धि, सुतपा, निर्भय, दृढ़, ७९ और चौदहवेंभौत्य मनुमें आग्नीध्र, काश्यप, पौलस्त्य, भार्गव, शुचिर, अंगिरा, वाशिष्ठ, शुक्र, ये सप्तर्षि होतेभये ८० हे राजन् ऐसे ये मन्वंतर तेरेसे कहेहैं ८१ इन्होंको पुरुष प्रातःकाल कीर्तनकरे तो सुख आयु

यश इन्हों को प्राप्त होताहै ८२ और ऋषियोंके स्मरणसे भी ऐसा ही फलहोताहै और हे राजन् भौत्यमनुमें पांचदेवताओं के समूह होते भये ८३ और तरंगभीरु, बंप्र,तरस्मानुग्र, अभिमानी प्रवीण, जिष्णु, सक्रन्दन, ८४ तेजस्वी, सबल, ये भौत्यमनुके पुत्र होतेभये ८५ हे राजन् इन नामोंसे मनु तेरेआगे वर्णनकरे हैं और हेराजन् समुद्र पर्यंत यह पृथ्वी हज़ार युगपर्यंत तिन्होंने पाली है ८६ और प्रजाओंकरके तिसमें नित्यसंहार होताहै ८७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांमनुवर्णनेनामसप्तमोऽध्यायः ७॥

आठवां अध्याय॥

ऐसेसुन जनमेजयने कहाकि हेराजन् अब मन्वंतरोंकेदिन और युगोंके दिन ब्रह्माके दिन इन्होंका प्रमाण वर्णन करो १ ऐसे सुन बैशंपायनजीनेकहा कि हे राजन् सूर्य मनुष्योंके अहोरात्रको भजता है तिसअहोरात्रको लेकरगणनाकरतेहैं हेराजन् तू सुन २ पंद्रह निमेषोंकी एककाष्ठा होतीहै और तीस काष्ठाओंकी एककला और तीस कलाओंका एकमुहूर्त और तीस मुहूर्तों का ३ मनुष्योंका एक दिनरात चंद्रमा सूर्यकी गतिको अहोरात्र कहतेहैं ४ और पंद्रह अहोरात्रोंका एकपक्ष कहाहै और दो पक्षोंका एकमास कहाहै और दो मासोंकी एकऋतु ५ और तीन ऋतुओंकाएकअयन और दोअयनों का एकवर्ष और तीन अयनोंकादक्षिण और उत्तरकहतेहैं ६ और मनुष्योंके एक मासका पितरोंका एक अहोरात्रहोताहै ७ तिन्होंमें कृष्ण पितरोंका दिनहै और शुक्लपक्ष रात्रिहै हे राजन् कृष्णपक्षमें पितरोंका अहःश्राद्ध वर्तताहै ८ और मनुष्यों का एकवर्ष देवताओं का एक अहोरात्रहै तिसमें उत्तरायणदिन ९ और दक्षिणायनरात्रि और देवताओं के दशवर्ष मनुका एक अहोरात्र होताहै १० और तिन दशदिनोंका मनुका एकपक्ष होता है और तिन दशपक्षों का एकमास होता है और चार महीनोंकी ११ एकऋतु और तीनऋतुओंका एक अयन और दो अयनों का एकवर्ष १२ और तिन चार

हज़ार वर्षोंका एककृतयुग और चारसौवर्ष संध्या और इतनाही संध्यांश १३ और तीनहजार वर्ष त्रेता और तीनसौवर्ष संध्या और इतनाही संध्यांश १४ और दो हज़ारवर्ष द्वापर और दोसौ वर्षका संध्या और इतनाही संध्यांश १५ और एक हज़ार वर्षका कलियुग और सौवर्षका इसकी संध्या और इतनाही संध्यांश १६ हे राजन् यह बारह हजार युगों की संख्या कही है इस देवताओं के मानसे युगसंख्याजानो १७ हेराजन् कृत त्रेता द्वापर कलियुग ये इकहत्तर चौकड़ी १८ एकमन्वंतर कहाहै और इसीको अयन कहते हैं और जब दक्षिण और उत्तरदो मनुहोजावें १९ तब मनु लीनहोजाताहै पश्चात् इतनेही कालदूसरा मनुरहताहै २० और दशहजार मनुओंका ब्रह्माका एकबर्ष कहाहै २१ और ब्रह्माकेएक दिनमें चौदह मनुबर्ततेहैं और तिसीको कल्पभी कहतेहैं और ऐसे ही हजार युगोंपर्यन्त रात्रिकही है २२ तहां पर्वतवन बागों करके सहित पृथ्वी डूबजाती है और हे राजन् जबचार युगोंका एकहजार होजाय तब निश्शेष कल्प कहना है२३ ऐसे कुछेक अधिक सतर बर्षके मन्वंतर २४ कहाहै ऐसेचौदह मनु वेद पुराणोंमें कहेहैं येचौदह मनुकीर्ति के बढ़ानेवाले कहेहैं २५ और हेराजन् मन्वंतरों में संहार कहाहै २६ और संहारोंके अंतमें संभव कहा है सो और हे राजन् प्रजाओंकासंहार और बिसर्ग इन्होंका अंतसौबर्षसेभीकहने को समर्थ नहीं २७ और मन्वंतरोंमें जो संहार सुनिये है तहां शेष देवता ब्रह्मर्षि येतप ब्रह्मचर्य शुद्धकरकेसहितरहतेहैं २८ औरजब हजारयुगपूर्णहोजातेहैं तबनिश्शेष कल्पकहाहै तहांसंपूर्ण भूतआदित्यके तेजसे दग्धहुए २९ ब्रह्माको आगेकर आदित्यके गणोंकरके सहितजोसंपूर्ण भूतोंकेरचने३० औरअव्यक्त औरशाश्वत ऐसानारायणहै तिसको संपूर्ण भूतप्रवेश होजातेहैं ३१ पश्चात्संपूर्ण समुद्र मिलजातेहैं तिन्होंमेंब्रह्माका एकहजारवर्ष नारायण निद्राकोधारण करतेहैं ३२ और इस रात्रि में ब्रह्मानिद्रा योगको प्राप्तहुए शयन करताहै ३३ पश्चात् तिसरात्रिको उल्लंघन करके और ब्रह्माजाग

करफिर सृष्टिरचनेको इच्छा करता है ३४ पश्चात् हेराजन् सोही पुरानीस्मृति और वहीवृत्तांत वहीचेष्टितवहीदेवता और वही देवताओंकेस्थान संपूर्ण वैसेही होजातेहैं ३५ और आदित्यकी किरणों से दग्धहुएसंपूर्णभूत और देवऋषि यक्ष गंधर्व पिशाच उरग राक्षसये संपूर्ण उत्पन्न होजातेहैं ३६ और ठगढगारमो नानारूप इनसंपूर्णोंको ब्रह्मा नारायण से निकसके रचताभया ३७ और जो संपूर्ण मनुष्य देवता महर्षि हैं संगत शुद्धसंग इन्हों को रचना निरंतर धर्मसेहोती है और हे राजन् ऐसेही कालसंख्याका जाननेवाला ईश्वर फिर ऐसीही हजारयुगकी संख्याका दिनबनाकर और फिर हजारबर्षकी रात्रिबनाताहै ३८ ऐसे वारंवार भूतोंको रचताहै और संहारकरता है ३९ और हेभरत श्रेष्ठ जिनवृष्णियोंमें असुरोंकेनाश केअर्थ और संपूर्णलोकों केहितके अर्थहरि भगवान् जन्मलेतेभये तिन वृष्णियों के वंश का प्रसंगसे वर्तमान बैवस्वतके निसर्गको कहूंगा ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांमन्वंतरानुकीर्त्तनेनामअष्टमोऽध्यायः ८ ॥

नवांअध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेभये हेराजन् दक्षकीपुत्री बिषे कश्यपजी से बिवस्वान् होतेभये और तिस बिवस्वान्के त्वष्टा की पुत्री १ रेणु नाम भार्या होती भई पश्चात् सुंदरतप और तेजसे युक्त और रूप यौवनवाली २ भर्त्ताके रूपसे नहीं प्रसन्नहोतीहुई और संज्ञानामसे बिख्यात ऐसीभार्याहुईहै ३ और उसआदित्य मंडलके तेजका रूप गात्रोंमें परिदग्ध हुआ अतिक्रांतकी तरह नहींहोताभया ४ तबस्नेह से यहकहतीभईयह अंडस्थमरा नहींइसवास्ते मार्तंडनामहोताभया ५ और बिवस्वान् अधिकतेजस्वी होनेसे तीनोंलोकोंको तापकरता भया ६ और हेराजन् यह आदित्य तिससंज्ञामें एककन्या और दो पुत्र उत्पन्न करतेभये ७ तिन्हों में बिवस्वान् का पुत्रश्राद्धदेव होता भया और यमुना और यमये उत्पन्न होतेभये ८ पश्चात् बिवस्वान् काश्यामवर्ण देखकर और वह संज्ञातिसको नहीं सहतीहुई अपनी

छाया सवर्णाको रचतीभई ९ पश्चात् यह मायावती छाया अंजलि बांध संज्ञाकेआगेस्थितहोकर १० कहनेलगी कि हेभामिनी मेरेको आज्ञा फरमाओ मैं वैसेही करूंगी संज्ञाकहने लगीकि हे छाये तेरा कल्याणहो मैं अपने पिताकेभवनमें जातीहूं और तू बिकारसे रहित होके मेरेभवनमें बस११येदोनोंमेरे पुत्र और यह कन्या तेरेसे रक्षा करनी योग्यहै और हेछाये भगवान् सूर्यके आगेयह वृत्तांत कहना नहीं १२ यहसुनछाया कहनेलगी हेदेबि तूसुख पूर्वक जा जबतक मेरेकेशों को ग्रहण नहीं करेगा और शापनहीं देगातबतकमैं नहीं कहोंगी १३ तबबैशंपायन कहनेलगे ऐसेसुन संज्ञाकहने लगीकि अच्छाठीक है पश्चात् यह तपस्विनी लज्जितसी हुई त्वष्टा पिताके स्थानमें जातीभई१४तब यह पिताकेसमीप गईतब पिताने झड़कदी और कहने लगी कि तू अपने भर्त्ताके पासजा १५ तबयह घोड़ीका रूपधारण कर और उत्तरमें कुरुदेशोंमें जाकेवहां तृणचरती भई१६ और यहांआदित्य इसको संज्ञाही जानताहुआ इसमें आत्माके समानपुत्रपैदा करताभया १७ और पूर्बजमनुके समान उत्पन्न भया सोहीसाबर्ण मनुहोताभया१८ और दूसरापुत्र शनैश्चरहोता भया सोहे राजन् यहसंज्ञाकेपुत्रोंसे १९ अपनेपुत्रोंमें अधिक स्नेहकरती भई तिसको मनुसहताभया और यमनहीं सहताभया२० पश्चात् यहकोप होकर भावीके बलसे और बालभावसे पैरकरके तिसको ताड़न करताभया २१ और हे राजन् यह छायादुःखितहुई अरेतेरा चरण टूटजाओ ऐसेशापदेतीभई२२पश्चात् यहयमछायाके वाक्यों से कांपता हुआ और शापसे उद्विग्न हुआ पिताके आगे अंजलि बांधसंपूर्ण कहताभया २३ कि हे भगवन् यह मेरा शापदूर करो और हेभगवन् माताने संपूर्ण पुत्रोंमे बराबरबर्त्तना उचितहै २४ सो यह हमारेको छोड़कर और छोटोंपर मोहकरती है सो हेभगवन् मैं क्रोधकर बालभावसे और मोहसे इसकेलात मारनेको तैयार हुआ और मारी तो नहीं २५ सो हेभगवन् यह मेरा अपराध क्षमाकरो क्योंकिजिससे तेरीपूजनी याकामैंने तिरस्कार किया इसवास्ते यह

चरण निस्संदेह पड़ेगा २६ सोहे लोकेश माताने मेरेको शापदिया है सोआप यहदयाकरो कि तेरीकृपासे यहचरण नहींपड़े २७इतनी सुन विवस्वान् कहताभया कि यह तो निश्चय ऐसेहीहोगा क्योंकि जिससेधर्मज्ञ और सत्यवादी ऐसेतेरेमें क्रोध उत्पन्न होताभया२८ क्योंकि और तेरीमाताके बचनको अन्यथा करनेकोभी मैं समर्थनहीं इसवास्ते कृमि तेरेपैरसे मांसलेलेकर पृथ्वीमें प्राप्तहोवेंगी २६ और तिसके पीछे तू सुखको प्राप्तहोगा ऐसे तेरीमाताका बचन सत्यहोवेगा ३०और शापके परिहार करके तूभी रक्षित होवेगा ऐसे यमको कह पश्चात् सूर्यभगवान् छायाको कहतेभये कि हेप्रिये तुल्यपुत्रोंमें तू न्यून अधिक स्नेह क्योंकरतीहै ३१ ऐसे छायासुन तिसवार्त्ताको गुप्तकरती कुछ उत्तर नहींदेतीभई ३२ पश्चात् बिवस्वान् आत्माको टेककर योगसमाधिसे सत्यदेखतेभये पश्चात् हेराजन् तिसकानाश करनेको तैयारहुए ३३ और केश पकड़लिये तब संपूर्ण वृत्तांतछाया कहतीभई ३४ पश्चात् बिवस्वान् ऐसे सुन क्रोध युक्तहोकर दग्ध करनेकी इच्छाकरके त्वष्टाके पासजातेभये यहत्वष्टा इसका बिधिसे पूजनकर क्रोधको शांतकर ऐसावचन कहताभया ३५ त्वष्टा कहने लगाकि हेभगवन् आपका अत्यंततेजसे यहरूपसोभाको प्राप्तनहीं होता सो आपकेतेजको नहींसहतीहुई संज्ञाघोड़ीबनकर हरियालीमें चरतीहै ३६ और शुभचारिणी नित्य तपकरनेवाली और घोड़ीका रूप धारणकर ३७ पत्तोंकाभोजन करनेवाली,कृश,और दीन,जटा को धारणकिये ब्रह्मचारिणी, और हाथीके सूंडसे व्याकुलकरीपद्मिनीकेसमानअतिव्याकुल ३८और श्लाघाके योग्य और योगबलसे संयुक्त ऐसीस्त्रीको आजदेखेगा और हे देवेशसूर्य जो मेरेमत को आपयोग्य जानो होतो ३९ आपके भी रूपका निवृत्त करदेऊं तब तिरछे और ऊंचे रूप से संयुक्त सूर्य्य हुआ ४० और तिसरूप को धारण करनेवालासूर्य त्वष्टा प्रजापतिके बचन को अच्छीतरह मानताभया ४१ और रूपको सिद्धिवास्ते त्वष्टाको आज्ञा देताभया तब समीपमें त्वष्टा प्राप्तहो ४२ भ्रामण यंत्रकेद्वारा सूर्यके रूपको

अर्थात् तेजको सूक्ष्मरूप सुंदर करताभया पीछे हे राजन् तेजकी अल्पतासे तिसका निर्भासितरूपहुआ४३तवकांतसेभी अधिककांत ऐसारूप पहले सेभी अधिक शोभित होता भया ४४ और तवसे लगायत सूर्य्य का लोहितरूप मुखहुआ है ४५ और सूर्यका मुखके प्रथम च्युतरूप तेजसे बारह आदित्य उपजते भये इस वास्ते सब आदित्यों की उत्पत्ति सूर्य के मुखसे मानीगई है ४६ और धाता १ अर्यमा २ मित्र ३ वरुण ४ अंश५ भग६,४७इन्द्र ७ विवस्वान् ८ पूषा ९ पर्यन्य १० त्वष्टा ११ विष्णु १२, ४८ ये उपजने वालोंके नामहैं इन आदित्यों को अपने देहसेउपजे हुए देख सूर्य अति आनंदको प्राप्त होता भया और गंध पुष्प आभूषण रत्नों से जटित मुकुट ४९ इन्हों करके सबों को पूजताभया तब त्वष्टा कहने लगा हे देव उत्तर कुरुके देशमें ५० घोड़ीके रूपको प्राप्तहुई और हरित दूबसे संयुक्त देशमें विचरती ऐसी अपनी भार्या के समीप गमन करो ५१तव अपनी भार्याके रूपकीलीलाकर अर्थात् आपभी अश्वके रूपको धारणकर और योगको प्राप्तहो ५२ सबोंके तेजसे और नियमों से अतितेज और नियमवाली अपनी भार्याको देखताभया ५३ तब अश्वहीके रूपमें सूर्य्य मैथुनकेअर्थ चेष्टा करती हुई उस अपनी भार्याके मुखमें समागम करताभया ५३ तब वह घोड़ीपर पुरुषकी शंकाकर सूर्यके वीर्य को अपनी नासिकाके द्वारा बाहिर काढ़नेलगी ५४ तब वैद्योंमें उत्तम और दिव्यरूपवाले ऐसेअश्विनीकुमार उपजतेभये पीछे नासत्य और दस्र इस नामसे विख्यात हुए ५५ ऐसे आठमें प्रजापतिरूप सूर्यके ये दोनोंपुत्र हुएहैं पीछे दिव्यरूपसे सूर्य अपनी भार्याको देखताभया५६ तब हे जनमेजय भार्या आनंदित होनेलगी पीछे इस कर्मसे अतिपीड़ित मनवाला धर्मराज ५७ इस प्रजाको धर्मसे पालने लगा अर्थात् धर्महीके आश्रय हुआ सो इस धर्मके प्रतापसे अतिकीर्तिवाला धर्मराज५८ पितरोंकाराजापन और लोकपालताको प्राप्तहुआ और सूर्यकापुत्र सावर्णिमनु ५९ भावीरूप सावर्णि अंतरमें प्रकाशित होगा जो

अब भी मेरु पर्वतके पृष्ठभागमें घोरतप कररहाहै ६० और तिसके तेजसे त्वष्टाने युद्धमें नहीं प्रतिहत होने वाला ऐसा विष्णुका चक्र दैत्योंके नाशवास्ते प्रकाशित किया है ६१ और सावर्णिमनु और धर्मराज इन दोनों से छोटी और अति यशवाली ६२ और नदियोंमें श्रेष्ठ और लोकको सुखदेनेवाली और यमुना नामसे विख्यात नदी होतीभई ६३ और इस सावर्णिमनुका दूसराभ्राता शनैश्चर सब लोकके पूजने योग्य ग्रहताको प्राप्तहुआ ६४ जो देवताओं के इस जन्मको श्रवणकरे और धारणकरे वह मनुष्य दुःखोंसे रहित होके अति यशको प्राप्त होताहै ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वणिभाषायांनवमोऽध्यायः ९ ॥

दशवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि वैवस्वतमनुके इक्ष्वाकु १ नाभाग २ धृष्णु ३ शर्य्याति ४।१ नरिष्य ५ प्रांशु ६ नाभागारिष्ट ७ करूष८ पृषध्र ९ ऐसे नामोंवाले ९ पुत्र उपजते भये २ परंतु इन पुत्रों की उत्पत्तिसे पहले हे राजन् पुत्रकी कामनावाला मनु मित्रावरुणकी यज्ञ करताभया ३ हे भारत तब मनु मित्रावरुणके अंशमें अग्निमें वहुतसी आहुती देताभया ४ तब ऐसे आहुती देनेसे देवता गंधर्व मनुष्य तपोधनवाले मुनि ये सब तृप्तहोते भये ५ तब दिव्य बस्त्रों को धारणकरे और दिव्य आभूषणों से आभूषित और दिव्य रूपवाली ऐसी इड़ानामसे विख्यात कन्याउपजती भई ६ ऐसे सुनाहै तब दंडको धारणकरनेवाला मनु इलासे कहनेलगा पुत्रि तू मेरेसंग स्थानपै चल ७ तब पुत्रकी कामनावाले मनुजीसे धर्मयुक्तवचन इला कहनेलगी ८ हे कहनेवालों में श्रेष्ठ मैं मित्रावरुणके अंशमें जन्मीहूं इसवास्ते तिन्होंके सकाशमें जाऊंगी ९ क्योंकि हतक्रिया धर्म्म मेरेको मतमारो ऐसे मनुजीसे कह मित्रावरुणके समीप में जाके इला अंजली बांध कहनेलगी १० हे देवताओ तुमदोनोंके अंशसे मैं उपजीहूं इसवास्ते ११ मेरेको तुम्हारा क्या करनाचा-

हिये और मनुजीने ऐसे कहा कि तू मेरीपुत्री है १२ पीछे ऐसेकह नेवाली और धर्ममें परायण ऐसी इला के अर्थ मित्र और वरुण जैसे कहतेभये तैसे सुन १३ हेसुंदर कटिवाली वरवर्णिनि इस तेरे धर्मसे और सत्यसे और विनयतासे और शांतिसे और सत्यसेहम दोनों प्रसन्नहुए १४ और महाभागे तू हमारी पुत्री है ऐसे संसार में विख्यात होवेगी और वंशको उत्पन्न करनेवाला पुत्र तूही मनु-जीके होगी १५ अर्थात् हे शोभने जगत्को प्रिय और मनुकेवंशको बढ़ानेवाला और तीन लोकमें सुद्युम्न इस नाम से विख्यात ऐसा पुत्र होवेगा १६ पीछे ऐसे सुन पिताके समीप में गमन करतीहुई इसी अंतरमें चंद्रमाकेपुत्र बुधने मैथुनके अर्थ याचनाकरी १७ तब चंद्रमाके पुत्र बुधसे तिस इलामें पुरूरवा जन्मलेताभया ऐसे पुत्र-को उत्पन्न कर पीछे इला सुद्युम्न होताभया १८ और हे भारत सुद्युम्न के परमधार्मिक और उत्कल गय विनताश्व इननामोंसे विख्यात तीनपुत्र होतेभये १९ और उत्कलके उत्कला और विन-ताश्वके दिक्पश्चिमा और गयके गया ऐसी पुरी हेभरत श्रेष्ठ हो-तीभई २० और हे अरिंदम जब मनुजी सूर्यमें प्रवेशकरतेभये तब दश मनुके पुत्र इस पृथ्वीका विभागकर ग्रहण करतेभये २१ तब मध्यदेश का राजा इक्ष्वाकुहुआ २२ और तिस समय में कन्याभा-वसे इस गुणको सुद्युम्न नहीं प्राप्तहुआ २३ और वशिष्ठजी के वचन से महात्मा पुरुषों के समान प्रतिष्ठा को सुद्युम्न प्राप्तहोके पीछे प्रयागके समीपमें राज्य को प्राप्तहुआ २४ हे राजन् उस राज्यको पुरूरवा के अर्थ देताभया २५ और उसी राज्यस्थान को धृष्टक अंबरीष दंडक ऐसे नामोंवाले तीन पुत्रहुए २६ तिन्हों में महात्मा दंडकराजा तपस्वियों के योग्य उत्तम दंडकारण्य नाम से विख्यात और लोकमें विख्यात ऐसेबनको रचताभया २७ तिसमें प्रवेशकरनेसेही मनुष्यपापोंसे छूटजाताहै औरहे भारतपीछे पुरूरवा पुत्रको उत्पन्न कर सुद्युम्नतो स्वर्ग में प्राप्त होते भये २८ और न रिष्यन्तके शकजातिवाले राजेपुत्रहुए और नाभाके राजाओं में उत्तम

अंबरीषपुत्रहुआ २६ और धृष्टनुकेयुद्धमें धृष्टरूपऐसा धार्ष्टकक्षत्रहुआ और सर्यातीके आनर्त नामवाला पुत्र ३० और सुकन्या नामसे बिख्यात और जो च्यवनमुनिकी भार्याहुई ऐसी पुत्रीहुई ३१इसभांति मिथुन उपजाहै औरआनर्त के महाद्युतिवाला रेवनामवाला पुत्रउपजा ३२ जिसकाअनर्त देसमेंराज्यहुआ और कुशस्थली अर्थात्द्वारकाराजधानीहुई ३३ और रेवके ककुद्मीनामवाला और धार्मिक और रैवतनाम सेभी बिख्यात ऐसा एकजेष्ठ पुत्रहुआ ३४ वाकी अन्यभी १०० पुत्रहुए तिन्होंमेंसे रैवतपुत्र१ अपनीकन्याको ग्रहणकर ब्रह्मलोकमें गमन करताभया ३५तहां एकमहूर्तकेसमान बहुतसे युगोंको बीतेहुएसुनजवान अवस्थामें स्थित हुआ यादवोंसे आवृत ३६ और द्वारावती नामसे प्रसिद्ध और वहुतद्वारोंवाली और बहुतसुंदर और श्रीकृष्ण है अग्रणी जिन्होंका ऐसे भोज वृष्णि अंधक ३७ इनकुलोंसेरक्षित ऐसी अपनी पुरीमें आके प्राप्तहुआ पीछे सब यथार्थ तत्व सुनरेवतराजा अपनी रेवती पुत्रीको बलदेवजीकेअर्थ विवाहके ३८ मेरुपर्व्वतके शिखरपे आप तपकरनेवास्ते जाताभया और बलदेव जीभी सुख पूर्व्वक रेवतीके संग रमण करतेभये ३९ ॥

इ॰ तश्रीमहा भारते हरिवंशपर्व्वे भाषायां ऐलोत्पत्तौदशमोऽध्यायः १० ॥

ग्यारहवां अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्नकिया हेद्विजोत्तम वहुतसा कालव्यतीत होगया परंतुरेवतीऔर रैवत राजाकोवृद्धताकैसेनहींप्राप्तहुई १औरमेरुकोगये शर्यातिराजाकी संतति इससमयमेंभी कैसेपृथ्वी मेंस्थितरहीसोतत्वसेश्रवण करनेकीइच्छाकरूहूं २ तबवैशंपायनकहनेलगेकिहेराजन् वृद्धता क्षुधा तृषा मृत्यु ऋतु चक्रये सब ब्रह्मलोकमें नहींउपजतेहैं ३ और जब रैवतराजा ब्रह्मलोक में चलेगये तब कुशस्थली यक्ष और राक्षसोंने ग्रहणकरी४औरइस राजाके१००भ्राताराक्षसोंसे पीड़ित सब दिशाओंमें चलेगये ५ और हे राजेन्द्र जब सब भ्राता भाजगये तब अन्यक्षत्रियभी भयभीतहोके जहांतहां भाजनेलगे६ऐसे हेमहा-

राज समूहके समूह इकट्ठेहोकर शार्य्यात इसनामसे विख्यात क्षत्रिय होतेभये७ और हेकुरुनंदन पर्वतोंमें प्रवेशकरनेलगे८और नाभागारिष्टके बैश्यजातिवाले दोपुत्रब्राह्मणताको प्राप्तहुएऔरकरुषके युद्धमें कुशल और कारूष इसनामसेविख्यात ऐसे क्षत्रियउत्पन्न हुए६और पृषध्रराजागुरूकी गायके मरजानेसे हेजनमेजय शापसे शूद्रहोगया ऐसे नव बैवस्वत मनुजीके पुत्रोंका वर्णनकियाहै १० औरमनुजीकी छींकसे इक्षाकुउपजा११औरइक्षाकुके बहुतसी दक्षिणादेनेवाले१०० पुत्रउपजे तिन्होंमें ज्येष्ठपुत्र बिकुक्षिहुआ और यह युद्धकरनेमें समर्थनहींहुआ १२ और अयोध्यापुरीका स्वामीभीहुआ और बिकुक्षिके उत्तमरूप५० और शकुनिनाम१०हैंमुख्य जिन्होंमें ऐसे ५०पुत्र१३ उत्तरके देशमेंराज्यको प्राप्तहो प्रजाको पालनाकरतेभये१४और वशातिनाम मुख्यहैं जिन्होंमें और प्रजाकीपालना करनेवाले ऐसे४८ विकुक्षिके पुत्र दक्षिण दिशामें बसतेभये१५ और एकसमयमें इक्ष्वाकुराजा पर्वकालमें विकुक्षिसे कहनेलगा हेमहाबल श्राद्धकेअर्थ मृग कोमार मांसलाओ १६ तबपिताके बचनको नहींमान और श्राद्धका निरादरकर१७ और शशाकेमांसको खाकेशशादपुत्र सिकार खेलने कोचलागया तब बसिष्ठजीके बचनसेइक्षाकु राजाने बिकुक्षिका परित्यागकिया १८ तबइक्षाकुके समीप में शशादपुत्र बसतारहा पीछें शशादके अतिबीर्यवाला ककुत्स्थ पुत्रउपजा१६ पीछे एक समयमें वृष रूप हुए इन्द्रकेपीछे यही सब राक्षसोंको जीतताभया २०पीछे ककुत्स्थके अनेना पुत्रहुआ पीछे अनेनाके पृथु पुत्रहुआ पीछेपृथुकेबिष्टराश्व पुत्रहुआ पीछे बिष्टराश्व के आर्द्रपुत्र हुआ २१ पीछे आर्द्र के युवनाश्व पुत्रहुआ पीछे युवनाश्वके श्रावपुत्र हुआपीछे श्रावके श्रावस्तपुत्रहुआ जिसने श्रावस्तीनाम पुरीरची२२ पीछे श्रावस्तके बृहदश्व पुत्रहुआ पीछेबृहदश्वके परमधार्मिक कुबलाश्व पुत्रहुआ२३ औरइसीको धुंधुदैत्यके मारनेसे धंधुमारभी कहतेहैं २४तबजनमेजयने प्रश्नकिया हेब्रह्मान् धुंधुदैत्यके मारनेका आख्यानतत्वसेसुननेकीइच्छा करताहूं जिसकारणसे कुबलाश्वका नामधुंधुमारहुआ२५

तब वैशंपायनजी कहनेलगे कुवलाश्वके उत्तम धनुविद्या वालेऔर
सब विद्याओंमें कुशल २६ और बलवंत और सुंदरऐसे १०० पुत्र
उपजतेभये पीछे बृहदश्व पिताकुवलाश्वपुत्रको राज्यस्थानपर प्राप्त
कर२७आप वनमेंगया तब उत्तङ्कऋषि उस राजाकेगमनको निवा-
रण कर्तेभये२८ और उतङ्कमुनिनेकहा हेराजन् आप इस लोकको
रक्षाकरने योग्यहो और हेपार्थिव निरुद्विग्नहोके तपकरने कोसम
र्थनहींहो२९क्योंकि मेरेआश्रम के समीपमें मरुधन्वादेशमें वालका
संपूर्ण उज्जानक विख्यातहै ३० तिसमें देवताओं से अवध्य और
बड़ेशरीरवाला और अतिबलवाला और पृथ्वीके भीतर प्रवेशकिये
औरवालूरेत सेअंतिर्हित ३१ और मधु राक्षसकापुत्र ऐसा धुंधना-
मवाला महाराक्षस तपकोकर लोककोनाशने के अर्थ शयनकरता
है ३२ और १ वर्षकेअंतमें जब २ वह राक्षस श्वासको छोड़ता है
तबतब पर्बत बन आदिसे संयुक्त पृथ्वी कांपतीहै३३ और पीछेतिस-
के श्वाससेउपजे वातसे अतिरज उड़ता है और सूर्य्यके मार्गकोआं-
धीसे आच्छादितकर सात दिनोंतक पृथ्वीकांपती ही रहती है ३४
और धूमासे संयुक्त अग्निके किणके प्रकाशित रहते हैं इसवास्ते हे
राजन्मैं अपनेआश्रम में ठहरनेको समर्थनहीं होता ३५ इसलिये
हेमहाराज लोक केहितकी कामनाकर इस बड़े शरीरवाले राक्षस
को मारोऔर जबआप इसकोमारोगेतब स्वस्थरूप लोकहो जावेंगे
३६और हेपृथ्वीपते तिसको मारने वास्ते आपहीसमर्थ हैं और हे
अनघ पूर्वयुगमें विष्णुभगवान्ने मेरेअर्थबरदियाहै ३७कि जो इस
महाबली राक्षसको मारेगा तिसके तेजको तुम बढ़ाओगे ऐसे मेरे
सेकहाहै३८और हेपृथ्वीपाल अल्पतेजसे महातेजवाला यहराक्षस
दिव्य शत १०० बर्षों में भी दग्धहोने को समर्थ नहीं होसकेगा
३९ क्योंकि तिसराक्षसमें ऐसा बलहै कि देवताओंको भी सामर्थ्य
नहीं है ऐसोउतंक मुनिने राजासे बचनकहे ४० तब वृहदश्वराजा
अपने कुबलाश्वपुत्रको धुंधुदैत्यके मारने वास्ते देताभया ४१ और
वृहदश्वकहनेलगा हेभगवन् मैंनेशस्त्रों का त्यागकर दिया है और

हे द्विजश्रेष्ठ यह मेरा पुत्र धुंधुराक्षसको मारेगा इसमें संशय नहीं ४२ ऐसे पुत्रको आज्ञादेकर राजर्षि तपकेअर्थ पर्वतको गमन करताभया ४३ पीछे कुवलाश्व राजा अपने १०० पुत्रोंको संगले धुंधुराक्षस के मारनेवास्ते उतंकमुनिके साथ चला ४४ तिस समयमें कुवलाश्वराजाके शरीर में उतंककी आज्ञासे और संसारके हितवास्ते विष्णु भगवान् अपने तेजसे प्रवेशकरतेभये ४५ और जब राजाने गमन किया तब आकाशमें महाशब्द होनेलगा कि यह श्रीमानराजा अवध्यहै और धुंधुराक्षसको मारेगा ४६ पीछेदिव्यपुष्पों कीवर्षा राजके चारोंतर्फदेवते करने लगेऔरहे भरतर्षभ देवताओंनेनगारे बजनेलागेपीछेअपने १०० पुत्रोंसहितराजाबालूरेतसेपूरित समुद्रको खुदावताभया ४७ तबहेकौरव्यनारायणकेतेजसे पुष्टकियाराजाफिर बलवालाहोताभया ४८ जब राजाके पुत्रोंने अति खोदनकियातबधुंधु राक्षस पश्चिमदिशाको प्राप्तहोखड़ाहुआ ४९ तबमुखसे उपजेअग्नि करक्रोधसे लोकोंको उद्वर्तनकरनेकी तरह बेगसे पानी गिरताभया जैसे चंद्रमाके उदयमें समुद्र ५० पीछेउस राक्षस ने राजाके सब पुत्र दग्ध करदिये केवल तीन ३ शेषरहे ५१ पीछे तिस अतिबल वाले राक्षसके सन्मुख अति तेजवालाराजा प्राप्तहो ५२ राक्षसके जलमय वेगको योग विद्या से पानकर पीछे जलसे अग्निको शांत करताभया ५३ पीछे राक्षसकोमार उत्तङ्कमुनिको दिखाताभया ५४ तब उत्तङ्कमुनिने राजाकेअर्थ बरदिया कि हेराजन् अक्षयरूप द्रव्य तेरेपास होवेगा और किसी कालमेंभी शत्रुओं से पराजय नहीं होगा ५४ और धर्ममेंरति और अक्षयकालतक स्वर्गमें बास होगा और जो राक्षस ने तेरेपुत्र मारदिये हैं तिन्हों को भी अक्षय लोक प्राप्त होवेगा ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांधुन्धुवधेएकादशोऽध्यायः ११॥

बारहवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे तिस कुवलाश्व राजाके ३ पुत्र शेषरहे

तिन्होंमें ज्येष्ठपुत्र दृढ़ाश्वहुआ और चंद्राश्व कपिलाश्व ये दोनोंछोटे पुत्रहुए १ पीछे दृढ़ाश्वके हर्य्यश्व पुत्रहुआ पीछे हर्य्यश्वके निकुंभ पुत्रहुआ२ पीछे निकुंभके युद्धमें विशारद संहताश्व पुत्रहुआ पीछे हे राजन् अकृशाश्व और कृशाश्व ऐसे नामोंवाले दोपुत्र संहताश्व के हुए ३ और सत्पुरुषोंकी माता और तीनलोकमें दृषद्वती नामसे विख्यात ऐसी हेमवती कन्या उपजी पीछे हेमवती का प्रसेनजित् पुत्रहुआ ४ और गौरी नामवाली पतिव्रता भार्य्याको प्राप्त हुआ पीछे पतिकेशाप से यही गौरी बाहुदानदी होतीभई ५ पीछे बाहुदा नदीमें युवनाश्व राजा उत्पन्नहुआ पीछे युवनाश्व के त्रिलोकी को जीतनेवाला मान्धाता राजा पुत्रहुआ ६ तिसने शशबिंदु राजा की पुत्री और चैत्ररथी नामसे विख्यात ७ और साध्वी और बिंदुमती नामसेविख्यात और अतिरूपवाली और पतिव्रता और दशहज़ार १०००० भ्राताओंसे बड़ी ८ ऐसी स्त्रीको बिवाहकर तिसमें पुरु- कुत्स और मुचकुंद ऐसे नामोंवाले २ पुत्रउपजे ९ पीछे पुरुकुत्सके त्रसदस्यु पुत्र उपजा १० पीछे त्रसदस्यु के नर्मदा नदीमें सम्भूत पुत्रहुआ पीछे सम्भूतके सुधन्वा राजा पुत्रहुआ ११ पीछे सुधन्वा के त्रिधन्वापुत्रहुआ पीछेत्रिधन्वा के त्रय्यारुण पुत्रहुआ १२ पीछे त्रय्यारुणकेअतिबलवाला सत्यव्रतपुत्र हुआ पीछे यहीसत्यव्रतसबों केबिवाहोंमें बिघ्नकरनेलगा १३ जिसने प्रथम अन्यसे बिवाहित करीभार्य्याकोआप ग्रहणकियाऔर बालकपनेसे व कामसेवमोहसे व आनंदसे व चपलतासे किसीक पुरवासीकोकन्याको हरताभया १४ ऐसेअधर्म्मकरनेसेत्रय्यारुणराजा इसपुत्रको त्यागताभया १५ तबत्यागाहुआपुत्रपितासेबारम्बारकहनेलगामैं कहांगमनकरूं१६ तब तिसको पिताकहनेलगाहे दुष्टतूचांडालोंकेकुल मिलजाओरतेरे करके मैंपुत्रवालानहीं हूं१७ ऐसेपिताकेवचनसुननगरसे निकसता भयाऔरवशिष्ठजीभी तिसको नहीं रोकतेभये १८ तब सत्यव्रतपुत्र चाण्डालोंमेंबसनेलगा और त्रय्यारुणपिताभी बनमें चलागया१९ तबतिसराज्य मंडलमें१२ बर्षोंतकहेराजेन्द्र तिसपापसे इन्द्रने बर्षा

नहीं करी २० और तिसराजाको राज्यके विषयमें अपनी भार्याको स्थापितकरविश्वामित्रमुनिविपुलतप करनेलगे २१ पीछेविश्वामित्र कीस्त्रीअपने मध्यम औरसपुत्रकोगलेमें बांधकुटुम्बको पालनावास्ते १००गायोंकेमूल्यमेंबेचने को नगरमें चली २२ तब हेभारत उस गलेमेंबंधेहुए महर्षि पुत्रको धर्मात्मा वहीसत्यव्रत छुटाताभया २३ और सबकुटुम्बकी पालनाकरनेलगा दयाकरके और विश्वामित्रको प्रसन्नताके २४अर्थपीछे गलेमें बांधनेसे वह विश्वामित्रका पुत्रगा-लवनामसेविख्यातहुआ ऐसेगालवजीसत्यव्रतबीरनेछुटाराहै २५ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांगालवोत्पत्तौद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

तेरहवां अध्याय ॥

बैशंपायनकहनेलगेकिपीछेवहीसत्यब्रतदयासेवप्रतिज्ञासे विश्वा मित्रकीस्त्रियोंकोबिनयमेंस्थितहोपोषताभया १ औरमृगशूकर भैंसेबन केपशूइन्होंकोमार मांसको बिश्वामित्रके आश्रममें वृक्षपरबांधता भया २ और उपांशुब्रत अर्थात् अन्यकोई नहीं जानसकै ऐसेनियम को अंगीकारकर और बारहवर्षकीदीक्षाकोप्राप्तहो पिताकोआज्ञाको पालताहुआ राजाके बनवासके पीछेभी पूर्वोक्तस्थानमेंहो सत्यब्रत बसतारहा ३ तब अयोध्यापुरीको और सब राज्यको उपाध्यायके सम्बन्धसे वशिष्ठजी रक्षाकरतेभये ४ पीछे बालकपने से व भावी से सत्यव्रत वशिष्ठजीमें नित्यप्रति क्रोधको धारण करताभया ५ क्योंकि जबपिताने सत्यब्रत पुत्रकोत्यागा तब वशिष्ठ जी किसी कारणकर नहीं बर्ज्जतेभये ६ क्योंकि यह सत्यब्रत अपराधी है कितनेक कालतक प्रायश्चित्तकरी ७ और वशिष्ठजी यहभी बिचा-रनेलगे कि जो इसने पाप कियेहैं तिन्होंकी निवृत्ति बारह वर्षकी दीक्षामें होजावेगी ८ तब इसका अभिषेचन कियाजावेगा अथवा इसके पुत्र का अभिषेचन कियाजावेगा और इस अभिप्राय को नहीं जाननेवाला सत्यब्रत वशिष्ठजीसे बैररखनेलगा १० और इस पितापुत्रके ऐसे कारणहोनेमें इन्द्र १२ वर्षतक नहीं वर्षताभया ११

पीछे एकसमयमें वह सत्यव्रत दीक्षाको धारण करेहुए जहां तहां गया परंतु कहींभीमांस नहींमिला तब वशिष्ठजीकी कामधेनु गाय को देख क्रोधसे व मोहसे व परिश्रमसे संयुक्त और क्षुधासेपीड़ित १२ और मत्त १ प्रमत्त २ उन्मत्त ३ श्रांत ४ बुभुक्षित ५ त्वरमाण ६ भीरु ७ लुब्ध ८ क्रुद्ध ९ कामी १० इन दश धर्मोंवाला होके १३ वह राजपुत्र उस गायकोमार मांसले विश्वामित्रके पुत्रोंको खवाके पीछेआप खाताभया १४ तब इस आख्यानको वशिष्ठजी सुन इसपै क्रोध करनेलगे १५ और क्रुद्धहुए भगवान् वशिष्ठ जी इस राजपुत्रके अर्थ ऐसे कहनेलगे १६ हेक्रूर तेरे पूर्वोक्तअपराध को मैं दूर करदूंहै परन्तु तैंने तीन अपराध अर्थात्एकतो पिताका अपरितोष दूसरा गाय का मारना और तीसरा अप्रोक्षित गायके मांसको खाना ये तीनअपराध कियेहैं १७ इस वास्ते तैंने त्रिशंकु अर्थात् ३ अपराध कियेहैं इसलिये तेरेको त्रिशंकु सब कहैंगे१८ पीछे समयमें विश्वामित्रजी आके अपने कुटुम्बका पालना करने वाला देख तिस राजपुत्र से कहनेलगे कि वरमांग १९ तब राज पुत्रने कही मैं अपने इस शरीरसहित स्वर्ग लोकमेंजाऊं ऐसा वर मांगा २० पीछेजबबारहवर्षके पश्चात् अनावृष्टिके भयशांतहोगये तब इस राजपुत्रको पिताकेराज्यपर प्राप्तकर विश्वामित्र जी यज्ञ करानेलगे २१ तबदेवते और वशिष्ठजीके देखतेहुए विश्वामित्रजी शरीरसहित इस राजपुत्रको स्वर्गमें प्राप्त करतेभये २२ और इस सत्यव्रत के कैकयवंशकी सत्यरथा रानी दिव्यरूप वाले हरिश्चंद्र पुत्रको उपजातीभई २३ सो यह हरिश्चंद्र राजा त्रिशंकु का पुत्र हुआ और इसने राजसूय यज्ञकरी और चक्रवर्ती राजा हुआ २४ पीछे हरिश्चंद्रके वीर्यवाला रोहित पुत्रहुआ जिसने देशकीसिद्धिके अर्थ रोहितपुर रचा २५ पीछे यहराजर्षि राज्यकर और प्रजाको पालनाकर औरसंसारकोअसाररूपजान इस रोहितपुरकोब्राह्मणों के अर्थ देताभया २६ पीछे रोहितके हरितपुत्र हुआ पीछे हरितके चंचुपुत्रहुआ पीछे चंचुके विजय और सुदेव इन नामोंवाले २ पुत्र

हुए २७ पीछेइन्होंमें विजयने सबक्षत्री जीतलिये इसवास्ते यह विजय कहाया पीछे विजयके धर्म अर्थको जाननेवाला रुरुकपुत्र हुआ २८ पीछेरुरुकके वृकपुत्रहुआ पीछेवृकके बाहु पुत्र हुआ इस राजाको शकयवन कांबोज पारद पल्हव २६ हैहय तालजंघ ऐसे नामोंवाले मनुष्य राज्यसे अलगकरतेभये और यह राजा अति धार्मिक भी नहींहुआ ३० पीछे इस बाहुके सकाससों औरवसी में विषसे संयुक्त सगरपुत्रहुआ तिसको भृगुबंशमें होनेवाले औरवमुनि पालतेभये ३१ पीछे इसोमुनिसे सगर राजा आग्नेय अस्त्रकोसीख पीछेतालजंघ हैहयइनकोमार और सबपृथ्वीकोजीत पीछे ३२शक पलहव पारदइन क्षत्रियोंके धर्म्मों को छुटाताभया ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिबंशपर्वभाषायांत्रिशंकचरित्रेत्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥

चौदहवां अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्नकिया बिषसे सहित कैसेसगर राजा जन्मता भया और किसवास्ते शकआदि क्षत्रियोंके १ कुलोचितधर्मोंकाक्रुद्ध रूपराजा होकेछुटाता भया हे तपोधनयह सबबिस्तार से मेरेप्रति कहो २ तब बैशंपायनजी कहनेलगेकि हेराजन् व्यसनवाले बाहुका राज्य जब हैहय तालजंघशक इनआदियोंने हरलिया ३तबराजा वन कोगया और वहदुःखित राजाबनमेंजाके मरगया ४ और इसराजा की गर्भिणीस्त्री को प्रथम दूसरी रानीने बिषदेदियाथा ५सो बिषसंयुक्तबालकको धारणकिये बाहुकीरानीभी संगगई जबपतिकेप्राणान्तहोगये तबचिता बनायवनमें पतिके संग गर्भवतीरानी जलनेलगी ६ तबदया भावसे औरवमुनि जलनेसे बर्ज्ज तेभये ७ पीछेऔर्व मुनि के आश्रममें विषसहित बालक जन्मा ८ तबमुनि उसबालकके जात कर्म्मादिकरा पीछेसब वेदोंका अध्ययनकरा ९ पीछेअस्त्र देताभया पीछेदेवताओं कोभी दुःसह ऐसे आग्नेय अस्त्रको सीख और सेना इकट्ठीकर १० हैहयसंज्ञक क्षत्रियों को मारताभया जैसेक्रुद्धहुआ रुद्र पशुओं को और संसार में कीर्ति बढ़ानेलगा ११ पीछे शक

यवन कांबोज पारद पल्हव इनसबों को मारनेलगा १२ तबहाहा पुकारतेहुए येसबबशिष्ठजीकोशरणगये १३ तबनियमकरा बशिष्ठजी सगरको वर्जतेभये १४ और शकआदि क्षत्रियोंको अभय देतेभये १५ तबसगर राजाअपनी प्रतिज्ञा और बशिष्ठजीके बचनको सुन तिनक्षत्रियों के धर्म्मोंको नाशता भया १६ पीछेशक जातिके क्षत्रियोंके आधेशिरको मुड़ाछोड़ताभया पीछेयवन और कांबोज क्षत्रियोंके संपूर्ण शिरको मुड़ाछोड़ता भया १७ पीछेपारद क्षत्रियोंको छुटेहुए बालोंवाले बनायछोड़ताभया पीछे पल्हव क्षत्रियों को श्मश्रुधारण करनेवाले बनायछोड़ताभया ऐसेये सबस्वाध्याय वषट्कारसे रहित सगरजीने करदिये १८ और शक यवन कांबोज पारद पल्हवकोलि सर्प महिष दार्वाचौल केरल १९ इनसब क्षत्रियों के धर्मोंका नाश करदिया और बशिष्ठजीके बचनसे २० खसतुखारचोलमद्र किष्किंधिकओतलवंग शाल्वकोंकण २१ इन देशों के राजाओं कोभी धर्म से रहित करताभया ऐसे पृथिवीको जीत धर्मको जाननेवाला सगर राजाअश्वमेध यज्ञके अर्थदीक्षितहो अश्वको चलानेलगा २२ पीछे चलताहुआ अश्वपूर्व दक्षिणके समुद्रके समीपमें अपहृतहुआ पृथिवीमें प्रवेश करताभया २३ तबराजा उसदेशको अपने पुत्रोंकेद्वारा खुदाताभया तबउस जगहको खोदते हुए २४ आदिदेव कृष्णहरि प्रजापति बिष्णु इन नामोंवाले कपिल मुनिजीको शयन करते हुए देखतेभये २५ तब जागनेसे कपिल मुनिजीके नेत्रोंके तेजसे सगर के सबपुत्र दग्धहोगये २६ परंतुबर्हकेतु सकेतु धर्मरथ पंचजन इन नामोंवाले ४ पुत्र अवशेषरहे २७ और इन्होंहीसे वंशवढ़ेगा पीछे सगरजीके अर्थ कपिलमुनिजीनेबरदान दिया कि इक्ष्वाकुका अक्षय वंशरहेगा और तेरी सुंदरकीर्ति बढेगी २८ और समुद्रपुत्र होवेगा और अक्षय स्वर्गबासहोगा और मेरेनेत्रोंके तेजसेजो पुत्रदग्धहोगये हैं तिन्होंको अक्षयलोकप्राप्तहोवेंगे २९ पीछे समुद्रअर्घ्य ग्रहणकर तिस सगर राजाको प्रणाम करताभया और तिसकर्मसे समुद्र को सागरकहतेहैं ३० ऐसेसमुद्रसे उसअश्वको ग्रहणकर १०० अश्व

मेधयज्ञ करताभया ३१ और सगर राजाके ६०००० साठहज़ार पुत्रहुए ऐसेहमोंने सुनाहै ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांसगरोत्पत्तिचरित्रकथनेचतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

पन्द्रहवां अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्नकिया हे द्विज तिसमहात्मा रूप सगर राजा के ६००००साठहज़ारपुत्र कैसेजन्मे १तब वैशम्पायनजीकहनेलगे सगर राजाके २ भार्य्याहुई वे दोनों तपसे पापोंको दग्धकरती भई तिन्होंमें विदर्भकीपुत्री और केशिनी नामसेविख्यात ऐसीबड़ीभार्या हुई २ और अरिष्ठनेमिकीपुत्री और रूपमें पृथ्वी भरमें अतिसुंदर और महती नामसेविख्यात ऐसीछोटी भार्याहुई ३और हेजनमेजय औवमुनि तिनदोनोंको वरदेने लगे एक भार्याके ६०००० पुत्रोंको जन्मेगी ४ और एकभार्याके वंशको धारणकरनेवाला पुत्र उपजेगा सो तुमदोनों इच्छा पूर्वक ऐसे बरको ग्रहणकरो ५ तब एक भार्या लोभको प्राप्तहो शूरवीर रूप ६०००० पुत्रोंको मांगतीभई और एक भार्या वंशको चलानेवाले पुत्रको मांगती भई ऐसेही मुनि वरदान देतेभये ६ तब केशिनी भार्या के असमंजा नामवाला पुत्र उपजा यह समय पाके महाबल पंचजन नाम राजा हुआ ७ और दूसरी रानीबीजों से पूर्णतूंबी उपजातीभई तिसमें ६०००० तिलों के समान गर्भ कालके अनुसार उपज बढ़तेभये ८ तिन्होंको सगरराजा घृतसे पूर्णकुंभ में प्राप्तकरने लगा और जितने गर्भथे उतनेही राजाने धायें पोषणके वास्ते प्राप्तकरीं ९ पीछे दशवें महीनेमें क्रमसे सगरको प्रीतिको बढ़ानेवाले१०कालके अनुसार ६०००० बालक उपजते भये हे पृथ्वीपते ऐसे तूंबीके मांहसे पुत्र उपजे हैं११पीछे पंचजन के अंशुमान् पुत्रहुआ और अंशुमान्के दिलीप पुत्र हुआ पीछे दिलीप के खट्वांग पुत्रहुआ १२ जिसने स्वर्गसे फिर इसलोकमें आगमनकर१ मुहूर्तभर जीवके सत्यसे और बुद्धि से तीनोंलोक अनुसंधित करदिये १३ पीछे दिलीपके भगीरथ पुत्र

हुआ जिसने यह श्रीगंगाजी इसलोकमें प्राप्तकरी १४ और समुद्र में मिला पुत्रीभावसे मानताभया १५ इसवास्ते बंशचिंतक गंगाको भागीरथी कहतेहैं पीछे भगीरथके श्रुत पुत्रहुआ १६ पीछे श्रुत के नाभागपुत्र हुआ पीछे नाभागके अंबरीष पुत्रहुआ पीछे अंबरीष के सिंधुद्वीप पुत्रहुआ १७ पीछे सिन्धुद्वीपके अयुताजित् पुत्रहुआ पीछे अयुताजित् के महायशवाला ऋतुपर्ण पुत्रहुआ १८ यह राजा पांसों के खेल में अतिचतुर और नलराजाको मित्रहोताभया पीछे ऋतुपर्णके आर्तपर्णि पुत्र हुआ १९ पीछे आर्तपर्णि के सुदास पुत्र हुआ यहराजा इन्द्रकामित्र होताभया पीछे सुदासका पुत्र सौदा-सहुआ २० इसीको कल्माषपाद और मित्रसह भी कहते हैं पीछे कल्माषपाद के सर्वकर्म्मा पुत्र हुआ २१ पीछे सर्वकर्म्मा के अन-रण्यपुत्र हुआ पीछे अनरण्य के निघ्न पुत्र हुआ पीछे निघ्नके २२ अनमित्र और रघु ऐसे नामोंवाले २ पुत्रहुए पीछे अनि-मित्र के दुलिदुह पुत्रहुआ २३ पीछे दुलिदुहके दिलीप पुत्रहुआ यह रामचंद्रजी का प्रपितामह लगा पीछे दिलीप के दीर्घबाहुओं वाला रघुपुत्र हुआ २४ यह अयोध्यापुरी में महाबली होता भया पीछे रघुके अजपुत्रहुआ पीछे अजके दशरथ पुत्रहुआ २५ पीछे दशरथ के धर्मात्मा और महायश वाले ऐसेरामचंद्रजी पुत्रहुएपीछे रामचंद्र के कुश पुत्र हुआ २६ पीछे कुशके अतिथि पुत्रहुआ पीछे अतिथिके निषध पुत्रहुआ पीछे निषध के नल पुत्रहुआ पीछे नल के नभ पुत्रहुआ २७ पीछे नभके पुंडरीक पुत्रहुआ पीछे पुंडरीकके क्षेमधन्वा पुत्रहुआ पीछे क्षेमधन्वा के प्रताप वाला देवानीक पुत्र हुआ २८ पीछे देवानीक के अहीनगु पुत्रहुआ पीछे अहीनगुके सु-धन्वा पुत्रहुआ २९ पीछे सुधन्वा के नल पुत्रहुआ पीछे नलकेउ-कथ पुत्रहुआ ३० पीछे उकथ के वज्रनाभ पुत्रहुआ पीछे वज्रनाभ के शंख पुत्रहुआ पीछे शंखके व्युषिताश्व पुत्र हुआ ३१ पीछे व्युषि-ताश्व के पुष्प पुत्रहुआ पीछे पुष्पके अर्थ सिद्धिपुत्रहुआ पीछे अर्थ सिद्धिके सुदर्शन पुत्रहुआ पीछे सुदर्शन के अग्निवर्ण पुत्रहुआ ३२

पीछे अग्निवर्ण के शीघ्र पुत्रहुआ पीछे शीघ्रके मरु पुत्र हुआ पीछे मरु योगको प्राप्तकलाप द्वीपको प्राप्तहुआ ३३ पीछे मरुकेविश्रुतवत् पुत्रहुआ पीछे विश्रुतवत् के बृहद्बल पुत्रहुआ और हे भरतर्षभ नल राजा पुराणों में विख्यात है ३४ एकतो वीरसेनका पुत्र और दूसरा इक्ष्वाकु वंशमें होनेवाला ऐसे जानो और इक्ष्वाकुवंश के राजाप्रधानतासे यहां कह दियेगये ३५ अर्थात् ये सब सूर्यवंशी राजोंका वंशकहा इस श्राद्धदेव रूप सूर्यवंश के आख्यान कोपठन करने से ३६ संततिवाला और पापोंसे रहित और अतिआयुवाला ऐसा मनुष्य होजाता है ३६ और सूर्यके लोकमें वासका अधिकारीहोजाताहै ३७ ॥

इति श्री महाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांआदित्यवंशानुकीर्तनेपंचदशोऽध्यायः १५ ॥

सोलहवां अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्नकिया हे ब्राह्मणों में उत्तम विवस्वान् सूर्यको श्राद्धदेवत्व कैसे प्राप्तहुआ यह और श्राद्धकी उत्तमविधि श्रवण करने की इच्छा करताहूं १ और पितरों के आदि सर्गको सुनना चाहता हूं कौनपितर हुए हैं और ब्राह्मणों के सकाशसे श्रवण भी कराहै २ और स्वर्गमेंस्थित और देवताओं के भी देवते ऐसे पितर हैं यह वेदके जाननेवालों ने कहाहै सो यह विस्तार पूर्वक जानने की इच्छा है ३ और जो पितरोंका गुण कहा है और जो पितरोंकाबलहै और जैसे हमारे किये श्राद्धसे पितरोंकी तृप्तिहोती है ४ और प्रसन्न हुए पितर कल्याण देते हैं ऐसे पितरोंके उत्तम सर्गको जाननेकी इच्छा है ५ तब वैशम्पायन कहनेलगे हे जनमेजय पितरोंके उत्तम सर्गको तेरे प्रतिकहता हूं और जैसे हमारा किया श्राद्ध पितरोंको तृप्तकरै है ६ और प्रसन्न हुए पितर कल्याण से मनुष्यको युक्त करते हैं यह सब मार्कंडेयजी ने प्रश्न करने वाले भीष्मपितामहजी के अर्थकहा है ७ पीछे शरशय्यापर स्थित भीष्मजी से राजा युधिष्ठिर भी इस प्रश्नको पूछतेभये हैं ८ वह

यथाक्रम से जैसे भीष्मजीने कहा है और मार्कण्डेयजी के अर्थ सनत्कुमार ने वर्णन कियाहै ९ एक समय में युधिष्ठिर ने कहा हेधर्मज्ञ पुष्टिकी इच्छा करनेवाले मनुष्यको कैसे पुष्टिप्राप्तहोती है और किस कर्मको करनेमें मनुष्य शोच नहींकरता है१० यह आ-ख्यान सुननेकी इच्छाहै तब भीष्मजी कहनेलगे सबकामों के फल रूप श्राद्धोंसे जो पितरोंको तृप्तकरेहै ऐसे निरंतर श्राद्धकरनेवाला मनुष्य परलोकमें और इस लोकमें सुखको प्राप्तहोताहै ११ और हे युधिष्ठिर पितरधर्मकी कामनावालेको धर्म और प्रजाकीकामना वालेको प्रजा और पुष्टिकी कामनावालेको पुष्टिदेतेहैं १२ तबयुधि ष्ठिर ने प्रश्नकिया कितनों के पितर स्वर्ग में बसतेहैं और कितनों के पितरनर्कमें बसतेहैं क्योंकि सबप्राणी कर्मके फलको प्राप्तहोते हैं१३और विशेषकर फलकोचाहनेवालेमनुष्य श्राद्धकोकरतेहैं और पिता पितामह १४ प्रपितामह इन तीनपुरुतोंके अर्थ हमेसे पिण्ड-दान देतेरहतेहैं सो दियेहुए श्राद्ध पितरोंकेअर्थ कैसेपहुंचतेहैं १५ और नर्कमेंस्थितहुए पितर फलदेनेको कैसेसमर्थहैं अथवा वेपितर अन्य कोईहैं फिर हम किन्होंकी पूजा करें १६ और हमोंनेंसुनाहै देवतेभी स्वर्गमें पितरोंको पूजते हैं सो हे महाद्युते यह विस्तार पूर्वकसुननेकी इच्छा करूंहूं १७ इसकथाको आपकहो जैसेपितरों के अर्थ देनेसे तृप्तिहोतीहै १८ तब भीष्मजी कहनेलगे हे अरिंदम यहां तेरेप्रति वर्णनकरताहूं जैसे मैंनेसुनाहै और जो न सेवे अन्य पितरहैं और जिन्होंको हमहमेशे पूजतेहैं १९ यह सब लोकांतरमें गयेहुए मेरेपिताने मेरे अर्थ कहाहै और एक समय श्राद्धकालमें मैंने अपने पिता के अर्थ पिण्ड देनाचाहा २० अर्थात् पिण्ड को ग्रहणकर देनेको उद्यतभया तबमेरापिता अपनेहाथ से पृथ्वीको भेदनकर पिण्डको मांगनेलगा और तब हाथोंके आभूषणों से भूषित और केयूर भूषणों से भूषित २१ और लाल अंगुली और लालतलुआसे संयुक्त ऐसे हाथको मैंने देखा और जैसे जीवते के हाथमें चिन्ह देखेथे वेभी सब देखे परंतु बौधायन आदि कल्प

सूत्रोंमें ऐसा विधि नहीं देखागया ऐसा निश्चय कर २२ कुशोंपर मैंने पिण्डदानकिया तब प्रसन्नहुआ मेरा पिता मधुरबाणोसे २३ मेरेको ऐसेकहनेलगा हेपुत्र तेरेकरकेमैं पुत्रवालाहूं इसलोकमेंऔर परलोकमें कृतार्थ हुआहूं २४ हेपुत्र धर्मोंकोजाननेवाला और अतिपण्डित ऐसे श्रेष्ठ पुत्ररूप तैंने मेरा उपकारकिया और हेदृढ़-व्रत २५ मैंने तो अपने जाननेका उपाय किया परंतु जैसेधर्म की रक्षाकरनेवाला मनुष्य धर्मके चतुर्थांशको प्राप्तहोताहै २६ औरधर्म कीनहीं रक्षाकरनेवाला मनुष्यपापके चतुर्थांशको प्राप्तहोताहै २७ तैसे तैंने परम्परा और वेदकी मर्य्यादाकोजान वेदधर्मोंकी रक्षाकरी २८ और मेरीभी प्रीतिकरी इसवास्ते तेरेपर प्रसन्नहुआ मैं उत्तम वरदान करूंगा इसलिये तीनोंलोकों में दुर्लभ बरमांग २९ और हेपुत्र जबतक तू जीवनेकी इच्छा करेगा तबतक तेरीमृत्यु नहीं होगी ३० अर्थात् तेरीआज्ञालेकर तेरीमृत्युहोगी और जो तैंने वां-छितहो वह अन्यबर मांग ३१ ऐसे कहतेहुए पिताको मैं नमस्कार कर अंजलिबांध ऐसे कहनेलगा ३२ हे सत्तम आपकी प्रसन्नता होने से मैं कृत कृत्य होगया ३३ और जो आपसे मैंफिर अनुग्रह के योग्य हूं तो आपसे प्रकाशित किये प्रश्नकी इच्छा करूंहूं ३४ तब वहधर्मात्मामेरेसे कहनेलगे हे भीष्मजो तेरी इच्छाहो वह कह ३५ हेपुत्रतेरेसंशयको मैं दूरकरूंगा हेभारतजो तू मेरेसेपूछेगा तब अंतर्हितहुएपितासेमैं ऐसे पूछनेलगा ३६ भीष्मबोला पितरदेवताओं केभीदेवतेसुनेहैं इसवास्तेदेवतेहीपितरहैं याअन्यकोईइसलिये हम किसकोपूजें ३७ और हमारा दियाहुआश्राद्ध कैसे अन्यलोकोंमेंगये पितरों को तृप्तकरहै और श्राद्धकाफलक्याहै ३८ और देवमनुष्य दानव यक्ष राक्षस गंधर्वकिन्नरदिव्यसर्प ३९ ये सब किसपितरको श्राद्धकरतेहैं इसमें मेरेको अति संशयहैऔर अति आश्चर्य्यहै और आपसर्वज्ञहैं इसवास्ते हे धर्मज्ञ इस प्रश्नका उत्तर बर्णनकरो ४० ऐसे भीष्मजीके बचनको सुन ४१ शंतनुराजा कहनेलगे हे भारत जोतुममेरेसेप्रश्नकरोहो उसकाउत्तर संक्षेपसे तेरेप्रति कहताहूंजैसे

पितरोंकी उत्पत्ति हुईहै और हे अनघ ४२ जैसे श्राद्धदिये का फल मिलताहै और सावधानहोके पितृश्राद्धमें पितरोंकाकारणसुन देवताओंके पितर ब्रह्माजीकेपुत्रकहेहैं तिन्होंको देवमनुष्य राक्षस यक्ष गंधर्वकिन्नर दिव्यसर्पये पूजतेहैं४३और श्राद्धोंसे तृप्तकिये ये सब जगत्कोतृप्तकरतेहैं ऐसे ब्रह्माकी आज्ञाहै ४४ इस वास्ते हेमहाभाग आलस्यकोत्याग उत्तम श्राद्धोंसेतिन्होंका पूजनकर ये सबकामनाकेफलोंको देनेवाले पितरतेराकल्याण करेंगे ४५ और हेभारततेरेसेनामगोत्रआदिसे आराधित किये वे पितर स्वर्गमेंबसनेवाले हमोंको भी तृप्तकरेंगे ४६ और इस बिषयक शेष आख्यानकोपितरोंके भक्त और आत्मज्ञानको जाननेवाले ऐसे मार्कण्डेय मुनि बर्णनकरेंगे ४७ और मेरेपर अनुग्रह करने वास्ते इस श्राद्ध में उपस्थित अर्थात् बैठेहुए हैं ऐसे महाभाग्यवाले मार्कण्डेयजीसे तू प्रश्नकर ऐसे कह शंतनुराजा अंतर्हितहुए ४८

इति श्री महाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांपितृकल्पेषोड़शोऽध्यायः १६॥

सत्रहवां अध्याय॥

भीष्मजी कहने लगे हेयुधिष्ठिर तब मैं पिताके बचन कोमानजो प्रश्नअपनेपितासेकियाथा वही फिरमार्कण्डेयजीसे करनेलगा१तब धर्मात्मा और अतितपकोकरनेवालेऐसे मार्कण्डेयजीमेरेसेकहनेलगे हेभीष्म तेरे प्रश्नका उत्तर विस्तारसे कहूंगा इसलिये शुश्रूषा करनेके योग्य और सावधान ऐसातू होजा२औरमैं पितरोंकेप्रतापसे दीर्घआयुको प्राप्तहुआ और पितरोंकी भक्तिसे पूर्वलोकमें मैंने उत्तमयशकोप्राप्तहुआ ३ पीछे कई हजारवर्षोंवालेयुगांतमें मेरुपर्वत परस्थितहोमैं तपकरनेलगा४तब एक समयमें पर्वतकेउत्तरकी तर्फसे आकाशकोअपने तेजसेप्रकाशितकरतेहुए बिमानकोआतेहुए देखताभया५और तिस बिमान में प्रकाशमान सूर्यकेसमान सम्यापरदीप्ततेजवाले६और उनमानमेंअंगुष्ठमात्रऐसे पुरुषकोस्थितअर्थात् सैनकरतेहुए देखताभया जसेअग्निमें स्थितअग्नि तबमैंतिस पुरुष कोशि

रसेप्रणामकर ७ पीछे पाद्यअर्घ्यसे पूजताभया पीछेमैं ऐसेकहनेलगा हेविभोआपकोमैं कैसे जानूं ८ और तपके बीर्यसे उत्पन्न और नारायणके गुणोंसे संयुक्त ऐसे आपदेवताओंके भी देवतेहोऐसी मेरी मतिहै ९ तब हे अनघ वह धर्मात्मा आश्चर्यरूपकीतरहमेरेकोकहनेलगाकि आपने जिसतपका आचरणनहीं कियाहै जिससे मेरेको जाने १० परन्तु वह क्षण भरमें अतिउत्तम रूपको धारने लगाऔर रूपमें ऐसापुरुषकहींभी मैंनेदेखानहीं ११ तब सनत्कुमारजीकहने लगे हेविभोमेरेको प्रथम होने वाला और मनसे उत्पन्नऐसाब्रह्मा का पुत्रजानोऔरतपके बीर्यसे नारायण केसबगुणमेरेमेंउपजेहै १२ इसलियेमेरेको सनत्कुमार इसनामसे कहतेहैं ऐसे पहले वेदोंमें विख्यातहैसो वहमैंहूं हे भार्गवतेराकल्याणहो औरमैंआपके किसकार्यकोकरूं १३ और जितनेब्रह्माजीकेपुत्रहैंवेमेरेछोटेभ्राताहैंतिन्हों केबंशइससंसारमेंप्रतिष्ठित होरहेहैं १४ औरक्रतुबसिष्ठपुलह पुलस्त्य अत्रिअंगिरामरीच इनसात नामोंवालेऔरदेवगंधर्व आदिसे सेवित किये १५ और पूजितकिये इनतीनलोकोंको धारणकररहेहैंऔरयति धर्मकोधारण करनेवाले हमआत्माको आत्मामें संयुक्तकर १६ और प्रजाकेधर्मऔर कामकोदूरकर जैसे उत्पन्न हुआहूं तैसाहीमैंहूं इस वास्ते कुमारमेरे तईंजानो १७ और इसीकारणसे मेरेको सनत् कुमार नामसेबोलतेहैं और मेरीभक्तिसे और दर्शनकी आकांक्षासे आपने तपकिया है १८ सो मैंदेखलिया इसलिये तेरामैं क्याकाम करूं ऐसे कहतेहुए सनत्कुमार जीसेमैं कहनेलगा १९ हे देवजो आपने ऐसीकृपाकरीतो २० पितरोंकासर्ग और श्राद्धकाफल इन्हों काआख्यान बर्णनकरो २१ तबहेभीष्म वहदेवेश्वर मेरेसंशयको दूरकरताभया २२ और ऐसेकहनेलगा बहुतबर्षोंकी कथाके अंतमें हेमार्कंडेय २३ एकसमयमेंब्रह्माजी देवताओंको रचतेभये इसलिये कि येदेवते मेरेकोपूजेंगे तबवेदेवते ब्रह्माजीको त्यागफलकीप्राप्तिके अर्थ पूजाकरनेलगे २४ तब ब्रह्माजीने उन्हों के अर्थ शापदिया तुम योग्यबातको नहींजानतेभये इसवास्ते हेदेवताओ तुमनष्टसंज्ञावाले

होजाओ और पश्चात् संसारबासी मनुष्यभी ऐसेहीमोहित रहेंगे २५तबफिरदेवते नम्ररूपहोके ब्रह्माजीसे याचना करनेलगे संसारके हितकेवास्ते तबब्रह्माजीने कहा २६ कि तुम्होंने व्यभिचार कर्म कियाहै इसलियेतुम प्रायश्चितकरो और पुत्रोंसेजाके प्रश्नकरोतब ज्ञानको प्राप्तहोजाओगे२७तब वे देवते आर्त्त कीतरह होकरप्राय-श्चितके अर्थ पुत्रोंसे पूछतेभये तब तिन्होंके अर्थ शुद्ध आत्मावाले वेपुत्रबाणी मनकर्म इन्होंसे उपजनेवाले प्रायश्चित्त कहतेभये २८ ऐसेप्रायश्चित्त कोजबवे देवते जानकर संज्ञाकोप्राप्तहुए तबवेपुत्र कहनेलगे २९ उन देवताओंको हेपुत्रो तुम गमनकरो ३० ऐसे जब पुत्रकहनेलगे तबवे आश्चर्यमानतेहुए ब्रह्माजीके समीपमें जापूछने लगे ३१ कि हेब्रह्मन् जोहमोंनेपुत्र पैदाकियेथे वे हमको पुत्ररूप कहनेलगे यहअति आश्चार्यहै ३२ तबब्रह्माजीने कहा कि तुमशरीरको उपजानेवालेहो इसलिये तिन्होंके तुम देवतेमाने जाओगे और वेज्ञानको देनेवालेहैं इसलियेवे तुम्हारेपितर मानेजावेंगे३३ आर्थात् तुम दोनों आपस में शरीर दाता पितर और ज्ञानदाता पितर हैं ३४ ऐसे जानों तब फिरवे आकर पुत्रों के प्रति कहने लगे कि ब्रह्माजीने हमारासंदेह दूरकिया है इस लिये आप और हम आपसमें प्रीतिवाले हैं ३५ और जोआपने हमारा मोहदूर कियाहै इसलिये तुमधर्मज्ञही और हमारे पितरहोसो कहोआपका क्या कामकरें अथवा आपको क्यावांछितकरें और जोआपने हमारे का पुत्रभावकहकर बचनकहा वहठीकहै ३६ इसबास्ते आपहमारे पितरहोवेंगे इसमेंसंशय नहींहै और जोकोई पितररूप तुम्हारेको श्राद्धमेंनहींपूजकेकर्म करेंगे तिन्होंके फलकोराक्षसदैत्य दिव्यसर्प ये प्राप्तहोजावेंगे ३७ और श्राद्धकेद्वारा दिव्यपितरोंसे प्रसन्नकियेलौकिकपितर अपनेअधि देवतारूपसोमकोबढ़ावेंगे ३८ पीछेश्राद्धोंसे पुष्टहुआ सोम अर्थात् चंद्रमा समुद्र पर्वतबन ३९ इन्हों से संयुक्त स्थावरजंगमरूप जगत् को पुष्टकरेगा ४० और पुष्टिकी कामना-करनेवाले जोमनुष्य श्राद्धोंकोकरेंगे तिन्हों के अर्थ पुष्टिसंतान ४१

नआदिको पितरदेवेंगे और जोनामगोत्रका उच्चारणकरश्राद्धमेंती नपिंडोंकादान करेंगे तब ४२ लोकांतरमेंभी बसतेहुए पितरतृप्तहो जावेंगे ऐसेब्रह्माजीने यहआख्यान कहाहै ४३ सो सनत्कुमारजी कहनेलगेकिऐसेदेवतेऔरपितरआपसमें देवते और पितरहुएहैं ४४

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वभाषायांपितृकल्पेसप्तदशोऽध्यायः १७॥

अठारहवां अध्याय॥

मार्कंडेयजी कहनेलगे कि ऐसे देवतोंके देवतेऔरदिव्यतेजवाले सनत्कुमारजीने जब मेरे अर्थकहा १ तब फिरमैं आपने संदेह को दूरकरनेलगा २ हे अमरश्रेष्ठ सनत्कुमारजी पितरोंके गण कितने हैं और वेपितर किसलोकमें प्रतिष्ठित हैं ३ तब सनत्कुमार कहने लगे हे मार्कण्डेय स्वर्ग में सात पितरों के गणहैं तिन्हों में चार ४ मूर्त्ति वालेहैं और तीन मूर्त्ति से रहितहैं ४ अर्थात् परमाणमेंभी प्र-वेशकरने की सामर्थ्य वालेहैं तिन्होंके लोक और सर्गको कहताहूं आपसुनो और हे तपोधन५ तिन पितरों का प्रभाव और बड़प्पन काभी विस्तारसे कहताहूं ६ अबप्रथम धर्मकी मूर्त्ति को धारणकर नेवाले जो तीन पितृगणकहे हैं तिन्हों के नाम औरलोकका कीर्त्तन करताहूं सुनलीजिये ७ मूर्तिसे रहित और अतिप्रकाशवाले और विराट् प्रजापतिके पुत्र और लोक में बैराज नाम से बिख्यात ऐसे तीनपितृगणों का सनातनलोकमें बासहै ८ अर्थात् ये नित्यप्रतिप्र कट रहते हैं इन पितरोंको बिधि दृष्टकर्मसे देवते पूजते हैं ९ और येही पितृगण योगसे भ्रष्टहो फिर हजारों युगोंके अंतमें ब्रह्मवादी होजातेहैं १० और येही फिर स्मृतिको प्राप्तहो योगगतिको प्राप्त होजाते है ऐसे योगियों के भी योगको बढ़ानेवाले ११ ये पितर हैं और येहीपहिले योगबल से चंद्रमा को पुष्टकरते रहे हैं १२ इस वास्ते इनयोगीरूप पितरोंकेअर्थ विशेषकर श्राद्ध देनेचाहिये ऐसे अमृतको पीनेवाले पितरों का प्रथम कल्पकहा है १३ पीछे इन्हों केमनसे उपजनेवाली और मेना नामवाली कन्याहुई है पीछे वह

हिमालयपर्वतकी भार्याहुई है इसीवास्ते हिमालयको मेनाक भी कहतेहैं १४ पीछे मेनाकके पर्वतोंमेंश्रेष्ठऔरअनेक प्रकारके रत्नोंसे अन्वित और क्रौंच नामवाला ऐसा बड़ापर्वत पुत्रहुआहै १५ और मेनाभार्यामें शैल्यराजके सकाशसे अपर्णा १ एक पर्णा २ एक पाटला ३।१६ इन नामोंवाली तीन कन्या पैदाहुईहैं पीछे वेतीनों कन्यादेवऔर दैत्योंसेभी दुश्चर ऐसेतपको करतीहुईं स्थावर जंगम रूप जगत्को तप्त करनेलगीं १७ और एकपर्णाकन्या एकपत्ताका भोजन रोज करनेलगी और एक पाटला कन्या पाटला वृक्षके एकपुष्पकाभोजन रोजकरनेलगी १८ और अपर्णाकन्या निराहार रहनेलगी तब इसअपर्णाकी माता बर्ज्जतीभई तबमाताके स्नेहसे दुःखित और मातासे बर्ज्जितकीहुई१९और तीन लोकोंमेंभीअतिसुंदररूपवाली ऐसी यह अपर्णा उमा इसनामसे विख्यातहुई २० ऐसे तीन कन्याओंसे जगत् ठहरेगा २१ पीछे तपको करनेवाली और योगबलको धारण करनेवाली और ब्रह्मको जाननेवालीऔर ऊर्द्ध्वीर्यवाली ऐसी ये तीनों कन्याहुईं २२ परंतु इन्होंमें उत्तम और बड़ी और महा योगबलसे युक्त ऐसीउमाहुई सोयह महादेव जीको बिवाहीगई २३ पीछे एक पर्णाकन्या महात्मा रूप असित देव को बिवाही गई २४ पीछे एकपाटला कन्या जैगीषव्यको बिवाहीगई ऐसे येभी दोनों कन्या योगाचार्य्यों को दीगई २५ और सोमपद लोक में बसनेवाले मरीचिके पुत्रपितर हैं तिन्हों को देवते पुष्टकरतेहैं २६ येसब अग्निष्वाता इस नामसेविख्यात और अमित बलवाले ऐसेहैं इन्होंके मनसे उपजने वाली और अच्छोदा नामसे विख्यातहै२७और निम्नस्थानमेंप्राप्त ऐसीपुत्री हुईहै जिसके सकाशसे उठाहुआ अच्छोदनाम सर विख्यातहैऔर तिस कन्याने कवोभी वे पितर पहले नहींदेखे २८परंतु एक समय में मूर्तिरहित पितरोंकी मंदमुसक्यान संयुक्त हो देखतीभई अर्थात् जिन्होंके मनसे उपजीथी तिन्होंकोदेख और अपने पिताको नहीं जानती २९ और तिसीदुःखसे दुःखितहुई पतिको बरनेकी इच्छा

करनेलगी तब आकाशचारी और वसुनाम से विख्यात ३० ऐसे पिताको पतिकी जगहबरने को तैयारहुई तब इस अपराध से योग भ्रष्ट होकर स्वर्गसे पतितहुई ३१ और पड़तीहुई तीन विमानों को देखतीभई कि त्रसरेणु के समान विमानोंमें अपने पितरों को ३२ स्थितहुई देखके नीचेकोहै शिर जिसका ऐसेपड़तीहुई और पीड़ित हुई ऐसेकहनेलगी हे पितरो मेरी रक्षाकरो ३३ तबपितर कहने लगे हेपुत्रि भयमतकर तब दीनबाणीसे पितरों को प्रसन्न करती भई ३४ तब पितर कहनेलगे हे कन्ये तू अपने अपराध कर योगसे भ्रष्टहुईहै इसवास्ते पतितहोती है ३५ क्योंकि जिन शरीरों से कर्मकरते हैं तिन्होंसेहीदेवतेभीकर्मकेफलकोप्राप्तहोतेहैं३६ और देवताके शरीरको त्यागपीछे मनुष्यकेशरीरमें प्राप्तहोकर्मकोभोगैहै इसवास्ते हे पुत्रि इस शरीरको त्यागपीछे इसतपके फलकोप्राप्त हो वेगी ३७ ऐसेपितरोंके बचनको सुनपीछे अपने पितरोंको प्रसन्नकर तीभई तबवेपितर दयाकरते हुए कृपासे प्रसादकरते भये ३८ तब अवश्य भावीको जान वे पितर ऐसेकहने लगेहे पुत्रि इस वसुराजा की तूकन्याफिर उत्पन्न होवेगी ३९ पश्चात् कन्याहोके फिरअपने लोकोंको प्राप्तहोवेगी ४० और पराशरके पुत्रवेद व्यासजी बिप्रकी माताभी तूहीहोवेगी और वहवेद व्यास एक वेदकाचार बिभागकरे गा ४१ और शंतनुराजाके कीर्तिके बढ़ानेवाले बिचित्र बीर्य्य और चित्रांगद४२इनदो पुत्रोंको प्राप्तहोफिर उत्तम लोकोंमें बसैगी और हे पुत्रि पितरों के अपराधकरनेसे संतु निंदित जन्मको पावेगी४३ और इसीराजाकी आद्रिका नामरानी में तूकन्या होवेगी परंतुअष्टा बिशयुगमें अट्ठाइसमें द्वापर में मच्छ की योनिसे उत्पन्नहो मच्छो दरीनामसेविख्यात होवेगी ४४ऐसे मल्लाहकी पुत्री सत्यवतीनाम से विख्यात द्वापरके अंतमें उपजीहै ४५ और सुंदर दीखने वाले वे आजनाम लोकमें बर्हिषदनामसे पितर स्वर्गमेंबसतेहैं४६ तिन्हों को देवतायक्ष गंधर्व राक्षस नाग सर्प गरुड़ये सबपुष्टकरतेहैं४७और पुलस्त्य प्रजापतिके ये महात्मारूप पितर पुत्रकहेहैं४८ पीछेइन्हों

के मनसे उपजने वाली और पीवरी नामसे बिख्यात और योगरूप और योगाचार्यकी पत्नी और योगीश्वर की माता ४९ और धर्मोंको धारण करनेवाली ऐसीकन्या द्वापरके अंतमें उपजेगी और पराशर के कुलसे उपजनेवाले और शुकनाम से विख्यात ५० ऐसे महायोगी और ब्राह्मणों में उत्तम और व्यासजीके सकाशसे अरणी में प्रकाशित रूप उत्पन्न हुए जैसे धूमारहित अग्नी ५१ ऐसे शुकदेवजी महाराज इस पीवरी कन्या में जन्मेंगे और पीछे शुकदेवजी महाराज से ५२ कृष्णगौर प्रभु शंभु इन नामोंवाले चारपुत्र और कृत्वीनामसे विख्यात और ब्रह्मदत्त की माता और अणुहराजा की रानी ५३ ऐसी कन्या इन्होंकी उत्पत्ती होवेगी ऐसे इनधर्मात्मापुत्रों को और धर्मवती कन्याको उत्पन्नकर पीछे अपने पिता वेदव्यास जीके मुखसे धर्मोंकोसुन ५४ महायोगी शुकदेवजी उत्तम गतिको प्राप्तहोवेंगे अर्थात् शाश्वत ब्रह्ममेंयुक्त होजावेंगे ५५ और मूर्तिसे रहित और धर्मकीमूर्ति को धारण करनेवाले और जहां वृष्ण्यंधक कुलकथा उपजीहै ऐसे पितरहैं ५६ और सुकालनामसे विख्यात और वशिष्ठ प्रजापति के पुत्र ऐसे स्वर्गलोक में बसनेवाले पितर कहे हैं ५७ तिन्होंको उत्तम कर्मों में उत्तम ब्राह्मण पुष्टकरते हैं तिन्होंके मनसे उपजीकन्या और गौ नामसे स्वर्गमें विख्यात ऐसी पुत्री उपजेगी ५८ और तिसीवंशमें शुकदेवजीकी रानी और एक शृङ्गनाम से विख्यात औ साध्योंकी कीर्तिके बढ़ानेवाली ऐसी होवेगी ५९ ये पितर मरीचि के गर्भों को धारण करनेवाले लोकों में अर्थात् सूर्य्य की किरणों के समान प्रकाशित हुए लोकों में बसते हैं और अंगिरामुनिके पुत्र और पहिले साध्यों से बढ़ायेहुए ऐसे जो पितर हैं ६० तिन्हों को फलको चाहनेवाले क्षत्रियगण पुष्ट करते हैं और इन्होंके मनसे उपजनेवाली और यशोदा नामसे विख्यात ६१ और विश्व महाराजा की रानी और बृद्धशर्मा राजा के पुत्रकी बधू और दिलीप राजाकी माता ऐसी पुत्रीहोवेगी ६२ और जिस दिलीपकी अश्वमेध महायज्ञमें प्रसन्न हुए मुनिजनों ने देवलोकमें यह गाथा

गाईहै ६३ कि महात्मारूप सांडिल्यके अग्र जन्म को सुनके साव-
धानहुए पुरुष ६४ सत्यबादी और महात्मा ऐसे यजमान रूप
दिलीप राजाको देखेंगे वे सब स्वर्गमें बसनेवाले जानो और कर्द्दम
प्रजापतिके ६५ पिता पुलहऋषिसे उत्पन्नहुए और सुस्वधा नाम
से बिख्यात ऐसे महात्मा पितरहैं और ये लोकोंमें तथा स्वर्ग में
बिमानोंमें बैठेहुए बिचरते रहतेहैं ६६ इन्होंको फलके चाहनेवाले
वैश्यगण पुष्टकरतेहैं और तिन्हों के मनसे उपजनेवाली और बिर-
जानामसे बिख्यात ६७ और ययातिराजाकी माता और नहुषराजा
की रानी ऐसी पुत्रीउपजी है ऐसे पितरों के तीनगण तो कहचुके
और चौथाको कहतेहैं ६८ शुक्राचार्य्यकी पुत्री और स्वधानाम से
बिख्यात तिसमें उत्पन्नहुए और सोमपा नामवाले और मानसनाम
लोकमें बसनेवाले और अग्नीकेपुत्र ऐसे पितर हैं तिन्होंको शूद्रगण
पुष्टकरतेहैं ६९ और तिन्होंके मनसे उपजनेवाली और सब नदि-
योंमें उत्तम नर्मदा नामसे बिख्यात ७० और सबजीवोंको पुष्टकरने
वाली और दक्षिणमार्गमें वहनेवाली और पुरु कुत्स राजाकी पत्नी
और त्रसदस्यु राजाकी माता ७१ ऐसी पुत्री उपजेगी और इनपि-
तरोंकी पूजाको अंगीकार करनेसे युगयुगके प्रतिधर्मोंकी नष्टताहो-
तसंते भी ७२ मनुराजा श्राद्धसे तृप्तकरताहै इसवास्ते इस बैवस्व
तमनुजीको श्राद्धदेवभी कहतेहैं ७३ और सबपितरोंके श्राद्धमेंचांदी
के पात्र कहाहै अथवा चांदीसे युक्त अन्य धातुओंके पात्रकहे हैं और
पितृकर्म में प्रथम स्वधा शब्दका उच्चारण से संयुक्त श्राद्ध पितरों
को प्रसन्न करदेताहै ७४ और जो मनुष्य प्रथम सोमायपितृमते
स्वधा इस मंत्रसे पीछे अग्नये कव्यबाहनाय स्वधा इस मंत्रसे ७५
पीछे नमोयमायां गिरसे स्वधा इसमंत्र से उत्तरायण सूर्यमें अग्नी
द्वारा अथवा जलकेद्वारा आहुतीकर पितरोंको प्रसन्नकरते हैं ७६
वे पितर तिस पुरुषके अर्थ पुष्टि अनेक प्रकार की संतान स्वर्गबास
आरोग्य इन्हों को देते हैं ७७ और मनोबांछित फलको भी पितर
देते हैं इस वास्ते हे मार्कंडेय देवकर्म से पितृकर्म विशेष कहा है

ऐसे देवताओं के पितर लौकिक पितरों को पोषते हैं और भक्तोंको प्रसाद देतेहैं इसवास्ते हे भार्गव तिनपितरों को नमस्कारकर और आप पितरोंके भक्तहैं और विशेषकर मेरा भी भक्तहै ७८ इसलिये तेरा कल्याणहोगा सो हे प्रिय दिव्यज्ञान तेरेअर्थ देताहूं ७६ इस गतिको हे मार्कंडेय अप्रमत्तहोके देख परंतु पितरोंकीगति अतिअ-गम्यहै ८० अर्थात् तेरेसरीखे सिद्धकोही प्रतीतहोसक्ती है ऐसे मेरे को कह ८१ पीछे देवताओंको भी दुर्लभ ऐसा दिव्यज्ञान रूपदेकर पीछे अग्निकेसमान प्रकाशित होताहुआ ८२ सनत्कुमार मनोवां-छितगतिको गमनकरताभया ८३ ऐसे हे भीष्म आपजानों तिस देवर्षि के सकाश से देवताओं को भी दुर्लभ ऐसा आख्यान मुझको प्राप्तहुआ है ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांपितृकल्पेअष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

उन्नीसवां अध्याय ॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे पूर्वयुगमें भरद्वाजके पुत्र ब्राह्मणहुये हैं पीछे वे योगविरोधी कर्मकरके योगको नहीं प्राप्त होतभये भ्रष्टहो-गये और अपभ्रंशको प्राप्तहुए और योगधर्मके अपचारी ऐसेवे मान-सरोवरमेंबसे १-२ पीछे उसी योगकेअर्थको ध्यावतेहुये कालधर्मको प्राप्तहोय ३ शरीरकोत्याग मोहितहुये बहुतदिनोंतक स्वर्गलोक में बसे पीछे कुरुक्षेत्रदेशमें कौशिकऋषिके बंशमें उपजे ४ तब हिंसा-करके व्यवहार करतेहुये कुत्सितजातिको प्राप्तहुये ५ परंतु पितरों के प्रसादसे पूर्व जन्मकी स्मृति तिन्होंको बनीरही ६ पीछे धर्म के करनेसे फिर कर्मोंके अनुसार ब्राह्मणके शरीरको प्राप्तहोंगे ७ तब पूर्वजाती में प्रार्थित योगको प्राप्त हो उत्तम सिद्धि को प्राप्तहोवेंगे पीछे शाश्वत लोकमें बसेंगे ८ ऐसे सनत्कुमारजी मेरे प्रति कहके फिर कहनेलगे कि हे मार्कण्डेय योगधर्ममें उत्तम सिद्धिको तू प्राप्त होवेगा ६ और अल्पबुद्धि वालों को योग दुर्लभ है और कुत्सित व्यसनों वाले मनुष्य योगको प्राप्तहोके भीनाशमान होजाते हैं १०

और अधर्मों में बर्ततेहैं और गुरुओं को पीडितकरतेहैं और अयाच्य बस्तुको नहीं याचनेवाले और शरणागति की रक्षाकरने वाले ११ और कृपणों पर दयाकरनेवाले और धनकोअग्निसे गर्बको नहीं प्राप्त होनेवाले और युक्त अहार युक्त विहारबर्तनेवाले और अपने कर्मोंमें युक्त चेष्टावाले १२ और ध्यान और अध्ययन में हरवक्त तत्पर रहनेवाले और नष्ट हुये द्रव्य की प्राप्तिवास्ते चौरों को खोजनेवाले और नित्य प्रतिभोगों से अलग रहने वाले और मांस मदिरा १३ कामदेव इन्हीं से अलग रहनेवाले और ब्राह्मणकी वृत्ति को नहिं दूरकरनेवाले और दुष्ट मनुष्यों के अर्थात् ग्रामीण पुरुषों में बैठके चर्चाको नहीं करनेवाले कथनको नहीं सुननेवाले और आलस्य को बर्जनेवाले १४ और अपने मनके अनुसार बिशेष कर नहीं बर्तनेवाले और ब्रह्मबादियों की सभामें निरंतर बैठनेवाले ऐसे मनुष्य योगको प्राप्तहोतेहै परंतु पृथ्वीभरमें योग बहुत दुर्लभहै १५ और शांत स्वरूप और क्रोधको जीतनेवाले मान और अहंकार से रहित और कल्याण के साक्षात्पात्र और उत्तमवृत्तोंको धारण करने वाले १६ और अपनेदोस और प्रमादका स्मरण करनेवाले ध्यान और अध्ययनमें हरवक्त रहनेवाले और शांतरूप मार्गमें स्थितरहने वाले जैसे पहले मुनिजन हुयेहैं तिन्हों की तरह व्यवहारोंको बर्तने वाले ऐसे मनुष्य परम शांतिको प्राप्त होतेहै इसमें संशयनहीं १७ इस वास्ते हे धर्मज्ञ मार्कण्डेय तू भी योगरूपी धर्म को धारणकर योगको धारणकरनेवाला मनुष्य उत्तम सिद्धिको प्राप्तहोताहै १८ और योग धर्म से उपरांत अन्य धर्म नहीं है और सब धर्मोंमें उत्तम रूप योगका आचरणकर १९ और कालके अनुसार थोड़ा भोजन करो और इन्द्रियों को जीतो और निरंतर श्राद्धों को करो तबयोग धर्म को प्राप्तहोगे २० ऐसे भगवान् सनत्कुमार मेरे अर्थ कहके अंतरहित होतेभये इस बिसयमें अठाराबर्ष बीते परंतु मेरे को एक दिनके समान प्रतीत हुये २१ और तिसही मुनिकी कृपासे ग्लानि क्षुधातृषा एभी नहीं उपजी २२ और अठारहबर्ष मुनिकेसंग जो

संबाद हुआ यह भी काल मैंने शिष्यके सकाश से जाना २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वभाषायां पितृकल्पेऊनविंशोऽध्यायः १९ ॥

बीसवां अध्याय ॥

मार्कण्डेयजी कहनेलगे जब सनत्कुमारजी अंतरध्यान होगयेतब तिन्होंको कृपासे तब मेरे ज्ञानसहित दिव्यनेत्र प्रकटहुआ १ पीछे हेभीष्म जिन कौशिक के पुत्रोंका संबाद पहले सनत्कुमारजी मेरे अर्थ कहतेभये तिन ब्राह्मणों को कुरुक्षेत्र में मैं देखताभया २तिनों में सातमाबिप्र ब्रह्मदत्त नामसे बिख्यात और शिल कर्मसेयुक्तऐसा राजा हुआ ३ और तिसको शुकदेवजी की कृत्वी नाम वालोकन्या अणुह नामवाले राजाके सकाशसे कांपिल्य नगरमें जन्मती भई ४ तब भीष्म कहनेलगा हे युधिष्ठिर जैसे मार्कण्डेय मुनिने मेरे अर्थ कहाहै तैसे इसबंशको मैं कहताहूं आप श्रवणकरो ५ तब युधिष्ठिरने प्रश्न किया अणुह राजा किसका पुत्रहुआ और किसकालमें उपजा और पीछेधर्ममें श्रेष्ठ और महायश को धारण करने वाला ६ और ब्रह्मदत्त नामसे बिख्यात ऐसा अणुहका पुत्र कितने पराक्रमवाला राजाहोताभया ७ और तिनपूर्वोक्त कौशिकब्राह्मणोंमें यह ब्रह्मदत्त कैसे सातमा हुआ और अल्पबीर्य्य वालेको लोकपूजित शुकदेवजी कृत्वीनामवाली अपनी कन्याकोनहीं देसकते ८ इसवास्ते बिस्तार पूर्वक ब्रह्मदत्त राजा के चरित्रको सुनने की इच्छा है सो आप कहने को योग्यहो जैसे मार्कण्डेयजीने आपके अर्थ कहा है तैसे ९ तब भीष्मजी कहनेलगे हे राजन् जब मेरा पितामह प्रतीप नामवाला राजर्षिने जिस कालमें राज्यकियाहै तब मैंने सुनाहै १० महाभाग और योगी और राजर्षियों में उत्तम और सब प्राणियों के शब्दको जाननेवाला और संपूर्ण प्राणियों के हितमेंरत ऐसा ब्रह्मदत्त राजाहुआ है ११ और महायशवाला और योगाचार्य्य ऐसा गालव राजाका मित्रहुआ है जिसने तपसे शिक्षाकी उत्पत्तिकर क्रमबढ़ाया १२ और योगविद्यामें कुशल और कंडरीक नामसे बिख्यात ऐसा

ब्रह्मदत्त राजा का मंत्री हुआ है १३ और सातजन्मों में ये सातों आपसमें सहायकरने वाले रहेहैं जैसे मार्कण्डेयजीने कहा है तैसे १४ अब पौरव वंशमें होनेवाले ब्रह्मदत्त राजाका पुरातनवंश वर्णनकरताहूं तू श्रवणकर १५ प्रथम बृहत्क्षत्रके परमधार्मिकसुहोत्रनामवाला पुत्रहुआ पीछे सुहोत्रके हस्ती पुत्रहुआ १६ जिसने यह प्रथम हस्तिनापुर रचाहै पीछे हस्तीके परमधार्मिक १७ और अजमीढ द्विमीढ पुर्मीढ इन नामोंवाले तीनपुत्र हुये पीछे हे राजन् अजमीढके सकाशसे धूमिनीरानीमें बृहदिषु पुत्रहुआ १८ पीछेबृहदिषुके बृहद्धनु पुत्रहुआ पीछे बृहद्धनुके बृहद्वर्मा पुत्रहुआ १६ पीछे बृहद्वर्माके सत्यजित् पुत्रहुआ पीछे सत्यजित्के विश्वजित् पुत्रहुआ पीछे विश्वजित्के सेनजित् राजापुत्रहुआ २० पीछे सेनजित्केलोकमें मानेहुये और रुचिर श्वेतकेतु महिम्नार २१ और आवंतक इन नामोंवाले चार पुत्रहुये पीछे रुचिरके महायशवाला पृथुषेण पुत्रहुआ २२ पीछे पृथुषेणके पार पुत्रहुआ पीछे पारके नीप पुत्रहुआ पीछे नीपके अमित पराक्रमवाले और महारथ और शूरवीर ऐसे १०० पुत्रहुये २३ इसीवास्ते नीपनामसे सब राजे विख्यातहुयेहैं २४ पीछे नीपों की कीर्ति को बढ़ानेवाला और वंशके करनेवाला ऐसा कांपिल्य नगरमें समरपुत्रहुआ २५ पीछे समरके परपारसदश्व इन नामोंवाले और परम धर्मज्ञ ऐसे तीन पुत्रहुये पीछे पारके पृथु पुत्रहुआ २६ पीछे पृथुके सुकृत पुत्रहुआ पीछे सुकृतके सबगुणों वाला विभ्राजपुत्रहुआ २७ पीछे विभ्राजके अणुह पुत्रहुआ औरयही शुकदेवजीका जमाई और कृत्वीरानीका पतिहुआ २८ पीछे अणुह के राजर्षिरूप ब्रह्मदत्त पुत्रहुआ पीछे ब्रह्मदत्तके विश्वक्सेन पुत्रहुआ और सर्वसेन नामवाला दूसराभी पुत्र ब्रह्मदत्तके हुआ ऐसाभी सुना है २६ और एक पूजनी नामवाली यक्षीकी स्त्रीने ब्रह्मदत्त राजा के घरमें बहुतदिन बासकर इस सर्वसेनके दोनोंनेत्र निकासदियेहैं ३० और ब्रह्मदत्तके विश्वक्सेन नामवाले पुत्रके दंडसेन नामवालाराजा पुत्रहुआ पीछे दंडसेनके भल्लाट पुत्रहुआ यह राधाकेपुत्र कर्णने पहले

मारदिया है ३१ और हेयुधिष्ठिर भल्लाटके दुर्बुद्धिनाम पुत्रहुआ ३२यह सब नीप नामवाले क्षत्रियोंका राजाहुआ जिसकेअर्थ उग्रायुध राजाने सब नीप नामवाले राजे मारदिये ३३ पीछे अतिगर्व्वी और गर्बमें रुचि रखनेवाला और निरंतर अन्यायमें रत और मदसे संयुक्त ऐसा उग्रायुधराजा मैंने युद्धमें मारा ३४ तब युधिष्ठिर कहनेलगा उग्रायुध किसका पुत्रहुआ और किसबंशमें जन्मा और किसवास्ते आपनेमारा यह बात मेरेसे बर्णनकरो ३५ तब भीष्मजी कहनेलगे अजमीढके पवीनर नाम राजापुत्रहुआ पीछे पबीनर के धृतिमान पुत्रहुआ पीछे धृतिमान के सत्यधृती पुत्रहुआ ३६ पीछे सत्यधृतीके बड़े प्रतापवाला दृढ़नेमि पुत्रहुआ पीछे दृढ़नेमिके सुधर्मोराजा पुत्रहुआ ३७ पीछे सुधर्माके सार्वभौमनामसे विख्यातऔर पृथ्वीमंडलमें एक राजा और अतिप्रतापवाला ऐसा पुत्रहुआ ३८ पीछे सार्वभौमके महान् पुत्रहुआ पीछेमहान्के रुक्मरथनामवाला पुत्रहुआ ३९ पीछे रुक्मरथके सुपार्श्वनामवाला राजा पुत्रहुआ पीछे सुपार्श्वके परमधार्मिक सुमती पुत्रहुआ ४० पीछे सुमतीकेधर्मात्मा और वीर्य्यवाला सन्नति पुत्रहुआ पीछे सन्नतीके महाबलवाला और कौशिल्यदेशके हिरण्य नामका शिष्य ऐसा कृत्तनाम पुत्र हुआ ४१ पीछे कृत्तके उग्रायुध पुत्रहुआ जिसने अपने पराक्रम से पांचालदेशका पति ४२ और पृषत्का पितामह और महातेजस्वी ऐसा नीपनामवाला राजा मारा ४३ पीछे उग्रायुधके महायशवाला क्षेम्य पुत्रहुआ पीछे क्षेम्यके सुवीर पुत्रहुआ पीछे सुबीरकेनृपंजय पुत्रहुआ ४४ पीछे नृपंजयके बहुरथ पुत्रहुआ ऐसे पौरव बंशमें यह उपजेहैं परंतु हे युधिष्ठिर उग्रायुधराजाकी बुद्धिबिगड़गई४५ क्योंकि अतिबलको प्राप्तहो नीपराजाको मार और नीपके समीपवर्त्ती अन्य राजाओं कोभी युद्धमें मार गर्वसे पूरण होता भया ४६ और जब मेरापिता शांतहोगया तब अपने मंत्रियोंकरके सहित पृथ्वीमंडलमें शयनकरतेहुये मेरेको ४७ उग्रायुधका दूतआके ऐसाबचन कहनेलगा कि हे भीष्म अतियशवाली और स्त्रियोंमें रत्नरूप ऐसी

योजनगंधाको ४८ मेरीभार्य्याके अर्थ हेकुरुनंदन प्राप्तकर ऐसेकर नेसे तेराराज्य और धन बनेरहैंगे इसमें संशय नहीं है ४९ और मैं तेरी कामनाओंको पूरीकरूंगा और मेरेसमान रत्नोंवाला अन्यपुरुष नहीं है अब मेरे प्रज्वलित चक्रको जान ५० और मेरेको देख युद्धमें शत्रु भागजातेहैं और अपने देशकी और कुलकी और अपने प्राणोंका कल्याणचाहताहै ५१तो मेरी आज्ञाकोमानि अन्याथा इस विषयमें शांति नहीं है ५२ ऐसे उग्रायुधके दूतके बचनकोसुन डाभ की शय्यापै शयनकरनेवाला मैं अग्निकी शिखाकोसमान उस दूत के बचनको यादकर और उस दुष्टबुद्धिवाले उग्रायुध के अभिप्राय को जानि ५३ सब सेनाकेपतियोंको आज्ञादेकर और मेरे आश्रय भूत विचित्रवीर्य्य बालक ५४ को देख क्रोधसे संयुक्तहो मैं युद्धके वास्ते मनको धारणकरनेलगा तब तात्पर्य्यको जाननेवालेमंत्री ५५ ऋत्विकमित्र शास्त्रके जाननेवालेविद्वान् इनसबोंको मैंरोंकदिया ५६ और मंत्री मेरेसे कहनेलगे कि हे भीष्म उस पापी उग्रायुधकाचक्र बढ़ाहुआहै और आप पिताके पातकसे संयुक्तहैं इसवास्ते अभीयुद्ध करना उचित नहीं है ५७ हम सब सामपूर्वक दान भेदको नियुक्त करतेहैं कि पिताके अशौचसे शुद्धहोके पीछे देवताओंको नमस्कार कर ५८ और ब्राह्मणोंके सकाशसे स्वस्ति वाचनकरा और ब्राह्मणोंकी पूजाकर और तथा ब्राह्मणोंकी आज्ञाले गमनकरनेमें जयपावेगा ५९ और जब तक अशौच रहै तबतक बुद्धिमान शस्त्रोंको ग्रहण न करें और न युद्धका आरंभ करें ऐसी वृद्धों की शिक्षा है ६० इसवास्ते तिस दुष्टको समयपाके आप मारोगे जैसे संबरासुर को इन्द्रने माराहै तैसे ६१ तब विद्वान् और वृद्धोंके बचन को सुनके युद्धसे मैं मनको हटाताभया ६२ हेयुधिष्ठिर मैं पिताके अर्थ कर्म का आरंभ कर्त्ताभया ६३ और अनेकप्रकारके साम आदि उपायों से शिक्षित भी किया परंतु वह दुर्बुद्धि उग्रायुध नहीं मानता भया ६४ तब अधर्म करनेवाले और पराई स्त्रीकी अभिलाषा करनेवाले ऐसे उग्रायुधका चक्र भी आपहीआप निवृत्तहोगया ६५ परंतु मैंने

न जाना कि चक्र निवृत्त होगया है परंतु बुरेकामोंके करने से मैंने जाना कि यह अवश्य माराजावेगा ६६ ऐसे मैं अशौचसे निवृत्तहो धनुष और बाणको धारणकर और ब्राह्मणोंके मुखसे स्वस्तिवाचनकरवारथमें बैठ हस्तिनापुरसे निकस उग्रायुधसे युद्धकरनेलगा ६७ तब समीपमें प्राप्तहो बलसे और अस्त्रबलसे देवासुर युद्धके समान तीन दिनोंतक युद्धहुआ ६८ तब मैंने अस्त्रकेप्रतापसे युद्धमें वहदग्ध करदिया तब वह शूरबीर उग्रायुध अपने प्राणोंकोत्याग पृथ्वीमेंसन्मुख पड़ताभया तब इसी अंतर में कांपिल्य नगर से पृसत् नाम राजा प्राप्तहुआ तब वह राजा नीपेश्वर और उग्रायुधराजाके मरजानेके पश्चात् ६९ आहिछत्र राजधानी पर्य्यंत अपने पिताकेराज्य को प्राप्तहुआ और यह राजा मेरीआज्ञा मानतारहा ७० पीछेपृसत् राजाके द्रुपद राजा पुत्र हुआ तिसने द्रोणाचार्य्य को अपने नगर से निकासदिया ७१ पश्चात् अर्जुनने युद्धमें द्रुपदकोजीत सबकांपिल्यका राज्य द्रोणाचार्य्यके अर्थ देदिया तब द्रोणाचार्य्य अपने और द्रुपद के दोनोंराज्योंको ७२ द्रुपद के अर्थ देताभया इसको हे युधिष्ठिर आपजानतेहोहो ऐसे द्रुपदका और ब्रह्मदत्तका ७३ और नीपका और उग्रायुधका बंश बिस्तारसे बर्णनकिया ७४ तब युधिष्ठिरकहनेलगे पूजनीया नामवाली चिड़िया हे भीष्म ब्रह्मदत्तके बड़े पुत्रको किसवास्ते अंधाकरतीभई ७५ और राजा के घरमें बहुत कालतक बसतीहुई चिड़िया तिस महात्मारूप ब्रह्मदत्त राजाके विप्रिय क्यों करतीभई ७६ और वह पूजनीया कौनथी और राजासे उसकी क्या मित्रताथी यह मेरे संशयहै इसको आप दूरकरो ७७ तब भीष्मजी कहनेलगे हे महाराज जैसे ब्रह्मदत्त राजा के स्थानमें वृत्तांतबीताहै तिसको सुन पश्चात् समझ हेराजन् ७८ कोईक सफेद पांखोंवाली और लाल मस्तक वाली और कृष्णरूप उपरले भागवाली और सफेद पेटवाली ७९ ऐसी एक चिड़िया ब्रह्मदत्त राजा से प्यारकरती हुई राजाही के मकान में बसतीहुई तबसमयपाके ब्रह्मदत्त राजा के मकानमेंही घोंसला करलिया ८० सोवह चिड़िया रोजके रोज समुद्र

केतीर छोटी जोहडी तालाब ८१ नदी पर्वत कुंजवन उपवन फूलोंसे सहित लावै सुगंध वाले ८२ कमल और सुगंधि कमलके केशरों से संयुक्त हवा हंस सारस कारंडव इन्होंके शब्दोंसे संयुक्त ८३ स्थान इनसबों में दिनभर बिचर रात्रिमें कांपिल्य नगर के भीतर ब्रह्मदत्त राजाके मकानमें प्राप्तहो ८४ राजा के संग हमेशा कथा योग करतीरही अर्थात् जिनने आश्चर्य और वृत्तांत ८५ अनेक प्रकारके देश इन्होंको देखें सोही राजाके अर्थ कहती रहै तबसमय पाके हे युधिष्ठिर तिसब्रह्मदत्त राजा के ८६ सर्बसेन नाम पुत्र उपजा और उसचिड़ियानेभी एक अंडाअपने घोंसले में दिया ८७ तब कालके बशसे वह अंडाफूटा और पैरमुख इन्होंसे संयुक्तहुआ ८८ फिर नेत्रों वालाभी हुआ अर्थात् छोटासा चींकलाके समानबन के छोटीछोटी पांखों कोधारण करनेलगा ८९ और वह चिड़ियाभी अपने पुत्र में और राजाकेपुत्र में तुल्य स्नेहको धारणकरनेलगी ९० पीछे वहचिड़िया अमृतकेसमान स्वाद से संयुक्त दो अमृतफलोंको बनसेलाय के सायंकाल में एक अपनेपुत्रको और एकराजा के पुत्रको देनेलगी ९१ उनफलों के खानेसेराजाका पुत्र और चिड़ियाका पुत्रदोनों पुष्ट होनेलगे ९२ जबवह चिड़ियावन में चलीजावे तब उसचिड़िया के बालकचींकलेसे ब्रह्मदत्त के पुत्रसर्बसेन को धाहमाता क्रीड़ा कराने लगी ९३ अर्थात् घोंसलासे उसचिड़िया के पुत्रकोउतार उसबालकको खुशी करनेलगी ९४ जबएक समय में उसब्रह्मदत्त के पुत्रबालकने दृढ़मुष्टिसे ग्रीवाकी जगह में वहचिड़िया ९५ पकड़ जोरसे दाबदिया तबवह चिड़ियातत्काल प्राणों को त्यागताभया ९६ तबमरे हुए और वा बचेहुए मुखवाले और बालक केहाथसे मृतहुये उस चोंकलेकोबड़ी मुशकिलसे सर्बसेनके हाथसेछुटाके मरेहुएको देख ब्रह्मदत्त राजा दुखित होताभया ९७ और नेत्रोंसे अश्रुपात काढ़ताहुआ और उस बालकको धायकोनिंदा करनेलगा और उस चींकलाको याद करके राजा भीशोकसे अन्वितहो बैठताभया ९८ तब समय पै वहचिड़िया दोफलोंको ग्रहणकर ब्रह्मदत्तके स्थानमें आप्राप्तहुई ९९ तब अपने

घोंसलेमें आकर हे युधिष्ठिर प्राणोंसे रहित उसपुत्ररूप अपनेचींक-ले१०० को देखमोहित होतीभई पीछेसंशयको प्राप्तहो हेराजन्वह तपस्विनी चिड़ियाविलाप करनेलगी१०१ और ऐसेकहनेलगी हेपुत्र आवतीहुईमेरेको तू देखमेरेप्रतिगमन कियाकरता और अव्यक्तवाणी सेसुंदर हजारों वचनोंको कहाकरता १०२ और क्याअब मुखकोफाड़े हुए औरमुखसेसंयुक्त और पीलेमुख और लालतलुयेसे युक्तहुआ तूकैसेअब मेरेअर्थप्राप्तनहींहोता १०३ और पांखोंसे मिलापकरमैंतेरे संग बासकिया करती और चीचीकुची ऐसे बोलतेहुयेको मैं अबक्यों नहींसुनती १०४ और जोमेरा मनोरथहै कि पुत्रको देखूं अर्थात् मुख कोबायेहुएऔर पानीको मांगनेवाला और मेरे आगे पंखोंको फरकानेवाला ऐसेपुत्रकोदेखूं १०५ सोतेरेमरनेसे मेरामनोरथ भग्नहोगया ऐसेबहुत प्रकारसे विलापकर राजासे कहनेलगी१०६ कि राज्यसिंहासन पै प्राप्तहोनेवाले हे राजन् आपसनातन धर्मकोजानतेहो परंतु मेरापुत्र धायकेहाथ कैसे मरवावतेभये १०७अर्थात् अपनेपुत्रकेहाथ से खैंचवाके मेरापुत्र मरवादिया हे क्षत्रियोंमें नीचयह वृत्तांतमेरेप्रति कह १०८और क्यातैंने इसआंगिरसश्रुतिका श्रवणनहींकिया १०९ वहश्रुतिकहीजातीहै शरणागत और क्षुधासे पीड़ित और शत्रुओंसे उपद्रुत और अपने स्थानमें वहुत कालसे बसने वाला ऐसाजीव सब तरहसे पालनेके योग्यहै११० अगरऐसेजीवको पालनानकरे तो वह मनुष्य कुंभीपाकनरक मेंवसताहै और ऐसेपुरुष के हाथसे देवते द्रव्य को और पितर स्वधाको ग्रहणनहीं करतेहैं १११ हे महाराज ऐसे दशधर्म को जाननेवाली और शोकसे पीड़ित ऐसी चिड़िया राजाके पुत्रके दोनों नेत्रोंको अपने पंजेसे निकासती भई११२ अर्थात् राजा के पुत्रको अंधाबना आकाशमें प्राप्तहुई ११३ पीछे ब्रह्मदत्त राजा पुत्र को देख उस चिड़िया को कहनेलगा हे कल्याणी तैंने सुंदर किया ११४ परंतु अब तू शोक को त्यागकर अपने घोंसले में प्राप्तहो जा मेरा तेरा प्यार सबकाल में रहना उचितहै और हे सखि तेरा कल्याणहोगा अपने स्थान में आकर पहलेके तरह रमणकर ११५

और पुत्रको पीड़ाका कोपभी तेरा दूरहुआ और कहनेके लायकहो तैंनेकियाहै ११६ तबचिड़िया कहनेलगी हेराजन् तेरे पुत्र स्नेहको भी अपनेसमान मैं जानतीहूं इसवास्ते तेरेपुत्रको अंधाबना तेरेस्थान मेंनहीं बससक्ती ११७ क्योंकि मैंने शुक्राचार्य की कहीगाथा सुनी है वही गाथा वर्णनकी जाती है ११८ कुत्सिता मित्र और कुत्सित देश और कुत्सित राजा और कुत्सित प्यार और कुत्सित पुत्र और कुत्सित भार्य्या इन्होंको बुद्धिमान् मनुष्य दूरसेत्यागे ११९ क्योंकि कुत्सित मित्रमें मित्रता नहीं होतीहै और कुत्सित भार्य्या में रतिका सुख नहीं होताहै और कुत्सित राजा में सत्यता नहीं होती है १२० और प्रजा को हरवक्त भयरहता है और कुत्सित पुत्रमें चारों तरफ से दुःख रहता है और वंश चलने में भी संशय है और कुदेश में जीविका नहीं होती है और कुत्सित प्यार में विश्वास नहीं होता है १२१ और जो मनुष्य अपकार करनेवाले में विश्वास करे है वह मनुष्यों में अधम अनाथ दुर्बल ऐसा है यह बहुत कालतक नहीं जीवताहै १२२ इसवास्ते बिश्वासके लायक नहींहोतिसमें बिश्वास और बिश्वास के लायक में अति बिश्वास मनुष्य को करना उचित नहीं क्योंकि बिश्वाससे उपजाहुआ भय मूल तकनाशकरदेता है १२३ और राजसवों में और संकीर्ण जातके मनुष्यमें जोमूढ़ पुरुष बिश्वास करलेता है वह चिरकाल तकनहीं जीवता है १२४ और राजा से उन्नती को प्राप्तहो मुंगला कीड़ाके समान आपहो आप नष्ट होजाता है १२५ और कोमल भावसे भी शरीर में प्राप्तहो मनुष्य बैरीको मारदेताहै जैसे अमर बेलबड़े वृक्षको १२६ और कोमल स्निग्ध कृशऐसा भी होकेबैरी मनुष्य को मारदेता है जैसेडीमक वृक्षके नीचेलगके जड़को काटदेती है तैसे १२७ और इंद्रने भी एक समयमें मुनिजनोंके अगाड़ी समयकरके पश्चात् जलके झागों में वज्रकोल्ह को नमुचि दैत्य को मारदिया है १२८ इस वास्ते हे राजन् सोताहुआ और मदवाला और अतिउन्माद वालाऐसे बैरी को भी बिषअग्नि और शस्त्रमाघा इन्हों करके मनुष्य मारदेतेहैं १२९

और फिरबैरके भयसे शत्रुका शेषनहीं छोड़तेहैं अर्थात् जड़ सहित शत्रुको मारदेतेहैं १३० क्योंकि यह मर्यादाहै शत्रुका शेष और ऋण अर्थात् कर्जाकाशेष और अग्नीकाशेष ये अल्पभी बाकी रहे फिरबढ़ जातेहैं इसवास्ते इन्होंका शेषनहींछोड़ै १३१ और हंसता भीहोय और अतिबोलता भीहोय और एकपात्रमें भोजनभी करताहोय और एक आसनपै बैठभीजावे परंतु उग्रबैरको मनुष्य नहींभूलाकरता है १३२ इसवास्ते संबंध करकेभी शत्रुमें विश्वास नहीं करै क्योंकि पुलोमादैत्य का जामाता रूपहोके इन्द्रपुलोमाही को मारताभयाहै १३३ और जो मनुष्यमनमें बैर रक्खे और ऊपरसे प्रियबचन बोलै ऐसे मनुष्यकेसमीपमें बुद्धिमान् पुरुष बसैनहीं जैसे पारधी केपास मृग १३४ और बढ़तेहुए बैरीके पासभी बसनाउचितनहींहै क्योंकि वह जड़सहितमनुष्यको गिरादेताहै जैसे नदीकावेग वृक्षको १३५ और शत्रुसेउन्नती कोप्राप्तहो विश्वासनहींकरैक्योंकि मुंगला कीड़ा कीतरह आपसे आप समयमें नष्टहोजाताहै १३६ यहकथाशुक्राचार्य्यजीनेकहीहै हेराजन् अपनीरक्षा करने वाले बुद्धिमान् मनुष्यको कथा धारण करनीचाहिये १३७ और मैंने तेरे अर्थदारुण अपराध कियाहै अर्थात्तेरेपुत्रको अधावनातेरेमें विश्वास नहींकरसक्ती १३८ ऐसेवह चिड़ियाकहकर आकाशमार्गमें गमन करतीभई सोहेयुधिष्ठिर ब्रह्मदत्त राजाका चिड़ियाके संगवृत्तांत मैंनेतेरे अर्थ वर्णनकिया १३९ फिर भीष्मजी कहनेलगे हेयुधिष्ठिर जोआप मेरेसे श्राद्धसंबंधी प्रश्नपूछतेहैं इसवास्ते सनत्कुमारजीने मार्कंडेयजी के अर्थकहा ऐसापुरातन इतिहास कहूहूं १४० और श्राद्धकेफलका उद्देशकरसातजन्मोंमें सुकृत काफल प्राप्तहुआहै वहभी श्रवणकर १४१ और गालव कंडरीक ब्रह्मदत्त राजा इन्होंकाभी चरित्र श्रवणकर १४२॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वभाषायां चटकाख्याननामविंशोऽध्यायः २० ॥

इक्कीसवां अध्याय॥

मार्कंडेयजी कहनेलगे हेभीष्म श्राद्धसेउत्तमलोक और उत्तमज्ञान

प्राप्तहोताहै इस वास्तेश्राद्धका फलदिखाया जाताहै १ जैसे सातजन्मों मेंब्रह्मदत्तने योगऔर धर्मप्राप्त कियाहै और जैसे गायको हिंसाकर श्राद्धकरनेसे ब्राह्मणों कोफलप्राप्तहुआहै वहभीश्रवणाकर २ पश्चात् सनत्कुमारजी के कहेहुए उनसात ब्राह्मणोंको दिव्य चक्षुसे देखता भया ३ और तिन्हीं केवाग्दुष्ट १ क्रोधन २ हिंस्र ३ पिशुन ४ कवि ५ । ४ षष्ठम ६ पितृवर्त्ती ऐसेनाम होतेभये और येसब विश्वामित्र केपुत्र हुये ५ जब विश्वामित्रने शापदेदिया तब गार्ग्यऋषिके शिष्यहोके गुरुकेघरमें बासकरनेलगे ६ पीछेगुरुकी आज्ञा से समान बच्छावाली और कपिला और चापसे आईहुई और दूधको देने वाली ऐसी गायको वनमें लेजानेलगे ७ तबमार्गमें बालकपनेसे या मोहसे ८ हे भीष्म गायको मार उसके मांसको खानेवास्ते बुरीबुद्धि उपजती भई और तिनसातओं में कवि और षष्ठम नामवाले इनदोनोंको वे पांचोंबर्जे भी ९ परंतुनहींमानतेभये पश्चात् तिन्होंमें पितृवर्त्ती सातवां विश्वामित्रका पुत्र सब प्रति कहने लगा १० अगर तुमको यह गायमारनीही उचितहै तोपितरोंका उद्देश्यकर मारनी चाहियेइससे यहगायभी धर्मको प्राप्तहोगी ११ और पितृकर्ममें इसगायके मांसको वर्त्तनेमें हमारेकोपापभी नहीं लगेगा ऐसेसब अंगीकारकर उसगायको जलआदिसे स्नान करायके १२ पितरोंके अर्थ कल्पना कर उसगायके मांसको भक्षण करतेभये १३ पीछेवनसे बछड़ाकोग्रहणकर गुरुके समीपमेंजाय ऐसेकहनेलगे हेगुरु सिंहने गायतोमारदई परंतुयह बछड़ाबचाहै इसको आप ग्रहणकीजिये तब कोमलतासेवहगुरु उस बच्छाको ग्रहण करताभया १४ ऐसेवेसातों गुरुकोअन्यायसे ठगकेसमयमें अर्थात् आयुके क्षयहोनेपै मरतेभये १५ पीछे वे सातोंक्रूरतासे और गायकेमारनेसेऔर गुरुकेअगाड़ी मिथ्या बोलनेसे उग्रऔर हिंसाकरने वाले और बलवाले ऐसेपारधी केपुत्र हुए १६ परंतुपितरोंके पूजाकेअर्थ गायको वर्त्ततेभये १७ इसवास्ते पूर्वजन्म काभी ज्ञानबनारहा और सुकृत कर्मानु संधानभी बना रहा १८ पीछेवे सातों पारधी दशार्ण देशमें बिचरतेहुये धर्मको बांछा

करनेवालेऔर अपनेकर्ममें सावधान और लोभऔरझूठसेरहित ऐसे होकेप्राणोंकी रक्षाकेवास्ते अपनाकर्म करतेहुये १६ बाकी सबकाल में ध्यानकोकरनेवाले ऐसेहोतेभये २० और निर्वैर १ निर्वृत्ती २ क्षांत ३ निर्मन्यु ४ कृती ५ वैघस ६ मातृवर्त्ती ७ येउन्होंकेक्रमसे नामहुए २१ और वे हिंसा धर्मकोभी करतेहुये माता और पिताको अतिप्रसन्न करतेभये २२ जबदैवयोगसे माता और पिताकी मृत्युहोगई तबवे अपने अपने धनुषोंको त्याग बनमें अपनेप्राणोंको छोड़तेभये २३ इस शुभकर्म के करनेसे और पूर्वोक्त कर्मकेफलको भोगनेके वास्तेवे सातोंकालंजर पर्वत में २४ उन्मुख १ नित्यबित्रस्त २ स्तब्धकरण ३ बिलोचन ४ पण्डित ५ अघस्मर ६ नादी ७ इन सातनामों वाले मृग होके उपजे २५ परंतु पूर्व जन्मका ज्ञान पूर्ण बना रहा पीछेबनमें बिचरनेवाले और इंद्रियोंको शांतकरनेवाले और द्वंद्वसे रहित २६ और शुभकर्म करनेवाले और हिंसारहित उत्तमधर्म करने वाले ऐसेहोके योग धर्मको प्राप्तहुये २७ पश्चात् निर्ज्जल देश में हलके भोजन करतेहुये और तपको धारण करते हुये प्राणोंको त्यागतेभये २८ हेराजन् तिन्होंके पैरोंकेचिह्नकालंजर पर्वतमें अब तकभी दीखते हैं २९ इसशुभ कर्म के करनेसे वे सातों शरद्वीप में नदीकेसमीप चकुओंके शरीरको प्राप्तहुये ३० परंतु इस शरीरमेंभी मैथुनधर्मको त्याग और मुनीकेसमान धर्मोंको धारणकरनेवाले ३१ और निष्प्रिह १ निर्मम २ शांत ३ निर्द्वंद्व ४ निःपरिग्रह ५ निर्वृत्ती ६ निभृत ७ इननामोंवाले और ब्रह्मचर्य्यको धारण करनेवाले और तपको तपनेवाले ऐसेहोके नदीकेतटपै प्राणोंको त्यागतेभये ३२ पीछे ये सातों मानसरोवरमें हंसहोतेभये परंतु पूर्वजन्मकाज्ञान तहां भी बनारहा और ब्राह्मणके शरीरमें प्राप्तहोकेगुरुके अगाड़ी मिथ्याबचनकहे ३३ इसवास्ते तिरछी योनिमें जन्मलेके संसारमेंभ्रमे और पितरोंकोपूजाके अर्थअपने स्वार्थमेंतत्पर गायकोबर्ततेभयेइसवास्ते उत्तमजन्म और उत्तमज्ञान प्रकटहोताभया ३४ और तिन्होंमेंपांचवां जिसका आदिमें कवीनामथा वह पांचिक नाम राजाकामंत्री होगा

और तिन्होंमें छठाषष्ठम नामवाला कंडरीक नामसे बिख्यात राजा कामंत्रीहुआ ३५ और तिन्होंमें पितृवर्त्ती नामसेबिख्यात सातवां ब्रह्मदत्तराजाहुआ और पूर्वजन्ममें गुरुकुलमें प्राप्तहो जोबेदश्रवण कियाथा उसके प्रतापसे जन्म जन्मगैलबुद्धी समरतीगई ३६ ऐसे वे सातोंहंस ब्रह्मचार्दद्यों के समानधर्मको जाननेवाले योगधर्मको प्राप्तहो जहांतहां बिचरनेलगे ३७ और उन हंसोंके सुमना १ शुद्धवाक् २ शुद्ध ३ पंचम ४ छिद्रदर्शन ५ सुनेत्र ६ स्वतंत्र ७ ये नामहुए ३८ पीछे उनहंसोंको समुद्रमें विचरतेहुए बहुत दिनहोगये तब एक समयमें नीपबंशका बिभ्राज नामवालाराजा ३९ सुंदर वस्त्रऔर गहना आदिसे अपनेशरीरको भूषितकर और मंत्रियोंसे सहितराजा उस वनमेंचलागया ४० जहां वेहंसरहाकरते तवसातवां सुतंत्र नामवाला हंसशोभा संयुक्त यांचताहुआ उस राजाकोदेख यह बिचारता भया ४१ कि इसके समानमैं होजाऊं अर्थात् जोसुकृत नियम और तप मेराहै उसकेप्रतापसे निष्फलरूप तप और बृतआदिसे दुःखितहोरहाहूं ४२ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वे भाषायां एकविंशोऽध्यायः २१ ॥

बाईसवां अध्याय ॥

मार्कंडेयजी कहनेलगे हेभीष्मजबउस सातवें हंसने पूर्वोक्तसमाचार कहे तब छिद्रदर्शन और सुनेत्र इननामोंवाले दो२हंस बोले१ हेस्वतंत्र हंस जो आपइस राजाके समान सुखको चाहते होतो हम दोनोंतुम्हारे मंत्रीहोने की इच्छाकरते हैं ऐसे वे तीनोंहंस कहतेभये तवशुद्धवाक् नाम वालादूसरा हंस कहनेलगा २ हे स्वतंत्र सातवें हंसकाम की बांछाकरके योगधर्मको छोड़नीचे वरकी प्रार्थना करैहै इसवास्ते मेरेबाक्य कोसुन ३ हे प्रियकांपिल्य नगरमें ब्रह्मदत्त नामसे बिख्यात तू राजाहोगा और येदोनों हंसतेरे मंत्रीहोवेंगे ४ ऐसे चार हंस उन तीनों हंसोंको शापदेके बोलने में अयोग्य करते भये तव वेतीनों हंस उनचारहंसोंसे कहनेलगे किहमपै दयाकबहोवेगी५

तब सुमना नामवाला हंस अपने सहचारी हंसोंकी सलाहलेके ६ कहनेलगा अंतवाला तुम्हारेको शापहोगा इसमें संशयनहीं अर्थात् इस हंस के शरीरको त्याग मनुष्यके शरीर को प्राप्तहोगे पश्चात् योगधर्मको प्राप्त होजावोगे ७ और सब प्राणियोंकी बोलीकोजानने वाला और ब्रह्मदत्तनामसे बिख्यात ऐसापदसुतंत्रहोगा और इसके प्रताप से हमको पितरोंकी प्रसन्नता प्राप्तहुईहै ८ अर्थात् उसगुरुको गायको पितरोंके अर्थ हमबत्ततेभये यहइसीने उपदेश किया अबहम सबयोग को प्राप्तहोवेंगे ९ और हे तीनोंहंसो जब तुमराजा और राजाके मंत्रीहोके बहुतभोगों को भोगचुको तबएक ब्राह्मणके मुखसे कहेहुये श्लोक को सुनके योगधर्मको प्राप्त होजावोगे १० ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वभाषायां पितृकल्पे द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

तेईसवां अध्याय ॥

मार्कंडेयजी कहनेलगेवे सातोंहंस बायुजल इन्हींको भक्षणकरते हुये १ अपने अपने शरीरोंको सुखातेभये २ और वहपूर्वोक्त बिभ्राज नाम वाला राजा उसबनमें बिचरके उन योग धर्म वाले हंसों को देखता भया ३ और दयाभाव से उनहंसों कोही याद करता हुआ अपनेपुरमेंआके प्राप्तहुआ ४ पीछे बिभ्राजकेपरमधार्मिक अणुहनाम वाला पुत्रहुआ ५ इसअणुह के अर्थ शुकदेव स्वामी अच्छेलक्षणों वाली सत्वशील गुणोंसे संयुक्त ६ और योगधर्म में रत और कृत्वी नामसे बिख्यात ऐसीकन्या देतेभये ७ और हेभीष्म सनत्कुमारजी नेमेरे समीपमें सत्यधर्मों को धारण करनेवालों में श्रेष्ठ और योग रूप और योगीकी पत्नी और योगीकी माता ऐसीयही पितृकन्या प्रकाशित कीहै ८ सोमैं पितृसर्गमें तेरे अर्थ कहचुकाहूं पीछेबिभ्राज राजा अणुह पुत्रको राज्यपै स्थापनकर ९ औरपुरके जनोंसे सलाह कर और ब्राह्मणोंसेस्वस्तिबाचनकरा तपकरनेके वास्ते जिस मान सरोवर में वेहंस बासकरतेथे उसमें जाताहुआ १० और तहां जाके भोजनको त्याग पवनको भक्षणकरनेवाला और तपकोधारणकरने

वालाऐसाहोकेकामोंको त्याग उग्रतपकोकरनेलगा ११ तबतिसरा-
जाका यहसंकल्प हुआ इनहंसोंमेंसे एकको ऐसा कामेंपुत्र होकैरम
णकरूं१२पश्चात् यह बिभ्राज राजासूर्यकेसमान प्रकाशितहुआ१३
और जिसके प्रतापसे बिभ्राजित नामबन और बैभ्राज नाम सरो-
वरऐसा बिख्यातहै १४ पीछेउनसात हंसोंमेंसे चारयोग धर्मीरहे
और तीनयोगसे भ्रष्टकेपश्चत् येसातों हंसके देहकोत्याग१५कांपि
ल्यनगरमें ब्रह्मदत्त आदिनामोंसे बिख्यात और पापोंसेरहित ऐसे
सातोंजन्मे १६ परंतुचारोंको पूर्बजन्मका स्मरणरहा और तीन
मोहित अर्थात् पूर्बजन्मको नहीं जानते भये १७ और वह सातवां
स्वतंत्र हंसअणुहराजाके ब्रह्मदत्त नामसेपुत्रउपजा और इसकापूर्ब
चिंतित पक्षियोंमें संकल्परहा इसवास्ते पक्षिमात्रमें प्यार करनेल-
गा१८और यह ब्रह्मदत्तराजा ज्ञान ध्यानतप इन्होंसे पवित्रवेद और
वेदांगों के पारको जाननेवाला ऐसाहुआ १९ और छिद्रदर्शीपांचवां
हंस और सुनेत्र छठाहंस ये दोनों बाभ्रव्य और वत्स इनराज मंत्रि-
योंके कुलमें उपजे २० परंतु वेद और वेदांगों के जाननेवाले और
पूर्वजन्मके प्रभावसे ब्रह्मदत्त राजाके सहायक और पांचाल कंडरीक
इन नामोंसे बिख्यातहुए २१ और तिन्होंमें पांचाल नामवाला ऋ-
ग्वेदको पढ़के ब्रह्मदत्त राजाका आचार्य्यहुआ और कंडरीक साम-
वेद और यजुर्वेद कोपढ़के अध्वर्युहुआ २२ और सब प्राणियोंकी
बोलीको जाननेवाला ब्रह्मदत्त राजाजोहै तिसके ये दोनों मित्रहोते
भये२३येतीनों ग्राम्य धर्ममें निरतऔर कामदेवके बशमें बर्तनेवाले
और पूर्बजन्मके प्रभावसे धर्म काम अर्थ इन्होंको जाननेवाले ऐसे
हुए २४ पीछे अणुहराजा ब्रह्मदत्तको राज्यपै प्राप्तकर योगधर्मके
प्रताप से परम गतिको प्राप्तहुआ २५ पीछे ब्रह्मदत्त राजा योगको
जानने वाली और सन्नती नामसे बिख्यात ऐसी देवलकी पुत्रीसे
विवाहा गया २६ ऐसे पांचवां हंसपांचाल नामसे बिख्यात और
छठाहंस कंडरीकनामसे बिख्यात और सातवां हंस ब्रह्मदत्त नामसे
बिख्यात ऐसे ये तीनों जन्मे २७ और बाकीके सहचारी चारहंस

दरिद्रसे संयुक्त श्रोत्रीयकुलमें चारभ्राता जन्मतेभये और धृतिमान् १ सुमना २ बिद्वान् ३ तत्त्वदर्शी ४ ऐसेनामोंसे बिख्यात और वेदके अध्ययनमें कुशल और अपने सहचारियोंके छिद्रको देखनेवाले २८ ऐसे हुए पीछे पूर्वजन्म के प्रभाव से चारों की एकमति उपजी तब माता पिता से आज्ञालेकर योग धर्म के वास्ते गमन करने लगे २९ तब तिन्हों का पिता कहनेलगा हे पुत्रो हमको त्याग के जो आप गमनकरतेहो यहअधर्म है ३० क्योंकि हमारी दरिद्रता को दूरकरे बिना और पुत्रभावके उत्तमसुखों को हमारे अर्थ दिये बिना और हमारी टहलकरे बिना कैसे आप गमनकरने के योग्यहो ३१ तब वे चारों पिताके प्रति कहनेलगे तुम्हारी आजिविका के वास्ते उपायकहतेहैं तुमसुनो ३२ ॥

अब प्रसंग प्रकाशितकरने वास्ते संस्कृत श्लोकों कावर्णन करतेहैं ॥

श्लोक ॥ सप्तव्याधादशार्णेषुमृगाःकालंजरेगिरौ ॥ चक्रवाकाःशरद्वीपेहंसाःसरसिमानसे ३३ तेपिजाताकुरुक्षेत्रेब्राह्मणावेदपारगाः ॥ प्रस्थितादीर्घमध्वानंयूयंतेभ्योबिसीदथ ३४ ॥

इसश्लोकको मंत्रियोंसहित बृह्मदत्त राजाकोजाकेसुना वहराजा प्रीतिसे ग्रामअतिभोग मनोवांछितपदार्थ येसबदेवेगा ३५इसवास्ते हे स्वामिन् राजाकेपास आप गमनकीजिये ऐसे वे चारों बिप्रकहके और पिताको पूजके योगधर्म को प्राप्तहो मोक्षको प्राप्तहुये ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्बभाषायांपितृकल्पेत्रयोबिंशोऽध्यायः २३ ॥

चौबीसवां अध्याय ॥

मार्कंडेयजी कहने लगे हे भीष्म जो प्रथम बृह्मदत्तके पितामह जो विभ्राज राजाने उनहंसोंका पुत्रबनना चाहाथा इसवास्ते वह विभ्राज बिश्वक्सेन नामसे बिख्यात पुत्रबृह्मदत्त राजाके उपजा १ पीछे एकसमय में अपनी भार्याके संगबृह्मदत्तराजा बनमें बिचरता भया जैसे इंद्राणीकेसंग इंद्र २पीछे बनमें कामसेपीड़ित पिपीलिका

को कामसे पीड़ित पिपीलिक अर्थात् कीड़ी के पतिको भोगकेवास्ते यांचनाकरनेलगरही ३ और यांचनाकरनेवालीऔर क्रोधकरनेवाली ऐसी कीड़ीके वचनकोसुन ब्रह्मदत्त राजा आपहीआप अत्यंतहंसने लगा ४ तब सन्नतीनामवाली और बहुतदिनों से बूत करने वाली ऐसी बूह्मदत्तकीरानी लज्जितहोके उदासीनहुई ५ तब राजानेबहुत प्रकार प्रसन्नकरी तब ऐसे कहनेलगी कि हेराजन् तैंने मेरीगैलमें ऐसा उपहासकियाहै कि मैं जीवनेके योग्यनहींहूं ६ तब राजाने सबवृत्तान्त कीड़ी और कीड़ीकेपतिका वर्णनकिया तब कुपितहोके कहनेलगी ऐसा मनुष्यके शरीर में प्रभाव नहीं होता ७ क्योंकि कीड़ीकेशब्दको कौनमनुष्य जानसक्ताहै देवताके प्रसाद और पूर्व जन्मके स्मरणकेबिना ८ और हे राजन् तपकेबलसे अथवा विद्या से सबप्राणियोंके शब्दको जानताहै ९ तो मेरेको यथार्थकरि ऐसा उपदेशकर कि मैंभी जानलेउं अर्थात् मेरेकोप्रतीति करादे अगर नहीं तो मैं अपनेप्राणों को त्यागदूंगी यहमेरी प्रतिज्ञाहै १० तब तिस रानीके कठोर अक्षरोंवाले वचनकोसुन परम आपत से त्रस्त हुआ ११ सब भूतोंकेईश और देवताओंमेंश्रेष्ठ और शरणागत के दुःखको मेटनेवाले ऐसेपरमेश्वरका ध्यान करनेलगा अर्थात् साव-धानहोके भोजनकोत्याग छः रात्रितक ध्यानकिया १२ तब छठीं रात्रिमें साक्षात् नारायणको देखताभया और सबप्राणियों पै दया करनेवाले नारायणने राजाकेप्रति यह बचनकहा १३ हे बूह्मदत्त प्रभात में तू कल्याण को प्राप्तहोगा ऐसे कहके नारायण अंतर्हित होते भये १४ और उन चार ब्राह्मणों का पिता पुत्रों से पूर्वोक्त श्लोकको यादकरि कृतकृत्यके समानहुआ १५ मंत्रियोंसहितबूह्म-दत्त राजाकेअर्थ उस श्लोकको सुनानेकेवास्ते उपायकरनेलगा १६ पश्चात् राजा नारायणसे बरकोप्राप्तहो और सुंदरसरोवरमें स्नान करसुवर्णके रथमेंबैठ प्रसन्नहुआ अपनीपुरीमें प्रवेशकरनेलगा १७ और कण्डरीक मंत्री घोड़ोंकी रस्सीको पकड़ रथमें बैठाहुआ और पांचालमंत्री चवंर और व्यजनको धारणकिये रथमें बैठाहुआ १८

ऐसे तिन्होंकोदेख वह पूर्वोक्तब्राह्मण इस वक्ष्यमाण श्लोकको मंत्रियोंसहित राजाकेअर्थ सुनानेलगा १९ ॥

वह श्लोकभी अर्थ सहित प्रकाशित किया जाताहै ॥

श्लोक ॥ सप्तव्याधादशार्णेषुमृगाःकालंजरेगिरौ ॥ चक्रवाकाःशरद्वीपेहंसाःसरसिमानसे २० तेपिजाताकुरुक्षेत्रेब्राह्मणावेदपारगाः ॥ प्रस्थितादीर्घमध्वानंयूयंतेभ्योविसीदथ २१ ॥

दशार्ण देशमें सात पारधी जन्मे पीछे कालंजर पर्वत में वेही सातमृग जन्मे पीछे शरद्वीपमें वेही सातचकवेजन्मे पीछेवेही मान सरोवर में सातहंस जन्मे २२ पीछे तिन्होंमेंसे चार कुरुक्षेत्रमें वेद को जाननेवाले बिप्रजन्मे सो वे चारों उत्तममार्गको प्राप्तहुये और आप तीनों योगसे भ्रष्टहुये शिथिलरूप बनेहो २३ इस वचनको सुनतेही मंत्रियों सहित ब्रह्मदत्त राजा मोह को प्राप्तहुआ और कण्डरीक मंत्रीके हाथसे घोड़ोंकीरस्सी और चाबुक छुटगया २४ और पांचाल मंत्री के हाथसे चवंर और व्यजन छुटगया अर्थात् ये दोनों भी मोहित होगये ऐसे इन तिन्हों को पुरबासी और राज मंत्री २५ देखके आश्चर्य करनेलगे पीछे दोघड़ी में संज्ञा को प्राप्तहो पुरीमें प्रवेश करतेभये २६ पीछे उस सरोवरको और पूर्व जन्म के योगधर्म को यादकर उस ब्राह्मण को विपुल भोगों से और द्रव्यों से प्रसन्न करतेभये २७ पीछे विश्वक्सेन पुत्र को राज्यपै स्थापितकर रानीसहित ब्रह्मदत्त राजा बनको गमन करता भया २८ पीछे देवलकी पुत्री सन्नतीनामवाली रानी परमप्रसन्न होके बनको गमनकरनेवाले राजाको कहनेलगी २९ हे महाराज उस पिपीलिका के शब्दको जाननेवाली मैंने क्रोधका उद्देशकर कामोंमें आसक्तहुये आप प्रेरित किये ३० अब से हम उत्तम और वांछितगतिको प्राप्तहोवेंगे और आप पूर्वजन्म के योग धर्मको भूल गयेथे इसवास्ते मैंने फिर स्मरणकरवाया ३१ पीछे परमप्रसन्नहुआ राजा रानीके बचनकोसुन योगधर्मको प्राप्तहो उत्तम गतिको प्राप्त हुआ ३२ पीछे धर्मात्मा कंडरीक मंत्री भी योगधर्मकोप्राप्तहो उत्तम

गतिको प्राप्तहुआ ३३ पीछे पांचाल मंत्री भी उत्तम शिक्षाको प्राप्त कर योगधर्मकोप्राप्तहो उत्तमगतिको प्राप्तहुये ३४ ऐसे यहप्रत्यक्ष वृत्तांत पहले बीताहै इसको हेभीष्मजी तू धारणाकर पीछे कल्याण से युक्तहोगा ३५ और इस ब्रह्मदत्त आदि आख्यान को जो धारण करेंगे वे मनुष्य मरके तिरछी योनिवाले पक्षियोंके शरीर को नहीं प्राप्तहोंगे ३६ ऐसे यह आख्यान श्रवणकरनेसे उत्तमगतिको प्राप्त करताहै और इसको विशेषकर श्रवणकरनेसे शांति भी प्राप्तहोती-है ३७ पीछे ज्ञानको प्राप्तहो मुक्तिका होजानाजरूरहीहैसो बैशंपा-यनजी कहनेलगे हेजनमेजय ऐसे श्राद्धके फलका उद्देशकर चंद्रमा की तृप्तिके अर्थ मार्कण्डेयजीने भीष्मजी से यह कहा है ३८ और संपूर्णलोक चंद्रमाकेद्वारातृप्तहोताहै ३९ इसवास्तेक्षत्रिवंशकेप्रसंग से चंद्रमाकाबंशप्रकाशितकियाजाताहैसोआपश्रवणकोजिये ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वभाषायांपितृकल्पेचतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

पच्चीसवां अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहनेलगे हे राजन् प्रजाको रचनेकी इच्छाकरने वाले ब्रह्मा के मनसे चंद्रमाका पिता अत्रिऋषि उपजा १ पीछे ये अत्रिकर्म मनबाणी इन्होंसे सब मनुष्योंके कल्याणकेअर्थ शुभकर्मों का आचरण करनेलगा २ पीछे सब प्राणियों में दयारखनेवाला और धर्मात्मा और उग्रब्रतोंको धारण करनेवाला और काष्ठ भीत पत्थर इन्होंके समान शरीरको धारण करनेवाला और आकाश के सामने दोनोंभुजाओं को उठाके धारणकरनेवाला ३ और महातेज वाला ऐसा अत्रिऋषि सब इन्द्रियोंका निग्रहकरनेवाला ऐसा मौन को प्राप्तहो ४ तीन हजार दिव्यवर्षोंतक उग्रतपको करनेलगा ऐसे हमने सुना है ५ पीछे महापराक्रमवाले और ऊर्ध्वगत वीर्य्य को धारणकरनेवाले ऐसे अत्रिऋषि के शरीरके ऊर्ध्वभागमें अमृत उप-जा ६ तब दोनों नेत्रोंके द्वारा दशोंदिशाओं को प्रकाशित करता हुआ ७ पानी गिरनेलगा तिस तेजसंयुक्त पानीरूप गर्भको प्रफु-

ल्लितहुई दशोंदिशा मिलके धारण करनेलगीं परंतु धारणकरने में समर्थ न हुईं ८ जब उन्होंसे धारण नहीं कियागया तब वहतेजरूप गर्भ पृथ्वीमें पड़नेलगा ९ तब पड़ताहुआ उस अमृत रूपगर्भ को सबके बड़े ब्रह्माजी देखके लोकोंके कल्याणके अर्थ रथमें स्थापित करतेभये १० अब रथकास्वरूप बर्णन कियाजाताहै॥ हेजनमेजय काष्ठकी तरह वेदोंसे रचा हुआ और धर्मरूप और सत्यरूप ब्रह्म का संग्रह और सफेद रंगवाले हजारोंवेदके मंत्ररूप घोड़ोंसेसंयुक्त ऐसा रथका स्वरूप हमने सुनाहै ११ और जब चंद्रमा रूप तेज पृथ्वीमें पड़नेलगा तब ब्रह्माके मनसे उपजे सातपुत्र १२ और अंगिरा और अंगिरा के पुत्र भृगु और भृगुकेपुत्र ऋग्वेद और यजु- र्वेदके द्वाराचंद्रमा की स्तुतिकरने लगे १३ तबचंद्रमा का तेजबढ़के सब लोकोंको पुष्टकरताहुआ त्रिलोकीको प्रकाशित करने लगा१४ और उस उत्तम रथमें बैठके समुद्रपर्य्यंत संपूर्ण पृथ्वी की इक्कीस परिक्रमा चंद्रमाने करी १५ और जो रथके वेगसे चंद्रमा का तेज पृथ्वी में प्राप्तहुआ उससे सब औषधियां उपजनेलगीं १६ इस वास्ते चंद्रमाके तेजसे सबअन्न आदि औषधियें प्रफुल्लित होती हैं और इनअन्न आदि औषधियों के प्रतापसे अंडज स्वेदज जरायुज उद्भिज चारप्रकारकी प्रजाजीवतीहै ऐसे हेराजन् सबजगत्को पुष्ट करनेवाला चंद्रमा कहाहै १७ पीछेउत्तम कर्मोंसे उत्तमतेजको प्राप्त हो एकहजार पद्म संख्यावाले बर्षोंतक तपकरता भया १८ इसी वास्ते जो सुबर्णके समान बर्णवाली देबी इस जगत् को धारणकर रहीहै अर्थात् सबप्रकारके जलोंका स्वामीचंद्रमाको पागया१९ और हे जनमेजययहीचंद्रमा सबप्रकारके बीज और औषधी औरब्राह्मण और जल इनसबोंका स्वामी बनायागया २० ऐसे उत्तम राज्य पै प्राप्तहो चंद्रमा सबलोक लोकांतरोंको अपने तेजसे प्रकाशित करता है २१ पीछे दक्ष प्रजापति अपनी अश्वनी आदि और रेवती पर्य्यंत जो सताइस नक्षत्रहैं इनपुत्रियों को चंद्रमा के अर्थ बिवाहता भया २२ पीछे चंद्रमा उत्तम राज्यको प्राप्तहो राजरूप यज्ञका आरंभ

करनेलगा तिसमेंजहांएक अशरफ़ी एकगायको दक्षिणाथीउसजगह लाख लाख अशरफ़ी और लाख लाख गौकादान करताभया २३ और उस यज्ञ में अत्रिमुनी होताबनते भये और भृगुमुनी अध्वर्युबनते भये और अंगिरामुनी उद्गाताबनतेभये और साक्षात् ब्रह्मा जीब्रह्माबनतेभये २४ अथवा बशिष्ठजी ब्रह्माबनतेभये औरसाक्षात् नारायण सनत्कुमार आदिब्रह्मर्षियोंसे संयुक्तहो सभापति बनतेभये २५ और हेजनमेजय मैंनेऐसा सुनाहै यज्ञकेअंतमें मुनीजनोंके अर्थ चंद्रमा ने त्रिलोकी का दान करदिया २६ और सिनिबाली कुहू अर्थात् अमावस्या और द्युति पुष्टि प्रभावसु और कीर्त्तिधृति लक्ष्मी येभी नवोंदेवी चंद्रमा को सेवनेलगीं २७ ऐसेयशको पूर्ण करदेवते और मुनिजनों से पूजितकिया सब राजाओं से प्रधानऐसा चंद्रमा होके दशोंदिशाओं को भासित करताभया प्रकाशितहोताभया २८ परंतु हे जनमेजय ऐसे उत्तम ऐश्वर्य्यको प्राप्तहो और मदसे भ्रमता हुआ चंद्रमाकी अनीति से बुद्धि भ्रष्ट होनेलगी २६ तब वहचंद्रमा अतिशयबाली और तारानामवालीबृहस्पतिकी भार्याकोहरताभया ३० तब देवते और राजर्षियोंने अत्यंत समझाया भी परंतु उस तारा नामवाली स्त्री को नहीं छोड़ताभया ३१ तब चंद्रमा के संग बृहस्पतिजी युद्धकरनेको तय्यारभये तब चंद्रमाकी तरफ मददेने वाले दैत्योंके गुरू शुक्राचार्य्यजी हुये ३२ और एक समयमें बृहस्पतिजी अपनेपितासे पहले महादेवजीसे पठनकरतेभये उसस्नेह से महादेवजी ३३ आजगवनामवालेधनुषकोधारणकरबृहस्पतिजीके तरफ़ मदद देनेवालेहुये और उसीवक्त दैत्योंके नाशकरनेवालेमहादेवजीने ब्रह्मशिर नामवाला उग्रअस्त्र रचलिया ३४ जिसकरके दैत्योंका यशनाशको प्राप्तहुआ तब देवते और दैत्योंका आपस में लोकके क्षयकरनेवाला और तारकामय नामसे विख्यात ३५ ऐसा युद्धहोनेलगा तब बहुतसे दैत्य और बहुतसे देवते नाशकोप्राप्तहोगये पीछे तिस युद्धसे बचेहुये तुषित संज्ञावाले देवते आदि देव और सनातन ऐसे ब्रह्माजीके शरणमेंजाके प्राप्तहुये ३६ तब आप

ब्रह्माजी आके शुक्राचार्य्य और महादेवजी को निवारणकर ३७ ताराश्रीको चंद्रमासे खोश वृहस्पतिजीको देतेभये तब उसगर्भवती स्त्री ताराकोदेख वृहस्पतिजी कहनेलगे ३८ मेरे स्थान में गर्भको धारण मतकरे एकांत स्थानमें इस गर्भ को त्याग ३९ तब एकांत स्थानमें वह तारा उस गर्भको त्यागनेलगी तब जन्मलेतेही वह दिव्यरूपवाला गर्भ देवताओंके रूपोंसे भी अधिक रूपको धारण करताभया ४० तब सब देवते संशयको प्राप्तहो तारासे कहनेलगे हे कल्याणी तू सत्यकह यह बालक चंद्रमाका पुत्रहै या वृहस्पति-जीका ४१ ऐसे प्रकार देवताओंने पूछा भी परंतु वह तारा कुछ भी नहीं बोलतीभई तब तिस ताराको वह बालक शापदेनेकोतय्यार भया ४२ तब उस बालकको बर्जे ब्रह्माजी तारा से पूछनेलगे हे देवी यह किसका पुत्रहै सो तू सत्य बर्णनकर ४३ तब दोनोंहाथों को जोड़ वरकेदेनेवाले ब्रह्माजीसे कहनेलगी हे स्वामिन् दुष्टजनों को दुःखदेनेवाला यह बालक चंद्रमाका पुत्रहै ४४ तब चंद्रमाउस बालकके मस्तकको सूंघ अपनेपुत्रका बुध ऐसा नामधरताभया ४५ परंतु यह बुध आकाशमें प्रतिकूलपने से उदयहोताहै और बैराजम नुके इलानाम पुत्रीउपजी ४६ तिसमें यह बुध पुरूरवा नामवाले पुत्रको उपजाताभया पीछे इसपुरूरवाके उर्बशीमें सातपुत्रउपजे४७ और राजयक्ष्मारोगने चंद्रमा ग्रसलिया तिससे चंद्रमा का मंडल क्षीण होनेलगा ४८ तब चंद्रमा अत्रिमुनि को शरण में गया तब महातपवाले अत्रिमुनि तिस पापरूप रोगकी शांति करतेभये ४९ तब राजयक्ष्मासे छूटके उत्तम शोभासे प्राप्तहो चारोंतरफसे चंद्रमा प्रकाशकरनेलगा ऐसे कीर्त्ति को बढ़ानेवाला चंद्रमा का जन्म बर्णन कियाहै ५० और इससे उपरांत हे राजन् सोमबंश का श्रवणकर और धन रूप आरोग्य और आयुका देनेवाला और पवित्र और मनोबांछित देनेवाला ५१ ऐसे चंद्रमाके जन्मको सुननेसे मनुष्यके सब पाप दूरहोजातेहैं ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांसोमोत्पत्तिकथनेपंचविंशोऽध्यायः २५ ॥

छब्बीसवां अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे हे जनमेजय बुध के अति विद्वान् और तेजस्वी और दानशील और यज्ञकरनेवाला और अति दक्षिणादेनेवाला १ ब्रह्मवादी और शत्रुओं को युद्ध में जीतनेवाला और अग्निहोत्र आदि यज्ञोंका करनेवाला और पृथ्वीका पति २ और सत्यवादी और पवित्र बुद्धिवाला और त्रिलोकी में सब के यशोंसे उत्तम यश को धारण करने वाला ऐसा पुरूरवा राजा हुआ ३ पीछे ब्रह्मबादी और शांतस्वरूप और धर्म को जानने वाला और सत्यबादी ऐसे इस पुरूरवा राजाकोउर्बशी बरती भई ४ पीछेतिस उर्बशीके संग चैत्ररथ बनमें दशबर्ष और मंदाकिनी नदी के तटपै पांच बर्ष और अलकापुरी में पांच बर्ष और बदरीपुरी में छः बर्ष और नंदनबनमें ५। ६ सातबर्ष और उत्तर कुरुओं के देशमें आठ बर्ष और गंधमादन पर्बतमें दशबर्ष और सुमेरु पर्बतमें आठबर्ष ७ ऐसे इन अनेक बनोंमें उर्बशी के संग राजा भोग भोगने लगा ८ और इस पुरूरवा राजा की प्रयाग में राजधानी हुई ९ और इस पुरूरवा राजाकेसकाशसे उर्बशीमें महात्मारूप और आयु १ अमावसु २। १० बिश्वायु ३ श्रुतायु ४ दृढ़ायु ५ वनायु ६ शतायु ७ इन नामोंवालेसातपुत्र स्वर्गमें उपजे ११ तबजनमेजयने प्रश्नकिया हे बहुश्रुत गंधर्वों की रानी उर्बशी देवताओं को त्याग मनुष्य रूप पुरूरवा राजाको कैसे प्राप्तहुई ये मेरेप्रति बर्णनकरो १२ तबबैशंपायन कहनेलगे ब्रह्माके शापसे वहउर्बशी समयके आधीनहो पुरूरवा राजाकोप्राप्तहुई और अपनेशापको दूरकरनेके वास्ते उक्तराजा से यह प्रतिज्ञा करती भई १३ नग्नको देखूंगी नहीं और जबमेरे कामउपजे तब बिषय करूंगी १४ और दोमेढ़ोंको अपनी शय्या के समीपमें हरवक्त बांधके रखनेलगी और हे राजन् दिनरात्रि में एक बारघृतमात्रका भोजनकियाकरती १५ और यहकहनेलगी हे पुरूरवाजो मैंनेप्रतिज्ञाकी है इसप्रतिज्ञाको जबतक तू धारणकरेगा तब

तकमैंतेरपास बसूंगी १६ तबतिस उर्बशीकी प्रतिज्ञाको जान राजा पालताभया तब शापसे मोहित १७वहउर्बशी उनसठ बर्षोंतक राजा के संगबसी तबचिंतासे युक्तहुये १८गंधर्वआपसमें कहनेलगेकिऐसा चिंतमनकरोकि जिसप्रकार से स्वर्गका भूषणरूप वह उत्तमउर्बशी फिरदेवताओंके समीपमें आकरप्राप्तहो १९ तबतिन्होंमें बिश्वावसु गंधर्व कहनेलगा कि हे मित्रो राजा और उर्बशीके आपसमें कीहुई प्रतिज्ञाको मैं जानताहूं अर्थात् मैंनेसुनीहै २० जबउर्बशीकी कही समयको राजाछोड़ देगा तबवह उर्बशीराजा को त्याग इसलोकमें चली आवेगी २१ इसलिये तुम्हारे कार्य्यकी सिद्धिके अर्थ तुम्हारी सहायता से संयुक्त मैंगमन करूंगा ऐसेकहके पुरूरवा के स्थानपै जा २२ रात्रिमें एकमेढ़ाको हरताभया और वहउर्बशी दोनोंमेढ़ान में माताके समान स्नेहकिया करती २३ और गंधर्वका आगमन और अपने शाप के अंत को जान के वह यशवाली उर्बशी राजासे कहनेलगी मेरेपुत्र को कोई हरलेगया २४ ऐसे राजा से कहा भी परंतु उससमय में नग्नरूप राजाथा यहबिचारनेलगा कि मैथुनसे अलग अबमेरेको नंगादेखेगी तो मेरेपास रहेगीनहीं २५इसवास्ते राजा उठा नहीं पीछे फिर गंधर्वोंने दूसरा मेढ़ा भी हरलिया तब उर्बशी कहनेलगी २६ हेप्रभो हेराजन् दूसरा भी मेरापुत्रहरलिया अर्थात्मेरेकोई स्वामीनहीं है इससे मैंक्याकरूं ऐसे कहनेसे उठके नंगाहीराजामेढ़ोंके खोजके अनुसार भागा २७ तबगंधर्वोंने बड़ीअति उग्रबिजली उत्पन्नकरके राजाके महलमें प्रकाशित करदी २८ तब उसचांदने में उर्बशी उसनग्नभूत राजाको देखअंतर्द्धान अर्थात्दीखने सेबैठरही २९ तबअंतर्हितहुईउर्बशीकोदेखमेढ़ाओंकोत्यागगंधर्वस्वर्ग लोककोचलेगये और राजा उनदोनोंमेढ़ाओंकोग्रहणकर जब अपने स्थानमेंआके ३० उर्वशी नहीं देखी तब दुःखितहोके बिलाप करने लगा और जहां तहां ढूंढ़ताहुआ संपूर्ण पृथ्वीभरमें बिचरा ३१ पीछे कुरुक्षेत्रमें प्लक्षतीर्थके समीपमें हेमवतीनदीमें पांच अप्सराओंकेसंग उस उर्बशी को स्नान संबंधी क्रीड़ाकरतीहुई को देख बिलाप करने

लगा ३२ और वहउर्बशी भी उसराजाको नजदीकसे देख उनपांच उर्बशियोंसे कहनेलगी कि जिसके स्थानपै मैं बहुतदिन बासकरती भई वह पुरुषोत्तम राजा यहहै ३३ तब उस उर्बशीको देख राजा कहनेलगा कि हे प्रिये हे जाये तुमस्थितहो और बचनमें स्थितहो इन आदि बचनोंको आपसमें कहनेलगी ३४ तब उर्बशी कहनेलगी हे राजन् तेरे सकाशसे मेरेगर्भ ठहररहा है एकवर्षमें तेरेपुत्रउपजेंगे इसमें संशय नहीं ३५ और एकरात्रि हे राजन् मेरेसंग तू फिरभी बसेगा तब प्रसन्नहोके राजा अपनेपुरको चलागया ३६ जब एक वर्षब्यतीतहोगया तब वह उर्बशी फिर आके एकरात्रि राजाकेसंग बासकरतीभई ३७ और राजासे कहनेलगी हे राजन् तेरेकोवरदेनेवाले गंधर्बहोंगे इसलिये इन गंधर्बोंसे बरदानले और इनसे कुछ बर्णनकर ३८ अर्थात् इनगंधर्बोंसे यह बरमांग हे गंधर्बो मैंतुम्हारे समान होजाऊं ऐसे राजा गंधर्बोंसे वर मांगनेलगा तब गंधर्व बर देतेभये ३९ और अग्निसे स्थाली को पूर्णकर गंधर्ब कहनेलगे हे राजन् इस देवकी पूजाकरनेसे हमारे लोकोंको तू प्राप्तहोगा ४० पीछे तिन उर्बशीके पुत्रोंको राजा ग्रहणकर और गंधर्बों का दिया अग्निको बनमेंगेर अपनेस्थानपै आके प्राप्तहुआ ४१ फिर उलटा जाके देखे तो राजा जहां अग्नि गेरीथी उसजगह अग्नि नहींदीखा किंतु जाटीके वृक्षसे संयुक्त पीपलकावृक्ष ऊगाहुआ प्रतीतहुआ तब राजा आश्चर्य्य माननेलगा ४२ पीछे इस अग्निनाशको गंधर्बों के अर्थ कहताभया इस बचनको सुनके गंधर्ब कहनेलगे कि ४३ इस पीपलवृक्षकी अरणीवना तिसको मथके अग्निको उपजाले ऐसेही वह राजा उस अग्निकेद्वारा अनेक यज्ञोंको करताभया ४४ तिसके प्रतापसे गंधर्बोंके लोकमें प्राप्तहुआ ४५ और इसी राजाने एकअग्निके तीन अग्नि बनादियेहैं ४६ हे राजन् ऐसा प्रभाववाला यह पुरूरवा राजा ४७ मुनिजनोंसे स्तुतिकिया और पवित्र ऐसे प्रयागजीमें राज्यकरताभया ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्व्वभाषायांऐलोत्पत्तिकथनेषड्बिंशोऽध्यायः २६ ॥

सत्ताईसवां अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे पुरूरवा राजाके देवताके पुत्रों के समान और स्वर्गमें उपजनेवाले और महात्मा और आयु १ अमावसु २।१ विश्वायु ३ श्रुतायु ४ दृढ़ायु ५ बनायु ६ शतायु ऐसे नामोंवाले सातपुत्रहुये २ पीछे अमावसुके भीम और नग्नजित् ये दो पुत्रहुये पीछे भीमके श्रीमान् कांचनप्रभ पुत्रहुआ ३ पीछे कांचनप्रभके विद्वान् और महाबलवाला सुहोत्र पुत्रहुआ पीछे सुहोत्रके केशनीरानी में जह्नुपुत्रहुआ ४ जिसने सर्वमेध और महामख इस नामवाला महायज्ञकिया और पतिके लोभसे जिसको गंगा प्राप्त होतीभई ५ तब वह गंगाकीइच्छा नहीं करनेलगा तब गंगाजीने सब यज्ञस्थान जल से डुबोदिये ६ तब क्रोधको प्राप्तहो जह्नु राजा कहनेलगा कि हे गंगे तैंने बहुत बुराकाम किया है इसवास्ते तेरे जल का पान करूं तू अपने स्नान के फल को तत्काल प्राप्तहोगी ऐसे कहकेराजर्षि जह्नु गंगाके जलको पीनेलगा ७ तब पीहुई गंगाकोदेखमहर्षिजन जह्नुराजाकी पुत्री८ बनातेहुये पीछे युवनाश्वराजाकी पुत्री काबेरीको जह्नुराजा बिवाहताभया ९ और युवनाश्वके शापसे पहलेही गंगाअपनेआधेभागसे काबेरीरचदीहै १० पीछे जह्नुराजा काबेरीरानीमें परमधार्मिक सुनहनामवाले पुत्रको उत्पन्नकरताभया पीछे सुनहके अजकनाम पुत्रहुआ ११ पीछे अजकके बलाकाश्वनामपुत्रहुआ यहमृगयाशीलहुआ पीछे बलाकाश्वके कुशनामपुत्रहुआ १२ पीछे कुशके देवसमान तेजवाले और कुशिक कुशनाभ कुशांब मूर्त्तिमान् १३ इन नामोंवाले चारपुत्रहुये पीछे बनचारी पह्लवोंके संग बढ़ाहुआ कुशिकराजा तपकरनेलगा और यह चाहनेलगा कि इंद्रकेसमान पुत्रको प्राप्तहूं १४ ऐसे हजारोंवर्षोंके व्यतीतहोनेके बाद इंद्र अतितपकरनेवाले उस कुशिकराजाको देख १५ अपनेही अंशको उस राजाकेपुत्र उपजाताभया १६ तब गाधिनामवाला और कुशिक का पुत्र और साक्षात्१७ इन्द्रकाअंश ऐसा गाधि पौरकुत्सी

रानी में उपजा पीछे गाधि के महाभाग्यवाली और सत्यवती नामसेबिख्यात ऐसी पुत्री उपजी १८ इसको ऋचीकनामवाले भृगु पुत्रके अर्थ गाधि देताभया पीछे प्रसन्नहुआ ऋचीकमुनि १६ अपने और गाधिके पुत्रहोनेके अर्थ चरुबनाके अपनीस्त्रीसे कहनेलगा २० हे प्रिये ये दोचरुके दानेहैं इन्होंमेंसे एक तो यह तेरी माताकेखा-नेकेवास्तेहै इसके प्रतापसे तेरीमाता अतितेजवाला २१ और क्षत्रि-योंमें उत्तम और इस संसारके क्षत्रियोंसे नहीं जीतनेमें आनेवाला और बलवंत क्षत्रियोंको मारनेवाला ऐसा पुत्र उपजेगा इसलिये ये चरुकादोना अपनी माताके अर्थ देना और हे कल्याणी ये दूसरा चरुकादोना तेरे अर्थ देताहूं इसके खानेसे धीर्य्यवाला और तपक-रनेवाला २२ और शांतस्वरूप और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ऐसे पुत्रको तू जनेगी ऐसे ऋचीकमुनि सत्यवती भार्य्यासे कहके२३तपकरनेके अर्थ बनमें प्रवेशकरताभया पीछे अपनीभार्य्याकरकेसहित गाधि२४ तीर्थ यात्राके प्रसंग से पुत्री को देखनेवास्ते ऋचीकमुनिके आश्रम में प्राप्तहुआ २५ तब दोनों चरुके दोनों को ग्रहण कर सत्यवती माताके अर्थ देतीभई और सब वृत्तांतकहतीभई २६ परंतु दैवयोग से माता बिपरीतभावसे अपनेचरुकेदोनेको पुत्रीकेअर्थ देतीभई २७ और पुत्रीके दोनेको आप अंगीकार करतीभई पीछे क्षत्रियोंका अंत करनेवाला गर्भको सत्यवती २८ धारतीभई तब ऋचीकमुनि देखके और योगविद्यासे विचार २६ अपनीस्त्रीके अर्थ कहनेलगे हे भद्रे चरुके दोनोंके बदलनेसे माताने तुझे ठगली ३० इसवास्ते क्रूरकर्म करनेवाला और अतिदारुण ऐसे पुत्रको तू जनेगी और ब्रह्मस्वरूप और उग्रतपको करनेवाला ऐसे भ्राताको तेरी माता ३१ जनेगी क्योंकि जिस दोनेमें तपकरके मैंने ब्रह्मअर्पण करदियाथा वहदोना तेरी माताने अंगीकारकियाहै ऐसे पतिकेबचनको सुन ३२ पतिको मनानेलगी कि ऐसे पुत्रको मैं नहीं चाहती तब मुनिकहनेलगे३३ कि हेभद्रे यह तेरा संकल्प पूर्ण होना मुशकिलहै और पितामाताके कारणसे उग्रकर्मापुत्रहोगा ३४ फिरसत्यवती कहनेलगी हेमुनेजो

इच्छा करोतोसंसार कोभीरच सक्तेहो और पुत्रकेरचने की तोक्या कथाहै ३५ इसलिये शांतस्वरूप और कोमलस्वभाववाला ऐसा पुत्र देनेको योग्यहो और हे द्विजोतम क्षत्रियोंके नाशकरनेवाला और उग्र रूप ऐसा मेरे पौत्रहोना चाहिये ३६ अगर अन्यथानहीं करने की आपकी बांछाहै तो तब सत्यवती पै प्रसन्नहोके ३७मुनि कहनेलगे हेभद्र पुत्रऔरपौत्रमें बिशेषनहीहैं इसवास्ते तेरी बांछापूरीहोगी ३८ तब सत्यवती तपको करनेवाला और इन्द्रियों को जीतनेवाला और शांतस्वरूप और जमदग्नि नामसे बिख्यात ऐसे पुत्रको जनतीभई ३९ और पीछेसत्य और धर्ममें परायण और पवित्र ऐसी यही सत्यवती कौशिकी नामसे बिख्यात महानदी होती भई ४० और इक्ष्वाकु बंशसे होनेवाला रेणुनाम राजाहुआ तिसकी रेणुका नामपुत्री के संग जमदग्निका बिवाह हुआ ४१ पीछे जमदग्नि के सकाश से रेणुका स्त्रीमें अतिदारुण और सबबिद्याके अंतको जानने वाला ४२ और धनुर्वेद के पारको प्राप्त और क्षत्रियों को नाशने वाला और अग्निकेसमान दीप्तरूप और परशुरामनामसे बिख्यात ऐसापुत्र होता भया ४३ ऐसे हे जनमेजय सत्यवतीमें जमदग्नि ऋषि उपजेहैं ४४ और कुशिक का पुत्र गाधिराजाके ऋचीक मुनि के चरुके प्रतापसे अति तपस्वी और अति बिद्यावान् और शांत् स्वरूप ऐसाबिश्वामित्र पुत्रउपजा ४५ यहअपने कर्तव्यसे ब्रह्मर्षि यों के समान होके सप्तऋषियों में प्राप्तहुआ ४६ और पहिले यह बिश्वामित्र गाधिराजा के बिश्वरथ नामसे बिख्यात पुत्रहुआ ४७ पीछे बिश्वामित्रके देवरात आदिनामों से त्रिलोकी में बिख्यातऐसे पुत्रहुये तिन्होंके नामश्रवणकर ४८ देव१श्रवा२ और कति३ और जिस कतिसे कात्यायननामसे बिख्यात पुरुषकहाये और शालावती स्त्रीमें हिरण्याक्षपुत्रहुआ और रेणुनाम वाली स्त्रीमें रेणुमान्४९और सांकृति और गालव और मुद्गल और मधुछंद औरजप औरदेवल येपुत्रउपजे ५० और दृष्टवती रानीमेंअष्टक औरकच्छप और हारित ये तीनपुत्र उपजे ऐसे बिश्वा मित्रके पुत्रहुयेहैं तिनकौशिकोंके गोत्र

संसारमें अनेक बिख्यातहैं ५१ पीछेपाणिन१बभ्रव२ ध्यान३जप४ पार्थिव ५ देवरात६शालंक ७ अपन ८वाष्कल ९।५२लोहित१० यामरुत ११ कारोषय१२ ये बारहदेवकेपुत्रहुये अर्थात् बिश्वामित्र जीके पौत्रहुये और हेराजन् सैंधवपन आदिनामोंसे बिख्यातसुश्रुत के पुत्रहुये और बिश्वामित्र के पौत्र कहाये ५३ और याज्ञवल्क्य और अघमर्षण और औदुंवर और अभिस्नात और तारकायनऔर चुंचुल ५४ इननामों वालेछः पुत्रहिरण्याक्ष के उपजे येभी बिश्वा मित्र के पौत्रकहाये और सांकृति और गालव येरेणुमान्के पुत्रहुये अर्थात् बिश्वामित्र के पौत्रकहाये और नारायण और नरये दोनों बिश्वामित्र के पुत्रहुये ५५ पीछे येसब प्रवरभेदकरके बिवाह करने लगे ऐसेब्रह्मर्षि बिश्वामित्रके बंशमें जन्मेहुये मनुष्योंका ५६ इस बंशमें संबंध होने लगा और बिश्वामित्र के पुत्रों में शुनःशेफनाम वाला प्रथम पुत्रहुआ ५७ यह भृगुबंश में उपजनेवाला होके कौशिक बंशमेंहुआ५८। ५९क्योंकि एक समयमें हरिश्चंद्राजाकी यज्ञमें यहशुनःशेफ पशुकी जगह नियुक्त कियागया तब देवताओंने विश्वामित्र के अर्थ अर्पणकिया ६० इसवास्ते यह देवरात नाम से बिख्यातहुआ ऐसे देवरात आदि सातपुत्र विश्वामित्रके हुये हैं ६१ और अष्टक के लौहिपुत्रहुआ ऐसे जह्नुगण प्रकाशित कियागया है ६२ अब इससे उपरांत महात्मारूप आयुराजा का बंश बर्णन किया जावेगा ६३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वभाषायांअमावसुबंशकीर्त्तनेसप्तविंशोऽध्यायः २७॥

अट्ठाईसवां अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे हे राजन् आयुराजाके राहुकीपुत्री प्रभामें महारथ और बीर १ और नहुष और वृद्धशर्मा और रंभ और रजी और अनेना इन नामोंवाले और त्रिलोकी में बिख्यात ऐसे पांच पुत्र उपजे २ पीछे इन्होंमेंसे रजी राजा के पांचसौ पुत्र उपजे जिन्होंके प्रतापसे इन्द्रको भयदेनेवाला और राजेयनामसेबिख्यात

ऐसा छत्रहुआ ३ पीछे एक समय में देवता और दैत्योंके युद्ध का आरंभहोनेलगा तब देवते और दैत्य ब्रह्माजी के पासजाके कहने लगे ४ हे भगवन् हम दोनोंमें कौनकी जीत होवेगी आप वर्णन कीजिये और तुम्हारे बचनको हम श्रवणकरनेकी इच्छाकरतेहैं ५ तब ब्रह्माजी कहनेलगे जिन्होंकी मददमें अति सामर्थ्यवाला रजी राजा शस्त्रोंको धारणकर युद्धकरेगा तब वे तीनलोकोंको भी जीतेंगे इसमें संशय नहीं है ६ और जहां रजीराजाहोवेगा वहीं धैर्य्यता होवेगी और जहां धैर्य्यहोगा तहां लक्ष्मीहोवेगी वहीं धर्म होवेगा और जहां धर्म होवेगा तहां जय होगा, इसमें संशय नहीं है तब ब्रह्माजी के बचन को सुनिके देवते और दैत्य रजीकेआधीन जयको जान और अपनी अपनी जयको चाहनेवाले उस रजीराजा को बरनेके वास्ते गये ८ तब राहुका दौहित्र और परम तेजस्वी और चंद्रमाके बंशको बढ़ानेवाला ६ ऐसेरजी राजाकेपास प्रसन्नहुएदेवते और दैत्य जाकेकहनेलगे हे राजन् अपने धनुषको धारणकर जयके अर्थदेवते और दैत्योंमें कोयेसेकेसंग कृपाकीजिये १० तब देवतेऔर दैत्योंकेप्रयोजनकोजाननेवाला और अपनेयशको प्रकाशकरनेवाला ऐसारजी राजाकहनेलगा ११ जोसब दैत्यगणोंको अपनेबीर्यसेजीतकेधर्मसे इन्द्रकी पदवीको प्राप्तहूं अर्थात् इंद्रहोजाऊं तबयुद्धकरूंगा १२ तब सबदेवते प्रसन्नहोके कहनेलगे हे नृपते तेरा मनोरथसिद्ध होवेगा ऐसे कहके देवते चलेगये पीछेरजी राजा जैसे देवतोंसे पूछताभया तैसे दैत्योंसे पूछनेलगा कि अपने बीर्यसे सब देवताओं को जीतलेऊं तो तुम्हाराभी इंद्रबनूं १३ तब गर्वसे पूरितहुये दैत्य अपने प्रयोजनको जान अभिमान सहित बचन कहनेलगे १४ कि हमाराइंद्र प्रह्लादहै जिसके अर्थ देवताओं कोजीतनेकी इच्छाहमकरतेहैं हेराजन् जोहमारे इंद्रहोनेकी इच्छा आप करतेहैं तो आपयहीं ठहरिये १५ तबरजी राजानेकहाठीकहै पीछे देवताओंने आकेकहा हे राजन् इनदैत्योंकोजीतके आपहमारेइंद्रहोवेंगे इसवास्ते आपयुद्धमें सहायताकरो १६ तबउसयुद्धमें जोइंद्रसेनहींमरसकतेथे उनसबदैत्यों

कोमार १७ बहुतदिनोंसे गईहुई देवताओंकी शोभाको दैत्योंसे ग्रह-णकरताभया १८ पीछे महावीर्यवाले रजीराजाके अर्थ देवतोंसहित इन्द्रकहनेलगा कि मैंरजी राजाकापुत्रहूंगा इसलियेहेराजन्आपसब देवताओंके इन्द्रहैं इसमेंसंशयनहीं १६ अर्थात् कर्मोंसे मैंरजी राजा कापुत्र ऐसीख्यातीको प्राप्तहूंगा ऐसेइन्द्रके वचनको श्रवणकरइन्द्र-कीमायासेमोहितहुआ राजा २० प्रसन्नहोके इन्द्रसे कहनेलगा कि आपका मनोरथ पूर्णहोगा जबदेवताओंके समान राजा स्वर्गलोकमें इन्द्रकीपदवीको प्राप्तहुआ २१ तबराजाके पांचसौ पुत्र इन्द्रके स-काशसे सब पदार्थोंको ग्रहणकर स्वर्गलोक में राज्य करनेलगे २२ पीछे बहुतदिनोंके व्यतीतहोजानेपै राज्यभ्रष्ट और भागभ्रष्टइन्द्र २३ अतिबलवाले बृहस्पतिजीसे कहनेलगा २४ हेब्रह्मर्षिबड़बेरीके फलके समान यज्ञभागको मेरेअर्थ दियाकरो जिसके प्रतापसे मैंतृप्त हुआ स्थितरहूं और हेबृहस्पतिजी कृश और दुःखितमनवाला औरराज्य भ्रष्ट और यज्ञभागसेरहित और पराक्रम और बलसेरहित और मूढ़ ऐसामुझेरजी राजाकेपुत्रोंनेकरदियाहै २५ तब बृहस्पतिजीकहनेलगे हेइन्द्र जोआपकी ऐसी बांछाहै तो संशयमतकरै और मैंतेरे प्यारके अर्थअकर्तव्य नहींकरताभया २६ परंतु हेदेवेंद्र अबमैं ऐसाउपायक-रूंगा कि जिसके प्रताप से आपको तत्काल यज्ञभाग और अपने राज्यको प्राप्तहोगा २७ हे पुत्रतेरामन ग्लानिको मतप्राप्तहो पीछे बृहस्पतिजीने ऐसाकर्म कराया कि इन्द्रकातेज बढ़नेलगा २८ और रजीराजाके पुत्रोंकी बुद्धिमें मोहउपजनेलगा अर्थात् वाद प्रतिबाद प्रयोजनसे संयुक्त और धर्मका बैरी २६ और अति तर्कों से संयुक्त ऐसाअधर्मरूपशास्त्रबनाके अल्पबुद्धीवाले रजीराजाके पुत्रोंकोपढ़ा-नेलगा ३० इसशास्त्रको पढ़केवे सब धर्मशास्त्रों के बैरीहोगए ३१ और न्यायसेरहित कर्मोंको करनेलगे औरतिसबुरेमतको अंगीकार करतेभये तिस अधर्मके प्रतापसे वे सबराजाके पुत्रनाशको प्राप्तहो-गये ३२ तबअति दुर्लभ त्रिलोकीके राज्यको बृहस्पतिजीके प्रताप से इन्द्रप्राप्तहोगया ३३ पीछेरागद्वेषआदिसे उन्मत्तहुए औरब्राह्मण

केवैरीबीर्य और पराक्रमसेरहित कामक्रोधसेयुक्तऐसेमोहितरूपवाले रजीराजाके पुत्रोंकोमारके अपनेसिंहासनपै इन्द्रबैठा३४ जोमनुष्य इसआख्यानको श्रवणकरै व धारणकरै वहदुःखको प्राप्तनहींहोता है अर्थात् उसका अंतष्करणनहीं बिगड़ताहै ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वभाषायांआयुवंशानुकीर्तनेअष्टविंशोऽध्यायः २८

उन्तीसवांअध्याय ॥

बैशंपायनजी कहनेलगे कि रंभराजाके बंशचलानहीं इस वास्ते अनेनाकेबंशकोकहतेहैं अनेनाके अति यशवाला प्रतिक्षत्रपुत्रहुआ१ पीछे प्रतिक्षत्रके संजय पुत्रहुआ पीछे संजयके जयपुत्रहुआ पीछे जयके बिजयपुत्रहुआ२ पीछेविजयके कृतीपुत्रहुआ पीछेकृतीकेहर्य्य-त्वत्पुत्रहुआ पीछे हर्य्यत्वत्के प्रतापवाला सहदेवपुत्रहुआ ३ पीछे सहदेवके धर्मात्मानदीनपुत्रहुआ पीछेनदीनके जयत्सेनपुत्रहुआपीछे जयत्सेनके संकृती पुत्रहुआ ४ पीछे संकृतीके अतियशवालाक्षत्रध-र्मापुत्रहुआ ऐसे अनेनाराजाका बंश प्रकाशित किया अब क्षत्रवृद्ध के बंशको श्रवणकर ५ क्षत्रवृद्धके सुनहोत्र पुत्रहुआ पीछे सुनहोत्र के परमधार्मिक ६ और काश शल गृत्समद इन नामोंवाले तीन पुत्रहुये पीछे गृत्समद के शुनक पुत्रहुआ और पीछे शुनकके शौन-कनामसे बिख्यात ७ ब्राह्मण क्षत्री बैश्य शूद्र ये जन्मे और शल राजाके आर्ष्टिसेण पुत्रहुआ पीछे आर्ष्टिसेणके काश्य पुत्रहुआ ८ पीछे काश्यके काश्यप पुत्रहुआ पीछे काश्यप के दीर्घतपा पुत्रहुआ पीछे दीर्घतपाके धन्व पुत्रहुआ पीछे धन्वके धन्वंतरी पुत्रहुआ ९ अर्थात् बहुतसे तपकरनेसे फिर धन्वंतरी देवता मनुष्योंमेंजन्मलेता भया १० तब जनमेजयनेकहा धन्वंतरीदेवता मनुष्योंमें कैसेजन्मा यह जानने की इच्छा है इसवास्ते मेरे अर्थ बिस्तार से कहो ११ तब बैशंपायन कहनेलगे हे राजन् धन्वंतरी की उत्पत्ति सुन जैसे समुद्रको मथ अमृत काढ़नेके वक्त १२ प्रथम एक कलशा निकसा तिस कलशेमें अत्यंत शोभासे संयुक्त एक पुरुष निकस बिष्णु को

देख वहीं स्थितरहा १३ तब विष्णुने कहा कि अपनाम जलसे तू उपजाहै इसवास्ते तेरा नाम अब्जधरा तब वह अब्ज विष्णुके अर्थ कहनेलगा हे प्रभो मैं आपका पुत्रहूं १४ इसवास्ते हेलोक स्वामिन् मेरेअर्थ यज्ञभाग और स्थान दीजिये ऐसे कहनेसे विष्णुभगवान् सत्यबचन कहनेलगे १५ कि यज्ञका विभाग और अग्निहोत्र आदि मैंने देवता और मुनियों के अर्थ बांटदिये हैं १६ इसवास्ते तेरे अर्थ यज्ञभाग आदि नहीं रहाहै इसवास्ते तू देवताओंका प्रिय रहेगा १७ और दूसरे जन्ममें संसारमें ख्यातिको प्राप्तहोवेगा और जब तू गर्भमें प्राप्तहोवेगा तब अणिमादिक अष्टसिद्धि तेरे को प्राप्तहोवेंगी १८ और तिसही शरीरसे देवतेपने को प्राप्तहोवेगा और हे प्रिय चरु मंत्र ब्रत जप इन आदिसे ब्राह्मण क्षत्री बैश्य तेरे को पूजेंगे १९ और तू आयुर्वेदके आठ बिभागकरेगा इस अवश्य भावीको ब्रह्माजी जानतेहैं २० इसलिये द्वापरयुग में दूसरे शरीर को प्राप्तहोवेगा इसमें संशय नहीं ऐसे बरदानदेके विष्णु भगवान् अंतर्द्धानहोगये २१ जब द्वापर युग आके प्राप्तहुआ तब काशी का राजा और धन्वनामसे बिख्यात और पुत्रकीकामनासे उग्रतपकरनेलगा २२ और यह ध्यानकरनेलगा कि जो देवता मेरे अर्थ पुत्रदेगा तिसकी मैं शरणहुआहूं अर्थात् समुद्रमथनकेवक्त जो अब्जनामवाला देवताहुआहै तिसकी आराधनाकरताभया २३ तब प्रसन्नहोके वही देवराजासे कहनेलगा जो तेरी इच्छाहै सो बरमांग वही मैंहेराजन् तेरेकोदूंगा २४ तब राजा कहनेलगा हे भगवन् जो आप मेरे पर प्रसन्नहुयेहैं तो आपही मेरेपुत्रहोके संसारमें बिख्यातहोजाओ तब वह देव ऐसेही होगा ऐसे कहकर वहीं अंतर्द्धान होगया २५ तब तिस राजाकी रानीमें धन्वंतरी नामसे बिख्यात और साक्षात् देव और काशीका राजा और सब जीवोंके रोगोंकोनाशनेवाला २६ ऐसा पुत्रहुआपीछेयही धन्वंतरी कर्तव्यसहित आयुर्वेदको भरद्वाजऋषिसे पढ़के फिरबिस्तार पूर्बकबना आठप्रकारसे शिष्योंकेअर्थप्रकाशित करताभया २७ पीछे धन्वंतरी के केतुमान् पुत्रहुआ पीछे केतुमान्

के भीमरथ पुत्रहुआ २८ पीछे भीमरथ के दिवोदास पुत्रहुआ यहीधर्मात्मा काशीका स्वामीहुआ २९ इसीकाल में शून्य रूप काशीपुरीमें क्षेमकनाम राक्षस प्रवेश करताभया ३० क्योंकि बुद्धिमान् निकुंभमुनिने काशीपुरीके अर्थ शापदिया कि हजार बर्षतक काशीपुरी शून्यरहैगी इसमें संशयनहीं ३१ जब काशीपुरीके अर्थशाप देदिया तब दिवोदासराजाने गोमती नदीके तटपै सबकाशी बासी बसाके ३२ पुरीरचलई जिसपुरीमें पहले भद्रश्रेण्यराजाका राज्यथा पीछे दिवोदास राजाने भद्रश्रेण्यके उत्तम धनुष धारण करनेवाले १०० पुत्रोंका ३३ नाशकर अपने बलसे उसपुरी में अपना राज्य करलिया ३४ तब जनमे जयनेप्रश्न किया कि काशीपुरीको निकुंभ मुनि किसवास्ते शापदेते भये और जो सिद्धिक्षेत्रको शापितकरता भया ३५ ऐसानिकुंभ मुनिकौनथा तब बैशंपायन कहनेलगे दिवोदासराजा प्रकाशित रूप काशीपुरी में बसके राज्यकरने लगा ३६ इसीकाल में पार्वती सहित महदेवजी पार्वती की प्रीतिकरने के वास्ते हिमालय के समीप में बसनेलगे ३७ और महादेवजी की आज्ञासे सबतपस्वी रूप पार्षद पूर्वोक्त उपदेशों करके पार्वती जी को प्रसन्न करने लगे ३८ तबपार्वतीजी प्रसन्न होनेलगीं परंतु पार्वतीकी मातामैना नहीं प्रसन्नहुई और बारबार पार्वतीजी और महादेवजीकी निंदाकरने लगी ३९ और कहनेलगी हे पुत्रीपार्षदों सहित यहतेराभर्त्ता महादेव सबकाल में दरिद्रही बनारहै है और इसके शीलता बिल्कुल नहीं ४० ऐसेमाता के बचन को सुन स्त्री स्वभाव से क्रोधको प्राप्तहो और आश्चर्य्यमान महादेव के समीप आके ४१ मुखके बर्णको बिगाड़ पार्वतीजी महादेवजीसे कहनेलगीं हेदेव मैं इसजगह नहीं बसूंगी जहांआपका स्थानहै ४२ उसजगह मुझको प्राप्तकर तब महादेवजी त्रिलोकीके स्थानोंको देखके पृथ्वी मंडल में सिद्धक्षेत्र काशीपुरीको बसने योग्य बिचारते भये ४३ परंतु दिवोदास राजा के राज्यसे युक्त उस काशीपुरी को बिचार समीपमें स्थित हुआ निकुंभ पार्षदसे कहने लगे हेराक्षसेश अनिग-

मनकर काशीपुरी को शून्यबनादे ४४ कोमल उपाय से क्योंकि काशीपुरी का दिवोदास राजा अतिवीर्य्य वालाहै तब निकुंभपार्षद जाके काशीपुरीमें४५ कंडूकनाम नापितको स्वप्नमें दर्शन देताभया और कहताभया हे अनघ तूमेरा स्थान रच मैं तेरा कल्याण करूंगा ४६ अर्थात् मेरे रूपको प्रतिमाबना काशी पुरी में स्थापित करदे तब स्वप्नकेपीछे इसी विधि से वह नापित मूर्त्ति को स्थापित करताभया ४७ और राजाको जनाके पुरीकेद्वारपै उस मूर्त्ति केअर्थ बहुतसी पूजा नित्यप्रति करताभया ४८ पीछे गंधधूप फूलोंकोमाला अनेक प्रकारकी बलीअन्नपान इन आदिसे अत्यन्त पूजा होने लगी ४९ ऐसे वह निकुंभ पार्षद नित्यपूजाको प्राप्तहोने लगा तब काशी बासियोंकेअर्थ पुत्र द्रव्य आयु सबकामना इनआदि हज़ारहों प्रकारके बरदेनेलगा ५० तब एक समयमें सुयशानामवाली काशी के राजाकी रानी और राजाकी भेजीहुई ५१ और सुन्दर सुभाव वाली और दिव्यरूपवाली ऐसी उस मूर्त्ति स्थानके समीपमें आके नानाप्रकार की पूजाकर एकपुत्र मांगने लगी ५२ ऐसे बारम्बार रोजके राज पुत्रको प्राप्ति के अर्थ पूजाकरनेलगी परंतु वह निकुंभ पार्षद पुत्रनहीं देताभया ५३ क्योंकि इसकारणसे कि मेरेपै राजा क्रोधकरेतो कार्यकीसिद्धिहोवेपीछे बहुतकालमें राजाकोक्रोध व्याप्त होके५४ राजा कहनेलगा कि देखो यह महाद्वारपै एकभूत नगरके मनुष्योंपै प्रसन्नहुआ सैकड़ों बरदेताहै और मेरेको क्यों नहीं देता और मेरेमित्र इसनगरीमें अनेक प्रकारसे इसको पूजतेभी हैं ५५ तथा पुत्रकीप्राप्तिके वास्ते मैंने अपनी रानीभी इसकी पूजाके वास्ते बारम्बार भेजी परंतुयहदेव मेरेअर्थ पुत्र नहीं देता इस वास्तेकिसी कारण करके कृतघ्नी है अबसेअगाड़ी मेरे सकाशसे विशेषकर सत्कारको प्राप्तनहीं होगा५६ और इसीवास्ते मैं इसदुष्टदेवके स्थान को फोड़के पृथ्वीमें मिलाऊंगा ऐसे निश्चयकरके दुरात्माकाशीका राजा ५७ उस निकुंभनाम वाले महादेवजी के पार्षदके स्थानको नाशताभया तब गिरेहुए मकानको देखके वह गण राजाके अर्थ

शापदेताभया ५८ अबकहनेलगा कि विनाअपराधके जोमेरास्थान गिरवादियाहै इसवास्तेआपहीआपशून्यरूप तेरीपुरीहोजावेगी५९ तिस शापकरके काशीपुरी शून्यहोगई ऐसे निकुंभ पुरीको शाप देके महादेवजीके समीपमें जाताभया ६० तब आपहीआप चारों तर्फ से पुरीखाली होगई तब तिस पुरीमें अपना स्थान बना ६१ पार्वतीकेसंग महादेवजी बसनेलगे परंतु गृह रूप आश्चर्यसे पार्वती रतिकोप्राप्त नहींहुई ६२ और महादेवजीसे कहनेलगीं इस पुरीमें मैं नहीं बसूंगी ६३ तब महादेवजीकहनेलगे इस स्थानकोमैं नहीं छोडूंगा और अन्यस्थान में नहीं जाऊंगा और तू इसीगृहको गमनकर ६४ जब हंसके महादेवजीने अपनीबाणीसे यह कहदिया कि मैं काशी बासको नहीं छोडूंगा ६५ इसीवास्ते सर्वदेवनमस्कृत महादेवजी सबकालमें काशीपुरीमें बसतेरहतेहैं ६६ और कृतयुग त्रेतायुग द्वापर इनतीनयुगोंमें साक्षात् पार्वतीकेसंग महादेव काशी मेंबसतेरहतेहैं ६७ और कलियुगमें वह काशीमें महादेवजीका पुर दीखता नहींहै ६८ और काशीपुरी तो बसतीही रहैहै ऐसे काशी केवास्ते शापदियाहै६९और भद्रश्रेण्य राजाके दुर्दर्भपुत्रहुआ यह दिवोदासराजाने बालकजान दयासेछोड़दिया अर्थात्मारानहीं७० पीछे समयपाके इस दुर्दर्भने दिवोदास राजाके सकाशसे सब पदार्थ छीनलियेहैं ७१ पीछे दिवोदासके दृषद्वती रानीमें प्रतर्दन पुत्रहुआ७२पीछेप्रतर्दनकेवत्सभार्गवइननामोंवाले दोपुत्रउपजे७३ पीछे वत्सके अलर्क पुत्रहुआ पीछे अलर्कके सन्नती पुत्र हुआ ७४ और यह अलर्क काशीका राजा ब्रह्मण्य और सत्यवादी हुआ और ऐसाभी सुना है ७५ कि ६६ हज़ार वर्षतक जवान रूपसे सम्पन्न यह राजारहाहै ७६ और लोपामुद्रा के प्रतापसे इस राजाको यह उमरमिलीहै ७७ और इसीने शापके अंतमें क्षेमक राक्षसकोमार फिर काशीपुरी बसाई है ७८ पीछे सन्नतीके सुनीथ नामवाला पुत्रहुआ पीछे सुनीथके अतियशवाला क्षेम्यनाम पुत्र हुआ ७९ पीछे क्षेम्यके केतुमान्वाला पुत्रहुआ पीछे केतुमान् के

सुकेतुपुत्रहुआ पीछे सुकेतुके धर्मकेतु पुत्रहुआ ८० पीछे धर्मकेतुके महारथी सत्यकेतु पुत्रहुआ पीछे सत्यकेतु के बिभु पुत्रहुआ ८१ पीछे बिभुके सुबिभु पुत्रहुआ पीछे सुबिभुके सुकुमार पुत्रहुआ पीछे सुकुमारके धर्मात्मा धृष्टकेतु पुत्रहुआ ८२ पीछे धृष्टकेतुके बेणुहोत्र पुत्रहुआ पीछे बेणुहोत्रके भर्गनाम पुत्रहुआ ८३ और पूर्वोक्तवत्स के वत्सभूमिपुत्रहुआ और भार्गवके भृगुभूमिपुत्रहुआ ८४ ऐसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन बंशोंमें हजारों काश्यपके बंशमें उपजेहैं अब नहुषकेबंशको मरेसे जान ८५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्व भाषायांऊनत्रिंशोऽध्यायः २६ ॥

तीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे विरजानामवालीपितृकन्यामें इन्द्रकेसमान तेजवाले १ और यति ययाति संपति आपाति पांचिक सुपाति इन नामोंवाले छःपुत्र नहुषकेहुये और इन्होंमें ययाति राजा हुआ२ तिन्होंमें यति बड़ा पुत्रहुआ और ब्रह्मभूत मुनिहोके मोक्षको प्राप्त हुआ ३ और ययाति ककुत्स्थकोकन्या और गौनामवाली तिसको प्राप्तहुआ ४ और यही ययाति पांचोंभाइयों की पृथ्वी को जीत ५ पीछे शुक्राचार्य्यकी पुत्री देवयानीको और वृषपर्वा राक्षस की पुत्री शर्मिष्ठाको विवाहताभया ६ पीछे यदु तुर्वसु ये दोपुत्र देवयानी के उपजे और द्रुह्यु अणु पुरु ये तीनपुत्र शर्मिष्ठाके उपजे ७ औरइसी ययातिराजाके अर्थ प्रसन्नहुआ इन्द्र मनके वेगके समान वेगवाले और सफेदरंगके ८ ऐसे दिव्यघोड़ों से संयुक्त और परम प्रकाश रूप और सुवर्णसे बनाहुआ ऐसा रथ देताभया ६ जिसकरके छः रात्रिमें संपूर्ण पृथ्वीको और इन्द्र सहित सब देवताओं को युद्धमें जीतताभया १० और यही रथ इन्होंके बंशमें सबके पासरहा ११ परंतु कुरुकेपौत्र जनमेजयके वक्तमें गर्गमुनि के पुत्र के शापसे १२ रथनाशको प्राप्तहुआ क्योंकि वह जनमेजय राजा १३ वाकक्रूर नामवाले गर्गमुनिकेपुत्रको मारताभया तब ब्रह्महत्याको प्राप्तहुआ

लोहूकी गंधसे संयुक्तराजा जहां तहां जाताभया १४ परन्तु पुरबा-सी मनुष्योंने त्यागदिया तब कहीं भी सुख को प्राप्त न हुआ १५ तब इन्द्रोत नामवाले शौनक के शरण जाके रहा तब यह शौनकमुनि इस जनमेजय के हाथसे अश्वमेधयज्ञ करावता भया तब इस राजा के शरीर से लोहू गंध दूर हुआ १६ तिस समय में प्रसन्न हुये इन्द्र से यही दिव्य रथ वसुनाम वाले चंदेरी के राजाने लेलिया और वसुसे बृहद्रथनामवाले राजानेलिया १७ पीछे वही रथ बृहद्रथ से जरासंध ने लिया पीछे जरासंध को मार वही रथ भीमसेनने लिया १८ पीछे हे जनमेजय भीमसेन ने प्रीति से वहीरथ कृष्णमहाराजको दिया और सातद्वीपोंसे संयुक्त इससंपूर्ण पृथ्वीको जीत १९ ययातिराजा अपने पुत्रों के अर्थ पांच भाग करताभया अर्थात् दक्षिण पूर्वको दिशामें अर्थात् अग्निकोणमें तुर्वसुको राज्यदिया २० और पश्चिमदिशामें द्रुह्युको राज्यदिया और उत्तरदिशामें अणुको राज्यदिया और ईशानदिशा में यदु को राज्य दिया २१ और मध्यदेशमें पुरुको राज्यदिया ऐसेसातद्वीपोंपर्यंत की पृथ्वीको ययातिराजा अपने पुत्रोंके अर्थ विभाग करताभया २२ पीछे सब राज्यभारको पुत्रोंके अर्थदेके वृद्ध अवस्था को धारणकरताभया २३ तब शस्त्रोंका त्याग पृथ्वीको देख ययातिराजा प्रसन्न होके २४ अपने यदुपुत्रसे कहनेलगा हे पुत्र मेरी वृद्धावस्थाकोतू ग्रहणकर और तेरी तरुण अवस्थाको मैं ग्रहणकर पृथ्वीभरमें बिचरूंगा २५ तब यदु कहनेलगा मैंने अबतक कुछ सुकृतनहींकियाहै २६ और पान भोजन आदिसे उपजे बहुतसे दोष वृद्धअवस्था में पीड़ादेतेहैं इसवास्ते हेराजन् तेरी वृद्ध अवस्था को मैं ग्रहण नहीं करसक्ता २७ और हेनृप मेरेसे अतिप्रिय तेरे बहुतसे पुत्र हैं हे धर्मज्ञ तिन्होंमेंसे एककोईसे वृद्ध अवस्था देनेको बरले तबकोपकोप्राप्तहो ययातिराजा पुत्रकी निन्दा करता हुआ कहनेलगा २८ हे दुर्बुद्धे मेरा अनादर करके ऐसा कौन आश्रम व कौनधर्महै जिसका तू आचरण करेगा २९ ऐसे कहकर क्रोधमें प्राप्तहो यदु के अर्थ

शापदेनेलगा कि हेमूढ़तेरी सन्तानको राज्यपदवी नहींमिलेगी ३० पीछे ययातिराजा तुर्वसु द्रुह्यु अणु इन तीन पुत्रों से वही पूर्वोक्त वृत्तांत कहनेलगा तब इन्होंने भी राजाका कहना नहीं माना ३१ तब इन्होंके अर्थ भी शापदके जो शाप विस्तारपूर्वक पहलेकहचुके हैं ३२ ऐसे चारपुत्रोंको शापितकर पीछे राजा पुरुपुत्रसे कहनेलगा हे पुत्र तू मेरी वृद्ध अवस्था को ग्रहणकर और मैं तेरी तरुण अवस्था से पृथ्वी में बिचरूं जो तू मांने तो ३३ तब प्रतापवाला पुरु पिताकी वृद्ध अवस्था को ग्रहण करताभया और पुरुकी तरुण अवस्थाको ययाति राजा ग्रहणकर पृथ्वीभरमें बिचरताभया ३४ तबकामों के अंत को विचारता हुआ अपनी विश्वाचीरानी के संग चैत्ररथ बनमें रमण करनेलगा ३५ परंतु कामों के भोगसे तृप्तनहीं हुआ तब अपने पुरु पुत्रसे वृद्ध अवस्थाको ग्रहणकर ३६ तरुण अवस्था उलटी देता भया तिसीसमयमें हे जनमेजय ययातिराजा ने गाथागाईहै तिसको सुन तिसके सुननेसे मनुष्य कामदेव से संकुचित होजाताहै जैसे कछुआअपने अंगोंको संकोचताहै तैसे ३७ कबिभी कामोंके उपभोग करके कामशांत नहीं होताहै जैसे घृत से अग्नि ३८ और जो इस पृथ्वी में अन्य सुवर्ण पशु स्त्री ये सब भी एक मनुष्य के वास्ते बहुत नहीं हैं इसवास्ते मनुष्य को प्रथमहीशांतहोजाना चाहिये ३९ और जब सबप्राणियोंमें कर्मसे मन से बाणी से पापका आचरण नहीं करता है तब ब्रह्मको प्राप्तहोता है ४० और जब अन्योंसे आप नहीं डरेहै और न अन्योंको आप डरावे है और न आप इच्छाकरेहै और न बैरकरताहै तबब्रह्मको प्राप्तहोताहै ४१ और जो दुर्मती मनुष्योंसे त्यागी नहींजाती और जो वृद्धअवस्थाके संग वृद्ध नहीं होती ऐसी प्राणोंकोनाशनेवालेरोगके समान जो तृष्णा है तिसको त्यागनेमें सुखहोताहै ४२ औरवृद्ध अवस्थाके संगके सभी वृद्ध अर्थात् जीर्ण होजाते हैं और दांतभीजीर्णहोजातेहैं परंतु धन की आशा और जीवनेकीआशा जीर्णनहीं होती ४३ और जो कामसुखहै और स्वर्गादिकजोसुखहै यह सबतृष्णाक्षयरूप सुख

से सोलहवें हिस्सेभी नहीं है ४४ ऐसे भार्य्यासहित ययाति राजा कहके बनमें बसा और बहुत काल तक उग्रतपको करने लगा ४५ पीछे भृगुतुंगपै तपकरके भोजन आदिको छोड़ देहकात्यागकरअपनी भार्य्या सहित स्वर्ग में प्राप्त हुआ४६ तिसकेबंशमें जो पांचपुत्र हुयेहैं तिन्होंके बंशोंसे यह संपूर्ण पृथ्वीव्याप्तहोरहीहै जैसे सूर्य्यकी किरणोंसे ४७ हे जनमेजय प्रथमराजऋषियोंका माना यदुके बंश का श्रवणकर जहां वृष्णिकुलमें साक्षात्नारायण जन्मलेतेभये ४८ और हे राजन् इस पवित्ररूप ययातिके चरित्रकोपठन करनेसेऔर श्रवण करनेसे स्वस्थ और संतानवाला और आयुवालाऔर कीर्ति वाला ऐसा पुरुष होजाताहै ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वभाषायां ययातिचरितेत्रिंशतमोध्यायः ३० ॥

इकतीसवां अध्याय॥

जनमेजयने कहा हेब्रह्मन् पुरुद्रुह्युअणुतुर्वसु यदु इन्होंकेअलग अलग बंशोंके श्रवणकी इच्छाकरुहूं १ और वृष्णिबंशके प्रसंग से अपने बंशको प्रथम सुना चाहता हूं सो हे भगवन् बिस्तार पूर्वक आप कहने को योग्यहैं २ तब बैशंपायनजी कहनेलगे हे राजन् पुरुके बंशको बिस्तारसे श्रवणकर जिसमें आपभी जन्मे हैं ३ इस वास्ते प्रथम पुरुके बंशको कहताहूं पीछेद्रुह्युअणु यदु तुर्बसु इन्हों के बंशोंको कहूंगा ४ पुरुके महाबीर्य्यवाला जनमेजय राजा पुत्र हुआ और जनमेजयके प्राचिन्वान् पुत्रहुआ यहपूर्बदिशाके राजाओं कोजीतताभया ५ पीछेप्राचिन्वान्केप्रवीरपुत्रहुआ पीछे प्रवीरके मनस्यु पुत्रहुआ पीछेमनस्युके अभयद पुत्रहुआ६ पीछे अभयदकेसुधन्वापुत्रहुआपीछेसुधन्वाके बहुगवपुत्रहुआ पीछेबहुगवकेसंपाति पुत्र हुआ ७ पीछेसंपातिके अहंपाति पुत्रहुआ पीछेअहंपाति के रौद्राश्व पुत्रहुआपीछे रौद्रश्वके घृताचीनामवालीअप्सरामें८ ऋचेयु कृकणेयु कक्षेयु स्थंडिलेयु सन्नतेयु ६ दशार्णेयु जलेयु स्थलेयु महाबलवन् नित्यबनेयु इननामोंवाले दशपुत्र हुये१० और रुद्रा१शूद्रा२भद्रा ३

मलदा४९वलदा५बलदा६सुरसा७,११खला८चला९गोचपला१०
इननामोंवालीअप्सराओं के रूपोंसे उत्तम रूपोंवाली दशपुत्री हुईं
और इन दशोंकोअत्रिवंशमेंउपजा औरप्रभाकरनामवाला बिवाहता
भया १२पीछे रुद्रामें इसीकेसकाश से यश वाला सोमपुत्र उपजा
जबराहुनेसूर्य्यहतकरदियातबआकाशसेपृथ्वीमेंसूर्य्यपड़नेलगा १३
तबअंधेरासे युक्तलोकमें इसीनेप्रकाश कियाहै तब पड़ते हुये सूर्य्यसे
कहा तेरा कल्याण हो १४ उसीवक्त उसमुनिके बचनसे सूर्य्यपृथ्वी
में नहीं पड़ा और इसी तपस्वीने अत्रिके बहुतसेगोत्र आत्रेयनामसे
बिख्यात प्रकाशितकिये १५ पीछे पुत्रिका धर्मवाली उनदशकन्या
ओंमें अति तपस्वीरूप दशपुत्रोंको उपजाताभया १६ पीछेवेदको
जानने वाले और गोत्रको बढ़ानेवाले १७ और स्वस्त्यात्रेयनामसे
बिख्यात औरअन्यके धनसेबर्जितऐसेमुनिहोतेभयेऔर पूर्वोक्तकक्षेयु
के महारथी १८ सभानर चाक्षुष परमंथु इननामोंवाले तीनपुत्रहुए
पीछेसभानरके बिद्वान्‌रूप कालानलपुत्रहुआ१९पीछे कालानलके
धर्मको जाननेवाला सृंजय पुत्रहुआ पीछे सृंजयकेवीर रूपपुरंजय
पुत्रहुआ २० पीछेपुरंजयके जनमेजयपुत्रहुआ पीछे जनमेजय के
महाशाल पुत्रहुआ २१ पीछे महाशालकेदेवोंमेंबिख्यात और अति
प्रतिष्ठावाला और उदारचित्तवालाऐसामहामना पुत्रहुआ२२पीछे
महामनाके उशीनर और तितिक्षुइन नामों वाले दो पुत्र हुए २३
और उशीनरके राजर्षि बंशज और नृगाकृमि नवादर्वा दृषद्वती२४
इननामों वाली पांच रानियों में पांचपुत्र उपजे पीछेउशीनरकेनृगा
रानीमें नृगपुत्रहुआ कृम्यारानीमेंकृमीपुत्रहुआ २५ और नवा रा-
नीमें नवपुत्र हुआ औरदर्वारानीमें सुवृत पुत्रहुआ औरदृषद्वतीरानी
में शिविपुत्रहुआ२६ ऐसेपांचपुत्रहुयेपीछे शिविके शिवयनामसे बि-
ख्यात पुत्रहुये औरनृगके यौधेयपुत्रहुआ और नव का नौ देशों में
राज्यहुआ और कृमीने कृमिलापुरीरची २७ और सुव्रत के अंवष्ठ
नामसे बिख्यातपुत्रहुये और शिविके लोकमेंबिश्रुत २८और वृष-
दर्भ सुवीर कैकेय मद्रक इननामोंसे बिख्यात चारपुत्र हुये तिन्होंके

नामोसे कैकेय मद्रक २९ वृषदर्भ सुवीर ऐसे देश विख्यात हुयेहैं अब तितिक्षुके बंशको श्रवणकर तितिक्षुके पूर्वदिशामें ३० उषद्रथ नाम वाला राजा पुत्रहुआ पीछे उषद्रथ के फेनपुत्रहुआ पीछेफेनके सुतपापुत्रहुआ ३१ पीछेसुतपाकेसुवर्णके तरकसवाला और महा योगी ऐसा मनुष्य देहमें बलीराजा पुत्र हुआ ३२ पीछे बलीके अंग बंग सुह्म ३३ पुंड्र कलिंग इननामों वाले पांच पुत्र हुये और इसी वास्तेवालेयनामसे क्षत्रबंश विख्यात हुआ और इसीबलीके बंश में ब्राह्मणभी पुत्रहुए३४पीछे प्रसन्नहुयेब्रह्माजीने इस बलीकेअर्थ बर-दानकिया कि हेराजन् तू महायोगी होगा औरकल्पके प्रमाणतेरा आयुहोगा३५ और संग्राममें तेरेको कोई जीत न सकेगा और धर्म में प्रधानता तेरीरहेगीऔर त्रिलोकीमेंतेरेपुत्रोंकी ख्यातिरहेगी३६ और बलमें तेरे समान कोई नहींरहेगा और धर्म तत्व कोतू देखने वाला होगा और चारों बर्णों के स्थापन करनेवाला तू होगा ३७ ऐसे ब्रह्माजीके बचनको सुन राजाबली शांतस्वरूप हुआ औरइसी राजाकीसुदेश्ना नामवाली स्त्रीमें ३८ मुनियोंमें श्रेष्ठ दीर्घतपामुनि केसकाशसे क्षेत्रज संज्ञावालेजो पूर्वोक्तपांचपुत्रहुयेहैं३९ तिन्होंको राज्य पै स्थापित कर कृतार्थ हुआ और योगात्मा ऐसा बली राजा ज्ञानको प्राप्तहो कालके अनुसार बिचरताहुआ४० बहुतसे काल में अपने स्थानको प्राप्त हुआ और तिसके पांचों पुत्रों के नामोंसे अंग बंग सुह्मक ४१ कलिंग पुंड्र इननामोंवाले देशविख्यातहोर-हे हैं अब मेरेसे अंगके बंशको श्रवणकर अंगके राजाओंका राजा दधिबाहनपुत्रहुआ४२पीछेदधिबाहनके दिविरथपुत्रहुआ पीछेदिवि रथकेइंद्रकेसमानपराक्रम वाला४३और बिद्वान्ऐसाधर्मरथपुत्रहुआ पीछे धर्मरथके चित्ररथ पुत्रहुआ पीछे इसीधर्मरथने विष्णुपद पर्वत में४४ यज्ञके वक्त इन्द्रकेसंग अमृतका पानकिया पीछे चित्ररथ के दशरथपुत्रहुआ ४५ पीछेयही लोमपादनामसे विख्यात हुआ और इसीके शांतानामपुत्रीहुई और इसीके कृष्यशृंग मुनि की कृपासे चतुरंग पुत्र हुआ ४६ पीछे चतुरंग के पृथुलाक्ष पुत्र हुआ ४७

पीछे पृथुलाक्षके चंप पुत्र हुआ इसने मालिनीपुरी का नाम चंपा धरदिया ४८ पीछे चंपके पूर्णभद्र मुनिके प्रसादसे हर्यंग पुत्रहुआ और इस राजा के समय में ४९ ऋक्षशृंगमुनि इन्द्रके ऐरावत हस्तीको अपने मंत्रोंकेबल से पृथ्वी में उतारता भया ५० पीछे हर्य्यंग के भद्ररथ पुत्रहुआ ५१पीछे भद्ररथके बृहत्कर्मा पुत्र हुआ पीछे बृहत्कर्मा के बृहद्दर्भ पुत्र हुआ पीछे बृहद्दर्भके बृहन्मना पुत्र हुआ ५१ पीछे बृहन्मनाके जयद्रथपुत्रहुआ पीछे जयद्रथके दृढ़रथ पुत्रहुआ ५२ पीछे दृढ़रथ के बिश्वजित् पुत्रहुआ पीछे बिश्वजित् के कर्ण पुत्र हुआ पीछे कर्णके बिकर्ण पुत्रहुआ ५२ पीछे बिकर्णके कुल को बढ़ानेवाले १०० पुत्रहुए और बृहदर्भका पुत्र बृहन्म-नाराजा जो पूर्व कहा है ५३ तिसके यशोदेवी और सत्यानाम-वाली दो रानी हुईं ५४ सो यशोदेवी में जयद्रथ उपजा और सत्या रानीमेंब्राह्मणों से शांतिमें श्रेष्ठ और क्षत्रियों मेंशूर बीरतामें श्रेष्ठ ऐसा बिजयनामवाला पुत्र हुआ ५५ पीछे बिजय के धृति पुत्र हुआ पीछेधृतिके धृतव्रतपुत्रहुआ पीछेधृतव्रतके सत्यकर्मा पुत्रहुआ ५६ पीछेसत्यकर्माके अधिरथनामसे बिख्यात सूतपुत्रहुआ यहीअधिरथ नदीमें बहतेहुये कर्णको ग्रहणकर अपनापुत्रबनाताहुआ इसीवास्ते सूतका पुत्र कर्ण कहाया ५७ यह संपूर्ण आपके अर्थ प्रकाशित किया पीछेकर्णके वृषसेनपुत्रहुआ पीछे वृषसेनके वृष पुत्रहुआ ऐसे सत्यव्रत और महात्मा औरप्रजावाले और महारथी ऐसे इसबंशमें राजा प्रकाशित किये ५८ हे जनमेजय जिसबंशमें आप उपजे हैं उसरौद्राश्वकापुत्र ऋचेयुकेबंशको श्रवणकर ५९ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वभाषायां कक्षेयुबंशानुकीर्तने एकत्रिंशोऽध्यायः ३१ ॥

बत्तीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे सबराजाओंसे अनाधृष्य और सब पृथ्वी मंडलमें एकराजा ऐसाऋचेयुहुआपीछेइसनेतक्षकसर्पकी ज्वलना१ नामपुत्रीमें मतिनारपुत्र पैदाकिया पीछेमतिनारके परमधार्मिक २

तंसु अतिरथ सुबाहु इननामोंवाले तीन पुत्र और गौरी नामसे बि- ख्यात और मांधाताकीमाता ऐसीएककन्य हुई ३ येतीनोंपुत्रबेदको जाननेवाले और ब्रह्मण्य और सत्यवादी और अस्त्रबिद्यामें कुशल और बलवाले और युद्धमें निपुण ऐसेहोते भये ४ पीछे प्रतिरथके कण्वनाम पुत्र हुआ पीछे कण्वके मेधातिथि पुत्रहुआ और इसी से कण्व द्विज हुआ ५ पीछेमेधातिथिके ब्रह्मवादिनी औरइलिनी नाम वाली ऐसी कन्या उपजी तिसको तंसु बिवाहताभया ६ पीछेतंसुके धर्मकावेत्ता और प्रतापवाला और ब्रह्मवादी ऐसा सुरोधपुत्र हुआ पीछे इस सुरोधके उपजानवी नामवाली भार्य्याहुई ७ और यही भार्य्या दुष्मंत सुष्मंत प्रवीर अनघ ८ इन नामोंवाले चार पुत्रों को प्राप्तहुई पीछे दुष्मंतके शकुंतला भार्य्यामें सबजीवोंको दमनकरने वाला और दशहजार हाथियोंकेबलको धारण करनेवाला९ और चक्रवर्ती और भरतनामसे बिख्यात ऐसा पुत्रहुआ जिसके नाम से इसबंशमें भारत कहाये हैं १० और एक समय में जबदुष्मंतराजा नेशकुंतलारानीको ग्रहणनहीं किया तब दुष्मंतराजाके प्रतिआकाश वाणी कहनेलगी माताताभस्त्रा अर्थात् लोहारकी फूंकनीके समान होतीहै औरजिससे उपजाहै उसीपिताका पुत्रकहावैहै११ इसवास्ते हेदुष्मंत राजन् पुत्रकी पालनाकर औरशकुंतला का अपमान मत करै औरअपने बीर्यसे उपजा पुत्र उत्तमलोकोंमें लेजायाकरता है१२ और यहबालक तेरेसेउपजाहै ऐसेसकुंतला ठीककहतीहै पीछेराजा भरतके पुत्र माताओं के कोपसे नष्टहोगये १३ हे जनमेजय यहमैं तेरेप्रति कहताभयाहूं पीछेमरुत देवताओंने बृहस्पतिका १४ पुत्र भरद्वाज भरतकापुत्र बनाया औरयही भरद्वाजके व्याख्यानको कह ताहूं और भरद्वाजमुनि मरुतयज्ञ करता भया १५ तब भरद्वाज के वितथनाम पुत्रहुआ१६जबवितथ का जन्महोताभया तबभरतराजा स्वर्गलोकको प्राप्तहुआ पीछेवितथकोराज्यपैस्थापितकर भरद्वाज बनको गया १७ पीछेवितथके सुहोत्र सुहोता गय गर्गकपिल इन नामोंवाले पांचपुत्रहुये १८ पीछेसुहोत्रके काशिक और गृत्समती

इननामोंवाले दोपुत्रहुये १९ पीछे गृत्समतीके ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य ऐसे बहुत से पुत्रहुये अब अजमीठके वंशको श्रवण कीजिये २० अजमीठके नीलनी रानीमें सुशांति पुत्रहुआ पीछेसुशांतिके पुरुजातीपुत्रहुआ पीछेपुरुजातीकेबाह्याश्व पुत्रहुआ २१ पीछे बाह्यश्व के देवताओंके समान उपमावाले और मुद्गल सृंजय बृहदीषु २२ पवीनर कृमिलाश्व इन नामोंवाले पांच पुत्रहुये इन्होंने बहुत से देशों की पालना करी २३ इसी वास्ते पंचाल नाम से बिख्यात हुये २४ पीछे मुद्गल के अतियश वाला मौद्गल्यपुत्र हुआ २५ पीछे मौद्गल्य के सुमहायशा ब्रह्मर्षि पुत्रहुआ २६ और जिसके सकाशसे इंद्रसेना बध्र्स्वनाम वाले पुत्रको प्राप्तहुई पीछे वध्र्स्वके मैनकारानीमें २७ दिवोदास राजा और अहल्या कन्या ये दोनों जन्मते भये पीछे अहल्या भार्या में शरद्वान् अर्थात् गौतमसे २८ ऋषियोंमें श्रेष्ठ शतानंद पुत्रहुआ पीछे शतानंदके धनुर्वेद के पारको जाननेवाला सत्य धृति पुत्रहुआ २९ पीछे एक समय में अप्सरा को देखके इसी सत्यधृतीकाबीर्य शरों के बन में स्खलित होगया तब उस बीर्य से एक लड़का और एक लड़की पैदाहोती भई ३० पीछे शांतनु राजा बन में शिकार के वास्ते गया तहां उस लड़का लड़कीकोदेख कृपासे ग्रहण करलिया था इसी वास्ते उस लड़का का नाम कृपा और लड़की का नाम कृपी धरदिया गया ३१ ऐसे गौतमोंका वंश प्रकाशित कियागया है अब दिवोदास के बंश को बर्णन करते हैं ३२ दिवोदास के ब्रह्मर्षिरूप मित्रयु पुत्र हुआ पीछे मित्रयु के सोमपुत्र हुआ ऐसे मैत्रेयनाम वालों का भी बंश प्रकाशित किया ३३ और महात्मारूप सृञ्जय के पंचजन पुत्र हुआ ३४ पीछे पंचजन के सोमदत्त पुत्र हुआ पीछे सोमदत्त के सहदेव पुत्रहुआ ३५ पीछे सहदेव के सोमकपुत्र हुआ ३६ पीछे सोमकके जंतु पुत्रहुआ पीछे जंतुके सौ पुत्रहुये तिन्होंमें युवापुत्र पृषत्नामसे बिख्यात द्रुपदका पिताहुआ ३७ पीछे पृषत् के द्रुपद हुआ पीछे द्रुपदके धृष्टद्युम्न पुत्रहुआ पीछे धृष्टद्युम्नके धृष्टकेतुपुत्र

हुआ ऐसे सोमकवंश भी प्रकाशित कियागया ३८ और एकसमय में धूमनी नामवाली अजमीठ राजाकी रानी व्रत आदिमें समन्वित होके ३९ पुत्रकी प्राप्तिके अर्थ दशहज़ार वर्षोंतक उग्रतपकरती भई और अग्निमें हवन करके पवित्र और परिमित भोजन करने लगी ४० तब एकसमय में अग्निहोत्र की कुशाओं पै हे जनमेजय शयन करतीभई तब उस धूमनीरानीकेसंग अजमीठराजा विषय करताभया ४१ तब धूम्रवर्णवाला और सुन्दरदर्शनवाला औरऋक्ष नामसे विख्यात ऐसापुत्र उपजा पीछे ऋक्षके संवर्ण पुत्र हुआ पीछे संवर्णके कुरुपुत्र हुआ४२इसीकुरुने प्रयागमें आके पवित्र और रमणीय और महात्माजनोंसे सेवित ऐसा कुरुक्षेत्र विख्यातकरदिया४३ और इसकावंश भी अतिबड़ा हुआहै जिसमें सब मनुष्य कौरव नामसे विख्यात होतेभये पीछे कुरुके सुधन्वा सुधनु परीक्षित अरिमेजय इननामोंवाले चारपुत्र हुये ४४ पीछे सुधन्वाके सुहोत्रपुत्र हुआ ४५ पीछे सुहोत्रके धर्मार्थ को जाननेवाला च्यवन पुत्र हुआ पीछे च्यवनके कृतयज्ञ पुत्रहुआ पीछे यही कृतयज्ञ यज्ञों के द्वारा धर्मको जाननेवाला ४६ यही कृतयज्ञ वैद्यारानीमें इन्द्रके समान आकाशचारी औरवीर और वसुनामसे विख्यात ऐसापुत्र उपजाता भया४७पीछेवसुके गिरिकारानीमें महारथ मगधराट् वृहद्रथ४८ कुश मारुत यदु मत्स्यवाली ऐसेनामोंवाले सातपुत्रहुये ४९ पीछे वृहद्रथके कुशात्र पुत्रहुआ पीछे कुशात्रके वृषभपुत्रहुआ ५० पीछे वृषभके पुष्पवान् पुत्रहुआ पीछे पुष्पवान्के सत्यहितपुत्रहुआ पीछे सत्यहितके धर्मको जाननेवाला ऊर्जपुत्रहुआ ५१ पीछे ऊर्ज की रानीके शरीरसे दोभाग अलगर पैदाहुये पीछे जराराक्षसीने दोनों भाग जोड़दिये इसवास्ते जरासंध नामवाला पुत्रहुआ५२इसने सब क्षत्रीजीते और यहअतिबलवालाहुआ पीछेजरासंधके प्रतापवाला सहदेवपुत्रहुआ ५३ पीछे सहदेवके उदायुपुत्रहुआ पीछे उदायुके परमधार्मिक ५४ श्रुतशर्मा पुत्रहुआ यह मगध देशमें बासकरता भया और पूर्वोक्त परम धार्मिक जनमेजय पुत्रहुआ ५५ पीछे जन-

मेजयकेउग्रसेन भीमसेन इननामोंवाले महारथी तीन पुत्रहुये ५६ और जनमेजय के सुरथ और मतिमान इन नामों वाले दो पुत्र अन्यभीहुए ५७ पीछे सुरथ के बिदूरथ पुत्रहुआ पीछे बिदूरथ के महारथी ऋक्षपुत्रहुआ ५८ और हे राजन् आपके बंशमें दो ऋक्ष राजाहुए हैं और दो परीक्षित हुए हैं ५९ और तीन भीमसेन और दोजनमेजय ऐसे हुएहैं पीछेदूसरे ऋक्षके भीमसेन पुत्र हुआ ६० पीछेभीमसेन के प्रतीयपुत्रहुआ पीछेप्रतीय के महारथी और शांतनु देवापिबाह्लिकइननामोंवाले तीनपुत्रहुए६१पीछे शांतनुकोबंशयह है जिसमें आप उपजे और बाह्लिक का सप्तरत्नोंको बहनेवाला राज्यहुआ ६२ पीछे बाह्लिक के महायशवाला सोमदत्त पुत्रहुआ पीछे सोमदत्तके भूरि भूरिश्रवाशल इन नामोंवाले तीन पुत्रहुए६३ और पूर्वोक्त देवापिराजा देवताओंका उपाध्याहुआ और च्यवनके कृतनामवाले पुत्रकेसंग इसकी मित्रताहुई ६४ पीछेयहशांतनुराजा कौरवोंमें प्रतापीहुआ अबशांतनु केबंशका कहतेहैं जहांहेराजन् तुम जन्मेहो६५ पीछेशांतनुकेगंगारानीमेंदेवब्रतनामसेबिख्यातपुत्रहुआ पीछेयही देवब्रतकौरवोंका पितामह भीष्मनामसे ख्यातिको प्राप्त हुआ६६ पीछेशांतनु राजासे कालीरानीमें धर्मात्मा बिचित्रबीर्यपुत्र हुआ ६७ पीछेबेदब्यासजी बिचित्रबीर्यकी रानियोंमें धृतराष्ट्रपांडु विदुर इन्होंको उपजातेभये६८ पीछे धृतराष्ट्र गांधारीरानीमें१०० पुत्रोंको उपजाताभया तिन्होंमें ज्येष्ठपुत्र दुर्योधन राजाहुआ ६९ और पांडु केअर्जुन पुत्रहुआ अर्जुनके अभिमन्युहुआ पीछेअभिमन्यु के परीक्षित पुत्रहुआ ७० पीछेपरीक्षितके हेराजन् जनमेजय अर्थात् आपपुत्रहुएहैं ऐसेकौरवबंश प्रकाशित कियागयाअबतुर्ब सुद्रुह्युअणु यदुइन्होंके वंशकहेजातेहैं७१तुर्बसुके बह्निपुत्रहुआ पीछे बह्निके गोभानुपुत्रहुआ पीछेगोभानुके त्रैशानुपुत्रहुआ ७२ पीछे त्रैशानुके करंधमपुत्रहुआ पीछे करंधमके मरुत पुत्रहुआ ७३ पीछे इसराजा ने यज्ञबहुतकरी परंतु पुत्रकी संतान नहींहुई किन्तु सम्मता नाम वाली एकपुत्रीहुई ७४ पीछेदक्षिणाकी जगहसंबर्त केअर्थदीगई तब

तिसपुत्रीमें दुष्मंत पुत्रहुआ है ७५ ऐसे ययातिराजा केशापसे तुर्व सुकाबंश पौरव बंशमें मिलगया है ७६ पीछे दुष्मंत के करुत्थाम पुत्रहुआ पीछे करुत्थाम के अथाक्रीड़ पुत्रहुआ ७७ पीछे अथाक्रीड़ के पांड्य केरल कोल चोल इननामोंवाले चारपुत्रहुए जिन्होंकेनाम से पांड्यचोल केरल कोल ऐसे देशबिख्यात हुएहैं ७८ औरद्रुह्यु के बभ्रु और सेतु इननामोंवाले दोपुत्रहुए पीछेसेतुके अंगारपुत्रहुआ यहमरुतोंका पतिहुआ ७९ इसकेसंग यौबनाश्व राजाकाचौदहम-हीनोंतक युद्धरहा परंतु अतिकष्ट से यौबनाश्व ने यहमारदिया ८० पीछेअंगारके गांधार पुत्रहुआ जिसकेनामसे गांधारदेश बिख्यात-है ८१ और गांधारदेशमें अतिउत्तम अश्वउपजतेहैं और अणुके ध-र्मपुत्रहुआ पीछे धर्मके धृतपुत्रहुआ ८२ पीछे धृतके दुदुहपुत्रहुआ पीछे दुदुहके प्रचेता पुत्रहुआ पीछे प्रचेताके सुचेता पुत्रहुआ ऐसे अणुकाबंश भीप्रकाशितकिया ८३ अबमैं ज्येष्ठ और उत्तमतेजवाले ऐसेयदुका बंशबिस्तारसे कहताहूं आप श्रवण कीजिये ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्व्वभाषायांपुरुबंशानुकीर्त्तनेद्वात्रिंशोऽध्यायः ३२ ॥

तेंतीसवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे यदुके देवपुत्रोंके समान और सहस्रद पयोद क्रोष्टा नील अंजिक इननामोंवाले पांचपुत्रहुये १ पीछे सह-स्रदके परमधार्मिक है हय हयवेणुहय इन नामोंवाले तीनपुत्रहुये २ पीछे हैहयके धर्मनेत्र पुत्रहुआ पीछे धर्मनेत्रके कात्त पुत्रहुआपीछे कात्त के साहंज पुत्रहुआ ३ जिसने साहंजनी नामपुरीरची पीछेसा-हंजके महिष्मान् पुत्रहुआ ४ जिसने माहिष्मतीपुरी रची पीछे महिष्मान् के भद्रश्रेण्य पुत्रहुआ ५ यह काशीका राजाहुआ पहले कहचुकेहैं पीछे भद्रश्रेण्यके दुर्दमनामपुत्रहुआ ६ पीछे दुर्दमकेक-नकपुत्रहुआ पीछे कनकके लोकमेंबिख्यात ७ और कृतवीर्यकृतौ-जा कृतकर्मा कृताग्नी इन नामोंवाले चारपुत्रहुये पीछे कृतवीर्यके अर्जुन पुत्रहुआ ८ जिसने हजारबाहुओंके प्रताप से सातद्वीपों में राज्यकिया यह सूर्यकेसमान तेजवाले रथसे अकेला पृथ्वीको जी-

ताभया ६ और यही दशहजार बर्षांतक उग्रतपकरके अत्रिकेपुत्र दत्तात्रेयजी की पूजाकरताभया तब दत्तात्रेयजीने चार बरदिये तिन्होंमें अर्जुनने कहा कि मेरे हजारभुजा होजावें प्रथम यह बर मांगा १० पीछे कहा कि अधर्ममें प्राप्तहुये मेरेको सत्पुरुषनिवारणकरें यह दूसरा बर मांगा पीछे उग्रकर्तव्यसे पृथ्वी को जीत पीछे धर्मकरके प्रसन्नकरूं ऐसे तीसरा बर मांगा ११ पीछे बहुत से संग्रामोंको जीत और हजारहां शत्रुओंको मार उग्रसंग्राम में मेरेसे अधिक पुरुषकेहाथ मेरी मृत्युहोवे यह चौथा बरमांगा १२ तब हे राजन् योगेश्वररूप इसअर्जुनराजाके युद्धकेवक्त हजारबाहु प्रकटहोनेलगे १३ तब इस राजाने सातद्वीप पर्वत समुद्र नगर इन्होंसे संयुक्त संपूर्ण पृथ्वीजीती १४ पीछे इसीने सातोंद्वीपों में सातसौयज्ञकिये १५ और सबयज्ञोंमें जहां एकदक्षिणाथी उसजगह लक्षदक्षिणादी और सब यज्ञोंमें सुवर्णके यज्ञस्तंभ और सुवर्ण की वेदीबनाई १६ और सब यज्ञोंमें बिमानोंपैस्थित और भूषणोंसेभूषित ऐसे देवते गंधर्व अप्सरा नित्यप्रति समीपमें प्राप्तरहैं १७ और जिसकी यज्ञमें महिमासे बिस्मितहुआ बरोदासकापुत्र नारद नामसे बिख्यात गंधर्बने गाथागाईहै १८ वह गाथाकही जाती है नारद कहनेलगा यज्ञ दान तप पराक्रम श्रुत इन्होंकरके इससहस्राबाहु अर्जुनराजाकी गतिको राजे नहीं प्राप्तहोवेंगे १९ और ढाल तलवार धनुषबाण इन्होंको धारणकर रथमें स्थितहो सातों द्वीपोंमें बिचरताहुआ योगी मनुष्यों की दृष्टिमें आताहै २० और अपनेप्रभावसे प्रजाकी रक्षाकरनेमें कभी द्रव्यनाश नहीं होती और न शोक और न बिभ्रम उपजताहै २१ और पचासीहजार बर्षोंतक इस चक्रवर्ती राजाने राज्यकिया २२ और यही पशुओंकी रक्षाकरताभया और यही क्षेत्रोंकी रक्षाकरताभया २३ और यही योगके प्रताप से मेघरूप होके बर्षा भी करताभया २४ और इसके शरद ऋतुमें सूर्य्यकी किरणों के समान हजार बाहुओंसे शोभित होताभया २५ और यहीराजा करकोटक सर्पके पुत्रोंको जीतकर

माहिष्मतीपुरी में मनुष्यों के बीचमें सर्पोंको बसाता भया २६ और यहीराजा बर्षाकाल में समुद्रके वेगके अर्थ क्रीड़ा करताहुआ अपनी बाहुओंसे समुद्रके बहुतसे अलग अलग स्रोतकरताभया २७ और इसोराजाके क्रीड़ाके वक्त शंकितहुई नर्मदानदी सन्मुखआती भई २८ और जब इसी राजाने हजार बाहुओंसे समुद्रको क्षोभित किया तबचेष्टा से रहित पातालबासी महाराक्षस भी भयभीतहोते भये २६ और जबचूर्णित करदोहै लहरें जिसमें और चलायमानकर दियेहैं मच्छ और महामच्छ जिसमें और तीव्रपवनके वेगकेसमान उपजादिये हैं झागोंकेसमूह जिसमें ३० ऐसे समुद्रको पूर्वोक्त समुद्र मथनकी तरह क्षोभित करनेलगा ३१ तबतिस सहस्राबाहु राजा को देखके महा सर्प भयभीत होतेभये ३२ और यही राजा पांच बाणोंसे सेनासहितलंकाके पतिरावणको मोहितकर ३३ औरअपने पराक्रम से जीतपकड़ के माहिष्मती पुरीमें बांधताभया ३४ पीछे अर्जुनके स्थानमें बंधेहुये रावणको सुनके ३५ पुलस्त्यऋषि अर्जुन के समीपमें जाकेरावण को छुटातेभये ३६ और इसीराजाकेप्रलय में उपजे मेघके समान जिसके बाहुओंका शब्दहुआ करता ३७ और अति आश्चर्य है कि परशुराम जीने इसराजा के हजारबाहु तालवन के समान काटदिये ३८ पीछे एक समयमें इसराजा के समीपमें अग्निने आकेभिक्षामांगी तबइसने सातद्वीपोंपर्य्यन्तभिक्षा देदी ३६ तबपुरग्राम घोसदेश इनसबोंको अग्निजलानेलगा और इसीराजाकेप्रभावसे सबपर्वत और सबबनभी अग्निने जलाये ४० पीछे बरुण के पुत्रका शून्य और रमणीक ऐसेआश्रम कोभी अर्जुन की सहायता से अग्नि जलाता भया ४१ पीछे बरुणका पुत्रआपव नाममुनि क्रोधसे अर्जुनके अर्थशाप देके कहनेलगा हेराजन्तैंने मेरे आश्रमकी रक्षानहींकरी ४२ इसवास्ते जमदग्नीकापुत्र परशुरामनाम से बिख्यात और तपस्वी और ब्राह्मण तेरे हजारबाहु ओंको काटके ४३ और वेगसे मथकरके तेरेको मारेगा ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वभाषायां त्रयस्त्रिंशोध्यायः ३३ ॥

चौंतीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि हे जनमेजय यहीवरपहिले इसराजाने दत्तात्रेयसे भी लियाथा इसवास्ते मुनिके शापसे परशुरामजी से यह राजा मारागया१ और इसराजाके १०० सौपुत्रोंमें से युद्ध में पांच पुत्रशेष बचे २ तिन्हों के शूरसे न शूर धृष्णोक्त कृष्णा जयध्वज ये नामहुये पीछे इन्होंमें जयध्वज का अवंतीपुरीमें राज्य हुआ ३ ऐसे अर्जुनके पुत्रवीर्य और बलवालेहुये पीछे जयध्वजके महाबलवाला तालजंघ पुत्रहुआ ४ पीछे तालजंघके १००सौ पुत्रहुये पीछेतिन्हों के बंशमें ५ वीतीहोत्र सुजात भोज अवंती तौंडिकेर भरत सुजात्य इननामों से बिख्यात तालजंघ उपजे ६ सो बहुत से होनेसे नहीं गिनाये गये केवल वृष आदियादव गिनाये जातेहैं ७ बृषके मधु पुत्रहुआ मधुके १०० पुत्रहुये तिन्हेंमेंसे वृषणके बंशचला ८ इसी वास्ते वृषणके सबवृष्णीकहाये और मधुके सब माधवकहाये और यदुके सब यादवकहाये ९ और जो मनुष्य नित्यप्रति इस कार्त-वीर्य्यार्जुनके जन्मको कहेगा तिसके द्रव्यकानाश नहींहोगा और नष्टहुआ द्रव्य फिर मिलजावेगा १० ऐसे ययातिराजाके पांचो पुत्रों के वंशवर्णनकरे ये संसारको धारणकररहेहैं जैसे पंचमहाभूत ११ और इन पांचोंबंशोंके श्रवणकरनेसे धर्म अर्थको जाननेवाला राजा आत्मजपंचकको वशमेंकरताहै १२ और संसारमें दुर्लभरूप पांचवरोंको प्राप्तहोताहै १३ अर्थात् आयु कीर्त्ति पुत्र ऐश्वर्य्य पृथ्वी इन्होंकी प्राप्तिहोती है १४ और हे राजेन्द्र अब यदुकेपुत्र क्रोष्टाके वंशको श्रवणकर १५ जिसबंशके श्रवणकरनेसे सब पापोंकानाश होजाताहै और जिसबंशमेंसाक्षात्विष्णुभगवान्जन्मलेतेभये१६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांचतुस्त्रिंशोऽध्याय: ३४ ॥

पैंतीसवां अध्याय ॥

वैशम्पायनकहनेलगे क्रोष्टुकेगांधारी और माद्री इननामोंवाली

दोभार्याहोतीभई पीछेगांधारीमें महाबलवाला अनमित्र पुत्रउपजा १ औरमाद्रीरानीमें युधाजितऔरदेवमीढुष इननामोंवालेदो पुत्रहुए ऐसेतीनप्रकारसेबंशचला २ पीछे युधाजितकेवृष्णीअंधक इननामोंसे बिख्यातदोपुत्रहुए पीछे वृष्णीके स्वफल्कऔरचित्रक इननामोंवाले दोपुत्रहुए ३ और हे महाराज यह धर्मात्मा स्वफल्क जिसदेशमेंबसे तिसदेशमें व्याधिकाभय और अनावृष्टिका भय होवेनहीं ४ पीछे एकसमयमें काशिराजके राज्यमें तीनवर्षतक इन्द्रने वर्षा नहींकरी ५ तब उसराज्यमें यही स्वफल्क बसायागया तबइन्द्रने वर्षाकरी ६ तब काशीकाराजास्वफल्कके अर्थ गांजनीनामवालीपुत्रीकोदेताभया और यह गांजनीरानी ब्राह्मणोंकेअर्थ नित्यप्रति गायोंकादानकिया करती ७ क्योंकि जब अपनी माताके पेटमें स्थितबहुतसेवर्षोंतकजन्म नहीं लेतीभई तब इसकेअर्थ पिता कहनेलगा ८ हे गर्भ तू जल्द जन्मको प्राप्तहो तेरेको सुखप्राप्तहोगा किसवास्ते उदरमें स्थित रहताहै तब गर्भस्थित यहकन्या कहनेलगी कि नित्यप्रति मैं गायों कादान कियाकरूंगी ९ जो आप इसकहनेको मानो तो मैं जन्म लेऊं तबइसके वचनकोसुन पिताने नित्यप्रति गायकादेना अंगीकार किया तब जन्मी १० पीछे स्वफल्कके दाता और यज्ञ करने वाला और बीर बहुत दक्षिणा देनेवाला और वेदोंके अर्थकोजानने वाला और अतिथि अर्थात् अभ्यागतोंमें मित्रता करनेवाला ऐसा अक्रूर पुत्रहुआ ११ और उपमद्गु १ मद्गु २ मुदर ३ अरिमेजय ४ अविक्षिप ५ उपेक्षदशत्रुघ्न ७ अरिमर्दन ८ धर्मधृक ९ यतिधर्म्मा १० गृध्र ११ मोजा १२ अंतक १३ अवाह १४ प्रतिवाह १५ ये पन्द्रहपुत्र और सुंदरी नामवाली एककन्या १२ येभी सब स्वफल्ककी रानीमेंउपजे पीछे अक्रूरके उग्रसेनारानीमें देवताके तेजको धारणकिये प्रसेन और उपदेव इननामोंवाले दो पुत्रहुए १३ और पूर्वोक्तचित्रकके पृथु विपृथुअश्वग्रीव अश्ववाहु सुपार्श्वक गवेषण १४ अरिष्टनेमिअश्व सुधर्माधर्मभृत् सुवाहु बहुवाहु इननामोंवाले पुत्रऔरश्रविष्ठा औरश्रवणा इननामोंवालीदो कन्यापैदाहुई १५ और

पूर्वोक्त देवमीढुषके अश्मकीरानीमें शूरपुत्रहुआ पीछे शूरके भोज्या
रानीमें दशपुत्रहुये १६ तिन्होंमेंसे बसुदेवके जन्मके वक्त आकाश
में नक्कारे बाजतेभये १७ और शूरके स्थानमें फूलोंकी वर्षा होने
लगी १८ और इस बसुदेवकेसमान रूपमें इसमनुष्यलोकमें कोई
भी नहीं हुआ और चंद्रमाकेसमान कांतिको धारणाकरताभया १९
और बसुदेवके जन्मके पीछे देवभाग देवश्रवा अनाधृष्टि कनवक
वत्सवान् गृञ्जिम २० स्वाम शमीक गंडूष इननामोंवाले ९ पुत्र
शूरके अन्य उपजे और पृथुकीर्ति पृथा श्रुतदेवा श्रुतश्रवा २१
राजाधिदेवी इननामोंवाली पांचपुत्री भी शूरसेनकेहुई पीछेपृथाको
मातामह कुंतिभोजराजा मांगताभया २२ तब शूरराजा कुंतिभोज
के अर्थ पृथाको देताभया इसवास्ते कुंतिभोजकी पुत्री पृथाकानाम
कुंति हुआ२३ और अत्यराजा के श्रुतदेवामें जगृहुपुत्रहुआ और
चैद्यके श्रुतश्रवा रानीमें २४ पूर्व जन्ममें हिरण्यकशिपु नामसे
बिख्यात दैत्यराज और महाबलवाला ऐसा शिशुपालपुत्रहुआ२५
और वृद्धशर्माके पृथुकीर्ति रानीमें करूषदेशकापति और बीर२६
और अतिबलवाला ऐसा दंतवक्र पुत्रहुआ और कुंतिभोज की पुत्री
कुंतीको पांडुराजा बिवाहताभया २७ जिसमें धर्मराजके सकाश से
धर्मोंका जाननेवाला युधिष्ठिर पुत्र उपजा पीछे वायु के सकाश से
भीमसेन पुत्रउपजा पीछे इंद्रके सकाशसे मनुष्यलोकमें जिसके स-
मान कोईभीयोद्धानहीं और इन्द्रकेसमान पराक्रमवाला ऐसाअर्जु-
न २८ पुत्रहुआ औरपूर्वोक्त वृष्णिवंशमेंहुये अनमित्रराजा केशिनि
पुत्रहुआ २९ पीछे शिनिके सत्यकपुत्रहुआ पीछेसत्यकके सात्यकी
पुत्रहुआ पीछेसात्यकीके भूमिपुत्रहुआ पीछेभूमिके युगंधरपुत्रहुआ
३० और पूर्वोक्त बसुदेवके भ्राता देवभागके महाभाग्यवाला और
पंडितोंमें श्रेष्ठ ऐसा उद्धव पुत्रहुआ ३१ और अनाधृष्टिके अश्मकी
रानीमें अतियशवाला निनतशत्रुपुत्रहुआ ३२ और देवश्रवाकेशत्रुघ्न
पुत्रहुआ इसकी जन्मतेहीनिषादोंनेरक्षाकरी और३३ उन्होंईमेंरहा
इसवास्ते एकलव्यनाम से बिख्यात यह भील कहाया यह श्रुत-

देवाके पुत्रउपजाहै ३४ और वत्सावान्के संतानहुईनहीं तब बसुदेव कौशिक नामवाले पुत्रको उसकेअर्थ देताभया ३५ और जबगंडूष के संताननहींहुई तब श्रीकृष्ण चारुदेष्ण सुचारु पंचाल कृतलक्षण इन नामोंवाले चारपुत्रोंको उसकेअर्थ देतेभये ३६ और जो संग्राम से कभीभी निवृत्त नहींहो और रुक्मिणीमें उपजा छोटापुत्रहो ३७ और जिसके चलनेसमय पीछे २हजारहोंकाग गैलचलाकरते और चारुदेष्णके दियेहुये मिष्ठपदार्थोंको भोजन कियाकरते ३८ ऐसा चारुदेष्णहुआ और पूर्वोक्त कनवकके तंद्रिज और तंद्रिपाल इन नामोंवाले दोपुत्रहुये ३९ और गृञ्जिमके वीरऔरअश्वहनु इननामों वाले दो पुत्रहुये और श्यामके शमीकपुत्रहुआ ४० यह भोजसंज्ञा वाला होनेसे अपनेको निन्दित मानताहुआ राजा उत्तम राज्य को प्राप्तहुआ पीछे शमीकके जातशत्रु पुत्रहुआ ४१ अब बसुदेवकेपुत्रों का वंश कहाजाताहै तिन्होंकोश्रवणकर ऐसे बहुतशाखावाला ४२ और तीनप्रकारसे संयुक्त ऐसे वृष्णिकेवंशको धारणकरनेसे अनर्थ भागी मनुष्य नहीं होताहै ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वभाषायांपंचत्रिंशोऽध्यायः ३५ ॥

छत्तीसवां अध्याय ॥

बैशम्पायन कहनेलगे बसुदेवके १४चौदहभार्य्याहुईं तिन्हों के नामपौरवी१रोहिणी२मदिरा३धरा४।१बैशाखी५भद्रा६ सनात्री७ सहदेवा ८ शांतिदेवा ९ संदेवादेवरक्षिता१०।२।३ रक्षिकदेवीउप देवी११देवकी१२सुतनु१३बड़वा १४ ऐसे हैं इन्हों में अन्तकी दो भोगपत्नी हुईं ४ और पौरवी रोहिणी वाहलीक की पुत्रीहुई और बसुदेवजीकी यही बड़ी पटरानीहुई ५ इसरोहिणीमें बसुदेव जीके सकाशसे राम सारण शठ दुर्दम दमन श्वभ्रपिण्डारक उशीनर इन नामोंवाले आठपुत्र६ और चित्रा और सुभद्रा नाम वाली दो२ पुत्री हुईं ऐसे दशसंतान रोहिणीके जानो ७ और बसुदेव जीसे देवकी रानीमें अतियशवाले श्रीकृष्णजी जन्मे पीछेरामसे रेवतीमें निशठपुत्र

हुआ८ औरसुभद्रामेंअर्जुनसेअभिमन्यु पुत्रहुआ औरअक्रूरसेकाशरि कन्या रानीमें सत्यकेतुपुत्रहुआ ९ और वसुदेवकी सात रानियोंमें जो पुत्रउपजेहैं तिन्होंको श्रवणकर १० शांतिदेवारानीके भोजऔर विजय इननामोंवाले दो २ पुत्रहुये और सुदेवारानीके वृकदेवऔर गद इननामोंवाले दो पुत्रहुये ११ और वृकदेवी रानीमें अवगाह पुत्रहुआ १२ और एक समयमें देवकराजाका पुरोहित गार्ग्यमुनि हुआ तिसका यादवपक्षमें रहनेवाला कोइकपुरोहित १२ उक्त मुनि के पौरुषकी परीक्षाकेवास्ते अपनेहाथसे मुनिके लिंगको छूताभया तब गार्ग्यमुनिका वीर्य्य स्खलित न हुआ और न लिंगका उत्थान हुआ १३ तब वह पुरोहित यादवोंकी सभामें गार्ग्य मुनिको नपुंसक बताताभया तब सब यादव हंसनेलगे तब इस आख्यान को सुनके क्रोधसे प्राप्तहुआ मुनि १४ कालेलोहेकेसमानहोगया पीछे बारहवेंबर्षमें कोपकी शांतिहोनेसे गोपकी स्त्रीकेबेषके धारणकरनेवाली गोपालीनामवाली अप्सराके संग भोगकरताभया १५ तब गार्ग्यकेसकाशसे और महादेवजीकी कृपासे उस मनुष्यरूपगार्ग्य की भार्य्यामें गर्भठहर १६ पीछे अतिबलवाला कालयवन नामसे बिख्यात बालकजन्मा १७ इसको रणमें बैलके पूर्वार्द्ध शरीरकेसमान शरीरवाले अश्ववहतेभये पीछे पुत्रकी संतानसेरहित यवन राजाकेस्थानमें बृद्धिकोप्राप्तहुआ इसीवास्ते इसको कालयवनकहते हैं १८ पीछे यह युद्धकी कामनासे ब्राह्मणोंको पूछनेलगा १९ तब नारदमुनिने इसके अर्थ बृष्णियोंका कुल युद्धकरनेकेवास्ते बताया पीछे एकअक्षोहिणी सेनालेके मथुरापुरीकेसमीपमेंआ २० बृष्णिकुल में अपनेदूतको भेजताहुआ तब बृष्णांधकबंशके सबमनुष्य श्रीकृष्ण के आश्रय होके २१ कालयवनकेभयसे इकट्ठे हुये बिचारकरनेलगे तब सबोंकी बुद्धिमें यही निश्चय हुआ कि ह्यांसेभागनाही मुख्य है २२ तब रमणीकमथुरापुरीकोत्यागके उसकालयवनको शिवरूप मानतेहुये द्वारकापुरीमें प्रवेशकरनेकी इच्छाकरनेलगे २३ और पवित्रत्व जितेंद्रिय ऐसामनुष्य इसकृष्णकेजन्मको पूर्वकालमेंश्रवण

करावे वहसबप्रकारके ऋणोंसे रहित होके सुखकोप्राप्तहोताहै २४

इतिश्री महा भारते हरिबंशपर्व भाषायां षट्त्रिंशोध्याय: ३६ ॥

सैंतीसवां अध्याय ॥

बैशंपायन कहनेलगे क्रोष्टुके अतियशवाला वृजनीवान् पुत्रहुआ पीछेवृजनीवान्के स्वाही और स्वाहा कृताबर इननामोंवाले दोपुत्र हुये १ पीछेस्वाहीके उषद्गु पुत्रहुआ इसने बहुतदक्षिणाओंसेसंयुक्त अनेकप्रकारके यज्ञकरे २ तिन्होंकेप्रतापसे चित्ररथ पुत्रहुआ ३ पीछे चित्ररथके बीर और यज्ञकरनेवाला और बिपुल दक्षिणादेनेवाला और राजर्षिऐसा शशिबिंदुपुत्रहुआ ४ पीछेशशिबिंदुके और अतियश वाला पृथुश्रवा पुत्रहुआ ५ पीछेपृथुश्रवाके उत्तर और सुयज्ञऐसेदो २पुत्रहुए पीछे सुयज्ञके ऊखन पुत्रहुआ पीछे ऊखन के स्नेयु पुत्रहुआ ६ पीछे स्नेयुके मरुतपुत्र हुआ ७ पीछे मरुत के कंबलवर्हिषपुत्र हुआ पीछे इस कंबल वर्हिषने विपुल धर्मकिया ८ तिसके सतप्रसूति पुत्रहुआ पीछेसतप्रसूतिके रुक्मकवच पुत्रहुआ ९ यहरुक्मकवच अच्छे धनुषवाले और अच्छे कवचवाले ऐसे१०० राजाओंको पैनेबाणोंसे मारके उत्तमशोभाको प्राप्तहुआ १० पीछे रुक्मकवचके वीरोंको मारनेवाला पराजित् पुत्रहुआ पीछे पराजित् के अति बीर्य्यवाले ११ रुक्मेषु पृथुरुक्म ज्यामघ पालित हरि इन नामोंवाले पांच पुत्रहुए और पराजित् पालित और हरि इन दोपुत्रोंको बिदेहोंकेअर्थ देताभया १२ पीछे पृथुरुक्मके आश्रय से रुक्मेषु राजाहुआ पीछे इनदोनोंने ज्यामघकोनिकासिदिया तबवह आश्रममेंबसा १३ पीछेप्रशांत व अप्रशांत ऐसेज्यामघको ब्राह्मणोंने बोधकराया तबधनुषको धारणकर रथमेंप्राप्तहो १४ नर्मदाके किनारेपै बिचारताहुआमेकलामृत्तिकावति ऋक्षवान्पर्बत इन्होंकोजीत केशुक्तिमतीपुरीमें बसताभया१५पीछे इस ज्यामघ राजाके शैब्या नामवाली और सती ऐसीरानीहुई इसराजाकेपुत्रकी संतानभी नहीं हुई परंतुअन्यभार्य्याके वास्तेनहीं इच्छाकरताभया१६पीछेएकसमय

में इसराजाने युद्धमें बिजयपाया तहां एककन्याप्राप्तहुई उस कन्या कोग्रहणकर अपनीरानीसे कहनेलगा यहतेरेपुत्रकी बधूहै १७ यह सुनके रानी कहनेलगी मेरेतोपुत्रनहीं उपजाहै कैसे तू इसको बधू मानताहै १८ तबज्यामघ राजाकहनेलगा इसी कन्याकेतपसे वृद्ध रूपवाली तेरेसकाशसे विदर्भपुत्रहोगा उसकी यह बधूहै १९ पीछे विदर्भके इसीबधूमें विदर्भके शूरवीर और युद्धमें बिशारद ऐसे कृथ और कौशिक इननामोंवाले दोपुत्र २० और भीमनामवालातीसरा पुत्र पीछेभीमके कुंतीपुत्रहुआ२१पीछेकुंतीकेधृष्टपुत्रहुआपीछे धृष्टके परमधार्मिक २२ आवंत दशार्ह विषहर ऐसेतीनपुत्रहुये पीछेदशार्ह के व्योमापुत्रहुआ पीछे व्योमाके जीमूतपुत्रहुआ २३ पीछेजीमूत के बृकतीपुत्रहुआ पीछेवृकतीके भीमरथपुत्रहुआ पीछे भीमरथके नवरथपुत्रहुआ २४ पीछेनवरथके दशरथपुत्रहुआ पीछे दशरथ के शकुनीपुत्रहुआ पीछेशकुनीके करम्भपुत्रहुआ पीछे करम्भके देव-रातपुत्रहुआ २५ पीछेदेवरातके देवक्षत्र पुत्रहुआ पीछे देवक्षत्रके देवोंकेसमूहके समान अति यशवाला देवक्षत्रिपुत्रहुआ पीछे देवक्ष-त्रिके २६ मीठीबाणीवाला मधुपुत्रहुआ पीछेमधुके वैदर्भीरानी में पुरुद्वान्पुत्रहुआ२७पीछे पुरुद्वान्के रोक्ष्वाकीभार्य्यामें सबगुणों से संयुक्त और सात्वतों की कीर्ति को बढ़ाने वाला ऐसा सत्वान्पुत्र हुआ २८ ऐसे ज्यामघ राजाके बंशको जाननेसे प्रजावाला पुरुष होके परमप्रीतिको प्राप्त होताहै २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांसप्तत्रिंशोऽध्यायः ३७ ॥

अड़तीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे सत्वसे संयुक्त और भजिन भजमानदिव्य देवावृद्ध अंधक वृष्णि इननामों वाले १ सात्वत पुत्रोंको कौशल्या रानीजनती भई २ पीछे भजमानके बाह्यक और उपबाह्यक इन नामोंवालीदो भार्य्याहुईं पीछे भजमानके बाह्यकभार्य्यामें ३कृमिद क्रमण धृष्ण शूर पुरंजय इननामों वाले पांच पुत्रहुये और इसी भज

मानकेउपब्राह्यक रानीमें४ अयुताजित सहस्राजित् शताजित्दासक्र इननामोंवाले चारपुत्र हुये ५ और पूर्वोक्त देवावृधराजा उत्तमपुत्र कीप्राप्तिकेवास्ते उग्रतपको करनेलगा ६ पीछेआत्मा का ध्यानकर पर्णाशानदीके जलको हमेंसेछुवने लगा तब पर्णाशानदी इसराजा के संग प्यारकरतीभई ७ और बिचारनेलगी कि जैसे पुत्रकीराजा वांछाकरैहै तैसापुत्र इस रानीमें नहींहोगा ८ तबपर्णाशानदी परम रूपसे संयुक्त कुमारी कन्याके रूपकोधारणकर राजाको बरतीभई ९ और तिस कन्याको राजाभी अंगीकार करताभया १० तब तिस रानीमें अति तेजवाला गर्भ ठहरा पीछे वह नदीरूप रानी दशवें महीनेमें ११ सबगुणोंसे संयुक्त और बभ्रुनामसे बिख्यात ऐसे पुत्र को जन्मतीभई और इसबंशमें पुराणका जाननेवाले ऐसे भी गान करतेहुये १२ मैंनेसुनेहैं कि देवावृधके गुणोंको जैसे सन्मुखकहा करते हैं तैसे दूरसे भी करते रहेहैं १३ पीछे मनुष्योंमें श्रेष्ठबभ्रु औरदेवताओंके समान देवावृधहुआऔरसातहजारछांसठ ७०६६ पुरुष १४ और बभ्रुदेवावृधयेसबअवभृतकोप्राप्तहुयेऔरयज्ञकाकरने वालादानका देनेवाला विद्वान् और ब्रह्मण्य ऐसा बभ्रुकाबंशहुआ १५ जिसमें मार्तिवत्आदिभोजेंहुये और अंधकके कश्यपकी पुत्रीमें १६ कुकुर भजमान शमकम्बल बर्हिषइननामोंवालेचारपुत्रहुयेपीछे कुकुरके धृष्णुपुत्रहुआ पीछे धृष्णुके १७ कपोतरोमापुत्र हुआपीछे कपोतरोमाके तैतिरि पुत्रहुआ पीछे तैतिरिके पुनर्वसुपुत्रहुआ पीछे पुनर्वसुके अभिजित् पुत्रहुआ १८ पीछे अभिजित् के आहुक पुत्र और आहुकीपुत्री ये दो संतानहुई १९ और यहां आहुककेप्रतिऐसी गाथाको गानकरतेहैं शुद्धपरिवार करकेयुक्त और किशोरकेसमान उपमावाला २० ऐसा आहुक जब गमन कियाकरता तबपुत्रोंवाले और उदारचित्तवाले और हजारों शस्त्रोंवाले२१और शुद्धकर्मवाले और यज्ञ करनेवाले ऐसे जन राजाके चारोंतरफ गमन कियाकरते और तिसके पूर्वदिशामें ध्वजावाले दशहजारहाथी चलाकरते२२ और मेघकेसमान शब्दवाले दशहजार रथभीचलाकरते २३ और

तिससेउत्तरदिशामेंइक्कीसहज़ार २१००० हाथी और इक्कीसहज़ार-रथभीचलाकरते २४ और वे अंधकफिरआहुकी नामवालीबहिनको आहुकीको अवंतियोंकेअर्थ देतेभये २५ और आहुकके काश्यारानी में देवगर्भों के समान और देवक उग्रसेन इननामोंसे बिख्यात दो पुत्र हुये पीछे देवक के देवताओं के समान २६ देववान् उपदेव संदेव देवरक्षित इन नामोंवाले चारपुत्र २७ और देवको शांतिदेवा संदेवा देवरक्षिता २८ वृकदेवी उपदेवी सुनाम्नी इन नामोंवाली सातपुत्री हुईं ये सातो बसुदेवसे बिवाहीगईं २९ और उग्रसेनके कंस न्यग्रोध सुनामा कंक शंकु सुभूषण ३० राष्ट्रपाल सुतनु अनाधृष्टि इन नामोंवाले नौ पुत्र ३१ और कंसा कंसवती सतनू राष्ट्रपाली कंका इन नामों वाली पांचपुत्रीहुईं ३२ ऐसे इन संतानोंसे संयुक्त कुकुरके बंशमें होनेवाला उग्रसेन बिख्यातहुआ इन अमित बलवाले ३४ कुकुरोंके बंशको धारणकरनेसे उत्तमबंशऔर उत्तम प्रजाको मनुष्य प्राप्तहोताहै ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांअष्टत्रिंशोऽध्यायः ३८ ॥

उनतालीसवां अध्याय ॥

बैशम्पायन कहनेलगे पूर्वोक्त भजमानकेबिदूरथ पुत्रहुआ पीछे बिदूरथके राजाधिदेयपुत्रहुआ १ पीछेराजाधिदेयकेअतिबलवालेदत्त अतिदत्त शोणाश्व श्वेतवाहन २ समीदत्तशर्मा दत्तशत्रुशत्रुजित् इन नामोंवाले पुत्र और श्रवणा श्रविष्ठा इन नामोंवाली दो पुत्री हुईं ३ और शमीके प्रतिक्षत्र पुत्रहुआ पीछे प्रतिक्षत्र के स्वयम्भोज पुत्रहुआ पीछे स्वयम्भोजके हृदिक पुत्रहुआ ४ पीछेहृदिकके अति पराक्रमवाले और कृतबर्मा शतधन्वा ५ भिषग बैतरण सुहृतअति दत्त इन नामोंवालेपुत्र और कामदा कामदंतिका ६ इननामोंवाली दोपुत्रीहुईं और कम्बलबर्हिषके असमोजा और नाशमोजा इननामों वाले दोपुत्रहुये ७ और जबअसमोजाके संतान नहीं हुई तबसुदंष्ट्र सचारुकृष्ण इननामोंवाले तीन पुत्रोंको अंधक देतेभये ८ और पू-

वेंक्क क्रोष्टुको गांधारीमें अनमित्रपुत्र उपजा ६ और माद्रिमें युधा-
जित्पुत्रउपजा ऐसेपहले कहचुकेहैं ६ तिसी अनमित्रकेनिघ्नपुत्रहुआ
पीछे निघ्नकेप्रसेनऔरशत्राजित्इननामोंवालेदोपुत्रहुये १० पीछेद्वार-
कापुरीमें बसताहुआ स्यमंतकमणिको समुद्रसे प्राप्तहुआ और यही
शत्राजित् सूर्यका मित्रहुआ तब एक समयमें प्रभात के वक्त रथमें
बैठ ११।१२ समुद्रमें स्नानकरने के अर्थ और सूर्यकेध्यानके अर्थगया
१३ तब सूर्यकेअर्थ उपस्थान करनेलगा १४ तब स्पष्टमूर्ति वाला
और तेजसेसंयुक्त मंडलवाला ऐसा सूर्य सामने स्थित प्रतीत हुआ
१५ तब शत्राजित् राजा कहनेलगा हे देव जैसे तेजसे संयुक्त तुम्हा
रेको आकाशमार्गमें देखताहूं तैसेही अब मेरे सामने भी तेजसेसं-
युक्त प्रतीतहोतेहो १६ इसलिये आपके संग मेरी मित्रता में क्या
विशेषहुआ ऐसे सुनके सूर्य स्यमंतकनामवाले मणिरत्नोंको १७
अपने कंठसे उतार एकांतमें स्थापितकरतेभये तब अति तेज रहित
सूर्यको राजा देखताभया १८ और प्रीतिसे संयुक्तहो दो घड़ीतक
कथा भी कहताभया और जब सूर्यनारायण चलनेलगे १६ तबरा
जा कहनेलगा हे भगवन् जिस मणिसे तुम लोकोंको प्रकाशितक-
रतेहो वह मणिरत्न मेरेअर्थ देना उचितहै २० तब उस स्यमंतक
मणिको सूर्य शत्राजित् के अर्थ देताभया तब उस मणि को कंठमें
बांध शत्राजित् द्वारका में प्रवेश करनेलगा २१ तब चारोंतरफ से
द्वारकावासी मनुष्य दौड़नेलगे कि यह सूर्यआताहै ऐसे द्वारकामें
आश्चर्य दिखाके राजा अपने स्थानमें चलागया २२ पीछे दिव्य
रूप स्यमंतक नामवाली इस मणिको प्रेमसे प्रसेनजित् भाईकेअर्थ
देताभया २३ और वह मणि नित्यप्रति सुवर्णको दियाकरती और
जहां वह मणिरहे तहां समय में वर्षाहोवे और व्याधीका भयहोवे
नहीं २४ इतने गुण मणिमें विख्यात होनेलगे और उस मणिको
प्रसेन से श्रीकृष्ण लेनेको चाहतेभये २५ परंतु प्रसेनने दी नहीं
और सामर्थ्यवाले भी श्रीकृष्ण उस मणिको हरने की इच्छा नहीं
करतेभये २६ पीछे एकसमयमें उस मणिको धारणकर प्रसेन सि-

कार खेलनेकेवास्ते बनमें गया तब स्यमंतकमणि के अर्थ उसप्रसेन को एक बनमें बिचरनेवाला सिंह मारताभया २७ पीछे उस मणि को ग्रहणकर जब सिंह दौड़नेलगा तब अति बलवाला जाम्बवान् ऋक्षराज सिंहको मार मणिरत्नको ग्रहणकर अपने बिलरूपस्थानमें प्रवेश करताभया २८ पीछे सब द्वारकाबासी प्रसेनके मरजानेसे और इस स्यमंतकमणिमें कृष्णकी प्रार्थना रहाकरती इसबृत्तांतको जानके सब शंकित होनेलगे २९ अर्थात् यह बिचारनेलगेकि इस प्रसेनके मारनेमें श्रीकृष्ण सामिलहैं तब मिथ्या दोषसे संयुक्त और धर्मात्मा और तिस कर्मको नहीं करनेवाले ऐसे श्रीकृष्णकहनेलगे कि मणिको मैं लाऊंगा ऐसे प्रतिज्ञाकर बनकोगये ३० पीछे बनमेंजाके जिसजगह प्रसेन सिकारखेलनेलगाथा वहांसे घोड़ाके पैरोंके चिह्नोंकेद्वारा खोजीपुरुषोंसे दिखातेहुये ३१ ऋक्षवान्और विंध्य इन पर्वतोंमें ढूंढ़तेहुये परिश्रमसे संयुक्तहोगये ३२ तब अश्व सहित प्रसेनको प्राणोंसेरहित पृथ्वीमें गिरेहुयेको देखतेभयेपरंतु मणि नहीं मिली पीछे अगाड़ी सो जाके ऋक्षराज का माराहुआ सिंहदेखा ३२ पीछे ऋक्षराजके पैरोंके चिह्नोंके अनुसार जांबवान् ऋक्षकीगुहाके समीपमेंजाके प्राप्त हुये ३३ तब उस ऋक्षराज के बड़े बिलमें औरतकी कहीहुई बानीको सुनतेभये अर्थात् जांबवान् के पुत्रको मणिसे धाय माता खिलारहीहै और यह कहतीहै कि हे बालक तू मतरोवे ३४ और वही धाय माता यह भी कहती है कि प्रसेनको सिंहने मारा और सिंहको जांबवान् ऋक्षराजनेमारा तब यह स्यमंतकमणि मिलाहै इसवास्ते हे बालक रोवेमत यह मणि तेराहै ३५ ऐसे प्रकट शब्दको श्रीकृष्ण भगवान् सुनके बिलकेद्वार पै ३६ बलदेवजीसहित बहुतसे यादओंको स्थापितकर वेगसे उस ऋक्षराजके बिलमें प्रवेशकरतेभये ३७ पीछे भीतरजाके जांबवान् को देखतेभये ३८ पीछे जांबवान्केसंग बाहुओंसे श्रीकृष्णका युद्ध इक्कीस दिनोंतक हुआ ३९ पीछे जब श्रीकृष्ण बिलमें चलेगये तब बलदेवजी आदिसब द्वारकामेंआके कहनेलगे कि श्रीकृष्णमरगया

इसमें संशय नहीं ४० पीछे श्रीकृष्ण महाबलवाले ऋक्षराजजांबवान्को जीतके और जांबवान्की जांबवती कन्याकेसंग बिवाहकरा ४१ और अपने कलंकको दूरकरनेकेवास्ते स्यमंतकमणिकोभी ग्रहणकर और ऋक्षराजसे आज्ञालेकर बिलसे निकस ४२ भार्य्यासहित द्वारकापुरीमें आये ऐसे अपनेकलंकको दूरकर ४३।४४ सब यादवों की सभामें उसस्यमंतकमणिको सत्राजित्के अर्थ देतेभये४५ और सत्राजित्के दशभार्य्याहुईं तिन्होंमें १०० पुत्रहुये ४६ और तिन्होंमें ख्यातिवाले और भंगकार वातपति उपस्वावान् ४७ इन नामोंवाले तीनपुत्र हुये और देशोंमें बिख्यात और स्त्रियोंमें उत्तम सत्यभामा और दृढ़व्रता ४८ और प्रस्वापिनी इन नामोंवालीतीन पुत्रीहुईं इन तीनों पुत्रियोंको सत्राजित् श्रीकृष्ण के अर्थ बिवाहता भया ४९ और पीछे भंगकारके गुणोंमें संपन्नरूप और संपत्सेविश्रुत और सभाक्ष भंगकार इन नामोंसेबिख्यात ऐसे दोपुत्रहुये५० ऐसे श्रीकृष्णके इसमिथ्याभिशापको श्रवणकरै तो उस मनुष्य को मिथ्याभिशाप अर्थात् मिथ्यादोष कभीभीनहीं लगतेहैं ५१॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्व भाषायांऊनचत्वारिंशोऽध्यायः ३९॥

चालीसवांअध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे जिस स्यमंतकमणिरत्नको श्रीकृष्णसत्राजित्के अर्थ देतेभये तिसकी प्राप्तिकेवास्ते जो अनर्थ हुआ है वह श्रवणकर १पहले सबकालमें इस सत्यभामाको और स्यमंतकमणिको ग्रहणकरनेकेवास्ते अक्रूर चाहताभया २ तब इसी वास्ते एक समयमें जब द्वारकामें कृष्ण नहीं थे तब महाबलवाला शतधन्वा सत्राजित्को रात्रिमें मार स्यमंतकमणिको ग्रहणकर अक्रूरके अर्थ देताभया ३ और तब उस मणिरत्नको अक्रूर ग्रहणकर शतधन्वा से कहनेलगा कि यह जिकर किसी से कहना नहीं अर्थात् अक्रूर के पास मणिहै इस बचनको नहीं कहना ऐसी प्रतिज्ञा करले ४ और जब श्रीकृष्ण तेरेको कछु कहेगा तब हम तेरी मददमें रहेंगे

और ये सब द्वारका बासी मेरे बशमें हैं इसमें संशय नहीं ५ पीछे जब सत्राजित् मारागया तब दुःखसे पीड़ितहुई सत्यभामा रथमें बैठ वारणावत नगरको गमनकरतीभई ६ पीछे वारणावतमें श्रीकृष्णके समीपमें जाय शतधन्वाके हाथसे सत्राजित्की मृत्युकोप्रकटकर पार्श्वकी तरफ़ बैठ अश्रु पात काढ़नेलगी ७ तब दग्धहुयेपांडवोंके अर्थ श्रीकृष्ण जलक्रिया कर और पांडवोंके अन्यकर्मके अर्थ सात्यकिको नियुक्तकर ८ पीछे जल्द द्वारकामें आके श्रीकृष्णबलदेवजीसे कहनेलगे ९ प्रसेनको सिंहने मारदिया पीछे शतधन्वाने सत्राजित्कोमारदिया तब हेप्रभो स्यमंतकमणिका स्वामीमैंहूंअर्थात् मणि मेरेको मिलनीचाहिये १० सोरथमें स्थितहो जल्द शतधन्वा को मारनेसे स्यमंतक मणि हमारा होसक्ता है ११ तब शतधन्वा और श्रीकृष्णका आपसमें घोरयुद्ध होनेलगा तब शतधन्वा अक्रूर को सब दिशाओंमें देखताभया १२ परंतु जब युद्धके अर्थ प्रवृत्तहुए शतधन्वा और श्रीकृष्ण को देखके सामर्थ्यवाला भी अक्रूर उस वक्त शाठ्यपने से शतधन्वाकी सहायकेवास्ते नहीं प्राप्तहुआ १३ तब भयसे पीड़ित हुआ शतधन्वा भागनेको बुद्धि करताभया और ४०० कोशसे भी ज्यादा चलनेवाली १४ और हृदया नामसे विख्यात ऐसी घोड़ी शतधन्वाके पास थी जिसपै सवारहो शतधन्वा श्रीकृष्णसे युद्धकरेथा १५ पीछे शतधन्वाने अपनीघोड़ीकोभगाया १६ तब रथमें स्थितहो बलदेव और श्रीकृष्ण भी गैल भागे परंतु ४०० कोशपै जापहुंचके शतधन्वाकी घोड़ीके परिश्रमसे तथा खेद से प्राणांतहोनेलगे तब श्रीकृष्ण बलदेवजीसे कहनेलगे१७ हेमहाबाहो आप यहीं स्थितरहो क्योंकि घोड़ी मरनेयोग्य होरही है इस वास्ते मैं पैरोंसेगमनकर मणिरत्नकोग्रहणकरूंगा १८ तबश्रीकृष्ण पैरोंसेगमनकर परमास्त्रकेप्रतापसे मिथिलापुरीकेसमीपमेंशतधन्वा कोमारताभया १९ परंतु शतधन्वा केपास स्यमंतकमणि नहींमिली ऐसे शतधन्वाकोमार श्रीकृष्ण बलदेवजीके पासगये तबबलदेवजी कहनेलगे मणिरत्न मेरे को सौंपदे २० तब श्रीकृष्ण कहनेलगे कि

शतधन्वाकेपास मणितोनहींनिकसा इस वचनकोसुन क्रोधसे युक्तहु-
एबलदेवजी श्रीकृष्णके अर्थ बारम्बार धिक् धिक् ऐसाकहतेभये २१
और फिर कहनेलगे हेकृष्ण भ्रातापनेसे मैंने तेरायह कर्तव्य सहाहै
तेराकल्याणहो मैंजाताहूं नद्वारकामें मेराकृत्यहै नवृष्णियोंके संगमे
राकृत्यहै और न तेरेसंग मेराकृत्यहै २२ ऐसे कहके बलदेवजी मि-
थिलापुरीमें प्रवेश करनेलगे तब सब कामनाओंसे मिथिलापुरी के
राजाने बलदेवजीको पूजाकरी २३ और इसीकालमें बुद्धिमानोंमें
श्रेष्ठ अक्रूर नानाप्रकारके यज्ञोंको करताभया २४ और स्यमंतक
की रक्षाके वास्ते दीक्षामय कवचभी धारणकरताभया २५ पीछे
नानाप्रकारके रत्न और नानाप्रकार के धनोंको यज्ञों में साठ
साठ बर्षों तक नियुक्त करताभया २६ तब बहुतअन्न और दक्षि-
णावाले और सब कामोंको देनेवाले ऐसे अक्रूर यज्ञ बिख्यात
हुये २७ और जब मिथिलापुरीमें बलदेवजी रहनेलगे तबदुर्योधन
राजा मिथिलापुरीमें जाके दिव्यरूप गदाशिक्षाको बलदेवजी से
सीखताभया २८पीछे वृष्ण्यन्धकवंशके महारथियोंने और श्रीकृष्ण
ने खुशामद करके बलदेवजीका प्रवेश द्वारकामें कराया २९ और
हे जनमेजय अंधकवंश के पुरुषोंके साथ अक्रूर द्वारका से निकस
गया ३० तब ज्ञातिभेदके भयसे श्रीकृष्ण अक्रूर को त्यागते भये
पीछे जब अक्रूर चलागया तब द्वारकामें इन्द्रने बर्षानहींकरी ३१
तब अनावृष्टीके भयसे देश दुःखित होनेलगा तब कुकुर अंधकआदि
बंशोंमें होनेवाले द्वारकाबासी अक्रूरको मनाके ३२ द्वारकापुरीमें
प्राप्त करतेभये जब अक्रूर द्वारकामेंआया उसी वक्त इन्द्रने वर्षा
करी ३३ पीछे शील संयुक्त और स्वसारा नामसे बिख्यात ऐसी
कन्याको अक्रूर श्रीकृष्णको प्रसन्न करनेकेअर्थ देताभया ३४ पीछे
योगबलसेश्रीकृष्ण अक्रूरकेपास मणिकोजान सभाकेमध्यमें स्थित
अक्रूरसे कहनेलगे ३५ हेप्रिय जो स्यमंतकमणि आपकेपासहै व-
हमेरेकोदेनी योग्यहै ३६ और जो मेरेमें मणिसंबंधी क्रोधथावहशां-
तहुआहै क्योंकि उसकालको साठबर्ष व्यतीतहोगये ३७ऐसेश्रीकृष्ण

केबचनको महामतीवाला अक्रूरसुनके मणिकोश्रीकृष्णके अर्थदेता भया ३८ पीछे कोमलताकर अक्रूरकेहाथसे प्राप्तहुई मणिकोप्रसन्नहुये श्रीकृष्ण फिर अक्रूरके अर्थ देतेभये ३९ तब कृष्ण के हाथ से स्यमंतक मणिको ग्रहणकर अक्रूर कंठमेंबांध सूर्य्य के समान प्रकाशितहोता भया ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वभाषायां चत्वारिंशत्तमोऽध्यायः ४० ॥

एकतालीसवां अध्याय ॥

जनमेजय ने प्रश्नकिया अमित तेजवाले बिष्णु का प्रादुर्भाव पुराणोंमें बाराह अवतार से बिख्यात कथन करते हुये सत् पुरुषों की वाणीसे सुनाहै १ परंतु तिसका चरित्र और बिधि और विस्तार और कर्मगुणकीवृद्धि और कारण और बांछितइन्होंको नहीं जानता हूं २ और कैसे शरीरवाला बाराहजी हुआ और कैसी उसकी मूर्त्ति हुई और कौन देवताहुवा और कैसे आचार और प्रभाव से संयुक्त हुवा और तिस समय में तिसने क्या किया ३ और यज्ञ के अर्थ इकट्ठे हुये द्विजोंके प्रति वेदव्यास जीने जो महाबाराह चरित्र कहाहै ४ जिसमें बाराह रूपमें स्थितहुए नारायण समुद्रमें स्थित पृथ्वी को अपनी दंष्ट्रापैधर निकासतेभये ५ ऐसे शत्रुको मारनेवाले बराहजीके और श्री कृष्णके कर्मों को बिस्तार पूर्बक श्रवण करने की इच्छा करूंहूं ६ और कर्मोंके अनुसार जो जो ईश्वर ने अवतार लियेहैं और जो इश्वरकी बाह्मी प्रकृती है तिसको कहने को आप योग्यहैं ७ और देवताओं के स्वामी और शत्रुओं के मारने वाले ऐसे बिष्णुभगवान् बसुदेव के कुलमें कैसे बासुदेवनाम से बिख्यातहुए और देवताओंसे आवृत्त और पवित्र और पुण्यकरने वालोंसे अलंकृत ऐसे देवलोकको त्यागके साक्षात् ८ ईश्वर कैसे मर्त्यलोकमें प्राप्तहुये९ और देव और मनुष्योंकेस्वामी और भूर्भुवः लोकोंको आदिकारण ऐसेईश्वर दिव्यआत्माको किसवास्तेमनुष्यों में युक्त करतेभये १० और जो मनुष्योंकेअर्थ आरोग्यरूप चक्रको

वर्तनेवाले ऐसे ईश्वर कैसे मनुष्य देहमें बुद्धि करतेभये ११ और सब जगत्‌को रक्षाकरनेवाले विष्णु कैसे पृथ्वीमें प्राप्तहो गोपजाती में बिख्यातहुये १२ और पंचमहाभूतों को धारणकरनेवाले और लक्ष्मी हैं गर्भमें जिन्होंके ऐसे ईश्वर पृथ्वीमें बिचरनेवाली स्त्रीने कैसे गर्भमें धारे १३ और जिसने तीन क्रमोंसे देवताओंकी इच्छा के अर्थ लोकोंकोजीत तीनप्रकारके जगत् के मार्गस्थापितकिये१४ और जिसने अंतकालमें जगत्‌का पानकर पीछे जलस्वरूप शरीर बनाके एकार्णवरूप लोकको किया १५ और जो पुराणमें पुरानेश-रीरवाले और बाराहके रूपको प्राप्तहो अपनी दंष्ट्राकेऊपर पृथ्वी को धर समुद्रसे बाहर निकासतेभये १६ और जो इन्द्रकेअर्थ इस पृथ्वीकोजीत त्रिलोकीकोराज्यकोदेतेभये१७और जिसने नरसिंहके रूपको धारणकर महावीर्यवाला आदि दैत्य हिरण्यकशिपुमारदि-या१८।१९और जो पहले अग्निरूपहोके पातालमें स्थितहो समुद्रके जलको पीतेभये २० और हजार शिरोंवाला और हजार पांखड़ि-योंवाला और हजार चरणोंवाला ऐसादेव युगयुगमें कहाताहै२१ और जिसकी नाभिसे ब्रह्माजीकी उत्पत्तिकेअर्थ कमलउपजाहै२२ और जिसने सर्वदेवमय शरीर और सब शस्त्रोंको धारणकर तार-कामययुद्धमें दैत्योंका नाशकरदियाहै २३ और जिसने कालनेमि और तारका आदि महादैत्य जीतलियेहैं २४ और जो क्षीरसागर के उत्तरखंडमें शाश्वतयोगको प्राप्तहो निरंतर शयन करते हैं २५ और जो जो दैत्यों को पातालमें बसाताभया और संसारमें अनेक प्रकारके चिह्न करताभया २६ और देवताओंको स्वर्गमें बसाता भया और इन्द्रको देवताओंका राजाकरताभया २७ और जोपात्र दक्षिणा दीक्षा चमसा उलूखल गार्हपत्यकर्म अन्वाहार्य्यकर्म २८ हवनके योग्यअमी वेदीकुशास्त्रुव प्रोक्षणीपात्र ध्रुव आवभृथ्य२९इन यज्ञकर्मों को रचताभया और हव्यके ग्रहणकरने वाले देवते और कव्यके ग्रहणकरनेवाले पितर जिसने बनादिये ३० और जिसने यज्ञकर्ममें मंत्र बिधिसे भागकेअर्थ यज्ञस्तंभ समिध अर्थात् ढाककी

लकड़ी स्रुव गली समिध ३१ और यज्ञकेयोग्य द्रव्यऔरअग्निसहित यज्ञ सदस्ययजमान मेध आदि यज्ञ ३२इन सब पदार्थोंका बिभाग किया और युगयुगके प्रतियुगों के अनुसार रूपों को धारणकर-लोकोकेकार्य करतेभये ३३ और क्षण लव काष्ठा कला त्रिकला मुहूर्त तिथी मासपक्ष संवत्सर ३४ ऋतु काल योग तीनप्रकार के प्रमाण आयुक्षेत्र उपचय लक्षण रूपको सुंदरता ३५ और तीनवर्ण तीन लोक तीन विद्या तीन अग्नि तीन काल तीन कर्म तीनअपायतीन गुण ३६ इन सबोंकी रचना भी इसीने करीहै और इसीने अंतसे रहितये तीन लोक भी रचेहैं और सब भूतोंके गुणोंसे संयुक्त ३७ सबप्राणिगण भी इसीने रचेहैं और मनुष्योंके इन्द्रियपूर्वकयोगसे यही रमणकरताहै ३८ और सब जगह गमन और स्थितिसे सब प्राणियोंकानेताहै और धर्मयुक्त मनुष्योंके गतिरूप भी यहीहैऔर पापकरनेवालोंके यही अगतिरूपहै और चारोवर्णोंका उत्पत्तिस्थान और चातुरहोत्रका रक्षाकरनेवाला ३९ यही है और चार विद्याका जाननेवाला और चार आश्रमोंका संश्रयरूप ऐसा भी यही है और दिशाओंका अंतरआकाश पृथ्वी जलपवन अग्नि ४० चंद्रमा सूर्य तारागण इन्होंके रूपको भी धारण करनेवाला यही है और उत्तम से उत्तम ज्योति भी यही है और उत्तम से उत्तम तनभी यही है ४१ और परेसे भी परे यही है और परमात्मासे भी परे यही है और सब वेद भी नारायणमें तत्परहैं ४२।४३ और सब क्रिया भी नारायणमें तत्परहैं और सब धर्मभी नारायणमें तत्परहैं और गति भी नारायणमें तत्परहै ४४ और सत्यभी नारायणमें तत्परहै और तप भी नारायणमें तत्परहै ४५ और मोक्ष भी नारायणमें तत्परहै और परमगति भी नारायणमें तत्पर है और आदित्य आदि दिव्य और दैत्योंका अंतक भी यहीहै ४६ और युगांत में भी अंतकरूप यही है और लोकोंके अंतकका भी अंतक यही है और लोकके सेतुओंका सेतु भी यही है और मेध्यकर्ममें भी मेध्यकर्म यही है ४७ और वेदके जाननेवालोंमें भी वेद्यरूप यहीहै और प्रभवात्मावालों

में प्रभुरूप भी यहीहै और सौम्योंमें सोमरूप भी यहीहै औरअग्नि को पदवीवालोंमें अग्निरूप भी यहीहै ४८ और मनुष्योंमें मनरूपभी यहीहै और तपस्वियोंमें तपरूप भी यहीहै और नय वालोंमें विनयरूप भी यहीहै और तेजवालोंमें तेजरूप भी यहीहै ४९ और सृष्टिवालोंमें सृष्टिकाकरता भी यहीहै और विग्रहवालोंमें लोकका कारण भूत विग्रहरूप भी यहीहै और गतिवालोंमें गतिरूप भी यही है ५० और आकाशमें उपजनेवाला वायु भी यहीहै औरप्राणवायु भी यहीहै और आहुतीको भोजनकरनेवाला अग्निभी यही है और अग्निरूप प्राणोंवाला देव भी यही है ऐसा यह साक्षात् विष्णु है ५१ और रससे लोहू उपजताहै और लोहूसे मांसउपजताहै और मांससे मेदउपजताहै और मेदसे हड्डियां उपजतीहैं ५२ और हड्डियोंसे मज्जा उपजती है और मज्जा से वीर्य्य उपजता है और वीर्य्यसे गर्भ उपजताहै ऐसे गर्भका रसमूल कहाहै ५३ और वहां प्रथम भाग जलहै यह सौम्यराशि कहाताहै और गर्भको गर्माईसे उपजा अग्नि दूसरी राशि कहाताहै ५४ इसवास्ते चंद्रमा के अंशसे उपजा वीर्य्य होताहै और अग्निके अंशसे उपजा आर्तव होताहै ५५ और कफके समूहमें शुक्र उपजैहै और पित्तके समूहमें लोहू उपजैहै और कफका हृदयस्थानहै और पित्तका नाभि स्थान है ५६ और देहके मध्यमें जो हृदय है वह मनका स्थान है और नाभि और कोष्ठके बीचमें अग्निका स्थानहै ५७ और मन ब्रह्मरूपकहाहै और कफ चंद्रमारूप कहाहै और पित्त अग्निरूप कहाहै ऐसे अग्निसोमके तेजसे सब जगत्रूप उपजताहै ५८ ऐसे ग्रन्थि के समान बढ़तेहुये गर्भमें परमात्मासे मिलाहुआ वायु प्रवेश करैहै ५९ पीछे पांचप्रकार से शरीरमें स्थितहुआ वायु अंगोंको रचताहै और शरीरको पुष्टकरैहै ६० और तिन पांचोंवायुओंकेप्राण अपान समान उदान व्यानये नामहैं इन्होंमें प्राण प्रथम स्थानहै यह अन्यस्थानों को बढ़ाता हुआ आपबढ़ैहै ६१ और गुदामें अपानवायु है और शरीरके कंठआदि ऊर्ध्वस्थानमें उदानवायुहै और सबशरीर

में विचरनेवाला व्यानवायुहै ६२ और यही व्यानवायु जबविस्तृत होताहै तब नाभिमें स्थितसमान बायुशरीरकेपदार्थको निवृत्तकरता है पीछे पांचमहा भूतों की प्राप्तिहो के अर्थात् पृथ्वी वायु आकाश जल अग्नी ६३ ये सब इन्द्रियोंमें प्रवेश होजातेहैं इसीवास्ते पृथ्वी तत्त्वसे देहहुवाहै और वायुसत्त्वसे प्राणहुयेहैं ६४ और आकाशतत्त्वसे सबछिद्रहुयेहै और जलतत्त्वसे स्रावहोताहैऔरनेत्रोंका तेजअग्नितत्त्वसेहुआहैऔर इनसबोंकायंतामनकहाहै६५औरजिसके वीर्यसे ग्राम और देशप्रकाशित होतेहैं ऐसेप्रकारसे सनातन लोकों को रचता हुआ परमेश्वर ६६ नाशके योग्य इसलोकमें मनुष्यके देहमें कैसे प्राप्तहुआ हे ब्रह्मन् यह मेरे को संशय है और अति आश्चर्य्य है ६७ और गतिवालों का गतिरूप परमेश्वर मनुष्य के शरीर में कैसे प्राप्तहुआ और अपने बंशके सबपुरुषों को मैंने उत्पत्तिसुनी६८अबविष्णु और वृष्णिकुलवालोंकीयथाक्रमसेउत्पत्ति श्रवण करनेकी इच्छा है और देवदैत्योंने विष्णु भगवान् परम आश्चर्य्यरूप मानाहै ६९ इस वास्ते हे महामुने सुखको देनेवाले विष्णु के उत्पत्ति रूप आश्चर्य्य को मेरे अर्थ कहो और प्रख्यात बल बीर्य्यवाले और अमित तेजवाले और आश्चर्यकर्म करनेवाले ऐसे विष्णु का तत्त्व यहां कहो ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वेभाषायांएकचत्वारिंशत्तमोध्यायः ४१ ॥

बयालीसवांअध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे विष्णु भगवान् संबंधी अतिप्रश्न भारतैंने किया अबशक्ति के अनुसार विष्णुके यशको प्रकाशित करताहुआ यह सुनलीजिये १ और विष्णुके प्रभाव सुननेमें जो आपकी मति उपजीहै यहअति कल्याण कारी है इसवास्ते दिव्यरूप और मेरे सकाश से कहीहुई विष्णुकी प्रवृत्ती को तू श्रवणकर २ और हजार मुखवाले और हजार नेत्रोंवाले और हजार पैरोंवाले और हजार शिरोंवाले और हाथोंवाले ३ और हजार बाहुओंवाले और हजार

मुकुटोंवाले और हजारों पदार्थोंको देनेवाले और हजारोंकेआदि भूत ऐसे देव ४ और हवन शबन हव्य होता पात्र पवित्रा वेदी दीक्षा चरु स्त्रुव श्रुक सोम सूर्य्य प्रोक्षणी दक्षिणायन अधर्यु सामग ब्रह्मा सदस्य सदन ५ यज्ञस्तम्भ समिध दर्वी चमसा उलूखल प्राग्बंश यज्ञभूमि होता चयन ६ प्रमाणभूत रहस्य चर और स्थावर प्राय-श्चित्त अर्घ्य स्थण्डिल कुशा ७ यज्ञमें कहनेयोग्य मंत्र यज्ञके योग्य अग्नि और यज्ञभागको ग्रहणकरनेवाला और सबोंसे प्रथम अमृत को भोजन करनेवाला और अतितेजवाला और उग्र शस्त्रोंवाला ८ ऐसे रूपों को धारणकिये यज्ञ में शाश्वतरूप वेदके जाननेवाले जिसको मानतेहैं तिस विष्णुके ९ हजारहों अवतार होचुके और होवेंगे ऐसे प्रजापतिने कहाहै १० और हे महाराज जो आपदिव्य कथाको पूछतेहैं कि जिस प्रयोजनके वास्ते बसुदेवके कुलमें विष्णु भगवान् जन्मेहैं ११ वह बिस्तार पूर्वक मैं कहताहूं श्रवणकीजिये महाकीर्त्तिवाले बासुदेवका चरित सुनो १२ देवते और मनुष्योंके कल्याणके अर्थ बहुतबार परमेश्वर प्रकटहुआ है १३ तिन्हों में से पवित्र और दिव्य और गुणोंसे संयुक्त ऐसी उत्पत्तियों को कहताहूं हेजनमेजय शुद्ध और यत्नवालाहोके श्रवणकर १४ वेदके समान पवित्ररूप इस पुराणको तेरेअर्थ कहताहूं विष्णुकी दिव्य कथाको श्रवणकर १५ जब जब धर्मकी ग्लानिहोतीहै तबतब धर्मको स्था-पना करनेके अर्थ विष्णु भगवान् अवतार लेतेहैं १६ तिस ईश्वर की अति उत्तमरूपवाली एकमूर्त्ति आकाश में स्थितहुई उग्रतपको करती रहैहै १७ और दूसरीमूर्त्ति प्रजाकेसंहार और रचनेकेवास्ते शेषशय्यापै निद्रा योगको प्राप्तहुई हजारों युगांतकशयनकर कार्य केअर्थ प्रकटहोती है १८ और पीछे देवताओं के देवता ब्रह्मा जी लोकपाल चन्द्रमा सूर्य्यअग्निकपिलमुनि १९ सातोंऋषिदेवतेमहा-देव वायु पर्वत समुद्र येसब उस शयन करनेवाले ईश्वरकीदेहमें बसतेहैं २० और महानुभाववाले सनत्कुमार और प्रजा को उप-जानेवालेमनुजी और प्रजाकोरचनेवालेब्रह्माजी येसब उसईश्वरके

देहमेंबसतेरहेहैं २१ और जब स्थावर जंगम नष्टहुआ औरदेवदैत्य नष्टहुये और सर्प राक्षस नष्टहुये तब जिसकेसंग २२ समुद्रकेमध्यमें स्थित और युद्धको करनेवाले और अति बलवाले और मधुकैटभ नामसे विख्यात ऐसे दैत्य प्रलयके अंतमें मारदियेहैं २३ और समुद्रमें शयन करते हुये कमलरूप नाभिसे देवते और ऋषिगण उपजेहैं २४ तहां पौष्कर नामसे विख्यात ईश्वरने अवतार लिया है जिसके अर्थ वेदोंके समान यहपुराण रचागयाहै २५ पीछे ईश्वरने समग्र पृथ्वी को व्याप्तकहो वराहजीका अवतार लिया है २६ तब वेदरूप पैरोंवाला और यज्ञस्तंभरूप जाड़वाला और यज्ञरूप हाथोंवाला और चित्तीमुखवाला २७ और अग्निसरीखी जीभवाला और डाभरूप रोमोंवाला ब्रह्मरूप शिरवाला और दिन रात्रिरूप नेत्रोंवाला और दिव्य और वेदांग श्रुती इनरूप गहनोंवाला २८ और घृतरूप नासिकावाला और श्रुवारूप तुंडवाला और सामवेद रूपघोष और शब्दवाला और धर्म सत्यसे संयुक्त और शोभावाला और कर्म विक्रम सत्क्रिया इन्होंवाला २९ और प्रायश्चित्तरूप नखोंवाला और घोर और पशुरूपजानु अर्थात् गोड़ वाला और महाभुजावाला और उग्रताहै अंतमें जिसके ऐसा और होमरूप लिंगवाला और फलबीज महोषधी ३० वायुइन्होंसे युक्त अंतरात्मा वाला और वेदरूप क्रिचोंसेविकृतहुआ और सोमरूपशोणितवाला और वेदीरूपस्कंधवाला और हविरूप गंधवाला और हव्यकव्य रूप अति वेगवाला ३१ और प्राग्वंशरूप शरीरवाला और नाना प्रकारकी दीक्षाओंसे पूजित और दक्षिणारूप हृदयवाला और योगी और महायज्ञवाला ३२ और उपाकर्मरूप ओष्ठोंवाला और प्रवर्ग्यावर्त्त रूप भूषणवाला और नानाप्रकारके वेदरूप गमनवाला और गुप्तरूप उपनिषदरूपआसनवाला ३३ और छायापत्नी सहायवाला और मेरुके शृंगके समान ऊंचा ऐसावाराहजी एकार्णव जलमें डूबीहुई पर्वतवन आदिसे संयुक्त पृथ्वीको अपनी दंष्ट्रापै धर लोकों के कल्याणके अर्थ निकासताभया ३४ ऐसे यज्ञवराहजी का जन्म

हुआहै अबनृसिंह के जन्मका श्रवणकर ३५ जिसनृसिंहजीने पहले कृतयुगमें देवताओंकाबैरी और बल से गर्वित ऐसा हिरण्यकशिपु माराहै ३६ और एक समय में आदि दैत्य हिरण्यकशिपु ग्यारह हजार बर्षों तक उग्र तप करताभया ३७ अर्थात् जलमात्र को ग्रहण करताभया और मौनको धारण करताहुआ और शम दम ब्रह्मचर्य्य इन्हों से दृढ़ ब्रतहुआ ३८ तब प्रसन्नहुये ब्रह्माजी तहां आप आके ३९ हंस युक्त और सूर्य्य के समान प्रकाशवाला ऐसे बिमानमें बैठ आदित्य वसु साध्य मरुत् ४० रुद्र बिश्व में सहाय करनेवाले यक्ष राक्षस किन्नर दिशा विदिशा नदी समुद्र ४१नक्षत्र मुहूर्त आकाशचारी महाग्रह देवऋषि सिद्धि सप्तऋषि ४२राजर्षि गंधर्व अप्सराओं के समूह सबदेवते४३इन्हों के संगचराचरकेगुरु ब्रह्माजी आपआके दैत्यके अर्थ बचनकहतेभये हे सुब्रततेरे तपकरके मैं प्रसन्नहुआ ४४ तेराकल्याणहो मनोबांछित बरको तू मांग उसीको प्राप्तहोगा ४५ तब हिरण्यकशिपु कहनेलगा हे देवसत्तम देवतेराक्षस गंधर्व यक्षदिव्यसर्प दैत्य मनुष्य पिशाच इन्होंसेमैंनहीं मरसकूं ४६ और क्रोधको प्राप्तहुयेतपकरनेवाले ऋषि मेरेको शाप नहींदेसकें ४७ और शस्त्र अस्त्रपत्थर वृक्ष सूखापदार्थ व गीलापदार्थ अथवा अन्यतरह कापदार्थ ४८ इन्होंकेलगनेसे मेरी मृत्युनहींहो किंतुएकहाथके थपड़ाके प्रहारसे जोबलबाहन सहित मेरेको मारनेको समर्थहो ऐसापुरुष मेरीमृत्युरूपहोवे इसमें संशयनहीं ४९ और मैंहीं सूर्य्य होजाऊं और मैंहीं चन्द्रमाहोजाऊं और मैंहीं पवन होजाऊं और मैंहींअग्नि होजाऊं और मैंहींजल और मैंहींआकाश और मैंहीं नक्षत्र और मैंहीं दशदिशा ऐसा होजाऊं ५० और मैंहीं क्रोधकाम बरुण इन्द्र यम कुबेर इन्हों के रूपों को धारणकरूं ५१ तबब्रह्माजीकहनेलगे हेपुत्र येसबदिव्य रूप औरअद्भुत ऐसे बरमैं तेरे अर्थ दिये सब इनकामोंको तूप्राप्तहोवेगा इसमेंसंशयनहीं ५२ ऐसे कहके आकाश मार्गके द्वारा प्रकाशरूप और ब्रह्मर्षि गणों से सेवित ब्रह्मलोक को ब्रह्माजी प्राप्तहुये ५३ पीछे ब्रह्माजी

मांगेहुये दैत्य के अर्थवरों को सुनके इन्द्रादि देवते नाग गंधर्व मुनि ५४ ब्रह्माजीकेपास जाकेजनानेलगे ५५ औरदेवते कहनेलगे हे भगवन् इनवरदानोंके देनेसे यह दैत्यहमारे को मारेगा इसवास्ते आप प्रसन्न होके इसकोभीमृत्युका चिंतवनकरो ५६ तब सब लोकोंको सुखदेनेवाले और सृष्टिके रचनेवाले और हव्य कव्यको प्रवर्त्त करनेवाले ऐसे ब्रह्माजी५७लोकके कल्याणके अर्थ वाक्यको श्रवणकर सब देवगणोंके प्रति कहनेलगे ५८ हेदेवताओ कियेहुये तपकाफलइसकोप्राप्तहोवेगा परन्तुतपके फलकेअंतमें बिष्णुभगवान् इसको मारेंगे ५९ ऐसे ब्रह्माजीके बचनको सुनके आनंदसेयुक्त हुये सब देवते दिव्यरूप अपनेअपने स्थानोंको जाते भये ६० पीछे बरदानसे गर्वितहुआ हिरण्यकशिपु दैत्य सब प्रजाको पीड़ा देने लगा ६१ और प्रथम आश्रम में स्थित और ब्रतको धारण करने वाले और सत्यधर्ममेंरत औरशांतिवाले ऐसे मुनिजनों को दुःखित करनेलगा ६२ पीछे त्रिलोकीके देवताओंको जीतके औरत्रिलोकी को वशमें कर स्वर्गमें बसनेलगा ६३ पीछे बरदानसे उन्मत्तहुआ स्वर्गमें बसके दैत्योंको यज्ञभाग दिवानेलगा और देवताओंके यज्ञ भाग दूरकरादिये ६४ तबसबआदित्य सब रुद्र बिश्वेदेवा वसुइन नामोंवाले देवते बिष्णु केशरणहो के स्तुतिकरनेलगे ६५ कि वेदयज्ञ मय और ब्रह्म और ब्रह्मदेव और सनातन और भूतभव्य भविष्य इन्होंको जाननेवाले और प्रभु और लोकोंसेनमस्कृत ६६ औरनारायण और शरणकेयोग्य ऐसे देवके हम शरणमें प्राप्तहुयेहैं ६७ हेदेवेश हिरण्यकशिपुके भयसे हमारीरक्षाकर तूही हमारा परमदेव है और तूही हमारा परमगुरुहै ६८ और तूही हमारापरमहै और तूही ब्रह्मादिककाभी ब्रह्माहै और हे फूलेहुये कमलके समान नेत्र वाले और हे शत्रुके पक्षको जीतनेवाले ६९ देव दितीके वंशको नाशनेवास्ते हमारे मनोरथ को पूरणकर अर्थात् हमारी तू शरण होजा ७० तब विष्णु कहनेलगे हे देवताओ भयको त्यागो अभयमैं तुम्हारेअर्थदेताहूं और सबदेवते फिरस्वर्गलोकमेंजाके प्राप्तहोंगे७१

और जो यह देवताओं से नहीं मरता है और बरदान से गर्वित है
ऐसे इसदैत्यको मैं मारूंगा७२तब वैशंपायन कहनेलगे ऐसे देवता
ओंसे कहके विष्णु भगवान् ७३ आधा शरीरको मनुष्य का बना
और आधा शरीरसिंहका बनातब हिरण्यकशिपु दैत्यकीसभामेंप्रा
प्तहुये ७४ तबमेघोंके घनकेसमान प्रकाशवाले और मेघोंकेशब्दके
समान शब्दवाले और मेघोंके समान तेजवाले और मेघोंके समान
वेगवाले ७५ ऐसेनृसिंह जी अति बलवाला और गर्वितरूप सिंह
के समान पराक्रमवाला और अति बलवाले दैत्योंके समूहसेरक्षित
ऐसे दैत्यको एकहाथके प्रहारसे मारताभया ७६ ऐसे नृसिंह जीका
अवतार हुआहै अब बावनजीके अवतारका श्रवणकर जहांदैत्योंके
नाशके वास्ते बावनरूप को धारणकर७७।७८बलिराजाकी यज्ञमें
जब बावनजी अपने शरीर को बढ़ा पृथ्वी को क्रमण करनेलगे तब
अपने पराक्रमोंसे७९ विप्रचित्ती शीवीशंकुरय शंकुअयः शिरा अश्व
शिरा हयग्रीव ८० वेगवान् केतुमान् उग्रव्यग्र कुशकर पुष्कल अश्व
अश्वपति प्रह्लादअश्वशिरा कुंभ संह्रादगगनप्रिय अनुह्रादहरिहर
बराह संहररुज ८१ शरभ शलभ कुपन कोपन ऋथवृहत्कीर्ति महा
जिह्व शंकुकर्ण महास्वन ८२दीर्घजिह्वअर्कनयन मृदुचाप मृदुप्रिया
बायु गविष्ठ नमुचि शंवर वीक्षर महान्८३ चंद्रहंता क्रोधहंताक्रोधव
र्द्ध न कालक कालकेय वृत्रक्रोध विरोचन ८४ गविष्ट वरिष्ट प्रलम्ब
नरक इन्द्रतापन बातापीकेतुमान् बलदर्पित८५ असिलोमाणुलोमा
बाष्कल प्रमद मद खलिम शालबदन कराल कौशिकशर ८६ एकाक्ष
चन्द्रहा राहु संहार मृदुरश्वनइननामोंवाले औरशतघ्नी चक्र इन्हों
को हाथोंमें धारणकरनेवाले और परिघ शस्त्रको धारण करनेवा-
ले ८७ और अश्मयंत्ररूप शस्त्रोंको धारण करनेवाले और भिन्दि-
पाल शस्त्रको धारणकरनेवाले और शूल उलूखल इन्होंको हाथोंमें
धारण करनेवालेऔरपरशाशस्त्रको धारण करनेवाले८८ औरफांसी
मुद्गरको हाथमें धारणकरनेवाले और मुशलको हाथमें धारणकरने
वाले औरपत्थरोंकेप्रहार करनेवाले और शूलकोहाथमें धारणकरने

वाले ८६ और नानाप्रकारकेप्रहारकरनेवाले और नानाप्रकारकेवेषों को धारण करने वाले और अति बलवाले और कछुआ और मुरगा इन्हों के मुखोंके समान मुखवाले और काक उल्लू इन्हों के समान मुखको धारण करनेवाले ६० और गधाऊंट इन्होंके समानमुखको धारण करनेवाले और सूकरके मुखके समान मुखको धारण करने वाले और भयानक रूपवाले और मच्छके मुखोंके समानमुखोंको धारण करने वाले और गीदड़के मुखके समान मुखको धारणकरने वाले ६१ और मूषा मेंडक इन्होंके मुख के समान मुख को धारण करनेवाले और घोररूप को धारण करनेवाले और भेड़ियाके मुख के समान मुखको धारण करनेवाले और बिलाव शशा इन्होंके मुख के समान मुखवाले ६२ और बड़े बड़े मुखोंवाले और कितनेक मच्छ और मेंढाके समान मुखोंवाले और कितनेक गायबकरी भेड़ भैंसाइन्होंके मुखके समान मुखवाले और कितनेक गोधासेह इन्हों के मुखके समान मुखवाले और कितनेक क्रौंच ६३ गरुड़ गैंड़ामोर इन्होंके मुखके समान मुखवाले और कितनेक हाथियोंकी चर्म के बस्त्रोंको धारण करनेवाले और कितनेक कालामृगके चर्मकोधारण करनेवाले ६४ और कितनेक फटेहुये चीरोंको धारण करने वाले और कितनेक वृक्षोंके बकलों को धारण करनेवाले और कितनेक पगड़ी मुकुट कुंडल ६५ कवच इन्हों को धारण करनेवाले और कितनेक लंबीचोटी और शंखके समान ग्रीवा और सुंदरतेज इन्हों को धारण करनेवाले और कितनेक नाना प्रकारके वेष और फूलों की माला और चंदनआदि ६६ इन्होंको धारण करनेवाले ऐसेदैत्य तेजसे प्रकाशित किये अपने शस्त्रोंको ग्रहणकर पृथ्वीको क्रमण करतेहुये विष्णुके चारोंतर्फसे युद्धकरनेको प्राप्तहुये ६७ तबपैर और हाथोंके तलवोंसे सबदैत्योंकोमथके भयानकरूपको धारणकरपृथ्वी को तत्काल हरतेभये ६८ और भूमिके अर्थ पराक्रम करने के वक्त चूचियोंकेबीचमें चन्द्रमा और सूर्य्य स्थितथे वे आकाशमें शरीरको फैलानेकेवक्त नाभि में स्थितहोगये ६६ पीछे अतिशरीरको फैलाने

के वक्त गोड़ाकेदेशमें चंद्रमा सूर्य्य स्थितहोगये ऐसे मुनियोंने कहाहै १००ऐसे बावनजीका अवतार प्रकाशित हुआ अब फिर बिष्णुभगवान्के यशको कहतेहैं १०१बिष्णु भगवान्ने दत्तात्रेय नामसे बिख्यात और अतिदयासे संयुक्त ऐसाअवतारलियाहै१०२ जबदेवते क्रियायज्ञ इन्होंका नाशहोनेलगा और चारोंबर्णआपसमें संकीर्णहोनेलगे१०३ और धर्म शिथिलताको प्राप्त होनेलगा और पापकी वृद्धिहोनेलगी औरसत्यकानाश होनेलगा१०४और झूठकी स्थिति होनेलगी और प्रजाका नाशहोनेलगा१०५तबइस दत्तात्रेय जीने यज्ञक्रिया वेद संकीर्णता से रहित चारों के बर्ण ये सब फिर स्थापित किये१०६और कृतवीर्यके पुत्र अर्जुनके अर्थ इसी दत्तात्रेय जीने बरदान दिया१०७कि हे राजन् जो तेरे दो बाहु हैं सो मेरे प्रताप से हजारबाहु होजावेंगे इसमें संशयनहीं१०८और तूसंपूर्ण पृथ्वीकी पालनाकरेगा और शत्रु ओंकेसमूह तेरेको जीतनहीं सकें-गे१०९ येसबकार्य युद्धमें तेरे हुआ करेंगे ऐसे दत्तात्रेय जीकाअव तार प्रकाशित किया११०अब परशुरामजीके अवतारकोकहतेहैंज-हांयुद्धमेंसेनाकेबीचमें स्थितसहस्रबाहुअर्जुनको १११ परशुरामजी मारतेभये अर्थात् रथमेंस्थित अर्जुन को पृथ्वी में घर्षितकर ११२ उसकी हजारबाहुओंको परशुरामजी फरसासे काटतेभये ११३ पीछे किरोड़होंक्षत्रियोंसे संयुक्त पृथ्वीको ११४ इक्कीसबार क्षत्रियों से रहितऐसी बनातेभयेपीछे अतिबलवाले परशुरामजी११५अपने पापोंको दूरकरने के वास्ते अश्वमेध यज्ञमें दक्षिणाकेअर्थ मरीचि के पुत्र कश्यपजीको ११६ इसपृथ्वीकादानदेते भये औरबरुणजी सफेद रंगवाले घोड़े और रथ ११७ बहुतसा सुवर्ण गाय हाथी इन्होंकाभी अश्वमेध यज्ञमें परशुरामजी दानकरते भये औरसंसार के कल्याण के अर्थ तपका आचरण करतेहुये परशुरामजी ११८ देवके समानहोकेपर्बतोंमें उत्तम महेंद्र पर्वतमें स्थित होरहेहैं ११९ ऐसे परशुरामजीका अवतार बिख्यातहुआहै १२० और चौबीसवें युगमें राजा दशरथ के कमलके फूलके समान नेत्रोंवाला और

साक्षात् ईश्वर और महावाहु चारप्रकारसे आत्माको बिख्यातक-
रके१२१संसारमें रामऐसे नामसे बिख्यातऔरतेजमें सूर्यकेसमान
होके संसार की प्रसन्नताके अर्थ और राक्षसों के नाशके अर्थ १२२
और धर्म की बृद्धिके अर्थ जन्मलेतेभये १२३ और इस रामचंद्रके
अर्थ राक्षसोंकेनाशने वास्ते विश्वामित्रजीने देवताओंसे भी दुर्द्धर्ष
ऐसे शस्त्रदियेहैं १२४ औरइसीरामचंद्रने मुनिजनोंकी यज्ञमें विघ्न
करनेवाला मारीच और सुवाहु येदोनों दैत्यमारदियेहैं १२५ और
इसीरामचंद्रने जनकराजाकी यज्ञमें लीलाकरके माहेश्वर धनुष तो
ड़दियाहै १२६ पीछे सबधर्मोंको जाननेवाला और लक्ष्मण रूप
अनुचरोंसे संयुक्त और सबप्राणियोंमें हितकरनेवाला ऐसारामचं-
द्रचौदहबर्षतक बनमें बसा है १२७ और उसीसमयमें रामचंद्रकी
सीतानामवाली रानीको रावण हरलेगयाहै१२८तब उससीताको
ढूंढ़नेकेअर्थ रामचंद्रजी भीमपराक्रमवाले बिराध और कबंध इनना
मोंसे बिख्यात ऐसे राक्षसोंकोमारतेभये १२९ पीछे सुग्रीवकोप्रीति
के अर्थ एकबाणसे महाबलवाले बालिकोमारके सुग्रीवको राज्यति
लकदेतेभये १३० पीछे देवते दैत्य राक्षस यक्ष यक्षो इन्होंसे नहीं
मरनेकेयोग्य और युद्धमेंदुर्मद और राक्षसोंकाइन्द्र १३१ औरकरो
ड़होंराक्षसोंसे रक्षित औरनीलेपर्वतके समानऊंचा औरत्रिलोकीको
दुःखितकरनेवाला औरक्रूर और दुष्टआचारोंवाला और महाबल-
वाला १३२ और दुर्धर और दुर्धर्ष और गर्वित और शार्दूलके
समान पराक्रमवाला और देवताओंको भयदेनेवाला और बरदान
से गर्वित १३३ और अतिबड़े बद्दलकेसमान कांतिवाला और अति
बड़े शरीरवाला और अपराधका करनेवाला और पुलस्त्यकेबंशमें
उपजनेवाला और युद्धमें दुर्जय१३४ और भ्रातापुत्रमंत्रीसेना इन्हों
सेसंयुक्त और उग्रनिश्चयवाला ऐसे रावणको मनुष्योंके पतिरामचं
द्रजी मारतेभये हैं १३५ और मधुका पुत्रगर्वित लवणनामराक्षस
मधुबनमें रामचंद्रजीनेमारा १३६ तथाअन्यभी बहुतसे राक्षसयुद्धों
मेंमारदियेहैं ऐसे धर्मज्ञोंमेंश्रेष्ठ रामचंद्रजीइनकर्मोंको करके १३७

पीछे उत्तम रूपदश अश्वमेधों का आचरण करतेभये तबरामचंद्र जीके राज्यमें अशुभवाणी श्रवणनहीं कीगई और दुष्टपवन कभी चलानहीं १३८ और किसीकाधन किसीने चोरानहीं और विधवा स्त्री और अनाथ मनुष्य विलाप नहीं करते भये १३६ और सब शांतस्वरूप रहनेलगे और प्राणियों को जल पवन बिघात से उप-जा भयहुआनहीं १४० और वृद्धमनुष्य बालकों के प्रेतक्रिया नहीं करतेभये अर्थात् वृद्धोंके सन्मुख कोईभी बालक मरतानहीं और क्षत्रिय ब्राह्मणों की टहल करतेभये और वैश्य क्षत्रियों की टहल करतेभये १४१ और अहंकारसेरहित शूद्र ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य इन तीनों वर्णोंकी टहल करते भये और भार्य्या को पतिनहीं त्यागता भया और भार्य्यापतिको नहींत्यागतीभई १४२ और संपूर्ण जगत् शांत स्वरूप रहा और दस्यु अर्थात् धाड़ियों से रहित पृथ्वी होती भई और सबप्रजा अकेले रामहीको स्वामी मानतीभई और रामही प्रजाको पालनेवाला हुआ १४३ और एक एक मनुष्य के हजार २ पुत्रहोतेभये और हजारों बर्षोंकी आयुहोती भई और रोगोंसे रहित प्राणहोतेभये १४४ और देवताऋषि मनुष्य येसब पृथ्वीमें इकट्ठे होके बिचरतेभये येसबवृत्तांत रामचंद्रजीकेराज्यमें सुनते हैं १४५ और पुराण के जाननेवाले मनुष्य रामचंद्रजीके माहात्म्यको गाते भीहैं १४६ कि श्यामरंगवाला और युवानअवस्थावाला औरलाल नेत्रोंवाला और प्रकाशित मुखवाला और प्रमाणिक बोलनेवाला औरगोड़ोंपर्य्यंत हाथवालाअर्थात्सांवत और सुंदर मुखवाला और सिंहसरीखे कंधावालाऔरमहाभुजावाला१४७ऐसेरामचंद्र ग्यारह हजारवर्षोंतकअयोध्यापुरीमें राज्यकरताभया१४८औररामचंद्रजीके राज्यमें ऋग्वेदसामवेद यजुर्वेद इन्होंकाघोषऔर धनुषकाघोष और दानकरोऔरभोजनकरो ऐसाघोष निरंतरहोताभया १४६ औरसतो गुणवालेऔरसबगुणोंसे सम्पन्न और अपने तेजसे प्रकाशित ऐसेरा मचंद्रजी सूर्यचंद्रमासेभी ज्यादे प्रकाशित होतेभये १५० और उ-त्तमदक्षिणाओंसे संयुक्त सैकड़ोंयज्ञोंको अयोध्यापुरीमें समाप्तकर

रामचंद्रजी स्वर्गमें प्राप्तहुये १५१ तबवैशंपायन कहनेलगे अवसव लोकोंके कल्याणके अर्थ माथुरकल्पमें विख्यात श्री कृष्णजीका अवतार प्रकाशित कियाजाताहै १५२ और जहां शाल्व मैंदकंस द्विविद अरिष्ट वृषभकेशी पूतना १५३ कुवलयापीड़हाथी चाणूर मुष्टिक और मनुष्य देहमें स्थितदैत्य इनसबोंको वीर्य्यवाले श्रीकृष्ण मारतेभये १५४ और अद्भुतकर्मवाले बाणासुरकी हजार भुजाओंको काटतेभये और नरकासुर और महाबलवाला कालयवनयेभीदोनों युद्धमें मारदियेहैं १५५ और राजाओंके संपूर्णरत्नअपनेतेजसे हरके पीछे दुष्ट आचारोंवाले राजा सब श्रीकृष्णने मारदियेहैं १५६ ऐसे श्रीकृष्णका अवतारहुआहै पीछे नौमेंद्वापरमें जातुकर्ण मुनिको प्रथमजन्माकेपीछे वेदव्यासजीका अवतारहुआहै १५७ इसवेदव्यास जीनेएकवेदकेचारविभागकियेहैंऔरभारतवंशकीउत्पत्तिकरीहै १५८ और हेराजन् संसारके कल्याणके अर्थ बीतेहुये विष्णुके अवतार प्रकाशितकिये और होनेवाले अवतारभी कहेजातेहैं १५९ और संभलग्राममें विष्णुयशानामसे विख्यात संसारके कल्याणके अर्थ कल्की नामसे अगाड़ी उत्पन्न होवेंगे १६० पीछे सबदुष्टोंको मारके गंगायमुनाके मध्यदेशमें मित्रों सहितनिष्ठाको प्राप्तहोवेंगे १६१ पीछे मंत्रीसेना इन्हों सहित कुलकी निवृत्ति होनेकेबाद १६२ और राजाओंके नाशहोनेके बाद आपसमें युद्धकरके १६३ मरतेहुये और आपसमें द्रव्योंकीचोरी करतेहुये और दुःखितहुये उसकाल संध्या समय कष्टको प्राप्तहोवेंगे १६४ ऐसे कलियुगकेसाथ प्रजाकानाश होवेगा और जबक्षीणरूप कलियुग होजावेगा तबफिर स्वभावसे कृतयुग बर्तने लगेगा १६५ ऐसे दिव्यगुणोंसे संयुक्त और दिव्य अवतार ब्रह्मवादियोंने पुराणोंमें कहेहैं १६६ इन अवतारोंके कीर्त्तनकरनेमें देवतेभी मोहित होजातेहैं परंतु संक्षेप मात्रसे अवतार प्रकाशित कियेहैं १६७ और अमित वीर्य्यवाले और सर्वलोकके गुरुऔरकीर्त्तनकरनेकेयोग्य ऐसे विष्णुके अवतारोंकाकीर्त्तनकरनेसे सवपितर प्रसन्न होजातेहैं १६८ ऐसे मुनिजनोंने कहाहै और

योगेश्वररूप विष्णुकेइनमायारूप अवतारोंको श्रवणकरनेसे १६९ भगवत्के प्रतापसे मनुष्योंके पापोंका नाश होजाताहै और ऋद्धि सिद्धि भोग इन्होंकी प्राप्तिहोतीहै १७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांद्विचत्वारिंशोऽध्यायः ४२ ॥

तेंतालीसवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे विष्णुके विश्वरूपको कृतयुगमें हरि और देवताओंमें बैकुंठरूप को और मानुष युगमें कृष्णरूप को मेरे से श्रवणकर १ और विष्णुकेईश्वरपनेको और कर्मोंकी वर्त्तमानभूत भविष्य ऐसीगहनगतिको हेराजन् श्रवणकर २ और अव्यक्त और व्यक्त चिह्नवाला और अनंतात्मावाला और सबका आदिकारण और अविनाशी ३ और सामर्थ्य वाले ऐसे नारायण कृतयुगमें हरिरूपको धारण करतेभये ४ और ब्रह्मा इन्द्र चंद्रमा धर्म शुक्र बृहस्पति ५ देवते इन्होंके रूपोंको प्राप्तहो यहीविष्णु इन्द्रके छोटे भ्राता बनतेभये ६ अर्थात् दैत्य दानव राक्षस इन्होंके नाशके अर्थ अदितिके पुत्रहोके जन्मतेभये ७ और यहीविष्णु आदिमें ब्रह्माजीको रचतेभये और पूर्व पुरुषरूप ब्रह्माजी सृष्टिकल्पमें प्रजापतियोंको रचताभया ८ और वेप्रजापतिशरीरोंको फैलातेहुयेब्रह्मवंशोंकोरचतेभये तिन ब्रह्मवंशोंसे शाश्वतरूपवेदकीप्रकटताहुई ९ ऐसेआश्चर्य्य रूप विष्णुके अवतार हुयेहैं सो मेरेसे तू जान १० और कृतयुगमें वृत्रासुर को मारने के वास्ते त्रिलोकी में तारकामय नाम से विख्यात युद्ध हुवा है ११ तिसमें गर्वितरूप दैत्य देव यक्ष नाग इन्होंको मारतेभये १२ तब मरनेकेभयसे युद्धसें बिमुखहुये देवता आदि मनकरके रक्षाकरनेके योग्य नारायणकी शरणभये १३ इसी समयमें अति तेजवाले मेघ सूर्य्य चन्द्रमा ग्रह इन्होंसे संयुक्त आकाशको आच्छादित करतेभये १४ और चलायमान बिजली के समूहोंसे बेधित किये और आपसके वेगसे हतहुये ऐसे सात पवन वेगसे चलतेभये १५ और प्रकाशमानजल और बज्रपात औरपवन

अग्नि इनआदिघोर उत्पातोंसे दग्ध हुआ अम्बरप्रकाशित होनेल-
गा१६और हजारहां उल्का पड़नेलगीं औरआकाशमें स्थितबिमान
मुंधेहोकर पृथ्वीमें पड़नेलगे और कितनेक ऊपरको जानेलगे १७
और जैसे युगांतमें संसारकोभय होताहै तैसे उससमय में अनेक
प्रकारके भयहोनेलगे १८ और अंधेरासे प्रभारहित सम्पूर्णहोने से
कुछभी नहीं जानागया और अंधेरा के समूहसे परिक्षिप्त हुई दशों
दिशा नहीं प्रकाशित होनेलगीं१६ और घोररूप अंधेरे से आवृत्त
हुआ आकाशभी नहीं दिखताभया तब २० बद्दलोंके समूह और
अंधेराको अपने भुजाओंसे दूरकर श्रीकृष्ण मेघरूप पर्वतकेसमान
कांतिवालाऔरबद्दलोंकेसमान रोमोंवालातेजऔर शरीरसेकृष्णरूप
और कृष्ण पर्वतकेसमान और प्रकाशित पीलेवस्त्रोंको धारणकिये
हुये २१ और तपायाहुआ सुवर्णके गहनोंको पहिनेहुये और धूमा
के अंधकारके समान शरीरको धारणकिये और युगांत की अग्निके
समान प्रकाशवाले२२औरआठगुने पुष्टकंधोंवालेऔरमुकुटसे आ-
च्छादित मस्तकवाले और अतिप्रकाशवालेशस्त्रोंसेशोभित२३और
चन्द्रमा सूर्यकी किरणोंकेसमान प्रकाशवाले और पर्बतके शिखरके
समान ऊंचे२४और सबको आनंदितकरनेवालेऔरशरसर्प इन्होंको
धारण करनेवाले२५और शक्ति हल शंख चक्र गदाइन्होंको धारण
करनेवाले और क्षमाकेमूल और हरितघोड़ोंसे संयुक्त२६ औरगरुड़
कीमूर्त्ति सेसंयुक्तध्वजासेशोभितऔरचंद्रमासूर्यरूपचक्रसेसंयुक्त २७
और मंदराचलरूप पीनसे संयुक्त और अनंत रस्सियों से संयुक्त
और गृहनक्षत्ररूप धुरेसे संयुक्त २८ ऐसे रथमेंस्थितहुयेईश्वरको
दैत्योंसेपराजितहुये देवते देखतेभये२६ तबइन्द्रआदिदेवते अंजली
बांध जयशब्दका उच्चारणकर शरणरूप देवकेशरण होतेभये ३०
तब तिन्ह देवताओं की बाणी को श्रवणकर विष्णु भगवान् उस
युद्धमें दैत्योंको नाशनेके अर्थ मनकरताभया ३१ और आकाश में
स्थित विष्णु सब देवतोंकेअर्थ प्रतिज्ञा सहित बचनकहनेलगा ३२
कि हे देवताओ शांतिको प्राप्तहोजाओ और भय मतकरो मैं सब

दैत्योंको जीतताहूं इस त्रिलोकीके राज्यको फिर ग्रहणकरो ३३ तब सत्यसंधरूप विष्णुके वाक्यसे प्रसन्नहुये देवते उत्तमप्रीतिकोप्राप्त होतेभये जैसे अमृतकी प्राप्तिसे भयेहैं तैसे ३४ तब अंधेराकानाश होताभया और मेघ दूरहोतेभये और सुंदरपवन चलनेलगे और दशोंदिशा शुद्धहोतीभई ३५ और सबतारागण प्रकाशित होकेचंद्रमाकी परिक्रमा करतेभये और सब प्रकारके तेज प्रकाशित होके सूर्यकी परिक्रमाकरनेलगे ३६ और सबग्रह बिग्रह को त्यागतेभये और सब समुद्र शुद्धहोतेभये और सब मार्ग धूलिसेरहित होतेभये और स्वर्ग आदिके मार्गभी शुद्धहोतेभये ३७ और नदी समुद्र भी अपनेक्षोभोंको त्यागतेभये और मनुष्योंके अंतरात्मामें पंचमहाभूत और इन्द्रियोंके गण सुंदरताको प्राप्तहोनेलगे ३८ और शोकों से रहित महर्षि भी ऊंचेप्रकारसे वेदोंका अध्ययनकरनेलगे ३९ और यज्ञोंमें स्वादसे संयुक्त द्रव्यहोताभया और तिसको अच्छीतरह से अग्नि देवता खानेलगा ४० और सब धर्मोंकी प्रवृत्ति होती भई औरप्रसन्नमनवाले और प्रीतिसे युक्त ऐसे लोकहोतेभये ४१ ऐसे जब विष्णुने प्रतिज्ञाकर दैत्योंका नाशकरनेके अर्थबाणी प्रकाशित कीतब यह सब बृत्तांतहुआ ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांत्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

चवालीसवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे तब दैत्य दानव विष्णुकेदिये अभयको सुनके युद्धमें अति उद्योग करनेलगे १ अर्थात् सोनासे बनाहुआ और अविनाशी और चारचक्रोंसेयुक्त और शस्त्रोंसे कल्पितकिया२ और अनेकप्रकारके बाजाओंसे शब्दित और गैंडाकीचर्मसेमढ़ाहुआ और रत्नोंकेसमूहोंसे सजायाहुआऔर सोनाके समूहोंसेभूषितकिया हुआ ३ और ईहा मृगोंके गणोंसे आकीर्ण और पक्षियों से प्रकाशित और दिव्यअस्त्रऔर तूणीरको धारणकरनेवाला और मेघोंकेसमान शब्दकरनेवाला४और सुंदरपीनऔर ध्वजासे संयुक्त और सुंदरधूरी

वालाऔरगदा परिघ इन्होंसेपूरितऔर मूर्त्ति वाले समुद्रकेसमान५ और सुवर्ण के गहनों से संयुक्त और सुवर्ण से शोभित किया और बहुतसी ध्वजाओंसेशोभित और सूर्यसहित मंदराचल पर्वतके समान ६ और हाथीरूप बद्दलोंके सदृश और लम्बेकेशर के समान अति तेजवाला और हजारहीं तारागणों से संयुक्त और हजारहों मेघोंके समान शब्द करताहुआ ७ और प्रकाशमान और आकाश मार्गमें चलनेवाला और दिव्य और दूसरोंके रथको पीड़ा देनेवाले ऐसे रथमें युद्धकरनेकेअर्थमयनामा दैत्यस्थितहुआ जैसे मेरु पर्वतपै प्रकाशमानसूर्य८और एक कोशतक बिस्तारवाला औरवायसअर्थात् काकरूप ध्वजावाला और अनेकप्रकारके पर्वतोंकेसमूहसे आकीर्ण औरनीलेपर्वतके समान६ औरकालरूप लोहके चरणोंसे संयुक्तऔर अंधेराकोदूरकरनेवाली किरणोंसे संयुक्तऔरगर्जतेहुये मेघकेसमान गर्जताहुआ१०और लोहके समूहरूप झरोखोंसे दीशतऔरलोहाके शस्त्र परिघ शूल बर्च्छी११प्राश और पाश मुद्गरभाला फरसाइन आदिसेशोभित,१२और बैरियोंकेअर्थ मानो दूसरा मंदराचल पर्वत है ऐसा और हजारहोंगधोंसे संयुक्त ऐसे रथमें तारनामवाला दैत्य स्थित हुआ १३ और गदाको हाथमें ग्रहणकर सेनाकेसन्मुखक्रोध को प्राप्तहुआ बिरोचनदैत्य स्थितहुआ १४ जैसे दीप्त सींगवाला पर्वत और बैरियोंकी सेनाको मर्दनकरनेवाला और हजारहों घोड़ों से संयुक्त ऐसेरथमें हयग्रीव दैत्यस्थितहुआ१५और अतिबड़े धनुष की टंकार करताहुआ बराहदैत्य सन्मुख स्थितहुआ १६ जैसे बड़ा पर्वत और गर्वसे नेत्रोंकेद्वारा क्रोधसेउपजा जलको बहाताहुआ और दंतओष्ठ मुख इन्होंको फरकाताहुआ युद्ध करनेकी इच्छा करता भया १७ और अठारह घोड़ोंसे संयुक्त रथमें बहुतसे दैत्योंके गणोंसे संयुक्त त्वष्टादैत्य स्थितहोके परिक्रमणकरनेलगा१८ और श्वेतकुंडलोंको पहिनेहुये औरविप्रचित्तिकापुत्र और कैलास पर्वतके समान कांतिवाला ऐसा श्वेतनामवाला दैत्य युद्धके अर्थ सन्मुख स्थितहुआ १६ और पर्वतके पत्थररूप शस्त्रोंकोग्रहणकर बलिका

पुत्र अरिष्टनामवाला दैत्य युद्ध करनेको सन्मुखस्थित हुआ जैसे पृथ्वीको धारणकरनेवाला पर्वत २० और किशोरअवस्थाके मनुष्य के समान प्रेरितहुआ किशोर नामवाला दैत्य दैत्योंकी सेनाके मध्यमें सूर्यके समान प्रकाशित होके स्थितहुआ २१ और लंबेमेघके समान कांतिवाला और लंबेलंबे वस्त्र और गहनोंसे शोभित ऐसा लंबनामवालादैत्य दैत्योंके समूहमें प्रकाशित होनेलगा जैसे धूमरसे संयुक्त सूर्य्य २२ और टेढ़े प्रकारसे युद्धकरनेवाला और दांतओष्ठ नेत्र इन्हरूप शस्त्रोंवाला ऐसामहाग्रहराहु दैत्य हंसताहुआ दैत्योंके मध्यमें सन्मुख स्थितहुआ २३ और कितनेक दैत्यघोड़ोंपै स्थितहो प्रकाशित होनेलगे और कितनेकदैत्य हाथी सिंह भगेरा शूकररीछ इन्होंपै सवारहो प्रकाशित होनेलगे २४ और कितनेकदैत्य गधा उंट बद्दल पक्षी पवन इन्होंपै स्थितहो प्रकाशित होनेलगे २५ और कितनेक पियादे और कितनेक भयानक मुखसे युक्त और कितनेक एकपैरवाले कितनेक दोपैरवाले ऐसेहोके नाचतेहुये युद्धको चाहते भये २६ औरकितनेक भुजाओंको बजातेहुये और कितनेकशार्दूल के समान शब्द करतेहुये दैत्यबोलने लगे २७ और गदापरिघधनुष और परिघाके समानबाहु इन्होंसे बहुतसेदैत्य देवतोंको झिड़कने लगे २८ और प्राश फांसी तलवार भाला अंकुश पट्टिश शतघ्नी मुद्गर परिघ चक्र इनआदि शस्त्रोंसे क्रीड़ा करतेहुये दैत्य अपनी सेनाको आनंदित करतेभये २९ ऐसेयुद्ध करनेके अर्थ देवताओं के सन्मुख दैत्योंकी सेनास्थित होतीभई ३० ऐसे वायु अग्नि जल बद्दल पर्वत इन्होंके समान सेना युद्धके अर्थ उन्मत्त के समान प्रकाश होतीभई ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांचतुश्चत्वारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

पैंतालीसवां अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे हे जनमेजय दैत्योंकी सेना का बिस्तार तैंनेसुना अबदेवतों की सर्वसेनाका वैष्णवाबिस्तारको श्रवणकर १

तब आदित्य आठवसु ग्यारहरुद्रदोनों अश्विनीकुमार ये बहुतसी सेनाके संग यथाक्रमसे युद्धके अर्थ कवचों को धारण करतेभये २ पीछेलोकों की रक्षाकरनेवाला और हजार नेत्रोंवाला और सब देवताओंका स्वामी ऐसाइन्द्र ऐरावत हाथी पै सवार हुआ ३ और इसी हाथी के बाईं तर्फ को गरुड़ जीके वेगके समान वेगवाला और सुंदर चक्ररूप पैरोंसे संयुक्त और सेना और हीरासे जटित हुआ ४ और देवगंधर्व यक्ष इन्होंसे रक्षित और प्रकाशवाले सभापति और महर्षि इन्हों से स्तुतिकिया ५ और वज्रआदि शस्त्रों से संयुक्त और पर्वतरूप मेघों के गणोंसे गुप्त ६ ऐसारथ इन्द्रका है तिसमें युद्धकरने के वास्ते जबइन्द्र स्थितहुआ तबसन्मुख उत्तम यज्ञमें स्थितहुये ब्राह्मण गानकरने लगे ७ और जबइन्द्र गमन करनेलगा तबसब देवते बाजेबजानेलगे और सैकड़ोंअप्सरानृत्य करनेलगीं ८ और हजारहों घोड़ोंसे और मातुलिनाम सारथी से युक्त इन्द्रकारथ शोभायमान होनेलगा ९ जैसे सूर्यके तेजसे सुमेरु पर्वत १० और दंड और कालयुक्त मुद्गर इन्होंको ग्रहणकर और अपने शब्दोंसे दैत्योंको भयदेता हुआ ऐसा धर्मराज देवताओं की सेनाके बीचमें स्थित हुआ ११ और चारसमुद्रोंसे और अपनेओष्ठ प्रांतोंको चाटतेहुये सर्पोंसे रक्षित और शंखमोती इन्हों से जटित बाजुबंध को धारण किये हुये और जलमय शरीरको धारण किये हुये १२ और कालपाशका धारणकियेहुये और चंद्रमाकी किरणों के समान घोड़ोंपै सवारहुआ और बायुकवेगसे हजारहों प्रकारकी लीलाकरता हुआ १३ और सफेद रंगके शुद्धकपड़ों को पहिनेहुये और अनेक प्रकार के मंगोंकी मालाको धारणकिये और श्यामरंग कीमणियोंके हारसे विभूषित १४ और फांसियोंकोधारण कियेहुये औरभिन्नवेलावालेसमुद्रकेसमानक्षोभको प्राप्त हुआ ऐसावरुणयुद्ध करनेकेअर्थ देवताओंकोसेनाकेमध्यमेंस्थितहुआ १५ और यक्षराक्षस इन्होंको सेनासेसंयुक्त और गुह्यकोंके समुहसे संयुक्त और मणियों के प्रकाश से श्यामशरीर को धारण करने वाला और पालकी में

स्थितहुआ १६ औरशंखपद्मरूप खजानोंकापति औरद्रव्यका स्वामी ऐसा कुबेर गदाको हाथमें लिये दीखताभया १७ पीछे पुष्पकविमानमें स्थितहोयुद्धके अर्थ यही शिविका मित्रकुबेरशोभायमान होके १८ दैत्योंके सन्मुख युद्ध करनेके अर्थस्थितहुआ १६ औरसेनासे पूर्व दिशाको इन्द्रस्थितहुआऔरदक्षिणदिशाको धर्मराज स्थितहुआ और पश्चिमदिशाको बरुण स्थितहुआ औरउत्तरदिशाको कुवेरस्थितहुआ २० ऐसे ये चारोंलोकपाल उस देवसेना की अपनी अपनी दिशा में रक्षाकरतेभये २१ और दीप्तमान रश्मियोंसे संयुक्त और प्रकाशमान औरआकाशमें चलनेवाला और सातघोड़ोंसेसंयुक्त २२ औरउदयपर्बत औरअस्तपर्वत सुमेरुइन्होंपैचलनेवाला और हजारहों रश्मियोंसे संयुक्त २३ ऐसेरथमें अपनीबारा मूर्त्तियोंसेसंयुक्त सूर्य्य स्थितहोके देवताओंके बीचमें प्रकाशित होताभया २४ और सपेदरंगकेघोड़ोंसेसंयुक्त रथमेंशीतलकिरणोंवाला औरशीतलजलसे पूरित कांतिसे जगत्को तृप्तकरताहुआ २५ और बहुतसे ताराओंसे संयुक्त और ब्राह्मणोंका स्वामी और रात्रिके अंधेरेको दूरकरनेवाला २६ और आकाशमें सबतारागणोंकापति और रसोंके रसको देनेवाला और ओषधियोंको रक्षा करनेसे अमृतका समुद्र २७ ऐसा चंद्रमा स्थितहोनेलगा तब सब दैत्य इसचंदमाको देखतेभये २८ और जोसब प्राणियोंकाप्राणऔर जोमनुष्योंमें प्राण अपान उदान समानव्यान इनपांच भेदोंसे विख्यातहै २६ औरचराचररूपइनतीन लोकोंको धारणकरनेवाला ३० और अग्निका सारथी और शब्दका आदिकारण और सातस्वरों में गान करानेवाला ३१ और उत्तम तत्त्व और शरीरसेरहितऔर आकाशमेंचलनेवाला और जल्दचलनेवाला और शब्द का योनि और संपूर्ण प्राणियों का आयुरूप ऐसावायु दैत्योंको पीड़ादेताहुआ अच्छीतरह चलनेलगा ३२ और देवगंधर्व विद्याधर इन्होंसेसंयुक्त मरुतदेवते तलवारोंसे क्रीड़ाकरनेलगे ३३ और क्रोधसेउपजे विषकोरचतेहुये सर्प्पोंकेपति देवताओंके शररूपहोकेमुखको फाड़आकाशमें बिचरनेलगे ३४ औरशिलो

शृङ्ग शतृ शाखावाले बृक्षइन्होंसे संयुक्तपर्वत देवताओंके अर्थ दैत्यों
कीसेना पै प्रहार करनेकेवास्ते सब पर्वत प्राप्तहुये ३५ और पद्म-
नाभ त्रिविक्रम इननामोंवाला और युगांतिके अग्नि केसमान और
जगत्‌कास्वामी ३६ और समुद्रकाआदिकारण औरमधुदैत्यकोमारने
वाला और हवनके द्वारा भोजनकरनेवाला और यज्ञसेपूजित और
पृथ्वीजलआकाश इन्होंकेरूपवाला और भूतात्मा और शांतिस्वरू
प और शांतिकरनेवाला और शत्रुओंको मारने वाला ३७ और ज-
गत्कायोनि और जगत्कावीज और जगत्‌का गुरु और सूर्य्य अग्नी
इन्हों के समान तेजवाला ३८ और शंखचक्र गदाको धारण करने
वालाजैसे परिवेशसहित सूर्य्यकामंडल ३९ और बांयेहाथमें सब राक्ष
सोंको नाश करनेवाली औरशत्रुओंकी मृत्युकरने वाली ऐसी बड़ी
गदाको धारण करनेवाला ४० औरशेषहाथोंमें शार्ङ्ग धनुषआदि
शस्त्रोंको धारण करनेवाला और गरुड़जी केचिन्हकीध्वजाकोधारण
करनेवाला ऐसा विष्णुभगवान ४१ कश्यपकापुत्र और सर्पोंको खाने
वाला और पवनसे अधिक गमनकरने वाला और आकाशमें क्षोभ
करने वाला औरआकाश मेंगमनकरनेवाला ४२ और सर्पराजको
मुखमें धारन करनेसे शोभित और मंदराचल पर्बतके समान ऊंचा
४३ और देवासुर युद्धमें सैकड़े बारविख्यात पराक्रम वाला और
अमृत के अर्थ युद्धमें इन्द्र के हाथ से फेंके हुये बज्र से चिन्हित
हुआ ४४ और शिखावाला और चूलवाला और तपायमान सोना
के कुंडलों को पहरने वाला और विचित्र पत्तों के कपड़ोंवाला और
धातुओंसे संयुक्त पर्वतकेसमान ४५ और चंद्रमाके समानतेजवाले
मणि रत्नों से प्रकाशित ४६ और सुंदररूप पंखों से आकाश को
आच्छादित करता हुआ जैसे युगांत में जलको देनेवाले इन्द्र
धनुष ४७ और नील लोहित पीत ऐसी पताकाओं से अलंकृत
और ध्वजारूप वेषसे आच्छादित और बड़े शरीरसे संयुक्त ४८।४९
और अरुणसेपीछे उपजनेवाला और आकाशमें उड़नेवालोंमें उत्तम
और सुंदरपंखोंवाला ऐसेगरुड़जीपै श्रीमान्‌विष्णु सवारहोके युद्धमें

प्राप्तहुये तबमुनिजन सावधान होके मंत्ररूपवाणीसेविष्णुकी स्तुति करतेभये ५० और कुवेरजीसे संयुक्त और धर्मराजहै अगाड़ी जिसमें और वरुणजीसे परिक्षिप्त और इन्द्रसे प्रकाशित ५१ और चंद्रमा की किरणोंके समानशुद्ध और युद्धकी मत्सरतासे वेगित और पवन के समान शब्दवाला और प्रकाशितरूप अग्निके समान ५२ और विष्णुके तेजसे आवृत ऐसी देवताओंकी सेना युद्धके अर्थ तैय्यार भई ५३ पीछे देवताओंका कल्याण अर्थात् मनोवांछितहो ऐसे बृहस्पतिजी गानकरने लगे ५४ और दैत्योंका कल्याण अर्थात्मनो वांछितहो ऐसेशुक्राचार्य्यजी कहनेलगे ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्व भाषायांपंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

छियालीसवां अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे पूर्वोक्तदोनों सेनाओंसे आपस में जयकी इच्छा करनेवाले देवता और दैत्योंका आपसमें युद्ध होनेलगा १ तबनाना प्रकारके प्रहारकरनेवाले दैत्य देवताओं के संगयुद्ध करने लगे जैसे पर्वतोंसे पर्वत २ तबधर्म पापगर्व विनय इन्हों से संयुक्त देवते और राक्षसोंका घोररूप युद्धहोने लगा ३ पीछे वेगवालेरथों में स्थित और अनेक प्रकारके हथियारों को ग्रहण करने वाले ४ आपसमें जब हथियारों को चलाने लगे तबजगत्कोत्रास देनेवाला अतिउग्र युद्धहुआ ५ पीछे अपनेहाथोंसे फेंकेहुये परिघ आदि शस्त्रों से दैत्य इन्द्र आदि देवतोंको युद्धमें मारनेलगे ६ तब अतिबल वाले दैत्योंके हाथसे पीड़ितहुये और दुःखित मनसे संयुक्त ऐसे देवते युद्धमें उग्रग्लानि को प्राप्तहुये ७ पीछेअस्त्रजालोंसे दुःखितहुये और परिघ शस्त्रसे खंडित मस्तकों वाले और टूटीहुई छाती वाले ऐसेदेवताओं के शरीरमें घाओंसे बहुतसारक्त बहनेलगा ८ अर्थात् फांसियोंके जालोंसे दैत्योंने उद्योगसे रहित देवतेकरदिये और दैत्यों की मायासे मोहित हुये देवते चेष्टा करनेकोभी सामर्थ्य नहीं होते भये ९ और स्तंभितऔर प्राणोंसे रहितके समान आकृतीवाली और

उद्योग शस्त्र आदिसे रहित ऐसी देवताओंकी सेना राक्षसोंने करदी १० तब वज्रसे मायाकी फांसियोंको काटताहुआ इन्द्रघोररूपदैत्य सेनामें प्रवेशकर ११ और बहुतसे दैत्योंको मार तामस रूप अस्त्र जालसे अंधेरा संयुक्त दैत्योंकी सेनाको करताभया १२ तब इन्द्रके तेजरूप अंधेरेसे व्याप्तहुये देवते और दैत्य आपसमें नहीं जानते भये १३ और मायाकी फांसीसे छुटेहुये देवते दैत्यों के तमोभूत शरीरोंको काटके पृथ्वीमें गिराने लगे १४ तब संज्ञासे रहित और नीले तेजवाले और दुःखित ऐसेदैत्योंकेगण पृथ्वीमें पड़नेलगे जैसे छिन्नपक्षवालेपर्वत १५ ऐसे अंधकाररूपी समुद्रमें प्रविष्टहुई दैत्यों की सेना दुःखितरूप दीखनेलगी १६ तबइसतामसी मायाकोदग्ध करनेवाला मयनामा दैत्य युगांतमें लोकको दग्ध करनेवाली और ऊर्वकेपुत्र अग्नीकी रचीहुई १७ ऐसीमायाको रचताभया तब उस मायाके प्रतापसे सब अंधेरादग्ध होगया और सूर्यके समान तेजवाले दैत्य युद्धमें उड़नेलगे १८ तब और भीमायाके प्रतापसे दग्ध हुये देवते चंद्रमाके देशमें शीतल जलके ह्रदमेंस्नान करनेको चाहतेभये १९ और उसमाया से दग्धहुये और तेजसेभ्रष्ट और अतितप्त होते हुये ऐसे देवते इन्द्रकी शरणगये २० तब इन्द्रसे प्रेरित कियावरुण वाक्यकहनेलगा २१ हेइन्द्र पहले ब्रह्मर्षि सेउपजा और ब्रह्माकेगुणों के समान गुणोंवाला और अतितेजस्वी ऐसा ऊर्वदारुणतप करता भया २२ तब आदित्यके समान अपने तेजसे जगत्को तपायमान करनेलगा तब देवते देवर्षिमुनिजन येसब समीपमें आके स्तुतिकरने लगे २३ और दैत्योंका स्वामी हिरण्य कशिपु दैत्यभी परमतेजवाले इसऋषिकोजानताभया २४तबसबमुनि ऊर्वतपस्वी केअर्थकहनेलगे हेभगवन् यहविप्रकुल वंशसे रहितहै २५ तिसमें संतान सेरहित आप अकेलेहैं और आपका गोत्रभी नहींहै और आपकौमार ब्रतको प्राप्तहो क्लेशकरतेभयेहैं २६ और आपतपकरनेसे ब्रह्माजीके समान कीर्त्ति वालेहैं २७ इसवास्ते बंशचलानेके अर्थअपनी आत्मासे आत्माको बढ़ाके बढ़ेहुये तेजसे दूसरा शरीरकोरचो तबऐसे मुनियों के

वचन कोश्रवणकर मनमें ताड़ितहुआ ऊर्बमुनिसब मुनियोंकी निंदा करनेलगाऔरयहबचन कहताभया२८।२६कि मुनिजनोंकायहीशाश्वतधर्महै कि बन केमूलफल आदिका भोजनकरके कालको ब्यतीतकरैं ३० और ब्रह्मयोनिमें उपजेहुये आत्मवर्त्ती ब्राह्मणने अच्छी तरहसेवितकिया ब्रह्मचर्य्यब्रह्माजीकोभी चलायमान करदेताहै३१ और ब्राह्मणोंकी तीनबृत्तीहैं एकब्रह्मचर्य्य एक गृहस्थाश्रममें बसना एकबनमें बसनातिन्होंमें हमबनबासीहैं ३२ अर्थात् बनमेंहमारी आजीविकाहै और जलकाभोजन करनेवाले और बायुकाभोजन करनेवाले और दांतरूप उलूखलको माननेवाले और पत्थरपै कूटकेबनफलको खानेवालेऔरनिरसन्नत को करनेवाले औरपंचाग्निसे तपकरनेवाले३३।३४औरव्रतोंसेसंयुक्तऐसेसबतपस्वीब्रह्मचर्य्यकोअगाड़ीकर उत्तमगतिकी प्रार्थना करतेहैं और ब्राह्मणके ब्रह्मचर्य्यहीब्राह्मणपनाहै ऐसेब्रह्मबादीजनकहतेभयेहैं ३५औरब्रह्मचर्य्यमेंधीर्य्यता स्थितहै और ब्रह्मचर्य्यमें तपस्थितहै और जो ब्राह्मण ब्रह्मचर्य्यमें स्थितहैंवे ब्राह्मणस्वर्ग में स्थितहैं ३६ और योगकेबिनासिद्धिको प्राप्तिनहींहै और सिद्धिकेबिना यशनहींहै और ब्रह्मचर्य केसमान यशकीजननहींहै३७और जो इंद्रियों के समूहको और पंचमहाभूतोंको बसमेंकरके ब्रह्मचर्यको धारणकरताहै इसकेउपरांत कोईभीतपनहींहै ३८ और योगकेबिना शिरपैजटा कोधारण करना और नियमकेबिना ब्रतकाआरंभ करना और ब्रह्मचर्य्यबिनापूजाकरनीयेतीनों दंभसंज्ञक अर्थात् पाखंडकहातेहैं ३६ कहांभार्याहै कहां संयोगहै कहांभावका बदलजानाहै जैसे ब्रह्माजीने मनसेयह प्रजा रची है ४० सोतुम्हारे तपमें तपका बीर्य है इसवास्ते प्राजापत्य कर्म करके मनके द्वारा पुत्रों को रचो ४१ और क्योंकि मन से रचीहुई योनिमें पुत्रकी उत्पत्ति करनी तपस्वियों के वास्ते लिखी है ४२ और साक्षात् भार्याका संयोग तपस्वियों को नहीं करना चाहिये ४३ और निर्भयरूप होके तुमने असत् पुरुषों की तरह मेरे प्रति बचन कहना अयुक्त है ४४ अबमैं भार्याके संयोग बिना

अपने शरीरसे उत्पन्नहुये पुत्रको रचताहूं ४५ ऐसे आत्मासे मेरा आत्मा वनकीबिधिसेप्रजाको दग्धकरनेवालाऔर द्वितीयआत्मादूसरेपुत्रकोजनेगा ४६ तबतपस्वी ऊर्व अपनी जंघाको अग्निमें प्राप्त करएकडाभसे मथताभया ४७तबतिसकी जांघको भेदनकरके इंधन सेरहित औरज्वाल अर्थात् अतिप्रकाश रूप और जगत्को दग्धकरनेकी इच्छाकरनेवाला ऐसा अग्निरूपपुत्र उपजा ४८ औरउपजतेही अतिक्रोध करनेलगाऔरपिताके अर्थ कहनेलगा ४९ हेजनकमेरेको क्षुधालगरहीहैसोइसजगत्कोदग्धकरूंगा इसलियेमेरेकोत्याग५० ऐसे स्वर्गपर्यंत फैलीहुई लठासे युक्त अग्नि दशदिशाओंको दग्ध करताहुआप्रलय समय के अग्निके समानबढ़नेलगा ५१ तबसब संसारके कल्याणको चाहनेवाले ब्रह्माजी ऊर्वमुनिकेसमीप में प्राप्त हो ५२ प्रथम हेमुनेऐसासंबोधन देकर ऊर्वसेकहनेलगे हेपुत्रइस तेजको धारणकरो और संसार पै दयाकरो ५३ और तेरे पुत्ररूप अग्निकी सहायतामैं करूंगा अर्थात् वसनेको स्थान और अमृतके समान भोजनदूंगा ५४ यह मेरा बचनसत्यहै आपश्रवण करो५५ तबऊर्वमुनिकहनेलगे जोआप मेरेपुत्रके अनुग्रह के अर्थ ऐसी दया करतेहैं इसवास्ते मैं धन्यहूं औरअनुगृहीतहूं ५६ परंतु जन्मकालमेंमेरीआज्ञासे तृप्तहोने वालापुत्रकिन पदार्थोंसे तृप्तकियाजावेगा अर्थात् सुखीकिया जावेगा ५७ औरकिसजगहपर बसायाजावेगा और पराक्रम के समान क्याभोजन किया करेगा ५८तब ब्रह्माजी कहनेलगे कि समुद्रकेमुखमें जहांबड़वाअग्निबसताहै तहांजलमेंबास करेगा५९औरजलरूपहविकाभोजनकरेगा६०पीछेयुगांतमें मेरेसंग यहअग्निबिचरेगा ६१ और युगांतमें जलको खानेवाला और सब प्राणीदेव दैत्यराक्षस इन्होंको दग्धकरनेवाला ऐसाहोवेगा ६२ तब ऐसेही होजावे ऐसे कहनेवालाऔर आच्छादित प्रकाशवाला ऐसा अग्निपिताकेअर्थ अपनेतेजको देकरसमुद्रके मुखमें प्रवेशकरताभया ६३ पीछे ऊर्वका पुत्र रूपअग्निके प्रभावको जाननेवालेसबमहर्षि और ब्रह्माजी अपने अपने स्थानोंकोचलेगये ६४ तबइस अद्भुत

रूपऊर्व्वमुनिको देखहिरण्यकशिपुराक्षस मुनिकोपूजके पश्चात् नम्र रूपहोके कहनेलगा६५ हे भगवन् जो आपकेतपसे ब्रह्माजी प्रसन्न हुये यह अद्भुतकार्य्य हुआहै और हे महाव्रत आपका और आपके पुत्रका मैं भृत्य अर्थात् अनुचरहूं इस वास्ते उत्तमकर्म्मकेद्वारा मेरी श्लाघा करानी चाहिये ६६ और मैं तेरेही वश में स्थितहूं और तेरेही आराधन में तत्परहूं परन्तु हे मुनिश्रेष्ठ मैं शिथिल रूपहो रहाहूं सो इसमें आपही का पराजयहै ६७ तब ऊर्व्वमुनि कहने लगे कि जो तैंने मेरेको गुरु मान लिया इस वास्ते मैं धन्यहुआ और तू अनुग्रहीतहुआ इसवास्ते हेसुव्रत मेरे प्रतापसे तेरेको भय नहीं उपजेगा ६८ मेरे पुत्रकी रचीहुई इस मायाको ग्रहणकर यह इंधन से रहित और अग्नि स्वरूप और अग्नि से भी उग्र ऐसीमाया है ६९ यह तेरेबंश में वशीभूत रहेगी और अपनेपक्षकी रक्षाकरेगी और शत्रुकेपक्षमें प्रहारकरेगी७० तबऐसेहीहोजाओ इसबचनका उच्चारण करमायाको ग्रहणकर पीछे मुनिजनकेअर्थ प्रणामकर प्रसन्नहुआ और सिद्धप्रयोजनवाला ऐसा दैत्यराजस्वर्गमें प्राप्तहुआ ७१सोयह देवताओंको भी दुःखदेनेवाली मायाऊर्व्वमुनिके पुत्ररूप अग्निनेरचीहै ७२ पीछे जबदैत्यराजअनर्थ करनेलगा तबइसमाया केअर्थ ऊर्व्वमुनिने शापभी दिया है ७३ इसमायाको दूरकरना आपचाहतेहैं और सुखकीइच्छाकरतेहैं तोहेइन्द्र जलकायोनिरूप और मेरा मित्र ऐसेचंद्रमाको मेरे अर्थ देवो७४ तिससेसहित और जलकेसमूहसे संयुक्त मैं बरुणतेरे प्रतापसे इसमायाका नाशकरदूंगा इसमें संशयनहींहै ७५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांषट्चत्वारिंशोऽध्यायः ४६ ॥

सैंतालीसवां अध्याय ॥

बैशंपायन कहनेलगे कि देवताओंकी बृद्धिको चाहनेवाला इन्द्र प्रसन्नहोके कहनेलगा कि हेबरुण ऐसेही होवेगा पीछे अतिशीतलतारूप शस्त्रोंवाले चंद्रमाको युद्धकेअर्थ शिक्षितकर १ इन्द्रकहनेल-

गा हेचंद्र तू गमनकर और वरुणकी सहायताकर क्योंकि दैत्यों के नाशवास्ते और देवताओंकी जयवास्ते २ अतिवीर्य्य वाला और तारागणोंकापति और सबसंसारको रसकादेनेवाला ३ और समुद्र केसमान क्षय वृद्धिसेयुक्तऔरदिनरात्रि रूपकालको जगत्‌मेंयोजना करनेवाला४औरलोकछायारूपचिन्हसेचिन्हितऔरशशिरूप चिन्ह सेलक्षितऔरजिसकेचिन्हको नक्षत्रआदि देवतेभी नहींजानते५और सूर्य्य केमार्गसेउर्द्धस्थान मेंस्थित तारागणोंकेऊपरस्थितहोनेवाला और अंधेराकोदूरकर संपूर्णजगतको प्रकाशित करनेवाला ६ और श्वेतकिरणोंसे संयुक्त और शीतलरूप प्रकाशकरनेवालाऔर काल योगात्माऔरपूजनेकेयोग्यऔरयज्ञरसऔरअबिनाशी ७ और औषधियोंकास्वामी और क्रियाओंका आदिकारण और छंदोंका उत्पत्ति स्थानऔर शीतलताको भजनेवाला और शीतलकिरणों वाला और अमृतकाआधार औरचपल औरश्वेत बाहनोंसे संयुक्त८और कांत शरीरवालोंको कांतिऔरअमृतपीने वालोंका अमृत औरसौम्यरूप और सबसंसारके अंधेरेको दूरकरनेवाला और नक्षत्रोंकाराजा ९ ऐसातूचंद्रमाहै जिसमायासे हमदग्धहोते हैं तिस आसुरीमायाकोतू शांतकर १० तबचंद्रमा कहनेलगा हेदेवराज जोमेरेको युद्ध केअर्थ कहतेहैं सोमैंदैत्यकी मायाको नाशनेवाला शिशिरअर्थात् अतिशीत लताको वरसाताहूं ११ और मेरीशीतलतासे दग्धहुये और जाड़ा सेबेष्ठित माया औरमदसेरहित ऐसेदैत्योंको इस युद्धमें तूअभी देख १२ तब बैशंपायनकहनेलगे कि चंद्रमासे छोड़ीहुईजाड़ा रूपबृस्टी सबदैत्योंको आच्छादित करतीभई जैसेमेघों केसमूह १३ पीछेपाश और श्वेतजल इन्होंको धारण करानेवाले बरुण और चंद्रमाउस युद्धमें हिमपातसे और पाशपातसे दैत्योंकोमारतेभये १४ पीछे समुद्रोंकेसमान क्षोभितहुये जलोंकरके युद्धमें बिचरते भये १५ तब चंद्रमा और बरुणके कर्त्तब्यसे डूबतीहुई दैत्योंकी सेना दीखती भई १६ ऐसेचंद्रमा और बरुण दैत्यकीरचीहुई मायाको शांतकरते भये १७और चंद्रमा केजालसे दग्धहुये और बरुणकीफांसीसेबंधेहुयेसब

दैत्य चलनेको समर्थनहीं होतेभये जैसेशिरसे रहितपर्वत ६७ और चंद्रमासे मरेहुये और जाड़ासेपीड़ित और गरमाई रहित अग्नी के समान ऐसेसब दैत्य होतेभये ६८ तब उनदैत्योंके विचित्ररूप विमानकांतिसे रहितहोकेपृथ्वीमें पड़नेलगे और आकाशमें बुरीतरहसे जानेलगे ६९ ऐसेचंद्रमासे आच्छादित और वरुणकी फांसियों में बंधेहुये सब दैत्योंको आकाशमें देखमायाको जाननेवालामयनामा दैत्य ७० शिलाके समूहसे विस्तृत और वृक्ष आदिसे संयुक्त और कंदरा वन आदिसेयुक्त ७१ और सिंहव्याघ्र इन आदिसे आकीर्ण दैत्योंकेगणोंसे शब्दायमान और इहांमृगोंके समूहसे आकीर्णऔर पवनसे हलतेहुये वृक्षोंसेयुक्त ७२ और क्रौञ्चनामवाले मयके पुत्रकी रचीहुई ऐसीपार्वती मायाको चारोंतर्फसे आकाशमें रचताभया ७३ और शब्द पत्थरोंका वर्षना और वृक्षोंका पड़नाइन्होंसे देवताओंके समूहको मारनेलगा और दैत्योंको जिवावनेलगा ७४ औरतबचंद्रमा और वरुणकी माया नाशहोतीभई और पत्थर और शस्त्रोंसे दुःखित हुये युद्धमें देवगण हाहाकार करनेलगे और कितनेक देवतेपत्थरों को वृष्टिसे दुःखितहुये और सबप्रकारसे देवताओंकीसेना उद्योगसे रहित करदी ७५ और पत्थरोंकी वर्षा से औरवृक्ष पर्वत इन्होंसे घोरसंचारवाली पृथ्वी होनेलगी जैसेपर्वतोंसे ७६ और नानाप्रकार के पत्थर आदिसे पीड़ितभी किये परंतु विष्णुभगवान् उसयुद्धमेंनहीं कांपतेभये ७७ और अतिक्षमा करनेवाले विष्णुक्रोधकोभी नहीं प्राप्तहुये ७८ औरकालकोजाननेवाले और कालरूप मेघकेसमान कांतिवाले ऐसे विष्णुभगवान् देवते और दैत्यों के युद्ध को देखते हुये ७९ समयको देखतेभये पीछे विष्णुकी आज्ञासे प्रेरितकरे ८० अग्नी और पवन देवता मयकी रची माया को शांत करने के अर्थ तय्यारहुये ८१ तब इनदोनों देवताओंने मयकी सब माया दग्ध करदी ८२ और भस्मरूप बनाके नाशमान् भी करदी ८३ और अग्नी पवन आपस में मिलके युगांतके समान दैत्यों की सेनाको दग्ध करतेभये ८४ और अगाड़ी भाजताहुआबायु और तिसकेपीछे

भाजताहुआ अग्नी ये दोनों क्रीड़ाकरतेहुये दैत्योंकीसेनामें बिचरने लगे८५और जबआकाशसे दैत्योंकेबिमान भस्मरूपहोके पड़नेलगे और दैत्योंकीमाया कानाशहोनेलगा और अग्निअपने कर्मकोकर चुके ८६ और बायुआदिसे बिद्धहुयेबिमान भ्रष्टहोनेलगे और बिष्णुभगवान्की स्तुतिहोनेलगी ८७ और उद्योगसे रहित दैत्यहोने लगे और बंधनोंसे रहित त्रिलोकीहोनेलगी और साधु साधु ऐसे कहनेवाले सर्वदेवतेप्रसन्न होनेलगे ८८ और इन्द्रकोजय होनेलगी और मयकापराजय होनेलगा और सबदिशाओंकी शुद्धिहोनेलगी और धर्मकाबिस्तार होनेलगा ८९ चंद्रमा और सूर्य शुद्धहोके प्रकाशित होनेलगे और तीनोंलोक प्रकृतिमेंहोनेलगे ९० और मृत्युका बंधनहोनेलगा और अग्निमेंहवन होनेलगा और यज्ञभागोंको देवते ग्रहणकरनेलगे और स्वर्गको देखनेकी इच्छा करनेलगे ९१ और सबदिशाओंमें लोकपाल गमनकरनेकी इच्छाकरनेलगेऔरआनंदितरूप देवपक्षहोनेलगा और पराजितरूप दैत्यपक्षहोनेलगा ९२ और तीनपैरोंवाला धर्मप्रकाशित होनेलगा और तीनपैरोंसे रहित पापप्रकट होनेलगा ९३ और धर्मकाद्वार खुलनेलगा और सत् मार्ग वर्तमानहोनेलगा और सबबर्णअपने२धर्मोंमें और आश्रमोंमें स्थितहोनेलगे९४और प्रजाकीरक्षासे संयुक्तप्रकाश करनेवालेराजे होनेलगे और देवताओंकी स्तुतिहोनेलगी ९५ और दुःखोंसेरहित लोकहोनेलगा और दारुणरूप अंधेराकीशांति होनेलगी ऐसे बायु और पवनके संग्रामके अंतमें ९६ सूर्यके आकार मुकुटवाला और अतिप्रकाशित रूपबाजूबंधसे भूषित और मन्दराचल पर्बतकेसमान कांतिवाला और सैकड़ोंप्रहार करनेवालोंमें श्रेष्ठ और सौ १०० मुखोंवाला ९७ और १०० सौबाहुओंवाला और १०० सौशिरों वाला और शोभासेसंयुक्त और सौ १०० सींगोंवाले पर्बतकेसमान और ग्रीष्मऋतु में तृणआदि में लगाहुआ अग्नी के समान बढ़ाहुआ ९८ और धूम्ररूपबालों वाला और हरीडाढ़ीवाला और अनेक प्रकार की जड़ और मुखआदि से संयुक्त और त्रैलोकी में

शरीरके बिस्तारको फैलाने वाला और अपने शरीर से पृथ्वी को नवानेवाला ९९ और बाहुओं से आकाशको तोलनेवाला और पैरोंसे पर्वतोंको फेंकनेवाला और मुखके श्वासोंसे वर्षाकरने वाले मेघोंको शब्द करानेवाला १०० पीछे तिरछी और विस्तृत और लाल ऐसे नेत्रोंवाला और मंदराचल से भी ज्यादे तेजवाला और युद्धमें सब देवताओंको दग्ध करनेको आवताहुआ १०१ औरसब देवगणोंको झिड़कनेवाला और दशदिशाओंको आच्छादित करने वाला और प्रलयकालमें गर्बितरूपमृत्युकेसमानउत्थितहुआ १०२ और सुंदर ऊंचा तलुआ और मोटीअंगुली और फूलोंकीमाला और गहनोंसे संयुक्त और प्रकाशित १०३ और दाहिनेहाथसे देवताओंके हाथसे मरेहुये दैत्योंकेप्रति खड़े होजाओ ऐसे युद्धमें कहता हुआ १०४ ऐसे कालनेमि दैत्यको भयसे मिचगयेहैं नेत्रजिन्होंके ऐसे सब देवते देखतेभये १०५ और बामनरूपके समान शरीर को फैलानेवाले कालनेमि को सब प्राणीभी देखते भये १०६ तब एक पैरको उठाके सब देवतोंको दुःखितकरताहुआ दैत्यों के इन्द्रसे प्रतिज्ञा पूर्वक मिलके कालनेमि दैत्य प्रकाशित होने लगा १०७ तब इन्द्रआदि सब देवते भयका देनेवाला और कालकेसमान आवतेहुये कालनेमिको देख पीड़ासे युक्त होनेलगे १०८ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिबंशपर्व्वभाषायांसप्तचत्वारिंशोऽध्यायः ४७ ॥

अड़तालीसवां अध्याय ॥

बैशम्पायन कहनेलगे कि दैत्योंसे प्यारकरनेवाला और अति तेजसे संयुक्तऐसा कालनेमि दैत्य बढ़नेलगा जैसेवर्षाऋतुमेंबद्दल १ और त्रिलोकीमें फैलेहुये शरीरवाले कालनेमिकोदेख सब दैत्यराज परिश्रमको दूरकर खड़े होनेलगे जैसे अमृतसे देवता २ औरभयसे रहितहो मयतार आदि दैत्य युद्धमें जयकोपानेवाले ३ शोभायमान होनेलगेऔरकालनेमिको देख शस्त्रविद्यामेंऔर युद्धकर्ममेंप्रीतिवाले औरव्यूहोंकोरचनेवाले४होनेलगेऔर युद्धमेंकुशलजो मयदैत्यके मु-

स्यमित्रथे वे कालनेमिको देखप्रसन्नहोनेलगे५ और भयको त्यागकर युद्धकेअर्थतय्यारहोनेलगे६ औरमयतार बराह हयग्रीव वीर्य्यवान्७ विप्रचित्तिकापुत्र श्वेत खर लम्ब अरिष्ट बलिकापुत्र किशोर उष्ट्र ८ विक्रयुद्धकरनेवाला राहु इनआदि नामोंवाले सबदैत्ययुद्धमें ९ काल नेमिकेसमीपमें प्राप्तहोके गदा चक्र परशा १० मुशल क्षेपणीयशस्त्र मुद्गर पत्थर ११ पट्टिश भिन्दिपाल परिघ शतघ्नी गदा १२ बाहू फांसी प्राश १३ सर्पोंकेसमान बाण वज्र दीप्यमान भाले तीक्ष्ण धारवाली तलवार पैनेशूल इन आदि शस्त्रोंको ग्रहणकर सबदैत्य कालनेमिके पृष्ठभागमें स्थितहुये १४ युद्धकरनेकी बांछाकरनेलगे तब प्रकाशमान शस्त्रों से दैत्योंकी सेना प्रकाशित होने लगी १५ और जैसे वर्षाकालमें नक्षत्रोंसे निमीलित आकाश होता है तैसे इन्द्रसेरक्षित देवतोंकी सेनाभी शोभित होनेलगी२० और शीतोष्ण रूप चन्द्रमा सूर्यके तेजसे प्रकाशित और बायुकेसमान वेगवाली और सौम्यरूप और तारागणोंकी पताकासे संयुक्त २१ औरबद्दल रूप वस्त्रोंवाली और ग्रह नक्षत्र आदिसे भासमान और यम इन्द्र बरुण कुवेर इन्होंसे रक्षित २२ और प्रकाशमान अग्नी और पवन से संयुक्त और नारायणमें तत्पर और समुद्रके ओघके सदृश और दिव्य २३ और यक्ष गन्धर्व आदि से युक्त ऐसी देवताओंकी भी सेना शोभायमान होनेलगी २४ पीछे दोनों सेनाओं का समागम होके जैसे युगांतमें घोर युद्धहोताहै तैसे देवदैत्योंका उग्रयुद्ध होने लगा २५ तबदोनों सेनाओंमें प्रसन्नहुये देवते और दैत्य बिचरने लगे जैसे फूलेहुये पर्वतके दोवनोंमें हस्ती पीछे भेरी शंख इनआदि को बजाके २७ पृथ्वी आकाश दिशा इन्होंको पूर्ण करनेलगे और धनुषोंके शब्दभी होनेलगे २८ और नक्कारोंके शब्दोंसे देवते और दैत्य आपसमें युद्ध करनेलगे२९ तबकितनेक बाहुओंसे बाहुओंको काटतेभये और देवते उत्तमलोहाके घोररूप परिघ शस्त्रों को ३० युद्ध में दैत्यों के अर्थ छोड़नेलगे और दैत्य भारी भारी गदाओं से देवतों को मारनेलगे तब गदाकी चोटसे टूटेहुये अंगोंवाले और

बाणों से खंडितहुये ३१ ऐसे कितनेक मूंधेहोके पृथ्वी में पड़नेलगे पीछे कितनेक आपस में युद्ध करते हुये घोड़ों के रथोंसे और बिमानों से ३२ पड़नेलगे और रथोंसे रथरोंकेगये और प्यादों से प्यादे लड़नेलगे तबअति घोरशब्द होताभया ३३ जैसे आकाश में मेघोंके पीछे कितनेक रथोंको तोड़तेभयेऔर कितनेक रथोंसेपीड़ित होके आपमरतेभये ३४ और कितनेक पीड़ितहोके चलनेको सामर्थ नहींहोते भये और कितनेक आपसमें हाथोंसे पकड़ मारतेभये ३५ और कितनेक शस्त्रोंसे कटेहुये युद्धमें रक्तकी छर्दीकरतेभये ३६ ऐसे देवतेऔरदैत्योंकायुद्धप्रकाश मानहुआ ३७अर्थात् दैत्यरूपमहामेघ वाला और देवताओं के शस्त्रोंरूप बिजलीवाला ३८ और आपस के बाणोंरूप बर्षावाला ऐसायुद्धरूप दुर्दिनहुआ तबक्रोध को प्राप्त हुआ कालनेमि दैत्य ३९ बढ़नेलगा जैसे समुद्रों के ओघसे पूरित बद्दल तबतिसकालनेमिके शरीर से प्रकाश मान बज्रोंकी बर्षा से संयुक्त ४० और पर्बतोंके शिखरके समान और बिजलीरूपप्रकाश से संयुक्त ऐसेमेघ निकसने लगे और क्रोधसे श्वाशलेने में पसीना की बर्षाहोनेलगी ४१ और मुखसे अग्निके समान प्रकाश निकस नेलगा और तिरछी और ऊपरको कहूंबढ़नेलगी ४२ जैसे पांचमुखों वालेकाले सर्प और अस्त्रोंके समूहों से और धनुष परिघइन आदि से संयुक्त ४३ और पवनके समान उद्धत कपड़ोंको पहन्हेहुये ऐसा कालनेमि साक्षात् मेरु पर्बत के समान युद्धमें स्थितहोके ४४ जांघ के वेगसे फेंकेहुये पर्बतके शिखर और वृक्षोंसे ४५ देवताओंके समूहोंको पृथ्वीमें गिराताभया और शस्त्रसंयुक्त बाहुओंसे काटदिये हैं छातीशिर जिन्होंके ४६ ऐसे देवते चलनेकोभी समर्थनहीं होतेभये और कितनेक देवगण मुक्कोंसे मारदिये और कितनेक देवताओंके शरीरके दो २ टूकबना दिये ४७ और यक्षगंधर्ब दिब्यसर्प देव ये सबकालनेमि दैत्यने ऐसे दुःखित करदिये ४८ कियत्न वाले तेह यत्नकरनेकी सामर्थनहीं करतेभये और बहुतसे बाणोंसे संयुक्त ४९ और ऐरावत हाथीपै स्थित ऐसाइन्द्रभी चलनेको समर्थ नहीं होत

भयो और जलरहित बद्दलके समान और जलसे रहित समुद्र के समान कांतिवाला ५० और व्यापारसे रहित ऐसावरुण कालनेमि ने युद्धमें करदिया और कालरूप वालेपरिघ शस्त्रोंसे ५१ बिलाप करताहुआ लोकपाल कुबेर कर्मको त्यागनेलगा ऐसा कालनेमिने बनादिया और सबोंको हरनेवाला धर्मराजभी मृतप्राय बनाके ५२ दक्षिण दिशामेंभगादिया ऐसे सबलोकपालोंको जीतके सबोंकेकर्मों कोकरनेवाला ऐसाकाल नेमिदैत्य ५३ चारोंदिशाओंमें चारप्रकार से अपने शरीरकोफैलाकेइन्द्रयम.वरुणकुबेर इनरूपोंवाला आपही होताभया और राहुसे दिखायेहुये नक्षत्रोंके दिव्यमार्गकोजाके ५४ यहीकालनेमि चंद्रमाकी शोभाको हरताभया और स्वर्गद्वार से प्रकाशमानकिरणोंवाले सूर्यकोभी चलायमान करताभया५५ अर्थात् अपनरूप बिषय और दिनकर्म को हरताभया और देवताओंके मुखमें अग्निको देखअपने मुखमें शयन करताभया ५६ पीछे वायु देवताकोवेगसे जीतकर अपनेवेगसे बसीभूतकरताभया पीछे समुद्र से सबनदियोंको आप ग्रहणकर ५७ अपने बशमें करताभया और सबसमुद्रों को अपने बशमें करताभया और सबजलोंको अपनेबश में करताभया और आकाश के पदार्थोंको और पृथवीके पदार्थों को अपने बशमेंकरके ५८ पर्वतोंसे रक्षित पृथवी को स्थापित करता भया ऐसेमहा भूतोंकापति और सबलोकोंका साक्षी ५९ और सब लोकोंको भयदेनेवाला और संसारमें एकही लोकपाल और चंद्रमा सूर्यग्रह आदिसे संयुक्त शरीरवाला ६० और अग्नि पवनसे युक्त ऐसायुद्धमें कालनेमि दैत्यब्रह्माजीके समान प्रकाश होताभया ६१ और उससमय में सबदैत्य गणइसकी स्तुतिकरतेभये जैसे देवते ब्रह्माजीकी ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांअष्टचत्वारिंशोऽध्यायः ४८ ॥

उनचासवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे बिपरीत कर्मके करनेसे वेद धर्म सत्यक्षमा

नारायणहै आश्रय जिसके ऐसीश्री ये पांचोंकाल नेमिको नहींप्राप्त हुये१तबइन्होंके नहींहोनेसे क्रोधसे संयुक्तहुवा दैत्यराज कालनेमि वैष्णवपदकी इच्छाकरताहुआ युद्धमें नारायणके समीपजाकेप्राप्त हुआ२तब गरुड़जीपै स्थित और शंख चक्र गदाको धारणकरने वाले और सुंदरगदाको दैत्योंके नाशके अर्थ भ्रमावनेवाले ३ ऐसे विष्णुको देखताभया पीछे जलसहित बद्दलकेसमान और बिजली के समान बस्त्रोंवाला और स्वर्णरूप पंखोंसे युक्त और शिखावाले और कश्यपजीका पुत्र और आकाशमें चलनेवाला ४ और दैत्योंके नाशके अर्थ युद्धमें स्वस्थरूपहोके स्थितहुआ ऐसे गरुड़को देख के लोभितमनवाला कालनेमि दैत्य विष्णु के अर्थ कहनेलगा ५ कि पूर्वले दैत्यराजोंका और हमारा बैरी तूही है और इसीने समुद्र में बसनेवाले मधु और कैटभ के संग कपट किया है ६ और इसीने हमारे युद्धमें बहुतसे दैत्य भी मारदियेहैं ७ और यह दयासेरहित है और युद्धमें स्त्री बालक आदिको मारनेवालाहै औरइसीनेदैत्यों की नारियोंके केश भी पकड़े हैं ८ और देवताओंका विष्णुभी तूही है और बैकुंठमें बसनेवालाहै और सर्पोंमें शेषनाग भी तूहीहै और ब्रह्माका भी ब्रह्मा तूही है ६ और देवताओंकी रक्षा करताहै और हमारे बुरेपनमें स्थितहै और इसीके क्रोधसे हिरण्यकशिपुमाराग-याहै १० और इसीकी छायाको प्राप्तहो सब देवतेयज्ञोंमें ऋषियों के अर्पितकिये घृत आदि द्रव्योंको खातेहैं ११ और युद्धमें सब रा-क्षसोंको मारनेका कारण भी तूहीहै १२ और सूर्य्यके तेजसेसंयुक्त चक्रको भी शत्रुओंमें तूही फेंकता है १३ और सब दैत्योंकाकाल रूप तूहीहै परंतु कालरूपवाले मेरेसामने बहुत दिनों के बीतेहुये कालकेफलको तूही दुर्मती प्राप्तहोवेगा १४ और अतिखुशीकीबा-तहै कि मेरेसम्मुख तू विष्णु प्राप्तहुआ है और अबहीं मेरे बाण से दुःखित हुआ मेरेको प्रणामकरेगा १५ और बड़ी खुशीकी बातहै पूर्वले दैत्योंके बदलेको मैं आजलूंगा अर्थात् दैत्योंको भयदेनेवाले इस विष्णुकोमारके १६ इसके आश्रयवाले सबप्राणियोंको तत्का-

लमारूंगा और अन्यजन्मोंमें भी उपजा हुआ यह युद्धमें दैत्यों को पीड़ादेता रहा है १७ और यही पहले पद्मनाभ नाम से विख्यात एकार्णव घोरसमयमें मधु कैटभ दैत्योंको मारताभया १८ और यही मनुष्य और सिंहके इन दोशरीरोंको धारणकर १६ मेरे बड़े हिरण्यकशिपुको मारताभयाओरयही अदितिके गर्भकोप्राप्तहो २० वामनके रूपको धारणकर बलिराजाकी यज्ञ में तीनपैर पृथ्वी के मिससे तीन लोकोंको हरताभया २१ फिर यही इस तारकामय युद्धमें मेरेसंग युद्धकरनेको तय्यारहै परंतु अब देवताओं के सहित यह माराजावेगा २२ ऐसे कालनेमि बुरीबुरी बाणियोंसे बहुतप्रकार युद्धमें विष्णुके अर्थ आक्षेपरूप वचनकहके युद्धकरना चाहता भया २३ तब कालनेमिने बहुतप्रकारसे क्षिप्यमाण भी विष्णुकिया परंतु क्षमाबलसे संयुक्त गदाको धारण करनेवाले विष्णु क्रोध को प्राप्त नहीं हुये बलकिन हंसतेहसते अर्थात् मंदमुसकान सहित वचनकहनेलगे २४ हे दैत्यगर्वका बल थोड़ाहोताहै और क्षमा का बल स्थिरहोताहै इसवास्ते जो तू घना बोलताहै सो अपने गर्व से उपजे दोषोंसे तू मारागया २५ और मैंने तो नीचरूप जानलिया और तेरे बाणोंके बलकोधिक्कारहै और जहां पुरुष नहीं होतेहैं तहां स्त्रियां गर्जाकरतीहैं २६ और हे दैत्य जिसमार्गको तेरे बड़े पहुंचे हैं तिसमार्गको प्राप्तहुये तेरेको मैं देखूंगा क्योंकि ब्रह्माजीकेस्थापितकिये सेतु अर्थात् पुलको भेदनकरके कल्याण से संयुक्त कौन जासक्ताहै २७ सो देवों को दुःखदेनेवाले तेरेको अबहीं मैं मारूंगा और अपने २ स्थानोंपै देवताओंको स्थापितकरूंगा २८ तब वैशंपायन कहनेलगे कि युद्धमें विष्णु भगवान् ऐसे बचन बोलनेलगे तब वह कालनेमि दैत्य क्रोध से हंसताभया और अपने हाथोंमें शस्त्रोंको ग्रहणकरनेलगा २६ पीछे सब प्रकारके अस्त्रों को ग्रहण कर और क्रोधसे दुगुनेलालनेत्रोंवाला कालनेमिदैत्य अपनी सौ बाहुओंको उठाके विष्णुभगवान् की छातीमें शस्त्रप्रहार करताभया ३० और मय तार आदि सब दैत्य भी अनेक प्रकार के शस्त्रों को

अहणाकर विष्णुकेसामने युद्धकेअर्थप्राप्तहोकेशस्त्रोंकोमारनेलगे ३१ पीछे अतिबलवाले दैत्योंसे ताड़मानभी बिष्णुयुद्धमें चलायमाननहीं हुये जैसे पवनसे पर्बत ३२ पीछेकालनेमि दैत्यबड़ी गदाकोबाहुओं से उठा ३३ गरुड़के ऊपरमारताभया तबतिसदैत्य केकर्मसेबिष्णुआ श्चर्य्यको प्राप्तहुआ ३४ जिसगदाकेपातसे दुःखितहुआ गरुड़पैरों से पृथ्वी में प्राप्तहुआ ३५ तबदुःखितरूप गरुड़जीको और क्षतरूप अपनेशरीरको देखकेक्रोधसे लालनेत्रोंवाले बिष्णु चक्रको धारणक रतेभये ३६ पीछेगरुड़ केसमान बेगसेबढ़के इसबिष्णुकी भुजादशों दिशाकोव्याप्त होतीभईं ३७ और दिशाबिदिशा आकाश पृथ्वीइन्हों को शब्द से पूर्णकरताहुआ बलसे फिर लोकों को उलंघन करने की कामनावाला बिष्णु वृद्धीकोप्राप्तहोताभया ३८ तब देवताओंकोज- यकेअर्थ आकाशमें बढ़तेहुये बिष्णुको ऋषि और गंधर्ब स्तुति करने लगे ३९ पीछेयहीबिष्णु अपनेमुकुटसे आकाश को आक्रमण कर- ता हुआ और अपनेवस्त्रोंसे मेघोंसहित आकाशको क्रमणकरता हु- आ और पैरोंसेपृथ्वीको आक्रमण करताहुआ और बाहुओंसे दिशा ओंको आच्छादित करताहुआ ऐसाबिष्णु ४० सूर्य्यकी किरणोंके समान तेजवाला और हजारहों पाखंड़ियोंसे संयुक्त और शत्रुओंको नाशनेवाला और दीप्तअग्नीके सदृशघोर और सुदर्शननामसेबिख्या त औरसुवर्ण कीनेमियोंसे संयुक्त औरवज्रकीनाभिवाला और दैत्यों के मेदहाड़ मज्जालोहू इन्हों सेपूरित ४१ और प्रहारकरनेमें अ- द्वतीय और छुरासेभी पैनाऔरअनेक प्रकारकी मालाओंसेविस्तृत और कामना केअनुसार गमनकरनेवाला और कामरूप४२औरसा क्षात् ब्रह्माजीका रचाहुआ औरसबशत्रुओंको भयका देनेवाला और महर्षियों केक्रोधसे व्याप्तऔरनिरंतर युद्धमें गर्बित ४३ और जिसके फेंकनेसे स्थावर जंगम रूप संसार मोहितहोजावे और मांस को खानेवाले प्राणीतृप्तको प्राप्तहोजावें ४४ और उग्रकर्म करनेवाला और सूर्य्य केतेज के समान ऐसेचक्रको उठाके क्रोधसे दीप्तहुये ४५ और अपने तेज से दैत्यों के तेजको नाश के करनेवाले ऐसे बिष्णु

कालनेमि दैत्य के बाहुओं को ४६ और शिरको काटतेभये ४७तब बाहु शिरसे रहित कालनेमि दैत्य कंपायमान नहीं हुआ अर्थात् युद्धमें कबंधरूपही होकेस्थितरहा जैसे शाखाओंसे रहित वृक्ष ४८ पीछेगरुड़ अपनेपंखोंको बढ़ाके और बायुकेसमान बेगकरकालनेमि की छातीमें चोटमारताभया ४६ तब विमुखहुआ और शाखाओं से रहित ऐसा कालनेमि कादेह आकाशसे भ्रमताहुआ और आकाश को त्याग और पृथ्वीको क्षोभित करताहुआ पड़ा ५० तबकालने-मिकेपड़ने सेदेवते और ऋषियोंकेगण साधुसाधु ऐसेकहतेहुये बि-ष्णुको पूजनेलगे ५१ और शेषरहेसब दैत्यविष्णुकी बाहुओं सेव्या प्तहुये चलनेकोभी समर्थ नहींहोतेभये ५२ और कितनेक दैत्यों को केशोंसेपकड़ मारदिया और कितनेकदैत्योंके कंठकोपकड़ मारदिया और कितनेकदैत्यों केमुखको फारमारदिया ५३ और कितनेकदैत्यों के मध्यभागको पकड़मारदिया ५४ ऐसेबिष्णुकी गदाचक्रसे दग्धहु ये और प्राणोंसे रहितऐसे दैत्यआकाशमार्गसे पृथ्वीमेंपड़तेभये ५५ ऐसेसब दैत्योंकोमारके इन्द्रकेअर्थ प्यारकरबिष्णु स्थितहुये ५६ ज बयहतारकामय युद्धशांतहोगया सर्बातसदेशमें ५७ ब्रह्मर्षिगंधर्बअ प्सराओंके गणइन्होंसे सहितब्रह्माजी प्राप्तहोकेबिष्णु कोपूजाकर बाक्यकहनेलगे ५८ किहेदेव आपने बड़ाकर्मकिया और देवताओं केशल्य उखाड़दिये और इनदैत्योंके मारनेसे हमसबकोभी प्रसन्न करदिये ५६ और जोआपनेयह कालनेमिदैत्य माराइसकोयुद्ध में मारनेकोआपएकही समर्थथेअन्य कोईनहीं ६० और यहकालनेमि दैत्यचराचरलोकोंका तिरस्कारकरताहुआ औरऋषियोंकोपीड़ादेता हुआ मेरेप्रतिभी गर्जनाकिया करता६१ सोइसतेरेउग्रकर्मसे मैंअति प्रसन्नहुआ६२सोआपका कल्याणहो आपब्रह्मलोकको गमनकरो जहां सभामेंप्राप्तहुये ब्रह्मऋषि तेरेकोदेखेंगे६३और ब्रह्मर्षि ब्रह्म लोकमेंदिब्य बाणियोंसे तेरेकोपूजेंगे ६४ और तेरेअर्थहम क्यावर दानकरें देवते और दैत्योंके अर्थबरोंके देनेवाले आपहीहैं ६५ ऐसे ब्रह्माजीके कहनेसे बिष्णुभगवान् इन्द्रआदि देवताओंके प्रति शुभ

बाणोंसे कहनेलगे ६६ कि हेदेवताओ तुमसब श्रवणकरो इन्द्र से भी अतिबलवाले सबकालनेमि आदिदैत्य इसयुद्धमें मारेगयेहैं ६७ और केवल बिरोचनकापुत्र बली और राहुग्रहयेदोनों युद्धसे निकस गयेहैं ६८ सोकछुसंशयनहीं सो अपनीबांछित पूर्वदिशाको इन्द्र पालनाकरो और पश्चिमदिशाको बरुण पालनाकरो और दक्षिण दिशाको धर्मराजपालो और उत्तरदिशाको कुबेरपालो ६९ औरन-क्षत्रोंकेसंग समयमें चंद्रमाविचरो और अपनोंकेसहित ऋतुओंसेसं-युक्त बर्षकोसूर्य्यभजो ७० और घृतकेभाग प्रवर्तनकरो और सभा-पतियोंसे पूजेहुये अग्नियोंमें बेदबिधिसे ब्राह्मण हवनकरो ७१ और बलि होमकरके देवते और स्वाध्यायकरके महर्षि और श्राद्धकरके पितरयेतीनों तृप्तकोप्राप्तहोजावें ७२ और सुंदरमार्गमेंस्थित पवनबि चरो और तीनप्रकारसे अग्निदेव प्रकाशित होतारहे और ब्राह्मण आदि तीनोंवर्ण तीनलोकोंको अपनेगुणोंसे तृप्तकरो ७३ और दी-क्षावाले ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्ययज्ञोंको करनेलगो और यज्ञकरनेवाले बिप्रोंकेअर्थ दक्षिणाओं का दानकरो ७४ और गायोंको सूर्य्य और रसोंको चंद्रमा और प्राणियोंके प्राणोंकोवायु ऐसेतृप्तकरतेहुये प्रवृ त्तरहो ७५ औरसबनदीसमुद्रमेंजाके प्राप्तहोजाओ ७६ औरदैत्योंसेभ-यकोत्यागो औरदेवतेशांतिकोप्राप्तहोजाओ और हेदेवताओ तुम्हारा कल्याणहोमैंसनातनब्रह्मलोकको गमनकरूंगा ७७ और अपनेस्थान में और स्वर्गलोकमें औरयुद्ध में संशयमतकरोक्योंकि दैत्यतोसदाही शिथिलरूपहैं ७८ औरछिद्रकोदेखके बलकरतेहैं औरदैत्योंकी स्थिति निरंतरनहींहै औरकोमल भाववाले जोतुमहोसोतुम्हारी कोमलबुद्धी है ७९ औरदुष्टभाववालेदैत्योंकोमैंमोहित करताहूं ८० और जबदैत्यों सेउग्रभयउपजेगातबहीमैंसमीपमेंप्राप्तहोकेअभयदेउंगा ८१ तबवैशं पायनकहनेलगेकिअतियशवाले औरसत्यपराक्रमवाले बिष्णुऐसेदेव तोंकेअर्थकहकेब्रह्माजीकेसाथब्रह्मलोककोगये ८२ सोतारकामययुद्धमें दैत्योंका औरविष्णुका ऐसेआश्चर्य्यहुआहैजोमेरेसेआपपूछतेहैं ८३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांऊनपंचाशोऽध्यायः ४९ ॥

पचासवां अध्याय ॥

जनमेजयने प्रश्नकिया देवताओं के देवरूप ब्रह्माजी के साथ विष्णु भगवान् ब्रह्मलोकमें जाके क्याकर्म करतेभये १ और दैत्यों के मारनेसे पश्चात् देवताओंसे सत्कृतकिये विष्णुको ब्रह्मलोकमें ब्रह्माजी किसवास्ते लेगये २ और ब्रह्मलोकमें जाके किस स्थानपै व किसयोगकोप्राप्तहुये व किसनेमको धारणकरतेभये ३ और ब्रह्म लोकमें बसतेहुये विष्णुके यह जगत् कैसे शोभाको प्राप्तहोताहै ४ औरग्रीष्मऋतुके अंतमें कैसे भगवान् शयनकरतेहैं और वर्षाऋतुके अंतमें कैसे जागतेहैं और ब्रह्मलोकमें प्राप्तहोके विष्णु इसलौकिक धुरको कैसे बहतेहैं ५ सो हे विप्रेंद्र इस दिव्य चरित्रको बिस्तार पूर्वक मैं जानने की इच्छा करूंहूं ६ तब बैशंपायन कहनेलगे कि जैसे ब्रह्मलोकमें जाके विष्णु ब्रह्माके संग आनंदितहोतेहैं तिसआ- ख्यानको बिस्तारपूर्वक श्रवणकर ७ और तिस विष्णुकी गतिसू- क्ष्महै और देवताओंसे भी जानने के योग्य नहीं है परंतु मैं बर्णन करताहूं तू सावधान होके श्रवणकर ८ यह विष्णु लोकमय देवहै और तीनोंलोक इसीमें रहतेहैं और देवताओंमें यह रहताहै और देवते इसमें रहतेहैं ९ और इसके पारको कोई भी नहीं जानसक्ता और लोकोंकेपारोंको यह विष्णु जानताहै १० सो यह विष्णुब्रह्मा जीके बसनेयोग्य ब्रह्मलोकमें जाके सब ऋषिजनोंको प्रणामकरता भया ११ और महर्षियों से यज्ञमें हूयमान अग्नि को देख फिर प्रणामकरताभया १२ और यज्ञमें महर्षियों से पूजित और यज्ञके भागको भोजनकरताहुआ ऐसेअपने१३दूसरे देहको स्थितहुयेतहां देखताभया १४ पीछे सब ऋषिजनों से मिलके सनातन ब्रह्मलोक में बिचरनेलगा १५ तहां चखालाओंसे विभूषित और ब्रह्मर्षियों के सैकड़ोंलक्षणोंसे लक्षित ऐसे ऊंचेऊंचे यज्ञस्तंभोंको देखताभया१६ और घृतकेधुवांको सूंघताहुआ और ऋषियोंके मुखसे कहेहुये वेदों को सुनताहुआ और यज्ञोंसे अपने आत्माकी पूजाको देखताहुआ

ऐसा विष्णु ब्रह्मलोकमें बिचरनेलगा १७ तब सब ऋषि औरसभा में प्राप्त सब देवते अर्घ आदिको ग्रहणकर कहनेलगे कि जो देवताओंमें ऐश्वर्य्यहै वह सब इसी विष्णुके प्रतापसे है और देवताओंसे जो प्रवृत्तहुआ है सो इसी विष्णुके प्रताप से हुआहै १८ और वेदके जाननेवाले मनुष्य अग्निसोमरूप इसजगत् कोकहतेहैं तिस अग्निसोमलोक विष्णु इन्होंको यह ब्रह्माजी जानताहै १६ और जैसे दूधसे दही उपजताहै और दहीको मथनेसे घृतउपजता है तैसे पंचमहाभूतोंके द्वारा इस विष्णुसेजगत् उपजताहै २० और जैसेइन्द्रिय और पंचमहाभूतोंसे परमात्मा कहाजाताहै तैसे देव वेद लोकोंने विष्णुको जानाहै २१ और जैसे पृथ्वी में देहधारियों को पंचभूत और इंद्रियोंकी प्राप्तिहोतीहै तैसे देवताओं को स्वर्गलोकमें प्राणेश्वररूप वैष्णवी प्राप्तिहोतीहै २२ और यज्ञ करनेवालों को यज्ञके फलका देनेवाला और पवित्र और परमात्मा और लोकको तंत्ररूप करनेवाला ऐसा यह विष्णु मंत्रों करके मंत्र रूप पूजित कियाजाताहै २३ तब ऋषिजन कहनेलगे हे देवश्रेष्ठ हे पद्मनाभ हे महाकीर्त्तिवाले आपका सुंदर आगमनहुआ सो यह यज्ञ संबंधी आतिथ्य मंत्रसे प्रतिग्रहणकरो २४ और इस यज्ञपूत पाद्यके आप पात्रहैं और मंत्रोक्त अतिथिभी आपहीहैं २५ और जब आपयुद्धके अर्थ गमनकरतेहैं तब हमारी क्रिया प्रवृत्त नहीं होती क्योंकिविष्णु रहित यज्ञमेंकर्म नहीं कियाजाता २६ और दक्षिणासहित यज्ञ के आदिकारण फल आपहीहैं अब हमारे से पूजितकिये अपनेआत्मा को आपदेखेंगे २७ ऐसे होजाओ ऐसा बचन कहके तिन मुनिजनों को पूजतेहुये विष्णु भगवान् ब्रह्मलोक में स्थितहो ब्रह्माजी की तरह आनंदित हुये २८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांपंचाशत्तमोऽध्यायः ५०॥

इक्यावनवां अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे ऐसे तिन ऋषियों करके पूजित भगवान्

पुरातन और गुप्त दिव्य ऐसा नारायणके आश्रममें १ प्रसन्नमनसे और तिन सभामें आयेहुये देवताओंको बुलाके और आदिदेवब्रह्म के अर्थ प्रणामकरके २ प्रवेशहोतेभये और अपनानामकरकेप्रसिद्ध तिस नारायण आश्रमको प्रवेशहोनेकेसमय भगवान् हथियारों को त्यागतेभये ३ और वरुण देवताकरके प्रस्तुत कियाहुआदेवताओंकरके और ऋषियोंकरके अधिष्ठित ४ ऐसे अपनेस्थानकोदेखते भये और प्रलयका जलसेयुक्त नक्षत्र अर्थात् तारागणोंके स्थानसे युक्त और जहां अंधेरा नहीं है और जहां देवता और राक्षसकोगम्य नहीं ५ और तहां वायुका भी विषय नहीं और चंद्रमा सूर्य इन्हों का भी प्रकाश नहीं वह स्थान भगवान् केही तेजकरके प्रकाशमान है ६ ऐसे स्थानमें प्राप्तहोके अपनीजटाओंका भारबढ़ातेहुये और हजार शिर धारणकरके तहां शयन करते भये और लोकोंके अंतकालको जाननेवाली नयनोंमें बासकरनेवाली कालरूपवाली ऐसी निद्रा महात्मा भगवानको प्राप्तहोतीभई ७ और वे भगवान् तहां समुद्रके शीतलजलमें और दिव्यशय्याके ऊपर एकार्णवसेकहाहुआ ब्रतकरके शयन करतेभये ८ फिर तहां सोवतेहुये महात्मा प्रभुकी उपासना जगत् के कल्याणके वास्ते देवता और ऋषिकरते भये ९ और तहां सोवतेहुये भगवान् की नाभिसे उत्पन्नहुआ आद्य,पद्म,सूर्यकेसमान कांतिवाला १० और हजारपत्तोंसेयुक्तकोमल पुष्पोंसेयुत ब्रह्मसूत्र अर्थात् यज्ञोपवीतकेआकार कलियोंवाला ११ ऐसा ब्रह्माका आसन शोभायमान होताभया और सोवतेहुये भगवान् सब लोकोंको कालपर्य्यंत पालनेलगे और तिस समय में भगवान् के श्वाससे अनेकप्रकार की प्रजाओं की पंक्ति के समूह निकलनेलगे १२ तब इसप्रकार रचेहुये प्राणियोंके समूहको वह कमल से उत्पन्नहुआ ब्रह्माजी चारप्रकार विभागकरके रचता हुआ १३ फिर वेसबप्राणी सतयुगकेअंतमेंकहेहुये कर्मकरके अपनी अपनी गतिको प्राप्तहोगये तिस समय में भगवान् के तिस कर्मको ब्रह्माजी भी नहीं जाने और वे अविनाशी ऋषि भी नहीं जानते

भये १४ और निद्रासे युत योगमेंप्रविष्ट तमोगुणसेयुक्त ऐसे विष्णु को वे ब्रह्माजीसे आदि सब ऋषि नहीं जानतेभये१५ और कहींसोवतेहैं अथवा कहीं आसनपै बैठेहैं और कौन यहां जागता है कौन सोवताहै और सोवताहुआ कौनचेष्टाकरताहै १६ ऐसे वे सबब्रह्मा जीसे आदि ऋषि नहीं जानतेभये और कौन यहां भोगवालाहैऔर कौन तेजवालाहै और कृष्ण से भी कृष्ण कौन है ऐसे सब देवता दिव्ययुक्तियोंकरके बिचारकरनेलगे १७ और इस भगवत्‌के जानने‌को समर्थ कर्मसे और जन्मसे कोई भी नहीं है और दिव्य भगवान् की कथाओंसे जो विष्णुके चरित्रोंको जानते हैं १८ तिनको ऋषिजन पुराणकहतेहैं अर्थात् पुरातनकहतेहैं और बेदोंमें भी भगवान् के चरित्र पुरातन सुनेजातेहैं१९और महापुराण ऐसीप्रभृति से परे भगवान् के नहीं है अर्थात् महापुराण ऐसे प्रसिद्ध है और जो भगवान् के स्वभावसे उपजा चरित्रहै २० तिसको संसार में होनेवाली और देवतों पास होनेवाली श्रुति भी नहीं जानती है और यह जीवोंको उत्पन्न करनेवाला ईश्वर २१ जगत्‌की उत्पत्ति के समय और दैत्यों के नाशके समय जागता है और शयन करतेहुये अविनाशी भगवान् के देखने को देवते भी समर्थ नहीं २२ और ग्रीष्म ऋतु के पश्चात् भगवान् सोवते हैं और वर्षा समय के पश्चात् जागते हैं और जब भगवान् सोवते हैं तब यज्ञभी नहीं २३ क्योंकि भगवान्‌ही यज्ञरूपहैं और सब बेद यज्ञ के अंगहैं औरजोयज्ञकीगति कहीहै सो पुरुषोत्तम भगवान्‌हीहैं२४ भगवान् शरदऋतु आदि ऋतुओंमें जागतेहैं और जब विष्णुशयन करताहै तब बैष्णव कर्मको करताहुआ इन्द्रजी इस वार्षिक चक्र को धारण करताहै २५ और जो गह्वर भगवत्‌की माया संसारमें निद्रारूप प्रसिद्ध है वह अचानक प्राणियों को द्वेष करनेवाली है २६ और घोरहै कालरात्रीहै और तिसनिद्राकाअंग तमकेद्वारा रात्रीहै दिनके नाशकरनेवाली है २७ और यह नींद पृथ्वी में सब प्राणियोंके आधा जीवनको हरनेवालीहै और इससे युक्तहुआ और

वारम्वार जंभाई लेताहुआ २८ इसकेवेगको कोई भी पुरुष सहने को समर्थ नहींहै समुद्रमें डूबतेहुये की तरह और संसारमें मनुष्यों के अन्नसेउपजो तथा श्रमसेउपजो निद्रा सबको प्राप्तहोतीहै २६ और विशेषकर देहधारियों के सुपनाके अंतमें निद्राका नाश होता है ३० और विशेषकरके मृत्युकालकेसमय जीवोंकेप्राणकानाश करतीहै औरइसको नारायण देवतोंके शरीरमेंभी धारणकरताहुआ ३१ और यह निद्राकालकी प्यारीहै और पापनहै और विष्णु के शरीर से उत्पन्न भईहै और यह निद्रा नारायण के मुखमें प्राप्त हुई ३२ संसारके हित केवास्ते अपनेपति भगवान्‌को सेवनकरतीहै ३३ और वे अविनाशी भगवान् तिस निद्राकरके ढकेहुये नारायण आश्रममें जगत्‌के मोह को प्राप्त करतेहुये शयन करतेभये ३४ इस प्रकार तिन्होंको शयनकरतेहुये हजारोंवर्ष व्यतीतहोगये ३५ और सत-युग त्रेतायुग येभी व्यतीतहोगये पश्चात् द्वापर युगकेअंतमें महा-तेजवाले भगवान् ऋषियोंकरके स्तुतिकियेहुये और संसारको दुः-खितदेखके बोधकरतेभये अर्थात् जागतेभये ३६ ऋषि कहने लगे हे भगवन् स्वभावसे उपजीहुई निद्राको त्यागदेवो सुगंधसेभोगीहुई मालाकीतरह और ब्रह्माजीसहित सबदेवते आपके दर्शनकीइच्छा करतेहैं ३७ और ये आपके ब्रह्मवेत्ता पुरुष तीव्र नियमवाले आप की स्तुतिकरतेहैं ३८ और हे भगवन् आत्मासे उपजे हुये और पृथ्वी आकाश अग्निवायु जल इनतत्त्वोंसे उपजेहुये ऐसे जीवोंकी श्रेष्ठवाणीकोसुनो ३६ और हे देव ये सप्तऋषि मुनिमण्डल करके सहित दिव्य वाणियोंकरके आपकी स्तुतिकरतेहैं ४० और हे क-मलसरीखे नेत्रोंवाले कमलकी नाभि और महातेजवाले भगवन् देवताओंके कार्यके गौरवसेआपका कछुकारण उत्पन्नहुआहै ४१ वैशम्पायन कहनेलगे इसप्रकार सुनके वे भगवान् सब जगत् को संक्षेपकरके और अंधेराके समूहको दूरकरतेहुये और अत्यंतशोभा से युक्तहुये उठतेभये ४२ फिर वे भगवान् इकट्ठे हुये औरब्रह्माजी समेत और कछुकहनेकी इच्छावाले और पृथ्वीकेवास्ते आये हुये

ऐसे सबदेवताओंको देखतेभये ४३ और निद्रा संभ्रांत नेत्रोंवाले हरि तिनदेवताओंके प्रतितत्त्व दृष्टिसे प्रयोजनकी वाणी करके धर्म को युक्तिसे बोलतेभये ४४ श्रीभगवान् कहनेलगे हे देवताओ तुम को कहांसे विग्रहहुआ और कहांसे भय उत्पन्नहुआ और किसी का कार्यहै अथवा कछु मेरे विषय कछुकार्य्य नहीं बना ४५ अथवा दानवोंसे उपजीहुई संसारमें कुशल नहीं है और मनुष्योंके परिश्रमको जाननेकीइच्छा मैं जल्दी करताहूं ४६ और यह जो मैंहूं सो ब्रह्मके जाननेवाले आपके अगाड़ी शयनको त्यागके खड़ाहूं और आपके कल्याणकेवास्ते स्थितहूं सोकहोआपका क्याकार्यकरूं ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांएकपंचाशोऽध्यायः ५१ ॥

बावनवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे तिसभगवान्के कहनेकोलोकके पितामह ब्रह्माजी सुनके संपूर्ण देवताओंको परमहितवाक्य कहतेभये १ हे विष्णुहेअसुरोंके नाशकरनेवाले देवतोंको कछुभीभयनहींहै क्योंकि जिनदेवताओंकोयुद्धमें आपअभयके देनेवाले मलाहरूपहो २ और हे भगवन् देवतोंकामालिक ऐसेइन्द्रके जीतनेके पश्चात्औरबैरियोंके नाशकरनेवाले आपकेजीतेपश्चात्अपने धर्ममेंयुक्तऐसेदानओंकोभी भयनहींहै ३ औरसत्यमें और धर्ममेंयुक्त ऐसेमनुष्य खेदसे दूरहोजाते हैं औरतिनको अकाल मेंमृत्यु देखनेकोभी समर्थनहींहै ४ औरमनुष्योंकेपतिराजेहैं औरवेराजेअपने छहभागोंको भोगतेहुये आपसमें भेदकोनहीं प्राप्तहोतेहैं ५ और ऐसेवे प्रजाओंको सुखके देने वाले होतेहैं और करलेने वाले पुरुषों से निंदाको प्राप्त हुए बिना और पर्वतआदि खजानासे द्रव्यको इकट्ठा करके अपने खजानोंको पूर्ण करलेतेहैं६ और बढ़ेहुए अपनेदेशों को पालनाकरतेहुए और क्षमासे युक्त औरस्वल्प दंड देनेवालाऔर चतुरऐसेराजा सबवर्णोंकी रक्षा करतेहैं ७ और जीवोंको भयादिकसे नहींकम्पावतेहैं ऐसेराजे अपने मंत्रियोंकरके अच्छीतरह पूजित और चतुरंगिनी सेनासे युक्त ऐसे

राजा छहगुणोंको भोगतेहैं ८ और धनुर्वेदविद्यामें तत्पर और वेदों मेंनिष्ठावाले ऐसेसबराजा यथार्थ विधिसे और अत्यंत दक्षिणावाले यज्ञोंकरके पूजनकरतेहैं ९ और वेदोंको पढ़के दिक्षाओं करके और ब्रह्मचर्या करके महर्षियोंका पूजन करतेहैं और पवित्र श्राद्धोंकरके सैकड़ों पितरोंका पूजनकरतेहैं १० और ऐसेराजाओंको तीनलोक मेंवेदोक्तकर्मऔरलौकिक औरधर्मशास्त्रोक्तकर्म अविदितनहीं अर्थात् ये सबकर्मकरचुके ११ और ऐसेराजे आपस में सलूक करेहुए महर्षियोंकेसमान तेजवालेहोरहेहैं औरफिर सतयुगकरने लायकहैं १२ और तिनहीं के प्रभाव से इन्द्रजी कल्याण पूर्वक बर्षते हैं और वायु यथार्थ गमन करताहै और दशोंदिशा रजकरके रहित होरही हैं १३ और पृथ्वी उत्पातों करके रहित होरही है और अच्छेप्रचार करके युक्तहै और ग्रह चंद्रमा नक्षत्र ये सब सौम्ययोगसे विचरते हैं १४ और सूर्य भगवान् अनुकूलहुए दोनों अयनोंमें विचरतेहैं और अनेक प्रकारकी आहुति तथा सुगंधियोंसे तृप्तहुआ अग्नि देवता बर्त्तताहै १५ सो इसप्रकार सब यज्ञआदिक निमित्त प्रवर्त्त होने के बाद और संपूर्ण पृथ्वीके तृप्तकरदेने केबाद फिर तिन्होंको कालकाभयकहांहै १६ और राजोंको आपसमें बिलोमहोजानेसे और आपसमें ईर्षासेयुक्तबर्त्तनेसे तिनबलवान् राजाओंकी सेनासे पृथ्वी पीड़ित होजातीहै १७हे भगवन् सो यह पृथ्वी भारकरकेदुःखितहुई और राजाओंकरके पीड़ित तुम्हारी शरण आईहै दृष्टांत जैसेनौका में बैठेहये मनुष्योंसे नौकाडिगमग होजातीहै १८और युगांत सदृश रूपऔर पर्वतके बंध अलग छुटेहुये और जलकी पीड़ासे युक्तऐसे अपने रूपको वारम्बार दिखाती हुईहै १९ और क्षत्रियोंके शरीर करके और सेनाकरके और मनुष्यों से विस्तीर्ण राष्ट्रोंकरके पीड़ित हुई पृथ्वीहै और पुरपुरकेविषे एकएकराजाकी कोटि संख्या सेनासे युक्तहै और अपने अपने राष्ट्रमें बहुतसेसैकड़ों हजारोंग्रामों का समूह बिचरताहै २० और वे सब ग्रामों के मनुष्य और राजाओं की सेनाकाबल इन्होंकरके यह पृथ्वी पीड़ित होरही है २१ सो हेभग-

वन् यह पृथ्वी निरामय और कालकी चेष्टासे रहित ऐसे आपके आश्रममें आई है और आपइसकी परमगतिहो २२ और यह भूमि इस पृथ्वीकेऊपर स्थित जीवोंकी कर्मभूमि है सो व्यथाको प्राप्तहो रहीहै सो जिस प्रकार यह पृथ्वी पीड़ित नहींहो तैसे आपकरो २३ क्योंकि हे भगवन् इस पृथ्वीको पीड़ाहोने में महान् दोष है और प्राणियों की क्रियाका लोप होताहै और जगत् दूषित होता है २४ और यह पृथ्वी राजाओं के समूह से पीड़ित होरही है और अपने स्वभाव से उपजीहुई क्षमाको त्यागके अचला नामवाली यहपृथ्वी चलायमान होरही है २५ और जो इसपृथ्वी के भारका उतरना है सोभी आपसेही सुनाजाता है इसवास्ते तुम्हारे संग सलाह करते हैं २६ और श्रेष्ठ मार्गमें वर्त्तमान संपूर्ण राजे राज्यको बढ़ावते हैं और मनुष्योंमें तीनोंवर्णोंको ब्राह्मण के शरणहोना चाहिये २७ और सब वाक्यों में सत्यवचन उत्तमहै और अपने २ धर्ममें युक्त ऐसेवर्ण उत्तमहैं और सबवेदोंमें जोतत्पर हैं वे विप्रश्रेष्ठहैं और जो सब विप्रोंमें तत्पर रहते हैं वे नरकहाते हैं २८ ऐसे जगत् धर्मके कारणसे मनुष्य वर्त्तहैं सोहे भगवन् जैसे धर्म नष्टनहींहो ऐसे आप सलाहकरो २९ और धर्मका साधन करनायही श्रेष्ठ पुरुष की गतिहै और पृथ्वी के भारउतारने के वास्ते दुष्ट राजा का भी बधकरना चाहिये ३० सोहे भगवन् इस वास्ते आप आवो तुम्हारे संग सलाह करके और पृथ्वी अगाड़ी करके हम सुमेरु पर्वत की शिखरपै चलैंगे ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांद्विपंचाशोऽध्यायः ५२ ॥

तिरपनवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहने लगे ऐसे तिनसे दृढ़सलाह करके श्रीभगवान् अंधकार में आया हुआ मेघके समान शब्दकरके और अचल रूपहोके मेघके अंधकार सरीखे वर्णसे स्थितहोते भये १ औरतिन्हों के मोतियों की मणिबिजली के समान होतीभई और चंद्रमा युक्त

बद्दल सरीखी कांति और वालोंका चारोंतर्फ मंडल और कालावर्ण और बड़ीछातीमें रोमावली खड़ीहुई और श्रीवत्सचिह्न से शोभायमान और दोनों स्तनों के मुखों से शोभित २ पीले वस्त्रों से युत ऐसा अपनेरूप को धारण कर लोकों के गुरु अविनाशी भगवान् देखनेको योग्यहोते भये जैसे संध्या समयमें बद्दल होजातेहैं ३ और फिर वे भगवान् गरुड़की सवारीकर और ब्रह्माजीको अगाड़ी कर गमनकरतेभये और सबदेवता भगवान्को देखतेभये ४ तिनके पीछे २ गमन करतेभये और थोड़ेही कालमें वे सब देवता सुमेरु पर्वत पै अपनी सभामें पहुंचतेभये ५ फिर तहांसुमेरु पर्वतको शिखरपैसूर्य की किरणोंकरके झिमंकतीहुई और सुवर्णके थांभोंसे रचीहुई और हीरा, मणि, तोरण इन्हों करके युक्त ६ और मनोमयी चित्राओं करके युक्त, और सैकड़ों विमानोंकी माला अर्थात् पंक्तियोंवाली और रत्नों के झरोखों से युत कामरूपिणी रत्नों करके भूषित ७ और रत्नोंकी कूपियों युत सब ऋतुओंके पुष्पों करके उत्कट ऐसी अपनी सभाको और देवमाया से युक्त दिव्य और विश्वकर्मा से रचीहुईको वे सब देवता देखतेभये ८ फिर तिससभाको देखकर देवता प्रसन्न मनसे और अपने २ स्थानमें यथा विधिसे तिसमें प्रवेशहुये ९ अपने अपने विमानोंपर और श्रेष्ठ आसनों पै और कुशाओं के आसनों पै बैठते भये १० फिर तिससे अनंतर ब्रह्माजीसे प्रेराहुआ प्रभंजन नाम वालावायु इस प्रकारकरता भया कि कोये भी शब्दनहीं करते भये ११ फिर सब चुपहोगये तब तिन देवताओं के मध्यमें करुणा से और खेदसे पृथ्वी वचन कहनेलगी १२ पृथ्वी वचन कहती है—हे देव मैं और जगत्भी तेरेहीको धारण करने लायक है और हे भगवन् तुमहींजीवों को धारण करतेहो और भुवनोंको भी तुमहीं धारण करते हो १३ और हे भगवन् जो कुछ आपने बल करके और तेजकरके धारण किया है वही तुम्हारे प्रसाद से पश्चात् मैं भी धारण करतीहूं १४ और तुमसे धारण की हुई बस्तुको मैं धारणकरूंहूं और विनाधारी बस्तुको नहीं धारण करूंहूं और हे देव

जो आपको नहीं धारण किया ऐसाकोई जीवनहीं है १५ और हे वीर हे नारायण आपही युग२ में जगत् के हितकेवास्ते महाभार उतारते हो १६ और हे भगवन् तुम्हारेही तेजसे ढकीहुईमें रसातल को प्राप्तहूं और हे देवतों में श्रेष्ठ भगवन् आपके शरण आई हुई की मेरी रक्षाकरो १७ और मैंदानवों करके पीड़ितहूं और खोटी आत्मावाले राक्षसों करके पीड़ितहूं और तुम्हारीही नित्य शरणको प्राप्तहूं १८ और दुरात्मा राक्षस और दानवों से पीड़ित हुई मैं आपही की शरण प्राप्तहूं १९ और हे भगवन् रक्षा करनेवाले आपकी शरण सैकड़ों हजारोंबार में नहीं होतीहूं इतने मेरेको भय है २० और मैं पुरातन भगवान् को पहले रची हूं और मेरे रचे पहले दो राक्षस महासमुद्रमें सोतेहुए इस विष्णु भगवान्के कानों के मैलसे होतेभये २१ और वे दोनों राक्षस ब्रह्मासे प्रेरेहुएस्वर्ग को ढकतेहुए बढ़तेभये २२ और वायु प्राणवाले दोनों राक्षसोंको ब्रह्मा हाथसे स्पर्श न करताभया तब एकको तो कोमल जानता भया और एकको कठिन जानता भया २३ पश्चात् ब्रह्माजी, सूर्य के जलसे उद्भव कोमलरूप एकका मधुनाम और एकका कैटभनाम ऐसे नाम करतेभये फिर तिन नामोंवाले वे दैत्य मदोन्मत्तहुए और एकार्ण समुद्रमें युद्धकी इच्छाकरते हुए बिचरनेलगे २४ फिर ब्रह्माजी तिनको आतेहुए को देखके तिस एकार्णव समुद्रमें और भगवान्की नाभिसे उपजे कमलमें लुकेहुए बसतेभये २५ फिर तहां वे नारायण और ब्रह्माजी बहुतसे दिन सोतेहुए ब्यतीत करते भये और जब बहुतकाल बीतचुका तब वे दोनोंदैत्य जहां ब्रह्माजी थे तिस जगहको जानते भये फिर आते भये २६ और महाकाया वाले घोर ऐसेराक्षसोंको ब्रह्मादेखके तिसकमलकी डंडीमें तड़फने लगा २७ फिर तिसके तड़फने से महातेजवाले विष्णु भगवान् जाग के तिन्हों के संग युद्ध करनेलगे और तिस एकार्णवसमुद्रमें भगवान् का युद्ध तिनके संग हजारों वर्ष तक भया २८ परंतु वे असुर युद्ध में नहीं हारे फिर बहुतकाल व्यतीत होचुका तब खोटा

मदवाले वेदैत्यप्रसन्न मनसेप्रभु नारायणकेप्रति ऐसेकहनेलगे २९ कि हमतेरे युद्धसे प्रसन्न भये सो आप हमारी मृत्यु करने लायक हो ३० परंतु हमको जिसजगह पृथ्वीपै जलनहींहो तहांमारो ३१ और हे देवताओं में उत्तम भगवन् मरेहुए हम आपके पुत्रहोजांगे क्योंकि जो कोई हमको युद्धमें जीतनेवाला है तिसके हम पुत्र विहित करेहैं ३२ ऐसा बचन सुनके वे भगवान् तिनको अपनीजांघों पै धरके पीड़ाकरनेलगे ३३ फिर वे दोनों मधु कैटभ मृत्युकोप्राप्त होते भये और मरेहुए तिन दोनों का शरीर एक होताभया ३४ और मथे हुए तिन दैत्यों के शरीर से मेद धातु निकल के फैलती भई ३५ फिर तिन दैत्योंके मेदधातु से नारायण भगवान् इस पृथ्वीको ढकतेभये ३६ इस तरह नारायणको अपने प्रभावसे यह पृथ्वी स्थिरकरी है और पहले बाराह अवतार धार करके मार्कंडेयजी ऋषिकेदेखते हुए ३७ मुखसे खोदके जलकेमध्यसेनिलीहै और पृथ्वी कहती है कि फिर मैं देवतों के अगाड़ी वलिराजा के पास नापके बिष्णु भगवान् को ग्रहण करी हूं ३८ और अब मैं दुःखितहो रहीहूं सो दुःखित हुई और बिनामालिक, ऐसीमैं गदा के धारण करनेवाले ३९ सबके मालिक ऐसे भगवान् की शरणहूं और अग्नि तो सुवर्ण का गुरु है और गौवोंका गुरु सूर्य है ४० और नक्षत्रोंका गुरु चंद्रमा है और मेरा नारायण गुरु है क्योंकि जो मैं अकेली इस स्थावर और जंगम जगत् को धारण कर रही हूं ४१ और मेरे धारण कियेहुए को गदाधर भगवान् धारण करते हैं और परशुरामजी महाराजने भार उतारने की इच्छाकरके ४२ क्रोधसे इक्कीस बार क्षत्री मारके तिनसे जीतलई और मैं क्षत्रियोंके रुधिरकरके तृप्तकरदई ४३ और पश्चात् भृगुजी महाराजने अपनेपिताके श्राद्धकेदिन कश्यपऋषिको देदई ४४ फिर मांस मेद, अस्थि,इन्होंकरके दुर्गंधवाली और क्षत्रियोंके रुधिर से लिपी हुई रजस्वला स्त्रीकेसमान ऐसीमैं नीचेकोमुखकिये कश्यपऋषि के प्राप्तहुई ४५ तब कश्यपजी महाराज मेरेको यह पूछतेभये कि

पृथ्वी तू नीचेको मुख क्यों कररहीहै ४६ और हेशूरबीरोंकीपत्नी इस ब्रतको धारणाकरतीभई क्या दुःखपातीहै तब मैं कश्यपऋषि के वास्ते अपना प्रयोजन कहनेलगी ४७ हे ब्रह्मन् मेरेपतिभृगुजी महाराजने मारदियेहैं इसवास्ते तिन शस्त्रकी वृत्तियोंवाले क्षत्रियोंकरकेही मैं हीनहूं ४८ और विधवाहूं और मेरेनगर शून्यहोरहे हैं इसवास्ते इस भारधारनेकी मेरीसामर्थ्य नहीं है सो ब्रह्मन्मेरे वास्ते ऐसा पतिकरो ४९ कि जो राजा मुझको ग्राम नगरों करके और समुद्रोंकरके सहित रक्षितकरै ऐसा बचनसुन निश्चयकर ५० तदनन्तर कश्यपजी मुझको मनुष्योंके इंद्र मनुके अर्थ देतेभये फिर सो मैं मनुजीके पुत्रकोप्राप्तहोके इक्ष्वाकुराजाके कुलपर्यंतरही ५१ पश्चात् पृथुसे पार्थिवको प्राप्तहुई इसप्रकार मनुजी महाराज के अर्थ दीहुई मुझको हजारोंराजे भोगतेहुये ५२ और बहुतसेशूरबीर क्षत्री मुझको जीतके स्वर्गमें प्राप्तहुये ५३ और वे सब कालके वश से मेरेहोविषय प्रलयको प्राप्तहोगये और मेरेहीवास्ते इस संसार में बलवाले क्षत्रियोंके विग्रह अर्थात् युद्धहोतेहैं ५४ और यह सब वृत्तांत हे भगवन् तुम्हारेकरके प्रवृत्तकालके परिणामहोताहै ५५ और हे भगवन् जगत् के हितको आपकरो और जो भारके कारण से मेरेपर दयाकरतेहो तो रणकेक्षयमें राजाओंके प्रयोजनकरो ५६ और जिसको मैं भारकरके दुःखित रक्षककी इच्छाकरके प्राप्तहुईहूं सो चक्रके धारणकरनेवाले शोभायमान एक भगवान् मेरेकोअभयदेवो ५७ और भार उतारनेके वास्ते यह विष्णु भगवान् युक्तहो और मुझको कहो ५८॥

इति श्रीमहाभारतेहरिबंशपर्व्व भाषायांधरणीवाक्येत्रिपंचाशोऽध्यायः ५३॥

चौवनवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं ऐसे पृथ्वीके बचन सुनके संपूर्ण देवता तिसी प्रयोजनको चिंतवन करतेहुये ब्रह्माजी को बोलतेभये १ हे भगवन् इस पृथ्वीके भार उतरनेकी युक्ति करनी चाहिये क्योंकि

संसार के शरीरकर्त्ता और लोकोंको उत्पन्न करनेवाले आपहीहो २ और जो कुछ महेन्द्रको कर्तव्यहै तथा धर्मराज को तथा बरुण को तथा कुवेरको तथा आप नारायणको ३ तथा चंद्रमाको तथा सूर्य, तथा वायु, बारह आदित्य, आठबसु, संसारको उपजानेवाले ग्यारह रुद्र, ४ देवताओंके अग्रणी अश्विनीकुमार, बारहसाध्यसंज्ञक देवता बृहस्पति, शुक्र, तथा कालप्रभु तथा कलियुग ५ और शिवजी, तथा स्वामिकार्तिक, और राक्षस, गंधर्व, चारण, महासर्पादिक, ६ इन सबोंको तथा शैलआदि पर्वतोंको तथा महान् लहरियोंवाले समुद्रोंको तथा गंगाजी आदि नदी ७ इन सबोंको जो कुछ कर्तव्य है सो आपकहो कि किसप्रकार अपने २ अंशोंकरके उतरनाचाहिये क्योंकि राजाओं के बिग्रह से पृथ्वी का कार्य आपने करना है ८ और आकाश बिचरनेवाले देवता तथा पृथ्वीमें बिचरनेवाले राजाओंको जो कर्तव्यहै सो कहो ९ और हे ब्रह्मन् विधि के करनेवाले ब्राह्मणों के कुलमें अथवा क्षत्रियों के कुलमें हमको जन्मलेना चाहिये अथवा पृथ्वी के बीच में बिनायोनि से उपजा शरीर को हम धारण करें १० इस प्रकार एक कार्यके करनेवाले देवताओं के बचनको ब्रह्माजी सुनके यह बचन कहताभया ११ किहेदेवताओ जोआपको निश्चयकियाहै सोठीकहै आप तेजकरके अपने समान शरीरोंको पृथ्वीपैरचो १२ और हेदेवताओ तुमसबअपने २तेजकर केपृथ्वीपैत्रिभुवन कीशोभाकोलिये जन्मलेवो और ब्रह्माजीकहतेहैं किपृथ्वी के बिषय संभवबार्ता कोजानतेहुए मुझकोभारतबंश केरा जानेजोकियाहै सोसुननाचाहिये १३ पहलेकश्यपके संगसमुद्रकी पश्चिमवेलाकी तरफ स्थितिकरके और संसारकेवृत्तांतोंकी और बहुतसेपुराणोंका विचारकरताहुआ १४तबविचारकरतेहुएके मेरेसमीपशीघ्रहीगंगानदीसेयुक्तऔरमेघऔरबायुकेसंग आवताहुआ १५ और बिषमलहरियों को करताहुआ और नदियोंके वेगसे युक्त और जलरूपी वस्त्रसेढकाहुआ १६ और शंख, मोती, इन्हों करके सुंदरशरीरवाला और मूंगामणिइन्होंके आभूषणपहनेहुए और पूर्णचंद्रमा

करके युक्त और गंभीर मेघसरीखा शब्द करताहुआ १७ ऐसासमुद्र मेरातिरस्कारकरके और अपनीवेलाको उल्लंघता हुआजलकीचपललावण्यताकरके मुझको क्लेदित करताहुआ १८ इसप्रकारतिसजगह मुझको जब समुद्रपीड़ादेनेलगा तब तिसवक्तमें कहनेलायक वाणी करके मुझेऐसेकहा किहेसमुद्रअबतो शांतहुआ १९ फिरशांतहोनेका बचनसुनके समुद्रअपनास्वल्परूप करताभया और लहरियोंकेसमूहोंके अंगकोधारणकिये औरराजाकीकांतिकरके स्थितहोता भया२० फिरगंगाकेसहिततिस समुद्रकोकारणकेवास्तेऔरआपकेहितकेवास्ते शाप देताभया कि हेसमुद्र जिससे तूराजा केसमानरूप धारणकिये खड़ाहै जा तू पृथ्वीकेपालनेवाला राजाहोगा२१ और तहांभीतू अपने स्वभावसे उपजी लीलाको धारण करताहुआ भरतराजाके कुल में मनुष्योंका भर्ताहोगा२२ औरजो शांतहै ऐसेमुझसे कहाहुआतूसूक्ष्म रूप होगया इसवास्ते तूश्रेष्ठयशवाला शांतनुनामवाला होवेगा२३ और यह नदियों में श्रेष्ठ गंगा भी संपूर्ण अंगोंकी शोभावाली और अच्छेकटाक्ष और रूपवाली तुझकोही प्राप्तहोवेगी २४ ऐसेजबमुझ को कहा तबमेरे प्रतिक्षोभ करके समुद्रबोला कि हेदेवताओंके देव आपमुझको किसवास्ते शापदेतेहो२५ मैंतोतेरेकरके रचाहुआतेरीही कृत्यमें तत्पर रहताहूं और मैंशापदेने लायकनहींहूं सोआपमुझआत्मजको किस वास्ते शाप देतेगये २६ क्योंकि हे भगवन् तेरीही प्रसन्नतासे मैंबेगसे पूर्णमासीके दिनबढ़ताहूं सोजोयदिमें चलायमान हुआतो क्यादोषहै २७औरपवनसे फंसेहुयेजलसे पर्वणी में आप स्पर्शहोगयेतो हेभगवन् यहांशापका कौनकारण है २८ और हेभगवन् उठेहुयेमहा वायु और बढ़ेहुयेमेघ, और पूर्णमासी के चंद्रमा इनतीन कारणोंसेमैंक्षोभको प्राप्तहुआथा२९सोहे भगवन् इसप्रकार आपके किये हुए तीनकारणों से भी जो मैं अपराध के लायकहूं तो आपक्षमाकरो और इसशापको दूरकरो ३० और हेदेवेश इस प्रकार निरालंबऔर शापसे शिथिल अंगवाला मेरे बिषयजो प्रमाण देखो तो आप मेरे पै दयाकरो ३१ और हे देव स्वर्ग में प्राप्त हुई और

मेरे दोष से समान दोषवाली इस गंगापै आप प्रसाद अर्थात्
प्रसन्नताकरो ३२ ऐसे ब्रह्माजीकहतेहैं कि तब देवताओंके कार्य्यको
नहीं जाननेवाला समुद्रको और शापसेत्रस्तहुआको मैं सुंदरवाणी
करके कहताभया ३३ हे समुद्र मैं प्रसन्नहुआ तू शांतिको प्राप्तहो
और इस शापके होनेवाले कार्य्यको तू सुन ३४ और हे नदियोंके
नाथ तू भारतबंशमें जा अपने तेजसे देहको धारणकर और इस
सागरके शरीरको त्याग ३५ और हे समुद्र तहां तू राजाहुआचारों
वर्णोंकी पालनाकर ३६ और यह नदियोंमेंश्रेष्ठ गंगा मनुष्यशरीर
को धारण करके तिसीकालमें रमणकरने के योग्यहोगी ३७ सोहे
समुद्र इस गंगाकेसंग मोद करताहुआ मेरी आज्ञासे इस जलका
संक्लेदसे भूलजावेगा ३८ सो यह मेरीआज्ञा तुझको जल्दीहीकरनी
चाहिये और हे सागर प्राजापत्य विधिकरके और गंगाकेसंग इस
मेरी आज्ञाको तू कर ३९ और मैंने स्वर्गसे आठबसु पृथ्वीपै प्रेरेहैं
सो तिन्होंकी उत्पत्तिकेवास्ते तू युक्तकराहै ४० और यह गंगाऔर
सूर्य्यकेसमान तेजवाले और देवताओंकीप्रीति बढ़ानेवाले ४१ ऐसे
आठ बसुओंको संतानकेवास्ते धारणकरो हे समुद्र फिर तिनबसु-
ओंकोशीघ्र उत्पादनकर और कुरुकुलकोबढ़ाके पश्चात् इससागर
शरीरको प्राप्तहोजायगा ४२ और ब्रह्माजी कहतेहैं कि हे देवताओ
इस प्रकार मुझको जानके तुम्हारे हितके वास्ते और पृथ्वीके भार
उतारनेकेवास्ते यह मुझको करदियाहै ४३ सो तिसी समय पृथ्वी
पै मुझको शांतनुबंश का रोपणकियाहै तहां आठवसु गंगाके विषे
उत्पन्न होरहेहैं ४४ सो अबभी पृथ्वीमें गांगेयनामवाला आठवां
बसुहै और ये सातबसु यहां प्राप्त होगये वह एकबसु वहांहै ४५
और दूसरी शांतनु राजाकी स्त्रीकेविषे विचित्र वीर्यनामवाला और
प्रतापवान् ऐसा राजाहोताभया ४६ और विचित्रवीर्य राजाकेपांडु
धृतराष्ट्र ये दो राजा होतेभये सो अबभी पृथ्वीमें विख्यातहैं ४७
और तहां पांडुराजा के दो भार्या यौवनवती और कुंती माद्री इन
नामोंवाली देवताओं की स्त्रियोंके समान हैं ४८ और धृतराष्ट्र

राजाके एक भार्य्या गांधारी नामवाली और पतिव्रताहै ४९ तहां बंशोंका विभाग होवेगा सो वहां तिन राजाओंके पुत्रोंका महान् युद्ध होवेगा ५० और तिन राजाओं के पुत्रादिकों में क्लेश होनेसे मनुष्यों का क्षय होवेगा और यह युगके अंत में महान् भय होगा ५१ और सेनावाले राजाओं का आपसमें नाशमान् होनेसे और पुरराष्ट्र इन्होंके जुदे २ भाग होनेसे पृथ्वीको शिथिलता प्राप्त होवेगी ५२ और द्वापरयुग के अंतमें पहले भी मुझको शस्त्र और बाहनादिकोंसे राजाओंका क्षयदेखा है ५३ और तहां बाकी रहे मनुष्योंको रात्री में बिचेत सोवतेहुयेको शिवजी के अंश शस्त्रसे अपने तेजसे जलादेहै ५४ और पश्चात् अन्तके रूप इस क्रूर कर्म के नाश पीछे इस आख्यान वाला तीसरा द्वापर युग समाप्त होजावेगा ५५ और माहेश्वर का अंश होत संते पीछे तीक्ष्ण और दारुण दर्शनवाला युगप्रवर्त होवेगा ५६ और जिसमें अधर्मके करनेवाले पुरुष होवेंगे और स्वल्पधर्म रहेगा और सत्य का संयोग दूरहोजायगा और झूंठबढ़जावेगी ५७ और तिससमय में महेश्वर और स्वामिकार्तिक इनदो देवोंके आश्रयहुये मनुष्यवृद्ध अवस्था को प्राप्तहो जावेंगे ५८ सो यहपृथ्वीके राजाओंके नाश का निर्णय कहाहै हे देवताओं सो अंशकर अवतारलेवो देर मत करो ५९ और धर्मका अंशकुंती रानीमें अथवा माद्रीरानीमें धारण करो और विग्रहका मूलकलियुग गांधारीकेविषय धारणकरो ६० और ये दोपक्ष पृथ्वीके राजाओंके होंगे और ये राजे कालसे प्रेरे हुये स्नेहवाले और पृथ्वीके अर्थयुद्धकी इच्छाकरने वालेहोंगे ६१ और यहपृथ्वी जावोलोक धारिणी अपनी योनिको प्राप्तहोवे यह नैष्ठिक उपाय संसारमें प्रसिद्ध कहाहै ६२ इसप्रकार ब्रह्माजी का बचन सुनके पृथ्वी कालके संगराजों के बधके वास्ते अपनेस्थानमें जातीभई ६३ और ब्रह्माजी देवताओंको प्रेरतेभये औरआपनारायणको और पृथ्वीको धारण करनेवालेशेष ६४सनत्कुमारस्वाध्यसंज्ञक देवते अग्नि, बरुण, बसु, सूर्य, चंद्रमा, ६५ गंधर्व अप्सरा

रुद्र, बिश्वेदेवा, अश्विनीकुमार, इनसब देवताओं के अंश करके ब्रह्माजी अवतार करातेभये ६६ और जैसेयेपहलेकहेहैं कि कोईक तो योनि से उत्पन्नहुये और कईक बिना योनिसे तिसी प्रकार ये देवते पृथ्वी तलमें ६७ दैत्यदानवों के मारनेवाले और पुरुषों के ईश्वरहोतेभये ६८ और खिरणी वृक्षके समान संकाशवाले और वज्र के समानकरड़ सहनेवाले ६९ ऐसेहोतेभये और कईकतो दशहज़ार हाथियों के समान बलवाले कईक हाथियों के समूह के समानबल वाले और कईकगदा परिघ, शस्त्र, बरछी इन्होंको सहनेवाले और मूसल सरीखी भुजावाले ७० और पर्वतके शिखर को नाश करने वाले और सबमूसल से युद्धकरने वाले ऐसे सैकड़ों हजारों देवते वृष्णिवंशमें होतेभये ७१ और कुरुवंशमें जो देवते थे और पांचाल देश में जो राजा थे और यज्ञकरने वाले समृद्धिवान् ब्राह्मणों की योनिमें जोथे ७२ वे सब संपूर्ण शस्त्रविद्याके जाननेवाले और धनुष धारण करनेवाले वेदके नियम में युक्त संपूर्ण ऋद्धि गुणसे युत पूजन करनेवाले पुण्यकरने वालेऐसे होतेभये ७३ और वे सब क्रोध से युक्तहुये पर्वतों को और पृथ्वी को चलायमान करते भये और आकाशमें गमन करतेभये और समुद्रको क्षोभकराते भये ७४ ऐसे वैशंपायनजी राजा जन्मेजयके प्रति कहते हैं कि भूतों के उत्पन्न करनेवाले ब्रह्मा तिन्हों को इस प्रकार आज्ञादे के और लोकों को नारायण में लय करवाके शांतिको प्राप्त होता भया ७५ और हे जनमेजय जिसप्रकार बिष्णु भगवान् प्रजाके हितके वास्ते ययाति वंशमें और बसुदेवके घर जन्मलेतेभये सो तू फिरसुन ७६ ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्व्वभाषायांदेवानामंशावतरणेचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः ५४ ॥

पचपनवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहतेहैं ऐसेयह कार्य होचुका और जबपृथ्वी अपने स्थानपै चलीगई और भारतकुल में अंशकर के देवतों का अवतार होगया १ और धर्म, इंद्र, बायु, अश्विनीकुमार, सूर्य इन्होंका अव-

तार जब पृथ्वी में होगया २ और बृहस्पति का अवतार होने के पश्चात् और आठवांबसुका अवतार पृथ्वीमें होलिया ३ और मृत्यु काल,चंद्रमा,वरुण,इनसबोंका अवतार४पृथ्वीमें होगया और शिवजी, मित्रदेवता, कुबेर, गंधर्व, उरग, यक्ष, इनसबोंका अवतार जब होगया ५ तब नारदमुनि नारायणके अंशको अवतारके विनास्थित देखके ६ फिर तहां जलतीहुई अग्नि के समान तेजवाला औ उदय होता सूर्यके समान नेत्रोंवालाओ व्यापदाका वृत्तांतसहित और जटा कमंडलु धारणकरताहुआ ७ ऐसाअपने रूपको बनाके और चंद्रमा केसमान सफेदबस्त्र धारणकियेहुये और सुवर्णके आभूषण पहिने हुयेऔरअपनी कांखमें सखी की नाईंवीणा कोग्रहण करेहुये८और काली मृगचर्म सुवर्णका यज्ञोपवीत,दंड,कमंडलु इनसबोंकोधारण कियेहुये और साक्षात् इंद्रकी तरह रूपवाला ९ और गुप्त विग्रहों का नाशकरने वाला और महर्षि शरीरको धारणकिये हुये और गंधर्व वेदके जाननेवाला १० और बैररूपी क्रीड़ा में निश्चय करे हुये ब्रह्माका पुत्र, और देव,गंधर्व मनुष्य इनके आदि कारणों को जाननेवाला मुनि ११ और चारों वेदों को गानेवाला ऐसे विप्रोंके ऋषिनारद मुनि ब्रह्मलोक में विचरनेवाले और अविनाशी १२ देवताओंकी सभामें स्थितहोके वेगसे विष्णुके प्रतिबोलते भये-हे विष्णो आपने देवताओं का अवतार पृथ्वीमें कराहै १३ सो राजाओंके क्षयके वास्ते कराहै और यह अकारणहै और जो यह आपने राजाओंका क्षत्ररचाहै १४ सो हे नारायण मुझको कार्य के वास्ते नहीं दिखता है और जानतेहुए आपको यह कार्य युक्त नहीं है १५ क्योंकि आपनेत्रवालों के नेत्रहो सराहने लायकहो और ईश्वरों के ईश्वर हो और योगवालों के योगी और गतिवालोंको गतिहो १६ और हे विभो पृथ्वीमें गयेहुये देवतोंके अग्रिणी क्या तुमपृथ्वी पै अपने अंशको नहीं युक्त करोगे क्योंकि तेरे करके सनाथहुये और अ रेहुये देवते १७ कार्यांतर में गतहुये पृथ्वीके भार को उतारदेंगे हे विष्णो इसवास्ते मैं इसदेव सभामें तुम्हारे प्रेरणेको आयाहूं १८

और इसमें कारण यहहै कि हे भगवन् जो आपने तारका मय के युद्धमें दैत्यहनन किये थे १६ तिनकी पृथ्वीमें गये हुओं की आप गतिसुनो नारदजी कहतेहैं कि पृथ्वीके विषय मुदित मथुरा नाम वालीपुरी विख्यातहै २० और यमुनाके किनारे है और अनेकदेशों के मनुष्योंसे युत ऐसी मथुराहै तहां एकमधुनाम वाला और युद्ध में दुर्जय ऐसा दैत्यहोता भया २१ और महान् बलवाला और सबोंको त्रासदेनेवाला होताभया और तिसकापुत्र महान्बलवाला और सबजीवों को त्रासदेनेवाला लवणनामवाला होताभया २२ और तहां हजारों वर्षतक क्रीड़ा करताभया और वह राक्षस दैवयोग से अभिमान कर संसार को उजाड़ताभया २३ और जिस समय यह राक्षसथा तिससमय किसी को युद्धमें नहीं २४ जीतने लायक ऐसी अयोध्यापुरी में दशरथके पुत्र रामचंद्र होतेभये २५ २६ और धर्मको जाननेवाले और राक्षसोंको भयदेनेवाले रामचंद्र होते भये तबवह बलवान् राक्षस घोरबनके आश्रयहुआ २७ रामकेप्रतिकठोर वचन कहनेवाला अपने दूतको भेजता भया तब वह दूत राम के अगाड़ी जाके कहनेलगा हे राम जो बिषयमें आसक्त होवे वहतेरा शत्रु रावणहै २८ और श्रेष्ठ राजेराजव्रतमें स्थितहुये और प्रजाके शुभ की इच्छा करते हुये बलवान् शत्रु को समझते नहीं है २९ किन्तु बढ़े हुए देशको इच्छा करके शत्रु मारनेही चाहिये और सब जगह राजकरनेवाले राजाको बिशेषकर शत्रुजीतने चाहिये ३० और पहले अपनी इंद्रिय जीतनी चाहिये तिनके जीतने में निश्चयजयहै और राजाको तो बिशेषकर इन्द्रिय जीतनी चाहिये ३१ और व्य-सन धर्ममें फंसेहुये और बुद्धिमान् और अधिक बलवाले ऐसे शत्रु ओंको सामदंड अर्थात् समझाने का भयनहीं है ३२ और स्वभाव से उपजे इंद्रियों के विषयों करके सब हनन होजाते हैं क्योंकि इंद्रियोंका विषय तो इन्द्रियोंही को सुख करता है क्योंकि जो आ-पने मोह करके लक्ष्मी के वास्ते बलवान् रावण मारदिया ३३ और जो तुमने बनमें विचरते हुये और व्रतमें युक्त हुये यह कर्म

किया अर्थात् रावणमार दिया सो इसको हम युक्त नहीं मानते हैं ३४ और यह नीच विधिश्रेष्ठ पुरुषोंमें कहीं नहींदेखी जाती है और श्रेष्ठपुरुषोंमें क्रोध रहित धर्म रहता है और वह धर्म शुभको प्राप्तकरदेताहै ३५ और व्रतसे रहनेवाले तैंने रावणमारके आश्रमोंके दोषलगादियाहै और उसरावणकोही धन्यहै ३६ कि जो स्त्री के निमित्त युद्धमें मरगया और जो नीच धर्मसे तुझे रावण मारदिया यह तेरी खोटीबुद्धि है और तू अजितेंद्रिय है ३७ और जो तू बलवान्है तो अब मेरेसंगयुद्धकर इसप्रकार वह दूत कहताभया फिर तिस दूतके रूखे वचनसुनके ३८ हंसतेहुये भगवान् रामचंद्र तिस दूतकेप्रति यह कहनेलगे हे दूत यह तुझको तिस दैत्यके बड़ापनसे कहाहै ३९ क्योंकि जो मुझ वेदात्माको दोषकरके फेंकताहै और हे मूढ़ जो मैं श्रेष्ठमार्गमें वर्त्तमानथा और जो रावण मारदिया ४० और तिसको जो मेरीभार्या हरलई तो इसने क्या दोषहै और श्रेष्ठमार्गमें स्थितहुये साधुजन बचनसेही दूषित नहीं होतेहैं ४१ क्योंकि देवता तो सदाश्रेष्ठ पुरुषोंमें और अन्यपुरुषों में भी विचरताहै सो हेदूत जो दूतका कार्यहोताहै सो तुझको कर दिया अब तू जल्दी चलाजा देरमतकरे ४२ और आपको सराहनेवाले नीच पुरुषोंपै मेरेसरीखे प्रहार नहीं करतेहैं अर्थात्मारते नहींहैं सो यह शत्रुघ्ननामवाला मेराभाईहै४३सो तिस खोटीबुद्धि वाले दैत्यकेसंग युद्धकरेगा ऐसे रामचंद्र राजाकरके कहाहुआ वह दूत ४४ शत्रुघ्नके संग तिस बड़े मधुवनमें जल्द गमनकरनेवाली सवारीसे आवताभया ४५ और वह शत्रुघ्न भी युद्धकी लालसा करताभया तिस बनमें प्रवेशहोताभया और तदनंतर तिस अपने दूतके वचनसुनके क्रोधमें मूच्छितहुआ ४६ पीठपीछे तिस बनको देखके और युद्धके सन्मुख आवताभया फिर वहां शत्रुघ्न का और तिस दैत्यका महान् युद्ध होनेलगा ४७ और वेदोनों शूरबीर और धनुषको धारणकरनेवालेपैने२बाणोंसे आपसमेंहननकरनेलगे ४८ परन्तु को ऐसे युद्धके बिमुखहोताभया फिर शत्रुघ्न के बाणोंसे

पीड़ितहुआ तब वह दैत्य ४९ देवतोंके वरसे दियाहुआ और सब जीवोंको मारनेवाला ऐसेअंकुशको ग्रहणकरकेशब्द करनेलगा५० और शत्रुघ्नके शिरको पृथ्वीमें नवाके काटनेलगा ५१ तब वह रामचन्द्र जी के भ्रातारुक्मत् नामवाले खड्गको ग्रहणकर ५२ तिस अंकुशको और तिस दैत्यके शिरको भी छेदनकरताभया और पश्चात् तिस दैत्यकोमारके तिसके बनको भी वह बुद्धिमान् शस्त्र करके छेदनकरताभया ५३ फिर वह परमधर्मको जाननेवाला शत्रुघ्न तिस बनको छेदनकरके वहां मकानबनाने की रुचि करता भया ५४ और तिस मधुबनस्थानमें मथुरानामवाली पुरी रचता भया इसप्रकार नारदमुनि भगवान्केप्रतिकहरहेहैं कि हे भगवन् वह परम उदारपुरी ५५ और किला दरवाजे तोरण इन्होंसे शोभित ऐसीमथुरापहले शत्रुघ्नकरके रचीहुईहै५६ और बढ़ेहुये देशोंकरके मिलीहुई और समृद्धिमान् मकानोंकरकेयुक्त और बगीचियोंकरके युक्त ऐसी मथुराहै और जहां अच्छीसीमा गड़रही५७और जिसके चारोंतरफ कोटबनरहाहैऔर जिसके ताागड़ीकेसमानखाईबनरही है और कुंडलरूप राजाओंके मकानबनरहे५८औरजिसमेंखुलेहुये दरवाजे मुखके समान मालूमहोते हैं और जहां बाजारकी चौपट शोभायमान होरहीहैऔरजिस मथुरापुरीमें रोगकरके रहितशूरवीर पुरुषहैंऔरजिसपुरीमें बहुतसेहाथी और घोड़े और रथोंका समूह है५९औरवहअर्द्धचंद्राकार बनीहुईऔरयमुनाके तीरकरके शोभितहै औरजिसमें बहुतसुन्दर व्यवहारी पुरुषोंकी दुकानहैऔर रत्नों के खजानेकरके गर्वितहै ६० और जहां अच्छीखेती उपजे ऐसेखेत हैं और वर्षासमय इन्द्र वर्षताहै और वह नवीन नारियों करके मुदित मालूम होतीहै६१ इसप्रकार प्रकाशवाली तिसपुरीमें भोजकुलको बढ़ानेवाला राजाशूरसेन होताभया६२ और हे विष्णो तिसशूरसेन के उग्रसेननामवाला पुत्रहै और तिस उग्रसेनके जोकि आपनेतार-कामय युद्धमेंमाराथा ६३ वह कालनेमि नामवाला दैत्य कंसनाम वाला और भोजबंशको बढ़ानेवालाहै ६४ और पृथ्वीकेविषे राजा

ऐसे विख्यातहैं और सिंहकेसमान पराक्रमवालाहै राजाओंकोभय करनेवालाहै और घोरहै और तिससेसबराजा भयमानतेहैं६५ और सबजीवोंको भयदेनेवालाहै और श्रेष्ठमार्गसे बाहर निकला हुआ है और दारुण अभिनिवेशकरके तथादारुणशरीरके ६६ अभिमान करके युक्तहै और तिसी अभिमानकरके प्रजाकेरोम खड़े करदेताहै और राजधर्ममें युक्तनहींहै और कुछ अपने पक्षवाले पुरुषोंको भी सुखनहीं देताहै ६७ और अपनेराज्यमें भी प्रियनहीं करताहै सदा करलेनेमें रुचिरखताहै और हे भगवन् जो किआपनेयुद्धमें माराथा वहकंसइसप्रकार उत्पन्नहोरहाहै ६८ और वहदैत्य आसुरीआत्मा करके सबजीवों को बाधादेताहै और जो पहिले हयबिक्रान्त नाम वाला दैत्य आपने माराथा वह हयग्रीव नामवाला उत्पन्न होरहा है ६९ और केशीनामवाला तथा कंसकेपीछे जन्मा हुआ हयनाम वाला उत्पन्न होरहा है और वह दुष्ट हिंसने में बड़ा चतुर है और सिंहरूप है और किसी से नहीं रुकता है ७० और वह अकेला वृन्दावन में बसता है और मनुष्योंके मांसको भक्षण कर लेताहै और जो कि बलिराजा का पुत्र अरिष्ट नाम वाला था वह ऊंचाकंधावाला बैलकेरूपको धारण कियेहै ७१ औ गौओंकाबैरी बनरहाहै और इच्छापूर्वक विचरताहै और जो कि दिति का पुत्र दानवोंमेंश्रेष्ठ रिष्टनामवालाथा ७२ वह दैत्य हाथी के रूप को धारणकियेहुयेहै और वह कंसका बाहनहै और जोकि पहले लंब नामवाला दैत्यथा ७३ वह अब दैत्योंमें दारुणरूप प्रलंबनाम है और भांडीरबटके आश्रय बैठारहताहै और जोकि खरनामवालाथा वह अब धेनुकनामवाला प्रसिद्धहै ७४ और वह तालबनमें जाके चरताहै और प्रजाको दुःखदेताहै और जोकि पहलेदानवोंमेंश्रेष्ठ बाराह और किशोरनामवाले दैत्यथे ७५ वे दोनों रंग अखाड़ा में चाणूर और मुष्टिकनामवाले दैत्य होरहेहैं और जोकि पहले यही मय और तारकनामवाले भौमासुर और नरकासुरके पुरमें भी रत रहेथे ७६ नारदजी कहते हैं कि हे विष्णो इस प्रकार जो ये दैत्य

तुमको पहले मारेथे ७७ वे सब मानुषी शरीर को धारणकियेहुये पृथ्वीके मनुष्योंको बाधादेरहेहैं और वे सब तेरी कथाके बैरी हैं और तेरे भक्त मनुष्यों को मारतेहैं ७८ सो हे भगवन् तेरे प्रसाद से इन दानवों का क्षयहोगा और वे स्वर्ग में भी तेरे से डरते हैं और समुद्र में भी तेरेहीसे डरतेहैं ७९ और पृथ्वीमें भी तेरेही से डरतेहैंऔर अन्यसे कदाचित् भी नहीं डरते हैं ८० और हे श्रीधर खोंटा बृत्तांतवाला और तेरे से मराहुआ और स्वर्ग से गिरा हुआ ऐसे दैत्यकी गति पृथ्वीहै और जो पृथ्वीमें मनुष्य शरीरधारीमरना है तिसका स्वर्गमें गमनहोताहै ८१ और हे भगवन् तुम्हारे जागते हुये सुलभहै सो इसवास्ते आप पृथ्वी तलमें जावो और हम भी जातेहैं८२और दानवोंकेविनाशकेवास्ते आत्माकरके अपनीआत्मा को मैं रचूंहूं और हे भगवन् आपदेवतोंको दृश्य और अदृश्यमूर्त्ति बनावो ८३ फिर तिन्होंमें तेरेसे रचेहुये दैवत पृथ्वीतलमें होवेंगे और हेभगवन् आपके अवतार लेने में वह कंसनहीं रहैगा ८४ कि जो कार्य्यके वास्ते निषेध करता है और जिसके वास्ते यह पृथ्वी आईथी और हे भगवन् तुम भारतकुलमें कार्यके गुरूहोऔर आपही भारतखंडके नेत्रहो और आपही रक्षकहो८५सो इसवास्ते आप पृथ्वीमें जावो और तिनदानवों को मारो ८६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वभाषायांनारदवाक्येपंचपंचाशतमोऽध्यायः ॥

छप्पनवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहते हैं इस प्रकार नारदमुनिके बचन सुनके हंसते हुए देवताओंके प्रभु ईश्वर भगवान् ऐसा प्रति बचनकहने लगे १ हे नारद त्रिलोकीकेवास्ते जो कुछ मुझको तू कहता है तिस सम्यक् वृत्तांत का तू उत्तर सुन२ और जोदानव पृथ्वी में मनुष्य शरीर धारण किये हैं वे सब मुझको जानलिये हैं और जिनदैत्यों के आश्रयहोके जो कंस दैत्यशरीरको फुलाताहै तिसको भी जानताहूं ३ और उग्रसेन का पुत्रकंस और घोड़े के रूपवाला केशी ४

और कुवलयापीड़ नाम वाला हाथी और चाणूर, मुष्टिक ये दोनों मल्ल और बैलके रूपवाला अरिष्ट दैत्य ५ खर प्रलंब इन सबों को मैं जानता हूं और भगवान् कहतेहैं कि हे विप्र बलिकी पुत्री वह पूतना भी मुझको जानलई है६ और जो कि गरुड़के भयसे यमुना के हृदय में स्थित है तिस काली नाग को भी मैं जानूंहूं ७ और जो सब राजा ओंके मस्तक पर स्थित रहा है तिस जरासंधको भी जानताहूं औरजो पहले जोतिषपुरमें नरकासुर था और अबमनुष्य लोकमें मनुष्य शरीर धारण किये है तिसको अच्छीतरह जानता हूं ८ और जो शोणितपुर में हजार बाहुओं वाला बाणासुर था तिसको मनुष्य शरीर धारण किये हुये को भी जानताहूं ९ और हजारों भारोंसेयुक्त और देवताओंसेभी दुर्जय भारसेयुक्त और मेरे बिषय आसक्त और वड़ भार से युक्त ऐसीपृथ्वीभी जानलईहै १० और जिसप्रकार इन राजाओं का क्षयहोवे सोभी जानलियाहै और पृथ्वीलोक का क्षय और स्वर्गलोककी सत्क्रिया जानीजातीहै ११ और तिनकठोर देहवाले और खोटी वृत्तिमेंबर्त्तने वालोंकायोग और अपने भक्तोंका योगदेखूंगा १२ और मैं मनुष्य लोकमें मनुष्यभाव को प्राप्त हुआ तिनसबकंस आदिकों काभी बधकरूंगा १३ और जिस २ बिधान करके जो शांतिको प्राप्तहोवेगा वही २ बिधानमैं करूंगा १४ और इनसब देवताओं के शत्रु युद्धमें मारनेही चाहिये क्योंकि जिनदेवताओं को पृथ्वी के वास्ते आपने अंशका अवतार कियाहै १५ और हेनारद देवते, ऋषि गंधर्व, इनको मेरीही मतिके अनुसार किया है और मुझको यहसब पहलेही निश्चय करलिया है १६ ऐसेनारद के प्रतिकहके भगवान् ब्रह्माके प्रति ऐसे कहतेहैं हे ब्रह्मन् जिसदेशमें अच्छीतरह जन्माहुआ मैं अपने वेषकरकेतिन सबोंको मारूं तहांमेरा बिधानकरो १७ब्रह्माजी कहतेहैं हेनारायण वहसिद्ध उपाय सुनोकि जो तुम्हारे पिता और माता होवेंगे १८ और हे महाबाहो जिसजगह जन्मेहुये तुमयादवों के महान् संपूर्ण बंशको धारण करोगे १९ और पश्चात् तिनदैत्योंको मारके और

वंशको बढ़ाके फिर मर्यादा को आप स्थापित करोगे सो मुझसे सुनो २० पहिले कश्यपजी बरुण देवताकी महान् यज्ञमें दूधदेने वाली गौओंको हरताभया २१ पश्चात् अदिति और सुरभीनाम वाली दो कश्यपकी स्त्री तिसवरुणको उलटीदेतीहुई गौओंको नहीं देनेदेतीभई २२ पीछे वरुणदेव मुझकोप्राप्तहोके और शिरसे नमस्कार करके यह कहताभया हेभगवन् मेरी गौ गुरु कश्यपजीने हरलई २३ और मेरे गुरु कश्यपजी अपने कार्यकरकेभी तिनगौओं को नहीं देतेहैं क्योंकि अदिति और सुरभी इनदोनों स्त्रियोंकाकहा मानतेहैं २४ और हेप्रभो वे मेरीगौयें अक्षयहैं दिव्यहैं और इच्छा पूर्वक दोहदेनेवालीहैं और अपने तेजकरके रक्षितहुई सागरपर्य्यंत चरतीहैं २५ सो हे भगवन् तिन गौओंको कश्यपके विना अन्यजन हड़कनेको भी कौन समर्थहै और वे गौयें अक्षय और देवताओं के अमृतके समान दूधदेतीहैं २६ सो हे ब्रह्मन् समर्थ अथवागुरु अथवा इतरजन येसब तुमको दण्डदेनेलायकहैं और तुम हमारीपरम गतिहो २७ और जो यदि कार्यको नहींजाने ऐसे समर्थोंको तुमदंड नहीं देवोगे तो संसारके धर्मरूपपुल टूटजावेंगे २८ और हेब्रह्मन् आपको करनेलायकहो सो करो परंतु मेरी गौयें दिवादेवो फिर मैं सागरकोजाऊं २९ और अविनाशी तत्त्वरूप वे गौयें मेरी आत्माहैं और हे ब्रह्मन् तेरेविषे प्रवृत्त पुरुषोंको गौ और ब्राह्मणोंको एकही मानाहै ३० सोइसवास्ते पहले गौओंकी रक्षाकरनी चाहिये फिर रक्षितहुई गौ ब्राह्मणोंकी रक्षाकरती पश्चात् गौ और ब्राह्मणोंकी रक्षाहोनेसे सब जगत्की रक्षाहोजाती है ३१ ब्रह्माजी ऐसेभगवान् के प्रति कहतेहैं कि इसप्रकार जब बरुण मुझको कहने लगा तब गौओंके कारणको जाननेवाला मैं कश्यपको शापदेताभया ३२ कि जिसअंशकरकेकश्यपको गौहरलईहै तिसीअंशकरकेपृथ्वीमें जाकेगोपहोगा ३३ औरजोसुरभीनामवालीऔर अदितिनामवाली कश्यपकी स्त्रीहैं वेभीदोनों तिसीकेसाथ जातीहुई तिसकीस्त्रीहोवेंगी ३४ और तिनकेसंग गोपभावको प्राप्तहुआ रमणकरैगा सो तिस कश्यपका

अंशतेजकरकेकश्यपकेसमान३५और बसुदेवइसनामकरके पृथ्वीके बिषय गौओंके बीचमेंरहेहै औरतहां मथुरापुरीसेनजीकही गोवर्द्ध-ननामवाला पर्बत है तहां वह कंशको कर देनेवाला और गौओं में अभिरत बसुदेव रहैहै और वे दोनों अदिति और सुरभी नाम वाली तिसकीस्त्रीहै ३६ सोदेवकीऔर रोहिणीनामसे प्रसिद्धहैंसो हेभगवन् लोकोंकेकल्याण केवास्ते तहांआप अवतारलेवो३७और तहांतुमकोजय आशीर्बाद इन्होंकरकेयेदेवते बढ़ातेरहैंगे सोतुमअ-पनी आत्मा करके अपने आत्मा को पृथ्वीतलमें उतारके ३८ और देवकीरोहणी इनको गर्भकर के प्रसन्नकरो और तहांतुम आदिमें गोपाल लक्षणवाले ३६ बालकहुए और आत्माकरके और माया करके आत्माको ढककेबैठो जैसे पहिलेत्रैबिक्रम मन्वंतर के समयमें हुएथे ४० अर्थात् बामनरूपहोके सबपृथ्वी ग्रहणकीथी और गोपों कीहजारों कन्याओंसे रमणकरतेहुए पृथ्वीमें बिचरो और हेबिष्णो तुम्हारेकरके रक्षितहुई गौवनोंमेंभाजतीहुई ४१ बनमालाकरके प-रिक्षिप्त तेरेशरीर कोदेखेंगी सोधन्यहैं और हेबिष्णो गोपालों की बस्तीमें जब ४२ आपबालरूपनेको प्राप्तहोजावोगे तबसंसारभी बा-लकभावको प्राप्तहोजायगा और तुम्हारे चित्तके वशहुए तुम्हारे भक्त ४३ गौओंकेविषयगोपहुए निरंतर तुम्हारे अनुचरहोवेंगे और बनमें गौचरावतेहुए और गौओंकेस्थानमेंभाजतेहुए ४४और यमुना के तीर में गोतेमारते हुए बहुतप्रीति को प्राप्तहोवेंगे और बसुदेव काभीजीवना श्रेष्ठहोवेगा ४५ क्योंकि जिसने आपतात अर्थात्बाप कहोगे अथवा कश्यप ऋषि केबिना आप किस के पुत्र बनतेहो ४६ और हेबिष्णो अदिति बिनातुमको धारण करनेमें कौन समर्थहैसो हेभगवन् अपनेयोगसे बिजयके वास्तेतुमजावो औरहमभी अपने२ स्थानोंको जातेहैं ४७ वैशंपायन जीकहतेहैं सोभगवान् देवतोंको स्वर्गमें आज्ञादेके और क्षीरसमुद्रके उत्तरदिशामें अपनेदेशको जाते भये ४८ तहांएक पार्वती नामवाली सुमेरु पर्बतकी दुर्गम गुफा है वहपर्बणियोंमें देवताओंको नित्यपूजतीहै तहां भगवान् जाके अपने

पुराने शरीरको स्थापित करतेभये और अपनी आत्माको बसुदेवके घरमें योजनकरतेभये ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशभाषायां पितामहवाक्येषट्पंचाशतमोऽध्यायः ५६ ॥

सत्तावनवां अध्याय ॥

अब हरिबंशान्तर्गत बिष्णु पर्व्वको कहतेहैं-बैशंपायनजी कहनेलगे भगवान्‌को पृथ्वीमें गयेहुएजान के और देवताओं के अंशोंको पृथ्वी गतजानके कंस केविनाशको कहनेवाला नारद मथुरामें जाताभया १ और वहनारदमुनि स्वर्गसे कूद केआयाहुआ मथुरापुरी के बगीचेमें बैठके कंसकेप्रतिदूतकोभेजताभया २ फिर वह दूतमुनिकाआगमन तिसराजा कंसके प्रतिकहताभया और फिरवह कंसमुनिके आगमन को सुनके जल्दही ३ अपनीपुरीसे आताभया फिर वहां आकेअतिथि रूप और प्रशंसा करनेलायक और देवताओं केऋषि, और पापोंसे रहित४और तेजकरके अग्निकेसमान आकारवाले, और शरीरकरके सूर्य्य के समान कांति वाले ऐसे नारद मुनिको कंसदेख के स्तुति करताभया औरयथाविधिसे पूजाकरताभया ५ फिरअग्निकेसमान आसनबिछायके तिसपै बैठावताभया पीछे इन्द्रका प्यारा वहमुनि तिसआसनपै बैठके ६ उग्रसेनके पुत्र, और परम कोपवाले कंसके प्रति यह कहनेलगा किहेबीर तुझको बिधिसे अच्छेकर्मसे मेरीपूजा करीहै इसवास्तेमेरा बचनतूसुन ७ और फिरउसीतरह करनाचाहिये नारदमुनि कहतेहैंहे कंसमैं स्वर्गलोकमें और ब्रह्मलोकजाताभया८ और सूर्यकाप्यारा और बड़ाऐसा सुमेरुपर्वतपै भीगयाथा और मुझ कोनंदनवनभीदेखा और चैत्ररथनामवाला कुबेरकाबनदेखा ६ और देवताओं के संगनदियों में स्नान किया और दिव्यतीनधारा वाली ऐसीगंगादेखी १० जो किस्मरणकरनेही से सबकेपापोंका नाशकर देतीहै और मुझकोसबतीर्थों काजलस्पर्श किया ११ और ब्रह्मऋषि योंकेसमूहों करके सेवित और देव, गंधर्बअप्सरा इन्होंसेनादित१२ ऐसाब्रह्माके स्थानकोदेखताभया सो इसप्रकार देखताहुआ एकस-

म यग्रपनी वीनकोग्रहणा कियेहुयेसुमेरु पर्वतकेशिखर पैदेवतोंसहित ब्रह्माकीसभाको देखताभया १३ और तहां सफेद पगड़ियोंवाले और अनेकप्रकारके रत्नोंके आभूषण पहिनेहुए दिव्य आसनों पै बैठेहुए ऐसेब्रह्मा आदि देवतोंकोदेखताभया १४ और तहांवे मुझको ऐसेस-लाहकरतेसुनेहै किअनुचरोंसे सहिततुम्हारे मारनेका उपायकियाहै १५ और हेकंसजो यहतेरीबहिनदेवकीहै तिसमेंजोआठवां गर्भहोगा वहतेरी मृत्युहोगा १६ और वहदेवतों का सर्बस्व है और स्वर्गको परमगतिहै और देवताओंका परम रहस्यहै वहतेरी मृत्युहोगा १७ और वहपरसेभीपरहै देवतोंकास्वयंभूहै और तिसकीसब उत्पत्ति तेरे कोकहताहै १८ और वह तेरीमृत्यु निश्चयहै पहले जन्ममेंभी उसीको मृत्युकरीथी तू स्मरणकर और हेकंसदेवकीके गर्भमारनेका यतनकर १९ और यहमेरीतेरे बिषेप्रीतिहै इसीवस्तेमैंयहां आयाहूं और जातू सबकामनाओं को भोग और तेरे मंगलहो मैंतो अबजाताहूं २० बैशं-पायनजीकहतेहैं—ऐसेकहकेजब नारदचलागया तबतिसकेवाक्य को चिंतवनकरताहुआ कंसदांतोंको खिलाकेऊंचा स्वरसेबहुत देरतकहं-सताभया २१ और हंसताभया अपनेमृत्योंके आगेऐसे कहताभया किसबकेहास्यका वचनहै और नारदनिश्चय बुद्धिमान्नहीं २२ क्यों-किमैंइंद्रकरके सहितदेवताओंसे युद्धमेंतथाशयन करताहुआतथामत्त और प्रमत्तहुआ २३ कभीडरनेलायक नहींहूं और जो मैंअपनी भुजा-ओंकरके इस पृथ्वीको क्षोभकरताहूं तिसमुझ कोक्षोभ करानेकोमनु-ष्यलोकमेंकौनहै २४ और अबसे लेके मैं देवताओंके मार्गमें वर्त्तमान् जीवोंकामहान् कदनकरूंगा २५ अर्थात् हननकरूंगा और हयदैत्य, केशी, प्रलंब, धेनुक, अरिष्ट, वृषभ, पतनाकालिय, २६ इनसबोंकोआज्ञा देवो और ये सबदैत्यसंपूर्ण पृथ्वीमेंविचरोऔरइच्छापूर्बकबिचरतेहु-ए जो हमारे पक्षकेदूषकहैं तिन्होंकोमारो २७ और इस पृथ्वीकेविषय गर्भस्थजीवों कीभीगतिपिछानो क्योंकिनारद कोहमनेगर्भसेही भय कहाहै २८ और हेदैत्यो तुमभी अपनी इच्छापूर्वक संदेहसे रहित बिचरो और मैंतुम्हारामालिकहूं इतनेदेवताओंका कियहुआभयतु-

मकोनहींहै २९ वैशंपायनजी कहतेहैं कि वह क्रीड़ाकरनेवाला मिले हुएलोकों का भेदकरने में शीलस्वभाववाला भेदकराके प्रीति को प्राप्तहोता है ३० और निरंतरखोजकरताहुआ और चंचलरूपहुआ और राजाओं को वैरकरावता हुआ इसप्रकारनारद मुनि विचरता है ३१ और वहकंसइसप्रकार वाणी कहके जलतेहुए चित्तसे अपने मकानमें प्रवेशहोताभया ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेविष्णुपर्वभाषायांनारदागमनेकंसवाक्येसप्तपंचाशोऽध्यायः ॥ ५७ ॥

अट्ठावनवां अध्याय॥

वैशम्पायनजीकहतेहैं--इसप्रकारवहकंसअपनेहितदायकमंत्रियों कोआज्ञादेताभया कितुमसबदेवकी केगर्भमरानेका यतनकरो १ और पहिलाहीगर्भ सेलेकेसब गर्भों कोमारोक्योंकि शत्रुजड़सेही मारनाचाहिये और जिसमेंकुछ भयहोवेवह अनर्थहोताहै २ और देवकी कोलहकोईहुई घरमेंरक्खो और विस्त्रब्धहुई कोकहींइच्छापूर्वकविचरनेदेवो और गर्भकालमेंरक्षा करनीचाहिये ३ और मेरेस्त्रियोंकोकहो कि देवकीकेपुष्पोंके और गर्भकेमहीने गिनतीरहै और जबगर्भका परिणाम होजाय गातबहम जानलेंगे ४ और श्रेष्ठ मेरेहित दायक भृत्योंकरके रातिदिन स्त्रियोंकेविषय वसुदेवकी रखवालीकरावो ५ और यहसबवृत्तान्त वर्षों तकस्त्रियोंकेआगे नहींकहना और यहमनुष्योंकायत्न मनुष्योंहीसेसिद्ध होताहै ६ और मेरेसरीखों सेदैवभीहननहोजाताहै और कहींमंत्र औषधइत्यादिक अनुकूलबस्तुओंसे दैव भीउलटा होजाताहै ७ वैशंपायनजी कहतेहैं इसप्रकार वहकंसदेवकी के गर्भ मरानेकोयतन करावताभया ८ और नारदसे प्रयोजन सुनकेभयसे सलाहकर ताभया और ऐसेअरिष्ट संज्ञककंसके यतनको भगवान् सुनकेअंतर्धान हुएचिंतवन करनेलगे ९ और यह बिचारते किइनसात देवकीकेगर्भों कोयहभोजका पुत्रमारेगा और आठवेंगर्भ मेरेसेकार्यसिद्ध होवेगा १० इसप्रकार विचारतेहुए तिन्होंका चित्तपाताललोकमें जाताभया और तहांपाताललोकमें गर्भ ऐसेनामवाले

छः दैत्यहैं ११ और तिनका शरीर योद्धाओंके समानहै और अमृत पिये हुये के समान है और तिन्हों की अमर मूर्ति है और वे सब कालनेमि राक्षसके पुत्र हैं १२ और वे पहिले हिरण्यकशिपु को त्यागके ब्रह्मा की उपासना करतेभये १३ और तीव्र तपकरनेलगे और जटाओंके मंडल धारणकरलिये पश्चात् तिन षट्गर्भोंके प्रति ब्रह्मा प्रसन्न होके बरदेताभया १४ ब्रह्माजी कहनेलगे हेदानवोंमें श्रेष्ठतुमको मैंतपकरके प्रसन्नकिया सो तुमबरमांगो जोतुम कहोगे सोदेऊंगा १५ फिर वे सब एकप्रयोजनवाले ब्रह्माकेप्रति यहकहते भये हे भगवन् जो हमारे पै प्रसन्नभये तो यहबरदान देवो कि १६ देवते महासर्पादिक शाप के देनेवाले परमऋषि इन करके हममरें नहीं १७ और यक्ष, गंधर्वपति, सिद्ध, चारण इन्होंकरके भीहमारा बध नहींहोवे सो यह वरदेवो १८ पश्चात् तिनके प्रति प्रसन्नहुआ ब्रह्माअंतर आत्माकरके यह कहताभया कि जो आपने कहा है सो सब इसीतरह होवेगा १९ ऐसे षड्गर्भोंको बरदेके ब्रह्मा तो स्वर्ग लोकमें चलागया पीछे हिरण्यकशिपु क्रोधसेवाक्य कहताभया २० तुमने जो मुझको त्यागके ब्रह्मासे बरलियाहै इस वास्तेजावो स्नेह से रहित शत्रुरूप तुमको मैं त्यागताहूं २१ और जो षड्गर्भा ऐसा शब्द तुम्हारे पितानेबढ़ा के कहाहै इस वास्ते वही तुम्हारा गर्भगत तुमको मारेगा २२ और तुमछहूं महान् दैत्यदेवकी केगर्भमें होवोगे और पश्चात् तुमको कंसमारेगा २३ वैशंपायनजी कहतेहैं—पीछेजहां वे असुरथे तहां विष्णुभगवान् जातेभये और तहां वे छः गर्भरूप दैत्य मिलेहुए जलके गर्भ गृहमें सोये थे २४ तिनको विष्णु देखके और सोवते हुये और गर्भमें संस्थित और कालरूपिणी निद्रा करके सब अन्तर्द्धानहुये के समान होरहे २५ ऐसे तिन दैत्योंके शरीर को विष्णु भगवान् स्वप्नरूपकरके आवेश करावतेभये और प्राणेश्वरों को निकालके निद्राके वास्ते देतेभये २६ और पश्चात् तिस निद्रा को सत्य पराक्रमवाले भगवान् यह कहतेभये हे निद्रे मेरेसेरचीहुई तू देवकीके भवनकेसमीपजा २७ और इन प्राणेश्वर षड्गर्भों को

ग्रहणाकरके देवकीके छः गर्भों में यथाक्रम से योजनकर २८ और पश्चात् येगर्भ जन्मकेधर्मराजकेस्थानमें पहुंचलेंगे और कंसकायत्न निष्फलहोजायगा और देवकीकाश्रम सफलहोजायगा २६ तबतेरी प्रसन्नता पृथ्वीमें अपने प्रभावकेसमान मैं करूंगा जिसकरके सब लोकमें देवी होजायगी ३० और पश्चात् सातवां देवकी का गर्भ सौम्यअंश होगा और मेराअग्रज अर्थात् बड़ाभाई होगा ३१ और वह गर्भ सातवां महीनामें रोहिणी में प्राप्त होगा ३२ और गर्भके संकर्षण होनेसे वह युवावस्थामें संकर्षण नामवाला होगा और यह मेरा बड़ाभाई चंद्रमाके समान दर्शनवाला होगा ३३ और देवकी का यह सातवांगर्भ भयसेगिरपड़ा ऐसे सबकहैंगे और जबमैं आठवां देवकीके गर्भमें आऊंगा तब कंस यत्नकरेगा ३४ और वसुदेव का अनुचर नंदगोपहै तिसकी भार्या यशोदा नामवालीहै ३५ तिस विषे हमारे कुलमें तू नवांगर्भहोगी और कृष्णपक्षकी नवमीके दिन तू जन्म लेवेगी ३६ और मैं अभिजित् योगमें और रात्रिका यौवन अर्द्धरात्रिमें सुखपूर्वक गर्भको मोक्षकरूंगा अर्थात् जन्मलेऊंगा ३७ और हमदोनों आठवें महीनेमें संगजन्मलेवेंगे जब कि कंस हमारी रखवारी करने की तैयारी करनेलगेगा तब और आठवें महीने में जन्म लेंगे तबकंस गर्भ के व्यत्यास होने से मूढ़ता को प्राप्त होजायगा ३८ और हे देवि जन्मलेनेके पश्चात् मैं तो यशोदा केपास चलाजाऊंगा और तू देवकी को प्राप्तहोगी पीछे तुझ को कंसपैरोंकी तरफसे पकड़ के शिलापै पटकेगा पश्चात् पटकी हुई तू आकाशमें स्थित होवेगी ३९ और मेरी छबि के समान कृष्णाहोगी और बलदेव के समान मुखवाली होवेगी और बड़ीबाहुओंको धारण करतीहुई और आकाशमें मेरी बाहुओंके समान बाहुओंवाली हुई ४० और तीनशिखावाली शूलको धारण करेगी और सुवर्ण की मूठवाली खड्ग और मदिरा का पूर्णपात्र ४१ श्रेष्ठ कमल इन्होंको धारण करेगी और नीलवस्त्र का घांघरा और पीतांबर वस्त्र शिरपै धारण करेगी और चंद्रमाके समान सफेद हार को धारण

कियेहुये ४२ और दिव्यकुंडल करके बिभूषित कर्णोवाली और चं-
द्रमा के समान मुखवाली ४३ और विचित्र मुकुट करके और केश
बंध करके शोभित और सर्प के समान भयंकर भुजाओं करके दशों
दिशाको डराती हुई ४४ ऐसेरूप को तू धारण करेगी और मोरके
समान नीली ध्वजा करके शोभित और मोरके चंद्रेका बाजूबंध से
शोभित ४५ और जीवोंके समूह करके संकीर्णहुई और मेरेमार्गके
अनुसार बर्त्ततीहुई ऐसी तू कुमार अवस्थाको प्राप्तहोके स्वर्गलोक
में चलीजायगी ४६ तहांतुझको सौनेत्रोंवाला इंद्र देखके मेरेसेरचा
कर्म करके और दिव्य अभिषेक करके देवताओं के संगयोजन करे-
गा ४७ और तहांतुझको बहिनबनानेके वास्ते वहइंद्र ग्रहणकरेगा
और कुशिक गोत्रहोने से तू कौशिकी नामवाली होवेगी ४८ और
फिर तेरा स्थान वह इंद्र पर्बतों में श्रेष्ठ बिंध्याचल पर्बत पै करेगा
पश्चात् तूहजारों स्थानोंकरके पृथ्वीकी शोभाकरेगी ४९ और तिस
पर्बतपै शुम्भनिशम्भ इन नामोंवाले दोदैत्य अनुचरों करके सहित
मुझको मनमें स्मरण करके मारेगी ५० और त्रिलोकी में बिचरने
वाली तू सत्य उपचार करके बर्तेगी और हे महाभागे तू बरदेने
वाली और कामरूपिणी होवेगी ५१ और तू जीवों करके यात्राके
अनुसार पूजित होवेगी और मांस बलीकी तू प्यारीबनेगी और नव-
मी तिथिके दिन तू पशुक्रिया की पूजाको प्राप्तहोवेगी ५२ और जो
मेरे प्रभावके जाननेवाले मनुष्य तुझको प्रणामकरेंगे तिनकोपुत्रका
अथवा धनका कछुभी दुर्लभनहीं है ५३ और खोटेमार्गमें चलतेहुये
और महासमुद्रमें डूबतेहुये और चोरोंकरके रोकेहुये ऐसे मनुष्योंकी
तू परमगतिहै ५४ और जो तुझको इसस्तोत्रकरके भक्तिकरके प्रणाम
करेंगे तिनका मैं नाशनहींकरूंगा औरवह मुझसे नहींमरेंगे ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तरविष्णुपर्वभाषायांभारावतरणेनिद्रासंविज्ञानो
नामाष्टपंचाशोऽध्यायः ५८ ॥

———※———

उनसठवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहते हैं—अबहम आर्यानामवाले स्तोत्रको कहेंगे जोकि पहले ऋषियोंने कहाहै और मैंत्रिभुवनकी ईश्वरी नारायणी देवीको नमस्कार करताहूं१ स्तोत्र—तूसिद्धिहै और लक्ष्मी है धृतिहै कीर्त्ति है लज्जाहै विद्याहै सन्नतिहै मतिहै संध्याहै रात्रिहै प्रभाहै निद्राहै और तहोकालकी रात्रिहै २ आर्याअर्थात् श्रेष्ठहै कात्यायनी है देवीहै कौशिकीहै ब्रह्मचारिणीहै और सिद्धिसेनकी जननीहै और उग्रचारीहै और महान् तपकरनेवालीहै ३ जयाहै विजयाहै तुष्टिहै पुष्टिहै क्षमाहै दयाहै और धर्मरायकी बड़ी बहिनहै और नीलावस्त्र की धारण करनेवाली है४ और बहुत रूपोंवाली है विरूपवाली है और अनेक प्रकारके रूप करनेवाली है और बिरूप नेत्रोंवाली है और विशालनेत्रोंवाली है और भक्तोंकी रक्षाकरनेवालीहै ५ और हे महादेवि घोरपर्बतोंके अग्रभागमें और नदियोंमें और गुफाओंमें और बनोंमें बगैचों में तूबसतीहै ६ और शवरजातिके म्लेच्छ और बर्बर जातिके म्लेच्छ और पुलिन्दजातिकेम्लेच्छ इन्होंकरके पूजित है और मोरकीपंखोंकी ध्वजावालीहै और तू सब लोकोंको बिचरती है७ और मुरगे, बकरे, मेढ़े, सिंह, भेड़ इन्होंकरके तू युक्त रहती है और घंटाकेशब्दोंसे बहुलहुई तू सदा बिंध्याचल पर्वतपै बसतीहै ८ और त्रिशूल, पट्टिश, शस्त्र विशेष इन्होंकोधारणकरतीहै और चन्द्रमा सूर्य इन्होंकीध्वजावाली है और कृष्णपक्षमें तेरी नवमीतिथिहै और शुक्लपक्षमें एकादशीहै९ और बलदेवकी भगिनीहै और रात्रीहै और कलहकी प्यारीहै और तू सबजीवोंका बासहै और निष्ठाहै और परमगतिहै १० और हे देवि तू नंदगोपकी पुत्रीहै और किसी से जीती नहीं जातीहै और पुरानेवस्त्रोंवाली है और श्रेष्ठवस्त्रोंवाली है और भयानक है और तूही संध्याहै ११ और मिलेहुये केशोंवाली है और सबकीमृत्युहै और मदिरा मांस इनकीबलिकी प्यारीहै और लक्ष्मी है और अलक्ष्मी रूपकरके दानवों का बधकरती है १२ और सा-

वित्रीहै और वेदोंकी माता है और सबजीवों की माताहै और अंतर्वे-
दियों में यज्ञों की और पुरोहितों की दक्षिणा है १३ और ऋषियों
की धर्म बुद्धि है और देवताओं की तू अदिति है और खेती करने
वालोंको तू हलकीपनी है और जीवोंको तू पृथ्वीरूपहै १४ औरहे
देवि यात्राओं की तू सिद्धि है और समुद्र की बेला है और यक्षों
में प्रथम यक्षीहै और सर्पोंमें तू सुरस है १५ और कन्याओं में तू
ब्रह्मचर्य्या है और स्त्रियोंकेबीचमें तू सौभाग्यहै और ब्रह्मवादिनीहै
और शुभ दीक्षाहै और परमाहै १६ और तारागणोंकी तू प्रभा है
और नक्षत्रोंकेबीचमें तू रोहिणीहै और राजद्वार में किला आदिकों
मेंनदियोंमें युद्धमें इनसबोंमें भी तूहीहै १७ और पूर्णचंद्रमाके विषे
तू पूर्णिमाहै और चर्मोंकेबस्त्रको तू धारणकरहै और वाल्मीकिऋ-
षिके विषे तू सरस्वती है और द्वैपायन अर्थात् वेदव्यास विषे तू
स्मृतिहै १८ और अन्य ऋषियोंमें तू धर्मबुद्धिहै और मनुष्यों में तू
मानसी देवी है और सब जीवों करके सुरादेवी ऐसी तू स्तुति की
जाती है १६ और इन्द्रकी तू सुंदर दृष्टिहै सहस्त्र नयना है और
तपस्वियों की तू देवीहै और अग्निहोत्रियोंके विषे तू अरणीहै २०
सब जीवोंमें क्षुधारूपहै और देवताओंमें तृप्तिहै स्वाहा है तुष्टिहै
धृतिहै और बसुओंमें तू बसुमतीहै २१ और मनुष्योंके आशारूप
है और कृतकर्मवाले मनुष्यों के तुष्टि है और दिशा विदिशा,अग्नि
की शिखा,प्रभा, २२ शकुनी, पूतना, दारुणा रेवती ये भी सब तूही
है और सब जीवोंके विषे तू निद्राहै मोहिनी है क्षत्रिया है २३ और
विद्याओंकेबीचमें तू ब्रह्मविद्या है और ओंकार रूप है वषट्कारा है
और पुरातन ऋषियोंनेतुझको स्त्रियोंके विषेपार्वतीकही है२४ और
एकभर्त्तावाली अर्थात् पतिव्रताहै ऐसे ब्रह्माका वचनहै और विवाद
करनेवाले पुरुषोंमें तू भेदरूपहै और तुहीइन्द्राणी सुनीजातीहै २५
और तेरेकरके यह विश्व स्थावर और जंगम व्याप्त होरहा है और
सब युद्धों में सब प्रकार की अग्नि प्रज्वलित में और नदी के तीर
विषे चोरों में बनमें गुफामें प्रवासमें राजाकेबंधमें शत्रुओं के मारने

में २६ प्राणों के नाशमें इन सबोंमें तुही रक्षाहै इसमें संदेह नहीं और हे देवि तेरे विषे मेरा हृदयहो और तेरे विषे मेरामनहो और मेरीबुद्धिहो २७ और हे देवि सबपापोंसे रक्षाकर यह देवीका स्तोत्र पवित्रहै और इतिहास करके युक्त है २८ और जो इसको प्रातःकाल उठके और पवित्रहोके और पवित्रमनहोके पढ़ै वह तीनमहीनोंमें मनके बिचारे फलको प्राप्त होवे २६ और जो छःमहीनों तक इसका पाठकरेगा वह भी इच्छाफलको प्राप्तहोवेगा और जो नव महीने तक तेरा अर्चनकरेंगे वे दिव्य चक्षुवाले होजावेंगे ३० और एक वर्षतक तेरा पूजनकरनेसे कामनासहित सिद्धि होजायगी और यह स्तोत्र सत्यहै और ब्रह्मचर्य रूपहै ऐसा वेदव्यासजीका बचन है ३१ और मनुष्योंका बंध, घोरबध, पुत्रनाश, धनक्षय, व्याधि, मृत्यु, भय इन सबों को तू पूजित हुई शांतकरेगी ३२ और तिस कंसको मोहके अकेली तू इस जगत्को भोगेगी और मैं भी अपनी वृत्तिको गौओंके विषे गोपोंकी तरह विधान करूंगा ३३ और अपनी वृद्धिके वास्ते कंससेलहको करूंगा इसप्रकार तिसयोगनिद्राके प्रति कहके वह ईश्वर अंतर्द्धान होतेभये ३४ और वह मायाभी तिसको नमस्कारकरके और यही करूंगी ऐसा निश्चय करतीभई ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांस्वप्नगर्भबिधानेआर्यास्तवेऊनषष्टितमोऽध्यायः ५६ ॥

साठवां अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहते हैं देवताओं के समान हुई देवकी गर्भविधानहोनेके बाद यथावत् कहेहुये तिन सात गर्भोंको धारण करती भई १ और पश्चात् उपजेहुये छःगर्भोंको कंस शिलापै फटक के मारताभया और जब सातवांगर्भ प्राप्तभया तब वह योगमाया रोहिणी के विषे प्राप्तकरतीभई २ और वह देवकी अर्द्ध रात्रीके विषे तिस सातवें गर्भ को रजस्वला होके गेरती भई और निद्रा करके आविष्टहुई वह देवकी पृथ्वीतलमें गिरतीभई ३ और वह रोहिणी

तिस गर्भको स्वप्नकीतरह देखके और अपनेगर्भमें धारणाकरतीभई और तिस पहिले अपनेगर्भको नहीं देखतीभई दो घड़ीतक व्यथित होतीभई४ तब चंद्रमाकी रोहिणीके समान वसुदेवकी तिसरोहिणी को वह निद्रा रात्रीके अंधेरे में ऐसे कहनेलगी ५ कि हे रोहिणी इस गर्भका आकर्षण होने से और आपही झिरने से यह तेरा पुत्र संकर्षण नामवालाहोगा ६ और पश्चात् चंद्रमाकी रोहिणीसरीखी वह रोहिणी तिसपुत्रको प्राप्तहोके खुशीहुई अपने घरमें नीचे को मुखकिये प्रवेशहोतीभई ७ और पश्चात् वह देवकी तिसी गर्भ के मार्गकरके तिस गर्भको धारणाकरती भई कि जिसके वास्ते कंसने सातगर्भ मारे थे ८ और तिस गर्भको कंसके रक्षा करनेवाले जन यत्नकरके राखतेभये और वे हरि भगवान् तहांगर्भमें इच्छा करके बिचरतेभये ९ और उसी दिन साथ यशोदा भी विष्णुके शरीर से उपजी योगमाया का गर्भ धारणाकरती भई १० और फिर बालक होनेकी समय आनेके पहिलेही आठवें महीने में वे दोनोंस्त्री देवकी और यशोदा साथ गर्भको जनतीभईं ११ और जिसरात्रीकोविष्णु कुलमें भगवान् जन्मते भये तिसी रात्री को यशोदा भी कन्या को जनती भईं १२ और एक तो नंदगोप की भार्या और एक वसुदेव की भार्या यशोदा और देवकी इन नामोंवाली ये दोनों तुल्यकाल में गर्भिणी हुईं १३ फिर देवकी को तो विष्णु भगवान् जने और यशोदाको वह कन्याजनी और भगवान् के और तिसयोगमाया के जन्मसमय आधीरात्री में अभिजित् योग होता भया १४ और तिस समय कांपते भये सागर और चलायमान भये पर्वत और जलती हुईअग्नि ये सबशांत होतेभये १५ और श्रेष्ठबायु चलतीभई और रजशांत होगई और तारागणों का अच्छा प्रकाश होताभया १६ और उसवक्त अभिजित् नामवाला नक्षत्रथा और जयंती नामवाली रात्रीथी और विजय नामवाला मुहूर्त था १७ तिसीसमय अव्यक्त, शाश्वत, कृष्ण, नारायण, हरि, प्रभु ऐसे भगवान् मनुष्योंको मोहते भये जन्म लेते भये १८ और तब देवताओंने नक्कारे बजाये और

प्रकाश से इन्द्रने पुष्पोंकी वृष्टिकरी १९ और मंगलकरके युक्तवाणियोंसे महर्षि, गंधर्व, अप्सरा ये सब स्तुति करने लगे २० और तब भगवान् के जन्म समय सब जगत् प्रसन्न होता भया और देवताओं के संग इन्द्र भगवान्की स्तुति करताभया २१ और वसुदेव रात्रीबिषे श्रीवत्स लक्षणवाले भगवान् को जन्मेहुवें को और दिव्यलक्षणों करके युक्तकोदेख के २२ यह बचन कहनेलगे हे भगवन् इस अलौकिक रूपको आप ढकिलेवो और हे देव मैं कंससे डरताहूं इसवास्ते ऐसे कहताहूं और तिस कंसको मेरे पुत्र तेरे बड़े भाई मारदियेहैं २३ बैशंपायनजी कहनेलगे—इस प्रकार बसुदेवके बचन सुनके भगवान् अपने पिताकोऐसे कहके कि मुझको नंदगोप के घरमें लेचलो पश्चात् अपने रूपको ढकतेभये २४ और फिर ऐसा बचन सुनके पुत्रकी रक्षाकरनेवाला बसुदेव जल्द तिस पुत्रकोलेके यशोदाके घरजाता भया २५ और तिसवक्त यशोदाको मालूमहुए बिना तहां पुत्रको स्थापितकर तिसपुत्री को ग्रहणकरताभया फिर तिसपुत्रीको ग्रहणकर ल्याके देवकीकोशय्या पै रखताभया २६ फिर वेदोनों बालक उलट फेरकरदिये तब बसुदेव कृतार्थहोताभया और अपनेस्थानमें निश्चितहोके बैठताभया २७ और पश्चात् तिसबर वर्णानी कन्याकी खबर उग्रसेनकेपुत्र कंसकेवास्ते बसुदेव करावता भया २८ फिर तिसको सुनके रक्षाकरने वालों करके सहित कंस जल्द घरके दरवाजे पै आताभया और तहां दरवाजे पै आके यह पूछताभया कि क्यापैदाभयाहै जल्ददेवो ऐसेबचनोंकरके झगड़ता भया २९ फिर तिस मकान की स्त्रियां हाहा शब्द करने लगीं और गरीबनी देवकी कंसकेप्रतियहकहतीभई ३० कि हे कंस तुझने शोभा वाले सातगर्भमेरेमारडाले अब इसकन्याको तू छोड़दे क्योंकि यह कन्या तोमरीहुईके समान तुझको समझनीचाहिये ३१ और फिर तिस कन्या को कंसदेख के आनन्द से युक्त हुआ हाथसे खोसता भया ३२ और वृथामतिवाला वहकंस यहकहनेलगा क्या यहमरी हुईउपजीहै—फिर गर्भकेशयनसे क्लिष्टहुई और गर्भ केपानीसे भीजे

हुए बालोंवाली ३३ और पृथ्वीकेसमान ऐसीकन्या कंसके आगेपृथ्वी
पै गेरदई पश्चात् तिसकन्या को कंसपैरोंमेंदाब और कंपाके जल्द
शिलापै पटकता भया ३४ फिर वह शिलापैपटके पीड़ितहुई तिस
गर्भकेशरीरको त्याग के स्वर्गलोकमें ऊपरको चढ़तीभई ३५ और
पश्चात्एकबार आकाशमेंस्थितहोके केशोंकोखिलाये औरदिवमाला
और चंदनसे युक्त ३६ और देवताओं करके स्तुत ऐसी वह कन्या
होतीभई और नीला और पीतबस्त्र कोधारणकिये हुए और हाथी
के मस्तकके समान कुचाओंको धारणकिये ३७ औररथके बिस्तीर्ण
के समान पृष्ठभाग और चंद्रमा केसमान मुख और बिजली के
समान कांति और उदयहोता सूर्य के समान नेत्र ३८ ऐसा अपने
रूपको धारणकरती भई और संध्यासमय के मेघके समान शब्द
करती भई और तिसरात्री के अंधेरे में संपूर्ण भूतगणों से युक्त
हुई ३६ और नृत्य करती भई और हंसती भई और बिपरीत प्र-
काश करती भई भयंकररूपको धारणकर आकाश में स्थितहोती
भई और उत्तम मदिराको पीवती भई ४० और हंसती भई और
तिस महाकंसको क्रोध में आईहुई यह कहनेलगी—हे कंसतुझको
अपनी आत्माके वास्ते जो जल्द शिलापै पटकके मैं मारीहूं ४१
इस वास्ते तेरे अंतकाल में तेरा शत्रु से खींचाहुआ तेरी देहको मैं
अपने हाथोंसे फाड़के ४२ तेरा गरम२ रुधिर पाऊंगी ऐसे वहदेवी
बचन कहके यथेष्टमार्ग करके ४३ आकाशमें बिचरतीभई और वह
तहां वृष्णि कुलके घरोंमें ईश्वरकी आज्ञासेपुत्रको तरह पाल्यमान
पूजित हुई बढ़तीभई ४४ और पश्चात् देवते यादवों को ऐसेकहते
भये कि इसको तुम प्रजापतिके अंशसे उपजी जानो ४५ औरइस
योग कन्या को भगवान् की रक्षाके वास्ते अनेक अंशों से उपजी
जानो और पश्चात् ऐसे जानेहुए श्रेष्ठमन वाले यादव तिसका पू-
जन करते भये कि जिस कृष्ण शरीरवाली देवी को कृष्णकी रक्षा
करो ४६ और फिर तिस देवी के चलेगये के पीछे कंस तिसको
अपनी मृत्युमानता भया और पीछे लज्जित हुआ देवकी के प्रति

ऐसे कहताभया ४७ कंस कहनेलगा—हेपूज्य बहिनमुझको पतन किया और तेरे गर्भ मारे परंतु मेरी तो मृत्यु कहीं अन्यही उपस्थितहै ४८ और मुझको नीचपनेसे पतन किया कि स्वजन विषे प्रहार किया—और मैं पुरुषार्थ करके दैवको नहीं जानताभया४९ और इस गर्भ गत चिंताको त्याग और पुत्रके संतापको त्याग और तिन पुत्रोंके कालके विषयमें मैंतो हेतुहै ५० और मनुष्योंके काल शत्रु है और कालही विकार करनेवाला है और सब कुछ प्राप्तकरता है परंतु मेरा सरीखे तिसमें हेतु होजाते हैं ५१ और हेदेवि भागके अनुसार उपद्रव आतेहैं और यह कष्ट है यह मेरा शत्रु है और मैं कर्त्ताहूं ऐसे यह जीवमान रहा है ५२ सो तू पुत्रसे उपजी चिंताको मतकरे और बिलाप,शोकको त्याग ऐसे विशेषकर मनुष्यों की उत्पत्ति होती है और कालकी स्थित नहींहोती है ५३ और हे देवकी पुत्रकी तरह, मस्तकसे तेरे पैरोंमें मैं गिरताहूं सो मेरेविषे उपजा रोषको तू त्याग और तेरे विषे अपनी खोटी कृतिको मैं जानता हूं ५४ फिर ऐसे कहतेहुए तिस कंसको, आंशुवों करके पूर्ण मुखवाली और दीना, और अपने पतिको देखती भई ऐसी देवकी वचन कहतीभई ५५ और हे पुत्र उठ खड़ाहो ऐसे माताकी तरह कहनेलगी ५६ देवकी कहती है हेपुत्र मेरेआगे कालरूपी तुझको जो गर्भ मारे तिनका कारण तुझको नहीं मानूंहूं किंतु अपना कर्तव्यको यहां कारण मानती हूं ५७ और मस्तक करके मेरे पैरों में पड़ा हुआ और अपने कर्म की निंदा करता हुआ ५८ ऐसे तेरे से अपने गर्भ का नाश मुझको सहनाही चाहिये और गर्भ में अथवा बालक अवस्था में अथवा युवा अवस्था में अथवा वृद्ध अवस्था में मृत्यु किसी से निवृत्त नहीं होती है ५९ और यह सबकाल का किया है और इसका हेतु तूहै और बिना जनेबालकका दर्शन नहीं है इसीतरह मरनेके पीछे भी दर्शन नहीं है ६० और जन्माहुआ भी बिना जन्मेको अर्थात् मरने को प्राप्त विधाताके वशसे होजाताहै इसवास्ते हे पुत्र तूजा और मेरे शोक का कारण तेरे बिषे

नहीं है ६१ और मृत्युकरके अपहृत होने में पहिले शेष हेतुवर्तता है क्योंकि ब्रह्मा ने पूर्वभाग्य से प्रजाकी रचना की जातीहै ६२ और मातापिताकेकार्य के वास्ते जन्मले के उपजता है और इस प्रकार कंस देवकीके बचन को सुनके अपनेस्थानमें प्रवेशहोता भया ६३ और फिरवहां कंस जलतेहुए चित्तसे अपने घरमें प्रवेशहो के और अपने कृत्य के निष्फल होने के पश्चात् दीन और बहुत सा उदास होताभया ६४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गत विष्णुपर्वभाषायां श्रीकृष्णजन्मनिर्षष्टितमोऽध्यायः ६० ॥

इकसठवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे—बसुदेव पहिलेही चंद्रमासेभी अधिक कांतिवाला पुत्र जननेवाली रोहिणी को सुनताभया १ फिर वहवसुदेव जल्दही नंदगोपको प्राप्तहोके शुभबाणी करके कहने लगा कि हे नंदगोप इसयशोदा के संगएकांतस्थान ब्रजमें तू जा २ और तहांइनदोनों बालकोंको लेजा के पश्चात् जातकर्मादि गुणोंसे युक्त करवा और हे प्रिय तहां इनबालकोंको सुखसेबढ़ा ३।४ और तहांब्रजमेंरोहिणी केसुतमेरे पुत्रकी रक्षाकर क्यों कि फिरमैं पितृपक्ष में और पुत्रवालोंके पक्षमें बाच्यहोजाऊंगा ५ और जोकिमैं एकपुत्रकाभीसुख नहींदेखूंहूं इसवास्ते बुद्धिवाले और श्रेष्ठकी भी मेरीबुद्धि हरी जाती है ६ और इसनिर्दयी कंससे बालक के बधमें मुझको भयहै और हे नंदगोप जिसतरह मेरेपुत्र रोहिणेयकी रक्षाहो ७ तिसी प्रकार तत्त्व केजाननेवाला तूकर क्योंकि संसारमें बहुत से बिघ्नहैं और बालकोंको दुःख देतेहैं ८ सोवहबड़ा मेरापुत्र और यहछोटा तेरापुत्रइन दोनोंको एकसानामकरके तूसुखसे देख ९ और हेनंदगोप जिसप्रकार बढ़तेहुए ये दोनों समान अवस्थावाले शोभितहुए तिसगो ब्रजमेंरहै तिसप्रकारतूकरऔरहेनंदगोपबालकपनेमेंसबक्रीड़ामेंरहतेहैं १० और बालकपनेहीमें मनुष्य मोह को प्राप्तहोताहै और बालकपनेही में मनुष्य मूर्खपनामें रहताहै इसवास्ते बालककी विशेषकर रक्षाकरनी

चाहिये११ और वृन्दाबन में गौओंका घोष कदाचित् नहीं कराना चाहियेक्योंकि तहांपापीकेशीदैत्यकाभयहै१२और बिच्छू,सर्प,कीट, अन्यपक्षी गौओंके ठानमें गौ इन्होंसे इन दोनों बालकोंकीरक्षाकर- नीचाहिये १३ और हे नंदगोप रात्री तो चलीगईहै सो अपने गाड़ों से युक्तहुआ जल्द गमन कर क्योंकि ये शकुन के पक्षी दहिनेहाथ और बायेंहाथ विषे अच्छा शकुनकरते हैं १४ और पश्चात् वह नंदगोप यशोदाके संग आनंदसे युक्तहुआ असवारीपै चढ़ताभया और कुमार अवस्थाके मनुष्यों के कंधेपै युक्त ऐसे पीनस में तिन बालकोंको बैठाताभया १५ और पश्चात् बहुत सुंदर और यमुना के किनारे १६ और शीतलपवनसे युक्त और बहुतसे छिड़काव से युक्त ऐसा मार्गकरके गमनकरताभया १७ फिर श्रेष्ठदेश में जाके गोबर्द्धनपर्वत के समीप और यमुनाके किनारेसे युक्त और ठंढी वायुसे युक्त और श्वपद जीवोंसे रहित और रम्य और लतागुल्म इन्होंसे युक्त और गौ तृण स्यंदती इन्हों करके शोभित १८ और गौओंका जिसमें एकसाप्रचार और समाज जिसमें तीर्थ औरजलों के स्थान ऐसे बनको देख तिसमें स्थितकरतेभये और जिस बनमें बैलोंके कंधों से घसेहुये बृक्षहैं १९ और बोलतेहुये मांसके खाने वालेजीव और मांसकी इच्छाकरनेवाले सिकरे और बसामेदइन्हों को खानेवाले गीदड़ मृग सिंह इन सबोंकरके वह बन युक्तहै २० और शार्दूलके शब्दकरके युक्त और स्वादु बृक्षोंके फलकरके युक्त है और बहुत घाससेयुक्त ऐसावह बनहै २१ और तिसबनमें गौओं का समूह और गौओंका श्रेष्ठशब्द होरहा और गोपोंकी नारियों करके युक्तहोरहा और जहां बछड़ों के बोलनेका शब्दहोरहा २२ और चारोंतरफ गाड़ोंके समूहसे गोलआर्त करलिया और तहां कांटोंकी बाड़बना लई और चारोंतरफ बड़े२वृक्षटूटे हुयेपड़े हैं २३ और बछड़ोंके वास्ते खूंटीगाड़ रक्खी हैं और तिनके रस्से बांध नेसे अधिक शोभाहो रही है और जिसजगह बछड़ों के आरनों से पृथ्वी युक्तहोरहीहै और बांसोंकरके तिनगोपोंकी कुटीआच्छा दित

होरहीहै २४ और क्षेमदायक बहुतप्रकारों से युक्त है और हृष्टपुष्ट मनुष्यों से युक्तहो रहा है और जहांपशु बांधने के बहुत रस्सेपड़े और जहांतक बिलोवनेका शब्दहोरहा२५और दहीके पानीसे तहां की मृत्तिका गीलीहोरही और तहांदही विलोवतीहुई गोपोंकोनारियोंकेकंकणके शब्दहो रहेहैं२६और जहांश्रेष्ठ बालोंको धारणकिये हुये गोपोंके बालक फिरते हैं और सबके घरके दरवाजों के आगल लगरही है २७ और बीच में गौओं के स्थान बनरहे हैं और घृत की सुगंधी से युक्तजहां बायुचल रहाहै और नीले और पीतबस्त्रों को धारण कियेहुये जवान स्त्रियोंकर के शोभितहै २८ और बनके पुष्पोंकी मालाओं से युक्तऐसी गोपोंकी कन्याओं से युक्तहै और वे कन्या शिरपै कलशे धारण कियेहुये २९ और श्रेष्ठबस्त्र पहिनेहुये और यमुना के तीरके किनारे युक्तहैं ऐसासुंदर देशमें वह नंदगोप प्रवेशहोताभया और जहां आनंद करतेहुये गोपशब्द कररहेहैं३० औरवृद्धगोपऔर बृद्धगोपियां गायन कररही हैं ऐसेसुखके स्थानमें वे अपना निवेश करते भये ३१ और तिसजगह बसुदेव को सुख देनेवाली वह रोहिणीभीहै और उदयहोता सूर्यकेसमान कांतिवाला कृष्णभी है ॥ ३२ ॥

इति श्रीमद्भारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांगोव्रजगमनेनामैकषष्टितमोऽध्यायः ६१॥

बासठवां अध्याय ॥

वैशंपायन जी कहते हैं तहां तिसनंदगोपको बसतेहुये बहुतसा सुंदरकाल व्यतीत होताभया और नाम निकालेहुये वे दोनोंबालक भी बढ़तेभये १ और बड़ा तो संकर्षण नामवाला है और छोटा कृष्णनामवाला है २ और सब के शरीर के अंतर बिचरने वाले हरि भगवान् कृष्ण तो मेघ के समान कालेबर्णवाले होतेभये और जैसे समुद्रमें जल बढ़ता है ऐसे गौओंके मध्य में बढ़ते भये ३ औरएकसमयमें कछुकृत्य कीइच्छाकरनेवाली यशोदा तिस बालक

को गाड़ाकेनीचे सुला और छोड़के यमुनानदीको जातीभई ४ फिर वह बालक तहां बालकलीलाको करताहुआ हाथ और पैरोंकोफेंक के मधुर शब्दसे रोनेलगा और दोनोंपैर ऊपरको उछाले ५ फिर एकपैर करके तिस गाड़ाको उलटागेरताभया और दूधपीने को इच्छाकरके फिर रोनेलगा ६ फिर उसी समय जल्दही तिसके पास दूधकीभरी चूंचियोंवाली यशोदा प्राप्तहोतीभई जैसे अपने बत्सेको गौ प्राप्त होतीहै ७ फिर तहां वायुकेबिना गिरेहुये गाड़े को देखके और हाहाशब्दकरके जल्द अपनेबालकको ग्रहणकरतीभई ८ और वह नहींजानतीभई कि यह गाड़ा किसने गेरा और मेरा बालक तो बचगया ऐसेकहके प्रसन्न होतीभई और डरतीभई ९ और यह कहनेलगी कि हे पुत्र परमकोपवाला तेरापिता मुझको क्याकहेगा क्योंकि गाड़े केनीचे सोताहुआ तेरेपै गाड़ागिरगया १० और मेरे कुत्सितस्नानसे क्याहै और नदीपै गमनकरनेमें क्याहुआ क्योंकि हे पुत्रजो तू गाड़े के नीचे गिरायाथा ११ फिर इसीकालके अंतर वनमें बिचरनेवाला कसीले वस्त्रोंको धारण किये और गौओं से युक्त ऐसा नंदगोप व्रजकेसमीप आताभता १२ फिर वह आके उलटा गिराहुआ और फूटेहुये घटोंवाला और धुर और चक्र और मस्तक इनकरके टूटाहुआ १३ ऐसा गाड़ाको देखताभया फिर तिस को देख और डर और नेत्रों में अश्रुपूर्णकर जल्द आताभया और यह बारम्बार कहताभया १४ कि मेरे पुत्रकै कल्याणहै फिर वह नंद-गोप चूंचीपीवते हुये अपने बालक को देखके स्वस्थमनहो के यह कहनेलगा कि बैलोंके युद्धविना यह गाड़ा कैसे गिरपड़ा १५ फिर गद्गद बाणीवाली और डरतीहुई यशोदाकहनेलगी कि यहगाड़ा पृथ्वीमें किसने गेरा १६ मैं नहीं जानती क्योंकि मैंतो वस्त्रधोनेके वास्ते नदीपै गईथी फिर आई जब पृथ्वीमें विपरीत इस गाड़े को देखतीभई १७ फिर उन दोनोंके ऐसे बतलातेहुये तहांबालकआके यह कहनेलगे कि इसही बालकने पैरउछालके यहगाड़ागेराहै १८ और हमने अच्छीतरह यह देखा है ऐसे आश्चर्य करके वेसबफूले

नेत्रोंवाले १९ अपने घरोंको जातेभये २० और वह नंदगोप तिस गाड़ेके चक्रआदि सब बंधाता भया २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायां शकटभंगेद्विषष्ठोऽध्यायः ६२ ॥

तिरसठवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे किसी समयमें शकुनीवेष अर्थात् पक्षी वेषकोधारणकियेहुये और कंसकी धायपूतना नामवाली १ औरघोरा औरप्राणोंकोभयकरनेवाली क्रोधसेअपनी पांखोंकोफटकारतीहुई २ आधीरात्रीमें आवतीभई फिर आधीरात्रि के समय बारंबार व्याघ्र सरीखा शब्द करनेवाली वहपूतनाआके ३ औरगाड़ के बिषे सोतेहुये कृष्णको स्तनोंसेपीड़ाकरतीहुई दूधपियानेलगी ४ तबवहकृष्णतिसके स्तनोंको प्राणोंके साथपीनेलगे और शब्द करनेलगे फिरछेदन हुये स्तनोंवाली वह पूतना जल्दपृथ्वीमें पड़तीहुई ५ फिरतिस शब्द से बित्रस्तहुये मनुष्य जागलेभये और नंदगोप अन्यगोप यशोदा ये क्लेशको प्राप्तहोतेभये ६ और ये सबसंज्ञासे रहित और बड़ीचूचियोंवालीऔरबज्रकी तरह पृथ्वीमेंपड़ीहुई ऐसीपूतनाको देखतेभये ७ फिर तिसको देखके संत्रस्त हुये बोलकि यह किसका कर्महै और ये सबगोप नंदको अगाड़ी करके तिसको देखतेभये ८ परंतु तिस हेतुको कोईभी नहींजानताभया और आश्चर्य्य करतेहुये अपनेघर कोचलेगये ९ फिरवे सबगोप चलेगये तबभ्रम वाला नंदगोपयशोदाको पूछनेलगा १० कि यहकौन बिधिहै मैं नहींजानता और बड़ा आश्चर्य्य है और मेरेपुत्र को यहभय हुआहै ११ तबयशोदा भी कहनेलगी मैंभीनहीं जानती मुझकोतो इसबालक के संगशब्दहोने के बादयहां सोतीहुई देखीथी १२ फिरनहीं जानतीहुई यशोदाबिषे नंदगोपकंससे भयबताताभया और आश्चर्यकोप्राप्तहोताभया १३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांशिशुचर्य्यायांपूतनाबधोनामत्रिषष्ठोऽध्यायः ६३॥

चौंसठवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं फिरकाल व्यतीत होनेके बादवेदोनोंकृष्ण संकर्षण नामवाले वेदो २ बालक घिसड़ते चलनेलगे १ और बालक अवस्था करके एकदेवता के समान और एकसी मूर्ति धारण किये कांतिवाले उदय होता चंद्रमा और सूर्य्यके समान २ और एकसी रचनावाले और एक शय्यापै सोनेवाले एकसाखानेवाले व एकवेष को धारण करनेवाले ऐसे वेदोनों बालक बढ़तेभये ३ और वेदोनों बालक एककार्य में गत और एकदेहवाले ऐसे दो २ मालूमहोते भये और महापराक्रम वाले वेदोनों एकहीके बालक दीखते भये ४ और एकसा प्रकाशवाले और देवताओंके वृत्तांत धारण किये और संपूर्ण जगत्के गोप वेदोनों गोपबालक होतेभये ५ और आपस में मिलीहुई क्रीड़ाओं करके शोभित होतेभये और आपसके तेजकरके ग्रस्तहोतेभये जैसेअंबरमेंचंद्रमा और सूर्य६ और सर्पके समानभुजा वालेवे दोनोंऔरधूल करके लिपटेहुये अंगवाले सर्पटतेहुये शोभित होतेभये जैसे हाथियों के बच्चे ७ और कहीं भस्मकरके अंग पै लेपकर लेतेहैं और कभी आरनोंकी करस का लेप करलेतेहैं ऐसे वे दोनों कभीबालकको तरह अग्नीकेसमीप भाजतेहैं८ और कभी गोड़ों करके घिसरते हुये बच्छों के स्थानमें गोबर करके भरे हुये बालोंवाले ९ शोभायमान होतेहैं और अपनेपिताको शोभा करके आनंद देतेहैं और अन्य मनुष्योंको हंसतेहुये चिकड़ातेबोलनेलगते हैं १० ऐसे वे दोनों क्रीड़ाकरतेहुये और अपने बालोंकरके व्याकुल नेत्रोंवाले और चन्द्रमाके समान बदनवाले प्रकाशमान होते भये ११ और सब व्रज में विचरनेवाले और अति प्रसक्त हुये उन दोनोंको नंदगोपवर्जनेको समर्थ नहीं होताभया १२ औरएक समय कमलसरीखे नेत्रोंवाले कृष्णको यशोदागाड़ेकी जड़मेंलाके बारम्वार झिड़कावतीहुई १३ रस्सेसे पेटविषे ऊखलको बांधती भई और जाव समर्थहै तो अबचल ऐसे तिसको कहके और आप

काम करने लगगई १४ फिर कार्य्य में व्यग्र यशोदा होगई तब वे भगवान् बालककी लीलाकरते हुये और सब ब्रजको आश्चर्य्यकराते हुये १५ तिस अंगणा में चलपड़े फिर तहांसे चलके वह कृष्ण ऊखलको घिसता हुआ यमुलार्जुन वृक्षोंके मध्यमेंगया १६ फिरतिसके खैंचनेसे वह बंधाहुआ ऊखल तिरछाहोके १७ तिनयमलार्जुन वृक्षोंकी जड़में लगताभया पश्चात् वेगसे तिसबालक के खैंचने से वे दोनों वृक्ष जड़पेड़ समेत गिरतेभये १८ और पश्चात् उभयभगवान् हंसतेभये और गोपोंको दिखाने के वास्ते दिव्य अपने बलके आश्रयहोते भये १९ पश्चात् वह रस्सा तिस बालक के प्रभावसे करड़ा बंधगया फिर यमुनाकेतीर पै स्थितहुई गोपियां तिसको देखतीभई २० और दुःखपाती भई और आश्चर्य करती यशोदा के निकट आती भई और भ्रांतिवाले वदन से युक्त यशोदा को कहने लगीं २१ किहे यशोदे तू जल्दी आविलंब कैसेकरतीहै क्योंकि जो कि वे दोनों अर्जुनबृक्ष ब्रजमें थे२२वेदोनोंतेरे पुत्रकेऊपर गिरपड़े और वह तेरापुत्रकरड़ा रस्सासे बंधाहुआ उसीजगहहै जैसे बच्छा बंधाहुआ है। २३ और वह तेरा बालक तिनबृक्षोंके मध्यमें हंसता है और हे दुर्मे धेमूर्खणी आपे को अकलचंद माननेवाली तू जल्दी उठ २४ और मृत्युका मुखसे छुटाहुआ पुत्रको जीवता हुआ कोलें ऐसे सुनके भयभीत वह यशोदाजल्द उठकेहाहाशब्द करतीहुई २५ तहांजाती भई कि जहांपड़े हुयेवे वृक्षथे फिर तिन के मध्यमें अपने पुत्रको देखतीभई २६ पश्चात् रस्सेसे उदर बंधाहुआ और ऊखल को खींचताहुआ ऐसाबालक को गोपी और वृद्धगोप और जवान आदिसब २७ब्रजके मनुष्यदेखनेको जातेभयेऔर गोपोंके बीचमेंयह महान् आश्चर्य होताभया और बनका बिचार करनेवाले वे गोप अपनी २ इच्छाका बचन कहतेभये २८ और यहकहने लगेकि ये दोनोंवृक्ष हमारेघरोंके समान बिस्तारवाले किसने गेरे और बायुके बिनाबर्षाके बिनाबिजलीके गिरेबिना २९ कैसेगिरपड़े और हाथीके बिना ये किसने गरदिये और आश्चर्यकी बातहै कि जड़के बिनाये

यमलार्जुन वृक्ष शोभित नहीं है ३० और जलसे बादलों के समान पृथ्वीमें गिरेहुये सुंदर लगतेहैं और जोकि ये वृक्षगोपों के रचेहुयेथे इस वास्ते गोपों को कल्याण देनेवाले हैं ३१ और येवृक्ष नंदगोप पै प्रसन्न हुयेहैं क्योंकि जो इनकी जड़में नहींदीखता हुआबालक बचगया ३२ और इसजगह हमारे ब्रजमें यहतीसरा उत्पातहुआहै एक तो पूतना का बिनाश और गाड़ का गिरना और वृक्षों का पड़ना ३३ और गोपआपसमें कहरहेहैं कि इसजगह इस नन्दगोपका निवासकरना उचितनहीं दीखताहै ३४ ऐसेकहतेभये और नंदगोपतो जल्दही अपने पुत्रको उठाके और ऊखलसे खोलके अपनी गोद में लेताभया जैसेमराहुआ फिरजीव गयाहो तैसे ३५ और कमल सरीखे कृष्णको देखके तृप्तनहीं हुआ और यशोदा की निंदाकरता हुआ अपने घरमें प्रवेश होगया ३६ और गोप जनकृष्णदाम अर्थात् रस्सासे बंधाहुआ सबब्रजमें फिराथा ३७ इसवास्ते ब्रजमें गोपियां तिसको दामोदर नामकरके कहनेलगगईं और बैशंपायन कहते हैं कि हे जनमेजय यह बालक कृष्ण के विचेष्टितका आश्चर्य ब्रज में बसने वालोंको होताभया ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गत बिष्णुपर्व्व भाषायांशिशुचर्यायांयमलार्जुनभंगेचतुःषष्ठोऽध्यायः ६४ ॥

पैंसठवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं ऐसेवेदोनों कृष्ण और संकर्षण बालक अवतार कियेहुये तिसब्रज स्थान में सातबर्ष के होतेभये १ और पश्चात् नीले और पीले बस्त्रोंकोधारण करनेवाले और पीला और सफेद चंदन कालेप करनेवाले और काक के पक्षों के समान बाल वाले ऐसे वे दोनोंबच्छाओं के पालीहोते भये २ और कानोंको सुख देनेवाले बाजे को बजावने वाले और सुंदर मुखवाले और बन में बिचरनेवाले वे दोनोंऐसे शोभित होतेभये कि जैसे तीन शिरोंवाले सर्पशोभित होते हैं ३ और मोर के चंदे आदि कानों में धारण किये

हुये और पत्तोंके मुकुट धारण किये और बहुतसे पुष्पोंकी माला से युक्त छातीवाले ऐसे वे दोनोंशोभित होतेभये जैसे बृक्षों से उपजी दो कोपल शोभित होतीहै ४ और कमल के पुष्पोंका मुकुट बनाये हुये और रज्जुके यज्ञोपवीत बनाके धारण किये और हाथोंमेंछीका और तुंबीको धारण किये और गोपोंकी बीण बजाते हुये ५ ऐसे वे दोनोंबिचरतेभये और कहींहंसते हुये और कहीं आपसमें खेलतेहुये और कहींनिद्रा की इच्छा करके ६ पत्तोंकी शय्या पै सोते हुये ऐसे वे दोनोंबच्छों को पालतेहुये और महाबनकी शोभाकरते हुये और अतिशय करके रमते हुये किशोर अवस्था वालों की तरह चंचल होतेभये ७ और एक समय कृष्णबलदेव के प्रतिकहने लगा कि हे श्रेष्ठ इसबनमें गोपालों के संग हमको क्रीड़ाकरनी नहीं चाहिये ८ और इसवनमें हमको गायन किया और यहबन तृणकाष्ठों करके हीनहै और गोपोंकरके मथितबृक्षों वाला है ९ और बहुतसे बृक्षों वाले वनोंकी शोभादूर दीखती है और इसजगह गौओं करकेमार्ग रुकरहे हैं और जो समीपतृण और काष्ठ है वे सब दूरभूमिमें हम को ढूंढ़ने चाहिये १० और यहवन अल्पजलवालाहै और इसमेंकुछ आश्रय नहींहै और आश्रयसे रहित और दारुण और थोड़े बृक्षों वाला ऐसा यह बनहै ११ और बिना प्रयोजन इनबृक्षों में बास करना उचितनहींहै और वहुतदिन बासकरनेसे इस बनके बृक्षसुं-दरनहींहैं १२ और इस बन में आनंदनहींहै और बिनाप्रयोजनकी वायु चलतीहै और पक्षियों करके रहित है और शून्य है जैसे शाक आदिकों के बिनाभोजन होताहै तैसे १३ और काष्ठोंके बेचनेसे और बनमें होनेवाले शाकोंके समूह करके और तृणके समूह करके यह गोपालों का ग्राम नगरकी नाईं आचरण करताहै १४ और पर्वतों का आभूषण गोपोंका ग्रामहै और गोपोंके ग्रामका आभूषण बनहै और बनों के आभूषण गो है और वेगऊ हमारी परमगति हैं १५ इसवास्ते हम अन्यबनको चलैंगे और अगाड़ी इन गऊआदि कनको ले चलैंगे और येगऊ श्रेष्ठ तृण आदिकों की खाने की इच्छा करती

हैं १६ इसवास्ते नवीन तृणवाले बनमें चलो और बर्णोंको अपने द्वार के अगाड़ीही रहना उचितनहींहै और घरमें श्रेष्ठखेती भीनहींहोती है १७ इसवास्ते जैसे चक्रधारी राजाचलताहै ऐसे विचरनाउचित है और इस बनमेंगौका गोबर और मूत्र करके खारा रसवाले तृण होरहेहैं १८ इसवास्ते ये गौ तृणोंको नहीं खातीहैं और यह तृण तिनके दूधके वास्तेभी हितनहींहै और जहांबहुतसी रमणीकस्थली होवें और बनकी पंक्तिहोवें १६ तहां गौओं को चरावेंगे और तृप्ति पर्यंत तृणसे युक्त बन सुनाजाता है २० और वृन्दाबन नामवाला है और जहां स्वादु वृक्षफल और जलवंभीरी और कंटकोंसेयुक्तहै और सबगुणोंकरके युक्तहै २१ और जहां बहुतसे कदंबकेवृक्षहैं और यमुना के तीरके समीपहै और सुंदर शीतल वायुकरके युक्तहै और जहां सब ऋतुओंकी श्रेष्ठवायु आतीहै २२ और गोपियोंको सुख करनेवाला है और जिसकेअंतर सुन्दरबनहै और जिसके समीपही गोबर्द्धन नामवाला महान्‌पर्वत है २३ और तिस पर्वत के शिखर इन्द्र के बनके समान शोभितहै और इस पर्वतके मध्यमें चारकोस ऊंचा महाशाखों वाला बड़का वृक्षहै २४ और यह भंडीरनामवाला पीपलका वृक्षनील मेघकीतरह अंबरमें शोभित होरहाहै और इस पर्वतके बीचमें मानों सीमको जुदी कर रहीहै ऐसे यमुना नदीबहती है २५ और यह नदियों में श्रेष्ठ यमुनाजी इन्द्रके बनकी कमलकी नालकी तरह शोभित होतीहै और तहां गोबर्द्धन नामवाला पर्वत और भंडीर नामवाला बड़काबृक्ष २६ और रमणीक यमुना नदी इन्होंको सुखसे देखेंगे और तहां यह हमारे मनुष्योंका समूह बसना चाहिये और यह निर्गुणबन छोड़नाचाहिये २७ और हेभाई तुझको सुखरहै और अब हम कुछकारण उत्पादन करके इनगोपोंको कुछ त्रास देवेंगे क्योंकि तवये इसबनसे चलेंगे ऐसे कहतेहुये भगवान् कृष्णके शरीरके रोमोंसे २८ पैदाहुए और घोर और रुधिर मांस मेद, इनकेखानेवाले और भयके करनेवाले ऐसे सैकड़ोंभेड़ तिसके चिंतवन करतेहुये निकलपड़े २६ और पश्चात् गौओंकेबीचमें और

बच्छोंमें और मनुष्योंकेबीचमें औरनिर्भयहुये ३० में गोपियोंमें आकेपड़ते हुए तिनभेड़ियाओंको देखके तिसब्रजमें महान् त्रासहोनेलगा और वे भेड़ियाकहीं पांचइकट्ठे हैं और कहीं दश जुड़े हैं ३१ औरकहीं तीसजुड़े हुये और कहीं सौजुड़े हुये ऐसे इकट्ठे होके विचरने लगे और तिसभगवान्के शरीरसे इसी प्रकार निकलते हुये और कृष्ण के श्रीवत्सलक्षणसेयुक्त ३२ और कालेबदनवाले ऐसेभेड़िया गोपों को भयकरनेवाले बच्छोंको भक्षणकरनेलगे और गोब्रज इनमेंत्रास करनेलगे ३३ और रात्री के विषेबालकों कोहरतेहुए भेड़िया ब्रजको त्रासदेनेलगे और कोई बनमेंजानेमें और गौओंको रक्षाकरनेमेंसमर्थ नहींरहा ३४ और बनमें कुछ ल्याने में और नदीके उतरनेमें कोये समर्थनहीं रहे और उद्विग्नमनवाले तिस बनमें रहतेहुये ३५ फिर ऐसे सिंहके समान पराक्रम वाले तिन भेड़ियाओं के पाड़ने से वह ब्रजचेष्टा रहित होगया और एक जगह रहनेलगे ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायांवृकदर्शनो नामपंचषष्ठोऽध्यायः ६५ ॥

छाछठवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहते हैं—ऐसे बढ़ेहुए तिनखोटे भेड़ियाओं को देखके स्त्री और पुरुषोंसमेत सब ब्रजके मनुष्य सलाह करतेभये १ कि हमकोयहां नहीं रहना चाहिये और हम अन्यबड़े बनकोचलेंगे जो कि शुभदायक और सुखका स्थान है २ और गऊ आदिकों से युक्त अभीचलो देरकरने में क्या है और इस जगह हमारा ब्रजका घोर बध इन भेड़ियाओं करके होजायगा ३ और ये धुवां सरीखे बर्णवालेऔरजाड़वाले और नखोंसे पाड़नेवाले और कालेमुखवाले ऐसे भेड़ियाओंका रात्रीमें गर्जनेका हमको भयहै ४ और मेरा पुत्र हरलिया मेराभाई मेरा बच्छा मेरी गौ भेड़ियाओं को पाड़लई ऐसे घर २ में रोते हैं ५ और तिनके रोने से और गौओं के रांभनेसे बृद्ध २ गोपआके ब्रजकेउठाने कीतय्यारी करतेभये ६ और पश्चात् तिनका वृन्दाबन जानेकामत जान के और ब्रजके निवासको और

गौओं के हितको जान और वृन्दावन के निवास में निश्चय करने-वालों को ७ सुनके पश्चात् नंदगोप बृहस्पति की तरह बड़ावाक्य कहताभया ८ कि जो हमको चलनाहै तो अभीचलो सबको जल्द आज्ञादेवो कि सावधान होजावें देरमतकरो ६ फिर तिस ब्रजमें गोप यहशब्द सुनाताभया जल्दी गौओं को हांको और अपने २ बर्त्तनों को उठाके गाड़ोंमेंधरो १० और बच्छोंकोहांको और गाड़ोंको जोड़ो और यहांसे उठ के वृंदाबन रहने केवास्ते चलो ११ और पश्चात् तिस नंदगोप के सुंदर कहेको सुनके सब ब्रजगमनकी लालसा क-रनेवाला उठता भया १२ और ऐसे आपसमें कहनेलगे कि तू उठ हमचलें और क्याबाकी रहाहै ले आ गाड़ में युक्कर पश्चात् वह जब उठनेलगा तब महान् कोलाहल होता भया १३ और उठता भया गाड़ोंसमेत वह ब्रज शोभित होताभया और सिंह के घोष के समान ऊंचाघोष करनेवाला और समुद्रके समानगर्जनेवाला ऐसा घोषअर्थात् तिन गोपों का ब्रज चलता भया १४ और गोपियां शि-रपैगागरधरे हुये और मस्तकपै आभूषणकी तरह कलशोंको धारण किये ब्रजसे ऐसी तिनकी पंक्ती निकलती भई जैसे अंबरसे ताराग-णोंकी पंक्ती निकलती है १५ और नीले और पीतबस्त्रको पहिनेहुई मार्गमें चलतीहुई तिन गोपियोंकी पंक्ती इंद्रके धनुष की तरह देख नेलगी १६ और रस्साने जुंआदिकोंके भारसे लिपटेहुये और बड़े शरीरवाले और मार्गमें चलतेहुये गोपोंकी ऐसी शोभाभई कि जैसे वृक्षों पै चढ़ने के वास्ते रस्सा लटकताहो १७ और पश्चात् गाड़ों के समूह से युक्त प्रकाशकरके मार्गमें चलतेहुये तिस ब्रजकी ऐसी शोभा भई कि जैसे पवन से विक्षिप्त छोटी २ नौकाओं के चलनेसे समुद्र को शोभा होती है १८ और पश्चात् तिस स्थान से अपने २ द्रव्य को लेके सब चले गये तब वहां काकों के मंडल जुड़ गये १९ और वे गोप क्रमसे बड़े वृन्दावनको प्राप्तहोतेभये और तहां अप-ना २ सुंदरस्थानबनातेभये और गौओंके हितकेवास्ते सुंदर स्थान बनातेभये २० और चारोंतरफ गाड़ोंको खड़े करके अर्द्ध चंद्रमा के

आकारकरतेहुये और बीच में चारकोस का विस्तारकरतेहुये और आठ कोसके बिस्तारमें तिनगाड़ोंके चुगरदे २१ बढ़ेहुये काटोंकरके और काटोंके बृक्षोंसे करतेभये और चारोंतरफ खाहींबनाके गुप्त करतेभये २२ और बीचमें दही बिलोवनेका दंड रोपण कियाहुआ और जलकी गागर भरीहुई २३ और कीले गड़े हुये और तिनके रस्से बंधरहे और थांभों के रस्सेबंधेहुये फिर गाड़ों के लिपटा रक्खे २४ और दही बिलोवनेके पात्रमें तिसी प्रयोजनवाली नेजूबंध रही और वहपात्रचटाई आदिसे ढकरक्खा ऐसे वे गोप अपनी तिस ब्रजको शोभायमान करतेभये २५ और बहुतसी शाखावाले बृक्षोंके नीचे शुद्ध जगह करके गौओंके स्थान बनातेभये और अपने २ ऊखल स्थापित करलिये हैं २६ और पूर्वकीतरफ सबने अपने २ छीके बांधरक्खे और अपने २ घरमें अग्नि प्रज्वलित कर रक्खी और श्रेष्ठ बिछावनोंसे युक्त पलंग बिछरहेहैं २७ और तहां अपने २ घरों में जलकाघड़ा उतारतीभई गोपियांतिस बनको देखरहीं और कईक गोपियां वृक्षोंकीशाखाओंको खैंचरहीहैं २८ और जवान, बृद्ध सबतरहके गोपतिसबनमें प्रवेशहुए कुल्हाड़ोंसे काष्ठोंको और वृक्षों-को भीकाटरहेहैं २९ इसप्रकार करतेहुए वहबन अधिकशोभित होता भया और वह बनरमणीकहै और जिसमें स्वादुमूल, फल, और जल है ३० और वे इच्छा पर्य्यंत दोहदेनेवालीगौ, सबप्रकार के पक्षियों काजिसमें शब्दहोरहा ऐसे वृंदावनको प्राप्तहोतीभई और यहवन नंदनबन अर्थात् इन्द्रके बन के समान है ३१ और यह बन कृष्ण को तो गौओंके हितके वास्ते पहिलेही मनसे बिचार लियाथा ३२ और तिसबनमें पिछला गर्मीका महीना ज्येष्ठमेंभी ऐसे तृणबढ़ताहै कि जैसे इन्द्र अमृतबढ़ाताहो ३३ और जहां लोकोंके हित केवास्ते भगवान् ठहरतेहैं तहांबच्छोंको और गौओं को और मनुष्यों को कुछ दुःखनहींरहा ३४ और तिसबनमें वे गौ और नंदगोप और युवा अवस्थावालेसंकर्षण येसबकृष्णके संगबिहितबासकरतेभये ३५ ॥
इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांवृंदावनप्रवेशेषट्षष्ठोऽध्यायः ६६ ॥

सरसठवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं -वेदोनों वसुदेवके पुत्रतहांवृंदाबनमेंआ-सहोके फिरबच्छाओंको चरातेहुये बिचरनेलगे १ और तिन दोनोंके बनमेंक्रीड़ा करतेहुये और गोपालों के संग यमुनाकेतीरपै खेलतेहुए गर्मीका समय सुखसे व्यतीत होताभया २ फिर मन के कामों को दीप्तकरनेवाली बर्षा समयआती भई पश्चात् तिसऋतु में इन्द्र के धनुषसे चिह्नित ऐसेमहामेघ बर्षनेलगे३ और सूर्य्यका अदर्शन हो-ताभया और पृथ्वीपै तृणादीखनेलगे और नवीनजलको ल्यानेवाली महान् मेघकी बायुकर के बेलआदिक अच्छीतरह फूलने लगी ४ और पृथ्वीपै यौबनमालूम होनेलगा और नवीनबर्षासेभीजेहुए ती-जआदि बर्षा के जीब बिचरनेलगे ५ और दावाग्नि करके नष्टमार्ग और बन प्रकाशमान होनेलगा और कलापी मयूरों के नाचने का समय आताभया६ और मदसेयुक्त मयूरोंको केकावाणी सुंदरलगती भई और तिसनबीन बर्षा समयमें कांतिवाले और भवंरोंको भोजन देनेवाले ७ ऐसेकदंबों के वृक्षों पै यौबनआताभया और नबीनपीप-सीआदिकों करके सुंदर लगते हैं और चमेलीआदि पुष्पोंसे प्रका-शित और कदंबोंकर के बढ़ाहुआ ८ ऐसा बन शोभित होताभया और दावाग्नि करके और सूर्य्य की किरणों करके संतप्त हुई और त्रस्त हुई पृथ्वी मेघों करके तृप्तहोतीभई ९ और मेघोंकरकेछोड़े हुए जलोंसे पर्बतोंमें ऐसीभाफ निकलती है कि मानोंऊंचा श्वास लेतेहैं और महावातोंसे उठाहुआ ऐसामहा मेघसेयुक्त १० आकाश पृथ्वीके राजपुरों केसमान दीखनेलगा और अच्छीतरह खिलाहुआ वन सांप के मुड्ढे आदितृणों से भूषित होताभया ११ और फूले हुए कदंबों से वहबन प्रदीप्तदीखनेलगगया औरइन्द्रके जलसे सींचा हुआ और बायुकरके नबीन कियाहुआ १२ तिस बनकी पृथ्वी की गंधको सूंघ के मनुष्य चंचलमन वाले होते भये और गर्बित मेंड-कों के बोलनेसे १३ और नबीन मयूरों के कूकनेसे वह पृथ्वी अब

कीर्ण अर्थात् शोभित होतीभई और भ्रम के बेगसे युक्त और बर्षासे महाशब्द वाले ऐसे जलों के समूह बहनेलगे १४ और किनारे२के वृक्षोंको काटतेहुए और नीचेको गमन करतेभये बहते और निरंतर जोरके मेघवरसनेसे जड़हुई बृक्षों की और तिनकेगीले हुए पत्ते १५ ऐसी शोभित होनेलगे कि जैसे श्रातपक्षी बृक्षों के टहनियों पै बैठहोवे और जलसे गंभीर हुए बर्षते हुए और गर्जतेहुए १६ ऐसे मेघोंके बीचमें सूर्य्य डूबजानेकी तरहमालूम होताभया और मेघसे गिरेहुए बृक्षोंसे कहीं पृथ्वी ढकीहुईहै १७ और कहींहरी२घासकी मालासी प्रतीतहोतीहै बज्रसे गिरेहुए और स्रोतों केद्वारा जल निकलता हुआ १८ ऐसा पर्वतकी शिखरनीचेको पड़तीहै और मेघ के बर्षनेसे झिलानमें ठहरा हुआ पानी करके शोभा होरही १९ और बनकी पंक्तियोंकी शोभा होरही और शूड़को ऊपरने कियेहुए और मेघके शब्दके अनुसार शब्दकरनेवाले २० ऐसेबन के हस्ती शोभायमान होतेभये जैसे आकाशमें बद्दल और इसप्रकार वर्षा समयकोप्रवृत्तिको देख के और जलको धारण करनेवाले मेघोंको देखके २१ रोहिणी के पुत्रवलदेव कृष्ण के प्रतिकहनेलगे कि हेकृष्ण घनरूप कालेबद्दलोंको आकाशमें तूदेख २२ और ऐसे मालूम होतेहैं कि जानों तेरेवर्ण के चोरहोवें और तुझको निद्राआनेकासमयआरहाहै और तेरेशरीरके समान आकाश होरहाहै२३और तेरीतरह बर्षाके बद्दलों में यहचंद्रमा गुप्तहोरहाहै और यहनीला कमल के समान और नीलकमल के पत्तों के समान कांतिवाला ऐसा आकाश २४ बर्षा समयमें प्रकाशहोरहाहै २५ और हेकृष्ण तूदेख काले बद्दलों से इस गोबर्द्धन पर्वत की कैसी शोभाहोरहीहै और मेघोंके बरसने से मदसे युक्तहुए २६ कालेमींडक प्रकाशमान होरहेहैं और जलसे बढ़े हुए हरे २ कोमलतृण और कमल के पत्ते इन्हों करके पृथ्वी आच्छादित होरही है और झिरता हुआ पर्वत का जल और मेघसे इकट्ठाहुआ बनका जल २७ और घास आदिकों से युक्त ऐसे बन की ऐसी शोभाभई कि तहांकी सीम मालूम नहीं होती २८ और

हे दामोदर जल्द पवन के चलनेसे इकट्ठे हुये मेघ और बिजलीसे युक्त और शब्द करतेहुये बहुत सुंदर मालूम होतेहैं और श्रीहेकृष्ण तीनरंगों वाला और ज्या अर्थात् कमान और बाण से रहित २६ ऐसा इस इंद्रके धनुष करकेयह आकाश मिलाहुआ शोभित होताहै और श्रावण का महीना आकाश चक्षु अर्थात् सूर्य नहींदीखताहै ३० और किरनों वाला यहसूर्य मेघोंकरके बिनाकिरनों वालादीखता है और समुद्रके समूहोंके समान मेघोंकी धाराओं का निरंतर पड़ने से पृथ्वी और आकाश का संबंध दीखता है ३१ और पृथ्वीमें निरंतर बर्षाहोने से नीप संज्ञक कदंबोंकी और अर्जुन वृक्षकी गंधकरके कामदेवके दीप्तकरने वाली बायुचल रहीहै ३२ और प्रवृत्त हुई यहमहान् बर्षा और महान् लंबेबद्दल समुद्र सहित अंबरकी तरह अगाध मालूम होतेहैं ३३ और निर्मल धारातो लोहा के बाणों की तरह और बिजली कवचकी तरहहै ३४ और और इंद्रका धनुष आयुधकी जगह ऐसे यहअंबर इस प्रकार मालूम होता है कि जैसे युद्धके वास्ते सावधान होरहाहो और पर्वत, बनवृक्ष, इन्होंके सुंदर सुखमालूम होतेहैं ३५ और और अतिघनरूप मेघोंकरके पर्वतकी शिखरढकी हुई मालूम होतीहै और अनेक मेघ जलरूपी हाथियों के रूपकिये और अहंकार लेतेहुयों की तरह शोभित होतेभये ३६ और समुद्रका और आकाश का एकसा रूपमालूम होताहै और समुद्र से उठके चंचलहुये और तृणआदिकों को कंपाने वाले ३७ और शीतल और छोटी २ फुरहरों से युक्त ऐसेबायु कठोर चलरहे हैं और चंद्रमा जिनमें सोता है अर्थात् बादलों में छिपरहा है और मेघबर्ष रहेहैं ३८ ऐसीरात्रियों में और आकाशमें आच्छादित सूर्य होरहा ऐसा दिनमें दशोंदिशा प्रतीत नहींहोतीहै ३६ और बायुसे पूरितहुये और चर्म कोश सरीखे ऐसेमेघों के चारोंतरफ चलने से आकाश चेतनकी तरह मालूम होनेलगा और सब प्रजादिन को और रात्रीका भेदको अच्छेतरह नहींजानतीहै किंतु अनुमानसे सब जानतेहैं ४० और गरमीके दोषसे रहित और मेघोंकेजलसे बिभू-

षित ऐसा इस वृन्दावनको हेश्रीकृष्ण तूदेखयह इन्द्रके बनकी तरह शोभित होरहाहै ४१ ऐसेवह बलदेव सबकेअतिबर्षा समयकाबर्णन करता हुआ ब्रजमें आवताभया ४२ और वे दोनों श्रीकृष्ण और बलदेव तिसवक्त के मित्रोंके संग रमण करते हुये तिसमहा बन में विचरते भये ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिबंशांतर्गतबिष्णुपर्वभाषायांप्रावृड्वर्णनेसप्तषष्ठोऽध्यायः ६७ ॥

अरसठवां अध्याय ॥

बैशम्पायनजी कहनेलगे-किसी समयमें बलदेवकेबिना श्रीकृष्ण इच्छासे बिचरते हुये बनमें चलेगये १ और काक के पक्षसरीखे बालोंवाले शोभायमान और श्याम और कमल के पत्तों के समान नेत्रवाले और श्रीबत्स चिन्हसे युक्तऐसे भगवान् चंद्रमाकी तरह प्रकाशवाले विचरतेभये २ और कठूला आदि पैरोंमें आभूषण पहिने हुये और कमलसरीखा चिकना शरीर और कुमारअवस्था का तेज वाले और अच्छे प्रकार पैरोंको धरके गमन करतेहुये३ और मनुष्योंको प्रसन्न करने वाले और पद्मकी केशरके समान पीले और बारीक ऐसे वस्त्रोंका धारण किये जैसे संध्या समयमें बद्दल होतेहैं ४ और तिनकी भुजाबच्छों के व्यापार में युक्तहोरही और लाठी रस्सा इनसे युक्तहोरही और अच्छा वृत्तांत में युक्त और देवताओं से पूजित ऐसीये भुजाहै५और पुंडरीक कमलकी गंधके समानतिन में गंधआती हुई और तिसबाल अवस्था में सुंदर ओष्ठ और मुख दीखता है ६ और जैसे भौंरोंकी पंक्तीसे कमलकी शोभालगती हो तैसेखुलीहुई चोटीकेबालोंसेमुखकी शोभाहोरही७और तिसभगवान् केअर्जुन कदंबनीप कदंब इनकेपुष्पोंकेमालाएसेशोभितहोनेलगेजैसे आकाशमें तारागणोंकीशोभाहो तैसे८औरवहशूरबीर,कालेमेघऔर आकाशके समानबर्णवाले भगवान् तिसमाला करके शोभित होते भये ६ और कंठके सूत्र अर्थात् कंठी में मोर का चंदालगा रक्खा और वहबायुसे कांपता हुआ इस प्रकार बनमें प्रकाशित होते भये

१० और कहींगाते हुये और कहींबनमें क्रीड़ाकरते हुये और कहीं कूदतेभये और कभीबनमें पर्णबाद्य बाजेकोबजातेभये ११ औरकभी मधुर बीनको इच्छासे बजातेभये और कभीगौओं की प्रसन्नता के वास्ते बनमें बंशीबजाने लगे १२ इसप्रकार वह बाज बजाने वाले प्रभुकृष्ण गोकुल में रमणीक, और बिचित्र बनकी पंक्तियों में रमण करने लगे १३ और जहांमेघ के शब्दसे प्रफुल्लित हुये और मदसे दीप्त हुए ऐसे श्रेष्ठ मयूर शब्द कररहे हैं १४ और हरीघास से मार्गढक रहे और सांपके मुड्ढे जहां गहिनों के समान खड़े १५ और नवीन जलजिन्हों में झिररहा और केशरोंकी नवीन गंधऐसी निकलती है जैसेबारंबार स्त्रियामदसे श्वासलेतीहों १६ और जहां नबीन बायुचलरही और वृक्षोंके समूहसे बायुका शब्दनिकल रहा ऐसे बनकी सौम्य पंक्तियों में कृष्ण आनंद को प्राप्तहोता भया १७ फिर एक समय वहगोपियों के संग तिस बनमें बड़ाऊंचा वृक्ष को देखता भया १८ और मेघके समान पृथ्वी में स्थित और पत्तों से युक्त और आकाश में ऊंचा और पवन से हलताहुआ १९ और नीलावर्ण और बिचित्र वर्णोंवाले पक्षियों से सेवित और फल पी- पसोइन्हों करके इंद्रके धनुषकीतरह चिमकताहुआ २० और मकान के आशाखों वाला और लतापुष्पों से मंडित और तोफामल और पेड़ोंवाला २१ और अन्यवृक्षोंका राजाहो तैसे तिसदेश में शुभ कर्मको करताहुआ और जहांबूंदनहीं लगे और घामनहींलगे २२ ऐसा वह पर्वत के शिखरके समान भंडीर नामवाला बड़है तिसबड़ कोदेखतहां वसनेके वास्तेकृष्ण प्रभु इच्छा करते भये २३ फिर पापसे रहित वे कृष्ण बराबरकी अवस्था वाले गोपालोंके संग एक दिन तक रमण करतेभये जैसे पहिले स्वर्गमें रमण करते तैसे २४ पश्चात् तहां भांडीर बड़के नीचे क्रीड़ा करतेहुये कृष्णके संग बहुत से गोपाल बनकी बस्तुओं से खेलतेभये २५ और २ कईक गोप प्रसन्न हुए गानेलगे और कईक रति में प्यार करने वाले गोप कृष्णहो का प्रशंसा गानेलगे २६ पश्चात् ऐसे वे गाने लगे तब

पराक्रम वाले कृष्णपर्णवाद्य बाजा के अंतर बंशी बजाने लगे और तूंबीकी बीन बजानेलगे २७ इसप्रकार तहां श्रीकृष्णको रमणकिया और एक समय गौओंको चराता हुआ श्रीकृष्ण बेलोंकरके अलंकृत यमुनाजीके तीरपै जाताभया २८ और तरंगरूपी कटाक्षों से कुटिल और जलसे स्पर्श हुई सुखदायक वायुवाली २९ और जलसे उपजे पुष्पों से चित्रितहुई और जलमें घास आदिकों से हराजल वाली और कमल के पुष्पोंसे युक्त ३० और जलके जीवोंसे युक्त और अन्य जलकेगुक्त और अच्छा किनारावाली और स्वादुजलवाली ३१ अथाह जलवाली बेगकरके गमनकरनेवाली और जलके बेग समयमें काटेहुये वृक्षोंवाली ३२ और जुदे२ चलतेहुये स्रोत जिसमें चरणों के समानहैं और जलके आवर्त्त, तिसमें नाभिकेसमान मालूमहोते हैं ३३ और जिसमें कींचड़ रोमोंके समानदीखती है और जहांहंस और काकको चुंचसरीखे चूंचवाला कारंड व पक्षी, सारस, इन्होंका शब्द होरहा है ३४ और आपस में जोड़ासमेत विचरनेवाले जीव जोड़ासे बिचर रहे और वीचमें तटउदरके समानमालूम होरहा ३५ और कांतिवाली और तरंगरूप त्रिवली दीखती है और चकवाचकवी तट पै युक्तहोरहे हैं और जिसके तीर का बिस्तार पशली की तरह दीखता है ३६ और २ बहुत से ऊठे हुए झाग और हंसहसनेकी जगह मालूम होते हैं ३७ और लालकमल यमुनाजी के ओष्ठ मालूम होते हैं और कमल नेत्रों सरीखे प्रतीत होते हैं ३८ और बड़ा ह्रद अर्थात् गरजल मस्तक के समान और शिवाल बालों की जगह प्रतीत होतीहै और बडे स्रोतभुजाकी तरहप्रतीत होतेहैं और तिसका आभोग श्रवणोंकीतरह मालूमहोते हैं ३९ और किनारेपै उपजे घास आदि गहने प्रतीतहोते हैं और मच्छी आदिकों की तागड़ी प्रतीत होतीहै ४० और चंचल चलतीहुई छोटी २ नौका वस्त्रों की जगह प्रतीत होती है और २ कारंड व पक्षियों करकेकुंडल होरहा है ४१ और प्रकाशित पुष्पोंके वस्त्र प्रतीतहोते हैं और हंस लक्षणोंवाली है और नाकू आदिजीवों करके बढ़ाहुआ शरीर

वाली है ४२ और कछुआ के लक्षणोंसे भूषित है और जिसमेंश्वा-
पद आदि वनके जीव जल पीरहे और मनुष्य जिसका जल पीते
चूंची पीवते हुवों की तरह मालूमहोते हैं ४३ और श्वापद आदि
जीवों से उच्छिष्ट जलवाली है और आश्रमों के स्थानों से युक्त
ऐसीसमुद्र की स्त्री तिस यमुनाजीको श्रीकृष्ण देखतेभये ४४ और
तहां यमुनाको शोभितकरतेहुए विचरनेलगे और इसप्रकार तिसको
देखते हुए भगवान्, ४५ उत्तमहृद और चारकोशमें विस्तारवाला
और देवताओं से भी दुस्तर और गंभीर और अचल समुद्रकीतरह
निष्कंप ४६ और जल में होने वाले जीवों से रहित और अगाध
जलसे पूर्ण मेघ से पूर्ण अंबर के समान, ४७ और दुःख से जहां
प्राप्त हुआ जावे और बहुत से सर्पों से युक्त और विषरूपी धूमों
से वेष्ठित, ४८ और पशुओंके पीनेलायक नहीं और मनुष्योंकेपीने
लायक नहीं ऐसा वह जलहै ४९ और जिसके ऊपकर पक्षियों से
आकाशमें उड़ानहीं जाता है और तृणों पै भी वह जल गिरजावे
तो तेजसे जलजाते हैं ५० और चारों तरफसे ४चारकोशमें तिसका
विस्तार है और विष रूपी घोर अग्नि से जलताहुआ जलहै ५१
और ब्रजसे उत्तर दिशा में एककोश तक रोगसे रहित स्थानहै और
आगे तिसका रोगहै ऐसातिस बड़ा अगाध जलको देखके श्रीकृष्ण
चिंतवनकरनेलगे ५२कि यह अगाधजल किसकरके प्रकाशमानहो
रहाहै और इसजगह नीलाअंजनके समानबर्ण वाला ५३ औरसा-
क्षात्सर्पों काअधिपति औरदारुणऐसा कालिय सर्प रहताहै क्योंकि
कि जो पहले सागरमें बास किया करता सो मुझको जानलियाथा
५४ और सर्पोंको खाने वाला गरुड़ केभयसे यहां स्थित है और
उसीने ये सब यमुनाके किनारे बिगार रक्खेहैं ५५ और डरताहुआ
गरुड़को यहां आनेकी गम्यनहींहै और यहदारुणबन, और तृणोंसे
युक्त ५६ और बृक्ष और लताआदिकों से युक्त इस सर्पराजके बनमें
विचरनेवाले मंत्रियोंसेरक्षितहै ५७ और निर्विषयके आकार यह बन,
विषवाले अन्नकीतरह दुःस्पर्शहोरहाहै औरतिनसर्पादिकोंसे रक्षित

हुआ यह वनहै ५८ और शिवाल से मैले हुए वृक्ष और लता से युक्तहै तिनकरके दोनों किनारे प्रकाशमान होरहेहैं ५६ इसवास्ते इससर्पराजका मुझको निग्रहकरना चाहिये किजिससे नदीका जल श्रेष्ठहोजावे ६० और इसनागके दमनकरनेसे सबव्रजको बरतनेला-यकजलहोजायगा औरसबजगह सुखका संचारहोजायगा ६१ और इसीवास्ते मेराव्रजमें बासहै और गोपोंमें जन्म है सो इनखोटीआ-त्मावालोंका दमन करनाचाहिये ६२ और इसकदंबपै चढ़केबाल लीला से इस घोरहृदमें कूदके इसकालियसर्पको दमनकरूंगा ६३ इस प्रकारकरनेसेबहुतपराक्रमऔरसंसारख्यातिकोप्राप्तहूंगा ६४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायांकालियहृद्दर्शने अष्टषष्ठोऽध्यायः ६८ ॥

उनहत्तरवां अध्याय॥

फिर श्रीकृष्ण कड़गताबांध और कदंबके वृक्ष पै चढ़ और कदंब की शिखरपै १ काले मेघ के समान और कमल सरीखे नेत्रोंवाले ऐसे चंचल श्रीकृष्णप्राप्तहो तिस यमुना के हृदमें कूदके शब्द करते भये २ पश्चात् श्रीकृष्णके कूदनेसे चंचलहुआ यमुनाकाहृद बेगसे बद्दलकी तरह फटताभया ३ फिर तिस शब्द से सर्पकाभवनक्षुभि-तहोताभया और रोषसे व्याकुल नेत्रोंवाला सर्प जलसे निकलता भया और वह सर्पोंकापति क्रोधमें प्राप्तहुआ ४और मेघके समा-न वर्णवाला और लालनेत्रोंवाला ऐसा कालिय दीखता भया ५ और पांचमुखोंवाला और श्वाससे जीभको निकालताभया और अग्निकेसमान मुखवाला और बड़े २ पांचशिरोंको हलाताहुआ ६ और अपनेशरीरकी अग्निसे साराहृदको पूरणकरताहुआऔरक्रोध से फूंकारकरताहुआ और तेजसे जलताहुआ ७ ऐसा तिस कालि यके क्रोधसे वह पानी जलनेलगगया और स्रोतोंकर यमुनाडरती मालूमहोनेलगी ८ और तिसके क्रोधरूप अग्निसे पूरणहुये मुखों से वायुनिकलतीभई ऐसा वह कालिय सर्प बालक लीलासेयमुना

में खेलतेहुये ९ तिस कृष्णको देखताभया फिर तिसकोदेखकेतिस सर्पराजके मुखसे धुवांसरीखा श्वास निकलनेलगा और तिसके रोषसे निकलीहुई अग्निसे तीरकेबृक्ष क्षणमें भस्महोगये १० और युगके अंतसरीखो तेज वह अग्नि निकसतीभई और तिस सर्प के पुत्र और स्त्री भृत्य अन्यसर्प ११ ये भी सब घोररूप और विषसे उपजी और धूवांसहित ऐसी अग्नि निकालतेभये १२ और पश्चात् तिन सर्पोंकरके प्रवेशितहुआ श्रीकृष्ण निश्चल पैरोंको करके पर्वत की तरह अचल स्थितहोताभया १३ फिर वह सर्प तीक्ष्ण दंतों से और विषकेजलसे कृष्णको पीड़ादेताहुआ काटनेलगा परंतुश्रीकृष्ण को वे अन्य सर्प भी नहीं मारसके १४ और वह पराक्रमवालासर्प भी नहीं मारसका और फिर इस कालके अंतर डरतेहुये और रोते हुये वे सब गोपाल ब्रजमें आवतेभये १५ गोपकहनेलगे श्रीकृष्ण तो मोहको प्राप्तहोके कालियह्रदमें कूदपड़ा और उसको वह सर्प भक्षणकर रहाहै सो तुम जल्द आवो देर मतकरो १६ और बल वाले नंदगोपको खबरकरो कि वह तेरा पुत्र महाह्रदमें सांपसे कट रहाहै १७ इसप्रकार कहनेलगे फिर इस बज्रके समान बचनको नंदगोप सुनके पीड़ितहुआ और बलहीनहुआ तिस यमुना के ह्रदपै जाताभया १८ और बालक अवस्थावाले और जवान अव- स्थावाले और वृद्धअवस्थावाले ब्रजके मनुष्य और बलदेव तहां जलमें स्थित सर्पके स्थानको प्राप्त होताभया १९ और लज्जित हुये और आश्चर्य करतेहुये बारंबार शोकसे पीड़ितहुये ऐसेअनेक गोप आवतेभये २० और कई कहे पुत्र हाहा हमारे जीवनको धिक्कार है ऐसे कहनेलगे २१ और वे सब नंद आदि गोप आंशु- वोंसे भरेहुये नेत्रवाले हाहाशब्द करतेहुये तिस यमुनाकेतीर खड़े होगये और अन्य कई गोप हा हम मरगये ऐसे बारंबार रोनेलग गये २२ और स्त्रियां यशोदा को ऐसे कहती हैं कि हा तू मरगई और जो तू प्रियपुत्रको सर्पराजके बशमें देखेहै और सर्पके शरीरसे खिचरहा है जैसे हिरन तड़फताहो तैसे २३ और हे यशोदेतेरा

यह हृदा हमको पत्थरके समान दीखताहै और हेयशोदे इसपुत्रको देखके तू कैसे दुख नहीं पाती है २४ और हम नंदगोप को बड़ा दुखित देखरहेहैं क्योंकि यह पुत्रके मुखविषे अचेतनकीतरह दृष्टी देरहाहै २५ ऐसे वे गोपियांकहके और यशोदाकेपीछे गमन करती भईं यह कहनेलगीं कि इसकृष्णकेबिना हमघरकोनहींजांयगे किंतु यमुनामें डूबेंगे २६ और सूर्य के विना क्यादिन है और चन्द्रमा के बिना क्यारात्रिहै और बच्छाके विना क्या गौहै और कृष्णके बिना क्या ब्रजहै २७ इसवास्ते इस कृष्णकेविना हमनहीं जावेंगी जैसे बच्छाकेबिनागौ तैसे इस प्रकार तिन गोपियांओंका बिलाप सुनके और तिनगोपोंका बिलाप सुनके २८ और नंदगोप का बिलाप सुनके और यशोदा का रोना सुनके एक भाव और शरीर को जाननेवाला और एक देहवाला दूसरी जगह मालूम होता हुआ ऐसा बलदेव २९ तिस अबिनाशी कृष्णके प्रति क्रोधसे यहकहने लगा हे कृष्ण हे महबाहो हे गोपियोंको आनंद बढ़ानेवाला ३० विषके आयुधवाले इस सर्पराजको तू दमनकर और हे बिभो यह हमारे बांधव तुझको मनुष्यजानके ३१ येसब करुणासे बिलापकर रहेहैं ऐसे तिस रोहिणीकेपुत्रके बचनको सुनके ३२ वह श्री कृष्ण क्रीड़ासे तिससर्पकी भुजाओंको छेदनकरताभया और तिसकेसबश रीरको अपनेपैरोंसे जलमेंइकट्ठाकरके ३३ और अपनेहाथोंसे तिस केशिरोंपै गेर पश्चात् तिसके बिचलेशिरपै स्थितहोके रुचिरआभूषण वाले वह श्रीकृष्ण ३४ नृत्यकरनेलगगये पश्चात् कृष्णकरके मर्दन कियाहुआ तिस सर्पकेमुखोंसे रुधिरनिकलनेलगा ३५ फिर कातर हुआ यह वचनबोला कि हे कृष्ण यह क्रोधमुझको बिनाजाने किया ३६ और हेसुंदरमुखवालेकृष्ण मैं तुमकोदमदिया औरतुम्हारे बशमेंहोगया सोतुम आज्ञादेवोकि स्त्री और संतानऔरबांधवइन्हों वाला मैं क्याकरूं ३७ और मैं किसके बशमें प्राप्तहों और आप मेरा जीवनदेवो इसप्रकार कहनेसे फिर पांचमुखोंवाला सर्पकोदेख के गरुड़ध्वज भगवान् ३८ क्रोधसे रहितहुये तिस सर्पकेप्रति यह

वोले कि तुझको इसयमुनाकेजलमें मैं स्थान नहींदेऊंगा ३६ तूअपने कुटुम्बसमेत समुद्रके जलमेंजा और जोफिर इसस्थल में अथवाजल में ४० तेराभृत्य अथवापुत्रमुझको दीखेगा तो उसको मैं मार देऊंगा और इस जलकोसुखहो और तूसमुद्रकोजा ४१ और इसस्थान में तेरेरहनेसेमहान दोषहै और हे सर्प समुद्रविषे तेरे मस्तकपैगरुड़ मेरे पैरोंकेचिन्होंको देखकेसर्पोंकाबैरी वह तुझको नहीं मारेगा ४२ ऐसे मस्तक पै तिस भगवान्के बचन वह सर्प ग्रहण करके गोपों के देखतेहुये तिस यमुनाके ह्रदसेजाताभया ४३ और निर्जित हुआ वह सर्प जब चलागया तब बिस्मितहुयेवेगोप ४४नन्दगोपकी प्र· दक्षिणा करनेलगे और बनमें बिचरनेवाले वे गोप प्रसन्न हुये नन्दगोपको यह कहनेलगे ४५ हे अनघ तुझकोधन्यहै जोकि तेरा ऐसा पुत्रहै और अबसेलेके गोपोंको और गौओंकेठान को ४६ जो कुछ बिपत्ति होवेगी तिसकेरक्षक कमलसरीखे नेत्रोंवाले प्रभु कृष्ण हैं और कृष्णको ऐसे करदिया तो मुनियों करके सेवित यमुना का जल सुंदरहोगया४७औरइस यमुनाकेतीरपैसुखसे गौ बिचरेंगीऔर हमको सदासुखहोवेगा और हम इसवनमेंप्रकटहोगये क्योंकि ऐसा कृष्ण यहांहै ४८ और इसको हमनहीं जानतेहैं जैसे ढकीहुईअग्नी को इसप्रकार विस्मितहुये वे सबगोपकृष्णकी स्तुतिकरतेहुयेअपने ब्रजमें जातेभये जैसे चैत्ररथ बनमें देवताजावें तैसे ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्यायां कालीयदमनेऽजनसप्तनोऽध्याय: ६६ ॥

सत्तरवां अध्याय॥

वैशम्पायनजीकहनेलगे जब कृष्णने यमुनाकेह्रदमें सर्पराजदमन करदिया पश्चात् तिसीदेशमेंकृष्ण और बलदेव संगबिचरतेभये १ औरवेदोनोंगोकेसंग गौओंके पालीहुये रमणीक गोवर्द्धन पर्वतपैआते भये२औरगोवर्द्धन पर्वतसे उत्तरदिशामें यमुनाकेकिनारेपै रमणीक तालवनको देखते भये ३ और वेदोनों ताड़के पांतोंका जिसमेंशब्द

होरहाऐसे रमणीक तालबनमें परमप्रीतिसेगौओंके बच्छोंकीतरह विचरते भये ४ औरवहदेशस्निग्धहै और कालीमृत्तिकावालाहै और जहांथलीहै औरविशेष करके जहां डाभहै और रोड़ापत्थर आदिसे रहितहै ५ और ऊंचे २ शाखावाले और स्याम पोरीयोंवाले औरफलसे अग्रभागयुक्तवाले ऐसे हाथीकेसमान ऊंचे६ ताड़के वृक्षोंकरके तिसबनकी शोभाहोरहीहै ऐसे तिसवनमें श्रीकृष्णदामोदर वचनक हनेलगे अहोताड़के पकेहुये फलोंकरके यह वनकोस्थली बासकर नेलायकहैं ७ और स्वाद और सुगंधवाले और स्यामवरणके और रसवाले ऐसेताड़केफलोंको हमदोनोंतोड़ेंगे ८ औरजोइन्होंकी ऐसी मधुर और नाशिकाकोतृप्तकरनेवाली गंधहै तोये अमृतके समान रसवालेहोंगे ऐसे मेरीमतीहै ९ इसप्रकार कृष्णका वचन सुनकेब लदेव हसताहुआपकेहुयेताड़केफलोंको तोड़ताहुआ और तिनवृक्षों कोभी चलायमान करनेलगा १० और यहतालबन मनुष्यों केसेव नेलायक नहींहै यह राक्षसोंके स्थानके सदृश है ११और यहांदारुण औरगधाके रुपवाला ऐसाधेनुकदैत्य गर्द्दभोंके समूहसे युक्तहुआ विचरताहै १२ और तिसघोरतालवनको रक्षाकरताहै और अतिअ भिमानवालायह दैत्य मनुष्य पक्षी स्वापद जीवइन्होंको त्रासदेने वालाहै १३ ऐसा यह दैत्य ताड़काफलतोरनेका शब्द सुनके क्रोध करताहुआजैसे हाथी चिंघाड़मारताहो तैसे१४ और पश्चात् शब्दके अनुसार क्रोधकरके अभिमानवाला औरहिनसनेमेंचतुर और नेत्रको फाड़ेहुये खुरोंकरके पृथ्वी को पाड़नेलगा १५ और कालकी तरह मुख फाड़ और पूंछको खड़ी कियेहुये तिस रोहिणीके पुत्र बलदेव के प्रति पड़ताहुआ देखनेलगा १६ और ताड़के वृक्षोंको नीचेगिरे हुये देखके पश्चात् वह दुष्ट खर शस्त्रसे रहित बलदेव के प्रति जाड़ोंको फाड़के पाड़नेको आया १७ और पिछले पैरों से उलटा होके छातीमें दुलता मारताभया १८ फिर तिसीके पैरोंको पकड़के तिस गर्द्दभ दैत्यको ताड़ वृक्षमें पटकके बलदेवजी मारते भये १९ पश्चात् कटीहुई जांघ और ग्रीवा और पीठ ऐसा वह खोटीआकृती

वाला दैत्य ताड़वृक्षोंके फलोंके समेत पृथ्वीतलमें पड़ताभया २० फिर तिसके पृथ्वीमें गिरनेसे प्राण निकलगये और पश्चात् तिसके जातीके अन्य दैत्योंको भी वह बलदेव मारताभया २१ और फिर वह पृथ्वी गर्द्दभोंके देहसे और पकेहुये और पृथ्वीमें गिरेहुये ऐसे ताड़के फलोंसे उस पृथ्वी की ऐसी शोभाभई जैसे ढकेहुये मेघों से आकाश की शोभाहोवे तैसे २२ और इसप्रकार अनुचरों सहित जब वह गर्द्दभ दैत्य मारदिया तब वह रमणीक ताल बन बहुत शोभित होताभया २३ और भयसे रहित और शोभावाला ऐसे तिस उत्तम ताल बनमें सुखसे गौवें चरनेलगीं २४ फिर वे बन-चारी गोप प्रसन्न मनवाले और शोक भयसे रहित तिस बनमें अच्छीतरह बिचरनेलगगये २५ पश्चात् जब सुखसेगौवें बिचरने लगगईं तब हाथियों सरीखे बलवाले कृष्ण और बलदेव दोनों वृक्षोंके पत्तोंके आसन बनाके यथेष्ट बैठतेभये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्यायांधेनुकवधे सप्ततितमोऽध्याय.७० ॥

एकहत्तरवां अध्याय॥

बैशंपायनजी कहनेलगे इससे अनंतर आनंदवाले वे दोनों बसुदेव के पुत्र तिस ताल बनको छोड़के फिर भंडीर बड़के समीप आवतेभये १ और श्रेष्ठ मुखवाले वे दोनों बहुतसी बढ़ी हुई गौओं को चराते हुये और बढ़ेहुये घासपै बैठे हुये तिसबनको देखरहे २ और कूदते हुये और गावते हुये और वृक्षोंको देखतेहुये और वृक्षों के नाम लेते हुये ऐसे वे दोनों बलदेव और कृष्ण बच्छों समेत गौओंको चरानेलगे ३ और श्रेष्ठ लक्षणों वाले वे दोनों आपसमें कंधों पर हाथ रक्खे हुये और बनके पुष्पों की माला से छाती की ऐसी शोभाभई कि जैसे बालक बच्छाके पहिले छोटे २सींगआवें तिनकी शोभाहोवे तैसे ४ और कृष्णतो बलदेव के वर्ण सरीखे पीले वस्त्रों को धारण कररहे और बलदेव कृष्णसरीखे नीले वस्त्रों को धारण

कर रहे ऐसे तिनदोनों की ऐसी शोभाभई जैसे इन्द्रके धनुष करके सफेद और काले वर्णवाले मेघ शोभायमान होवें तसे ५ और तीक्ष्ण २ पुष्पों को धारण करतेहुये और तहां बन मार्ग में वे दोनों बनकी बस्तुओं से अपना वेष धारण करते भये ६ और गोपालों करके सहित वे दोनों गोवर्द्धन पर्वत में लोकमें प्रसिद्ध होने वाली क्रीड़ाओं को करते भये ७ इस प्रकार देवतों से पूजित वे दोनों मनुष्य दीक्षा को प्राप्तहुये और तिनगोपों के जातीके गुणों में युक्त हुये अनेक प्रकारकी क्रीड़ाओंकरके बनमें बिचरतेभये ८ पश्चात् क्रीड़ाकरतेहुये वे दोनों बहुतसी शाखावाले और वृक्षोंमें श्रेष्ठऐसे भंडीरनामवाले बड़केनीचे क्रीड़ाकरने लगे ९ और तहां आपस में गोदीलेलेके और युद्धकरते हुये और पत्थरकेटुकड़े बगातेहुये और आपसमें कसरतकरतेहुये १० ऐसे अनेक गोपालोंकेसंगयुद्धके मार्गोंकेतरह सिंह सरीखे पराक्रमवाले वे दोनों बिचरतेभये ११ इस प्रकार तिनके खेलतेहुये तिनको मारनेके वास्ते छिद्र ढूंढ़ता हुआ प्रलम्ब नामवाला दैत्य आता भया १२ और वह गोपाल वेषको धारणकरके और बनकेपुष्पोंका आभूषणकरके तिन दोनों बीरोंको लुभाताहुआ और हास्य कराताहुआ १३ और शंकासे रहित और मनुष्य शरीरको धारणकिये ऐसाप्रलम्बदानव तिनमें आवताभया १४ तब खेलतेहुये वे गोप गोप शरीरको धारण कियेहुये तिसको अपना जातीका मानतेभये १५ और वह प्रलम्ब दैत्य छिद्र देखता हुआ कृष्णबिषे औरबलदेवबिषे दारुणदृष्टि देनेलगा १६ फिरकृष्ण के पराक्रमको नहीं सहने लायक जानके बलदेवके मारने में यत्न करताभया १७ और जिससमय कृष्णको बालकों को खेलनेकी आज्ञादई तब वे सबगोप दोदो इकट्ठे होके एकबार कूदते भये १८ और कृष्णतो श्रीदामा गोपकेसंग कूदे और बलदेव प्रलम्बदैत्यके संग १९ और इसीतरह दोदोयुक्त हुये अन्य गोपालकूदतेभये२० फिर श्रीदामाको कृष्णजीततेभये और प्रलंबको बलदेव जीततेभये पश्चात् कृष्णके पक्षवाले गोपोंने अन्य पक्षके गोप जीतलिये २१

और वे भाजतेहुये सब जल्दोसे भंडीर वड़के पेड़को पकड़के फिर अपनी मर्यादा में आवते भये २२ इसप्रकार वे गोपतो क्रीड़ा में रतथे और वह प्रलम्बदैत्य जल्दोसे बलदेवको अपने कांधेपै बैठाके विमुखहुआ भाजगया जैसे मेघचन्द्रमाको ढकले२३।२४फिर बलदेवने ऐसाभार बढ़ाया कि तिस दैत्यसेनहीं सहागयाफिर वह दैत्य ऐसे अपनीकाया बढ़ानेलगा जैसेमेघ२५ और भंडीर वृक्षके समीप और अंजनके पर्वत के समान ऐसे रूप को प्रलम्बासुर दिखाता भया २६ और पंचगुच्छोंसेसंयुक्त और सूर्यकेसमान तेजवाला ऐसे प्रकाशमान हुआ जैसे सूर्यसे ढकाहुआमेघ २७ और वड़ामुख और बड़ीग्रीवा और कालके समान भयंकर और रौद्र और गाड़ाके चक्रके समान नेत्रवाला और पृथ्वीकोनवाताहुआ२८माला तगड़ी आदिसे लम्बे भूषणोंवाला और लंबेकपड़ोंसे भूषित ऐसाप्रलम्बघोर२ चलने लगा २९ इसप्रकार वेगकरके वह असुर बलदेव को हरकेलेगया जैसे अन्तसमयमें सबलोकोंको समुद्रडुबोदेताहै३० और इसप्रकार जब प्रलम्ब दैत्यने बलदेवको हरलिया तबशोभित होनेलगा जैसे मेघकरके चन्द्रमाहलको पाजाता है ३१ऐसेहलको लिया तब वह बलदेव अपनी आत्माको कछु संदिग्धकी तरह मानने लगा और दैत्यके कांधेपैचढ़ा कृष्णके प्रति यह बोलनेलगा ३२ हेकृष्णपर्वत के समान शरीरवाले इस दैत्यको मनुष्यरूपी माया दिखाके मैंहर लियाहूं३३ सो इस दुष्टचित्तवाले और बढ़नेवाले और गर्बसेदूना तेजवाले ऐसे प्रलम्ब दैत्यको मुझकोशिक्षादेनीचाहिये ३४ऐसे श्री कृष्ण सुनके तिसकेप्रति हंसताहुआ सामभावसे बोला और बलदेवके वृत्तान्त को और बलको जानगया ३५ फिर यह कहा कि हे बलदेव यह मनुष्यभाव हमको प्रकटकर रक्खाहै क्योंकिजगत् मय तू गुप्तसेभी गुप्तहोरहाहै ३६ और लोकों के विपर्यय विषे जो अपना नारायण रूपी शरीर बनाता है तिसका स्मरण कर और समुद्रों केसमागम में जो अपना शरीर प्रकट होताहै तिसको याद कर३७और पुरातन देवतोंका औरब्रह्माका औरजलका और अपनी

आत्मा का प्रवर्त करने वाला शरीर को तू स्मरणकर ३८ और आकाशशिर और जल तेरीमूर्त्ति और पृथ्वी क्षमा और अग्नी मुख औरलोकोंकीवायु श्वास और मनब्रह्मा ३९ और हजार मुख और हजार अंग और हजार चरण और हजारों पद्मनाभि वाला और हजारों किरणोंको धारण करनेवाला और शत्रुओंको जीतनेवाला ४० ऐसा तेरा जोरूप संसारमें कहाहै तिसको सब देवता देखैं हैं तिस तेरे रूपके ढूंढ़नेको कौन समर्थहै ४१ और जो इस संसार में जानने योग्यको तूहीजानता है अर्थात् तैंनेकहाहै और जो तुझको जान लिया है उसको देवताभी नहीं जानतेहैं ४२ और आत्मा से उत्पन्नहुआ तेरेशरीरको आत्मामेंनहीं देखतेहैं किंतु तेरे कृत्रिमरूप को देवता पूजतेहैं ४३ और देवतोंको तेराअंत नहीं देखा इसवा-स्ते तुझको अनन्त कहतेहैं और तूहीसूक्ष्महै और महान्है और एक है और सूक्ष्मोंकरके भी दुरासदहै ४४ और तेरे एक थम्भ रूपके आश्रय यह पृथ्वी स्थितहै और सब प्राणियोंकी योनि यह पृथ्वी अचलहुई जगत्को धारण कररहीहै ४५ और चतुःसागरके भो-गनेवालाहै और तूचारवर्णोंका विभागकरनेवालाहै और चारयुगों का ईश और संसारका कियाहुआघातुहोत्र के फलको भोगनेवाला है ४६ और हे बलदेव जिसतरह संसारमें मैंहूं ऐसेही तूहै यहमेरा मतहै और हमदोनों एकशरीरवालेहैं परंतु संसारकेवास्ते दोशरीर कररहेहैं ४७ और मैंतो निरंतर कृष्णहूं और तू पुरातनशेष है और अपने बलकरके त्रिलोकीके बीचमें रहनेवालाहै ४८ और निरन्तर संसारका देवहै और सनातन शेषहै और हमारेदेह मात्रकरके यह संसारधारण होरहाहै ४९ और जो मैंहूंसोतूहै और तूहै सोमैंहूंहमारे दोनुओं के एकदेह हैं ५० सो इस वास्ते तूमूढ़की तरह किसतरह खड़ाहै और हेदेव बज्रसरीखी मुष्टीकरके और बलकरके देवतोंका बैरीइसदानवको मार ५१ बैशंपायनजी कहनेलगे जब इसप्रकार कृष्णने स्मरण करवाया तबत्रिलोकी में रहनेवाला ५२ बलकर के तिसप्रलंब दैत्यको बज्रसरीखी मूठी करके बलदेवजी ताड़नादेते

भये५३।५४और गोड़ोंकरकेदाबतेभयेऔर शिरमें मारतेभयेपश्चात् तिस दैत्यका शरीर खंडकर पृथ्वीमें पड़ताभया जैसेबादल फटजावे तैसे ५५ और फिरतिसके शरीर से बहुतसा रुधिर निकसता भया जैसेगेरूका मिलाहुआ पर्वतसे पानीनिकले तैसे ५६ इस प्रकार बलदेवजी तिसदैत्यको मारके कृष्णके समीपमें आमिलते भये५७ और फिर कृष्ण और गोप और स्वर्गमें रहनेवाले देवते ये सबजय आशीर्वादों करके बलदेवकी स्तुति करनेलगे ५८ और देवते यह कहने लगे कि बलकरके इसको यह दैत्य मारा इस वास्ते इसका बलदेव ऐसानाम है ५९ पीछेपृथ्वीमें रहनेवाले ८ मनुष्य देवतोंसे भी दुरासद तिसदैत्यके मारनेसे बलदेवके बलको जानतेभये ६०॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतविष्णुपर्व्व भाषायांशिशुचर्यायांप्रलंबवधे एकसप्ततोऽध्यायः ७१ ॥

बहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे इसप्रकार बलदेव और कृष्णजबप्रवृत्त होगये और बनमेंबिचरतेहुये फिरएक समय दो महीनेबर्षाके व्यतीत होगये१ तबएक समय ब्रजमेंबनसे आवतेभये और तहांशक्र अर्थात् इंद्रादिकनको आयेहुओंको और उत्सवकीलालसावालेगोपोंको सुनतेभये२ फिर श्रीकृष्ण आश्चर्य्य करकेगोपोंके प्रतियहबचन बोला कि यहां शक्रके नामवाला कौनहै जिसनेतुमको आनंदित किया ३ फिर ऐसा सुनके एकवृद्ध गोपबोला कि हे पुत्र शक्र अर्थात् इन्द्रकी ध्वजाका हमआजके दिनजिसवास्ते पूजनकरतेहैं सोतूसुन ४ इन्द्र देवताओं का और मेघों का मालिकहै इस वास्ते तिसका यह हम उत्सवकरतेहैं ५ और तिसीकरकेप्रेरेहुये मेघबर्षाकरतेहैं और तिस की आज्ञाकरनेवाले नवजलसे मेघखेतीको उत्पन्नकरतेहैं ६ और मेघके जलका देनेवाला इन्द्रहीहै और प्रसन्न किया हुआ वह इंद्र सब जगत्को पालैहै ७ और तिसीकरके खेती उपजतीहै और हम औरअन्यजीव तिसीके मार्गमें वर्तरहेहैं और देवताओंका पूजनकर

रहेहैं ८और इस देव इन्द्रके बर्षने से संसारमें खेती बढ़तीहै और पृथ्वी तृप्तहोने से अमृतसरीखा जगत् होजाताहै ९ और ये गौदूध वाली होजातीहैं और बच्छोंवाली भी होजातीहैं और हे पुत्र क्योंकि ये गौ तिस इन्द्रकरके तृणोंके बढ़ाने से तृप्तहोती हैं १० और जहां मेघ बर्षतेहैं तहां खेतीसेरहित और तृणोंसे रहित पृथ्वी नहीं है और कोई मनुष्य भूखा भी नहीं दीखताहै ११ और इन्द्र सूर्य्य की जल वाली किरणोंकोदुहताहै पीछे वे किरण नवीनजलकोझिरातीहैं १२ और इन्द्रमेघोंके विषे वायुकरके ताड़ना करताहै तब उसवेगकरके जो शब्द होताहै तिसको मनुष्य गर्जना समझतेहैं १३ इसप्रकार वायुकरके युक्त मेघोंको इन्द्रबढ़ाताहै जब तिन मेघों के शब्द वृक्षों को तोड़नेलायक बज्रके पड़नेकेसमान सुनतेहैं १४ फिर इन्द्रकेब-ज्रसे ताड़ितहुये वे मेघ आकाशसे जलछोड़तेहैं सो इन्द्र मेघोंकरके अपने भृत्योंकीतरह बर्षाकरवाताहै १५ और कहीं तो मेघघटाटोप करदेतेहैं और आकाशकोढकदेतेहैं और कहीं अंजनकेसमानकाला होजाताहै और कहीं जलके छोटे २ किणके बर्षाते हैं १६ इसप्र-कार इन्द्रआकाशमें बद्दलोंकरके विश्वको मंडितकरताहै और कहीं छोटी २ फुरहर बर्षाताहै १७ इसप्रकार सूर्यकी किरणों से जलको वर्षाता है और सबजीवोंके सुखकेवास्ते पृथ्वी में जलबर्षाताहै १८ और हे कृष्ण यह वर्षासमय इन्द्रसे होनेवालीहै इसवास्ते बर्षास-मयमें प्रसन्नहुये सब राजे और हम और अन्य मनुष्य १९ सब उत्सवोंकरके इन्द्रका पूजन करतेहैं २० ॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशिशुचर्य्यायांघोषवाक्येद्विसप्ततोऽध्यायः ७२ ॥

तिहत्तरवां अध्याय॥

बैशंपायनजी कहनेलगे ऐसे वृद्धगोपका बचन इन्द्रके पूजनविषे सुनके इन्द्रके प्रभावको जाननेवाले भी भगवान् फिर बोलतेभये १ कृष्णकहताहै कि हम बनचरगोपहैं और सदा गौओंके धनसे जीव-तेहैं और गौ और पर्बत और बन ये हमारे देवजानो २ और खेती

करनेवालोंकी खेतीहीवृत्तिहै और दुकानदारों की दुकानही वृत्तिहै और हमारी परमवृत्तिगौहैं इसप्रकार ये तीनविद्या हैं ३ औरजिस विद्याकरके जो युक्त है उसका वही दैव है और उसको उसीकी पूजाकरनी चाहिये क्योंकि उसका वही उपकारहै ४ औरजो अन्य के फलको भोगताहुआ अन्य की सतक्रिया करै वह मनुष्य यहां और अन्यलोकमें दोनोंजगह अनर्थको प्राप्तहोताहै ५ और खेतियोंका अंतसीम प्रसिद्धहै और सीमों का अंत बन सुनेजातेहैं और बनोंके अंत पर्वतहैं और वही हमारी परमगतिहै ६ और इसवनमें कामरूपी पर्वत सुनेजातेहैं और तिन्होंकी गुफाओं ७ में तिनहींके शरीरसे उपजेहुये सिंह व्याघ्र भेड़िया आदिक रहते हैं और अपने बनों की रक्षाकरते हैं ८ और बनके छेदनवालों को त्रास देते हैं और बनमें रहनेवाले जो इन्हों का तिरस्कार करें तो तिन खोटे वृत्तांतोंवालों को राक्षस कर्म करके मारदेते हैं ९ और ब्राह्मण तो मंत्र यज्ञ में तत्पर हैं और खेतीकरने वाले हलके यज्ञ में तत्पर हैं और हम गोप गिरि यज्ञ में तत्पर हैं इसवास्ते हमको वनमें इस गोवर्द्धन पर्वतका पूजन करनाचाहिये१० और हे गोपो मुझको यह अच्छालगताहै कि गिरि अर्थात् पर्वतकी यज्ञकरो और किसी स्थान में अथवा वृक्षकेनीचे अथवा पर्वतमें ११ सुखसेकर्मकरके और यज्ञ लायक पवित्र पशुओंको हननकरके और दो यज्ञों के स्थान रचके फिर सब ब्रजको अपनी२गौओंका दूधइकट्ठा करना चाहिये और क्या विचारकरतेहो १२ और शरदऋतुके पुष्पोंसे भूषित गौओंको गोवर्द्धनपै लेचलो फिरदुहनेकेबाद गौओंकोबनमें लेजाओ१३ और यह स्वादुजल और तृणआदिगुणोंसे युक्त और रमणीक और मेघ और जलकेस्थान इन्होंसे रहित ऐसी तोफा शरदऋतु आरहीहै१४ और सुंदरपुष्पोंकरके गौर मालूमहोतीहै और बाण अर्थात् झिंटीके पुष्पोंकरके कहींकाली मालूमहोतीहै और कठोरतृणोंवालीहै और मयूरोंके शब्दसे रहितबनहै१५ औरयह ऋतुजलसे रहितहै औरबिमलहै और आकाशमेंबुगलोंसे रहितहै और बिजलीसेरहितहै और

मेघनिवृत्तहोगयेहैं जैसेदांतोंसेरहितहाथी१६ और पत्तोंकेसमूहसुंदर मेघकी वायुकरके और नवीनजलकरके नीचेको दवेहुये सुंदरमालूम होतेहैं १७ और वर्षासेसफ़ेदहुये बादलपगड़ीकी जगह और उड़ते हुये हंसचमरकी जगहहैं और पूर्णचंद्रमा छत्रकीजगहहै इसप्रकार अंबरके अभिषेक होनेकीतरह मालूमहोताहै१८ औरवर्षाऋतुकेअंत में हंस बहुतसे प्रकाशितहोरहेहैं औरसारस शब्दकररहेहैं और जलसूक्ष्म रूपहोरहेहैं १६ और चकवाचकवियों से युक्त तटोंवाली औरभारीमंडलवालीऔरहंसोंकेलक्षणोंसे युक्तऐसीसमुद्रमें जानेवा- लीनदी अपनेपतिसमुद्र कोजातीहै २० और कुमोदिनीकेपुष्पोंसे प्र- फुल्लित हुआजल सुंदर मालूम होता है और तारागणों से चित्रित अम्बरहोरहाहै इसप्रकाररात और दिनकीएकसी शोभाहोरहीहै२१ और मतवालीकुंजमधुर२बोलरहीहै और कछुक पकेहुयेपीले२ वर्ण वाले औरवर्षासे निवृत्तहुयेऔर रमणीक ऐसेखेतोंमें मनरमताहै२२ और खोदीहुई नदी और तालाव और वावली इन्हों में कमल फूल रहेहैंऔर खेत और नदी और जोहड़ये सब अपनी२शोभाकरके प्र- काशित होरहेहैं२३ और लालकमल और सफेदकमल नीलेकमल येसब श्रेष्ठशोभा को प्राप्त होरहे हैं २४ और सितापांग मदको त्यागनेलग मंद २ वायुचलती है और बद्दलों से रहित आकाश है और निभृतरूप समुद्रहै और ऋतुके पर्य्यायसे शिथिल हुये मयूरों के नृत्यकरने से गिरीहुई पांख ऐसी मालूम होतीहै कि जनों बहुत नेत्रोंसे युक्त पृथ्वीहै २५ और कीचसे मैलेहुये और प्रकाशित पुष्पों से युक्त और हंस सारस इन्होंके चलने हलनेसे शोभित ऐसे तीरों करकेयमुना नदीकी शोभाहोरही है २६ और समयमें पकेहुये खेतों में और बनोंमें खेतीको खानेवाले और जलके जीवों को खानेवाले पक्षी मतवालेहुये विशेष करके शब्द कर रहेहैं २७ और मेघके आनेके समय जोमेघ जिनखेतियोंको सींचदईहै वे सब छोटी सस्य अर्थात् घासआदि करड़ी होगई हैं २८ और मेघमय बासको त्याग के शरद ऋतुके गुणप्रकाशित होरहेहैं और इसनिर्मल आकाश में

प्रसन्न हुआचंद्रमा बसताहै २६ और गौ दूना दूधदेतीहै और वृष अर्थात् आंकिल आदिदूने प्रमत्त होरहे हैं और बनोंकी दूनी शोभा होरही है और खेतियों करके गुणवती पृथ्वी होरहीहै ३० और नक्षत्रआदि तारागण बद्दलोंसे रहित अर्थात् प्रकाशितहैं और जलोंमें पद्मकेपुष्प खिलरहेहैं और मनुष्योंके मन प्रसन्नताको प्राप्त होरहे हैं ३१ और मेघोंसे छूटाहुआ सूर्य आकाशमें शरद ऋतुमें तीक्ष्ण किरणोंसे शोषकरताहुआ अपनेतेजको कररहाहै ३२ और अपनी २ सेनाको युक्तकिये पृथ्वीके जीतनेकी इच्छा करतेहुए ऐसे राजे आपसके देशोंके सन्मुख आतेहैं ३३ और जीया पोताके पुष्पोंसे ताम्र बर्णवाली और विचित्र और कांतिवाली ऐसीबंधीहुई बनकीपंक्तियों में मनलगताहै ३४ और बनोंमेंशोभावाले वृक्ष प्रकाशित होरहेहैं और आसना,सातला,कचनार इन्होंकेफूलोंसे पुष्पित होरहीहै ३५ और शरपुंखा, दंती, प्रियंगुवृक्ष और सृमरापे चिकाथें शीलीहोरही हैं ३६ और यह शरदऋतु ब्रजमें ऐसी मालूम होतीहै कि जैसे प्रकाशवाली स्त्री बिचरतीहोवे तैसे ३७ और निश्चय देवताओं करके बढ़ाहुआ और मेघ कालके सुखका स्थान और पक्षियों का स्थान ऐसा इस पर्वतरूप देवको देवते बोधकरारहेहैं ३८ और बर्षाकाल व्यतीत होनेकेबाद इस प्रकार श्रेष्ठ खेतीवाली शरदऋतु प्राप्तहोने से नीला और चंद्रमा के समान बहुत से पक्षियों करके ३९ और फलों करके और पीपसियों करके जैसे इन्द्र के धनुष से मेघको शोभा होवे तैसे ४० सुशोभित यह गोबर्द्धन पर्वत होरहा है और भवनों के आकार वृक्षोंवाला और श्रेष्ठलता आदिकों से मंडित और तोफा जड़ और पेड़ोंवाले वृक्षोंसेयुक्त और सुंदर बायुसे युक्त ऐसा गिरिदेव अर्थात् गोबर्द्धन को हम गौओं के अर्थ पूजेंगे ४१ और गहनों से युक्त सींगोंवाली और मोरके चंदोंके गूंथेहुये मुकुटों वाली और लम्बी २ घंटाओं से युक्त और शरद ऋतु के पुष्पों से युक्त ४२ ऐसीगौओंको कल्याणके वास्ते पूजो और गिरियज्ञ अर्थात् गोवर्द्धन की यज्ञकरो और इन्द्रकी पूजा तो देवतेकरो हमकोतो यह

पर्वत पूजना चाहिये ४३ और हमंहठसे गोयज्ञकरेंगे इसमें संदेह नहीं और जो तुम्हारी मेरेबिषय प्रीतिहै और जो तुममेरे प्यारेहोतो ४४ तुमकोगौही निरंतर पूजनी चाहिये इसमेंसंदेहनहीं और समझाने से तुम्हारे कल्याणके वास्ते यह प्रीतिहो ४५ और यह मेरा वचनसत्यहै तुमविना बिचारेकरो ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांवरदवर्णनेत्रिसप्ततोऽध्यायः ७३ ॥

चौहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायन जी कहनेलगे ऐसेगौओं में जीनेवाले वे गोपदामोदर का बचन सुनके और तिसकी बाणीरूपी अमृतवत्तको पीते हुये संकासे रहित बोले १ हे कृष्णयह तेरी बालक की मतीगोपों को हर्ष बढ़ानेवाली है और हमसब को और गौओंको तेरीबुद्धी बढ़ातीहै २ और बुद्धीपैदाकरतीहै औरतूगतीहै और रतीहै और तूहीजाननेवाला और पणहै और भयमें अभयको देनेवाला है और प्यारोंका प्यारा है ३ और हेकृष्ण तेरेकर्त्तव्य में यहब्रज गोकुल क्षेमवाला है और आनंद से वसताहै और बैरियोंसे रहितहै और जैसेस्वर्ग में सुख है तैसेयहांहै४और हमारोमन आपकीजन्म प्रभृत्तियों करके और पृथ्वी में दुष्करपराक्रमों करके और अभिमानसे बिस्मित होरहेहैं ५ और बलकरके और यशकरके तुम मनुष्यों में ऐसे उत्तमहो कि जैसेदेवताओंमें इन्द्र ६ और तीक्ष्णप्रताप करके और दीप्तिकरके और पूर्णता करके मनुष्यों में उत्तम होजैसे देवताओं में सूर्य्य ७ और कांतिकरके लक्ष्मी करके प्रसन्नता करके और हंसता हुआ मुख करके तुम मनुष्योंमें ऐसे उत्तमहो कि जैसेदेवताओंमें चंद्रमा ८ और बलकरके और शरीरकरके और बालक पनाके चरित्र करके तेरेसमान शक्ति धारण करने वाला कोई भी मनुष्य नहींहै ९ और जो तुमने पर्वत की यज्ञकरने को बचन कहा है तिसको उल्लंघने को कौनसमर्थ है जैसे समुद्रकी बेलाको तैसे १० और हेपुत्र यह इन्द्र का उत्सव यहांरहो हमगोबर्द्धन पर्वतका उत्सव गोपोंके और गौओं के हितके

वास्ते करेंगे ११ और गोपकह रहे हैं कि बर्तनों को इकट्ठे करो और दूधको इकट्ठाकरो और जलोंके सुंदरकलसे पूरणकरो १२ और बड़े २ बर्त्तनदूधकरके पूरणकरो और भक्ष्यपदार्थ और भोज्य और पेयये सब ग्रहणकरो १३ और मांसकेबर्त्तन और चावलों के बर्तन स्थापितकरो और सब ब्रजका तीन दिनतक दूधइकट्ठाकरो १४ और यज्ञमेंबली के अर्थमहिष आदिपशुओं को प्रवेशकरो और सबगोपों को मंगल देनेवाले इसयज्ञ को प्रवर्त्त करो १५ और आनंद को उत्पन्न करनेवाला यहब्रज और अतिआनंदसे युक गौओंका कुल, सब भेरी आदिबाजोंसे युक्ततिस यज्ञमें प्राप्तहोतेभये और बैलशब्द कररहेहैं १६ और बच्छे हंभाऐसा शब्द कररहे इस प्रकार वहयज्ञ गोपोंको हर्षबढ़ाने वालीहोती भई और जिस यज्ञमें दहीके हृद बन रहे और दूधकीखोदीहुई खाही भररक्खी १७ और मांसों की राशि से युक्त और प्रकाशमान पर्बत सरीखा चावलोंका कुंडबनवा रक्खा है इसप्रकार वह गोबर्द्धन यज्ञ प्रवर्त होती भई १८ और वह यज्ञ प्रसन्न गोपोंसे युक्तहै और गोपियों से शोभितहै और यव यज्ञ के पाककरने वाले आदिकोंसे युक्त वहयज्ञ बिधिहोगई १९ तबवे गोप तिस पर्बत यज्ञको ब्राह्मणोंके संग शुभदिनमें करतेभये और यज्ञके पूजनके अंतमें तिसयज्ञ के अन्नको और तिसउत्तम दूध और दही को २० और मांसको अपनी मायासे पर्बत में देवरूप धारण कर के श्रीकृष्णभोजन करनेलगा और इच्छापूर्बकउत्तम ब्राह्मण भोजन करके तृप्तहोके २१ प्रसन्न मनवाले आशिर्बाददेके यथासुखसे खड़े होतेभये और बाकीके अन्नको कृष्ण भोजन करता भया और दूध पीताभया २२ फिरभोजनकरे पीछेदिब्यरूपकरके ऐसे कहनेलगा किमैं तृप्तहोगया और फिर हंसनेलगा और तिसपर्बतके आकारवाला और दिब्यमाला और चंदनकालेपन किये हुये २३ और पर्बत की शिखरपै स्थित ऐसे श्रीकृष्णको वे सब गोप देखके तिस पर्बत की प्रधानता जानतेभये और श्रीकृष्ण भगवान्भी तिसी कृष्णरूप से तिनगोपों के संग २४ तिसगोबर्द्धन देवको नमस्कार करते भये

और वेसब गोप बिस्मित हुये तिसके प्रतिबोले २५ हेभगवन् हम तेरेबश में हैं और आपके दासहैं सो हमक्या करें ऐसेसुन के वह देवपर्बत रूपवाणी करके बोला २६ हेगोपो अबसे लेकेजो गौओं में दयाहो तो मेरापूजन कियाकरो और मैं तुम्हारा प्रधान देवहूं और सब कामोंको करने वालाहूं २७ और मेरेप्रभावसेकई हजार गौओं के समूह चारों ओर बिचरते रहैं और भक्तोंका तुम्हारा बनबन में कल्याण होगा २८ और तुम्हारे संगमैं इन्द्रकी तरह रमण करूंगा और जो ये नंदगोप आदिप्रसिद्ध गोपहैं २९ इन्हों पै प्रसन्नहुआ मैं बहुतसा धनदेऊंगा और बच्छोंसे युक्त गौओंका समूहमेरे बिषय तृप्तिपर्य्यंत बिचरो ३० और इसीप्रकार करने से मेरी परम प्रीति होगी इसमें संदेह नहीं और फिर तिन गौओं के समूहके समूहोंको पूजन और आरती करने के वास्ते इकट्ठे करते भये ३१ और चारों तरफ बैल और बच्छे युक्त होरहे और वे सब गौ प्रसन्नहुईं और मुकटोंवाली और गुच्छे बाजूबंद इन्हों से युक्त ऐसी गायें हैं ३२ और गलोंमें मालाधारण किये ऐसे हजारों गोपाल इकट्ठे होते भये और वेगोपाल द्रव्योंको गिननेलगे ३३ और भक्तिसे युक्तहुये और चंदनको लगानेवाले और रक्त और पीले और सफेद बस्त्रोंको पहने हुये और मोरके चंदोंका आभूषणबनाके हाथोंमेंपहनेहुये ३४ और मयूरोंके चंदेआदि बालोंमें लगायेहुये ऐसेगोप तिसपूजामें अधिक शोभित होतेभये ३५ और अन्यगोप बैलोंपै चढ़तेभये और कईक नृत्यकरतेभये और कईकगोपजलदी जलदी गमन करते हुये गौओं कोघेरनेलगे ३६ इसप्रकार यह गौओंका नीराजन अर्थात् आरती काउत्सव गोपोंने किया और जबयह उत्सवहो चुकातब तिसी देह से वहगोबर्द्धन रूपदेह अंतर ध्यानहोगया ३७ और पश्चात् वे सब गोप और कृष्णतिस गिरियज्ञ के आश्चर्य्य से बिस्मित हुये ब्रजमें प्राप्त होतेभये ३८ और वृद्ध और बालक आदिगोप तिस कृष्णकी स्तुति करतेभये ३९ ॥

श्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गतबिष्णुपर्व्वभाषायांगिरियज्ञप्रवर्त्तनेचतुस्सप्ततोऽध्यायः ७४ ॥

पचहत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे जबइसप्रकार इन्द्रका उत्सव दूरहोगया तब क्रोधकरके इन्द्रसंवर्त्त क नामवाले मेघको कहनेलगा १ किहे मेघोंमें श्रेष्ठमेरा बचन तुमसुनो जो तुमको मेरी प्रसन्नता करनीहै२ तो वृन्दा बनमें प्राप्त हुये दामोदर आदि इन गोपों को जो मेरा उत्सव दूरकर दियाहै ३ औरइन्होंकेगौओंकोही परम आजीवका है इसवास्ते इन्होंको गोपकहते हैं सो तुमको सातदिन तकवर्षा और बायु करके तिनगौओंको पीड़ादेनी चाहिये ४ और ऐरावत हस्ती पै चढ़के मैं आप दारुण बायु और वर्षा और बिजली के शब्दों को करूंगा ५ और तुमतेजबर्षाकरोगे और बायुचलाओगे तबबच्छाओं समेतवेगौवेंमरजावेंगी ६ इसप्रकार तिनसब मेघोंको वहइन्द्र कृष्ण से निरादर हुआतिन मेघोंको आज्ञादेता भया ७ फिरवह घोरऔर भयको करने वालेऐसे कालेमेघ पर्वतके समान आकाशको आच्छादनकरतेभये ८ और बिजली चमकती हुई और इन्द्रके धनुष से बिभूषित ऐसेमेघ आकाशमें अंधेरा करतेभये ९ और हाथियों की तरह और कईक मगरमच्छों की तरह और कईक सर्पोंकी तरह इस प्रकार भयंकरमेघ आकाशमें बिचरनेलगे १० फिरवे आपसमें हाथियों के समूह की तरह इकट्ठे होके आकाश को आच्छादन करतेहुये और दुर्दिन करतेभये ११ और मनुष्यके हाथके समान और हाथीकी सूंडके समान ऐसीनिरंतरधारा वर्षाने लगे १२ तब वे गोपआदि मनुष्य आकाशमें स्थित समुद्र मानने लगे और अगाध दुर्दिन मानतेभये १३ और आकाशमें पक्षियोंसे उड़ानहीं गया और जब आकाशमें मेघगर्जने लगे तबमृग आदिजीव भाजते भये १४ और सूर्य्यचंद्रमा नक्षत्र येसब दारुणमेघों करके ढकगये और अतिबरसनेसे मनुष्योंका विरूप होगया १५ और मेघोंके समूह करके ग्रह और तारागणऔरचंद्रमा इन्होंकी कान्ति चलीगई और सूर्य्यकी किरणोंके विनाकांतिसे रहित आकाश होगया १६ और

बारंबार मेघकाजल बरसनेसे सब पृथ्वीजलमई होगई १७ और मेघसे दुखितहुये मयूर बोलतेभये और नीचास्थानके जलवृद्धी को प्राप्तहोते भये १८ और मेघोंके गर्जनेसे डरतेहुयोंकी तरहवृक्ष और तृणकांपनेलगे १९ और लोकोंका अंतकालकीतरह एकार्णवा रूप पृथ्वीहोती भई फिर भयसे पीड़ितहुये गोप विचार करने लगे२० और तिस उत्पातरूपी मेघके बरसनेसे बहुतसी गौपीड़ितहोनेलगीं और कितनीक गौ हंभा ऐसा शब्द करने लगी और कितनीक गौदुखित हुई थांभकी तरह हलती नहीं हुई और कितनीक पैरऔर सक्थि चरण इन्होंको नहीं कपाने लगी और कितनीक मुख और खुर इन्होंयत्ननहीं करती भई २१ और कितनीक रोमोंको खड़ेकिये और गीले शरीरको धारण करतीभई और कितनीक कूख और थनोंको सुकड़ाने लगी २२ और कितनीक प्राणोंको त्यागती भई और कितनीक हारीहुई गिरपड़ी और कितनीक बच्छों करकेसहित गौबुंदों करके कांपने लगगई २३ और कितनीक अपने बच्छोंको छातीमें लगाके खड़ी होगई और कितनीक नीचाको मुखकिये और निराहार और कृशपेटवाली २४ और कांपतीहुई पृथ्वीमें गिरपड़ी इसप्रकार वे गौ और बच्छे वर्षासेपीड़ित होतेभये और कृष्णआदि बालक नीचाको मुखकिये खड़ेहोतेभये २५ तब पीड़ितहुये वे गोप दीन मुखसे कृष्णके प्रतियहबोले कि हमारी रक्षाकरो तबइसप्रकार दुर्दिनसे उपजा दुःखगौओंको देखके२६ और मरनेकी तरह गोपोंको देखके श्रीकृष्णक्रोध करतेभये और यह चिंतवन बेगसे किया कि मुझको उपाय देखाहै इसप्रकार उन्होंकेप्रति प्रिय बचनबोला अब इसपर्वतको वृक्षोंसमेत उखाड़के मैं गौओंका स्थान बना २७ ऊंहूं और इसदुःखको दूरकरुहुं और यहपर्वत दूसरीपृथ्वीकीतरहमुझको धारण करनाचाहिये २८ और इसप्रकार करनेसेसब ब्रजके मनुष्य और गौमेरेवसमें होजायंगी ऐसेसत्यपराक्रमवाले श्रीकृष्ण चिंतमन करके २९ अपनी बाहुओंकाबलदिखावतेहुये तिसपर्वतके समीपमें गये फिर तहां जाके अपने हाथोंसे तिस पर्वतको उठावते भये ३०

फिर एकहाथसेधारण कियाहुआ वहपर्वत गुहाकेआकार शरीरसेघर की तरह बनगया ३१ और पृथ्वीसे उखाड़ाहुवा तिसपर्व्वतकीशिखर केशिथिलहुये छोटे २ पत्थर और वृक्षगिरनेलगे ३२ और सबतरफ़ से शिखरके पत्थर गिरनेसे और पर्वतकी शिखर निवृत्त होनेसे वह अचलरूप पर्वत आकाशमें स्थितहोगया ३३ और तिसपर्वतसे झिरताहुआ जल और मेघकोधारा एकताको प्राप्तहोगई और पत्थरों के गिरनेसे वहपर्वत चलायमान होगया ३४ और विशेष करके वर्षते हुये मेघोंकाशब्द और तिसपर्वतसे झिरतेहुये पत्थरोंका शब्द और वायुका शब्द और गर्जनेकाशब्द कुछभी मनुष्यनहीं जानतेभये ३५ और पर्वतसे मिलीहुई मेघोंकीधारा और तिसपर्वतसे झिरताहुआ जल ये दोनों मिलेहुयेकीतरह मालूम होनेलगे ३६ और विद्याधर उरग,गंधर्व,अप्सरा,येसब आपसमें यह बतलाने लगे कि ३७ पांखो करके उड़के यहपर्वत आकाशमें आगयाहै और वहपर्वत हथेली पै धराहुआ औ पृथ्वीसे उखाड़ाहुआ जो था तिसके ऊपरकी पीतल की खानि सुवर्णके अंजनके समान प्रकाश होरही ३८ और तिसकी कईक शिखरतो शिथिल होगई और कहींक तिसकी शिखर आधी २ गिरगई इसप्रकार तिसकी शिखर मेघके वर्षनेसे होलीभई ३९ और कांपतेहुये तिसपर्वतके ऊपरके वृक्षों के पुष्प पृथ्वीमें खंड २ गिरने लगे ४० और तिसपर्वतके भारी २ मस्तक ऊपरके घरोंसे विभूषित,पृथ्वीमें कटके गिरतेभये ४१ और सर्पों के पति क्रोधसे युक्त होतेभये और आकाशमें विचरनेवाले पक्षी दुःखित होते भये और तिस वर्षाके भयसेपक्षी पीड़ाको प्राप्तहोके उड़ उड़के नीचेको मुखहुये पृथ्वीमें गिरते भये ४२ और क्रोधमें हुये सिंह गर्जने लगे जैसे मेघ और गर्गरोंकी तरह मथन करतेहुये शार्दूल बोलने लगे ४३ और विषमकी जगह एकसाहुआ और समकी जगहदुर्गमहुआ और फटी देह वाला ऐसा वह पर्वत अन्यही प्रकारका दीखनेलगे गया ४४ और ज्यादै मेघ वर्षनेसे तिसका ऐसारूप होताभया कि जैसे त्रिपुरासुरके युद्धमें शिवजी को थांभलगा रक्खाहो तैसे और

श्रीकृष्णकी बाहुरूप दंडसे वह महान् पर्वत नीला मेघसेढकाहुआ छत्रकी तरह मालूम होनेलगा ४५ और मेघोंकरके सोवताहुये की तरह और गुहाके मुखोंसे नेत्रमिचे हुयेकी तरह इसप्रकार कृष्णकी बाहुओं के ऊपर सोवताहुआ पर्वत मालूम होनेलगा ४६ और पक्षियों से रहित वृक्षोंके और मयूरोंसे रहित वनोंके शब्दहोने से वहपर्वत निरालंबकी तरह दीखने लगगया ४७ और घूंघूशब्द करतेहुये और शिखरपै चलायमान होतेहुये ऐसेपर्वतकेवन और शिखर ज्वरसे युक्तकी तरह दीखनेलगे ४८ और तिसपर्वतके शिखरपै प्राप्तहुये और पवनके बाहनवाले और इंद्रकरकेताड़ित ऐसेमेघ अक्षयजलको छोड़तेभये ४९ और वहकृष्णकी भुजाके ऊपरलंबमान पर्वत ऐसेशोभित होताभया कि जैसेचक्रमें आरूढ़ राजासे पीड़ित देश ५० और वहमेघकासमूह तिसपर्वतको प्राप्तहोके ठहरताभया जैसे बड़ा पुरको आगे करके वढ़ेहुये देशरहतेहैं ५१ और गोपों को रक्षाकरनेवाले भगवान्कृष्ण तिसपर्वतको हाथमेंउठाके औरतोलके फिर हंसतेहुये गोपोंकेप्रति ब्रह्माकीतरह स्थितहोके वचनबोले ५२ यह देवताओंको भी असंभाव्य मुझको दिव्यविधिसे पर्वतकाघरबना दियाहै सो हे गोपोतुम गौओंकेसमूहको यहां लेआवो ५३ और बायु से भी रहित इसजगह सुखसे वासकरो ५४ और जैसे श्रेष्ठहो और जैसे सुखहो और जिस प्रकार सारहो तैसेही इस जगहका बिभाग करलेवो और वर्षाका निवारणकरो ५५ और पर्वतको उखाड़के यह पृथ्वीमुझको बहुतसुन्दरबनाईहै सोयहां मैंत्रिलोकीको भी रखनेको समर्थहूं फिर इसबजूका तो क्याकहनाहै ५६ पश्चात् इसवचनको सुनके किलकिल शब्दसे युक्त और गौओं के राम्भनेका शब्दसेयुक्त तुमुल अर्थात् रणके शब्दकीतरह तिनगोपों का शब्दमेघका शब्द से भी अधिक मालूम होता भया ५७ और फिर इस प्रकार शब्द करके वे गोप गौओंके संग तिस पर्वतके बिमल और गह्वर उदर में प्रवेश होतेभये ५८ और कृष्णभी तिस पर्वतकी जड़में थम्भरूप खड़ेहैं और एकही हाथसे तिस प्रियरूप पर्वतको धारणकररहे हैं

जैसे अभ्यागत को ग्रहणकरै तैसे ५९ और सब व्रजके मनुष्यों को अपने वर्तनों से युक्त गाढ़ेवर्षाके भयसे तिस पर्वतका रचाहुआ घर में प्रवेशकरदिये ६० और पश्चात् वह समर्थ इंद्र कृष्णकोप्रति दैव मानके और तिसकेकर्मको देखकेमिथ्या प्रतिज्ञा वालाहोकेमेघोंको निवारण करता भया ६१ और जब सातरात्रि व्यतीत होगई तब मेघोंके संग स्वर्गलोकमें चलागया ६२ और पश्चात् सातरात्रि के व्यतीत होनेके वाद वादलोंसे रहित विमल आकाशहोगया और दीप्तसूर्य्य होगया ६३ और श्रमसे रहितगौ तिसीमार्ग करके आ-वती भई और वह गोपों का समूहभी फिर अपने स्थानमें आवता भया ६४ और श्रीकृष्णभी तिस पर्वतको तिसी जगह प्रसन्न होके निश्चल स्थापित करतेभये ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांगोवर्द्धनधारणेपंचसप्ततोऽध्यायः ७५॥

छिहत्तरवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे और गोवर्द्धन धारण कियेहुयेकोदेख के और गोकुल की रक्षाकीहुई को देखके कृष्णके दर्शन करनेको रुचि इन्द्र करताभया १ और जलसे रहित बद्दलके समान आकार वाला और मत्त वाला ऐसे ऐरावत हस्तीपै चढ़के पृथ्वी तलमें आ-वताभया २ फिर वह इन्द्र गोवर्द्धन पर्वतकी शिलाके ऊपर बैठे हुये श्रीकृष्णको देखताभया पश्चात् तिसबालकको बड़े तेजसे दीप्त और अविनाशी और गोप वेष को धारण किये ऐसे विष्णुको प्रीति सेप्राप्त होगया ३ फिर कमल सरीखे नेत्रोंवाले और बद्दल सरीखे वर्णवाले और श्रीवत्स लक्षणसे युक्त ऐसे श्रीकृष्णको सब नेत्रों से इन्द्र देखताभया ४ पश्चात् शोभा करकेयुक्त और मृत्युलोकमें देव-ताओंके समान और शिलाकी पीठपै बैठेहुये ऐसे श्रीकृष्ण को देख के इन्द्र लज्जितहोगया ५ और तिसके बैठेहुयेके दोनोंतरफ अंत-र्हित हुये गरुड़जी अपनी पांखोंकरके छाया कररहे ६ और गुलबन में प्राप्तहुये और लोकोंके वृत्तांतमें तत्पर ऐसे श्रीकृष्ण को वहइन्द्र

हस्तीको त्यागके प्राप्तहोताभया७ और दिव्यमाला और चंदनका लेप कियेहुये और हाथमें वज्र लियेहुये ऐसा देवराज इन्द्र तिसके समीप जाके शोभित होताभया ८ और सूर्यके समान कांतिवाला और बिजलीके समान तेजवाला मुकुट करके और बिजलीकेसमान कांतिवाले और हीरासेजटित कुंडलोंकरके शोभित मुखवाला है ९ और कमलसरीखी कांतिवाला और पांच गुच्छोंवाला ऐसे हारकरके तिसकी छाती बिभूषितहै १० और ऐसा वह इन्द्र अपने कामरूपी हजारनेत्रोंकरके श्रीकृष्णको देखताहुआ ११ दिव्य स्वरकरकेमधुर वचनबोला कि हेकृष्णकृष्णहेमहाबाहो बंधुओंको आनंद बढ़ानेवाले १२ आपको गौओंके प्रीति करके प्रति दैवकर्मकिया और जो तुम को युगांतसरीखे मेरेमेघोंसे गौओंकी रक्षाकरी १३ तिससेमैंप्रसन्न होगया और स्वायंभुव योगसे जो यह पर्वतों में उत्तम गोबर्द्धनपर्वत१४घरकीतरह आपनेआकाशमें उठालिया तिससेकौन आश्चर्य नहींकरे और हे महाराजजब मेरा उत्सवका निषेध होगयाथा तब मैंनेक्रोधकरके १५ सातदिनतक अतिवर्षाकरी सोवह खोटी वर्षाभी आपने हटादई १६ और वह वर्षा मेरेहोते हुये देवताओं करके और दैत्योंकरके कभी निवारण नहीं होसक्तीहै सो बड़ा आश्चर्यहै और हेकृष्ण मुझको तुमबड़ेप्रिय लगतेहो क्योंकि जो तुममनुष्य शरीरको धारण करनेवाले १७ और क्रोधसेयुक्त ऐसे तुम संपूर्ण वैष्णवतेज को गुप्त कररहेहो और सो मैं यह मानता हूं कि आपने देवताओं का कार्य सिद्धकरदिया १८ और तुम अपने तेजसे युक्तहुये मनुष्य भावको प्राप्तहोके शूरवीरोंके कार्यकेवास्ते स्थित होरहेहो सो इस में कछु हास्य नहींहै १९ और तुम सबकार्यों में आगे प्राप्त होने वाले देवताओंके नेताहो और सब देवताओंके और लोकोंके तुम्ही एक सनातनहो २० और जो आपके भारको उतारे ऐसे दूसरे को मैं नहीं जानताहूं और जैसे शेषनाग इस संसारके भारमें युक्तहो रहाहै २१ इसी प्रकार गरुड़की असवारीवाले तुम देवताओं भार में युक्तहो और हे श्रीकृष्ण तिसी आपके शरीरसे ब्रह्माजीने संसार

में उत्तम मनुष्य रचेहैं २२ जैसे अन्य धातुओंके मांहसे सुवर्ण तैसे और तुम स्वयंभू भगवान् आपही वृद्धि और अवस्थाकरके युक्तहो जातेहो २३ और हे भगवन् आपकीगति जाननेको कोई समर्थनहीं है जैसे पांगला मनुष्य जल्द चलनेकी गति नहीं जानैहै तैसे और पर्वतोंमें तो हिमाचल पर्वत श्रेष्ठहै और अगाध जलके हृदोंमें वरुण का स्थान अर्थात् समुद्र उत्तमहै २४ और पक्षियोंमें गरुड़ उत्तमहै और इसीप्रकार देवताओंमें आप श्रेष्ठहो और जलोंके नीचे लोक वसताहै और तिस जलके ऊपर पर्वतहै २५ और पर्वतोंके ऊपर पृथ्वीहै और पृथ्वीके ऊपर मनुष्यहैं और मनुष्यलोकसे ऊपर प-क्षियोंकी गति कहीहै २६ और आकाशकेऊपर स्वर्गका दरवाजा कांतिवालासूर्यहै और तिससेऊपर देवलोकहै और तहां विमानोंमें बैठकेजानावनताहै २७हेकृष्णजहां मैं देवताओंकामालिक इन्द्रऐसी पदवीको पारहाहूं औरस्वर्गसेऊपर महर्षियों करकेपूजित ब्रह्मलोक है२८तहांचन्द्रमाऔरश्रेष्ठनक्षत्रोंकीगतिहैऔरतिससेऊपर गौलोकहै औरतहांसाध्य संज्ञक देवतेहैंवेतिसलोककीपालनाकरतेहैं २६ सोहे कृष्ण वह लोक सबसे ऊपर महाआकाशमेंहै और तिससे भीऊपर ऊपर आपकीतपोमयी गतिहै ३० तिसको ब्रह्माजीसे पूछतेहुयेभी हम नहीं जानते हैं और न्यूनकर्म करनेवालों के नीचरलोकहै और तिनसे नागलोक अर्थात् पातालल्लोक दारुणहै ३१ और सब कर्मोंमें रहनेवालोंका पृथ्वीलोकहै और सब कर्म का क्षेत्रहै और तुल्यवृत्तीवाले अस्थिर पक्षियोंका वायुके विषयकरके आकाशलोक है ३२ और समदमोंसेयुक्त और अच्छेकर्मके करनेवालों का स्वर्ग लोकहै और ब्रह्मतत्त्वमें युक्त पुरुषोंकी तहां गतीहै ऐसा ब्रह्मलोक है ३३ और गौओंका जहां गोलोकहै वह बड़ी दुर्लभगति है और हे कृष्ण वह लोक दुःखपाताहुआ गौओंके उपद्रवहटाके तुमकोस्व-च्छकरदिया ३४इसवास्ते गौओंके वाक्यसे प्रेराहुआ और ब्रह्माके गौरव से तुझको प्राप्तहुआ हूं और हे कृष्ण भूतों का पति और देवताओंका राजा ऐसा मैं इन्द्रहूं ३५ और अदितिकेगर्भ पर्याय में

आपका मैं बड़ाभाई हूं सो हे भगवन् तेजवाले तुमको मेघरूप से जो मुझको तेज दिखायाहै ३६ उसको आप क्षमाकरो औरहेकृष्ण अपनेतेजसे क्षांतमनवालेहुये तुम ३७ ब्रह्माका और गौओंकावचन मुझसे सुनो और इंद्र कहता है कि हे भगवन् ब्रह्मा और आकाश में स्थितहुई गौ स्वर्ग में मुझसे ऐसे कहतीभई ३८ कि दिव्यकर्मों करके और अच्छीरक्षाकरके तुमको रक्षाकरीहै और अन्यलोकोंकी और गोलोकको आपनेरक्षाकरीहै ३६ क्योंकि जिससे हम उत्तमों के संग बढ़तेहैं और खेतीकरनेवाले मनुष्योंको और पवित्र घृतकरके देवताओंको ४० और गोबरकी प्रवृत्तिकरके लक्ष्मीको इसप्रकार गौओंकरके मैंतृप्तकरवाऊंगा और हे भगवन् प्राणके देनेवाले तुम हमारे गुरुहो ४१ और अब से हमारा राजा इंद्र तुमहो इस वास्ते दूधसे भरेहुये सुवर्णके कलशोंकरके ४२ अब अपने हाथसे तुमको अभिषेक करके गौओंका राजा करताहूं जैसे मैं देवताओंका इंद्रहूं तैसे ४३ अब से आगे तुमको पृथ्वीमें गोविंद इस नामकरके स्तुतिकरेंगे और मेरे ऊपर जैसे तुम गौओं के इंद्र स्थापित होगये हो ४४ इसवास्ते तुमको देवता उपेन्द्र इसनाम करके स्तुतिकरेंगे और जोये चारमहीने मेरेबर्षाके विहितहैं ४५ तिन्होंके आधे पश्चात् भागमें शरदकाल तुमको देऊंगा और तिन मेरे दो महीनों को अब से मनुष्य जानेंगे ४६ और वर्षाऋतु आधी व्यतीतहोनेके बाद मेरे अर्थ उत्सवकरेंगे और तिससे उपरांत तुम पूजाको प्राप्तहोगे और तब मेराजलसे उपजा अभिमानको मयूरत्यागदेवेंगे ४७ और अल्प बोलनेवाले और अल्पमदवाले ऐसे सब मेघनाद करनेवाले होजावेंगे और मेरेकालके विचारनेवाले सब शांतिको प्राप्तहोजावेंगे ४८ और अगस्तमुनि दिशाओंमें प्राप्त होजावेंगे और हजार किरणोंकरके अपनेतेजसे सूर्यतपेगा ४६ पश्चात् तिस शरदसमयमें मौनकी इच्छावाले मयरहोजायंगे और आकाशमें जलकी याचना करेंगे ५० और उड़तेहुये हंस सारसोंकरके पर्णानदियों के किनारे होजायंगे और मदांध वाली कंज्यपक्षी शब्द करेंगे और मदवाले

बैल होजावेंगे ५१ और प्रसन्नरूप गौ बहुतदूधको उतारेंगी और
जब मेघ चलेजावेंगे और पृथ्वीसे जल का समूह हटजायगा ५२
और शस्त्रकीतरह चमकतेहुये आकाशमें हंस बिचरने लगजायंगे
और बावली जो हद ५३ तलाव आदिकोंके विमल जलमें कमल
उपजेंगे और खेतोंके समूह पकजायंगे ५४ और नदियों का जल
बीचमें रहजायगा और अच्छी खेतियोंवाली सीम होजायंगी ५५
और तिस वर्षासमयके व्यतीतहोजानेमेंबढ़ेहुये गामोंसे युक्तपृथ्वी
होजावेगी और शोभावाले मार्ग होजावेंगे और फलवाले तृणहो-
जावेंगे ५६ और ईखोंवालेदेश होजावेंगे और यज्ञप्रवृत्त होजावेंगी
तब शरद कालमें सोके उठेहुये तुम्हारे विषय पुण्य प्रवर्त्त होवें
गे ५७ और हे कृष्ण संपूर्ण इसलोकमें और स्वर्गलोक में मनुष्य
तुमको और मुझको ध्वजाके आकार लष्टियोंकेविषे पूजेंगे५८और
पृथ्वीतलमें महेंद्र और उपेंद्र ऐसेहम दोनोंको जो पूजेंगे ५९ और
प्रणामकरेंगे तिन्होंके कछु दुःख नहीं होगा ऐसे कहके फिर वह
इंद्र दिव्यदूधकेसे भरेहुये तिन कलशोंको ग्रहणकर ६० अभिषेक
अर्थात् गौओंकाराजा करताभया और गोविंद यह नाम निकालता
भया और पश्चात् अभिषेक होनेलगा तब गौओंकेसमूह इकट्ठे हो-
के ६१ तिस अविनाशी श्रीकृष्णको दूधकी धारोंसे सींचनेलगगई
और अमृतके संग स्वर्गसे मेघ बर्षनेलगगये ६२ और वनके वृक्षों
के वृक्षोंकादूध चंद्रमाके समान सफेद निकलके गिरताभया ६३
और आकाशसे देवता पुष्पोंकी वर्षाकरतेभये और बाजे बजानेल-
गतेभये और मंत्रोंमें तत्पर मुनि वाणियोंकरके स्तुतिकरनेलगे ६४
और तिस एकार्ण जलको सुखाके सुंदर शरीरको पृथ्वी धारणक-
रतीभई और समुद्रशांतिकोप्राप्त होताभया और जगत्को हितदा-
यक पवन चलनेलगी ६५ और अपनेमार्गमें स्थितहुआ सूर्यप्रका-
शमान् होताभया और नक्षत्रोंसेसंयुक्त चंद्रमाहोगया और अतिवृ-
ष्टिआदि सब उपद्रव शांतहोगये और वैरसेरहित राजेहोतेभये ६६
और पीपसी, पत्ते, पुष्प, इन्होंसे युक्त वृक्षहोतेभये और हाथियोंके

मद झिरने लगगया और बनमें मृग प्रसन्न होतेभये ७७ और पर्वतोंमें उपजीहुई धातुओंसे तिन पर्वतोंकी शोभाहोतीभई इसप्रकार सब संसार स्वर्ग की तरह अमृत से तृप्तहुआ प्रतीत होने लगगया ७८ और तब श्रीकृष्ण के अभिषेक समयमें दिव्यस्वर्गसे रसगिरताहुआऔर गौओंकेसंग अविनाशी गोविंदको इंद्रअभिषेक करताभया ७९ और दिव्यमाला और वस्त्रोंको धारण कियेहुये श्रीकृष्ण के प्रति इन्द्रकहनेलगा हेकृष्ण यहतो तुम्हारा नियोगगौओंमें प्रथमकियाहै ८० और दूसरामेरे आगमन के कारणको तुम सुनो तुमको जल्दकंसकोमारके कार्यसिद्धकरना उचितहै और अश्व रूपको धारणकिये हुए केशीदैत्यको मारो ८१ और सदा अरिष्ट करनेवाले अरिष्ट दैत्य कोमारो पश्चात् राज्यकरो और आपके पिताकी बहिनकापुत्र अर्थात् बुवाकाबेटामेरा अंशमेरीहीतरह स्थित हुआहोगा ८२ सोउसकी आपरक्षाकरना और मानना और प्यार करना और वह तेरेसे अनुगृहीत और तेरे वृत्तांतको करनेवाला ८३ और तेरेवशमें वर्तमानहुआ बहुतसा यशको प्राप्तहोवेगा और वह धनुषको धारण करनेवाला भारतवंशमें श्रेष्ठहोवेगा ८४ और तेरे अनुरूपहोवेगा और तेरेबिना कहीं रमणभी नहीं करेगा और भारत वंशमें तेरे प्राप्तहोने और उसकेहोने से ८५ दोनों के योग करके राजे मृत्युको प्राप्तहोजावेंगे और हेकृष्ण ऋषियों के मध्यमें जाना हुआहै ८६ कि मेरापुत्र अर्जुननामवाला और कुलको बढ़ानेवाला कुंतीरानी में प्राप्तहै और वह शस्त्रविद्या के पारको जानने वाला है और शत्रु के मारनेमें श्रेष्ठहै ८७ और तिसको शस्त्रसे युद्ध करने वाले अनेक राजे प्राप्तहोवेंगे और वह युद्धमेंलड़नेवाले शूरबीर राजाओंको अक्षौहिणी सेनाको ८८ अकेला क्षत्रिय धर्म करकेजीतलेगा और तिसकेअस्त्र चरित्रोंकामार्ग और धनुषको लाघवताको राजे और देवतेभी नहीं जानेंगे परंतु आपके बिना सोवह तेराबंधु औरयुद्धमें सहायक करनेवाला अनुचरहोवेगा ८९ और हेगोबिंद मेरीकृतिके वास्ते तिसकायोग बिधान आपको करनाचाहिये और तुमको

जैसामैंहूं ऐसा सदादेखना और नित्यमान्य रखना ९० हे भगवन् संसार को जाननेवाला तूहै और अर्जुनको जाननेवाला नित्य होना और हेभगवन् तुमको महान्युद्धोंमें तिसकीसदा रक्षा करनी चाहिये ९१ फिर इसप्रकार जो तुम रक्षाकरोगे तोतिसकी मृत्युनहींहोवेगी और हेकृष्ण अर्जुनकी जगह तुम मुझकोजानो और मुझेअपनी आत्माजानो ९२ और जैसेनिरंतर मैंतेरी आत्माहूं इसीतरह अर्जुनकोजानो और हेभगवन् तुमकोतीन पैंड़से बलि राजासे ये लोक जीतके ९३ फिरमैंपहिले बड़ेक्रमसे तुमकोदेवताओं काराजा करदियाहूं और तुमकोदेवते सत्यमय और इष्टवाले और सत्यपराक्रमवाले ९४ जान के सत्यकर के बैरियों के नाशमेंयुक्त करतेहैं सोहेभगवन् अर्जुननाम वालामेरापुत्र तेरे पिताकी बहिन में उत्पन्नभया है ९५ सोवह यहांतेरासहचरहो केमित्ररहोऔरहेकृष्णतेरे युद्धकरतेसमयअपनेस्थानमें अथवा घरमें ९६ अथवारण में वह अर्जुनतेरे भारको ग्रहणकरेगा और हेकृष्णकंस के मारने के पीछे होनहारको जाननेवाले तेरे संग ९७ चारोंतरफ़ राजाओंका महान् युद्धहोवेगा तब मनुष्योंमें शूरवीर और अति मनुष्यकर्म करनेवाले ऐसे ९८ तिनराजाओंकी विजयको यशकर के भोगनेवाला अर्जुनहोवेगा और तुम तिसको युक्त करोगे सोहेकृष्ण यह सब मेराकहा तुमको करनेलायकहै ९९ क्योंकि यदि मैं और देवतेतुम्हारे प्रिय कहातेहैं इस प्रकार इन्द्र केवचनसुन के गोविंदभावको प्राप्तहुआ१००वहकृष्ण प्रसन्नमनसे युक्त यह प्रतिवचन कहनेलगा हे इन्द्रतेरे दर्शनसे मैं प्रसन्नहोगया १०१ और जोतुझको कहाहै सोसबठीकहै और तुम्हारेभावको मैंजानताहूंऔरअर्जुनके संभवको भीजानताहूं १०२ और पांडुराजा के अर्थदईहुई पिताकीबहिनको भी जानताहूं और धर्म के पुत्र युधिष्ठिरको भी मैंजानताहूं १०३ और वायुकी संतान भीमसेनको भीजानताहूं और अश्वनी कुमारों के रचेहुए भी नकुल और सहदेव इननामोंवाले औरमाद्रीकी कूषिमेंउपजेहुए ऐसे१०४ दोपुत्रोंको जानताहूं १०५ और पिताकीबहिन से उत्पन्नहुआ और

सूतभावको प्राप्तहुआ और कन्यासे उपजा ऐसे सूर्य्य के पुत्र कर्ण कोभी मैं जानताहूं १०६ और युद्धकी इच्छाकरने वाले धृतराष्ट्र के पुत्रोंको भीजानताहूं १०७ और पांडुराजा केशापरूप बजसे उपजी मृत्युको भीमैं जानताहूं सोहेइन्द्र तू स्वर्गलोकमें देवताओं के सुखके वास्तेजा १०८ और अर्जुनकाबैरी मेरे आगे कोई नहींहोगा और अर्जुनकेअर्थ अक्षतरूप पांडओंको निवृत्तरूप भारतसे कुंतीकोदिखा नेवास्ते निकासूंगा और हेइन्द्र तूजोकहैहै सोतेरे १०९ पुत्र अर्जुन को तेरे स्नेहसे युक्तहुआमैं भृत्यकीतरह रक्खूंगा ११० ऐसे सत्यसे युक्त श्रीकृष्ण केप्रिय वचनसुन के वहइन्द्रस्वर्गमें जाताभया १११॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां गोविंदाभिषेके षटसप्ततोऽध्यायः ७६ ॥

सतत्तरवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं—ऐसेकह के जब इन्द्रचलागया तब ब्रज बासियोंसे पूजितहुआ और गोवर्द्धनको धारणकरने वाला वहभग- वान् अपनेब्रज में आवताभया १ फिर तबकृष्णकीजाती के वृद्धगो पतिस कृष्णकी प्रसंशा करनेलगे और यह कहने लगे कि हम तेरे वृत्तांतकर के धन्यहैं २ और गौओंकी वर्षा के भयसे रक्षाकरी और हमारी महाभयसे रक्षाकरीहै और हे गोविंद देवताओंकी तुल्यपरा- क्रमवाले ३ अमानुष अर्थात्देव कर्म को हमदेखतेहैं और हे कृष्ण पर्व्वतके धारण करनेसे तुझको हमदेव जानतेहैं४और हे महाबल वाले तूकोईरुद्रोंके बीचमेंहै अथवाकोई मरुत संज्ञक देवताओं में है अथवा वसुओंमेंसेकोईहै और तेरापिता वसुदेव किसवास्तेहै५ और बाल्य अवस्थामें यहतेराबल औरक्रीड़ा और तेराजन्म हमारे बीचमें निंदितहै और हेकृष्ण तेरीदिव्य चेष्टाहमारे मनोंको शंकितकरेहै ६ किसवास्ते तुम गोप वेशको धारणकिये हमारे विषे रमतेहो सो यह निंदितहै और लोकपालोंके समान उपमावाले तुम गौओं को क्यों चरातेहो ७ और तू कोई देवहै अथवा दानवहै अथवायक्षहै अथवा

गंधर्वहै और तू हमारा बांधवहुआहै और जो तूहै वही है तेरे अर्थ नमस्कारहै ८ और किसीकार्यके वास्ते तू यहां अपनी इच्छाकरके विचररहाहै और हम सब तेरे अनुचरहैं और तेरीशरणहैं ६ वैशं-पायनजी कहनेलगे कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण ऐसे गोपोंका वचनसुनकेआयेहुये तिन अपनेवंधुओंसे हंसताहुआ यह प्रतिवचन बोला १० जैसे भयानक पराक्रम वाले तुम मुझको मानतेहो तैसे मुझको नहीं जाननाचाहिये क्योंकि मैं तो तुम्हारा सजातीयबंधुहूं ११ और जो तुम अवश्य सुनना चाहतेहो तो कोई कालतक चुप-रहो फिर तुम मुझको सुनलेवोगे और तत्त्वसे देखलेवोगे १२ और जो यदि देवतासरीखी कांतिवाला मैं तुम्हारे सराहनेलायकहूं तो पूछनेसे क्याहै यही मेरा अनुग्रहहै १३ और ऐसे जब बसुदेव के पुत्र श्रीकृष्णनेकहा तब सब गोप मौनधारणकिये दिशा २ में चले गये १४ और फिर वह श्रीकृष्ण चंद्रमा के नवीन यौवनको देखके और शरदऋतुकी रमणीक रात्रीको देख फिर रतिकरनेको मनकर ताभया १५ और कभी वह पराक्रमवाला श्रीकृष्ण गोबरकीकीच्च से युक्त ब्रजकी गलियोंमें अतिमदवाले बैलोंका युद्धकरादेताहै १६ और कभी अत्यंत बलवाले गोपालोंका युद्धकराताभया और कभी वह शूरवीर वनमें ग्राहकीतरह गौओंको पकड़ताभया १७ इसप्र कार अनेक क्रीड़ाकरताभया और वक्तको जाननेवाला वह श्रीकृ-ष्ण कभी गोपोंकी जवान कन्याओं को रात्रीमें प्राप्तहोके किशोर अवस्था दिखाताहुआ तिन्होंके संग रमण करताभया १८ और वे गोपोंकीनारी कांतिवाले तिसके मुखको नेत्रोंसे ऐसे पानकरतीभईं जैसे आकाशमें चंद्रमाकोदेखें तैसे १६ और हरितालकेसमानपीले वस्त्रोंवाला और कसूंभेवस्त्रोंवाला वह श्रीकृष्ण उत्तम कांतिवाला दीखताभया २० और वह गोविंद अच्छीतरह बाजूबंदबांधेहुयेऔर विचित्रवनमाला पहिनेहुये शोभावाले होतेभये और ब्रजको शोभि-तकरतेभये २१ और तब गोपोंकी कन्या तिसको दामोदर ऐसा नामलेके बोलतीभईं और तिसके विचित्रब्रजमेंदेखके और विचित्र

नाषण देखके २२ वेगोपियां तिस कृष्णको मोधीचूंचियोंकरके और जांघोंकरके पीड़ितकरतीभईं और नेत्रोंको भ्रमाकरके अपने २ मुखोंसे देखतीभईं २३ और वे गोपोंकी कन्या भाइयोंकरके पिताओंकरके और माताओं करके वर्जीहुई रात्रीमें विषयके प्रियके वास्ते श्रीकृष्णको ढूंढ़तीभईं २४ और वे सब गोपियां पंक्ति बनाके और जोड़ाबनायेहुये और श्रीकृष्णके चरित्रको गावतीहुई आपसमें रमणाकरतीभईं २५ और कृष्णकी लीलाकेअनुसार लीलाकरनेवाली और कृष्णमेंही स्थापित नेत्रोंको करेहुयेऔर कृष्णकी गतिकेसमानगमनकरनेवाली ऐसे वे जवान गोपियां २६ वनोंमें हथेली बजावतीहुई और कईक कूदतीहुई व्रजकी नारी कृष्णके चरित्रको प्राप्त होतीभईं २७ और आनंदितहुई और क्रीड़ाकरती हुई वे गोपियांतिस कृष्णके नृत्यको और गीतको और सस्मित देखनेको आपस में करनेलगीं २८ और वे गोपियां तिस कृष्णके भावकोगातीहुईं और दामोदरमें तत्परहुई व्रजमेंप्राप्तहोके सुखसे बिचरनेलगीं २९ और गोवरको किरसों की धूलसे भरा हुआ अंगवाली वे गोपियां कृष्णको वरतीभईं और जैसे मदवाले हस्थी के संग हथिनी रमणकिया करतीहैं तैसे ३० श्रीकृष्णकेसंग वे गोपियां रमणकरती भयीं और रात्रीके भावोंसे फूलेहुये नेत्रोंसे हंसतेहुये मुखवाली और कालेमृग सरीखे नेत्रोंवाली ऐसी वे गोपियां श्रीकृष्णको नेत्रोंके द्वारा पानकर के तृप्त होतीभयीं ३१ और कमल सरीखी कांतिवाले श्रीकृष्ण के मुखको गोपियां भोगके अंतर्गतहुईं रात्रीमेंरतिको लालसासेपीवती भईं ३२ और जब वे हाहा ऐसा शब्द करतीं तब समझानेकीवाणी श्रीकृष्णको कहीको ग्रहण करती भयीं ३३ और तिन गोपियों की मोढियों की बालरति की श्रांति से ढीले होहोकर कुचाओं के ऊपर अच्छे प्रकार गिरतेभये ३४ और ऐसे गोपियों के मंडलसे युक्त वह श्रीकृष्ण शरद ऋतु की चांदनी रात्रियों में गोपियों के संग रमण करताभया ३५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांहल्लीशक्रीड़नेसप्तसप्ततोऽध्यायः ७७॥

छठत्तरवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं किसी एक समय श्रीकृष्ण संध्याके प्रदोष समय रमण कररहेथे तब गौओंकेठानमें त्रासकरताहुआ अरिष्टनाम वालादैत्य आताभया और बुझाहुआ अग्निकाकोइला औरमेघकेसमान कांतिवाला और पैने सींगोंवाला और सूर्यकेसमान नेत्रोंवाला और पैने खुरोंवाला ऐसाकालरूप वहदैत्य दूसरा कालकीतरह मालूम होताभया२ और जीभसेनेस और ओष्ठोंको बारम्बार चाटता हुआ और गर्वितरूपपूंछवालारुअकांधिवाला ३ और ज्यादैप्रमाण वाला और गोबर मूतसे भराहुआ अंगवाला और गौओं को अतिकंपानेवाला४ और महाकटि,भारामुख,बड़ापेट,भारे गोड़े ऐसे रूपको धारणकिये लंबे सींगवाला और लम्बीकगठकीखाल लटकतीहुई५ और गौओंपै चढ़नेसे चपल और वज्रसे चिन्हनित मुखवाला और युद्ध करनेकीतरह सींगोंको उठायेहुये और बैलोंको मारनेवाला ६ ऐसा वह अरिष्टनामवाला दैत्य गौओंका अरिष्टदासूग आकृतिवाला गौओं के ठानों में भाजताहुआ ७ और गौओं के संग ऋतुके विना भोगकरके गर्भगिराता हुआ ऐसेवहचपल दैत्यतहां बिचरनेलगा ८ औरसींगोंसे प्रहारकरता हुआ और भयंकर और गौओंमेंदुर्दम ऐसा वह दैत्य युद्धकेविनागौओंकेठानमेंकभीभीनहींप्रसन्नहोता भया६ सो वहमदोत्कटदैत्य गौओंकोनिरंतरबाधादेताहुआवच्छे औरबैलोंसेरहित गौओंके ठानोंकोकरनेलगा१०तिसोसमयकृष्णकेसमीप स्थितहुई गौओंकोधर्मरायके मार्गसेस्थित हुआवहदुष्टात्मा त्रासदेनेलगा ११ और इन्द्रकेवज्रसेमेघगर्जनकी तरहशब्दकरनेलगा तबतिसमहाकायावाले, और शब्द करते हुये वृषभ को आवते देख १२ श्रीकृष्ण महा राजहाथकी तालके शब्द से निवारण करतेहुये और सिंह सरीखे शब्दोंसे मोहतेहुये तिसके प्रतिभाजे १३ फिरवह गो वृष श्रीकृष्णकोदेख प्रसन्नहोके पूंछड़कोखड़ी करके और तालकेशब्द सेरोष कियेहुये युद्धकीइच्छा करकेगर्जताभया १४ पश्चात्वृषभरूप और

दुष्टात्माको आवते श्रीकृष्णदेखके तिसजगहसे नहीं चलतेभये और पर्वतकी तरहअचलखड़े होगये १५ फिर वहवृषभ श्रीकृष्णकी कूषि विषैं दृष्टिदेनेलगा और मुखको थंभकीतरह करताभया और कृष्ण की मृत्युकीइच्छा करकेफिर जल्द कृष्णकेऊपर गिरनेलगा १७ पश्चात् गिरतेहुये तिसदुर्धरदैत्यको भगवान् डाटनेलगे और श्रीकृष्ण भगवान् कालेअंजनके समान तिसवृषभके प्रतिवृषभ सरीखाही पराक्रमकरनेलगे १८ फिर वह महावृषभरूपदैत्य श्रीकृष्णसेपकड़ाहुआ मुखसे झाग गेरनेलगा और भयां २ शब्दकरनेलगा १९ और वे दोनोंकृष्णऔरवृषभयुद्ध करतेहुये ऐसे शोभितहोतेभये जैसे मेघसमयमेंमिले हुये दोबद्दलशोभित होवेंतैसे २० और पश्चात् तिसदैत्यका अभिमान और बलकोखंडित करके श्रीकृष्ण भगवान् तिसकेपैरोंको सींगोंकेबीचमें करकेऔरतिसअरिष्ट नामवाले दैत्यकेकंठकोपीड़ितकरतेभये २१ औरफिर तिसकेवाएंसींगकोधर्मराजके दंडकीतरह उखाड़तेभयेफिरवहीसींग तिसकेमुख में देकेतिसवृषभ कोमारतेभये २२ फिर टूटाहुआ सींगवाला और फटाहुआमुखवाला और फटाहुआकंधावाला ऐसातिस दैत्यसे ऐसे रुधिरनिकलताभयाकिजैसे मेघसेजलकीधारा २३ और जबगोविंदने वहवृषभदानव हननकिया तब सब जीव साधुसाधु ऐसे कहनेलगे २४ और तिसकेकर्मकी प्रसंशाकरनेलगे और वे उपेंद्रभगवान तिसदैत्यको मारकेचंद्रमासेप्रकाशित रात्रिविषय कमलशरीखी कांतिवाले नेत्रोंसेफिर रमणकरतेभये २५ और वेसबगोवृत्ति वालेगोपाल कमलशरीखे नेत्रोंवाले तिस कृष्णसे प्रसन्नहो केउपासना करनेलगे जैसेस्वर्गमें इन्द्रकीदेवता उपासना करतेहैं तैसे २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांअरिष्टवधेअष्टसप्ततोऽध्यायः ७८ ॥

उन्नासीवां अध्याय ॥

वैशंपायनजीकहनेलगेकृष्णकोव्रजमेंप्राप्तसुनके और अग्निकी तरहबढ़ताहुआ सुनकेशंका करताहुआ कंस उद्वेगको प्राप्तहोता भया

औरतिससे भयकरनेलगा १ और जबपूतना मारदी और कालीनाग जीतलिया और धेनुकदैत्य मारदिया और प्रलंबकानाशकरदिया २ और गोवर्द्धनपर्वत उठालिया और इन्द्रकीशिक्षा विफलकरदई और गौओं विषयत्रास देताहुआ ३ अरिष्टदैत्य इच्छितकर्म से मारदिया और तिसकेमारनेसे सब गोपप्रसन्न होगये और महाभय और विनाशकंशको नग्दीक दीखनेलगा ४ और यमलार्जुन वृक्षोंकाउखाड़ना और गाड़ापटकदिया ऐसेतिसकृष्ण केवहकंस अचिंत्य कर्म सुनके और बढ़तेहुये शत्रुओंको सुनके ५ वहमथुरा का पतिकंसअपनो आत्माको खेदप्राप्तहुये की तरह मानताभया और इन्द्रियोंकोसंज्ञा चलीगई और मरेहुए की तरहहोगया ६ पश्चात् अपने भाइयोंको और उग्रसेन पिताको अंधेरीरात्रिमें बुलाके और देवताओंकेसमान कांतिवाला ७ बसुदेव और कंकयादव और सत्यक और दारुक और कंकयादव का छोटाभाई ८ और बैतरणनाम वालाभोज और महाबलवाला विकद्रु और भयसख नामवालाराजा और महान्‌शोभावालाविमथु ९ और बभ्रु और कृतवर्मा और बहुततेजवाला भूरिश्रवा १० इनसबयादओं कोबुलाके वहमथुराका पतिउग्रसेन कापुत्र ऐसे कहताभया ११ किहेयादओ तुमसबकार्योंमें निपुण और सबवेदोंकोजानने वालेहो और न्यायकेवृत्तांत मेंचतुरहो और त्रिवर्ग अर्थात् धर्म अर्थ कामइन्होंके प्रवर्तकरने वालेहो १२ औरकर्तब्यबस्तुओं के करनेवालेहो और पंडितोंकेसमान उपमावालेहो और पर्वतोंकी तरहअचलहो और महान् वृत्तसेस्थितहो १३ और कपटरहित वृत्तीवाले हो और तुम सबगुरुकुलमें वासकरनेवालेहो और राजमंत्रको धारण करनेवालेहो और धनुष विद्याकेपारको जाननेवालेहो १४ और मनुष्योंके यशको प्रकाशकरनेवालेहो और वेदोंकेअर्थकोकहनेवालेहो और आश्रमोंकेस्वभावको जाननेवालेहो और वर्णोंकेक्रमको जाननेवालेहो १५ और अच्छेनियमोंके कहनेवालेहो और नयदर्शी पुरुषोंकेनेताहो और परायेराष्ट्रोंको छेदन करनेवालेहो और शरण आयेहुओंकीरक्षाकरनेवालेहो १६ ऐसेअक्षतचरित्रवालेतुम्हारेउद्योग

करनेसे स्वर्गभी अनुग्रहित होजावे फिर पृथ्वीका तोक्याकहनाहै १७ और ऋषियोंके समान तुम्हारावृत्तहै और मरुतोंकेसमान तुम्हारा प्रभावहै और रुद्रोंकेसमान तुम्हाराक्रोधहै और अंगिरसोंकेसमान तुम्हारी दीप्तिहै १८ और पवित्रकीर्त्ति वाले तुमकरके बढ़ाहुआ यह यदुकुल धारणाहोरहाहै जैसे पर्वतोंसे पृथ्वीतल तैसे १९ और मेरे चित्तके अनुसार वर्तनेवाले ऐसे तुमहुये पीछे मेराअनर्थ बढ़ताहुआ क्या तुमको उपेक्षितहै २० क्योंकि यह कृष्ण ऐसा नामवाला ब्रज में नंदगोपकापुत्र मेघकीतरह बढ़ताहुआ हमारी जड़कोकाटताहै २१ और मंत्रीसे रहित और शून्य और बिचारमें अंधा ऐसे मेरे कारण से नंदगोपको वह पुत्र नंदगोपने अपने घरमें गुप्त कररक्खाहै २२ और जैसे उपजीहुई व्याधि और पूर्णहुआ समुद्र और गरमीके अंत में गर्जताहुआ मेघये बढ़तेहैं तैसे वह दुरात्मा बढ़ताहै २३ और तिसकी गतिको मैं नहीं जानता और नन्दगोपके घरमें जन्माहुआ और अद्भुतकर्मकरनेवाला २४ ऐसे तिसकेयोगको और पराक्रमको भी नहीं जानता और क्या उत्पन्नहुआहै और क्या देवता जन्माहै सो हम नहीं जानते परंतु अमानुष्य अति दैवकर्मों करके तिसका अनुमान कियाजाता है २५ और तिसने बाल्यावस्था में पूतना शकुनी मारदी और सोधा सोता हुआने स्तनपानकी इच्छा करके प्राणोंकेसंग वह पूतना पीली अर्थात् मारदी २६ और यमुनाकेहृदमें कालीय नागका दमनकिया पश्चात् रसातलमें प्राप्तकरदिया और क्षणमें तिस हृदसे निकास दिया २७ और वह नंदगोपकापुत्र योग करके उत्पन्न होरहाहै और इसकोधेनुक दैत्य ताड़वृक्षकी शिखर से गिराके मरवादिया है २८ और जिसकेसंग देवता भी युद्धकरने को समर्थनहीं ऐसा प्रलम्ब दैत्यभी बालकहो को एकमुष्टि से मार दियाहै २९ और इन्द्रका उत्सव भंग करके फिर इन्द्रके रोषसे हुई वर्षाको जीतताभया और गौओंकेवास्ते गोबर्द्धनकोउठाकेघरबनाता भया ३० और बलवान् अरिष्ट दैत्यको मारदिया और ब्रजमें सींगसे रहित करदिया और वह बालकसे रहितहै परंतुतहां बालकअवस्था

कोप्राप्तहोके बालकक्रीड़ाओंकरके बिचर रहाहै ३१ सो तिसब्रजबासी कृष्ण के यह कर्मोंका प्रबंधहै और निश्चय केशी दैत्यको और मुझ कोभी भयहै ३२ और निश्चय पूर्व जन्ममेंभी मेरामृत्यु यहीथा और अब यह युद्धकेवास्ते मेरे आगे ठहररहाहै ३३ क्योंकि मेरी ब्रजमें अशुभ गोपपनेको प्राप्तहोके और मनुष्यभावको प्राप्तहोकेदेवताओं के प्रभावके समान क्रीड़ा करनेको कौन समर्थहै ३४ और बड़ा आ-श्चर्यहै कि जो नीचशरीरकरके अपने आत्माको आच्छादितकर यह कौन देव रमताहै जैसे श्मशानमें ढकीहुई अग्निहो तैसे ३५ और सुनाजाताहै कि पहले देवताओंके कारणके वास्ते विष्णु भगवान् वामनरूप करके इस पृथ्वीको हरताहुआ ३६ और वह विष्णुसिंह रूपकरके दानवोंके पितामह हिरण्यकशिपु दैत्यको मारताभया ३७ और पहले कैलास पर्वतपै अचिंत्यरूप धारणकरके त्रिपुरासुर को मारनेवाला शिवजो करके सबदैत्य स्वर्गसे नीचे गिरवा दिये ३८ और अंगिराकेपुत्र वृहस्पतिने चालितकिया भार्गव दारुं रीमायाको प्रविष्ट होकर अनावृष्टि करता भया ३९ और अनंतरूप और हजार शिरोंवाला और अविनाशी ऐसा वह देव बाराहरूप धारणकरकेइस पृथ्वीको एकार्णव जलसे निकासताभया ४० और पहले जब अमृत निकसाथा तब विष्णु स्त्रीरूप धारणकरके देवता और राक्षसों का दारुणयुद्ध कराताभया ४१ और वही विष्णु पहले अमृतनिकासने के समय मन्दराचल पर्वतको धारण करताभया और अकूपार ऐसा सुना जाताहै ४२ और पहले वही विष्णु निन्दा करनेलायक बामन रूपको धारण करके तीनपैरोंकरके तीनोंलोकोंको और स्वर्ग स्थान को हरताभया ४३ और वही विष्णु दशरथके घरमें अपनेतेजके चार प्रकार भागकरके और राम संज्ञकहुआ रावणको मारता भया ४४ ऐसे यह विष्णु तिसो२रूपको प्राप्तहोके देवताओंके प्रयोजन सिद्ध करनेके वास्ते अपनेकार्यको सिद्धकरताहै ४५ सोयह निश्चयविष्णु है अथवा इन्द्रहै अथवा मरुत देवताओंकापतिहै सो मेरे साधनकी इच्छा करके यहां प्राप्तहोरहाहै और नारदने जो मुझेकहा था वह

ठीकहै और यहां बसुदेवकेप्रति मेरीबुद्धिमें शंका आतीहै सो इस बसुदेवकी बुद्धि बिशेषकरके हम कातर अर्थात् कुत्सितपनेको प्राप्त होगये ४६ क्योंकि मैं नारदसे खटवांग बनमेंमिला था सो उसको दूसरे मेरेसे यहकहा कि हे कंस जो ४७ तुझने गर्भोंके मारने में यत्नकिया वह तेरा कर्म बसुदेवने रात्रीमें निष्फल कर दिया ४८ और जो कन्या तूनेरात्रीमें शिलापै पटकी तिसको तूयशोदाकी पुत्री जान और कृष्णको बसुदेवकापुत्रजान ४९ और इसमित्ररूपबसुदेव शत्रुने रात्रीविषे येदोनोंगर्भ तेरेबधकेवास्ते बदलदिये ५० औरवह यशोदाकी कन्यापर्वतोंमें उत्तम बिंध्याचलपर्वतमेंशुम्भ औरनिशुम्भ इन दोदैत्योंकोमारके ५१ अपनाअभिषेककरायेहुयेऔरबरदेनेवाली और भूतोंके समूहोंसे सेवित ऐसेप्रकारकी वहघोर चोटोंकरकेबलि-दानसे पूजित होरही है ५२ और मदिरा और मांसके भरेहुये कुंडों करके शोभित होरहीहै और की पांखोंके विचित्र२ गहनोंसे भूषित होरहाहै ५३ और गर्वित कुक्कुटोंसेनादित और काकों से नादित और बकरोंके समूहयुक्त और आपसमें बिरोध से रहितपक्षियोंकरके युक्त ५४ और सिंह व्याघ्र शूकर इन्हों के शब्दसे नादित और वृक्षों के समूह से पींजराके समान होरहा और दुर्गम मार्गों से चारोंतर्फ युक्त ५५ ऐसे वनमें दिव्यजलकी झारीचमर सोसा इत्यादिसे युक्त और देवताओंके भेरी आदि सैकड़ों बाजोंसेनादित ५६ ऐसेबिंध्या-चल पर्वतपै तिसका स्थानहै और अपने तेजसे तिसको रचाहै और वह रिपुओं को नित्य त्रास देनेवालीहै और तहां मनोरम स्थान में नित्य ५७ देवताओं करके पूजितहुई और परम प्रसन्नहुई बसतीहै और यह जो नंदगोप का पुत्र कृष्णनाम वालाहै ५८ इसमेंनारद-मुनिने मेरेबड़े कार्यका कारण कहाहै कि बसुदेवका पुत्र बासुदेव होवेगा ५९ सो वह तेरा स्वाभाविक मृत्यु होवेगा और बांधव भी होवेगा सोवही बसुदेवका पुत्र वासुदेव बलवाला है ६० और धर्म सेमेरा बांधवहै और हृदासे नाशकरने वाला शत्रुहै और जैसे पैरों से किसीके मस्तकपै काकबैठके ६१ उसके मांसखानेकी इच्छा करके

के उसीके नेत्रोंको चोंचसे फोड़ेहै तैसेही ६२ यहवसुदेव संबंधीबंधु भीहै और हमारोही जड़को काटहै और हमारेही समीप आजीवन करैहै और भ्रूणहत्याभी उतर जातीहै और गौ का वध और स्त्रीका वधभी उतर जाताहै ६३ परंतु कृतघ्नी पुरुषका दोष किसी प्रकार भी नहीं उतरता है और अपने बांधवका तो अपराध विशेष करके नहींउतरता है ६४ और जो कृतघ्न के अनुबंध के वास्ते दारुण प्रीति करैहै वहपतित मार्गको जल्दही प्राप्तहोजाताहै और नरकादि कों के भीदारुण मार्गमें उसको जानाहै ६५ और जो बिनापापवाले मेरेको पापके हृदय से प्राप्तहोताहै वह पुत्र तुझको श्लाघ्य है कि में स्वजन श्लाघ्यहूं ६६ और हे बसुदेव नियमों करके और गुणों की वृत्तिकरके बांधुओंके प्यारकी इच्छा करके तैनेहाथियों के घोर कलह में छोटी २ बेलआदिकों के नाशहोनेकी तरह नाशकरवाया है और वे हाथी युद्धके अंतमें महाबनमें तिनबेलों को भी साथही खालेते हैं ६७ ऐसे बांधुओंके भेदकालमें जोबीचमें प्राप्तहो वहभी स्वजनहो अथवा अन्यजन बधको प्राप्तहोताहै सो हे बसुदेव बिनाश केवास्ते मुझेतूकालप्रतीतहोताहै ६८ और जो तूइसकुलका विरोध करताहै इसवास्ते तू अमर्षी अर्थात् कछु सहनेवाला नहीं है और वैरमें स्वभाव रखनेवाला है और पापकी मतिवालाहै और मूर्ख है ६९ और हे मूढ़ यदुकुलके स्थानमें यह कर्त्तव्य तुझको शोचना चाहिये और हेवसुदेव तूतेरे अगाड़ीमैंने वृथाहीकियाहै ७० और सफेद शिर होनेसे भी वृद्ध नहीं होताहै और सौ वर्षका होनेसे भी वृद्धनहीं होता जिसकीवुद्धि बड़ीहोवे वही मनुष्योंमें बड़ाहै ७१ और तूकठिन स्वभाववालाहै और वुद्धिकरके ज्ञानवान् नहींहै और तूफकत् अवस्था करके बड़ाहै जैसे शरद ऋतुमें मेघतैसे ७२ और हेवृथा वुद्धिवाला वसुदेव तूअच्छा जानताहै कि कंसमरनेके बाद मेरा पुत्र मथुरामें राज्यकरेगा ७३ सो तूबुरी आशावालाहै और वृथा वृद्धहुआहै और तेरा यह विचार मिथ्या है क्योंकि जो मेरे अगाड़ी खड़ाहोताहै वहजीवनेको भी समर्थ नहीं है ७४ और जो

विश्वासवाले मेरे विषे तू प्रहार करानेकी इच्छा करताहै इसवास्ते मैंतेरेपुत्रोंके देखतेहुये तेरानिरादर करूंगा ७५ और मेरेकुछ वृद्धका बधनहींहै और कछुद्विजकाबध और स्त्रीका भी बधनहीं है और मैं तो करेहुयेके अनुसार करताहूं और बांधवों में विशेष करके करता हूं ७६ और तू यहां मेरेपिता करके बढ़ायाहुआ वृद्धहोगया है और मेरीबड़ीबहिनका भर्ताहै और यदुओंका प्रथमगुरु अर्थात्बड़ाहै ७७ और चक्रवर्ती राजाओंकरकेमहान्कुलमेंविख्यातहै औरधर्मकी बुद्धि वाले श्रेष्ठ यदुओं करके गुरुके अर्थपूजितहै ७८ सो श्रेष्ठ पुरुषों में हमारीचर्चाहोवेगी इसवास्ते हमकथाकरेंगे क्योंकि यदुओंमेंजिसका तेरा ऐसावृत्तांतहै ७९ और मेराबध होजावे अथवाजय होजावे परंतु वसुदेवकी खोटीनीतियों करके श्रेष्ठपुरुषोंमें सबयदुओंकी निंदाहोवे गी ८० सोहेवसुदेवतैंनेयुद्धमें मेरेबधका उपायकरवायाहै सोयहअवि श्वास्यकर्म कियाहै और यादववाच्य करदिये अर्थात् तिनको चर्चा करदी ८१ और मेरा और कृष्णका अशाम्यबैर उत्पन्न हुआहै अर्थात् किसीतरह शांतनहीं होगा परंतु हमारे माहसे जब एकमरजावेगा तबये यादव शांतिको प्राप्तहोवेंगे ८२ इसप्रकार वह कंस वसुदेव को कहके फिर अक्रूरके प्रतिकहनेलगा किहे अक्रूर तू जल्द ब्रजमें जाके करके देनेवाले नंदगोप और अन्यगोपोंका मेरी आज्ञासेले आवो ८३ और नंदगोपकोयहकहो कि वरसोंधी करकोलेके सबगो पोंसे युक्तहुआजल्द इसमथुरा नगरीमेंआवे ८४ और कृष्णबलदेव इनदोनों वसुदेवके पुत्रोंको कंस देखनेको इच्छा कररहाहै और कंसके भृत्य और पुरोहितभी देखनेकी इच्छाकरते हैं ८५ और ये दोनोंयुद्धके जाननेवाले और रंगमें युद्धकरने लायक और दृढ़शरीर वाले और विस्तृत उद्यमवाले ऐसेदोनों सुनेहैं ८६ सो हमारे भी युद्धमें अति चतुर दोमल्ल हैं तिन्होंकेसंग उनदोनोंका युद्ध कराया जावेगा ८७ और वे देवताओंके समान और मेरीबहिनकेपुत्र और ब्रजमें बसने वाले और बनोंमें विचरनेवाला ८८ ऐसेदोनों बालक मुझकोनिश्चयदेखनेहैंऔरब्रजवासियोंके समीपमें जाकेयहकहो कि

कंसराजा धर्मयज्ञ करावेगा ८६ और सब ब्रजबासी सुखपूर्वक समीपमेंबसेंगे औरआमंत्रित कियेजनोंके अर्थसबसुख राजादेवेगा६० तिसमें सब ब्रजवासी आनके स्थितहों और दूध घृत दही मट्ठाये भी यथायोग्य पहुंचानी चाहिये ६१ और हे अक्रूर मेरी आज्ञा से तू जल्द गमनकर बलदेव और श्रीकृष्णको लेआ इस आश्चर्यको देखनेके अर्थ ६२ और तिनदोनोंके इसजगह आगमन करनेमें प्रीति उपजे ऐसेकरो और महावीर्यवाले तिनदोनोंको देखके जैसा हित होगा तैसेकरेंगे ६३ और जो मेरेनाम और वाक्यको सुनके दोनों नहीं आवेंगे तोमेरी आज्ञासे पकड़के ल्याने उचितहै ६४ परंतु बालकोंमें प्रथमशांत्वन करनाही नीति है अर्थात् मधुर बचनोंसेही उनदोनोंकोलाओ ६५ और हेअक्रूर जो तैंने बसुदेव का मंत्रनहीं सुनाहै तो इसमेरी परम प्रीतिको कर ६६ अर्थात् जैसे वे आसकें तैसा उपायकर ऐसे बसुदेवने कंसको बहुत झिड़का भी ६७ परंतु समुद्रके समान आत्माको बना क्षमाही करताभया अर्थात् बहुतसी खोटी वाणियोंसे कंसने बसुदेवको विंधाभी ६८ परंतु क्षमाकोधार वसुदेव उत्तरनहीं देताभया और उस सभामें जो अनेक प्रकार से दीप्तमान वसुदेव को देखतेभये ६६ वे सब नीचेको मुखकर हलवें हलवें धिक् धिक् ऐसा शब्द करने लगे और महातेज वाला और दिव्यचक्षु से जाननेवाला १०० ऐसा अक्रूर ब्रजको जानेके अर्थ प्रीतिमान होता भया १०१ जैसे जलको देखके तिसाया तब तिसी मुहूर्त में अक्रूर श्रीकृष्णके अर्थ मथुरासे निकसता भया१०२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांअक्रूरप्रस्थानेऊनाशीतितोऽध्यायः७६॥

अस्सीवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे सब यादव कंससे झिड़के हुये बसुदेवजी कोदेख हाथोंसे कानोंकोढ़कि के आपुसेरहित कंसको मानतेभये १ परंतु उद्विग्नरूप मनसेरहित अंधनाम यादवसभामें धैर्यता करके कंस केअर्थ कहनेलगा २ हेपुत्र तैंनेजो यह वाणीकापरिश्रम कियाहै

सोश्लाघा के योग्यनहींहै सत्पुरुषों के निंदा केयोग्यहै और बांधुओं में ऐसाबचन विशेषकरके बुराहै ३ और जो तैंने प्रथमकहा किमैंयादवनहींहूं तोहेबीर येसबयादव तेरेकोबलसे यादवनहीं बनाते औरहे प्रिय येसबलक्ष्मी श्लाघा के योग्यनहींहैं क्योंकिजिन्होंको तूशिक्षा देनेवालाहै और इक्षाकुके बंशका राजा निवृत्तहुआ ४ और जो तूभोज है वयादवहै वकंसहै अथवा जो न तोनहै जो तेराही यह शिरहैतोजटाकोधारणकरयामुंडमुंडाले ५ औरहमारेकुलमेंपांसनरूपयहउग्रसेन शोचकरनेके योग्यहै जिसनेतूऐसापुत्रउत्पन्नकिया ६ औरहेपुत्रअपने गुणोंको बुद्धिमान्नहीं कहाकरतेहैं क्योंकि दूसरेकोबाणोसे कहेहुये गुण गुणताको प्राप्तहोतेहैं ७ सो इसपृथ्वीमें यह यदुकुल राजाओंकी निंदाकरने केयोग्यहै क्योंकि बालकऔरकुलका नाशकरनेवालाऔर मूढ़ ऐसातू जिन्होंका राजाहै ८ औरअसाधुकहेहुये बचनोंको तू साधु मानता है तैंने अपनीआत्मा बिगाड़लिया ९ और अपराधसेरहित और बड़ोंकामान्य ऐसेगुरुके क्षेपणको शुभकौनमाने अर्थात् कोईभी नहींमानता १० जैसेब्राह्मण के मारनेको औरवृद्ध मनुष्य सबकालमें माननेयोग्य होतेहैं जैसे अग्नि और तिनवृद्धोंका क्रोधअंतर्गत लोकों कोभी दग्धकरदेताहै ११ इसवास्ते बुद्धिमान् और शांत पुरुषको धर्म कीगतिढूंढ़नीचाहिये जैसे मच्छकीगति जलमें १२ और तूतो गर्वकरके अग्निके समान रूपवाले वृद्धोंको मर्म के बिंधनेवाली बाणीकरकेपीड़ितकरेहै जैसे मंत्र केबिनाआहुति १३ और पुत्र के अर्थ इस बसुदेव की निंदातूकरेहै यहतेरामिथ्याबिलापहै तेरेकृपण बचनकोमैंनिंदित करताहूं १४ क्योंकि दारुणरूपपुत्रपैभी पिता दारुणनहीं होता और पुत्रों केअर्थ बहुतसे दुःखोंको पिताप्राप्त होताहै १५ जोइसबसुदेवने अपनाबालक पुत्रलहकोदिया और इसमें जो तू अकर्त्तव्यमानताहै तू अपनेपिता उग्रसेनको पूछ १६ और बसुदेव और यदुबंशी की निंदा करनेवाले तैंनेयादवोंके बैरसेउपजनेवाला बिष संचित करलिया १७ और जो बसुदेवने पुत्र बिषयक अकर्तव्यही किया तो उग्रसेनने तुझे बालहीक्यों न मारदिया १८ सोपुन्नामनरकसे जो पितरोंकी रक्षाकरे

तिसकोपुत्र कहते हैं १६सो जन्मसेही कृष्ण और बलदेव यादव हैं और तिन्होंसे तैंनेवैरकिया २० और वसुदेव के झिड़कनेसे और श्रीकृष्णके कोपसे सबयादवोंके हृदयबिगड़ गयेहैं और बसुदेव की निंदाकरनेसे २१ श्रीकृष्ण के संगतेरा उग्रवैरहोगया और बुरे निमित्तभी तेरेको भयदेते हैं २२ अर्थात् रात्रिके अंतभागमें सर्पोंकातीव्र दर्शन होताहै २३ औरयह क्रूरग्रह आकाशमें किरणोंकरके स्वातीको वेधन करताहै और मंगलग्रह चित्रापै बक्रहोगयाहै २४ और घोरतेजवाले वधकरके पश्चिमसंध्या व्याप्तहुईहै औरकृत्तिकानक्षत्रके मार्गमें शुक्रनेअतिचार कियाहै २५ और केतुनेभरणी आदितेरह नक्षत्र बिंधदिये हैं सो चंद्रमाके संगनहीं चलते २६ औरपरिघसे ग्रस्तहुई प्राक् संध्यासूर्य्य कोपीड़ित करतीहै और श्मशान भूमिसे निकसी हुई शिवा अंगारोंको वरसातीहै २७ और दोनोंसंध्याओंमें बहुतपुकारती हुई पुरीकेसन्मुख नित्यप्रति आवतीहै और बहुतसे शब्दकरके उल्का भी आकाशसे पड़तीहै २८ और पर्वरहित दिनमें भीपृथ्वी और पर्वतोंके शिखरकांपतेहैं और मृग और पक्षीशब्द करतेहुये प्रतिलोम गमनकरतेहैं २९ औरराहुने सूर्य्य ग्रसलिया तिसकरके दिनकीरात होगई और धूमारूप उत्पातोंकरके दिशा व्याप्तहोगईं और सूर्य्यबिंबकरके हतकियेहुये ३० औरबहुतगर्जते हुये औरबिजलियोंको गिरातेहुये ऐसेवद्दललोहूको झिरातेहैं औरअपने अपने स्थानोंसे देवते चलायमान होगये और वृक्षोंको पक्षीत्यागतेहैं ३१ सो जिसको राज्यविनाशके अर्थ ज्योतिषकहतेहैं वेसब अशुभरूप निमित्त देखतेहैं ३२ और अपनेप्यारोंसे वैरकरनेवाला और राजधर्मसेमुखफेरनेवाला और बिना निमित्त क्रोधकरनेवाला ऐसे तेरेकोबहुतजल्द भयहोनेवाला दीखता है ३३ और देवताओंकेसमान उपमावाला और वृद्ध ऐसेबसुदेवकोहे दुर्बुद्धे तूखोटेबचन कहताभयाकैसे तेरे शांतिहोगी ३४ औरजोतेरे बीच में हमारास्नेहथा तिसकोहम त्यागतेहैं औरअहितरूप तेरेकोहमनहींसेवैंगे ३५ और अक्रूरजीको धन्यहै जोकमलके समान नेत्रोंवाले और वनमेंस्थित ऐसे श्रीकृष्णको देखेगा ३६ और यहयदुओंकाबंध

मूलसेरहित तैंनेकियाहैसोश्रीकृष्णा जब अपनीज्ञातिमें प्राप्तहोंगे तब संधानबनेगा ३७ औरइसबुद्धिमान बसुदेवने तेरेपैंक्षमाकरी औरअब जो तेरीइच्छाहो सोतूकह ३८ परंतु हेकंसमेरेको तोअबभीयही रुचैहै कि बसुदेवकी सहायवाला तू होके जहांश्रीकृष्णा बसतेहैं तहां जाके श्रीकृष्णा से प्रीतिकरले ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांअंधकवाक्यंअशीतितमोऽध्यायः८० ॥

इक्यासीवां अध्याय ॥

वैशंपायनजीकहनेलगे ऐसे अंधकके बचनको सुनकेक्रोधसेलालने-त्रोंवाला कंसकुछभीनहींबोलताभयाकिंतु अपनेस्थानमें प्रवेशकरता भया १ तबसबयादवभी कंससे प्रीतिको त्याग अपने अपने स्थानोंमें चलेगये २ और कंसकी आज्ञासे अक्रूरभी कृष्णाके दर्शनकी वांछाके अर्थ मनके समान वेग वाले रथमें स्थित होके जाताभया ३ तब श्रीकृष्णा के भी सुंदर अंग फरकनेलगे तब श्रीकृष्णा नेभी जाना कि आज पिता के समान मनुष्य से समागमहोगा ४ और प्रथम केशी विषयक आख्यान कहाजाताहै कि उग्रसेनके पुत्रकंसने श्रीकृष्णाको मारनेके अर्थ केशी दैत्यके प्रतिदूत भेजदिया ५ सो दूतके बचनको सुनके मनुष्योंको क्लेशके करनेवालाकेशी वृन्दाबनमें जाके गोपोंको पीड़ा देनेलगा ६ अर्थात् मनुष्य के मांसको खानेवाला और दुष्ट पराक्रमवाला और क्रोधसे पूरण और शांतिसे रहित और घोड़ाके शरीरको धारणेवाला ७ ऐसा केशी दैत्य गाय और गोपालों को मारके जहां वह बास करेथा तिसजगह ८ मनुष्यों के हाडों करके श्मशान भूमिके समान करताभया ९ सो खुरोंसे पृथिवीको दारण करे और वेगसे वृक्षोंको गेरदे और हिनसने से वायु की स्पर्द्धा करे और कूदनेसे आकाशको लंघजावे १० सो अतिबढ़ाहुवा और मत्त और बनमें विचरनेवाला और कंठके बालोंको कंपानेवाला और कंसकामंत्री ११ और तिसपापी सेवह बन बुरा बिख्यात होगया और जहांनित्य प्रति गोपोंको मारनेकी इच्छावाला १२ ऐसेतिस

केशी दैत्यने वहबनदूषित करदिया अर्थात् तिसबन में मनुष्यऔर गायआदिकायें भी नहींजासकें१३ और तिसने मार्गरोकदिया और मनुष्यों के मांसको खानेलगा १४ सो कदाचित् काल धर्म्म से प्रेरित वह दैत्य दिननिकसतेही गोपोंके बासमें जाताभया १५ तब तिसको देखके गोप गोपियां बालकये सब भागनेलगे और पुकारते हुये जगतके पति श्रीकृष्णको प्राप्तहुये१६ तब तिन गोप गोपियों आदिके रोवनेको सुनके तिन्होंके अर्थअभयदे श्रीकृष्णकेशी दैत्यके सन्मुख भाजताभया १७ और ऊपरको उठी ग्रीवा वाला और प्रकाशमानदान्त और नेत्रोंवाला और हिनस्ता हुआ और अति वेग वाला ऐसा केशीभी श्रीकृष्ण के सन्मुख भागा १८ तब घोड़ाके रूपवाले केशी को आवेते हुये को देख श्रीकृष्ण बहुत जल्द प्राप्तहुये जैसे चंद्रमा को बद्दल १९ तबकेशी के समीप में प्राप्तहुये श्री कृष्णको देख मनुष्य बुद्धीवाले सबगोप हितकी इच्छाकरके श्री कृष्णकोऊंचे प्रकारसे कहनेलगे२० हे कृष्ण हेप्रियतूवेगसे इसदैत्य के समीप में मतजा क्योंकि तू बालक है और यहपापी २१ और कंसका बाहर बिचरने वाला प्राण और उत्तम घोड़ों के रूप को धारण करने वाला दैत्य और युद्धमें अतिउग्र २२ और पराई सेना को दुखित करनेवाला और घोड़ोंमें महाबलवाला और सबप्राणियोंसे अवध्य और पापकर्म करने वालोंमें प्रथम ऐसाकेशी है २३ तबगोपोंके वचन को सुन श्रीकृष्ण केशीके संग युद्धकरनेकी इच्छा करतेभये २४तबबायें और दाहनेमेंड़को भ्रमताहुआ केशीक्रोधकर के दोनोंपैरों से वृक्षोंको तोड़ने लगा २५ और मुखग्रीवा कंधवालों से आवृत हुयेअंग इनसबोंके द्वाराकेशीके क्रोधसे उपजा पानीबहने लगा २६ और झागोंसेयुक्त और रजसेआवृत ऐसापानी मुखसेवहने लगा जसे शीतल समय में आकाशमें चंद्रमा ओसके जलको छोड़े तैसे२७ और वहदैत्य हिनसताहुआ डकारकी बूंदोंसे और मुखसे निकसेझागोंसेकमलसरीखेकांतिवाले श्रीकृष्णको भिगोनेलगा २८ औरवहकेशी दैत्य अपने खुरोंसे उछालीहुई कछुक सफेदवर्णवाली

धूलसे मस्तक के बालों को २६ भरताभया और कूदताहुआ और अपने खुरोंसे पृथ्वीको खोदता हुआ और अपने दांतों को चाबता हुआ ऐसावहकेशी दैत्यश्रीकृष्णके प्रतिदौड़ने लगा ३० और फिर वहदैत्य कृष्णको प्राप्तहोके पिछले पैरोंसे छातीमें मारताभया ३१ और वहबली दैत्य बारंबार चारोंतरफ़ खुरोंको मारनेलगा और अतुल पराक्रमवाले श्रीकृष्णके प्रतिवहदैत्य ऐसेप्रहार करनेलगा ३२ कि अपनेघोर मुखकी पैनी २ दाढ़ोंसे श्रीकृष्णकी बाहुओंपै बुड़का भरताभया और क्रोधमें आताभया ३३ और लंबेकेशोंवाला वह केशी दैत्य कृष्णकेसंग ऐसा प्रकाशित होताभया जैसे मेघसे संयुक्त सूर्य सहित आकाश तैसे ३४ और वहदैत्य श्रीकृष्णकी छातीको अपनी छातीसे मारनेकी इच्छाकरके और क्रोधसेश्रीकृष्णसेभी दूनाबल बढ़ाये हुये ३५ वेगसे श्रीकृष्णके प्रतिभाजताभया फिर तिस आते हुये कोअतुल पराक्रमवाले श्रीकृष्णदेख क्रोधमेंआ अपने हाथको उठाके तिसकेमुखमेंदेदिया ३६ पश्चात् असमर्थहुआ वह दैत्यतिसके हाथको खानहींसका और छेदनभी नहींकरसका और श्रीकृष्णके हाथसे टूटे हुयेदांतों वाला वह दैत्यझागों समेत रुधिरका वमन करनेलगा ३७ औरजब श्रीकृष्णने उसके ओष्ठ फाड़दिये और कपोल फाड़दिये तब विकृत चक्रके आकार तिसके नेत्र होगयेशरीरकेबंधन मुक्तहोगये ३८ और ठोड़ीफटगई और रुधिरसे नेत्रभरगये तब वह नष्ट चित्तवाला दैत्य कानोंको उपरको उठाके बारम्बार चेष्टा करनेलगा ३९ और बारम्बार पैरोंको पटकनेलगा और लीद और मूत्र करनेलगा और पश्चात् पसीनेआके गीले रोमहोगये और खेदको प्राप्तहुआ निर्यत्न चरण अर्थात् पैरोंको कछुहिलाता न रहा ४० और केशीदैत्यकेमुखमें श्रीकृष्णकाहाथ ऐसे शोभित होताभयाकि जैसेवर्षाकेसमयमें चन्द्रमा की आधी२ किरणोंसे फटेहुये बद्दलकी शोभाहोवे ४१ औरहाराहुआ शरीरवाला केशीदैत्य कृष्णसे मिलाहुआ ऐसे शोभित होनेलगा कि जैसे प्रभात समयमें हाराहुआ चन्द्रमा सुमेरु पर्वतपै स्थित होरहा हो तैसे ४२ और श्रीकृष्णके हाथसे उखाड़े हुये तिस केशी दैत्यके

दांत मुखसे पृथ्वीमें गिरतेहुये ऐसे मालूमहोतेभये जैसे शरदऋतुमें जलसेरहित सफ़ेद२बद्दलफिरतेहों तैसे४३और इस प्रकारहाराहुआ वह केशीदैत्य श्रीकृष्णको जोरसे अपनी भुजाओं से फाड़दिया फिर युद्धमें कृष्णके हाथसे फटाहुआ ४४ बिकृतमुखवाला वहदैत्य महा शब्दकरने लगा और दुःखित होताभया ४५ और नेत्रों से घूरता हुआ ढीले अंगोंवाला वहदैत्य मुखसे रुधिर गेरने लगा और बहुत साफटा हुआ तिस दैत्यका अंग आधाखंडित हुआ पर्वतकी तरह दीखता भया ४६ और कृष्णकी भुजासे फटाहुआ मुखवाला वहमहा भयंकर दैत्य पृथ्वीमें पड़ता भयाजैसेकटाहुआहस्तीगिरपड़ेतैसे४७ औरकृष्णके भुजासेकटाहुआकेशी दैत्यका शरीर ऐसे शोभितहोता भयाकि जैसेशिवजीसे हताहुआपशुका घोरशरीरतैसे४८औरदोपैर आधीपूंछ आधीपीठ और एककान और एकनेत्र आधीनासिकाऐसे तिसकेशीदैत्य के आधे २ अंगपृथ्वी में दोजगह गिरे हुये शोभित दीखतेभये ४९ और केशीदैत्यके दांतोंकाकछु कटाहुआ श्रीकृष्णके हाथमें ऐसी शोभाहोतीभयी कि जैसे बनमें बढ़ाहुआ ताड़का हाथियोंके दांतोसे चिन्हितहोवे तैसे ५० और इसप्रकार श्रीकृष्णतिस केशी दैत्यको मारके और युद्धमें अनेक प्रकारके भागोंको कल्पित करके फिर हंसतेहुये तहां स्थित होतेभये५१औरपश्चात् वेगोप और गोपियां मराहुआ तिस केशीदैत्यको देखसब प्रसन्न होगये और तिन्होंके विघ्न और दुःखदूर होगये५२फिर शोभावाले श्रीकृष्णको वेसबगोप यथा स्थान और यथा अवस्था करके सराहनेलगे और प्रियवचनोंसेबारंबार पूजित करतेभये ५३ अबगोपकहतेहैं अहोपुत्र यहकर्म तुझने बहुतअच्छाकिया जोकि यहलोगों का कंटकरूप और पृथ्वीमें विचरनेवाला और घोड़ाकेरूपको धारणकियेहुये ऐसा यह दैत्यमार दिया५४और यहवृन्दावन क्षेमवालाकरदिया और मनुष्य, मृग,पक्षी,इन्होंकरके सेवनेलायक करदियाहै५५औरइसकेशीदैत्यने हमारे बहुत गोप मारदिये और बच्छों को प्यार करने वाली बहुत गौवेंमारदीं और इस दुरात्मा ने अनेकदेश मारदिये ५६ और यह

पापीदैत्य प्रलयकरनेकी तरह उद्योगकर रहाथा और मनुष्य लोक को शून्यकरके सुखसेबिचरनेकी इच्छाकरैथा ५७ सो इसकेसन्मुख कोई देवताओंके समूहमेंसे भी स्थितहुआ जीवने की इच्छा नहीं करताहै फिर मनुष्योंका तो क्या कहनाहै ५८ बैशंपायनजी कहने लगे कि तिसी समयमें आकाश मार्गमें चलतेहुये नारदमुनि प्रकट होके यह कहनेलगे कि हे विष्णु हे कृष्ण हे देव५९तुमने जो केशी दैत्य मारने का यह कर्मकिया इसको तुम्हीं करने लायक थे और इसके मारने लायक कोई स्वर्ग में भी नहीं था और शिवजी भी नहीं ६० और हे भगवन् मैं युद्धदेखनेकी इच्छाकरके तेरेविषे मन कियेहुए इस नर हय युद्धकेदेखनेको स्वर्गलोकसे यहां आयाहूं६१ और हे भगवन् पूतनाआदिकोंकी मृत्युकेकर्म तेरेसेदेखे परंतु मैंतो इस तेरेकर्मकरके प्रसन्न होगया ६२ क्योंकि इस हय दैत्यसेबल वान् इन्द्र भी डरता है और दुष्ट चित्तवाला केशीदैत्य का बढ़ाया हुआ ६४ घोरशरीर जो तुमने अपनीभुजासे फाड़दिया इस वास्ते यह तुम्हारी भुजा ब्रह्माने इसके नाशके वास्ते रचीथी ६५ और तुमने जो केशीदैत्य मारदियाहै इसवास्ते तुम मेरी शिक्षासुनो तुम केशवनामसे संसार में प्रसिद्धहोवोगे ६६ और हे भगवन् तुम्हारा कल्याणहो जल्द चलनेवाला मैं जाताहूं और बाकीका कृत्यरहा है उसको भी तुम जल्दकरो देर मतकरो ६७ क्योंकि तुम्हारे कार्य्य के अंतर्गतहुये देवते पृथ्वीमें मनुष्योंकी तरह विडंब करतेहुये और तेरे बलके आश्रयहोके अपनी क्रीड़ा कररहेहैं ६८ और हे भगवन् भारतबंशके युद्धरूपी समुद्रका समय समीप वर्त्त रहाहै और स्वर्ग जानेवाले राजाओंके युद्ध हाथमेंआरहेहैं ६९ और आकाशकेमार्ग शोधेहुयेहैं और रोहिणी मार्गकरके जानेवाले विमान शोधेहुये हैं और इन्द्रलोकमें जानेके वास्ते राजाओं के मार्गों के विभाग होरहे हैं ७० सो हे भगवन् उग्रसेनकापुत्र कंस जब शांतहोजावेगा और तुम पदवीपै प्राप्तहोजावोगे तब चारोंतरफ से राजाओं का महान् युद्धहोवेगा ७१ तब सबसे अधिक कर्मकरनेवाले तेरे आश्रय पांडव

होवेंगे और राजाओंके भेद कालमें आपस में पक्ष बंधजावेगी ७२ और हे भगवन् जब तुम राजासनके ऊपर स्थितहुये उत्तमराजको शोभाको प्राप्त होवोगे तब तुम्हारे प्रभावसे अन्यराजे अपनीशोभा को त्यागदेंगे इसमें संदेह नहीं ७३ सो हे कृष्ण यह मेरा संदेश स्वर्ग में स्थित देवताओं की श्रुतियों करके जगत् में प्रसिद्ध होजावेगा ७४ और हे कृष्ण मैंने तुम्हारा यह कर्म देखलिया और तुमकोभी देखलिया और कंसके मारने समय मैं फिर आऊंगा ७५ इसप्रकार वह नारदमुनि कहके आकाश में चलागया फिर नारद मुनिके वचनको श्रीकृष्ण सुनके देवताओंको यांनिवाले ७६ गोपों के संग इकट्ठ हुये ब्रजमें आवते भये ७७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांकेशीवधेएकाशीतोऽध्यायः ८१ ॥

बयासीवांअध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं पीछे जब सूर्य अस्तहोगया और संध्यासे आकाश रक्तहोगया और श्वेतमंडलवाला चंद्रमा होगया १ जबएक समय अपने २ घूंसलोंमें पक्षीबैठेहुये और श्रेष्ठपुरुषोंने अग्निप्रकट कररक्खी और सबदिशाओंमें कछुक अंधेराहोरहा २ औरब्रजबासी सोनेकी तैयारीकररहे और गीदड़बोलरहे और रात्रीमें विचरनेवाले और मांसकी इच्छाकरनेवाले३ऐसे जीव प्रसन्नहोरहे और तस्कर समीप लगरहे ऐसा प्रदोषसमय होरहा और गृहस्थी पुरुषो के ४ पाककरने कावक्त होरहा और वनमें रहने वाले मनुष्य अग्निको प्रज्वलितकररहेऔरइकट्ठीहुईगौओंकोब्रजवासीदोहरहे५औरजिनके वच्छेबंध रहे वेगौवारंवार रांभरहीं और अपने २ खूंटोंपै बंधीहुई गौवच्छोंको वुलारहीं ६ और गौओंको बांधतेहुये गोप रौलाकररहे और चारोंतरफ गोबरकी किरस जलारक्खी ७ और काठके भारके लानेसे नयेहुये कंधेवाले गोप अपने २ घरों में आरहे और कछुक चंद्रचढ़रहा और मंद २ किरनों से प्रकाशित होरहा ८ और कछु रात्री प्राप्तहोरही और दिनव्यतीत होगयाऔरदिनकेव्यतीत होनेमें

रात्रीकामुख प्राप्तहोरहा और सूर्यका तेजचलागया और चंद्रमाका तेज प्रवृत्त होरहा ६ सौम्यचंद्रमा प्रवृत्तहोनेसे अग्निहोत्रका समय प्रवृत्त होरहा १० और अग्निसोमात्मक संधिकाल प्रवृत्तहोरहा और पश्चिमकी तरह अग्निदीप्तहो रही और पूर्णकांति होरही ११ और आधादग्धहुआकी तरह आकाशहोरहा और अपनी २ अवस्था वाले बंधुओं करके ब्रजवासी युक्तहोरहे १२ ऐसेसमयमें श्रेष्ठ रथमें बैठाहुआ अक्रूर तिसब्रजमें प्राप्तहोता भया १२ और ब्रजमें प्रवेश होतेही वह अक्रूर श्रीकृष्ण और बलदेव और नंदगोप इन्हों की सान्निध्य अर्थात् इन्होंके रहनेकी जगह बारंबार पूछता भया १४ पश्चात् रथके मांझसे नीचे उतरके वह महाबलवाला अक्रूर हर्षसे नेत्रोंमें जललाता भया १५ और फिरदरवाजेमें प्रवेश होनेके समय गौओंको दोहनेकी जगह श्रीकृष्णको देखताभया और वेश्रीकृष्णतहां ऐसेस्थित होरहे कि जैसे गौकेनीचे बच्छा खड़ाहो तैसे१६ फिर तिस कृष्णकेप्रतिहर्षसेयुक्तगदगदवाणीकरकेवहधर्मकोजाननेवालाअक्रूर ऐसे कहने लगा कि हेपुत्र हेकेशव तूआ इसप्रकार कहा १७ और श्रीकृष्णको सीधेसोतेहुयेको देख और अच्छीशोभासेयुक्त देख और तिसके अव्यक्त यौवन देख वह अक्रूर श्री कृष्णकी प्रसंशा करने लगा १८ और यह कहनेलगा कि कमल सरीखे नेत्रोंवाला और सिंहशार्दूल इन्होंके समान पराक्रमवाला और जलसे भरामेघके समान कांतिवाला और पर्वतके समान सुंदर आकृतिवाला १६ और युद्धमें किसीसे नहीं सहीजा ऐसीश्रीवत्सचिन्हवाली छातीवाला और वैरीकी मृत्युकरनेमें चतुर ऐसी भुजाओंसे विभूषित २० और मूर्तिमान् और रहस्यात्मा और जगत्में श्रेष्ठभाजनरूप ऐसायह विष्णुभगवान् गोप वेषको धारण कियेहुये विचर रहा है २१ और मुकुटकामिष करके शिरपे छत्रको धारण कियेहै और उत्तम कुंडलों से युक्तकानोंसे विशेष करके शोभित होरहाहै २२ और सुंदरहारसे और पीलेवस्त्रोंसे और बड़ीछातीसे शोभितहोरहाहै और बड़ी २ दोनोंभुजाओंसे अतिशोभित है २३ और हजारोंस्त्रियों करके रमण

करताहुआ और कामदेवरूपी शरीरको धारण कियेहुये और पीले वस्त्रोंको पहिनेहुये ऐसायह सनातन विष्णुहै २४ और पृथ्वीकेआश्रय भूतहुये चरणोंकरके वैरियोंकोदमन करताहै और त्रिलोकी कांति से युक्त इनपैरों करके पृथ्वीमें व्यवस्थित होरहाहै २५ और इसका अतिसुंदर हाथचक्र धारण करनेलायक दीखता है और दूसराहाथ उद्यतहुआ गदाधारण करनेकी इच्छाकरता है २६ और देवताओंके भारको धारणकरनेवाला यहकृष्ण इसपृथ्वीलोकमें उतराहुआअच्छे प्रकार शोभित होता है २७ और भविष्य अर्थात् होनहार बस्तुके जानने में चतुर मनुष्योंको यहभविष्य दीखताहै कि यहगोपालकृष्णक्षोण यादव वंशका विस्तार करेगा२८औरसैकड़ों हजारोंयादव इसके तेज करके वंशको पूरण करेंगे जैसे जलोंके समूह समुद्र को पूरण करें तैसे २९ और इसीशिक्षामें सबजगत् स्थित होवेगा जैसे सतयुग में स्थितहुआतैसे ३० और यहश्रीकृष्ण पृथ्वीमें प्राप्तहुआ जगत् को वशमें करके राजाओंके ऊपर होजावेगा और आपराजा नहींहोवेगा ३१ और निश्चय हैकि जैसेपहलेइसको तीनपैंड़ोंसे सब लोकजीत के स्वर्गमें देवताओं का राजाइन्द्र करदियाथा तैसे ३२ पहले जीतीहुई इसपृथ्वी को जीतके उग्र सेनको राज्यपै स्थितकरेगा इसमें सन्देह नहीं और यह वैरों को बुझाने वालाहै ऐसे बहुत से प्रश्नोंकरके हमने सुनाहै और ब्रह्मबादी ब्राह्मणों करके पुराण ऐसागाया जाताहै ३३ इसप्रकार यह श्रीकृष्ण संसार को इच्छा करने लायक होगा और इसकी बुद्धिमनुष्यों के उपकार के वास्ते उपजी हुईहै ३४ सोमैंतो अबसे लेके वासुकी जगह को यथाविधि से पूजूंगा और मंत्रोंका जानने वाला मैं अपने मनसे विष्णु भाव करके पूजूंगा ३५ और जो मनुष्योंमें प्रकट होनेसे इसकी जातीका परिज्ञान नहीं जानताऔर मैंतोइसकोअमानुष्य अर्थात्देवमानताहूं और अन्यभीदिव्य चक्षुवाले पुरुष इसको इसीतरह जानते हैं ३६ और इसवास्ते विदितात्मा इस कृष्णके संगरात्रीमें सलाह करके इसकेसंग और अन्यगोपों के संगगमन करूंगा ३७ इसप्रकार वह

अक्रूर श्रीकृष्ण को बहुत विधिसे हेतुके कारणों से देखफिर तिसी कृष्णके संगनंदगोप के घरमें प्रवेश होताभया ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांअक्रूरागमनेद्व्यशीतोऽध्यायः ८२ ॥

तिरासीवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं—ऐसे वह अक्रूर कृष्णकेसंग नंदके घरमें प्रवेशहोके फिरवृद्ध गोपोंको इकट्ठे कर कहनेलगा १ और प्रसन्नहोके कृष्णको और बलदेव को कहनेलगा किहेपुत्र कल्ह हम मथुरापुरी को सुखकेवास्ते चलैंगे २ और ब्रजके गोपभी चलैंगे और सबकुल की भेटकोलेके चलैंगे क्योंकि तहांकंसको बर्ष प्रतिदेने की करको देवेंगे ३ सोहमतीनों रथमें बैठके चलैंगे और तहांमथुरा पुरीमेंकंस का महान् धनुरुत्सव होवेगा ४ सोतहांजा के दुःखका भाजनतिस अपनेवसुदेव पिताको देखोगे और अपनेस्वजनों के संगमिलोगे ५ और दीन और पुत्रोंकेवधसेश्रांत और अशुभ बुद्धिवालेकंससेनिरंतर पीड़ित ऐसेअपनेपितासे तुममिलोगे ६ और दशाके अंतमें सुखाया हुआवृद्ध और दुःखोंसे शिथिलताकोप्राप्तहुआ और तुम्हारेबिनाकंस केभयसे दुःखितहुआ ७ और भीतरलेमनसे उत्कंठा करकेरातिदिन जलताहै ऐसेअपने पिताको तुमदेखोगे ८ और हेगोबिंद पुत्रोंकरके बिनाछूही हुईचूंचियोंवाली ९ और देवताओंके समान कांतिवाली और शोचकरतीहुई और विहितकांतिवालीऔर पुत्रकेशोकसेसूखती हुई और तेरेदर्शनमें तत्परहुई १० और बियोगके दुःखसे तपतीहुई औरवच्छाके विनागौकीतरहहुई औरनेत्रोंसे दुःखितमालूम होतीहुई और दीन और मलिनवस्त्रोंवाली ११ और राहुसेग्रसा हुआ चंद्रमा की तरहकांतिवाली और तेरेदर्शनमें तत्पर और नित्य तेरे आगमन की इच्छाकरनेवाली १२ और तेरेसेप्रवृत्तहुये शोककरके दुःखपाती हुई और तपस्वनी और तेरे बालक पनके प्रलापोंमें अकुशल, और बालक अवस्था में तैंनेवियोगकी हुई १३ और हे कृष्ण चंद्रमाकी कांतिके समान तेरेरूपको नहींजाननेवाली ऐसीतिस अपनी माता

देबकीकोंतुमदोनों देखोगे१४सो हे पुत्र यदि वह देवकी तेरेकोजन
के दुःखपावेहै तो संतानसे उसकाक्यासुख हुआ १५ इस्सेतोनहीं
संतानहोनेहीमें सुखहोताऔर नारियोंके यही एकशोकहै किपुत्रनहीं
होने फिर पुत्रवाली होकेवह नारी दुःखपावेतो उस पुत्रको धिक्कार
है१६औरतूतो इन्द्रकेसमान और गुणोंकरकेसबसे भिन्नऐसाउसके
पुत्रहुआहै१७सोअन्योंकोभी सुखदेनेवालाहै इसवास्ते उसकोशोच
नहींहोना चाहिये और तेरेमातापिता अबवृद्धहुये पराये भृत्यहोरहे
हैं १८ और खोटेदर्शन वालेकंससे तेरी कृतोंके वास्ते नित्यझिड़के
जाते हैं और तुझको देवकी मान्यहै क्योंकि पृथ्वी की तरह उसने
तेराआत्मा धारणकियाहै १९ इसवास्ते उसको शोकरूपी समुद्रसे
तुमउतारनेको योग्यहो और प्यारे पुत्रोंवाले और दुःखवालेऐसेवृद्ध
वसुदेवको२०तुमपुत्रयोगकरकेमिलकेधर्मकोप्राप्तहोगेऔरजैसेखोटे
वृत्तांत वाला नाग यमुनाके ह्रदमें दमनकिया२१और पर्वतउखाड़
के धारण करलिया और अभिमान करनेवाला और बलवान्ऐसा
अरिष्टनामक दैत्य मारदिया २२ और परपुरुषोंके प्राणोंकोमारने
वाला और दुष्टात्मा ऐसा केशी दैत्य इसी तरह वे वृद्ध तेरे माता
पिता दुःखितहैं उन्होंका भी उद्धारकर २३ और हे कृष्ण जिस
तरह तू धर्मको प्राप्तहो वही प्रकारकर और हे कृष्ण जिनपुरुषों
ने तेरा पिता कंसकी सभामें तिरस्कारको प्राप्तहुआ देखाहै २४
वे सब दुःखीहो नेत्रोंमें अश्रु भर लेआतेहैं और वह तेरी मातादिक
गर्भमारनेआदिकंसकेवशमेंहुई अनेक दुःखोंकोवहसहतीहै२५ और
सबोंको माता पितासे उपजा शरीर करके २६ माता पिताकाऋण
उतारना चाहिये सो हे कृष्ण इसप्रकार तेरे करनेसेमातापिता का
अनुग्रह होजावेगा २७ और वे दोनों शोकको त्याग देवेंगे और
तुझे अतुल धर्म प्राप्तहोगा २८ वैशम्पायन जी कहनेलगे—इस
प्रकार तेजवाला श्रीकृष्ण सब प्रयोजनको जानके तिस अक्रूर के
प्रति बोला कि यही तुम्हारा कहना ठीकहै ऐसे बोला और कछु
क्रोध नहीं करताभया २९ और नंदगोपसे आदिले वे सबगोपआ

के अक्रूरके वचन सुन उसके कहनेसे चलनेकी तैयारी करतेभये ३० और ब्रजबासी गमन के वास्ते सावधान होते भये और सब वृद्ध गोप मंटलके स्थित होतेभये ३१ और तिस कंसकी करकेवास्ते वे गोप श्रेष्ठ बैललेते भये और घृतलेते भये और बोझाकोलेके चलने वाले भैंसोंको लेतेभये ३२ और गोपोंके जुदे २ समूह सब जगह दूध और घृतलेतेभये ३३ औरजिस दिन अक्रूर आयाथा वह रात्री अक्रूरकी वार्त्ता सुनतेहुये और बलदेव और कृष्णकेजागतेहुये व्यतीत होगई ३४ और जब प्रभातकालहुआ और पक्षी बोलने लगे और चन्द्रमाकी किरन मन्दहोगई और रात्री व्यतीत होचुकी ३५ और आकाशमें लाल सूर्यकीकिरण फूटनेलगीं और तारागणअस्त होगये और प्रातःकालकी बायुके चलनेसे पृथ्वी गीली होगई ३६ क्षीणहुयेके समान तारागण होगये और रात्रीकारूप अन्तर्द्धानहो गया और सूर्य उदयभया ३७ और चन्द्रमा की किरण शांतहोगई और प्रभासे रहितहोगया और एकतो अर्थात् चन्द्रमा तो अपने शरीरका नाश करनेलगा और एक अर्थात् सूर्य अपने शरीरको बढ़ानेलगा ३८ और गौओंकरके युक्त ब्रजकी भूमिविषे पूर्णदही की मटुकियोंका विलोनेका शब्द होनेलगा३९ और रस्सियोंकरकेबंधे जवान बच्छोंविषे और गोपोंकरकेपूर्ण ब्रजकी सब गलियोंसे शब्द होनेलगे ४० ऐसे तिसकालमें गाड़ोंकेविषे बहुतसे बर्त्तनोंको आरोपित करके और रथोंमें बैठके वेगोप गमन करतेभये ४१ और कृष्ण बलदेव अक्रूर ये तीनों एक रथमें बैठके गमनकरतेभये जैसे त्रिलोकीके पतिहों तैसे ४२ और फिर इससेअनन्तरअक्रूर यमुना के तीरपै प्राप्तहोके कृष्णकेप्रति बोला कि हे पुत्र यहां रथकोथांभ दे और घोड़ोंविषे यत्न रखना ४३ और घोड़ोंको इतनेतृणचराना और दृढ़ यत्नको प्राप्तहुये यहां क्षणभरठहरो ४४ औरमेरेकोदेखते रहना मैं यहां यमुनाकेह्रदमें शेषनागको दिव्यभागवत मंत्रों करके स्तुति करूंगा क्योंकि वह शेषनाग सर्वलोकोंका ईश्वरहै ४५ और गुप्त ऐश्वर्यवाला देवहै और सब लोकोंका उपजाने वालाहै और

शोभावाले और कल्याण दायक मस्तकोंवालाहै ऐसे शेषनाग को मैं प्रणामकरूंगा ४६ और हजार शिरोंवाला और अनन्तदेव और नीले वस्त्रोंवाला ऐसे तिस धर्मदेवका मैं दर्शन करूंगा ४७ और स्वस्तिकरूपी तिसके स्थानको देखके ४८ और दो जिह्वासे शोभा विभूषित देखके तहां सर्पों के समाजको देख के शांति होवेगी ४६ और तुमदोनों रथमें बैठेहुये मुझेदेखते हुये बैठेरहो ५० इतनेमेंइस शेषनागके उत्तमहृदसे आऊं ऐसे सुनके प्रसन्नहोके श्रीकृष्ण बोला हे धर्मिष्ठ जल्दजा देरमतकर ५१ और हम दोनों तेरेबिना जानेको समर्थ नहींहैं ऐसे आज्ञा लेके वह अक्रूर यमुनाके हृदमें गोता लगाताभया५२फिर पाताललोकमें जाके नागलोकको इसीलोक की तरह देखताभया और तहां मध्यमें हजारमुखोंवाला और सुवर्णकी ऊंची ध्वजावाला५३और हलसेयुक्त हाथोंवाला और मूसलकेसमान उदरवाला और नीलेवस्त्रों वाला और पांडुर वर्णवाला और पांडुर आसनवाला ५४ और कुंडली धारणकिये हुये और मदवाला और सोता हुआ और कमल सरीखे नेत्रोंवाला और अपने सफेद शरीर से शोभित ५५और अच्छीतरह बैठाहुआ और पृथ्वी को धारणकरनेवालाऔर सुवर्णके मुकुटको धारणकियेहुये५६ और चांदीसरीखे कमलोंकी मालाकरके ढकीहुई छातीवाला और लालचंदन से लिप्त अंगवाला और बड़ीबाहुओंवाला और बैरीको मारनेवाला ५७ और सफेद बादलसरीखे वर्णवाला और अपने तेजसेयुक्त और एकार्णव का ईश्वरऐसे सर्पोंके राजाशेष नागको देखताभया ५८ और बासुकी आदिसर्पोंसे पूजितहोरहा और कवल और अश्वतर नामवाले सर्पदोनों तरफ चवर कररहे ५६ और देवरूप वह शेषनाग धर्मासनपेबैठा हुआ और तिसशेषनागके समीपबैठा हुआ बासुकीसर्प शोभितहोरहा ६० और अन्य कर्कोटक आदिसर्पों से युक्त होरहा ऐसेतिस शेषनागराजाको दिव्य कांचनके कलशोंसे ६१और तिस एकार्णव जलसे वे अन्यसर्प स्नानकरा रहे और तिसशेषनाग की गोदमें बैठाहुआ श्रीकृष्ण को वहअक्रूर देखताभया ६२ और श्री

वत्स चिह्नोंसे आच्छादित छातीवाला और पीले बस्त्रों को धारण करनेवाला और विष्णुरूपदेव ऐसा श्रीकृष्णदेखा ६३ और चंद्रमा के समान कांतिवाला और दिव्य ऐसा बलदेव को आसन के बिना बैठाहुआ देखताभया६४फिर तिसआश्चर्यको देख वह अक्रूर कृष्ण के प्रति तहां बोलनेकी इच्छा करताभया ६५ तब श्रीकृष्ण ने अपने तेजसे तिसकी बाणीबंध करदी ऐसेतहां श्रीकृष्णको देख फिर वहअक्रूर जलसे बाहर निकला और बिस्मित होगया और तिन दोनोंको फिर वही रथमें बैठेहुयोंको देखनेलगा ६६ पश्चात् आपस में देखतेहुये और अद्भुतरूपबाले ऐसेश्रीकृष्ण और बलदेवको देख फिरयमुनामें गोतालगाया ६७ फिरभीवहां अक्रूर आश्चर्यसेतिसी शेषनागकी गोदमें बैठाहुआ और नीलेबस्त्रोंको धारणकियेहुये६८ और गौर वर्णवाला और पूजितहुआ ऐसा बलदेव को देखताभया और पूजित हुआ श्रीकृष्णकोभी देखताभया और ऐसे देख फिर वह अक्रूर तिसीके मंत्रको जपता हुआ ६९ जलसे बाहर निकला और तिसी मार्ग करके रथके समीप आताभया पश्चात् आयेहुये तिस अक्रूरको कृष्ण कहनेलगा ७० कि तुम इसउत्तम भागवत ह्रदमें नागलोकका कैसा वृत्तांत देखा क्योंकि तुमने गोतेमारने में बहुत देरकी ७१ और तेरा ह्रदा चंचल दीखताहै सोमुझे यह मालूम होताहै कि आपने कोई आश्चर्य देखाहो ७२ ऐसे सुनके अक्रूरयह प्रतिवचन बोला कि हे कृष्ण तुम्हारे बिनास्थावर और चरलो कों में क्या आश्चर्य है सो हे कृष्ण तहां मैंने ऐसा आश्चर्य देखा कि जो पृथ्वीमें दुर्लभहै७३ और हे कृष्ण जैसा मैंनेवहां देखासोयहांभी है और लोकों को आश्चर्य देनेवाला तुम्हारे शरीर से मैं अब युक्त हूं७४ सो हे कृष्ण इसतेरे शरीरसे उपरांत मैं कछु आश्चर्य देखने की इच्छा नहीं करताहूं इस वास्ते तुमआवो जल्द कंसकी पुरीको चलें और सूर्यके अस्तहोनेके पहले हमको जानाचाहिये ७५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतबिष्णुपर्वभाषायांअक्रूरस्यनागलोक दर्शनेत्र्यशीतोऽध्यायः ८३॥

चौरासीवां अध्याय॥

वैशंपायनजी कहने लगे— पश्चात् वह अक्रूर युक्तहुयेसे रथ में बैठ श्रीकृष्ण और बलदेव के समेत १ कंससे पालीहुई रमणीक मथुरा पुरीमें जिसवक्त लालसूर्य होगया ऐसीसंध्या समयमें वे तीनों प्रवेश होतेभये २ पश्चात् बुद्धिमान् और सूर्यके समान तेजवाले अक्रूरने वेदोनों को अपने भवनमें प्रवेश करादिया ३ और श्रेष्ठवर्ण वाले तिनदोनों के प्रति अक्रूर भयभीत हुआ यह बोला कि हे पुत्र तुमको वसुदेवके घरजानेकी इच्छा त्यागदेनी चाहिये ४ क्योंकि तुम्हारीही कृतिके वास्ते वहवृद्ध वसुदेव कंस करके नित्य निरादर कराजाता है और दिनराति झड़का जाता है और यहभी कहता है कि यहां तुझे नहीं ठहरना चाहिये ५ सो इसवास्ते तुमको अपने पिताके वास्ते सुखकरना चाहिये और जिस प्रकार यहतेरा पिता सुखपावे सो तुमको करना चाहिये ६ ऐसे सुनके फिर तिसके प्रति श्रीकृष्ण बोला कि हेअक्रूर हमदोनों अतर्कित हुये मथुरा पुरीको देखतेहुये और राजमार्गको देखतेहुये ७ तिसकंसहीके घर जावेंगे तुम यहो मानोतो ८ वैशंपायनजी कहनेलगे— इसप्रकार शिक्षा दिये हुये वे दोनों बलदेव और श्रीकृष्ण शूरवीरोंकी तरह स्थित हुये और व्रजको देखतेहुये विचरने लगे जैसे पींजरासे छुटे हुये युद्धको इच्छा करतेहुये हस्ती विचरतेहों तैसे ९ और फिरवेमार्गमें विचरते हुये दोनों वस्त्रांपैरंग आदिकी शोभा करनेवाला धोबीको देखतेभये और तिससे सुंदर वस्त्रोंको मांगतेभये १० फिर वह रजक अर्थात् धोबी यहबोला कि तुमबनमें विचरनेवाले कौनहो जोकि मूर्खपने से राजाके वस्त्रोंको निर्भयहुये मांगतेहो ११ और मैं अनेकदेशोंमें उपजने वाले और बहुत सुंदररंगवाले ऐसेकंसके वस्त्रोंको रंगताहूं १२ सो तुम किसकेकौनहो और मृगोंके संग बनमें बैठेहो क्योंकि रंगे हुये इन वस्त्रोंको देखमांगने लगे १३ और तुमने विशेष करके रक्तवस्त्र पहिनेहैं १४ और तुमने अपना जीवन त्यागदिया क्योंकि यहां तुम

आगये और तुममूर्खहो और बालकोंकी तरहबस्त्र मांगनेकी इच्छा करतेहो १५ जबऐसे उसधोबीने बचनकहे तबथोड़ी बुद्धिवाले और प्राप्तअरिष्टवाले और मूर्ख और वाणीसे जहररचेहुये ऐसेतिसधोबी पैश्रीकृष्ण क्रोधकरतेभये १६ और वज्रके समान हाथकरके तिसके मस्तकमें मारतेभये पश्चात् वहरजक मरके पृथ्वीमेंपड़ताभयाऔर उसका मस्तक फटगया १७ तबतिसको उसरजककी स्त्रियां देख विलाप करती भईं और क्रोधकरतीहुईं और बालोंको खिंडाये हुये इसप्रकारजल्द कंसके भवनमें गईं १८ और वेदोनों कृष्ण बलदेव तिन अच्छेबस्त्रोंको पहनके मालीके घरजाते भये और मालियों की गलीमें श्रेष्ठगंधको ग्रहण करनेलगे जैसेहस्ती बिचरतेहों तैसे १६ फिर गुणकनामवाला माली प्रियवचन बोलताहुआ और बहुतसी मालाओंको रखनेवाला और लक्ष्मीवान् और प्रियदर्शनवाला २० ऐसावह गुणकनामवालेमालीको सुंदरवाणीसेमालाओंको देवो ऐसे श्रीकृष्णबोला२१फिरवह प्रसन्नहोके बहुतसुंदरमाला तिन्होंकेअर्थ देताभया और यहबोला कि मैं और यह सब कुछतुम्हाराही है २२ तब श्रीकृष्ण प्रसन्नहोके तिसगुणकनामवाले मालीको बरदेतेभये कि हेसौम्य धनोंके समूह करके तेरे बहुतसी लक्ष्मीमेरे प्रभाव से हो२३पश्चात् अव्यग्र चित्तवाला वह माली नीचे को मुखकर और तिस बरको मस्तकसे ग्रहण करता भया और श्रीकृष्ण केपैरों में परता भया २४ और तिसवक्त अपने मनमें यहजाना कि ये दोनों कोई यक्षहैं ऐसे बारम्बार भय में युक्तहोके कछु बोला नहीं २५ और पश्चात्वेदोनों वसुदेवके पुत्रराजमार्गमें गमन करतेभये और फिर तहां चंदन के बरतनको लियेहुये कुब्जानारिको देखतेभये२६ पश्चात् श्री कृष्णकुब्जासे ऐसे बोला कि हे कुब्जे यह अनुलेपन किसकाहै और हे कमलसरीखे नेत्रोंवाली कहां जातीहै यह तू जल्द बतला२७पश्चात्ऐसे सुनकेवहकुब्जाहंसतीहुई और देखतीहुई और बिजलीकीतरहकुटिलगमन करतीहुई इसप्रकार मेघसरीखे गंभीर औरकमलसरीखेनेत्रोंवाले ऐसेश्रीकृष्णकेप्रतिबोली२८किमैं राजाके

वास्ते इसचंदनको लेके जातीहूं सो तुमभीलेवो और मैं खड़ीहूं आवो और तेराकल्याणहो और तू मेराप्रियहै २६ हे सौम्य तू कहांसे आया है जो कि महाराज कंसकी स्त्री को और अनुलेपन लानेवालीको तुम नहीं जानतेहो ३० ऐसे सुनके हंसती हुई तिस कुब्जाके प्रति श्रीकृष्णबोला कि हमारे शरीरके लायक अनुलेप देनाचाहिये ३१ क्योंकि हम विदेशसेआये हुये अतिथिहैं और हे सुंदरमुखवाली इस जगह हम धनुषका उत्सव देखने कोआये हैं ३२ पश्चात् ऐसे सुनके वह कुब्जा कृष्णके प्रति यह बोली कि तुम मेरे प्रियहो और राजाओंके योग्य इस अनुलेपनको ग्रहणकरो ३३ पश्चात् वे दोनों अनुलेपन को शरीर के लगातेभये और तिस अनुलेप से शोभित होगये जैसे यमुनाके किनारे कीच से लिपेहुये बैलहोवें तैसे ३४ पश्चात् तिस कुब्जाको श्रीकृष्ण ठोढ़ीकी जगहसे पकर के दो अंगुलियों से शनैः शनैः ऊपरको उठातेभये ३५ और वह कुब्जा अच्छीतरह हंसती हुई अपने शरीरको फैलानेलगी और ऊंचेस्तनोंवाली और कोमल वलसरीखी वह कुब्जा हंसतीभई ३६ और प्रणयकरके श्रीकृष्ण के प्रति अपने मदको जनातीहुई बोली कि हे पति तुम कहां जातेहो मुझे रोकलिये और यहां ठहरो और मुझको ग्रहणकरो ३७ पश्चात् वे दोनों श्रीकृष्ण और वलदेव आपस में हसते हुये और हथेलीबजातेहुये और तिस कुब्जाको देखतेहुये और उसके वचन सुनतेहुये हंसने लगगये ३८ और श्रीकृष्ण कामदेवसे पीड़ित तिसकुब्जा को विसर्जन करतेभये पश्चात् कुब्जासे अलगहोके वे दोनों कंसकी सभामें प्राप्तहोगये ३६ और पश्चात् गोप वेषसे विभूषितहुए वे दोनों गूढ़ चेष्टावाले और गूढ़ मुखवालेहोके राजाके भवनमें प्राप्तहोके ४० धनुषशाला में चलेगये और वे दोनों बालक अतर्कित हुये और चंद्रमा की तरह दीप्तहोते हुए और सिंहके समान कांतिवाले ४१ तिस महान् धनुषको देखतेभये और पश्चात् शस्त्रों की रखवाली करनेवाले से पूछनेलगे ४२ कि हे कंसके धनुषोंकी रक्षाकरनेवाला पुरुष तू हमारा वचन सुनजिस धनुषका यह उत्सव प्रवृत्त होरहाहै

वह धनुष कौनसाहै ४३ और कंससे योग कियाहुआ तिस धनुषको हमको दिखा हमदेखनेकी इच्छा करते हैं ऐसे सुनके वह तिन्होंको थांभ सरीखे तिस धनुषको दिखाताभया ४४ और पश्चात् देवताओंको भी उठानेको अयोग्य और इन्द्रको भी अयोग्य ऐसे तिस धनुषको उठाके पराक्रमवाले श्रीकृष्ण तोलतेभये और कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण दैत्योंसे पूजित तिसधनुषको तोलके ४५ पश्चात् तिसको रोपणकरके हाथसे नवानेलगे फिर श्रीकृष्णसे नवायाहुआ और सर्पके समान ४६ ऐसा वह धनुष बीचसे टूटताभया और तिस धनुषको तोड़के पश्चात् जल्द पराक्रमवाले श्रीकृष्ण ४७ औरयुवाअवस्थावाले बलदेव तिस धनुष शाल से निकसते भये ४८ और तिस धनुष के टूटनेके शब्दसे कंसके सब महलचलायमान होतेभये और दशों दिशा शब्दसे पूरण होगई पश्चात् शस्त्रों की रखवाली करनेवाला वह पुरुष भयभीतहुआ ४९ जल्द कंसकेसमीपजाकेऊंचा श्वाससे कहनेलगा कि हे महाराज मेराबचन सुनो धनुषशालामें ५० जगत्को भ्रमकरानेवाला बड़ा आश्चर्यहुआ इसवक्त चोरीकरके विरक्तबड़े२बालोंवाले दोमनुष्यआयेहैं ५१ औरनीले औरपीले बस्त्रोंको धारणकिये और पीले और सफेद चंदनको धारणकिये ऐसे वे दोनों इच्छित वेषको धारण करके ५२ और देवताओं के पुत्रों के समान उपमावाले और शूरवीर और बालक और अग्निकेसमान ऐसेधनुष शालामें आके स्थितहोगये और जैसे आकाश से आयेहों ५३ ऐसे मुझेदीखतेहैं और सुंदरवस्त्र और मालावालेहैं और तिन्होंमें एकतो कमलसरीखे नेत्रों वाला और काले वर्णवाला और पीलेवस्त्र और मालावालाहै ५४ तिसको देवताओंसे भी अग्राह्य वह धनुषग्रहण करके बलसे लोहके यंत्र की तरह उठाके ५५ और वेगसे अपनी लीलाकरके वह धनुष आरोपणकर और बिनाही बाण बाहुओंसे ५६ खींच और शब्दकरके तोड़ दिया ऐसे तिस धनुषके तोड़ने से पृथ्वी चलायमान होगई और सूर्य्य भी अच्छीतरह नहीं दीखा ५७ और तिस धनुषके शब्दसे भ्रमते हुआ की तरह आकाश दीखता है ऐसा

वह आश्चर्य्य मुझको देखा ५८ सो तिसकेभयसे यहां तुम्हारेआगे सब हाल कहनेको मैं आयाहूं सो हे महाराज अमित पराक्रमवाले ये कौनहैं मैं नहीं जानता ५६ और एक तो कैलाश पर्वतकीतरह कांतिवाला है और एक काले अंजनके पर्वतके समान कांतिवाला तिस धनुषको तोड़के चलागया जैसे थंभको हाथी तोड़देवे तैसे ६० और तिस धनुषके दो टुकड़ेकरके उस दूसरे के संग पवन सरीखे वेगसे चलागया सो मैं नहीं जानता कहां चलागया ६१ ऐसे तिस धनुषका भंग बिस्तारसे कंस सुनके और तिस आयुध पालको विसर्जनकरके अपनेघरमें प्रवेश करताभया ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांधनुर्भंगेचतुरशीतोऽध्यायः ८४ ॥

पच्चासीवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं भोजकुलको बढ़ानेवाला वह कंस चिन्तवनकरके उदास मनवाला और बारंबार दुःखी होगया १ और यह विचार करनेलगा कि यह बालक निर्भयहुआ पुरुषोंके देखते हुयेधनुषको तोड़के कैसेचलागया २ और इसकेवास्ते लोकमें निंदित और दारुण ऐसा कर्मकरके मैं अपनीबहिनके छःपुत्रोंको भयभीत हुआ मारताभया ३ और पुरुषार्थकरके दैवको बर्जने को समर्थ नहीं हुआ और निश्चय नारदके कहेहुये वचन मेरे अर्थ उपस्थित होरहेहैं ४ ऐसेवह राजा चिन्तवनकरके अपनेघरसे निकस तिसमल्लअखाड़ामें जाताभया और तहां जाकेमांचोंको देखनेलगा ५ पश्चात् वह कंस सब वस्तुओंसे युक्त तिस स्थानकोदेख और बड़ेबड़े पलंगोंसे लगी हुई शोभित पंक्तियोंको देखताभया ६ और उत्तर की तरफ की बड़भियोंसे शोभित और बड़ी२ कुटियोंसे विभूषित और एकएक थंभसे शोभित ७ और चारोंतरफसे अच्छाबिस्तार वाला ऐसे अखाड़ेको कंस देखताभया और बड़े ऊंचे२और आक्लिष्टऔरमिलेहुये ऐसेतहां पलंगबिछरहे ८ और जहां तिस कंसराजाका आसन बिछरहा और बीचमें जाने आनेको सड़क हुइरही और बीचमें वे दिकाबनरहीं ९

ऐसे तिस मल्ल अखाड़ेको देखके वह बुद्धिमान् कंस अखाड़ेमें आज्ञा देता भया कि कल्हके दिन विचित्र मालाओं करके और ध्वजाओं करके शोभित ऐसा यह मल्लागारबनाओ १० और इन पलंगों की शोभाकरनी कि इन्होंके ऊपर चांदनी आदि बस्त्रतनवावो औरइस मल्ल अखाड़ेमें बहुतसा गोबरकाखातगिरवाना ११ और घंटातोरण इन्होंकी शोभाकरदेना और रूपके अनुसार यथा योग्य बलि युक्त करो १२ और अच्छीखाहीं खोदीहुई और तिन्होंमें जलकेघड़ेस्थापितकरो १३ और जलके भरेहुये सुवर्णकेकलश स्थापितकरो और बलि इकट्ठीकरो १४ और अनेकतरहके शरीरोंमें लगाने के वास्ते चंदन आदिक तय्यारकरो और प्रश्नकरनेवाले पुरुषोंको यहां बुलवाओ १५ और मल्लोंको आज्ञा देदेवो और सभामेंआनेवाले अन्य पुरुषोंको भी आज्ञा देदेवो और इस सभामें मांचोंकी शोभा करनी चाहिये १६ और इसप्रकार वह कंस आज्ञादेके तिससभाके मार्ग से निकसके अपने घरपै चलागया १७ पश्चात् यहां जाके चाणूर और मुष्टिक इनदोनों मल्लोंको बुलावताभया १८ और महाबलवालेऔर बलवंतबाहुओंवालेऔरप्रसन्नहुये ऐसेथे दोनोंमल्लकंसके समीप आतेभये १९ पश्चात् समीपमें आयेहुये तिन मल्लोंको कंस देखके यहकहनेलगा २० कि तुममेरेमल्ल विख्यातहो औरशूरबीरों में तुम ध्वजाकीतरहहो और यथायोग्य पूजितहो और सत्कार करने केयोग्यहो २१ सो यदि तुम मुझसे सत्कारचाहतेहो और सुकृत चाहतेहो तो तुम अपने तेजसे मेरा एक बड़ा कर्मकरो २२ कि जोमेरेब्रजमें दोगोपाल बढ़ेहुये बलदेव और श्रीकृष्ण इननामोंसे प्रसिद्ध और बालक अवस्थावाले श्रमसे रहित विचररहे हैं २३ तिन्होंके संग अखाड़ेमें युद्धकरो और बनमें विचरने वाले तिन्होंको युद्धमें पटकके फिर जल्दमारदेने कछु संदेहनहीं करना २४ और येदोनों बालकहैं और चपलहैं और कछुकर्तव्य नहीं जानते ऐसा बिचार युद्धसमय नहीं करना किंतुयुद्धसमय अपनायत्न करना २५ और इसरंगअखाड़ेमें युद्धमें हारेहुये इनगोपालोंकरके मेराकल्याण

होगा २६ और इसप्रकार स्नेहसे युक्तराजाके वचनोंकोसुनप्रसन्न
हुये और युद्धमें सम्मति किये हुये वेदोनों चाणूर और मुष्टिक दैत्य
कहने लगे २७कि हे महाराज जो वेगोप हमारे आगेस्थित होवेंगे
तो वे तपस्वी मरके प्रेत रूप होजावेंगे २८ और अरिष्टप्राप्त होने
से वनमें रहनेवाले वेगोप यदि क्रोधसे युक्तहुये हमारे से युद्धकरेंगे
तो वे जरूर मरचुके २९ और इसप्रकार वेदोनों मल्ल अपनी वाणी
से जहरको रचके राजासे आज्ञालेके अपनेघरके प्रतिचले गये ३०
पश्चात् वहकंस हस्थीको पालनेवाला महामात्र पीलवानकोबुलाके
कहनेलगा कि कुवलया पीड़नाम वाले हस्थी को सभाके दरवाजे
आगे खड़ाकरो३१और बलवान् मदसे चपलनेत्रोंवाला चपल और
मनुष्योंमें क्रोधकरनेवाला और मदकेझिरनेसेउत्कट ऐसे तिसहस्ती
को ३२ वनमें रहनेवाले और नीच ऐसे बसुदेवके पुत्रों के सामने
प्रेरकर ऐसाकरना कि जिस्सेवे मृत्युको प्राप्तहोजावें ३३ और जो
इसहस्तीसे वेगोपाल मारेजावेंगे तो मैं तिनमदवालोंको रंग अखाड़
में नहीं देखूंगा ३४ और फिर तिन्हों मरे हुयों को बसुदेव देखके
अपने बांधवों समेतकटी जड़वाला और निराश्रय और अपनीस्त्रियों
समेतमर जावेगा ३५ और ये जो मूर्खयादव सब कृष्णमें तत्परहो-
रहेहैं ये सबछिन्न आशावाले होके और कृष्ण मरे हुयेको देखमर
जावेंगे ३६ और इनदोनों गोपालोंको मैंहस्ती करके अथवामल्लोंसे
मरवाके और मथुरापुरीको यादवोंसे रहितकरके सुखसेविचरूंगा ३७
और यादवों को सुख देनेवाला पिताभी मैंने त्याग दिया है और
कृष्णकी पक्षवाले यादवभी त्यागदिये हैं ३८ और पुत्रकी इच्छा
वाले अपने पिता उग्रसेन से मैं नहीं जन्मा हूं सो अल्पवीर्य वाले
मनुष्यकी मैं संतान नहींहूं ऐसेमेरेसे नारद मुनिने कहाहै ३९महा
मात्रपीलवान् कहनेलगा हेराजन् देवर्षि नारदने यहकैसे कहायह
आश्चर्यहै सो हेवैरियोंको मारनेवाले राजन् तुमसे सुननेकी इच्छा
करताहूं ४० सो हेराजन् उग्रसेन पिताके विनातुम अन्यसे कैसे
पैदाहुये हो और तेरीमाता ने ऐसायह कर्मकिस तरह किया ४१

और अन्यभी प्राकृत नारीनहीं करतीहैं सोयह आश्चर्य मैं बिस्तार से सुना चाहताहूं४२ कंस कहताहै—जिसतरह महर्षि नारद बिप्र कहागया है तैसेही जो तेरीसुनने की मति है तौ मैं कहता हूं एक समय इन्द्रकेभवनसे वहमुनि चंद्रमाके समानसफेद बस्त्रोंको धारण कियेहुये और जटाधारणकिये ४३ और कालीमृगछालाको धारण किये और सुबर्णका यज्ञोपवीत धारणकिये और हाथ में दंड और कमंडलुधारणकिये इसप्रकार दूसरे ब्रह्माकी तरह ४४ और चारों वेदोंकागानेवालाऔरविद्वान् और गंधर्बवेदको जाननेवाला ऐसावह नारद ब्रह्मलोक में बिचरके आवताभया ४५ फिरआयेहुये तिसको मैं देखके यथाबिधि से पूजनकर और पाद्य और आसन देके बैठा-वता भया ४६ पश्चात् सुखसे बैठाहुआवह मुनि मेरी कुशल पूछके पश्चात् प्रसन्न मनसे मेरे प्रति भावको जाननेवाला वह मुनिकहने लगा४७कि हेवीरतैंने मेरीपूजाकरी इसवास्ते मेरा एक बचन सुन औरपश्चात् ग्रहणकर ४८ मैंदेवताओंके मकानोंवाला और सुवर्ण से युक्तऐसे सुमेरु पर्वत पै गयाथा सो किसीसमय सुमेरु पर्वत की शिखर पै देवताओंकी सभाको देखता भया ४९ और तहां सलाह करतेहुये देवताओं को मैं सुनता भया सो तहां अनुचरों सहित तेरे बधकादारुणउपायकररहेहैं ५० जोदेवकीकाआठवांगर्भ सबलोकों से पूजितविष्णु होवेगा सोहेकंसवहतेरी मृत्युहोवेगा ५१ सोहेकंस वह देवताओंका सर्वस्वहै और स्वर्गकी गतिहै और देवताओं का परम रहस्यहै वहतेरी मृत्युकरेगा ५२ और हे कंस तूदेवकी के गर्भ मारनेका यत्नकरऔरदुर्बलहो अथवा स्वजनहो परंतु बैरीकाभरोसा नहीं करनाचाहिये ५३ और हे कंसयह उग्रसेन तेरा पिता नहीं है तेरा पितातोद्रुमिल नामवाला तेजस्वी सौभपति ऐसा दानवहै ५४ ऐसे मैंनारदका बचन सुनके कछुकक्रोधमें युक्तहो के फिर पूछता भ-या कि हेब्रह्मन् द्रुमिलनाम वाला दानव के ५५ संग मेरी माताका संगम कैसेहोगयाथा हेतपोधन यहमैं बिस्तारसे सुना चाहताहूं ५६ नारद कहनेलगा हेराजन्सुन तुझको मैं बताऊंगा जिसतरह द्रुमिल

नामदानवका समागम तेरीमाता के संगहुआहै ५७ तेरी मातारज
स्वला होके सुयामुन पर्बत के ऊपरस्त्रियों के संग सैल करनेकोजा-
तीभई ५८ सोतहां रमणीक और सुंदर ऐसे पर्वतकी शिषरोंपै और
नदियोंकेकिनारोंविषे ५६ किन्नरोंकरके मधुर मधुरगान सुनतीभई
औरश्रोत्र इन्द्रियको सुखदेनेवाले तिसगानसे कामदेव उत्पन्नहोता
भया और मयूरोंका शब्द सुनतीहुई ६० और पक्षियोंका बारम्बार
बोलना सुनतीहुई भोगकराने कीइच्छा करनेलगी ६१ और तिस
वक्तवनसे पुष्पोंकी गंधसेयुक्त बायु चलनेलगी और कामदेवको उ-
त्पन्न करनेलगी ६२ और भौरोंसेयुक्त कदम्ब अधिक गंधको छोड़ने
लगे ६३ और केशर और पुष्पोंके गिरनेसे कामदेव उत्पन्न होगया
और नीपसंज्ञक कदम्ब पुष्पोंसे दीपकोंकी तरह प्रकाशितहोरहे ६४
और नवीन तृणसे आच्छादित और तीज संज्ञक जीवों से बिभूषित
ऐसे पृथ्वी होरही कि जैसेनवीन यौबनवाली स्त्री आर्त्तव शरीर को
धारण कररहीहो ६५ तैसेतिस कालमें सौभपति और लक्ष्मीवान्
ऐसा द्रुमिल नामवाला दानव दैवयोग करके और विधाता करके
तहां प्राप्त होताभया ६६ और इच्छित वेगवाले और तरुण सूर्य्य
के समान तेजवाले रथमें बैठ के तिस सुयामन पर्बतको देखने की
इच्छाकरके आवता भया ६७ और आकाशमार्ग करके मनसरी
खेवेगवाले रथ से युक्तहुआ वहदानव पर्वतको प्राप्तहोताभया प-
श्चात् रथको पर्वत के समीप स्थितकर के ६८ अपने सारथी के
संगतिसी पर्वतके मस्तकपै बिचरनेलगा ६६ फिर तहां सब ऋतुओं
के गुणोंसे युक्त अनेक प्रकारके वनोंको देखताभया जैसे नंदनवन
को देखे तैसे७० और वे दोनों पर्वतकी शिखरों पै और नदियों बिषे
बिचरनेलगे और अनेक प्रकारकी धातुओंसे आच्छादित और बहु-
तसे ऊंचे ऊंचे शिखरोंसे युक्त ७१ और विचित्रवर्णवाले कांचनऔर
अंजन सरीखे तेजवाले ऐसे पर्वत के शिखरोंको देखताभया और
अनेकप्रकारके पुष्पोंकी गंधसेयुक्त और अनेक सत्वगुणोंसे युक्त७२
और अनेक पक्षियोंसे शब्दित और अनेक प्रकार के पुष्प और फल

और वृक्ष इन्होंसे युक्त और अनेक प्रकारकी औषधियोंसे युक्त और अनेक ऋषि और सिद्धोंसे सेवित ७३ ऐसे तिस पर्वतके शिखरोंको देखताभया और विद्याधरऔरकिन्नर औरयक्षऔरवानरऔर राक्षस औरसिंह और व्याघ्र और शूकर और भैंसेऔरसूसे ७४ और अनेक प्रकारकेमृगऔरहाथी यक्ष राक्षस इसप्रकार बहुतसे जीवोंकोदेखता हुआ वह दानव तिस पर्वतमें विचरने लगा ७५ पश्चात् वह दैत्य दूरसे देवता की पुत्रीके समान तिसस्त्रीको देखताभया और सखियों के संग खेलती हुई और पुष्पोंको सूंघती हुई ७६ और बड़ी कुचाओं वाली और सखियोंसे युक्त ऐसी तिसको देख के वह सौभपति दैत्य अपने सारथी के प्रति कहनेलगा ७७ कि हेसूत यहमृग सरीखे नेत्रोंवाली और बनमें विचरनेवाली और रूप उदार्य गुण इन्हों से युक्त ऐसी यह स्त्री शोभित होरही है जैसे कामदेवकी रति होवे तैसे ७८ और इन्द्रकी स्त्री शचीकी तरह और तिलोत्तमा इन अप्सराओंकी तरह प्रतीत होतीहै और ऐसीमालूम होतीहै कि जैसे नारायणकीजांघको भेदन करके कोई स्त्री पैदाहुईहो तैसे ७६ और यह पुरूरवाकी स्त्रीहै अथवा उर्वशीहै अथवा क्षीरसमुद्रके मथनेमें देवताओं के समूह इकट्ठे होके ८० अमृतको निकासते भये तब तिस अमृतसे लोकोंको उपजानेवाली लक्ष्मी पैदाहोतीभई ८१ सो वह नारायण के अंगको प्रिय ऐसी लक्ष्मी यहां विचर रही है कि जैसे नीले मेघ के बीचमें विजली चमक रहीहो तैसे ८२ और स्त्रियों के समूहमें अपने बदनको प्रकाशित करतीहुई अति सुकुमारअंगवाली यह स्त्रीचंद्रमा के समान मुखवाली प्रतीत होती है ८३ और इसके रूपको देखविभ्रांत हुआ और व्याकुल इन्द्रियोंवाला ऐसामैंकामदेव के वशमें प्राप्तहोगया और मेरामन चलायमान होरहा है ८४ और मेरे अंग बारंबार टूटते हैं और कामदेव के बाण मेरे हृदयको भेदनकर मेरे शरीरको जलानेकी तरह होरहेहैं ८५ और जैसे घृतसे सींचा हुआ अग्नि बढ़ताहो ऐसा कामदेव रूपी अग्नि मेरे बढ़ताहै सो इस कामदेव रूपी अग्निकी शांति कैसे होवे ८६ और किसउपाय

करके यह मदवाली स्त्री मुझे मिलै और मैं क्याकरूं ऐसे वहदानव बहुत वारचिंतवन कर तिसको प्राप्तनहीं हुआ ८७और फिर अपने सारथी के प्रति यहबोला कि तू यहां ठहर मैं इस सुंदरी को देखने के वास्ते जाताहूं कि यह किसकी नारी है ८८ सो तू मैं आऊं इतने ठहर ऐसे तिसके बचन को सुन वह सारथी बोला कि ऐसाही करूंगा ८९ ऐसे वह दैत्य कहके गमन के वास्ते मन करता भया पश्चात् कामदेव से युक्त हृदयवाला वह दैत्य सुंदरनेत्रोंवाली तिसे देख के ९० हाथमें जल लेके और वह बलवान् ध्यानकर चिंतवन करनेलगा पश्चात् एक मुहूर्त्त तक ध्यानकरके अपने ज्ञानबल से यह जानताभया कि ९१ यह उग्रसेनकी नारी है ऐसे जानके पश्चात् प्रसन्न होके अपने रूपकोत्याग और उग्रसेनका रूप बना लिया ९२ पश्चात् हठसे तिसको प्राप्त होके हंसताहुआ शनैः शनैः ग्रहण करताभया ९३ ऐसे कंसके प्रति नारद कहरहाहै कि हेकंस उग्रसेनके रूपकरके वह दैत्य तेरीमाता कोधर्षित करताहुआ और वह तेरी माता पति विषे प्रिय हृदावालीभाव से तिसको प्राप्तहोगई ९४ और पश्चात् तिसकी कछु गौरवता देखके शंकित होगई औरभयभीतहुई खड़ीहोके तिसके प्रतिबोली कितू निश्चय मेरापति नहींहै९५और तू खोटेआचरणकरनेवालाकौनहै किजिसतैंनेमुझको मलिनकरदी और तुझेमेरा एकपत्नीव्रत दूषित करदिया ९६ और मेरेपतिका रूपकर इसनीच कर्मकरके तुझनेमेरे दोषलगादिया सो क्रोधितहुये बांधवकुल के दोषलगानेवाली मुझको क्या कहैंगे ९७ और पतिके पक्षसे निरादर कीहुईबतूंगी सो अक्षांतरूपी आत्मावालेऔरखोटेकुलवालेऔरकुत्सित इंद्रियवाले ९८और अविश्वासी और खोटा और परनारी के प्राप्तहोनेवाला ऐसे तुझको धिक्कार है ऐसे वह तेरी माताकहती भई पश्चात् वह दैत्य क्रोध करके कहने लगा९९ किहेमूढ़ विषेपंडितमाननेवाली नारीमैं द्रुमिलनामवाला दैत्यहूं और सौभदेशका पतिहूं सो तू मुझको क्रोधकरके क्या क्षिप्त करती है १०० और हेस्त्रीपनेका अभिमान करनेवालीनारी मृत्युके

वशमें स्थित और नीच ऐसे मनुष्य पतिकोप्राप्तहोके व्यभिचार से स्त्री दूषितनहीं होती है १०१ और इनस्त्रियों के बुद्धिस्थित नहींरहतीहै और मानुषिणी स्त्रियोंकी बुद्धितो विशेष करके निश्चल नहींहै और बहुत सी स्त्री व्यभिचार करनेवालीहै १०२ और स्त्रीलोक में पतिधर्ममें स्थितहुई क्याबहुतसे देवताओंके सदृश पुत्रोंको जनती होंगी १०३ और अब तू शुद्धहुई और बालोंको खिड़ातीहुई इच्छा सेजो कुछकहतीहै कि किसकातूहै इसवास्ते हेमत्तप्रकाशिनी १०४ तेरेबैरियोंको मारनेवाला कंसपुत्रहोवेगा ऐसेसुन के फिरतेरीमाता क्रोधकर और तिसके वरको निंदतीहुई १०५ धृष्टवादी तिसदानव के प्रतिबोली कि हेदुर्वृत्त इसतेरे वृत्तांत को धिक्कारहै जोकि तूसब स्त्रियोंको निंदाकरता है १०६ और स्त्रीनीच वृत्तांतवालीभीहैं और पतिव्रता स्त्रीभीहै जोकि एकपत्नी सुनीजातीहै अरुंधतीसे आदिलेके १०७ और जिन्होंने सबप्रजा धारणकरीहै और लोकधारण किये है सोहेकुलाधम तुझको जो मेरेअर्थ कुलको नाशकरनेवाला पुत्र दियाहै १०८ यहमेराकुछ बहुतप्रिय नहींहै सुनमैंकहतीहूं यहपति वंशमें नीचपुरुष उत्पन्न होवेगा १०९ सोतेरादिया यहपुत्रतेरीमृत्यु होवेगा इसप्रकार वह द्रमिल दैत्यसुनके आकाशमेंचलने वालातिस रथमेंबैठके आकाशमें गमनकरताभया ११० और पश्चात् दीनवह तेरी माताउसीदिन मथुरापुरीमें आवतीभई १११ ऐसे वहकंसमहा मात्रपीलवान के प्रतिकहता है कि दीप्तहोता हुआ और तपस्वी और वीर्यवान् साक्षात् अग्निकी तरह प्रकाशित होताहुआ ११२ सातस्वरों से मूर्च्छनादिवा के वीन बजाता हुआ ऐसा वह नारद मुनि गायन करता हुआ मेरेप्रति यहसब कहके ब्रह्मलोकमें जाता भया११३ सोहेमहा मात्रतू सुन मेरे बचनका बोधकर त्रिकालको जाननेवाले और बुद्धिमान् ऐसानारदमुनिने यहसत्य कहाहै११४ सो मैं बलकरके और वीर्यकरके और मदकरके और नीति प्रभाव ऐश्वर्यतेज,विक्रम, ११५ सत्य,दान,इन्होंकरके मनुष्य नहींहूं ऐसे अपने [illegible] को जानके मैं नारद के बचनोंमें श्रद्धाकरताहूं ११६

सो हेहस्ती पालमैं उग्रसेनका क्षेत्रजपुत्रहूं और मातापितासे त्यक्त हूं और अपनेतेजसे स्थितहूं ११७ और मातापिता बांधव इन्होंका भीमैं वैरीहूंसो इनदोनों वनचरोंको मारके इनबांधवों कोभीमारूंगा ११८ सो तू जल्दहस्तीपै चढ़के और अंकुशलेके जा सभाके दरवाजे आगे खड़ाहोजा और देरमतकर ११९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांकंसवाक्येपंचाशीतोऽध्यायः ८५ ॥

छियासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेहैं—जबवहदिननिवृत्तहोगया और दूसरा दिनप्राप्तहुआ तब युद्धदेखनेकी इच्छावाले पुरके मनुष्योंकरके वह रंग अखाड़ा पूरण होताभया १ और विचित्र आठचरण और तीन चरणोंसे युक्त ऐसा अर्गल सहित द्वारबनरहा और वेदिका बनरही और अर्द्धचंद्रमा के आकार झरोखे लगरहे २ और पूर्वकी तरफ अच्छीतरह पुष्पोंसे युक्तदरवाजे खुलरहे और जैसेशरद ऋतुमेंमेघों कीशोभाहोवे ३ इसप्रकार सेमाचाओंके अखाड़े की शोभाहोरही और युद्धके वास्ते इकट्ठे हुये पुरुषोंसे तिससमाजकी ऐसीशोभा होतीभई कि जैसेमेघों के समूहसे समुद्रकी ४ और यथार्थ द्रव्योंसेयुक्त और ध्वजाओंसे युक्त और पंक्तियोंके समूहसे वे माचेअति सुंदरहोतेभये ५ और अंतःपुरके भीतर कांचनसे युक्तहुये और रत्नोंसे युक्तहुये और पायोंके ऊपर रत्नजड़े हुयेऐसे माचोंकी इसप्रकार शोभाहुई किजैसे पाखोंसे आकाश में पर्वत खड़ेहोगयेहो तैसे ६ और अच्छेहास्यसे और आभूषणोंके शब्दसे अतिशोभित होतेभये और विचित्रमणियों से तिन पलगों की विचित्र कांतिहोगई ७ और वेश्याओंके वास्ते अच्छेविस्तरसे आच्छादितजुदे माचेबिछ गये और तिन्होंके ऊपरजब वेश्यानृत्यकरनेलगी तब वे माचेविमानकी तरह शोभित होतेभये ८ और तिस सभामें मुख्यमुख्य आसन बिछगये और सुवर्णके पलंग बिछगये और डाभोंके गुथेहुये और पुष्पों के गुच्छों से युक्तऐसे आसन बिछगये ९ और जलपीनेके वास्ते सुवर्णके कलशेधरेगये

और वह जलपान करनेकी भूमिशोभित होगई और अच्छे अच्छे फलोंसेयुक्त पात्रभरेहुये रखदिये १० और अनेककाष्ठके बंधसे युक्त सैकड़ों हजारों माचेबिछेहुये शोभितहोतेभये ११ और सूक्ष्मसूक्ष्म झरोखोंवाले उत्तरकीतरफ स्त्रियोंकेप्रेक्षागार अर्थात् देखनेकेमकान इसप्रकार शोभित होते भये कि जैसे अंबरमें राजहंस शोभित होवें तैसे १२।१३ और पूर्वकीतरफ मुखवाला और सुमेरुपर्वतके शिखरके समान कांतिवाला और सुवर्ण के पात्र के समान कांतिवाला ऐसा एक थंभ बीचमें शोभित होताभया १४ और तिस कंसका प्रेक्षागार अर्थात् स्त्रियोंका मकान पुष्पों के समूहकरके युक्त हुआ अधिकशोभितहोताभया १५ इसप्रकार तिस समाजकेमार्गमें अनेकप्रकारके मनुष्य इकट्ठे होनेसे और तिन्होंका शब्दहोनेसे ऐसे शोभाहोतीभई कि जैसे कांपताहुआ समुद्र तैसे १६ और पश्चात् तिससमाज के द्वार आगे कुवलयापीड़ हाथीको स्थितकराके वह कंस अपनेमहलोंको आवताभया १७ फिर वह कंस सफेद वस्त्रोंको धारणकियेहुये और सफेदमुकुटको धारणकियेहुये और सफेदचंवर और बीजनाको ढुलवारहा ऐसा कंसकेमस्तक पै तिस मुकुटकी ऐसीशोभाहुई कि जैसे सफेद पर्वतके ऊपर चंद्रमाकी शोभाहोवे तैसे १८ और पश्चात्सुखपूर्वक सिंहासनपै बैठाहुआ तिस कंसकेरूपको देखके पुरके मनुष्य जयजय शब्द करनेलगे १९ और पश्चात् आड़बंध और कछनीको पहन ऐसे मल्ल अखाड़ेमें प्रवेशकरतेभये २० और पश्चात् सुंदरभेरीकेबाजेसे प्रसन्नहोके वसुदेवके वे दोनोंपुत्र तिससमाजके द्वारके समीप आवतेभये २१ फिर जल्द जल्द तिनके आवतेहुये रोकनेके वास्ते मदोन्मत्त हाथी को वह पीलवान प्रेरने लगा २२ और वह दुष्टात्माहस्ती प्रेराहुआ तिन्होंके मारने के वास्ते उद्यतहोके अपनी सूंड़को कुंडलके आकारकर तिन्होंकेसामने आवताभया २३ पश्चात् तिस हस्तीसे त्रास्यमान श्रीकृष्ण हंसनेलगे और दुरात्मा कंसके तिस मतकी निंदाकरनेलगे २४ और यह बिचारतेभये कि निश्चय ९ कंस धर्मरायके भुवनमें प्राप्त करनाचाहिये क्योंकि जो

मुझको इस मदवालेहाथीसे मरायाचाहताहै २५ पश्चात् मेघ की तरह गर्जताहुआ वह हस्ती जब श्रीकृष्णके समीपआया तब वह श्रीकृष्ण जल्द उछलके अपनीतालका शब्द करताभया २६ और ऊंचा शब्दकरके तिस हाथीकेअगाड़ी खड़ाहोके तिसकी सूंड़कोपकड़ता भया और तिसके मस्तकपै अपनी छाती का जोरदेके पीछे हाथीके दांतोंके अंतर्गतहोकर फिर पैरोंकेमध्यमेंहो २७वहश्रीकृष्ण तिस हाथीको ऐसे बाधाकरनेलगा कि जैसे वायु मेघकोदूरकरदेहै २८ पश्चात् तिसकी सूंड़को छोड़के और तिसके मस्तकसे दूरहोके तिसके पैरोंसेयुक्त ऐसा कृष्ण हाथीकेसंग युद्धकरताभया२६ पश्चात् बड़ी कायावाला और दुःखितहुआ और अपने गात्रोंविषे मथितहुआ ऐसा वह हाथी श्रीकृष्ण के मारनेको समर्थ नहीं हुआ ३० और क्रोधकरनेलगा पश्चात् गोड़ोंकेतान पृथ्वीमें गिरताभया और दांतोंकरके पीड़ाकरनेलगा और जैसे ग्रीष्मऋतुके अंतमें मेघ बरसताहै ऐसे रोषसे मदकेजलको छोड़नेलगा ३१ पश्चात् श्रीकृष्णबालक लीलासे तिस हाथी केसंग क्रीड़ाकरके फिर कंसके प्रति वैरके चित्तकरके तिस हाथीको मारनेकी मति करताभया ३२ फिर तिसके मुखमें पैरदेके और हाथोंसे तिसकेदांतको उखाड़के तिसीदांतसे उसके प्रहारकरनेलगा ३३ पश्चात् वह हाथी बज्र के समान तिस अपनेदांतसे हन्यमानहुआ और पीड़ितहुआ विष्ठाऔरमूतको छोड़ताभया और रोषकरनेलगा ३४ इसप्रकार श्रीकृष्णसे पीड़ित अंगवाले और दुःखित चित्तवाले तिस हाथीके कपोलों से बेगसे बहुतसा रुधिर निकसताभया ३५ और पश्चात् बलदेव बेगकरके तिसकी पूंछको पकड़के खींचताभया जैसे पर्वतपै बैठाहुआ सर्पको गरुड़जी खींचतेहों तैसे ३६ और तिस हाथीके दांतकरके श्रीकृष्ण हाथीकोमारके फिर तिस महामात्र पीलबानको मारतेभये ३७ और तब वह हस्ती दांतसे रहितहुआ महान् शब्द करनेलगा और जैसे वज्रसे टूटके पर्वतगिरपड़े तैसे पृथ्वीमें पीलवान समेत पड़ताभया ३८ पश्चात् रणमें कठोर वे दोनों कृष्ण और बलदेव तिसहाथीके

अंगोंको ग्रहणकियेहुये तिसहाथीके पैरोंके कवच आदिकोंकोकाटते भये ३६ इसप्रकार तिस कुबलयापीड़ हाथी को मारके रंगसमाज में ऐसे प्राप्त होतेभये कि जैसे स्वर्गसे दोनों अश्विनीकुमार प्राप्त हुयेहो तैसे ४० पश्चात् बनकी माला धारण कियेहुये और ऊंचा शब्दकरतेहुये और भुजाओंको फरकातेहुये ऐसे तिन दोनोंकोवृष्णि औ अंधक और भोजबंशी ये सब देखतेभये ४१ और सिंहकैसा शब्दवाली ताल बजाके मनुष्योंका हर्ष करातेभये ऐसे तिन्होंको वृथा मतिवाला कंस देखके दुःखीहोताभया ४२ ऐसे कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण हाथियोंमें श्रेष्ठ और गर्जताहुआ ऐसा तिसकुबलयापीड़ हस्ती को मारके तिस ४३ समुद्रके आकारके समानसमाजमें बलदेव के संग प्राप्त होतेभये ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांकुवलयापीड़बधेषडशीतोऽध्यायः ८६॥

सत्तासीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कमल सरीखे नेत्रोंवाला और वायु से फरकते हुये बस्त्रोंवाला और बलदेव के संग १ और हाथी के दांतको लियेहुये और अच्छी भुजावाला और अपनी लीला करके विचरता हुआ और रुधिर से भराहुआ २ और सिंह की तरह पराक्रमवाला और मेघकेसमान आकारवाला और बाहुके शब्दके प्रहारसे पृथ्वीको चलायमान करताहुआ ३ ऐसा देवकीकापुत्रश्रीकृष्णको उग्रसेनका पुत्र देखके क्रोध से बिस्तृतमुख करता भया ४ और वह श्रीकृष्णहाथमें लियेहुये हाथीकेदन्तसे ऐसे शोभितहोता भया कि जैसे आधा चन्द्रमाके बिम्बसे एकशिखरके पर्वतकी शोभा होवे तैसे ५ और वह रंगसमाज जनोंके समूहके शब्दसे नादित हुआ कृष्णके प्राप्तहोनेकेबाद पूर्ण हुआकी तरह प्रकाशितहोगया६ और पश्चात् क्रोधसे अतिलाल नेत्रोंवाला परम कोपकरनेवाला वह चाणूर मल्लको कृष्ण के संग युद्ध करनेकी आज्ञा देताभया ७ और निकृतिमल्ल और महाबलवाला और पर्वत के

समान मुष्टिक मल्ल इन्होंको क्रोधसे बलदेवके संग युद्धकरनेकी आज्ञा देताभया ८ पश्चात् कंस पहले चाणूर दैत्यको यह आज्ञा देता भया कि हे चाणूर तुझे यत्नकरके कृष्णकेसंग युद्धकरना चाहिये ९ ऐसे सुनके वह चाणूर मल्ल क्रोधसे कसेले नेत्रकरके युद्धके वास्ते आवताभया जैसे जलसेभरा बद्दल तैसे १० और तिस समाज में सबके मौनहुये यादव पहले एकसंग यह वचनबोले ११ कि यह युद्ध बाहुओं से करना चाहिये इसी वास्ते क्रियाबल जानके यह अशस्त्र युद्ध रचाहै १२ और कालके देखनेवाले पुरुषोंनेहाराहुआ पुरुषको जलसे छिड़कनाभी चाहिये और गोबरके खातपैपड़ाहुआ मल्लको निरन्तर अपनी क्रिया करनी चाहिये १३ और पृथ्वी पै यथार्थ खड़ाहुआ के संग युद्ध करना चाहिये ऐसे प्रश्नकरनेवालोंको कहाहै १४ और बालक हो अथवा मध्यअंगका हो अथवा कृशहो अथवा वृद्धहो परन्तु इस रंगसमाज में काखोंके समीप पकड़के युद्ध करनाचाहिये १५ औरबलसेऔरक्रियासे इसयुद्धमें बाहुओंकी विधि करनी चाहिये और नीचेपटकने के बाद कदाचित्कछुभी नहींकरना चाहिये १६ सो यह युद्ध इस समाजमें कृष्णका और इस अंध्रवंशी मल्लका युद्ध होताहै सो कृष्णतो बालकहै और यह मल्लबड़ाहै इस वास्ते यह विचार कैसे नहीं करना चाहिये १७ ऐसे कहनेके बाद तिस समाजमें किलकिल शब्द होता भया और पश्चात् श्रीकृष्ण यह वचन बोले १८ कि मैं बालक हूं और यह मल्लशरीर करके पर्वत समानहै परन्तुमेरेको इसकेसंग युद्धकरनेकी रुचीहै १९ और मेरेसे युद्धकरताहुआ कोईभी उलटप्रकार नहीं होवेगा और मैं बाहुओंसे युद्धकरनेवालोंको दूषित नहीं करूंगा २० यह मेरामतहै सो यह गोवरकी किरसोंका धर्म और अखाड़ा में होनेवाला जल का धर्म और कषायका संसर्गकरना यह सब तर्कना कल्पितकरनी ठीकहै २१ और संयम, स्थिरता, शूरवीरपना, कसरत, श्रेष्ठपंच करने, बलकरना इन्होंकरके रंग अखाड़े में सिद्धि प्राप्तहोतीहै युद्धके जाननेवालोंका मतहै २२ और यहजो बाहुयुद्धहै हाथीके

करने के वास्तेहै सो यहां में इसकी मृत्युकरके जगत्को प्रसन्न करूंगा २३ और करुष वंश में उपजाहुआ और बाहुओं से युद्ध करने वाला ऐसा यह चाणूरनामवाला जो मल्लहै इसका चिंतवन करना चाहिये २४ क्योंकि इसको बहुतसे युद्ध नीचे पटकने के बाद मार दियेहैं और अखाड़ेमें प्रतापवान् होके इसको मल्लोंका मार्ग दूषित करदियाहै २५ और संग्राम में शस्त्रोंसे युद्ध करने वालों की सिद्धि तो शस्त्रोंसे है और मल्लोंकी सिद्धि बराबरके मल्लके पटकनेसे है २६ औररणमें विजयवालेकी निरन्तर कीर्त्ति होतीहै और रणमें शस्त्रों से मरेहुये को भी स्वर्गमिलताहै सोइसप्रकार रणमें दोनोंतरह सिद्धि है मरेहुयेकी भी सिद्धि है और शत्रुको मारनेसेभी सिद्धिहै सो वह प्राणके अंतकरनेवाली यात्रा महान् साधुओंसे पूजितहै २७ और यह रंग समाजका मार्ग बलसे और क्रियासे निषिद्धहै क्योंकि यहां रंगमें मरेहुयेको क्या स्वर्ग मिलता है और क्या रती है २८ और जो कईक अपने दोषकरके पंडित मानीय इसराजाको अपने प्रताप दिखानेकोआवतेहैं उन मल्लोंकेमारनेका यह उपायकररक्खाहै २९ ऐसे कहते हुये श्रीकृष्णके उन दोनोंका घोर और दारुण युद्ध होने लगा जैसे वनमें हाथियोंका होवे तैसे ३० और अच्छीतरह सेपेचों करकेयुक्त और कण्ठसे युक्त इस प्रकार अपनी २ बाहुओं से मथन करनेलगे ३१ और वे दोनों आपसमें मिलेहुये पर्वतकीतरह दीखते भये और मुष्टियों का फैंकना और शूकरके समान शब्दकरना ३२ और बज्रसरीखी कीलोंकामारना और सलाका और नख इन्होंका गलोना और दारुणप्रकार पैरोंका फड़कना ३३ और पत्थरकेसमान शब्द करतेहुये गोड़ोंका भिड़ाना और शिरोंका भिड़ाना इसप्रकार तिन्हों को बाहु युद्ध शस्त्रके बिनाही महान् घोर होता भया ३४ और तिससमाज उत्सव के समीप तिन्होंके बाहु युद्धसे सब मनुष्य चकित होते भये ३५ और माचों पै बैठे हुये अन्यजन साधु साधु वे कहते भये पश्चात् पसीने आये हुये और कमल सरीखेनेत्रों [illegible] भेरी आदि बाजोंको अपने बायें हाथसे बंदकरता

भया जब मृदंग आदिक और भेरी आदिक बाजे बंदहोगये ३७ तब आकाशमें देवताओं के भेरीआदिक अनेकबाजे बाजनेलगे और कमलसरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्णके युद्ध समय ३८ भेरी आदिक सब बाजे आकाशमें आपही बजनेलगे और देवते बिमानोंमें बैठहुयेऔर अंतरध्यानहुये तहां प्राप्तहोगये ३९ और श्रीकृष्णकी जयकी इच्छा करनेवाले देवता विद्याधरोंके संग बिचरतेभयेऔरसप्तऋषिआकाश में स्थितहुये यह कहतेभये कि हेकृष्ण मल्लरूपी इसचाणूर दैत्यको तुमजीतो ४० इस प्रकार देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण बहुत कालतक चाणूर के संग क्रीड़ाकरके ४१ और कंसको अपनाभाव दिखा के फिर अपना पराक्रम करनेलगे पश्चात् पृथ्वी चलायमान होनेलगी और माचे घूमनेलगे ४२ और मणियों से जड़ाहुआ उत्तम कंस का मुकुट पृथ्वी में गिरताहुआ और तिस वक्तपूर्णजीवी तिसचाणूर दैत्य को श्रीकृष्ण हाथोंसे नवाके४३मस्तकमें मुष्टिका प्रहारकरता भया और छातीमें गोड़े मारताभया और तिसवक्त तिसके नेत्रों से रुधिर सहित आंशूनिकसती भई ४४ और जैसे काखके ऊपर घंटा लटकताहो इस प्रकार अधर उठाके तिसको अखाड़ेके बीचमें पटकताभया पश्चात् लिकड़हुये नेत्रोंवाला और प्राणोंसे रहित ४५ ऐसा चाणूर दैत्य पृथ्वी में पड़ताभया और तिस मराहुआ चाणूर दैत्यके शरीरकरके४६ वह अखाड़ा इसप्रकाररुकगया कि जैसे पर्वत पड़ाहो और पश्चात् जब वह अभिमानवाला चाणूर मल्लमर लि-या४७तब बलदेव अखाड़ेमें दुष्ट मुष्टिक मल्लको पकड़ता भया और श्रीकृष्ण फिरतो खल दैत्यको पकड़ताभया ऐसे ये दोनों पकड़ेहुये मल्ल क्रोधसे मूर्च्छित होके ४८ कालके वसमें बर्त्तनेवाले श्रीकृष्ण और बलदेव के प्रति तिसरंग समाजमें मारनेको आवतेभये४९ प-श्चात्श्रीकृष्णपर्वतके टुकड़ेके समान तिसतोसलदैत्यको उठाकेऔर सैकड़ोंवार भ्रमाके पृथ्वीतलमें पटकताभया ५० इस प्रकार कृष्ण से पीड़ितहुआ तिसबलवाले दैत्यके मुखसे बहुतसा रुधिरनिकस लगा तिस वक्त मृत्युको प्राप्तहोगया५१और महाबलवा[illegible]के

तिस अंध्रमल्ल अर्थात् मुष्टिक मल्लके संग युद्ध करनेलगा और तहां बलदेव तिसको मंडलकी तरह असाताभया ५२ और बलदेव बज्र के समान मुष्टिकसे तिसके शिरको हनन करताभया जैसेवज्र करके महान् पर्वतको हननकरे तैसे ५३ और पश्चात् वह दैत्य पृथ्वी में पड़ताभया और खुलेहुये नेत्रोंसे युक्त मुखवाला वहदैत्य जबपृथ्वी में गिरा तब महान् शब्दहोताभया ५४ और वे दोनों कृष्ण और बलदेव मुष्टिक और तोसल दैत्यको मारके क्रोधसे रक्तनेत्रकरेतिस अखाड़ेमें विचरतेभये ५५ और भयंकर दर्शनवाला और अन्य मल्ल से रहित ऐसा समाज होता भया और जब तोसल और मुष्टिक ये दोनों दैत्य मारेगये ५६ तब नन्दगोप आदिक देखने वाले गोप भयसे चंचल अंगोंवाले हुये सब वहीं स्थितरहे ५७ और तिन्होंके नेत्रों से हर्षका जल निकसताभया और पावसीहुई चूंचियोंसे पीड़ित हुईदेवकी और कांपतीहुई तिन्होंको देखतीभई ५८ और श्रीकृष्ण के दर्शनोंसे आंशुओं से आकुलनेत्रवाला वसुदेव वृद्ध अवस्था को त्यागके स्नेहसे जुआनकी तरह आचरण करने लगगया ५९ और तहां नृत्य करनेके वास्ते जो वेश्या प्राप्तहोरही थीं वे सब कृष्ण के कमलरूपी मुखको नेत्ररूपी भौंरों करके पीवतीभईं ६० और कंस के मुखमें पसीना आवताभया और भृकुटी फरकतीभईं और रोष से कृष्णके दर्शन करके प्रेराहुआ कंसके शरीरमें पसेव प्राप्तहोगया ६१ और कृष्णरूपी लोहा के घूमाकरके और क्रोधरूपी श्वास के द्वारा निकलनेकरके और मनरूपी अग्निकरके तिस कंसका हृदय भी तरसे जलताभया ६२ और प्रस्फुरित ओष्ठवाला और पसीनासे युक्त ऐसे कंसका शरीर क्रोधसे लालसूर्यकीतरह आचरणकरनेलगा और क्रोध से लालमुखवाले तिस कंस के मुख से पसीनों की बिंदु इस प्रकार निकसती भईं कि जैसे सूर्य की किरणों से स्पर्श होके वृक्षसे ओसकी बिंदु निकसती होवें तैसे ६३ इसप्रकार क्रोधवाला वहकंस बहुत से पुरुषों को यह आज्ञा देताभया कि ये दोनों बनमें बिचरने वालेजो गोपाल हैं इन्हों को इससमाज से बाहर निकाल

देवो ६४ और बिकृत रूपवाले और पापदर्शी ऐसे इन गोपों को मैं देखने की इच्छा नहीं करताहूं और मेरे राज्य में कोई भी गोप ठहरने लायकनहींहै६५ और खोटीबुद्धिवाला यहनंदगोपमेरेपापोंमें अभिरतरहताहैसोइसको लोहाकी बेड़ियोंसेबंदकरके पकड़लेवो६६ और खोटे वृत्तान्तवाला और नित्य इस रंगसमाजमें बिचरनेवाला ऐसा यह वसुदेव जवानोंके समान दंडदेनेलायक है अर्थात् इसको दारुण दंडदेवो६७और ये जो दामोदर आदिअन्यगोपहैं इन्होंकोगो हरलेवो और धनभी हरलेवो ६८ इसप्रकार आज्ञादेताहुआ और कठोर बचन कहताहुआ ऐसाकंसको क्रोधसेयुक्तहुये और सत्यपराक्रमवाले श्रीकृष्णदेखतेभये ६९ और अपनेपिताका तिरस्कार देख के और नंदगोपका तिरस्कार देख और अपनेज्ञाति बंधुओंका तिरस्कारदेख और देवकीकी बुरीसंज्ञादेख श्रीकृष्णक्रोध करतेभये ७० पीछेसिंह के बेगकी तरह पराक्रमवाला कृष्ण कंसके नाशके वास्ते आरोहण करताभया ७१ पश्चात् रंगसमाज के बीचसे उछल के श्रीकृष्ण कंस के मुख के समीप पहुंचतेभये और ऐसी शोभाहोती भई कि जैसेवायु के बेगसे चलताहुआ मेघको शोभाहोवे तैसे ७२ और तिसवक्त सब पुरवासी रंगसमाज में खड़ेहुए कंसको पांशु के समीप खड़ाश्रीकृष्णको देखके कुछखैरनहीं मानतेभये ७३ और वह कंसभी समीप आयेहुए प्रभुगोविंदको आकाशसे आया हुआ काल कीतरह मानताभया ७४ और पश्चात् श्रीकृष्ण मूसल के समान अपनी बाहुकरके कंसके चोटेको पकड़ताभया ७५ और तिस कंस कामुकुट सुवर्ण और हीरासेजटितहुआ श्रीकृष्णका हाथ शिरपै लागनेसे पृथ्वीमें गिरताभया ७६ और पश्चात् जब श्रीकृष्णके हाथमें कंसकेबाल आगये तबनिश्चेष्टहुआऔरमूढ़हुआविह्वलहोताभया७७ और बालों के पकड़ने से मरताहुआकी तरह श्वासलेनेलगा जब कंस श्रीकृष्णके मुख देखनेको समर्थ नहीं हुआ ७८ और कुंडलों से रहितकानोंवाला और हारवाला और बाहुओंको लंबीपसारे हुए और गहनों से रहित अंगोंवाला ७९ और ओढ़नेका दुपट्टा आदि

वस्त्रसे रहित ऐसा वह कंसएक वार चलायमान मुखवाला होगया और श्रीकृष्णके तेजसे फेंकाहुआ वहकंसबारंबार चेष्टाकरनेलगा८० और पश्चात् श्रीकृष्णतिसकंसको माचासेनीचे पटकअखाड़ेमें गेरता भया और बलसे तिनके बालोंको पकड़ताभया ८१ इसप्रकार वह महाकांतिवाला कंसश्रीकृष्णसे खींचाहुआतिससमाजकेमार्गमेंअपने शरीरको इसप्रकार फैलाताभया कि जैसे खाईहोरहीहो ८२।८३ और श्रीकृष्ण तिससमाजमें कंस के शरीरको खींचके और मार के दूरसे पृथ्वीमें बिसर्जन करताभया ८४ और तिसवक्त कंसक देह पृथ्वीमें सुखसे सोताहुआ मालूम होनेलगा और बिपरीत गिरनेसे तिसका शरीर कठोरहोगया ८५ और कंसका श्यामवर्ण शरीर मुकुटके बिना और मिंचेहुये नेत्रोंसे युक्त इस प्रकार पृथ्वी में पड़ा प्रकाशितनहीं होताभया जैसे पत्तोंकेबिना कमलकी शोभा नहींहो तैसे ८६ और वह कंस रणकेबिना और बाणोंकेबिना मरा हुआ शूर वीरों के मार्गसे निंदित होताभया ८७ और तिस के शरीरमें श्री कृष्णके नखोंसे करेहुये और जीवको नाशकरनेवाले ऐसेमांसकेछिद्र प्रकाशित होतेभये ८८ ऐसे कमल सरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण कंस को मार के हर्षसे दूनीकांतिवाले होगये और पश्चात् कंटक रहित श्रीकृष्ण बसुदेव के चरणोंमें गिरताभया ८९ और अपनीमाता के चरणोंमें शिर नवाताभया पश्चात् वह देवकी कृष्णको आनन्द से निकलाहुआ अपनी चूंचियों के दूधसे सींचतीभई९० और पश्चात् श्रीकृष्ण सब यादवोंको अवस्थाके अनुसार कुशल पूछताभया९१ और धर्मात्मा बलदेवभी बढ़ाहुआ सुनामा नामवाला कंसके भाई कोमारताभया ९२ ऐसेवेदोनों कृष्ण और बलदेव बैरियोंको मारके और क्रोध को शांतकर और प्रसन्न मनहोके अपने पिता के घर जातेभये ९३ ॥

इतिश्री महाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायां कंसबधे सप्ताशीतोऽध्यायः ८७ ॥

———०००———

अट्ठासीवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे—कंसको सब स्त्रियां अपने पतिको मरे हुये देख चारोंतरफसे आतीभई १ और तिसराजाको पृथ्वीमें सोता हुआ देख वे सब कंसकीनारी बिलाप करनेलगीं जैसे हिरनीहिरन का विलाप करतीहों तैसे २ और यह कहनेलगीं कि हे महाबाहो हम मरगईं और हमारीआशा भी हतहोगई और हमारे बांधव भी हतहोगये क्योंकि हम शूरबीर की तेरीस्त्रियां प्रियके तेरे हत होनेसे इस अवस्था को प्राप्त होगई हैं ३ और यह तेरी पिछली गति हम देखतीहैं सो हे राज शार्दूल हम बांधवोंसमेत कृपणता से बिलाप कररहीहैं ४ और हमारी जड़कटगई क्योंकि तेरेसेत्याज्यहोगईं और तू हमारानाथ मृत्युको प्राप्तहोगया ५ सो हमारे भोगकी लालसा को कौन पूराकरेगा और हम बेलकीतरह मुरझाईहुई शयनपै गिराकरेंगी ६ और हे सौम्य सुंदरश्वास आनेवाला और कांति वाला ऐसा तेरी मुखको सूर्य दग्धकरता है जैसे जलके बिना कमल दग्ध होजावे तैसे ७ और ये तेरे कान कुंडलों के विना शून्यहुये शोभित नहीं लगतेहैं ८ और पृथ्वीमें लगाहुआ यह तेराशिर शोभित नहीं लगताहै और हे शूरबीर जो सब रत्नोंसे बिभूषित तेरामुकुटथा वह कहांहै जोकितेरेशिरकीअतिशोभा कियाकरताथा और सूर्यकेसमान कांतिवालाथा ९ और हेशूरवीर यहतेरी दीनस्त्रियाँ अब तेरे मरनेके बादक्या करेंगी १० और स्त्रीतोनिश्चय पतिके भोगमें ठगीहुईहै और स्त्री पतिको त्यागनी नहीं चाहिये सो तूहमको त्यागके किस तरह जाताहै ११ और आश्चर्य्य है कि कालमहा पराक्रम वालाहै क्योंकि जिसकर के वैरियों का कालके समान तू जल्द हरलियाहै १२ और हम तेरेसे सुखमेंबढ़ीहुई अब दुःखोंमें युक्तहोगईहैं सो हे नाथ हम बिधवाहुई और कृपणताको प्राप्तहुई कैसे बसेंगी १३ और चरित्रों से शोभित होनेवाली स्त्रियों की परमगति पति है सो तूही हमारी परमगति कालने छेदनकरदी १४ सो हम वैधव्य भावसे युक्तहुई

शोकऔर संताप मनवाली होरहीहैं सो आश्चर्य है कि कालके वश
में सब जंतुओंको आनाहै १५ औरतेरे बिषे मग्नहुई रोवती हुईहम
तेरे बिना कहां जायं और तेरे अंगविषे क्रीड़ा करता हुआ कालतेरे
विषे चलागया १६ और हमक्षणभरमें तेरेसे बिहीनहोगईं सोमनुष्यों
कीगति अनित्यहै सोहे मानके देनेवालेपतितेरे मरनेसे हम विपत्ति
को प्राप्त होगईं १७ और हम सब एक खोटे कर्मको करने वाली
हम बैधव्य लक्षणसे युक्त होगईं और रतिमें प्रिय हमस्वर्ग सरीखे
लक्षणों से तुझको लड़ाई है १८ और तेरे बिषे हम सब काम
को प्राप्तहैं सो तूहमको त्याग के कहांजाताहै और अनाथजोहमहैं
इन्होंका तू नाथहै १६ सोटिटिहिरी कीतरह इन्होंके बिलापकरते
हुये हेजगत् के नाथ और हे मानके देनेवाले पति तुमप्रति बाक्य
अर्थात् जवाब देवो २० सो हे महाराज इस प्रकार हमारा बिलाप
करतेहुये और बंधुओंके समुझातहुये तेरागमन हमको दारुणदीख-
ताहै २१ और हेपतिनिश्चय परलोकमें सुंदरस्त्रियांहैं क्योंकिजोतू
इन्ह घरके मनुष्योंको त्यागके चलपड़ाहै २२ सोहेशूरवीरइन्ह बहुत
स्त्री अपनी स्त्रियोंबिषे क्यातेरेको दयानहींआतीहै क्योंकिजो तू रोती
हुई इनस्त्रियों से वोधनहीं करताहै २३ और आश्चर्यहैक्यामनुष्योंकी
मरजाने की यात्रा दयासे रहितहै क्योंकि जोअपनी स्त्रियोंकोत्याग
के निरपेक्ष हुआ गमन करताहै २४ और स्त्रियोंके पतिका शूरबीर
होना श्रेष्ठ नहींहै और स्वर्गकी स्त्रियोंको शूरबीर पति प्रियहैं और
तिन्होंको वे स्त्री भी प्यारी हैं २५ और रणमेंप्रिय तू जल्दप्रारब्धके
बशसे मरगया है और तुझने जरासंध का बलहरलिया और युद्धमें
यक्षजीतलिये ऐसा तू इसमनुष्य मात्रसे कैसेहत होगया २६ और
इन्द्रके संगगंगा के किनारे बाणोंका युद्धकरके इन्द्रजीतलिया सो
युद्धमें मनुष्यों से नहींजीतने लायक तू मनुष्यसे कैसे मरगया २७
और तेरेबाणोंकी बर्षाकरके समुद्रभी हारजाताहैऔर कुबेरसेभी सब
रत्न तुझने जीतके हरलिये २८ और जबइन्द्र मदबर्षा तबतैंनेपुरोंके
मनुष्योंके वास्ते बाणोंसे मेघछेदन करके वर्षाकरली २६ और तेरे

प्रतापसे नीचेदबे हुये सबराजे रहेहैं और श्रेष्ठरत्न और वस्त्रादिक तेरेप्रति भेंटकेवास्ते भेजतेरहेहैं ३० सो देवताओंके समानपराक्रम वालातेरा यहऐसा प्राणोंका अंतकैसे होगया और यह भय कहांसे आया ३१ और तेरेनाथके मरनेसे हमारेविषे विधवा शब्द होगया और कालको हम मदसेरहित और निराकृतकरदी ३२ और हे नाथ जो तेरेको जानाहीहै और हमेंविस्मृत करदीं तो अपनीबाणीसे यह कहदेकिमैं जाताहूं फिरक्या परिश्रमहै ३३ सोहेमथुराके पति हम भयभीत होरहीहैं और मस्तकसेतेरे पैरोंमें पड़तीहैं सोतूइसदूर प्रवाससे निवर्त होजा ३४ और हे शूरबीरत्तम और धूलविषे तू कैसे सोता है और पृथ्वी में सोताहुआ तेराशरीर कैसे नहीं कांपता है ३५ और यह तेरे प्रति सोनेका प्रहार किसनेकिया और सबतेरी स्त्रियोंबिषे यहदारुण दुःखकिसने दिया ३६ सो जीवती हुई स्त्रियों कोयहरोवनेका दुःखहै और जोतेरेसंग हमभीचलीजातीं तो हमभी क्योंरोती ३७ पश्चात् इसी कालके अंतर गरीबनी कंसकी माता कांपतीहुईआई और बारंबार ऐसेरोवनी लगी ३८ कि मेराबच्चा कहां है और मेरापुत्र कहांहै इसप्रकार कहतीहुई बहप्रभासे रहित चंद्रमाकी तरह मराहुआ अपनेपुत्र को देखती भई ३९ और अपने हृदाके पीटनेसे बारंबार दुःखीहोतीभई और पुत्रको देखतीहुई हाहा मैं मरगई ऐसेकहनेलगी और अपने बेटाकी तिन्हबहुओंका पीड़ित शब्द सुन के विलाप करनेलगी ४० और रोनेलगी और पुत्रकी इच्छावाली वह कंसकी माता शिथिल हुई तिस कंसके शरीर को अपनी गोदमेंकरके पीड़ितवाणी से और करुणासे हेपुत्र हेपुत्र ऐसे विलाप करनेलगी ४१ और यह कहनेलगी कि हेपुत्र हेशूरवीर क्षत्रमेंयुक्त और बंधुओं को आनंदबढ़ाने वाला है बच्चातू जल्दही यह प्रस्थान करचुका ४२ और हे पुत्र क्यानियम के बिना इसप्रकार तू पृथ्वीमेंसोगया और हेबच्चा ऐसे तेरे सरीखे प्रकार वालों को और लक्षणोंवालोंको पृथ्वीमें सोना उचितनहीं है४३ क्योंकि पहिले बल वाले रावणको संसारका और राक्षसोंका समागममें श्रेष्ठोंका माना

हुआ यहश्लोक कहाहै ४४ कि बलवाला और देवताओं को मारने वाला ऐसाजो मैंहूं सोमेरेको बांधवोंका दुर्निवार्यरूप भयहोगा ४५ और तैसेहीजातिमें लुब्धहुआ और बुद्धिमान् ऐसाइस मेरे पुत्रकोभी शरीरके नाशका भयहुआ है ४६ ऐसे कहके वहकंसकी मातावृद्ध और बिगड़ाहुआ चित्तवाली ऐसेअपने पतिउग्रसेनके प्रति रोतीहुई बाक्य कहने लगी जैसे बच्चों से रहित हिरनी होवे तैसे ४७ हे राजन् हे शुद्धात्मन् तू यहांआ और जनों का ईश्वर अपने पुत्र पृथ्वीमें सोतेहुयेको देख जैसे वज्रसे हतपर्वत पड़ाहो तैसे ४८ सोहे महाराज इसको मृत्युसमयकी क्रियाको तुमकरो और यह प्रेतभाव को प्राप्तहोगया और धर्मराज के स्थान में चलागया ४९ और शूरवीर के भोगने लायक राज्य और हम सब पराजित होगये सो तू जल्दजा कंसके सत्कार के वास्ते कृष्णसे विज्ञापनाकर ५० और मरनेके अंतमें वैर शांतहोजाते हैं और शांतिहोजाती है सो प्रेतकार्य तो करनाहीचाहिये क्योंकि मराहुआ ने क्या अप-राध ५१ कियाहै ऐसे अपनेपति उग्रसेनके प्रति कहके और अपने वालोंको खिंडाके पश्चात् अपने पुत्रके मुखको देखतीहुई बारंबार विलाप करनेलगी ५२ ऐसे कहनेलगी हे राजन् सुखसे बढ़ीहुईथे तेरीभार्य्या क्या करेंगी और तुझ पतिको प्राप्तहोके इन्होंके मनोरथ खंडितहोगये ५३ और यह तेरा वृद्धपिता कृष्णके वशमें हुआ जो हृदके जलकीतरह सूखेगा सो इसको मैं कैसे देखूंगी ५४ और हे पुत्र मैं तेरी माताहूं सो तू मुझसे क्यों नहीं बोलता और तू प्यारे-जनोंको त्यागके इस दूरके मार्गमें प्राप्तहोगया ५५ और अहो हे शूरबीर मंदभागवाली जो मैंहूं सो मेरा नीतिका जाननेवाला तुझ पुत्र को कालने उठालिया ५६ और हे कुलों के पालनेवाला दान मानको ग्रहण करनेवाले और तेरे गुणों करके युक्त ऐसे तेरे भृत्यों के कुलरोवते हैं ५७ सो हे नृप शार्दूल तू खड़ाहो और हे दीर्घ वाहो हे महाबले तू सब दीनमनुष्यों की रक्षाकर और इस महल के मनुष्यों की रक्षाकर ५८ इस प्रकार कंस की स्त्रियों के बिलाप

करतेहुये सूर्य अस्तहोगया और संध्या से रक्त अंबरहोगया ५६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांकंसस्त्रीविलापेअष्टाशीतितोऽध्यायः ८८ ॥

नवासीवां अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे पुत्रकेशोकसेसंतप्त उग्रसेनदुःखित हुआ श्रीकृष्णकेसमीप जाताभया जैसे जहरकोपिये दुःखसेजाताहोतैसे १ और फिर अपनेघरमें यादवोंसे युक्त और कंसकेमारनेको पछिताता हुआ ऐसा श्रीकृष्णको देखताभया २ और तहां यादवोंकी सभामें कंसकी नारियोंके प्रलापोंको और करुणाके बचनोंको वह श्रीकृष्ण सुनके अपनीआत्माको निंदितकरताभया ३ और यह कहनेलगा कि अहोअतिबालकसमझवालेमैंनेनवीनरोषवर्त्तीकेइसकंसकी वृत्तिकर-केकंसकी हजारोंस्त्रियोंको बैधव्यभावकरदियाऔर निश्चय स्त्रियोंके विषेप्राकृतपुरुषको भी४करुणा आजातीहैऔरऐसे दुःख से रोतीहुई इन्होंने मेरे निश्चय शोकपैदाहोताहै५औरकालधर्मको नहीं जानने वालीइनस्त्रियोंकेकरुणाकाहोना संभवहीहै६ और श्रेष्ठपुरुषोंकोकंपा नेवालाऔरपापमेंरतऐसाकंसकीमृत्युहीहोनीश्रेष्ठहैयह मैंनेपहलेही विचारलियाथा७क्योंकि संसारमेंपतितवृत्तांतवाला और कठोरऔर अल्पवुद्धिवाला ऐसाकंसकातोमरनाहीश्रेष्ठहै और द्वेषकरनेवालाका जीवना८श्रेष्ठनहींहै औरपापमेंरुचिरखनेवालायह कंसश्रेष्ठपुरुषोंका असम्मतहै और धिक्कारशब्दसे पतितहुआ तिसकंसके क्यादयाहै ९ और तपकरनेवाले पुरुषोंका स्वर्गमेंबास होताहै और पुण्यकेकर्म्म का भी यही फलहै सोयहां इसलोकमेंभी जो यश करकेयुक्तहै उस की भी धारणा १०स्वर्गलोक सरीखी गिनीजातीहै और जो निवृत्त मनुष्य होवे और अपने कर्मोंमें तत्परहोवे और धर्ममें तत्परहोवे तब राजाओंको अनरीति नहीं छूसकी ११ और युद्धमें दुष्टवृत्ती वाले पुरुषोंकावधदैवकरदेताहै इसवास्तेअपनेइष्टधर्ममेंयुक्तहुये पुरुषोंको पारलौकिक कर्मकरनाचाहिये१२और धर्ममेंतत्पर मनुष्यकी देवता अति रक्षाकरतेहैं और संसारमें खोटेकर्मके करनेवाले मनुष्य बहुत

हैं १३ सो यह कंस जो मुझको मारदियाहै यह श्रेष्ठहीकियाहै और इस विपरीत कर्म करनेवाला कंस की जड़च्छेदन मुझे करदीहै १४ सो इस कंसकी स्त्रियां आदिक जो शोकमें पीड़ित होरहीहैं ये सब शांतकरनी चाहिये और इस पुरीके मनुष्य और इस पुरीकी सब पंक्तियां मुझे शांतकरनी चाहिये १५ इस प्रकार श्रीकृष्ण के कहते हुये वह उग्रसेन नीचेको मुखकिये तिसस्थान में प्रवेश होताभया और पुत्रके पापसे शंकितहुआ १६ वह उग्रसेन यदुओं को ग्रहण कियेहुये श्रीकृष्ण के समीप प्राप्तहुआ पश्चात् कमलसरीखे नेत्रों वाले श्रीकृष्णके प्रति तिससभामें बाष्पसेयुक्त और दीनऐसी बाणी से वहउग्रसेन कहनेलगा १७ किहे कृष्ण तैंनेक्रोधरूप मेरापुत्रमार के धर्मराज के स्थानमें प्राप्तकिया और अपनेधर्मसे पृथ्वी लोक में तुमने कीर्त्ति वढ़ाली १८ और श्रेष्ठपुरुषों में अपना महात्म बढ़ालिया और वैरीशंकितकरदिये और यदुवंश स्थापित करदिया और अपने प्यारे गर्वित करदिये १९ और राजाओं के शांतकरनेसे तेराप्रताप प्रकाशितहोगया और तेरे मित्र तुझको भजैंगे और राजातेरे आश्रयहो वेंगे २० और सबप्रजा तुझको प्राप्तहोगी और ब्राह्मण आदिक तुम्हारी स्तुतिकरेंगे और प्यारकराने और बैरकरानेवाले ऐसेअनेक मुख्यमंत्री तुमको प्राप्तहोवेंगे २१ और हे कृष्ण हाथीअश्वरथ इन्हों से युक्तसेना और प्यादे ऐसे सब तरहकी कंसकी सेनाको तुमग्रहण करो २२ और हे कृष्ण धनधान्य और रत्नआदिक और बस्त्रयेसब कंसकेतुमको ग्रहणकरनेचाहिये और हेश्रीकृष्णये सबपुरुषभी तेरेही हैं २३ और स्त्रियां और सुवर्ण और असवारीयेसब और अन्यबस्तुसब तेरेही हैं और सो हेश्रीकृष्ण इसप्रकार सबविग्रहसमाप्त होचुका २४ और पृथ्वी अच्छे प्रकार प्रतिष्ठित होगई सो हे यदुओं के शत्रुओं को मारनेवाले श्रीकृष्ण और हे यदुनंदन इनयदुओं की तूहीगति और अगतिहै २५ और हेशूरवीर कहतेहुये इनकृपणों का यहबचन सुनकितेरे कोपसे दग्धहुआ और खोटेकर्मको करनेवाला २६ ऐसा इसकंसका प्रेतकर्म तेरीही प्रसन्नता से होनाचाहिये और मराहुआ

तिसराजाकी औद्र्धदैहिक प्रेतक्रियाकरके २७ पश्चात् पुत्रकी बहुओं के संग और अपनी स्त्रियोंके संगहुआ मृगोंकेसंग बिचरूंगा अर्थात् वनमें बिचरूंगा सोहेश्रीकृष्ण प्रेतकेसत्कारमात्र होनेसे और बांधव कर्महोनेसेमैं इसलोकमें २८ अऋणाहोजाऊंगा और इसकी पिछली अग्नि करके अर्थात् २६ चिता में दाहकरके और जलांजलि देके मैंकंसका अऋण होजाऊंगा सो हे श्रीकृष्ण यहमेरा विज्ञापनहै ३० इसमें तुमको स्नेहकरना चाहिये और इसक्रिया के करनेसे वहकृपण कंसश्रेष्ठ गतिको प्राप्तहोजावेगा ऐसे तिस के बचन सुनके श्रीकृष्ण परम बिस्मित होगया ३१ और शांतिके अनुसार उग्रसेन के प्रति यह प्रतिबचनबोला कि हे तात यह तुमनेकालके अनुसारकहाहै ३२ और हे राज शार्दूल खोटाकाल व्यतीत होने के बाद तुम जो ऐसा कहतेहो सो ठीकहै ३३ और प्रेतभावकोभी प्राप्तहुआ वहकंसराजा ओंके सत्कार को प्राप्तहोवेगा और हेतात तेराजन्म महान्कुलमें है ऐसातुझको जाननाचाहिये ३४ और जानतेभीहो और हे तातस्थावर और जंगमजीवोंकी यहखोटीनीति तुमसे कैसेनहीं जानीजातीहै ३५ और पूर्बजन्म का कियाहुआकर्म कालकर के थोड़ेदिन में परिपाक को प्राप्तहोजाता है और हेनृपसत्तम बहुतसा सुननेवाले और दान देनेवाले और प्रियदर्शन वाले ३६ और ब्रह्मण्य और नीति में संपन्न औरदीनपुरुषपै अनुग्रह करनेवाले और लोकपालोंकेसमान और महेंद्रकेसमान पराक्रमवाले ३७ ऐसेभी सबराजा कालके बश में प्राप्तहोजाते हैं और धर्मको करनेवाले और सब भावको जानने वाले और प्रजाके पालनेवाले ३८ और क्षत्रधर्म में रत और शील स्वभाववाले ऐसेभी सबराजे मृत्युको प्राप्तहोगयेहैं और शुभअथवा अशुभजो कर्म करताहै वह आपही कालकेवश प्राप्तहुआ ३६ सब देहधारियों को दीखता है ऐसी यह अंतर्द्धानहुई देवमायाहै सो यह देवताओं सेभीनहीं जानीजाती है ४० और जिसकरके यह संसार मोहको प्राप्तहोरहा है और जिसीसे कर्म और कारणहै सो हेतात यहकंस पूर्व कर्मसे प्रेरा हुआ कालकरके मरगया ४१ और इसमें

मैं कारणनहींहूं किंतुकाल और कर्म कारण है और हे तात यह सब स्थावर और जंगम जगत् सूर्य और चंद्रमयहै ४२ और कालकर के यहजीव मृत्युको प्राप्तहोजाताहै और कालही करके जन्मताहै और कालही सबभूतों के विग्रह में और ग्रहण में तत्पर है ४३ इस वास्ते सबजीवकालके वशमें प्राप्तहोरहेहैं सोतेरापुत्र कंसभी अपने दोष करके दग्धहोगयाहै ४४ सो तहां मैं कारणनहींहूं तहांकालही कारण है अथवा मैं कारणहूंगा इसमें संदेहनहीं ४५ कालहीतत्पर रहताहै फिर अकारण क्याकरे और हे राजन् कालही बलवान् है और तिसकीगति जानीनहीं जातीहै ४६ और पारावार के बिशेष को जाननेवालेसमदर्शी मनुष्य और सिद्धपुरुष और मोक्षतत्त्वके जानने वाले ऐसे महात्मा पुरुष कालकोगतिको प्राप्तहोते हैं ४७ और हेतात मैं जो बचन कहताहूं उसको तूसुन कि मेरा राज्यसे कार्यनहींहै ४८ और मैं राजाहोनेकीभी इच्छा नहींरखताहूं और मैंनेकछु राज्यकेलोभ से यह कंस नहींमाराहै किंतु यह तेरापुत्र मैंने लोकके हितकेवास्ते और कीर्ति के वास्ते माराहै ४९ और तुम्हारे कुलका व्यंगरूप वह कंस मुझने अनुचरों सहित मारदियाहै और मैं तोगोपों के संगबनमें विचरनेवाला वहीगोपहूं ५० और प्रसन्नहुआ बनमें हाथीकीतरह अपनीइच्छा पूर्वक विचरूंगा यहीबातमैं सैकड़ोंबारकहूंहूं और यही सत्यहै ५१ और मुझको कछु राजाहोनेसे कार्यनहींहै यहतुमको जाननी चाहिये और मेरको तुमयदुओंकेअग्रिणी औरसमर्थ ५२ ऐसे तुम राजामानेहो सो हे राज सत्तम जो तुमको मेरा प्रियकरना और तुमको कछु व्यथानहीं है तो अपने राज्यमें तुम अभिषेचनकरो ५३ अर्थात् राजगद्दी पै बैठो और मेरेसे संचित कियाहुआ इस राज्यको तुम बहुतकालतकग्रहण करो ५४ वैशंपायनजी कहनेलगे—ऐसा बचन सुनकेफिर वह उग्रसेन कछुउत्तर नहींदेताभयापश्चात् लज्जा से नीचेमुखकिये बैठाहुआ तिसराजा को यदुओं की सभामें धर्मको जाननेवाला ५५ वहश्रीकृष्ण अभिषेक करताभया पश्चात् मुकुटको धारण कियेहुये वहउग्रसेनराजा ५६ कृष्णके संगहुआ कंसकी प्रेत

क्रियाकरताभया और सबयादव कृष्णाकी आज्ञासे उग्रसेनकेपीछे २ उसपुरीमेंगमनकरतेभये ५७जैसेइंद्रकेसंग देवता गमनकरतेहोवेंतैसे औरपश्चात् जबरात्री व्यतीतहोगई और सूर्यउदय भया ५८ तब वे सबयादव कंसकी और्द्धदैहिक क्रियाकरनेलगे कि तिसकंसके देहको यथाक्रम से डोलीमें स्थापित करके ५६ नैष्ठिक बिधानसे तिसकी सत्क्रिया करतेभये और उसराजाके पुत्रकंस को यमुनाजीके उत्तर के किनारे पै लैजातेभये ६० और मृत्युसमयकी चिताकी अग्निसे उसका सत्कार करतेभये और कृष्णके संगहुये वे सबयादव मरा हुआ सुनामा नामवाले कंसके भाईकाभी सत्कार करते भये ६१ अर्थात् दाह देते भये ऐसे इनदोनों को वृष्णि और अंधक बंशी वो यादव दाहदेके फिरदोनों के अर्थजलांजली देतेभये ६२ और प्रेतों के अर्थ अक्षयहो ऐसेबारंबार कहतेभये और पश्चात् वेयादव तिन्हों कोजलदान देके दीनमनवाले हुये ६३ उग्रसेनको आगेकरके तिस मथुरापुरी में प्रवेश होतेभये ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांकंससत्कारेउग्रसेनाभिषेकेऊन नवतोऽध्यायः ८६ ॥

अस्सीवां अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे—वह श्रीकृष्णा बलदेव के संग यादवों से आकीर्णहुई तिस मथुरा पुरीमें सुखसे बसतेभये १ और पवनके शरीर से युक्त और राजलक्ष्मी से शोभित ऐसा वह श्रीकृष्णा रत्नों के खजानों से भूषित तिस मथुरापुरी में बिचरता भया २ और किसी एक समय बलदेव और श्रीकृष्णा दोनोंसंगहुये सांदीपननाम वाले और काशीजी में पढ़ा हुआ और उज्जैन नगरी में बास करने वाला ऐसे गुरुके पास प्राप्त होतेभये ३ और धनुर्वेद अर्थात् धनुष बाण विद्या पढ़नेकी इच्छाकरते भये और फिर वे दोनों अपना गोत्र और अध्यन तिस आचार्य के प्रतिवर्णन करते भये ४ और पश्चात् तिस आश्चर्य से अलंकृतहुये वेदोनों कृष्णा और बलदेव अभिमान

से रहितहोके अपने गुरुकी टहल करनेलगे ५ और वह गुरु तिन्हों को ग्रहणकरताभया और बिद्यादेनेलगा और फिर वे शूरबीर कानों से सब बिद्या सुनके ६४ दिनमें धनुष बिद्या पढ़चुके ६ और चतुष्पाद धनुर्वेद और शस्त्रविद्या और युद्ध विद्या इन सब बिद्याओं को वह गुरु तिनको जल्दही पढ़ाताभया ७ फिर वह गुरु तिन्होंको अति मानुषीबुद्धि चिंतवन करके तिन्होंको आयेहुये देवताओंकी तरह और चंद्रमा सूर्य्यकी तरह मानताभया ८ और उन दोनोंको पर्वणियों के विषे महादेवकी पूजा करतेहुयोंको वह गुरु देखताभया ९ और एक दिन तिस सांदीपन गुरु के प्रति श्रीकृष्ण कृतकृत्य होके यह कहने लगा कि हे महाराज बलदेव के संग हुआ मैं तुम्हारी क्या भेंट देऊं १० ऐसे सुन वह गुरु तिन्हों के प्रभाव को जानके प्रसन्न होके बोला कि मेरापुत्र लवण समुद्र में डूबगयाहै ११ सो मैं उसकी इच्छा करताहूं सोमेरे एकही पुत्रहुआ था वहीसमुद्रमें मगर मच्छने खालिया सो तुम तीर्थयात्रा करके फिर तिसी को ल्यादेवो १२ ऐसे वह श्रीकृष्ण सुनके बलदेवकी सम्मतिमें हुआ यहबोला कि ऐसेही होवेगा पश्चात् तेजस्वी श्रीकृष्ण समुद्रके ऊपर जाके जलके भीतर प्रवेश होताभया १३ फिर वह समुद्र अंजली बांध के अपना दर्शन देताभया फिर तिस समुद्र के प्रति श्रीकृष्ण बोला कि सांदीपन का पुत्रकहांहै १४ तब समुद्रबोला कि पंचजननाम वालामहान् दैत्यहै सो उसने मगर मच्छ रूप धारणकिये वह बालक ग्रसलिया १५ ऐसे सुन के फिर श्रीकृष्ण तिस पंचजन दैत्य को प्राप्त होके फिर तिस दैत्यको मारताभया परंतु तहां गुरुके पुत्र तिसबालक को श्रीकृष्ण नहीं प्राप्त होतेभये १६ और वह श्रीकृष्ण पंचजन दैत्य को मारके तिस शंखको लेतेभये जो कि देवता और मनुष्योंमें पांचजन्यनाम करके प्रसिद्धहै १७ ऐसे तिस दैत्यको मार के फिर श्रीकृष्ण धर्मराज के पास जाताभया पश्चात् धर्मराज भी श्रीकृष्ण को प्राप्त होके बंदना करनेलगा १८ और यह कहनेलगा कि हे महाराज तुम्हारे आनेका क्याप्रयोजनहै और मैं क्याकरूं तब श्रीकृष्णबोले

कि गुरु के पुत्रको देवो १९ ऐसा बचनकहा फिर धर्मराज को कछु उत्तरनहीं दिया तब श्रीकृष्ण धर्मराज के संग युद्धकरता भया फिर धर्मराजको जीत के २० बहुत कालमें मराहुआ गुरुके तिसपुत्रको ले के गुरुके समीप आवताभया २१ पश्चात् सांदीपन गुरुका पुत्रबहुत कालमें मराहुआशरीरसमेत ल्यायाहुआ को देख के तिस आश्चर्य से सबमनुष्योंको विस्मय होताभया २३ और वह श्रीकृष्ण गुरु के अर्थतिस पुत्रकोदेताभया और राक्षस आदिकोंसे तहां गुरुपास लि वाकेपांचजन्यशंख और बहुतसे रत्नभिजवाताभया २४ औरपश्चात् गदा,परिघ,इन्होंके युद्धमें और सबशस्त्रोंके युद्धमें तत्परहुये वेदोनो जल्दहीसबलोकमें प्रधानहोतेभये२५ और जबसांदीपन गुरुकेअर्थ उदारबुद्धिवाले श्रीकृष्णको रत्नोंकेसहितवह पुत्रदेदिया २६ तबचिर कालसे नष्टहुयेपुत्रको प्राप्तहोके प्रसन्न होगया और बलदेव और श्रीकृष्ण को पूजित करताभया२७ पश्चात् वे दोनों शस्त्रविद्या पढ़ के औरगुरुसे आज्ञाले के फिर मथुरापुरीमें आतेभये २८ औरफिर उग्रसेन आदिक सब यादव प्रसन्न मनसे युक्तहुये आवतेभये २९ और प्रजाकी पंक्तियां और मंत्री और पुरोहित और बालक वृद्धज-वान सब स्त्रियां येसब पुरीके बाहर आतेभये३० और भेरीआदिक अनेकबाजे बाजतेभये और श्रीकृष्णकी स्तुति करनेलगे और गली पताका इन्होंमें फूलोंकी माला युक्तहोगई और शोभाहोतीभई ३१ और श्रीकृष्णके आनेमेंसब अतिप्रसन्न ऐसे होतेभये कि जैसे इन्द्रके उत्सवमें होवें तैसे ३२ और प्रसन्नहुये गायकजन राजमार्गोंमेंगा-यन करनेलगे और स्तुति आशीर्वाद करनेलगे और यादवोंको प्र-सन्न करनेलायक गाथा कहतेभये ३३ इस प्रकार श्रीकृष्ण और बलदेव दोनोंभाई लोकमें प्रसिद्ध हुये अपने पुरमें निर्भय हुये सब बंधुओंकेसंग क्रीड़ाकरतेभये ३४ और तहां कोई दीननहींरहा और कोई मलीननहींरहा और कोई दुःखीचित्त नहींरहा ऐसाप्रकाश श्री कृष्णसे होताभया ३५ और श्रेष्ठवचनोंवाली सबकी अवस्थाहोतीभई औरगौ अश्वहाथी मनुष्य स्त्री येसब अपने२सुखको प्राप्तहोतीभई३६

और श्रेष्ठवायु बहनेलगी और धूलसे रहित दशोंदिशा होतीभईं और सब स्थानोंमें देवता प्रसन्न होतेभये ३७ और जो २ चिन्ह संसारमेंसत युगमें प्रकाशित होतेभये वहीसबचिन्ह श्रीकृष्णाको मथुरामें प्राप्तहोनेसे होतेभये ३८ और पश्चात् श्रेष्ठकालमें वहश्रीकृष्ण हरिनामवाले अश्वसे युक्तरथमें बैठके मथुरापुरीमें प्रवेशहोतेभये ३९ और तिसके प्रवेश होतेहुये सब यदुओंकेगण बैरियोंके नाशक श्रीकृष्णके पीछे२ गमन करतेभये ४० पश्चात् वे यदुनन्दन प्रसन्नहुये बसुदेवकेघरमें प्रवेश होतेभये जैसे चन्द्रमा और सूर्य अस्ताचल पर्वतमें प्रवेश होवें तैसे ४१ और पर तेजसे युक्त और चन्द्रमा और सूर्यसरीखे रूपवाले ऐसे अपने शस्त्रोंको घरमें रखके फिर इच्छा पूर्वक विचरतेभये ४२ और फल पुष्प इन्होंसे नयेहुये विचित्र बगीचोंमें ४३ वे यदुओं में श्रेष्ठ,बसुदेवकेपुत्र आनंदसे विचरतेभये औरवे दोनों महात्मा यादवों से युक्तहुये रेवा नदीकेसमीप अनेक नदियोंके किनारोंविषे बिचरतेभये ४४ और कमलों के पत्तों से समृद्धिवाली और काक सरीखी चोंचवाले कारंड संज्ञकजीवोंसे युक्त ऐसी तिननदियोंकेविषे बिचरतेभये और एकसी रचनावाले और सुन्दर मुखवाले ४५ वे दोनों उग्रसेन के अनुचर हुये कछुककाल मथुरामें बास करते भये ४६ ॥

इति श्रीमहाभारते हरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायां कृष्णप्रत्यागमने नवतितमोऽध्यायः ९० ॥

इक्यानबेवां अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे बलदेवजीकेसाथ बलवाले श्रीकृष्णयादवों से आकीर्ण मथुरापुरीमें सुखपूर्वक बसतेभये १ पीछे यौवन देह को प्राप्त होके प्रकाशित शोभासे युक्त ऐसे श्रीकृष्ण बन आदि संयुक्त मथुरापुरी में विचरनेलगे २ तब कितनेकालमें राजाओं का राजा जरासंध अपनी पुत्रियोंकेद्वारा कंसकी मृत्युको सुनता भया ३ तब बहुतजल्द बहुतसी षडंगसेना से युक्त प्रताप वाला जरासंध क्रोध को प्राप्तहो यादवों के मारने के अर्थ और कंसका बदला लेने के

अर्थ मथुरापुरीके समीप आवताभया ४ और हे जनमेजय पुष्टरूप कटि और चूंचियोंको धारण करनेवाली और अस्ति प्राप्ति इननामों से विख्यात ५ ऐसी दो अपनी पुत्रियोंको जरासंध राजा पहलेकंस के अर्थ देताभया है तब उग्रसेन पिताको बंधमें प्राप्तकर ६ और ज-रासंधके आश्रय से यादवों का अनादर कर ७ इन पूर्वोक्त दोनों रानियों के संग आनंदित होताभया और वसुदेवजी ज्ञातिकार्य की सिद्धिके अर्थ उग्रसेनके हितमें सदारहा ८ तिसको कंसनहीं सहता भया पीछे रामकृष्णके बलसे जब कंस मारागया ९ तब भोज वृष्णि अंधक इनसबोंकी सलाह से उग्रसेन राजा बनाया गया १० पीछे प्रियरूप अपनी पुत्रियोंसे कंसकी मृत्युको श्रवणकर मथुराकेसमीप में आके क्रोधसे अग्नि के समान जलता हुआ ११ ऐसा जरासंध उद्योग करनेलगा और प्रतापसे नम्रहुये बहुतसेराजे और मित्रऔर ज्ञातिके पुरुष १२ येभी बहुतसी सेनाओंको लेकर जरासंधके संग मथुराके समीप में प्राप्तहुये और महा वीर्य्यवाले और जरासंध के अर्थ प्यार करनेवाले १३ और कारुष दंतवक्र अतिबीर्य्य वाला शिशुपाल और कलिंगदेश का पति पौंड्र १४ आहुति कौशिक और भीष्मक का पुत्र रुक्मी १५ वेणुदारी श्रुतर्वा क्राथ अंशुमान् १६ अंगराज बंगराज कौशल्य काशिराज दशार्णदेशका राजा १७ सुहृद देशका राजा विक्रांत जनक मद्रराज त्रिगर्तकाराजा १८ शाल्वराज विक्रांतदर पवनदेशका राजा भगदत्त १९ सौ बीरराज शैब्य बलवा-लोंमें उत्तम पांड्यराजा गांधारदेशका राजा सुवल नग्नजित् २० काश्मीर का राजा गोनर्द दरददेश का राजा और महा बलवाले और दुर्योधन आदि नामोंसे विख्यात ऐसे धृतराष्ट्र के पुत्र २१ ऐसे ये भी और अन्य भी बहुत से महारथी राजे श्रीकृष्ण से बैरकरने वाले २२ जरासंध के अर्थ सहायकरनेको अपनी अपनी सेनाको ले मथुरापुरीके समीप में प्राप्तहो मथुराको रोकतेभये २३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांमथुरोपरोधेजरासंधोद्योगे एकनवतोऽध्यायः ९१॥

बानबेवां अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे मथुराकेसमीपमें प्राप्तहुये उनराजाओंको मानके सब वृष्णिवंशके मनुष्य श्रीकृष्णको अगाड़ीकर देखतेभये१ तब प्रसन्नमनवाला श्रीकृष्णबलदेवजीसे कहनेलगा कि देवताओं का प्रयोजन आपहीआप जल्द बनताहै इसमें संशय नहीं२ क्योंकि जरासंध राजा समीपमें प्राप्तहुआ और वायुके समान वेगवालेरथों कीध्वजा दीखतीहै ३ और जीतनेकी इच्छावाले राजाओंके चंद्रमाके समान श्वेतछत्र प्रकाशितहोरहेहैं और बड़ी आश्चर्य्य कीबातहै४ कि इन राजाओंके छत्रोंकीपंक्ति हमारे सन्मुख वर्तरहीहैं जैसे आकाशमें हंसोंकीपंक्ति५ और निश्चय समयपै जरासंधराजा हमारेसे युद्धकरने के अर्थ प्राप्तहुआहै सो युद्धमेंयह प्रथमअतिथि अर्थात् अभ्यागतहै६ इसका युद्धकेही द्वारा सन्मानकरना चाहिये और हे आर्य्य जब इन सब राजाओंने इसजगह कृपाकरी तबयुद्धका आरंभकरना उचितहै परंतु प्रथम सेनाको देखो ७ ऐसे कहके युद्धकी वांछावाले श्रीकृष्ण जरासंधके पासजानेकी इच्छा करके सेना को देखनेलगे ८ तब श्रीकृष्ण सब राजाओंको देखता हुआ और मंत्रको जाननेवाला अपने आत्माहीसे आत्माके अर्थ हदामें वचन कहनेलगा ९ कि राजाओं के मार्गमें स्थित ये सब राजे युद्धकर्ममें विनाशको प्राप्तहोवेंगे १० और मृत्युसे प्रोक्षितकिये इन राजाओंको मैं मानताहूं और इन्हों के स्वर्गमें जानेकेयोग्य शरीर चमकतेहैं ११ और इन राजाओंको सेना समूहसे पीड़ितहुई और भारसे परिश्रांत ऐसी पृथ्वी स्वर्गमें गईथी १२ अब इन्होंके मरजानेसे अल्पकाल मेंही भारसेरहित पृथ्वीमंडल होजावेगा १३ तब वैशंपायन कहनेलगे सब राजाओंका स्वामी जरासंध बहुतसे राजाओंके दलोंकेसंग और उग्रघोड़ों से संयुक्त१४ संग्रामिक रथोंसे और बड़े २ घंटोंवाले और बद्दलोंके समान और बड़े २ पीलवानोंसे युक्त और युद्धमें कुशल ऐसे हाथियोंकरके १५ और मेघोंकेसमान कांतिवाले घोड़ोंकरके और तलवार और ढाल

आदिको धारणकरनेवाले प्यादाओंसे १६ ऐसे चारप्रकारकी सेना-
ओंसे संयुक्त और मेघोंके शब्दकेसमान शब्दकरतेहुये १७रथोंकरके
और मदसे भीजे हुये हाथियों करके और हिनस्ते हुये घोड़ों करके
और पुकारतेहुये प्यादोंकरके १८ सब दिशा पुरी वन इन्होंको श-
ब्दायमान करताहुआ और समुद्रकेआकार सेनावाला ऐसाजरासंध
राजादीखताभया १६ और गर्वायमान योद्धाओंसेयुक्त और अतिशब्द
सेयुक्त ऐसी राजाओंकी सेना मेघकेसमान प्रकाशित होतीभई २०
और पवनकेसमान वेगवाले रथोंकरके और मेघके समान हाथियों
करके और अतिवेग संयुक्त घोड़ों करके और आकाश चारियों के
समान प्यादोंकरके २१ मिलीहुई सबसेना प्रकाशित हुई २२ तब
अतिबल वाले जरासंध आदि सब राजे पुरीको घेरके भीतर प्रवेश
करने के अर्थ २३ पराक्रम करने लगे और जैसे शुक्लपक्ष की पूर्ण-
मासी को जैसा समुद्र का रूपहोता है तैसे २४ तब प्रवेशकरनेके
अर्थ उससेनाका हुआ और रात्रिमात्र व्यतीत होनेपै सब राजे खड़े
होके पुरी में प्रवेश होनेके अर्थ प्राप्त हुये २५ और यमुना नदीके
समीपमें सलाह करनेलगे २६ तब सब राजाओंका ऐसा उग्रशब्द
होने लगा कि जैसे प्रलयकालमें समुद्रों का २७ और वेतोंको हाथ
में धारण करनेवाले और सुंदर पगड़ी आदिको धारण करने वाले
ऐसे वृद्ध मनुष्य राजाकी आज्ञासे मतशब्दकरो ऐसे कहतेहुये बिच-
रनेलगे २८ तब शब्दसे रहित संपूर्ण सेना होतीभई २६ तब तिस
समयमें बृहस्पति के समान जरासंध महद्वाक्य कहने लगा ३०
कि जल्द राजाओंकीसेना पुरी के समीपमें प्राप्तहोनी चाहिये और
चारोंतरफ़से यह मथुरापुरी मनुष्यों के समूहोंसे रोकनीचाहिये ३१
और अश्मयंत्र युक्तकरने चाहिये और मुद्गर फेंकने चाहिये ३२
और भाले ऊपरको फेंकनेचाहिये और करुसी कुदाल आदिसे इस
मथुरापुरीको खोद के सब जगहसे पृथ्वीको एकसी करनेकी इच्छा
करो ३३ और युद्धमार्गको जाननेवाले राजे समीपमें प्राप्तहोजाओ
और अबसेलगायत मेरीसेनासे पुरीरोकीजावेगी ३४जबतकगोपरूप

वाले और वसुदेव के पुत्र और संकर्षण कृष्ण इननामोंसे विख्यात इन दोनोंको पैने वाणोंसे मैंमारूं तबतक ३५ और ऐसे इस पुरीमें टंकार शब्दकरो कि आकाशमें भी जिसका बहुतसा शब्दहोवे और मेरेसे शिक्षितकिये ३६ और मद्रकलिंग देशकाराजा चेकितान बाह्लीक ३७ और कश्मीरका राजा गोनर्द करुख देशका राजा और किंपुरुषोंकाराजा द्रुम और पर्वतका राजा अनामय ३८ इननामों वालेराजे इस मथुरापुरी के पश्चिम के द्वारको तत्काल रोको और पौरद वेणुदारि वैदर्भ सोमक ३९ और भोजदेशका मालिक रुक्मी और मालव देश का राजा सूर्याक्ष और विंद अनु बिंद इन नामों वाले उज्जीनके राजे और अति वीर्यवाला दंतवक्र ४० छागली पुरुमित्र विराटराजा कौशाम्ब्य मालव शतधन्वा बिदूरथ४१ भूरिश्रवा त्रिगर्त बाण पंचनद इननामों वाले और दुर्गको सहने वाले ऐसे राजे इसपुरी के उत्तर द्वारको रोको ४२ और उलूक कैतवेय और अंशुमान्का पुत्रवीर ४३ एकलव्य बृहत्क्षत्र क्षत्रधर्मा जयद्रथ उत्तमौजा शैल्य कैरव सवकैकय ४४ वैदिश वामदेव साकेत सिनिपति इन नामोंवाले सब राजेपुरीके पूर्वले द्वार को रोको ४५ और शिशुपाल दरद और मैं ये तीनों सावधान हुये मथुरापुरी के दक्षिण द्वारको रक्षाकरेंगे ४६ ऐसे यह सेनाओं से संवेष्टितपुरी ४७ बज्र के पातकेसमान उग्रभयको प्राप्त होवेगी और गदाधारी गदाओंसे और परिघधारी परिघोंसे ४८ और अनेकप्रकार के शस्त्रधारी शस्त्रोंसेइस पुरीका दारणकरो और अबहीं समानभूमिसेसंयुक्त राजाओंकेहाथसे होजावेगी ४९ ऐसे चारप्रकारकी सेनाको पुरीके चारोंतरफ सावधानकर५०सब राजाओंकेसंग क्रोधको प्राप्तहुआ जरासंध यादवों के सन्मुख प्राप्तहुआ और अपनी सेनाओंसे युक्त और प्रहार करने में चतुर ऐसे यादवभी जरासंधके सन्मुख प्राप्तहुये ५१ तब थोड़ेसे यादवोंका बहुतसे राजाओंकेसंग देवासुर युद्धकेसमान घोरयुद्धहोने लगा जिसमें बहुतसेरथ और हाथियोंका नाश होताभया ५२ तब मथुरापुरीसे बाहर निकल बलदेव और श्रीकृष्ण वस्त्र आदियों को

पहन रथमें स्थितहो राजाओंकी सेनामें बिचरनेलगे जैसे समुद्रमें क्रोधितहुये दो२ मगरमच्छ५३।५४तब युद्धकरनेकेवक्त बलदेव और श्रीकृष्णजीकी यह मति उपजी कि दिव्यरूप और पुराने जो हमारे शस्त्रहैं उन्होंको हम ग्रहणकरैं ५५ तब उस युद्धमेंसुंदर और दिव्य रूप और प्रकाशित और दिव्यफूल मालाओंको धारण करने वाले ५६ और आकाशमें बिचरने वालोंको दुःखदेनेवाले और राजाओं के मांसोंको खाने को तृषित ५७ ऐसे शस्त्र और संवर्त्त कनाम हल और सौनंदनाम मूसल और धनुषोंमें श्रेष्ठ शार्ङ्ग नामवालाधनुष ५८ और कौमोदकी नामवाली गदा ऐसे ये चार तेजरूप विष्णुके शस्त्र आकाशसेपड़ेतबबलदेवजीहलऔरमूसलकोग्रहणकरतेभये५९।६० और श्रीकृष्ण बद्दलोंकेसमान शब्दवालाशार्ङ्ग धनुष और कौमोदकी गदाको धारण करतेभये ६१ ऐसेराम और गोबिन्द शत्रुओंके संग युद्धकरतेभये ६२ पीछे उन शस्त्रोंको ग्रहणकरके शत्रुओंकेअर्थपराक्रम दिखातेहुये ६३ देवताओंके समान दोनों बसुदेवकेपुत्र बिचरनेलगे ६४ पीछे बलदेवजी कोपित शेषनागके समान हलको उठा के युद्धमें बिचरनेलगा जैसे शत्रुओंकेअर्थ धर्मराज ६५ तब क्षत्रियों के रथोंके समूहको ६६ और हाथियोंको हलसे खैंचके मूसलके आक्षेपसे ताड़नादेकर युद्धमें शत्रुओं को मथनेलगा ६७ तबबलदेवजी के हाथसे मरतेहुये क्षत्रियों के गण भयभीत होके युद्धसे जरासंध के समीपमें प्राप्तहुये ६८ तबक्षत्रियधर्ममें व्यवस्थित जरासंध उनक्षत्रिय गणोंसे कहनेलगा तुम्हारी क्षत्रिवृत्तीको धिक्कारहै और तुमयुद्धमेंकायरहो ६९ और यहलिखाहै कि युद्धसे भागने वालेको और रथसेरहित होभागनेवालेको भ्रूण हत्यालगतीहै ऐसे बुद्धिमान् कहतेहैं७० सो किससे भयभीत हुये तुम भाग के आयेहो अब मेरे वाक्यसे प्रेरितकिये सब युद्ध के अर्थ गमनकरो ७१ अथवारथमें बैठ देखो कि जबतक मैं इनदोनों गोपोंको यमक्षयको प्राप्तकरूं ७२ तब तक तब पीछे जरासंधसे प्रेरित सबक्षत्रिय प्रसन्नहो के बाणोंको छोड़तेहुये युद्धकरनेको व्यवस्थित हुये ७३ अर्थात् सोने के मुकुटों वाले घोड़ों

से संयुक्त रथोंमें और बद्दल के समान शब्द करनेवाले और पील वानोंसे प्रेरित ऐसे हाथियों पै स्थितहो के ७४ कवच पताका शस्त्र ध्वजा धनुष तूणीर भाला क्षत्र इन्हों के धारण करनेवाले और सुंदरचवरोंसे वीजित ऐसेराजे युद्धमें शोभायमान होनेलगे ७५ और बड़ी गदा और फेंकने के मुगदर इन्हों से युद्ध करनेलगे ७६ इसी अंतरमें देवताओं के आनंदको वढ़ाने वाला श्रीकृष्ण गरुड़ध्वज से संयुक्त रथमें स्थितहो ७७ जरासंधके सन्मुख प्राप्तहोके आठ बाणों से जरासंध को और पांच पैनेबाणोंसे सारथी ७८ और घोड़ों को वेधताभया तब कष्टगत जरासन्धको जानके चित्रसेन महारथी ७९ और सेनाका पति कैशिक तीन बाणोंसे कृष्णको और तीन बाणोंसे बलदेवजीको वेधताभया ८० तब बलदेव भालाकरके युद्धमें कैशिक के धनुषके दो टुकड़ेबना पीछे वेगसे बाणों की वृष्टिकर शत्रुओं को मर्द्दन करनेलगा ८१ तब सावधान होके चित्रसेन नौ बाणोंसेबल-देवजीको वेधता भया ८२ और कैशिक पांचबाणों से बेधता भया और जरासंध ७ बाणोंसे बेधताभया पीछे श्रीकृष्ण तीन २ बाणोंसे ८३।८४ चित्रसेन कैशिक जरासंध इन्होंको भेदन करताभया और बलदेवजी इन तीनोंको पांच पांच बाणों से बेधनकर चित्रसेन के रथके स्वामियोंको मारताभया ८५ और भालासे फिर चित्रसेन के धनुषको तोड़ताभया तब चित्रसेन गंदाको धारणकर ८६ बलदेव जीको मारनेके अर्थ भागा तब चित्रसेनको मारनेके अर्थ ८७ बाणों को छोड़तेहुये बलदेवजी के धनुषको जरासंध तोड़के और गदासे बलदेवजीके घोड़ोंकोमार क्रोधसे ८८ बलदेवजीकी तरफभागा तब मूसलको धारणकर बलदेवजी जरासंधकी तरफभागे ८९ तब आ-पसमें दोनोंका उग्र युद्ध होनेलगा तब बलदेव जीके संग युद्ध करते हुये जरासंधको देख चित्रसेन ९० अन्य रथमेंबैठ जरासंधकोसहाय करनेलगा तब बहुतसी सेना और बहुतसे हाथियोंकेसमूह ९१ जरा-संध और बलदेवजीके बीचमें प्राप्तहोगये तब बहुतसी सेनासे परि-वृत जरासंध ९२ रामकृष्ण के अग्रभाग में स्थित भोजों कोपीड़ित

करनेलगा तब क्षुभितरूप समुद्र ६३ केशब्दकेसमान दोनों सेनाओंमें उग्रशब्द होनेलगा और बांसलोभेरी मृदंगशंख येभी हजारहोंदोनों सेनामें बजनेलगे ६४ और हाथी घोड़ाओंके खुरोंसे उठीहुई धूलिभी आकाश में चढ़ती भई तब महा शस्त्रोंवाले और धनुषों को धारण करनेवाले ६५ ऐसे शूरवीर आपसमें सन्मुख गर्जतेहुये तहां स्थित रहे और रथवाले और सादी और हजारहोंप्यादे ६६ पर्वतकेसमान हाथी पे सब चारों तरफसे पड़नेलगे ऐसे जरासंधकेपीछे प्राणोंको त्यागनेलगे ६७ तब शिनि अनाधृष्टि बभ्रु विपृथु राहुक ६८ येयादव बलदेवजीको अगाड़ीकर और अपनी आधी सेनाकोले ६९ शिशु-पाल और जरासंधउतरके राजेशल्य शाल्व इनआदिसे रक्षितदक्षिण पक्षको प्राप्तहुये १०० और शरोंकीवर्षा करतेहुये और जीवनकोनहीं चाहतेहुये ऐसे अवगाह पृथु कंक शतद्युम्न बिदूरथ १०१ येयादव श्रीकृष्णको अगाड़ीकर और आधी सेनाकोले भीष्मक रुक्मी १०२ देवक मद्रेश्वर प्राच्य और दाक्षिणात्य इन्होंसे रक्षितपश्चिम पक्षको प्राप्तहुये १०३ तिन्होंका आपसमेंशक्तिरुष्टि प्राशबाणइन्होंको छोड़-तेहुयेवज्रके समानशब्द होनेलगा १०४ और सात्यकिचित्रक श्याम युयुधान राजाधिदेव मृदर स्वफल्क १०५ सत्राजित चित्रसेन ये भी यादव बहुतसी सेनाओंको लेके शत्रुके वायें पक्षको प्राप्तहुये १०६ इस पक्षको मृदर वेणुदारि १०७ प्रतीच्य और धृत राष्ट्र के पुत्र ये सब उस वायें पक्षको जरासंध की तरफ से पालतेभये १०८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्व्वभाषायां मथुरारोधेद्विनवतोऽध्यायः ९२ ॥

तिरानबेवां अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे—जरासंधकी आज्ञा माननेवाले राजाओं के संग वृष्णियोंके घोर युद्ध होनेलगे १ सो रुक्मिकेसंग श्रीकृष्णका और भीष्मककेसंग उग्रसेनका और क्राथकेसंग बसुदेवका औरबभ्रु-केसंग कैशिकका २ और गदकेसंग शिशुपालका और शम्भुकेसंगदन्त वक्रका ऐसे इन्होंका और अन्यभी वृष्णिवीरोंका अन्यराजाओं के

संग ३ सत्ताइस दिनोंतक दारुण युद्धरहा ४ अर्थात् हाथियोंसे हाथी और घोड़ोंसेघोड़े और प्यादोंसे प्यादे और रथोंसेरथ और योद्धाओं से योद्धे ऐसे युद्ध करतेभये ५ और जरासंधके संग बलदेवजी का समागम हुआ जैसे वृत्रासुरसे इन्द्रका ६ पीछे श्रीकृष्ण रुक्मिणीकी तरफ़ ख्यालकर श्रीकृष्ण रुक्मको नहीं मारतेभये अर्थात् प्रकाश-मान अग्नि और सूर्यकेसमान और सर्पोंके विषकेसमान ७ ऐसेबाणों को शिक्षासे श्रीकृष्ण निवारण करतेभये ८ और बाकीदोनों सेनाओं का मांसलोहूकी कीचरवाला परिक्षयहुआ और चारों तरफसे बहुत से कवंध अर्थात् शिरों से रहित योद्धे उठतेभये ९ और रथमें स्थित बलदेवजी सर्पों के समान बाणों को छोड़ते हुये जरासंधके सामने प्राप्त हुये १० और जल्दी चलनेवाले रथमें स्थित जरासंध राजा बलदेवजी के सन्मुख स्थितहुआ ११ तब ये दोनों आपसमें अनेक प्रकारके अस्त्रोंसे बिधतेहुये घोरशब्द करतेभये और दोनोंके शस्त्र टूट गये और दोनों के रथ टूटगये और दोनों के घोड़े और सारथी मरगये १२ तब दोनों अपनी अपनी गदा को ग्रहणकर आपस में सन्मुखपृथ्वी को कंपावतेहुये भागनेलगे १३ तब पर्वतकेशिखरोंके समान दिखाई दिये तब इन दोनोंको देखनेके अर्थ सब योद्धाओं के युद्धशांत होगये १४ और ये दोनों गदा युद्धमें परम शिक्षित और संसारमें विख्यात और महाबलवाले १५ उन्मत्त हस्तियोंकी तरह आपसमें युद्धकरतेभये तब देव गंधर्व सिद्ध महर्षि १६ अप्सराओं के गण ये हजारोंचारोंतरफ से प्राप्तहोनेलगे अर्थात् देव यक्षगंधर्व महर्षि इन्होंसे अलंकृत १७ आकाश अधिक शोभायमानहुआ जैसे तारागणोंसे आकाश तब बामें मंडलको प्राप्तहो बलदेवजीके सन्मुख महाबलवाला जरासंध प्राप्तहोनेलगा १८ और दाहिने मंडल को प्राप्तहो जरासंधके बलदेव प्राप्तहुआ तब गदायुद्धमें चतुरदोनों दशों १९ दिशाओंमें दांतोंकरके हाथियोंके समान शब्द करनेलगे तब बलदेवजीकी गदाका निपातमें बज्रकेसमान शब्द २० सुना और जरासंधकी गदाकेनिपातमें पर्वतके फटनेकीसमान शब्दसुना

और जरासंधके हाथसे मारीहुई गदा गदाको धारणकरनेवालोंमें श्रेष्ठबलदेवजीको नहीं कंपातीभई २१ और बलदेवजी की गदाके वेगको धीरजतासे और शिक्षासे जरासंध सहताभया २२ ऐसेतिस युद्धमें महाबलवाले बिचरतेहुये २३ अनेकप्रकारके मंडलोंकोकरनेलगे पीछे बहुतकाल तक युद्धसे परिश्रांतहुये दोनों अलगअलग स्थितहोतेभये २४ पीछे एक मुहूर्त्त तक स्वस्थहोके फिर आपसमें युद्धकरनेलगे अर्थात् बहुतकालतक दोनों समान युद्धकरतेभये २५ और युद्धमें को ऐसा भी बिमुख न हुआ तब बीर्य्यवाले बलदेवजी गदायुद्धमें बिशेष शिक्षावाले जरासंधको देख २६ गदा को त्याग उत्तम मूसलको ग्रहणकरतेभये तब घोररूप मूसलको उठाकेक्रोध से युद्धमें उद्योग करनेलगे २७ तब आकाशबाणी ऊंचेस्वरसे बलदेवजीकेप्रति बोलनेलगी २८ हे राम तेरे हाथसे मरनेलायक यह जरासंध नहीं है इसवास्ते खेदकरके जरासंध के अर्थ उद्योग मत करो २९ इसको मारनेवाला मैंने रचदियाहै इसवास्ते अच्छीतरह शांतिकरो और थोड़ेसेही कालमें यह जरासंध माराजावेगा ३० तब इस बचन को जरासंध सुनके अप्रसन्न होताभया तब बलदेव जी जरासंधके अर्थ प्रहार नहीं करताभया ३१ ऐसे जरासंध बलदेव औरसबराजे युद्धकोत्यागतेभये तबदारुणरूपयुद्धशांतहुआ ३२ तब दीर्घकाल में पराजित किया जरासंध राजा अपने देशोंकोचला तब सूर्यके अस्तहोजानेपै महाबलवाले भी यादव जरासंधको गैल नहीं भागे ३३ किंतु अपनीसेनाके संग प्रसन्नहुये और श्रीकृष्ण से रक्षित ऐसे यादव मथुरापुरीमें प्रवेश करतेभये और जितने आकाशसे हथियार वर्षेथे वे सब आपहोआप अंतर्हित होतेभये ३४ तब ऐसे अप्रसन्नरूप जरासंध अपनेपुरको गया और जरासंध के अर्थ प्रीति करनेवाले सब राजे अपने अपने देशोंको जातेभये ३५ तब ऐसे जरासंधको जीतके सब यादव जरासंधको जीताहुआ नहीं मानतेभये क्योंकि हे जनमेजय वह राजा जरासंध अतिबलवाला था ३६ और अठारहवार बीसबीस अक्षौहिणी सेनाको लेके यादवों

के संग युद्ध करताभया ३७ परंतु यादवोंके महारथी उसको मारनेको समर्थ नहीं होतेभये ३८ परंतु इस जरासंध राजाको जीतके वृष्णिकुलके महारथी सुखपूर्वक बसनेलगे ३९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांमथुरारोधेजरासंधापयाने नवतोऽध्यायः ९३ ॥

चौरानबेवां अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे बलदेवजी के संग अतिबलवाला श्रीकृष्ण यादवोंसे आकीर्ण मथुरापुरीमें सुखपूर्वक बसताभया १ पीछेकितनेक कालमें प्रतापवाला जरासंध राजा मरेहुये कंसको यादकर २ सत्तरहवार मथुरामें प्राप्तहो युद्धकरताभया ३ परंतु यादवोंकेहाथ सेमरा नहींपीछे अठारहवींवार चारप्रकारकी सेनासेसंयुक्त४ जरासंध राजा युद्धकरनेको आया कृष्णको मारने के वास्ते तब इन्द्रके पराक्रमके समान पराक्रमवाला ५ जरासंध के आगमन को सुन जरासंधके भयसे पीड़ितहुये ६ सब यादव आपसमें सलाहकरने लगे तब महातेजवाला और नीति शास्त्रमें कुशल ऐसा विकद्रु ७ उग्रसेनके सुनतेहुये कमलके पत्तोंके समान नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण के अर्थ कहनेलगा हे गोबिंद इस कुलकी उत्पत्ति को श्रवण करो ८ और प्राप्तकाल को मैं कहताहूं जो युक्तजानो तो मेरे बचनकोकरो ९ इसयादव वंशकी उत्पत्ति मेरेअर्थ पहले वेदव्यासजीनेकही है १० और मनुके वंशमें इक्ष्वाकुकापुत्र और इन्द्रके समान पराक्रमवाला ऐसा हर्य्यश्व राजाहुआ ११ तिसके मधुदैत्यकीपुत्री मधुमती नाम से विख्यात ऐसीरानीहुई जैसेइन्द्र के इन्द्राणी १२ और यहरानी यौबन अवस्था से संयुक्त और रूपमें अद्भुत और राजाको प्राणों सेभीप्यारी १३ और कमलके समान नेत्रोंवाली और रतिकेसमान भोगकरनेवाली और सुंदर कटी तटवाली और पतिब्रता के ब्रतको धारण करनेवाली १४ ऐसीरानी हर्य्यश्व राजाके संगभोग करती भई जैसे आकाशमें रोहिणी चंद्रमाकेसंगसो एकसमयमें ज्येष्ठभ्राता

ने१५यह हर्य्यश्वराज्य से अलग करदिया अर्थात् अयोध्यापुरी को त्यागताभया तबअल्प परिवार से सहित अपनी रानीके संगबन में बसताभया१६ तबभ्रातासे निकासेहुये हर्य्यश्व राजाको रानी कहने लगी१७ हेनृपश्रेष्ठ राज्यसम्बंधी वांछाकोत्यागो और मधुनामवाले मेरेपिता के स्थानको हम दोनोंगमन करेंगे १८ तहांपुष्प फलवाले वृक्षों से युक्त और रमणीय मधुवन है तहां स्वर्ग के समान रमण करेंगे १९ और मेरेपिता और माताको तू अतिप्रियहै और मेरेसेतेरा अतिप्यार होनेसे मेरेलवण नामवाले भ्राताको तू अतिप्रिय है २० इसवास्ते तहांगमनकर नंदनबनमें अप्सराओं की तरह हमक्रीड़ा करेंगे २१ तेरे अभिमानी भ्राता को त्यागदेवेंगे २२ और हमारा बैरी राज्य मदसेमत्त ऐसेतेरे भ्राताको और पराश्रय रूप इसगर्हित बासको धिक्कार है २३ ऐसे कहनेसे रानी का बचन राजाको प्रिय लगा तब कामिनीरूप २४ अपनीभार्याके संग कामीरूप राजामधु-पुरमें प्राप्तहुआ २५ तबदैत्योंका पति मधुने सन्मानपूर्वक राजाका सत्कार किया २६और यहकहा कि हे हर्य्यश्व पुत्रआपकाआगमन सफलहो और तेरेको देखके मैं प्रसन्न हुआहूं और इस मधुबनके बिना और मेरासंपूर्ण राज्यजो है सो तेरे अर्थदेताहूं २७ हे राजेंद्र आप यहीं बासकरो और इस मधुबनमें मेरापुत्र लवण तेरीसहाय करेगा २८ और तेरेशत्रुओंको ग्रहणकरनेमें मदतकरेगा इसवास्ते समुद्रके अनूपदेश आदि से भूषित २९ और गौओं से समृद्ध और आभीररूप मनुष्योंसे विशेष करके युक्त और रत्नलक्ष्मीसेयुक्त ऐसे सुंदर देशको पालनाकर और तहांबसनेमें महत् गिरिपुरतेराकिला होवेगा ३० और आनर्त्त नामसेबिख्यात तेरादेशहोवेगा और काल के अनुसार राजाकेवृत्तको प्राप्तहोके बसतारह ३१ और ययातिका वंशभीतेरे यादवबंशमें मिलजावेगा ३२ और सोमबंश के पीछेतेरा वंशविख्यात होवेगा और इसदेशको ३३ मैं तेरेको देके तपकेअर्थ वरुण के स्थान रूपसमुद्र में जाऊंगा और लवणको सहायता से इसदेशको ३४ अपने वंशकी वृद्धिकेअर्थ तू पालतारह तब तिसपुर

को हर्य्यश्वराजा प्रतिग्रहण करताभया ३५ तब मधुदैत्य तपकरने को समुद्रमें गया और महातेजवाला हर्य्यश्वराजा दिव्यरूप तिस पर्वतमें बसनेके अर्थ पुरमें प्रवेश करताभया ३६ तब गोधनसे युक्त और आनर्त्त नामसे विख्यात ऐसावह समृद्धरूपदेश अल्पही काल में हुआ ३७ तबप्रजा को आनंद देनेवाला हर्य्यश्व राजा राजधर्म रूपयशसे उसदेशकोपालनेलगा और बढ़ानेलगा ३८ तबराज्यवृत्त से हर्य्यश्व राजा शोभित हुआ और अच्छे बर्तावसे और नम्रता से हर्य्यश्वराजा ३६ अपने कुलकेयोग्य शोभाको प्राप्तहुआ ४० पीछे हर्य्यश्व के मधुमती रानीमें महायशवाला और महातेजवाला ४१ और नक्कारके समान शब्द करनेवाला और राजाओं के लक्षणों से संयुक्त और बैरियोंसेजीतमें नहींआनेवाला और पृथ्वीकापतिऐसा यदु पुत्रहुआ ४२ और दशहजार वर्षतक राज्यकर हर्य्यश्व राजा धर्मकरके मृत्युको प्राप्तहो स्वर्गमें प्राप्तहुआ ४३ तब दीनता से रहित आत्मावाला और सूर्यकेसमान प्रकाशित ऐसा यदु पिताके मरनेके बाद राज्यसिंहासन पैबैठा ४४ और चोरोंके भयसे रहित इसपृथ्वी को इन्द्रके समान तेजवाला यदुशिक्षित करनेलगा ४५ जिसयदु के नामसे यादव बंशकहाताहै पीछे एकसमय में अपनी स्त्रियोंके संगसमुद्रमें यहराजा जलक्रीड़ाकरनेलगा ४६ जैसेतारोंके संगचंद्रमा तब समुद्र के जलमें तिरनेकी इच्छा करके वेगसे कूदने लगा तबधूम्रवर्ण नामसे विख्यात ४७सर्पराजने खैंचके अपने सर्प पुरमें प्राप्त किया ४८ तब मणियों से जटित स्तंभ और गृह द्वार जिसमें और मोतियों से विभूषित और शंखों के समूह से आकीर्ण और रत्न के समूहों से बिभूषित ४९ और मूंगा के समान अंकुर पत्रआदि से संयुक्त वृक्षों से शोभित और सर्पों की नारियोंके समूह से व्याप्त ५० और सोना और चंद्रमा के तेजके समान मध्यमें भा-समान ऐसे सर्पराज के पुरको समुद्र में यदुराजा देखताभया ५१ और उसपुरमें स्वस्थ होके प्रवेश करताभया ५२ तब मणियों से जटित और कमलरूप औरआपहीआप बिस्तृत और अनेकप्रकारके

लक्षणों से लक्षित ५३ ऐसे सुंदर आसन पै यदुको बैठा के धूम्र-वर्ण सर्प कहनेलगा ५४ कि तेज से युक्त तेरेको उत्पन्नकर तेरापिता स्वर्गको प्राप्तहुआ ५५ और तेरेनाम से मंगल के अर्थ यादवबंश तेरे पिताने स्थापितकिया है ५६ और तेरे वंशमें देवताओं के पुत्र ऋषियों के पुत्र दिव्य सर्पोंके पुत्र मनुष्य शरीरसे युक्त उत्पन्नहोवेंगे ५७ और हे राजन् यौवनाश्व की भग्नी में मेरे सकाश से उत्तम रूपवाली ये पांचकन्या उपजी हैं सो इन्होंको प्राजापत्यकर्मकरके ग्रहणकर और मैं तेरे अर्थ बरदान करूंगा क्योंकि तू वरको ग्रहण करनेके योग्य प्रतीत होताहै ५८ और भौम, कौकुर, भोज, अंधक, यादव, दाशार्ह, वृष्णी इन नामों से तेरे सात बंश बिख्यात होवेंगे ५९ तब इन्द्रके समान यदुराजाके अर्थ धूम्रवर्ण सर्प राज अपनी पांचों कन्याओं को देताभया ६० और यदु के अर्थ कन्यओं को सुनाके बरदान भी करनेलगा ६१ हे राजन् इन मेरी पांच पुत्रियों में पिताके तेजसे संयुक्त और माताके आश्रयसे संयुक्त ६२ और हमारे से समय करनेवाले और जलके भीतर बिचरने वाले ऐसे पृथ्वी के पति पुत्रहोवेंगे ६३ तब वर और कन्याओं को ग्रहण कर यदुराजा वेग करके उठताभया जैसे जल से चंद्रमा ६४ और तिन पांचकन्याओं के मध्यमें स्थित यदुराजा भीतरसे समस्त पुर को देखताभया जैसे पांचतारोंमें से संयुक्त चंद्रमा ६५ और बिवाह सम्बन्धी वेषको धारण किये और दिव्यफूलों की माला और दिव्य चंदन आदिकोधारणकिये ६६ यदु राजा उनपांचों स्त्रियोंको संगले अपने पुरमें प्राप्त हुआ ६७ पीछे प्रीति करके उन रानियों के संग भोग विलास करनेलगा ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांविकद्रुवाक्येचतुर्नवतोऽध्यायः ९४ ॥

पंचानबेवां अध्याय ॥

विकद्रु कहनेलगा कि बहुतकाल में यदु राजा तिन पांचोंनागपुत्रियों में कुलके योग्य और पंचभूतोंके सदृश १ और मुचुकुन्द,

पद्मवर्ण,माधव,सारस, हरित इन नामोंवाले २ पांचपुत्रोंको उत्पन्न करताभया और इन पांचपुत्रोंको देख के राजा अति प्रसन्न होने लगा ३ पीछे अवस्था को प्राप्तहो बल और गर्व से तेजित और पांचपर्वतोंके समान पांचोंस्थित ऐसे पांचोंपुत्र पिताके सामने कहने लगे ४कि हे पितः अवस्था और बलसे हम व्याप्तहुये सो आपकी आज्ञाको तत्काल चाहतेहैं सो आपकी शिक्षा से हम क्या करें ५ तब शार्दूल के समान वेगवाले तिन पांचपुत्रों से राजाओंमें शार्दूल रूप यदु राजा प्रीतिसे कहनेलगा ६ कि विंध्याचल और ऋक्षवंत इन दो पर्वतों के समीपमें दो पुरी बनाके यत्नसे मेरा पुत्र मुचुकुन्द निवासकरो ७ और सह्य पर्वतके ऊपर दक्षिणदिशा को आश्रित पुरीमें मेरा पुत्र पद्मवर्ण तत्काल निवास करो ८ और तहां चंपक भूषित कांतदश में रमणीक पुरबना मेरा पुत्र सारस निवासकरो९ और समुद्र के समीपमें सर्पराजके द्वीपको मेरापुत्र हरित पालना करो और धर्मको जानने वाला मेरा पुत्रमाधव राजा होके अपने कदोसी पुरको पालेगा १० तब पिता से अभिषेचन किये और राजाओंको शोभाको प्राप्त और पितासे शिक्षित और लोकपालोंके समान उपमावाले ११ ऐसेपांचोंराजे अपने अपने वासके अर्थपुरों को ढूंढ़नेलगे१२ तब मुचुकुन्द राजा बिंध्य पर्वत के मध्यमें नर्मदाके तीर पै अपने स्थानको शोभित करके प्रकट करनेलगा १३ अर्थात् बहुत से पानियों से भरी परिखा खुदानेलगा और ऊंचे ऊंचे कोट बनवाने लगा १४ और देवताओं के मंदिर स्थापित करने लगा और गली मुहल्ले सड़क और चौपड़की तरह बाजार बगीचे इन्होंसे संयुक्त अमरावती पुरीकेसमान धनवाली १५ और गाय धन धान्य इन्होंसे पूर्ण और पताका और फूलों की मालासे शोभित और अपनेतेजसे रचीहुई १६ और अतिमूल्यके पत्थरों के स्थानोंसे संयुक्त १७ और माहिष्मती नामसे बिख्यात ऐसी पुरी रचताभया और विंध्याचल और ऋक्षपर्वतके पादमें बहुतसे बगीचों से संयुक्त १८ और बहुतसेदुकान औचौपड़ोंसेसंयुक्त और इन्द्रकी

पुरीकेसमान और पुरीके नामसे विख्यात ऐसी दूसरीपुरी रचता भया १६ ऐसे दो पुरियोंकोरचके धर्मात्मा मुचुकुंदराजा राजधर्मसे पालताभया २० और पद्मवर्णाराजा सह्यपर्वत के पृष्ठभागपै वृक्षों की लतासेव्याप्त वेणुवानदीके तीरपै देशकी अल्पताको जान २१ पद्मावतनामसे विख्यात देश और करवीरनामसे विख्यात २२पुर को रचके प्रवेशकरताभया और सारसराजा भी २३ चंपक अशोक इन वृक्षोंसे व्याप्त और तांवाकेसमान माटीसेव्याप्त ऐसे बनवासी तिस देशमें सब ऋतुओंकेयोग्य वृक्षोंसे २४ परिवृतरूप औररमणीक क्रौंचपुरकोरच तिसमें बसनेलगा २५ और हरितराजा रत्न के समूहसे पूर्ण और नारियोंके मनकोहरनेवाला ऐसे समुद्रद्वीपको पालनेलगा और तिस राजाके दास मदगुरनामसे विख्यात २६ समुद्रके जलमें गोतेमारनेवाले और समुद्रकेभीतर विचरनेवाले जो सब कालमें शंखोंको निकासनेलगे २७ और तिस राजाके शेषरहे दासगण जलसे उपजेहुये मूंगोंको जलमें ढूंढ़नेकेअर्थ २८ जहाजों में बैठ विचरनेलगे और बिशेषकरके सब कालमें मच्छ के मांसको खानेवाले २६।३० और सब रत्नोंकोग्रहण करनेवाले और रत्नद्वीपमें बसनेवाले और रत्नोंके अर्थ बणिक वृत्तिसे दूरगमनकरनेवाले३१ ऐसे सब दासगण हरितराजाको तृप्तकरनेलगे जैसे यक्ष कुवेर को ऐसे इक्ष्वाकु वंशसे यदुवंश निकसा है ३२ पीछे यदुके पुत्रोंने चारप्रकार स बंशका भेद किया है पीछे यदु राजा अपने पुत्र माधवको राज्य देके ३३ देहको पृथ्वीमेंत्याग स्वर्गमें प्राप्त हुआ पीछे माधवके ३४ सत्ववृत्त और गुणोंसे संयुक्त और राजगुण में स्थित और वीर्य्यवाला ऐसासत्वत पुत्रहुआ पीछे सत्वतके भीमपुत्र हुआ ३५ जिसकरके भीमनाम से विख्यात वंशहुआ और सत्वत के नामसे सात्वत वंश कहाया और रामचंद्र के राज्यकरने के समयमें ३६ शत्रुघ्नने लवणको मार मधुबन को कटवादिया और तिस मधुवन की जगह मथुरापुरी वसादी ३७ जब रामचंद्र भरत लक्ष्मणशत्रुघ्न येचारो वैष्णवपदको अर्थात् बैकुंठमेंचलेगये ३८ तब

यहमथुरापुरी राज्य संबंधके कारणसे इसपूर्वोक्त भीमराजाने अपने वंशमें स्थापित करलई ३९ पीछे जब रामचंद्रका पुत्र कुश राज्यपै स्थितहुआ और लव युवराज्यहुआ ४० तवइस भीमका पुत्र अंधक इस मथुरापुरीमें राज्यकरताथा पीछेअंधकके रेवतनाम से बिख्यात राजापुत्रहुआ ४१ पीछे रेवतके रमणीकपर्वतमें ऋक्षपुत्रहुआ पीछे ऋक्षकेसागरके समीपमें रैवतपुत्रहुआ ४२ यहीरैवत पृथ्वीमें पर्वत बिख्यात हुआ पीछे रैवत के महायशवाला और पृथ्वीमें बिख्यात ऐसाबिश्वगर्भ राजापुत्रहुआ ४३ पीछेबिश्वगर्भके दिव्य रूपोंवाली तीनभार्य्याओंमें ४४ लोकपालोंके समान उपमावाले औरवसु,बभ्रु, सुषेण,सभाक्ष इन नामोंवाले चार पुत्रहुये ४५ तिन्होंसे यहयादव बंश बिस्तृतहुआ ४६ पीछे वसुके वसुदेवपुत्र और पाण्डुराजा की रानीकुंती ४७ और चंदेरीके राजा दमघोषकी रानी सुप्रभा ऐसी दोपुत्रीहुईं ४८ ऐसे हे कृष्ण वेदब्यासजीके मुखसे तेरेवंशकी उत्पत्ति सुनीहै ४९ और हेदेवइसीवंशमें ब्रह्माजीके समान तुमनेजन्मलिया है हमारे कल्याण और जयके अर्थ सो ५० आप देवताओंके गुप्तकार्योंकोभी जानतेहैं और सर्वज्ञ हैं और हेविभो आपजरासंध राजाके मारनेको समर्थ हैं ५१ और तुम्हारी बुद्धिकेद्वारा हमसब व्रतमें स्थितहैं परंतु अतिबलवाला जरासंध सबराजाओंके मस्तक पै स्थित है ५२ और अप्रमेय बलवाला है और हम सब अल्प सामर्थ्यवालेहैं और अब यहपुरी एकदिनभी रोधकोनहीं सहैगी ५३ और अन्न और इंधन आदिसे रहित और किलोंसे रहित और परिखाओंसे रहित और यंत्रों से रहित ५४ और वप्रकोट शस्त्रोंके आगार और ईंटोंकेसमूह इन्होंसेरहित ऐसीपुरी होरहीहै ५५ क्योंकि कंस के बलकेप्रतापसे पहले मनुष्योंने इसपुरीके कोटआदि नहीं बनायेहैं और कंसके नाशहोनेसे और हमारा नवीन ५६ राज्यहोनेसे यहपुरी रोधको नहींसहेगी ५७ और शत्रुओं से पीड़ित यहदेश मनुष्यों करके सहित निश्चयनष्ट होजावेगा ५८ और यादवों के बिरोधकरके बहुतसे राजे इस पुरीको तोड़ना चाहते हैं अब

जो उत्तम और श्रेष्ठजानो सोकरनाचाहिये ५९ और राजाओंके बचनों को मानने वाले हम होजावेंगे ६० और जरासंध के भयसे भागनेको इच्छावालेबहुतसे मनुष्य रोधको प्राप्तहो ऐसेकहेंगे ६१ कि यादवों के बिरोध करके हम नाशको प्राप्तहुये हैं हे कृष्ण यह मेरा मतहै और विश्वाससे मैंने सबकहा ६२ और आपतो पहलेही जानते हैं फिर कहना क्या जरूर है अब जिससे हमारी कुशलताहो वह तत्काल अपनी इच्छासेकरो ६३ और इस सेनाके स्वामीआपहैं और हम तुम्हारी आज्ञामें स्थित हैं और केवल तेरेहीअर्थ यह बिरोध हुआहै सो अपने सहित हमारी भी रक्षाकरो ६४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांविकद्रुवाक्येपंचनवतोऽध्यायः ९५ ॥

छानबेवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे विकद्रु के तिस वचनको सुनके प्रसन्नहुआ वसुदेवयह बचन कहताभया १ राज्यके छःगुणोंको कहनेवाला और राज्य मंत्रार्थ के तत्त्वको जानने वाला ऐसे बिकद्रु ने हे कृष्ण तत्त्व और हितका उपदेश किया है २ और राज्यधर्म और सत्यधर्म बहुत से कहेहैं ऐसे पिता के और बिकद्रु के बचनको ३ सुनके श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हेतुसे और कर्मसे और न्यायसे और शास्त्रसे दैवको नहीं देखनेवाले ४ आपलोगोंका वचनसुन तिसका उत्तरसुनो और सुनकेग्रहणकरो ५ राजाको नम्रताके द्वारायथाक्रमसे बर्तनाचाहिये अर्थात् संधिबिग्रहयान आसन६ द्वैधीभाव संश्रय इनछःगुणोंको सब कालमें चिंतवन करनाचाहियेऔरबुद्धिमान्को बलवालेके समीपमें नहीं स्थितरहना चाहिये ७ किंतु समयकोजान आप निर्बलहोवे तो भागना उचितहै और सामर्थ्यहोवेतो युद्धकरै सो आदिमें इस प्रकाशित मुहूर्त्त में ८ शक्तिवालाभी मैंअसक्तके समानहोके बलदेवजी के संगजीवने के अर्थ गमनकरूंगा पीछे सह्या चलयुत अक्षयस्थानको बलदेवजी के संगजाऊंगा ९ पीछे करवीर पुर और रमणीक क्रौंचपुर १० इन्होंको हमदोनों देखेंगे पीछे गोमंत पर्वतको देखेंगे हमारे

गमनको सुनके अपनी जीतको माननेवाला जरासंध राजा ११ मथुरापुरीमें प्रवेशनहीं करके गर्वसे हमारे पीछे पीछे ढूंढ़नेको गमन करेगा १२ पीछे सह्यबनमें जरासंधजाके हमदोनों को ग्रहण करने केअर्थ यत्नकरेगा १३ ऐसे हमारी और कुलकी कल्याण कारी और पुरबासियोंको और पुरी के और देशको सुख देनेवाली ऐसी यात्रा होवेगी १४ और शत्रुकोमारेविना जीतनेकी इच्छा करनेवाले १५ राजे परायेदेशमें नहींप्राप्तहुवा करतेहैं ऐसे कह के कृष्ण और बलदेवजी १६ दक्षिणदिशाको भागतेभये और सैकड़े देशों में बिचरते हुयेदोनों१७दक्षिणदिशामें प्राप्तहो सुखपूर्वक बिचरने लगेपीछेसह्य के पृष्ठभागमें रमणीक बनोंमें दोनों प्रसन्नहोके प्राप्तहुये १८ पीछे थोड़ेसे कालमें सह्यपर्वतसे बिभूषित१९और अपने बंशके मनुष्योंसे युक्त ऐसे करवीरपुरमें प्राप्तहुये और तहांजाके रवानदीके तीरपैआश्रित२०बड़के वृक्षकेनीचे स्थितहुये तहां प्रकाशमान तपवाला२१ और कांधेपैफरशाकोधारणकरनेवाला औरवृक्षोंकीजटा और बक्कलों को धारण करनेवाला और यतीकीशिखा के आकार गौरवर्णवाला और सूर्य्यके समान तेजस्वी २२ और क्षत्रियों केअंतको करनेवाला और समुद्रके समान शरीरवालाऔर कालकेअनुसार द्रव्यको अग्नी में हवनकरनेवाला २३ और बछड़ा सहित सफेदरंग की कामधेनु गायको दूहनेवाला २४ और परिश्रमसे रहित और अविनाशीऔर भृगुवंशमें उत्पन्न ऐसे परशुरामजीको २५ तिस बड़के वृक्षके नीचे स्थितहुयेकोदेखतेभये२६ पीछे देखके पैरोंको जड़में अंजलीबांध२७ दोनों वसुदेवकेपुत्र प्राप्तहुये और बोलनेवालोंमें उत्तमरूप श्रीकृष्ण तिस परशुरामजी से मधुरवाणी से कहनेलगे २८ हे भगवन् मुनियोंमें ऋषभ और क्षत्रियों के कुलको नाशनेवाले २९ और जमदग्नि के पुत्र और परशुराम नाम से विख्यात ऐसे आप को मैं जानता हूं ३० और तुमने बाणोंके वेगसे समुद्र फेंकदियाहै ३१ औरबाण के वेगसे आपने नगर उलटादियाहै और आपनेपिताकी मृत्युकोयादकर सहस्राबाहुकी हजारभुजा काटदी हैं ३२ और अब तक भी

तुम्हारे फरसेकेमारनेसे क्षत्रियों के शरीर से निकसेहुए रुधिरकर के भीगीहुई पृथ्वी दीखतीहै ३३ सो हे भार्गव आपके सकाश से कछुक आख्यान सुननेको इच्छा करें हैं ३४ और हम दोनों यमुना के तीरपै मथुरापुरीके यादव हैं जो कभी आपने सुनेहों ३५ और हम दोनोंका बसुदेव पिताहै और जन्मकालसे लगा प्रथमअवस्था तक ब्रजमें बसतेरहेहैं ३६ पीछे मथुरा में प्रवेशकर ३७ हमदोनों समाजमें अपने बलसे कंसको मार और कंसके पिता उग्रसेन को राज्यपै स्थितकर ३८ गोपोंके कार्यको फिर करनेलगे तब हमारे पुरको जरासंध रोकताभया ३९ सो हमने बहुतसे युद्धोंमें हमारी जय भी रही परंतु अपनेपुरकी और प्रजाकी रक्षाकेवास्ते हे धृतव्र-त ४० शस्त्र उद्योग कर्त्तव्य बलसाधन रथ छत्र आयुध इन्होंसे रहित ४१ हम दोनों प्यादेरूपहोके जरासंधके भयकरके मथुरासे निकस आपके समीपमें प्राप्तहुयेहैं ४२ सो हमारी सलाह मात्रसे सत्क्रिया करनेको आपयोग्यहैं ऐसे अनिंदितरूप दोनोंके वाक्य को परशुरामजी सुनके ४३ धर्मसे संयुक्त प्रति वचन कहनेलगे हे प्रभो हे कृष्ण आपकेसंग सलाहदेनेकेवास्ते ४४शिष्योंकरकेरहित में अकेला इस जगह प्राप्तहुआहूं और हे कमलकेसमान नेत्रोंवा-ले ४५ आपके ब्रजमें बासको मैं जानताहूं और दैत्योंकी और दुरा-त्मा कंसकी मृत्युको भी मैं जानताहूं और भ्रातासहित तेराजरासंध के संग विग्रहको जानकर ४६ हे वरानन मैं इस जगह प्राप्तहुआ हूं हे कृष्ण तेरेको मैं जानताहूं तू जगत्का गोप्ताहै प्रभुहै तू अवि-नाशीहै ४७ तू वृद्ध है और देवताओंके कार्यकी सिद्धि के अर्थ तू बालक है और तेरेसे तीनोंलोकोंमें अज्ञात कुछ भी नहींहै४८परंतु भक्तिकरके मैं वचन कहताहूं आप सुनो हे गोविंद ४९ यहकरवी रपुर तेरेवंशकेपूर्वलोंनेबसायाहै इसपुरमें हे कृष्णमहायशवाला५० और शृगालनाम से बिख्यात और नित्य परमकोप करनेवाला ऐसा राजा बसताहै तिस राजाने हे गोविंद अपने वंशमें उत्पन्न होनेवाले बहुतसे राजे ५१ मारदियेहैं और यह राजा अहंकारी है

और अजितात्माहै और गर्विहै ५२ और राज्यके ऐश्वर्यरूप मदसे संयुक्तहै और पुत्रोंमें भी दारुणकर्म करनेवाला है इसवास्ते हेनरोत्तम इस पार्थिव दूषित करवीर पुरमें आपका बसना उचित नहीं है ५३ और मैं कहताहूं आप श्रवणकरो ५४ जहां तुमदोनोंअति बलवाले जरासंधको दुःखित करोगे अर्थात् इस वेणवा नामवाली नदीके तीरके हम तीनों ५५ मिलके वासके अर्थ दुर्गमपर्वतकोचलैंगे पीछे यज्ञ पर्वतको पीछे साह्यपर्वतको जाके ५६ पीछे जहां मांसको खानेवाले और घोर कर्मके करनेवाले चोरोंका निवासहै और नानाप्रकारके वृक्ष लता विचित्रपुष्पोंवाले वृक्षोंकेसमूहहैं ५७ तहां एक रात्रिवासकर खट्वांगीनाम नदीकोतरिके ५८ तपस्वियोंके बनसे भूषित तिस नदीके प्रतापको देखेंगे ५९ पीछे अनेक प्रकार के पर्वतोंमें जाके तपकरनेवाले और शांतिवाले बहुतसे ब्राह्मणों को हम देखेंगे ६० पीछे क्रौंचपुरमें गमनकरेंगे ६१ तिसपुरमें हे कृष्ण धर्मज्ञ और तेरे वंशमें उपजनेवाला महाकपीनामसे विख्यात और इस बनका पति ऐसा राजा राज्य करताहै ६२ तिस राजाको नहीं देखके एक दिन निवासकर आनडुहनामसे विख्यात सनातन तीर्थ कोगमन करेंगे ६३ पीछे सह्यवनके छिद्रमें अनेक शृंगोंसे विभूषित और पक्षियोंसेभी प्राप्तहोनेमें दुर्गम ६४ और देवताओंका विश्राम भूत ६५ और स्वर्गकीपैड़ी और आकाशके समान ऊंचा और विमानोंका विरामस्थान ६६ और गोमंतनामसे विख्यात और तिस पर्वतके उत्तममहाशृंगमें उदयास्तके वक्त सूर्य चंद्रमा ६७ समुद्र इन्होंको देखतेहुये पर्वतके शिखरमें तुम दोनों बिचरोगे ८६ पीछे उसपर्वतके बनों में विचरतेहुये तुम दोनों और दुर्ग युद्धसे बाधा देनेवाले तुमदोनों जरासंधको जीतोगे ६९ और पर्वतमें प्राप्तहुये तुमदोनों को जरासंध असमर्थ होजावेगा ७० और तुम दोनों के संग युद्धहोनेके वक्तशस्त्रों सहितमैंभी तात्काल प्राप्तहोके देखूंगा ७१ और हे कृष्ण देवताओंने तहां उग्रयुद्ध होना पहलेही कहदिया है अर्थात् यादवोंका और अन्यराजाओंका आपसमें उग्रयुद्ध होगा ७२

और चक्रहल कौमोदकी गदा सौनंद मूसल ये बैष्णव शस्त्र युद्ध में प्राप्तहोवेंगे और राजाओंके रुधिरका पानकरेंगे ७३ और हे कृष्ण चक्र मूसलनामसे विख्यात यहसंग्राम देवताओंने कहाहै ७४ और हेकृष्ण उसयुद्धमें प्रकटरूप तेरे बैष्णव रूपको तेरे बैरी और देवते देखेंगे ७५ और हे कृष्ण तिसगदाओं स्वचक्र को तू ग्रहण करियेगा ८२ और हल और मूसलको बलदेवजी ग्रहण करेंगे ७७ तब देवताओं की जीतके अर्थ पृथवीमें यह प्रथम संग्राम होवेगा पीछे समयपाके दूसराभारतनाम युद्धहोवेगा ७८ इसवास्ते हेकृष्ण पर्वतोंमें उत्तमरूप गोमंत पर्वतको गमनकर पीछे युद्धमें जरासंधको जीतेगा ७९ और तहांस्थितहुये जरासंधको आपही आप निमित शिक्षादेवेंगे और इसकामधेनु गायका अमृत के समान दूध है ८० इसकोपानकर मेरे कहेहुये मार्गकेद्वारा गमनकर मनोबांछित फल को प्राप्तहोवेगा ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व भाषायांपरशुरामवाक्येषट्नवतोऽध्यायः९६॥

सत्तानवेवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे तिसकामधेनु गायके दूधको पानकरबल और गर्बसेयुक्त बलदेव और श्रीकृष्ण परशुरामजीके संग १ गोमंत पर्वतको देखनेकेवास्ते परशुरामजीके बताये मार्गकेद्वारा गमन करतेभये २ और बलदेव श्रीकृष्ण परशुरामजी येतीनों तीन अग्नियोंके समानहोके मार्गको शोभित करनलगे जैसे देवतेस्वर्गको ३ पीछे मार्गकी विधिसे दिनों के क्रमकरके गोमंत पर्वतको प्राप्त हुये जैसे देवते मंदराचलको ४ और लताओंसे सुंदर विचित्र और नानाप्रकारके वृक्षोंसे विभूषित और चंदन अगर आदिसे धूपित और मनोहररूप चित्रोंसे चित्रित ५ और भौंरोंके गणसे संकीर्ण और शिलाकांटे वृक्षइन्होंसे संयुक्त और मेघके समान नादकरने वाले और मत्तरूप ऐसेमोरोंके शब्दोंसे शब्दित ६ और आकाशमें लगे हुये शिखरवाला और बदलोंसे मिलेहुये वृक्षोंसे संयुक्त और मद

वाले हाथियोंके दांतोंके अग्रभागसे घिसेहुये पत्थरोंसे अंकित ७ और बोलतेहुये पक्षियोंके समूह करके चारों तर्फसे प्रतिनादितऔर हरितरूपघास और पत्तोंसे आच्छादित ८ और नीलेपत्थरके समान और आकाशके समान बहुतसे बर्णोंवाला और धातुओंके निकसने से लिपेहुये अंगोंवाला और जलके झिरनेसे बिभूषित९ और देवता ओंके गणोंसे आकीर्ण और मैनाक पर्वतके समान मनोरथको देने वाला और ऊंचा और सुंदर अग्रभागवाला और जड़से पानीको झिरानेवाला१० और बन और गुफाआदिसेस्थित और सचेतबद्दलों के गणोंसे विभूषित और पनस आंवड़ा आंब वेत स्यंदन चंदन ११ तमालइलायची इन्होंकेबनोंसेयुक्त और मिरच पीपल बेल चीताहींग गणइन्होंके वृक्षोंसे १२ संकुल और रालके वृक्षोंकरके चारोंतर्फसे शोभित और ऊंचे शालवृक्षोंके बनोंसे रक्षित और बहुतसे चित्रबनों से युक्त १३ और शरल नीब अर्जुन पाटली हिंताल पुन्नाग इन वृक्षोंसेशोभित१४ और जलके स्थानोंमें कमलोंसे आच्छादित और स्थलोंमें कमलनियोंसे आच्छादित और अनेक प्रकार के वृक्षों से चारोंतर्फसे भूषित १५ और जामन कंद केंदू चमेली अशोक बेल पत्र तंदू १६ कुड़ा नागकेसर इनवृक्षोंसे उपशोभित और हाथियोंके समूहोंसे आकीर्ण और मृगोंके समूहसे शोभित १७ और सिद्धचा-रण राक्षस विद्याधर इन्होंके समूहसे सेवित १८ और सिंहशार्दूल इन्होंके शब्दोंसे प्रतिशब्दित और पानीकी धारासे सेवित १९ और देवते गंधर्व अप्सरा इन्होंसे स्तुतिकिया और दिव्यबनस्पतियों के पुष्पोंसे अलंकृत २० और इन्द्रके बज्रके प्रहारोंकोनहीं जाननेवाला और दावाग्निकेभयसे रहित और देवताओंके सुखका आश्रय २१ और बहुतसी नदियोंसे उपशोभित २२ और बहुतसे बनोंसे युक्त और बहुतसी कांतारूप गलियोंसे उपशोभित २३ और अनेक प्र-कारके पत्थरोंसे मेघोंकी तरह विभूषित २४ और नई नई बनकी पंक्तियोंसे मंडित और दरी सुंदरी कंदरी इन आदिसे शोभित २५ और औषधियों करके प्रकाशित शिखरवाला और वानप्रस्थों से

सेवित २६ और सब पर्वतोंमें उत्तम ऐसे गोमंत पर्वतमें २७ गरुड़
जीके समान पराक्रमवाले तीनों उत्तमशृंगमेंजाके वेगसे प्राप्तहुये
जैसे देवते २८ और तहां मनसे रचेहुयेके समान सुंदर स्थानवना
तेभये ऐसे बलदेव और श्रीकृष्णको तिसस्थानमें प्राप्तहुयेंको देख
परशुरामजी २९ पूंछके गमन करनेकी इच्छाकरताभया हेकृष्ण हे
विभो मैं शूरपारक नगरको गमन करूंगा ३० और तुम दोनों को
युद्धमें दैत्यभी विमुखनहीं करसकते और आपके संग मार्गमें जो
मैंने प्रीति प्राप्तकी है ३१ वह इसमेरे शरीर को अनुग्रहित करेगी
हे देवमुख्य हे वैकुंठमें बसनेवाले हे विष्णो हे देवस्तुत ३२
हे कृष्ण मेरेनैष्ठिक वचनको श्रवणकर हेगोबिंद मनुष्योंके कल्याण
के वास्ते मनुष्य देहकरके जो आपनेयह प्रस्तुत कर्म कियाहै ३३
तिसका प्रथमकल्प समय के द्वारायुक्तहुआ अर्थात् तुम दोनों का
यह युद्ध देवताओंने पहलेही रचाहै ३४ और जब जरासंधके संग
युद्ध उपस्थित होवेगा तब दिव्यशस्त्र दिव्यबल और दिव्यरूप इ-
न्होंकी प्राप्ति तुम्हारे अर्थ होवेगी ३५ और जब सुदर्शन चक्र और
गदाको हाथमें लेके हेकृष्ण आठगुण पुष्टकंधेवाले तेरेको युद्धमेंदे-
खकर इंद्रभी भयमानेगा ३६ और अबतक तेरे संग मैंने स्वर्गोक्त
यात्रा ३७ पृथ्वीमें देवताओंके अर्थ और अपनी कीर्तिके अर्थकरी है
और हेगोविंद वाहन और ध्वजकर्म में गरुड़जीका आह्वान जल्द-
करो ३८ और युद्धकी कामनावाले और रणरूपजीवकावाले और
स्वर्गको जानेवाले ३९ ऐसेबहुतसे राजे धृतराष्ट्रके पुत्र दुर्योधन के
वसमें स्थित हैं और राजाओं की मृत्युको देखनेवाली और वैध-
व्यता से अधिवासित ४० ऐसीएक वेणी को धारण करनेवाली
यह पृथवी तेरे को देखती है ४१ इसवास्ते हे कृष्ण दैत्यों के
मारनेके अर्थ और देवताओं के सुखकेअर्थ और राजाओं के स्वर्ग
वासकेअर्थ और वेगसे कार्यकोकर ४२ और हेकृष्ण तैंनेमैं सत्कृत
किया ४३ और तुम्हारे कार्यकी सिद्धिके अर्थसाधन करूं हूं ४४
और जहांसब कालमें आपका युद्धहोवे तहांमेरा स्मरण करनाऐसे

कृष्णसेकहके ४५ और जयरूप आशीर्वादों से चढ़ाके परशुराम जी वांछित दिशाको गमनकरते भये ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांगोमंतारोहणेसप्तनवतोऽध्यायः ९७॥

अट्ठानवेवां अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे जबपरशु रामजी गमन करतेभये तब श्री कृष्ण और बलदेवजी येदोनों मनोवांछित रूपको धारणकर गोमंत पर्वतके रमणीक शिखर में विचरनेलगे १ अर्थात् बनमालाओंको पहरनेवाले और नीलपोत ऐसेवस्त्रोंको पहनने वाले और श्वेतनील ऐसेरंगके शरीरोंवाले और आकाशमें स्थितबद्दलोंके समान २ और पर्वतकी धातुओंसे लिपेहुये अंगोंवाले और जवान अवस्थामें स्थित और पर्वतके शिखरमें प्राप्त और रमणकरनेकी बांछावाले ३ और तारागणों में श्रेष्ठ और प्रकाशमान ग्रहोंमें उत्तमऐसे उदयहोतेहुये चंद्रमाको देखनेवाले४ऐसेबलदेव श्रीकृष्ण प्रकाशित बनोंमेंविचरने लगेपीछे कृष्णसे रहित पर्वतके समानकांतिवाला और वीर्यवाला ऐसाबलदेव पर्वतके शिखरपै अकेला विचरनेलगा ५ तबफूले हुये कदंबकीछायामें स्थितहुआ तबमदगंधसे युक्तवायु करके वीर्यमान हुआ६तब तिसवायुके समूहको सेवने से मदिराके संपर्श से उपजा गंधनासिका में प्राप्तहुआ ७ तबतृषा लगनेलगी और मुखसूखने लगा तबदूसरेदिन तिस पूर्वले ब्रत को स्मरणकर तृषित हुआ मदिराकी गंधको ढूढ़नेवाला बलदेव तिसफूलेहुये कदंबको देखता भया ८ और वर्षाऋतु में फूलेहुये उसकदंबके बद्दलसे गिरताहुआ जो पानी कोटर में स्थितहोवे उसकी मनोहर मदिरा उपजै ९ सो तृषितहुआ बलदेव तिसमदिराको वारंवार पानकरनेलगा तबमद से चलाय मानहुआ १० अर्थात् बलदेवजीका चलायमान नेत्रों से संयुक्तमुखहोनेलगा और शरद कालके चंद्रमाकी समान कांतिहोने लगी ११ ऐसेकदंबके कोटरमेंकादंबरी और वारुणीनामसे बिख्यात मदिरा होतीहै १२ तब कादंबरी मदिराके मदसे बिह्वलहुये १३

बलदेवजी को जानके बारुणी कांतिश्री इन नामोंवाली और अंजलीयोंको बांधनेवाली और अनेक प्रकार के प्रियबचनों को बोलनेवाली १४ ऐसीतीन देवताओंकी स्त्रियें बलदेव जीके समीप में प्राप्तहुईं तबप्रथम मदसे विह्वलहुये बलदेवजीको बारुणी बांछित बचन कहनेलगी १५ कि हेबलदेव दैत्योंकी सेनाको जीत और मैं तेरीअतिप्यारी बारुणीस्त्री प्राप्तहुईहूं १६ हे बिमलानन शाश्वतरूप तेरेको बड़वाके मुखमें अंतर्ध्यानहुये सुनके पुण्यसे क्षीणहुईमें पृथ्वी में तेरेअर्थआईहूं १७ और पुष्पचक्र इन्होंसे लिपेहुये केशरोंमें मैंने बासकियापीछे अनेक प्रकारके फूलोंके गुच्छोंमेंमैंने बासकिया १८ पीछेवर्षाकालमें इसपूर्वोक्त कदंबमें मैंनेबासकियासो तृषितरूपतेरे को ढूंढतीहुई मैं अपने रूपकरके आच्छादित करतीभई १६ सोपूर्ण योग करके जैसे अमृत को मथने के वक्त जैसी थी वैसीहीहूं सो हे अनघ मेरे पिता बरुण ने तेरे समीप में भेजी है २० सो जैसेसमुद्रमें थी तैसेही बड़वामुखमें तेरे संग भोग करने की इच्छा करूंहूं मैंने अपने से बड़ा तुझे माना है २१ हे अनंत जो तू मेरेको झिड़केगा तब भी मैं तेरे को नहीं त्यागूंगी और हे देव तेरे बिना लोकों कोभी सेवने को मैं बांछित नहीं करती २२ पीछे मदकरके गलित कटिवाली और कछुक आघूर्णित नेत्रोंवाली और नम्ररूप और अंजलीको बांधनेवाली और जय पूर्वक योगसे मंद मुसकानसहित हंसनेकी इच्छाकरनेवाली २३ ऐसी कांतिनामवाली नारीबलदेवजी के समीपमें प्राप्तहोके कहनेलगी कि हे देव अपने गुणोंसे अनुरक्त हुई मैं चंद्रमासे भी ज्यादे आपको मानतीहूं जैसे मदिरा मानतीहै तैसे २४ पीछे कमल में है स्थान जिसका और विष्णु भगवान् के हृदयमें बसनेवाली ऐसी श्रीनामसे विख्यात लक्ष्मी २५ प्रकाशित रूप मालाको ग्रहणकर और बलदेव की छाती में मालाके समान दर्शितहुई बलदेवजी से कहनेलगी २६ हे राम हे अभिराम तू बारुणीके संग और कांतिके संग और मेरेसंग बास करने के योग्यहै जैसे चंद्रमा २७ और यह तेरीमौली समुद्रसे मैं उद्धृतकर लाई हूं

जो पहले हजार शिरोंके मध्यमें सूर्यकेसमान प्रकाशित थी २८और जात रूपमय और हीराकी कणियों से भूषित ऐसेकानोंमें पहननेके योग्य दिव्यकुंडल यह हैं २६ और हे भावन रेशमी औरनीले ऐसे दिव्यवस्त्र ये हैं और समुद्र के भीतर रहने वाले रत्नोंका हार यह है ३० सो हे देव पुरानी इस भूषण क्रियाको आप ग्रहण करो ३१ तब तिन गहनोंको पहन के शरद ऋतुके पूर्णमासी के चंद्रमाकीतरह बलदेव प्रकाशितहुआ और वे तीनोंदेवस्त्री भी शोभितहुई ३२ पीछे जल संयुक्त बद्दलके तेजकेसमान तेजवाले श्रीकृष्णके समीप में प्राप्तहो अति शोभित आनंदको बलदेव प्राप्तहुआ ३३ जैसेराहु के ग्रहणसे छुटा चंद्मा ३४ और तिसीसमयमें संग्रामसे छुटाहुआ और तेजस्वी और दैत्योंके प्रहारोंसे अंकित और देवताओं कोजय को चाहनेवाला ३५ और दिव्यमाला चंदन आदिको धारण करने वाला ऐसा गरुड़भी वेगसे आकाशमार्ग के द्वारा उड़ताभया ३६ अर्थात् एकसमयसमुद्रमेंशयन करतेहुयेविष्णुके मुकुटकोविरोचनका पुत्र दैत्य हरलेगया ३७तिसको प्राप्तिकेअर्थ समुद्रकेमध्यवासीदैत्यों के साथ गरुड़ने युद्धकिया ३८तब विष्णुके मुकुटको छुटाके देवताओंका आलयरूप आकाशको वेगसे चढ़ा ३६ तब पर्वतपै कार्य के अर्थ प्रकाश वेष इन आदिसे रहित और मनुष्य रूप और मुकुट रहित मनुष्य ४० ऐसे विष्णुको देखके गरुड़ आकाशही में स्थित हुआ श्रीकृष्णके शिरपै मुकुट को छोड़ताभया ४१ तब वह मुकुट श्रीकृष्णके शिरपै ऐसे पड़ा मानो पहनाया गयाहै ४२ तब श्रीकृष्ण शोभायमानहोनेलगा जैसेमेरुपर्वतके शिखरपै मध्याह्नमेंसूर्य्य४३ पीछे गरुड़के प्रकाश से प्राप्तहुये मुकुटको जान प्रसन्न हुये ४४ श्रीकृष्णबलदेवजी से वचन कहनेलगे कि देवताओंका प्रयोजनवेग कर रहाहै इसमें संशयनहीं ४५ क्योंकि इस शैलमें विचरते हुये हमदोनोंको संग्रामरचना उपस्थित हुईहै समुद्रमें शयन करते हुये मेरे मुकुटको इन्द्रके समान दिव्यरूपसे संयुक्त ग्राहके शरीरको प्राप्तहो विरोचनकापुत्र हरलेगयाथा४६वह मुकुट अबगरुड़ने मेरे

अर्थ प्राप्त किया है और प्रकट है कि जरासंधराजा भी समीप में प्राप्तहै और पवनके समान वेगवाले रथोंके ध्वजाभी दीखतेहैं ४७ और हे आर्य्य जीतनेकी इच्छावाले राजाओंके चंद्रमाके समानश्वेत छत्रभी प्रकाशित होते हैं ४८ यह बड़ा आश्चर्य्य है कि राजाओं के छत्रोंकी पंक्ति हमारे सन्मुख प्राप्त हैं जैसे आकाश में हंसोंकी पंक्ति ४९ और अति आश्चर्य है मलसे रहित प्रकाशवाले शस्त्रोंकी सूर्य्यकी कांतिमें मिलीहुई कांति दशों दिशाओंको प्रकाशित होरही हैं ५० येसब शस्त्र मेरेअर्थ राजाओंके हाथोंसे फेंकेहुये युद्धमेंनाशहोवेंगे५१और समयपै हमोंसे युद्धकरनेकी बांछावाला राजा जरासंध प्राप्तहुआहै सो यह युद्धमें प्रथमअतिथिहै ५२ अर्थात् युद्ध करनेके योग्यहै इसवास्ते हे आर्य्य युद्धका आरंभ करनाचाहिये और इसकी सेना देखनी चाहिये५३ऐसेकहके युद्धकी बांछावाला श्रीकृष्णजरासंधकोमारनेकी इच्छा करताहुआ सेनाको देखनेलगा ५४और सब राजाओंकोदेखता हुआ श्री कृष्ण अपनी आत्मा से अपनी आत्मा के अर्थ जो पहले स्वर्ग में गुप्त भाषण हुआथा वही कहताभया५५ अर्थात् राजाओं के मार्ग में स्थित हुये ये सब राजे युद्ध में नाशको प्राप्तहोवेंगे ५६ क्योंकि मृत्युकरके प्रोक्षित हुये इन राजाओंको मैं जानता हूं और इन्होंके शरीर भी स्वर्ग में गमनकरनेके योग्य प्रकाशितहोरहेहैं ५७ और इनराजाओं की सेनाके समूहसे पीड़ितहुई और भारसे परिश्रांत ऐसी यह पृथ्वी स्वर्गमें गई थी ५८ सो अल्पकालमेंही बहुतसे ये सब मनुष्य पृथ्वीमंडलसे अलगहोजावेंगे५९॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांजरासंधाभिगमने अष्टनवतोऽध्यायः ९८॥

निन्नानबेवां अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे तब सब राजाओंका राजा जरासंधबलवाले बहुतसे राजाओंको संगलेके प्राप्तहुआ१ अर्थात् अतिबलवाले घोड़ों से संयुक्त सांग्रामिक रथ २ और महा घंटोंवाले हाथी और

वायुके समान वेगवाले घोड़े ३ और तलवार ढालआदि से संयुक्त प्यादे ऐसे चलतेहुये बद्दलों के समान चारप्रकाकी सेनासे संयुक्त जरासंधराजा प्राप्तहुआ ४ पीछे नेमिके शब्दवाले रथों करके और मदवाले हाथियों करके और हिहनाते हुये घोड़ोंकरके और बोलते हुये प्यादों करके ५ सब दिशा और पर्वत की गुफा में रहनेवाले जीवोंको शब्द करानेवाला और समुद्रके समान आकारवाला और बहुतसी सेनाओं से संयुक्त ऐसा जरासंध फिर दीखताभया ६ और तिन राजाओं की गर्वित योधों के समूहसे आकुल और अतिप्रकार के शब्दों के बोलने से संयुक्त ऐसी सेना मेघों की सेना की तरह प्रकाशित होनेलगी ७ और पवनके समान वेगवालेरथों करके और बद्दलों के समान उपमावाले हाथियों करके और सपेद आकाशके समान कांतिवाले घोड़ों करके और कवच आदि से दंशित प्यादों करके ८ ऐसे प्यादे हाथी घोड़े रथ इन्होंसे व्याप्त सबसेना शोभित होनेलगी जैसे वर्षाऋतुमें समुद्रगत बद्दलोंके पटल ९ पीछे अतिबल वाले जरासंध आदि सबराजे गोमंत पर्वत को घेरके पर्वत में प्रवेश करने के अर्थउद्योग करनेलगे १० तब निवासकरनेकेवक्त सेनाका रूप पौर्णमासी के दिनबढ़ेहुये समुद्रकेसमान होताभया ११ पीछे एकरात्रि व्यतीत होजानेपे युद्धकी वांछावाले सबइकट्ठे होके पर्वत पै चढ़नेके अर्थ सलाह करनेलगे १२ तब तिनराजाओंका उग्ररूप शब्दसुननेलगा जैसे प्रलयकालमें समुद्रोंका १३ तब डुपट्टा पगड़ी आदिको धारणकरनेवाले और वेतों को हाथों में धारण करनेवाले और अवस्था में वृद्ध ऐसे राजमंत्री राजाकी आज्ञासे शब्द मतकरो ऐसेकहतेहुये विचरनेलगे१४तब सबसेना शब्दकरनेसे रहितहोती भई अर्थात् चुपहोतीभई १५ तब वृहस्पतिकी तरह जरासंधराजा बाक्य कहनेलगा १६ कि राजाओं की सेना जल्द कार्यको करो अर्थात् यह पर्वत चारोंतर्फ सेनाके समूहसे घेराजावे१७और अश्म-यंत्र युक्त कियेजावें और फेंकने के योग्य मुद्गर प्राश भाले ऊपरको फेंकेजावें १८ और ऊपरको फेंकने के योग्य दृढ़ और हलके अनेक

प्रकारके शस्त्र शिल्पियों के हाथों से बनायेजावें १९ और मदवाले युद्धकरतेहुये शूरबीरोंका आपसमें पातनहीं होवे ऐसो बिधितत्काल करनीचाहिये २० और टांकी खुदाल आदिशस्त्रों से यहगोमंत पर्बत दारणकियाजावे औरयुद्धमार्गको जाननेवालेसबराजेपर्बतकेसमीपमें प्राप्तहोजावो२१और अबहीं मेरी सेना से पर्बतका रोधकियाजावेगा जबतक बसुदेव के इन दोनों पुत्रोंको पर्बतसे नीचेगेरू तबतक २२ और इस पर्बत के बीचमें बसतेहुये पक्षियों को भी मत निकसने दो औरबाणोंके समूहसे आकाश कोभीआच्छादितकरो २३ और मेरी आज्ञासे शिक्षितकिये सबराजे अपने अपने अवकाश देखके पर्वतपै जल्दचढ़ो२४और मद्र कलिंगकाराजा चेकितान बाह्लिक काश्मीर काराजा गोनर्द करूषदेशकाराजा २५ किंपुरुषों काराजा द्रुम और पर्बतके राजे मालवदेशके राजे येसबपर्बत के परलेपार्श्व को आरो हणकरो २६ और पौरव वेणुदारी बैदर्भसोमक भोजदेशका मालिक रुक्मी सूर्याक्षमालव २७ पांचालदेशकापतिद्रुपद राजाविंद अनुबिंद बीर्यवाला दंतवक्र २८ छागली पुरुमित्र बिराट राजा कौशांब्यमा लव शतधन्वा विदूरथ २९ भूरिश्रवा त्रिगर्त्त बाण पंचनद ये सब राजे पर्वतके उत्तरदेशका आरोहण करो ३० और उलूक कैतवेय अंशुमान् का पुत्र बीर ३१ एकलव्य दृढ़ाक्ष क्षत्रधर्मा जयद्रथ उत्तमौजा शाल्व कैरलेय कौशिव ३२ वैदिश बामदेव सुकेतु ये राजे इस पर्वत के पूर्वकीतर्फ से आरोहणकर काटो ३३ पर्वत को काट धावाकरो ३४ और मैं जरासंध दरद शिशुपाल ये तीनों मिलके पर्वतको दक्षिणकी तर्फसे काट आरोहणकरेंगे ऐसे चारोंतर्फ सेनासे वेष्टित यह पर्वत अतिपीड़ाको प्राप्तहो ३५ और गदावाले गदा-ओंसे और परिघोंवाले परिघोंसे ३६ और शेष रहे नानाप्रकारके शस्त्रों से इस पर्वतको काटडारो ऐसे सबराजे मिलके इस पर्बतको पृथ्वी के समान एकसा करदो ३७ तब जरासंधके बचनको सुन सबराजे पर्वतको वेष्टित करतेभये जैसे पृथ्वीको समुद्र पीछे शिशु पाल राजा कहनेलगा ३८ इस गोमंतपर्बत विषे युद्धकरने से

हमारेको क्याहोगा और इस पै आरोहण करना बहुत मुश्किल है ३९ इसवास्ते बहुतसे काष्ठ तृणआदिसे चारोंतर्फ़से लपेट इस पर्वतको अग्निसे जलादो अन्यकर्म से क्याहोगा ४० और युद्धमें बाणोंकेद्वारा लड़नेवाले ये सब क्षत्रिय पर्वतपै चढ़नेको ठीक नहीं मानते ४१ और हे प्रिय काटनेआदि कर्म से यह पर्वत देवताओं के बशमें भी नहीं आसक्ता ४२ इसलिये अग्निके जलाने से पर्वत पड़सक्ता है और हम बहुतसे हैं यह उत्तमनीति नहींहै और अति बलवाले ४३ और देवताओंके समान कर्मकरनेवाले और जिन्हों के बलका परिमाण नहीं ऐसे और दुष्कर कर्मकरनेवाले ऐसे ये दोनों बलदेव और श्रीकृष्ण युद्धके द्वारा जीतने मुश्किल हैं ४४ इसवास्ते सूखे काठ और तृण आदिसे इसपर्वतको वेष्टितकर ४५ अग्निसे दोनोंको दग्ध करेंगे और जो दग्ध होतेहुये पर्वतसेनिकस हमारे समीपमें प्राप्तहोंगे ४६ तो हम सब मिलके उसी वक्त मार देवेंगे ऐसे यहवाक्यसेनासहित सबराजाओंके मनमेंरुचताभया४७ अर्थात् सब कहनेलगे शिशुपालका कहनाठीक है तब काष्ठ तृण वांस सूखी शाखावाले वृक्ष ४८ इन्होंसे पर्वतको वेष्टितकर पीछेसब राजे चारोंतर्फ़से पर्वतके आगलगाते भये४९ तब यथाक्रमसेवायुकी सहायता से वह अग्नि पर्वत के चारों तर्फ ऊपर को प्रविष्टहोने लगा ५० अर्थात्धूमा और लटाके प्रकाशकरके आकाशको दीपन करताहुआ और पवनकी सहायवाला और काष्ठके संचयरूप जड़वाला ५१ ऐसाअग्नि गोमंत पर्वतको जलानेलगा तब दग्ध होता हुआ पर्वत अनेक प्रकारकी शिलाओं को छोड़नेलगा ५२ अर्थात् अग्निके लगनेसे पकनेलगी जोधातु उन्होंकरके अनेकप्रकारके ५३ शब्द करने लगा और अग्निसे दग्ध होताहुआ पर्वत अनेकप्रकार की धातुओंको छोड़नेलगा ५४ और तिससमय में पर्वतसे बद्दलके समानउल्काओंकी वृष्टिहोनेलगी ५५ तबवहपर्वत प्रलयकी अग्निके समान हतहुआ भस्मको प्राप्तहोनेलगा और तिसपर्वतसे आधेदग्ध हुये और बिकलरूप ५६ और मोटेमस्तकों वाले और क्रोधसे भरे

नेत्रोंवाले ऐसे सर्प निकसनेलगे अर्थात् आकाशको उड़केफिर नीचेको मुखहोके पृथ्वीमें पड़नेलगे ५७ और सिंह और शार्दूल अग्निके भयसे उसपर्वतसेनिकसने लगे और दाहसेउपजेजलको वृक्षछोड़ने लगे और तिससमय ऊपरको फैलनेवाली पवन चलनेलगी और धूमाकीछाया बद्दलके समान आकाशमें फैलनेलगी ५८ और इन्द्रके बज्रसे दारित हुआके समान और चलायमान रूप ५९ ऐसा गोमंत पर्वत अनेक प्रकारके पत्थरों को छोड़ताभया ऐसे इसगोमंतपर्वतको ६० वे सबक्षत्रिय जलाके अग्निसे पीड़ित हुये आधकोशदूरहटतेभये और पर्वत जलनेलगा ६१ और वृक्षपड़नेलगे और धूमासे कुछभी नहीं दीखने लगा और पर्वतकीजड़ शिथिलहोने लगी ६२ तबबलदेवजी श्रीकृष्णके अर्थरोष सहित बचनकहनेलगे ६३ कि हेप्रिय सानुजशिखर वृक्ष आदिसेसहित यहपर्वत हमारेबैर करके बैरियोंने दग्धकरदिया है ६४ सो हे कृष्णअग्निकी उष्णता और धूमासे पीड़ितहुये पक्षी उड़ते फिरते हैं ६५ इन्होंको तूदेख और जो हमारे अर्थ यहगोमंतपर्वत दग्ध कियागया यह हमारे कुलमें दाग लगाहै ६६ तिसदाग को दूरकरने के अर्थ इन क्षत्रियों को इन्हीं हाथों से मारेंगे ६७ और हेप्रिय इसपर्वतको जलाके कवचोंको पहने हुये और रथमें स्थित और युद्ध की इच्छा करनेवाले ६८ ऐसे क्षत्रिय दीखतेहैं ऐसेकहके वनकीमालाको धारणकरनेवाले और जवान अवस्थामें स्थित ६९ और कादंवरी मदिरासे कछुक विह्वल और नीलवस्त्रों को पहने हुये और श्वेतकांतिवाले और शरदऋतु की पूर्णमासी के चंद्रमा की समान कांतिवाले और वनकी माला से अंकित उदरवाले ७० और कुंडलका धारण करनेवाले और सुंदर मुकुटको धारण करने वाले और नीचेको मुख करनेवाले ऐसे बलदेवजी गोमंत पर्वत के शृङ्ग से तिनराजाओं के मध्य में कूदते भये ७१ तब बलदेवजी कूदलिये तबकाले बद्दलके समान उपमावाले ७२ और असितपराक्रमवाले ऐसे श्रीकृष्ण पैरोंसे पर्वतको पीड़ने लगे ७३ तबपीड़ित कियापर्वत चारोंतर्फ से जलको फिराने लगा तिस पानीसे तत्काल

अग्नि शांतहुआ ७४ जैसे कल्पके अंतमें पानीकी धारासे सूर्य्यपीछे सिंहके समान शब्द करनेवाले और पीत बस्त्रोंको पहननेवाले ७५ और मेघ के समान आकृतिवाले और मुकुटको मस्तक पै धारण करने वाले और सौम्यरूप मुखवाले और कमल के समान नेत्रों वाले ७६ और लक्ष्मीके चिह्नसे युक्त छातीवाले और इन्द्रके समान प्रकाश वाले ऐसे श्रीकृष्णभी पर्वतके शृंगसे कूदतेभये ७७ तब बलदेव और श्रीकृष्णके चरणों से पीड़ितहुआ पर्वत तीव्रअग्निको बुझानेके अर्थपानीकी धाराछोड़ने लगा ७८ तिनपनियोंकी धाराओं को देखके राजभयभीत होनेलगे ७९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व भाषायां नवनवतोऽध्यायः९९ ॥

सौका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहने लगे ऐसे वसुदेव के दोनों पुत्र पर्वत से कूद के क्षोभित हुई सेनाकोदेख १ भुजाओंके प्रहारों से सेनामें बिचरने लगे जैसे दो मगरमच्छ २ जब युद्धमें दोनोंका प्रवेश हुआ तब पुरातन दिव्य शस्त्रों को ग्रहण करनेको इच्छा हुई ३ तब आकाशसे शस्त्रवर्षने लगे४ अर्थात् संवर्त्तक नामहल और सौनंद नाममूसल और सुदर्शन नामचक्र और कौमोदकीनाम गदा येचारों दिव्य शस्त्र आकाशसेवर्षे५ तबहल और मूसल ये दोनोंबलदेवजीने ग्रहण करे और सुदर्शनचक्र और कौमोदकीगदा६ येदोनोंश्रीकृष्णमहाराज ने ग्रहणकर तब शेषनाग के समान कोपितरूप हलको बलदेवजी उठाके युद्धमें विचरने लगे ७ और रथोंके समूहको हलसेखैंच और हाथीघोड़े इन्होंको हलसेखैंच मूसलको ताड़नादेने लगे८ तब बलदेवजी के सकाशसे पीड़ितहुये क्षत्रिय रथोंसे अलग होके जरासंध के समीप में प्राप्तहुये ९ तब क्षत्रधर्म में स्थित हुआ जरासंध उन कायर रूपक्षत्रियों से कहनेलगा कि तुम्हारी इस क्षत्रवृत्तिको धिक्कारहै १० क्योंकि युद्धसे भागनेवालेको और रथ टूटने के बाद भागनेवालेको भ्रूणहत्या लगतीहै ऐसे बुद्धिमान् कहतेहैं ११ और

प्यादे रूप एकगोप के अगाड़ी तुम ऐसे बलवान् कैसे भयभीत हुये सो जल्द उलटेजावो १२ अथवा रथमें स्थितहो प्रेक्षकबनो १३ जब तकइनदोनोंगोपोंको मैंधर्म राजके लोकमें प्राप्तकरूं तबतक तबजरा-संध के बचनसे प्रेरितकिये वे क्षत्रियराजे १४प्रसन्नहोके बाणोंको छोड़ते हुये युद्धमें प्राप्तहुये और कांचनों के मुकुटवाले घोड़ों करके और चन्द्रमा के समान कांतिवाले रथोंकरके १५ और मेघों के समान कांतिवाले और पीलवान आदिसे प्रेरित ऐसे हाथियों कर-के १६ और छत्रों के धारणसे और शस्त्रधनुष तूणीर बाण इन्हों को धारण करने से और सुंदर चंवरों के ढुलने से १७ वे सब राजे रथमें बैठे हुये जब युद्धमें प्राप्तहुये तब शोभित होनेलगे १८ और शस्त्रों को धारण करनेवाले और युद्धको चाहनेवाले ऐसे बलदेव श्रीकृष्ण भी सन्मुख स्थित हुये १९ पीछे इनदोनों का तिन राजाओंके संग युद्धहोनेलगा २० पीछे हजारहों बाणोंको छोड़-नेवाले और गदा क्षेपणीय मुद्गर २१ इन्हों से शत्रुओंको पीड़ा देनेवाले ऐसे दोनों कम्पायमान न हुये पीछे बद्दल के समान आ-कारवाला और शंख चक्र गदा इन्हों को धारण करने वाला २२ और तेजस्वी ऐसा श्रीकृष्ण बढ़नेलगा जैसे पवनसेयुक्त अग्नि तब सूर्यके तेजके समान प्रकाशित चक्र करके २३ युद्धमें मनुष्य हाथी घोड़े महारथी इन्हों को काटनेलगा तब गदाके निपात से हतहुये और हलके खैंचनेसे नष्टप्राणोंवाले २४ऐसे राजेयुद्धमें स्थितहोनेको समर्थनहींरहे और चक्रको धारा से कटेहुये और बिचित्र प्रकार से टूटेहुये २५ ऐसे रथोंके समूह युद्धमें चलनेको समर्थ नहींहुये और बलदेवजीके मूसलसे खंडित और टूटेहुये दांतों वाले और ६० वर्ष की अवस्थासे युक्त२६ऐसे हाथी शब्द करनेलगे जैसे वर्षा के अंतमें बद्दल और चक्ररूप अग्निकी लटा से हतहुये सादी औरप्यादे२७ प्राणोंको त्यागतेहुये पृथ्वीमें पड़तेहुये जैसे बज्रसेहत वृक्षऔर चक्र हल इन्होंसे दग्धहुई और दलीहुई २८ सब सेना प्रलय के समान हतहुईकीतरह पड़तीभई और दिव्यरूपवाले वैष्णवशस्त्रों को देखने

को २९ सबराजे बलको त्यागतेभये और कितनेक रथ टूटगये कित- नेक रथोंमें राजे मरगये ३० कितनेक रथोंका एकचक्र टूटगया और उस घोर युद्धमें अनेक प्रकारके दारुण राक्षस पड़नेलगे ३१ और उत्पात करनेलगेऐसेराजाओंके पड़नेसेब्याप्त औरलोहूसेगीलीऐसी युद्धभूमि होतीभई ३२ अर्थात्‌मनुष्य प्यादेघोड़े हाथी इन्होंके बाल हाड़ मज्जा आंत लोहू इन्हों से पृथ्वी आच्छादित होती भई ३३ और बुरीतरहके शब्दों को पक्षी करनेलगे ३४ और कंकगीध इन आदि पक्षीभी पुकारने लगे ३५ तब शत्रुओंको मारनेके वास्ते श्री कृष्ण प्रलयके सूर्यके समान कांतिवाला चक्र और गदाको धारण कर युद्धमें बिचरने लगे ३६ पीछे शस्त्रोंको ग्रहणकर राजाओंसे श्री कृष्णकहनेलगे ३७ हाथी घोड़ा रथ इन्होंसे युक्त तुमशूरवीर क्या युद्ध नहीं करते और किस वास्ते गमन करते हो और बलदेव से सहित मैं एकप्यादा तुम्हारे सन्मुख स्थितहूं और जो तुम्हारी रक्षा करने वाला जरासंध अबमेरे सामने क्योंनहीं आता ३८ऐसे श्रीकृ ष्णके वचनको सुन अतिवीर्यवाला दरदनाम राजाहलवाले बलदेव जीके ३९ सन्मुख जाके कहनेलगा कि हे बलदेव तू मेरे संग युद्ध कर ४० तबबलदेवजी और दरद राजाका आपसमें युद्ध होनेलगा जैसेअति बलवाले दो हाथियोंका ४१ पीछेबलदेवजीने अपनेबल करके एक मूसल दरद राजाके कंधेपैमारा ४२ तब उसीवक्तदरद राजापृथ्वीमें पड़ताभयाजैसे कटाहुआआधापर्बत ४३ ऐसे जब बल देवजीके हाथ दरदराजा मरगया तब जरासंधका बलदेवजीके संग समागम हुआ ४४ जैसे वृत्रासुरका इन्द्रकेसंग तबदोनों दोगदाओं को ग्रहण कर आपस में सन्मुख दौड़नेलगे ४५ अर्थात् पृथ्वी को कम्पावतेहुये औरगदाओंको धारणकरतेहुये ऐसेदो योद्धादीखतेभये जैसेशिखरोंसहित दोपर्बत४६ तबदेखनेवालेसब राजाओंकेसबयुद्ध शांतहुये औरगदा युद्धमेंविश्रुत४७औरअतिबलवाले औरगदाविद्या केउत्तम आचार्य ऐसेदोनोंमदवाले दोहाथियोंके समान आपसमेंदौड़ नेलगे ४८ तबदेवगंधर्वसिद्ध महर्षियक्ष अप्सरा येहजरहों प्राप्तहोने

लगे ४६ अर्थात् देवयक्षगंधर्व महर्षिइन्होंसे अलंकृत आकाशअधिक शोभित होनेलगा जैसे तारागणों से ५० पीछे जरासंध बामेमंडल सेऔर बलदेव दाहमंडलने से चलतेहुये ५१ औरहाथियोंके दांतोंके भिड़नेसे जैसाशब्दहोताहै तैसेशब्दोंसे दशदिशाओं को पूरित करने लगे५२तबबलदेवजीको गदाके पातकाशब्दबज्रके समानहोनेलगा और जरासंधकी गदाके पातका शब्द फटतेहुये पर्वतके समानहोने लगा ५३ और जरासंधकेहाथसे छुटीहुई गदा बलदेवजीको नहीं कंपावतीभई जैसे पवन बिंध्याचलको ५४और बलदेवजीकीगदाके वेगकोजरासंध बहुतसे धैर्यसे औरशिक्षासे सहताभया ५५ तबऊंचे स्वरसे संयुक्त आकाशवाणीहुई हेराम तुमकोयह जरासंध मारना नहींचाहियेअर्थात् इसपरक्रोध मतकरो ५६ इस जरासंधको मृत्यु करनेवाला मैंने रचदियाहै इस वास्ते तू शांति को प्राप्तहो थोड़ेसेही कालमें यह जरासंध प्राणोंको त्यागेगा ५७ इस बचनको जरासंध सुनके अप्रसन्न होगया और जरासंध के अर्थ बलदेवजी प्रहारनहीं करतेभये ५८ऐसे पराजितरूप जरासंध राजाहोके भागनेलगा५६ तब अन्यभी सब राजे अपनी अपनी सेनाओंको लेके भयभीत होके भागनेलगे ६० जैसे सिंहको सूंघके मृग ऐसे भग्न गर्भवाले राजा ओंसे त्यक्त ६१ और बहुतसे मांस को खानेवाले पक्षियोंसे व्याप्त और घोर ऐसी युद्धभूमि होतीभई जब सबराजे चलेगये तब चेदीका राजा ६२ दमघोष कारुषकी सेना और चंदेरी की सेनाको लेकर यादओं के संग संबंध का स्मरणकर ६३ कृष्ण के पासआया और कहनेलगा कि हे यादवनंदन मैं तेरेपिताकी बहिनका पतिहूं अर्थात् तेरा फूफाहूं ६४ सोअपनी सेनासे संयुक्त तेरेपास मैं प्राप्तहुआ तूही मेरा परम प्यारा है और मैंने अल्प बुद्धिवाले जरासंध से भी कह दिया ६५ कि हे दुर्बुद्धे कृष्णके संग युद्धसे बिरामकर जब मेराबचन उसने नहींमाना तब मैंने उसको त्याग दिया है ६६ और तेरे करके भग्नकिया जरासंध बहुत से राजाओं के संग भागा जाता है परंतु फिर भी तेरे अर्थ अपराध दिखावेगा ६७ और क्रव्यादगणों से

संकीर्णऔर मनुष्य रहित प्राणियोंसे सेवित और मरेहुये मनुष्योंसे ब्याप्त ऐसी इस युद्धमहीको त्यागो ६८ और हम सेनाओं को लेके हे वीर करवीरपुरको चलेंगे६९ तहां बसुदेवका पुत्र शृगाल नामसे विख्यात ऐसाराजा बसताहै तिसको देखेंगे ७० और उत्तम शस्त्रों से ब्याप्त और जल्द चलनेवाले घोड़ों से जोते हुये ऐसे ये दो रथ तुम्हारे वास्ते मैंने पहलेही तय्यार करदिये हैं ७१ सो तेरा कल्याणहो बलदेवजीको संग लेके जल्द रथमें स्थितकरो७२ ताके पीछे पूर्व्वोक्त राजाको देखनेकेअर्थ वेगसेचलेंगे ७३ तब बैशंपायन कहनेलगे ऐसेचंदेरीकाराजा और पिताकी भग्नीकेपतिकेकहे बाक्य कोसुन प्रसन्नहुआ और जगत् का गुरु ऐसा श्रीकृष्ण बाक्य कहने लगा७४आश्चर्य्यहै इसवक्तमेंबांधवसंबंधीस्नेहकरकेवचनरूपपानी सेहमसींचे ७५ औरदेशकालसेसंयुक्त औरहित और मधुरऐसेवाक्य को संसारमें कहने वाले दुर्लभहैं ७६ हेचेदिराज तेरेदर्शनसे हम सनाथ भये और जिन्होंकातू ऐसाबंधुहै तोहमारेकोकुछभी अप्राप्य नहींहै७७और जरासंधआदि सबराजाओंकोमृत्युकरनेको हेराजन् तेरी सहायतासे हमदोनों समर्थ हैं ७८ और सब राजाओंमें यदु कुलवालों का तूही प्रथमबंधुहै अर्थात् प्याराहै और हेचेदि सत्तम अबसे लगायत बहुतसे युद्धोंको तू देखेगा ७९ और युद्धकी वृत्ति वाले राजे चक्र मौसल नामसे विख्यात इसयुद्धको कहेंगे ८० और गोमंत पर्वतके समीप हुये युद्धमें इन राजाओंके पराजयको श्रवण करनेसे व धारण करनेसे सबमनुष्य स्वर्गलोकमें वासकरेंगे ८१ और हे महाराज तेरेकहे मार्गके अनुसार कल्याण के अर्थकरवीर पुरको गमन करतेहैं ८२ तब पवनके वेगकेसमान घोड़ोंसेजुतेहुये रथोंमें बैठके चलते भये जैसे मूर्तिवाले तीन ८३अग्नीसो तीनराति मार्गमें वासकर करवीर पुरमें प्राप्तहुये ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांकरवीरपुराभिगमनंशत तोऽध्याय: १००॥

एकसौएकका अध्याय॥

वैशंपायन कहने लगे तिन तीनोंको आतेहुयेजान और पुरकीप्रागल्भताकोमान युद्धमें दुर्मद और इन्द्रके समान पराक्रम वालाऐसा शृगाल राजा पुरसे निकसा १ पीछे सूर्यके समानवर्णवाला और प्रकाशित और युद्धमें चलनेवाला और शस्त्रोंसे पूरित और नेमिके द्वारा शब्दकरनेवाला २ और मंदराचलके तुल्य और नानाप्रकारके गहनोंसे भूषित और क्षयरहित बाण और तूणोंसे पूरितऔर समुद्रके समान शब्द करनेवाला ३ और जल्द चलने वाले हरितघोड़ोंसेसंयुक्त और शिखरपैभी चलनेवाला और गरुड़के समान वेगवाला और दृढ़ पहिया ४ और धुरआदिसे शोभित और आकाशचारी इन्द्रके रथके समान ५ और वैरीके रथको नाशनेवाला और सूर्य किरणों समान रस्सियों से खैंचाहुआ ६ ऐसे उत्तम रथमें शृगाल राजा स्थितहो ७श्रीकृष्णके सन्मुख प्राप्तहुआ जैसे अग्निको पतंग पीछे धनुष तीक्ष्णबाण कवच सोनाकी माला सफेद पगड़ी इन्हों को धारण करने वाला और अग्निके समान नेत्रोंवाला ८ और बारम्बार धनुषकी टंकार करनेवाला और अग्निकीलताके समानक्रोध की वायुको मुखसे निकासता हुआ ९ और आभूषणोंकी पंक्तियों से मेरु पर्वतके समानप्रकाशित ऐसा शृगालराजा रथमें पर्वतके समान स्थितहो कृष्णको दीखताभया १० और रथकी नेमीके शब्द करके नवतीहुई पृथ्वी पहलेकीतरह चलायमान होने लगी ११ परंतु मूर्त्तिमान् पर्वतके समान और लोकपालों के समान कीर्त्ति वाला ऐसे शृगाल राजाके आगमनको देख श्रीकृष्णनहीं पीड़ित होतेभये १२ तब सावधानहुआ और जल्द चलनेवाले रथमें स्थितहुआ शृगाल राजा युद्ध करनेके अर्थ इच्छा करनेलगा १३ तब श्रीकृष्णभीकछुक हंसके युद्धके अर्थ स्थितहुये १४तब दोनोंका आपस में घोरयुद्धहोने लगा १५ जैसेमदवाले दोहाथियों कातब युद्धमें स्थित श्री कृष्णको अतितेजवालाशृगालकहनेलगाहेकृष्णगोमंतपर्वतकेसमीपमें जोयुद्ध

हुआतहां १६ नायकरहित और मूर्ख ऐसे राजाओं का पराजय मैंने जानलिया १७ अब तू ठहर मैं पार्थिव पदपै स्थितहुआ १८ तेरेको युद्धफल दिखाऊंगा और मेरा रोका हुआ तू कहां जावेगा और तेरे सेमैंअपनी सेनाको संगले युद्ध नहीं करसक्ता १९ अर्थात् एकही तू और एकहीमैंदोनों आपसमें युद्धकरेंगे २० जो मेरी मृत्युहोजावेगीतो तू एकसंसारमें वासुदेव नामसेबिख्यात रहेगा २१ और जो तेरीमृत्यु होजावेगी तोमैं एक संसारमें बासुदेव नाम से बिख्यात रहूंगा २२ ऐसे शृगालके बचनकोसुन क्षमावाले २३ श्रीकृष्ण कहनेलगे कि तू इच्छासेप्रथम प्रहारकर ऐसेकहके श्रीकृष्णचक्रको धारणकरतेभये पीछे क्रोधसेमूर्च्छित शृगालराजा श्रीकृष्ण के अर्थ घोररूप बाणों के समूह और मूसल आदि अनेक प्रकार केशस्त्र इन्होंको छोड़ने लगा २४।२५ परंतु श्रीकृष्ण पर्वतके समान स्थितहीहोरहे पीछेअस्त्र प्रहारसेकछुकहतहुआ औरकछुकक्रोधकोप्राप्तहुआ २६ ऐसाश्रीकृष्ण चक्रको उठाशृगालकीछातीमें मारताभया २७ तब वहचक्ररथमेंस्थित और युद्ध दुर्मद और अतिगर्ववाला और महाबली और युद्धकरने की इच्छा वाले ऐसे शृगालको मारके २८ फिर श्रीकृष्णके हाथमें प्राप्तहुआ ऐसे चक्रकी चोटसे फटीहुई छातीवाला २९ और लोहूको शरीरसे झिरानेवाला ऐसाशृगालप्राणोंकोत्यागपृथ्वीमेंपड़ताभया तब वज्रपातसे पतितहुये पर्वतकीतरह ३० तिसराजाको पृथ्वीमें पड़ेहुये देख अप्रसन्न मनवाली सब सेनाभागने लगी अर्थात् तिसदुःखमें पीड़ितहुये नगरमें प्रवेशकर ३१ ऊंचे स्वरसे रोनेलगे और कितनेक अपनेसुखोंको स्मरण करतेहुये और शोच करते हुये पृथ्वीमेंपड़े राजाकोनहीं त्यागतेभये ३२ तब मेघ के शब्द केसमान शब्दकरके सबमनुष्यों के अर्थ अभय देतेभये ३३ अर्थात् प्रकाशमान अंगुलियोंसे और चक्रसे संयुक्त हाथकर के डरोमत भयमत मानोऐसे तिनसबों के प्रतिकहतेभये ३४ कि इसपापी के दोषकरके अन्यपुरुषोंको युद्धमेंमैंनहीं मारूंगा ३५ क्योंकि शूरबीर का यहधर्म नहींहै तबआंशुओंसे पूर्णमुखवाले और दीन और अत्यंत रोनेवा-

ले ३६ और भ्रष्टमनवाले ऐसे प्रजा सहित राजमंत्री चक्रसेकटी हुई छातीवाले राजाकोपृथ्वीमें पड़ेहुये देख ३७ बिलाप करतेभये ३८ तब नेत्रोंसे अश्रुपात बहानेवाली और शोकके बशमेंप्राप्त और पुत्रों वाली और रोवनेसेबिगड़े हुये ३९ मुखवाली ऐसो बहुतसी रानियें तिस राजाको पृथ्वीमें पड़े देख ४० अपने हाथ के नखों से अपनी चूचियोंको खोरखोर के अतिपीड़ित हुईं बिलाप करनेलगीं अर्थात् छाती चूची शिर के अंगइन्होंको अत्यंत पीटतीहुईं ४१ ऊंचे स्वरसे रोनेलगीं पीछे दुःखसे पीड़ित और गीले नेत्रोंवाली ४२ और ऊपर को हाथकरनेवाली ऐसी सबरानियें मरेहुये राजाकी छाती पै पड़ने लगीं जैसे जड़से रहितलता ४३ अर्थात् बेल और तिनरानियों के आंसुओं के पानीसे कमलोंकी तरह नेत्र पूरित होते भये ४४ पीछे हृदयमें हाथोंसे पीटती हुईं सबरानियां रोवतेहुये ४५ और शक्रदेव नामसे बिख्यात ऐसे पुत्रको पिताके समीपमें प्राप्तकर दूने प्रकार से रोनेलगीं ४६ और कहनेलगीं हेबीर यहतेरा बालक पुत्र तेरेसे रहित कैसे पिता के राजसिंहासन पै बैठेगा ४७ और सुखोंसे अत्त-प्तहुई हम सबबिधवा क्याकरें ४८ तबपद्मावती नामवालीरानी ४९ पुत्रका हाथ पकड़ श्रीकृष्ण के समीप में प्राप्तहुई और कहनेलगी हेबीर युद्धयुक्त कर्मकरके जो तैंनेयह राजा मारादियाहै ५० तिसका यह पुत्रतेरीशरण प्राप्तहुआ और जो हमारा भर्त्ताराजा तुम्हारेको नमस्कार करता व तुम्हारी शिक्षामानता तो ५१ एकप्रहारसे क्यों माराजाता और जो यह मूढ़राजातेरे संगबांधव बिरोधकरता ५२ तो क्यों इस पृथ्वीको कृपणकीतरह रखता परंतु अब मृत्युको प्राप्तहुये अपने इस भ्राताको ५३ यहसंतानि अपने पुत्रकीतरह रक्षितकरनी चाहिये अर्थात् इस राजा के पुत्रको अपने पुत्रकी तरह समझ ५४ ऐसे तिसरानी के बचनको सुन के ५५ कोमलता पूर्बक बचनको श्रीकृष्ण कहनेलगे हेराजपत्नि इसदुरात्मा रूपराजाके संगहीमेरा क्रोधगया ५६ और हमअपनी प्रकृतिमें स्थितहैं औरहेदेबितरसुंद-रवचनोंसे शेष रूपभीक्रोध मेरागया ५७ जोयहशृगालराजाका पुत्र

है सोमेरापुत्रहै इसमें संशयनहीं सोअभय और अभिषेक इसी वक्त इस के अर्थ मैं दूंगा सो प्रजा के लोग पुरोहित मंत्री ये सब बुलाये जानेचाहिये तब अभिषेक के अर्थ जहांबलदेव और श्रीकृष्ण थे तहां सब प्रजा और पुरोहित और मंत्रीजन प्राप्त हुये ५९। ६० तब राज्य सिंहासन पै तिसराजा के पुत्रको स्थित कर दिव्यरूप अभिषेकसे श्रीकृष्ण युक्तकरते भये ६१ ऐसे करवीर पुरमें शृगाल के पुत्रको राजाबना ६२।६३ उसीदिन पूर्वोक्त शृगालके रथमें स्थितहो मथुराकी तरफ गमन करतेभये जैसे इन्द्रस्वर्गको६४ पीछे धर्मात्मा रूपराजपुत्र और तिसकीमाता और सबप्रकारकीप्रजा६५ और राज मंत्री येसब सलाहकरके मरेहुयेराजाको पीनस अर्थात् पालकी में स्थितकर पश्चिमके सन्मुखहो दूरलेगये६६ तहां जाके मृत्युविधान करके सबक्रिया करनेलगे ६७ अर्थात् राजाका उद्देशकर हजारहों प्रकारके श्राद्धोंसे तृप्तकर पीछे नामगोत्र आदिके द्वाराजलदान करते भये ६८ ऐसे उदक कर्मकरकेपिताके मरने बादशोकसे संविग्न मन वाला शक्रदेव राजा करवीर पुरमें प्रवेश करताभया ६९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांशृगालवधेएकाधिकशतोऽध्यायः१०१॥

एकसौदोका अध्याय॥

वैशंपायन कहने लगे थोड़ेही कालमें दोनों यादव पांचरात्रितक दमघोष राजाके संगवास कर पीछे एकरात्रि मार्गमें ठहर १ अति आनंदसे युक्तदोनों मथुरानगरीमें प्राप्तभये २ जब इनदोनोंके आगमनकी खबरभई तब सेनासे सहित उग्रसेनराजा ३ सब प्रजा सबमंत्री बालक और वृद्धोंसे सहित सब मथुरावासी सन्मुखगये४ और अनेक प्रकारके बाजे बजने लगे और बलदेव और श्रीकृष्ण की स्तुति होने लगी ५ और मथुरापुरी की गली गली में ध्वजा और फूलोंकी मालासे शोभाहोनेलगी ६ और राजामार्गोंमें प्रसन्न हुये सबमनुष्य यादव वंशकी उत्तम कथाको गानेलगे ७ और न कोई दीनपुरुषरहा और न कोई मलीनरहा और न कोई दुःखित

रहा ८ और प्रसन्नहुये सबमनुष्य आपसमें सुंदर बचनोंको बोलने लगे ६ और गाय घोड़े हाथी नरनारी येसबमनमें फूलनेलगे और धूलीसे रहित पवन दशोंदिशाओंमें चलने लगे और सबमंदिरों में देवताओंकी प्रतिमा प्रसन्न होनेलगीं १० और जितने कृतयुगमें चिन्हहुआ करते वेसब तिससमयमें होनेलगे ११ पीछे पवित्र और मंगलरूप समयमें रथमें स्थितहुये बलदेव और श्रीकृष्ण मथुरा पुरीमें प्रवेश करने लगे १२ तब पीछे पीछे सब यादवगण चलने लगे जैसे इन्द्रके देवते १३ तबपिता बसुदेवके स्थानमें दोनों प्रवेश करतेभये जैसेचंद्रमा और सूर्य्यपर्वत में १४ पीछेदोनों बसुदेवके चरणोंमें नमस्कारकर और उग्रसेन राजाको नमस्कारकरऔर सब यादओंको यथायोग्य नमस्कारकर १५ और यादओंसेभीयथायोग्य नमस्कृत किये ऐसेदोनों बलदेव और श्रीकृष्ण प्रसन्नमनवाले होके माताके स्थानमें प्रवेश करतेभये १६ तब उसजगह अपने शस्त्रोंको स्थापितकर इच्छापूर्वक विचरनेवाले दोनों बसुदेवकेपुत्र आनंदित हुये १७ पीछे उग्रसेनकी आज्ञाके अनुसार थोड़ेसे कालतक श्रीकृष्ण और बलदेव मथुरापुरीमें विचरतेभये १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांमथुराप्रत्यागमनेद्व्यधिकशततमोऽध्यायः १०२॥

एकसौतीनका अध्याय ॥

वैशंपायन कहने लगे किसीकाल में गोपों के प्यार का स्मरण कर कृष्णके मतमें स्थित बलदेवजी ब्रजकोगये १ तहांजाके अनेक प्रकारके रमणीकवन तलाव तिन्होंको देखते भये २ पीछे बनके पदार्थों से अलंकृत वेषवाले बलदेवजी ब्रजमें वेगसे प्रवेशकर सब गोपोंको विधिपूर्वक यथायोग्य और यथा अवस्था ३ पहलेकी तरह प्रीतिसे कहनेलगे और सबगोपोंको आनंदित करकेपीछे मधुररूप कथाओं से गोपियों को भी आनंदित करतेभये ४ तब मधुर वचन बोलनेवाले वृद्धगोप बलदेवजीसे कहने लगे ५ हे यदुकुल नंदन

तुम्हारा आगमन सुंदरहै हमतेरेको देखके अब प्रसन्न हुयेहैं ६ और हेप्रिय तू तीनलोकोंमें शत्रुओंको भयदेनेवाला रामनामसे विख्यात ऐसाहै और तेरेही करके हमवृद्धिको प्राप्तहुयेहैं ७ और हे अमलानन हमसबतेरेही प्रतापसे देवताओंकेभी माननेयोग्य हुयेहैं ८ और हे प्रिय तेरे आगमनकी वांछावालेहम सब तैंनेआके देखे यह अति मंगलहुआ ९ और वहुतसे दुष्टदैत्य और कंस मारदिया और उग्रसेनको राज्यदिया यहबड़ी खुशीकी वातहै और समुद्र में मच्छ के संग तुम्हारा युद्धहुआ सुना है और गोमंत पर्वतमें क्षत्रियोंके संग युद्ध सुनाहै १० और दरद राजाकी मृत्यु और जरासंधका पराजयभी सुनाहै और दिव्य शस्त्रोंका आकाशसे तुम्हारे अर्थ युद्ध में उतरना यहभी सुनाहै ११ और करवीरपुर में शृगाल राजाको मारना और तिसके पुत्रको राज्यदेना और करवीर पुरवासियोंको आश्वासन देना यहभी सुनाहै १२ और देवताओंके कोल नकरनेके योग्य मथुरामें प्रवेशभी हमोंने सुनाहै १३ और तुम्होंने अच्छीतरह पृथ्वी स्थापित करदी और वहुतसे राजेवशमेंकरलिये १४ यहबड़ी खुशीकी वात है और तेरे आगमनको देखके हमसब पहलेकी तरह उत्तम भाग्यवाले हुयेहैं १५ तुम्होंने हमारेको वड़ा आनंदित किया तब सबसन्मुख स्थितहुये गोपोंको बलदेवजी कहनेलगे १६ कि हे प्यारो सवयादवोंसेभी ज्यादे तुममेरे बांधवहो यहीं हमदोनोंभ्राताओंकी बाल्यावस्थाबीतीहै १७ औरयहांहीं हमदोनोंभ्राताओंने रमण कियाहै औरतुम्हारेप्रतापसेहीवृद्धिको प्राप्तहुयेहैं १८ ऐसेहम तुम्हारे सेकैसे विकर्मको प्राप्तहोवें तुम्हारे गृहोंमें हमोंने भोजन कियाहै और तुम्हारी गायोंकी रक्षाकरीहै १९ इसवास्ते तुमसब हमारे अतिप्रिय बांधवहो और गोपोंके मध्यमें ऐसे बलदेवजीके कहनेसे सबगोपियां प्रसन्न मुखवाली होतीभई २० पीछे अन्य बनमें महाबल वाले बलदेवजी प्राप्तहुये २१ और इसी अंतरमें विदितात्मारूप बलदेव जीकेअर्थदेशकालको जाननेवालेगोपोंनेवारुणीमदिराप्राप्तकरी २२ तब उनगोपों से परिवृतहुये बलदेवजी तिस मदिराको पानकरने

लगे २३ पीछे अनेक प्रकारके फूलफल मेध्वरूप नाना प्रकारके गंध और मनोहर भक्ष्य और तत्काल के तोड़ेहुये कमलों के फूलपै सब गोपोंने बलदेवजीके अर्थ प्राप्तकिये २४ तब सुंदर बालोंवाले शिरपै सुंदर मुकुटको बांध और सुंदर कुंडलको पहन और बनको मालाओंको पहन बलदेवजी प्रकाशित होतेभये २५ जैसे कैलास करके मंदराचल पीछे सुंदर बद्दलोंके समान नीले कपड़ोंको पहन बलदेवजी ऐसे शोभायमान हुये जैसे अंधेरेके समूह में चंद्रमा २६ पीछेहल और मूसलको ग्रहणकर मत्तहुये बलदेवजीशोभितहुये२७ पीछे बलदेवजी यमुनाजी से कहनेलगे हे महानदि मैं स्नान करने की इच्छाकरूंहूं २८ सो त्ह्यां प्राप्तहोजा तब बलदेवजी को मदरूपवाणीका तिरस्कार कर स्त्रीस्वभावसे मोहित यमुना तिसदेश में नहीं प्राप्तहुई२९तबमदवाला और अतिबलवान् बलदेवजी क्रोध को प्राप्त हो खैंचनेके अर्थ हलके मुखको नीचरली तर्फ कर तिस हलके अग्रभागमें यमुनाको खैंचतेभये३०तब बिह्वल जलके स्नो-तोंसे युक्तऔर हलके अनुसार गमनकरनेवाली और भयभीतऐसी यमुना नदी वेगसे टेढ़ी बहनेवाली ३१ और बलदेवजी के भय से त्रस्तभई की तरह आकुलताको प्राप्तहुई अर्थात् पुलिन श्रोणीबिम्ब ऐसे ओष्ठोंवाली और तोरके अंतमें टेढ़ीबहनेवाली ३२ और वेगके गम्भीरसे टेढ़ेअंगोंवाली और दुःखितहूई मछलियों से विभूषित और हलसे खैंचीहुई ३३ ऐसी यमुना नदी टेढ़ीहोके वृन्दाबन के मध्यमार्ग करके प्राप्तहुई ३४ और जलमें बसनेवाले पक्षियोंकरके रोरूयमान ऐसी यमुना नदी वृन्दाबन में प्राप्तभई ३५ तब स्त्रीके रूपको धारणकर यमुना बलदेवजीसे कहनेलगी ३६ हे नाथ तू प्रसन्नहो तेरी आज्ञाकेभंगसे मैं भयभीतहूं ३७ और बिपरीत रूप और बिपरीत जल मेरा होगयाहै ३८ और हे रोहिणी के पुत्र सब नदियोंके मध्यमें खैंचनेसेटेढ़ीबहनेवाली ऐसीबुरी मैंकरदीगईहूं ३९ और समुद्रमें प्राप्तहोनेवाली मेरेको सब वेगसे गर्वित सपत्नीरूप सब नदियें फेनरूप हासोंसे हंसेंगी ४० इसवास्ते हे बलदेव मैं

तेरेसे याचना करतीहूं तू मेरे पै प्रसन्नहो और हेसुरोत्तम हलकेद्वारा खैंचनेसे मैं दुःखितहूं ४१ सो यह क्रोध दूरकरना चाहिये और हे लांगलायुध मैं अपने मस्तक को तेरे चरणों में प्राप्त करूंहूं सो हे महाभुज तेरे कहेहुये मार्गकी इच्छाकरूंहूं सो मैं कहांजाऊं ४२ तब प्रणामसे नम्रतहुई समुद्रकी बधू यमुनाको देख के बलदेव जो मदसे क्लांतहुये वचनको कहतेभये ४३ हे प्रियदर्शने हलकेद्वाराप्राप्त हुये मार्गवाली तू पानीके देनेसे इस सम्पूर्णदेशको शुद्धकरेगी ४४ ऐसे तेरेअर्थ शिक्षा कहीहै शांतिको प्राप्तहो और इच्छापूर्वक गमन कर और जबतक यहसंसार स्थितरहेगातबतकमेरा यशरहेगा ४५ तब सब ब्रजवासी ऐसे यमुनाजीके खैंचनेकोदेख ठीकहै ठीकहै ऐसे कहके बलदेवजीकेअर्थ प्रणामकरतेभये ४६ पीछे तिसयमुना नदीको और उन ब्रजवासियोंको वहीं छोड़केमन और बुद्धिसे चिन्तवनकर फिर बलदेवजी मथुरापुरीको प्राप्तभये ४७ ऐसे बलदेवजी मथुरा में जाके श्रीकृष्णको देखतेभये ४८ तब वनके पदार्थोंकोवेषित किये रूपको धारण करनेवाले और बनोंकी मालाओंको पहननेवाले ४६ और हलको धारणकरनेवाले ऐसे बलदेवजीके आगमनको देखवेग से श्रीकृष्ण उठके उत्तम आसन देतेभये जब बलदेवजी आसनपै स्थित होगये ५० तब श्रीकृष्ण ब्रजमें और गोपोंमें और गायों में कुशलता पूछनेलगे तब श्रीकृष्णकेअर्थ बलदेव कहनेलगा ५१ कि हे कृष्ण जिन्होंकी तू कुशल पूछनेकीइच्छा करताहै तहां सबजगह कुशलहै ५२ पीछे श्रीकृष्ण और बलदेवजी आपसमें वसुदेव के अगाड़ी पवित्र ५३ और विचित्र अर्थोंवाली ऐसी पुरानी कथाओं को कहतेभये ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांयमुनाकर्षणेत्र्यधिकशतोऽध्यायः१०३

एकसौचारका अध्याय॥

वैशम्पायन कहनेलगे—इसी अंतमें लोकपालके गृहको उपमा के समान श्रीकृष्णके स्थानमें लोकमें वार्त्ताको प्रवृत्त करनेवाले

बहुतसे मनुष्य प्राप्तहुये १ तब उस जगह बहुतसे यादवोंकी सभा बैठीहुईथी तहां वे प्रात्यत्तिकजन कहनेलगे २ हे जनार्दन बहुत से राजाओंका समागम कुण्डिनपुरमें होनेवालाहै ऐसेबहुतसेमनुष्यों की वाणीसे कथासुनीहै ३ अर्थात् भीष्मककीपुत्री औररुक्मीकीबहिन ऐसीरुक्मिणीनामसे बिख्यातस्त्रीहै ४ तिसका स्वयम्बरहोनेवालाहै तहां प्राप्त होनेकेअर्थ बहुतसी सेनाओंसे युक्त सब राजे गमनकरते हैं ५ और त्रिलोकीमें तिस रुक्मिणी के समान कोई भी स्त्रीरूप- वाली नहींहै ६ तिसका आजसे तीसरेदिन स्वयम्बर होगा तहां हाथी घोड़ा रथ इन्होंकेद्वारा गमन करनेवाले राजाओंके सैकड़ों समूहोंको देखेंगे ७ और अपनी २ जयके अर्थ अपनी २ सेनाओं से संयुक्त गयेहैं ८ और जो हमगमननहींकरेंगे तोएकांतमें बिचरने वाले और उत्साह से रहित ऐसेसब होजावेंगे ९ तबहृदामेंशल्यकी तरहप्राप्तहुये इसबचनको सुनके श्रीकृष्ण यादवोंके संग उसस्थान से निकसता भया १० तबसब यादव अपने अपने रथों में स्थित होनेलगे ११ और सुदर्शनचक्र और गदाको धारणकर श्री कृष्णभी प्राप्तहुआ १२तबश्रीकृष्ण उग्रसेन राजासे कहनेलगा १३ हे नृप शार्दूल बलदेवजी करकेसहिततू यहींठहर क्योंकि जरासंधके बशमें हुये बहुतसे राजे इसपुरीको शून्यकरना चाहते हैं १४ तब बैशंपायन कहनेलगे तब श्रीकृष्णके बचनको सुनके उग्रसेन स्नेहसेबिकृत और अमृतरूप ऐसेबचनको कहताभया १५ हे कृष्णहेमहाबाहो हेरिपु- सूदन मैं कहताहूं तुमश्रवणकरो १६ तेरेसे रहितहमसुखपूर्बकबस- नेको समर्थनहींहैं १७जैसेपतिसे हीनभार्या औरतेरेही प्रतापसे इन्द्र सहित राजाओंसेभी हमभय नहींमानते १८ औरहेयदुश्रेष्ठ बिजयके अर्थ जहांजहांतूगमन करैगातहांतहांतू हमारेको संगले गमन किया कर १९ तबऐसे उग्रसेनके बचनको सुन श्रीकृष्ण कहने लगे २० जैसेतुम्हारे को बांछितहोगा वैसेही हमकरेंगेइसमें संशयनहीं २१॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांमंत्रोदाहरणेचतुरधिक शतोऽध्यायः १०४ ॥

एकसौपांचका अध्याय ॥

बैशंपायन कहनेलगे कि ऐसेश्रीकृष्णा कहके रथमें स्थितहो सूर्य अस्तहोनेके समय कुंडिन पुरमें प्राप्तहुये १ तहां अनेक प्रकार की शिविरों से आकीर्ण तिसराज समाजमें सुंदर रंगको देख के २ श्री कृष्णा राजाओंको दुःख देनेकेअर्थ और अपने यशको प्रकाश करनेके अर्थ अपने मनमें महाबलवाले ३ गरुड़जीको चिंतमनकरने लगेतब चिन्तमन करतेही गरुड़जी जानके सुखसे चिहनित शरीर को बना श्रीकृष्णाके समीपमें प्राप्तहुआ ४ तबपवनकोभी भ्रमकरनेवाले तिस गरुड़के पक्षके निपात से बहुतसे मनुष्य पृथ्वी में मुंधेपड़ते हुये ५ अर्थात् शिरोंके द्वारा पड़के कांपनेलगे तिन मनुष्यों को पड़तेहुये देख श्रीकृष्णा गरुड़जीका आगमन जानताभया६ पीछे दिव्यमाला और दिव्य चंदनको धारण करनेवाला और पक्षकी पवनसे पृथ्वी को बारंबार चलानेवाला ७ और सर्पोंको पैरों से खैंचनेवाला और हेमके पत्तोंसे शोभित और अमृतको हरनेवाला और सर्पोंको नाशने वाला ८ और दैत्योंके समूहको त्रासदेनेवाला और ध्वजासे लक्षित ऐसे गरुड़को श्रीकृष्णा देखतेभये ६ तब सांपरायिक अपना मंत्री और धीर्य्यवाला और समीपमें स्थितहुआ ऐसे गरुड़जी को मधुर बाणीसे श्रीकृष्णा कहनेलगे १० हे खगश्रेष्ठ हे प्रिय हे शूरसेनारि मर्दन आपका आगमन सुंदरहुआ हे रथश्रेष्ठ जहां कैशिकका स्थान है ११ तहां हमको प्राप्तकर प्रथम हम तहां बासकर स्वयंबरको देखैंगे अर्थात् अनेक प्रकारके राजाओं के समूहको देखेंगे १२ ऐसे महात्मारूप कैशिककी पुरीको श्रीकृष्णा प्राप्तहुये और जब गरुड़ के मित्र महारथी यादवोंसे परिवृत १३ ऐसे श्रीकृष्णा बिदर्भ नगरी में प्राप्तहोने लगे १४ तिसीसमय में अनेक प्रकार के शस्त्रोंको धारण करनेवाले १५ और बलशाली और प्रसन्नहुये ऐसे सबराजेनिवास के अर्थ उद्योग करतेभये बैशंपायन कहनेलगे१६ हेजनमेजय इसी कालको जाननेवाला कैशिक प्रसन्न हुये मनकरके उठअर्घ्य और

आचमनीसे श्रीकृष्णका विधि पूर्वक सत्कारकर अपने पुरमें प्रवेश करता भया १७ पहलेही कैशिकने श्रीकृष्ण के वास्ते दिव्यमंदिर वनवादियाथा तिसमेंसेनासहित श्रीकृष्ण निवासकरतेभये १८ जैसे कैलासमें महादेव पीछे खानपान रत्नोंके समूह बहुतसामान स्नेह से पूरित चित्त १९ इन्हों करके पूजित श्रीकृष्ण तिसी स्थानमें सुख पूर्वक बसतेभये २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांरुक्मिणीस्वयंवरेपंचाधिक शतोऽध्यायः १०५ ॥

एकसौछःका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे तबगरुड़जी सहित कृष्णके आगमान को देखसब राजे चिंतासे संयुक्त होतेभये १ हे जनमेजय नीतिशास्त्र के अर्थ को जानने वालोंमें उत्तम और मंत्रकर्ममें चतुर और भीम पराक्रम वाले ऐसे सब राजे इकट्ठेहो सलाह करनेलगे २ अर्थात् भीष्मक की रमणीक सभामें जाके नानाप्रकार के विचित्र आसनों पै स्थित हुये ३ जैसे देव सभा में देवते तिन्हों के मध्यमें महाबल वाला और महातेज वाला ऐसा जरासंध सब राजाओं से कहता भया ४ जैसे देवताओंसे महादेव जरासंध कहनेलगा हे सब राजाओ और हे महामति भीष्मक मेरे बचनको सुनो जो बसुदेवका पुत्र और महाबली ५ और कृष्ण नामसे विख्यात गरुड़जीको संगले और यादवों से परिवृत कुंडिन पुरमें आयाहै यह रुक्मिणीके अर्थ निश्चय यत्नकरेहै जो यहां करना उचितहै वह निश्चयकरसब राजे करो ६ और महावीर्यवाले बसुदेवकेपुत्र दोप्याई इस गरुड़ के बिना भी गोमंतपर्वतमें जैसा घोरयुद्धको करतेभयेहैं ७ तिसको तुम सब जानतेहो परंतु आश्चर्य्यहै कि यादव भोज अंधक इन्होंके महारथोंकेसंग और गरुड़की सहायतासे जो यह श्रीकृष्ण युद्ध करेगा ८ तब कैसा विग्रहहोगा और कन्याकेअर्थ यत्नकरनेवाले और गरुड़पै स्थित ९ ऐसे श्रीकृष्णके सामने देवताओं सहित इन्द्र भी

नहीं युद्धमें स्थित होसक्ता और मनुष्योंकी कौन कथाहै १० और पहले जब एकार्णवहोगया तब सुनाहै कि यह पृथ्वी पातालतलमें प्राप्त होगईथी ११ तब बाराहजीके रूपको धारणकर विष्णुनेबाहर निकास जलपै स्थापितकरी १२ और पीछे बाराहरूपसेही दैत्यों का राजा हिरण्याक्ष भी मारदिया १३ और देवते दैत्य ऋषिगंधर्व किन्नर यक्ष राक्षस सर्प इन्होंसे नहीं मरनेयोग्य १४ और आकाश पृथ्वी रात्रि दिन सूखा आला इन्होंमें भी नहीं मरनेके योग्य और त्रिलोकीमें अवध्य और अपराजित १५ और दैत्यों का राजा ऐसा हिरण्यकशिपु भी नृसिंहके रूपकरके पहलेविष्णुने मारदियाहै १६ और कश्यपकापुत्र और अदितिके गर्भसे उपजनेवाला और बामन नामसे विख्यात १७ ऐसे विष्णुने सत्यरूप रज्जुकी फांसियों से बांधके राजाबलिपातालमें प्राप्तकरदियाहै १८ औरकृतवीर्यकापुत्र और महाबीर्यवाला और दत्तात्रेयकेप्रतापसे हजारभुजाओंवाला १९ और बररूपी मदसेमत्त और सातद्वीपों का राजा ऐसा अर्जुन भी जमदग्नि के पुत्र परशुरामजी के हाथसे मरा है २० और पहले इक्ष्वाकु कुलमें उत्पन्न हुये दशरथ का पुत्र रामचंद्र त्रिलोकी के जीतनेवाले रावणकोभी मारताहुआ २१ और पहले कृतयुगमें तारकामय युद्धहुआ तब अष्टभुजी विष्णु गरुड़ पै स्थितहो बरदान से दर्पित बहुतसे दैत्योंको २२ और देवताओं को भय देनेवाले और कालनेमिनामसे विख्यात ऐसे दैत्येंद्रकोभी सुदर्शनचक्र से मारदियाहै २३ और महायोग बलकरके युद्धमें इसी विष्णुरूप श्रीकृष्णने भी बहुतसे दैत्य मारदियेहैं अर्थात् बनमें बिचरनेवाले २४ महा बल और पराक्रमवाले और प्रलंब अरिष्ट धेनुक शकुनी केशी यमलार्जुन ऐसे २ बालक अवस्थाही में मार तोड़दिये हैं २५ और गोपके वेषकरके क्रीड़ाकरताहुआ यही श्रीकृष्ण कुवलयापीड़ हाथी चाणूरमुष्टिक और कुलसे सहित कंस इन्होंको मारताभया २६ इससे आदिलेके बहुत से दिव्य और कपटसे संयुक्त अनेक तरह के रूप मायाकरके इसीविष्णुने धारणकियेहैं २७ इसीवास्ते तुम्हारे

प्रति मैं कहताहूं और जलमें शयनकरनेवाला और जगत्को रच-
नेवाला २८ और देवताओंमें आदिरूप और दैत्योंको मारनेवाला
और नारायणऔर त्रिजगद्योनि पुराण पुरुष ध्रुव सबभूतोंका स्रष्टा
व्यक्त २९ अव्यक्त सनातन सब भूतोंका अधृष्ट सबलोक नमस्कृत
और अनादि और मरण जन्मसेरहित क्षर ३० अक्षर अव्यय स्वयंभू
अज स्थाणु चर और अचरोंसे अजेय त्रिविक्रम और त्रिलोकेश ३१
और देवताओंके शत्रुओंको नाशनेवाला ऐसा यहश्रीकृष्णमथुरापुरी
में चक्रवर्त्ती राजाओं के कुलमें ३२ उत्पन्न हुआ है यह मेरी बुद्धिमें
उपजताहै नहीं तो अन्यपुरुषके साक्षात् गरुड़ कैसे बाहनहोसके ३३
और बिशेषकरके कन्याके अर्थ और गरुड़जी पै स्थितहोके आयेहुये
श्रीकृष्णके अगाड़ी युद्धमें कौन स्थितहोगा ३४ इस स्वयंबरमें सा
क्षात् विष्णु प्राप्त होगया और विष्णु के आगमन में महान् दोष
कहा है ३५ सो तुम सबोंकोशोच बिचारकरके कार्यकरना चाहिये
तब बैशंपायन कहनेलगे कि ऐसे कहते हुये जरासंध के वचनको
सुन अति बुद्धिमान्सुनीथ राजा कहनेलगा कि हे राजाओ जो कुछ
जरासंध राजाने कहा है सो ठीकहै क्योंकि गोमंत पर्बतमें बलदेव
और श्रीकृष्णनेदुष्करकर्म कियाहै अर्थात् हाथी घोड़ा रथप्यादे
इन्होंसे युक्तबड़ीसेना चक्रहलरूपी अग्निसे दग्धकरदीहै तिसकरके
यहजरासंध राजा उचित कहताहै और प्यादेरूप बलदेव और श्री
कृष्णनेबहुतसी सेनाका नाशकरदियाहै और हेराजाओ आपजान-
तेहीहो जिसवक्त गरुड़जी आयेहैं तवपांखोंके बेगसे उपजेहुये पवन
से उड़तेहुये वद्दल आकाश में भ्रमने लगे और सब समुद्र क्षोभित
होगये और पर्बतों सहितपृथ्वी बारंबार चलायमान हुई और हम
सब उत्पात के भयकीशंकासे दुःखितहुये सोआश्चर्य्यहै तिसगरुड़
जीके ऊपर स्थितहोके जब श्रीकृष्ण युद्ध करनेलगेगा तब हमारे
सरीखे राजे उसयुद्धमें कैसे ठहर सकेंगे सो राजाओंको आनंदका
वढ़ानेवाला स्वयंवर आद्यराजाओंने रचाहै परंतु इस कुंडिन पुरमें
फिर महाविग्रहहोने वालादीखता है जोइस स्वयंवरमें भीष्मककी

पुत्रीराजाओंके मध्यमें किसीअन्य राजाओंको बरलेगी तब श्रीकृष्ण कीभुजाओं केबीर्यको कौन सहेगासो इस स्वयंबर रूपमहोत्सवमें दोष प्रकटहोगया और जिसकार्यके वास्ते श्रीकृष्णआयेहैं उसीकार्य केवास्ते हम सबआये हैं इसवास्ते श्रीकृष्णका आगमन और हम सब राजाओंकाभी आगमन कन्या के अर्थ निंदितहै सोई जरासंधने प्रथमठीक ठीक प्रकाशित करदिया ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व भाषायां रुक्मिणी स्वयंवरे सुनीथवाक्ये. षट्धिक शतोऽध्यायः १०६ ॥

एकसौसातका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे ऐसे सुनीथ के बचनको सुन के करुख देशका मालिक दंतवक्रराजा कहनेलगा कि हेराजाओ १ जोजरासंधने और सुनीथने कहाहै सोठीकहै परंतु मेरावचनभी हितकारी होगा २सोनमैं द्वेषसेन अहंकारसे औरनमैं अपनी युद्धमें जीतनेकी इच्छाकर के अमृतरूप वचनोंसे दूषितकरूहूं ३और महागांधरूप और नीतिशास्त्र के अर्थसे पूरित ऐसे वाक्यकोइसराजसभामें कौन कहनेको समर्थहै४ परंतु स्मरण करानेके अर्थजोमैं कहताहुं तिसको श्रवणकरो जो इसस्वयंवरमें श्रीकृष्णजी आगये यहकौन आश्चर्य कीबातहै ५ जैसेहम सबआयेहैं तैसेही श्रीकृष्णभी आयाहै सोइस कन्या कीप्राप्ति के अर्थ आनेमें कुछदोष प्रतीत नहीं होता ६ और जो हमसबोंने इकट्ठे हो के गोमंत पर्वतका रोधनकिया तहां युद्धकृत दोषको कैसेआपमानतेहैं ७ और बनबासमें स्थित दोनोंबलदेवऔर श्रीकृष्ण नारदजी के बचनमान ८ कंसनेबुला के प्रथम कुबलया पीड़ हाथीसे मरानेचाहे परंतु कुवलया पीड़हाथीको मारपीछे अपने बीर्यसे श्रीकृष्ण और बलदेवने प्राणोंसेरहितस्थितहुये कीतरहप्राप्त कंसकोरंग सागरमें मारदिया ९इसमेंक्या दोषहै जिसके पीछे हम सब राजे मिल के युद्ध केअर्थ आये १०।११ तब सेनाका अतिबल को देख पीड़ितहुये बलदेव और श्रीकृष्णपुरी और अपनी सेनाको त्याग गोमंत पर्वतमें प्राप्तभये१२तहांभी हमोंनेजाके क्षत्रिय धर्मसे

पर्वतजलादिया सोदावाग्नी के मुखमें प्राप्तहो वोदोनों तपस्वी न-हींमरे १३ और पीछे युद्ध करनेलगे यह कुछअच्छी बातनहीं ब-लकिन श्रीकृष्णकी निंदाहै १४ और जहांजहां हम गमनकरेंगे त-हांतहां युद्धकरेगा १५ १६ इसवास्ते हेराजाओ श्रीकृष्णके संगप्रीतिके अर्थ यत्न करनाचाहिये और यह श्रीकृष्ण इस कुंडिपुरमें कन्याके अर्थआयाहै और युद्धके अर्थनहीं १७ और इसमृत्यु लोकमें यह पुरुषोंका इन्द्रहै और देवलोकमें देवताओंका इन्द्रहै १८ और दे-वताओंका कर्ताभीयहीहै और विशेषकर के संसारकाकर्ता भीयहीहै और देवोंमें वालकों कैसी बुद्धीनहीं होती और ईर्षा मत्सरता १९ गर्वयेभी देवमेंनहीं होते किंतुजो आपसे प्रीतिकरे तिसके दुःखको हरनेवाला देवहोताहै सोयह विष्णुदेव देवताओंकाभी देवताहै २० सो गरुड़पै स्थितहोकेआयाहै और यह कृष्ण शत्रुओं के नाशकेअ-र्थ सेनासहित नहीं आयाकरताहै २१ केवल प्रीति के अर्थ श्रीकृष्ण यादव और भोज वृष्णी अंधक इन्हों के संगआया है २२ सो अर्घ्य आचमनी आतिथ्ययेसब श्रीकृष्ण के अर्थ हमकरेंगे २३ ऐ-से श्रीकृष्ण के संग मिलापकर दुःखसेरहित और भयसे रहित ऐसे होके वसेंगे २४ तब दंतवक्र के वचनको सुन सब राजाओं के प्रति शाल्वराजा कहनेलगा २५ कि मिलाप करने के कारणसे श्रीकृष्ण के भयसे कंपित हमसब शस्त्रोंको त्यागदेवेंगेअर्थात् नहींत्यागेंगे२६ और अपनेबलकी निंदाकर के पराई स्तुतिकरनेसे क्याकरनाहैयह क्षात्रधर्ममें स्थित राजाओंका धर्मनहीं है २७ बड़े बड़े राजाओं के वंशोंमें उपजेहुये राजाओंको ऐसी कायरबुद्धीकैसे होगई २८ और मैंआदिदेव सनातनप्रभु सब देवताओंका स्वामी और नारायण२९ और वैकुंठमें बसनेवाला और अजेय और चराचरका गुरु और दे-वकी के गर्भसे उत्पन्न और सब लोकोंकर के नमस्कृत ३० ऐसे श्रीकृष्णको जानताहूं सोकंसराजा के मारने के अर्थ और भारको उतारने के अर्थ और हम सबोंका नाश के अर्थ और संसारकीरक्षा के अर्थ ३१ जो विष्णु भगवान्ने जन्म लियाहै येभी मैं जानता-

हुई ३२ और विष्णु भगवान् के संगयुद्धमें सुदर्शन चक्ररूप अग्निसे दग्धहुये हम सब धर्मराजके लोकमें जावेंगे यहभी मैंजानताहूं और कालकरके आयुका क्षयहोताहै ३३ और बिनाकाल के कोई मरतानहीं और कालपैकोई जीवतानहीं ऐसे निश्चैजान के किसीका भीभयमानना उचितनहींहै ३४ और यहविष्णु भगवान्तप केक्षयको देखके काल के अनुसार दैत्योंको मारताहै ३५ और बिरोचन के पुत्रबल राजाकोभी विष्णुनेही पातालमें बास दियाहै ३६ इससे आदिलेके बहुतसी चेष्टाविष्णुकी हैं तिससे विग्रह के अर्थ तुम्हारा बिचार अयुक्त है ३७ और युद्ध के हेतु कृष्णका आगमन नहींहै और जिसकिसीको कन्यावर लेगी उसीकी वह रानीहै ३८ फिर क्योंराजाओं का विग्रहहोगा बलकिन प्रीति होगी तब बैशंपायन कहने लगे ऐसे बुद्धिशाली राजाओंके कहते हुये ३९ भीष्मक राजापुत्रके कारसे कुछभी नहीं बोलता भया क्योंकि महा वीर्यके मदसे भीजा हुआ और भार्गवास्त्र से अभिरक्षित और रण में प्रचंडरूप अतिरथ योद्धा ऐसे पुत्रको चिंतवन करके ४० और बलसे गर्बित औरयुद्धमें अभिमानी और किसीसे नहीं डरनेवाला ऐसा मेरापुत्रकृष्णकोनहीं सहता ४१कृष्णकी भुजाके वीर्यसेही यहकन्या हरीजावेगी सोमहा पुरुष विग्रहसे युद्धहोवेगा ४२ और बैरकरनेवाला और अभिमानी ऐसा मेरापुत्र कैसे जीवेगा अर्थात् कृष्णके सकाशसे मेरेपुत्रकाजीवना मुश्किलहै ४३ सो कन्याके कारण पिता माताको आनन्द का देनेवाला ज्येष्ठसुतका श्रीकृष्णकेसंग युद्धकैसेकराऊं४४औरयह मूढ़ भावकेमदसेउन्मत्तयुद्धमेंनहींभागनेवाला ऐसामेरारुक्मवान्पुत्र श्री कृष्णकोरुक्मिणीकावरनहींचाहता ४५ सो निश्चयभस्मरूपहोजाय गा जैसेरुईकासमूह अग्नीमें क्योंकि करवीरपुरका शृगालनामराजा इसो श्रीकृष्णने क्षणभरमें मार दियाहै ४६ और वृन्दाबनमें यही श्रीकृष्ण एक हाथसे गोवर्द्धन पर्वतको सातदिनतक धारण करता भया ४७ सो ऐसे दुष्कर कर्मका स्मरणकरमेरामन अत्यंतशिथिल होताहै तब देवताओंकेसंग इन्द्रआके ४८ श्रीकृष्णका अभिषेककर

उपेंद्र इस नामसे बिख्यात करताभया ४९ और यमुनाकेह्रदमें विष रूपी अग्निसे प्रकाशमान और घोर और धर्मराजके समान कांति वाला ऐसा कालीयसर्प इसी श्रीकृष्णने नाथदियाहै ५० औरमहा वीर्यवाला और देवताओंसेअवध्य ऐसा केशी दैत्यभीइसी श्रीकृष्ण ने मार दियाहै और बहुतकालसे सागर में नष्टहुये सांदीपन गुरुके पुत्रको ५१ पंचजन दैत्यकोमार धर्मराज के नगरसे फिर ल्यावता भयाहै और गोमंत पर्वतके समीपमें ये दोनोंभ्राता बहुतसेराजाओं केसंग उग्र युद्ध करतेभये५२अर्थात् हाथीसे हाथियोंको रथों सेरथी योद्धाओंको और अश्वयुद्धकरके अश्वोंको और पैरोंकरके प्यादोंको मारतेभये५३ऐसा घोरयुद्ध देवते राक्षस दैत्यगंधर्व यक्ष सर्पपिशाच दैतेंद्र नागलोक वासी गुह्यक ये भी नहींकर सकते जो इन दोनोंने कियाहै ५५ तिस युद्धका स्मरणकर मेरामन दुःखितहोताहैसो ऐसा मनुष्य न कहींसुना और नकहींदेखा जैसा श्रीकृष्णहै ५६ और अति कीर्तिवाले दन्तवक्रने जो कहाहै वहठीकहै श्रीकृष्णकोप्रसन्न करके जो कार्यकरनाहै वही मंगलरूपहै५७तब बैशंपायन कहनेलगे ऐसे मनसे चिन्तवनकर श्रीकृष्णको प्रसन्न करनेकेअर्थ जानेको भीष्मके वुद्धी करताभया ५८पश्चात् नयशाली सूतमागध बंदियोंने बोधित किया राजा ५९ और पीछे रात्रिके व्यतीतहोने पै प्रभातभया तब पूर्वान्हिक क्रियाकरके सबराजे अपने अपने आसनोंपै स्थितहुये तब जो रात्रिमें शामिल नहींथे तिन्होंकेअर्थ भीश्रीकृष्णको प्रसन्नकरना सुनायागया ६० तब श्रीकृष्णके अभिषेकको सुन कितनेकराजे प्रस न्न कितनेकदीन और कितनेक भयभीतकितनेक उदासीनहुये ६१ ऐसे सेनाके तीनभाग होगये तब राजाओंकेभेदको देख और दग्ध हुये मनसे चिन्तवनकर राजाओंके समाजमें कुछजाननेके अर्थप्राप्त हुआ ६२।६३।६४।६५ इसी अंतरमें कौशिकके समीप से शिरपै लेखकोधारण करनेवालेदूत उससभामें प्राप्तहुये ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांरुक्मिणीस्वयंवरे सप्ताधिकशतोऽध्यायः १०७ ॥

एकसौआठका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा महावीर्यवाले कंसको मारके राज्यपैनहीं अभिषिक्त कियाहुआ और राज्यगद्दीपै नहीं स्थितहुआ १ औरकन्या के अर्थ आया हुआ और तहांभी नहीं पूजित किया ऐसा श्रीकृष्ण बहुतसे अपमानको प्राप्तहो किसकारणसे क्षमा करताभया २ और महाबल पराक्रम वाला गरुड़जीभी तिस समयमें कैसे क्षमाकरता भया ३ सो हे भगवन् इस आश्चर्यरूप आख्यानको मेरेअर्थकहो वैशम्पायन कहनेलगे जब गरुड़जीसे सहित श्रीकृष्ण विदर्भ नगरी में प्राप्तभये तब वासुदेवकेअर्थ कैशिक मनसे चिन्तवन करनेलगा४ कि श्रीकृष्णको देखके हमारे पापोंका क्षयहोगा और श्रीकृष्ण से सिवाय उत्तमपात्र तीनों लोकोंमें नहींहै ५।६ और आतिथ्यके अर्थ श्रीकृष्णको हम क्या देवेंगे ७ ऐसे क्रथ और कैशिक दोनों भ्राता आपसमें चिन्तवनकर ८ अपने राज्यको देनेकी कामनावाले दोनों श्रीकृष्णकेसमीपमें जातेभये ९ तब शिरकरके श्रीकृष्णको नमस्कार करदोनों भ्राता कहनेलगे अबहम दोनोंका जन्म सफलहुआहै और अब हमारायश विख्यात हुआहै और अब हमदोनों के पितर तृप्त हुयेहैं हे देव जब आपने हमारे स्थानपै आगमन किया १० और चँवर वीजना छत्र ध्वजा सिंहासन सेनाबहुतसी खजानोंवालीनगरी और हमदोनों ये सब आपकेहैं ११ और हे महाबाहो इन्द्रनेतुम्हारा अभिषेचनकिया तब उपेंद्रनाम तुम्हारा हुआ और अब हम दोनों इस राज्यमें तुम्हारा अभिषेचन करतेहैं १२ और हमारेकिये कार्य को जरासंध आदि कोईभी राजे अन्यथा नहीं करसकते १३ और राजाओंको अभयकादेनेवाला और तेरा शत्रु और महा कीर्तिवाला ऐसा जरासंध कथाकेअंतमें कहताहै १४ किसिंहासनपै नहीं बैठा हुआ और पुरसेरहित ऐसा श्रीकृष्ण इस राजसमाजमेंकैसे बैठाया जावेगा १५ और महा वीर्यवाला और अभिमानी और महाकीर्ति वाला ऐसा श्रीकृष्ण इस स्वयम्बर में कन्याके अर्थ नहीं आगमन

करेगा १६ और सब राजे अपने २ सिंहासनोंपै स्थितहो जावेंगे तब नोचा सिंहासन पै कैसे श्रीकृष्ण बैठेगा १७ ऐसे वचनों को भीष्मक राजा सुनके हम दोनोंके संग सलाहकर युद्धकी शांतिके अर्थ १८ आपके विश्रामकेवास्ते यह स्थान करादियाहै और आप देवताओंके भी देवताहो और सब लोकों से नमस्कृतहो १९ और इस मनुष्य लोकमें आप राजाओंके स्वामीहो इस वास्ते राजाओं के समाज में आसनका संकट मतहो २० और इस विदर्भ नगर में सब राजाओंके इंद्ररूप तुम होजाओ और कहूं प्रभातमें सफेद रूप आसन पै स्थितहो २१ और विधिदृष्ट कर्म करके आत्मा से आत्माको अधिवास न कराओ २२ और जैसे सब राजे गमनकर जावें तैसे आपकी शिक्षा से मैं करूंगा ऐसे कहके दोनों भ्राता अंजली बांध राजाओंसे परिवृत्तरंगमें दूतोंको भेजनेलगे और पत्रमें शिक्षाको लिखके कैशक कहने लगा २४ हे राजाओ अतिथिरूप करके इसविदर्भनगरीमें गरुड़ सहित श्रीकृष्ण आयेहैं सो आपलोग जानतेही हैं और प्राप्तहुये श्रीकृष्णजीको देखराजा चिंतमन करके उत्तमपात्र श्रीकृष्णके अर्थ धर्मके वास्ते राज्य देनेको कहते भये २६ और मेरे भ्राताने यहभीकहा किआपइसआसनपै स्थितहोजावो २७ तब शरीरसेरहित आकाशचारी देवदूतनेवाणीकही कि तेरेदियेहुये आसनपै श्रीकृष्णस्थितहोनेको योग्यनहींहैं २८ किंतुदीव्य और सब रत्नोंसे विभूषित औरसुवर्णसेबनाहुआ औरसफेद औरसिंहकेलक्षणों से लक्षित और विश्वकर्माकारचाहुआ औरवहांइन्द्रकाभेजाहुवा ऐसे आसनपै २९ चराचरके नमस्कृत श्रीकृष्णको स्थितकर जितनेराजे कन्याके हेतुकुंडी नगर में आये हैं वेसब इस श्रीकृष्णका अभिषेक करो ३० और जो इस अभिषेकमें नहीं आवेगा उसको यह श्रीकृष्ण मारेगा ३१ और कुवेरके खजानोंके अंशोंसे उपजे और अक्षय्यरूप और दिव्य और रत्नोंसे युक्त ऐसेये आठकलश अभिषेकके अर्थ हैं ३२।३३ यह इन्द्रका संदेशा हेराजाओ मैंनेतुमोंसे कहाहै इसके अनुसार सबराजाओंको बुलाके इसका अभिषेककरो ३४ तब कैशिक

कहनेलगा आकाशमेंस्थित होनेवालादेवदूत ऐसेकहकेऔर बालक सूर्यकी सदृश कांतिवाले आसनको श्रीकृष्णकेअर्थ देके वह देवदूत स्वर्गको गया३५इसवास्ते मैं तुमसबोंसे कहताहूं किइन्द्रका कथन दुर्निवार्यहै ३६ हेपुरुषाओ तुह्मारेको कृष्णचंद्रके दर्शन करने योग्य हैं और अद्भुतहै पृथ्वीपर दुर्लभहै क्योंकि जिससेनभस्तलसे कलसाओंसे आपही अभिसेचन होताहै ३७ हेराजाओ इस आश्चर्यको देखकर निश्चय हमारा संपूर्णपापनष्ट होगया हे नृपश्रेष्ठो देव देव और विष्णु ऐसेकृष्णचंद्रके स्नानके वास्ते ३८आओ और भयनहीं करो क्योंकि तुह्मारे वास्ते जनार्दन संधान करताहै ३९और हरिभगवान् संपूर्ण राजाओंके साथ वैरभाव नहींकियाचाहते हमारेविषेदृष्टतत्वमें विशुद्धभावहै ४० और जरासंधका वैरविशेषकरके हृदयमेंनहै जोयहां कारण और कार्यहै तिसकोआप चिंतवनकरो ४१ वैशंपायनजी कहतेभये कि हेराजन् शापभयसेव्याकुलहुये राजा चिंतवन करतेहुये फिर सुनतेभये तब देवराजकी शासनासे मेघकेसागंभीर स्वरसे आकाशवाणी होतीभई४३ऐसे सुन चित्रांगदकहतेभये हेराजाओ त्रैलोक्यका अधिपतिइन्द्र प्रजापालनके हेतु करके और तुह्मारेहितकी इच्छाकरके तुह्मारे पर आज्ञा करताहै ४४हे राजाओ यहबाततो तुम्हारे युक्तनहींहै किकृष्णचंद्रकेसाथ वैरकरना इसवास्ते आपसमेंप्रीति उत्पन्नकरके अपने अपने पुरोंमेंवसो४५ और श्रीकृष्णचंद्र शरणआयेकी पीड़ानष्टकरतेहैं और शत्रुओंकी सेनाकेनाश करनेमें अग्निरूपहैं इसवास्ते इसकेसाथ प्रीतिकरके और दुःखोंसे रहितहोकर आनंदकरो४६हेराजाओमनुष्योंकेदेवतातोराजाहैंऔर राजाओंके देवतासुरहैंऔरसुरोंके देवताइन्द्र हैं और इन्द्रका देवता जनार्दन४७हेराजाओयहकृष्ण बिष्णुहै समर्थहैदेवहै औरदेवताओं काभीदेवता है मनुष्य लोकमें यह नररूप करके यह केशव उत्पन्न भयाहै४८यह संपूर्णलोकोंमें देवदानव मनुष्य इन्होंकरके अजेयहै औरस्वामिकार्त्तिकसहित महादेवजीसेभी अजेयहै४९ऐसे देवदेव केशवमहात्माकेअर्थ देवताओंसहितअभिषेचनकरो औरइसकेसिवा

हमक्याचाहतेहैं और राजेंद्रका अभिषेचनमें देवताओंको अधिकार
नहीं ५० इसवास्ते सर्वलोक नमस्कृतको मैं नहीं अभिषेचनकरूंहूं
और राजेंद्रकृष्णा चंद्रका अभिषेचनमें राजाओं को अधिकार है इस
वास्ते क्रथ और कैशिकसहित विदर्भों को जाकर ५१ और विधिसे
अभिषेचनकरो और यह प्रीति संधानकाल चिंतवन करके इंद्रने मैं
तुम्हारा५२बोधके वास्ते रचाहूं हेराजाओ सो विदर्भनगरमें कृष्णा
और तिसका अधिवास तुम्हारे से सुनादियाहै ५३ और राजेंद्रत्व
अभिषेकके वास्ते क्रथ और कैशिकराजा कहदिये५४हे नृप श्रेष्ठाओ
तिन्होंकेसाथ महान् उत्सवकरके और अभिषेकसे सत्कारकरके और
अपनी दक्षिणा ग्रहणकरके प्रसन्नहुये फिर स्वयंवर को चलेआओ
औरजरासंध, सुनोथ, महारथ रुक्मवान्, ५५ सौभयति शाल्व ये
चारराजाओंमें श्रेष्ठ यहांरहो क्योंकिरंग शून्यहोना नहींचाहिये५६
वैशंपायनजी कहतेभये कि हे राजन् सुरोंका ईश चित्रांगदको ऐसे
कही आज्ञाको सुनकर संपूर्णराजा गमनकेवास्ते बुद्धिकरतेभये५७
बुद्धिमान् जरासंधके आज्ञाकिये अपनी सेनाओंकरकेसहित भीष्मक
को आगेकर चले ५८ और महाबाहु भीष्मक भी अपनीसेनाकरके
सहित और राजाओंकरके सहित पुत्रकेदोषसे दह्यमान् चित्तकरके
जहां कृष्णाथे वहां जातेभये ५९ और दूरसे प्रकाशकरतीहुई और
पताका ध्वजा माला इन्होंकरके संयुक्त ६० रमणीक दिव्यरत्नोंक
रके युक्त दिव्यध्वजाओंकरकेयुक्त ६१ और दिव्यवस्त्रपताका दिव्य
आभरण इन्होंकरके संयुक्त और दिव्य मालाओं को लड़ियोंकरके
युक्त और दिव्यगंधसे सुगंधित ६२ संयतवाले बिमानोंकरकेसंयुक्त
एसी सुंदर देवताओंकी सभा स्नानकेवास्ते आतीभई ६३ औरदि-
व्य अप्सराओंके समूह चारोंतरफ नृत्य करतेभये और गंधर्व मुनि
किन्नर आकाश में स्थितहुये ६४ भगवान् का यश गातेभये और
संपूर्ण मुनि सिद्ध परमर्षि स्तुति करतेभये और देवताओं के नगारे
बाजतेभये ६५ और स्वर्ग में आपही उत्साह होताभया और
आकाशमेंस्थितहुये देवताओंकरके चारोंतरफगेरेहुये चूर्णोंकी सुगंधि

होतीभई ६६ और देवताओंकरके सहित इंद्र इन्द्राणीसहित बिमा-
नमें बैठ प्रकाश करताहुआ आकाशमें स्थित होताभया ६७ और
आठ लोकपाल अपनेअपने दिक्भागोंमें स्थितहुये गावतेभये और
नृत्यकरतेभये और स्तुति करतेभये ६८ पश्चात् संपूर्ण नराधिप
सुंदर तुमुलनाद सुनके बिस्मयसे फूलेहुये नेत्रोंवाले राजा सुंदरस
भाको प्रविष्टहोतेभये ६९ और महातेजस्वी कैशिक राजाओंकोप्राप्त
होकर यथाविधि पूजनकरके तिन्होंका वास करातेभये ७० और
पार्थिवोंके समागममें जब सुरश्रेष्ठको निवेदन किया तब सर्वमंगल
पूजित श्रीमान् हरि जातेभये ७१ तिसके अनंतर आकाशमेंस्थित
हुये देवता वस्त्रहैंकंठोंमें जिन्होंके और सहकारकरकेयुक्त ऐसेदिव्य
कलशोंकी बर्षा करतेभये ७२ और दिव्य कांचन और रत्न और
दिव्यपुष्प और दिव्यगंध चूर्ण इन्होंकरके ७३ यथोक्त बिधिपूर्बक
जनार्दनकाअभिषेचनकरके और दीक्षा दिवाके ७४ और दिव्यआ
भरण और बिचित्रबस्त्र माला अनुलेपन इन्होंकरके बिधिपूर्बकरा-
जाओंका सत्कारकरके ७५ स्नानके वास्ते आईहुई देवताओं की
सुंदरसभामें यादव और बिदर्भ राजाओंकरके सहित बैठतेभये७६
और तहां बलवान् गरुड़ तौ मनुष्य की आकृति धारणकरके भग
वान् की दहनी तरफ आसनपर बैठतेभये ७७ और क्रथ औरकैशि
क बाईंतरफ अपनेआसनोंपर बैठतेभये ७८ और तैसेही बाईंतरफ
वृष्णिअंधक योद्धा और सात्यकीसे आदिलेकर महारथ बैठतेभये
७९ पश्चात् सूर्यकेसी कांतिवाला और दिव्य बिछोनाकरकेसंयुक्त
ऐसे दिव्य आसनपर ८० इन्द्रकी तरह बैठेहुये कृष्णचंद्र का पहले
बैठेहुये मंत्रियोंके कहेहुये ऐसे राजा बिधिपूर्बक पूजनकर ८१फिर
सुखपूर्बक अपने अपने आसनोंपर बैठतेभये और संपूर्ण शास्त्रों का
जाननेवाला महाप्राज्ञ ऐसा कैशिक ८२ पूजनकरके न्यायके अनु-
सार बचनकहताभया हे प्रभो ज्ञानरहित ये संपूर्ण राजा आपको
मनुष्य जानके बैरकरतेभये ८३ हे देव सो अपराध आपक्षमाकरने
के योग्यहो ऐसे सुन कृष्णचंद्र कहतेभये कि हे कैशिक मेरेविषेबैर

नहीं बसताहै क्योंकि मैं एकहूं ८४ और क्षात्रधर्म में स्थितहुए जो राजाहैं तिन्होंके साथविशेष करकेवैर नहीं हेराजाओ धर्मकरकेयुद्ध करना योग्यहै ८५ तिन्हों के हेतुसे तुमको कोप करना उचितनहीं जोवस्तु गई सो त्यागदई और जोमरगये सो स्वर्गमें चलेगये ८६ हेराजाओ इसमनुष्य लोकमें यही धर्महै कि उत्पन्न होते हैं और मरतेहैं इसवास्ते मरेहुयोंका सोचकरनाउचित नहीं और हे राजाओ यह हमारा अपराध क्षमाकरो और वैरको त्यागो ८७ बैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् कृष्णचंद्र ऐसेराजाओं को कहकर और अश्वासन कराके तेजस्वी कृष्णचंद्र कौशिककी तरफ देखकर चुपहोतेभये ८८ और इसी कालमें नयको जाननेवाला भीष्मक बिधि पूर्वक पूजनकरके न्यायपूर्वक बचनकहताभया ८९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांरुक्मिणीस्वयंबरेनृपाश्वासने अष्टाधिकशतोऽध्यायः १०८ ॥

एकसौनवका अध्याय ॥

भीष्मककहतेभयेकि हेभगवन् मेरापुत्रतो बालभावकरके अपनी बहन को स्वयंबर में राजाओं को देनेकी इच्छा करता है और मैं नहींकरता १सो तिसकी अत्यंत मूर्खताहै एककन्यातो एकको बरेगी इसमें संदेह नहीं२इसवास्ते मैं तुमको प्रसन्न करूंगा सो हे देवेश कृपाकरो और क्षमाकरने के योग्यहो ३ ऐसेसुन के कृष्णचंद्र बचन कहतेभये तेरापुत्र जब प्रौढ़होगा तब कैसा नम्रहोगा ४ एकराजाके आगेभीजो मोहसे असत्य कहदेसो इसलोकमें नहींठहरता और दंड बन्हिकरके दग्धहोजाता है ५ हेप्रभो राजाओंका यह धर्म कहा है औरलोकधर्म को आगेकरके पहले पहले यह ब्रह्माको कहाहै ६ हे राजन् कैसे तेरापुत्रराजाओं की सभामें तिनकेआगे असत्य कहनेको योग्यहै ऐसाअतुल रंग तेरा पुत्र कराताहुआ तैंने कैसे नहींजानायह मेरे संदेहहै ७ हेराजन् अग्निसूर्यचंद्रमा इन कैसेतेजवाले आयेहुये राजोंका पूजनकरके आतिथ्य करताभया ८हेराजन् यहहमारेबिषाद

है चतुरंग सेनाके आवनेसे कैसेनहीं जानताभया यह मेरेसंदेहहै ६
हेराजन् मेराआना बहुत करके हितकारी नहींहै हेराजन् इसवास्ते
अपात्रके अर्थआतिथ्य नहीं करना हे राजन् इसवास्ते मेरेको त्याग
कर१० पात्र के अर्थ कन्या देनीउचितहै और मेरेआनेके दोष करके
फिरकैसे कन्याको नहींदेगा ११ और कन्याके देनेमेंजो विघ्न करते
हैं सो नरकोंमें क्लेशपाते हैं १२ ऐसेधर्मके जाननेवाले मन्वादिकों
ने कहाहै हेनरदेव इसवास्ते तेरे रंग मध्यमें मैं प्रविष्टनहींहुआ और
आतिथ्य का अभाव जानके मैंने तेरे स्थान में गमन नहींकिया १३
वैशंपायन जी कहतेभये कि हेराजन् बाणीरूप बज्रसेघेराहुआ और
ऐसे कहतेहुये कृष्णचंद्रको सुंदरवाणी रूप जलसे सेचनकरके और
शमित अग्निकी तरह प्रकाश करताहुआ १४ भीष्मक बचनकहता
भया हेदेव हेलोकों के ईश्वर हेमर्त्य लोकके ईश्वर प्रसन्नहो और
मेरीरक्षा करो हेभगवन् अज्ञानरूप अंधमें प्रविष्टहुआ जो मैंहूं मेरे
को ज्ञानरूप नेत्रदो १५ हे भगवन् मनुष्यमांस चक्षुवाला होनेसे
अच्छीतरह से नहींजानसक्ता और हेभगवन् मनुष्यके बिनाबिचारे
कार्यकरने से सिद्ध नहींहोते १६ हेभगवन् देवताओं के देवता जो
तुमहो तुम्हारे को प्राप्तहोकर मेरीदृष्टि शुद्धहोजावे और मेरीसंपूर्ण
क्रियासिद्ध होजावें १७ हे भगवन् नयकरके युक्त असिद्धक्रिया को
भी बुद्धिमान् मनुष्य फलवाली करदेते हैं जैसे महा सेनापति १८
और हेभगवन् तुमशरण को प्राप्तहोकर मेरे को अत्यंत भयबाधा
नहींकरता और हेभगवन् मेरा चिंतवन आप सुननेके योग्यहो १६
हेभगवन् अपनी कन्याको मैं राजाओंको देनेकी इच्छा नहीं करता
हूं आपमेरे ऊपर होजावो और कोपको दूरकरो २० ऐसेबचनसुन
कृष्णचंद्रनेकहा हेबुद्धिमान् राजन्बचन कहनेसेक्याहै अपनीकन्या
को देगा अथवानहींदेगा कहोयहां नेताकौन है २१ हेराजन्मेरेको
रुक्मिणी मतदे ऐसेभी मैं नहींकहता और दे ऐसे भीनहींकहतापरंतु
रुक्मिणी दिव्यमूर्तिवाली मेरेसंबंधमें कारणहै २२ हेराजन्पहले
मेरुकूटमें देवता अपने अंशोंसे इसको रच कहतेभये और कहतेभये

किहे श्री पतिकरके सहितगच्छ२३और कुंडि नगरमें राजाभीष्मक
की स्त्री के उदर में प्रविष्टहोकर और जन्मलेकर केशवभगवान् को
देख २४ हेराजन् तिससे मैं युक्तबचन कहूंगा तिसको सुन निश्चय
करके जो तैने कहा है सोहीकरेगा २५ हेराजन् तेरीकन्या रुक्मि-
णी मानुषीनहीं है यहतो लक्ष्मीहै ब्रह्माके वाक्यसे किसीहेतु करके
यहांजन्मीहै २६सो हेराजन्यहराजाओंके स्वयंवरकेयोग्यनहींऔर
हेराजन् यहधर्मकी व्यवस्थाहै कि मुख्यकन्यतो मुख्यहीवरकोदेनो
उचितहै २७सो हेराजन् इस लक्ष्मीको स्वयंवरमें देना उचित नहीं
धर्मसे सदृश वरकोदेखकर कन्यादेनी उचितहै २८ इसवास्तेबिघ्न
कारण के प्रयोजन से देवराज का प्रेरा हुआ कुंडि नगर में गरुड़
आया२९ और राजाओंका महान् उत्सवके देखनेवास्ते सुंदरलक्ष्मी
रूपतेरी कन्याके देखने वास्ते आया ३० और हेराजन् जो तुमने
कहा क्षमाकरनी युक्तहै परंतु दोषके वास्ते मैं नहीं मानता ३१ हे
राजन् मैंनेतो पहलेही शांतिकरीहै जिससे सौम्यरूप धारणकरके
तुह्मारे देशकेविषे गमन किया हेराजन् ३२ शांतों में दोषोंको दूर
करने वाले गुण और क्षमारहतीहै सो हेराजन् हमारे सरीखों विषे
कैसे दोष हृदमे बसे ३३ हे राजन् अच्छे कुलमें उत्पन्न हुआ और
धर्मका जानने वाला और सत्यवादी ऐसेमेरे सरीखे मनुष्यके हृदेमें
कैसेदोषबसे ३४ हे राजन् मैंक्षांतहूं ऐसेतैंने मानना और हेराजन्
शत्रुओंकी सेनाको सेना सहित मैंनहीं प्राप्तहूंगा ३५ किंतु गरुड़पर
सवार होकर और सूर्यकैसी कांतिवाले शस्त्र लेकर आऊंगा ३६
और हेराजन् तू हमारा पूज्यहै और आयुसे पिताकी तुल्यहो सो
अपनी पुरीको पिताकी तरह पालनाकर ३७ और हे राजेंद्रदोषतो
कुत्सित पुरुषोंमें वसतेहैं और शुद्धभाव शूरवीरोंमें दोषकैसेबसे ३८
और हेराजन् मेरेको श्रेष्ठोंकेवस ऐसे जान जैसे पुत्रों के बसपिता
और हेराजन् विदर्भ नगरके अधिपति हमारे भी राजा हैं क्योंकि
जिससे ३९ आतिथ्य करने में हमको अपना राज्य देतेभये तिस
दानके फलसे हेराजन् तिसके दशतो पहले कुलके स्वर्गमें गये४०

और पुत्रपौत्र दशोंसहित अगलेस्वर्गमें प्राप्तहोवेंगे४१और पश्चात् येबहुत दिनपृथ्वीपर यथेच्छ राज्यभोगकर मोक्षके आनंदको प्राप्त होवेंगे४२ और हे राजन् जोराजा अभिषेक के अर्थ आये हैं सोभी काल करके देवलोक स्वर्ग को प्राप्तहोवेंगे ४३ और हे राजाओ तुह्माराकल्याणहो गरुड़करके सहित अवमैं भोजराजकी पालीहुई रमणीक मथुरा पुरीको प्राप्तहूंगा ४४ वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय कृष्णचंद्र ऐसेभीष्मकको कहकर और संपूर्ण राजाओंके विदर्भोंको आज्ञा देकर ४६ और सभासे निकस रथके समीप जाते भये ४७ तिसके अनंतर राजर्षि भीष्मक और संपूर्ण राजे कृष्णचंद्रको आद्यमें और स्वायंभू सुरअसुरोंसे नमस्कार किया हुआ ४८ सहस्र चरणों वाला सहस्रों नेत्रोंवाला सहस्रों भुजाओं वाला सहस्रों शिरोंवाला सहस्रों मुकुटोंवाला दिव्यमाला बस्त्रोंको धारण किये ४६ दिव्यगंध चंदन धारण किये दिव्य अनेक शस्त्रों कोधारण किये ५० लालकेसे नेत्रोंवाले और चंद्रसूर्य अग्नि के समान तेजस्वी नेत्रोंवाले ऐसे कृष्णचंद्रको संपूर्ण देख चकित होते भये और भीष्मक अंजलिबांध ५१ तनमन धनसे स्तुति करनेको प्रारंभ करताभया ५२ हेदेव आदि अंत करकेरहित नित्यआदिदेव नारायण परायण स्वयंभू बिश्वरूप स्थाणुरूप ब्रह्मरूप ५३ पद्म नाभ जटा धारणकिये दंडधारणकिये पिंगलहंसकेसीकांतिवाले हंस रूपचक्ररूप ५५ बैकुंठ अज परमात्मा सद सद्भावयुक्त पुराण पुरुष पुरुषोत्तम ५६ मुक्तनिर्गुण हेभगवन् ऐसे तुम्मारे स्वरूपोंके अर्थ मैं नमस्कार करताहूं हे देवताओंमें उत्तम भगवन् तुम्हारा भक्तमैंजो हूं मेरेकोआप बरदो ५७ क्योंकि जिससे आपलोकों के नाथहो बिष्णु संपूर्णोंकी आत्माके साक्षीहो बैशंपायनजी कहतेभये कि हे राजन् राजाओंके आगे स्थितहुआ भीष्मक ऐसे स्तुति करके ५८ अच्छेमोलकी मणि मोती हीरा बैडूर्यमणि सुबर्णका समूह येकृष्ण चंद्रको देताभया ५६ और पश्चात् महाबली गरुड़की स्तुतिकरता भया पक्षियोंका राजा मन और पवनसे बेगवाला इच्छापूर्बक रूप

धारण करनेवाला कश्यप के पुत्र ऐसे तुम्हारे स्वरूपों के अर्थनम स्कारहै ६० वैशंपायनजी कहते हैं ऐसे संक्षेप से गरुड़ की स्तुति करके और श्रेष्ठ आभूषणों से सत्कार करके तिसके अनंतर लोकों के नमस्कार किये हुये कृष्णचंद्रका बिसर्जन करतेभये६१ औरनृप भी आवते भये ऐसे कृष्णचंद्र सत्कारको ग्रहण करके और राजाओं को आज्ञादे के ६२ और पक्षियों में उत्तम सौम्यरूप ऐसे गरुड़को आगेकरके ६३ रथ समूहों करके युक्त और भेरीपटह शंख इन्होंके शब्दसे युक्त ६४ हस्ती और घोड़ों के शब्दोंसे युक्त और शूरबीरोंके शब्दसेयुक्त और रथनेमिके शब्दसे युक्त ६५ दशोंदिशाओं को प्रकाशकरतेहुये मथुराको जातेभये और तिससमयमें बड़े मेघशब्दकी तुल्यमहात् तुमुल होताभया ६६ जब महावीर्यवाले कृष्णचंद्र चले गये तब देवता अपनी सभाकोलेकर स्वर्गको जातेभये ६७ औरच तुरंग सेनासेयुक्त राजा एककोशकृष्णचंद्रकोपहुंचायकर कृष्णचंद्रके आज्ञादियेहुये फिर संपूर्ण स्वयंबरको जातेभये ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गत विष्णुपर्व भाषायांकृष्णाभिषेके नवाधिकशतोऽध्यायः॥१०६

एकसौदशका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेभये कि हेराजन् जब बसुदेवकेपुत्रकृष्णचंद्र मथुराको चलेगयेतब भूषणोंकरके भूषितहैं अंगजिन्होंके और गम नमेंहै उत्साह जिन्होंके ऐसे राजा प्रबोधन के वास्ते सभाको जाते भये १ पश्चात् चंद्रमा सूर्य्य के से प्रकाशवाले राजाओंको सभामें आयेहुये और सुंदरआसनोंपर बैठेहुयोंकोदेख सुंदरनय औरअर्थका कहनेवाला सिंहरूप भीष्मक राजा बचनकहताभया २ कि हे राजाओ मैंनेस्वयंवर कृतदोषजानलिया इसवास्ते दुर्नय और वृद्धका मेरा अपराध क्षमाकरना योग्यहै ३ बैशंपायनजी कहतेहैं कि हेरा जन् ऐसे संपूर्ण राजाओंको संभाषण करके और बिधिपूर्बक सत्कारकरके पश्चात् मध्यदेश के राजाओंका बिसर्जन करतेभये ४ और ऐसेही पूर्ब और पश्चिम और उत्तर के राजाओंकोभी बिसर्जन

करताभया ५ ऐसेधनुष धारणकिये और प्रसन्न चित्तवाले और बि-
धि पूर्बक पूजनकियेहुये राजा अपने २ देशोंको जातेभये और जरा
संध सुनीथ, बीर्यवान, दंतबक्र, ६ शौभपति शाल्व, महाकूर्म, और
क्रथ कैशिकसे आदिलेकर और अच्छेराजा ७ और वेणुदारि राज-
र्षि काश्मीर देशकाराजा ये और इनसे आदिलेकर अन्यदक्षिण प-
थके बहुतराजा ८ एकांत बाक्यसुननेकी इच्छाकरते ये भीष्मक के
समीप स्थितहुये तबतिन्होंको बलवान् भीष्मक राजा ९ स्नेह पूर्ण
मनकरके धर्म अर्थ कामकरके सहित औ सुंदर और छःगुणोंकरके
अलंकृत और शुभदायक नयकरके युक्त १० स्निग्ध गंभीरबाणीसे
राजाओंको ऐसे बचन कहतेभये ११ हेराजाओ तुम्हारा नय युक्त
बचनसुनके यह कार्यकियाहै सो श्रेष्ठतोआपहो आपने नित्य अपरा
धीहमक्षमाकरनेकेयोग्यहैं १२ बैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् न-
यका जाननेवाला भीष्मक ऐसे बचन कहकर पुत्रको उद्देशलेकर
राजाओंकी सभामें बचनकहताभया किहेराजाओ १३ पुत्रकी चेष्टा
को देखकर त्रासकरके व्याकुल चित्तहुआ यह मानताहूं कि येसंपू-
र्णलोक बालकहैं और सो एककृष्णप्रभुहैं अर्थात् समर्थहैं १४ और
कीर्तिवालोंकी कीर्तिहै श्रेष्ठ है और जिस कृष्णचंद्र को इस मर्त्य
लोकमें अपनी भुजाओंसे इकट्ठाकियाबलस्थापन कियाहै १५ और
स्त्रियोंमे श्रेष्ठ उस देवकीकोभीधन्यहै जिस के त्रिभुवनमें श्रेष्ठ केशव
पुत्रहोतेभये १६ और कमल के तुल्य नेत्रोंवाले शोभाके पुंज देवता
ओं के पूज्य ऐसे कृष्णचंद्रके मुखारबिंदको स्नेहसे उत्पन्नहुईअश्रुओं
करके युक्त नेत्रोंमें नित्यदेखतीहै ऐसीदेवकीको धन्यहै १७ बैशंपा
यनजी कहतेहैं कि हेराजन् ऐसे राजसभामेंकहताहुआ जोराजाभी
ष्मक है तिसको महाद्युति शाल्वराजासुंदरबाणी करके बचनकह-
ते भये १८ हेराजेन्द्र हेशत्रुओंके नाशकरनेवाले पुत्रके अर्थ कुपित
मतहो क्योंकि हे राजन् क्षत्रियों की तो रणमेंजीत और हारहै १९
मनुष्यों की यही नियत गतिहै और यही सनातन धर्म है हेराजन्
बलदेव और कृष्ण से अन्य कौन तीसरा पुरुष रणभूमि में तेरे पुत्र

के साथ युद्ध करने को समर्थ है २० क्योंकि जिससे यह अके-
लाही रणभूमि में रथ अतिरथों के समूह को बंदकर देता है २१
हे राजन् और दुरासद महारौद्र ऐसे भार्गवास्त्र को छोड़ता हुआ
कि इसके पराक्रम को कौन सहसक्ता है २२ और यह कृष्णचंद्र
तो ईश्वर है जन्म मरण से रहित है २३ और तिसको तो इस
लोक में आप शूल धारण किये महादेवजी भी जीतनेको समर्थ
नहीं और की क्या कहें और हे राजन् भीष्मक तेरा पुत्र बहुत
बुद्धिमान् है और संपूर्ण शास्त्रार्थ के तत्वों को जाननेवाला है २४
सो इसवास्ते केशव देव ईश्वरके साथ यह युद्धनहीं करावे है और
यवनों का अधिपतिकाल यवन रणमें तिसका जीतनेवाला है २५
और सो कालयवन केशवसे अवध्यहै क्योंकि इस के पिताने घोर
दारुणतपकरके २६ महादेवजीको प्रसन्न करताभया जबदेनेलगे
तबइसने यहवरदान मांगाकि हे भगवन् ऐसापुत्र दो जो मथुरामें
होनेवालोंसे नहींमरे २७ महादेवजी यहीवरदान देतेभये २८ ऐसे
गार्ग्यका पुत्ररुद्र के वरसे उत्पन्न हुआ मथुराके होनेवाले यादवों
से अवध्य है और मथुरा में तोबिशेष कर के अवध्य है २९ और
यह कृष्णभी बलवान् मथुराही में उत्पन्न भयाहै इसवास्तेसोकाल
यवन मथुरामें प्राप्तहुआ कृष्णको रणमें जीतेगा ३० हेराजाओ जो
मेरी युक्तवाणीको मानोहोतो यवनेंद्र के पुरमें दूतभेजो ३१ वैशं-
पायनजी कहतेहैंकि हेराजन् संपूर्ण राजाऐसे शाल्वके वचनसुनकर
और प्रसन्न हुये ऐसेहीकरेंगेयह महाबल शाल्वराजाके प्रतिकहते
भये ३२ और जरासंधतो तिन्होंके वचनोंको सुनकर और ब्रह्माके
वचनको स्मरण करताहुआ अविमनाहोकर बचन कहताभया ३३
अहोराजाओंके भयसे पीड़ित हुयेनृप मेरेको आश्रय होकर और
भृत्यबलवाहनसहित राज्यको प्राप्तहोतेभये ३४ और यहांराजाओं
को कालयवन के आश्रयहो ऐसेप्रेरणा किया अपने पतिसे बैरकर
के जैसे अन्यको कन्या ३५ अहोबड़े आश्चर्य की बात है इसबल
वान् भाग्यको कोईभी दूरकरने को समर्थ नहींहै क्यों कि जिस से

कृष्णसे डराहुआ मैं अधिक बलवाले अन्यके आश्रयहोताहूं३६ और हेराजा मैं योगसे बिहीन हुआ पराश्रयकराऊंगा और हेराजा मेरा मरना तोश्रेष्ठहै और अन्यराजाके आश्रयहोना श्रेष्ठनहीं ३७हेराजा हेकृष्ण अथवा हे बलदेव अथवा और हे मनुष्य मैं तो ब्रह्माका प्रेरा हुआ मारते हुये के साथ युद्ध करताहूं ३८ हे राजा यहमेरीबुद्धिका निश्चयहै और यहमेरा पुरुषव्रतहै इसवास्ते और प्रकार से परका आश्रय करनेको मैं समर्थनहीं ३९ परंतु श्रेष्ठवृत्तांत वालोंके तुम्हारे कृष्णपीड़ा न करे इसवास्ते राजाओंकी रक्षाके वास्ते मैं दूतभेजूं-गा४० हे राजा चिंतवनकरके ऐसेभेजो कि जातेहुयेको कृष्णपीड़ा न करे इसवास्ते आकाश मार्ग करके जाना श्रेष्ठहै४१ और यह चंद्रमा सूर्य अग्निकीसी कांतिवाला राजाशाल्व आदित्यकीसी कांतिवाला रथमेंबैठ अपनेपुरको प्राप्तहो४२ और यवनेंद्र जैसे राजाओंके समा-गमको प्राप्तहो और दूत्यसे जैसे हमारा बचनहोवे४३ वैशम्पायन जी कहते हैंकि हे राजन् फिर जरासंध सौभके पति शाल्व कोही वचन कहताभयाकि हेमानके देनेवाले शाल्व तूजा और संपूर्ण रा-जाओंकी सहायताकर४४हे शाल्व जैसे यवनेंद्र आवे और कृष्णको जीते और जैसे हम प्रसन्न होवें तैसेही तुमको करनायोग्य है ४५ ऐसे संपूर्णोंको संदेशादेकर और धर्मसे राजा भीष्मकका पूजनकर सेनाकरके सहित अपने पुरको जाताभया ४६ और राजाओं में श्रेष्ठ बलवान् शाल्वराजा भी तिन संपूर्ण राजाओं का पूजनकरके पवनकीसी वेगवाले रथमेंबैठ आकाशमार्गकरके कालयवनके पास जाताभया४७ और भी दक्षिणदिशामें होनेवाले संपूर्ण राजा थोड़ी दूर जरासंधके साथ चलकर अपने२ नगरोंमें जाते भये ४८ और पुत्रकरकेसहित भीष्मकराजा इस दुर्जय को चिन्तवनकर और दीन हुये कृष्णहीकोचिंतवन करते हुये अपनेघरों में प्रविष्ट होतेभये ४९ और श्रेष्ठ रुक्मिणी जो है ऐसे अपने स्वयंबर को निवृत्त जानके और कृष्णकेआनेमें राजाओंका दोषदर्शनजानके ५० और सखियों केमध्यमेंप्राप्तहोकर लज्जितहुई ऐसावचन कहतीभई हे सखियाओ

मैं और राजाओं की स्त्री होनेको नहीं योग्य हूं ५१ कमल सरीखे नेत्रोंवाले एककृष्णचंद्रकेबिना ये मेरे वचन सत्यहैं ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्व्व भाषायांरुक्मिणीस्वयम्बरे दशाधिकशतोऽध्यायः ११० ॥

एकसौग्यारहका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहाकि हे राजन् यवनोंमें अतिबलवान् और धर्म से पुरकी रक्षा करनेवाला १ त्रिवर्ग विदित का जानने वाला और षट्गुणों का आजीवन करने वाला और व्यसनों का त्यागनेवाला गुणोंसे रमण करनेवाला २ और श्रुतिमान् धर्मशील सत्यवादी जितेंद्रिय युद्धविधिका जाननेवाला ३ और शूरवीर श्रेष्ठ मंत्रियोंका सेवनेवालाऔर मंत्रियोंसहित रमणीकसभामें बैठाहुआ४और बुद्धि मान्यवनोंकरके उपास्यमान और आपस मेंअनेक प्रकारकी कथा कहतेहुये ५ ऐसे कालयवन के बैठेहुए सुन्दर सुगंधवाला पवनबह ताभया ६ तिससमयमें संपूर्ण सभामेंबैठनेवाले कहतेभये कि यह सुगंध कहांसेआई ७ ऐसे कहके संपूर्ण सभामें बैठनेवाले और राजा सूर्य्यकीसी कांतिवाला और सुवर्ण के पहियोंसे शोभित ८और दिव्यरत्नों करके संयुक्त और सुंदर पताकासे संयुक्त और मनपवन कीसीवेगवाले घोड़ोंसेसंयुक्त ९ और शत्रुओंको त्रास देनेवाला मित्रोंको प्रीति बढ़ानेवाला ऐसे बिचित्ररथको देख और तिसमें बैठा हुआ १० सौभपति शाल्वको देखकर और अर्घ्यपाद्य ल्यावो ऐसे यवनेन्द्र का मंत्री वारंवार कहताभया ११ और तिस समयमें आप यवनेंद्र आसनसे उठ और अर्घ्यपाद्यलेकर रथउतरनेकी जगहस्थित होताभया१२ और महातेजस्वी शाल्वभी आयेहुये राजा को देखकर और अर्घ्यादिकों में उद्यमयुक्त देखकर मधुरवाणी से बचन कहता भया कि हे बुद्धिमान् राजन् मैं १३ आर्घ्यादिकों के योग्य नहीं क्योंकि जिससे दूतहूं संपूर्ण राजाओं के पाससे जरासंध बुद्धिमान् काभेजाहूं इसवास्ते राजाओंमें अर्घ्य के योग्यनहीं १४ इतनी सुन

कालयवन कहताभया हे महाबाहो राजाओं के हितके वास्ते और मागध का भेजाहुआ ऐसे दूतको तेरेको मैं जानताहूं इसीवास्ते हे राजन् विशेष करके मैं पूजन करताहूं १५ अर्घ्यपाद्यादिकों करके और आसनोंकरके क्योंकि जिससे तेरा एकका पूजनहोनेसे संपूर्ण राजाओं का पूजन होजायगा १६ और तेरे सत्कारसे संपूर्णों का सत्कार होजायगा और हे राजन् दिव्यसिंहासन के बिषे मेरी बराबर में बैठ १७ बैशंपायनजी कहते भये कि हे राजन् जनमेजय कालयवन शाल्व राजाको ऐसे कह और हाथ मिला कुशल पूछ के और दिव्य सिंहासन पर बैठे दोनों शोभाको प्राप्तहोतेभये १८ पश्चात् कालयवन कहनेलगा हे राजन् शाल्व जिसकी भुजाओंके बलके आश्रय होकर हम संपूर्ण राजे ऐसे सुखसे बसतेहैं जैसेइन्द्र के आश्रय देवता १९ तिस जरासंध के ऐसा कौन कार्य प्रकटा जिससे मेरे पास आप भेजेगये और प्रभु जरासंध के सत्यबचनको क्याफरमाते हैं २० तिनके बचन को मानूंगा और तिनके दुष्कर कर्मकोभीकरूंगा २१ हे राजन् जनमेजय इतनी सुन शाल्व राजा बचन कहनेलगा हे यवनों के पति मगध देशके राजा जरासंध ने जैसे कहाहै सो मैंकहूं हूं २२ आपसुनो हे यवनेंद्र यह परम दुर्जय कृष्णजगत् को बाधा करनेवाला जन्मा है सो मैं इसकी दुर्वृत्त जान के मारने के वास्ते उद्योग किया २३ बहुत से राजा और संपूर्ण बलबाहन ऐसेबहुत सेनाओं करके गोमान् पर्वतको रोकता भया २४ जब ये दोनों तिसपर्वत में डरके बड़गये तबमैं शिशुपाल का बचन श्रेष्ठजान के तिन्होंका नाशकेवास्ते तिसमें अग्निलगाताभया २५ जब इसपर्वतसे हजारहोंलुक निकसनेलगींतबइस प्रलयकीसी अग्निकोदेख बलदेव तिस पर्वतकी शिखरसेकूद २६ और समुद्र रूपमहासेनामें पड़मनुष्य हस्तीघोड़ा रथइन्हों को मारनेलगा २७ और बासुकि की तरह सरपटता हुआ हलको खैंच और नर हस्ती अश्व रथ इनके समूहोंको मूसलसे ताड़नकरनेलगा २८ और हस्तीसे हस्तीमारदिया और रथसेरथतोड़दिया और योधासे योधा मारदिया

घोड़ासे घोड़ा और प्यादासे प्यादा २९ और बड़ातेजस्वी बलदेव युद्धमें अनेकप्रकारके मार्गोंसेबिचरनेलगा जैसे सायंकालमेंसूर्य ३० और इस बलदेव के अनंतर कृष्णजो है सूर्य कीसी कांतिवाला सेनाको ऐसे पकड़ताभया जैसे क्षुद्रमृगको सिंह ३१।३२ पश्चात् यह तिस पर्वतमें दौड़के प्रतापवान् यदुवीरदग्धहोते पर्वतसे शत्रुओंकी सेनामेंकूद चक्रसे बहुतसेनाको मारनेलगा ३३ पश्चात् चक्रको फेंक कर गदासे मारनेलगा और पश्चात् मूसल से सेनाको चूर्णकरने लगा ३४ और क्रोधरूप पवनसे दीप्तहुआजो चक्रलांगलरूप ३५ अग्नि सो सूर्यरूप राजाओं की पाली हुई बहुतसेना को नष्टकरता भया जबइन बलदेव कृष्ण पदातियोंने सेनाछेदनकरदी ३६ तबमैं सेना को व्याकुल देख बहुतसे रथोंकरके सहित तिस सेनाकी रक्षाकर और कृष्णका भ्राता बलवान् बलदेवकेसाथ युद्ध करने लगा ३७ तब यह शूरवीर गदा और हलको हाथोंमें लेकर मेरेआगे स्थित हुआ पश्चात् बारह अक्षौहिणियोंको सिंहकी तरह मारताभया पश्चात् सौनंद हलको गेरके और गदासे मेरेको ताड़ता भया ३८ पश्चात् वज्रकीसी गदाको मेरे ऊपर गेरी और जब फिर मारने को वैशाख स्थानसे ऐसे पृथ्वीको स्थितहुआ ३९ जैसे वैशाख स्थान को प्राप्तहोकर स्वामिकार्त्तिक क्रौञ्चको बिदारण करताभया पश्चात् दग्ध करतेहुयेकी तरह दीर्घ नेत्रोंसे देखनेलगा ४० हेराजेंद्र रणभूमिमें ऐसे बलदेवके रूपको देखके कौनआगेठहरे ४१ पश्चात् यह भयानक गदालेकर कालदंडकी तरहमेरे मारनेको आगे स्थित हुआ ४२ तब मेघके शब्दकी तरह अकाश को पूरती हुई आकाश बाणी हुई ४३ कि हेबलदेव हे अनघ यह तुमको नहीं मारना योग्य है क्योंकि इसकावध औरहोसे इसवास्ते हेहलायुध दूरहटजा ४४ तिस वाक्यको सुन निवृत्त होगया और यह चिन्ता करनेलगा कि अहो संपूर्णके प्राण हरनेवाले ब्रह्माको यह आपकहो ४५ इसवास्ते तुम्हारे संपूर्ण राजाओं के हितको बांछा करके जो मैं कहूं हे राजेंद्र तिसमेरे वचनको सुनके आपकरनेके योग्यहो गार्ग्यमुनि ४६ बहुत

तपकरके महादेवजीको प्रसन्नकरके मथुराके जनोंसे अवध्य पुत्रबर प्राप्तहोताभया ४७ तिससे तू उत्पन्नभयाहै इसवास्ते कृष्ण तेरेको प्राप्तहोकर ऐसे नष्ट होजायगा जैसे सूर्यकी किरणोंसेहिम ४८इस वास्ते राजाओंकाप्रेराहुआ तू यत्नकर और केशवके जीतनेके वास्ते गमनकर और मथुरापुरीको सेनासेमथ और कृष्णको मारके अपने यशको बिख्यातकर ४९ इसवास्ते बलदेव और कृष्ण दोनों माथुर हैं इसवास्ते मथुरा को जाके संग्राममें दोनोंको जीतले ५० ऐसे जरासंधके संदेशेकह और शाल्व कहताभया कि हे राजेंद्र राजाओं में सूर्यरूप जरासंधके वचन राजाओंके हितकारी तुमसे कहेहैं तिन को मंत्रियों सहित बिचारके जो युक्तहो तो करने योग्यहैं ५१ ॥

श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णु पर्वभाषायांशाल्ववाक्येएकादशाधिकशतोध्यायः १११॥

एकसौ बारह का अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं किहे राजन् जनमेजय राजाओंकी आज्ञा से ऐसेकहते हुये शाल्वराजाको परम प्रसन्नहुआ यवनोंका अधि-पति कालयवन वचनकहताभया १ हेशाल्व मैं धन्य हूं और तुमने अनुग्रहकिया और आज मेराजीना सफल हुआ क्योंकि जिससे कृष्ण के विग्रहसे बहुत राजोंने यादकिया २ हे शाल्व कृष्ण तीनों लोकोंमें सुर और असुरोंसे दुर्जयहै और तिसके जीतने में जो मैं राजाओंका निश्चयकियाहूं ३ सोयहमेरे भी निश्चयहै कि तिन्होंको बाणरूप जलकी वर्षासे मेरीजयहोगी ४ और हे शाल्व मेरेवास्ते जोतिन्होंने वचनकहेहैं सो मैं निश्चय करूंगा और हे राजेन्द्र जो ऐसाहोगा कि मेरा पराजयभी होगया तो वहभी जयकी तुल्यहै ५ सोहेराजन् आजहीतिथि नक्षत्रमुहूर्त करण शुभहै इसवास्ते आजही रणमेंकेशवको जीतनेको मथुरामें प्राप्तहूंगा ६ वैशंपायन जी कहैहैं कि हे राजन् सौभपति शाल्व के ऐसे कहकर और बहुत मोल के मणि भूषणों से न्याय पूर्वक तिसका सत्कार कर ७ और ब्राह्मण सिद्धादेश पुरोहित इन्होंको बहुतसा धन देताभया ८ और अग्नि

में विधि पूर्वक हवन कराके और अनेक प्रकार के उत्साह मंगल करके और जनार्दनको जीतनेकी इच्छाकरके प्रस्थान करताभया ९ और हेभरत श्रेष्ठ शाल्वराजाभी प्रसन्न मनहुआ और कृतार्थ हुआ यवनेंद्रसे मिलके अपने पुरमेंजाताभया १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांकालयमनागमने द्वादशाधिक शतोऽध्यायः ११२ ॥

एकसौ तेरह का अध्याय ॥

जनमेजय पूछतेहैं कि हेभगवन् इंद्रकी तुल्यपराक्रम वाले गरुड़ जब बिदर्भ नगरसे चलेगये पश्चात् किस वास्ते गरुड़ प्राप्तकिया और वहप्राप्तहुआ गरुड़ क्याकर्मकरता भया १ और महाबल गरुड़पै भगवान् क्योंनहीं आरूढ़ होतेभये हे महामुने हे ब्रह्मन् इस मेरेसंदेहको आपदूरकरो २ औरयथार्थतत्त्वकहो ऐसे सुन बैशंपायनजीने कहाहेराजन् जोमनुष्यसे नहींहोसके ऐसे किये गरुड़केकर्मों कोसुनो ३ जब बिदर्भ नगरसे महाद्युति गरुड़ चले गये और भगवान् जबमथुरामें नहीं प्राप्तहुए तबमहामति गरुड़ मनसे चिंतवन करनेलगा ४ और हेराजन् राजाओं के आगे जोदेवदेवने कहा कि भोजराजकी पालीहुई मथुरापुरीमें जाऊंगा ऐसेतिसके बचनकेअंत में जाऊंगा ऐसेचिंतवन करता हुआ ५ नमस्कार करके यह बचन कहताभया ६ हे देव रैवतकी नगरी कुशस्थलीकोमैं प्राप्तहूंगा ७ बैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् देवेश जनार्दनको ऐसे जनायके और प्रणाम करके पश्चिमकी तर्फ मुख करके जाता भया ८ और कृष्णचंद्र यादवों के साथ मथुरामें प्रवेश होता भया और उग्रसेन और नगर के मनुष्य उलटे आन के कृष्णचंद्रका पूजनकरते भये ९ जनमेजयने कहा कि हेभगवन् बहुत राजाओं करके अभिषिक्त राजेन्द्रको देखकर और इंद्रकेसंधान एकएक भाग राजाओंको देते भये १० और राजेन्द्रोंको अर्बुददिया ११ और दशमनुष्योंको दिया जो तहां अभिषेचनमें आये सो खाली नहीं गये १२ ऐसे खजानों

केपति देवताओं करके श्लाघा करे हये अर्थिक जनों की बहुत सी पूजा करते भये १३ और देवताओं के स्थानों में बहुतसी पूजा कराते भये और वसुदेव जी के भवन के चारों तर्फ तोरण बांधते भये १४ और नटोंका नृत्य गानबजाना चारों तर्फ होताभया १५ और पताका ध्वजा माला इन्हों करके युक्त पुरी को राजा कराता भया १६ और कंसराजाकी सुंदर सभा कराते भये और तोरण पुरके दरवाजे इन्हों के अमृत को कीचका लेपन कराते भये १७ और हे राजेन्द्र राजेन्द्रके आसनों का सुंदर स्थानकराते भये १८ और पताका बनमाला इन्हों करके युक्त पूर्ण कुंभस्थापन करते भये और राजमार्गों को चंदन और जलसे सेचन कराते भये १९ और पृथ्वीमें जगह२ बस्त्रोंका आस्तरण कराते भये और जगह २ धूप चंदन अगर गूगल राल इन्हों की सुगंधि होती भई. २० और वृद्ध स्त्रियों के समूह मंगल गाते भये और स्त्री अपने २ स्थानों में स्थितहुई मंललाचार देखती भईं २१ हे राजन् बुद्धिमान् उग्रसेन राजा ऐसे पुरमें आनंद करवाके और वसुदेवजीके घरमें जाके और प्रिय आख्यान निवेदन करके २२ और बलदेवजीके साथ सलाह करके रथके समीप प्राप्त हुआ और तिसीकाल में हे राजन् महान् शंखध्वनि होती भई २३ पश्चात् मथुरा पुरबासीजन पांचजन्यशंखकी ध्वनिसुनके और स्त्री बालक वृद्ध सूत मागध बंदी२४ ये बहुतसी सेनाको और बलदेवजीको आगेलेकर निकसतेभये २५ पश्चात् उग्रसेन अर्घ्यपाद्यको आगेकरके और दृष्टिमार्गको प्राप्त होकर और रथसे उतरकर पाद मार्गकरके चलतेभये २६ पश्चात् सुंदर भूषित रथमें दिव्यरत्नों की कांतिसे युक्त वनमाला को धारण किये सूर्यकी तरह प्रकाश करता हुआ २७ और चमर ब्यजन छत्र गरुड़की ध्वज इन्हों करके भूषित २८ और राजलक्षण सम्पन्न देवेश ऐसे हरिको देख २९ गदगद बाणी से शत्रु बलको नाश करनेवाले बलदेवजी को बचन कहतेभये ३० रथ करके मेरा चलना युक्तनहीं है महाभाग तू रथकरकेचल ३१ और यहांप्रकाशित देवेश नृपरूप

समुद्र में संपूर्ण भावमें केशवकी स्तुति करनेकी इच्छा करताहूं ३२ महातेजस्वी राजाके प्रति बचनकहताभया ३३ हे राजन् जातेहुयेदे-वसत्तम की स्तुतिकरने को योग्य नहीं ३४ और हे राजन् जनार्दन तो विनाही स्तुतिकिये तेरेऊपर प्रसन्नहैं ३५ हे राजन् प्रसन्न के स्तुतिकरके क्याहै तेरेदर्शनही करके स्तुति होचुकी ३६ हे राजेंद्र तू प्राप्तहोकर पश्चात् दिव्यस्तोत्रों से स्तुति करनी उचितहै ३७ पश्चात् ऐसेकहतेहुये दोनोंकेशव के समीप प्राप्तहुआ तब उग्रसेन के हाथमें अर्घ्यादि देखकर ३८ और तिसको सुंदर रथमें चढ़ातेभये और उग्रसेनके प्रतिबचन कहतेभये हेराजन् जो मैंनेऐसा अभिषेक कियाहै कि तूमथुराका ईश्वरहो ३६ सो उसको आपअन्यथा करने को युक्तनहीं सो इसवास्ते आपअर्घ्य आचमन देनेको योग्यनहीं ४० हेराजन् मेरे मनको तो यह प्रियहै और हे राजन् तेरा अभिप्रायको जानके मैं बचन कहता हूं ४१ हेराजन् मथुराका राजातूही है सो अन्यथाकरनेकोयोग्यनहीं ४२ और हेराजन्स्थानभाग और दक्षि-णा तेरेको दूंगा और दक्षिणादूंगा जैसे संपूर्णराजाओंके आगेसौ अथवा सहस्र भाग वस्त्राभरणम बर्जित हे मथुराके ईश्वर सुवर्णके सुंदर रथ में बैठ ४३ और छत्रचामर व्यजन ध्वज दिव्य आभूषण सूर्यकोसी कांतिवाला मुकुट इनसंपूर्णों को धारणकर ४४ और इस मथुरा पुरीकी पालनाकर और पुत्रपौत्रोंकरके प्रवृत्तहुआ मथुराकी पालनाकर ४५ और हेराजन् शत्रुओं के समूह को जीतकर और भोजवंश का बढ़ाय ४६ और हेराजन् देवदेव और अनंतऐसे बल देवजी के वास्ते देवराजने सुंदर आभूषण दियेहैं ४७ और संपूर्ण मथुरा वासियोंके वास्ते दीनार के दश भागद्रव्य भेजाहै ४८ और सूतमागध बंदीजनों के वास्ते एकएक हजार रुपये भेजेहैं ४६ और वृद्धस्त्रियोंकेवास्ते और वेश्याओंकेवास्ते सौसौरुपये भेजेहैं ५० और जो राजाके साथठहरते हैं विकद्रु से आदिलेकर तिन्होंके दशहजार भागदियेहैं ५१ वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् उत्तम द्रव्योंसे ऐसे उग्रसेनको पूजनकर ५२ और बड़ेआनंदयुक्त और दिव्यआभू

षण मालाइन्हों करके भूषित और सुंदर बस्त्रलेपनों से भूषित ४४ और भेरीपटह शंखदुंदुभी इनके शब्दोंसेयुक्त और हस्ती घोड़ा के शब्दसेसंयुक्त ४५ और शूरबीरोंकाशब्द रथके शब्दसे संयुक्त और मेघशब्दकी तुल्यतुमुल करके युक्त ४६ और बंदियों करके स्तुति कियेहुये और प्रजाते नमस्कार किया हुआ ऐसे कृष्णचंद्र शोभित मथुराको प्राप्तहोतेभये ४७ और मथुराकेजन पदपदपर यहस्तुति करतेभये कि हे पुरुषाओ यह कृष्णचंद्र साक्षात् नारायणहै और हे पुरुषाओ यहकृष्णदेवताओंसेभी दुर्जय४८।४९ महाबीर्यबलिकोबांध कर और इन्द्रको त्रिलोकीका राज्यदेताभया ५० और देखो येकृष्ण चंद्रसंपूर्ण दैत्योंको मारके और शूरबीर कंसको मारके भोजराजा को मथुरादेतेभये ५१ और केशिको नष्टकरतेभये और देखोयह कृष्ण आप राजसिंहासन परनहींबैठे ५२ और राजेंद्रत्व की नहींबांछा करतेहुयेमथुराकी पालना करताभया ५३ ऐसेपुरवाशियोंकाआपस में संभाषण सुनके सूतमागध बंदीजनोंके समूह बाणीकहतेभये५४ कि हेभगवन् गुणोंके समुद्रजो तुमहो तुम्हारे प्रभाव उत्साह से उत्पन्नहुयेगुणोंकेकहनेमें हमकैसेसमर्थहैं क्योंकि जिससे एक जिह्वा वालेहैं और मनुष्यहैं ५५ हे भगवन् सहस्त्र फणोंवाला नागोंका इन्द्र वुद्धिमान् ऐसावासुकि तो किसीसमय में दोसहस्त्र जिह्वाओं से बर्णन करभीदेवे ५६ और हे भगवन् यह पृथ्वीलोकमें राजाओं में अद्भुत है कि इन्द्रसे नतो किसी के आसन आया और न आवे गा५७ और हेभगवन् देवताओं की सभा और कलसापै भी किसी केवास्तेनहीं आयासुना और न देखाहै५८ हेभगवन् आपकेयहहम अद्भुतही मानतेहैं ५९ और हेभगवन् स्त्रियोंमें श्रेष्ठमहाभागदेवकी को धन्यहैकिजो देवताओंमें श्रेष्ठतम केशवकोगर्भकरके धारणकरती भई ६० और देवताओंसे पूजित शोभाका पुंजकमलकेसे नेत्रोंवाला ऐसेभगवान्के मुखको नेत्रोंसे पानकरतेभये ६१ऐसे कहतेहुये संपू र्णोंका पृथकर२सुनतेहुये बलदेवकृष्ण उग्रसेनको आगेकर किलाके दरवाजापर प्राप्तहोतेभये और तहांअर्घ्य आचमनीय से पूजनहोता

भया ६२ पश्चात्बुद्धिमान् उग्रसेन भगवान्के प्रणामकरके रथमें बैठे ६३ महाराजकृष्णचंद्रके आगेआगे ऐसे सुबर्ण की बर्षा करते भयेजैसेजलकी बर्षामेघ ६४ ऐसेबर्षाके होतेपिताकेस्थानमेंपहुंचते भये६५पश्चात् मथुराकेअधिपतिश्रीमान् कृष्णचंद्रकहनेलगेयहबार्तायुक्तहै कि राजेंद्रत्व को प्राप्तहोकर देवराजका दियेसिंहासन को पिताकेस्थानमें स्थापन करना ६६ और मथुरेशकीसभाका प्रसन्न करनायह मेरेउचितहै ६७ हेराजन् जन्मेजय जबपिताके स्थानमें प्राप्तहुये तबदेवकी और वसुदेव और रोहिणीये आनंद से मोहित हुयेकुछभी करनेको नहींसमर्थहोतीभई ६८ औरहे राजन् तिसके अनंतरकंसकीमाता भगवान् का पूजनकरतीभई६९और अनेकदेश और दिशाओंसे ल्यायेहुये कंसकेधनको देशकालको देखकर महाराज कृष्णके चरणारबिंद में निवेदन करतीभई ७० और कृष्णचंद्र उग्रसेन को बुलाकर मधुरबाणी से बचन कहतेभये ७१ हेराजन् नहींतो मेरे मथुराकी बांछा और न मेरे द्रब्यकी वांछाहै ७२ और नहीं मैंने तुह्मारे पुत्र मारे हैं वेतो काल करके मारेहुये मृत्यु को प्राप्तहुये हैं७३।७४ इसवास्ते हेराजन्शोकमतकरो अनेकप्रकारके यज्ञकरो और दान देवो ७५ और मेरे भुजाओं के आश्रय होकर शत्रुओंकोजीतो और कंसके नाशसे उत्पन्न हुये संताप औरभयको त्यागो ७६ और हे राजन् मेरे ल्याये हुये द्रब्योंका खजाना संचित कर ७७ हे जनमेजय ऐसेउग्रसेनको आश्वासना कराके और बलदेवजी करके सहित कृष्णचंद्र ७८ माता पिताके पास जाते भये आनंदसे परिपूर्ण हैं हृदय जिन्होंके ऐसे बलदेव कृष्णनम्र हुयेमाता पिताके चरणों को नमस्कार करते भये ७९ पश्चात् तिस मुहूर्त में मथुरा ऐसीभूषित होतीभई८० कि मानू यह मथुरा नहींहै स्वर्गको छोड़कर इंद्रकी पुरीही यहां आगईहै ८१ और पुरवासीजन वसुदेव के भवनको देखकर यहमनमें चिंतवन करते भये कि यह भूतल नहींहै किंतु देवलोकहै ८२ पश्चात् पटरानी के सहित उग्रसेन राजाको छोड़कर बलदेवके सहित बसुदेवके भवनको प्राप्तहोता

भया ८३ और भवनमें प्रवेशहोकर और शस्त्रोंको धरके दोनों शूरवीर स्थितहोते भये ८४ पश्चात् अपना नित्यनियमक करके कथामें सुख पूर्वक स्थित होते भये ८५ पश्चात् इतनेही कालमें महान् उत्पात होताभया ८६ और घनाकाशमें तारागण भ्रमते भये और पृथ्वी और पर्वत चलते हुये और समुद्र क्षुभित होताभया ८७ ऐसे उत्पातोंको देखकर संपूर्ण यादव कांपते भये और मूर्छापड़ते भये पश्चात् ऐसे इकट्ठे हुये यादवोंको देखकर राम कृष्ण निश्चल होते भये ८८ पश्चात् पक्षोंके पवनोंसे पक्षियोंमें उत्तम दिव्यमाला चंदन करके युक्त गरुड़को देखताभया ८९ पश्चात् शिरसे बलदेव कृष्णको प्रणाम करके पश्चात् धृतिमान् और मंत्री ऐसेगरुड़को मधुसूदन भगवान् बचन कहतेभये ९० हे सुरसेनाके शत्रुओंको मर्दन करनेवाले पक्षियोंमें श्रेष्ठगरुड़ तुम्हारा आनाअच्छाहुआ ९१ पश्चात् कृष्णचंद्र स्थितहुये गरुड़को बचन कहतेभये हेगरुड़ भोजके अंतःपुरको प्राप्तहोवेंगे और तहां जाकर मनकी बातकी सलाह करेंगे ९२ वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् महावीर्य बलदेव जनार्दन और तीसरा गरुड़ ये तहां प्राप्त होकर गुप्त सलाह करते भये ९३ कि जरासंधकी सेनाको हमसौवर्षों करकेभी जीतने को समर्थनहीं ९४ इसवास्ते हे वैनतेय मथुरामें हमारे बसते हुये कल्याण न होवेगा यह हमारी बुद्धि है ९५ ऐसे बचन सुनगरुड़ देवदेवको नमस्कार करके कहने लगा कि हे भगवन् बासके वास्ते कुशस्थली भूमिको देखने के वास्ते जाऊंगा ९६ और हे भगवन् चारों तरफमें फिरके और आकाश में स्थित होकर और पुरलक्षण पूजित भूमिको देख कर ९७ समुद्रके बीचमें देवताओं करके अभेद्य और संपूर्ण रत्नोंकी खानवाली और संपूर्णकाम फल के वृक्षोंवाली ९८ संपूर्ण ऋतुके फूलों करके व्याप्त चारोंतर्फसे बहुत सुंदर संपूर्ण आश्रमोंके स्थानोंवाली ९९ संपूर्ण कामनाके गुणों करके युक्त नरनारियोंके समूहसे व्याप्त नित्य आनंदको बढ़ानेवाली १०० खाई और किलासेयुक्तऔर पुरदरवाजे और अटालिकाओंसे युक्त विचित्र आंगनोंसे युक्त १०१

ध्वजा तोरणोंसे संयुक्त और सुवर्णके किलासे भूषित और नर हस्ति अश्व इन्होंसे व्याप्त और रथके शब्दोंसे व्याप्त और ऊंचे२भवनों से व्याप्तऔर रिपुओंको भयकरनेवालीमित्रोंकोआनंदकरनेवाली १०२ राजाके बासोंसे भूषित ऐसी पुरको रचवाके और पर्वतोंमें श्रेष्ठ रैवत पर्वतको नंदनबाग सरीखा और पुरद्वारका आभूषणदेवस्थानकरके हेसुरोत्तम तहां संपूर्णजनों को बासकरावो १०३।१०४ हे राजन् गरुड़कहैहैकि हेभगवन् यहद्वारवतीनामपुरी तीनोंलोकोंमेंविख्यात होवेगी १०५ और इन्द्रकी अमरावती पुरीकी तरह यह रमणीक पुरीहोगी और हे भगवन् जो थोड़ी पृथ्वीहोगी तो समुद्र और दे देगा १०६ और तहां इच्छापूर्वक विश्वकर्मा इसको रचदेगा और हे भगवन् मणिमोती मूंगा हीरा बैडूर्य इन रत्नों करके और अनेक प्रकारकी द्रव्य वस्तुओं करके१०७ दिव्यस्तंभोंसे व्याप्त और देव सभाकेसमान सुवर्णसेजटित संपूर्णरत्नोंसेभूषितदिव्यध्वजा पताका से युक्त और देवकिन्नरोंसे पालित चंद्रसूर्यकी कांतिसेयुक्त ऐसेदिव्य महलवनवावो १०८ बैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् ऐसे भग वानकेप्रति बचन कहके और प्रणाम करके स्थितहोता भया १०९ पश्चात् बलदेवजी करके सहित कृष्णचंद्र इस गरुड़केकथन को हितसमझके ११० और वस्त्र आभूषणोंसे गरुड़का सत्कारभेजकर ऐसे आनंदकरनेलगे जैसे देवलोकमें देवता १११पश्चात् महायश भोजराज उग्रसेन तिसका बचन सुनकर स्नेहसे कृष्णचंद्र के प्रति अमृतरूपवचन कहताभया ११२ हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो हे यादवोंको आनंदबढ़ानेवाले हे रिपुओंको नाशकरनेवाले मेरेबच नको आपसुनो ११३ हे भगवन् तुम्हारे बिना इस पुरमें सुखपूर्व- क बसनेको हम समर्थ नहीं पतिकरके हीन जैसे स्त्री ११४ और हे भगवन् तुम्हारे करके ही हम सनाथ कहावतेहैं और तुम्हारी भुजाओंके आश्रयहुये राजा और इन्द्रोंसे भी हमनहींडरतेहैं ११५ और हे यदुश्रेष्ठ जहां२ जीतनेकेवास्ते जाओ वहां हमको साथले- जाओ ११६ हेराजन् देवकीकेपुत्र भगवान् ऐसे वचनसुनके हंसते

हुये कहनेलगे कि तुम्हारा यथेष्टही होगा इसमें संदेह नहीं ११७

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांरुक्मिणीस्वयंवरेमंत्रोदाहरणे त्रयोदशाधिकशततोऽध्यायः ११३॥

एकसौचौदहका अध्याय॥

बैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् किसीकालमें यादवोंकी सभामें कमलसरीखे नेत्रोंवाले कृष्णचंद्र सभोंके प्रति हेतुवाले उत्तम बचन कहतेभये १ यादवोंको यह मथुराकी भूमि राष्ट्रके बधानेवालीहै और हम भी मथुराहीमें जन्मेहैं और ब्रजमें बढ़ेहैं २ सो अब तो दुःखगया होगया और शत्रु भी जीतलिये और राजाओंके विषे बैर उत्पन्न करदिया ३ और जरासंधके साथ बिग्रह होगया और बाहन हमारे बहुतहैं और पदाति भी अनंतहैं और रत्न बिचित्र हैं और मित्र बहुतसेहैं ४ परंतु यह मथुराभूमि अल्प है और शत्रु से गम्यहै ५ और वृद्धि हमारे बहुत होगईहै एक क्रोड़ बालकहैं और पदातियोंकेसमूह इन्होंके बसनेमें मैं यहां दुःखदेखूंहूं ६ इसवास्ते हे यादवोंमें श्रेष्ठो मेरेको बास और जगह अच्छा लगे है इसवास्ते पुरीको और जगह प्राप्तकरूंगा सो यह मेराअपराध क्षमाकरनेको योग्यहो ७ हे यादवोहो जो ये मेरेवचन अनुकूलहैं तो तुमकोकरने योग्यहै ८ हे जनमेजय ऐसे बचनसुनके संपूर्ण यादव कृष्णचंद्र के प्रति बचनकहतेभये ९ तिसके अनंतर संपूर्ण यादव सलाह करने लगे कि यह राजा अवध्यहै और सेना भी अबध्य है १० औरबहुतसी सेनाका क्षय भी होगया फिर सौबर्षमें भी जीतने को समर्थ नहीं ११ हे राजन् ऐसे बिचारके तिनकी वहां से गमनमें बुद्धिहोतीभई और इसी अन्तरमें कालयवन राजावैसीही सेनालेकर मथुराको चारोंतरफसे रोकताभया १२ पश्चात् दुर्निवार जरासंध के बलको और कालयवनको सुनके यह सलाह करतेभये और केशव भगवान् फिरयादवोंकोकहतेभये १३।१४ हेयादवोहो आजहीपवित्र दिन है इसवास्ते अपने२ नौकर चाकरोंसहित यहांसे निकसो १५

ऐसे सुनके हे राजन् कृष्णकी आज्ञासे संपूर्ण निकसतेभये समुद्रके वेगकीतरह १६ और बलकेसमूहसे प्रतिनादित बसुदेवजीसे आदि लेकर संपूर्ण स्त्रियोंको लेकर और कसेहुये गज अश्व रथ इन्होंपर सवारहोकर १७ और धन ज्ञाति बांधवों करके सहित ऐसे संपूर्ण यादव नगारे बजाकर और मथुराको छोड़कर निकसतेभये १८ पश्चात् सुवर्णके रथ और मदोन्मत्त हस्ती चाबुकसे कूदतेहुयेअश्व इन्होंकरके अपनी २ सेनाके अग्रभाग को शोभित करतेहुये संपूर्ण यादव प्रसन्नहुये पश्चिमाभिमुख होते भये १६ ऐसे बसुदेव से आदिलेकर मुख्ययादव अपनी सेनाको खैंचते हुये चले अनेक प्रकारकी बेलोंसेचित्र और नारियलबनसे युक्त २० नागरपानों से युक्त केतकीसमूहसे मंडित पुन्नागतालीसे युक्त २१ दाखके बनोंसे युक्त ऐसे सुंदर सिंधुराजके अनूपको संपूर्ण यादव प्राप्तहोतेभये२२ हे राजन् जनमेजय तहां प्राप्तहुये यादव सुंदरविषयोंमें ऐसे आनंद करतेभये जैसे स्वर्गमें प्राप्तहुये देवता २३ शत्रुओं को मारनेवाले कृष्णचंद्र पुरवास्तुको देखतेहुये सागरका अनूपशोभित बिपुल देश को देखतेभये २४ जहां घोड़े हाथियोंकेवास्ते तो सुंदरताम्रमृत्तिका और पुर लक्षणोंसे संपन्न सागर की पवनसे सेवित २५ और सागरके जलसे सेवित समुद्रका देश पुर लक्षणों से शोभित ऐसा सुंदरदेशको देखताभया २६ तहां रैवतकनाम पर्वत समीप और अच्छी शिखरवाला मंदराचल चारोंतरफ शोभित तहां बासकरता भया २७ पश्चात् बहुत पुरुषों से युक्त कृष्णचंद्र राजा की बिहार भूमिरचतेभये २८ और द्वारवती तिसका नामरक्खा तहां भगवान् ने पुरीकेवास्ते निवेशकिया २६ ऐसे संपूर्ण सेनापाल निवास करताभया और यादवोंकरके सहित कृष्णचंद्र तहां बासकरतेभये ३० तिसदेशके पुरनिवेशके वास्ते अनेकनाम रखतेभये ३१ और पुरुषों में श्रेष्ठ और यादवोंमें उत्तम ऐसे भगवान् मनकरकेही बस्तुओं को रचतेभये ३२ ऐसे द्वारवतीपुरीको प्राप्तहोकर संपूर्ण बांधव सुखपूर्वक बसतेभये जैसे स्वर्गमें देवताओं के गण ३४ केशी को मारने

वाले कृष्णचंद्र भी कालयवनको जानके और जरासंधके भयसे द्वार वतीपुरीको जातेभये ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांद्वारवतीप्रयाणेचतुर्दशाधिक शततोऽध्यायः ११४ ॥

एकसौपन्द्रहका अध्याय ॥

जनमेजय कहताहै कि हे तपोधन यदुओंमें श्रेष्ठ जो बुद्धिमान् बासुदेवहै तिनके चरितबिस्तारसे सुननेकी इच्छाकरताहूं १ हे द्विजसत्तम मध्यदेशमें धाम और लक्ष्मीका केवल धाम पृथ्वीकाशृंग बहुतधनधान्यवाली श्रेष्ठपुरुषों का अधिष्ठान ऐसी मथुराको बिना ही युद्ध भगवान् क्योंछोड़तेभये २।३ और हे भगवन् कालयवनराजा कृष्णचंद्रसे क्यों बैरकरताभया ४ और उदारचित्त महाबाहु महायोगी ऐसे कृष्णचंद्र द्वारकाको प्राप्तहोकर क्या करतेभये ५ और हे भगवन् कालयवनके क्या पराक्रमथा और किससेउत्पन्न हुआथा क्योंकि जिस असह्य को देखकर जनार्दन भगवान्भागे ६ ऐसे राजाके प्रश्नसुन बैशंपायनजी कहतेभये कि हे राजन् अंधक और वृष्णियोंकागुरु महातपस्वी गार्ग्यहोताभया ७ सो पहलेब्रह्मचारीहोके स्त्रीको नहीं अभिगमन करताभया ऐसे बर्ततेहुये इसऊर्द्ध रेताको साला हसनेलगा कि गार्ग्य नपुंसकहै ८ ऐसे यह कुपित हुआ जाकर पुत्रकीबांछासे दारुणतपकरताभया ९ और बारहबर्ष तक लोहेका चूर्ण भोजनकरताहुआ त्रिशूलहै हाथमें जिन्होंके और अचिन्त्य ऐसे महादेवजीका आराधन करताभया १० पश्चात्महादेवजी प्रसन्नहोकर औरवृष्णी और अन्धकोंको युद्धमेंजीतने वाला और सर्ब तेजमय ऐसा समर्थपुत्र बरदान देतेभये ११ पश्चात् पुत्रसे रहितऔरपुत्रकीबांछावालाऐसा यमनाधिपति तिसबरदानको सुन केऔरसोराजातिसगार्ग्यकोअपने स्थानमेंल्यावताभया १२ पश्चात् तिसद्विजर्षभको सांत्वनाकराके पश्चात् राजाकी बताईहुई १३ और गोपस्त्रीका रूपधारणकरे गोपाली अप्सरा दुर्धर गार्ग्य के गर्भको

धारण करतीभई १४ पश्चात् महादेवजी के बरदानसे तिसमें काल यमन नामशूरवीर उत्पन्न होताभया १५ पश्चात् अपुत्रके तिसराजा के रनवासमें कालयमन वृद्धिको प्राप्त होगया १६ हे राजन् जब तिसराजाकी मृत्युहोगई तब कालयवन राजाहोगया १७ पश्चात् युद्धकी वांच्छा करके ब्राह्मणोंको पूछनेलगा कि मेरीसमान कौनहै किससे युद्धकरूं तबनारदमुनिने वृष्णिअंधक यादवोंकाकुल इसके आगेकहा १८ और उधर भगवान् आगे इसका सब वृत्तांत नारद मुनिने कहदिया पश्चात् भगवान् इसको यवनोंमें बढ़तेको देखते हुये स्थिर रहे जब यह महाबल यवनोंका राजाबढ़गयातब म्लेक्ष आके इसके आश्रयहोतेभये १९ शक खार दरद पारद तंगण खस पल्हव येऔर अन्य सैकड़ोंम्लेक्षों करके ऐसेयुक्तहुआ २० जैसेचोर और टीड़ियों करके युक्तराजा और अनेक प्रकारके बेष और आयु धों सहित मथुराको रोकतेभये २१ औरहस्तीअश्व खरउष्ट्र इन्होंके दशहजार अर्बुदोंकर के और बहुतसी सेनाकरके पृथ्वीको कपावते भये २२ और हेराजन् धूलिकरके सूर्य्य आच्छादन करदिया और सेनाकेबिष्टामूत्रसे नदीचलगई २३ और अश्वउष्ट्रोंके बिष्टाका समूह पड़ताभया इसवास्ते अश्व शकृत् नामहोता भया २४ तिस आईहुई बहुतसेनाको वृष्णिक अंधकोंमें मुख्यबसुदेव जातियोंको बुलाकेयह वचन कहनेलगे कि २५ अहोअंधक वृष्णियोंने यह बड़ाघोर भय प्राप्तहुआ और महादेवजीके बरदानसे शत्रुभी यहअबध्यहै २६ और सामादिक उपाय इसके याद हैं इस वास्ते यहमत्तहुआ मद और बलकरके युद्धहीकरनेकी इच्छाकरताहै २७ और नारदमुनिने हमारा इतनाही बास कहाहै और इसशत्रुने साम उपाययुक्त है २८ और जरासंध राजा हमकोनित्य सहताही नहींहै और तैसेही यादवोंकी सेना करके दुःखित किये और राजा और कितनेक कंसके मरने से कुपितहुये राजा ये जरासंधको आश्रय होके हमारे मारनेकी इच्छा करतेहैं २९।३० और राजाओंने बहुतसे यादवोंके बंधुमारदिये और हमतिसकी सेनाकोमारनेको समर्थनहीं ३१ कृष्णचंद्रभी ऐसेनिकसन

की मतिकरके कालयवनके पास दूतको भेजतेभये ३२ अंजनकेसा स्याहसर्प घड़ामें रोंककर और दूतके शिरधर कालयवन के पास भेजा ३३ यह बात दिखाई कि हे कालयवन जैसा यह सर्प क्रूरहै ऐसे शत्रुओं के वास्ते मैं हूं ३४ ऐसेघड़े को कालयवन देखकर समझ गया ३५ पश्चात् कालयवनने बहुततेज चींटियों से घड़ा भरदिया और उन्होंनेसर्प मारदिया ३६ खामके कृष्णचंद्रके पासभेजाओर यहदिखाया कि हमबहुतहैं ऐसेमारदेंगे ३७ कृष्णचंद्रभी इस अभिप्रायको समझगये और बसुदेव तो तिसवृत्तांतको देखकर और मथुराको छोड़ द्वारकाको जाताभया ३८ और महायशस्वी कृष्णचंद्र द्वारकाको जाकर और यादवोंको आश्वासना करातेभये ३९ पुरुषों में व्याघ्ररूप कृष्णचंद्र पैरोंसेही मथुरा को आते भये ४० और कालयवन कृष्णचंद्र को देखकर और प्रसन्नता और क्रोधसे युक्त हुआ सेनासे निकसता भया ४१ पश्चात् कृष्णचंद्रतो आगे और कालयवन पीछे यहबांछा रही कि पकड़लूं परंतुयोगधर्मवाले कृष्णचंद्रको नहीं छुवता भया ४२ सो हे राजन् मान्धाताका पुत्र महायशो मुचुकुंद पहले असुर देवताओंके युद्धमें देवताओंको जीतकरा के ४३ और प्रसन्नहुये देवताओं से निद्राका बरदान मांगके और श्रांतकी तिसकी यहवाणी निकसो कि देवतावो जो मेरेको बीचमें जगादे तो वह क्रोधसेदीप्त मेरे नेत्रसे भस्महोजाय ४४।४५ देवताओं सहित इंद्रनेकहा कि ऐसेही होगा ऐसे देवताओंने आज्ञादियाहुआ यह मानुष लोकमेंआया आदिराज पर्वतकी किसी गुफामें श्रमकरके पीड़ितहुआ इतने कृष्णचंद्र के दर्शनहोवें इतने सोताभया ४६।४७ यहसंपूर्ण वृत्तांत नारदमुनिने भगवान्के आगे कहदिया था कि यह बरदान है और ऐसा इसका तेज है ४८ कृष्णचंद्र भागतेहुए तिस म्लेच्छ शत्रुको जहां मुचुकुंद थे तिस गुफामें प्रवेश करतेभये ४९ पश्चात् बुद्धिमानों में श्रेष्ठ कृष्णचंद्र तो मुचुकुंद के शिर की तरफ लुकगये ५० और यह कालयवन राजा को देख और महा मूर्ख भगवान्मानके और अपनेनाशकेवास्ते लातमारनेलगा जैसे पतंग

अग्नि में अपने नाशकेवास्ते प्राप्त होताहै ५१।५२ ऐसेपश्चात्
मुचुकुंद राजर्षि जागके पैरकेस्पर्श और निद्राके विच्छेदसे क्रोधसे
क्रोधयुक्त होताभया ५३ और देवताओं के बरकोयादकरके देखना
मात्रसेही कालयवन को ऐसे भस्मकरतेभये जैसे सूखेवृक्षकोअग्नि
५५ जबराजा का तेजहटगया तबकराहै कार्यजिन्होंने ऐसेबुद्धिमा-
न् कृष्णबहुत दिन सोतेहुए राजाको यह बचन कहनेलगे ५६।५७
हेराजन् तूबहुतदिनसे सोयाहै नारदमुनिने मेरेआगेसब वृत्तांतकह-
दियाथाऔरमराकार्य यह तैंनेकरदिया इसवास्तेतेराकल्याणहो५८
और मैंजाताहूं पश्चात् राजा भगवान्को छोटास्वरूप देखकेबहुत
कालसेबदलाहुआ युगमानताभया और हे जनमेजय राजामुचुकुंद
गोबिंदको कहनेलगा कितुमकौनहो और कहांसेआयेहोऔर किस
कालमें मैंसोयाथा और अबकौन कालहै जो जानतेहो तोकहो५९
ऐसेसुन भगवान् कहनेलगे हे राजन् सोमबंशमें नहुष का पुत्रतो
ययातिहुआ और इसकेचारपुत्रहुए तिन्होंमें यदुबड़ा६० और तीन
छोटेसोयदुके बंशमेंउत्पन्नहुआ बसुदेवकापुत्र बासुदेवमेरेको जानो
और हेराजन् मैंनेनारदसे सुनाथा त्रेतायुगमेंतुमसोयेथे और अब
कलियुगप्राप्त होरहाहै ६२ हेराजन् और फरमावो क्या आज्ञाहै
औरहेराजन् जो यह कालयवन हमाराशत्रु दग्धकिया सो अच्छी
बातहुई क्योंकि हमसे यह अवध्यथा क्योंकि महादेवजी के बरसे
उत्पन्नहुआथा ६३ बैशंपायनजीकहतेहैं कि हेराजन् ऐसेकह राजा
गुफासे निकसता भया और पश्चात् अपना कार्य किये बुद्धिमान्
कृष्णचंद्र निकसे ६४ मुचुकुंदराजा थोड़ा उत्साहवाले और थोड़ा
वीर्य पराक्रमवाले ऐसेछोटेछोटे मनुष्योंसे व्याप्त पृथ्वीको देखकर
६५ और अपनाराज्य शत्रुओंसे दबाहुआ देखकर पश्चात् प्रीतिसे
भगवान्की स्तुतिकर और परिक्रमाकर महावनमें प्रवेशहोकरतपके
वास्ते हिमवान् पर्वतमें गया ६६ तहां तपमें स्थितहोके और क-
लेवरको त्यागके ६७ शुभकर्मोंसे प्राप्तहुआ स्वर्गमें आनंद करता
भया ६८ और उदार चित्तवाले धर्मात्मा ऐसेभगवान्भी उपायसे

अपने शत्रुको मरवाके कालयवनकी सेनाको प्राप्तहोते भये ६९ और बहुतसे रथ घोड़े हस्ती वर्म शस्त्र आयुध सेनालेकर उग्रसेन राजाको अर्पण करतेभये और ऐसेपूर्ण चित्तहुये भगवान् तिसद्रव्य करके द्वारकामें शोभाको प्राप्तहोते भये ७० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांकालयवनवधेपंच दशाधिकशतोऽध्यायः ११५ ॥

एकसौ सोरह का अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि हे राजन् तिसके अनंतर कृष्णचंद्रप्रातः कालनित्यनियम करके जलके समीप बैठतेभये १ और तहां किला बनानेकी इच्छा करके पृथ्वी को चांकने लगे तब कुलमें जो मुख्य यादवथे सोभी भगवान्के पासगये २ और श्रेष्ठरोहिणी नक्षत्र में ब्राह्मणोंके पास स्वस्तिबाचन कराके और सुंदर पुण्याह घोषोंसे किलाका प्रारंभ करने लगे ३ तब कमल सरीखे नेत्रोंवाले कृष्ण-चंद्र यादवोंको ऐसेवचन कहने लगे जैसे देवताओं को इंद्र ४ हे यादवो देखो यह भूमि देवस्थानकी तरह कल्पितकी है और इस पुरीका नाम पृथ्वीपर ऐसे विख्यात होगा जैसे इंद्रकीपुरी अमरा-वती५ और हे यादवो अमरावती सरीखे चिन्ह और स्थान चौपट केबाजार राजमार्ग अंतःपुरये सब इस द्वारकाके करावेंगे और इस पुरी में आप ऐसे आनंदकरो जैसे अमरावती में देवता ६ और हे यादवो उग्रसेनसे आदिलेकर तुमसब उग्रशत्रुओंको बाधतेहुये ७ गृहवास्तुओं को ग्रहणकरो और चौपट के बाजार करावो ८ और राजमार्गों कोचांको और किला बनाओ९ और शिल्पि कर्म में मुख्य कारीगरोंकोल्यावो और अहलकारोंको भेजो १० गृहसंग्रहमेंतत्पर ऐसे कहे हुये यादवप्रसन्न हुयेवास्तु परिग्रह अर्थात् सामग्री इकट्ठी करतेभये ११और सूत्रहाथमें लेकर यादओंमें श्रेष्ठजनपुरका प्रमाण करतेभये और हे राजन् जनमेजय पवित्र दिनमें ब्राह्मणों कापूजन कर के १२ बिधिसे वास्तु दैवत कर्मकराते भये पश्चात् महामति

गोबिंद कारु अर्थात् शिल्पीको कहतेभये कि १३ हे कारो हमारे वास्ते सुंदरमंदिर बनाओ और सुंदर चौपटका बाजार बनावो और सुंदर इष्टदेवताओंका मंदिरबनावो १४ ऐसे सुनके संपूर्ण शिल्पी कृष्णचंद्रको कहनेलगे कि हेभगवन् जैसेआप कहोगे वैसेहीहोजायगा १५ पश्चात् संपूर्ण सामान लेकर बिधिपूर्बककिला और दरवाजे और स्थान ब्रह्मादि देवताओं के मंदिर संपूर्ण क्रमसे रचनेलगे १६ और जल अग्नि इन्द्र इष दोलूखल इनचारोंके चारदरवाजेरचे १७ और शुद्धाक्ष ऐंद्रभल्लाट पुष्पदंत इन्हों के मकान यादवों के मकानों मेंरचतेभये १८ पश्चात् पुरीकेप्रबेश के अर्थ भगवान् चिंतवनकरके कहनेलगे कि यादवोंको आनंददेने वालीपुरीको १९ प्रजापतिकापुत्र और देवताओं का कारीगर ऐसा विश्वकर्मा अपनी बुद्धिसे स्थापन करेगा २० ऐसे भगवान् कहके और मनकर के ध्यान करते हुये बिश्वकर्मा के आनेका कारणसे एकांतमें देवताओं के सन्मुखहुये २१ तबउसीकालमें शिल्पों के आचार्य बड़ीबुद्धिवाले ऐसेबिश्वकर्माआके और भगवान् के आगेस्थितहो अंजलिबांध के बचन कहनेलगा २२ हेविष्णो हेब्रतको धारण करनेवाले इन्द्रने आपके पासमेंभेजाहूं सो मेरेको अपना किंकर जान के आज्ञा फरमावो २३ मैंक्याकरूं जैसे देवेश महादेवजी मान्यहैं हेभगवन् ऐसेही तुम मान्यहो २४ हेभगवन् हे महाभुज मेरे ऊपर आप फरमावो यहमैंआपका किंकरवैसे हीकरूंगा २५ केशव भगवान् ऐसे बिश्वकर्मा के बचनसुन के कंस के शत्रु और यादवोंमेंश्रेष्ठ अतुलवचन कहतेभये २६ कि हेसुरोत्तमयहां मेरामकान बनावो और अपनी कारीगरीका प्रकाश के वास्ते हेसुव्रतमेरा प्रभाव के गृहोंवाली पुरीरच २७ हे बिश्वकर्मन् जैसेस्वर्गमें अमरावतीहै तैसेही यहपृथ्वीपर द्वारकापुरी रचनीयोग्यहै २८ और सभास्थान यहतुमने रचनी योग्यहै और मनुष्यमेरी लक्ष्मीको देखो और यदुकुलकी पुरीकोदेखो ३० ऐसेकहाहुआ बुद्धिमान् विश्वकर्मा दैत्योंका नाशकरनेवाले कृष्णचंद्रकोकहनेलगा ३१ कि हे भगवनजैसे आपने कहा वैसेही करूंगा और हे भगवन् यह पुरीजनों से व्याप्त

होगी ३२ और बिस्तार भी इसका बहुतहोवेगा और वृद्धि इसकी सुंदरहोगी और चार सागर यहां रूपधारण करके बिचरेंगे ३३ हे पुरुषोत्तम यहजलोंकाराजा कुछदेश छोड़देगा तोसर्वगुणोंवाली पुरी होजायगी ३४ ऐसे कहाहुआ कृष्णकृत निश्चय हुआनदियोंके नाथ समुद्रको बचनकहनेलगे ३५ हेसमुद्रजो मेरेको मानताहै तो बारह योजन पृथ्वीमेरेकोऔर दे ३६ जबतू अवकाश देदेगा तब मेरी सेना सुखसे बासकरेगी ३७ हे राजन्जनमेजय नद और नदियोंका पति समुद्र ऐसेकृष्णचंद्रके वचनसुनकरपवनका बेगकरकेजलाशयदेशको छोड़ता भया ३८ तिसके अनंतर बिश्वकर्मा प्रसन्न होकर और पुरी केवास्तु को देखकर और सागर से गोविंदका सत्कार देखके ३६ विश्वकर्मायदुनंदन कृष्णचंद्रको वचन कहनेलगा हे गोविंद आजही से इसमें बासकरो ४० तुमने मनसेही यह भूमिरचदईहै इसवास्ते हेभगवन् थोड़ेही कालमें गृहों वाली होजायगी ४१ सुंदर दरवाजा सुंदर तोरण ऊंची सुंदर अटारी आप के अंतःपुर इन्हों कर के सहित अच्छी पुरी रचूंगा ४२ तिसके अनन्तर मनकेही यत्न से बिश्वकर्मा ने यह वैष्णवी पुरी अच्छी प्रकार से भूषित रची ४३ खाईसे रक्षित और अष्टप्रकार तोरणों से युक्त ४४ सुंदर स्त्री पुरुष बणिक इन्होंसे भूषित अनेकप्रकार की दुकानों से युक्त ४५ अनेक पोवाय सुंदरजलोंके कुंड बाग इन्होंसे युक्त स्त्रीकीतरह भूषित ४६ सुंदर चौपटोंवाली उत्तम गृहोंसेयुक्त हजारहां गलियोंसेयुक्त४७चां दोंकी सड़कोंसे भूषित समुद्रको ऐसेभूषित करतीहुईजैसेस्वर्गकोअ- मरावती४८पृथ्वीपरकेबिषे संपूर्ण रत्नोंकाखजानारूप देवताओंका सुंदरक्षेत्र चक्रवर्त्तियोंके क्षोभकरनेवाली और अप्रकाश आकाशको महलोंसे प्रकाश करतीहुई४६।५०जनोंके शब्दोंसे नादित समुद्रके जलसे ठंढो ५१ पवन करके सेवित सुंदर अनूप उपबन इन्हों क- रके भूषित जनों करके भूषितताराओंसे आकाश जैसेहो तैसे भूषि- त५२सूर्यकेसी कांतिवाला सुवर्ण केसे किलासे युक्त अच्छेशब्दवाले सुवर्ण संपूर्ण घरोंसे शोभित ५३ सफ़ेद मेघकेसी कांतिवाले राज

द्वारोंसे शोभित बड़े २ मार्गोंसे भूषित ५४ ऐसीउत्तम पुरीको विश्व-कर्मा रचके भगवान्‌के अर्पण करते भये ५५ ऐसीपुरीको प्रकाश करते हुये कृष्णचंद्र ऐसे वास करते भये जैसे आकाशको प्रकाश करता हुआ चंद्रमा इन्द्रकी पुरीको तरह विश्वकर्मा द्वारकाको रच के गोविंदका पूजाहुआ स्वर्गमें जाताभया ५६ पश्चात् कृष्णचंद्रकी यह बुद्धिहुई कि इनजनोंकोधनोंके समूहसेतृप्तकरूंगा५७ऐसेकहके शंखकोबुलातेभये ५८ सो खजानोंका पतिशंखगुह्यक केशवका बु-लाना जानके द्वारकाके पति कृष्णचंद्रके समीपआ५६ और अंजलि बांधके नम्रहुआ कृष्णचंद्रको ऐसे विज्ञापन करताभया जैसे कुवेरको ६० हेभगवन्‌देवताओंकेमालिककोमुझेक्याकरनाउचितहैफरमाओ और हे भगवन् जो कार्यमुझे करना चाहिये तिसमें योजन करो६१ ऐसेसुनके भगवान् शंखगुह्यकको कहनेलगे कि हे गुह्यक इसपुरीमें जितने निर्द्धनहैं तिन्होंको धनसों पूरणकर६२क्योंकि भूखा दुबला मलिन ऐसेपुरुषोंकोमें देखनेकी इच्छानहीं करता और जोनिर्द्धन म-नुष्य इसनगरीमें देहदेह ऐसा बचन कहते हुयोंकी इच्छानहीं कर-ता६३वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् खजानोंका अधिपति शंख नाम गुह्यक ऐसो भगवान्‌की आज्ञाको शिरसेग्रहणकरके और द्वार वतोमें खजानोंको बुलाकरयह आज्ञादई कि द्वारकामें घरघर ६४ धनकी वर्षाकरो हेजनमेजय यहसुन निधियोंने ऐसीवर्षा करी कि कोई भाग्यहीन जननहीं रहा ६५ ऐसेद्वारवतीमें मलिन औरनिर्द्धन नहीं रहा ६६ पश्चात् पुरुषोत्तम भगवान् वायुको बुलाते भये तववायु आनके एकांतमें बैठे हुये भगवान् को ६७ प्रणाम करके कहने लगा कि हे भगवन् जैसे देवताओंका दूतहूं तैसे तुम्हारा हूं फरमावो मुझेक्या करना उचितहै ६८ ऐसेपवनके बचनसुन पुरुषो त्तम कृष्णचंद्र जगत् के प्राणरूप आगे स्थितहुये मारुत को कहने लगे ६६।७० हे मारुत तू इंद्रादि देवताओंसे मान्यहै इसवास्ते जा और देवताओंसे सुधर्मानाम सभाला७१हे अनघ अर्थात् पापरहित येहजारहां धार्मिक यादव तिससभामें प्रवेश होवेंगे परंतु कृत्रिमही

होवे ७२ वह अक्षय रमणीक यथेच्छ चलनेवाली कामरूपिणी ऐसीसभा यादवोंको ऐसेधारण करेगी जैसे संपूर्ण देवताओं को धारण करतीहै ७३ कृष्णचंद्रके ऐसेवचन ग्रहणकर अपनेहीकेसीहै गतिजिसकी ऐसामारुत स्वर्गमें प्राप्तहुआ ७४ तहां संपूर्ण देवताओंका सत्कार और कृष्णचंद्र का बचन निवेदनकर और सुधर्मा सभाको लेकर फिर पृथ्वीपर आकर ७५ पश्चात् शोभन धर्मवाले कृष्णचंद्र को सुधर्मानाम देवताओं की सभा देकर वायु अंतर्द्धानहो गया ७६ और केशव ने यहद्वारकाके मध्यमें स्थापन करदई और यदुसे आदिलेकर संपूर्ण यादव तिससभामें ऐसेस्थितहुये जैसेस्वर्ग में देवता ७७ वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् स्वर्ग और भूमि और जल इन्होंके द्रव्योंसे भगवान् द्वारकाको ऐसेभूषितकरते भये जैसेस्त्रीको भूषित करतेहैं ७८ पश्चात् कृष्णचंद्र मर्यादा श्रेणी सेनापति इन्होंको भिन्नभिन्न बनाते भये ७९ तहां उग्रसेन राजा बनाया और काश्यपुरोहित बनाया और अनाधृष्टि सेनाकापति बनाया और तहां विकद्रु मंत्री बनाया ८० और दशवृद्धोंको यादवों का रक्षक स्थापन करते भये और दारुकको सारथि बनाया ८१ औरयोधावों में श्रेष्ठ सात्यकि को योधा बनाया ८२ ऐसे अपने २ अधिकारोंमें स्थापनकरके तिसपुरीमें यादवों सहित सर्वलोकों का रचनेवाला कृष्णचंद्र पृथ्वीतलपरआनंद करतेभये ८३ पश्चात् रेवत राजाकी कन्या शीलसेयुक्त रेवतीकोबलदेवजी ब्याहते भये ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांद्वारवतीनिर्माणेषोडशाधिकशतोऽध्यायः ११६ ॥

एकसौसत्रहका अध्याय ॥

वैशंपायनजीकहतेहैं कि हेराजन् जनमेजय इसीसमयमें प्रतापवान् जरासंध शिशुपाल के प्यारकी इच्छाकरके १ रुक्मिणी के साथ शिशुपालका ब्याहहै ऐसे कहके युद्धमें इंद्रके समान सैकड़ों २ मायाका जाननेवाला ऐसेदन्तवक्रका पुत्र सुवल्क बासुदेव पौंड्रकका

महाबल पुत्र सुदेव एकलव्यका पुत्र वीर्यवान् पांडव राजा का पुत्र वेणुदारि अंशुमान् क्राथ श्रुतर्बाणा निर्वृत्त शत्रुकौथांवी का पति-पटुस और काशी का अधिपति पटुस इन संपूर्ण राजाओंको जरा-संध भेजता भया ३ । ४ । ५ । ६ । ७ । ८ ऐसे सुन जनमेजय ने प्रश्न किया कि हे भगवन् वेदके जाननेवालों में श्रेष्ठ रुक्मी राजा किस देशमेंहुआ और किसके बंशमेंहुआ यह वर्णनकरो ९ ऐसेसुन बैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे राजन् राजर्षि यादवका पुत्र बिदर्भ हुआ सो विन्ध्यके दक्षिण पसवाड़ेमें बिदर्भदेशोंको बसाताभया १० और तिस महात्मा के बीर्य से सम्पन्न और पृथक् वंशको धारण करनेवाले ऐसे क्रथ कैशिक से आदिलेकर पुत्र हुए ११ हे राजन् भीमके बंशमें तो वृष्णिहुआ और क्रथके बंशमें अंशुमान् हुआ और कैशिकके भीष्मकहुआ १२ तिसको हिरण्यरोमा कहतेहैं सो भीष्म-क कुंडिनपुरमें स्थितहुआ दक्षिण दिशाको शिक्षा करताभया १३ और हे राजन् तिसके रुक्मी पुत्रहुआ और रुक्मिणी पुत्री हुई जो महाबल रुक्मी कल्पवृक्षसे दिव्य अस्त्रोंको प्राप्तहुआ १४ और जम-दग्निके पुत्र परशुराम से ब्रह्मास्त्रको प्राप्तहोताभया और जोरुक्मी अद्भुत कर्मवाले कृष्णचंद्रके साथ बैरकरताभया १५ और भीष्मक के अतिरूपवती रुक्मिणी नाम कन्याहोतीभई और तिसरुक्मिणीके गुण सुनने से बुद्धिमान् कृष्णचंद्र रुक्मिणी को वांछा करते भये १६ और रुक्मिणी कृष्णचन्द्रके गुणोंको सुनके कृष्णचन्द्र को बांछाकरती भई १७ और रुक्मी अपनी बहन रुक्मिणी को कंसके बैरको याद करताहुआ मांगते हुए कृष्णचन्द्र को नहीं देताभया १८ जरासंध महाबल सुनीथ बैद्यके वास्ते भीष्मकसे रुक्मिणी को मांगताभया १९ चेदिराज बसुके वृहद्रथ हुआ जिसने पहले मगध में गिरिब्रज रचा २० और तिसकेबंशमें जरासंधहुआ और बसुहीकेबंशमें चेदिराज दमघोष हुआ २१ और दमघोष के बड़ेपरक्रमवाले पांच पुत्र वसु-देवकी बहन श्रुतश्रवा में जन्मतेभये २२ और शिशुपाल दशग्रीव रैभ्य उपदिशबली ये पांचों अस्त्रविद्यामें कुशल और महापराक्रमी

होते भये २३ सुनीथ अपने पुत्रको जरासंध को देताभया और जरासंध इसको पुत्रकी तरह पालताभया २४ और जब जरासंधका जमाई कंस युद्धमें कृष्णने मारदिया तब कृष्णके साथ और यादवों के साथ जरासंधका महावैरहोगया जब ऐसे वैरहोगया २५ । २६ तब जरासंध शिशुपाल के वास्ते भीष्मक से रुक्मिणी को मांगने लगा २७ तब भीष्मक ने देना अंगीकार करलिया २८ पश्चात् महाबल जरासंधशिशुपालको लेकर और दंतवक्र मिथ्यावासुदेव अंगबंग कलिंगदेशकाराजा इनराजाओं सहित बिदर्भदेशमें कुंडिन पुरके समीप जब पहुंचे २९ तब रुक्मी राजाओं के सन्मुखजा के और पूजन करके पुरीमें प्रवेशकरातेभये ३० और भूवाके प्यारके वास्ते बलदेव कृष्ण और यादवभी रथ सेना लेकर जातेभये ३१ तब इन्हों को क्रथ कैशिक भर्त्तायथाबिधि पूजन करके पुर से बाहर बास करादिया ३२ जब अगले दिन बिवाह को आदि में मंगला चरणकरके वहुत सेनासे युक्त रथमें बैठ इंद्रके मंदिरमें इन्द्राणी का पूजनकरनेको चली ३३।३४ तब कृष्णचन्द्र साक्षात् लक्ष्मी स्वरूप रूपसे सम्पन्न ३५ अग्नि की शिखारूप पृथ्वी को प्राप्तहुई माया पृथ्वी कीसी गम्भीर ३६ चन्द्रमाकी किरणों कीसी सौम्य लक्ष्मीकी तरह मुख्य देवांगनाओं से श्रेष्ठ ३७ श्याम और स्वच्छ सुंदर मोटे नेत्रोंवाली लालहोठोंवाली पूर्णचंद्रमा कीसी मुखवाली लाल और ऊंचे नखोंवाली ३८ सुंदर भृकुटीवाली नीला और बलदार केशों-वाली ३९ अत्यंत सुंदर मोटे श्रोणि और स्तनोंवाली और पैने सुपेद बराबर ऐसे दांतोंसे भूषित ४० और रूप यश शोभासे सब से मुख्य पीले रेशमी बस्त्रों को धारण किये ऐसी रुक्मिणी को देखकर कृष्णचंद्र के कामबढ़ा और रुक्मिणी में मन ऐसे लगता भया जैसे साकल्य से अग्नि की शिखा ४१ पश्चात् महा बल कृष्णचंद्र बलदेवजी और यादव इन्होंसे सलाह करके रुक्मिणीके हरनेमें बुद्धिकरतेभये ४२ पश्चात् जबपूजन करके रुक्मिणी भवनसे निकसी तब कृष्णचंद्र इसको फुरतीसे रथ में बैठाय रथको दौड़ाले

गये ४३ और कोईशत्रुजो पश्चात् दौड़े तिन्हों को बलदेवजी वृक्ष उपाड़ २ मारनेलगे इतनेहीमें अनेक प्रकारके ध्वजाओंवालेरथ४४ हस्ती घोड़ा इन्होंकरके सहित संपूर्ण यादव बलदेवजीके चारोंतर्फ आगये ४५ और कृष्णचंद्र रुक्मिणी को लेकर पुरी में प्राप्तहोगया और युद्धका संपूर्णभार युयुधान ४६ अक्रूर विपृथि गद कृतबर्मा चक्रदेव सुदेव सारण ४७।४८ विक्रांत भंगकार बिदूरथ उग्रसेनका पुत्र कंक शतद्युम्न ४९ राजाधिदेव मृदर प्रसेन चित्रक अरिदांतवृह दद्दुर्ग श्वफल्क सत्यक पृथु ५० इन संपूर्ण यादवोंपर और मुख्य यादवोंपर छोड़ द्वारकामें जातेभये ५१ पश्चात् दंतवक्र जरासंध शिशुपाल ये कवच धारण करके क्रोधहुये कृष्णचंद्रको मारनेकी इच्छाकरके पुरसे निकसतेभये५२और अंगवंग कलिंग इन्होंकेसाथ और पौंड्र और शूरबीर भ्राताओं करके सहित शिशुपालआया५३ इन्होंको देखकर शूरबीर यादवभी बलदेवजी आगेलेकर ऐसे आये जैसे इन्द्रको आगे करके मारुत ५४ पश्चात् बेगसे आतेहुये जरासंध को युयुधान छःबाणोंसे बींधताभया ५५ और दंतवक्रको अक्रूर नौबाणोंसे बींधताभया पश्चात् दशबाणोंसे दंतवक्र अक्रूर को बींधताभया ५६ और विपृथु शिशुपालको सातबाणोंसे बींधता भया और प्रतापवान् शिशुपाल आठबाणों से विपृथुकोबींधताभ-या५७औरगवेषण चैद्यकोछःबाणोंसे बींधताभया और अतिदंतआठ बाणों से वृहदद्दुर्ग पांचबाणों से ५८ और शिशुपाल इनतीनवोंको पांचपांच बाणोंसे बींधताभया औरचारशरोंसे विपृथुकेचारघोड़ोंको मारताभया ५९पश्चात् वृहदद्दुर्गका भालासे शिरछेदन करताभया पश्चात् गवेषण के सारथि को धर्मराजकी पुरी में भेजताभया ६० पश्चात् महाबल विपृथु जब अपने रथके घोड़ोंको मरादेखता हुआ तब वृहदद्दुर्गके रथपरसवार होताभया६१पश्चात् विपृथुके सारथि को और गवेषण के रथको वेगसे रोकताभया ६२ पश्चात् यादव कुपित होकर शिशुपालपर शरोंकी वर्षाकरते भये ६३ चक्रदेव एक बाणसे दंतवक्र के हृदय में बींधतेभये और पटुसको पांचबाणों से

बींधताभया६४पश्चात् शिशुपाल और पटुस दशबाणोंसे विपृथुको भेदन करताभया पश्चात्विपृथुदूरसे बिदूरथको पांचबाणोंसे भेदन करताभया और बिदूरथभी छःबाणों से विपृथुको भेदन करता भया६५।६६ पश्चात् तीसबाणोंसे विपृथुफिर तिसमहाबल बिदूरथकोभेदन करताभयापश्चात् कृतबर्माराजपुत्रको तीनशरोंसेभेदन करके ६७ और तिससारथिको और ऊंचीध्वजाकोछेदन करताभया और पौण्ड्र कुपित होके छःबाणोंसे छेदनकरता भया ६८ कृतबर्मा को भेदनकरता भया और भालासे कृतबर्माके धनुषको छेदनकरता भया और निर्वृत्त शत्रुकालिंग को नवशरोंसे बींधताभया ६९ और कलिंगज तोमर शस्त्र से निर्वृत्त शत्रुके कांधा में भेदन करता भया पश्चात् बीर्यवान् कंकहस्ती पर सवार होकर पश्चात् अंगराजा के हस्तीको प्राप्तहोकर तोमरसे अंगकोभेदन करताभया ७० पश्चात् अंग शरों से कंकको भेदन करताभया और चित्रक श्वफल्क महाबलसत्यकये संपूर्ण कलिंगकी सेनाको तीक्ष्ण बाणों से भेदनकरते भये ७१ पश्चात् बलदेवजी वृक्षसे बंगराजके हस्तीको मारकेऔर बंगराजको मारतेभये ७२ पश्चात् बीर्यवान् बलदेवजी धनुषलेकर और पैनेबाणों से बहुत से कैशिकों को मारतेभये ७३ पश्चात् छः बाणोंसे शिशुपालके योधाओंकोमारके जरासंधके सौपुरुषोंको मारताभया ७४ और इन्होंकोमारके जरासंधके सन्मुख प्राप्तहुआतब जरासंधने आतेहुये बलदेवजीको देखकर तीनबाणमारे७५ पश्चात् क्रोधहुये बलदेवजीने आठबाणों से जरासंधको भेदन करदिया और भालासे सुवर्णकी ध्वजा छेदन करदी ७६ हेजनमेजय तिन्हों का देवता और असुरोंकी तुल्य घोरयुद्ध होताभया आपसमें शरों की वर्षाछोड़तेहुये ७७ और संहार करतेहुये हजारहांहाथियोंवाले तोहाथियों वालोंकी साथ और रथ रथोंके साथ सवार सवारों के साथ ७८ प्यादेप्यादोंके साथ ये संपूर्ण आपसमें अंगोंको छेदन करते हुये युद्धमें विचरतेहुये७९ और कवचोंपरगेरीहुई तलवारोंका महान्शब्दहोताभयाओरपड़तेहुये शरोंकाऐसाशब्द होताभया जैसे

पड़ते हुये पक्षियोंका शब्द ८० और तिसयुद्धमें भेरीशंख मृदंगवेणु इन्होंकी ध्वनिको शूरवीरों के शस्त्रोंकाशब्द और धनुषकी ज्याका शब्द आच्छादन करताभया ८१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांरुक्मिणीहरणे सप्तदशाधिकशततोऽध्यायः ११७ ॥

एकसौअठारहका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय पश्चात् रुक्मी जोहै कृष्णचंद्रको हरीहुई रुक्मिणीको सुनके और क्रुद्धहुआ भीष्मक राजा आगे ऐसेप्रतिज्ञा करताभया १ किहेपिता जो गोविंदकोनहीं मारके और रुक्मिणीको नहीं लेआऊंगा तो कुंडिनपुरमें प्रवेशनहीं होऊंगा २ ऐसेकहके शूरवीर रुक्मी रथमें बैठ और शस्त्रलेकर औरबहुत सेनालेकर वेगसे जाताभया ३ और तिसकेपीछे दक्षिणपथवासीक्राथा अंशुमान् श्रुतर्वा बीर्यवान् वेणुदारिये ४ और भीष्मकके पुत्र रथोंमें बैठ २ जातेभये और क्रथकैशिकसे आदिलेकर संपूर्ण महारथ जातेभये ५ ये संपूर्ण दूर नर्मदानदी परजाके और क्रुद्धहुये रुक्मिणी सहित भगवान्‌को देखते भये ६ पश्चात् मद करके युक्त रुक्मी सेनाको स्थापनकर द्वैरथ युद्धकी वांछा करता हुआ भगवान्‌के सन्मुखगया ७ और चौसठ तीक्ष्ण बाणोंसेगोविंद को बींधता भया और जनार्दन भगवान् सत्तर बाणों से रुक्मीको बींधतेभये ८ और महाबल भगवान् इसकीध्वजा काटके और इसके सारथिकाशिर काटतेभये ९ पश्चात् ऐसे रुक्मीको कष्टमें प्राप्तहुआ जानके और संपूर्ण दाक्षिणात्यराजा मारनेकी इच्छासे कृष्णचंद्रके चारोंतर्फ होगये १० और अंशुमान् तौ नौशरोंसेकृष्णचंद्रको बींधताभया औरश्रुतर्वापांचोंसे और वेणुदारि सातोंसे ११ पश्चात् कृष्णचंद्र ने अंशुमान्‌का हृदय भेदनकरदियातब यहपीड़ित होकर रथमेंबैठगया१२ पश्चात् चारशरोंसे श्रुतर्वा के अश्वभेदन किरदये पश्चात् कृष्णचंद्रवेणुदारिकी भुजाको छेदनकर के और

इसको दाहनी भुजाको ताड़ताभया १३ और तैसेही सातशरोंसेश्रुत-र्वाभेदन करदिया तबयह व्याकुलहोकर बैठगया १४ पश्चात् क्रथके सिकोंमें मुख्यरथोंमें बैठ २ शरोंकी बर्षाकरतेहुये कृष्णाचंद्र के संमुख जातेभये १५ तब जनार्दनभगवान्‌को युद्धमें बाणोंसेबाणकाट और तिनको मारतेभये १६ पश्चात् महाबल कृष्णाचंद्र और क्रोधसे आयेहुये चौंसठजनोंकोमारते भये १७ पश्चात् रुक्मी अपनी सेनाको व्याकुल देख और क्रोधके बशहुआ तीक्ष्ण पांचबाणोंकरके केशवकेहृदयको भेदनकरता भया १८ और तीनशरोंसे सारथिको भेदनकरदिया और एकबाणसे ध्वज छेदन करदी १९ पश्चात् केशव भगवान्‌भीक्रुद्ध होकर साठिबाणोंसे रुक्मीको बींधते भये औरइसके धनुषकोछेदन करते भये २० इसके अनंतर रुक्मी और धनुषको लेकरकृष्णाचंद्र के मारनेकी इच्छाकरके दिव्यशस्त्रोंको निकासताभया २१ फिर महा-बल कृष्णाचंद्र अस्त्रों से अस्त्र निवारण करके फिर तिसके धनुषको छेदन करते भये २२ पश्चात् यह शूरबीर रुक्मीछिन्नहुआहै धनुषरथ जिसका ऐसाहुआ खड्ग लेकर रथसे ऐसेपड़ा जैसे गरुड़ २३ प-श्चात् ऐसे आयेहुये रुक्मीको भगवान् देखकर तिसके खड्गको छेदनकर और कुपितहुये तीन बाणोंसे इसके हृदयको भेदन करते भये २४ और सोमहाबाहु संज्ञासे रहित और मूर्च्छित हुआ पृथ्वी परशब्द करताहुआ ऐसे पड़ताभयाजैसेबज्रसे हतापर्वत २५ पश्चात् कृष्णाचन्द्र सम्पूर्ण राजाओंको फिर भेदन करता भया पश्चात् ये सम्पूर्ण राजा रुक्मीको व्यथितदेखकर दौड़गये २६ और रुक्मिणी पृथ्वीपर पड़ेहुये भ्राताको व्याकुल देख भ्राताके जीने की इच्छा करती हुईभर्त्ता कृष्णाचन्द्रके पैरोंमें गिरगई २७ पश्चात् भगवान् तिसको उठाय और मिलके आश्वना कराताभया तिसके अनंतर रुक्मीको अभयदेकर अपनी पुरीमें जातेभये २८ और यादव भी जरासंधको और अन्य राजाओंको जीतकर बलदेवजीको आगेकर प्रसन्नहुये द्वारकाको जातेभये २९ जब भगवान् चलेगयेतबश्रुतर्वा युद्धभूमि में प्राप्तहोके और रुक्मीको अपने रथमें बैठाय अपनेपुरमें

जातेभया ३० पश्चात् वीर्यमदसे युक्त रुक्मी बहिनकोनहीं लाकर हीन प्रतिज्ञावालाहुआ कुंडिनपुरमें प्रवेशहोनेकी इच्छानहींकरता भया ३१ पश्चात् बिदर्भ देशोंमें यहरुक्मी बसनेके वास्ते और पुर रचताभया सो पृथ्वीपर भोजकट नामसे बिख्यात हुआ ३२ और भीष्मक राजा कुंडिनपुरमें बसताभया ३३ पश्चात् यादवोंकी सेना सहित कृष्णचंद्र द्वारकामें प्राप्त होकर बिधि पूर्वक रुक्मिणीसे बिवाह करते भये ३४ और पश्चात् तिस रुक्मिणीके साथ कृष्णचंद्र ऐसे रमण करतेभये जैसे रामचंद्रजी सीताकेसाथ और इंद्रइंद्राणी के साथ ३५ पश्चात् रूपशील गुणोंसे युक्त और पतिब्रता ऐसी रुक्मिणी भगवान् की बड़ी प्यारी ३६ और तिसमें भगवान् इन महारथ दशपुत्र उत्पन्न करतेभये चारुदेष्ण सुदेष्ण प्रद्युम्न ३७ सुषेण चारुगुप्त चारुबाहु चारुबिंद सुचारु भद्रचारु ३८ चारु ये पुत्र उत्पन्नकिये हैं और चारुमती नाम कन्या उत्पन्नकी ३९ और इससे अन्य सम्पूर्ण गुणोंवाली और भी सात पटरानी ब्याहतेभये तिनका गिनाते हैं ४० कालिंदी मित्रबिंदा सत्या नाग्निजिती जांबवान् की पुत्री रोहिणी ४१ मद्रराज की कन्या भद्रलोचना और शैव्यकी पुत्री लक्ष्मणा ४२ और अद्भुतपराक्रमवाले कृष्णचंद्र और भी सोलह हजार स्त्रियोंको बिवाहतेभये और तिन सम्पूर्णों को बराबर भेजताभया ४३ और सम्पूर्ण बस्त्र आभूषण भोग इन्हों से युक्त जो स्त्री हैं तिन्होंके बिषे सम्पूर्ण शस्त्र अस्त्रोंमें कुशलमहारथ बलवान् यज्ञ करनेवाले पुण्य कर्मवाले महाभाग ऐसे हजारहांपुत्र उत्पन्न करतेभये ४४ । ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वान्तर्गत विष्णुपर्वभाषायांरुक्मिणीहरणे अष्टादशाधिकशतोऽध्यायः ११८ ॥

एकसौउन्नीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेहैं कि हे जनमेजय जब बहुतसाकाल ब्यतीत होगया तब शत्रुओं को नाश करनेवाला रुक्मी पुत्री का स्व

यम्बर कराता भया १ तहां रुक्मी के बुलायेहुये राजा और राजाओंकेपुत्र अपनी२ सम्पत् लेकर अनेकदिशाओंसे आतेभये २ तहां और कुमारों से युक्त प्रद्युम्न भी आया सो तिसको कन्या देखके बरनेकी बांछा करतीभई ३ और तिस सुंदर नेत्रोंवाली कन्या की बांछा प्रद्युम्न करताभया सो रुक्मीकी कन्या बिदर्भमें होनेवाली शुभांगी नामसे बिख्यात होतीभई ४ स्वयम्बरमें अपने २ सिंहासनोंपर जब सब राजा बैठगये तब यह बैदर्भी शत्रुओंको नाशकरनेवाले प्रद्युम्न को बरतीभई ५ सो हे राजन् यह प्रद्युम्न सम्पूर्ण अस्त्रोंमें कुशल सिंहकेसे शरीरवाला जवान अत्यंत रूपवाला ऐसा कृष्णचंद्रका पुत्र होताभया ६ और बय रूप गुणोंसे युक्त वह राजपुत्री प्रद्युम्नपर आसक्त होतीभई ७ जब स्वयम्बर होलिया तब सम्पूर्ण राजा तोअपने २ पुरों में जातेभये और प्रद्युम्न बैदर्भी को लेकर द्वारकामें जाताभया ८ और नलकी तरह रमण करताहुआ कृष्णचंद्र तिस शुभांगी बधूमें कर्मोंमें सम्पूर्णोंसे प्रधान और अनिरुद्ध नामसे बिख्यात ऐसे पुत्रको उत्पन्न करताभया हे राजन् जब यह अनिरुद्ध धनुर्वेद और वेद इनका जाननेवाला ९ । १० और बयसे युक्त अर्थात् जवान ऐसा हुआ तब इस रुक्मीकी पोती सुवर्णकीसी कांतिवाली रुक्मवती को स्त्री के वास्ते मांगता भया ११ पश्चात् हे राजन् यह बुद्धिमान् रुक्मी गुणों सहित अनिरुद्ध को जान के और प्रद्युम्न रुक्मिणी के प्यार की इच्छा करके कृष्णचंद्रके बैरको त्याग और प्रसन्न होकर कहने लगा कि कन्या दूंगा १२।१३ पश्चात् रुक्मिणीके सहित और पुत्र और बलदेवजी और अनेक यादव इनके साथ भगवान् विदर्भ देशों को जाते भये १४ और अनेक रुक्मिणी की जातिवाले और मित्रये भी संपूर्ण आतेभये १५ पश्चात् हे राजन् शुभतिथि और शुभनक्षत्र में परम उत्साहवाला अनिरुद्धका विवाह होताभया १६ हे राजन् जनमेजय जब वैदर्भीके साथ अनिरुद्ध का विवाह होगया तब संपूर्ण वैदर्भ और यादवोंके परम उत्साह होताभया १७ और तहां

विदर्भ पूज्यमान वृष्णि ऐसे रमण करते भये जैसे स्वर्ग में देवता पश्चात् अश्मक देशोंका अधिपति उदार बुद्धिवाला वेणुदारि १८ और आर्क्ष श्रुतर्वा चाणूर क्राथ अंशुमान् और कलिंगोंका अधिपति जयत्सेन १६ और ऋषिकका अधिपति पांडूराजा ये संपूर्ण राजा और दाक्षिणात्यराजा येसंपूर्ण सलाह करके २० और एकांत में प्रभु रुक्मीको बचन कहते भये कि हेराजन् तुमपाशोंमें कुशल हो और हमभी खेलनेकी इच्छाकरतेहैं और इस बलदेवकोभीजूवा प्याराहै और निपुणहै नहीं इसवास्ते तुम्हारेको आगे करके हम इसके जीतनेकी इच्छाकरते हैं ऐसे राजाओंके बचनसुन रुक्मीभी मानता भया २१। २२ पश्चात् सुवर्णके थंभोंवाली और फूलोंसे भूषित और चंदनके जलसे छिड़कीहुई ऐसी सुंदरसभा में संपूर्ण शृङ्गार कियेहुये और जीतनेकी इच्छा करतेहुये ऐसे राजा प्रवेशहो अपने २ आसनोंपर बैठतेभये २३। २४ पश्चात् जब इनकपटियोंने बलदेवजी बुलायाहुआ प्रसन्नहुआ कहने लगा अच्छा खेलेंगे २५ पश्चात् छलसे जीतनेकी बांछा करतेहुये दाक्षिणात्यराजाहजारहां मणिमोतीसुवर्णलातेभये२६औरतिन्हों की रतिका नाशकरनेवाला और असत् और घोरदुर्मतियोंकेनाशकाकरनेवाला ऐसाजूवा प्रवृत्त होताभया२७जबआदिमें रुक्मीऔर बलदेवजीका जूवाहुआतबबल देवजीने सुवर्ण का दशहजार निष्क लगाया २८ तब रुक्मी ने बलदेवजीको जीतलिया फिरभीबलदेवजीने उतनाहीसुवर्णलगाया सोभी रुक्मीने जीतलिया २६ पश्चात् बलदेवजी एककोटि सुवर्ण रुक्मी से जीतताभया ३० और जीतलिया ऐसे कहता हुआ और हंसताहुआ बलदेवजीके हलमूसलकी निंदाकरता भया ३१ पश्चात् अविद्य दुर्बल श्रीमान् बलदेवजीतलिया ऐसेझूंठेही रुक्मी ने कहदिया ३२ पश्चात् कलिंगराजभी यहबार्त्ता सुनकर और दांतोंको दिखाताहुआ हंसताभया ३३ तीक्ष्ण बचनोंसे बींधेहुये पराजय निमित्तके बचन सुनकर धर्मको जाननेवाले और क्रोध को जीतनेवाले ऐसेबलदेवजी क्रोधमें भरगये ३४ पश्चात् धीरजसेमन

को रोककर बचन कहनेलगे कि हे राजन् दशकोटि हजारका मेरा एक जूवा है इसको ग्रहणकर और पाशोंकोगेर ३५ ऐसे रुक्मी से वचन कहनेलगे पश्चात् कुछभी बचन नहीं कहताहुआ और प्रसन्न हुआ रुक्मी पाशोंको गेरताभया ३६।३७जब बारबार पाशेगेरलिये तब बलदेवजीने कहा कि राजा जीतलिया तब रुक्मीने बलदेवजी से कहा कि नहींजीता ३८ पश्चात् बलदेवजी मनको रोककर कुछ भीनहींबोले पश्चात् हंसताहुआ रुक्मीने फिर बलदेवजीसेकहा कि जीतलियाहै ३६पश्चात् बलदेवजी राजासे ऐसाकुटिल बचनसुनके फिर क्रोध में प्रविष्टहो कुछ भी नहीं कहतेभये ४० तिसके अनंतर महात्मा बलदेवजी के क्रोधउत्पन्न करती हुई आकाश वाणीकहने लगी कि यह श्रीमान् बलदेवजी सत्य कहता है कि धर्मसे रुक्मी जीतलिया ऐसे आकाश से सुभाषित बचन सुनिकै ४१ सुबर्णकीसी उरुओंसे रुक्मीको ताड़नाकरनेलगा ४२ और पृथ्वीपर पीसनेलगा पश्चात् कुपित हुआ बलदेवजीने क्रोध से कलिंगदेश के राजा का दांत तोड़दिया ४३ । ४४ और तोड़के सिंहकीसी नाद करता भया पश्चात् खड्ग लेकर संपूर्ण राजाओंको त्रास करताभया पश्चात् सुवर्ण के स्तंभ सभासे उपाड़कर और गजेन्द्रकी तरह जहां तहां खैंचताहुआ सभासे निकसतभया ४५ । ४६ पश्चात् क्रथ कैशिक और रुक्मी इन्होंको मारके और शत्रुओंको ऐसे त्रास देताभया जैसे मृगोंको सिंह ४७ पश्चात् जनोंसे युक्त सेनास्थानमें जाय के संपूर्ण वृत्तांतकृष्णचंद्र के आगे कहताभया ४८ कृष्णचंद्र यह सुनके कुछभीनहींकहनेलगे४६और रुक्मिणीप्रियभ्राताको मराहुआ सुनके और क्रोध में आत्माको रोक आंशूगेरतीभई ५० । ५१ और शोच करनेलगी कि अहोभगवान्नेभी यहनहींमाराऔर जूआमें बलदेव ने आठपैंड परमारदिया ५२ जब यहमहावीर्यवाला भीष्मककापुत्र राजामारदिया तब संपूर्ण वृष्णि अंधक विमनाहोतेभये ५३ हेम-रतर्षभ यहरुक्मीका मरना तेरेआगे कहदिया और वृष्णियोंके सा-थबैरकहदियाहै५४औरहेमहाराज पश्चात् वे वृष्णिसंपूर्ण धनलेकर

और बलदेव कृष्ण को प्राप्तकर द्वारवती पुरीमें जातेभये ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांरुक्मिवधे
ऊनविंशत्यधिकशततोऽध्यायः ११९ ॥

एकसौबीसका अध्याय ॥

ऐसे सुन फिर जनमेजयने पूछा कि हे विप्रर्षे पृथ्वीको धारण करनेवाले शेषजीअवतार १ ऐसेबुद्धिमान् बलदेवजीके और माहात्म्य सुननेकीइच्छा करूंहूं पुराणको जाननेवाले महात्मा तिसबलदेवजीको तेजकीराशि कहतेहैं २ ऐसेसुन वैशंपायनजीने कहा कि हेराजन् पुराणोंमें यहबलदेव नागराजाकहाहै ३ और धरणीधर तेज के खजाना पुरुषोत्तम योग के आचार्य महावीर्य वेदमंत्रमें मुख्य जोऐसे अनंतभगवान् गदायुद्धमें जरासंधको जीततेभये और मारते न भये ४ । ५ और हे राजन् और बहुतसेराजा जरासंध के साथ जिसने रणमेंजीतलिये ६ और जिस बलदेवजीने दशहजार हस्तियों केसा पराक्रमवाले भीमसेन बारंबार बाहुयुद्ध में जीतलिया ७ हे राजन् हस्तिनापुरमें जांबवतीकापुत्र सांबजब दुर्योधनकी कन्या कोहरनेलगा तबराजाओंने चारोंतर्फ से घेरलिया तब सांब कोरुके हुयेकोबलदेवजी परंतु आयाहुआ बलदेव सांबको नहीं प्राप्तहोता भया ८।९ तबक्रोधहोकर यह बलवान्अद्भुत अद्भुत करताभया १० सोअद्भुतही कहतेहैं ब्रह्मदंडसे अभिमंत्रित लांगलाऽस्त्रको बलवान्बलदेवजी किला के नीचेलगा के और खैंचके कौरव के नगरको गंगाजीमें गेरनेकी इच्छाकरनेलगे ११ । १२ पश्चात् दुर्योधन राजापुरको घूर्णित देखके औरभार्या सहितसांबको पुरसेनिकालता भया १३ जबहींसे हे राजन् गंगाजीकेसन्मुखअबभी झुकाहुआदीखताहै १४ हेराजन्ऐसेअद्भुतकर्म पृथ्वीपर बलदेवजीकेविख्यातहैं १५ औरभंडीरवनमें जो किये हैं सोकहेहैं बलदेवजी एकमूकेसे प्रलंबको मारताभया १६ और महाकाय धेनुकको वृक्षपर मारतेभये तबगर्दभ रूपदैत्य पृथ्वीपर पड़ताभया १७ और रमणकरते हुयेबलदेवजीने

जब यमुना बुलाई नहीं आई तब हलसे खैंचतभया १८ हे राजन् बलदेवजीका यहमाहात्म्य पुराण बिस्तारसे कहाहै १९।२० ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुप० भाषायांबलदेव माहात्म्येविंशत्य धिकशतोऽध्यायः १२० ॥

एकसौइक्कीसका अध्याय ॥

ऐसे सुन फिर जनमेजय कहनेलगा हे महामुने जबरुक्मी मरगया तब भगवान् वीर्यवान् द्वारकाको प्राप्तहोकर जोचरित्र करते भये सो कहो १ ऐसे सुन वैशंपायनजीने कहा किहेराजन् सोकृष्ण तिन यादवोंके साथपुरीमें प्राप्तहोकर और बहुतसेरत्नोंको प्राप्तहोता भया २ और जो दैत्यदानव युद्धकरतेथे तिन संपूर्णोंको मारतेभये ३ और इंद्रका शत्रु देवताओं को त्रासकरने वाला नरक नाम दानव युद्धकरताभया ४ और संपूर्ण देवताओंको बाधा करनेवाला मनुष्य और ऋषियों को प्रतीप करनेलगा ५ । ६ पश्चात् यह भौमासुर त्वष्टाकीपुत्री कसेरु को गजरूपसे पकड़ताभया ७ और इसको मथ के नरकासुर वचन कहनेलगा ८ कि देव मनुष्योंमें जितना रत्नहै और सागरोंमें जितनारत्नहै ९ आजसेलेकर दैत्यदानव गंधर्व संपूर्ण रत्नमेरेको प्राप्तकरेंगे १० ऐसे कहके भौमासुर अनेक प्रकार केरत्न और वस्त्रोंको हरताभया ११ और गंधर्व देवमनुष्य इन्होंकी कन्या अप्सराओंके समूह १२ ऐसेचौदह हजार और इक्कीसस्त्रियों को रोककर तिन्होंका पुरकराताभया १३ और मुरकोरक्षामें छोड़ताभया और मुर के दशपुत्र रक्षामें रहतेभये और नैऋतमें मुख्य इसको उपासना करतेभये १४ पश्चात् बरदियाहुआ यह महासुर संपूर्ण असुरों करके जोकर्म करतेभये सो कहते हैं १५ और यह महासुर अदितिके कुंडलोंको खोसताभया १६ और जिस नरकासुर कोपृथ्वी जनतीभई और जिसका प्राग्ज्योतिष पुरहै १७ तिसकेबड़े दुर्मदचार द्वारपाल होतेभये हयग्रीव निसुंद वीर पंचनद ये होते भये १८ और बरदियाहुआ महान्मुरु हजारहां पुत्रोंकरके देवयान

से लेकर मार्ग को स्थितहोतेभये १६ और बिरूप राक्षसों सहित सुकृतियोंको त्रासकरतेभये २० तिसकीबाधाके अर्थ शंख चक्र गदा खड्गको धारणकिये महाबाहु जनार्दन बासुदेवसे उत्पन्नहोकर २१ सोतेजस्वी कृष्णचंद्र समुद्र और पर्वतोंसे भूषित ऐसी द्वारकामें बास करतेभये २२ और एकसमयमें कांचनतोरणोंसे युक्त देवसभामेंबलदेव कृष्णसे आदिलेकर बैठेथे २३ तिससमयमें दिव्यसुगंधवाला बायुचला और पुष्पोंकी बर्षाहुई और पश्चात् दोघड़ी किलकिला शब्द आकाशमेंहुआ २४।२५ पश्चात् पृथ्वीपर देखें तोसंपूर्ण देवता ओंसेयुक्त और श्वेत हस्तीपर सवार ऐसे इन्द्रकोदेखतेभये २६।२७ पश्चात् बलदेव और कृष्णसे युक्त संपूर्ण यादव महात्मा इन्द्रका सत्कारकरतेहुये सन्मुखचले २८ पश्चात् इन्द्रहस्तीसे उतर के पहलेभगवान्से मिलकरपश्चात् बलदेव औरउग्रसेनराजासेमिलता भया २६ पश्चात् काल और बयकेअनुसार अन्य यादवों से मिल कर पश्चात् बलदेव कृष्णका पूजाहुआइन्द्र सुंदर सभामेंप्रवेशहोता भया ३० पश्चात् बैठाहुआ इंद्र तिससभा को भूषित करके और अर्घ्यादिकोंको यथाविधि ग्रहणकरताभया ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायां नरकवधेएकाबिंशत्यधिकशततोऽध्यायः १२१ ॥

एकसौबाईसका अध्याय ॥

बैशम्पायनजी कहतेहैं कि हेराजन् जनमेजय पश्चात् यहमहा तेजस्वीइंद्रसांत्वपूर्वक हाथसे अपने मुखको स्पर्शकर और भगवान्के प्रति वचन कहनेलगा १ कि हे देवकीकेपुत्र हे मधुसूदन मेरेवचन सुनो जिस कार्यके वास्ते मैं अब तुम्हारेको प्राप्तहुआहूं २ हे शत्रुओं को नाश करनेवाले कृष्ण यह दितिकापुत्र नरकनाम असुर ब्रह्माके वरसे गर्वितहुआ अदितिके कुंडलोंको हरताभया ३ और हे भगवन् यह ऋषि और देवताओंको नित्यदुःखदेताहै इसवास्ते अवसर देख के इस पाप पुरुषको मारो ४ और यह अत्यंत तेजस्वी विनिताका

पुत्र यथेच्छ चलनेवाला गरुड़ तुम्हारे को प्राप्त कर देगा ५ और वह पृथ्वीकापुत्र नरकासुर संपूर्ण भूतोंसे अवध्य है इसवास्तेउसको जल्दमारके चले आवो ६ ऐसे इन्द्रसे कहेहुये केशवभगवान् भौमासुरके मारनेकी प्रतिज्ञा करतेभये ७ पश्चात् शंख चक्र गदा खड्ग इन्हों को धारण किये कृष्णचंद्र इन्द्रको साथलेकर और सत्यभामा सहित गरुड़पर सवार होकर प्रस्थान करते भये ८ पश्चात् इन्द्र मारुतोंके सात स्कंधोंको भेदनकरके आक्रमण करताभया ९ पश्चात् हस्तीपर सवार हुये इन्द्र और गरुड़पर सवार हुये भगवान् सूर्य्य चंद्रमाकी तरहप्रकाश करतेभये १० पश्चात् आकाशमें स्थित हुआ गंधर्व अप्सराओं से स्तुति किये हुये इन्द्र अन्तर्द्धान होते भये ११ पश्चात् देवताओंके राजा इन्द्र तो अपने भवनमें जातेभये औरकृष्ण चंद्र नरकासुर को मारने के लिये प्राग्ज्योतिष पुरकोजातेभये १२ औरतिससमयमें गरुड़के पक्षोंसे उलटा वायुचलताभया और भया नकशब्दसे और मेघोंसे गगनेचर भ्रमताभया १३ ऐसे क्षणमात्र में गरुड़करके भगवान् पहुंचे दूरसेतिन मुरके पुत्रोंकोदेखके जहांवे स्थितथे वहांगये १४ और पहुंचकरपर्ववाले दरवाजेपर पासलियेहुये छःहजारमुरके पुत्रोंकोदेखतेभये १५ वैशंपायनजी कहतेहैं किहे राजन् श्रीमान् शंखचक्र गदा खड्गको धारण करनेवाले नीलमेघकेसेआकारवाले पीताम्बर धारणकिये चारभुजा धारणकिये १६ वनमाला से भूषित हृदयवाले श्रीवत्ससे भूषित मुकुटधारण किये सूर्यसदृश कांतिवाले बिजली चंद्रमाकीसी कांतिवाले १७ ऐसे कृष्णचंद्र तहां प्राप्तहोकर जब धनुषकी ज्याका शब्दकिया तब बज्रसरीखे शब्दको सुनकर और आयेहुये विष्णुको जानकर १८ क्रोधसे रक्तनेत्रवाला और कालांतकके समान मुरनामा महासुर शक्तिको ग्रहण करके सन्मुखआया १९ और आनके बज्रकांचन से भूषित महाशक्ति को फेंकताभया पश्चात् भगवान् आतीहुई शक्तिकोदेख २० सुवर्ण की पंखवाले बाणको धनुषमें चढ़ाकर शक्तिके दो टुकड़े करते भये २१ पश्चात् बिजलीके समूहकेसा प्रकाशकरताहुआ और क्रोधसेलाल

नेत्रोंवाला ऐसा मुरनामा असुर फिर महागदाको ग्रहणकरके २२ ऐसे छोड़ताभया जैसे इन्द्रकावज्र पश्चात् फिर भगवान् तिसरुक्म भूषित गदाको छेदनकरके २३ फिर भालासेरणमें तिस दानव का शिर काटतेभये २४ पश्चात् मुरुको बांधवों सहितमार और पाशों को छेदनकर नरकासुरके महाबल संपूर्णराक्षसोंकोमारपश्चात् २५ देवकीकेपुत्र भगवान् पर्वतपर चढ़के दानवोंकी सेनाको और महा बल निसुंदको २६ और हयग्रीव को और अनेक चित्र योधाओं को देखताभया और अपनीसेनाकरके तिन्होंकेमार्गको रोकताभया २७ पश्चात् बलियोंमें श्रेष्ठ निसुंद रथमें बैठ और सुवर्ण की पीठवाले दिव्य धनुषको ग्रहणकरताभया २८ और पश्चात् दशबाण निसुंद भगवान्को भेदन करनेकेवास्ते जब छोड़ताभया तब बीचहीमें इन बाणोंको भगवान् सत्तर बाणोंसे भेदन करताभया २९ पश्चात्सं-पूर्ण सेना भगवान् के चारोंतर्फ फिरके और बाणोंसे छेदन करते भये ३० पश्चात् क्रोधसेभरे भगवान् दीन दानवोंको देखकरपार्जन्य दिव्यअस्त्रसे बहुत शरोंकी वर्षाकरके तिस सेनाको निवारण करते भये ३१ पश्चात् एक एक बार पांचपांच शरोंको चढ़ाके और पा-र्जन्य प्रभावसे संपूर्णयोधाओंके मर्मोंमेंताड़ना करताभया ३२ और रणमें भग्नहुये दानव भागतेभये पश्चात् निसुंद अपनी सेनाको भागतीहुई देखकर फिर युद्धमें आताभया ३३ और शरोंकी वर्षासे भगवान्को आच्छादन करताभया और उस समयमें रणविषेसूर्य्य और आकाश और दशोंदिक् नहीं भानहोतीभई ३४ पश्चात् पुरुषो त्तम भगवान् सावित्रनाम दिव्य अस्त्रको ग्रहणकर ३५ तिसकरके बाणोंको छेदन करताभया पश्चात् महाबल कृष्णचंद्र ऐसे बाणों से बाणोंकोछेदन करके ३६ एकबाणसे छत्रभंगकरदिया औरतीनबाणों से रथेशको और चार बाणोंसे चार अश्वोंको ३७ और सारथिको पांचबाणोंसे और एक शरसे ध्वजाको इनको छेदनकरके एक शरसे निसुंदको फिर भेदनकर ३८ पश्चात् भालासे पुरोत्तमकृष्णचंद्र तिस निसुंदका शिरकाटतेभये कि जौनसा निसुंद एकहजारवर्ष देवताओं

सेयुद्धकरताभया ३९ पश्चात्प्रतापवान् हयग्रीवतिसुंदकोपंड़ाहुआ देखके बहुतभारी शिलालेके तोलताभया४० और पश्चात् तिसको कृष्णचंद्रकीतर्फ फेंकताभया पश्चात्अस्त्रजाननेवालोंमेंश्रेष्ठकृष्णचंद्र दिव्य पार्जन्य ग्रहण करके सातप्रकार से शिलाको भेदनकरता भया४१ और तिसको विदारण करकेपृथ्वीमें गेरताभया४२हेराजन् जैसा देवअसुरोंका युद्धहुआ ऐसाघोर युद्ध होताभया ४३ पश्चात् महाबाहु कृष्णचंद्र गरुड़पर सवार होकर महासुरोंको भेदन करता भया ४४ और शरखड्गसे निपातन किया दानवनष्ट होतेभये और कितनेक दानवतो अग्निसे दग्ध होकर आकाशते पड़ते भये ४५ कितनेक असुरोंकी आकृति विगड़गई और कितनेक असुर मेघोंको तरह शरोंकी बर्षा करते भये ४६ और कृष्णचंद्र के बाणोंसे पीड़ित असुर रुधिरसे ऐसेभान होतेभये मानो फूलेहुये केसू और संपूर्णदा नवयोधा भग्नहुये भागते भये ४७ पश्चात् क्रोधसे रक्तनेत्रोंवाला दानव वेगसे वृक्षको उपाड़ और कृष्णचंद्रके पश्चात् दौड़ताभया४८ और जब यह वेग से वृक्षको फेंकता भया तब कृष्णचन्द्र हजार बाणों से छेदन करताभया ४९ पश्चात् एकबाण से कृष्णचन्द्र हयग्रीव को हृदयमें भेदन करता भया ५० जो हजार वर्ष पर्यंत अकेलाहयग्रीव देवताओं के साथ युद्ध करता भया ५१ तिस महा बल और महाघोर हयग्रीव को भेदन करता भया पश्चात् आठ सौ हजारदानवोंको मारके प्राग्ज्योतिष पुरको प्राप्तहोते भये ५२ और नरकासुरके पंचनदकोमारके और पुरमें प्रवेश होकर तहां महा युद्ध होताभया५३ पश्चात् भगवान् पांचजन्यको ऐसे धमतेभये जैसे प्रलयकाशब्द५४ इसशब्दको सुनके क्रोधसे रक्तहुआ नरकासुर५५ सुवर्णके विचित्र रथको देखकर और तिसरथमें बिराजमान भगवा-न्को देखकर धूम्रवर्ण महाकाय लालनेत्रोंवाले बुरेमुखवाले कवच को धारण किये ५६ ऐसे दैत्य दानव राक्षस खड्ग चर्मको धारण किये तूणीरको धारणकिये शूल धारणकिये ऐसे राक्षस और दैत्य दानवगजअश्वरथ इन्होंके समूहसे मेदिनीको चलातेहुये ५७नगरसे

निकसतेभये और कालके समानदैत्योंसे आवृत्त नरकासुर निकसता भया और हजारहांभेरी शंख मृदंग प्रणव बाजतेभये ५८ और नरकासुर इनबाजोंको सुन प्रसन्नहुआ संपूर्ण सेना करकेसहित कृष्णचंद्रकेपास जाकर ५९ इकट्ठे हुये गरुड़के चारोंतर्फहोके युद्ध करनेलगे सेनापति वहुत शरोंको वर्षासे आच्छादन करते भये ६० और शक्ति शूल गदा भाला तोमर वाण इनहजारहां शस्त्रोंको छोड़ते हुये आकाशको छादन करते भये ६१ पश्चात् नीलमेघकेसा रूपवाले कृष्णचंद्र भी अपनेशार्ङ्ग धनुषकोग्रहणकरपश्चात् मेघकेसेशब्दवाले इसधनुषको टंकोर ६२ दानवोंके ऊपर भगवान्शरोंकीवर्षा करने लगे और तिसवर्षा करके इस महारणसे संपूर्णसेनाभाग गई ६३ औरइसघोरयुद्धमें भगवान्के बाणोंसेसमूहकेसमूहमग्न होतेभये ६४ कितनेक असुरों को तो भुजा टूटगई और कितनेकों के ग्रीवा शिर मुख ये अंगछेदन होगये और कितनेक चक्रसे भेदन करदिये कितनेक बाणोंसे ६५ कितनेक शक्तिसे कितनेक कौमोदकीगदासे कितनेकशंख शक्तिसे ६६ ऐसे गज अश्वरथवाली संपूर्णसेना भग्न करदई पश्चात् हेराजन् जनमेजय जो नरकासुरके साथ घोरयुद्ध होताभया ६७ तिसको संक्षेपसे कहतेहैं सुनो हेराजन् देवताओंके समूहको त्रास करनेवाला तेजस्वी नरकासुर जब मधुदैत्यकीतरह भगवान् से युद्ध करने लगा ६८ तब क्रोध में भरा यह शूरवीर इंद्रकेसे ऊंचेधनुषको ग्रहण करता भया और भगवान्भी सूर्यकेसी कांतिवाले बाणोंको ग्रहण करते भये ६९ और तिसयुद्धमेंदिव्यअस्त्रसे रथको पूर्ण करते भये पश्चात् नरकासुर बली भी महापात उत्तमास्त्र छोड़ता भया ७० पश्चात् वज्रकसे आतेहुये अस्त्रको भगवान् देख अपनेचक्रसे इसको छेदन करते भये ७१ पश्चात् एक शरसे सारथि छेदन करदिया और दशशरोंसेरथ और अश्व और ध्वज ये छेदनकरदिया ७२ और एकशरसे कवच तोड़दिया जबकवच टूटगयापश्चात् सर्पकीतरह कवचसे ७३ पश्चात् ऐसाहुआयहदानव इंद्रकेवज्रकेसमान और दृढ़ विमल कांतिवाला ऐसेत्रिशूलको प्रहार

केवास्ते फेंकताभया ७४ तब कृष्णचंद्र आतेहुये त्रिशूलको देख पैने चक्रसे दोटुकड़े करतेभये ७५ हे राजन् ऐसे घोररूप राक्षससेघोर युद्ध होताभया ७६ और मधुसूदन भगवान् इसके साथ एकमुहूर्त युद्धकरतेभये ७७ पश्चात् प्रदीप्त उत्तम चक्रवाले भगवान् अपने चक्रसे इसके दो टुकड़े करते भये पश्चात् छिन्नहुआ यह नरकासुर का शरीर ऐसे पृथ्वीपर पड़ताभया ७८ जैसे करोंतसेकतरा पर्वत का शृंग और तिसकी ज्योति भगवान् में ऐसे लीन होगई जैसे अस्ताचलमें सूर्य ७९ और भगवान् के चक्रसे हतहुआ नरकासुर रणभूमिमें ऐसेभानहोताभया जैसेवज्रसेभेदनकिया गेरूकापर्वत८० पश्चात् नरकासुरकी माताभूमिमें ऐसे पड़े पुत्रकोदेख अदितिकेकुंड लोंको लेकर गोबिंदके पास स्थितहो यह बचन कहनेलगी ८१ हे गोबिंद तुमनेही यह दियाथा और तुमनेही मारदिया और हे भग॰ वन् यह तुम्हारी ऐसी क्रीड़ाहै जैसे खेलनोंसे बालक ८२ और हे भगवन् ये तुम्हारे कुंडल हैं लो और प्रजाकी पालनाकरो॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांनरकबधेद्वाविंशत्यधिकशतोऽध्यायः१२२

एकसौ तेईसका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे पृथ्वीके पुत्र नरकासुर को मारके नरकासुर के स्थानको देखते भये १ पश्चात् भगवान् खजानोंके स्थानों में जाकर तहां अपार धन और अनेक प्रकार के रत्नोंको देखताभया २ मणि मोती मूंगा वैदूर्य इन्होंका संचय देखा और हीराओं का समूह देखा और दीप्त अग्नि कैसी कांतिवाले ३ और सूर्यकैसी कांतिवाले शयन और सिंहासन और चंद्रमाकैसी कांतिवाला सुंदर सुवर्ण का दंड ४ इन संपूर्णोंको भग॰ वान् देखते भये पश्चात् हे राजन् मेघकी तरह हजारहा धाराओं का वर्षात स्वच्छचांदीके छत्रको देखतेभये हे राजन् इस छत्रको नरकासुर बरुणसे लाताभया ५ हे राजन् जितनाद्रव्य नरकासुर के मकानमें भगवान्ने देखा ६ सो कुबेर और इन्द्र और धर्मराज

ने नतोदेखा और न सुना७ पश्चात् जब भगवान्ने भौमासुर और निसुंद और हयग्रीव ये दानव मारदिये तब खजानाकी रक्षाकरने वाले वाकी दैत्य संपूर्ण अंतःपुर और रत्न इन्होंको भगवान् को भेंटकरतेभये ८।६ और जो भगवान्के योग्य वस्तु थी सोभी अर्पण करके दैत्य ऐसे कहनेलगे १० कि हे भगवन् ये मणि रत्न और अनेकप्रकार के खजाने और मूंगाके अंकुशोंसहित मदोन्मत्त हस्ती और चालीस हजारहस्तिनी ११ और आठ हजार देशीघोड़े इनसंपूर्णोंको भगवान्के अर्पणकर कहनेलगे कि हे भगवन् जितनीगौवों की बांछाहो उतनी गौ स्थानपरपहुंचादें १२ और छोटेभेड़ोंकेबच्चे शय्या आसन प्रियदर्शनवाले सुंदरपक्षी १३ और चंदन अगरु हे भगवन् ये और इन्होंसे अन्यबस्तु जो त्रिलोकीमें स्थितहैं १४।१५ सो संपूर्ण वृष्णि और अंधकके निवेशमें प्राप्तकरदेंगे १६ और हे भगवन् देव गंधर्वोंके रत्न और पन्नगों के रत्न और द्रव्य जितनेक हैं सो संपूर्ण यहां नरकासुरके स्थानमें हैं १७ सो पहुंचादेंगे वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् ये संपूर्ण पदार्थ ग्रहणकरके और परीक्षाकरके शीघ्रही दानवोंकरके द्वारकामें भेजतेभये १८ और हिरण्यवर्षनाम बरुणके छत्रको भगवान् आपलेकर गरुड़परसवार होतेभये १६ और पश्चात् पर्बतोंमें श्रेष्ठ मणियोंके पर्बतको देखते भये २० तहां सुंदरपवन चलतीभई और सूर्य से भी अधिक तहां मणियोंकी कांतिहोतीभई २१ तहां भगवान् बैदूर्यमणियोंको देखते भये और तहां तोरणपताकाओं सहित दरवाजे २२ और पर्बतकी और मणि पर्वत की शिखर ऐसो शोभित होतीभई जैसे बिजलियों सहित मेघ और सुवर्णके सुंदर वितानों करके और महलों करके भूषित देखा २३ और तिस जगह भगवान् गंधर्व असुर इन्हों की स्त्री और सुंदर कन्याओंको देखतेभये २४ और येसंपूर्ण नरकासुर की ल्याईहुई स्त्री स्वर्गसरीखे देशमें ऐसे स्थितहोतीभई जैसे काम वर्जितदेवी २५।२६ ये संपूर्ण कन्या इन्द्रियोंको जीतेहुये और गेरूमें रंगेकपड़ोंको धारणकिये और ब्रत उपवासोंसे कृश अंगवाली २७

और कृष्णके दर्शनकी बांछाकरती हुई ऐसी ये संपूर्ण स्त्री अंजलि-
बांधके यादवोंमें सिंहरूप भगवान् के चारों तरफ फिरतीभई २८
और ये संपूर्ण महासुर नरकासुरको मरासुनके और मुरु हयग्रीव
निसुंद इन संपूर्णोंको मरासुनके बहुत प्रसन्न होतीभई २९ और
इन्होंके रक्षक उमरमें अधिक दानव अंजलि बांधके भगवान् को
प्रणामकरतेभये ३० और ये संपूर्ण कन्या सुंदर नेत्रोंवाले कृष्णचं-
द्रको देखके संपूर्णोंका पतिभावसे संकल्पहोताभया ३१ और चंद्र-
माकेसा भगवान् का मुख देखकर आनंदित हुई यह बचन कहने
लगीं ३२ हे भगवन् जो वायुने हमारे प्रति बचन कहा था और
संपूर्ण भूतोंको जाननेवाले देवर्षि नारदने जो पहले कहाथा ३३
कि शंख चक्र गदा खड्गको धारण करनेवाले विष्णु भगवान् हैं
सो भौमासुरको मारके शीघ्रही तुम्हारे भर्त्ताहोवेंगे ३४ हे भगवन्
सो वचन सत्यहुये इसवास्ते बहुतदिनसे सुने हुये और शत्रुओंको
नाशकरनेवालोंको तुमको बहुतप्रियदेखेहैं और हे भगवन् तुम्हारे
महात्माओंके दर्शनसे आज हम कृतार्थ होगई हैं ३५ पश्चात् भग
वान् तिन्होंके ऐसे बचनसुनके और आश्वासनाकराके कमलकेसे
नेत्रोंवाली प्रसन्न संपूर्ण स्त्रियों से अनेकप्रकारका संभाषणकरते
भये ३६ पश्चात् किंकरों संयुक्त यानोंसे तिन्होंको द्वारकामें पहुंचा
तेभये ३७ और पवनकेसा वेगवाले हजारहा राक्षस जब पालकि-
योंको लेकर चले तब उन्होंका बहुत अत्यंत शब्द होताभया ३८
और तिस पर्वत में बहुत श्रेष्ठ निर्मल सूर्य केसी कांति वाला और
मणिकांचनोंकी तोरणवाला ३९ और पक्षिगण हस्तीसर्प मृग वृक्ष
इन्होंसेयुक्त वानरोंसेयुक्त वड़े २ और न्यंकु वराह रुरुइन्होंसे सेवित
और सुंदर प्रपात ४० और शिखरोंसेयुक्त और मूंगोंकोशिखरोंसेयुक्त
और अत्यंतअद्भुतऔर अचिंत्यऔर मृगसमूहसेव्याप्तऔरचकोरोंके
समूहसे व्याप्त ४१।४२ और मयूरों सेनादित ऐसेसुंदर मणिपर्वतको
शिखरकोअत्यंतबलवान् भगवान् उपाड़केऔरपक्षियोमेंश्रेष्ठजोगरुड़
है ४३ तिसकेऊपररख सत्यभामासहित गरुड़पर सवारहो लातेभये

और इनसंपूर्णों को लीलासेही बहताहुआ जो हिमाद्रिकी शि-
खरके तुल्य गरुड़है तिसकी पंखोंकादिशाओं का अत्यंतशब्द होता
भया४४।४५और ऐसेपर्वतोंकी शिखरोंकोपवनसेपीड़ित करताहुआ
और बृक्षोंको फेंकता हुआ और वेगसे घटाओंकोउड़ाता हुआ ४६
ऐसेपवनकेसे वेगवाला गरुड़ चंद्रमा सूर्यके देशोंको उलंघ करजाता
भया ४७ पश्चात् देव गंधर्वों से सेवित मेरु पर्वतको प्राप्त होकर
भगवान् तहां देवताओंके मकान देखतेभये४८हेराजन् विश्वेदेवा
मरुत साध्य अश्विनी कुमार इन्हों से प्रकाशित मंदिरों को देखते
भये ४९ पश्चात् पुण्यतम लोकोंको प्राप्तहोकर देवलोक अर्थात्
स्वर्गमें प्राप्तहोकर तहांइन्द्रकेभवन को प्राप्तहोतेभये ५० पश्चात्
तहांगरुड़से उतर इन्द्रको देखतेभये और देवराजइन्द्र प्रसन्न हुआ
भगवान्‌की श्लाघा करताभया ५१ पश्चात् अच्युत भगवान् इन्द्र
को दिव्य कुंडलदेकर सत्यभामा सहित भगवान् इन्द्र को प्रणाम
करतेभये ५२ पश्चात् इन्द्रनेरत्नोंसे भगवान् का पूजनकिया और
इन्द्राणीने सत्यभामा का पूजनकिया ५३ पश्चात् भगवान् और
इन्द्रदोनोंबड़ी संपतिवाले देवमाता अदितिके भवनमेंगये५४ तहां
अप्सराओं से सेवितकरी और तपसे युक्तमहाभागाऐसी अदितिको
दोनोंदेखतेभये ५५ औरदितिकापुत्रइन्द्रमाताको कुंडलदेकरप्रणाम
करताभया ५६ और यहइन्द्र भगवान्‌को आगेकरकेगुणबर्णनकरने
लगा तबअदिति दोनोंपुत्रोंसे मिलके५७अनुकूल आशीर्बाददेतीभई
और इन्द्राणी और सत्यभामाये दोनोंपरम प्रसन्नहुई ५८ अदिति
के चरणोंकोपकड़ती भई और यहदेवता प्रेमसे जैसेभगवान्‌को क-
हतीभई ५९ किहेकृष्ण तूसंपूर्णभूतोंमें अवध्यहोगा और अधृष्टाहो-
गा६० ऐसेहीसत्यभामाको आशीर्बाददिया किहेकृष्ण यहसत्यभामा
प्रियदर्शन संपूर्णलोकों में विख्यात ६१ स्थिरयौबनवाली सुभगा
और स्त्रियोंमेंउत्तम ऐसी सत्यभामाहोगी६२और हेकृष्णजैसे तेरेको
वृद्धाऽवस्था नहींप्राप्तहोती ऐसेसत्यभामा कोभीनहींबाधेगी ऐसेदेव
माताने पूजितकिये महाबल भगवान् ६३और रत्नोंसेइन्द्रने पूजन

किये और सुरर्षियोंसे पूजितहुयेसत्यभामा सहितगरुड़ पर सवार होकर ६४ देवताओंके नंदनबनको प्राप्तहोकर इन्द्रकेभवनको प्राप्त होतेभये ६५ पश्चात् तहांदेवोंसे पूजित नित्य पुष्पोंकोधारण किये पवित्र गंधवाला वांछितकोसिद्ध करनेवाला देवताओंसे रक्षित६६ ऐसे दिव्य कल्प वृक्षकोहठसे उपाड़करगरुड़ पररख अप्सराओं के समूहको देखतेहुये सत्यभामा करकेसहित वायुजुष्टमार्ग से द्वारका कोआतेभये ६७। ६८ पश्चात् इन्द्रभगवान् के कर्मकोसुनके शूर-वीर मानताभया ऐसे देवताओं से पूजित और महर्षियों से स्तुति किये भगवान् देवलोकसे द्वारकामें प्राप्तहुये ६९॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांनरकवधेत्रयोविंशाधिकशतोऽध्यायः१२३॥

एकसौचौबीसका अध्याय॥

ऐसेसुनफिरजनमेजयने प्रश्नकिया हेमुनिश्रेष्ठ मथुरामें भगवान् प्राप्तहुए जोशुभचरितकरतेभयेतिनभगवान्के चरितोंकोसुनताहुआ तृप्तिकोनहीं प्राप्तहोताहूं१ और हेभगवन् द्वारकामें बसतेहुए कृष्ण चंद्रकेछःगुणों वालेचरित कहो।क्योंकि आपकेसंपूर्ण यथार्थ जानेहुए हैं २ वैशंपायनजी कहतेहैंकिहे भारतकियेहैं विवाहजिन्होंने ऐसे कृष्णचंद्र के अतिविचित्र चरित्रसुनो३हेराजन् तेजस्वी प्रतापवान् कृष्णचंद्र रुक्मिणीसहितरैवतपर्वतको जातेभये ४ तहांरुक्मिणी को उपवासकराकेब्राह्मणों कोतृप्तकर भगवान् द्वारकामेंआके५पश्चात् नारदमुनिकी आज्ञासे कुमारभ्राता पुत्रइन्होंकोभेजतेभये६पश्चात् परमऋद्धि सेयुक्तसोलह हजारस्त्री जातीभईं पश्चात् द्विजातिअभ्या गतधर्मनित्य बंदिइष्टवादी७।८कल्याणरूप पुण्यकर्म और यौनश्रौत मौख इनसंस्कारोंसे शुद्धभगवान् इनसंपूर्णों को बहुतसा दानदेते भये९ऐसेश्रेष्ठहरिद्विजातियोंकोतृप्तकरकेपश्चात् धर्मवत्सलभगवान् जातियोंकोतृप्तकरतेभये१०ऐसेभगवान्उपवासकरकेपश्चात्विशेष करके भीष्मककी पुत्री रुक्मिणीको बहुतप्रियमानतेभये ११पश्चात् अमित पराक्रमवाले और स्त्रियों से सहित ऐसे कृष्णचंद्र रुक्मिणी

के स्थानमें बैठेथे तब नारदमुनि आये १२ मुनिको आयेहुए देख के भगवान् शास्त्रदृष्ट विधिसे पूजन करतेभये १३ ऐसे भगवान् से पूजाहुआ नारदमुनि कल्पवृक्षका पुष्पभगवान्कोदेताभया १४ और भगवान्ने वह पुष्परुक्मिणी को देदियातबयह दिव्यरूपवाली १५ रुक्मिणी पुष्पकाग्रहणकर शिरमेंधारण करतीभई १६ औरतिसको धारणकरकेरुक्मिणी दुगुणीशोभाकोप्राप्तहोतीभई १७ पश्चात्नारद मुनि रुक्मिणीसे कहनेलगे किहेपतिव्रते यहपुष्पतेरेही योग्यहै १८ और हेदेवियहपुष्प तेरेकरमें भूषितहोगयाहै और इसकेयोग्य तूही है १९ हेकल्याणगुण संपन्ने हे भर्तृ वत्सले अर्थात् भर्ता कीप्यारी यह पुष्पसदाखिला रहताहै २० हेकालकेजाननेवाली बर्षदिन पर्यंत ईप्सितगंधको देताहै २१ और हेदेविठंढगरम कालमेंबांछित सुगंध देताहै और मनबांछित रसोंको देताहै २२ और सौभाग्यदेताहै और प्रीतिकोबढ़ाने वालीबांछित गंधोंको देताहै २३ और हेदेविजो और पुष्पोंकीबांछाकरतेवेभी इससे प्राप्तहोतेहैं २४ और हेशुभे यहपुष्प भाग्यकोबढ़ाताहै और धर्मका देनेवालाहै औरशुद्धबुद्धिको करदेता है २५ औरइसके धारणसे जैसेजैसे सूक्ष्म और स्थूलको बांछाकरता हैवैसेही रूपको धारणकरलेताहै २६ और हेकमलकेसे नेत्रोंवाली यहपुष्प अनिष्टगंधको हरताहै और श्रेष्ठगंधको बढ़ाताहै और रात्रि कोप्रकाशकरताहै २७ और सन्तानमाला बस्त्रपुष्प पुष्पोंकामंडपइन संपूर्णोंको चिंतवन करतेही प्राप्तकरताहै २८ और भूखप्यास ग्लानि वृद्धावस्था बाधानहीं करतेहैं २९ और इसके धारण करनेसे अनेक प्रकार के गीत और बाजे इनविद्याओं को प्राप्तहोताहै ३० और हे देवि जब बर्षपूरा हो जायगा तब यह तेरेसमीपसे कल्पवृक्षको च- लाजायगा ३१ और हेसुव्रते कल्पवृक्षको यहप्रकृति स्वभावसेहीहै किदेवताओं शत्रुओंका नाशकरताहै ३२ और हेदेवि हिमाचलकी पुत्री सतीउमा नित्यइनपुष्पोंको धारण करती हैं ३३ और अदिति इन्द्राणी बेदकीमाता सावित्री लक्ष्मी ३४ देवपत्नी देवताबसुदेवता ये संपूर्णकल्पवृक्ष के पुष्पोंको धारणकरते हैं परंतु संपूर्णों के पुष्पों

को एकबर्षकीमर्यादाहै ३५ हेदेवि सोलह हजारस्त्रियोंके मध्यमें तू श्रेष्ठहै ३६ और हेकृष्णचन्द्रकीप्यारी हे संपूर्ण गुणोंवाली तैंने तिरस्कारसेसबसौकणोंका अवसेक करदिया ३७ हेभाविनो अबमैंतेरा प्रकाशऔरसौभाग्य और यश उत्तमदेखं हूं क्योंकि जिससे भगवानूने तेरेको पुष्पदिया ३८और हेंरुक्मिणी सत्यभामा आपको सौभाग्याजानती हैं और अन्यस्त्रीभी सौभाग्यकी बांछाकरतीहैं ३६ और हेदेवितेरा सौभाग्य बहुतउत्तमहै और हजारहा मनोरथोंसेभी दुर्जयहैऔर हेशोभने अबमैं तेरेको कृष्णचंद्रका दूसरा आत्मा समझताहूं४०और हेहरिकी प्यारी भगवानूने तेरेको त्रिलोकीके रत्न दियेहैं हे रुक्मिणितेरा जीवनासफलहै ४१ हेराजन् ऐसेकहेहु ये नारदमुनिके वचनोंको सत्यभामाकी भेजीहुई बांदीसुन४२।४३और सौकोंको बांदी सुनके अंतःपुरमें कहतीभई ४४।४५ तहां रुक्मिणी के गुणकोसुन के कहनेलगीं कि हे सखियाहो यह रुक्मिणी योग्य है ४६ बेटावाली है बहुतसी भगवान्की स्त्रीतो यहकहतीभई ४७ और रूप यौवनसे संयुक्त सौभाग्यसे गर्बित भगवान्की प्यारी अभिमानवाली ईर्षाके बशहुई ऐसी सत्यभामा सौकण रुक्मिणी के गुणोंको नहीं सहतीभई४८।४६पश्चात्क्रोधके वशहोके सत्यभामाने गूंथेहुये फूलगेरदिये केसरघोगेरी ५०और क्रोधसेसफेद बस्त्रधारण कर लिये अग्निशिखाकी तरह जलनेलगगई ५१ और शोक केभवनमें ऐसेगिरगई जैसे घटाकोतारा ५२ पश्चात् मस्तक मेंसफेद बस्त्रलपेटलिया और लालचंदन मस्तक में लीपलिया और क्रोधकी बार्ताओंको यादकर २ शिर कंपानेलगी और नीचेकोमुखकरके५३ श्वास ले लेकर कमल के फूलको नखोंसे चूंथनेलगी और दासीभी साथही बिलापकरती भई ५४। ५५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांपारिजातहरणेचतुर्विंशत्यधिकशतोऽध्यायः १२४॥

———*———

एकसौपच्चीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् केशव भगवान् रुक्मिणीकेपास नारदमुनिको छोड़कर तहांसेनिकस के १ बिश्वकर्मा का रचाहुआ दिव्य सत्यभामा के घरगये पश्चात् प्राणोंसेप्यारी सत्यभामाको रूसीहुई जानके २ स्नेहसे डरतेहुये भगवान् शनैःशनैःतहांगये ३।४ और दारुक सारथीको दरवाजेपर छोड़दिया और नारदमुनिके उपचारमें प्रद्युम्नकोछोड़दिया ५ पश्चात् दूरसेक्रोधागारमें प्राप्तहुई और दासियों के मध्यमेंविलापकरती हुई और ऊंचेश्वासलेती हुई ६ और बायेंहाथपर मुखपंकजको धरेशोचकरती हुई और शयनसे बारंबार पड़तीहुई ७ सत्यभामा के ऐसेबिलापको हरिदेखतेभये ८ पश्चात् दासियोंसे सैनकर अर्थात् बतानानहीं यहकह सत्यभामाके पास गये ९।१० तहां स्थित होकर पंखेको ग्रहणकर शनैः शनैः हंसतेहुये पवन करनेलगे ११।१२ पश्चात् मनुष्योंको दुर्लभ ऐसे कल्पवृक्षोंसुगंधसे वासित भगवान्‌को सुगंधजो आई तिससे १३ सत्यभामाआश्चर्ययुक्तहोकरमुखफेरकेपीठपीछेभगवान्‌को नहीं देखकेकहनेलगी यह सुगंध कहांसेआतीहै १४ हेराजन् जबसत्यभामाने ऐसे कहा तब संपूर्णदासी अंजलि बांधिके खड़ीहोगईं १५ औरकुछभी नहींकहा ऐसे चारोंतरफ सुगंधको देखतीहुई १६ पीठ पीछे भगवान्‌को देखतीभई पश्चात्युक्तहै ऐसेकह के नेत्रोंमेंआंशूआगये और क्रोधप्रणयसे युक्तहुई और होठफरकनेलगगये १७ औरनीचेको मुखकर के श्वासलेने लगगई एकमुहूर्त ऐसे स्थित रह के १८ पश्चात् भृकुटी चढ़ा के बामनेत्रसे देख और मुखको हाथपर रख अब शोभाको प्राप्तहोताहै ऐसेहरि भगवान्‌को कहतीभई १९ और हेराजन् प्रणय और कोपसे उत्पन्नहुआ जल तिसके नेत्रोंसे ऐसे आंशूपड़तेभये जैसेकमलपत्रसे ओसकाजल २० पश्चात् पड़तेहुये जलकोदेखकर भगवान् तिसको अपनी छातीपर धरतेभये २१ जब छातीपरभी जलपड़नेलगा तब भगवान्‌ने वचनकहा हे भामिनि २२

हे कमलसरीखे नेत्रोंवाली यह क्या बात तेरेनेत्रों से यह ऐसे जल क्योंपड़ताहै जैसे कमल सेजल और हे सुंदरितेरा मुखतो चंद्रमाकी तरह औरकमलकीतरह २७प्रकाशकिया करताथाजक्याहुआऔर हेप्रियेकिसवास्ते केसरधोगेरी २८ और क्योंसफेद वस्त्रधारणकिये हेप्रिये अच्छे कसूंभेवस्त्रधारणकरऔर हेसुंदरिदेवपूजनसे पश्चात् श्वेतवस्त्र तेरेको धारणकरनेनहींयोग्यहैं २९ औरहेबरबर्णिनी हेदेवि देवपूजनसे उपरांत तेरेकोसफेदवस्त्र अभीष्टहै ३० आभूषणक्योंनहीं धारणकरती औरबिचित्रस्थानतैंने किसवास्तेछोड़ेहैं ३१ औरहेप्यारे दर्शनवालीकिसवास्तेमाथे श्वेतकपड़ाबांधाहैऔर किसवास्ते चंदन लगायाहै ३२हे प्रिये इसरूपसे मेरेको अत्यंत ग्लानिकरतीहैऔर पत्रलेखा नहीं सुंदरलगता ३३ और रत्नोंसे रहित तेरी जंघा नहीं शोभाको प्राप्तहोती हेसुंदरि कमलकेसी सुगंधवाले मुखसेक्योंनहीं बोलती ३४ आधेभी नेत्रसे मेरेको क्योंनहीं देखती और श्वास क-रके सहिजल क्यों छोड़तीहै हेउदार चित्तवाली बसबहुत होलिया अबमतरोवे ३५ और हेदेविअंजनसेबिगड़ा जलकोगेरकेमुखकीशोभा मतबिगाड़े क्यासंदेहहुआ मैंतोजगतमेंतेराहोकिंकरविख्यातहूं ३६ और हे प्रिये पहलेकीतरह मेरेसे क्यों नहीं बोलती मैंने तेरा क्या विप्रिय कियाहै हे सुंदरि जिस बातसे तू दुखपातीहै सोमेरेकोकह मन और कर्म और बचनसे तिससम्पूर्णको सिधकरूंगायहमैं सत्य कहताहूं ३७हे प्रिये स्नेह और बहुमान तेरेबिना और स्त्रियोंमेंमेरे नहींहै ३८ हे देवताओंकी पुत्रियोंकेतुल्य यह मेरेनिश्चयहै और हे प्यारी मन वचन कर्मसे तेरादासहूं ३९ और हे शोभने तेरे समान और कोई प्यारी नहीं है ४० हे बाले पृथ्वीविषे जो क्षमा और गंध है और शब्दसे आदि लेकर जो अम्बरमेंगुणहै ऐसेतेरेमें मेरीप्रीति है ४१और कमलकेसीकांतिवाली अग्निमेंजैसी कांतिहै और सूर्यमें जैसेप्रभाहै और चंद्रमामें जैसे नित्यकांतिहै तैसेही तेरेमें मेरास्नेह है ४२ऐसे कहतेहुये प्यारे कृष्णको नेत्रोंसेजलपूछके शनैः२वचन कहतीभई ४३कि हे प्रभो मेरातो नित्यमन यहीथा कि तुम मेरेहो

परंतु आजजानी कि साधारणही स्नेहहै ४४ हे प्रिये क्या बहुत कहनेसेहै आपके हृदयको मैं जानतीहूं हे भगवन् आपके वाणीमात्रही माधुर्यहै ४५ हे पुरुषोत्तम मेरेविषै स्नेहकपटकाहै औरजगह अच्छाहै ४६ और हे भगवन् कोमल स्वभाववाली और भक्तऐसी कां मेरा तिरस्कार किया ४७ हे प्रिय जो तू मेरेपर अनुग्रहकरतीहै तो यह आज्ञा दो कि मैं निश्चय करके तप करोंगी ४८ हे भगवन् जो भर्त्ताकी आज्ञासे तपहै और ब्रतहै सो तो फलदायकहै ४९ और भर्त्ताकी आज्ञाविना ब्रतादिहैं सो निष्फलहैं क्योंकि पति स्त्रीको परमदेवहै ५० ऐसे कहके फिर सुंदरिने नेत्रोंसे जलछोड़दियाऔर मुखपर वस्त्र गेर लोटगई ५१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशांतर्गतविष्णुपर्बभाषायांपारिजातहरणे पंचबिंशत्यधिकशतोऽध्यायः १२५ ॥

एकसौछब्बीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन जी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे अभिमान वाली क्रोधहुई सत्यभामाको फिर वचन कहतेभये १ हे कमलकेसे नेत्रोंवाली यह तेरा शोक मेरे अंगको दग्ध करता है हे प्रिये जिस करके तू अत्यंत व्याकुल होरहीहै २ तिस कारण मेरेआगे कह हे प्रिये मेरेप्राणोंकी तेरेको सौगन्दहै जोमेरेसुनन्के योग्यहैतोकहो ३ तिसके अनंतर सत्यब्रतमें स्थितहुये भगवान् को सत्यभामा वचन कहनेलगी ४ गद्गद् तो वाणी होगई और नीचेको मुखकर लिया हे कमलकेसे नेत्रोंवाले मेरा सौभाग्य तैंनेहीजगत्में बिख्यातकिया है ५ हेदेव इसवास्ते गर्वितहुई मैं तिसकोशिरसे कहूंहूं और हेभगवन् आजतक सम्पूर्ण स्त्रियोंमें मानीहुईथी परंतु आज मैंने वादियों के मुखसे सुना कि मेरीतोसों हंसी करतीहै ६ सो क्योंनहीं हंसे जो नारदमुनिने तुमको कल्पवृक्षका फूलदियाथा सो अपनी प्यारी रुक्मिणीको देदिया ७ और मैं ठगलई हे भगवन् रत्नके अत्यंतदेनेसे तिसमें तेरा अत्यंत स्नेह और बहुत मानहै ८ और नारद मुनि

जो तुम्हारे आगे रुक्मिणी की बड़ाई करैंथे सो तिसको प्रसन्नहुये आप सुनतेभये ९ हे भगवन् मैं तो दुर्भगाहूं क्यों बात बनाते हो क्योंकि पहले रसदेकर और पीछे अनुतापदेतेहो१० इसवास्ते मेरे ऊपर प्रसन्न होकर मेरेकोतो तप करनेको आज्ञादेतेहो११हे कमल सरीखे नेत्रवाले मैं स्वप्नमेंभी देखती और श्रद्धाकरतीनहीं क्यों कि तुम्हारे देखतेहुये और आनंद देखताभया १३ हेभगवन् तिसमुनि के यथेच्छ वचनसुनो और हे भगवन् मेरेतोतुम्हारे समीपमें क्रोध क्योंकि माननहीं १४ इसवास्ते तप करोंगी हे भगवन् श्रेष्ठों के ये वचनहैं कि मानके वास्ते सब जीतेहैं सो मानवर्जित जीवने की इच्छा नहीं करतीहूं १५ अहो बड़े कष्टकी बातहै जिससे मेरी रक्षा होती उसीसेअबभयहोगया १६ हेबिभो बड़े कष्टकी बातहैतुम्हारी त्यागीहुई किस गतिको प्राप्तहोंगी १७ हे मानके देनेवाले मोहसे ईश्वरका मैं क्या अप्रिय करतीभई जिससे तुम्हारी प्यारी होकर और अब वैरन होगई१८ हेबिभो बसन्तकोफूलोंसेचित्र रैवतगिरि को तुम्हारी प्यारीहुई देखके और अब बैरनहुईकैसेदेखूं१९ हेभगवन् कोयलके शब्दोंसे मिश्रित और पुष्पोंकी सुगंधको बहनेवाला और पवित्र ऐसे वायुको मैं दुर्भगाहुई कैसे सेवनकरूं २० और हे प्रिय तुम्हारी गोदमें स्थितहुई समुद्रमें क्रीड़ाकरकेपश्चात् दौर्भाग्य को प्राप्तहुई मैं कैसे समुद्रकोदेखूं २१ हे भगवन् जो आप पहले कहतेभये कि हे सत्राजिति तेरेसिवा और मेरेको प्यारी नहींहैसो वचन कहांगये अथवा कौन मेरेको याद करेगा २२ हे बिभो जो मेरी सासू मेरेको बहुत मानसे देखतीभई सोही अब तेरेकरके तिरस्कारकरी दौर्भाग्यको मेरेको देखेगी २३ हे मान के देनेवाले तेरा स्निग्धभी मृदुप्रेमसे क्याहै क्योंकि जिससे जनोंके समान मेरेको नित्य नहीं देखता २४ हे शत्रुओंको नाश करनेवाले पहले मैं धूर्त कपटीको तेरे को मैं नहीं जानतीभई अबजाना कि रुक्मिणी को चाहता है और अन्य जनोंको ठगने वाला है २५ स्वर और वर्ण और चेष्टित और आकार इनसे गूढों से आजबड़े यत्नसे तू चौर

जाना है मैं जानतीहूं कि औरोंकी पक्षमेंहै और बाणी मात्र से मधुरहै २६ और शठहैहेराजन् जनमेजय ऐसेईर्षा के वसहुई और मानवाली ऐसीसत्यभामाको भगवान् शांति करातेहुयेवचन कहने लगे२७किहेप्रिये हेमेरी ईश्वरी हेकमलकेसे नेत्रोंवाली ऐसेमतकह बहुत कहनेसे क्याहै मेरेको अपनाहो प्याराजान २८ हेदेवि सो कल्पवृक्षका फूलमेरा प्यार करताहुआ नारदमुनि तिसरुक्मिणीको देताभया २६ हे सुंदरहासवाली तू प्रसन्नहो और मेरे अपराध को सह ३० हे अतिकोपवाली जो तू कल्पवृक्ष के फूलकी बांछाकरेहै तोमें निश्चयदूंगा सत्यकहताहूं ३१ और क्याकहूं स्वर्गसे कल्पवृक्ष लाके जबतक तू चाहेगी तेरेभवनमें स्थापन करदूंगा ३२ जब ऐसेभगवान्ने कहा तब हेराजन् हरिकोप्यारी वहसत्यभामा कहने लगी कि हेभगवन् ऐसेहै तोलादो ३३ हेभगवन् यह क्रोध दूर किया और इसके लानेसे बहुतगुणहोजांगे और संपूर्ण स्त्रियोंमें मैं मुख्य होजाउंगी ३४ ऐसेसुन जगत्की उत्पत्ति प्रलय करने वाले भगवान्३५ तथास्तु ऐसे कहतेभये पश्चात् कंशके नाशकरनेवाले भगवान्की प्यारीसत्यभामायहवचनसुनके बहुतप्रसन्नहुई ३६ प-श्चात्जगन्नाथ सर्वात्मा सर्वभावन संपूर्ण कामनाओंकोदेनेवालेऐसे कृष्णचंद्रस्नान करके अवश्यककर्म करते भये ३७ पश्चात् हेराजन् भगवान्ने नारदमुनिका ध्यान किया उसीसमयमें नारदमुनि समुद्र में स्नान करके आतेभये ३८ हेराजन् पश्चात् आयेहुये नारदमुनि को देखके धर्मके जाननेवाले भगवान्सत्यभामासहितविधि पूर्वक पूजन करते भये ३६ और सत्यभामा आपनारदमुनिके चरणधोती भई और भगवान् आपझारी करके जलदेते भये ४० पश्चात् जगत्गुरु सावधान आत्मा भगवान् सुखपूर्वक बैठेहुये मुनिको परम अन्न देतेभये ४१ पश्चात् लोकोंके ईश्वर कृष्णचंद्र का सत्कार किया उदारचित्त मुनि परमश्रद्धासे भोजन करता भया४२ पश्चात् तृप्तहुआमुनि आचमन करके प्रभुको आशीर्वाद देताभया तिन आशीर्वादोंको प्रसन्नचित्त भगवान् ग्रहण करते भये ४३ प-

श्चात् नम्रहुई सत्यभामाको दहने हाथमें जललेकर नारदमुनि-
कहनेलगे४४कि हेदेवि जैसेतू अब पतिव्रताहै इससेविशेष मेरेतप
के बलसेहो ४५ हेराजन् मुनियोंमें मुख्य नारदमुनिने ऐसे कहीहुई
सत्यभामाबहुत आनंदसेखड़ीहुई ४६ पश्चात् हेकौरव्य जनमेजय
अमितपराक्रमवाले और बुद्धिमान् ऐसेकृष्णचंद्र नारदसे आज्ञा
लेकर भोजन करते भये ४७ पश्चात् हे भारत सत्यभामाभी अ-
पना आवश्यक करके भर्ता कृष्णचंद्र की आज्ञासे मुदितहुई दिव्य
मकानोंको प्रवेश होतीभई ४८ पश्चात् एकमुहूर्त नारदमुनिबैठके
कृष्णचंद्र को कहनेलगे४९कि हेअधोक्षजमैं आपसेपूछताहूं किइंद्र
लोकमें जाउंगा ५० क्योंकिवहां महीनाके महीने इंद्र के भवन में
आदिदेव महादेवजीको नमस्कारकरके और महादेवजीकी पूजाके
वास्ते देवगंधर्व अप्सराओं के समूह गातेहैं और नृत्य करते
हैं ५१।५२ और देवदेव सोमविभुतहां अंतर्द्धान हुआ तिसइंद्र के
कराये उत्साहको देखताहै ५३ और हे भगवन् मैंभी पहलेदिन
निमंत्रित कियाहूं ५४ परंतु यहवृक्षोंका राजाकल्पवृक्षका पुष्प
आप केदेने केवास्ते लायाहूं हेभगवन्यहपुष्पदेवताओंकेभोगकेयो
ग्यहै ५५ और हे कृष्ण यह वृक्ष इन्द्राणीको अत्यंत प्याराहै और
यह नित्य पूजनकिया सौभाग्य देताहै ५६ तिससमयमें पवित्रकर
नेको यह कल्पवृक्ष महात्मा कश्यपजीने रचाहै कि एक समय में
पहले अदितिने सेवासे मुनि प्रसन्नकरदिये ५७ तब महातेजस्वी
मारीच कश्यपमुनिने बरका लोभदिया तब अदिति कहनेलगी ५८
कि हे मुनियोंमें श्रेष्ठ जिसकरके मैं शुभगारहूं और यथेच्छ संपूर्ण
गहनोंसे भूषितरहूं और हे तपोधन बांछित नृत्य गीत जैसे होवें
और जैसे नित्यकुमारी और रजरहित शोकरहित पति भक्तिवाली
धर्मशीला ऐसी जैसे होजाऊं सो बरदानदो ५९ । ६० यह सुन
कश्यपजी प्रियाकी बांछाकरकेयह बिरज और शोकरहित औरपति
भक्तिवाली और धर्मशीला ऐसी होजावो ६१ इसवास्ते संपूर्णका-
मनाके देनेवाले पुष्पोंसे आवृत और दिव्य गंध से युक्त ६२ तीन

शाखाओंसे युक्त संपूर्ण कालोंमें दृश्य संपूर्ण भूतोंको मनोहर ऐसा कल्पवृक्ष रचा ६३ हे सत्यभामे यह इसप्रकारके और अन्यप्रकारके पुष्पोंको धारणकरताहै ६४ और मंदराचल और वृक्ष इन्होंमें सारलेकर कश्यपजीने यह रचाहै ६५ पश्चात् सौभाग्य के वास्ते इन्द्राणीको इन्द्रनेदिया और रोहिणीको चंद्रमा ६६ और ऋद्धिको कुबेर ऐसे सौभाग्यका देनेवाला यह कल्पवृक्षहै इसमें संदेह नहीं ६७ और इस कल्पवृक्षको गंगाजीके पारिमेंहोनेसे पारिजातकहतेहैं ६८ और मंदारके पुष्पोंसे युक्तहै इसवास्ते मंदारकहतेहैं६६ और नहीं जानतेहुये मनुष्य इसको कोई दारु अर्थात् वृक्षहै इसवास्ते कोविदार कहतेहैं ७० नारद मुनि कहतेहैं कि हे भगवन् सो दिव्यवृक्ष जानियेहैं जिसका यह पुष्पहै ७१ । ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांपारिजातहरणेषड्विंशत्यधिकशतोऽध्याय: १२६ ॥

एकसौसत्ताईसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् तिसकेअनंतरजानेकीइच्छा करतेहुये नारदमुनिको अमितपराक्रमवाले विष्णु बचन कहनेलगे १ हे महर्षे हे धर्मतत्त्वके जाननेवाले तुमस्वर्गजाके और तहांमहादेवजीके सदस्योंको देखकर २ और मेरेबचनसे इन्द्रको मेराभ्रातापन वर्णनकरो क्योंकि जिससे पुराणोंमें कहा भ्रातृपनकोतुमजानतेहो ३ पश्चात् यह कहो कि हे इन्द्र धर्मका जाननेवाला और मुनियोंमें श्रेष्ठ ऐसे कश्यप भगवान् जो अदिति के प्यार के वास्ते पहले कल्पवृक्षरचतेभये४ सो अतिश्रेष्ठहै सौभाग्यका देनेवालाहै और हे मुने ऐसा यह कल्पवृक्ष पुण्यकेवास्ते ५ और दान धर्मके वास्ते और मेरीप्रीतिके वास्ते महाद्रुम कल्पवृक्ष द्वारकाकोल्यावो ६ । ७ और जब यह महातरु दान वांछितदेदेगा तब फिर स्वर्गमें पहुंचादेंगे ८ हे मुनिवर भगवान् इन्द्रसे ऐसे कहना जैसे इन्द्रकल्पवृक्ष देदे तैसे तैसे तुमको यत्नकरना योग्यहै ६ हे तपोधन मैं

तुम्हारे संपूर्णगुण देखूंहूं हेमुने यह संपूर्ण कार्योंकी संपत् तुमकोदे नेयोग्यहै १० वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् भगवान् से ऐसे कहेहुये नारदमुनि केशीको मारनेवाले भगवान् से यह बचनक-हनेलगे ११ कि हे यदुमुख्य निश्चय इन्द्रको ऐसेही कहूंगा परंतु इन्द्र किसीप्रकारसे भी देगा नहीं १२ क्योंकि जिससे पहलेदानव और देवता पर्वतोंमें श्रेष्ठ मंदराचलको समुद्रमेंगेर इसकल्पबृक्षको निकालतेभये १३ हे भगवन् पहले लोकोंके करनेवाले महादेवजी ने मंदराचलमें लगानेको कल्पबृक्षकेवास्ते मैं भेजाथा सो नटगया १४ पश्चात् महादेवजी बोले अच्छा मतलावो वहीं रहनेदो १५ और इन्द्र पश्चात् जाके महादेवजीसे कहनेलगा कि हे भगवन् वह तो नंदनबनमें इन्द्राणीकी क्रीड़ाका बृक्षहै १६ आप बकसदो ऐसे कहेहुये महादेवजीने तथास्तु ऐसे बरदान देदिया पश्चात् महादेव जी पार्बतीके प्यारकेवास्ते मंदराचलमें दोसौकोशको प्रमाणसेकल्प बृक्षोंकाबनरचतेभये १७। १८ हे कृष्ण तिसपर्वतमें न तो सूर्यकी किरणपड़तीहै न चंद्रमाकीप्रभा और न वायुप्रवेशहोता १९ और तहां शीतउष्ण वांछा करतेहुये पुरुषके पर्वतकी पुत्रीसे प्राप्तहोतेहैं २० और महादेवजी के तेजकरके यहवन आप प्रकाशितहै और हेयदु बर्द्धन अर्थात् यादवोंको बढ़ानेवाले गणोंसहित महादेवजी और मैं तिसदिव्य बनमें जातेहैं और कोईभी किसीप्रकार से नहींजाता २१ हे वार्ष्णेय अर्थात् वृष्णि वंशमें होनेवाले तहां चारूं तरफ को बांछित मुख्य रत्नोंको कल्पवृक्ष झिरतेहैं २२ हे केशव देवदेव और लोकनाथ ऐसेमहा देवजीकी आज्ञासे श्रेष्ठमहात्माओंके गण तिन्होंकोभोगतेहैं २३ और पारिजातसेभी जियादह गुणवालेतिन्हों के फूलहैं २४ और मूर्तियों को धारणकरे वृक्ष श्रेष्ठमुनियों सहित चंद्रमा देवताकी उपासना करतेहैं २५ और हे भगवन् महादेवजी के तेजसे सेबित और दुःखहीन और सुखोंके सहित मंदरा चल में ऐसेवृक्ष स्थितहैं सोपार्बतीके बड़ेप्रियहैं २६ और हे भगवन् महा बलघोर बरदानसे दर्पित पापसे निश्चयवाला संपूर्ण भूतोंसेअवध्य

औरवृत्रासुरसेदशगुणानलो ऐसाअंधकनामदैत्यतहांप्रवेशहोगयाथा सो शत्रुओंकेमारनेवाले महादेवजीने मारदिया २७ । २८ हेकमल केसे नेत्रोंवाले इसवास्ते इन्द्र बड़ेदुःखसे कल्पवृक्षको देगा यह मैं सत्यकहताहूं २९ क्योंकि जिससे इन्द्राणी और इन्द्रको यहकल्प वृक्षहित कारीहै और संपूर्ण कामनाओं का देनेवालाहै ३० ऐसे नारद मुनिके बचनसुन भगवान् कहनेलगे हे मुने बुद्धिमान् महा देवजीने अच्छाकिया जो इन्द्राणीके वास्ते कल्पतरु छोड़दिया ३१ क्योंकि जिससे महादेवजो संपूर्ण प्राणियों में बड़ेहैं लोकोंकेरचने वालेहैं परावरके रचनेवालेहैं यहमेरीबुद्धिहै ३२ और हेमुनेमैंछोटा हूं और सर्वथा बलघाती इन्द्रको ऐसे लाड़नायोग्यहूं जैसे जयंतपुत्र ३३ और हेतपो धन तुमसंपूर्ण प्रकारोंसे और बहुत से उपायों से मेरी प्रीति के वास्ते यत्नकरने को समर्थहो ३४ हे मुने मैंने सत्य भामाके साथ यह प्रतिज्ञा करलईहै कि स्वर्गसे कल्पवृक्ष तुझेलाहूं गा ३५ सो हेतपोधन तिसबचनको मैंअसत्यकैसेकरदूं क्योंकिपह- लेभी किसीकालमें मैंने असत्य नहींकहा ३६ हेमुने जबमेरीप्रतिज्ञा भंगहोजायगी तबलोकोंका प्रलयहोजायगा हेमुनिश्रेष्ठ धर्मगुणों से युक्तसंपूर्ण लोकोंको धारणकरने वालामैं कैसे असत्य बोलूं ३७ हे महामुनेदेव और गंधर्बगण और राक्षस और असुर और यक्ष और पन्नगजोये संपूर्णमेरी प्रतिज्ञाको भंगकरनेमें उद्यतहोवेंतो येसंपूर्ण बहुतकालपर्यंत नहींजीवें ३८ और हेमुनेजो तुम्हारा याचनाकिया इन्द्र कल्पवृक्षको नहींदेगातो इन्द्राणी करके अनुलेपन कियेहृदय में गदामारूंगा ३९ हेमुनेऐसे सामपूर्बक कहाहुआ इन्द्रजो कल्प वृक्षनहींदेगा तो मैं निश्चय तहांजाऊंगा और आपने भी मेरेगमन के वास्ते निश्चय करना ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणे सप्तविंशत्याधिकशतोऽध्यायः १२७ ॥

एकसौअट्ठाईसका अध्याय ॥

वैशंपायन जी कहतेहैं कि हे राजन् पश्चात् नारदमुनि इन्द्र के भवन में जाके तिसरात्रिको वहां बसता भया और उत्साह देखता भया १ और तहांअदितिके पुत्र महात्मादेवता और इन्द्र औरशुभकर्मों से गयेहुये राजर्षि और विद्वान् और नागयक्ष सिद्ध चारण ब्रह्मर्षि सैकड़ों देवर्षि मनु महात्मा २ सुपर्ण महाबल मरुत सैकड़ों देवताओं के समूह और इन संपूर्णोंके ऊपर और हजारहां कल्पांतर में भी जिनका नाश नहीं ऐसे देवर्षि मुनियों करके सहित महेश्वर देव अपने गणोंकरके सहित स्थितहोता भया ३ और जिनको महादेव जी के तुल्यदेवता पूजनकरतेहैं और आत्मज्ञ सत्यबादी धर्ममार्गमें स्थित ऐसे रुद्र और देवता ये संपूर्ण महादेवजीकी उपासनाकरते भये और स्कंदगंगाजी अर्चिष्मान् तुंबरु और भारिथे और इन्होंसे अन्य देवदेवताओंके नेतायेसंपूर्ण तहां आतेभये ४ और हेराजन्जो धर्ममेंस्थितहुये और तपमेंस्थितहुयेजोमनुष्य शुभकोवांछा करतेहुये जो देवताओंको पूजतेहैं ५ तिन्होंकादेवतापूजतेहैं औरहेराजन्जोपित रोंके कर्मोंमें स्थितहैं और जोसंन्यास औरदेवताओं के कर्मोंमेंस्थित हैंऔर हे कौरव्यजो वेदकापाठ करतेहैं और जोनित्य ब्रह्मचारीहैं सोसंपूर्ण तहां आतेहुये ६ । ७ और तिससभामें गंधर्वोंका अधिपति चित्ररथ पुत्रकरके सहित प्रसन्नहुआ देवताओं के बाजे बजाताभया ८ और ऊर्णायु चित्रसेन हाहा हूहू उम्बर तुंबरु ये संपूर्ण गाते भये ६ और उर्बशी पूर्वचित्ति हेमारंभा हेमदंता घृताची सहजन्या ये संपूर्ण गातेभये १० पश्चात् आत्मवान् भगवान् महादेवजीतिस उपस्थानको सेवन करताभया ११ और पश्चात् इन्द्रके तिस वृत्तांत सेप्रसन्नहुये महादेवजी कैलासमें जातेभये १२ जब भूतपति महादेवजी चलेगये तब संपूर्णराजा जैसे आयेथे वैसेही चलेगये १३ और इन्द्र के पूजित संपूर्ण देवताभी अपने अपने स्थानों में जाते भये १४ जबसंपूर्ण चलेगये तब सुखपूर्वक सभ्योंसहित बैठेहुयेइन्द्र

मुनिको देखकर इन्द्र उठके तिसतपोध
नारदमुनि प्राप्तहुआ १५ मुनिकोदेखकर इन्द्र उठके तिसतपोध
नमुनिका पूजन करताभया १६ और कुशहै गर्भमें जिसके ऐसे अ-
पने आसन के समान आसनदेता भया १७ पश्चात् महातेजस्वी
नारदमुनि इन्द्रकीप्रति यह बचनकहताभया हेदेवताओंमें श्रेष्ठइन्द्र
मेरेको अतुल तेजवाले बिष्णुका दूतजान १८ किसीकार्यको आगे
करके महात्माने आप के पासभेजाहै १९ ऐसेसुन प्रसन्नहुआइन्द्र
कहनेलगाहेमुने पुरुषश्रेष्ठभगवान् मेरेकोक्याकहतेथेजल्दीकहो२०
हे धर्मजाननेवालोंमें श्रेष्ठमुने महात्मा कृष्णनेमुझे बहुतदिनोंमेंयाद
किया तिन्होंके सुंदर प्रियबाक्यकहो २१ऐसे सुन नारदमुनि कहने
लगे कि हेइन्द्र पुरुषोंमेंश्रेष्ठ देवताओंमें यशकरनेवाले ऐसे तुम्हारे
भाईके देखने को मैं द्वारकामें गयाथा २२ सो तिन्होंको रैवतक में
रुक्मिणी के साथ ऐसे देखताभया जैसे पार्बती जी करके महादेव
जीसो २३ हे देवेश पत्नियों के मध्यमें बहुत तेजवाले कृष्णचंद्र को
आश्चर्य के वास्तेमैंने पुष्पदिया २४ हे मान के देनेवाले बहुतका-
मनाओं का देनेवाला और वृक्षराजसे उत्पन्नहुआ ऐसे पुष्पको वे
पत्नी देखकर परम आश्चर्य को प्राप्तहोतीभई २५ हेदेवेश मैंनेतिस
कल्पवृक्ष के गुणकहे और तेजस्वी कश्यप ऋषिसे उत्पत्यकही २६
हेइन्द्र जबमैंने इसके संपूर्ण गुणकहे तब तुम्हारे छोटे भ्राता कृष्ण
चंद्रकी सत्यभामानाम पटरानी तिस के वास्तेश्रम करतीभई २७ हे
देवगणों के ईश्वर पश्चात् तिस सत्यभामाने याचनाकिया तुम्हारा
भ्राता धर्मात्मा कृष्णप्रतिज्ञा करताभया२८पश्चात् बलवानोंमें श्रेष्ठ
बिष्णुमुझको जो कहताभया हेसुरमुख्येश तिसको यथार्थसुनो २९
प्रणामकरके अच्युतने यहकहाहै किछोटा भ्रातालड़ानायोग्यहै ३०
इसवास्ते हे सुरश्रेष्ठ इसवास्ते श्रेष्ठकल्पवृक्षको भेजवाओ क्योंकि
जिससे हे असुरों के नाशकरनेवाले तुम्हारीवधूका मनोरथ सफल
हो ३१ और तिसकी बिशेष से धर्मकृत्यहो हे लोकगणों के ईश्वर
यह दुर्लभ कल्याणवाला लोकहै सोमेरेप्रभावसे मनुष्य देवताओं
के कल्याणकोदेखो ३२ वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् महेन्द्र

ऐसे नारद के कहे बासुदेव भगवान्के बचनसुन पश्चात् मुनिको ऐसे बचन कहताभया ३३ हे द्विजश्रेष्ठ तुम्हारा कहा मैंने सुनलिया अपने आसनपर बैठो ३४ और अतुलतेज विष्णुको प्रति संदेशादूं-गा ३५ जब नारदमुनि अपनेआसन परबैठगये तब नारद मुनिसे आज्ञालेकर आपभी तिसके समान आसनपर बैठगये३६ पश्चात् वृत्रासुरको नाशकरनेवाला इन्द्र अपने बल और बीर्य और पार्षद इन्होंको देखकर नारदमुनिसे बचन कहतेभये ३७ हे महर्षे हेधर्मज्ञ पहले मेरीतर्फसे कुशल पूछके पश्चात्संपूर्ण भूतोंका सुख देनेवाले जनार्दनसे यहकहना ३८ हे भगवन् मेरेसे अन्य तूजगत्का ईश्वरहै सो हेअच्युत तुम्हाराही यहकल्पवृक्षहै ३९ और रत्नभी तुम्हारेहीहैं हेदेवतुमतोभार दूरकरनेको पृथ्वीपर गयेहो और कार्यकी सिद्धिके वास्ते मानुषत्वको स्थितहोरहेहो ४० और जबप्रतिज्ञा पूर्णहोलेगी तब फिरस्वर्गमें प्राप्तहोवोगे हे अधोक्षज तेरीबधुओंके इष्ट कामना पूर्णकरदूंगा और हे अच्युत तुमको अल्पकामकेवास्ते स्वर्ग केरत्न मनुष्यलोकमें प्राप्तकरने नहींयोग्यहैं ४१ यहपूर्वकृत स्थितिहैऔर हेमहाबल हे प्रभोजो स्थितिको उल्लंघनकरके बरतेंतो प्रजापतियोंके समूहमेरेको क्याकहेंगे४२ हेभगवन्पुत्र और पौत्रों सहितमहात्मा ब्रह्माने जगत्केसंपूर्णकृत्यों के नियमस्थापन करदियेहैं हेभगवन्प्र-जापतियोंके मार्ग को त्यागके चलतेहुये कोमेरेसेसुन बुद्धिमान्और प्रभु अर्थात् समर्थ ऐसाप्रजापति शापदेदेगा४३ और जोहमहींमर्या दारूप सेतुबंधनको तोड़देंगे तो शंकितहुये दैत्य और दैत्यों केपक्षके अन्यमर्यादाको भेदनकरदेंगे ४४ और हेमान के देनेवाले जो स्त्री केवास्ते यहांस्वर्गसे कल्पवृक्ष लेजाओगे तो स्वर्गबासी बिमनाहो-जावेंगे४५ और मनुष्यों के वास्ते जोब्रह्माने उपभोग रचेहैं हेनारद मुने तिन्होंकरके मेरा भ्राता प्रसन्नहोजाओ४६ और यहांस्वर्गमेंभी जोमेरे परिग्रहहै तिसकोयहांस्वर्गमेंभी स्थितहोकर कृष्णभोगनेको योग्यहै ४७ हेमुने अत्यंत बड़ेजोभोगहैं तिन्होंको क्या जनार्दननहीं जानताहै ४८ जिससेधर्मको त्याग के और पापमें बर्त्तें और कृष्ण

महात्मा के स्त्रीवश्यता जोजगत्में विख्यात होवेगी४९तो अपयश-
होवेगा मेरीतोयह बुद्धिहै५० और हे नारद जोमनुष्यभावको प्राप्त
हुआ मधुसूदन मेरे ज्येष्ठ भ्राता केसाथ हठकरेंगे तो इस स्वर्गरत्न
के लोपसेमेरा निरादरहोवेगा और जातिसे विशेष करके निंदाहोवे
गी ५१ और यह मधुसूदन ब्रह्मा के स्थापन किये श्रेष्ठों के धर्मों
को और धर्म अर्थकाम क्रमसे इन्होंको सेवन करताहै ५२ और जो
कल्पवृक्षको मैं पृथ्वीमेंप्राप्तभी करदूंगा तो इन्द्राणीसे आदि लेकर
कोनमेरेको वड़ामानेगा५३ औरमुनेमनुष्य पृथ्वीपर कल्पवृक्षकोऔर
स्वर्गकाफल पृथ्वीपर देखस्वर्ग केवास्ते उद्यम नहीं करेंगे ५४ हे
नारदजो कल्पवृक्षकेगुणोंको मनुष्यसेवनकरेंगे तोदेवताऔर मनुष्यों
मेंक्याविशेषहोगा ५५ हे मुने जो तहां कर्मकरतेहैं सो यहां स्वर्गमें
आकेभोगेंगे५६ और जब कल्पवृक्षके गुणोंसे युक्त मनुष्य होजायंगे
तवस्वर्ग के वास्ते यत्न न करेंगे५७और पृथ्वीमें स्वर्गकाफल प्राप्त
होके मनुष्य यज्ञ नहीं करेंगे ५८ और देवताओं के समानहुये पूर्त
आदि न करेंगे५९और हे तपोधन श्रद्धापूर्वक स्वर्गकी इच्छा करते
हुये मनुष्य यज्ञ जप्य आह्निक कर्म इन्हों करके हमारे को तृप्त
करतेहैं६० पश्चात् कल्पवृक्ष के गुणोंसे युक्तजनये संपूर्णनहीं करेंगे
और तिन्हों करके हीन हमतेजसे रहितहोजायंगे और यहांसेजोहम
वर्षाकरते हैं तिससे खेती होकर पृथ्वीपर मनुष्य जीतेहैं ६१ और
दान यज्ञोंकरके हमारीतृप्तिकरतेहैं और हे भगवन् क्षुधाप्यासरोग
जरामृत्यु रतिदौर्गंध्य औरकर्मसे उत्पन्नहुई६२जब कल्पवृक्षकेगुणों
सेमनुष्यों के येनहीं रहेंगे ६३तो किसवास्ते स्वर्गका उद्योगकरेंगे
हेविप्रअक्लिष्ट कर्मकेकरनेवाले विष्णुको यहकहना उचितहै ६४ कि
संपूर्ण प्रकारकरके स्वर्गसे पृथ्वीमेंकल्पवृक्षका भेजना योग्यनहीं६५
हे ऋषियों में श्रेष्ठ जैसे २ मेरा भ्राता प्रसन्न होवे तैसेही तैसे मेरे
प्यारकीइक्षा करके करना योग्यहै६६और हारमणियोंके रत्न और
चंदनऔर अगरऔर अनेक प्रकारकेवस्त्र येसंपर्ण वधूओंकेवास्ते द्वार
कामें पहुंचाओ६७ औरमनुष्यलोकोंके हितकारी जो योग्य वस्तु हैं

सो पहुंचावो और स्वर्गकी चोरी करनी केशवके योग्य नहीं है६८ हे मुने मैं बांछित रत्न भी देदूंगा और बहुत से अनेक प्रकार के आभूषण भी देदूंगा परंतु स्वर्गबासियों को प्यारे कल्पवृक्ष को मैं कभी नहींदूंगा ॥ ६९ । ७० ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां पारिजात हरणे इन्द्रवाक्ये अष्टाविंशत्यधिकशतोध्यायः १२८ ॥

एकसौउन्तीसका अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय नारदमुनि ऐसे देवराज के बचनसुन के वाक्यका जाननेवाला और धर्मका जानने वाला और महात्मा ऐसा नारदमुनि इन्द्रको बचन कहताभया १ और हे बलिनिषूदन हे महाबाहोनिश्चय तुम्हाराहित कहनाउचित है जिससे तेरे विषे मेरा बहुतमानहै२ हेदेवेश तुम्हारेमतको जानता हुआ मैंने भगवान्से ऐसे भीकहे थे किजिससे महादेवजीको कल्प वृक्ष तुमनेनहीं दियाथा३ हे इन्द्र सामान्यसे तिसके हेतु मैंने संपूर्ण दिखादिया परंतु बासुदेवनहीं मानताभया यह मैं सत्य कहताहूं ४ हे देवेशपश्चात् कमल केसेनेत्रोंवालेने यह कहाकि मैं उपेन्द्रहूंऔर इन्द्रकोलड़ाने योग्यहूं ५ हे वृत्रासुर के नाशक बारंबार मैंने बहुत हेतुदिखादिये परंतुतिस कृष्णचंद्रकी बुद्धिबढ़ी नहीं६ और हे इन्द्रमधु-सूदन और पुरुषोंमेंश्रेष्ठ ऐसेभगवान् बाक्य के अंतमेंक्रोधके तरहभी कहतेभये ७ हे इन्द्रमेरेसेऐसे कहनेलगे हे मुनेदेव गंधर्बगण राक्षस असुरपन्नग येभी संपूर्णभी मेरीप्रतिज्ञाको दूरकरनेको समर्थनहीं८ और यहकहाहै कि याचितकिया इंद्रजोकल्पवृक्ष नहींदेगा इन्द्राणी ने लगायाहै लेपन जिसमेंऐसे हृदयको गदासे भेदनकरूंगा ९ बैशं-पायनजी कहतेहैं कि हे जनमेजय फिरनारदमुनि कहनेलगे किहेम-हेन्द्र तेरे भ्राताउपेन्द्रका यहपरम निश्चय है यहांजो न्यायमानो सो बिचारकेकरो १० हेदेवेश मेरीसुनोतत्त्व और हिततोयहीहै कि कल्प वृक्षका द्वारकामें भेजना मेरेको यह रुचताहै ११ ऐसे नारदमुनिको

कहाहुआ देवताओंका राजा इन्द्रक्रोधयुक्त होकर यह बचनकहता भया १२हे तपोधनजो केशव अपराध रहितमेरेमें भ्रातामेंऐसेकरेगा तोक्या करनेको समर्थहै १३ हेमुने पहलेही बहुतप्रतिकूल मेरेविषे करताभया सो संपूर्णभ्राताहैं ऐसेजानके मैंनेसहेहैं १४ देखोपहले इन्द्रका रथ वहताहुआने तो खांडवबन अग्निको देदिया और जब अग्नि बुझानेको मेघआयेतब येभी निवारण करदिये १५ और देखो गोवर्द्धन धारण करताहुआनेभी हमाराकुप्यारकिया और बृत्रासुरके मारनेमें सहायता के वास्तेकही तबयहकहा कि मैंतोसंपूर्ण भूतोंको समानहूं १६ पश्चात् अपनेही भुजाओंके बलके आश्रय होकरमैंने वृत्रासुरमारा १७ और हे नारदमुन पश्चात् जब देवता औरअसुरों का युद्धहोनेलगा तब अपनी इच्छासेकृष्णचंद्रने युद्धकिया १८ इस वातको तुमभीतो जानतेहो इसवास्ते बहुतकहनेसे क्याहै अच्छीबात है कृष्णयुद्धमें प्रवृत्तहो परंतुहमैंतोज्ञाति भेद करना उचितनहीं१६ हे मुनेतुम साक्षीहो और जोमेरे हृदयमें गदामारनेको केशव उद्यमक- रनेलगा तो देखेंक्या गुणदीखे २० और अदितिकर के सहित उद वासमें प्राप्तहुआ जो मेरे पिताकश्यपहैं तिन्होंकोभी कहो २१ और हेमुने मेरेभ्रातासे आत्मानहीं जीतागयाहै और रजोगुण तमोगुणसे व्याप्तहै क्योंकि जिससे स्त्रीके बाक्यसे कामदेव के बशहुआ बड़ेको मेरेको यहकहताभया२२हे विप्रसंपूर्ण प्रकारसे स्त्रीकोधिक्कारहैऔर रजो गुण तमोगुणकोभी धिक्कारहै क्योंकिजिससे हे द्विजस्त्रीकाजीता हुआ विष्णुमेरेकोयह आक्षेपकरता भया२३हेमहामुनेकामके बशहु- ये कृष्णने नतो कश्यपकाकुलदेखा और न मेरीमाताका दक्षकाकुल देखा जिसमें मेरी उत्पत्ति है २४ और बड़ापन राजापन देवताओं कामानाहुआ इनको भी नहीं देखता भया २५ हे पाप रहित मुने ब्रह्मा पहलेमुझसे यहकहताभया कि तेराभ्राता हजारहा पुत्रस्त्रियों करके श्रेष्ठहै और सदवृत्तहै ज्ञान से संपन्न है २६ और भ्राता के समान इतरजन बंधु नहींहै ऐसे मेरेको माता पिताभी कहतेभये२७ और हे मुनिसत्तम मातापिता मेरेकोक्याकहेंगे पहलेविष्णुकाशरीर

स्नेहसे मैंने धारणकियाथा और हेमुनेऐंद्र वैष्णवभागभी मैंइसीको देताभया २८ हेनारद छोटेभाई कृष्णको मैं प्रेमसे देखताहूं और संग्राममें तिसने पहलेप्रहार करना २९ और धर्मका जानने वाला भक्तिके आश्रयहुये केशवकी मैं यत्नसे रक्षाकरूंगा ३० हे मुने ऐसे अपमान मैंनेपीछेकरके और यहकेशवलड़ाना योग्यहै और बालकहै ऐसे जाना ३० और यह मेरा पुत्र है बालक है छोटाहै ऐसे माता पिताने भी तिरस्कार नहींकिया ३१ और माताको बिशेष कर के यह प्रियरक्खा और अब हमबैरीहोगये ३२ और हेमुने केशव सर्वज्ञहै बलवानहै शूरबीरहै मान्यको माननेवालाहै ३३ यहहमारा संपूर्ण ध्यान असत्य होगया सो नारद अब तूजा और केशवकोयह कह किमैं बुलायाहुआ युद्धसेनहीं निवृत्तहूंगा ३४ और यह कहना हेस्त्री कर के जीताहुआ कृष्णजो इच्छाकरताहै तोजा और जोतूंबांछाकरताहै सोसहीहै ३५ हेजनार्दन चक्रसे अथवा शार्ङ्ग धनुषसेअथवागदासे अथवा नंदकखड्गसे इनशस्त्रोंसे दृढ़हुआ गरुड़ पर चढ़ पहले प्रहारकर ३६ और जब तू प्रहारकरलेगा पश्चात् यथाशक्तिमैं प्रहारकरूंगा अहोधिक्कारहै मेरेको जोस्नेहको खंडितनहीं करेगा ३७ तो और हे मुनिसत्तम इतने संग्राममें प्राप्त हुये मेरे को कृष्ण नहीं जीतलेगा तबतक मैं कल्पवृक्ष नहींदूंगा ३८ हे मुने बड़ेभ्राताको जो यह छोटा तिरस्कार करता है सो इस स्त्री जितहरिकोमैं कैसे सहूंगा ३९ हेभगवन् द्वारकामें अभीजा और बिवादमें स्थितहुये अच्युत कोयहकह कि हे कृष्ण कल्प बृक्षका आधापत्र भी युद्ध किये बिना नहींदेगा ४० और हे मुने पश्चात् मेरेप्यारे के वास्ते निःशंक यह कहना कि कल्पबृक्ष को मायाकरके हरनेको तूयोग्यनहींहै युद्धही करनाउचितहै और तेरी कुटिलताको धिक्कारहै ४१॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गत बिष्णुपर्व भाषायां पारिजात हरणे इन्द्रबाक्ये ऊनत्रिंशदधिकशतोध्यायः॥१२९॥

—※—

एकसौ तीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय कहनेवालों में श्रेष्ठऐसेनारद मुनिमहेंद्रके बचनसुनके और एकांतमें तिस देवराजा इन्द्र से यहबचन कहतेभये १ हेभगवन् राजाओंको यथेच्छ प्रिय बचन कहनेयोग्य हैं और जबकाल प्राप्तहोजाय तब हित और अप्रियबचनभीकहने योग्यहैं २ लोकगति और तत्त्वका जाननेवाला और नयबिज्ञानका जाननेवाला ऐसाभीहै तू ३ परंतुजबकार्य अकार्य प्राप्तहोते हैं तबमेरेको पूछताहै इसवास्ते मैंकहूंगा जो तुमको अच्छालगेतो ग्रहणकरो ४ किप्राप्तकाल और पराभव इसकी नहीं इच्छाकरताहुआ पुरुषकोऔर नहींभीपूछाहुआ सुहृदकोजानताहुआ कोहितकारी बचन कहनाउचित है और न्यायकहना उचित है ५ हे इन्द्र श्रेष्ठपुरुषोंको सर्वथा हितकारीबचनकहना उचितहै अप्रियवेश कहो स्नेहका आनृशय तोयहीहै ६ असत्यमें धर्मनष्ट होजाताहै और शुश्रूषाकी बांछाभीनहीं रहती है इसवास्ते श्रेष्ठपुरुषोंको प्रिय और हितबचन कहने उचितहैं ७ हेसुनने वालोंमें श्रेष्ठइन्द्र और सुनो हे सर्वज्ञमेरे बचन कल्याण कारीहैं ८ सो सुनके ऐसेही करो हेबल के नाशकरनेवाले भ्राता और सुहृद इन्होंके बैरकरतेहुये आपसमें भेद होजाताहै और तिसभेदसे आनंदका नाशहोजाता है ९ इसमें संदेह नहीं हेसुरेश्वरहित और अनुबंध सहित कार्यजानना उचित है और जो विपरीतहै १० सो बुद्धिमानोंको पश्चात्ताप करताहै औरजोपश्चात्तापकरनेवाला कार्यहै तिसका बुद्धिमान् प्रारंभनहींकरे ११ यही बुद्धिमानों के नयहैं हेदेवइस कार्यके फलको मैं सुंदरनहीं देखूंहूं हे देवताओंके अधिप इसमेंकारणसुनो १२ जौनसायह एकहरि बिश्व में स्थितहै और जगत्का प्रधानहै और संपूर्ण वुधप्रकृतिसे तिस को क्षेत्रज्ञकहतेहैं १३ और तिस अव्यक्तका जो प्रकट कार्य है हिरण्य गर्भादि जोहै सो संपूर्ण संसारका बीजहै और वहीविष्णु जंतुमात्र परमदेवका आत्मा है १४ और प्रकृतिका प्रथम भाग यश वाली

उमादेवीहै और संपूर्ण भोग्यबस्तु संज्ञकहै व्यक्तहै सर्बमय है लोक को प्रेरनेवालाहै १५ सो कृष्णनारायण है महातेजस्वीहै और संपूर्ण लोकों को प्रेरनेवाला है १६ सोही भोक्ता है महेश्वर देव है और कर्त्ता है साक्षात् विष्णु है १७ और तिस महात्माने ब्रह्मा और देव-गण पश्चात् रचेहैं और तिसमहान् देवताने प्रजापतियोंके गणभी पश्चात् रचेहैं १८ और सोही कृष्ण वेदोंमें पुराण पुरुष विष्णु ऐसा गाइयेहै और वह अचिंत्यहै अप्रमेयहै गुणोंसे परेहै १९ और सोही महात्मा विष्णु पहले अदिति ने आराधन किया था जब प्रसन्न हुयेतब कहा बरमांगो तब नमस्कार करके और नारायण जान के अदिति कहनेलगी २० सुरोत्तम तुम्हारे सदृश पुत्रकीबांछा करूंहूं तब भगवान्ने कहा कि २१ हे अदिते मेरेसमान तो भुवनमें और मनुष्यनहींहै सो निश्चयअंशकरकेतेरापुत्र मैंहूंगा२२।२३हेसुरेश्वर सोसंपूर्णोंका करनेवाला नारायण महातेजस्वी ऐसा यहतेराभ्राता उत्पन्नहुआ जिसको उपेंद्र कहतेहैं २४ ऐसेयहहरिदेव काश्यपत्व को प्राप्तहुआ भूतोंका भव्य और भव और अव्यय करताहै २५ हे इन्द्र जगतोंका नाथ और कर्त्ता और हर्त्ता ऐसा यहदेव केशव जगत् के हितकी कामनाकरके मथुरामें प्रकट हुआहै २६ और हे मान के देनेवाले जैसेमांसका पिंड चिकनाईसे व्याप्तहै ऐसे यह संपूर्णजगत् प्रभविष्णु विष्णु से व्याप्तहै २७ गुणोंसे रहित बैकुंठ संपूर्णों को प्रेरनेवाला ब्रह्मण्य देवसर्बात्मा ऐसा यह भगवान् तिनभावों करके जगत्में बिकारको प्राप्तहोताहै २८ इसवास्ते यहकेशव संपूर्णदेवता ओंकापूज्यहै और यहीपद्मनाभ भगवान् विभुप्रजाकी रचनाकरता है २९ और यहअनंत धारणाके वास्ते महान् यशको धारणकरता है और वेदबादी श्रेष्ठोंनेवही यज्ञकहीहै ३० और यहीदेव सतयुगमें श्वेतबर्णहै और त्रेतायुग में रक्तबर्ण धारणकिया और द्वापरमें पीत रूप धारणकियाहै और कलियुग में कृष्णवर्ण धारण किया है ३१ और यही केशव दिव्यरूप बराह धारणकरके हिरण्याक्ष को मारते भये और पृथ्वीको लातेभये३२और नरसिंह रूपधारण करके हिर

ण्यकशिपु को जगत्केहितके वास्ते मारतेभये३३ और यही बिष्णु बामनरूप धारण करके पृथ्वीको जीतते भये और पन्नग बंधनों से श्रीमान् दैत्यबलिको बांधतेभये ३४और उदार और अमित पराक्रम वाले बिष्णु पहले देव दानवोंकी श्रीको तुम्हारे बांछाकरतेभये ३५ और धर्मनित्य श्रेष्ठोंकीगति ऐसागोबिंद तेरेप्यारके वास्ते देवताओं के शत्रु मुख्य दानवोंको मारतेभये ३६।३७ और रामचंद्र अवतार धारणकरके रावणको मारताभया और कामगुणहोके हरिभगवान् हस्तीको मारतेभये ३८और अब संपूर्ण भूतोंमें उत्तम और जगत्का नाथ ऐसाउपेंद्र अबजगत्के हितकेवास्ते मानुषलोकमें बसताहै३६ और जटाधारण कियेकृष्णचर्म धारणकिये दंडधारणकिये ऐसे हरि मैंने दैत्योंमें बिचरता हुआ देखाहै जैसे२तृणोंकेबिषे अग्नि४० और हे इन्द्र जगत्के हितकी बांछाकेवास्ते जो गोबिंद जगत्को दानवों सेहीन करताभया इसवास्ते हे देवताओंमेंश्रेष्ठ इन्द्र निश्चयकल्प वृक्ष तुमकोजनार्दन को देनायोग्यहै ४१ ये बचन मैं असत्य नहीं कहताहूं हे इन्द्र भ्राताके स्नेहके बशहुआ तू कृष्णबिषे प्रहार नहीं करेगा४२और कृष्णचंद्र तेरे ज्येष्ठ भ्राताबिषे संहार नहींकरेगा४३ और हेदेव जोमेरा कहाहुआ को किसीप्रकार से नहींसुने तो नीति धर्म के जाननेवाले जो तेरे हितकारी मंत्रीहैं तिन्होंकोपूछ ४४ बैशं-पायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे नारद मुनिसे कहा हुआ ईश इन्द्र जगद्गुरुके प्रति यह बचन कहताभया ४५कि हेमुने हेद्विज जैसे प्रभाववाला कृष्णचंद्र तैंनेकहाहै ऐसाहीमैंने पहलेबहुत सुनाहै ४६ जो ऐसा कृष्णहै तो मैंभी श्रेष्ठों के धर्मको स्मरणकरता हुआ तिसको कल्पवृक्ष न दूंगा ४७ हे मुने महाप्रभाववाला बिष्णु अल्पकार्य के वास्तेनहींरूसेगा इसबातको चिंतवन करता हुआ मैं स्थितहूं४८हे मुने संपूर्णगुण कृष्णके कहदिये इसवास्ते तेराकल्याण हो हे मुने महा प्रभाववाले निरंतर सहने वाले होते हैं ४६ और ज्ञानरूप नेत्रोंवाले वृद्धोंके श्रोताहोतेहैं हे मुने धर्मके जाननेवालोंमें श्रेष्ठ महात्मा धर्मज्ञऐसेकृष्णथोड़े कारणसे बड़ेभ्राताके साथ विरोध

करनेको नहींयोग्यहै ५० हे मुनेअधोक्षज भगवान् जैसे मेरीमाताको बरदेताभया तैसेही तिसके पुत्रोंकीभी ज्येष्ठता सहनेको योग्यहै ५१ और हे मुने जैसेआप इच्छा करता हुआ जनार्दन उपेंद्रताको प्राप्त हुआ तैसेही भ्राताइंद्रका सन्मान करनेको योग्यहो ५२ और पहले ज्येष्ठभावको नहींप्राप्तहुये सो मधुसूदन अब ज्येष्ठ होजावो पश्चात् इंद्रका बिसर्जन किया और धर्मका जानने वाला और तपोधन ऐसे नारदमुनि ५३ सुनिश्चित बल रिपुको देखके पश्चात् कृष्णचंद्र से पालित जो द्वारकापुरी तिसको प्राप्तहोतेभये ५४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेत्रिंशदधिकशततोध्यायः१३०॥

एकसौइकतीसका अध्याय॥

बैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् इसके अनंतर मुनियोंमें श्रेष्ठ नारदमुनि रमणीक द्वारकापुरीको प्राप्तहोकर पुरुषश्रेष्ठ और शत्रुओंको नाशकरनेवाले और सत्यभामासहित अपने स्थानमें बैठेहुये और संपूर्ण तेजसे अतितेजवाले शरीरसे बिराजमान और तिसनारदमुनिकोही चिंतवन करते हुये बाक्यमात्र से सत्यभामाको समझातेहुये ऐसे नारायणको नारदमुनि देखतेभये १।२।३ औरअधोक्षज भगवान्भी नारदमुनिको देखकर सन्मुख उठतेभये और पश्चात् बिधिदृष्टकर्मसे पूजन करतेभये ४ पश्चात् सुख पूर्बक बैठे हुये और परिश्रमसेरहितहुये ऐसे नारदमुनिकोहंसके मधुसूदनभगवान् कल्पवृक्षका वृत्तांत पूछतेभये ५ पश्चात् हेजनमेजय नारदमुनि बिस्तार से इंद्र के संपूर्ण बाक्यों को बर्णन करताभया ६ पश्चात् कृष्णचंद्र तिन संपूर्ण बाक्योंको सुनके नारदमुनि के प्रति बचन कहता भया हे धर्म धारण करनेवालोंमें श्रेष्ठ कलमैं अमरावती पुरीकोजाऊंगा७ ऐसे कहके नारदके सहित सागरमें जातेभये और तहां एकांतमेंहरि नारदको संदेशा देतेभये ८ हे तपोधन इन्द्र के भवन में जाके और मेरीतर्फ से महात्मा इन्द्रको प्रणाम कर यह कहना कि ९ हे प्रभो युद्धमें मेरेआगे ठहरनेको तू योग्यनहींहै और कल्पवृक्ष के लानेमें

तमेरेको समर्थजान १० जब कृष्णचंद्रने ऐसे कहा तब नारद स्वर्ग में गया और कृष्ण के कहेबचनोंको अमित पराक्रम वाले देवेंद्रको कहताभया ११ तिसके अनन्तर इन्द्र बृहस्पतिजीको कहताभया हे जनमेजय बृहस्पति सुनके यह बचन कहताभया १२ हे इन्द्र अहो ब्रह्मसदनको धिक्कारहै क्योंकि मेरेजानेसे यहदारुणमंत्र भेद प्रवृत्त करदिया १३ और हे भुवनेश्वर मेरेकोनहीं कहकर किसीहेतुसे यह कार्य आरंभकरदिया १४ अथवा यह भाविहै हे वृत्रासुर के नाशक इसको निवृत्तकरनेको समर्थनहीं १५ हे इन्द्र तात्काल कार्यकाआरंभकरना श्रेष्ठनहीं इसवास्ते यहकार्य कुछ हलकापनहीं करेगा १६ और ऐसेसुन महेन्द्र महात्मा बृहस्पतिको कहताभया हे गुरो जो इस समयमें हमकोकार्य कर्तव्यहै सोकहो १७ उदार बुद्धिवालाऔर धर्मात्मा और गत अनागत तत्त्व का जाननेवाला ऐसे बृहस्पतिजी नीचेको मुखकर और तिस इन्द्रको यहबचन कहतेभये १८ हे इन्द्र पुत्रकरके सहित तुयत्नकर और जनार्दन के साथ युद्धकर और जैसे न्यायहोगा वैसेहीकरूंगा १९ बृहस्पति ऐसे कहके क्षीरसागरमें गया और तहांजाकेमहात्मा कश्यपमुनिको संपूर्ण वृत्तांत कहतेभये २० तिसकोसुनके क्रोधभरे कश्यपजी बृहस्पतिजीको कहतेभये भो सर्बथा ऐसेही यह भाविहै इसमें संदेह नहीं २१ महर्षि देवशर्मा से समानभार्याकोयह मांगताभयासोइन्द्रके यहअध्यापनकृतदोषहै २२ हे मुनेइसदोष के शांति के अर्थ मैंनेयहजलमेंवासकियाथा सोदारुण दोषप्राप्तहोगया २३ इसवास्ते हे तपोधन अदिति के साथमें वहां जाऊंगा सो दैव अनुकूल होगा तो निवारण करदूंगा २४ पश्चात् बृहस्पतिजी कश्यपकोकहतेभये हेतपोधनप्राप्तकाल तुमकोनिवारण करनायोग्यहै २५ तथेति अर्थात् तैसेहीकरूंगा ऐसे कश्यपजीबचन कहकर और बृहस्पतिजीको स्थापनकर भूतगणों के ईश्वर रुद्रदेव की पूजन के वास्ते जाते भये २६ और तहां वरके वास्ते अदिति सहित बुद्धिमान् कश्यप महात्मा महादेवजी का पूजन करताभया २७ औरवेदोक्त और स्वस्वकृत स्तोत्रों से तिस जगद्गुरुकी ऐसे

स्तुति करताभया २८ हे भगवन् उरुक्रम संपूर्णोंके रचनेवाले जगत् के रचनेवाले ईश्वर धर्म दृश्यबरेश पार्वती सहित धृतिमद्धाम ऐसे तुमकोमहा देवजीमैं स्तुति करताहूं २९ और जो ईश्वर देवताओंका अधिप है और पापोंका हर्ताहै और जिसने जगत्‌रचा है और जल जिसके गर्भ में है ऐसे बिश्वेश्वर शरणरूपको मैं प्राप्तहोता हूं ३० और अंतःकरणमें बिचरनेवाला और रोचनऔर सुंदरभुजाओंवाला महाबल धर्मकानेता ईड्य सहस्रनेत्र शतवर्त्मा उग्र बिश्वको रचने वाला ऐसे महादेवजी को नमस्कार करताहूं ३१ और शुचिशंभु भूतनाथ धुरंधर चंद्र चिन्ह ऐसे महादेवजी को मस्तक से नमस्कार करता हूं ३२ आशुव्रत को धारण करनेवाला शूलको धारण करने वा धर्मको धारण करनेवाला ऐसे महादेवजी के शरण प्राप्तहोता हूं ३३ और देवताओं के देवता और पवित्रों के पवित्र कृतियों के मध्यमें कृतिगोपतियोंके मध्यमेंपति ऐसे महादेवजी की शरणको मैं प्राप्तहोताहूं ३४ऐसे अत्यंत स्तुतिसे प्रसन्नहुए धर्मात्मा महादेवजी कश्यपमुनिको दर्शनदेतेभये ३५ और प्रसन्नहोकर यह कहनेलगे कि हे प्रजापते तू जिसवास्ते स्तुति करता है सो मैंने जानलिया महात्मा इन्द्र और उपेन्द्र प्रकृति को प्राप्तहूंगा ३६ और धर्मात्मा जनार्दन कल्पवृक्षको लेजायगा क्योंकि देवशर्मा मुनिने यह इन्द्र उपध्याता करदियाहै जिससे ३७ हे कश्यपतपसेदीप्त इसकीभार्या को ग्रहणकरनेकी वांछाकरताभया ३८ हेधर्मके जाननेवालेकश्यप तुम अदितिकरके सहित इन्द्रकेभवनमेंजावो तिससे निश्चयतुम्हारे पुत्रोंका कल्याण होगा ३९ ब्रह्माके पुत्र और अमित पराक्रमवाले विद्वान् ऐसे कश्यपजी हरके बचनसुनके और देवताओं गुरु रुद्र को प्रणामकरके स्वर्गमें जातेभये ४० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेमहादेवस्तवने एकत्रिंशदधिकशतोऽध्यायः १३१ ॥

———※———

एकसौबत्तीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय इसके अनंतर महातेज विष्णु दोघड़ी दिनचढ़े सिकारके मिससे रैवतपर्वतकोजातेभये १ पश्चात् एक रथमें सारथिको आरोपणाकरके औरपश्चात् जा ऐसे प्रद्युम्नको कहके और रैवलपर्वतमें जाके तहां दारुकसारथिको बचन कहतेभये २ । ३ कि हे दारुक हे सौम्य इस मेरे रथको घोड़ोंको प्रेरताहुआ आधेदिन हे सारथियोंमें श्रेष्ठ रथकरकेद्वारकाको प्राप्तहूंगा ४ पश्चात् जीतकेवास्ते उद्यमयुक्तहुये महाराज कृष्ण ऐसे संदेशादेकर गरुड़पर सवारहोतेभये ५ और अमितपराक्रमवाले बुद्धिमान् सात्यक और शत्रुओंको नाशकरनेवाले प्रद्युम्न ये दोनों आकाशगामी रथकरके कृष्णचंद्रके पाछे जातेभये ६ पश्चात् एक निमेषमात्रही के अंतरसे बुद्धिमान् बासुदेव कल्पवृक्ष हरनेकी बांछाकरके इन्द्रके नंदनबागमें जातेभये ७ और तिन देवताओंके देखतेहुये यह महाबल भगवान् कल्पवृक्ष को उपाड़ के गरुड़पर रखतेभये और कल्पवृक्ष पक्षिराजा गरुड़ को और केशव भगवान् को बिनाही यतन प्राप्तहोगया १० और बिग्रहसेभयकरनेलगा तव भगवान्ने आश्वासनाकराई और कहनेलगे ११ किहे पश्चात् प्रस्थित तिस कल्पवृक्ष को देखकर तिसके अनंतर श्रेष्ठ अमरावतीपुरीकी परिक्रमा करतेभये १२ पश्चात् नंदनबनकीरक्षा करनेवाले पारिजात वृक्षको हरताहै ऐसे इन्द्रकोकह पश्चात् इन्द्र ऐरावतपर सवारहोकर जाताभया १३ और पश्चात् रथमें बैठके जयंत भी आताभया पश्चात् १४ पहलेआये शत्रुओंको नाशकरनेवाले केशवको देखके इन्द्रकहनेलगे कि हे मधुसूदन ऐसे क्योंप्रवृत्तहुआहै १५ गरुड़पर सवारहुये भगवान् प्रणाम करके इन्द्र को वचनकहतेभये हे भ्राता तेरीबधूके पुण्यकेवास्ते यह कल्पवृक्षलियाहै १६ ऐसे सुनके इन्द्रने वचनकहा हे कमलकेसेनेत्रोंवालेकृष्ण ऐसे मतकर युद्धकियेविना कल्पवृक्ष नहीं लेजानेदूंगा १७ हे महा

बाहो मेरेसाथ युद्धकर और कौमोदकी गदाको मेरेवि गेर जिससे तुम्हारी प्रतिज्ञा सफलहो १८ हे भारत तिसके अनंतर कृष्णचंद्र हंसतेहुयेकी तरह तीक्ष्णबाणोंसे इंद्रकेहस्तीको भेदनकरनेलगे १९ और इन्द्र श्रेष्ठशरोंसे गरुड़को बींधनेलगा पश्चात् इन्द्रअपनेबाणों से बड़ेवेगवाले कृष्णचंद्रके बाणोंको बींधताभया २० और जिन २ बाणों को इन्द्र छोड़ताभया तिन तिनको माधव छेदन करताभया २१ और माधवकेबाणोंको इन्द्र छेदन करताभया पश्चात् हे कुरु नंदन इन्द्रके धनुषके शब्दसे और कृष्णचंद्रके शारङ्गधनुषके शब्दसे संपूर्णस्वर्गबासी मोहको प्राप्तहोतेभये २२ तिन्होंका संग्रामहोतेहु ये गरुड़पर स्थितहुये कल्पबृक्षके हरनेको महाबली जयंत दौड़ता भया २३ तब कंसको मारनेवाले कृष्णचंद्र अरे इसकोनिवारणकर निवारणकर ऐसे कहनेलगे २४ तब प्रतापवाले रुक्मिणी के पुत्र प्रद्युम्न जयंत को निवारण करते भये जीतनेवालों में श्रेष्ठ जयंत और येरथमेंबैठेहुये जयंत हंसकरबाणों से प्रद्युम्नके अंगों को भेदन करताभया २५ और कमल के से नेत्रोंवाले प्रद्युम्न सर्प के समान बाणों से जयंत को भेदनकरतेभये २६ हे कुरुनदन ऐसे जयंत और प्रद्युम्न का बड़ा घोर युद्ध होता भया २७ और अस्त्र धारणकरने वालों में श्रेष्ठमहेंद्र और उपेंद्रके पुत्र जयंत और प्रद्युम्नकृत और प्रतिकृत करतेभये२८और इसमहाघोर संग्रामकोदेवता और मुनि और सिद्ध चारणये संपुर्ण आश्चर्य युक्त हुए देखते भये २९ और पश्चात् हेकुरुनंदन देवराजकासखा और दूतब्रह्माके वरदानसेअव ध्य और अस्त्र विद्याकाजानने वालाऐसा प्रवरनामसे बिख्यात देव का दूत फिरकल्पवृक्ष केहरनेकीइच्छाकरनेलगा ३० तिसआतेहुए कोदेख कृष्णचंद्र सात्यकिको वचन कहतेभयेहेसात्य के वहींस्थित हुआ इसप्रवरको निवारणकर ३१ और हेसात्यकेमहा निर्दयबाण नहींछोड़ने क्योंकि इसब्राह्मणकी चपलतातोसर्वथा सहनीहीयोग्य है ३२ पश्चात् यहद्विजसाठ बाणोंसेरथमें स्थितहुए सारथि को और गरुड़परस्थितहुए कृष्णचंद्रको भेदनकरताभया३३पश्चात् शिनीका

नता जबधनुषको लेकरबाणोंको छोड़नेलगा तबपुरुषोंमें सिंहरूपभ
गवान् तिसकेबाणोंको काटकेयहवचन कहतेभये ३४ हेशिनेअपने
मार्गमें ठहर२ब्राह्मण नहींमारनायोग्यहै अपराधवाले ब्राह्मणभीया-
दवोंकोनहीं मारनेयोग्यहैं ३५ पश्चात् हेकुरुनंदन प्रवरहंस केशव
को यह वचन कहताभया ३६ हे शूरबीरशांति सेपरिपूर्णहुआ संपूर्ण
प्रकारसे रणमेंयुद्धकर ३७हेयादव मैं भीजमदग्निके पुत्रपर्शुरामजी
काशिष्यहूं और प्रवरमेरानामहै और बुद्धिमान् इन्द्रकामैंमित्रहूं हे
माधव मेरेकोमानतेहुए देवताभीयुद्धकी इच्छानहीं करतेहैं ३८ हे
माधव सौहृद कोआनृण्यको मैंआजप्राप्तहूंगा हेराजन् ऐसे शैनेयका
और द्विजमुख्यका दिव्य अस्त्रोंसे बड़ा घोरसंग्राम बढ़ताभया ३९ हे
राजन् तिनमहात्माओं केसंग्रामका प्रारंभहोते पृथ्वीचलतीभई और
हजारहां तारा गण चलतेभये ४० और अत्यंत घोर युद्ध में प्रद्यु-
म्नतोजयंतको और जयंत प्रद्युम्नको ऐसेकहतेहुए परस्परमेंयुद्धकरते
भये४० हेशूरबीरशस्त्रकोपकड़औरछोड़ औरइसकेअनंतर जिससमय
में प्रद्युम्नको संभाषण करकेजयंतअस्त्र मारनेको फेंकताभया४१
उसीसमयमें आतेहुएअस्त्रको देख तीक्ष्णबाणों काजालबांध के ति
सको रोकताभया सोबड़ाआश्चर्य होताभया४२और हेकौरव्यतिस
के अनंतररुक्मिणीकेपुत्रप्रद्युम्न कातोदानवोंको मर्दन करनेवाला
घोरअस्त्र रणके मस्तकमें पड़ताभया ४३ और तिसअस्त्रसे महात्मा
प्रद्युम्नका रथ दग्धहोगया और सोप्रद्युम्नको तोनहींभस्म करता
भया क्योंकि दग्धहोतेरथ से प्रद्युम्नभागताभया ४४ इसकेअनंतर
रथियोंमेंश्रेष्ठ नारायण कापुत्र प्रद्युम्नरथसेरहित होकर और धनुष
लेकर आकाशमें स्थितहुआ जयंतकोयह वचन कहताभया ४५ हे
महेंद्रकेपुत्रजोदिव्यअस्त्रतू छोड़ताभयाऐसेतोमैंसौशस्त्रोंसेभीनहींहनन
होऊं ४६ हे अमरनंदन प्रयत्नकर और शिक्षाओंका यत्नअबमेरे
कोदिखा युद्धमेंमेरेतूकुछ अतिशयकरनेवाला नहीं है ४७ और हेज
यंतआदिमें शस्त्र धारणकिये तेरेकोरथमें बैठा देखके मेरे भयहोता
भया और अबतोबलाबल देखकरमैंनहीं डरताहूं ४८ और हेजयंत

यह कल्पवृक्ष तैंने मनसेस्पर्श करना योग्य है और हाथों से छूने को तो तू इसको समर्थ नहीं ४६ और अस्त्रके तेजसे जो रथ दग्ध करदिया ऐसेहजार रथोंको मैं मायासे रचने को समर्थहूं ५० ऐसे कहा हुआ महाबल जयंत तपके तेजसे उत्पादन किये अस्त्रको छोड़ता भया ५१ पश्चात् तिस महाबेगवाले अस्त्रको शरजालों करके निवारण करताभया पश्चात् चारों दिशाओं में चार अस्त्र और छोड़ता भया ५२ तिनको भी प्रद्यु म्न रोकता भया पश्चात् पांचवां रुक्मी के प्रति और छोड़ा सोभी छेदन करदिया ५३ और मुराड़ के समान प्रकाश करतेहुये जिनबाणों को और अस्त्रों को जयंत प्रद्यु म्नकेप्रतिछोड़ता भया तिनसंपूर्णोंको प्रद्यु म्न बाणोंसे निवारण करतेभये ५४ पश्चात् जयंतफिर जब तीक्ष्ण बाणों से प्रद्यु म्न को भेदनकरताभया तबपुण्य कर्मवाले स्वर्गबासी एक बार शब्दकरते भये ५५ और प्रद्यु म्न महात्मा के स्थैर्य और शैब्य को देखकर आश्चर्यकरतेभये ५६ और प्रवरके धनुषको जबशूरबीर शिनिपुंगव भेदनकरताभया तबयह प्रवर और बड़े शब्द वाले इंद्रके दियेधनुष को ग्रहण करताभया ५७ तिसउत्तम धनुषसेयह शूरबीर प्रवरसूर्य केशीकांतिवाले उत्तमबाणों को छोड़ताभया और अमित पराक्रम वाले शैनेयको धनुषको छेदन करताभया और बाणों से सात्यकि को बींधताभया ५८ और पश्चात् हेकुरुनंदन बुद्धिमान् शैनेयबहुत दृढ़ और धनुषलेकर रणमें प्रवरको बींधताभया ५९ और ये दोनों आपसमें मर्मको भेदन करनेवाले तीक्ष्ण बाणोंसे कवचोंको तोड़ते भये ६० और शरीरोंसे मांसको भेदन करते भये पश्चात् शूरबीर प्रवर और बाणसे फिर प्रद्यु म्नके धनुषको छेदनकरता भया ६१ और तीनबाणों से प्रद्यु म्नको भेदनकरताभया जबयह और धनुष लेनेको मनकरता भया तबयह प्रवर फुरतीकरके गदासे ताड़ना करताभया ६२ पश्चात् यह गदासे ताड़नकिया सात्यकि हंसता हुआखड्ग और ढालको ग्रहणकरताभया और यहबुद्धिमान्धनुषको धारण नहींकरताभया ६३ पश्चात्यह प्रवर सात्यकि यदुनंदनको

हंसताहुआजानके सौबाणोंको एकबार छोड़ताभयापश्चात् प्रद्युम्न निर्मल कांतिवाला खड्गइसको देताभया ६४ और प्रवरइसखड्ग को भालेसेछेदन करताभया और हंसताहुआ यह प्रवर खड्ग की मुष्टिको तोड़ताभया ६५ और सीधेसीधे बाणोंसे बर्मकोभेदनकरते भये और शक्तिसे यहप्रवर हृदयमें ताड़ना करताभया और नाद करताभया ६६ पश्चात् तिसको बिकल जानके पश्चात् कल्पवृक्ष केहरनेकी इच्छाकरकेयह प्रवर गरुड़के पास स्थित होताभया ६७ तबयह गरुड़इस प्रवरको रथसहित दोकोशपर फेंकताभया तबइस कारथ टूटगया प्रवर मोहको प्राप्तहोगया ६८ पश्चात् जयंतअपने रथसेउतरके और तिसप्रवरको अपनेरथमें आरोपण करताभया ६९ और बारंबारपड़तेहुये और मोहको प्राप्तहोतेहुये शैनेयको प्रद्युम्न आश्वासना करताभया और पितृव्यसे मिलताभया ७० पश्चात् तिस शैनेयकोभगवान् हाथसे स्पर्शकरतेभये सोस्पर्शकरतेही फिर वैसाही शरीर होगया ७१ पश्चात् युद्धमें चतुर प्रद्युम्न तो कल्प वृक्षके दहनेतरफ स्थितहुआ और शिनिपुंगव बायेंतरफ स्थितहोता भया ७२ पश्चात् हेभारत जयंत और प्रवर एकरथमें स्थित होकर जबसन्मुख पड़नेलगे तब हंसके महात्मा इन्द्रकहनेलगा ७३ कि हे पुत्रहेप्रवर गरुड़के पासकभी नहींजाना यहबिनिताका पुत्रबड़ाबल वान्है और पक्षियोंका राजाहै ७४ और शस्त्रधारण करके मेरेबायें और दहनेतरफ स्थित होजाओ ७५ और स्थितहुये मेरेको युद्धकर तेहुये को देखो ऐसे कहेहुये ये दोनों शूरबीर इन्द्र के पसवाड़ों में स्थितहुये देवराज और जनार्द्दनके युद्धको देखते भये ७६ पश्चात् महास्त्रोंसे उत्पन्नहुये और बज्रकेसा शब्दवाले ऐसे तीक्ष्ण बाणोंसे इन्द्र गरुड़ को भेदन करताभया ७७ पश्चात् शूरवीर प्रतापवान् ऐसागरुड़ तिनबाणों को नहींगिनताहुआ इन्द्रके हस्ती के सन्मुख दौड़ताभया ७८ हेराजन् पश्चात् येदोनों बलवान्गज और गरुड़ आपस में घोरयुद्ध करनेलगे पश्चात् शब्दकरताहुआ ऐरावत गज पतिदांतोंसे और सूंडसे और शिरसे गरुड़को हनन करताभया ७९

और तैसेही बलोत्कट गरुड़बड़े तीक्ष्णनख रूप अंकुशोंसे औरपांखों केगेरनेसे इन्द्रकेहस्तीको ताड़नादेतेभये ८० ऐसे हस्ती औरगरुड़ का एकमुहूर्त जगत्को आश्चर्य करानेवाला और देखनेवालों को भयका देनेवाला ऐसाघोरयुद्ध होताभया और हेभारत पश्चात्अं-कुशकेसे तीक्ष्णचरणों से महाबल गरुड़ ऐरावत हस्ती को ताड़ना करताभया ८१ पश्चात् प्रहारोंसे दुःखित हुआहस्ती स्वर्गसे इसी द्वीपमें पारिपात्र श्रेष्ठपर्वतपर पड़ताभया ८२ और कारुण्यसे और सौहार्द से तिस पड़तेहुये हस्तीको भी इन्द्र नहीं छोड़ता भया और पारिजात करके सहित महाबल कृष्णचंद्र भी पश्चात् चलता भया ८३ इन्द्रपारिपात्र पर्वतपर स्थित होगयाजब ऐरावतको चेत हुआतबफिर युद्धसड़नेलगा ८४ हेकुरुशार्दूल जनमेजय बड़ेतीक्ष्ण और अस्त्रों से योजनकर सर्पके समान शरोंसे इन्द्र और केशवका आपसमें महान् युद्ध होताभया ८५ हे राजन् पश्चात् इन्द्र बज्र और अशनिको बारंबार ऐरावतके शत्रुगरुड़ परछोड़ता भया ८६ पश्चात्गरुड़ इन्द्रकेवज्र और अशनि के पड़नोंको सहताभया क्यों कि तपके बलसे यह बलियोंमें श्रेष्ठगरुड़ संपूर्णोंसे अवध्य है ८७ परंतु बज्रको मानता हुआ अपनीएक पंखको गेरताभया पश्चात्देव राजाइन्द्रका फेंकाहुआवज्र८८पर्वतमें लगताभयातिसको कृष्णचंद्र भीदेखतेभये पश्चात् गरुड़ करके आकाशमें स्थितहुये८९ भगवान् पश्चात् प्रद्युम्न से कहते भये ९० हे पुत्र द्वारवती में जाकेजल्दी रथल्यावो और सारथिभी ल्याओ और बलदेवजी को और उग्रसेन कोयह कहदोकि कलइन्द्रको जीतके द्वारकापुरी में प्राप्तहोवेंगे ९१ पश्चात् धर्मात्मा प्रद्युम्न पिताकी आज्ञा को अंगीकार करके और एकघड़ीमात्रसे द्वारकामें पहुंचकर और संपूर्ण वृत्तांत कहकर रथमें बैठदारुक सारथि सहित उसीजगह आतेभये ९२।९३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांपारिजातहरणेद्वात्रिंश द्विकशततोऽध्यायः १३२॥

—*—

एकसौ तेतीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् जनमेजय भगवान् तिसरथ में बैठकर और जहां सुरपति इन्द्र ऐरावतपर सवारहोकर स्थित था तहां पारिपात्र पर्वतमें जातेभये१पश्चात् पार्वतोंमें श्रेष्ठपारिपात्र आएहुए जनार्दनको देखके शाखाके समानहोकर भगवान्केप्यारके वास्ते पृथ्वीमें प्रवेशहोताभया२हे राजन् तब भगवान् इस पर्वतपर बहुत प्रसन्न होतेभये पश्चात् युद्धके वास्ते गये हुये भगवान् को जानके और कल्पवृक्ष सहित गरुड़ पीछे जाताभया ३ और प्रद्यु म्न और सात्यकिये दोनों महाबल गरुड़ परस्थित होकर कल्पवृक्ष की रक्षाके वास्ते जातेभये ४।५ पश्चात् हे राजन् सूर्यतो अस्तहो-गयाऔर रात्रि प्रवृत्तहुई तब फिर भगवान् और इंद्र को युद्ध होने लगा ६ पश्चात्प्रहारोंसेहतहुयेहस्तीको भगवान् देखकर इंद्र को कहने लगे ७ कि हे महावाहोगरुड़के प्रहारोंसे हतहुआ ऐरावतकी सामर्थ्य नहींहै इसवास्तेविश्रामकरो ८ प्रातःकाल फिर युद्धमेंप्रवृत्त होजाओ ऐसे सुन इन्द्र भी भगवान् के बचनोंको अंगीकार करता भया ९ हे राजन्धर्मात्मा इन्द्रतिस पर्वतमेंही कमलोंके समीपबास करताभया १० पश्चात् तहां ब्रह्माजी और महाऋषि कश्यप और अदितिऔर संपूर्णदेवतामुनि ११ साध्यविश्वेदेवा और अश्विनीकु-मार और आदित्य और रुद्र और बसु ये संपूर्ण तिस पर्वत में आते भये१२और प्रद्युम्नपुत्र और सात्यकि इन्होंकरके सहित नारायण भी तिसरमणीक पर्वतमें वासकरते भये१३ और हे राजन्भगवान् की भक्तिसे जोपारिपात्रशाखा प्रमाणसे होताभया तिसको भगवान् यहवरदान देतेभये किहेमहागिरे तू संसारमें शाखापाद नामसे वि-ख्यातहोगा और हिमवान्सेभी पवित्र होगा१४।१५औरहेपर्वतोंमें श्रेष्ठ इसीप्रकारसेही बहुत चित्रमृगोंसे युक्तहुआ और सुमेरुके साथ स्पर्द्धा करताहुआ ऐसेही पृथ्वीमेंस्थितरह१६पश्चात्केशव ऐसेपर्व-तको वरदान देकर और महादेवजीको नमस्कार करके श्रीगंगाजी

का ध्यान करते भये १७ पश्चात् कृष्ण की यादकरी गंगाजी तहां आतीभई उसीसमय में भगवान् इसका पूजन करके स्नान करते भये १८ पश्चात् सर्ब ईश्वरों केईश्वर महादेवजी का ध्यानकिया और बिल्वपत्रका ध्यानकिया १६ तब बिल्वपत्र सहित महादेवजी आये तब भगवान् गंगाजल और बिल्वपत्र और कल्पवृक्ष के पुष्प इन्होंसे महादेवजीका पूजनकर २० और मधुर बाणियोंसे कृष्णचंद्र महादेवजीकी ऐसे स्तुति करतेभये २१ हेरुद्र तू रुदनकरने से और रुदनकरानेसे रुद्रकहाताहै सो भगवन् भक्तोंकाभक्त और वत्सलों कावत्सल मेरेको ऐसा जानके कीर्त्ति से युक्तकरो अर्थात् मेरीजीति करो मैं तुम्हारे शरण प्राप्तहुआहूं २२ और हे अत्यंतधीर अब्यक्त से तेरेसे यह जगत् उत्पन्नहुआ है इस वास्ते संपूर्णों के ईश्वरको और अत्यंत उदार को ऐसे तेरेको भवकहतेहैं २३ और हे देवदेव जीतेहुये संपूर्ण देवता और असुर और भूत इन्होंने तेरापूजन कियाहै इसवास्ते बिश्व के रचनेवाले तेरे को महेश्वर कहते हैं २४ और हे भगवन् कल्याण को इच्छा करनेवाले देवताओं से जो तू संपूर्णकालमें पूजनीयहै इसवास्ते तेरेको देवदेव कहते हैं २५।२६ और संपूर्ण शत्रुओंको शिक्षासे और संपूर्ण ब्यापीहोनेसे औरकल्याणकारीहोनेसे तेरेको सर्बकहतेहैं २७ और हे सर्बनाथ संपूर्ण शत्रुओं को शांतकरताहै इसवास्ते श्रेष्ठ धर्मात्मा तेरेको शंकर कहते हैं २८ और हे भगवन् पहलेइन्द्रने बज्रका परिहारकिया इसवास्ते तेरेको नीलकंठ कहते हैं २६ और हे भगवन् जगत्स्वरूप जो तू है और हे देवदेव मैं और ब्रह्मा और कपिल और ब्रह्मा के संपूर्ण पुत्र हे भगवन् ये सम्पूर्ण तेरे से उत्पन्न हुए हैं इसवास्ते तू संपूर्णों का ईश्वरहै ३० और कारण है और आत्मा है और ईड्यहै बैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् ऐसे स्तुतिकिया भगवान् महादेवजी दाहिने हाथको पसार के गोबिंदको यह बचन कहता भया कि हे सुरोत्तम तेरे को बिचारेहुये अर्थोंकी प्राप्ति होगी और तू पारिजात को निश्चय हरेगा और तेरेमनको पीड़ामतहो ३१ हे प्रभो मैनाकपर्ब्बत

के आश्रयहोकर जब तू तप करताभया हे कृष्ण तब दियेहुये वर-
दानको तू यादकर और पश्चात् स्थिरताको प्राप्त हो ३२ हे कृष्ण
जो मैं कहताभया कि तेरेको मारनेवाला कोई नहीं है और जीतने
वालानहींहै और तू शूरवीरहैयेमेरेबचन असत्यनहींहैं ३३ और हे
धर्मज्ञ और हेदेवताओंमेंश्रेष्ठ इसतेरे स्तोत्रकरके जो कोईपुरुषमेरी
स्तुतिकरेगा सोधर्मको भजनेवालाहोगा ३४ और हे अनघ अर्थात्
पापरहित इसरुद्रमेंजय और पूजाको मैं प्राप्तहोकर बिल्बोदकेश्वर
मेरानाम होगा ३५ और हे केशव इस देश में स्थापन किया मैं
भक्तिमान् और विद्वानोंका पोषणकरूंगा ३६ और इसदेशमें यहअ-
विंध्यानाम गंगाजी होगी और तीनही रात्रिमें यह वांछितलोकोंको
प्राप्तहोगी ३७ और हे जनार्दन गंगास्नान के समान और स्नान
नहींहोगा और षट्पुर नाम दानवों का नगरहोगा और हे भगवन्
इस देशमें महाबल ३८ और हिंसाकरनेवाले जगत् में कंटक रूप
और ब्रह्मा के वर करके देवदानवोंसे अवध्य हे गोबिंद ऐसे दानव
इस महागिरिकी शिखरमेंबसेहैं तिनको तुममारो ३९ वैशंपायन-
जीकहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय महादेवजी ऐसे कह के और म-
हात्मा वासुदेवजीसे मिलकर पश्चात् अंतर्द्धान होतेभये ४०
तिसरात्रिमें गोबिंदफिर पर्वतको कहताभया कि हे पर्वत श्रेष्ठ तेरे
नीचे यहां महासुर बसते हैं सो जगत् के हितके वास्ते मैंने यहां
रोकेहैं ४१ सोमेरेरोके हुये येमहाबल नहींनिकसैंगे और दरवाजा
रोकने से यहीं नष्ट होजावेंगे ४२ और हे महा गिरे तेरे विषे मैं
सदा सन्निहित रहूंगा और हे पर्वत घोर सत्वों को मारता हुआ
वसूंगा ४३ और हे पर्वतों में श्रेष्ठ जो पुरुषऊपरको भुजाकर के
तेरेपर तपेगा सो हजार गौवों के फलको प्राप्तहोगा ४४ और हे
पर्वत जो तेरे पत्थर की मूर्त्ति वनाकर भक्ति से पूजन करेगा सो
मेरीगतिको प्राप्त होगा ४५ ऐसे बरके देनेवाले कृष्ण चंद तिस
पर्वतपर अनुग्रह करते भये ४६ हे राजन् तिसदिनसे लेकर हरि
नित्य तहां स्थित रहता है और विष्णुलोक की वांछा वाले

कृतात्मा तहां पाषाणोंकी मूर्ति बनवाकर पूजन करते हैं ४७ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत बिष्णुपर्व भाषायां पारिजातहरणे त्रयस्त्रिंशदधिक शतोध्याय १३३॥

एकसौचौंतीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् पश्चात् उदारचित्तवालेकृष्ण चंद्र श्रेष्ठ रथमें सवारहोकर और बिल्वोदकेश्वर महादेवजीको नमस्कारकरके जातेभये १ पश्चात् रथमेंस्थितहुये मधुसूदनसंपूर्णदेवताओंकरके स्थितहुये इन्द्रको बुलातेभये २ तिसके अनंतर इन्द्र और जयंत घोड़ोंसेभूषित सुंदररथमेंबैठ ३ हे राजन् कल्पवृक्ष के वास्ते तिनदोनों देवोंका दैवयोगसे युद्धहोताभया ४ पश्चात् हे राजन् शत्रुओंको नाशकरनेवाले बिष्णुतीक्ष्ण बाणोंवाले जालोंसे इन्द्रकोसेनाको बींधतेभये ५ पश्चात्दोनोंशूरबीर समर्थभीहैं परंतु कृष्णकोतो इन्द्र नहीं ताड़ना देताभया और इन्द्र को कृष्ण ६ पश्चात्जनार्दन बड़े तीक्ष्णदश बाणोंसे एक एक घोड़ेको छेदन करताभया ७ और इन्द्रअस्त्रोंसे अभिमंत्रित घोरबाणों सेसैनान्यको छेदनकरताभया ८ पश्चात् कृष्णचन्द्र हजारहां बाणोंसे गजको आच्छादन करते भये और महातेजस्वी इंद्र गरुड़को आच्छादन करते भये ९ पश्चात् तिसदिन महात्मा नारायण और इंद्र रथोंको पृथ्वी में स्थितकरके युद्ध करते भये १० और हेभारत तबपृथ्वी ऐसेकांपतीभई जैसेजल में नौका और दिशाओंको दाहहोनेसेचारोंतर्फदिग्देशहोताभया ११ और तिस समय में पर्वत कांपते भये और सैकड़ों वृक्ष पड़ते भये और धर्मगुणोंसे युक्त मनुष्य पृथ्वीपर पड़ते भये १२ और हे राजन् सैकड़ोंवज्र पड़तेभये और नदी उलटी बहतीभई १३ और चारोंतर्फ के पवन चलते भये और अंगार पड़ते भये १४ और आकाश में चारोंतर्फ से ग्रहोंके साथ ग्रह युद्ध करते भये १५ और स्वर्गसे सैकड़ोंतारा पृथ्वीपर पड़ते भये और दिशाओंके हस्ती संक्षुभित होगये १६ और पृथ्वीतल में नाग संक्षुभित होगये और

कठोर शब्दोंसे गर्जतेहुये और अंगार शोणित की वर्षा करनेवाले और लालगर्दभकेसे आकारवाले ऐसे मेघोंसे आकाश आवृतहोता भया १७।१८ और हेराजन् जबये दोनों रणभूमिमें स्थितहुये तब पृथ्वीस्वर्ग आकाश संपूर्ण व्याकुल होगया और तिसकालमें जगत् के हितकी इच्छा करतेहुये मुनिगणतो मंत्रजपतेभये और महात्मा ब्राह्मण तिन्होंके पासस्थित होतेभये १९ और तिसके अनंतरमहा तेजस्वी ब्रह्माकश्यपजीको बचन कहतेभये हेमुनेबधूकरके सहितजा और पुत्रोंको निवारणकर २० पश्चात् कश्यपजी ब्रह्मा के बचन मानके और रथमें स्थित होकर भगवान् के पास जातेभये २१ पश्चात् इंद्र और कृष्णचंद्र ये दोनों महाबलवान् कश्यपजी और अदितिको देखकर रथसे उतरतेभये २२ और शत्रुओं के नाश करनेवाले येदोनों शूरवीर शस्त्रोंको धरके पश्चात् संपूर्ण भूतोंकेहितकारी और धर्मतत्वके जाननेवाले ऐसे माता और पिताओंको प्रणाम करते भये २३ पश्चात् हाथोंसे इन दोनवोंको पकड़के अदिति वचन कहने लगी हेपुत्राओ थोड़ेकार्यको आगेकरके तुमदोनोंभ्राता क्यों आपसमें मारनेकी इच्छा करतेहो २४ और हेपुत्राओ तुम्हारे समानमैं औरको नहीं देखतीहूं २५ पश्चात् कहने लगी हेपुत्राओ जोमेरे और तुम्हारे पिताके वचनोंको मानोहोतो शस्त्रोंको धरदो २६ ऐसे सुनके दोनोंदेव अच्छाहेमातः तुम्हारे बचनको मानते हैं ऐसे अंगीकार करके और दोनों स्नान करनेके वास्ते गंगाजीको जाते भये २७ और ऐसे वार्त्ताभी करतेभये इन्द्रकहने लगा कि हे कृष्ण तू प्रभु है अर्थात् समर्थ है और लोकों को राज्यपर तैनेहीं मुझेस्थापनकियाहै सो राज्य परस्थापन करके अबमेरा किसवास्ते निरादर करतेहो २८ और हे कमल केसे नेत्रोंवाले भ्रातृभावसे और ज्येष्ठभावसे पूजनकरके कैसे मारनेकी इच्छा करतेहो २९ हेराजन् ऐसे कहतेहुये गंगाजीमें स्नान करके फिर आतेभये ३० पश्चात् तिसदेश को मुनिप्रिय संगम नामसे बोलतेहैं जहां कमलकेसे नेत्रों वाले दोनों माता पितासे मिलके स्थितहुये तिसके अनंतर इन्द्रको

बाणीसे अभय देकर पश्चात् जहां संपूर्ण देवताथे तहां विमानों में बैठकर जातेभयेहैं ३२ पश्चात् परम ऋद्धिसे संयुक्त कश्यपजी और अदिति और इंद्र और जनार्दन येसंपूर्ण एकविमानमें बैठकर स्वर्ग में जातेभये ३३ पश्चात् इंद्रके भवनमें प्राप्तहोकर तहां संपूर्ण एक रात्रिबास करतेभये ३४।३५ और इंद्राणी अदिति सहित धर्मात्मा कश्यपजीको देखकर पूजन करती भई जब प्रभातहुआ तब संपूर्ण भूतोंके हितके वास्ते अदिति बचन करनेलगी ३६ हे उपेंद्र तू द्वारकामेंजा और कल्पवृक्षको लेजा और पुण्यकके वास्ते बधूको वांछित यहकल्प वृक्षजाकरदे ३७।३८और जब बधू सत्यभामा पुण्यक को प्राप्तहोजाय तब फिर नंदनबनमें स्थापन करजाइयो ३९पश्चात् हे राजन् धर्मात्मा नारदमुनिके वचनोंसे धर्मगुणोंसे युक्त देवमाता अदितिके बचनोंको कृष्णचंद्र अंगीकार करते भये ४० और पश्चात् जनार्दन माता पिताको और इंद्रको इंद्राणीको इनसंपूर्णोंकोप्रणाम करके द्वारकाको जातेभये ४१ और इंद्राणीके दियेहुये रत्न और कल्पवृक्ष संपूर्णलेकर देवताओंसे पूजित किये भगवान् सात्यकि४२ और प्रद्युम्न करकेसहित रैवत पर्वतमें पहुंचतेभये तहां पर्वतमेंकल्प वृक्षको स्थापनकरभगवान् द्वारकामेंसात्यकिको भेजतेभये४३।४४ और यह कहते भये कि हे महाबाहो द्वरकामें जाकर यह कहं कि कृष्णचंद इंद्रके भवनसे कल्पवृक्ष लायेहैं ४५ और अब द्वारकामें आवेंगे सो सुंदर शोभा बनाओ४६ऐसेतहां द्वारकामें सात्यकि कह केपश्चात् शांबसे आदिबालकों सहितफिरआताभया४७।४८ और पश्चात्आगे प्रद्युम्नकोकर और कल्पबृक्षको गरुड़पर स्थापनकर द्वारकामें जातेभये४९।५० और तिसकेपीछे भगवान् रथमें बैठ और तिसके पीछे शांब सात्यकि५१येरथमें बैठ तिन्होंकेपीछे और यादव सवारियों में बैठ इसविधिसे प्रसन्नहुये द्वारकामें जाते भये ५२ और नगरबासी जनसात्यकिसे भगवान्के कर्मोंको सुनसुन आश्चर्य को प्राप्तहोते भये५३ और दिव्यपुष्पवाला बृक्षोंमें उत्तम हे राजन् ऐसेकल्पबृक्षको पुरवासी देख देखकर बहुत प्रसन्न होतेभये ५४

और तहां कल्पवृक्षके देखनेसे पुरुषों की वृद्धावस्था जातीभई ५५ और तिसकी सुगंधिसे अंधों के नेत्र खुलगये और रोगियों के रोग चले गये ५६ और मर्त्यलोक में बास करनेवाले जन सुगंधि लेते हुये सफेद कोकिलों को सुनके जनार्दन भगवान्को सराहते भये और प्रसन्न चित्त होकर जनार्दन की स्तुति करते भये ५७ और तिसवृक्षके समीप सुंदर बाजा और मधुरगीत सुनते भये ५८ और पश्चात् जो मनुष्य जैसी सुगंध की बांछा करताभया सोही कल्प वृक्षकेपास आकर सुगंधलेताभया ५९ पश्चात् यदुनंदन भगवान् द्वारका में प्रविष्टहोकर महात्मा बसुदेवजीको और देवकीको देखते भये६० पश्चात् देवताओंकेसमान जो उग्रसेन और भ्राता बलदेव और वृद्ध यादव भगवान् यथाविधि इनसंपूर्णोंका पूजन करके ६१ पश्चात् अपने भवनमें प्राप्तहोते भये और तहां सत्यभामा सहित बास करते भये ६२ पश्चात् सत्यभामा श्रेष्ठ कल्पवृक्ष को देखके प्रसन्न हुई कृष्णचंद्र का पूजन करके कल्पवृक्ष को ग्रहण करती भई ६३ पश्चात् हेभारत भगवान् की महिमा से किसी समय में बिचाराहुआ तो बहुतछोटाहोजाय और किसीसमय में संपूर्णद्वारका पछाजाय और किसीसमय में अंगुष्ठके प्रमाण हाथमें लेनेके योग्य होजाय ६४।६५।६६ ऐसे कल्पवृक्षको देखकर द्वारकाबासियों को महान् आश्चर्य होताभया और हे कौरव्य प्राप्त हुआ है मनोरथ जिसका ऐसी सत्यभामा बहुतप्रसन्न होतीभई और पुण्यकके वास्ते सामग्री इकट्ठी करनेको तैयार होतीभई ६७ और जंबूद्वीप में जित नेकद्रव्यहैं सो संपूर्णमहात्मा कृष्णचंद्र लातेभये ६८ पश्चात् नारद मुनिके उपदेशकिये कृष्णचंद्र सत्यभामा सहित संपूर्णगुणोंके उदय करनेवाले नारदमुनिको व्रतकेप्रतिग्रहकेवास्तेस्मरणकरतेभये ६९॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेचतुस्त्रिंशदधिकशतोऽध्यायः १३४ ॥

——※——

एकसौपैंतीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय तिसके अनंतर मुनियोंमेंश्रेष्ठतपोधन नारदमुनि ध्यानकरतेही तहां प्राप्त होतेभये १ भगवान् तिसको बिधिपूर्बक पूजन करके और प्रतिग्रहके वास्ते नारदमुनिसे सलाह करतेभये २ और हे भारत जबकाल प्राप्तहुआ तब स्नान किये महामुनिको माल्य और गंधादिकों से पूजन करके भोजन करातेभये ३ और पश्चात् संपूर्ण भूतोंके रचनेवाले भगवान् सत्यभामा सहित प्रसन्न चित्तसे सर्बकामिक अन्न भोजन कराके ४ पुष्पों की लड़ी बनाके नारदमुनिके और कृष्णचंद्रके कंठमें घालती भई और कल्पवृक्ष केबांधती भई ५ पश्चात् नारदमुनिको जल देते भये पश्चात् हजार गौ सुवर्ण का पर्वत ६ और मणि रत्न सोना चांदी और तिल मिश्रधान्य देतेभये ७ पश्चात् नारदमुनि इनसंपूर्णों को ग्रहण करके प्रसन्न हुआ भगवान् को बचन कहता भया ८ हे केशव मैं प्रसन्न हुआ तू मेरे को आज्ञादे और जो ब्रत मैंने तेरे प्रतिकहाहै सोसुनो ९ पश्चात् जनार्दन नारदमुनिके पश्चात्जाते भये १० पश्चात्मुनिवर नारदमुनि अनेक प्रकारके परिहास करके कहनेलगे किहेकृष्ण ठहरो मैं जाताहूं ११ पश्चात् कंठसे पुष्पोंकी मालाकोदूरकर कहनेलगे कि हे कृष्ण बछड़ेवाला कपिलागौदे १२ औरतिल मृगचर्म सुवर्णकाछाज ये और मेरेकोदे महादेवजीने यह विधि मेरे प्रति वर्णनकरी है १३ पश्चात् कृष्णचंद्र अंगीकारकरके हंसतेहुए मुनिको कहतेभये १४ हे धर्मज्ञ हे नारद बांछित बरमांग मैं दूंगा क्योंकि जिससे मैं तेरे ऊपर बहुत प्रसन्न हुआहूं १५ ऐसे सुन नारदमुनि कहनेलगा कि हे बिष्णु हे सनातन सदा ऐसाही प्रसन्न मेरे ऊपर रह और हे महामते तेरे प्रभावसे मैं सालोक्यको प्राप्तहोजाउं १६ और हे नारायण मैं अयोनिज होजाउं और अन्य जातियोंमेंभी मैं ब्राह्मणहूं १७ हे राजन् पश्चात् बिष्णुने कहा कि ऐसेहीहोगा ऐसे सुनके बुद्धिमान् नारदमुनिबहुतप्रसन्नहोतेभये १८

हे कौरव्य पश्चात् सत्यभामाने कृष्णचंद्रकी सोलहहजार स्त्री सपत्नियोंको निमंत्रणकिया १६ और जो इन्द्राणीने आभूषण बस्त्र दियेथे सो संपूर्णतिन्होंको देतेभये २० पश्चात् बासुदेवकी आज्ञा से तहां बसताहुआ कल्पवृक्ष प्रवृत्त होताभया२१पश्चात् केशवके निमंत्रितकिये आतेभयेऔर आनके कल्पवृक्षकी बिभूति को देखते भये २२ पश्चात् पांडव और द्रौपदी और सुभद्रा २३ और पुत्री करके सहित श्रुतश्रवा और पुत्र करके सहित भीष्मक इन्हों को बुलाके और अन्यमित्र संबंधियोंको बुलाके २४ तहां अंतःपुरकरके सहित परम ऋद्धिसे जनार्दन भगवान् अर्जुन के साथ रमणकरते भये २५ पश्चात् देवताओं के समान कांतिवाले कृष्णचंद्र ऐसे बर्ष दिनतक तहांरमणकरके और कल्पवृक्षको स्वर्गमें पहुंचाते भये२६ पश्चात्तहां कश्यपजी और अदितिको इन्द्रसहित भगवान् प्रणाम करतेभये२७ पश्चात् नम्रहुये इन्द्र और भगवान् को अदिति बचन कहनेलगी कि हे अमरसत्तम तुम्हारा सौभ्रात्रनित्य बनारहो २८ पश्चात् अदिति कहनेलगी कि हे जनार्दन मेरा मनोरथ पूर्णकर ऐसे सुनके कृष्णचंद्र माताको कहतेभये कि तथास्तु अर्थात् मनोरथ पूर्ण होगा२९पश्चात् माता पिताको संबोधन करके पश्चात् महा-तेजस्वी बासुदेव कालके अनुसार बचनकहतेभये३० हे मानकेदने वाले नीचे पृथ्वीतलमें अवध्य असुरोंके मारने केप्रति मेरेको महा-देवजीने उपदेशकिया है३१सो इनकोदशरात्रियों करके मैं मारूंगा सो महात्मा प्रवरने और जयंतनेभीदानवोंके मारनेकी इच्छा करके ऊपरसेस्थितहोनायोग्यहै३२।३३हे इन्द ये दानव देवताओंसे अ-वध्य हैं क्योंकि इनको ब्रह्मासे बरदान हो रहा है इसवास्ते मानुष त्वको प्राप्तहुआ मैं मारूंगा ३४ हेजनमेजय ऐसे इन्द्र सुनके कृष्ण चंद्र के बचनकोअंगीकार करताभया पश्चात् प्रसन्नहुआ इन्द्र कृष्ण चंद्र को अमृतसे उत्पन्नहुआ किरीटदेता भया और हे कुरुशार्दूल दोकुंडलदेता भया पश्चात्प्रसन्न हुए आपस मेंमिलते भये ३५ ॥

श्रीमहाभारतेहरिवंशान्तर्गतबिष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेत्रिंशदधिकशतोऽध्यायः१३५॥

एकसौकत्तीसका अध्याय॥

जनमेजय प्रश्नकरताहै कि हे भगवन् पुण्यकों की उत्पत्ति कृपा करके कहो क्योंकि जिससे व्यासजीकी कृपासे संपूर्ण तेरेकोविदित है १ ऐसे सुन बैशंपायनजी ने कहा हे धर्मके जाननेवालों में श्रेष्ठ जनमेजय पार्बतीजीने जो पुण्यकी बिधिकहीहै सो मैं तेरेसे कहता हूं २ हे राजन् जब कृष्णचंद्रने स्वर्ग से कल्पवृक्ष द्वारकामें प्राप्तक रदिया तब नारदमुनि भी जातेभये ३ और तब देवता औरअसुरों का घोरयुद्धहुआ और महादेवजीकी आज्ञासे षट्पुरका बधहुआ ४ हे राजन् कृष्णचंद्रके साथ बैठेहुये मुनिको भीष्मककी पुत्री रुक्मिणी पूछतीभई ५ और तिसके अनंतर जांबवती सत्यभायोग योक्त गांधारराजकी पुत्री ६ और कुल शील गुणोंकरके युक्त कृष्णचंद्रकी अन्यरानी ये संपूर्ण नारदमुनिको कहती भई ७ प्रथम रुक्मिणीक- हनेलगी कि हे मुने तुम धर्म जाननेवालोंमें श्रेष्ठ और सर्बज्ञहो हे सुंदर ब्रतवाले इसवास्ते पुण्यकोंकी उत्पत्ति बर्णनकरो ८ हे मुने बिधि फल योग दान काल ये भी संपूर्णकहो हे भगवन् हमारेबड़ा आनंदहै इस संदेहको दूरकरो ९ हे राजन् ऐसे सुन नारदमुनिक- हनेलगे कि हे धर्मके जाननेवाली रुक्मिणी सपत्नियों करकेसहित पुण्यकों की बिधि सुनो जैसे पहले पार्बतीजी ने बर्णनकरी है हे रुक्मिणि पार्बती जो है पुण्यकके वास्ते ब्रत धारण करती भई १० और ब्रतके अंतमें संपूर्ण सखियों का निमंत्रण किया ११ पश्चात् अदितिसे आदिलेकर संपूर्ण दक्षकीपुत्री और पतिब्रताइन्द्राणी १२ और सोमकी स्त्री रोहिणी और हे राजन् फाल्गुनी पूर्वा रेवती १३ शतभिषा मघा ये संपूर्ण आईं और पार्बतीका आराधनकिया १४ और गंगा सरस्वती बैतरणी गंडकी हे जनमेजय येनदी औरअन्य रमणीकनदी आईं और सत्यसंपूर्ण आये १५ और लोपामुद्रा और सुंदर पर्बतोंकीपुत्री अग्निकीपुत्री और स्वाहा सावित्री १६ कुबेरकी स्त्री ऋद्धि बरुणकीस्त्री और धर्मराजकी स्त्री और बसुकीस्त्री १७।१८

और श्री ह्री धृति कीर्ति आशा मेधा सुव्रता प्रीति मति ख्यातिसन्न ति १६ सत्य और देवि इन संपूर्णोंको बुलायके और व्रतके अंतमें पूजनकरतीभई २० और तिलोंकेपर्वतमें सतनजेकीतरह रत्नमिला कर दानदेतीभई और अनेकप्रकारके मुख्यबस्त्र और आभूषण देती भई २१ पश्चात् येसंपूर्ण उमाकोपूजाको ग्रहणकरके विचित्र कथा कहतीहुई स्थितहोतीभई २२ पश्चात् पुण्यककेवास्ते ये उत्तमकथा पूछतीभई तब पार्वती पुण्यकों को विधि तिनके प्रति वर्णन करती भई २३ नारदमुनि कहते हैं कि हे रुक्मिणी मैं भी उस समय में सुनताभया २४ और हे वेदर्भि रत्नपर्वत उमाने मेरे कोही दियाथा सोमैंने लेकर ब्राह्मणोंको देदिया २५ और हे वैदर्भि उस समय में पार्वती अरुंधतीको यह बचन कहतीभई कि हे देवि संपूर्णों सहित तू श्रवणकर २६ । २७ क्रमसे पुण्यकोंकी बिधि मैं तेरेकोकहतीहूं हे शुभे जैसी बिधि मैंने पहले देखी है २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेपुण्यक विधौषट्त्रिंशदधिकशतोऽध्यायः १३६ ॥

एकसौ सैंतीसका अध्याय ॥

नारदमुनि वैदर्भिको कहतेहैं कि हे भैष्मि पश्चात् उमा अरुंध-तिकेप्रति कहनेलगी कि हे सुंदरहासवाली जिस समय में भर्त्ताकी कृपासे मैं सर्वज्ञाहोगई तब पुण्यकोंकी विधि मैंने पहले देखीहै १ हे सतिवे ऐसे जानना कि पुण्यकोंकी बिधि सनातन है और महा-देवजीकी कृपासे मैंने देखी है २ हे देवि भगवान् भर्त्ताकी आज्ञासे मैं इन्होंको जानतीभई ३ जिस स्त्रीके सतीत्व और धर्मका आचरण नित्य अखंडितहै तिसके वास्ते पुण्यकोंकीविधि पुराणोंमें कहीहै ४ और हे शुभे असती स्त्रियोंके दान उपवास सुकृत पुण्यक ये संपूर्ण निष्फल होजातेहैं ५ और जो स्त्री भर्त्ताको ठगतीहैं और अन्य पुरु-षोंसे गमन करती हैं तिन्होंको पुण्य फल नहीं प्राप्त होता है और नरकमें प्राप्तहोतीहै ६ और हे देवि श्रेष्ठ मार्गमें स्थितहुई साध्वी

और सुशील और धर्ममें सावधान पतिको देवता मानतीहुई जगत् का उद्धारकरदेतीहै ७ और मधुरबाणीवाली शुद्धिसेयुक्त और धृति धारणकिये शुभव्रतधारणकिये श्रेष्ठबचन कहनेवाली ऐसी स्त्रीजगतको धारणकरतीहै ८ हे शुभे यह स्त्रियोंका सनातनधर्महै किब्याधिवाला और जातिसेपतित और दीन ऐसा भीपति स्त्रियोंको नहीं त्यागनायोग्यहै ९ और हे सुंदरमुखवालीअकार्यकारण और पतित और निर्गुण ऐसे पतिका तथा आत्माका सतीस्त्री उद्धारकरदेती है १० और वेदमें भी वाग्दुष्टका प्रायश्चित्तकहाहै और योनि दुष्ट का नहीं कहा ११ और हे धन्ये अच्छीगतिकी बांछाकरतीहुई स्त्री को संपूर्णकालमें भर्त्ताकीआज्ञासे ब्रत औरउपवासकरनेयोग्यहै १२ और जो स्त्री अन्योंको रमणकरतीहै सो हजारहांकल्पोंमें भी मोक्ष को प्राप्त नहीं होती और तिरछीयोनियोंमें प्राप्तहोती है १३ और जो जारस्त्री मनुष्योंको भी प्राप्तहोगी तो चांडालयोनिमें खोटीबुद्धि वाली और कुत्तोंकोखानेवाली होतीहै १४ हे तपोधने श्रेष्ठ पुरुषोंने स्त्रीका देवता संपूर्णकालमें भर्त्ताकहाहै हेप्रिये जिसस्त्रीके ऊपरभर्त्ता प्रसन्नहोगया सोही स्त्री सतीहै और धर्म को जाननेवाली है १५ और जिन स्त्रियों का मन भर्त्ता में स्थित है तिन स्त्रियों को आनंद वाला लोक अच्छानहींलगता १६ और हे सौम्ये कर्मकरके बचन करके और बाणीकरके जो पतिकी उपासना नहीं करती है तिन्हों के पुण्यकाफल राक्षसोंने कहाहै १७ हे शोभने अबसंपूर्णपुण्यकों की विधि कहतीहूं जो मैंने तपकरकेदेखीहै सो संपूर्णकरकेसहित तू जान १८ हे धृतव्रतेस्त्री प्रातःकाल स्नानकरके पश्चात् उपवास अथवा ब्रतके वास्ते पतिको पूछे १९ पश्चात् सासु और सुसराके चरणोंको स्पर्शकरे पश्चात् अक्षतोंसहित गूलरकापात्रलेकर २० दहनागौका सींगसींचे पश्चात् वोही जल भर्त्ताकोदेके और अपने शिरपरधारणकरे २१ त्रैलोक्यमें संपूर्ण तीर्थोंकेसमान यहस्नान कहाहै हे भाविनि स्त्री और पुरुषोंको उपबास और ब्रतमें यहसामान्य से स्नान कहाहै २३ हे अरुंधति यह महादेवजी के तेज से मैंने

देखाहै कि अशल्यविद्धशयन और तैसाहो आसन २४ और शरीरका घना संवारना आंसुओं का पड़ना क्रोध कलह इनसंपूर्णोंके उत्पन्न होनेसे स्त्रीका उपबास और ब्रत नष्टहोजाताहै २५ और उपबासमें शुक्लवस्त्र धारणकरने और अंतर्बस्त्र धारण करने योग्यहैं २६ और पृथ्वीमें शयन करना उपबास में यह विधि वर्णनकरी है २७ और शृङ्गार करना अंजनघालना पुष्पोंकी सुगंधि ये बस्तु ब्रत में और उपबासमें अवश्य बर्जितहै २८ और दन्तोंसे काष्ठका संयोगशिरका स्नान उदटना मलना येभी संपूर्ण बर्जितहैं २९ और बिल्वआंवलों का फल इन्होंसे शुद्ध स्नान आचरणकरे और मृत्तिका मिश्रितजल से प्रक्षालन शिर का करे ३० और स्नेह करके युक्त बस्तुओं से मालिश नहीं करे ऐसी स्थिति कही है ३१ और गोयान उष्ट्रकायान और खरयान ये संपूर्ण बर्जित हैं और हे अरुंधति नग्न स्नान उपबास में नहीं करना ३२ और नदीके जल में उपबास में स्नान श्रेष्ठ कहा है और कमलों से युक्त सुंदरतड़ाग और बायु में स्नान करना उचित है ३३ तड़ागादिकोंमें गमनकरके स्नान शुद्धकहा है और ये नहीं होवेंतो घटसे स्नानकरे ३४ अथवा नवीन कुंभों से स्नान करें यह सनातन विधि कही है हे अरुंधति तपोबल से मैंने ऐसे निर्णय कराहै ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेपुण्यकविधौसप्तत्रिंशदधिकशतोऽध्यायः १३७ ॥

एकसौअरतीसका अध्याय॥

हेराजन् जनमेजय भर्त्ताहै देवता जिन्होंका ऐसीस्त्रियोंने संपूर्ण विधिसे एकवर्ष तक अथवा छः महीनातक एकमहीनातक यह ऐसे ब्रत करना उचित है १ पश्चात् एकादश स्त्रियों का विधि से पूजन करना उचितहै २ और विवाह की विधिके पुण्यक में संपूर्ण विधि वर्णनकरी है ३ और पुण्यक में मंडनमालाओं का धारण कुंभों से स्नान करना ये संपूर्ण पुण्यके वास्ते बिधिकही है ४ पश्चात् मन

और बाणीसे भर्त्ताको प्रणाम करके पश्चात् ऐसे स्तुति करै ५ हे आपः अर्थात् जल तुम ऋषियोंकी देवीहो और विश्वको धारणाक-रतीहो प्रकाश स्वरूपवाले ऐसे जो तुमहो सो मेरे कल्याणकेवास्ते रसों सहित मेरा सेवनकरो ६ और हे जलदेवताहो मैं सपत्नियों में अधिक सुंदरपुत्र वाली सुभगा संपत्तिवाली दरिद्र रहित तुम्हारी कृपा से ऐसी होजाऊं ७ और हे जलदेवताहो मेरापति प्रसन्नरहे और नित्य मेराभक्तरहे ८ और मेरीबुद्धि बढ़े और चकवा चकवीके सी हमारीप्रीतिरहे ९ और मनमें बिरागमतहो तुम्हारी दयासे ये संपूर्णहोजावे तुम्हारेअर्थ नमस्कारहै १० इन संपूर्ण मंत्रोंसे सर्व द्रव्योंका अभिमंत्रणकरे और संपूर्ण यह विधिपुराणोंमें बर्णनकरी है ११ पश्चात् हे शुभे स्नानकरके नवीनबस्त्रोंको धारणकरे १२ पश्चात् इन्द्रियोंको रोकनेवाला ज्ञान विज्ञानका जाननेवाला और पवित्र ऐसे ब्राह्मणोंको भर्त्तासहित यथाशक्ति पूजनकरे १३ पश्चा त् हे तपोधने वस्त्रशय्या यान गृह धान्य दासी दास आभूषणरत्न का पर्बत १४ और संपूर्णधान्य तिल सुंदरबस्त्र इन्होंसेयुक्त दान करके देवे और हस्ती अश्व गौ इन्होंकादानकरे १५ और लवण की प्रतिमा माखन गुड़ मधु सुवर्ण संपूर्ण गंधोंकारस और फूलोंका रस और दधि दूध इन संपूर्णोंका दान यथाबिधि करे १६ हे अनिं दिते दानोंकेकरनेसे संपूर्ण कामनाओंको प्राप्त होजाताहै १७ हे राजन् देवदेव वृषध्वजकेकहे ब्रतको उमा ऐसे बर्णन करती भई १८ पार्बतीजी कहतीहैं कि हे सौम्य हे अरुंधति मेरे प्यारके वास्ते महादेवजी ऐसे कहतेभये १९ और ब्रत करके पश्चात् स्त्रियोंको सुंदर भोजनकरावे २० हे देवि पश्चात् ब्राह्मणोंको दक्षिणा सहित अन्नदेना और पायस ब्राह्मणोंको देनी उचितहै २१ और इस ब्रत में प्राणियोंका बध नहीं करना उचित है हे शुभे अब दूसरे ब्रतकी बिधिकहती हूं जो महादेवजी की कृपासे मैं बिधि देखती भई २२ हे शुभे ज्येष्ठ आषाढ़ में यह पहलेकही बिधिकरनी उचित है २३ पश्चात् जब अथवा कोपसा एक महीनामें ब्रतकरे पश्चात् पात्रभर

भरके घृत दूध दधि शहद इन्हों का दानकरे २४ और ज्ञान से वृद्ध और सुंदर ब्रतवाला आत्माको जीतनेवाला ऐसे द्विजको दान देवे २५ ऐसे पुत्र के उत्पन्न करने के वास्ते ये दान कहे हैं २६ और जो पुत्रीकी इच्छाहोवेतो वांक्षित द्रव्यका दानकरे तो पुत्रीको प्राप्तहोय २७ पश्चात् गौ सुवर्ण इन्होंका दानदेवे और ब्राह्मणको वस्त्रदेवे और यज्ञोपवीतदेवे २८ हे शुभेपुत्रोंको उत्पन्नकरने वाले व्रतकीबिद्वानोंने यहबिधि कहीहै २९ अपत्याख्यान के योगसे वर्ष दिन पर्यंत यह व्रतकहाहै ३० हे अरुंधति भर्ताकी आज्ञा से संपूर्ण विधिकरे और यज्ञोपवीत सुवर्ण दक्षिणा इन्होंका शक्ति पूर्वक दान देतीहुई स्त्री संपूर्ण कामनाओं को प्राप्तहोजाती है ३१ और इतने यह व्रत करे इतने स्त्री नबीनअन्न और नबीन फलनहीं भोजनकरे और एकबार आप भोजन करे ३२ और प्रथम ब्राह्मण को भोजन देवे पश्चात् भर्ता को ३३ और पश्चात् आप भोजन करे ऐसे वर्षदिन तक व्रतकरे तो सुभगा और रूपवती और धन से युक्त ऐसी स्त्री होजाती है ३४ और यह स्त्री वर्षदिनतक बैंगन भोजन नहीं करे और ऐसे स्त्री व्रतकरे तो पुत्रके नाशको नहीं देखती है ३५ और सूसे का मृग का मांस भोजन नहीं करे और घीयाकचनार ये भोजननहींकरे और जब व्रतको एकवर्ष पूराहोजाय तब एक२ शाकले कर दानकरे ३६ हे अरुंधति जो ऐसे करतीहै तिन्होंके पुत्रजियाकरैंहैं ३७ और वहसंपूर्ण स्त्रियोंके मध्य में मुख्यहुआ करतीहै और जब वर्षदिनहोजायतब उत्तमसोनेकी सूर्यकीमूर्तिबना यशस्वीदरिद्र ब्राह्मणकोदेवे ३८ और फलपुष्प भक्ष्य इन संपूर्णोंका दानकरे अथवादिनमें भोजननहीं करेतो चंद्रमा औरनक्षत्रोंसे पवित्रहुआ रात्रि को भोजनकरे ३९ और सोनाके चंद्रमा सूर्य नक्षत्र वस्त्रलक्षण इन्हों कादान ब्राह्मणकोदेवे ४० ऐसे करनेसेस्त्रीका चंद्रमाकेसा शीतल शरीरहोजाताहै और सुभगा पुत्रवाली दर्शन के योग्य ऐसी होजाती है ४१ पश्चात् पूर्णमासी के दिन चंद्रमाके उदयमें स्त्री पुष्पअक्षत कुश इन्होंका चंद्रमाको अर्घदेवे और दधिकरके सहित मोहनभोग

की बलिदेवे ४२ हे अरुंधति जो ऐसे नित्यकरती है सो स्त्री संपूर्ण कामनाओंको दूरकरतीहै ४३ और जोस्त्री घटाओंकेमें अथवा और दिनजो सूर्यके दर्शनबिना भोजन नहींकरतीहै ४४ सोइष्ट कामना-ओंको प्राप्तहोजाती है पश्चात् हे अरुंधति यथाशक्ति ब्राह्मण को सुवर्णदेवे ऐसे करेतो सुभगा और दर्शनके योग्य स्त्रीहोजातीहै ४५

इतिश्री महाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणे पुण्यक विधौ अष्टात्रिंश दधिकशतोऽध्याय: १३८ ॥

एकसौउन्तालीसका अध्याय ॥

नारदमुनि कहतेहैं कि हे वैदर्भि पश्चात् पार्वती कहनेलगी कि हेअरुंधति जिन पवित्र ब्रतोंकरके शरीरउत्तम होजाय तिन्होंको व-र्णनकरें हैं एकाग्रचित्तसे सुनो १ हे अरुंधति कृष्णपक्ष की अष्टमी के दिन मूलफलको भोजनकर के ब्राह्मणको दानदे २ पश्चात्शुक्ल-वस्त्र धारणकरके और शुभआचारसे गुरुदेवताओं का पूजनकरके ऐसे बर्ष दिनतक ब्रतकरके पश्चात् ब्राह्मणों को दानदे ३ पश्चात् गोदानचंवरध्वज इन संपूर्णोंको दानदेवे पश्चात् पूर्णमासीमें चंद्रमा केउदयमें बलिदेवे४ पश्चात् ऐसे ब्रतकरतेहुये जब एकवर्षहोजाय तब रूपा का चंद्रमा बनवाके और कमलके फूलमें रख ब्राह्मणके पास स्वस्तिबाचन करा के दानदेवे ५ पश्चात् चंद्रमा के सामुख और तृणराजका फलकेसे कुचोंको प्राप्तहोजातीहै ६ पश्चात्वाणी को रोकेहुये भोजनकरे जब एकबर्ष पूराहोजाय तब सुवर्णके दोबि-ल्वबनाकर दक्षिणासहित देवे ऐसे करे तो उत्तम सौभाग्यको और बहुतपुत्रोंको प्राप्तहोतीहै ७ ऐसेकरनेसे संपूर्ण कालमें ऊंचे स्तन रहतेहैं और सूक्ष्म उदरकी इच्छाकरेतो एक अन्न भोजनकरे और पंचमी को नहीं भोजनकरे और वर्षके अंतमें फूलों सहित जूहीकी बेल और दक्षिणादेवे ८ और जोस्त्री उत्तम हस्तोंकी बांछा करेतो द्वादशीको ब्रतकरे और एकबर्षमें सुवर्ण के फूलबनाकर दानकरे ९ और हे सुंदरब्रतवाली जोउत्तम जंघाओंकी इच्छाकरे तोभी ऐसेही

दानकरे १० और त्रयोदशी में एकवक्त भोजन करके वर्षके अंतमें लवणका दानकरे ११ और प्रजापति के मुखके समान सुवर्ण का दानकरे और रत्नोंसे पूर्ण रक्तबस्त्रों का दानकरे ऐसेदानकरे तो भी उत्तम जंघाओं को प्राप्तहोय १२ और जो मधुर वाणी की इच्छा करे तो एकवर्ष अथवा एक महीना लवण को त्यागदेवे पश्चात् दक्षिणा सहित लवणका दानकरे तो मधुरवाणीको प्राप्तहोय १३ और टकना शिरपैर इनके सुंदरहोनेकी इच्छा करेतो छठ तिथिको एकबार भोजनकरे और अग्नि ब्राह्मणको पैरसेस्पर्श नहींकरे और जो स्पर्श भीकरलेवे तो तिन्होंकी स्तुतिकरे १४ और पैरसे पैरको नहींधोवे और इन ब्रतोंसे युक्तसुवर्ण केदो कछुवे बनाय और घृतके पात्र स्थितकरके दानकरे १५और रत्नसुवर्ण इन्हों काभी दानकरे और जिस स्त्रीको संपूर्णअंगअच्छे करनेकी इच्छाहोवे तो पुष्पसमय में तीनरात्रि पर्यंत अशुद्ध रहके स्नान आदि शुद्ध करके अभ्यागत को घृतदानकरे १६ और ब्राह्मणको लवणका दानकरे और घरका सम्मार्जनकरे लेपकरे और देवताओं को बलिदेवे ऐसे ब्रत नियम करे तो संपूर्ण स्त्रियोंमें अधिक होजातीहै १७॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां पारिजात हरणे ब्रतविधौ ऊन चत्वारिंशदधिक शतोऽध्यायः १३९॥

एकसौचालीसका अध्याय॥

पार्वतीजी कहतीहैं कि हे अरुंधति एकबार भोजन करनेवाली स्त्री नित्य सप्तमीको गुणवान् ब्राह्मणों को भोजन करावे १ तिसके अनंतर वर्षके अंतमें सुवर्णका वृक्षबनाय दक्षिणा करके सहित ब्राह्मणकोदेवे ऐसे करनेसे स्त्रीवहुत बंधुओंवाली होजाती है २ और हे स्त्रियोंमें श्रेष्ठ अरुंधति जोस्त्रीवर्ष पर्यंतकरंजुवामें दीपकबारेहै और वर्षके अंतमेंसुवर्ण कादीपकदान करै है स्त्री सुंदर और भर्ताकोप्यारी और पुत्रवाली सपत्नियों में श्रेष्ठ ऐसी होजाती है ३ और दीपककी तरह प्रकाशकरतीहै और हे अरुंधति जोस्त्री सबसे पश्चात् भोजन

करती है और जो कठोर वचन नहीं कहती और जिसको व्यसन नहीं ४ और पतिही जिसके देवताहै और जो शुद्धि से युक्तहै और जो रूक्षबचन नहीं कहती और जो सासु श्वशुरकी टहलकरै है ५ और जो सत्य धर्म और गुण इन्हों से युक्त है ऐसी स्त्री के उपवास और ब्रतों से कुछ भी प्रयोजन नहीं ६ और हे देवि जो दैवयोगसे विधवा है तिसका पुराणोक्त धर्मकहै हैं हे अरुंधति विधवा स्त्री चित्रामकी अथवा मिट्टीकी पतिकी मूर्ति बनाके तिसकी नित्यपूजा करे ७ और धर्मका अनुस्मरण करे पश्चात् तिसकी आज्ञा नित्य मांगके कामकरे और ब्रत उपवास भोजन येभी तिसकी आज्ञासेही करै ८।६ ऐसे जो स्त्री करे है सो भर्ताके लोकमें प्राप्तहोती है और हे देवि जो स्त्री इस प्रकार से पतिकी आज्ञामें रहती हैं सो सूर्य की तरह प्रकाशित हो जाती हैं ११ और इन्होंसे आदिलेकर जो पुराणों में विधिकही हैं सो संपूर्ण देवताओं की स्त्री जानती हैं १२ और हे अरुंधति धर्मात्मा नारदमुनि भी ब्रतक और उपबासोंकी पुराणोंमें कही संपूर्ण विधिको जानते हैं१३ और अदिति इन्द्राणी और हे सोम सुते तू ये तुम पुण्यकब्रतोंको विख्यात करने में कीर्ति को प्राप्त होवेगी १४ और महात्मा विष्णुकीभार्या भी संपूर्णउपवास ब्रत पुण्यक इन्होंकी विधिजानती हैं १५ और हे देवि स्त्री के धर्मों में स्त्री के ये विशेष धर्म कहे हैं १६ कि पतिकी भक्ति और मधुर वचन कोमलस्वभाव ये स्त्रियोंके परमधर्म कहे हैं १७ इसी को नारदमुनि रुक्मिणीको कहै हैं कि हे वैदर्भि ऐसेकहीहुई संपूर्ण महादेवी प्रसन्नहुई पार्वतीजीको प्रणाम करके अपने अपने स्थान में जाती भई १८ और हे रुक्मिणि जो धर्मचारिणी अदिति ब्रत करतीभई सोही तैंने करनायोग्य है १६ उमाकी कहीहुई जो विधि है सो संपूर्ण अदिति करतीभई और अदिति नामक ब्रत सत्यभामा ने दिया पश्चात् वही ब्रत सावित्रीने किया २० ऐसे जो स्त्री सावित्री ब्रत करैं हैं और जो अदिति ब्रत करैं हैं सो भर्ताके कुलको और पिताके कुलको और अपने आत्माको तारदेती हैं २१ और

जो इन्द्राणीका ब्रतकरै हैं और जो पार्वतीजीका यथाविधि ब्रतकरै हैं सो संपूर्ण संपत्को प्राप्तहोतीहैं २२ और हे यशके करनेवाली एक अहोरात्र उपवास करके पश्चात् सौ कुंभोंका दानकरै २३।२४ और माघके महीनेमें जो गंगाजीका स्नानहै तिसको गंगाब्रत कहते हैं २५।२६ सो संपूर्ण कामनाओंको देनेवाला है और गंगाके ब्रतमें हजारकुंभोंका दान करै २७ और धर्मराजकी भार्या या मखनाम ब्रत करती भई इस प्रकारकी यह ब्रतकी बिधिकही है २८ पार्वती जीने अरुंधतिके प्रति ये संपूर्ण विधिकही हैं ये संपूर्ण ब्रत कल्याणगुण से युक्त हैं और पवित्रहैं शुभके देनेवाले हैं २९ वैशंपायन जी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय दिव्य चक्षुषे और उमाके बरदानसे ऐसे ब्रतोंका बिस्तारको देखकर रुक्मिणी ब्रतकरतीभई ३० और जांबवती भी इस उमाके ब्रतको करके सुंदर रत्नका वृक्षदेती भई और सत्यभामा ब्रत करके पीतबस्त्र देतीभई ३१ और रोहिणी फाल्गुणी मघा इन्होंके ब्रत भी रुक्मिणी करतीभई ३२ और शत भिषा भी ऐसेही ब्रत करतीभई जिससे नक्षत्रोंकी मुख्यताको प्राप्त होतीभई ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांपारिजातहरणेउमाब्रतकेचत्वारिंशदधिकशतोऽध्यायः १४० ॥

एकसौइकतालीसका अध्याय ॥

ऐसे सुन जनमेजयने कहा कि हे व्यासजी के शिष्य हे तपोधन पारिजातके हरणमें दारुण असुरोंका निवासजो षट्पुरकहे तिन्हों का वध वर्णनकरो और हे मुनिश्रेष्ठ अंधकका बध वर्णनकरो ऐसे सुन १ वैशंपायनजी कहने लगे कि हे राजन् जब महादेवजीने त्रिपुरका बध करदिया तब शस्त्रलिये बहुतसे असुर महादेवजीने शरसे दग्धकर दिये २ तब साठहजार असुर ज्ञातियोंके बध से व्याकुलहुए महर्षिगणों से सेवित जंबू मार्ग में सूर्य की तरफ मुख करके सौ हजार वर्ष तप करतेभये ३ और वायुकाही भक्षण करते

हुए ब्रह्माजी की स्तुति करतेभये ४ तिन्होंका एक समूहतो गूलरके आश्रय होके घोर तप करते भये और कितनेक असुर कैथके वृक्षके आश्रय होके तप करतेभये ४ और कितनेक असुर शृगाल वाटो के आश्रयहोके तपकरतेभये और कितनेक बड़केआश्रयहोके वेदको अध्ययनकरतेहुये तपकरतेभये ६ पश्चात् हे राजन् इन्होंका ऐसा घोरतप ब्रह्मादखके प्रसन्न होताभया पश्चात् बरदेनेकेवास्ते इन्हों को बरंब्रूहि ऐसे कहतेभये ७ तब महादेवजीके साथ बैरकरतेहुये दानव महादेवजीसे बंधुमारनेका बदलालेनेकी इच्छाकरतेभये तब हे राजन् सर्वज्ञ ब्रह्मा तिन्होंको बचन कहताभया कि हे दैत्योहो विश्वको रचनेवाले और संहार करनेवाले ऐसे महात्मा महादेवजी से बदलालेनेको कौनसमर्थहै ८ यह तुम्हारा परिश्रम वृथाहै और हे असुरोहो नहीं है आदि मध्य अंतजिसके ऐसे महादेवजीकी स्तुति नहीं करके स्वर्गकेबसनेकी इच्छाकरतेभये ९ औरकितनेकनहीं इच्छा करतेभये और कितनेक दुरात्मा राक्षसोंको ब्रह्माकहताभया कि हे असुरोहो रुद्रक्रोधके बिना बरमांगो १० ऐसे सुन दैत्यकहनेलगे कि हे विभो संपूर्ण देवताओंसे हम अबध्यहोजावें औरहमारे पृथ्वीतलमें षटपुरहों और तिन्हों में हमारे संपूर्ण संपत्हो ११ और हे ब्रह्मन् तिसपुरमें सुखपूर्वक हमवास करें और हे तपकेनिधि जिस महादेवजीने हमारे ज्ञातीमारेहैं तिससे हमारेकोउग्रभयनहीं होवे १२ क्योंकि त्रिपुरको हतदेखके हम तिसरुद्रसे डरतेहैं ऐसेसुन ब्रह्माजीने कहा कि हे असुरोहो तुम देवताओंसे महादेवजीसे अबध्यहोजावोगे १३ जो श्रेष्ठमार्ग में स्थितहुये ब्राह्मण और सज्जनको पीड़ानहींदोगेतो और हेअसुरोहोजो किसीप्रकारसेभी मोहकरकेब्राह्मणोंका उपघातकरोगे तोनाशको प्राप्तहोजाओगे १४ क्योंकिजिस से ब्राह्मण जगत्की परमगति हैं और ब्राह्मणोंके साथ बैर करनेसे नारायणसे भयहोगा क्योंकि जिससे नारायण संपूर्णोंके हितकारी हैं १५ ऐसे ब्रह्माके आज्ञा किये दैत्यजाते भये और जो दैत्य महादेवजीके भक्तथे तिन्होंको त्रिपुरके नाशकरनेवाले महादेवजी दर्शन

देतेभये १६ और श्वेत वृषभ पर आरूढ़ होकर श्रेष्ठोंकी गति महादेवजी असुरोंको यह बचन कहते भये हे असुरोंमें श्रेष्ठो तुम वैर और दंभ और हिंसा इन्होंको त्यागके जो मेरे आश्रयहुए १७ इसवास्ते श्रेष्ठ वर तुमको दूंगा हे दैत्योहो जिन मुनियोंने दीक्षादई है तिन्हों समेत स्वर्गमें जावो १८ मैं तुम्हारे कर्मों से प्रसन्नहुआ और जो यहां बसैंगे तिन्हों कोभी जैसे मेरे लोकमें सुख है वैसाही प्राप्त होगा १६ और यहां कैथके वृक्षके पास मासके अंत और पक्ष के अंतमें पजाकरेगा सो हजार वर्ष में तप सिद्धको प्राप्तहोगा और जो पुरुष बिधि पूर्वक तीन रात्रि पूजनकरेगा सो बांछित गतिको प्राप्त होगा २० और जो स्वेत-बाहन नामाका मेरापूजन करैगा सो मेरी गतिको प्राप्तहोगा २१ और जो पुरुष औ दुम्बर और बाट मूल और कापित्थक और शृगालवादो ये ब्राह्मण और धर्मात्मा और दृढ़ब्रत और ब्रह्मबादीय मुनि जो इन ऋषियोंका पूजनकरैं हैं सो बांछित गतिको प्राप्तहोवे २२ श्वेतबाहन महादेवजी ऐसेकहके और तिन्हों करके सहित स्वर्गलोक में जातेभये और जो पुरुष ऐसे कहता है कि मैं जंबूमार्गको जाउंगा और जंबूमार्ग में वसूंगा ऐसे सकल्प करताहुआ पुरुष भी स्वर्गलोक में बसताहै २३ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां षटपुरबधे एकचत्वा रिंशद धिकशततोऽध्यायः १४१ ॥

एकसौबयालीसका अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् इसीकालमें चतुर्वेद और खड़ंग काजानने वाला और याज्ञवल्क्य का शिष्य और धर्मगुणोंसे युक्त और बाजसनेयियोंमें मुख्य १ ऐसा ब्रह्मदत्तनाम ब्राह्मणहोताभया तिसने बुद्धिमान् वासुदेवकी यज्ञकरी २सो आवर्ताकेशुभतीरमें और षट्पुरालयमें सांवत्सरदीक्षामें दीक्षितहुआ ३ और सोब्रह्मदत्त द्विजो त्तमवसुदेवका सहाध्यायी होताभया ४ और देवकीकरके सहित तहां वसुदेवगया षट्पुरमें स्थितहुये यजमानको ऐसे प्राप्तहोताभयाजैसे

वृहस्पतिको इंद्र ५ और बहुतअन्नवाली और बहुत दक्षिणावाली ऐसी ब्रह्मदत्तकी यज्ञको ये महात्मा मुनियोंमें श्रेष्ठ उपासना करते भये ६ वेदव्यास और वैशंपायनजी कहैहैं कि मैं और याज्ञवल्क्य और सुमंतु और जैमिनि और धृतिमान् जाजलि और देवलयेऋषि तहां आतेभये ७ और तहां वसुदेव और देवकी बांछित कामनाओं को देतेभये ८ और बासुदेवके प्रभावसे जब यह यज्ञहोनेलगी तब गर्वसेदर्पितहुये ६ निकुंभसे आदिलेकर दैत्य आनके कहनेलगे कि हमाराभागकरो और हम अमृतपीवेंगे और ब्रह्मदत्त यजमानहमारे को कन्यादेवो १० और क्योंकि हमने सुनीहै कि इसके रूपवाली बहुतकन्याहैं तिनकोलाके हमारेको दो ११ और जो इसको उत्तम रत्नहैं सो दो और नहीं तो मतयज्ञकरो हम हुकुम फरमातेहैं १२ ऐसे ब्रह्मदत्त सुनके तिनको वचन कहताभया कि हे असुर सत्तमों पुराणमें तुम्हारा यज्ञभाग और सोमपान नहीं विधानकराहै १३ सो मैं कैसेदूं इन वेदभाष्यके जाननेवाले मुनियोंसेपूछलो १४और हे असुरोहो जो मैंने कन्यादेनीथी सो पहलेही संकल्पकरदिया १४ और रत्न तो मैं देदूंगा परंतु सात्वनासे दूंगा और देवकीपुत्रकृष्ण के आश्रय होके बलसे मैं नहीं दूंगा १५।१६ ऐसे सुनके निकुम्भ से आदिलेकर षट्पुरमें रहनेवाले पापी असुर कुपित होगये पश्चात् ब्रह्मदत्तकी यज्ञवाटको लोपतेभये और कन्याओं को हरतेभये १७ पश्चात् वसुदेवजी तिस खोटे वृत्तांतको देखकर महात्मा कृष्णचंद्र और बलदेवजी और गद इन्होंका ध्यानकरताभया १८ इसवृत्तांत को कृष्णचंद्र जानके प्रद्युम्नको यह बचनकहतेभये हेपुत्र तूजल्दी ब्रह्मदत्तकी यज्ञमेंजा और अपनी मायाकरके कन्याओं की रक्षाकर १९ इतने यादवोंकी सेनासहित मैं षट्पुरमें प्राप्तहूं ऐसेसुन पिता की आज्ञाकरनेवाला प्रद्युम्न एकक्षणमात्रमें तहां पहुंचा २० और पहुंचके महाबल यह बुद्धिमान् रुक्मिणी का पुत्र मायामयी कन्या तो तहां स्थापन करताभया और तिन कन्याओंको माया से हरता भया २१।२२ और यह धर्मात्मा देवकी को कहताभया कि भय

मतकरो पश्चात् हे राजन् ये दुरासद दैत्य मायामयी कन्याओंको हरके प्रसन्न हुये षट्पुर को प्रवेश होतेभये २३ पश्चात् हे राजन् विधिदृष्ट कर्मसे वह यज्ञ वहुत गुणवाला होताभया २४ पश्चात् निमंत्रितकिये बुद्धिमान् ब्रह्मदत्तको यज्ञमें ये संपूर्ण राजाआते २५ जरासंध दंतवक्र शिशुपाल पांडव और धार्तराष्ट्र और मालवा और तद्गण २६ और रुक्मी और आव्हति और नीलऔर नर्मदऔर विंदानुविंद अवंती के राजा और शल्य और शकुनि ये संपूर्ण राजा आतेभये २७ और दृढ़ आयुध महात्मा और शूरबीर ऐसे और भी राजा आतेभये और आनके षट्पुर के समीप बासकरते भये २८ पश्चात् श्रीमान् नारदमुनि तिन्हों को देखके यह चिंतवन करता भया कि क्षत्रियोंका और यादवोंका यहां समागम होगा २९ सो यह युद्धका हेतु है सो यहां जतन करूंगा नारद मुनि ऐसे चिंतवन करके निकुंभ राक्षस के स्थान में मुनिगया ३० तहां निकुंभने और अन्य दानवों ने पूजनकिया पश्चात् तहां बैठे नारदमुनि निकुंभ के प्रति यह बचन कहते भये ३१ कि हे निकुंभ तू यादवों के साथ विरोध करके कैसे स्वस्थ रहेगा हे निकुंभ जो ब्रह्मदत्त है तिसको तू कृष्णजान क्योंकि विभु कृष्णचंद्र इसका सखाहै ३२ हे निकुंभ बुद्धिमान् ब्रह्मदत्त के पांचसौ स्त्रीहैं सो ब्रह्मदत्तने बसुदेव के पुत्र के प्यारकी इच्छा करके आनी हैं ३३ तिन्होंमें दोसौ ब्राह्मणों की हैं और सौ क्षत्रियोंकी और सौ वैश्योंकी और सौ शूद्रोंकी ३४ और हे राजन् पुण्यकर्मा दुर्बासा मुनिने तिन्होंको यह बरदान दियाहै कि तुम्हारे एकएक तो पुत्रहोगा और एकएक कन्या ३५ दुर्बासा के बरदानसे रूपसे ये वहुत अधिकहैं हे असुर तिसके बहुतसी कन्या हैं और वे कन्या सुंदर अंगवालीहैं ३६ और भर्त्ताओंके संगममें संपूर्ण पुष्पोंकी सुगंधको झिरे हैं और संपूर्ण कालमें येयौवनमें स्थित रहतीहैं ३७ और पतिब्रता हैं अप्सराओं के तुल्य हैं और क्रमसे अपने अपने धर्मोंमें स्थितहैं वहुत करके येकन्या भैम मुख्योंने दई हैं ३८ और जोउनमें अवशेषथीं तिन्होंको तू लायाहै सो तिनकन्याओं

केवास्ते संपूर्ण प्रकार से यादव युद्धकरैंगे ३९ सोसहायताकेवास्ते राजाओंको बरले और ब्रह्मदत्तकी पुत्रियोंकेवास्ते और सहायता के वास्ते अनेकप्रकारके रत्नराजाओंको दे ४० और जो और राजाआवें तिन्होंका आतिथ्यकर जबनारद मुनिने यहकहा तबअत्यंत प्रसन्न हुये असुर वैसेही करते भये ४१ और पश्चात् पांचसौ कन्या और अनेकप्रकार के रत्नइन्होंको लेकर पांडवोंके बिना क्योंकिये नारद मुनिने पहले बर्ज दिये अन्य राजाओं का पूजन करते भये ४२ जब राजाप्रसन्न हुये तबकहने लगेकिहे निकुंभ किसवास्ते हमारा पजनकिया क्योंकिजिससे पहलेकभीनहीं पूजन किया ४३ तबयह देवताओंका शत्रु कुंभ प्रसन्नहोकर कहनेलगा कि हे शूरबीरो हो तुम्हारे ताई धन्य है ४४ हे राजाओ श्रेष्ठो हमारा शत्रुओं के साथ युद्धहोगा सो तुमको वहां सहायता देनी योग्यहै ४५ वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेजनमेजय क्षीणहोगये हैं पापजिन्होंके ऐसे पांडओंके विना अन्यक्षत्रिय तिन्हों को कहतेभये ४६ कि हे निकुंभ ऐसाही होजायगा और हे कुरुनंदन पश्चात् वे क्षत्रिय युद्धके वास्ते साव-धानहोतेभये ४७ पश्चात् आहुकराजाको द्वारका में स्थापनकरके और महादेवजी के बचनको यादकरतेहुये कृष्णचंद्र भी सेनासहित षट्पुर में प्राप्त होतेभये ४८ पश्चात् बसुदेव के प्रेरेहुये भगवान् यज्ञवाटके समीप सुंदर देशमें पुरवासियों के हितकेवास्ते सेनास-हित बासकरताभया ४९ और तिस सेनाकी रक्षाके वास्ते श्रीमान् प्रद्युम्नको योजन करताभया ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांषट्पुरवधेद्वाचत्वारिंश दधिकशतोऽध्यायः १४२

एकसौ तेतालीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय जब एक मुहूर्त सूर्य उदयहोगया और जनोंके नेत्रजबनिर्मलहोगये तब बलदेव और कृष्णचंद्र और सात्यकि ये तीनों प्रसन्नहुये गरुड़पर सवार होते

भये १ पश्चात् युद्धकी बांछाकरके शस्त्र अस्त्रोंसे सावधानहुये बिल्वो-दकेश्वर महादेवजी को नमस्कारकरके और महादेवजी के वाक्य से पवित्रहुई २ आवर्तगंगा में स्नानकरके युद्ध की बांछा करतेभये पश्चात् प्रद्युम्नको आकाशमें रक्षाकेवास्ते स्थित करतेभये ३ और यज्ञवाटकी रक्षाकेवास्ते पांडवोंको योजन करके पश्चात् और बा-कीकीसेनाको गुफाकेदरवाजेपर योजन करके पश्चात् कृष्णचंद्र ज-यंतको और प्रवरको स्मरण करते भये ४ पश्चात् ये दोनों आके सन्मुख खड़ेहुये जब कृष्णचंद्र इनको भी प्रद्युम्नकी तरह योजन करतेभये ५।६ तिसके पश्चात् कृष्णचंद्र की आज्ञासे रणदुंदुभिको बजातेभये और मुरज और अनेकप्रकारके बाजेबजातेभये ७ पश्चात् शांब और गदने सेनाका युद्धके वास्ते मकर व्यूहरचा और शारण उद्धव भोज और वैतरण ८ और अनाधृष्टि और बिपृथु और पृथु और कृतबर्मा और सुदंष्ट्र और विचक्षु और मर्दन ९ और धर्मात्मा सनत्कुमार और चारु देष्ण इन यादवों की सेना व्यूह के मध्य में स्थित होती भई और अनिरुद्ध और जयंत और प्रवर ये सेनाको पछाड़ी की रक्षा करते भये १० और रथ अश्व नर हस्ती ये एक भाग में स्थित होतेभये पश्चात् कितनेक युद्धमें दुर्मद दानव तोमे-घकेसा शब्दवाले ११ गर्दभ और हस्ती और मकर और शिशुमार और घोड़े और महिष और गैंड़ा और ऊंट और कछुआ इनपर सवार होकर आतेभये १२।१३ और कितनेक अनेक प्रकार के शस्त्र लेकर रथोंमें बैठकर आतेभये और कितनेक मुकुट और पीठ और मुकुट और बाजूबंद इन्हों से भूषित ऐसे दानव षटपुरसे निक-से १४ और तुरी और नेमिस्वन और शंख इन्हों के शब्दों करके शहित १५ और असुरों की बहुतसी सेना करके सहित निकुंभ सब से आगे ऐसे निकसता भया जैसे देवताओं के मध्यमें इन्द्र १६ पश्चात् ये ऐसे बलोत्कट दानव पृथ्वी और स्वर्गको कंपाते भये और अनेक प्रकारका शब्द करते भये और वारंबार सिंहनाद करते भये १७ हे राजन् पश्चात् शिशुपालसे आदि लेकर राजाओं को

सेना भी असुरों की सहायता के वास्ते सावधान हुये इकट्ठे होते भये १८ पश्चात् दुर्योधन के सौभ्राता ये संपूर्ण अनेक प्रकार के रथों में स्थित होकर युद्ध के वास्ते आतेभये १९ और कठिन और नादी और द्रुपद स्यंदन ये संपूर्ण युद्ध के वास्ते स्थित होते भये और रुक्मी और आह्हति ये भी रणभूमिमें स्थित होते भये और तालके वृक्ष की तरह धनुष को कंपातेहुये २० शल्य और शकुनि और भगदत्त और जरासंध और त्रिगर्त और बिराट और सहोत्तरये संपूर्ण युद्धके वास्ते स्थित होतेभये २१ और निकुंभसे आदि लेकर संपूर्ण जीतनेकी इच्छाकरतेभये २२ और ये महाअसुर यादवोंकेसाथ देवताओंकी तरह युद्धकरनेकी इच्छाकरतेभये २३ पश्चात् निकुंभ सर्पोंकेसे बाणोंसे तिसयुद्धमें भीमहै दर्शन जिसका ऐसी भैमों की सेनाको ताड़ना करताभया २४ पश्चात् सेनापति अनाधृष्टि यादव तिसको नहींसहताभया तिसके पश्चात् यहअनाधृष्टि चित्रपुंखवाले और शिलासे पैनाये ऐसे महाघोर बाणोंसे निकुंभकेरथ और घोड़ों को आच्छादन करताभया २५ और ध्वजनिकुंभ संपूर्ण बस्तु आच्छादनकरतीभई २६ पश्चात् मायीयोंमें श्रेष्ठयह निकुंभ तिसमायाको दूरकरपश्चात्भैमोंमेंश्रेष्ठ अनाधृष्टिकोथांभताभया २७ और पश्चात् तिसको षट्पुर संज्ञित गुफामें रोकताभया पश्चात् तिसशूरबीर को निकुंभ रोककर२८ पश्चात् कृतबर्मा और चारुदेष्ण औरभोज और बैतरण और सनत्कुमार और निशठ और उल्मुक इनसंपूर्णोंको और अन्योंको गुफामें रोकताभया २९।३० और हे जनमेजय माया के आश्रयहुआ आप नहींदीखताभया पश्चात् ऐसे गुफामें यादवों को प्राप्तकरते हुये निकुंभकोदेखके और भैमोंको घोरकदन जानके ३१ पश्चात् कृष्णचंद्रबलदेवजी और सात्यकि औरकाम और शांबअनिरुद्धये और अन्यबहुतसे भैमये संपूर्ण कुपित होतेभये ३२ पश्चात् कृष्णचंद अपनेशार्ङ्ग धनुषको चढ़ाकर प्रवृत्तहुये दानवोंमें ऐसेब्याप्त होतेभये जैसेतृणमें अग्नि ३३ पश्चात् तिसईश्वर को देखके येसंपूर्ण दानव ऐसेसन्मुख दौड़तेभये जैसेकाल पाशमें बंधेदीप्त अग्निके

सन्मुख पतंग ३४ पश्चात् ये दानव ऊंचेपरचढ़के हजारहा शतघ्नी और लोहके मूसल और अग्निकेसा तेजवाले शूल ३५ और प्रदीप्त फरसाऔरपर्वतोंके शृंग और वृक्ष और भाराशिला इन्होंकोसन्मुख फेंकके पश्चात् सदोन्मत्त हस्ती और घोड़े और रथइन्हों को फेंकते भये ३६ पश्चात्इनसंपूर्णोंको हंसतेहुयेकीतरह नारायणरूप अग्नि वाणोंसे भस्मकरताभया ३७ पश्चात् जगत्केहितकरनेवाले कृष्णचंद्रकोवाणोंसे आच्छादन करतेभये ३८ और नारायणके बाणोंको असुरऐसे नहींसहतेभये जैसेवर्षाको बालूकापुल ३६ और हेभारत कृष्णचंद्रके सन्मुख असुर ऐसेनहीं ठहरतेभये जैसेमुखफाड़ेहुये सिंह के आगेवृषभ ४० पश्चात् बध्यमान ये असुर नारायण के भयसे पीड़ितहुये जीवनेकी आशाकरके आकाशमें जातेभये ४१ तिन्होंको देखके इन्द्रका पुत्रजयंत और प्रवर ये दोनों अग्निके समान घोर वाणोंसे हननकरतेभये ४२ पश्चात् कटे हुये असुरोंके शिर पृथ्वी पर ऐसे पड़तेभये जैसे शिखरसे छूटे तृणराजके फल४३ और कटी हुई दैत्यों की भुजा पृथ्वीपर ऐसे पड़ती भई जैसे पांच मुखों वाले सर्प४४पश्चात् प्रद्युम्न मायामई गुफाको रचके तिसमें क्षत्रियोंको गेरनेके वास्तेगद और शारण और शठ और शांब इन्होंकरके सहित निकसताभया४५।४६ पश्चात् रणमें जतन करतेहुये कर्णको मथके प्रद्युम्न तिसको पकड़तेभये पश्चात् यहप्रद्युम्न शब्द करकेपश्चात् दुर्योधन और बिराट और द्रुपद ४७।४८ और शकुनि और शल्य और नील और भीष्मजी और बिंद और अनबिंद और जरासंध४६ और त्रिगर्त मालव और वासात्य ये संपूर्ण राजा और महाबलवान् धृष्टद्युम्न से आदिलेकर और पांचालके राजा ५० और आह्वति और मामारुक्मी और शिशुपाल और भगदत्त इन संपूर्ण राजाओं को घोरगुफा में रोकके यह वचन कहनेलगा ५१ कि हे राजाओ इसवास्ते तुमको गुफामें गेरूंहूं ५२ कि विल्बोदकेश्वर महादेवजी ने यह आज्ञामेरेको दईहै कि राजाओंको गुफामें गेरदो ५३ पश्चात् प्रद्युम्न कहनेलगा कि निकुंभके रोके हुये यादवोंको मैं छुटाऊंगा

पश्चात् राजसेनापति शिशुपाल घोरशरोंसे भैमोंको और प्रद्युम्न को आच्छादन करता भया ५४।५५ पश्चात् प्रद्युम्न बिल्वोदके श्वरको नमस्कार करके और महाबल शिशुपालको बांधने का मनो रथकरताभया ५६ पश्चात्हजारहा पास पकड़नेकेवास्ते महादेवजी देताभया ५७ और महादेवजीने कहाकिहे प्रद्युम्नइनरत्नके लोभी राजाओंकोबांधलो ५८ और कृष्णचंद्रभगदत्तइनकोभी ऐसेहीकहदो पश्चात् प्रद्युम्न जो है शिशुपाल और रुक्मी और आहृति इन्हों को और अन्यराजाओं को महादेवजीकी दईउत्तम पास से बांधता भया ५९ और बांधके मायामयी गुफामें ऐसेप्राप्त करताभया जैसे बिनाश्वास के सर्पोंको प्राप्तकरतेहैं ६० और अपनेपुत्र अनिरुद्धको तिन्होंकी रक्षामें छोड़ताभया और पश्चात् तिन संपूर्णोंको बांध के पश्चात् सेनापति और खजानाकेपति और हस्ती अश्वरथ इन्होंके समूह इनसंपूर्णोंको अपने आधीन करताभया ६१ पश्चात् साव धानहुआअसुरोंको मारनेकेवास्ते उद्योगकरनेलगा और कवचबांधे ब्रह्मदत्त द्विजको कहनेलगा कि हे ब्रह्मदत्त भय मतकरै ६२ और अच्छीतरह यज्ञकोसमाप्तकर और देखयह अर्जुन तेरारक्षकहै क्यों कि ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ ब्रह्मदत्त जिनकेपांडव सहायहैं तिन्होंको देवता और असुर और मनुष्य आदि किसी से भयनहींहोता ६३ और हे द्विज तेरीपुत्री राक्षसोंने तेजसेभी नहींछुई है देख यज्ञबाट में मैंने मायासे स्थापन कररक्खीहै ६४ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंश पर्वांतर्गत बिष्णुपर्वभाषायांषटपुरबधे त्रिचत्वारिंशदधिक शतोऽध्यायः १४३॥

एकसौचौवालिसका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजयजब नौकरों सहित राजाबांधलिये तब असुरोंको बहुतकष्ट प्राप्तहोताभया १ और बलदेव और कृष्णसे आदि लेकर यादवों के बाणोंसेबींधे हुये दिशाओंमें दौड़तेभये २पश्चात् दानवोंमें श्रेष्ठ निकुंभक्रोध होकर तिन्हों

को वचनकहनेलगा कि हे असुरोहो प्रतिज्ञाको भेदन करके भयसे विह्वल हुये कहां जातेहो ३ अरेयहभी जानोहो हीन प्रतिज्ञावाले और युद्धमें भागेहुये नीचेलोकोंको जाया करतेहैं अरेनिश्चय करके ज्ञातियोंको बदला दो ४ और युद्धमें कठोरशत्रुओंकोजीतके फलभोगो और युद्धमेंसन्मुख मृत्युहोवेहै सोभीस्वर्गमेंबसैहै ५ और भागकेघर गयेहुयेक्या सुखदेखोगे और स्त्रियोंकोजाके क्याकहोगे अरे तुम्हारे जीवनोंको धिक्कारहै २।६ हे दैत्योहो तुमको लज्जा क्योंनहींआतीहै ऐसे कहेहुये असुर लज्जितहोकर आतेभये और आनके दुगुण वेग सेलड़तेभये ७ और जो यज्ञबाटमें जाताभया तिसको अर्जुन मारता भया और नकुल सहदेव भीमसेन युधिष्ठिर ये भी यज्ञ प्राप्त हुयों को मारतेभये ८ और आकाशमें गयेहुये असुरोंको द्विजोंमें उत्तमप्र-वर और जयंत दोनों मारते भये ९ पश्चात् असुरोंके रुधिरसे बाल हैं शिवाल जिस में और चक्र है कछुवा जिसमें और रथ है भंवर जिसमें और हस्ती हैं पर्वत जिसमें १० और ध्वजामाला वृक्षरूपों से आच्छादित और शूरबीरोंके शब्दसे शब्दवाली और गोबिंदरूप शैलसे उत्पन्न होनेवाली और भयानकों के चित्तको मथनेवाली और रुधिरके बुंदबुदों से व्याप्त और तरवार रूप तरंगों से व्याप्त ऐसी नदी रणसे झिरतीभई मानोंवर्षा ऋतुमें जलकी नदी १२ पश्चात् निकुम्भ जो है शत्रुओंको बढ़ेहुए देखकर और सहायोंको हत देखकर वीर्यसेती ऊपरको उछलता भया १३ तब यह नि-कुंभकोजयंतने और प्रवरने निवारण करदिया पश्चात् वज्रकेसे शरों से और लोहेके मूसलसे क्रोधसे होठोंको फरकाके रणकरकश १४ यह निकुम्भ प्रवरको ताड़ित करताभया जब यह प्रबर पृथ्वी पर गिरगया १५ तब जयंत इस पड़ेहुए से भुजाओं करके मिलता भया पश्चात् ईसको प्राणोंसहित जानके और सन्मुख आये असुर को मारके १६ और निकुम्भकी तरफ दौड़ा और इस निकुम्भको खड्गसे मारता हुआ और यह निकुम्भ मूसलसे जयंतको ताड़ना करताभया १७ पश्चात् निकुम्भ और जयंतके युद्धमें यह बध्यमान

महासुर चिंतवन करताभया १८ कि ज्ञातिको मारनेवाला कृष्ण चंद्रके साथ युद्ध करूंगा और तिस कृष्ण को हराऊंगा इस इंद्रके पुत्र के युद्धसे क्या है १६ ऐसे निश्चय करके यह अंतर्धान होगया और जहां कृष्णचंद्र थे उस जगह युद्ध के वास्ते जाताभया २० पश्चात् ऐरावतके स्कंध पर स्थितहुआ इंद्रदेवताओं करके सहित युद्ध देखने के वास्ते आताभया २१ पश्चात् पुत्र जयंत से साधु साधु ऐसे सराह के मिलताभया और यह धर्मात्मा इन्द्र मोहव-र्जित प्रवर से भी मिलताभया २२ पश्चात् रणमें दुर्जय जयंतको रणमें जीताहुआ देखकर इन्द्र की आज्ञासे स्वर्ग में नगारे बजाते भये २३ और पश्चात् निकुम्भ जो है भगवान्‌को रण में दुर्जय देखताभया और अर्जुनको यज्ञ वाटके नजदीक देख कर पश्चात् यह निकुम्भ बहुतसा शब्द करके पक्षिराज को ताड़नाकरताभया और घोर परिघ से बलदेवजी और सात्यक २५ और नारायण और अर्जुन और भीम और युधिष्ठिर और नकुल और सहदेव और शांब और प्रद्युम्न इन संपूर्णों के साथ २६ यह शीघ्रकारी दैत्य युद्ध करनेलगा और इन संपूर्ण शस्त्रोंके जाननेवालों को यह नहीं दीखता भया २७ जब यह नहीं दीखा तब हृषीकेश भगवान् प्रथमगणोंके ईश्वर बिल्वोदकेश्वरको नमस्कार करके ध्यान करते भये २८ पश्चात् महादेवजी के तेजके प्रभाव से ये संपूर्ण इस मा-यावी निकुम्भको देखतेभये २६ पश्चात् अर्जुन जो है कैलासकी शिखरके आकारवाला और आकाशको ग्रसताहुआ और जातिको नाशकरनेवाला और बैरी कृष्णको रण में देखताहुआ ३० ऐसे निकुम्भको अर्जुन देखकर और गांडीव धनुष को चढ़ाबाणों करके तिसके परिघको और गात्रों को बारम्बार बींधताभया ३१ और ये शिलापर पैनाएबाण तिसके अंगों में और परिघ में लगकरगूंठे हुए संपूर्ण पृथ्वी पर पड़तेभये ३२ पश्चात् हे राजन् अस्त्र युक्त इन बाणों को अर्जुन बिफल देखकर भगवानको पूछताभया कि हे भगवन् यह क्या कारण है ३३ बज्रकैसे मेरेबाण पर्वतोंको भी

भेदन करदें और इसके नहीं लगते हे भगवन् यह मेरे को बड़ा आश्चर्य है ३४ पश्चात् हे भारत हंसतेहुए भगवान् तिस अर्जुन को यहबचन कहतेभये कि हे कौंतेय यह निकुम्भ महद्भूतहैइसको विस्तारसे सुन ३५ हेअर्जुनपहले यह देवशत्रु और दुरासद और महावल ऐसा निकुम्भ उत्तर कुरूवोंको जाके सौहजार बर्षघोरतप कर्ताभया ३६ पश्चात्महादेवजीप्रसन्नहोकरबर कालोभदेतेभये तब यह तीन रूपोंको सुर असुरोंसे अवध्य मांगताभया तब वृषभध्वज भगवान् महादेवजी तिसको कहते भये कि हे निकुंभ जब तू मेरा और ब्राह्मणोंका और विष्णुका अप्रियकरेगा ३८ तब हे महासुर तेरेको हरि मारेंगे और नहीं हे निकुम्भमैं और विष्णु ब्राह्मणों पर दयाकरनेवालेहैं और ब्राह्मण हमारो परमगतिहैं ३९ कृष्णचंद्रकहे हैं कि हे पांडुनंदन यह बरदियाहुआ दानव संपूर्णशस्त्रोंसे अवध्यहै और यह त्रिदेहहै और अतिप्रमाथी है ४० और हे अर्जुन भानुमतिके अपहरणमें इसका एक देहमेरेको हता और इस दुरात्मा का यह षट्पुरदेह अवध्यहै ४१ और तपकरके युक्त एक तो इसकादेह दितिकी शुश्रूषाकरैहै और दूसरा जो इसकादेहहै तिसकरकेषट्पुर में वसैहै ४२ हे अर्जुन यह निकुंभका संपूर्ण चरित्र मैंने तेरे आगे कहेहैं और हे शूरबीर इसकेबधमें कथा पश्चात् होगी ४३ पश्चात् अर्जुन और कृष्णचंद्रके ऐसे कहतेहुये यह रणदुर्जय असुर षट्पुर संज्ञक गुफाको प्रवेशहोताभया ४४ और मधुसूदन भगवान्भीतिस घोरदशाको प्रत्यक्षहोकर तहां तिन राजाओंको देखतेभये ४५ और हे जनमेजय घोरनिकुंभके साथ युद्ध करतेभये और बलदेवजी से आदि लेकर संपूर्ण यादव और महात्मा पांडव ये भी प्राप्तहुये पश्चात् प्रवेशहोकर कृष्णचंद्रके मतसे संपूर्ण युद्धकरतेभये ४६ और कृष्णचंद्रका घेराहुआ प्रद्युम्न भी तिसके साथ युद्धकरताभया ४७ पश्चात् जिनबांधव यादवोंको यह पहले लाताभया ४८ तिन संपूर्णोंको प्रद्युम्न छुटाताभया पश्चात्निकुंभके बधकीइच्छा करतेहुये ४९ । ५० संपूर्ण राजा प्रसन्नहोकर प्रद्युम्नको यहकह

तेभये ५१ कि हे शूरबीर छुटा हमने पश्चात् प्रतापवान् प्रद्युम्न इन संपूर्णों को छोड़ताभया ५२ और ये संपूर्ण राजे नीचाको मुख किये और मौनधारणकिये लज्जासे व्याप्तहोकर स्थितहोतेभये ५३ और गोविंद भगवान् जयकेप्रति यत्नकरताहुआ और अपनाशत्रु ऐसे घोरनिकुंभको भगवान् युद्धकरातेभये ५४ पश्चात् हे राजन् लोहके मूसल से निकुंभ कृष्णचंद्र को मारताभया और गदाकरके कृष्णचंद्र निकुंभको मारताभया ५५ पश्चात् बहुतप्रहारोंसे हतेहुये ये दोनो मोहको प्राप्तहोगये तिसके अनंतर मुनियोंके समूह पांडव और यादवोंको पीड़ितदेखकर ५६ और कृष्णके हितकेवास्ते जप करतेभये और वेदोक्त स्तोत्रोंसे भगवान्की स्तुति करतेभये ५७ पश्चात् केशव भगवान् के प्राण वाहड़े और दानवके भी प्राणवाहड़े तब फिर ये दोनों युद्धकरनेलगे ५८ और वृषभ और गजकी नाईं शब्दकरतेभये और श्वानोंकीतरहक्रोधभरे प्रहारकरनेलगे ५९ पश्चात् हे जनमेजय कृष्णचंद्रको आकाशवाणी कहतीभई कि हे कृष्ण देवता और ब्राह्मणोंके कंटकरूपको इसको चक्रसेमारो ६० और विल्वोदकेश्वर महादेवजी भी यह कहतेभये कि हे महाबल कृष्णचंद्र बहुतसे धर्म और यशको तू प्राप्तहो ६१ पश्चात्कृष्णचंद्र इसको अंगीकारकरके और लोकनाथ महादेवजी को नमस्कार करके पश्चात् दैत्यकुलका नाशकरनेवाले सुदर्शनचक्र को छोड़ते भये६२औरतिसकरकेश्रेष्ठकुंडलोंसहित निकुंभके शिरकोछेदनकरते भये और नारायण की भुजासे काटाहुआ सूर्यके मंडलकेसी कांति वाला ६३ शिर ऐसे पृथ्वीपर पड़ा जैसे पर्वतके शृंगसे पृथ्वीपर मत्तमयूर ६४ हे नरोंमेंशार्दूल जनमेजय जगत्को त्रासकरनेवाला वह निकुंभ जब मारदिया तब विल्वोदकेश्वर महादेवजी प्रसन्न होतेभये ६५ और आकाशसे इंद्रकोछोड़ीहुई पुष्पोंकीबर्षाहोतीभई और हे राजन् आकाशमें नगारेबजे ६६ और संपूर्ण जगत्प्रसन्न हुआ और मुनि विशेषकरके आनंदितहुए और भगवान् कृष्णचंद्र यादवोंको सैकड़ोंदैत्यों की कन्यादेतेभये ६७ और क्षत्रियों को बार

वार भगवान् सांतनाकराके पश्चात् अनेकप्रकारके रत्न और श्रेष्ठ वस्त्र देतेभये ६८ भगवान् कृष्णचंद्र बड़े उत्तम घोड़ेजोड़के छःहजार रथ तो पांडवोंको देतेभये ६९ और पुरको बढ़ानेवाले भगवान् सो श्रेष्ठ षट्पुर ब्रह्मदत्त ब्राह्मणको देतेभये ७० पश्चात् जब यज्ञ समाप्तहोगया तब महाबल भगवान् शंखचक्र गदाकोधारणकिये क्षत्रियोंको और पांडवोंका बिसर्जनकरके ७१ पश्चात् बिल्वोदकेश्वर महादेवजीके समाजकरतेभये और मांस दाल इन्हों करकेसहित बहुतसे अन्नबनाये और ब्यंजन बहुतसेबनाये ७२ पश्चात्मल्लहैं प्यारे जिन्होंके ऐसे भगवान् उत्तम मल्लोंकीकुस्तीकराके पश्चात् तिन्होंको बहुतसा द्रब्य और बस्त्रदेतेभये ७३ पश्चात् मातापिताओंकरके सहित और संपूर्ण यादवोंकरकेसहित महाबलभगवान् ब्रह्मदत्तको नमस्कारकरके द्वारकामें जातेभये ७४ पश्चात् हृष्ट पुष्ट जनोंसेब्याप्त और पुष्पोंसे विचित्रमार्गवाली ऐसी पुरीकोप्राप्त होतेभये ७५ यह षट्पुरका बध और भगवान् की जय जो है इसको सुनतेहैं अथवा पढ़तेहैं सो युद्धमें जयको प्राप्त होतेहैं ७६ और ब्याधिसे और रोगसे और बंधन से छुटजातेहैं ७७ और यह पुंसवन और गर्भाधानका करनेवालाहै और श्राद्धमेंपढ़ाहुआ तिसको अक्षयगुणकरदेताहै ७८ हे भारत यह महात्मा अमर बरका जय जो निरंतर पढ़ैहैं सो सुंदरगतिको प्राप्तहोतेहैं ७९ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांषट्पुरबधेचतुश्चत्वारिंशदधिकशततोऽध्यायः १४४ ॥

एकसौपैंतालीसका अध्याय ॥

ऐसे सुन जनमेजयने प्रश्नकिया कि हे मुनिबरोंमेंश्रेष्ठ बैशंपायनजी मैंने रमणीक यह षट्पुरकावध तो सुना अब पहलेकहाअन्धकका वध कहो १ और हे मुने भानुमतीका हरना और निकुंभका वध विशेषकरके वर्णनकरो हे भगवन् इसके सुननेमें मेरेकोप्रीति उपजती है २ ऐसे सुन बैशंपायनजी कहनेलगे कि हे राजन्जोजो

दैत्य विष्णु भगवान्ने मारे हैं तिनके मारनेमें दितिने तपसे कश्य पका आराधनकियाहै ३ हे राजन् एक समयमें तपसे और काल युक्त शुश्रूषासे और अनुकूलतासे मधुरबचनसे दितिने जब कश्यप का आराधनकिया ४ तब कश्यपजी प्रसन्न होकर दितिसे कहने लगे कि हे भद्रे हे सुव्रते मैं तेरे ऊपर प्रसन्नहुआ तू बर मांग ५ ऐसे सुन दिति कहनेलगी कि हे भगवन् हे धर्मकोधारणकरनेवा ले देवताओंने मेरेपुत्र मारदिये इसवास्ते देवताओं से अबध्य और अमित पराक्रमवाला ऐसे पुत्रकी इच्छाकरती हूं ६ ऐसे सुन कश्य पजीने कहा कि हे दक्षकीपुत्री हे देवि तेरे देवताओं से अबध्यपुत्र होगा हे कमललोचने इसमें कुछ संदेह नहीं ७ परंतु देवदेवरुद्रके बिना क्योंकि तिससे मैं समर्थ नहीं हे प्रिये तिस पुत्रकरकेतुझको अपना आत्मा सर्वथा रक्षाकरना योग्य है ८ पश्चात् सत्यबा ह कश्यपजी तिसको शुभ देशमें प्राप्त होतेभये तिसके अनंतर हजार भुजाओंवाला और हजार शिरोंवाला और दोहजार नेत्रोंवाला और दोहजार चरणोंवाला ऐसे पुत्रको दिति जनतीभई ९ । १० और हे भारत यह नहीं अंधा भी अंधेकीतरह चलताभया इसवास्ते मनुष्य तिसको अंधकनामसे विख्यात करतेभये ११ और हेभारत यह अंधक मैं अबध्यहूं ऐसे जानके संपूर्ण लोकोंको बाधाक रनेलगा और अपने बलसे रत्नोंको हरनेलगा १२ और अप्स-राओंके गणको पकड़ पकड़ गर्भ ठहराताभया और अपने स्थान में यह ऊर्जित हुआ संपूर्णलोकों को भयदेताभया १३ और यह पाप निश्चय अंधक मोहसे दूसरों की स्त्रियों को हरनेलगा और रत्नोंको हरनेलगा १४ पश्चात् हे भारत बड़े महाबल जो संपूर्ण असुर हैं तिन्होंके सहायकरके त्रिलोकी के जीतनेको उद्यम करने लगा १५ तिसको भगवान् इन्द्र सुनके पिता कश्यपको बचन कहताभया कि हे मुनि सत्तम अंधकने यह ऐसे जयका आरम्भ किया है १६ हेमुने हमारेको आज्ञा फरमावो छोटा जो यह अंधकहै इसके अपराध को मैं कैसे सहूं १७ और हे विभो इस इष्ट पुत्रके

विषे मैं कैसे नहीं प्रहार करूंगा चाहे मारेपश्चात् मेरे ऊपर आप क्रोधभी हो१८ऐसे देवेंद्रके वचन सुनके कश्यप मुनिवचनकहनेलगे हे देवेंद्र तिसको मैं निवारण करदूंगा तेरा सर्वथा कल्याणहो १६ पश्चात् दितिकरकेसहितकश्यपजी अंधकको त्रैलोक्यकेविजयसेकष्ट सेनिवारणकरतेभये२०परंतु निवारण किया भी यह दुष्टात्मा स्वर्ग वासियोंको बाधाकरताभया २१ और तिन तिन उपायोंसे यह दुष्टात्मा पीड़ाकरके पश्चात्खोटी बुद्धिवालाअंधकनंदन बनकेबृक्षोंको उखाड़ताभयाऔर उच्चैःश्रवाकी औलादके अश्वोंको स्वर्गसे लाता भया२२औरउत्तमहस्तियोंको भी लाताभयाऔरतपकरके देवताओं की यज्ञकोविध्वंस करताभया२३औरहेराजन् तब यज्ञों में अंधकके विघ्नके भयसे२४तीनों वर्णोंने यज्ञकरना छोड़दिया२५औरतपकरना छोड़दिया और हे राजन् तिसके भयसे वायु चलने लगाऔर सूर्य भी भयसे तपनेलगा और नक्षत्रों सहित चंद्रमा भी इच्छाही से दीखता भया २६ और बलसे गर्वित और महाघोर ऐसे अत्यंत घोर अंधक के भयसे आकाश में विमान नहीं चलते भये २७ और हे कुरुकुलको बहनेवाला तिस अत्यंतघोर अंधकके भयसे ओंकार रहित जगत् में वषट्कार होताभया २८ और यह पापी उत्तरकुरुओंको भयसे भगाताभया और भद्राश्व केतुमाल जंबूद्वीप इन्होंको प्राप्तहोता भया २९ और संपूर्ण देवता और दानव भयसे तिसको माननेलगे और समर्थ भी तिसको माननेलगे ३० और हे राजन् वक्ष्यमान संपूर्ण ब्रह्मवादी ऋषि इकट्ठे होकर अंधकके बधको चिंतवन करतेभये ३१ और तिन्होंके मध्यमें बुद्धिमान् बृहस्पतिजी यह वचन कहतेभये कि ऋषियो रुद्रकेबिना और से इसकी मृत्युनहीं है ३२ क्योंकि जब कश्यपने दितिको बरदानदिया तब यह कहदियाथा कि रुद्रसे रक्षाकरनेको तो मैं समर्थ नहीं ३३ इसवास्ते वह उपाय चिंतवनकरें जिसकरके सनातन महादेवजी संपूर्ण भूतों को अंधकसे पीड्यमान जानें ३४ और जगत्काप्रभु भगवान्महादेवजी जब तुम्हारेअर्थको जानलेगा तब अवश्य वह सबोंगति

देव तुम्हारे अस्त्रुवोंको पोंछेगा ३५ क्योंकि देवताओंके देवता और जगत् के गुरु ऐसे महादेवजी का यह संकल्पहैं कि दुष्टोंसे संतोंकी रक्षाकरनी और ब्राह्मण तो विशेषकरके तिन्हों को रक्षितव्यहैं ३६ इसवास्ते हम संपूर्ण नारदमुनिके शरण प्राप्तहोवेंगे सो हमारे को उपाय बतावेंगे क्योंकि जिससे नारदमुनि महादेवजीकेमित्रहैं ३७ ऐसे संपूर्ण ऋषि बृहस्पतिके बचनसुनके रक्षाकेवास्ते नारदमुनिको कहतेभये ३८ और बिधिपूर्बक मुनिका पूजनकरके देवताकहनेलगे कि हे साधो शीघ्र कैलासमेंजावो ३९ और यह नारदमुनि भी तिसको अंगीकारकरके अंधकके बधको महादेवजीको विज्ञापनकराताभया ४० पश्चात् जब ऋषि चलेगये तब तिस कार्यको मनसे नारदमुनि बिचारके पश्चात् ऐसे करना यह देखताभया ४१ पश्चात् मंदारबनके मध्यमें जहां देवदेव महादेवजी रहतेथे तिनके देखनेकेवास्ते नारदमुनि गये ४२ पश्चात् महादेवजीके मित्र औरमुनियोंमेंश्रेष्ठ ऐसे नारदमुनि एकरात्रि तिस रमणीकबनमें बासकर ४३ पश्चात् महादेवजीसे आज्ञालेकर कल्पवृक्षके पुष्पोंकी मालापहर फिर स्वर्गमें आतेभये ४४ पश्चात् अंधक भी तहां स्वर्गमें आया और नारदमुनिकेकंठमें बहुतबिचित्रऔरसुगंधवाली ४५ ऐसीमालाको यह दुरात्मादेख और सुगंधिलेकर कहनेलगाकि हेमहामुने हे तपोधन ४६ यह ऐसी सुंदर पुष्पजाति कहां है अनेक प्रकारकी गंधको और वर्णको बारंबार उत्पन्न करतेहैं ४७।४८ हे मुनेस्वर्गके कल्पवृक्षों सेभी सिवायहै और हेमुने जहांये ऐसेपुष्प हैं तिस देशका कौनमालिक है और कौनतहांसे लानेको समर्थहै यहकहो और हमारेऊपर अनुग्रहकरो हेभारत जनमेजय ४९ ऐसेसुन नारदमुनिहंसतेहुयेकी तरहबचन कहतेभये ५० हेशूरबीर पर्वतोंमें श्रेष्ठमंदराचलहै तहांकामगमवनहै सोमहादेवजीने रचरक्खाहै तहां ऐसे पुष्पहैं ५१ परंतुतिस बन में महादेवजीको आज्ञाबिना कोई नहीं जासकताहै ५२ क्योंकितहां अनेकप्रकारके शस्त्रलिये और घोररूप धारणकिये और दुरासद और संपूर्णभूतोंसे अवध्य और महादेव

जीसे रक्षित ऐसेमहादेवजीके गणातिसकी रक्षामें रहतेहैं ५३ और सर्वात्मा और सर्व भावन गणोंसहित ऐसे महादेवजी तहां नित्य क्रीड़ाकरतेहैं ५४ इसवास्ते हे कश्यपके पुत्र तपों से तिसत्रिभुवनेश्वर महादेवजीका आराधन करके पश्चात् कल्पवृक्षके पुष्पों को प्राप्तहोनेको समर्थहै ५५ और हेअंधक स्त्रीरत्न और मणिरत्न और अन्यरत्न जिनजिनकीपुरुषबांछाकरेहै सोसंपूर्णबस्तु वे महादेवजीके प्यारे वृक्षफलतेहैं ५६ और हेअतुलपराक्रमवाले अंधकतहांसूर्यऔर चंद्रमाभी नहींतपैहैं किंतुअपनीही कांतिसे वहबन प्रकाशितहै ५७ और दुःखसे बर्जित है और तहांकितनेक वृक्षतो सुगंधको झिरेहैं और कितनेकवस्त्रोंको उत्पन्न करतेहैं ५८ और कितनेक तरुभक्ष्य और भोज्य औरपेय और लेह्य और चोष्य इन्होंको उत्पन्न करतेहैं और तिनतरुओंसे अनेकप्रकारकी बांछितबस्तु उत्पन्न होतीहैं ५९ और प्यासभूखग्लानि चिंताये दुःखउस कल्पवृक्ष के बनमें नहीं होते ६० और हे शूरवीरकहांतककहैं सौबर्षकरकेभीतिसकेगुणनहीं वर्णन करसकें और हेअंधक जो स्वर्गमें गुणहैं तिससेभी अधिक गुणतिस बनमेंहैं ६१ और जोएकदिनभी तहांबास करलेसोमहेंद्र सहित संपूर्ण लोकोंको जीतले ६२ और मेरामनतो ऐसेकहैहै कि वहबन स्वर्गकाभी स्वर्गहै और सुखोंकाभी सुखहै ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांअन्धकबधेपंचचत्वारिंशदधिकशतोऽध्यायः १४५ ॥

एकसौछियालीसका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् अंधक महासुर ऐसे तत्त्व से नारद मुनिके बचन सुनकर और मंदराचलको जानेको मनकरता भया १ सो बड़ातेजस्वी और महाबल यहऐसा अंधक असुरों को बुलाके और क्रोधहुआ महादेवजीके स्थान मंदर को जाताभया २ पश्चात्बड़ेमेघोंसे आच्छादित और महौषधियोंसे व्याप्त औरअनेक सिद्धोंसे व्याप्त और महर्षिगणोंसे सेबित ३ और चंदन और अगर

इनके वृक्षोंसे युक्त और सरल के वृक्षोंसे व्याप्त और किन्नरों के गीतोंसे रमणीक और बहुतसे हस्तियों से व्याप्त ४ और पवनसे कंपायेहुये फूलेवृक्षोंसे कहींनृत्य करताहुआ कीतरह और झिरतेहुये धातुओं से कहीं बिलिप्तकी तरह ५ और पक्षियों के मधुर शब्दसे कहींबोलतेहुयेकी तरह और जहांतहां पड़तेहुये ६ सुंदर पैरोंवाले हंसोंसेब्याप्त और दैत्योंको नाशकरने वाले और महाबलवान् ऐसे चरतेहुये झोटोंसेयुक्त ७ और चंद्रमाकेसी कांतिवाले सुफेद सिंहों से भूषित और सुवर्णसे भूषित और सिंहोंसे ब्याप्त८और मृगसमूहों सेयुक्त रूपधारणकिये ऐसे मंदर पर्वतको बलसे दर्पित यह अंधक बचन कहनेलगा ९ किरेमंदराचल जैसे पिता कश्यपजीके बरदान सेमैंअवध्यहूं इसबातको तूभीजानताहै यानहीं १० और हेगिरे यह संपूर्ण चराचर त्रैलोक्य मेरे बशमेंहै और मेरे भयसे कोई सन्मुखयुद्ध करनेको समर्थनहीं ११ सो हे महागिरे तेरी शिखरमें कल्प वृक्षका बनहै सो संपूर्ण कामना के देनेवाले पुष्पों से भूषितहै १२ और उत्तम रत्नहैंतेरी शिखरमें उत्पन्नहुये तिस बनकोबता मैं भोगूंगा १३ और मेरामन संभ्रमको प्राप्तहोताहै कि जो तू क्रोधभी होगामेरा क्या करेगा तेरेको मारूंगा तो कोईरक्षा करनेवालाभी नहीं है १४ ऐसे कहाहुआ मंदराचल तहां अंतर्द्धान होगया १५ और पश्चात् अंधक बरसे गर्बितहुआ अत्यंतक्रोध होकर पश्चात् घोरशब्द छोड़ताभया यह बचनकहनेलगा१६कि रेपर्वत मैंने तोतूको जाचाऔरफिरभीमेरा बचन नहींमाना इस वास्ते अब मेरेबलको देख तेराचूर्ण करताहूं१७ ऐसे कहके पर्वतकी शिखर उखाड़ तिसकोबहुत योजनपर दूसरीति सहीकी शिखरपर फेंकता भया १८ ऐसे तिन असुरों सहित बिघ्न करनेलगा पश्चात् तिस महागिरिको ऐसे भज्यमानजान भगवान् रुद्रजानकर तिसपर अनुग्रह करतेभये१९जैसापहलेथा वैसाहीबना दिया और हे भारत पश्चात् महादेवजी के प्रभावसे फेंकेहुयेशृंग असुरोंको नष्ट करताभया २० और जो असुरनहीं मरेथे औरअच्छी तरहसे खड़ेथे तिन्होंको देखके और मर्दनसेनाको देख क्रुद्धहोकरम

हानादको छोड़कर पश्चात् यहबचन कहताभया २१ किरे पर्वततेरे से युद्धकरनेसे क्याहै जिसका यह बनहै सोयुद्ध के वास्तेआवै २२ जिसने रणमेंकपटसे ये मारेहैं जब अंधकने ऐसा बचनकहा तबमहादेवजी वैलपर सवारहोकर और त्रिशूलको लेकर अंधक के मारनेकी इच्छाकरके आये २३ पश्चात् और प्रमथगण और भूतगणये भी संपूर्ण साथआये पश्चात् भूतगणों का ईश्वर महादेवजी जबकुपितहोगया २४ तब संपूर्ण त्रिलोकी कांपतीभई और सिंधु उलटे वहनेलगे २५ और महादेवजी के तेजसे दिशाओं को अग्नि दाह होताभया २६ और हे राजन् बिपरीतहुये संपूर्ण ग्रह युद्धकरनेलगे२७ औरहे राजन् तिस समयमें पर्वत चलनेलगे और धूमा और अंगारों सहित वर्षाहोने लगी २८ और तब चंद्रमा गरमकांतिवाला होगया और सूर्यठंढी कांतिवाला होगया और ब्रह्मा और बेदबादी मुनिये कुछभीनहीं जानतेभये २९ और घोड़ोबछड़े जननेलगी और गौ अश्वोंको जनतीभई और भस्महुये और विनाकटेहुये वृक्षपृथ्वीपर पड़तेभये ३० और वृषभ गौवोंको मारते भये और गौ वैलोंको मारती भई और राक्षस यातुधान पिशाच इन्होंको और जगत् को महादेवजी बिपरीत देखकर ३१ पश्चात् अग्नि कैसी कांतिवाला दीप्तत्रिशूलको छोड़तेभये ३२ सो दुर्द्धर त्रिशूल अंधककी छाती पर पड़ा और साधुवोंका कंटकरूप अंधकको भस्मकरताभया ३३ पश्चात् जब यह जगत्का शत्रुमारदिया तब देवता और मुनि और तपस्वी महादेवजी कीस्तुति करनेलगे ३४ और आकाश में नगारे बाजे और पुष्पोंकी बर्षाहुई और हे जनमेजय त्रिलोकी आनंदित होगई ३५ और संपूर्णोंका दुःख दूरहोगया और देवगंधर्व गाने लगे और अप्सरा नृत्यकरने लगीं और ब्राह्मण जप करने लगे और यज्ञ करनेलगे ३६ और ग्रह अपनी प्रकृतिको प्राप्त होगये और नदी पहलेकी तरह बहनेलगी और जलस्वक्ष होगये संपूर्ण दिशा प्रसन्न होगईं ३७ और पर्वतों में श्रेष्ठ मंदराचल पहलेकी तरह शोभित होगया और पारिजात बन में ३८ महादेवजी रमण

करने लगा और इन्द्रादिक संपूर्ण देवता प्रसन्न होगये ३६

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्वभाषायां अंधकवधेषटचत्वारिंशदधिक शतोऽध्यायः १४६ ॥

एकसौ सैंतालिसका अध्याय ॥

ऐसे सुन जनमेजयने कहा कि हे भगवन् यह अंधक काबध मैंने सुना और जैसे तीनोंलोकों की शांति महादेवजीने करी सो भी सुनी १ परंतु अब यह वर्णनकरो कि भगवान् ने जैसे निकुंभ का दूसरा शरीर हत किया और जिस कार्य के वास्ते हत किया सो कहो २ ऐसे सुन वैशंपायनजी कहनेलगे कि हे राजर्षे अमितपराक्रमवाले भगवान् के उत्तम चरित्र तेरेको कहूंहूं ३ हे राजन् द्वारका में बसतेहुये एक काल में पिंडारा की यात्रा प्राप्त हुई ४ तब उग्रसेन और बसुदेव तो नगर की रक्षा के वास्ते छोड़े और बाकी के संपूर्ण चले ५ और पृथक् सेनानिकसी और बालक पृथक् निकसे और हजारहां वेश्यानिकसीं पश्चात् आभूषित संपूर्ण यादवों सहित दैत्योंके अधिवासको जीतकर तहां वेश्या बसादई ६।७।८ और राजाओंने भयसे स्त्रीकावेष धारणकरलिया ९ पश्चात् स्त्रियों के निमित्त यादवोंका वैरमतहो इसहेतुसे प्रतापवान् और यादवोंमें श्रेष्ठ ऐसेबलदेवजी एकली रेवती सहित सागरकेजलमें क्रीड़ाकरने लगे १० और संपूर्णोंका द्रष्टा और कलकेसेनेत्रोंवाला ऐसे गोबिंद सोलह हजार स्त्रियोंको रमणकरातेभये ११।१२ और हे राजन् वे संपूर्ण स्त्री अलगअलग यह मानतीभईं कि मैं भगवान्कीप्यारी और केशव जलमें मेरेही साथ क्रीड़ाकरैं हैं १३ और परिजनमें मैं प्यारीहूं मैं प्यारीहूं ऐसे कहतीहुई नारायण सहित अतिआनंदको प्राप्तहोतीभईं १४ और वे उत्तम नेत्रोंवाली अंगना नख और दांतों के चिन्ह कुच और होठोंपर दर्पणोंमें देखकर अतिआनंदको प्राप्त होतीभईं १५ और नेत्रोंसे कमलकेसा मुखकोपीतीहुई भगवान्का गोत्रकहके भगवान् के गुणोंको गातीभईं १६ और हे जनमेजय

कृष्णचंद्रके अर्पणकियाहै मन और दृष्टि जिन्होंने ऐसी नारायणकी मनोहर स्त्री एक निश्चय वाली न होतीभई १७ और संपूर्ण सुरत वद्ध अंगोंवाली और मैथुनसेतृप्तहुई बहुतसेमानको बहतीभई १८ और कृष्णचंद्रमेंहै दृष्टि और मन जिन्होंके ऐसी तृप्त मनोरथवाली अंगना आपसमें ईर्षा नहीं करतीभई १९ और केशव रूप बल्लभ ताको वहतीहुई शिरकरके गर्बको बहती हुई और आत्मवान् हरि तिन संपूर्णोंकरके सहित समुद्रकेबिमलजलमें क्रीड़ा करताभया २० और हे राजन् भगवान्की शिक्षासे वह समुद्र संपूर्ण गंधयुक्त और स्वच्छ और मिष्ट ऐसे जलको बहताभया २१ और वह समुद्रकहीं टकनेके प्रमाण और कहीं गोड़के प्रमाण और कहीं जंघाके प्रमाण और कहीं स्तनकेप्रमाण ऐसे वांछितजलको धारणकरताभया २२ और ये संपूर्ण पत्नी केशवको ऐसे सींचती भई जैसे धारा समुद्रको २३ और गोविंद भी तिन्होंको ऐसेसींचताभया जैसेफूलीहुईवेलोंको मेघ २४ और हरिणकेसे नेत्रोंवाली कितनीक स्त्री महाराजको कंठमें पकड़के ऐसे कहतीभई कि हेबीर मैं पड़तीहूं मेरेकोथांभ २५ और कितनीक सुंदर अंगोंवाली स्त्री क्रौंच और मयूर और हस्ती इन्होंकेसा आकारवालेप्लवोंसे तहां तिरतीभई २६ और कितनीक मगरमच्छकेसी आकृतिवाले प्लवोंसे तिरतीभई २७ और कितनीक मच्छीकेसा आकारवाले प्लवोंसे तिरतीभई और कितनीकऔर स्त्री बहुतरूपवाले प्लवोंसेतिरती और तिस समुद्रकेजलमें जनार्दनको प्रसन्न करनेकेवास्ते स्तनरूप कुंभोंसे कुंभोंकीतरह तिरतीभई २८ और तिस जलमें रुक्मिणी सहित भगवान् क्रीड़ा करतेभये और जिसकार्यके योगसे इंद्र जैसे रमण करताहै वैसेहो नारायणकी स्त्री संपूर्ण आनंद करतीभई २९ और अन्य कितनीक स्त्रीबारीकवस्त्र धारणकरके लीलाकरतीभई और कमलकेसे नेत्रोंवाली स्त्रियोंसे वासुदेव भगवान् रमण करतेभये ३० और जिस स्त्रीका जो भावथा उसी भावसे भगवान् तिन्होंके साथ रमण करतेभये और देश कालकरके स्त्रियोंके वसहुये भगवान्को ऐसे मानतीभई ३१

कि यह कुल शीलक कर्मोंसे हमारे योग्यहै और देशरूपकेअनुसार वर्ततेहुये कृष्णचंद्रका बहुतसाभाव करतीभई ३२ पश्चात्बहुतसी अप्सराओंको बुलाकर कहतेभये कि हे अप्सराहो यादवोंकोरमण करावो और एकांतमें नृत्य गीतोंसहित संपूर्ण गुणदिखावो ३३ और मनकेभावोंसे और बाजोंसे चित्त प्रसन्नकरो जब ऐसे प्रसन्न करदोगी तब तुम्हारे को बांछित अर्थ प्राप्तहोगा हे अप्सराहो ये संपूर्ण मेरेसमान हैं पश्चात् ये संपूर्ण तिस हरिकी आज्ञाको शिर से ग्रहणकरके वे संपूर्ण क्रीड़ायुवति भैमोंकोप्राप्तहुईं ३४ जब ये प्रवेशहुई तब वह महार्णव प्रकाशित होताभया और वे संपूर्ण ऐसे प्रकाशकरतीभई जैसे मेघमें बिजुली ३५ और वे संपूर्णजलमें ऐसे स्थितहोतीभई जैसे स्थलमें और तहां स्थितहोके जलबाजाबजाती भईं ३६ और वे संपूर्ण अंगना स्वर्ग बासकीतरह अभिनय करती भईं और गंधमाला दिव्यबस्त्र इन्होंकरके और क्रीड़ाओंकरके हास्यभावोंकरके भैमोंकेमनकोहरतीभईं ३७ और कटाक्ष और चेष्टित और हास्य और केलि और रोष और प्रसाद और अन्य मनोनुकूल बस्तुवोंसे तिन भैमोंके मनोंको हरतीभईं ३८ और मदिराकेबशहुये भैमोंको वे वरांगना बहुतसी क्रीड़ाकरतीभईं और प्रभु कृष्णचंद्रभी तिन्होंकी प्रीतिकेवास्ते आकाशमें सोलहहजार स्त्रियोंकरके बिहार करतेभये ३९ और कृष्णचंद्र के प्रभावके जाननेवाले बीर भैमपरमगांभीर्यको स्थितहुये आश्चर्य को नहीं प्राप्त होतेभये ४० और हे भारत कितनेक रैवतको जाकर फिर आतेभये और हे शत्रुकर्षन कृष्णचंद्र के प्रभाव से गृह और बन बांछित होतेभये ४१ और तिस समय में अपेय सागर पीने के योग्य होताभया और कमल सरीखे नेत्रोंवाली स्त्री अतुल तेजवाले और लोकों के नाथ ऐसे भगवान् की आज्ञा से जलमें भी संपूर्ण स्त्री स्थलकी तरह दौड़ती भईं ४२ और भक्ष्य भोज्य पेय लेह्य चोष्य इन पदार्थों का ध्यान करतेही सम्पूर्ण पदार्थ आते भये ४३ और खिले हुये पुष्पोंकीमालाओंको धारणकिये तिन अनिंदितों को ऐसे एकांत में रमणकरा-

तीभई जैसे स्वर्गमें देवताओंको ४४ और अंधक और वृष्णि नहीं थके हुये गृहसरीखी नौकासे रमण करतेभये और सायंकाल में स्नानकरके और चंदनलगाके क्रीड़ा करतेभये ४५ पश्चात् चकूंटा और गोल ऐसे विश्वकर्माने नौकामें महलरचे और किसीके वास्ते कैलास और किसीकेवास्ते मंदराचल और किसीकेवास्ते सुमेरुऐसे स्नानरचके ४६ पश्चात् बैदूर्य तोरण और विचित्र मणि इन्होंसे भूषित करतेभये और कितनेक यादव अनेकप्रकारके पक्षियोंसेक्रीड़ा करतेभये ४७ पश्चात् कर्णधारोंने धारणकरी ये नौका सुवर्ण की तरह प्रकाश करतीहुई वड़ी ऊर्मियोंवाले तिस सागरके जलको भूषित करतीभई ४८ और बड़ी ऊंची२छोटी नौकाओंसे और यान पात्रोंसे और नौकाओंसे और शल्लिकाओं से वह वरुणालय शोभा को प्राप्त होताभया ४६ और आकाशमें बिचरनेवाले गंधर्वों के पुर जहां तहां भ्रमतेभये और सागरके जलमेंभैमोंकेयान भ्रमतेभये५० और तिन यानपात्रोंमें विश्वकर्माने नंदनकेसमान बगीचा रचदिया और उद्यान सभावृक्ष रचदिये और वैसेही संपूर्ण जगह शिल्पीबसा दिये ५१ और नारायणकीआज्ञासे विश्वकर्मा सम्पूर्ण स्वर्गकेभोग रचताभया और तिस वनमें पक्षी मधुरशब्द करनेलगे ५२ और अत्यंत तेजवाले भैमोंको वह अत्यंत मनोहर होताभया और देव लोकमें होनेवाली सफेदकोयल तहां मधुर और विचित्र औरयादवों को वांछित ऐसा शब्द करतीभई ५३ और चंद्रमाकेसी कांतिवाले सफेद महलोंपर शिखंडियों से सहित और मधुर शब्दवाले ऐसे मयूर नृत्यकरतेभये ५४ और स्रग्दामको सुगंधिकेलोभी भ्रमरोंसे गायेहुयेवृक्ष नारायणकी आज्ञासे पुष्पोंको छोड़तेभये५५ और तत्र ऋतु अनुकूल होतीभई और उस समयमें रतिका हरनेवाला और सुखदायक ऐसा पवन चलताभया ५६ और पुष्पोंकी रजसे और मलयागिरि चंदनसे अत्यंत शीतल पवन यादवोंको अतिसुखदेता भया ५७ और हेजनमेजय भगवान्के प्रभावसे तिस समयमेंभैमों को क्षुधा और प्यास और ग्लानि और चिंता और शोक ये नहीं

प्रवेश होतेभये ५८ पश्चात् बड़ेऊंचे शब्दोंवाले बाजोंकरके भूषित और नृत्य गीतोंकरकेभूषित अत्यंत तेजवाले भैमोंकी सागर क्रीड़ा होतीभई ५९ और बहुत योजनके विस्तारवाला जो जलरूपसमुद्र तिसको रोकके इन्द्रकेसी कांतिवाले कृष्णाभिरक्षि भैम क्रीड़ाकरते भये ६० और सम्पूर्ण सामग्रियोंसहित महात्मा नारायण देवका विश्वकर्मा बिचित्र यानपात्र रचताभया ६१ और हे जनमेजय जो जो श्रेष्ठरत्न त्रिलोकोमें थे सो सम्पूर्ण अत्यंत तेजवाले कृष्णचंद्र के यानपात्र में बिश्वकर्मा ने लगाये ६२ और हे भारत कृष्णचंद्र की स्त्रियों के अलग अलग निवासरचे और बैदूर्य मणियों से विचित्र और सुवर्ण से भूषित ६३ और सम्पूर्ण ऋतुओं के पुष्पों से व्याप्त और सम्पूर्ण गंधों से सेवित और स्वर्ग के शुभ शकुनों से सेवित ऐसे यदुसिंह अति शोभाको प्राप्तहोतेभये ६४ ॥

इतिश्रीमद्भारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांभानुमतीहरणे सप्तचत्वारिंशदधिकशतोऽध्यायः १४७ ॥

एकसौ अड़तालीसका अध्याय ॥

वैशम्पायनजीकहतेहैं किहेजनमेजय चंदनसेलिप्त और कादंबरी के पानसे मधुर शब्दवाला और अत्यंत शोभावाला रक्त नेत्रोंवाला और लम्बी भुजाओंवाला और स्खलित बीर्यवाला ऐसे बलदेवजी रेवतीके आश्रयहोकर रमण करतेभये १ और हे राजन् नीलमेघ केसेवस्त्र धारणकिये और चंद्रमाकी किरणकेसे गौर रूपवाले और मदिरासे घूमतेहुयेनेत्रोंवाले ऐसे भगवान् बलदेवजी समुद्रके मध्य मेंऐसी शोभाको प्राप्तहुये जैसे संपूर्ण बिंबवाला आकाशमें चंद्रमा२ और बामा एककानमें निर्मल कुंडलकी शोभावाले और मंदहास से भूषित और सुंदरकमल के आभूषणोंसे भूषित और तिरछे कटाक्षों वाले और रेवती के सुंदर मुखको देखतेहुये ऐसे बलदेवजी प्यारी रेवती के साथ आनंद करतेभये ३ इसके अनंतर कंस और निकुंभ इन्होंके शत्रु कृष्णचंद्रकी आज्ञासे वह अत्यंत रूपवाला अप्सरों का

समूह आनंदितहुआ रेवतीके देखनेको स्वर्गके सीसमृद्धिवाले बल-देवजी के स्थानको जाताभया ४ और पश्चात् ये संपूर्ण श्रेष्ठ अंगों वाली अप्सरा तहां रेवती औरबलदेवजीको नमस्कारकरके पश्चात् चारों तरफ नेवाजों के अनुरूप ये सुंदर अंगोंवाली अप्सरा नृत्य करतीभईं और अच्छीतरह से गानकरती भईं ५ और पश्चात् ये अप्सरा यथावत् अर्थयुक्त प्रियको लब्धहोके पश्चात् रेवत राजकी पुत्रीकीआज्ञा के भावों करके बलदेवजीका हृदयानुकूल करतीभईं ६ और कितनीक अप्सरा देश भाषा और आकृति और बेश इन्हों से युक्तहुई कलाकरतीभईं और कितनीक श्रेष्ठ अंगना लीला सहित सुंदरता लवजाती भईं और तहां कितनीक अंगना बलदेवजी और कृष्णके आनंद करनेवाले और मंगल के देने वाले ऐसे गीत गाती भईं ७और तिस रंगभूमिमें कंसकावध और प्रलंबासुर का बध और रमणीक चाणूर का बध इन संपूर्णों को गातीभईं ८ और यशोदा करके दामोदर भगवान् ऊखल में बांधना और अरिष्ट और धेनुका-सुरकाबध और ब्रजमेंबसना और शकुनीका बध ९ और यमला र्जुनका तोड़ना और वृकावों की सृष्टि इन संपूर्णोंको गातीभईं और यमुना के कुंडमें कृष्णचंद्र करके दुरात्मा कालिय नागपतिका ना-थना १० और कुंड से शंखासुर का मारना और भगवान् करके कमलों का निकासना और जनार्दन भगवान् करके गौवोंके वास्ते गोवर्द्धन का उठाना ११ और चंदन को पीसनेवाली कुब्जा को सीधी करना और श्लाघाके योग्य कृष्णचंद्र जैसे बावनरूप धारण करतेभये इनसंपूर्ण चरित्रोंको अप्सरा गातीभईं १२ और सौभका मथना और हलायुधत्व और देवशत्रु का वध और गांधार कन्या-ओंके लानेमें राजाओंका जीतना १३ और सुभद्रा के हरणमें युद्ध विषेजीतना और युद्धमें राजाओं को जीतके रत्नोंका लाना १४ हे जनमेजय ये जो बलदेव कृष्ण के आनंदकरने वाले चरित्र हैं और अन्यजो विचित्र चरित्रहैं तिनसंपूर्णोंको वे अंगना गातीभईं १५ पश्चात् उत्तम शोभावाले और कादंबरीके पानसे मदोत्कटहुये ऐसे

बलदेवजी रेवती भार्य्यासहित और मधुर ताल करके सहित क्रीड़ा करतेभये १६ पश्चात् क्रीड़ाकरतेहुये बलदेवजी को देखकर और बलदेवजीके हर्षकेवास्ते सत्यभामा सहित भगवान् भी क्रीड़ाकरने लगे और हर्षकरके सहित वे अंगनाभी क्रीड़ाकरनेलगीं १७ और समुद्र यात्रा के वास्ते आयाहुआ नरलोक में शूरबीर मुदितहुआ अर्जुनभी कृष्णचंद्र सहित और सुभद्रा सहित क्रीड़ा करतेभये १८ और बुद्धिमान्गद और सारण और प्रद्युम्न और सांब और सात्यकि और उदार बीर्यवाला सत्राजितीका पुत्र अर्थात् सत्यभामाका पुत्र और सुंदर रूपवाला चारुदेष्ण येभी संपूर्ण क्रीड़ाकरतेभये १६ और बलदेवजीका पुत्र शूरबीर निशठ और उल्मुक येदोनोंभीक्रीड़ाकरते भये और अक्रूर और सेनापति और शंकुइन्होंसे आदि लेकरयादव और अन्य यादव संपूर्ण क्रीड़ा करतेभये और हे उदार कीर्तिवाले जनमेजय ऐसे भैममुख्य राजाओंके क्रीड़ाकरतेहुये २० पूर्वमाणजो वह यानपात्रहैसोकृष्णचंद्रके प्रभावसे बढ़ताभया २१ और हे राजन् देवताओं कैसा प्रकाशवाले और क्रीड़ामें आशक्त ऐसे जो यादव तिन्होंकरके आनंदयुक्त संपूर्ण जगत् होताभया २२ और तहां भगवत् की कृपासे पापरहितहोतेभये और देवताओंका अतिथि और जटाक लापसे एकदेशहै गलितजिसका ऐसा नारदमुनि भगवान्के प्यारके वास्तेयादवोंके मध्यमें क्रीड़ा करताभया २३ और हे राजपुत्र रासके करनेवाले तहां अप्रमेय कृष्णचंद्र क्रीड़ाबिकारों करके और बिडंबित अंगोंकरके तिनस्त्रियोंके मध्यमें फिर क्रीड़ाकरनेलगे २४ और पश्चात् बुद्धिमान् बलदेवजी सत्यभामा और केशव और सुभद्रा और रेवती इन संपूर्णोंको देख देख हंसतेभये २५ पश्चात् तहांकृष्णचंद्रकीआज्ञा से संपूर्ण स्त्री रूपके योग्य बहुतसे रत्न और बस्त्र स्वर्गमें होनेवाली बहुतसीमाला और कल्पवृक्षकी माला और मोतियोंकी माला इन संपूर्णोंका दानकरतेभये २६ पश्चात् अंजलिबांधेआगेखड़े समुद्रको प्रसन्नहुये कृष्णचंद्र कहनेलगे कि हे समुद्र तेराजल सुगंध वाला और मीठा और सुंदर होजावै और तू ग्राहोंकरकेरहित होजाओ २७

और हे समुद्र तेराजल पीने के योग्य और संपूर्णजनों के मनके अ-
नुकूल और तेरेविषे मत्स्य मोती मणि सुवर्ण इन्होंसे बिचित्रहोजा-
ओ २८ और अच्छीसुगंधवाले और अच्छेरसवाले भौंरों से सेवित
और रक्तबर्णसे संयुक्त ऐसे विचित्र कमलों को धारणकर २६ और
हे समुद्र गौड़ीऔ माध्वी और पैष्टी इन मदिराओंके कलशोंके जल
ऊपर स्थापनकर और पीनेके वास्ते सोने के पात्र स्थापनकर ३०
और तिसमदिराको भैमोंकोतूदे और वे यथेच्छ पानकरें और हे स-
मुद्र और पुष्पोंके समूहसे सुगंधिवाला और ठंढेजल वालाहो और
तू अप्रमत्तहो ३१ और हे समुद्र जैसे स्त्रियों करके सहित यादवोंको
दुःखनहींहोवे सोहीयत्नसे तू कर ३२ पश्चात् हे राजन् जनमेजय
भगवान् समुद्रको ऐसे कहके पश्चात् अर्जुन करके सहित क्रीड़ा
करनेलगे ३३ और पश्चात् सत्यभामा पहले नारदमुनिको सेचन
करके पश्चात् कृष्णचंद्रको सेचनकरतीभई ३४ पश्चात् मद करके
बर्जित सुंदर देहवाले बलदेवजी रेवतीके हाथको पकड़ जलमेंक्रीड़ा
करनेलगे ३५ और भैमसे आदिलेकर जो कृष्णचंद्रके पुत्रथे सो अनेक
प्रकारके आभूषण और बस्त्र धारणकरके आनंदयुक्तहुये मदिरापीके
बलदेवजी के पश्चात् समुद्रमें कूदतेभये ३६ और पठोल्मुकसे आदि
लेकर बाकीरहे भैम बिचित्रबस्त्र धारण किये कल्पवृक्षके पुष्पोंको
मालापहरे और अनेक प्रकारके चिन्ह धारणकिये कृष्णचंद्रके साथ
जल क्रीड़ा करतेभये ३७ और बड़े मनोहर अनेकप्रकार के गायन
करतेभये और तिसके पश्चात् अनेकप्रकारके प्रियजलके बाजेबजाते
भये ३८ और पश्चात् अप्सरा और स्वर्गबासी इन्होंसहित कृष्ण-
चंद्रकी आज्ञासे सैकड़ावधू आकाश गंगा के जलकेबाजे जलदर्दुर
नाम बजातेभये ३६ और प्रसन्नहुये तिनबाजाओंके अनुरूप गायन
भी करतेभये पश्चात् हे राजन् जनमेजय कलाकरके सहित स्त्रियों
के मुखरूप चंद्रमाओंसेसमुद्र ऐसा शोभितहोताभया जैसे हजारहां
चंद्रमाओंसे व्याप्त आकाश ४० पश्चात् हेराजन् समुद्र स्त्रियोंसेऐसे
शोभित होताभया जैसे बिजलियोंसेशोभित आकाशमें मेघ ४१ और

पश्चात् नारदमुनि सहित कृष्णचंद्र बलदेवजीको सेचन करतेभये और पश्चात् जल यंत्रसे प्रसन्न हुये अत्यंत रमण करने लगे ४२ पश्चात् नारदमुनि और अर्जुन सहित कृष्णचंद्र बाजाओं से निवृत्त होकर पश्चात् नृत्यकरनेलगे ४३ और स्त्रीभी प्रसन्नहुई नृत्यकरने लगीं पश्चात् नृत्य के अंतमें प्रसन्न हुये कृष्णचंद्र नारदमुनि को अनुलेप देतेभये ४४ और पश्चात् ये संपूर्ण कृष्णचंद्रकी आज्ञा से पानभूमिको प्राप्तहोकर पश्चात् प्रसन्नहुये अनेक प्रकारका भोजन करतेभये ४५ और अनुकूल पानकरतेभये और तहांस्थितहोकर अनेक प्रकारके उत्तम मांसपरोसकर भोजन करनेलगे ४६ और अनेक प्रकार के मदिरापान करनेलगे पश्चात् प्रसन्न हुये अनेक प्रकारका गायन करनेलगे और सुननेलगे ४७ पश्चात् हल्लीमक नाम बाजाको बजानेलगे और मृदंगसे आदिलेकर संपूर्ण अप्सरा भी बाजाबजानेलगीं ४८ पश्चात् रंभानाम अप्सरा बाजेको उठा के बाजा बजानेलगी इसको देखके बलदेवजी और कृष्णचंद्र बहुत प्रसन्नहुये ४९ और हे राजन् पश्चात् कमल केसे नेत्रोंवाली उर्वशी और हेमा और मिश्रकेशी और तिलोत्तमा और मेनका येसंपूर्ण अप्सरा और इन्होंसे अन्यहरि भगवान्के प्यारकेवास्ते गाती भई ५० और मनके अनुकूल सुंदर भाव बतातीभईं पश्चात् हे राजन् भगवान्भी तिन्होंपर आशक्तहोकर सुंदर तांबूल आदिकों कर के सत्कार करतेभये ५१ और यह भगवत्का चरित्र शुभदायकहै और बुद्धिको बढ़ाताहै यशको बढ़ाताहै पबित्रहै और प्रतापको बढ़ाताहै ५२ और यह चरित्र खोटे स्वप्नका और भयका नाशकारताहै और संपूर्ण पापोंको नष्टकरताहै ५३ पश्चात् ऐसे क्रीड़ा करके अप्सराओं के समूहतो स्वर्गमेंगये और संपूर्ण यादव अत्यंत प्रसन्न होगये ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांभानुमती हरणे सप्तचत्वारिंशदधिकशतोऽध्यायः १४७ ॥

———※———

एकसौअड़तालीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय जब पुण्यकर्मवाले येसंपूर्ण यादव क्रीड़ामें आशक्त हुये तब खोटीबुद्धिवाला और देवताओंकाशत्रु और दुरासद और अपने मरने की इच्छा करनेवाला ऐसा निकुंभ नाम दानव १ इस अवकाशको देखकर भानुकी पुत्री जो भानुमती है तिसको हरताभया २ और अंतर्द्धान होकर यादवों की स्त्रियों को मोह कराताभया ३ और बज्रनाभ भ्राता की कन्या प्रद्युम्ननेहरी और बज्रनाभ का भी बधकिया ४ और जब भानुआरण्य में वसाथा तब यह अवकाश को जाननेवाला दानवों में अधम निकुंभ कन्यापुर में प्राप्तहुआ ५ तब कन्यापुरमें बड़ा घोर नादहुआ तिस शब्दको सुन के बसुदेव और आहुक दोनों कवच धारणकरके निकसे और कन्यापुरके महानादको सुनके तिसनिकुंभ को दृष्टिगोचर करतेभये ६।७ और पश्चात् महाबल कृष्णचंद्र भी तिन्होंको प्राप्तहुये देखकर अर्जुन करके सहित अपने बिमान गरुड़ परसवार होकर और प्रद्युम्नको रथमें बैठाके पश्चात् आनेकीआज्ञा देकर पश्चात् कश्यपके पुत्रगरुड़ को यहकहनेलगे ८ कि हे गरुड़ शीघ्रचल पश्चात् बज्रनाभ पर्वतको प्राप्तहुये रणमें दुर्जय निकुंभ को अर्जुन और कृष्णचंद्र प्राप्तहोतेभये ९ और मायावियों में श्रेष्ठ बड़ेतेजवाला प्रद्युम्नभी प्राप्तहुआ पश्चात् निकुंभ इन्होंको देखकर निकुंभने भी तीनरूप धारणकरे १० पश्चात् देवताओंके से पराक्रमवाला निकुंभ कांटोंवाली भारीगदा करके संपूर्णों के साथ युद्ध करनेलगा ११।१२ बामाहाथसे भानुमती कन्याको पकड़ दहनेहाथ से युद्धकरनेलगा १३।१४ पश्चात् कन्याकेवास्ते अर्जुन और कृष्णचंद्रभी युद्धकरनेलगे पश्चात् अर्जुन तीक्ष्णबाणों से युद्ध में अनेक प्रकार के दानवों को मारता भया १५ पश्चात् यह निकुंभदानव कन्या करके सहित अंतर्द्धान होगया और आसुरी माया में आश्रित हुयेको कोईभीनहीं जानताभया १६ पश्चात् अर्जुन और कृष्णचंद्र

और प्रद्युम्न तिसकेपीछे जातेभये और तबयह महासुरहारित मृग होकर स्थितहोगया पश्चात् फिर अर्जुन कन्याकी रक्षा करता हुआ बाणोंसे तिसको ताड़ताभया १७ पश्चात् भयसेयहमहा सातद्वीपों वालीसंपूर्ण पृथ्वीपर भ्रमकर पश्चात् जहां महादेवजीके तेजसे देवता और असुर नहींजाते गोकर्ण पर्वतके ऊपर वेलगंगा के पुलिन परकन्या सहितपड़ा १८ और इसीअवसरमें प्रद्युम्नभी प्राप्तहुआ और बेगसे प्रद्युम्नने भानुमती कन्या ग्रहणकरली १९ पश्चात अर्जुन और कृष्णचंद्रके बाणोंसे यहबींधाहुआ असुर उत्तर गोकर्ण को त्यागकर दक्षिण दिशाको प्राप्तहुआ २० और अर्जुन और कृष्ण चंद्रभीतिसकेपश्चात् प्राप्तहुये पश्चात् यहनिकुंभ अपनीजातिवालों के स्थानमें प्राप्तहोगया २१ और अर्जुन और कृष्णचंद्र तिसगुफा के दरवाजे बैठगये और रुक्मिणीका पुत्र प्रद्युम्न द्वारका में प्राप्त होगया २२ पश्चात् यह दानव माया से भानुकी पुत्रीको षट्पुरमें प्राप्त करके पश्चात् गुफा के दरवाजेपर अर्जुन और कृष्णचंद्र को देखताभया २३ और तिसके अनंतर प्रद्युम्नकोभी देखा पश्चात् यहअति बलवान् दानव युद्धकी बांछा करके निकला २४ पश्चात् बाणों से चारोंतरफ को इसका रस्ता रोंकदिया और यहनिकुंभ भी बहुत कांटोंवालीगदाकोलेकर अर्जुनके शिरमें भेदन करताभया २५ तब गदाके मारने से अर्जुन व्याकुल होके रुधिर की उलटी करने लगा पश्चात् निकुंभ ऐसे अर्जुनको देखप्रसन्नहुआ हंसके प्रद्युम्न को ताड़ना करताभया २६ सो प्रद्युम्नभी मोह को प्राप्त होगया पश्चात् कृष्णचंद्र इनदोनों को मोहित देखकर क्रोधसे मूर्छितहुये कौमोदकी गदाकोलेकर निकुंभकी तरफदौड़े २७ और दोनों गर्जते हुये परस्परमें युद्धकरनेलगे पश्चात् तिसघोर युद्धके देखनेके वास्ते संपूर्णदेवताओंकरके सहित ऐरावतपर सवारहोके इंद्रभीआया २८ पश्चात् कृष्णचंद्र देवताओं को देखकर और देवताओं के हितको बांछा करके बिचित्र युद्धों से इस दानवके मारनेकी इच्छा करते भये २९ पश्चात् युद्धमें चतुर कृष्णचंद्र कौमोदकी गदाको लेड़ातेहुये

अनेक प्रकारके मंडलदिखानेलगे ३० और तैसेही यहनिकुंभ भी तिसवहुत कांटोंवाली गदाको लेकर शिक्षा से भ्रमाता हुआ मंडल करनेलगा ३१ पश्चात् ये दोनों सांड़ों की तरह और हस्तियों की तरह गर्जनेलगे पश्चात् यहदानव भयानक शब्दकरके कृष्णचंद्र के गदामारता भया ३२ और पश्चात् तिसीकालमें कृष्णचंद्रभी अपनी गदाको भ्रमाकर निकुंभके मस्तक पर गेरते भये ३३ पश्चात् यह कृष्णचंद्र कौमोदकी गदाको लेकर मोहितहुये पृथ्वीपर पड़ेजवकृष्ण चंद्रमूर्छित होगये तवसंपूर्ण जगत्में हाहाकार शब्दहोताभया ३४ पश्चात् आकाश गंगा ठंढा जलसे और सुगंधिसे आपकृष्णचंद्रका सेचन करनेलगी ३५ हेजनमेजय भगवान् कृष्णचंद्र अपनीही इच्छा सेमोहितहोगये और नहींतो हरिभगवान्को युद्धमें कौनमोह कराने को समर्थ है ३६ पश्चात् हे भारत तब भगवान् की मूर्छादूर हुई तवचक्रको लेकर इसदुरात्मा को कहनेलगे कि रेनुकुंभ अवगदाको गेर तेरे पश्चात् अति मायाबी निकुंभ भी उछलकर तिस शरीरको त्यागता भया ३७ पश्चात् जनार्दन इसको मारनेकी इच्छाकरताहै अथवा मरगया ऐसे मानके बीर व्रत को स्मरण करताहुआ इसको रक्षा करता भया ३८ पश्चात् उसी समयमें जब चेतलब्धहुआ तब प्रद्युम्न और अर्जुन भी आतेभये और निकुंभ के वधको निश्चय करे नारायण के समीप स्थित होते भये ३६ पश्चात् अत्यंत मायाबी कृष्णचंद्र से यह कहने लगा कि हेतात खोटी बुद्धिवाला निकुंभ यहां नहींहै जब ऐसे प्रद्युम्नने कहा तब भगवान् तिस शरीर का नाश करतेभये ४० और अर्जुन करके सहित भगवान् हंसते भये पश्चात् हेराजन् ये शूरबीर पृथ्वी और स्वर्गमें चारोंतरफ दशहजार दैत्यों को देखते भये ४१ पश्चात् युद्ध करने लगे और अर्जुन भी लक्षों रूपों को धारण करताभया ४२ पश्चात् कृष्णचंद्र और प्रद्युम्न अर्जुनके स्वरूपोंको छोड़कर संपूर्णनिकुंभोंको भेदनकरता भया ४३ पश्चात् तत्त्वज्ञानसे भगवान् मायाके रचनेवाले पश्चात् असुरोंको नाश करनेवाले भगवान् संपूर्ण भूतोंके देखतेहुये चक्रसे

इस निकुंभके शिरको छेदन करते भये ४४ पश्चात् हे राजन् जब इसका शिर कटगया तब यह निकुंभ अर्जुनको छोड़कर ऐसे पड़ा जैसे जड़कटे पश्चात् वृक्ष ४५ पश्चात् आकाश से पड़तेहुये अर्जुन को कृष्णचंद्र के वाक्य से प्रद्युम्न ग्रहणकरके धनंजयको आश्वासना कराताभया ४६ ऐसे निकुम्भ राक्षसको मारके अर्जुन और प्रद्युम्न करके सहित भगवान् द्वारका में जातेभये ४७ पश्चात् यदुनन्दन महात्मा नारदमुनिको प्रणाम करतेभये पश्चात् नारद मुनि भानु यादवकेप्रति कहतेभये ४८ और जबये क्रोधमें आया तब नारदमुनि कहनेलगा कि हे भैमनन्दन क्रोध मतकरे पहले इस कन्याने दुर्वासाको कुपित करादियाथा जब दुर्वासाने यह शापही देदियाथा कि ऐसे शत्रुकेहाथमें चलीजायगी ४९ और पश्चात् प्रसन्न होकर बरदान देतेभये कि दोषकरके रहितहुई भर्त्ताकोप्राप्त होवेगी और बहुत धन और पुत्र और सुहाग इन्होंको प्राप्त होवेगी ५० और अच्छी सुगंधको धारणकरेगी और शोकको नहीं धारणकरेगी ऐसे दुर्वासा ने वरदानदिया ५१ इस वास्ते हे शूरवीर भानुमतीको सहदेवको देदे क्योंकि जिससे सहदेव शूरवीरहै और धर्मशील पांडवहै ५२ पश्चात् नारदमुनिके वचनको स्मरणकरता हुआ भानु भानुमती कन्याको माद्रीकेपुत्र सहदेवको देताभया ५३ पश्चात् सहदेव विवाह करके भार्या सहित अपनी पुरी में प्राप्त होगये ५४ इस कृष्णके विजयको जो पुरुष सुनतेहैं अथवा पढ़तेहैं तिन्होंको संपूर्ण कृत्योंमें जय हुआ करतीहै ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांभानुमतीहरणंनामअष्टचत्वारिंशदधिकशततोऽध्यायः १४८ ॥

एकसौ उनचास का अध्याय ॥

जनमेजय कहताहै कि हे भगवन् भानुमतीका हरना और भगवान्की जय और देवलोकसे छालिक्य का लाना १ और सागर में दिब्य यादवोंकी क्रीड़ा हे मुने ये संपूर्ण चरित्र मैंने सुने २ परंतु

निकुम्भके वधमें जो वज्रनाभका वध कहा हे मुने तिसको तुम्हारे से सुननेको मेरेको बड़ा आनन्द है ३ ऐसे सुन वैशंपायनजी कहने लगे कि हे राजन् वज्रनाभकावध और काम और साम्बकाविजय तेरको कहूंगा४हे राजन् युद्धको जीतनेवाला यह वज्रनाभ सुमेरुकी शिखरमें तपकरनेलगा५जब तेजस्वी ब्रह्मा तिसपर प्रसन्नहुआ और कहनेलगा कि वरंब्रू हि अर्थात् वरमांग ६ ऐसे सुन वज्रनाभ कहने लगा कि संपूर्णदेवताओं से मैं अवध्यहोजाऊं ऐसे ब्रह्मासे वरलेकर पश्चात् रत्नमयवज्रपुरको प्राप्तहोकर बसताभया ७ और नगरके चारोंतरफ अनेक शाखा नगरवसाये पश्चात् यह वज्रनाभ दुष्टात्मा वरदान करके गर्वितहुआ अपने पुरको और जगत्को बाधा करने लगा८और हे राजन् स्वर्गकोहरके यह वज्रनाभ कहनेलगा कि हे इन्द्र त्रैलोक्यको तो मैं शिक्षा करूंगा९और स्वर्गको नहींदेहै तो हे इन्द्रमेरेकोयुद्धदे क्योंकि देवता और दानवोंको संपूर्ण जगत् सामान्यही है १० ऐसे सुन इन्द्र बृहस्पतिजीके साथ सलाह करके वज्रनाभको वचन कहनेलगे ११ कि हेसौम्य हमारा पिता कश्यपमुनि यज्ञमें दीक्षितहै सो जब यज्ञ निवृत्त होजायगा तब जैसा न्यायहोगा वैसा वे करदेंगे १२ ऐसे इन्द्रके बचनसुन पिता कश्यपजी के पास जाकर कहनेलगा स्वर्गका राज्य मेरे को दो ऐसे सुन जैसे इन्द्रको कहा था वैसेही कहनेलगे १३ कि हे पुत्र तू वज्रपुरमें जा यज्ञके अंतमें जो न्यायहोगा सो होजावेगा जब कश्यपजीने ऐसे कहा तब वज्रनाभ आपही नगरकोचलागया १४ और महेंद्र द्वारकाकोचला गया तहां वज्रनाभका वृत्तांत भगवान्के आगेकहताभया १५ भगवान् इंद्रके वचनसुन कहनेलगा कि हे इन्द्र अब तो यह अश्वमेध यज्ञ उपस्थितहै पश्चात् वज्रनाभको मैं मारदूंगा १६ ऐसेसुन इंद्रनेकहा कि हे भगवन् तहां तो वायुका भी प्रवेश नहींहै फिर कैसे तिसका वधहोगा १७ ऐसे कह भगवान् कृष्णचंद्र को प्रणामकरके स्वर्गमेंगया पश्चात् जब यज्ञ समाप्त होगया तब दोनों सुरोत्तमप्रवेशहोनेका चिंतवन करतेभये १८ पश्चात् यज्ञमें भद्रनामा नृत्यकर

के ऋषियों को प्रसन्न करताभया पश्चात् प्रसन्नहुए ऋषियों से देवताओंके तुल्य बरदानमांगता भया १९ पश्चात् बरदान लेकर देवताओंके तुल्यहुआ सारी पृथ्वीपर बिचरने लगा पश्चात् संपूर्ण क्षेत्रोंमें बिचरताहुआ यह इन्द्रके पास आया २० इन्द्रनेकहा किहे मित्र एक बज्रनाभका पुरहै तिसमें कन्यारूप रत्नहै सो तहां प्रवेश वत्तातिस बज्रनाभके चंद्रमाकेसी कांतिवाली प्रभावती नाम कन्या है२१ और सो अपनी इच्छासे पतिकोबरनेकी इच्छाकरती है और प्रद्युम्न भी गुणोंसे अधिकहै २२ सो हे भद्र तहां जाके प्रद्युम्नके संपूर्ण गुण बर्णन कर २३ बरदिया हुआ नटवर तहां जाके संपूर्ण वृत्तांत कहता भया २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांवज्रनाभप्रद्युम्नोत्तरेशतोपरिनवचत्वारिंशोऽध्याय: १४९ ॥

एकसौपचासका अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् हंस ऐसे सुनकर बज्रपुरमें प्राप्तहुए और कमलोंमेंजाके क्रीड़ा करनेलगे १ पश्चात् मधुरशब्द तहां भाषणकरतेभये पश्चात् बज्रनाभके अंतःपुरमें शब्दकरनेलगे२ तब बज्रनाभने बहुतप्रिय बचन कहे और सत्कारकरके कहा कि हे हंसाहो तुम निर्भय मेरे स्थानमें बासकरो३ यह मेराघर तुम्हाराही है ऐसे बज्रनाभ के बचनसुन दानवेंद्रके मकानमें बासकरने लगे ४ तहां वे मनुष्यकी बाणीसे अनेकप्रकारकी कथा कहतेभये और तहां दैत्योंकी वृद्धस्त्री अनेकप्रकारकी कथा सुनतीहुई रमणकरतीभई ५ पश्चात् जहां तहां बिचरतेहुए हंस सुंदर हासवाली प्रभावती नाम बज्रनाभकी पुत्रीको देखते भये ६ पश्चात् तिस सखिको प्रसन्नकरके हंसमुखी करतेभये पश्चात् बज्रनाभकी पुत्रीको अनेकप्रकारके आख्यान कहतेभये ७ और कहनेलगे कि हे सुंदरि हे प्रभावति रूप और शीलकरके हम तेरेको त्रैलोक्यमें बिचित्र देखैंहैं ८ और हे भीरु तेरायौवन चलाहुआ जाताहै और गयाहुआ फिर हाथआ

ता नहीं ६ और हे देवि कामोपभोगके तुल्य और सुख इससंसार में नहीं १० और हे शोभने तेरे पिताने स्वयंबर स्थापन करदिया है सो तू किसी भी देवता और असुरको नहीं बरतीहै ११ क्योंकि वे तेरे रूप शीलकेसमान नहीं हैं इस वास्ते लज्जितहुए जाते हैं हे प्रभावति तेरेसमान तो रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्नहै १२ परंतु वह किसवास्ते यहां आवे जिस प्रद्युम्नकेसमान इस त्रिलोकीमें नहीं और कुलमें नहीं और सुंदर अंगवाले प्रद्युम्न देवताओं में देवता है १३ और दानवोंमें दानव और मनुष्योंमें महाबल धर्मात्मामनुष्यहै हे देवि जिसको देखके स्त्रियोंकोजंघा ऐसे झिरतीहैं जैसेगौवोंकी औहड़ी १४ और नदियोंके श्रोत और जिसका पूर्णचंद्रमा के समान मुखहै और कमलकेसे नेत्रहैं १५ और सिंहकेसीकटिवाला हे शुभे जगत्माहसे सारसार निकासके विष्णुभगवान् ने यह पुत्र उत्पन्नकराहै १६ और यह शम्बर ने हरलिया था सो पापी भी इस ने मारदिया और हे शोभने तू प्रद्युम्न को बरके जिन ज़िन बातों को विचारेगी १७ सो संपूर्ण पूर्णहोजावेंगी प्रद्युम्नकेसमान तीनों लोकों में कोई नहीं १८ जिस प्रद्युम्न की कांति अग्नि केसी है और क्षमा पृथ्वीकेसी है और तेज सूर्यकेसा है और गांभीर्य कुंड केसा १६ हे राजन् जनमेजय प्रभावती ऐसेसुनके हंसतीहुईबचन कहनेलगी कि हे सौम्याहो मनुष्य लोकमें विष्णु तो मैंने बहुत वार सुनाहै २० अपने पिताकेमुखसे और बुद्धिमान् नारदमुनि के मुखसे सो दैत्योंका नाशकरनेवाला है २१ और प्रादीप्त चक्र और शार्ङ्ग धनुष और गदा इन्हों से शाखा नगरमें बसनेवाले दैत्यों का संहार करनेवाला है २२ तिसका पुत्र प्रद्युम्न ऐसे प्रभाववाला है कि त्रिलोकी में तिसके समान कोई नहीं ऐसे सुन प्रभावतीकहनेलगी कि मेरापति तो वृष्णिकुलमें होनेवाला प्रद्युम्नहोनेकोयोग्यहै २३ और दैत्योंको नाशकरनेवाला हरि और प्रद्युम्न असुरोंकी वृद्धस्त्रियोंसे भी बहुतसुनाहै और प्रद्युम्नका जन्म और बलवान् शंबरकावध भी सुनाहै २४ हे सखि प्रद्युम्न मेरे हृदय में

नित्यबसैहै और हे सखि तिसके समागममें कोई कारण नहीं दीखता २५ हे सखि मैं तेरीदासी हूं और तू चतुर है तिससे मेरा समागमकरा सखी ऐसे बचनसुनके सांत्वना कराके हंसती हुई ऐसे वचन कहनेलगी २६ कि हे शोभन हांसवाली तेरी दूती मैं तहां जाउंगी और इस तेरी उदारभक्तिको तिस सुंदरके आगेकहूंगी २७ और वह प्रिय जैसे तेरे समीप आजावे वैसेही करूंगी ऐसे कह संपूर्ण वृत्तांत दानवेंद्र को कहनेलगी २८ पश्चात् दानवेंद्र संपूर्ण वृत्तांत को सुन कहने लगा कि सिद्ध चारणों के पास वह नटों में श्रेष्ठ मैंने भी सुनाहै परंतु यह खबर नहीं कि कहां बसै है २९ हे राजन् ऐसे दानवेंद्रके बचन सुन हंसी कहने लगी कि हे महासुर वह दितिका पुत्र नट सातोंद्वीपों को बिचरता है जिसदिन तुम्हारे गुणका बिस्तारसुनेगा तब तुम्हारे पुरमें भी प्राप्त होगा ३० ऐसे सुन बज्रनाभने वे हंस कार्यकेवास्ते भेजदिये पश्चात् ये आनके इंद्र और कृष्णकेवास्ते संपूर्ण वृत्तांत कहतेभये ३१ पश्चात् वृत्तांत सुनके तिस कर्ममें भगवान् ने प्रद्युम्न को युक्त किया कि प्रभावतीके साथ समागमकर ३२ और बज्रनाभ का बधकर देवीमाया के आश्रय होकर प्रद्युम्न का नटवेष बनाया ३३ और भैमोंकानट वेष बनादिया पश्चात् प्रद्युम्न तिन्होंका नायक बना दिया और सांब विदूषक बनाया और पासमें गद और अनेक भैम स्थापन करे ३४ और संपूर्ण वार मुख्या नटी बनाई और तैसेही भद्रक के सहायक बनाये पश्चात् ये सम्पूर्ण अति सुन्दर बिमान में बैठकर देवताओंके कार्यके वास्ते जातेभये ३५ ये सम्पूर्ण एकसा रूप वाले बज्रनगरका जो शाखा नगरथा तिसको प्राप्तहुये ३६ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत बिष्णुपर्व भाषायां बज्रनाभप्रद्युम्नोत्तरेशतोपरि पंचाशोऽध्यायः १५० ॥

एकसौइक्यावनका अध्याय॥

हे राजन् जनमेजय तिसके अनन्तर सबने यह जाना कि पहले

सुनाहुआ भद्रनामा नटहीआगया इन्हेंकोदेखकेबज्रनाभआज्ञादेता भया कि इन्होंको उत्तम घरदो १ और भेट रत्नों से खूब आतिथ्य करो और विचित्र वस्त्रलेकर अच्छी शय्या बनाओ २ ऐसे भर्त्ताकी आज्ञाको सुनके तैसेही करतेभये और पहलेसुनाथा कि वहनट प्राप्त होगया यह सुन सबकेबड़ा आनन्दहुआ ३ और पश्चात्सम्पूर्ण दैत्य आनन्द युक्तहोकर तिसको बहुतसा रत्नदेतेभये ४ और पश्चात् बर-दिया हुआ यह नटवर पुरबासियों के आनन्द के वास्ते नृत्य करने लगा ५ पश्चात् रामायणका सम्पूर्ण नाटक तिन्हों पश्चात् इसनृत्य कोदेखकर राक्षस बड़ेप्रसन्नहुये ६ औरकंकण और हार और वैडूर्य मणिदई ७ और यह नटहै ऐसे जानके बज्रनाभ ने हुक्म दिया कि इन्हों को वज्र पुरमें लेचलो ८ ऐसे दानवेंद्रके वचन सुनके शाखा नगरवासियोंने नट वेषयादव वज्रपुरमें प्राप्तकरदिये ९ और विश्व कर्माका रचा हुआ बहुत अच्छा आवास दिया १० इसके अनंतर वज्रनाभ ने कालोत्सव कराया पश्चात् महाबल बज्रनाभ तिन्हों को बहुत से रत्नदेकर प्रेक्षाके वास्ते प्रेरताभया ११ पश्चात् अंतः पुरको आच्छादन कराके तहां नृत्य कराया पश्चात् नटवेषको धा-रणकरे ये नृत्यकेवास्ते प्रारंभकरतेहुए और अनेक प्रकार के बाजे बाजनेलगे १२ और अनेकप्रकारके गायनकरनेलगे और अनेक प्रकारके गानोंसे हे भारत तिन असुरोंको प्रसन्न करताभया १३ और प्रद्युम्न गद और बीर्यसंपन्नगद ये नंदीनाम बाजेको बजाते भये १४ और गायनकरतेभये और रंभाभिसार नाटक करते भये और प्रद्युम्न तो नलकूवरहुआ १५ और सांब विदूषकहुआ और पश्चात् यदुनंदनोंने कैलास निरूपण किया १६ और क्रोधहोके दुरात्मा रावणको शापदिया पश्चात् पादोद्धार नृत्यकरतेभये १७ और पश्चात् नारदमुनिका नृत्य करताभया पश्चात् वस्त्र रत्नआ-भूषण हार तिन्होंको अनेकप्रकारके देतेभये १८ और बिमान रथ हस्ती बहुतसे देतेभये और दिव्य चंदन सुगंध अगर देते भये १९ पश्चात् प्रभावती हंसीको कहनेलगी कि हे अनिंदिते अब मैं द्वारका

में प्राप्त होंगी क्योंकि मैंने प्रद्युम्न आज स्वप्न में देखा २० और संबंधकिया यह मैं तेरेको असत्य नहीं कहती २१ और मेरेकोकह नेलगे कि हे सुंदरि इस मेरे स्थानमें बस हंसी ऐसे सुनके कहने लगी कि हे कमललोचने ऐसाही होजायगा २२ पश्चात् यह अनेकप्रकारका बिलापकरनेलगी कि हे सखि चंद्रमा मेरेको दग्ध करताहै और शीतलपवन भी तात्काल दग्धकरताहै २३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशांतर्गतविष्णुपर्व्वभाषायांबज्रनाभप्रद्युम्नोत्तरेएकपंचाशदधिकशतोऽध्यायः १५१॥

एकसौबावनका अध्याय॥

बैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् प्रद्युम्नकरके प्रसन्न चित्त वाली हुई प्रभावती यह कहनेलगी कि हे प्रियतू भ्रमरहोके भौंरों के साथ मेरी माला में आजा १ ऐसे कहके यह सुंदर रूपवाली अपनेरूपको दिखातीभई और चंद्रमाके किरणकेसे अंगोंकोप्रकाश करतीभई २ पश्चात् प्रभावतीके तिस रूपको देख प्रद्युम्नके ऐसे कामसागर बढ़ा जैसे चंद्रमाको देखकर समुद्र ३ पश्चात् प्रभावतीने इसको देख लज्जावती होके नीचेको मुख करलिया पश्चात् रोमांचित अंगवाला प्रद्युम्न पूछके तिस सुंदर भूषणोंवाली प्रभावतीको बचन कहनेलगे ४ कि हे प्रिये सैकड़ों मनोरथों से लब्ध हुआ यह पूर्णमासी के चंद्रमाकेसा मुख किसवास्ते नीचेको करती है ५ कुछ तो बचन कह हे सुंदर मुखवाली प्रभाका उपमर्दन मत करे ६ और भयको त्यागदे और यहमैं अंजलिबांधके तेरेको याचना करताहूं कि गंधर्व विवाह करके मेरे ऊपर अनुग्रह कर७ क्योंकि देश कालके अनुरूप से रूपकरके तू सतीकी प्रतिमा है ऐसे कहके तिस प्रभावतीका सुंदर हाथ प्रद्युम्नको ग्रहणकरलिया ८ और पश्चात् मणिमें स्थितहुए अग्निकी परिक्रमा करली पश्चात् यदुनंदन हंसीको कहनेलगे ९ कि रक्षाकेवास्ते द्वारपरठहर पश्चात् तिस प्रभावती का सुंदरहाथ पकड़ के शय्यापर प्राप्तकरली १०

और ऊरूपर बैठाके बारंबार सान्त्वनाकराके शनैः शनैः इसकामुख चुंबनकिया और पश्चात् अधरामृत ऐसे पानकिया जैसे कमल को भ्रमर ११ पश्चात् रतिको जाननेवाला प्रद्युम्न इसके साथ अत्यंत रमणकरताभया १२ पश्चात् सूर्योदयमें फिर नटोंके स्थानमें गया और नहीं इच्छा करतीहुई प्रभावतीने किसीप्रकारसे विसर्जन किया १३ और तहां नटकावेष धारणकरके कार्यके वास्ते भैमवंश में उत्पन्न होनेवाले बसतेभये १४ पश्चात् बज्रनाभ ने त्रैलोक्यके जीतनेमें उद्योगकिया पश्चात् इतने कश्यपमुनिकी यज्ञ पूरीहुई १५ इतने संपूर्ण देवता और असुराओं का महाबिरोध होगया पश्चात् ऐसे तहां बसतेहुए संपूर्ण भूतोंको मनोहर प्रदोष प्राप्तहुआ १६ और इन्द्र और कृष्णचंद्र बारंबार बृत्तांत पूछते रहे तहां इंद्रकी आज्ञा से व्याप्तहुए पुरको नट नहीं जानतेभये १७ पश्चात् शीलौदार्यको देख करप्रभावतीतिसको व्याहदई और बज्रनाभकेभ्राता सुनाभको अपनी दो कन्या बिवाहदईं १८ एक तो चंद्रवती और दूसरी गुणवती ऐसे तहां रमण करतेभये १९ पश्चात् प्रभावती कहनेलगी कि बिद्या के प्रभावसे मैंदेवपुत्रके साथ रमणकरती हूं २० और देखोमेरे प्रभाव को प्रद्युम्नमेराप्याराहै पश्चात् देवताओं के तरफतो धर्मशील ये रहे२१ और असुरों की तरफ पाप आदिरहे पश्चात् पितृव्यगदको और सांवको कहनेलगा २२ कि तुमरूप शील गुणों करके युक्तहो इसवास्ते युद्धकेवास्तेसावधान होजाओ २३पश्चात् ऐसे प्रद्युम्नके वचन सुनप्रथमतो चंद्रवती और गुणवती कन्याको व्याहतेभये २३ गदकोतो चंद्रवती व्याही और सांवको गुणवती पश्चात् संपूर्ण यदु पुंगव असुरकन्याओं के साथ रमणकरनेलगे २४ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंश पर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां प्रद्युम्नोत्तरे वज्रनाभ प्रसंगेद्विपंच दधिकशततोध्यायः १५२ ॥

एकसौतिरपनका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय प्रद्युम्नजोहैं भाद्र

पदके महीनों में मेघोंके समूह से व्याप्तआकाश को देखकर सुंदर नेत्रोंवाली प्रभावतीके प्रतिवचन कहनेलगे१ कि हेसुंदरि तेरेमुखके सीकांतिवाला और सुंदर बिंबवाला चंद्रमा तेरेकेश पाशों के समान मेघोंसेरुकाहुआ नहीं दीखताहै २ और हे सुभ्रु अब विजलीतो मेघ में स्थितहुई ऐसे दीखतीहै कि जैसे सुवर्णके गहनोंको धारण किये तु ३ और हे वरांगि मेघ तेरे दरवाजे धार छोड़तेहैं और शब्दकरते हैं ४ और हे शोभने बायुके बशहुआआपसमें जुटतेभये जैसे वनमें आपसमें मारनेको प्रवृत्तहुये हस्ती ५ और हे बर गात्रि हे कांते कामीजनोंको प्रसन्न करनेवाला और मेघ और आकाशकोभूषित करनेवाला ऐसे त्रिबर्ण धनुषको देख ऐसे शोभाको प्राप्त होरहाहै जैसे मुखपर कियाहुआ मंडन६ और हे सुश्रोणि मयूरोंके समूहोंको देखसफेद सफेद महलोंपर चढ़के मेघोंको देखकर प्रसन्नहुये कैसे नृत्यकरतेहैं ७ और हे कांते धाराके माहसे निकसा हुआ और सुख का देनेवाला और चंदनकेसा शीतल और कदंबसर्ज अर्जुन इन्होंके पुष्पोंकी सुगंध वहनेवाला ऐसावायु चलताहै८और हेप्रियेयहवायु रतिश्रमको दूरकरताहै और जलोंकेभारोंका हेतुहै परंतु हे शोभन अंगवाली मेरेको तो यह पवनभी अच्छानहीं लगता ९ और यह कालभी हे कांते जो इसप्रकारका प्रियसंगमहोवे और सुगंधकोप्रा-प्तकरनेवाला और रतिश्रमको हरनेवाला जो ऐसावायु चले तो इसके समान लोकमेंऔरसुखनहीं १० और हे सुंदरनेत्रों वाली देख नदियोंके जलोंमें न्हाये हुयेहंस और सारसऔर क्रौंचगण प्रसन्नहुये कैसेक्रीड़ा करतेहैं ११ और हे कांतेनदी और सरोवर जब शोभाको नहींप्राप्तहोते तब हंस और सारस और चकवाचकवी नहींरहते १२ और देख कृष्णचन्द्र की कृपासे संपूर्ण वृक्षफूल को भेंटदेते हैं और देख भौंरोंके पियेहुये वृक्षग्लानिको नहींप्राप्त होतेहैं १३ येमनुष्यों को अत्यन्त आनंदजनातेहैं और हे सुंदरमुखवाली जलकेभारसे नये हुये और बिजलियोंसे रमणीक और बर्षाकरनेवाले१४ऐसे मेघोंको देखऔर हे कांतेदेख जलबिलंबजो मेघहैं तिन्होंको खेंचनेवाला बायु

ऐसे योजनकरताहै जैसे प्रवृत्त आज्ञावालाराजा १५ अपने गजों के साथ दीप्तहुये बनमें होनेवाले गर्बितहस्ती और हे प्रियेदेख पपीहा और मयूरोंको आनंद करनेवाला और जलसे उत्पन्न होनेवाले संपूर्ण जीवोंको उत्पन्न करनेवाले मेघ पवित्र जलको वर्षातेहैं १६ और हे प्रिये देख मेड़ककैसे शब्द करतेहैं मानोंप्रिय और सत्यधर्मोंवाले शिष्यों करके सहितआचार्य१७और हे प्रिये यहतो तोयद कालमें गुणहै कि जागेहुये मेघ भयकराके शय्याके बिनाभी प्यारों कोभी दृढ़आलिंगन करतीहैं१८और हे प्रिये बर्षाऋतुमें यहदोषहै किघनोंकरके ग्रहणकिया तेरे मुखरूप चंद्रमानहीं दीखता१९ और हेभीरु जब घनकेमध्यमें जगत्को प्रदीप करनेवाला चंद्रमादीखता है तब जन ऐसे प्रसन्नहोते हैं जैसेप्रवाससे निवृत्तहुआ कांताको देखके नायक२० और हेभीरुजबप्रियहीनस्त्रियोंके बिलापका साक्षीचंद्रमा उदयहोता है तब ऐसे नेत्रोंको आनंदहोता है जैसे कांतको देख के प्रोषितकान्ताओंको २१ और हे प्रिये प्रवासी का आना कांत समागतोंको जैसे उत्साह करताहै और प्रियहीनोंको जैसे दावाग्नि तुल्यहै तैसेही बरांगनाओंको चंद्रमाभी प्रिय औ बिप्रिय है २२ और हे कांते तेरे पिताकेभवनमें चंद्रमाकी किरणनहीं पड़ती है इसवास्ते चंद्रमा के गुण और दोषको तू नहींजानती २३ इस वास्ते मैंतेरे आगे बर्णन करूंगा और हे प्रिये जोसंपूर्णोंमें उत्तम बंशहै तिसमें तू वधूहै २३ और गुणोंका पात्रहै इसवास्ते हे बाले संपूर्ण लोकोंको ईश्वरनारायणकोतेरे सुसुरेको प्रणामकर २५ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्वभाषायां त्रिपंचाशदधिकशतोऽध्यायः१५३ ॥

एकसौचौवनका अध्याय॥

वैशंपायनजीकहतेहैं कि हेराजन् जन्मेजय अतितेजस्वी कश्यप मुनिके यज्ञके अंतमें संपूर्ण देवता और असुर अपने२स्थानोंमें जाते भये १ और यज्ञ निवृत्त होतेही त्रैलोक्यके जीतनेकी इच्छा करता हुआ वज्रनाभ भी कश्यपजीके पासजाताभया२पश्चात् कश्यपजी

से बचन कहने लगा कि वज्रनाभ तू समझकर और हे पुत्र अपने स्वजनों करके सहित बज्रपुरमें बस और हे पुत्र इन्द्र तो तपसे भी अधिक है और स्वभावसे भी समर्थ है और हे पुत्र ब्रह्मण्यहै और कृतज्ञ है ४ और ज्येष्ठ है और गुणों करके श्रेष्ठ है और संपूर्ण जगत्का पात्रभूत है और सतांगति है और हे पुत्र इंद्र संपूर्ण लोकोंके राज्य को प्राप्तहै ५ हितमें स्थितहै और हे बज्रनाभ इंद्रकोतू जीतने को समर्थ नहीं है और जो तू मरने की इच्छा करताहै तो युद्धकर ६ हे भारत ऐसे कश्यप मुनिके वाक्य सुन काल पास से व्याप्त हुआ बज्रनाभ तिन्होंको ऐसे नहीं सराहता भया जैसे मरनेको बांछाकरनेवाला रोगी ७ औषधि को हे जनमेजय पश्चात् यह दुर्बुद्धिलोकभावन कश्यपजी को प्रणाम करके ८ पश्चात् त्रैलोक्य के बिजयके आरंभ में मतिकरता भया ९ हे राजन् पश्चात् बज्रनाभ बहुत से जाति योधाओं को और बहुत से मित्रोंको बुलाके और स्वर्गके जीतने के वास्ते अग्रे प्रस्थान करता भया १० पश्चात् इसी कालमें कृष्णचंद्र और इंद्र दोनो महाबल बज्रनाभ के बधके प्रति हंसों को भेजते भये ११ पश्चात् यदुमुख्य महाबल यादव आये हुये हंसों को सुनके और सलाह करके अत्यंत चिंताको प्राप्त हुये १२ और कहने लगे कि बज्रनाभ तो प्रद्युम्न से मरेगा ऐसे सलाह करके वे महाबल हंसोंको कहतेभये १३ कियह संपूर्ण वृत्तांत इन्द्र और केशव को कहो ऐसे सुनके संपूर्ण वृत्तांत यथार्थ कहतेभये १४ पश्चात्इंद्र और भगवान् ने फिर हंसभेजे और कहा कि यहकहो हे यादवाहो तुम्हारेकामकेसारूपवाले और गुणोंकरकेश्लाघ्य और अंगों सहित वेदोंकोपढ़नेवाले और अनेक शास्त्रोंको बिचारनेवाले १५ ऐसेपंडित पुत्रहोवेंगे और तात्कालही जवान होजायगे१६ हंसऐसेकहके फिर वज्रपुरमें गये और तहां इन्द्र और केशव का संपूर्ण कथन भैमोंको कहतेभये १७ पश्चात् प्रभावती प्रद्युम्नकेही समान श्रेष्ठपुत्र को जनतीभई पश्चात् हेभारत यहतात्कालही सर्वज्ञत्व और यौबनको प्राप्तहोगया १८ और हे भारत एकमहीनेमें पिताके समान चंद्रमा

केसीकांतिवाले पुत्रको चंद्रवती जनतीभई १६ सो यह भी तात्काल यौवन और सर्वज्ञत्व को प्राप्तहोताभया २० और ऐसेही अनिंदित गुणवतीभी सर्वशास्त्रों के जाननेवाले गुणवान् और युवन पुत्रको जनतीभई २१ और इन्द्र और उपेंद्रके प्रसाद करकेबढ़े पश्चात् एकदिन महलकी पृष्ठपर बर्धमानसंपूर्ण यादवदेखे २२ और कहने लगेकि इन्द्र और उपेंद्रकी इच्छासे यहबार्ता है यह निश्चय जानो ऐसेविचार भ्रमयुक्त हूये दानव स्वर्गके जीतनेकी इच्छा करनेवाले शूरबीर बज्रनाभका संपूर्ण वृत्तांत कहतेभये२३ बज्रनाभ तिसवृत्तांत को सुनके कहनेलगा किरेपकड़लो ये संपूर्ण मेरे कुलके धर्षकहै २४ ऐसेकह संपूर्ण सेनाको आज्ञादई कि चारोंतरफसे दिशाओंको घेर लो और पकड़लो और मारो २५ तिसअसुरेंद्रकी आज्ञा से असुरों ने वैसाही किया पश्चात् पुत्रहैं प्यारे जिन्होंकेऐसी प्रभावतीआदि मातारुदन करनेलगी २६ इन्हों को दुःखित देख के हंसताहुआ प्रद्युम्न बचन कहनेलगा कि हे अवलाहो हमारे जीवतेहुये तुमभय मतकरो २७ और दैत्य हमारा क्याकरेंगे सर्बथा तुम्हारा कल्याण होऐसे कहके पश्चात् प्रद्युम्न बिक्लवहुई प्रभावती को कहनेलगा २८ किहेप्रिये देखहाथमें गदालिये तेरा पितास्थितहै और ये तेरे पितृव्य स्थितहैं और हेदेबिये तेरेभ्राता और ज्ञातिके स्थितहैं २६ सोहेप्रिये ये तेरेवास्ते संपूर्णमेरे पूज्यहैं और मान्यहैं सो तू अपनी बहनोंको पूछयह बड़ादारुण कालहै क्योंकि संपूर्ण दानवेंद्र हमारे वधकी इच्छाकरतेहैं ३० हेप्रिये तेरीआज्ञामें स्थितहुये जो हमहैं हमको यहांक्याकरना योग्यहै ऐसेसुनकेरोतीहुई प्रभावती प्रद्युम्न को ऐसेवचन कहनेलगी ३१।३२ और शिरके ऊपर अंजलि धरके गोड़ोंकरके पृथ्वी में गिरगई और कहनेलगी किहे प्रिय हे शत्रु निवर्हण शस्त्रग्रहणकर और अपने आत्माको रक्षाकर ३३ क्योंकि जिससे हेयदुनन्दन तुमतो जीवतेहुये हैं पुत्रजिन्होंके ऐसे स्त्रियोंको देखनेवाले होना ३४ और हे नृवरश्रेष्ठ बैदर्भीको और अनिरुद्धको याद करके हे अरिमर्दन इस व्यसन से छुटाओ और हे भगवन्

बुद्धिमान् दुर्वासा ने मेरे को बरदानभी दिया है ३५ कि हे प्रभा-
वति तू बैधव्य रहिता और जीव पुत्रा होवेगी यह मेरे हृदय को
आश्वास है कि सूर्य और अग्निकेसा तेजवाले मुनिकेबाक्यअन्यथा
नहीं होते ३६ हे राजन् प्रभावती ऐसे कहके और खड्गको लेकर
और खूबमाजकर यह मनस्विनी प्रभावती प्रद्युम्नको देतीभई और
यह भी कहतीभई कि हे शूरबीर तू जयकर ३७ ऐसे कहती भई
पश्चात् यह धर्मात्मा आनंदयुक्त आत्मासे भक्तियुक्त प्रियाके दिये
हुये खड्गको प्रणाम करके तिस खड्गको ग्रहण करता भयो ३८
पश्चात् चंद्रवतीआनन्दयुक्तहुई गदको खड्गदेतीभई और गुणवती
महात्मा सांबको खड्ग देतीभई ३९ इसके अनन्तर प्रभु प्रद्युम्न
प्रणत हंसकेतुको कहताभया कि हे हंसके तो तू साम्बकरके सहित
और यादवों करकेसहित यहीं युद्धकर ४० और हे अरिंदम मैं स-
म्पूर्ण दिशाओंमें और आकाशमें मैं युद्ध करूंगा ऐसे कहके पश्चात्
मायावियों में श्रेष्ठ यह प्रद्युम्न मायाकरके रथको रचताभया ४१
और पश्चात् हे कौरव्य सम्पूर्ण नागोत्तमोंमेंउत्तम और अनन्तभोग
वाला और हजारशिरोंवाला और ऐसेनागकोअपना सारथि बनाता
भया ४२ पश्चात् तिस मुख्य रथकरके प्रभावतीको आनन्द युक्त
करतेहुये असुरोंकी सेनामें ऐसे बिचरनेलगे कि जैसे तृणोंके विषे
अग्नि ४३ पश्चात् सर्पकेसमानऔर अर्द्धचंद्रमाकेसी कांतिवाले और
भेदन करनेवाले ऐसे बाणोंसे दितिकेपुत्रोंको भेदन करताभया ४४
पश्चात् रणमेंमत्तहुये असुर प्रद्युम्नके शस्त्रोंसे व्याकुलहुये और
निश्चयको अस्थितहुये कमलकेसानेत्रवाले प्रद्युम्नको भेदनकरते
भये ४५ पश्चात् प्रद्युम्न कितनेकोंको तो बाजूबंद और कंकणोंसे
भूषित भुजाओंको छेदन करताभया और कितनेक असुरोंकेकुंडलों
सहित शिरोंकोछेदन करताभया ४६ और अत्यंत तेजवालेप्रद्युम्न
के शस्त्रोंसे काटेहुये असुरोंकेशिर और शरीरके टुकड़े इन्हों करके
पृथ्वी व्याप्तहोगई ४७ पश्चात् देवगणों से सहित युद्धको जीतने
वाला ऐसा आनंदयुक्तहुआ इन्द्र मैसोंकेसाथ असुरोंके युद्धकोदेख-

ताभया ४८ पश्चात् जो दैत्य गद और सांब के सन्मुख जाते भये सो सम्पूर्ण ऐसे मृत्युको प्राप्तहोते भये कि जैसे महोदधि में जल जंतु४९पश्चात् देवताओंकापति इन्द्र युद्धको विषम देखके पश्चात् अपने रथको गदकेअर्थ भेजता भया ५० और मातलिनाम सूतको भेजताभया और सांबकेअर्थ ऐरावत हस्ती को भेजता भया ५१ और विभु इन्द्र जयंतको प्रद्युम्न का सहायक भेजता भया और ऐरावंत के प्रेरनेके वास्ते प्रवरको युक्त करताभया ५२ ऐसे सुराध्यक्ष ब्रह्माको जनाके पश्चात् अमित पराक्रमवाले जयंत और प्रवर और मातलि सारथि और ऐरावत इन सम्पूर्णों को विधि का जाननेवाला इन्द्र श्रेष्ठ कर्मोंमें योजन करताभया ५३।५४पश्चात् महाबल प्रद्युम्न और जयंत दोनों हर्म्यको प्राप्तहुये और शरजालोंके समूहसे असुरोंकानाश करतेभये ५५ पश्चात् रणदुर्जय प्रद्युम्न गदकोकहताभया कि हे उपेंद्रानुज इन्द्रने तेरेवास्ते यहघोड़े जोड़के रथभेजाहै ५६।५७ और यह मातलिमहाबल सारथिभेजा है और सांबकेवास्ते प्रवर चढ़ाके ऐरावत हस्ती भेजा है ५८ और हे अच्युतके छोटेभ्राता आजतो द्वारकामें रुद्रकी महापूजाहै और पूजाकेपश्चात् कल भगवान्‌ही यहां आवेंगे५९ तबतिन्होंको आज्ञा से बांधवोंसहित वज्रनाभको मारेंगे और स्वर्गके जयकेप्रति अभ्युत्थान कृत पाप मेरे को लगेगा ६० और कलही यह वज्रनाभ पुत्र सहित इन्द्रको भी जीतेगा और अप्रमाद यह करना योग्य है ६१ और हे गद बुद्धिमान् नरको संपूर्ण उपायोंसे स्त्रियों की रक्षा करनी योग्यहै क्योंकि स्त्रियोंका धर्षण लोकमें मरणसे भी अधिक कहाहै ६२ पश्चात् सो महावल प्रद्युम्न गद और सांबको ऐसे कहके पश्चात् अपनी दिव्यरूप मायाकरके एक करोड़ अपने स्वरूप प्रद्युम्नों को रचताभया ६३ और दैत्योंका रचाहुआ दुरासद तमको नष्ट करताभया ऐसे तिस रिपुमर्दन प्रद्युम्नको इन्द्र देखकर बहुत प्रसन्न हुआ ६४ और सम्पूर्ण भूत सम्पूर्ण शत्रुओंमें वर्ततेहुये प्रद्युम्नको ऐसे देखतेभये कि जैसे आत्मामें वर्तता हुआ क्षेत्रज्ञ ६५

ऐसे प्रद्युम्नके युद्ध करते हुये रात्रि व्यतीत होगई और प्रद्युम्नने अति तेजसे असुरोंके तीनभाग मारदिये ६६ और रणभूमि में इतने प्रद्युम्न युद्ध करताभया इतने गंगाजीके जलमें जयंतने संध्योपासनकर्मकिया ६७ और इतने महाबल जयंत युद्धकरताभया इतने आकाश गंगामें प्रद्युम्नने संध्योपासन कर्मकिया ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंश पर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायांप्रद्युम्नदैत्ययुद्धेशतोपरिचतुःपंचाशत्तमोऽध्यायः १५४ ॥

एकसौपचपनका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय जब जगत्काचक्षुरूप सूर्यउदय हुआ तबसर्पोंका शत्रुगरुड़ करके हरिदेव प्रकट होताभया १ और हे कुरुनंदनहंस और बायु और मनके साबेगवाला गरुड़ आकाशमें इन्द्रकेपास आनके खड़ाहुआ २ और पश्चात् इन्द्र केसन्निधिमें दैत्योंको भयकरनेबाले पांचजन्यको हरिभगवान् बजातेभये ३ पश्चात् प्रद्युम्न तिसशंखके शब्दको सुन भगवान् केसमीपआये ४ और भगवान्ने देखतेही कहा कि हे पुत्रजल्दजा और बज्रनाभको मार ५ और फिर भगवान् कहनेलगे कि हे पुत्र गरुड़ परचढ़ के जा ऐसेसुन यहशूरबीरदोनों सुरोत्तमोंको प्रणामकर तैसे हीकरताभया६ और हे राजन् पश्चात् मनकेसा बेगवाले गरुड़ पर सवारहोकर शीघ्रही दुरंतयुद्धवाले बज्रनाभके पासजातेभये ७तिस के अनंतर संपूर्ण अस्त्रोंका जाननेवाले गरुड़ रणभूमिमें स्थितहुआ बज्रनाभको पीड़ाकरताभया पश्चात् गरुड़करके प्राप्तहुआ प्रद्युम्न गदाकरकेहृदयमेंतिसकोमारताभया८ पश्चात् मोहकेबशहुआ यह दैत्य प्रद्युम्ननेजबमारा तब मुखसे बहुतसा रुधिर गेरनेलगाऔर मरेहुयेकी तरह गिरगया ९ पश्चात् रणदुर्जय प्रद्युम्न तिसकोक हनेलगा कि होसकर पश्चात्जब संज्ञालब्धहोगई तब यह शूरबीर बज्रनाभ प्रद्युम्नको यह बचन कहताभया १० कि हे यादव यह तैंने श्रेष्ठकामकिया और तू बीर्य करके मेरा श्लाघ्य रिपुहै इस वा-

स्ते हे महाबल यह प्रहार कालहै इसवास्ते मेरेआगे स्थिरहो ११
पश्चात् वज्रनाभ ऐसे कहके और सैकड़ों मेघोंकेसा शब्दको छोड़
के पश्चात् घंटाकर के सहित बहुतकांटोंवाली गदाको छोड़ता भ-
या १२ और हे राजन् तिसगदा करके मस्तक में हननकिया यदु
नंदन प्रद्युम्न रुधिरगेरताहुआ मोहकोप्राप्त होताभया १३पश्चात्
पुत्रके शत्रुको नाशकरनेवालाभगवान् कृष्णचंद्र ऐसेतिसप्रद्युम्नको
देखकर आश्वासना करानेवाला पांचजन्य शंखकोबजातेभये १४प-
श्चात् पांचजन्यकेशब्दसेमहाबलप्रद्युम्नकोसचेत देखकरसंपूर्णलोक
मुदितहोगयेऔरइन्द्रऔरकेशवतोविशेषकरकेप्रसन्नहोगये१५ हेभा-
रतपश्चात्तिस प्रद्युम्नके हाथमेंजोतीक्ष्ण नेमिवाला और हजारअ
रोंवाला और दैत्यसंह केकुलकाअंत करनेवाला जोऐसाचक्रथा १६
तिसको सुरेंद्र और महात्मा कृष्णको नमस्कार कर वज्रनाभ के
नाशके वास्ते प्रद्युम्न छोड़तेभये१७पश्चात् प्रद्युम्नका छोड़ाहुआ
वहचक्र दैत्योंके देखते हुये बज्रनाभ के शरीरसे शिरको दूर करता
भया १८ और रणके आंगन में रणहृप्त और भयांतक और यत्न
करताहुआ ऐसेसुनाभदैत्यको गदमारताभया१९ और शत्रुओंकोना
शकरनेवाला सांबयुद्धमेंस्थितहुयेदैत्योंकोतीक्ष्णबाणों से प्रेताधिपके
स्थानको प्राप्तकरताभया २० पश्चात् जब बज्रनाभ मारदिया तब
शूरवीर निकुंभभी नारायणके भयसे अर्दितहुआ शूरवीर निकुंभ षट
पुरकोजाताभया२१ पश्चात् जब बज्रनाभ देवरिपु निबर्हण होगया
तब महेन्द्र और केशव वज्रपुरमें अवतीर्ण हुये २२ पश्चात् लब्ध
हुये शत्रुपराजयका दुःखाप नोदनकरते भये२३ और भयसे अर्दित
हुये बालवृद्धको आश्वा सनाकरातेभये २४ पश्चात् महात्मा इन्द्र
और उपेंद्र सलाहकरके और बृहस्पति केमत को प्राप्तहोके भूत
कालमें और वर्तमानकालमें हे राजन् बज्रनाभ केराज्यका चारभा
गकरतेभये २५ जिसमें चौथा भागतो जयंतके पुत्रबिजयको दिया
और चौथाभाग रुक्मिणी के पुत्रप्रद्युम्न को दिया और हे जनेश्व
रचौथाभाग चंद्रप्रभको देताभया २६ पश्चात् कुरुके अधिक चार

करोड़ग्रामों व्याप्तजो बज्रपुरकी तरह साखापुर सहस्र तिन्हों को प्रसन्नहुये इन्द्र और केशव चारभाग करतेभये २७ और हे शूरबीर कंवल और मृगचर्म और बस्त्र और अनेक प्रकारके रत्न इनसंपूर्णों का चारभाग करतेभये २८ तिसके अनंतर वेशूरबीर इन्द्रकी आज्ञा से अभिषिक्तकरदिये देवदुन्दुभिके बाजाओंकरके २९ और गंगाजी के जलकरके आप बुद्धिमान्केशवने और इन्द्रने येमाधवनंदनराजा बनादिये और महात्मा माधवोंमें मातृजगुण करकेबुद्धिमान् बिजय कीगतितो आकाशमेंप्रसिद्धहीहोतीभई ३० और समितिंजय भगवान् इन्द्र जयंतको अभिषेचन कराके कहनेलगा ३१।३२ कि हेबीरयेरा जातेरेको रक्षितव्यहै मेरेबंशके करनेवाला एक और केशव बंशका करनेवाला तीनमेरे आज्ञासेतुम संपूर्ण भूतोंसे अवध्यहोवोगे ३३ और स्वर्गमें तुम्हारा जाना आनासिद्धहोगा और आकाशमें और भैमाभिरक्षित सुंदर द्वारकामें जानाआना श्रेष्ठरहेगा ३४ औरदि-शागजहस्तियों के बच्चों को और उच्चैःश्रवः अश्वोंको और त्वष्टा कृत रथोंको दानकर और सांब और गदको ऐरावत के पुत्र शत्रुं जय और रिपुंजयकोदे ३५ और आकाश करके भैम रक्षित द्वारका कोजावो ३६ और भैमनंदन आवोपश्चात् देवताओंकाराजा भग-वान्इन्द्र ३७ ऐसे आज्ञादेकर स्वर्ग में जाताभया और केशव भग-वान् द्वारका में जातेभये ३८ और पश्चात् छः महीना पर्यंत गद और प्रद्युम्न और सांबयेतीनों बसतेभये औरजबराज्य जमगयातब ये महाबल द्वारकाको प्राप्तहोतेभये ३९ हे देवताओं के समानज-नमेजय अबभी वे राज्य उत्तर में सुमेरु के पासस्थितहै और इतने जगत् रहेगा इतने स्थितरहैंगे ४० और हे बिभो मूसल युद्धहो-लिया और संपूर्णयादव स्वर्गको चलेगयेतब गदऔर प्रद्युम्नऔर सांब येतीनो बज्रपुरको जातेभये ४१ हे जनमेजय पश्चात् तहां बसके फिरस्वर्गमें प्राप्तकरनेवाले शुभकर्मोंकरके लोककर्ता कृष्णा चंद्रके प्रसादसे स्वर्गमें जायंगे ४२ हे नृदेव यह प्रद्युम्नोत्तर मैंने तेरेआगे कहाहै यहधन और यशआयुको बढ़ाता है और शत्रुओंका

नाशकरताहै ४३ और पुत्रपौत्र और आरोग्य और धन और संपत् इन्हो को वढ़ाता है और बिपुलयशको प्राप्तकरता है जैसे व्यासजी के वचन ४४ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंश पर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायां बज्रनाभवधोनामशतोपरि पंचपंचाशत्तमोऽध्यायः १५५ ॥

एकसौछप्पनका अध्याय ॥

वैशम्पायन जी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय इसके अनन्तर गरुड़पर स्थितहुआ कृष्णचंद्र चारोंतरफसेप्रतिनादित और देवसद्मों से प्रकाशित ऐसी द्वारका को देखतेभये १ और तैसेही मणि पर्वत के यन्त्रऔर क्रीड़ागृह और उद्यान बनमुख्य वलभी और आंगण इन्होंको भी देखताभया २ और देवकीके पुत्र कृष्णचंद्र जब पुरीको प्राप्तहुये तबदेवराज इन्द्र विश्वकर्मा बुलाके यह कहने लगा ३ कि हे शिल्पियोंमेंश्रेष्ठ जो तू मेरेप्यारको इच्छा करताहै तोकृष्णचंद्रके प्यारके वास्ते मनोहर ४ और उद्यान शतोंसे सहित और स्वर्गके समान ऐसी द्वारकापुरीरच और हे बिबुधश्रेष्ठ मेरी पुरीकेसी सुंदर रच५और हे विश्वकर्मन् त्रिलोकमें जो रत्नरूपवस्तुहैं सो सम्पूर्ण तैंनेद्वारवतीमेंयोजनकरनी उचितहै६ पश्चात् कृष्णचंद्र सम्पूर्ण सुर कार्यों में स्थितहुये घोररूप संग्रामोंको स्थितहोतेभये और पश्चात् विश्वकर्मा तहां जायके चारोंतरफसे ऐसीसुंदर द्वारका रचतेभये कि जैसे इन्द्रकीपुरी अमरावती ७ पश्चात् गरुड़बाहन कृष्णचन्द्र वि- श्वकर्माके दिव्य अभिप्रायोंकरकेअलंकृत तिस पुरीको देखतेभये ८ पश्चात् प्रभु नारायण तिस द्वारका को देखके सर्वार्थ संपन्न हुये और प्रसन्नहुये प्रवेश होने को मनकरते भये ९ और विश्वकर्माके रचे हुये दृष्टिको मनोहर वृक्ष खंडोंको देखतेभये १० और कमलों के समूह और हंस सेवित जल करके शोभित ऐसी पुरीको देखते भये ११ और सुवर्ण और चांदीके प्रकारसे वेष्टित देखतेभये और अट्टालकाओंकर ऐसेशोभाहोतीभई जैसेमेघोंकरके आकाशकी १२

और चैत्ररथ और नंदनकेसे बागोंकरके द्वारका ऐसे भूषित होती भई कि जैसे मेघोंकरकेस्वर्ग १३ और पूर्वदिशा में मणि कांचन तोरणवाला और रमणीकसानुऔरगुफाओंवाला रैवतकशैलशोभा को प्राप्त होताभया १४ और द्वारकाके दक्षिणदिशामें लताओं से वेष्टित पंचवर्ण शोभादेता भया और पश्चिम दिशामें इन्द्रकेतुकेसी शोभावाला क्षय शोभाको प्राप्तहोताभया १५ और उत्तर दिशामें मंदराचल पर्वतकेसा वेणुमान् और रैवतकेप्रति १६ चित्रक पंचवर्ण पांचजन्य सर्वर्तुक ये बन शोभाको प्राप्तहोतेभये १७ और लता ओंसे वेष्टित मेरुप्रभवन शोभाको प्राप्तहोतेभये और भानुबन और पुष्पक महाबन शोभाको प्राप्त होतेभये १८ और अक्षक और वीजक और मंदार इन्हों करके शतावर्तनाम भूषित होताभया १९ और तैसेही चारोंतरफको चैत्ररथ और नंदनबन और रमणभवन ये शोभाको प्राप्तहोतेभये२० और हेभारत वैडूर्य केसे पत्रोंवाले कमलोंकरके मंदाकिनी नदी पूर्वदिशा में शोभाको प्राप्तहोतीभई २१ और विश्वकर्माकरके प्रेरेहुये देवगंधर्वोंकरके पर्वतोंकी सानुभूषित होतीभई २२ और महानदी पंचास महामुखों करके चारों तरफ करके भिगोतीहुई द्वारका को प्रवेश होती भई २३ और अप्रमेय और बहुत ऊंची और अगाधखाईकरकेयुक्त और प्राकारश्रेष्ठकरके युक्तऔर सुधा पांडुरसेयुक्त२४ और तीक्ष्णयंत्रशतघ्नीकरकेयुक्तऔर हेमके जालोंसे भूषित और महाचक्र आयसों करकेभूषित ऐसीद्वार का पुरीको भगवान् देखतेभये २५ और आठहजार रथ और छोटे घुंघुरुवोंवाले नर्तक इन्हों करके द्वारका भूषित होतीभई और ऊंची ऊंची पताकाओंकरके ऐसीशोभा होतीभई जैसेदेवपुरीकीशोभा २६ और आठयोजन बिस्तृत और अचल और बारह योजन लंबी और दुगुना उपनिवेश वाली ऐसी पुरीको देखतेभये २७ और अष्टमार्ग वाली और महारथ्या और महाषोड़श चत्वरोंवाली और एकमार्ग परिक्षिप्तऔरसाक्षात् उसनाको रचीहुई ऐसेद्वारकाकोदेखतेभये २८ और जिसद्वारकामें स्त्री भी युद्धकरती भई और यादवोंका तो क्या

कहनाहै और तिसद्वारकामें सातमहायूथ सेनाके होतेभये २६ और तिसी जगह विश्वकर्मा ने अनेक प्रकारके यादवोंके मकानरचे ३० और कांचनमणि सोपानोंकरकेयुक्त तिनभवनों को देखकर भगवान् वहुत प्रसन्न होतेभये ३१ और भीमघोष और महाघोष और प्रासादवर चत्वरों करके और ऊंची २ पताकाओं करके और प्रकाश करतीहुई ३२ कांचनाग्र महलोंकी शिखरों करके और रमणीक गृहोंकरके ३३ और सफेद२शृंगोंकरके और सुवर्णके कलशों करके पुरीकी ऐसीशोभा होतीभई जैसेरमणीकविचित्र शिखरों करकेपर्वत ३४ और पुष्पवृष्टिके समान पांचप्रकारकेसुवर्णके पुष्पोंकरके और मेघकेसमान गुंजनेवाले नानारूपवाले पर्वतोंकरके ३५ और बिश्व कर्माके रचेहुये चंद्रमा सूर्यकेसी कांतिवाले आकाश को छूहतेहुये भवनो करके अत्यंत शोभाहोतीभई ३६ और श्रेष्ठबन द्रुमों करके और वासुदेव और इंद्रकेगृह मेघोंकरके अत्यंत भूषित होतीभई ३७ इन्हों करके ऐसे भूषित सुंदर द्वारका को देखतेभये कि जैसे मेघों करके व्याप्त आकाश ३८ औरभगवान् बासुदेवका मकान चारयोजन लंबा और चारयोजन चौड़ा और महाधनवाला ऐसा विश्वकर्माने रचा ३६ और इन्द्रका प्रेरित त्वष्टा सुंदर महलोंसे और पर्वतोंसे भूषित जोमंदिर रचतेभये ४० सोसंपूर्ण भतोंके मनको हरनेवाला सुवर्णका मंदिरऊंचा मेरुशृंगकी तरह शोभितहोताभया ४१ और संपूर्ण प्रकारके प्रासादोंसे भूषित पश्चात् रुक्मिणी का श्रेष्ठबास विश्वकर्माने रचा पश्चात् बहुत सुंदर सत्यभामाका मंदिररचा ४२ और विमल आकाश केसीपताकाओं करके अलंकृत और सभामकानोंसे भूषित ऐसा मुख्य प्रासाद जांववतीकारचा ४३।४४ और यह प्रासाद तिनसंपर्णोंका अपनीकांतिकरके अन्योंका तिरस्कारकरता भया मध्यमें ऐसेप्रकाश करताभया कि जैसे उदय होताहुआ सूर्य ४५ और विश्वकर्मा का रचाहुआ और कैलाशकी शिखरके समान और सुवर्ण और अग्निकेसादीप्त ऐसा प्रासाद अत्यंत शोभा देता भया ४६ और मेरुनाम प्रासाद नाग्नजितीकारचा तिसमें भगवान्

ने नागनजिती प्रवेश करदी ४७ और पद्मकेसी कांतिवाला पद्म-कूलनाम प्रासाद भीमाके वास्ते रचतेभये ४८ और संपूर्ण गुणोंसे युक्त सूर्यप्रभ नाम लक्ष्मणाका रचा और वैदूर्य केसी कांतिवाला हरित प्रासाद मित्र बिंदाका बनवाते भये ४९ और तिन संपूर्ण प्रासादों में यह प्रासाद बिश्वकर्मा ने श्रेष्ठरचा है ५० और अत्यंत रमणीक पर्बतकी तरह धिष्ठित सुबार्ता महिषी का केतुमान् नाम भवनरचा ५१ और संपूर्ण रत्नोंसे जटित और एकयोजन बिस्तार वाला और शोभा युक्तकेशव भगवान् का तहांरचा ५२ और तिन संपूर्ण भवनोंमें भगवान् की क्रीड़ाकेवास्ते भवन पृथक् रचे५३।५४ और बैजयंत महान् पर्बत और प्रद्युम्न सरकेप्रति हंसकूटका शृंग साठताल ऊंचा और तीस ताल बिस्तृत और किन्नर महानागों करके युक्त ऐसा पर्बत संपूर्ण भूतोंके देखतेहुए तहां प्राप्त करदिया ५५ और जो आदित्य मार्गमें स्थित उत्तम कमलों से ब्याप्त और सुवर्णमय बिमानोंसे ब्याप्त तीनोंलोकोंमें बिख्यात ऐसा मेरुशिखर भी तहां प्राप्त करदिया५६ और तहां पारिजात बृक्ष आप भगवान् ल्यातेभये और जब भगवान् कल्पबृक्षको लेकर चले तब रक्षा करनेवाले देवताओंके साथ अद्भुतयुद्ध होताभया ५७ और बासु देवके वास्ते रत्न पुष्प फलोंवाले बृक्षरचे ५८ और कमलोंकेसमूह और जलोंसे युक्त और रत्न सौगंधिक कमलोंवाली और मणिहेम पल्लवोंकरके ब्याप्त ऐसी नदी और सर रचे ५९ और तिन नदियों के किनारे अनेकप्रकार की शाला और ताल और कदंब और रौहि णा ये शोभाको प्राप्त होतेभये ६० और जो हिमवान्में बृक्षथे और जो सुमेरु में थे संपूर्ण भगवान् के वास्ते तहां बिश्वकर्माने रच दिये ६१ और तिन बनोंकी संधियोंमें लाल और पीले और श्याम और श्वेत ऐसे पुष्पोंवाले बृक्ष तहां रचदिये ६२ और तिस श्रेष्ठ पुरमें समकूल जलकरके युक्त और शांत शर्करा बालुकोंवाली और प्रसन्न जलोंवाली ऐसी नदी रची ६३ और मत्तमयूर और सदा मद कोकिल शब्दकरतेभये और तहां गोपुरोंमें गौ और महिषोंका

निवास बनादिया ६४ और तिस रमणीक पुरीमें बराह मृग पक्षि योंका निवास बनादिया ६५ और तिसपुरीका सौहाथऊंचा विश्वकर्माने दुर्ग रचदिया और वह दुर्ग अत्यंत सौम्य पर्वत की तरह वेष्टित होताभया ६६ और तहां विश्वकर्मा ने मुख्य मुख्य पर्वत और नदी और सरोवर और बन और उपबन रचदिये ६७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वंभाषायांद्वारकाविशेषनिर्माणंनामशतोपरिषट्पंचाशत्तमोऽध्यायः १५६ ॥

एकसौसत्तावनका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय ऐसे द्वारका को देखतेहुए भगवान् पश्चात् सैकड़ों प्रासादोंसे भूषित अपने गृहको देखतेभये १ और रत्न कांचनोंवाली वेदियोंकरके भूषित भगवान् का प्रासाद अत्यंत शोभा करताभया २ और मणि हेमोंके समान और रत्न सोपानोंकरके भूषित और मत्तमयूरोंसे सेवित और कोकिलोंसे सेवित और खिलेहुए कमलोंवाली ऐसीबापी अत्यंत शोभादेतीभई ३ । ४ और विश्वकर्माने तिस भवनके पत्थरका प्राकार रचदिया ५ और खाई चारोंतरफको करदी ऐसा उत्तम भवन विश्वकर्माने श्रीकृष्णचंद्र का भवन रचा ६ और आधायोजन चारोंतरफसे महेंद्रके भवनकेसमानरचा तहां मकानके ऊपर भगवान् स्थित होकर शत्रुओंके रोमोंको उठानेवाला शंखबजाया ७ पश्चात् तिस शंखके शब्द करके समुद्र तो क्षोभको प्राप्त होताभया और संपूर्ण आकाश प्रतिशब्द करताभया ८ और कुकुर और अंधक पांचजन्यके शब्दको सुनके और गरुड़के दर्शनसे विशोकहुए तहां प्राप्तहुए ९ और शंख चक्र गदा पद्म इन्होंको हाथमें लिये और गरुड़के ऊपर स्थित और सूर्यकेसा तेजवाले भगवान् को देखकर संपूर्ण पुरवासी प्रसन्न होतेभये १० तिसके अनंतर तूर्य और प्रणाद और भेरी इन्होका महान् शब्द होताभया ११ और संपूर्ण पुरवासियों के सिंहनाद उत्पन्न होताभया पश्चात् संपूर्ण दाशार्ह

और संपूर्ण कुकुर और संपूर्णअंधक प्रसन्नहुए मधुसूदनको देखकर आतेभये १२ पश्चात् उग्रसेन बासुदेव भगवान् को आगे करके और शंख तूर्य बजातेहुए बसुदेव के स्थानको जातेभये १३ तहां अपने स्थानोंविषे आनंदिनीदेवकी और रोहिणी और यशोदा और आहुककी स्त्री विचरतीभई और तिसके अनंतर गरुड़ करके भगवान् अपने स्थानमें जातेभये१४और इन्द्रादिक हैं अनुचर जिन्हों के ऐसे हरि भगवान् यथोद्देश बिचरतेभये १५ पश्चात् यादवों में श्रेष्ठ यदुनंदन कृष्णचंद्र गृहद्वारपर आकर यथायोग्य यादवों का पूजन करताभया १६ और बलदेवजी और आहुक और गद और अक्रूर और प्रद्युम्न इन्होंकरके पूजितहुआ भगवान् मणि पर्वत को लेकर अपनेभवनमें जातेभये १७ और पश्चात् रुक्मिणी का पुत्र प्रद्युम्न इन्द्रको प्यारा महाद्रुम कल्पबृक्षको भगवान्के गृह में स्थित करताभया १८ पश्चात् वे संपूर्ण शूरबीर अमानुष देहबंधोंको देखतेभये और पारिजातके प्रभावकरके जन आनंदयुक्तहोते भये १९ पश्चात् प्रसन्नहुए यादव मुख्योंकरके स्तुतिकिये भगवान् बिश्वकर्मा का रचाहुआ श्रीमान् गृहमें प्रवेश होतेभये २० और पश्चात् बृष्णियोंकरके सहित अमेयात्मा अच्युत शृंगसहित मणि पर्वतको अंतःपुरमें स्थापन करतेभये २१ और पश्चात् शत्रुओंको जीतने वाला कृष्णचंद्र तिसद्रुमश्रेष्ठ कल्पवृक्षका पूजनकरके पश्चात् इष्टदेशमें स्थापन करताभया२२पश्चात् परबीरोंको मारने वाला केशव अपने ज्ञातियों को आज्ञादेकर पश्चात् जिनस्त्रियों कोनरकासुरने हरी थीं तिनका पूजन करते भये २३ और बस्त्र और आभूषण और दिब्यदासी धन संचय और चंद्रमाकी किरणों के से हार और महाप्रभा वाली मणि इन्हों करके तिनस्त्रियों का पहले बसुदेवने पूजनकियाथा २४ औरदेवकी और रोहिणी और रेवती और आहुक इन्होंनेभी पूजनकियाथा २५ और तिनस्त्रियोंके मध्यमें सौभाग्य करके सत्यभामा उत्तम होतीभई२६और भीष्मक कीपुत्री रुक्मिणी कुटुंबकी ईश्वरीहोतीभई और पश्चात् तिन्होंको

कृष्णचंद्र हर्म्य २७ और प्रासाद शिखर गृह और इन्होंको यथा योग्य देतेभये और बहुतसा पारिबर्ह देताभया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिसप्तपंचासत्तमोऽध्यायः १५७ ॥

एकसौअट्ठावनका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय पश्चात् बासुदेव भगवान गरुड़का पूजनकरके और इसको मानके मित्रकीतरह ग्रहणकर गृहके प्रतिआज्ञा देतेभये १ और पश्चात् सो अनुज्ञा किया हुआ गरुड़ जनार्दन भगवान्‌का सत्कार करके और प्रणाम करके पश्चात् यहपक्षी गरुड़ ऐसे ऊपरको उछलताभया कि जैसे यथेष्ट गगनेचर २ पश्चात् वह गरुड़मकरोंके स्थानरूप समुद्रको पक्ष बातसे संक्षुभित कर पश्चात् अत्यंत बेगसे पूर्वमहोदधिको जाताभया ३ गरुड़गये पश्चात् कृत्यकालमें समीपप्राप्तहूंगा ऐसेभगवान् कहके पश्चात् वृद्धआनक दुंदुभि पिताकोदेखतेभये ४ और पश्चात् राजाउग्रसेन और बलदेवजी और सात्यकि और काश्य सांदीपनी गुरुऔर ब्राह्मणों में मुख्य ५ और अन्य वृद्धवृष्णियों को और भोज और अंधकोंको और दाशार्हों को इन संपूर्णों को बीर्यसे लब्ध हुये मुख्यरत्नों करके पूजनकरतेभये ६ और ब्रह्माद्विट संपूर्णमारदिये और संपूर्ण अंधक और वृष्णिजीतदिये ७ और पश्चात् नहीं घायलहुआ मधुसूदन भगवान् रणभूमिसे निवृत्तहोगया ८ पश्चात् सुंदर पूजनकिया उज्वलकुंडलोंवाला चाक्रिकपुरुष द्वारकावती के चौराहे और गलियोंमें ऐसाघोष करताभया ९ पश्चात् बिनय युक्त जनार्दन पहले सांदीपनीको प्राप्तहोकर नमस्कारकरतेभये १० और पश्चात् यादवोंके राजा आहुकको पश्चात् बलदेवजी करके सहित कृष्णचंद्र तैसेही आनंदागत चेतसवाले औरपरिपूर्ण नेत्रोंवाले ऐसे पिताको प्रणामकरतेभये ११ पश्चात् भगवान् संपूर्णों को प्राप्तहोकर और यथायोग्य सत्कार करके पश्चात् संपूर्ण दाशार्हों के नाम को ग्रहणकरतेभये १२ पश्चात् उपेंद्रसे आदिलेकर पश्चात् सर्व

रत्नमयदिव्य आशनोंपर संपूर्ण बैठतेभये १३ तिसके अनंतर जो अक्षय्यधन किंकरोंको प्राप्तकराथा तिस कृष्णकी आज्ञासे पुरुष सभा में लातेभये १४ तिसके अनंतर जनार्दन यदूत्तम दुंदुभिशब्द करके तिनसंपूर्ण दाशार्होंको पूजनकरने के वास्ते ल्यातेभये १५ पश्चात् कृष्णचंद्रकी सेनासे वे संपूर्ण दाशार्हमणि मूंगाके तोरणोंवाली सभाको प्राप्तहोतेभये १६ पश्चात् हेभरतर्षभ वह सभा पुरुष सिंह यादवोंसे चारोंतरफसे व्याप्तहोगई १७ और संपूर्णअर्थ और गुणों से संपन्न होगई तिन्हों करके वहसभा ऐसी शोभाको प्राप्त होतीभई कि जैसे सिंहों करके गुफा१८और भोजवृष्णियों के आगे प्राप्तहुआ कृष्णचंद्र उग्रसेनको आगेकरके पश्चात्बलदेवजी करके सहित सुवर्ण के आसनपर स्थितहोताभया १९ पश्चात् पुरुषोत्तम भगवान् तहां स्थितहोकर और यथाप्रीति यथावत यदुश्रेष्ठोंको संबोधनकर के यह बचन कहतेभये २० ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंश पर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां सभाप्रवेशनं नामशतोपरि अष्टपंचाशत्तमोऽध्यायः १५८ ॥

एकसौउनसठ का अध्याय ॥

हे राजन् जनमेजय तुम्हारे पुण्यकीर्तिवालों के तपोबल समाधियोंकरके और अपध्यानसे पृथ्वीका पुत्र नरकासुर मैंनेमारदिया १ और गुप्तऔर उत्तमकन्यांतःपुरभी बंधनसे छुटादिया और मणिपर्वत और शिखर ये भी यहां प्राप्तकरदिये २ और यहसुंदर धनका समूहमेरे किंकरोंने प्राप्तकरदिया सो इसवास्ते इसद्रव्य के आप मालिकहैं ३ हे राजन् ऐसे कृष्णचंद्र कहके चुपकेहोतभये पश्चात् भोज और वृष्णि और अंधक ऐसे भगवान् के बचनको सुनके और अति प्रसन्न होके जनार्दनका पूजनकरतेहुये ४ वे राजा अंजलिपुट को बांधके इसकृष्णको बचनकहनेलगे ५ कि हे महाबाहो देवकिनंदन में तेरेमें यह कुछ बिचित्र नहीं जोकि देवताओंको भी दुरासद दुष्कर कर्मकोकरके पश्चात् आपइकट्ठे किये रत्नभोगों करके अपने

जनोंको लड़ातेहो ६ ।७ तिसके अनंतर संपूर्ण दाशार्होंकी स्त्री और राजाउग्रसेनकी स्त्री प्रसन्नहुई भगवान्‌को देखनेको आतीभई ८ और देवकी और सुभायना रोहिणी भी बैठेहुये महाभुज कृष्णचंद्र और बलदेवजीको देखतीभई ९ पश्चात् राम केशव क्रमकोत्यागके पहले रोहिणीको प्रणाम करके पश्चात् देवी देवकीको प्रणाम करतेभये १० सो अंबिका देवकी तिन कमल नेत्रोंवाले पुत्रोंकरके ऐसे शोभाको प्राप्तहोतीभई जैसे मित्र और वरुणकरके देवमाता ११ अदिति पश्चात् जिसकाम रूपिणीको मनुष्यएका और अनंशा कहतेहैं सो यशोदाकी पुत्री तिननरावोंके प्रति और जिस कन्या करके तिसी क्षण और मुहूर्त में सुरेश्वर भगवान् जन्मतेभये १२ और जिसकेवास्ते पुरुषोत्तम भगवान् गणसहित कंसको मारतेभये सो कन्या पूजितहुई तहां वृष्णिके भवन में बढ़तीभई और बासुदेव की आज्ञाकरके पुत्रकीतरह पाल्यमान होतीभई १३ तिस उत्पन्नहुई को पृथ्वीपर मनुष्यएका और अनंशाकहतेहैं १४ और संपूर्णयादव सुंदर मनवालेहुए तिसदुराधर्ष योगकन्याका केशवकीरक्षाकेवास्ते पूजन करतेभये पश्चात् तिस योगकन्याने देवताओंकीतरह दिव्य पुरुष और कृष्णचंद्र रक्षाकिया १५ पश्चात् माधव भगवान् तिस वरुणको प्रियाकी तरह प्राप्तहोकर तिसको दहनेहाथ से ग्रहण करते भये १६ और तैसेही अत्यंत बलवान् बलदेवजी भी तिस भाविनीको खूबमिलकर और मस्तकविषे सूंघकर पश्चात् सव्य हाथसे ग्रहण करतेभये १७ पश्चात् सुवर्णकेसा कमलको हाथमें धारणकिये तिस रामकृष्णकी भगिनीको मध्यमें वे स्त्री ऐसे देखतीभई कि जैसे पद्मालय लक्ष्मीको १८ पश्चत् अक्षतोंकी महावृष्टिसे और अनेकप्रकारके पुष्प और लाजाओंकरके वेस्त्री तिन्होंपर वर्षाकरके अपने २ स्थानोंको जातीभई १९ पश्चात् वे संपूर्णयादवजनार्दन भगवान्‌ को सराहतेहुए और तिस अद्भुतकर्मको सराहतेहुए प्रसन्नहोकर कृष्णचंद्रके समीप प्राप्तहोगये २० पश्चात् पुरवासियोंको प्रीति बढ़ाताहुआ और पूजाहुआ महाबाहु कृष्णचंद्र

तिन्होंकरके ऐसी शोभाको प्राप्तहोतेभये कि जैसे देवताओं करके इंद्र २१ पश्चात् देवता और इंद्रके नियोगसे संपूर्ण यादवोंके बैठे हुए नारदमुनि सभाको प्राप्तहोता भया २२ और सो नारद शूरबीर यदुपुंगवोंकरके पूजाहुआ हरि भगवान् के हाथको छुहके परमआसनपर बैठताभया २३ पश्चात् सुखपूर्वक बैठाहुआ नारदमुनिजी तिन बैठेहुए वृष्णियोंको बचन कहनेलगे कि हे पुरुषश्रेष्ठाहो मेरे को इंद्रकेबचनसे प्राप्तहुआ जानो २४ हेराजशार्दूलाहो इसकृष्णचंद्रके पराक्रम मेरे से सुनो बाल्यावस्था से लेकर केशव जौन से कर्मोंको करतेभये तिन संपूर्णोंको सुनो २५ हे नृपाहो उग्रसेन का पुत्र दुर्बुद्धि कंस संपूर्ण यादवों को मथके और उग्रसेन पिताकोबांध के राज्यको ग्रहणकरताभया २६ और यह कुलपांसनकंसजरासंध सुसरके आश्रयहोकर पश्चात् भोज वृष्णि अंधक संपूर्णयादवोंका अपमान करताभया २७ और जातिके कार्यकरनेकी इच्छा करता हुआ वसुदेव प्रतापवान् उग्रसेनकी रक्षाकेवास्ते अपने पुत्रकीरक्षा करताभया २८ और धर्मात्मा मधुसूदन भगवान् गोपोंकरकेसहित मथुराके उपबनमें स्थितहुए अत्यंत अद्भुत कर्म करतेभये २९ और एक अन्य भी महाअद्भुत कर्मसुनियेहै कि सूरसेनोंके प्रत्यक्षशकट के अंतर ३० चेष्टाकरतेहुए कृष्णचंद्रने रौद्र और शकुनी वेषधारने वाली और घोरा और बड़े शरीरवाली और महाबला ऐसी पूतना नाम राक्षसी जनार्दनको बिषलिपटाहुआ स्तनदेतीहुई भगवान् ने मारी तिस मारीहुई राक्षसीको संपूर्ण बनगोचर देखतेभये ३१।३२ और भगवान् को संपूर्ण यह कहतेभये कि इस कृष्णचंद्र का फिर जन्महुआ है और अत्यंत यह अद्भुत होताभया ३३ कि बालकही पुरुषोत्तमने क्रीड़ा करतेहुएने पैरके अंगूठेसे गाड़ेको बगातेहुए और जब रस्सीसे ऊखलमें बांधदिये तब बालकोंकीतरह क्रीड़ा करतेहुए दामोदर भगवान् ३४ बिख्यात अर्जुन वृक्षों को भंजन करतेभये ३५ पश्चात् दुराधर्ष और महाबल ऐसा महानाग कालिय क्रीड़ा करते हुए भगवान् ने यमुना के ह्रदमें जीतलिया ३६ और नागों

करके पूजाहुआ भगवान् दिव्य शरीरको धार और शीतबात से पीड़ित हुई गौवोंको ३७ भगवान् देखके सातदिन पर्यंतगोबर्द्धन पर्वतको धारण करतेभये ३८ और तैसेही उक्ष दुष्ट और अतिबल और बड़े शरीरवाला और नरों के अंत करनेवाला ऐसे अरिष्टासुरको भगवान् मारते भये ३९ और गौवोंकी रक्षाकेवास्ते बासुदेव भगवान् ने महाकाय और महाबल ऐसा धेनुकदानवमारा ४० और शत्रुओं को मारनेवाले भगवान् संपूर्ण सेनाके आगे प्राप्तहुये सुनामाको वृकों करके दौड़ाते भये ४१ और गोपवेष धारण किये वनमें विचरते हुये बलदेवजीने अन्यभी दैत्यमारे ४२ औरतैसेही व्रजमें प्राप्तहुआ भगवान् कंसके सहायक केशीको मारतेभये ४३ और हे राजन् कंसका मंत्री प्रलंबदानव एकही मुकासे बुद्धिमान् बलदेवजी ने मारदिया ४४ और हे राजाहो गार्ग्य ऋषिकेसंस्कार किये वसुदेवके महावीर्य पुत्र देवताओंके पुत्रोंकेसमानहैं ४५ और जन्मसेआदिलेकरपरमर्षि गार्ग्यने इन्होंका यथावत् संस्कार प्रतिपादनकराहै४६और जबयेनरश्रेष्ठयौवनमेंआये तब सिंहकेबच्चोंकी तरह औरहस्तियोंकेबच्चोंकीतरहस्थितहुये ४७ पश्चात् जवानहुये भगवान् गोपियोंके मनको हरतेहुये और देवपुत्रोंकेसी कांतिवाले औरव्रजमेंश्रेष्ठऐसेभगवान् व्रजमें स्थितहोतेभये४८औरइनदोनोंको नंदगोपके गोपाल जयमें और युद्धमें और अनेक प्रकारको क्रीड़ाओं में देखनेकोभी नहीं समर्थ होते भये ४९ और व्यूढोरस्क और महा बाहु और शालस्कंध ऐसेबलदेव कृष्णको मंत्रियों सहित कंससुन के अत्यंत व्यथित होता भया ५० और जिससमयमें कंस बलदेव कृष्णको ग्रहण करनेको नहीं समर्थ होतेभये तबक्रोधसे बांधवों सहित वसुदेवको ग्रहण करता भया ५१ और वसुदेव उग्रसेन करके सहित अत्यंत कष्टसे बहुतकालतक बंधन स्थानमें बासकरते भये ५२ पश्चात् कंसपिता उग्रसेनको बांधके और जरासंध और आव्हति भीष्मकको आश्रयहोके यादवोंको हनन करता भया ५३ और एकससयमें मथुरापुरीमें महादेवजीका उद्देशलेकर कंसपरम

उत्साह करता भया ५४ सो हेराजन् तहां अनेक देशोंसे मल्लआये और नृत्यकर्म में कुशल अनेक नृत्य करने वाले और गानेवाले आये ५५ तिसके अनंतर महातेजा कंस कुशल शिल्पियों करके महाधन रंगबाट कराता भया ५६ तिसरंगबाटमें पौर जानपदजनों करके व्याप्त हजारहोंमंच ऐसे भान होतेभये जैसे आकाशमें तारागण ५७ तिसके पश्चात् भोजराज कंस श्रीकरके सेवित ऋद्धिवाला रंगवाटको ऐसे आरूढ होताभया कि जैसे सुकृतीजन विमानको ५८ और बीर्यवान् राजाकंस रंगबाट में मदोन्मत्त कुवलयापीड़ को स्थापन करता भया ५९ और हेराजन् महातेजाकंस जब पुरुष व्याघ्र और चंद्रमा सूर्य केसे तेजवाले ऐसे बलदेव कृष्ण को आये हुये सुनके ६० रक्षाकेप्रति यत्न करता भया और बलदेवकृष्ण कोचिंतवन करता हुआ सुखसे रात्रिको नहीं होता भया ६१ और बलदेवजी और कृष्णचंद्र ये उत्तम समाजको सुनकर और दोनों शूरवीर तिस समाजको ऐसे प्रविष्टहोतेभये कि जैसे गौवोंके समूह को दोशार्दूल ६२ पश्चात् ये पुरुषर्षभ अरिन्दम रक्षियोंने प्रवेश में रोकेहुये सवारों सहित कुवलया पीड़को मारके तिस रंगमें प्रवेश होते भये ६३ और बलदेवजीने और कृष्णचंद्र ने चाणूर और अंध्र को पीसते भये ६४ और कृष्णचंद्र ने दुष्टात्मा उग्रसेनका पुत्रकंस अनुजों करके सहित मारदिया सोकर्म देवताओंसेभी दुष्करहै ६५ हेराजन् तिसकर्मको केशवसे अन्य करनेको कौन समर्थ है क्योंकि जिससे प्रल्हाद और बलि और शंबर इन्होंको भी अधिकार नहीं हुआ ६६ और नारदमुनि कहते हैं कि मुरु दैत्यको और पंचजन को आक्रमण करके हे राजाहो तुम्हारे वास्ते यह द्रव्य केशव ने प्राप्तकिया है ६७ और पर्वतके शृङ्ग केसीकांतिवाला निसुंद दैत्यगणों सहित जिसने माराहै और हे राजाहो पृथ्वीका पुत्र भौमासुर माराहै और अदितिके सुंदर कुंडल ला दिये ६८ और स्वर्गमें देवताओंकेबिषे केशवको महतयश प्राप्तहुआहै ६९ और तुमसंपूर्ण शोकभय और बाधासे रहित हुये और कृष्णको भुजाओं के बलके

आश्रयहुये अनेक प्रकारके यज्ञोंकरके भगवान् का यजनकरो हे राजाहो देवताओंके ऐसे ऐसेबड़े कार्य महात्मा कृष्णचंद्र नेकरे हैं ७० और हे यदुश्रेष्ठाहो जो प्रियहै तिसको मैं तुम्हारे आगेकहूंहूं तुम्हारा कल्याणहो जो तुम्हारेको इष्टहै सोही मैं करूंगा ७१ और यह कृष्णचंद्र संपूर्णजगह स्थितहै ऐसे बचनकहताहुआ इन्द्र वचन कहताभया ७२ हे राजाहो धी और श्री और सन्नति ये सम्पूर्ण महात्मा कृष्णचंद्रमें स्थितहैं ७३ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां नारदबाक्यंनामशतोपरिनव पंचाशत्तमोऽध्यायः १५९ ॥

एकसौसाठिका अध्याय ॥

हे राजन् नारदमुनि कहतेहैं कि मुरुके पाश भी भगवान्नेकाट दिये और निसुंद और नरकासुरभी मारदिये और प्राग्ज्योतिष पुर के प्रतिक्षेमवाला मार्ग करदिया १ और हे राजाहो कृष्णचंद्र ने रणभूमिमें बैर करनेवाले राजाओंको धनुषके शब्द करके और पांचजन्य के शब्द करके त्रास करदी २ और दाक्षिणात्य सेनाओं करके रक्षित महाबल पराक्रमवाला रुक्मीको युद्धमेंजीतके ३ और तात्काल रुक्मिणीको हरतेभये तिसके अनंतर मेघकेसा शब्दवाला और सूर्यकेसा प्रकाशवाला ऐसा रथ करके ४ रुक्मिणी को प्राप्त होकर पश्चात् शंख चक्र गदा खड्ग इन शस्त्रोंको भगवान् धारण करके पश्चात् आह्हति और क्राथ और शिशुपाल ५ इन राजाओं को जीततेभये और दंतवक्र और सेनाकरके सहित शतधन्वा येभी जीतलिया और इन्द्रद्युम्न और यवन और कसेरुमान् ये सम्पूर्ण मारदिये ६ और दृढ़धनुष करके श्रीमान् सौभपति शाल्व भी मार-दिया और हजारहां पर्वतोंको बखेर के ७ पुरुषोत्तम भगवान् द्युम त्सेनको पीड़ा करतेभये और पुरुषव्याघ्र कृष्णचंद्र महेंद्रकी शिखर में और इरावती पुरीमें ८ अग्नि सूर्यके समान रावणके किंकरोंको मारतेभये और इरावतीमें अग्नि सूर्यकेसम युद्धमें महाभोजमारे ९

और शार्ङ्ग धन्वा भगवान्ने गोपति और तालके तुमारे और चक्षुके विक्षेप मात्रसेही अनुगोंसहित डिंभ और हंस इन दोनों दानवोंका बधकिया १० और हे राजाहो महात्मा केशव ने काशीपुरी दग्ध-करी और राष्ट्र और बांधवों सहित काशी का राजा भी मारदिया और अद्भुत कर्मवाले कृष्णचंद्र उत्तम बाणोंसे युद्धमें यमको जीतके इन्द्रसेनीको ल्यातेभये ११ और उत्तम शरोंसे युद्धमें धर्मराजकोजीतके पश्चात् अद्भुत कर्मवाले कृष्णचंद्र इंद्रसेनिकोलाये १२ और महाबल कृष्णचंद्र लोहित कूटको प्राप्तहोकर जलजीवों सहित बरुणदेवता कोजीततेभये १३ और महेंद्रभवनमें प्राप्तहुआ कृष्णचंद्र इंद्रकाभय नहीं करके महात्मा देवताओं करके रक्षित कल्पवृक्ष हरतेभये १४ और पांडव और पौंड्र कलिंग मात्स्य इन सम्पूर्ण राजाओंकोमारते भये और बंगराजकोभी मारतेभये १५ और हे राजाहो यह महात्मा कृष्णचंद्र एकसौ एक राजाओंको रणभूमिमें मारके पश्चात् प्यारे दर्शनोंवाली पटरानी गांधारी को लातेभये १६ और कुंतीके देखते हुये क्रीड़ा करतेहुये भरतश्रेष्ठ अर्जुनका जितवातेभये १७ और हे राजाहो पुरुषोत्तम भगवान् द्रोणाचार्य और अश्वत्थामा और कृपा चार्य और कर्ण और भीष्म और दुर्योधन इन सम्पूर्णोंको रणभूमि में जीततेभये १८ और हे नृपाहो नकुलके प्यारकी इच्छाकरते हुये भगवान् शंख चक्र गदा और खड्ग इन्होंको धारणकरके और हठ से सौबीरराजकी कन्याको हरतेभये १९ और पुरुषोत्तम भगवान् वेणुदारिकेवास्ते अश्वरथ हस्ती इन्होंसहित सम्पूर्ण पृथ्वीको यत्न से जीततेभये २० और हे राजाहो यह हरि पूर्वदेहमें बलवीर्य और ओज इन्हों को प्राप्तहोकर बलिसे त्रिभुवनको हरतेभये २१ और हे नृपाहो प्राग्ज्योतिषपुरमें बज्र और अशनि और गदा और खड्ग इन शस्त्रोंसे त्रास करातेहुये दानवों करके जिस कृष्णचंद्रके समीप भी मृत्युनहीं प्राप्तहुआ २२ और गणों करके सहित और महाबल और महाबीर्यवाला अत्यंत दर्पवाला ऐसा बलिका पुत्र बाणासुर भी कृष्णचंद्रने तिरस्कृत करदिया २३ और महाबाहु और महाबल

ऐसे जनार्दन कंसके अमात्य जनार्दनको और पैढिक असिलोमाको मारतेभये २४ और बड़े यशवाले कृष्णचंद्र जृम्भ और ऐरावण और विरूप इन दैत्योंको मारतेभये २५ और तैसेही यमुनाजी के जलमें बड़े तेजवाले नागपति कालीयको कमल केसे नेत्रोंवाले भगवान् जीतके सागरमें भेजतेभये २६ और हे नृपाहो पुरुषों में व्याघ्ररूप यह हरि धर्मराजकोजीतके और सांदीपनिगुरुके मरे पुत्रको जिवाते भये और यहीमहाबाहु कृष्णचंद्र जो दुरात्मा देवता और ब्राह्मणों के साथ वैरकरतेहैं तिन्होंको शिक्षाकरनेवाला है २८ और इंद्रका प्रियकेवास्ते पृथ्वीकेपुत्र भौमासुरको मारके और मणिजटितकुंडलों को हरके देवमाता अदितिको देतेभये २९ और सम्पूर्ण लोकोंका रचनेवाला समर्थ यह कृष्णचंद्र ऐसे देवताओंको अभयकरताहै और दैत्योंको भयकरताहै ३० और हे नृपाहो यहकृष्णचंद्र बहुतसी दक्षिणाओंवाली यज्ञ से यजन करके और मनुष्योंमें धर्मका स्थापनकरके और देवताओंका प्रयोजन करके पश्चात् फिर बैकुंठ धाम में जायंगे ३१ और महायशवालाकृष्णचंद्र भोगोंवाली रमणीकद्वारका को अपनेवशमें करके पश्चात् समुद्रको प्राप्तकरेंगे ३२ और पश्चात् रत्नोंसेव्याप्तऔरसैकड़ोंचैत्यऔरयूपोंसेव्याप्तऐसोवनोंसहितद्वारका को वरुणके स्थान में प्राप्तकरैंगे ३३ पश्चात् भगवान्‌की रचीहुई तिस सूर्यकेसी कांतिवाली द्वारकाको समुद्रडबोदेगा ३४ पश्चात् सुर और असुर और मनुष्य इनमें ऐसाकोई नतोहुआनहोगा किजो मधुसूदनसे अन्य इसपुरीमेंवसे ३५ हे राजाहो ऐसेदशार्होंके उत्तम विधि विधान करके पश्चात् कृष्णचंद्र सोम और सूर्यहोगा ३६ और यह कृष्णचंद्र अप्रमेयहै और अचिंत्यहै और यथेच्छ विचरने वालाहैऔरयहसंपूर्णकालमें भूतोंकरकेऐसीक्रीड़न करताहै कि जैसे खेलनोंकरके बालक ३७ और हे नृपाहो इस मधुसूदनकाप्रमाणकरने को कोईसमर्थनहीं क्योंकिइसबिश्वरूपसे अन्यकुछभी नहीं ३८ और यह वार्ता मैंने सैकड़ा और हजारहां वार सुनी है कि इसके कर्मों का अंत किसीनेभी नहींदेखा ३९ हे नृपाहो बलदेवजी करकेसहित

यह कमल के से नेत्रोंवाला भगवान् शिशुभावमेंप्राप्तहुआ इनकर्मों को करताभया ४० और महायोगी और महाबुद्धि और संपूर्णोंको प्रत्यक्षदेखनेवाले ऐसे व्यासजी पहले तपोवीर्य चक्षु करके यह पूर्व कथाकहतेभये ४१ बैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् महेन्द्र के वचनसे नारदमुनि ऐसे गोबिंदकीस्तुतिकरके पश्चात् संपूर्णयादवों करके पूजाहुआ नारदस्वर्ग में जाताभया ४२ पश्चात् पुंडरीकाक्ष मधुसूदन भगवान् बिधि पूर्वक यथायोग्य तिसधनको अंधक वृष्णि योंको देतेभये ४३ पश्चात् संपूर्णयादव तिसधनको प्राप्तहोके और पश्चात् महात्मायादव बहुत दक्षिणाओं वाले यज्ञोंसे यजन करके द्वारकापुरी में बसतेभये ४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायां नारदवाक्यंनामशततीष रिषष्टितमोऽध्यायः १६० ॥

एकसौ इकसठका अध्याय ॥

ऐसेसुनजनमेजय कहनेलगेकिहेमुनेहजारहांस्त्रियोंमें जोभगवान् की आठपटरानी कही तिन्होंकी संतान कहनेको योग्यहो १ऐसे सुन बैशंपायनजी कहनेलगे कि हे राजन् भगवान्की आठ पटरानी पुत्रवालीहोतीभईं सो संपूर्ण शूरवीरोंकोजनतीभईं तिन्होंकोसुनो २ हे जनमेजय रुक्मिणी १ और सत्यभामा २ और नाग्नजिती ३ और सुदत्ता शैब्या ४ और लक्ष्मणा ५ और चारुहासिनी ६।३ और मित्रविंदा ७ और कालिंदी और जांबवती और पौरवी और सुभीमा माद्री ये भगवान्की पटरानी होतीभईं४हेराजन् तिन्हों में रुक्मिणी के पुत्रोंको सुन प्रथमतो संवरका नाशकरनेवाला प्रद्यु-म्नहुआ और दूसरा महारथ ५ चारुदेष्णहुआ और पश्चात् चारु भद्र और चारुगर्भ और सुदेष्ण और द्रुम और सुषेण और चारु देष्ण और चारुविंद ६ और छोटा चारु येतो रुक्मिणी के पुत्रहुये और चारुमती कन्याहुई पश्चात् सत्यभामाकेभानु और भीमरथ७ और रोहित और दीप्तमान् और ताम्रजाक्ष और जलांतकये तोपुत्र

हुये और भानु और भीमनिका और ताम्रपर्णी और जलंधमा ये चारकन्या होतीभई ८ और जांववती के युद्धको शोभन करनेवाला सांवहुआ है९ और पश्चात् मित्रवान् मित्रविंद मित्रबाहु सुनीथ ये पुत्रहोतेभये और मित्रवती कन्याहोतीभई और नाग्नजिती के १० भद्रकार और भद्रविंद येतो पुत्रहुये और भद्रवती कन्याहुई और सुदत्ता सैव्या में संग्रामजित हुआ ११ और पश्चात् सत्यजित और सेनजित और सपत्नजित ये पुत्रहुये और सुभीमा माद्री के वृकाश्व और वृकनिवृति १२ और वृकदीप्तियेहुये और लक्ष्मणाके गात्रवान् और गात्रगुप्त और गात्रविंद ये पुत्रजन्मे और गात्रवती और जया कन्या जन्मी १३ और कालिंदी के श्रुतमें मानाहुआ अश्रुत नाम पुत्रजन्मा हे राजन् तिस अश्रुत को मधुसूदन भगवान् श्रुत सेनाको देतेभये १४ और तिसको देके पश्चात् मुदितहुये केशव तिसभार्याके प्रतिबचन कहतेभये कि दोनोंका पुत्रहै सो सैकड़ोंबर्ष जीवो १५ और शैब्याके अंगद और कुमुद और श्वेत ये पुत्रहुये १६ और श्वेतापुत्रीहुई और अवगाह सुमित्र और शुचि और चित्ररथ ये सुदेवा के पुत्रहोते भये १७ और चित्रावती कन्याहुई और बन और स्तंबऔर स्तंववनये पुत्रहुये १८ और स्तंबवती कन्याहुई और उपसन्नऔर शंकु और बज्रांशु और क्षिप्र ये कौशिकी बिषेहुये १९ औरश्रुत सोमा यौधिष्ठिरी विषेयुधिष्ठिरहुआ और चित्रयोधी कापा लीमें और गरुड़हुआ २० हे राजन् इन्हों से आदिलेकर हजारहां पुत्रजान ऐसे वासुदेवके एकलक्षपुत्र होतेभये २१ तिन्होंमें अस्सी हजारतो शूरवीर और रणकेजाननेवाले होतेभये हे राजन् यह जनार्द्दनका प्रसवतेरेसे कहाहै २२ और हे राजसत्तम वैदर्भीसे प्रद्युम्नके अनिरुद्ध पुत्रजन्मा सोसिंहरूप युद्धमें किसीसे नहीं रुकता भया २३ और रेवतीसे बलदेवजीके निशठ और उल्मुक नाम पुत्र जन्मा और येदोनों भ्राता देवताओं केसी कांतिवाले होते भये २४ और सुतनु और सुतारा यह शौरिका परिग्रह होता भया और पौंड्रक और कपिल वसुदेव के पुत्रहुये २५ सो कपिल तो तारासे

पैदा होता भया और सुतनुसे पौंड्र तिन दोनों में पौंड्र तो राजा हुआ और कपिल बनको गया २६ और चौथी शूद्री में बसुदेवसे महाबलवीर वाला जरानाम होताभया सो यह निषादों में समर्थ हुआ है और संपूर्ण धनुर्द्धारियों में भी श्रेष्ठकहा है २७ और काशी विषे सांबसे सुपार्श्व पुत्रहुआ और सानुसे अनिरुद्ध के बज्र नाम पुत्रहुआ २८ और बज्रसे प्रतिरथहुआ और प्रतिरथसे सुचारु और अनिमित्तछोटा वृष्णिनंदनसे शिनि उत्पन्न हुआ २९ और शिनिके सत्यवाक् और सत्यक हुआ और सत्यककापुत्र युयुधानहुआ ३० और युयुधान के प्रसंग हुआ और तिसके मणि हुआ और मणिके युगंधरहुआ ऐसेबंश होताभया ३१॥

इतिश्रीमहाभारते हरिबंशपर्वांतर्गत बिष्णुपर्वभाषायां वंशानुकीर्तनेशतोपरि एकषष्ठितमोऽध्यायः १६१॥

एकसौबासठका अध्याय॥

ऐसेसुन जनमेजय पूछनेलगा कि हे भगवन् जो तुमने प्रद्युम्न शम्बरका मारनेवाला कैसेहुआ और कैसे उत्पन्न हुआ सोकहो १ वैशंपायनजी कहते हैं कि हे राजन् जनमेजय लक्ष्मी रुक्मिणी के बिषे बासुदेव भगवान्का पुत्र काम दर्शन और शंबरका अंतकरने वाला ऐसाप्रद्युम्न उत्पन्न होताभया २ जिस प्रद्युम्नको पुराणों में सनत्कुमार कहतेहैं तिस प्रद्युम्नको सातरात्रिपीछे काल शंबर दैत्य सूतिका गृहसे हरताभया ३ और देवमाया नुबर्ती कृष्णचंद्र को जानतेहुयेभी तिस युद्धदुर्मद दानव को नहींग्रहण करतेभये ४ पश्चात् यह शंबर तिसबालको लेकर अपने नगरमेंगया और तिस के रूप और गुणवाली और संतानरहित और शुभ दर्शना ऐसी मायावती नाम भार्याथीतिसकोपुत्रकीतरह प्रद्युम्नको देताभया ५ पश्चात् मायावती तिसप्रद्युम्नको देखकर बहुत प्रसन्नहुई और बहुत हर्षसे युक्तहुई तिस बालको बारंबार देखतीभई ६ पश्चात् देखतीहुई तिसमायावती के स्मृति उत्पन्नहुई कि अहो यहतोमेरा

कांतहोगा ७ ऐसे स्मरण करके पश्चात् चिंतवन करतीभई अहो यहतो वह मेराकांतस्वामीहै ८।९ कि जिसकेवास्ते रातदिन चिंता शोकरूप समुद्रमें डूबी हुई सुखकोकहीं नहीं प्राप्तहोती१० और यह पहले खेदितदेव२महादेवजीनेअनंगऔर अदृष्ट करदियाथा११सोमैं जानतीहुई मातृभावकरके कैसे इसको स्तनदूंगी और इसभर्त्ताकीमैं भार्या होके कैसे पुत्र कहूंगी१२ ऐसे मनमें चिन्तवनकरसोप्रद्युम्न धाहको सोंपदिया पश्चात् रसायनोंके प्रयोगों से यह शीघ्रही बढ़-ताभया १३ पश्चात् यह रुक्मिणीका पुत्र प्रद्युम्न धाहके मुखसे मायावतीको माता सुनताहुआ बिना ज्ञान से इस मायावतीकोही माता मानताभया १४ पश्चात् कमलकेसे नेत्रोंवाले प्रद्युम्न को यह बढ़ातीभई और कामदेव से मोहितहुई संपूर्णदानवी माया भी इसकोदेती भई १५ पश्चात् जब यह कामदर्शन प्रद्युम्नयौवनमें स्थितहुआ तब स्त्रियोंके चिकीर्षितको जाननेवाला और संपूर्णअस्त्र विधिको जाननेवाला होताभया १६ पश्चात् मायावती कामिनी तिसकांतकी वांछाकरती हुई चेष्टितों से देखती हुई और मंद मंद हंसतीहुई लोभ करातीभई १७ पश्चात् सुन्दर हासवालीतिसदेवी को युक्तहोतीहुईको देखकर प्रद्युम्न बचन कहनेलगे हे मायावति मातृभावको त्यागके ऐसे अन्यथा कैसे वर्तती है १८ अहो तू दुष्ट स्वभाववाली है स्त्री भावमें तेरा चपलमनहै हे सौम्ये जौनसी तू पुत्रभावको त्यागके और मेरे विषेलोभ से प्रवृत्तहोती है १९ इस वास्ते मैं तेरापुत्र नहीं हूं यह कौन विपरीतसील है हे देवि मैं तत्त्व के सुनने की इच्छाकरता हूं इसवास्ते यह कौनविधिहै तू कह २० अहो निश्चयकरके स्त्रियोंका स्वभाव विजलीकी तरह चंचल है सो यहक्या तेरा चिकीर्षितहै इसकोकह२१ हे राजन् ऐसे कहीहुई वह काम पीड़ित भीरु केशवके पुत्रअपने प्रियको एकांतम बचन कहती भई२२ हे कांत नहीं तो तू मेरापुत्रहै औरनहीं शम्बर तेरापिताहै २३ तूतो रूप वान् जातिसे वृष्णिकापुत्रहै और वृष्णियोंमेंभी रुक्मिणीके आनंदबढ़ानेवाला वासुदेवका पुत्रहै२४ सोतू जन्माहुआही बालक

सात वेंदिन ऊंची सय्यापर सूतेहुए तेरेको २५सूतिका स्थानसे यह
मेरा भर्त्ता शम्बरबल वीर्य से तेरे पिता बासुदेवके घरको घर्षकरके
हरताभया २६ पश्चात् तेरी माता करुणाकी तरह शोचकरती भई
सो हे शूरबीर तेरी माता ऐसे दुखपारही है कि जैसे बछड़ा रहित
गौ २७ और तैसेही गरुड़ध्वज तेरे पिताको भी अत्यन्त चिन्ता है
क्योंकि बालकही प्राप्तकरे को तेरेको यहांवे नहीं जानते हैं २८
और हे कांत तू वृष्णिका कुमार है और शम्बरका पुत्र नहींहै २६
हे शूर बोर दानव इस प्रकारके पुत्रोंको नहीं जनमातेहै इस वास्ते
मैं तेरी वांछाकरतीहूं ३० और मोहसे तू नहीं जनाहै और हे सौम्य
तेरे रूपको देखतीहुई हृदय में क्लेश पाती हूं और हे कांत जो मेरे
निश्चित हे सो मेरे हृदय में वर्तता है ३१ और हे बाष्णेय तिस
निश्चितको प्रति संधानकरनेको योग्यहै यह संपूर्णवृत्तांत तेरे आगे
कहाहै और जो तेरे में मेरा सद्भाव है सोभी कहाहै ३२ और जैसे तू
मेरा पुत्र नहीं है और शम्बरका पुत्र नहींहै सोभी कहाहै हे राजन्
जनमेजय ऐसेमायावतीकेसंपूर्ण भाषितको भगवान्का पुत्र प्रद्युम्न
सुनके ३३ पश्चात् क्रुद्धहुआ शंबरको युद्धकेवास्ते बुलाता भया
और संपूर्णमायाओंका जाननेवाला अपने नामको सुनाताभया ३४
अहोबड़े आश्चर्यकी बातहै हेदानव तू दुष्टात्माकेशव के पुत्रमेरेको
हरके तू निर्भय हुआ है इसवास्ते अब मैं तेरे को भयकरूंगा ३५
कैसे क्रोधको प्राप्तहो और कैसेमैं तेरेको मारूं और कैसेबधकोप्राप्त
होगा पहले मैं क्याकरूं जिससे यह मंदबुद्धि कुपितहोवे ३६ ऐसे
बिचारके फिरकहने लगा कि इसके सिंहके तु भूषित बिचित्र ध्वजा
है सो तोरणको प्राप्तहोकर और भी मेरुशृंग कीतरह ऊंचाहै ३७
सो इसको मथके तीक्ष्ण भालासे गिराऊंगा पश्चात् ध्वजको टूटा
हुआ जानके यह शंबर निकसके शीघ्रही आवेगा ३८ पश्चात् युद्ध
से इसकोमारके द्वारकामें चलाजाऊंगा हेराजन् ऐसेकहके प्रद्युम्न
शर सहित धनुषको सज्जी करता भया ३६ पश्चात् यहमहा भुज
प्रद्युम्न शंबरके ध्वजरत्नको छेदन करताभया ४० पश्चात्महात्मा

प्रद्युम्न करके ध्वजच्छेद जानके और क्रुद्धहुआ काल शंबर पुत्रों को आज्ञा करताभया और येमहावीर बहुतबेगसे प्रद्युम्नकोमारने की इच्छा करते भये ४१ और शंबर कहनेलगा कि रेइसको प्यार करनेवालेको मैंदेखानहीं चाहताहूं ऐसे शंबरके बचन सुनके तिसके पुत्रकवच धारण करके प्रद्युम्नके मारनेकेवास्ते निकसतेभये ४२ और चित्रसेन और अतिसेन और बिष्वकसेन और गद ४३ और श्रुतसेन और सुखेण और सोमसेन और मन और सेनानी और सैन्यहंता औरसेनाह और सैनिक ४४ और सेनस्कंध और सेन और सेनक और जनक और सकाल और बिकल और शांत और शांतांतकर४५ औरकुंभकेतु औरसुदंष्ट्र और केशरियेसंपूर्ण औरइन्हों सेआदि लेकर अन्यये चक्र और तोमर और शूल और पट्टिश और परश्वध इनशस्त्रोंको ४६ लेकर और प्रसन्नहुये और परम क्रोधसे व्याप्तहुये ऐसेयोधा शत्रुको बुलातेहुये निकसे औरनिकराकेसंग्राम के मस्तकमें स्थितहुये४७ और महाबाहुप्रद्युम्न धनुषकोलेके और रथमें बैठ पश्चात् शीघ्रही संग्रामके सन्मुख गये ४८ तिसके अनंतर शंबरके पुत्रोंकाऔर केशव के पुत्रका लोमहर्षण तुमुल युद्धहोता भया४९ पश्चात्देवता और गंधर्व और महोरग चारण ये संपूर्ण इन्द्रको आगे करके बिमानों में बैठके आये ५० और नारद और तुंबरु और हाहाऔर हूहू येदेवताओंके गंधर्वभी अप्सराओं सहित आये ५१ औरदेवराजका द्वारपाल गंधर्व बज्री देवराजके अर्थ ऐसे कभी नहीं हुआ ऐसा आश्चर्य बिचेष्टित इन्द्रसे कहतेभये ५२ जनमे जयकहतेहैं कि हेमुने शंबर के तो सौपुत्र और कृष्णचंद्रका एकपुत्र सो युद्धकरते हुयेकैसे बिजयको प्राप्तहुआ ५३ तिसकाऐसा भाषित सुनके और पश्चात्बल सूदन इन्द्रहंसके बचनकहनेलगे कि इसके पराक्रमसुनो ५४ हेभाई यह पहले कामदेव था और महादेवजीने क्रोधरूप अग्निसे मारदिया जब कामदेव की स्त्री रतिको महादेवजी प्रसन्नकरे५५ तब इसको यह बरदान दिया कि हे रते द्वारका में मानुष देह विष्णु होगा ५६ सो यह काम तिसके पुत्र भावको

प्राप्तहोगा इसमें संदेह नहीं और यहमहायशा त्रैलोक्य में अनंग ऐसा विख्यातहोगा५७और तहां उत्पन्नहुआ यहमहा तेजा शंबर को मारेगाऔर रुक्मिणीसेजन्म होतेही सातदिनकेको शंबरअपनी मायासे प्रद्युम्नको लेजायगा५८यहमहादेवजीनेकहा इसवास्ते हे रतेतू शंबरके घरजाऔरमायावतीहो५९औरमायारूपसे प्रतिच्छन्न हुई शंबरको मोहको प्राप्त होवेगी हेरते तहांतू अपने कांतको बाल रूपको बढ़ा ६० और वह तेराकांत यौवनको प्राप्तहोके शंबर को मारेगा पश्चात् तेरेसहितवह अनंगद्वारकाको प्राप्तहोगा ६१ और हेरते तेरेसाथ ऐसेरमण करेगा कि जैसे शैलपुत्रीके साथ मैं करता हूं देवेश पुरुषोत्तम महादेवजी ऐसे आज्ञादेकर ६२ पश्चात् सिद्ध चारणोंसे सेवित और सुमेरुकेसी कांतिवाला ऐसेकैलासको जाते भये ६३ और कामपत्नीरतिभी उमाकेपति महादेवजीको नमस्कार करके कालके अंतको देखती हुई शंबरके घरको जाती भई और ऐसेविचारतीभई कि यहमहाबाहु ऐसेशंबरको मारेगा और प्रद्युम्न पुत्रसहित तिसदुरात्माको मारेगा ६४ ॥

इति श्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायांशंबरबधेशतोपरि द्विषष्टितमोध्यायः १६२ ॥

एकसौतिरसठका अध्याय॥

वैशम्पायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जनमेजय तिसके अनंतर तिन शंबरके पुत्रों का और रुक्मिणीके पुत्रका कालोमहर्षण तुमुल युद्धवढ़ा १ पश्चात् क्रोधहुये महादैत्यशर और शक्ति और फरसा और चक्र और तोमर और कुंत और भुशुंडी और मुसल इनसंपूर्ण शस्त्रोंको २ प्रद्युम्नके ऊपर एकबार गेरते भये तबयह प्रद्युम्न क्रुद्धहुआ एकएकको ३ पांचपांच बाणोंसे छेदन करताभया और पश्चात् कृतनिश्चय वे असुर फिर क्रुद्धहुये ४ और प्रद्युम्नके मारनेकी इच्छा करके शरजालोंकी वर्षाकरने लगे तिसके अनंतरअनंग कुपितहोकर और धनुषको लेकर शीघ्रही ५ बड़े पराक्रमी

शंबरके दशपुत्रोंको मारता भया और पश्चात् कुपित हुआ केशव का पुत्र प्रद्युम्न भालासे तात्काल ६ चित्रसेनके शिरको छेदन करता भया तिसके अनन्तर हतशेष दानव इकट्ठे होकर युद्धकरते भये ७ और प्रद्युम्नके मारनेको इच्छा करते हुये शरोंकी बर्षा करते हुये सन्मुखदौड़े ८ पश्चात् क्रीड़ाकरताहुआही महातेजस्वी प्रद्युम्न दानवोंके शिरोंको छेदन करता भया ६ ऐसेतिस युद्धमें धन्वियोंके मध्यमें सौदानवोंको मारके और फिर युद्धकी बांछा करताहुआ प्रद्युम्न संग्रामके बीचमें स्थितहोता भया १० पश्चात् शम्बर दैत्य सौपुत्रोंको हतजानके और सारथिको प्रेरता भया कि हे सारथे मेरे रथको जोड़ सारथि ऐसेराजाके वचनको सुन और शिरसे पृथ्वीविषे प्रणाम करके पश्चात् सुसमाहित ११ और सहस्र मृग विशेषोंसे युक्त और सेना करके भूषित और सर्पराजकी ध्वजासे भूषित १२ और शार्दूल चर्मसे वेष्टित और किंकिणीजालों को मालावाला और भेड़ाओं करके सहित १३ और दश ऊपर२ कोठोंसे भूषित और ताराचक्रोंसे भूषित चक्रोंवाला १४।१५ औरन-क्षत्रमालासेपिहित और सुवर्ण दण्डसे समाहित औरश्रीमान् और अतिविराजमान ऐसेरथकोसारथि जोड़के पश्चात् शंबरको बैठायरथ को प्रेरताभया १६ पश्चात् चित्रसन्नाह कांचन धनुषको लेकर और तैसेही शरों को ग्रहणकरके मृत्युसे प्रेरितकिया युद्धकीबांछा करता हुआ शम्बर स्थितहुआ १७ और चारमंत्रियोंकरके सहित और बहुत सो सेनाकरकेयुक्त ऐसे स्थितहुआ इन अमात्योंसहित युद्धकीबांछा करताहुआ यह शम्बररणमें स्थितहुआ १८ और दशहजार हस्ती और दोसौरथ और आठहजार घोड़े १६ और दशलक्षपदाति इतनीसेना से परिवृतहुआ शम्बर युद्धकेवास्ते निकसताभया २० औरपश्चात् शम्बरके संग्राममें उत्पातउठे उस समयमें आकाश गृध्र और चक्रों से व्याप्त होगया और संध्यासमयकेसे मेघोंका शब्दहुआ २१ और वज्रोंसहित मेघ कठोरशब्द करनेलगे और गादड़ी अमंगल शब्द करतीभई २२ और तिस समयमें दानवोंका रुधिरकी बांछा करते

हुये गृध्र ध्वजाके शिरपर पड़तेभये और तब रथकेआगेपड़ा पृथ्वी
में शम्बरका कबंध दीखताभया २३ और शम्बर के रथपर चीबो
कूची ऐसे शब्द करतेहुये पक्षी वासकरतेभये और स्वर्भानुग्रस्ततत्र
आदित्य होगया और मुसलोंसे वेष्टितहुआ २४ और इस शम्बरके
भय निवेदन करनेवाला बामानेत्र फरकता भया और बाईं भुजा
फरकती भई और रथकेघोड़े आखलतेभये २५ और देव शत्रुशंबर
के मस्तकपर काग बैठताभया और तब इन्द्र देवता शर्करा और
उद्गार इन्होंसहित रुधिर की वर्षा करता भया २६ और रण में
हजारहा मुण्ड पड़ताभया और सारथिके हाथसे घोड़ों का चाबुक
पड़ताभया २७ प्राप्तहुये उत्पातोंको यह शम्बरनहीं गिनकरप्रद्युम्न
के मारनेके वास्ते क्रोधहुआ शंवर जाता भया २८ और भेरीमृदंग
और शंख और पणव और डफ और दुन्दुभि इन्होंकाएकबारशब्द
होनेसे पृथ्वी कांपती भई २९ और तिस अत्यंत शब्दकरके त्रास
को प्राप्तहुए मृग पक्षी चारोंतरफ दौड़ते भये ३० और रणकेमध्य
मेंस्थितहुआ प्रद्युम्न शत्रुकी मृत्युको बिचारता भया और असंख्य
सेनासे परिवृत हुआ युद्धके वास्ते तैयारहुआ ३१ पश्चात् क्रुद्धहुवा
यह शंबर हजारबाणों से प्रद्युम्नको ताड़ना करताभया ३२ और
प्रद्युम्न धनुषकोलेकर तिसके बाणोंको काट पश्चात् शरों की बर्षा
करताभया पश्चात् तिस सेनामें ऐसा प्रद्युम्नने कोई नहींछोड़ा कि
जो शरसे नहीं बींधदिया ३३ और प्रद्युम्नके बाणोंके पड़नेसे वह
सेना विमुखहोगई और डरके सेना शंबर के पास खड़ीहोगई ३४
पश्चात् क्रोधसे मूर्च्छितहुआ शंवर अपनीसेनाको भागीहुई देख यह
दानवेश्वर मंत्रियों को आज्ञा देताभया ३५ कि हे मंत्रियो शीघ्र
जावो और शत्रुके पुत्रको मारो और हे मंत्रियो शत्रु उपेक्षा करना
योग्य नहीं शीघ्रमारो ३६ यह शत्रु ब्याधिकीतरह उपेक्षित किया
निश्चय शरीर का नाश करदेता है इस वास्ते मेरे प्रियकी इच्छा
करके इस दुर्मति पापीको मारो ३७ हे जनमेजय तिसके अनंतर वे
मंत्री तिस आज्ञाकोशिरसे ग्रहणकर और क्रोधहूए शरोंकीबर्षाकरते

हुए रथोंको प्रेरतेभये ३८क्रोधहुआ प्रद्युम्न तिन्हों को युद्धमें दौड़ता हुआ देखकर और धनुषलेकर यह बली आगे स्थितहुआ ३६ और पच्चीस शरों करके इन्हों को भेदन करताभया और महातेजस्वी प्रद्युम्न तिरसठबाणोंसे केतुमालीको भेदन करताभया ४० और सत्तरबाणों से शत्रुहंताको और बयासीबाणों से प्रमर्द्दनको भेदन करता भया पश्चात् वे मंत्री क्रुद्धहोकर प्रद्युम्नको शरोंकी बर्षासे छादितकरतेभये४१ और एक एकमंत्री साठ साठ बाणोंसे प्रद्युम्न को भेदन करता भया ४२ पश्चात् प्रद्युम्न प्राप्त हुए तिन बाणों कोबाणों करके छेदन करता भया ४३ पश्चात् संपूर्ण राजाओं के देखतेहुए और सैनिककेदेखतेहुए प्रद्युम्न सुंदर पोरियोंवाले चार बाणोंसे ४४ चार अश्वोंको भेदनकरताभया और एक बाणसे छत्र भेदनकरदिया और एक बाणसे सुंदरध्वज ४५ और साठ बाणोंसे प्रद्युम्न रथकेचक्र और धुराको तोड़ताभया पश्चात् बहुत तीक्ष्ण एक और बाणलेकर छोड़ा ४६ तिस अल्पजीवी शंबरके हृदयमेंबाण लगतेहो शोभा और प्राण और सत्य और प्रभाये संपूर्ण विगतहो-गये४७और पश्चात् रथसे ऐसे पड़ताभया कि जैसे क्षीणपुण्यहुआ ग्रह जब यह दुर्धर शूरवीर दानव मारदिया तब दानवेश्वर ४८ केतुमाली शरके समूहों करके कृष्णकेपुत्र प्रद्युम्नके सन्मुख दौड़ा और यह केतुमाली भृकुटी से भयानक ४६ मुखकिये ठहर ठहर ऐसे कहताहुआ दौड़ा पश्चात् यह प्रद्युम्न क्रोधयुक्त होकर तिस पर शरोंकी ऐसे बर्षा करताभया ५० कि जैसे वर्षाऋतुमें मेघपर्वत पर वर्षाकरताहै पश्चात् धनुषवाले प्रद्युम्न करके बींधाहुआ यह दानवका मंत्री ५१ चक्रलेकर प्रद्युम्नके मारनेकी बांछाकरकेचक्र को छोड़ताभया ५२ पश्चात् संपूर्णोंके देखतेहुए यह चक्र प्रद्युम्न पर पड़नेलगा तब यह उछलकर चक्रको पकड़ तिससे उलटा केतु मालकाही शिर छेदन करताभया ५३ प्रद्युम्नके इस उत्तमकर्म को देवताओं सहित इन्द्र देखकरपरम आश्चर्यको प्राप्तहोताभया ५४ पश्चात् केतुमालको मराहुआ देखकर गंधर्व और अप्सरा

पुष्पोंकी बर्षाकरते भये और शत्रुहंता प्रमर्दन बहुतसी सेनाके समूहसे प्रद्युम्नको प्राप्तहोता भया ५५ पश्चात् हेराजन् वे संपूर्ण दैत्य गदा और मुसल और चक्र और प्रास और तोमर और बाण औरभिंदिपाल और कुहाड़ा और मुद्गर५६इनदीप्तशस्त्रोंकोप्रद्युम्न के वधके वास्ते एकबार ऊपर गेरता भया और प्रद्युम्नभी तिन शस्त्रजालोंको हस्तलाघव दिखाता हुआ अनेक प्रकारके शस्त्रजालों से५७तिसको छेदन करताभया और क्रुद्धहुआ प्रद्युम्न हजारहां हस्तियोंको और हस्तियोंकेसवारोंको भेदनकरताभया५८और रथ औरसारथिऔर अश्वइन्होंका मर्दनकरताहुआ औरशरोंकेसमूहोंसे शत्रुओंकोगिराताहुआआपअविद्धरहा५९ऐसेसंपूर्णसैन्यकोप्रद्युम्न मथताभया और घोरहारोंके तरंगोंवाली ६० और वसा और मेद और अस्थि इनरूप कीचवाली और केशरूप सिवालसे व्याप्त६१ और श्रोणिसूत्ररूप कमलकी नालवाली और सुंदरमुखरूपकमलों वाली ६२ और हंस चामरोंसेवीजित और शिररूप तिमिजीवोंसे व्याप्त६३ और रुधिरके समूहको प्रवर्त्त करनेवाली ऐसी दुस्तरण घोरनदीप्रद्युम्ननेप्रवृत्तकरी६४।६५ और दुःप्रेक्ष्यऔर दुर्गम और रौद्रऔर हीनतेजोंकोदुस्तर और शस्त्ररूप ग्राहोंवाली और यमराष्ट्र को बढ़ानेवाली ऐसीनदीको रुक्मिणी का पुत्रप्रद्युम्नधन्वा विलो ताभया और पश्चात् शत्रुहंता फिर क्रुद्धहोकर उत्तम शरको छोड़ता भया ६६ और वह शर प्रद्युम्नके हृदयपर पड़ताभया परंतु तिस बाणसे बींधाहुआ प्रद्युम्न नहीं कंपताभया ६७। ६८ औरपश्चात् मरनेकी इच्छाकरनेवाले शत्रुहंताकेअर्थ शक्तिको ग्रहणकरताभया पश्चात् वह प्रद्युम्नकी गेरीहुई वह शक्तिपड़तीभई और हृदयको भेदनकरके इंद्रका बज्रकेसमान शब्द करतीभई ६९ और पश्चात् वह शत्रुहंता भिन्नहृदय और स्रस्तांग और रुधिरका बमनकरता हुआ ऐसा यह महाबल पड़ा ७० पश्चात् शत्रुहंताको गिराहुआ देखकर प्रमर्दन स्थितहुआ और मुसलको ग्रहणकरके यह बचन कहता भया ७१ कि हे रणप्रिय ठहर इन्होंके मारनेसे क्या है हे

दुर्बुद्धे मेरेसे युद्धकर जिससे तेरा नाशहो ७२ और हमारा शत्रु तेरा पिता वृष्णिकुलमें उत्पन्नहुआ है तिसके पुत्रको तेरेको जब मारदूंगा तब उसकी आप मृत्यु होजायगी ७३ और हे दुर्बुद्धे तिसके मरनेसे देवताओंका क्षयहोजायगा और जब देवताओं का क्षयहोजायगा तब दैतेय और दानव हत शत्रुहुए आनंदकरेंगे ७४ और जब तू मेरे अस्त्रोंसे मृत्युको प्राप्त होजायगा तब तेरेरुधिर से शंबरकेपुत्रोंकी श्रेष्ठ क्रिया करूंगा ७५ और भीष्मक की पुत्री अब विलापकरेगी और यौवनस्थ तेरे को मराहुआ ७६ तेरा पिता सुनके चक्र धारण किये भी निष्फल आशावाला होजायगा और तेरे को हत जान के वह मंद धी प्राणों को भी त्यागदेगा ७७ ऐसे कहके प्रमर्दन मुसलसे रुक्मिणी के पुत्रको ताड़ना करता भया पश्चात् ताड़ित हुआ प्रतापवान् प्रद्युम्न ७८ तिसके रथको भुजाओं से उठाचूर्ण करताभया और पश्चात् सो प्रमर्दन रथ से उतर पदाति स्थित होगया ७९ और गदालेकर प्रद्युम्नकी तरफ़ दौड़ापश्चात् तिसीकीगदाको प्रद्युम्न ग्रहणकर प्रमर्दन को ताड़ना करताभया ८० पश्चात् प्रमर्दन को संपूर्ण दैत्य मराहुआ देखकर भागगये और सन्मुख स्थितहोनेको ऐसेनहीं समर्थ होतेभये जैसे सिंहको त्राससेहस्ती ८१ और कुत्ते को देखकर जैसेभेड़ी भागजाती है ऐसेप्रद्युम्न को देखकरसेनाभाग गई ८२ और घायलहुई और रुधिरसेव्याप्त वस्त्रोंवाली और केशखोलेऐसे रजस्वलास्त्री कीतरह शोभा रहित होतीभई ८३ और प्रद्युम्नके शरोंसे भिन्न और युवतिसमान वेपवाली और निर्दय धनुषों से पीड्यमान और युद्ध को नहीं देखतीहुई और ऊंचाश्वास लेतीहुई ऐसी सेना घरको जानेकी इच्छा करतीभई तहां स्थित होनेकी इच्छा नहीं करती भई ८४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशंवरसैन्यभंगोनामधतोपरित्र पष्टितमोऽध्यायः १६३ ॥

——※——
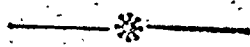
एकसौचौंसठका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् जनमेजय तिसके अनंतरक्रुद्ध हुआ शंबर सारथिको कहताभया कि हेसारथे मेरेरथको शत्रुके मुख के आगे स्थापनकर १ इतने इसप्रद्युम्नका नाशकरूं ऐसे भर्त्ताके वचन सुन प्रिय करनेवाला सारथि २ सुवर्ण भूषित रथको प्रेरता भया पश्चात् फुल्ललोचन प्रद्युम्न इस रथको आया हुआ देख ३ धनुषको लेकर सुवर्ण भूषित बाणको चढ़ातेभये और तिस बाण को शम्बरकी तरफ छोड़के क्रोध करातेभये ४ पश्चात् तिस करके पीड़ितहुआ देव शत्रु रथशक्तिके आश्रयहोकर विचेत न हुआ स्थित हुआ५ पश्चात् शम्बर चेतनाको प्राप्तहोकरऔर धनुष लेकर तीक्ष्ण सातबाणोंसे प्रद्युम्नको भेदन करताभया ६ पश्चात् नहीं प्राप्तहुये तिन घोर बाणों को सात बाणों से छेदन करता भया और पश्चात् तीक्ष्णसत्तरबाणोंसेशम्बरकोहननकरताभया ७पश्चात् फिरकंकवर्हि पंखोंवाले हजार बाणोंसे क्रोधकरके शम्बरको ऐसे हननकरता भया कि जैसे धाराओं करके पर्वत ८ और शरोंकी धारा दिशा औ बि-दिशाओंको आच्छादन करती भई ९ और तिन बाणों से आकाश अन्धकार युक्त होगया और सूर्यभी नहीं दीखा पश्चात् वैद्युतअस्त्र से शम्बर तिस अन्धकार को दूर करके १० पश्चात् प्रद्युम्न के रथपर शरोंकी वर्षा करताभया और प्रद्युम्नभी तिस अस्त्रजालको सुंदरबाणोंसे छेदन करताभया ११ पश्चात् प्रद्युम्नने जबशरों की महावर्षा नष्टकरदी तब हस्तलाघव दिखाता हुआ बहुत प्रकार से छेदन करताभया१२ पश्चात् कालशम्बर मायाकरके वृक्षोंकी वर्षा करनेलगा और वृक्षोंकी अति वर्षाकोप्रद्युम्नदेख क्रोध से मूर्च्छित होगया१३ और पश्चात् आग्नेयास्त्रको छोड़के प्रद्युम्न तिन वृक्षों का नाश करताभया पश्चात् जबउन्होंकी भस्महोगई तब शिलाओं के समूहकी वर्षाकरी१४प्रद्युम्न शिलाओंकोभी वायव्यअस्त्रोंसेनष्ट करताभयापश्चात्देवशत्रुप्रतापवान्औरमायाको रचताभया १५

पश्चात् हेराजन् सिंह और व्याघ्र और बराहऔर तरक्ष और रीछ औरवानरऔरहस्तीऔर अश्वऔर उष्ट्र १६ इनजीवोंको छोड़ता भया और पश्चात् शंबरधनुषकोलेकर प्रद्युम्नकेरथकेऊपरछोड़ता भया १७ तिनसंपूर्णोंको प्रद्युम्नगंधर्बअस्त्रसेछेदनकरताभयापश्चात् प्रद्युम्नने वह संपूर्णमायानष्टकरदी शंबर तिसको नष्टदेख क्रोधसे मूर्छितहुआ और माया को छोड़ताभया १८ भिन्नबदनवाले और जवानसाठ साठ वर्षोंवाले फीलवानोंसे युक्त और रणमेंचतुर ऐसे हस्तियोंकोछोड़ताभया १९ और प्रद्युम्न तिसआतीहुईमायाकोदेख पश्चात् सैंही मायाके छोड़ने की चित्तमें बिचारता भया २० जब प्रद्युम्नने यह सिंह मायारची तब नागवतीमाया ऐसे नष्ट होगई कि जैसे सूर्यकरके रात्रि २१ पश्चात् वह दानवोत्तम तिसमायाको नष्टदेख फिर संमोहिनीमायाको रचताभया २२ और तिस माया को प्रद्युम्न देखके संज्ञास्त्रसे नष्टकरताभया २३ पश्चात् शम्बर तिस मायाको नष्ट देख सैंही मायारचताभया २४ पश्चात् प्रद्युम्न सिंहोंको आतेहुए देख और गांधर्व अस्त्र लेकर शरभों को रचता भया २५ वे आठआठ पैरोंवाले शरभ नख और दंष्ट्राओंसे युद्धकरते हुए सिंहोंको ऐसे दौड़ातेभये कि जैसे मेघोंकोवायु पश्चात् मायाके अष्टापदोंसे सिंहोंको दौड़ेहुए देख २६ शम्बर यह चिंतवनकरता भया कि इसको कैसे मारूंगा और अहो मैं बड़ामूर्खस्वभाववाला हूं क्योंकि जिससे बालकही यह नहीं मारदिया २७ और अबयह यौवनको प्राप्तहोगया शस्त्र धारण करलिये इस शत्रुको अब मैं कैसे मारूंगा २८ जो महादेवजीने दईथी वह पन्नगी नाम माया मेरेपास स्थितहै तिस महामायाको मैं रचूंगा २९ तिस मायाकर के यह मायामय महाबली दग्धहोगा ३० हे जनमेजय ऐसेबिचार के वह विषज्वालासे युक्त पन्नगीमाया रची ३१ तिस पन्नगमयी मायाकरके रथ और अश्व और सारथि इन्हों सहित प्रद्युम्न को शरबंधनोंकरके बांधताभया ३२ और पश्चात् प्रद्युम्न अपनेआपा को बध्यमान देखकर पश्चात् सर्पोंको नाशकरनेवाली सौपर्णीमा-

याको रचतेभये ३३ तिस माया से अनेकगरुड़ उत्पन्न होतेभये तिन्होंकरके संपूर्ण महाविष सर्प नष्टहोगये जब सर्पमाया नष्टकर दी तब प्रद्युम्नकोसुर और असुर ३४ ऐसे सराहतेभये कि हे शूर वीर हे महाबाहो हेरुक्मिणीके आनंदवढ़ानेवाले तैंने जोयहमाया नष्टकरी इसकरके हम बहुतप्रसन्नहुए ३५ जब सर्पमाया नष्टकर दी तब फिर शम्बरने बिचारा कि मेरे सुवर्णसे भूषित कालदंडके सी कांतिवाला और देव दानवों से प्रतिहत ऐसा मुद्गर है ३६ और ऐसे प्रसन्नहोके पार्वतीने दिया है कि हे शम्बर इस मुद्गर को तूले तैंने बड़ाघोर तपकियाहै ३७ और हे शम्बर इससे संपूर्ण असुरोंका मैंने नाशकियाहै और इस मुद्गर से बलवान् शुंभऔर निशुंभ दानव गणोंसहित मारे हैं ३८। ३९ और हे शम्बर जब प्राणोंकासंदेह तुमकोहो तब अपनेशत्रुकेअर्थ छोड़नायोग्यहै४० ऐसे कहके पार्वती देवी अंतर्द्धान होतीभई तिस मुद्गरको मैंअपनेशत्रु के अर्थ छोडूंगा ४१ हेजनमेजय इसशम्बरके बिचारको इंद्रजानके यहबचन नारद मुनिसे कहताभया कि हेमुनेनारद प्रद्युम्नके रथ के प्रतिजल्दीजा ४२ और तिसमहाबाहुको संबोधनदे और शंबर केवधकेवास्तेइसकोवैष्णवास्त्रदे४३ औरइसकोअभेद्यकवचदेइन्द्रसे ऐसाकहाहुआ नारद शीघ्रतहां जाताभया ४४ पश्चात् आकाश में स्थितहुआ नारद मुनि प्रद्युम्नको कहताभया किहे कुमार देवता और गंधर्वोंका प्रियनारदमुनि प्राप्तहुआकोमेरेकोजान हेकुमार तेरे संबोधनके वास्तेइन्द्रकोमैं भेजताहूं ४५ हेमानदतूअपनेपूर्वभावको स्मरणकर तू कामदेवहै और महादेवजीके कोप रूपअग्निसे दग्ध होगया इसवास्ते यहांअनंग कहतेहैं ४६ और हेकुमार तू वृष्णि बंशमें उत्पन्नहुआहै और रुक्मिणीसे उत्पन्नहुआहै केशवने उत्पन्न कियाहै४७तेरेको सातदिनकेको शंबर लायाथा ४८और शंबरकेबध केहीवास्ते तू हराहुआ केशवने उपेक्षित करदियाथा क्योंकि देवता ओंके कार्यकी सिद्धिकेवास्ते ४९ और हेप्रद्युम्न जो यहशंबर की भार्यामायावती है इस को अपनी पुरातन भार्यारति जान ५०

तेरीरक्षा के वास्ते यहशम्बर के घरमें वसतीभई और तिसदुरात्मा शंबरकेशरीरोंकी मायाको मोहनेकेअर्थवसतीभई ५१ हेप्रद्युम्नऐसे जानके तेरीभार्या वहांस्थितहुई ५२ सोहेशूरवीरइसवैष्णाव अस्त्रसे शंवरकोमार और मायावती कोग्रहणाकर द्वारकामें जाने को योग्य है५३ और हेशत्रुसूदनइसवैष्णाव अस्त्रकोऔरकवचकोग्रहणाकरइन्द्र नेतेरेवास्तेयहभेजाहै ५४ और हेप्रद्युम्नमेरा और वाक्यसुन और सुनके शंकारहितहूआ वैसेहीकर हेप्रद्युम्न इसदेवरिपुशम्बरकेएक मुद्गर ऊर्जितहै ५५ और प्रसन्नहुई पार्वतीने दियाहै सो वहमुद्गर शत्रुओंका नाशकरनेवाला है और देवदानवऔरमनुष्यइन्हों करके संग्राममें अमोघहै ५६ सो तिस अस्त्रका प्रतिघात के वास्ते तू देवीजोका स्मरणाकर हे प्रद्युम्न रणाके उत्साहवाले शूर वीरोंने वह महादेवीस्तुति करनेके योग्यहै और नमस्कार करने के योग्य है ५७ सो संग्राममें रिपुकेसाथ यत्नकरना योग्य है हे जनमेजय नारदमुनि प्रद्युम्नको ऐसे वाक्य कहके फिर नारदमुनि इन्द्रके पास जातेभये ५८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांनारदवाक्यंनाम शतोपरिचतुःषष्टितमोऽध्यायः १६४ ॥

एकसौपैंसठका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहतेहैं कि हे जनमेजय तिसके अनंतर क्रुद्ध हुआ शम्बर तिसमुद्गरको लेताभया और मुद्गरके ग्रहणाकरतेही वारह सूर्यउदयहुये १ और पर्वत और सम्पूर्ण वसुधातलकंपा और सागरोंने मार्ग छोड़दिया २ और देवता संक्षुब्ध होगये और आकाश गृद्ध और चक्रोंसे आकुल होगया और उल्कापात हुआ और इन्द्रको रुधिरकी वर्षाकरी और कठिन वायुचला ३ वेगवाला प्रद्युम्न ऐसे उत्पातोंको देखकर और रथसेउतर अंजलिपुट बांधके स्थितहुआ४और मनसे शंकरकीप्रिया पार्वतीदेवीका स्मरणा करने लगा और शिरसे देवीको प्रणाम करके स्तुतिकरनेको प्रारंभकरता

भया ५ कात्यायनिको नमस्कारहै गिरिशाकोनमस्कारहैत्रैलोक्या मायाको नमस्कारहैऔरकात्यायनीको नमस्कारहै६शत्रुविनाशिनी देवीको नमस्कारहै और गौरीको नमस्कार है और शुंभ निशुंभोंको मथनेवाली देवीकोनमस्कारहै ७कालरात्रिकोप्रणामहै कौमारीदेवी कोप्रणामहैऔर कांतारबासिनीको प्रणामहै ८ और विंध्य वासिनी औरशत्रुकेदुर्गको नाशकरनेवाली औररणप्रिया दुर्गा इनसंपूर्णोंको मैंप्रणामकरताहूंऔर महादेवी जया विजया९औरअपराजिता और अजिता और शत्रुनाशिनी और घंटाहस्ता इन देवियोंको मैंअंजलि बांधके नमस्कार करताहूं और घंटामाला कुला१० और त्रिशूलिनी और महिषासुर घातिनी और सिंहासना और सिंहप्रवरकेतना११ और एका नंशा इन देवियोंको मैं नमस्कार करताहूं और गा-यत्री यज्ञसत्कृता और सावित्री इन संपूर्ण देवियोंको मैं अंजलिबां धके प्रणामकरताहूं १२ हे देबि मेरी निरंतर रक्षाकर और संग्रा ममें मेरीजयकर हे जनमेजय ऐसे प्रद्यु म्नके बचनसुन दुर्गाप्रसन्न होगई १३ और प्रसन्न मनसे यह वचन कहनेलगी हे रुक्मिणी के आनंदवढ़ानेवाले हे महाबाहो देख देख १४ हे पुत्र तू बरमांग मेरे दर्शन वृथा नहीं जाते देवीके ऐसे बचन सुनके रोमांच खड़ेहो गये १५ पश्चात् शिरसे देवीको प्रणामकर यह विज्ञापन कराता भया कि हे देबि जो तू प्रसन्नहुई है तो बांछितबरदे १६ हे वरके देनेवाली मैं यह बरमांगूहूं कि सम्पूर्ण शत्रुओंमें मेराजयहो और जो आत्मसंभव तेरादिया शम्बरके पास मुद्गरहै १७ सो हे देबि वह मेरे शरीरको प्राप्तहोकर कमलोंको मालाहोजाय यह बरदे हे राजन् देवी ऐसे सुन और तथास्तु अर्थात् तैसेहीहो यह कह वहीं अंतरधानहोगई १८ पश्चात् महातेजा प्रद्यु म्न प्रसन्नहुआ रथ में बैठताभया और क्रोधमूर्छित शम्बर तिस मुद्गरको ग्रहणकर १९ भ्रमाताभया और भ्रमाकर यह वीर्यवान् शम्बर प्रद्यु म्न के हृदय विषे फेंकताभया पश्चात् वह मुद्गर प्रद्यु म्नके पास गयाहुआ कमलोंकी मालाहोकर २० प्रद्यु म्न के कंठमेंऐसीबिराजतीभई कि

जैसे नक्षत्रोंकी मालासेभूषित चंद्रमा २१ पश्चात् देवताऔरगंधर्व और सिद्ध और चारण और परमर्षि ये सम्पूर्ण पुष्परूप मुद्गर कोदेखके प्रद्युम्नको वाणियोंसे साधु साधु अर्थात् बहुतअच्छाकिया बहुतअच्छाकिया ऐसे सराहतेभये २२ पश्चात् नारदकादिया जो वैष्णवास्त्र था तिसको धनुषपर चढ़ाके यह बचन कहता भया कि रे शम्बर देख जो मैं रुक्मिणीका २३ और केशवकापुत्रहूं तो तेरेको इस एक बाणसे मारूंगा २४ हे जनमेजय ऐसे यह महामना प्रद्युम्न धनुषको चढ़ा तीनोंलोकोंको दहताहुआ की तरह यह छोड़ा २५ पश्चात् वृष्णिसिंह प्रद्युम्न का छोड़ाहुआ यह क्रव्याद मोदन शर २६ शम्बरके हृदयको भेदनकरके पृथ्वीपर आके पड़ा न तो शम्बरका मांस रहा और न नसें रहीं न हड्डी रही न रुधिर रहा २७ वैष्णवास्त्र के तेजसे सम्पूर्ण भस्महोगया और जब यह महाकाय अधम दानव शम्बर मरगया २८ तब देव और गंधर्व प्रसन्न होतेभये और अप्सरा नृत्यकरतीभई उर्वशी और मेनका और रंभा और विप्रचित्ति और तिलोत्तमा और ये सम्पूर्ण प्रसन्न मनहुई नृत्यकरतीभई २९ और स्थावर जंगम जीव प्रसन्न होते भये और देवताओं सहित इन्द्र प्रसन्नहुआ प्रद्युम्न पर पुष्पोंकी वर्षा करके ३० शत्रु भयसे रहितहुए देवता प्रद्युम्नकी स्तुतिकरते हुए जातेभये ३१ पश्चात् युद्धके परिश्रम को दूर करता हुआ प्रद्युम्न नगर में प्राप्तहोताभया और प्रसन्नहुआ शीघ्रही रतिका दर्शन करताभया ३२ ॥

इतिश्री महाभारतेहरिवंश पर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां शम्बरवधोनामपंचशतोपरि पंष्टितमोऽध्यायः १६५ ॥

एकसौछाछठिका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं कि हे राजन् जबयह समाप्त मायावी कालशंबर मारदिया १ तब प्रसन्नहुये प्रद्युम्न मायावती देवीको ग्रहणकर पिताके नगरमें आतेभये २ पश्चात् आकाशसे भगवान् के अंतःपुरमें रूपवान् कामदेवकी तरह प्रद्युम्न प्राप्तहुआ ३।४

प्राप्तहोतेही भगवान्की संपूर्ण पटरानी एकबार बिस्मित और भय भीत और आश्चर्य युक्त और प्रसन्न होतीभई ५ तिसके अनंतरकाम संकाश को प्रद्युम्नको कांतासहित नयनोंसे पीतीहुई ६ और तिस व्रीड़ित मुखको पदपदविषे सज्जमान होतीभई और संपूर्ण कृष्णकी स्त्री स्निग्ध संकल्पहोतीभई ७ और पुत्रके शोकसे दुःखितहुई और पुत्रकी अभिलाषा करतीहुई सैकड़ों सपत्नियों सहित आंसू गेरती हुई यह बचन कहतीभई ८ कि हे सखियाहो रातमें मैंने ऐसा स्वप्न देखा कि कंसारि भगवान्ने मेरेको चंद्रमा केसी कांतिवाले और मोतियों से भूषित ऐसाहार और पल्लवदिये ९ और भगवान् मेरे को गोदमेंबैठाके मोतियोंका हार कंठमें बांधतेभये १० और एकश्यामा और सुंदरकेशोंवाली और सफेदबस्त्रोंसे भूषित और कमल हाथमें लिये ऐसीस्त्री मकानमें प्रविष्टदेखी ११ और तिसस्त्रीने मेरा सुंदर जलसे स्नानकराया और पश्चात् कमलोंकी माला हाथ से ग्रहण कर मेरेकंठमें घालदी १२ ऐसेस्वप्नको कहतीहुई रुक्मिणी प्रसन्न चित्ता होगई १३ पश्चात् सखिजनों से आवृत्त यह देवीरुक्मिणी बरंबार कुमारको देखके यह कहतीभई कि जिसका यहपुत्रहै तिस को धन्यहै १४ क्योंकि जिससे प्रथम यौवनमें स्थित कामदेव केसा स्वरूपवाला हेपुत्र तूजीव और यह तेरी बधू सौभाग्य से युक्त हो १५ हेजनमेजय रुक्मिणी ऐसेकहके पूछनेलगीहेपुत्रतूमेघकेसा श्यामस्त्रीसहित यहांकिसवास्ते आयाहै हेपुत्र इसी उमरमेंकहींमेरा पुत्रप्रद्युम्नहोगा १६ जो कालबलीसे नहींग्रसाहोगा तोतूतौनिश्चय कृष्णचंद्रका कुमारहै १७ यहमेरा विचार असत्य नहीं मैंने चिन्हों करके जानलिया क्योंकि तेरामुख और केश और केशांत संपूर्ण नारायणकी तरहहैं १८ और ऊरू और बक्ष और भुज ये संपूर्ण बलदेवजीके समानहैं ऐसातू कौनहै संपूर्ण वृष्णिकुलको शरीरसे भूषित करताहुआ स्थितहै १९ क्योंकि जिस से नारायणके शरीर कैसीदिव्य कांतिको धारण करताहै पश्चात् शंबरकेबधकेप्रतिनारद मुनिके बचन भगवान् सुनके तिसीसमयमें प्राप्तहुये २० पश्चात्

जनार्दन भगवान् कामदेवके लक्षणोंसे सिद्ध तिस ज्येष्ठ पुत्रकोदेख और मायावती पुत्रबधू देख हेराजन् कृष्णचंद्र बचन कहनेलगे २१ हे रुक्मिणिदेख धनुषको धारणकिये यहतेरापुत्र प्राप्तहोगयाहै २२ और हेदेवि इसतेरे पुत्रनेमायाओंको जाननेवाला शंबर मारदियाहै और जिनमायाओंसे देवताओंकोपीडाकरताभया वेसबमारदीहैं २३ औरसतीऔर साध्वी औरशुभा ऐसी यह मायावती तेरेपुत्रकीभार्याहै यहशंबरके घरमेंबसैथी २४ और यहव्यथा तेरेमतहोकियहशंबरकी स्त्रीहैजबमन्मथ नाशको प्राप्तहोगया और अनंगता को प्राप्तहोगया २५ तबयहमायारूप करके तिसशंबर दैत्यको मोहतीभई और यह कौमारभावमेंभी बसमें स्थितरहतीभई २६ अपने आत्माको माया मयकरके शंबरके रूपकोप्राप्त होतीभई २७सोयह मेरेपुत्रकी पत्नीहै और हे रुक्मिणि मेरी और तेरी स्नुषा पुत्रबधू है २८ यह मनोमय लोकका साहाय्यकरेगी सो इसमेरीस्नुषाको प्रविष्टकर २९ और चिरकालसे नष्टहुआ पुत्रकोफिरभज ३० वैशंपायनजी कहतेहैं किहे राजन् जनमेजय देवीरुक्मिणी ऐसा कृष्णचंद्रकाबचन सुनकेरुक्मि णी अतुलहर्षको प्राप्तहोकर यह बचनकहती भई ३१ अहोबीरपुत्र के समागम से मेरेको धन्यहै और मेराकाम आज सफलहुआ और मनोरथभी आजपूर्णहुआ ३२ क्योंकि जिससे चिरकालसे नष्टहुआ पुत्रका प्रियासहित दर्शनहुआ ३३ हे राजन् ऐसे बिचारकहनेलगी कि हे पुत्र आओ और भार्यासहित भवनको प्राप्तहो ३४ तिस के अनंतर प्रद्युम्न गोविंद और माताके चरणोंको प्रणाम करकेप्रद्यु म्न महाबल बलदेवजी का पूजन करता भया ३५ पश्चात् केशव भगवान् प्रद्युम्नको उठाकर मस्तकबिषेसूंघताभया ३६औररुक्म भूषणारुक्मिणीदेवी पुत्रवधूकोउठाकेमिलतीभईऔर अत्यंतस्नेहसे युक्त रुक्मिणी पत्नी सहित भुवनको ऐसे प्राप्तहुईजैसेइन्द्राणी ३७ और इन्द्रकोप्राप्तहोके अदितिआयेपुत्रका ऐसेप्रवेशकरातीभई ३८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिषट्षष्टितमोऽध्यायः १६६॥

इसपर्वके दोभागहैं दूसरा भाग नीचेके ५५५ और ऊपरके १ नम्बरसे प्रारम्भ होगा॥

महाभारत भाषा वार्तिक

आदिपर्व,सभापर्व,बनपर्व,भीष्मपर्व,शान्तिपर्व मयराजधर्म,दानधर्म,आपद्धर्ममोक्षधर्म इनके सिवाय और जो पर्व शेषरहगईहैं वहभी उल्थाहोकर छप रहीहैं कुछ कालमें छपकर दृष्टिगोचर होंगी॥

महाभारतदर्पण॥

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादि कवीश्वरोंने अनेकप्रकारके ललितछन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंशको निर्माण किया-यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै बरन बहुधालोग इसविचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेद बतातेहैं क्योंकिपुराणान्तर्गत कोई कथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससे छूटनहीं गई मानों यह पुस्तक वेद शास्त्रका पूर्ण रूपहै-अनुमान ६०वर्षके बीते कि कलकत्ते में यह पुस्तक छपीथी उस समय यह पोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्तमें मनुष्य५०)रु०देनेपर राज़ी थे पर नहीं मिलती थी पहले सन् १८७३ ई० में इसछापेख़ाने में छपी थी और क़ीमत बहुतसस्ती याने वाजिबी १२) थे जैसा कारख़ाने का दस्तूर है॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़ेहरफों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्दकिया है--और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफ़ायत होसक्ती है पैमाना १२ + ८ छपी हुई सन् १८८४ ई०॥

इस महाभारतके भाग नीचे लिखे अनुसार अलग२ भी मिलते हैं॥

पहिले भागमें (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) बनपर्व्व सफ़े ५२० जुज़ ३२ वर्क़ ६ क़ीमत ३)

दूसरे भागमें (४) विराटपर्व्व (५) उद्योगपर्व्व (६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व सफ़े ४०२ जुज़ २५ वर्क़ १ क़ीमत ३)

तीसरेभागमें-(८)कर्णपर्व्व (९)शल्यपर्व्व (१०) सौप्तिक पर्व्व (११) ऐषिकवविशोकपर्व्व(१२)स्त्रीपर्व्व(१३) शांतिपर्व्वराजधर्म्म आपद्धर्म्म-मोक्षधर्म्म सफ़े ४५६ जुज़ २८ वर्क़ ४ क़ीमत ३)

चौथेभागमें (१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेध(१५) आश्रमवासिकपर्व्व(१६) मुशलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्ग्गारोहण व हरिवंशपर्व्व सफ़े ५५८ जुज़ ३३ क़ीमत ३)

महाभारतोंकी फ़ेहरिस्त ॥

महाभारत के पर्व अलग२ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व १ क़ीमत १)   २ सभापर्व २ क़ीमत।-)
३ वनपर्व ३ क़ीमत १।=)   ४ विराटपर्व४ क़ीमत ।)
५ उद्योगपर्व ५ क़ीमत ॥)   ६ भीष्मपर्व६ क़ीमत ॥-)
७ द्रोणपर्व ७ क़ीमत ॥≡)   ८ कर्णपर्व ८ क़ीमत ॥)
९ शल्य व गदा९ सौप्तिक१० योषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व १२
क़ीमत ।=)

१० शांतिपर्व १३ राजधर्म्म,आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म
सफ़े ५५८ .. .. क़ीमत ३)

११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुशलपर्व १६ महाप्र-
स्थान १७ स्वर्गारोहण १८ क़ीमत ।)

१२ हरिवंशपर्व १९ .. .. .. क़ीमत १=)

महाभारत सबलसिंह चौहानकृत सम्पूर्ण महाभारतकी कथा दोहे चौपाई आदि छन्दोंमें है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्यों को भी भली भांति समझमें आतीहै नीचे लिखेहुये पर्व छपेहुये तय्यारहैं यह पुस्तक बहुतहीकम मिलतीहै बड़ी मुश्किलों से जो पर्व मिलेहैं वह छापेगये ॥

आदिपर्व सफ़े ७४ जुज़ ४ वर्क़५ क़ीमत ।)
पैमाना११+७।४छपी हुई सन् १८८४ ई०

(२) सभापर्व सफ़े ७८ जुज़ ४ वर्क़ ७ क़ीमत ।)
ऊपर लिखेहुये अलंकारों सहित पैमाना११+७।४छपीहुई सन१८८३ ई०॥

(३)वनपर्व तथा तथा सफ़े ४२ जुज़ २ वर्क़ ५ क़ीमत -)
(४) विराटपर्व तथा तथा सफ़े ७६ जुज़ ४ वर्क़६ क़ीमत ।)
(५)उद्योगपर्व तथा तथा सफ़े १४४ जुज़ ९ क़ीमत ।)॥
(६)भीष्मपर्व,द्रोणपर्व,कर्णपर्व,शल्यपर्व वगदापर्व सफ़े १७६ जुज़ ११ क़ीमत ॥)

(७) स्त्रीपर्व तथा सफ़े २४ जुज़ १ वर्क़ ४ क़ीमत)॥
(८) स्वर्गारोहण तथा सफ़े २८ जुज़ १ वर्क़ ६ क़ीमत -)

बाक़ी जब पर्व इसके मिलेंगे छापे जावेंगे ॥
पर जिस मनुष्य की दृष्टिमें यह पर्वहों या उनकेप्रयत्न से मिलसकें छापेखानेकोदृष्टिलादेवें या कृपाकरके भेजदें कि यहप्रसिद्धपुस्तक परिपूर्णहोजावे।

श्रीगणेशाय नमः

महाभारत हरिवंशपर्व्व भाषा ॥

द्वितीयभाग

जिसमें

एकसौसड़सठसे तीनसौछब्बीसअध्यायपृष्ठ१से४३८तककीकथा ऊषाचरित्र, कृष्णसे मधुदैत्यका बध, वामन नृसिंहादि चरित्र, देवासुरसंग्राम, कैलासयात्रा, घंटाकर्णमोक्ष, पौण्ड्रक, ऐकलव्य बध, श्रीकृष्णजीका पुष्करागमन, विचिक्रबध, हंस बलदेव अरु सात्यकि डिम्भकयुद्ध, हिडिम्बबध, श्रीकृष्णका वैष्णवास्त्रत्याग, हंसडिम्भकबध, बलदेवकृष्ण नन्दादि समागम, कृष्णजीका द्वारकामें आगमन, सर्व्व पर्व्वानुकीर्त्तन, त्रिपुरबध, हरिवंश वृत्तान्तसंग्रह, हरिवंशश्रवणफलकीर्त्तनादि कथावर्णित हैं

जिसको

श्रीभार्गववंशावतंस मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के व्ययसे ज़िला रोहतक बेरीग्रामनिवासी पण्डितरविदत्त वैद्यने अत्यन्त परिश्रमसे देवनागरी भाषा में उलथा रचना किया है ॥

पहली बार ६००

लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर के छापेख़ाने में छपा

एप्रिल सन् १८८८ ई० ॥

भूमिका ॥

प्रकटहो कि महाभारतके अन्तमें हरिवंशपर्व्व जिस्को हरिवंशपर्व्वभी कहते हैं, श्लोक संख्या १७५०० करके श्रीमहाराज व्यासजीने वर्णन किया है इसपर्व्वका माहात्म्य इतर पर्व्वोंसे विशेषतरहै-जब श्रीमहाभारतका आरम्भहोकर समाप्ती होतीहै तो अन्तमें निवारणार्थ इसीपर्व्वका पारायण कियाजाताहै और बहुधा वंशवृद्धि सन्तानोत्पत्तिकेलिये इसीपर्व्वकाश्रवण स्त्री पुरुषआदि संसारिक जनकरते हैं-श्रीमद्वेदव्यासजी महाराजने अन्तको मूलतत्त्व इसीपर्व्वमें वर्णन कियाहै-क्योंकि श्रीसच्चिदानन्द आनन्द कन्द वृन्दावन बिहारी श्रीकृष्णचन्द्रके वंशका वर्णन विस्तार पूर्वक इसी एकपर्व्व में कियाहै और महाभारतके युद्धके विघ्नोंके निवारणार्थ किया गयाहै अन्यत्र किसी पुस्तक में मनोरंजन पुण्यदाता ऐसा चरित्र नहीं है जोकि संस्कृतमें यहपुस्तक अतीवक्लिष्टहै और बहुधा संस्कृतका प्रचारन्यूनहोगया है इसकारण श्रीमन्महाराजाधिराज बैकुण्ठनिवासि काशिनरेश ईश्वरीप्रसाद नारायणसिंह जीकी आज्ञानुसार रघुनाथ गोकुलनाथ गोपीनाथादि कवीश्वरोंने संस्कृतसे अनेक छन्दप्रबन्धोंमें उल्थाकिया-जिसका कि अतीवकालहुआ और दोबार इसयन्त्रालयमें छपी इनमहान् कवीश्वरोंने ऐसे प्रकारके छन्द प्रबन्धमें इस महाभारतका उल्थाकिया कि संस्कृत तो नहीं है परन्तु बहुधा शब्द विशषतर क्लिष्ट हैं और कठिनछन्द हैं इस कारण अनेक पुरुषोंकी इच्छाहुई कि यहसम्पूर्ण पुराणोंकासार महाभारत इतिहाससरलभाषा वार्तिकमें उल्थाकिया जावे तो विशेषतर देशहितैषी होगा जबबहुधा सहस्रों पुरुषोंकी ऐसी आकांक्षाहुई तो इस शुभचिन्तकने वार्तिक सरलभाषामें रचना करनेकी आज्ञादी और ईश्वरकी कृपासे आदि, सभा,भीष्म,शान्तिपर्व्व,मोक्षधर्म्म,आपद्धर्म्म, राजधर्म्म,हरिवंशपर्व्व छपगये हैं और शेष पर्व्वोंमेंसे बहुतोंका उल्था होगयाहै जो छपरही हैं बहुत थोड़ाभाग बाकी है जिस्का उल्था होरहाहै जो बहुत शीघ्रपूर्णहोंगे—

आशाहै कि विद्वज्जन ग्रहणकरेंगे जिस्से और कार्य्योंके करनेका विशेष साहस मिलेगा-जिन महाशयोंको इन पर्व्वों व अन्यपुस्तकोंकी आवश्यकताहो-मुन्शी नवलकिशोरके छापाखाना लखनऊ हजरतगंज व कानपुर सरसय्याघाटसे मँगवालेवें—

(नवलकिशोर)

नवलकिशोर यन्त्रालय लखनऊ
ता० २५ अप्रैल सन् १८८८ ई० ॥

—※—

अथहरिवंशपर्व्व भाषा द्वितीयभागका सूचीपत्र ॥

इति द्वितीयभाग सूचीपत्र समाप्त ॥

महाभारतहरिवंशपर्वभाषा ॥

दूसराभाग ॥

एकसौसरसठका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगेकि हे यज्ञकरनेवालोंमें श्रेष्ठ तिससमयमें कालरूपी शंबरदैत्यकोमार और द्वारकामें प्रद्युम्न आया तब उसको रक्षाके अर्थ आश्चर्य रूप एक आह्निकस्तोत्र बलदेवजीने कहाहै १ सो तिस स्तोत्रको मनुष्य सायंकालमें जपताहुआ देहकी शुद्धिको प्राप्तहोजाताहै और यह स्तोत्र बलदेवजी और विष्णुभगवान् और धर्मकामनाकी इच्छाकरते हुए ऋषिइन्होंने वर्णनकिया है २ और एकदिन अपने घर बलदेवजी के संग बैठाहुआ प्रद्युम्न हाथ जोड़ बलदेवजीसे बोला ३ प्रद्युम्नकहते हैं कि हेकृष्णके बड़भाई हेमहाभाग हे रोहिणी के पुत्र ऐसा कोई स्तोत्र मेरेप्रतिकहो कि जिसके जपनेसे मैं निर्भयहोजाऊं बलदेवजी वर्णनकरतेहैं कि सुर असुर और संपूर्णजगत् इन्होंकापति ब्रह्मामेरीरक्षाकरो और ओंकार और वषट्कार औरसावित्री और अपूर्वविधिऔर नियमविधिऔरसंध्याविधि ५ और ऋग्यजु साम अथर्व ऐसे चारों वेदों के अभिमानी देवता ६ और पुराण और इतिहासमें खिल और अखिल ऐसे अंग और उपअंग ये संपूर्ण मेरी रक्षाकरो ७ और पृथ्वीवायुआकाश जल अग्निये पांचो तत्त्व और इन्द्रियमन बुद्धि सत्त्व रज तम ऐसे तीनों

गुण ८ और व्यान उदान समान प्राण उपान ऐसे पाचों प्राणऔर जिनमें संपूर्णजगत् व्याप्तहै ऐसे सातोंपवन ६ और मरीचि अंगिरा अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु भृगु वशिष्ठ ऐसे महर्षि १० औरकश्यपसे आदिले चौदह मुनि और दशोंदिशा और गणोंसहित नरनारायण ये सम्पूर्ण मेरी रक्षाकरो ११ और एकादश रुद्र और द्वादश आदित्य और आठोंवसु और दोनों अश्विनीकुमार १२ और ह्री श्री लक्ष्मी स्वधामेधा तुष्टिपुष्टि स्मृति धृति ये सम्पूर्ण और अदिति दिति दनु सिंहिका ऐसी दैत्योंकीमाता १३ और हिमवान् हेमकूट निषधश्वेत पर्वत ऋषभ पारिपात्र विंध्य वैडूर्यपर्वत १४ सह्योदय मलयमेरु मन्दर दर्दुर क्रौञ्च कैलास और मैनाक और ये सम्पूर्ण पर्वतमेरी रक्षाकरो १५ और शेष और बासुकि और बिशालाक्ष और तक्षक और एलापत्र और शुक्लवर्ण और कम्बल और अश्वतर १६ और हस्तिभद्र और पिटरक औरकर्कोटक और धनंजयऔर पूरणक और करवीरक १७ और सुमनास्य और उदधिमुख और शृंगारपिण्डक और तीनोंलोकोंमें बिख्यात ऐसामणिनाग १८ और नागोंकाराजा अधिकरण और हारिद्रक और इन्होंसे आदिले और भी अन्य ऐसे नाग मेरीरक्षाकरो १६ और चा और चारोंदिशाओंका चार समुद्र और नदियोंमें श्रेष्ठ गंगा २० और सरस्वति और चन्द्रभागा और शतद्रु और देविका और शिवा और इरावती और विपासा औरसरयू और यमुना २१ और कल्माषी और रथोष्णा और बाहुदाऔर हिरण्यदा और प्लक्षा और इक्षुमती और वृहद्रथा २२और विख्यात चर्मणवती व धूसरा और इन्होंसे आदिले और भी अन्य नदी २३ उत्तरदिशाके रास्ते गमन करनेवाली ऐसीनदी मेरेकोजलोंसे स्नान करवाओ और वेणी और गोदावरी और सीता और कावेरी और कौंकणावती २४ कृष्णा और वेणा और मुक्तिमतीऔर तमसा और पुष्पवाहिनी और ताम्रपर्णी और ज्योतिरथा और उत्पला और उदुम्बरावती २५ और वैतरणी और विदर्भा और नर्मदा और वितस्त्रा और भीमरथ्या और रोला २६ और कालिन्दी और गोमती और

शोणनद ये सम्पूर्ण और अन्यनदी २७ दक्षिणदिशाके रास्तेबहने वाली मेरेको जलों से स्नान करवाओ और क्षिप्रा और चर्मणवती और पुण्यामही और शुभ्रवती २८ और सिन्धु और वेत्रवती और भोजात्रा और बनमालिका और पूर्वभद्रा और पराभद्रा और उर्मिला बरद्रुमा२९ और बेत्रवती और प्रस्थावती और कुंडनदी और पुण्यसरस्वती ३० और चित्रघ्नी और इन्दुमा और मधुमती और उमा और गुरुनदी और तापी और बिमला ३१ विमलोदा और मत्तगंगा और पयस्वनी ये संपूर्ण और अन्यनदी ३२ पश्चिम दिशामें बहनेवाली मेरे को स्नान कराओ और पूर्व दिशामें आश्रित और महादेवने धारणकीहुई ३३ ऐसो पुण्य जलोंवाली भागीरथी नदी मेरे पापोंको दहन करो और प्रभास और प्रयाग और नैमिष और पुष्कर ३४ और गंगातीर्थ और कुरुक्षेत्र और श्रीकंठ और गौतम का आश्रम ३५ और रामहूद और विनशन और रामतीर्थ और गंगाद्वार और कनखल ३६ और कपाल तीर्थ और जंबूमार्ग और सुवर्ण विंदु और कनक पिंगल ३७ और दशाश्वमेधिक और नर नारायण का बदरीकाश्रम ३८ और फल्गु तीर्थ और चंद्रबट और कोकामुख और गंगासागर ३९ और मगधदेशों में तपोद और गंगोद्भेद ये दो तीर्थ ४० और सूकर और योगमार्ग और श्वेतद्वीप और ब्रह्मतीर्थ और रामतीर्थ और वाजिमेध शतोपम ४१ और किल्विषनाशिनी गंगा और वैकुंठ केदार और सूकरोद्भेदन ४२ और शापमोचन और ये संपूर्ण तीर्थ मेरेको पापों से पवित्रकरो और धर्म अर्थ काम इन्हीं का बिषय और यशकी प्राप्ति और सम दम ४३ और बरुणेश और कुवेर और यम और नियम और काल और नय और सन्नति और क्रोध और मोह और क्षमा और धृति ४४ और विद्युत् और मेघ और औषधि और प्रमाद और उन्माद ४५ और यक्ष और पिशाच और गंधर्व और किन्नर और सिद्ध और चारण और रात्रिमें विचरनेवाले और खेचर और जाडोंवाले और प्यारमें विग्रह करनेवाले ४६ और लांबेउदरोंवाले और पीले नेत्रोंवाले

और पवनों सहितमेघ और कला और त्रुटि और लव और क्षण४७ और नक्षत्र और ग्रह और शिशिर से आदिले ऋतु और मास और रात्रिदिन और सूर्यचंद्रमा ४८ और अमोद और प्रमोद और प्रहर्ष और शोक और रज और तम और तप और सत्य और शुद्धि और वृद्धि और धृति और श्रुति ४९ और रुद्राणी और भद्रकाली और भद्रा और ज्येष्ठा और वारुणी और भासी और अलिका और शांडिली ५० और आर्या और कुहु और सिनीवाली और भामा और चित्ररथी और रति और एकनशा और कूष्मांडी और कात्यायनी देवी ५१ और आजनमाता लोहिता और देवकन्या और देवताओं की स्रोगोनंदा ये संपूर्ण बांधवोंसहित मेरीरक्षाकरो ५२ और अनेक प्रकारके वेशोंवाले और अनेक प्रकारकेरूपोंसे अंकितमुखोंवाले और अनेक प्रकार के विषयों के विचार करनेवाले और अनेक शस्त्रों से शोभित ५३ और मेदमज्जा मांसवसा मदिरा इन्होंकोखानेवाले और विलाव और गेंडाके समान मुखों वाले और हस्ती और सिंहों केसेमुखोंवाले ५४ औरकंकवायसगृध्र क्रौंच इन्होंके तुल्य मुखोंवाले और सर्पोंके यज्ञोपवीतोंवाले और चर्मके आच्छादनोंवाले ५५ और खर और भेरी इन्होंकी नाईं शब्दोंवाले और ईर्षाकरने वाले और महाक्रोधी और प्रासाद और सुंदर स्थानवाले और मत्त और उन्मत्त और प्रमत और प्रहार करनेवाले और पीतनेत्रोंवाले और पीतकेशोंवाले और छेदित केशोंवाले ५७ और खड़ेकेशोंवाली और काले केशोंवाली और सफ़ेदकेशोंवाली और दशहजारहाथीकेतुल्य पराक्रमोंवाले और वायुकेतुल्य वेगवाले ५८ औरएकहाथवालेऔर एकपैरवाले और एकनेत्रवाले औरवहुतपुत्र औरअल्पपुत्रोंवाले५९ और सुखमंडी और विडाली और पूतना और गंधपूतना और शीतवातोष्णवेताली और रेवती और ग्रहसंज्ञावाली६० और प्रिय हास्या और प्रियक्रोधा और प्रियावासा और प्रियंवदा और सुख प्रदा और असुखदा और सदाब्राह्मणोंसे प्यारकरनेवाली ६१ और नक्तंचरा और सुखोदकी और पर्वकाल में सदा दारुण रूपवाली

और मातृ ये संपूर्ण माताओंकी तुल्यमेरी नित्यरक्षाकरो ६२ और ब्रह्माकेमुखसे उत्पन्न होनेवाले और रुद्रके अंगसेउत्पन्न होनेवाले ऐसेरुद्र और सनकादिकोंके पदिनेसे उत्पन्न होनेवाले वैष्णवादि ज्वर ६३ और महाभीम और महाबीर्यवाले और गर्ववाले और महाबलवंत और क्रोधवाले और वे क्रोधवाले और स्वभाववाले और देवताओं से बिग्रह करनेवाले ६४ और रात्रिमें बिचरनेवाले और सिंह और जाड़ोंवाले और मित्रोंसेबिग्रह करनेवाले पिंगनेत्रों वाले और बिश्वमें फैलेहुये रूपवाले ६५ और शक्ति ऋष्टि त्रिशूल परिघ प्रासढालखड्गइन्होंको हाथोंमेंधारणकरनेवाले औरपिनक और वज्र और मुशल और ब्रह्मदंडइनआयुधोंमें प्रीतिवाले६६ और दंडोंवाले और कुंडलोंवाले और शूरबीर और जटा और मुकुटोंको धारण करनेवाले और बेद वेदांतमें कुशल और नित्य यज्ञोपवीत धारण करनेवाले ६७ औरसर्पोंकेमुकुटोंवाले औरकुंडलोंवाले और बाजूओंकोधारणकरनेवाले और अनेकप्रकारके बस्त्रोंवालेऔरचित्र विचित्र चंदनादिकोंके लगानेवाले ६८ और हस्ती घोड़ा ऊंट ऋक्ष बिलाव सिंह व्याघ्र इन्होंके तुल्य मुखोंवाले और बराहउल्लू गीदड़ मृग भैंसा इन्होंके तुल्य मुखोंवाले ६९ और वमन और कुवडा और भयानकरूपवाले और छेदितकेशोंवाले औरभी सैकड़ोंहजार हों और एकहजार जटाओंको धारण करने वाले ७० और सफेद बर्णवाले और कैलास पर्वतके तुल्य आकारवाले और कोइक सूर्य कांतिवाले और कोईक मेघकेसे बर्णोंवाले और नीलापर्वतकोतुल्य उपमावाले ७१ और एकपैर और दो पैरोंवाले और दो शिरोंवाले और मांस रत शरीरवाले और बडीजंघाओं वाले और मुखोंको फाड़तेहुये बड़े भयानक रूपोंवाले ७२ और बावड़ी कूवा तलाव समुद्र नदी स्मशान पर्वत वृक्ष शून्य स्थान इन्होंमें बसनेवाले७३ और येसंपूर्णग्रह मेरी सारते रक्षाकरो औरमहागणोंकापति नंदी श्वर ७४ और लोकको भयदेने वाले ऐसे महादेव और विष्णुके ज्वर ७५ और ग्रामणी और गोपाल और गणोंका ईश्वर भृंगरीटि

और देवऔरवामदेव और घंटाकर्ण और करंधम७६ और श्वेतमोद और कपाली और जंभक और शत्रुतापन और मज्जन और उन्मज्जन और संतापन और विलापन ७७ और निजघास और घस और स्थूणाकर्ण और प्रशोषण और उल्कामाली और धम और ज्वालामाली और प्रमर्दन७८ और संघटन और संकुटन और काष्ठभूत शिवंकर और कूष्मांड और कुंभमूर्द्धा और परोचन और वैकृत ८० और अनिकेत और सुरारिघ्न शिव और अशिव और क्षेमक औरपिसताशी और सुरारीऔर हरिलोचन८१ और भीमक औरग्राहकऔरअश्ममय और उपग्रह और अर्यक औरस्कंदग्रह८२ और चपल और समवेताल और तामस और सुमहाकपि औरहृदयोद्वर्तन और एड और कंकणप्रिय और कुंडाशी और हरिश्मश्रु और वोझवाले और मन और पवनकेसे वेगवाले और सैकड़ों हजारहों पार्वतीकेरोषसे उत्पन्न होनेवाले८३ और शक्तिवाले और कांतिवाले और ब्राह्मणोंको भक्तिवाले और सत्यके युद्ध करनेवाले और युद्धमें शत्रुओंके सम्पूर्ण कामनाओंके हरनेवाले ८४ औररात्रिदिन और किला इन्होंमें सम्पूर्ण गुणोंसे कीर्त्तन कियेहुये और सम्पूर्ण गणोंकापति मेरीरक्षाकरो ८५ और नारद और पर्वत और गंधर्व और अप्सराओंकेगण और पितर और कारण और कार्य्य और आधि और व्याधि ८६ और अगस्त्यऔर गालव औरगार्ग्य और शक्ति और धौम्य और पराशर और कृष्णात्रेय और असित और देवल और बल ८७ और वृहस्पति और उतथ्य और मार्कण्डेय और श्रुतःश्रवा और द्वैपायन और विदर्भ और जैमिनि और माठर और कठ ८८ और विश्वामित्र औरवशिष्ठ और लोमशऔर उतंक और रैभ्य और पौलोम और द्वित और त्रित ८९ औरकालवृक्षीय और मेधातिथि और सारस्वत और यवक्रीति और कुशिक और गौतम ९० और संवर्त और ऋष्यशृंग और स्वस्ती आत्रेय और विभांडक और ऋचीक और जमदग्नि और और्व ९१ और भरद्वाज और स्थूलशिरा और कश्यप और पुलह और क्रतु और

बृहदग्नि और हरिश्मश्रु और विजय और कण्व और वैतंडी और दीर्घतापा और वेदगाथ और अंशुमान् और शिव और अष्टावक्र और दधीचि और श्वेतकेतु ६२ और उद्दालक और क्षारपाणि और शृंगी और गौरमुख और अग्निवेश्य और शमीक और प्रमुचुऔर मुमुचु ६३ और ये सम्पूर्ण कहेहुये और अन्य बिगरकहेहुये ६४ श्लाघाकियेहुये और शांतरूप ये सम्पूर्ण मेरी रक्षाकरो औरतीनों अग्नि और तीनोंवेद और त्रयविद्या और कौस्तुभमणि ६५ और उच्चैःश्रवा घोड़ा और धन्वन्तरी वैद्य और हरि और अमृत और गौ और सुपर्ण और दधि और गौरसर्षप६६ और सफेदपुष्प और कन्या औरश्वेतछत्रऔरयवअक्षत और दूर्वा और सुबर्ण और व्याल व्यजन६७और अप्रति हतचक्र और महोक्ष और चन्दन और विष और श्वेतवृष और मत्तहस्ती और सिंह और व्याघ्र और घोड़ाऔर पर्वत६८और पृथिवी औरलाजा और ब्राह्मण और मधु औरपायस और स्वस्तिक वर्द्धमाननंद्यावत ये तीनोंगृहोंके भेदऔर प्रियंगु६६ और श्रीफल और गोमय और मत्स्य और दुन्दुभि और पटहस्वन१००और ऋषियोंकी स्त्री और कन्या और शोभायमान श्रेष्ठआसनवाला धनुष और रोचना और रुचक और नदियोंके संगमोंका जल १०१ और सुपर्ण और शतपत्र और चकोर और नन्दीमुख और मयूर और बद्ध और मुक्त ऐसी मणियोंजटित ध्वजा१०२और कार्यके सिद्ध करनेवाले ऐसे श्रेष्ठ आयुध और मंगलों से युक्त और शोभायमान और क्लेशरहित ऐसा पुण्य १०३ और आयु श्रीजय इन्होंकी इच्छा करताहुआ बलदेवजीने यह स्तोत्र कहाहै और जो कोई विद्वान् इस स्तोत्रको अपने मुखसे किसीको सुनावै या आप सुनै १०४ और स्नानकर पर्व २ में सौबेर स्तोत्रको जपै तब वह मनुष्य बध और बंध और परिक्लेश और व्याधि और शोक और तिरस्कार १०५ और विकलता इन्होंको प्राप्त नहीं होता है और यह स्तोत्र वेद संमित और पवित्र है १०६ और धन और यश और आयु और श्री और स्वर्ग और पुण्य और संतती और कल्याण

और शुभ और क्षेम १०७ और सम्पूर्ण रोगकी शांति और कीर्ति और कुलकी वृद्धि इन्होंको देताहै और जो कोई मनुष्य श्रद्धासेइस स्तोत्रको पढ़े १०८ वह सम्पूर्ण पापोंसे शुद्धहो और उत्तम गतिको प्राप्तहोता है १०९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिसप्तषष्टितमोऽध्यायः १६७ ॥

एकसौ अरसठका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे आत्माको हनन करनेवाला शम्बरदैत्यने जिसमासमेंप्रद्युम्नहरा उसीमासमेंजाम्बवतीके साम्ब उत्पन्नहोता भया १ और बलदेवजीने सांबको बाल्यअवस्थासे शस्त्रविद्यामेंनियुक्त किया और बलदेवजी से उपरांत संपूर्ण यादवोंने सांबका मान किया२ और हननकियेहैं शत्रुराजाजिसने ऐसाश्रीकृष्णसांबकेउत्पन्नहोतेही अपनी द्वारकापुरी में ऐसे आनंदसे बसताभया कि जैसे इन्द्रके बगीचामें देवता ३ और इन्द्रयादवोंकी शोभाको देख कर अपनी शोभाकी निंदाकरनेलगा और श्रीकृष्णके भयसे संपूर्णराजा शांतिको प्राप्तनहींहोतेभये ४ और किसीकसमयके योगसे हस्तिनापुरमें दुर्योधनकोयज्ञमें संपूर्ण पृथ्वीकेराजा आतेभये ५ औरतिसयज्ञ में पुरुषोंके मुखसे श्रीकृष्णकी शोभाकोसुनऔर पुत्रोंसहित श्रीकृष्ण और समुद्रके अंतर्द्वारकापुरी इन्होंकोसुन ६ और अपने नौकरोंको संगले वे संपूर्णराजा श्रीकृष्णकी शोभादेखनेको द्वारकापुरीको जातेभये ७ और दुर्योधन और पांडवयेहैं मुख्यजिन्होंमें ऐसे धृतराष्ट्र के पीछे चलनेवाले और धृष्टद्युम्नादिक ८ और पांड्यदेश के राजा और चोलकलिंग इनदेशों के राजा और बाल्हिकदेशकेऔरद्राविड़ देशके खश के ऐसे संपूर्ण राजा अठारा अक्षोहणिओंको संगले ९ और रैवतपर्वतकी परिक्रमा दे और श्रीकृष्णकी भुजाओंसे पालना कीहुई द्वारकापुरीमें १० प्राप्तहो और कईयोजन चौड़े और लांबे ऐसे अपने २ स्थानमें स्थितहोतेभये ११ और वह शोभायमान श्रीकृष्ण श्रेष्ठ २ यादवोंको संगले और राजाओं के समीप आताभया

और तिन नरदेवों के मध्यमें वह श्रीकृष्ण ऐसे शोभाको प्राप्तहोता भया १२ कि जैसेशरदऋतुमें सूर्य और वह श्रीकृष्णतिन राजाओंका यथायोग्य शिष्टाचारकर १३ और सुवर्णके सिंहासनपै स्थितहोता भया और वेराजाभी अपने यथायोग्य आसनोंपैस्थित होतेभये १४ और चित्र बिचित्र सिंहासनोंपै और पीढ़ोंपै स्थितहुयेयादवोंसहित संपूर्ण राजाओं का समाज ऐसे शोभाको प्राप्तहोताभया १५ कि जैसे देवता और असुरोंकी सभामें ब्रह्माका समाज और तिस सभामें श्रीकृष्णके सुनतेहुये १६ यादव और राजाओंकी चित्र बिचित्र कथाहोनेलगीं १७ और तिसीसमय में मेघकीतुल्य शब्द वाला वायु चलनेलगा और बिजली और गर्जन इन्होंसे युक्त और बड़ा तुमुल दुर्दिन होताभया १८ और बटलीकोहुई जटाओंका भारवाला नारदमुनि बीणा को बजाता हुआ और बद्दलों को भेदन कर १९ आकाशमें दीखनेलगा और अग्निके शिखाकी तुल्य कांतिवाला और शोभायमान और इन्द्रका सखा और समुद्रकीतुल्य ऐसा नारदमुनि राजाओंकी सभामें आकाशसे उतरताभया २० और आसनपै स्थितहुए श्रीकृष्ण से नारदमुनि बोले २१ कि हे भगवन् संपूर्ण देवताओं के तुम आश्चर्य रूपहो और हे महाबाहो इसलोक में तुम धन्य रूपहो और तुमसे अन्य कोई नहीं है २२ ऐसे कहाहुआ श्रीकृष्ण मंद मुसकानकर और नारदके प्रति ऐसे बोले कि हे नारद दक्षिणासहित २३ आश्चर्य और धन्यमैंहीहूं और ऐसे कहा हुआ नारदमुनि राजाओंके मध्यमें फिर श्रीकृष्णसे बोला कि हे श्रीकृष्ण तुम्हारे वाक्यसे पूर्णहुआ मैं अब जाताहूं २४ और तब जातेहुये नारदमुनिको वे राजादेख और श्रीकृष्णसे बोले कि हेभगवन् नारदजीके गुह्य मंत्रको हमनहीं जानते २५ इसने दक्षिणासहित आश्चर्य और धन्य यह क्या बचनकहा २६ सोइस परम मंत्रकोहमक्यों नहीं जानते सो हे भगवन् यह मंत्रसुनानेके योग्य होतो हमको सुनाओ हम सुननेकी इच्छाकरतेहैं २७ तब तिन श्रेष्ठराजाओंके प्रति श्रीकृष्णबोले कि हे राजाओ मैं नारदके प्रति बर्णनकरताहूं यह तुम्हारे

अगाड़ीकहैगा २८ऐसेकहश्रीकृष्ण नारदमुनिसे बोलेकिहेनारदमुनि ये संपूर्ण राजा सुननेको इच्छा करतेहैं सो इन्होंके प्रतितू तत्वार्थ वर्णनकर २९ ऐसे सुन नारद मुनि सुवर्णके आसनपै बैठाहुआ श्री कृष्णका प्रभाव कहनेको प्रवर्तहुआ ३० और नारदमुनि कहनेलगे कि हे राजाओ इस श्रीकृष्णका जितना प्रभाव मैं जानताहूं उसको तुम जितनेराजा सभामें बैठेहो वे सबमेरे मुखसेसुनो ३१ मैंएकदिन प्रातःकाल गंगाजीके तीरपैस्नान करनेको प्राप्तहुआ सो एककोस चौड़ा और दो कोस लंबा ३२ और पर्वत के शिखर कैसे आकार वाला और दो कपालोंवाला ३३ और चारपैरोंसे शिलष्ट और गोला और भेरी बीणाके समान आकृतिवाला और हाथीके चर्मके समूह केसमान उपमावाला ३४ ऐसे जीवको मैं देखताभया सो उसजल चारी जीवको अपने हाथ से स्पर्श कर मैं बोला कि हे कूर्म तू आश्चर्य्यरूप शरीर वालाहै और धन्यहै ३५ क्योंकि तू अभेद्यरूप दोनों कपालोंसे आवृतहुआ निःसंदेह इसजल में बिचरता है ३६ तब वह कछुवा मनुष्यकीनाईं वाणीसे मेरेको बोला कि हेमुने मेरे में क्याआश्चर्य है और मैं कैसे धन्यहूं ३७ और धन्यतो यहगंगा जीहै क्योंकि इसगंगाजीमें मेरेसरीखे अयुतजीव बिचरते हैं ३८ ऐसेसुनमैं आश्चर्य्यसे युक्तहुआ गंगामेंजाके प्राप्तहुआ और गंगासे मैं बोलाकि हे गंगेतू धन्य है और नित्य आश्चर्यसे भूषित है ३९ क्योंकितूबड़ी२देहवाले जीवोंसेशोभितहै और तपस्वियोंकेआश्रमों की रक्षाकरतीहुई समुद्रमें जातीहै ४० और ऐसे संभाषण को हुई गंगा नारद से बोली ४१ कि हे देवताओं के गंधर्व और हे कलह प्रिय और मेरेको ऐसे मतक है क्योंकि मैं धन्यनहींहूं और आश्चर्य सेभी शोभित नहींहूं ४२ और हेद्विज संपूर्ण आश्चर्यों कोकरनेवाला और धन्यरूप इसलोकमें समुद्रहै ४३ क्योंकि मेरे सरीखे बिस्तार वाली सेकड़ों नदीतिसमें जाकेप्राप्त होतीहैं ऐसे गंगाके बाक्यको सुन और मैं समुद्रपै जाकेप्राप्त होताभया ४४ और मैं बोलाकि हे समुद्र तू लोकमें धन्य रूपहै और आश्चर्य रूपहै इससे तू संपूर्ण

जलोंकीयोनी है और ईश्वरहै ५४ और जलोंको बहाने वाली और लोकोंको पवित्र करनेवाली और लोकोंको नमस्कार कीहुई ऐसी नदी रूपस्त्री तेरेको जाकेप्राप्त होतीहैं ४६ ऐसेसुन समुद्र मेरेप्रति बोलाकि हे देव गंधर्ब मेरेको ऐसे मतक है ४७ मैं आश्चर्य रूप नहींहूं हेमुने यह पृथ्वी धन्यहै जिसके ऊपर मैं स्थितहूं ४८ और इस लोकमें पृथ्वीसे उपरांत आश्चर्य क्याहै ऐसे सुन मैं समुद्र के वाक्य से पृथ्वी तलमें पृथ्वी पै स्थित होताभया ४६ और आश्चर्य सेयुक्तहुआ मैं पृथ्वी से बोला कि हे धरित्रि और हे देहधारियों की योनि और हेशोभनेतूधन्यहै ५० और तेरेकरके मनुष्योंमें आश्चर्य है और मनुष्योंके तू अरणि रूपहै ५१ और तेरेहीसे भूतों के क्षमा उत्पन्न होतीहै और साम युक्त स्तुतिरूपी वचनों से क्षोभ कीहुई पृथ्वी५२अपनीधीर्यताको त्याग और मेरेप्रतिबोली कि हे देवगंधर्ब हे कलहप्रिय ५३ मेरेको ऐसेमतकहो क्योंकि मैंधन्य और आश्चर्य रूप नहींहूं सोहे द्विजोंमें श्रेष्ठये संपूर्ण पर्वतधन्यहैं जोमेरेकोधारण करतेहैं५४सो मैंधरणीके वाक्यसे पर्वतों पै जाके प्राप्तहुआ५५और पर्वतोंसेमैं बोलाकि हेपर्वताओ तुमधन्य औरआश्चर्यरूप दीखतेहो और सुवर्ण और रत्न और संपूर्णधातु ५६ इन्होंकी खानोंवालेहो और स्थावरोंमें श्रेष्ठ और वनोंसे शोभित ऐसेपर्वत मेरे बचन को सुन ५७और शांतियुक्त वचनबोले कि हे ब्रह्मर्षे हमधन्यनहींहैं और हमारे आश्चर्यभी नहींहै ५८ किंतु प्रजाकापति ब्रह्म धन्यहै और संपूर्ण देवताओं में आश्चर्य रूप है ५६ और मैं ऐसे सुन संपूर्ण जगत्‌काउत्पन्नकरनेवाला और अव्यय ६० ऐसेब्रह्माके पासजाके और शिरको नवाताहुआ ब्रह्माकी स्तुतिकरताभया ६१ और अपने वाक्यकी पूर्णताके अर्थ मैं ब्रह्माको सुनाने लगा कि इस जगत् के गुरुहो और तुमहीं आश्चर्य और धन्यरूपहो ६२ और हे भगवन् इसउत्पन्नहुए जगत्‌को तुमसे अन्य मैं नहीं देखता सोयह स्थावर और जंगम ६३ऐसा दोप्रकार का जगत् तुमसेही उत्पन्न हुआहै और देवता और दानव और मनुष्य और संपूर्ण जगत् येसबतुम्हारी

दृष्टीसे उत्पन्न होतेहैं ६४ ऐसेसुन संपूर्णलोकोंका पितामह ब्रह्मा मेरेप्रतिबोला कि हेनारद आश्चर्य और धन्य ऐसे वाक्योंसे मेरेप्रति क्या कहताहै ६५ सो हे नारद आश्चर्य और धन्यरूपतो वेद हैं क्योंकि लोकोंको तत्त्व अर्थ धारणकरातेहैं ६६ और ऋगसामयजु अथर्व इनचारों वेदोंमें मेरेको तन्मय जान ६७ और तिन वेदोंने मुझेधारणकर रक्खाहै और मैंनेवेवेद धारणकर रक्खे हैं ६८ और ऐसेब्रह्माके वचनसे प्रेरणा कियाहुआ वेदोंकेपास जाता भया और मंत्रों सहित चारों वेदों से मैं कहने लगा ६९ कि हे वेदाओ तुम धन्यहो और पवित्रहो और आश्चर्यसे भूषितहो और ब्राह्मणों के आधारहो ऐसेब्रह्माने कहाहै ७० और वेवेद ऐसेसुन अगाड़ी स्थित हुये मेरेसेबोले कि आश्चर्य और धन्यरूप तोपरमेश्वर संबंधीयज्ञ हैं क्योंकि यज्ञोंके अर्थ हम ब्रह्माके रचेहैं यासेहमसेश्रेष्ठ यज्ञहै और यज्ञोंसेश्रेष्ठ हमनहींहैं ७१ सो ब्रह्मासे श्रेष्ठ वेदहैं और वेदोंसेश्रेष्ठ यज्ञहैंऐसेवेदोंकेवचनकोसुन और मैंगंभीरवाणियोंसे यज्ञों से बोला ७२ कि हे यज्ञाओ तुम्हारे में परमतेज दीखताहै क्योंकि ब्रह्माके कहेहुये वाक्य वेदोंने मेरेसे प्रकट कियेहैं ७३ सो इसलोकमें तुम से अन्य आश्चर्य और किसी में नहीं दीखताहै सो ब्राह्मणोंके कुलमें उत्पन्न होनेवाले तुमधन्यहो ७४ क्योंकि तुम्हारे तृप्त किये हुये होमोंसे अग्नि और भागोंसे देवता और मंत्रोंसे महर्षि ७५ तृप्तिको प्राप्तहोतेहैं ऐसेकहनेके अनंतर यूप और ध्वजाओं सहित अग्निष्टोमादि यज्ञ मेरे प्रतिकहनेलगे ७६ कि हेमुने आश्चर्य और धन्यशब्द हमारेमें नहींहै और आश्चर्य्यरूपतो एक विष्णु भगवान् हैं सोवेहमारी परमगती रूपहैं ७७और अग्निमें होमाहुआ घृतको जोहम भोजनकरतेहैं उस संपूर्णको लोकमूर्त्ती विष्णुभगवान् प्राप्त करदेतेहैं ७८ ऐसेयज्ञोंकेबचनकोसुन और विष्णुके प्राप्तिकी इच्छा करताहुआ पृथ्वीपै प्राप्तहोताभया औरतुमसेयुक्तहुआ यह श्रीकृष्ण मैंनेदेखा ७९ और आश्चर्य और धन्यरूप हेश्रीकृष्ण तुमहो ऐसेजो मैंनेकहाथा सोहेराजाओवह आश्चर्य और धन्यरूप तुम्हारेमेंस्थित

हुआयह श्रीकृष्ण है ८० और दक्षिणा सहित संपूर्ण यज्ञोंकी गति विष्णुभगवान्हैं८१और दक्षिणासहित आश्चर्य औरधन्य यह जो मेरा प्रश्नथा सो समाप्तहुआ ८२ और जो प्रश्न तुम्होंने मेरेसे पूछा सो तिसकानिर्णय तुम्हारे अगाड़ी कहचुका ८३ ऐसे कह नारदमुनि स्वर्ग को जातेभये और सेना और बाहनों सहित संपूर्ण राजा भी अपने २ देशोंको जातेभये ८४ और अग्निकी तुल्य उपमा वाले यादवों सहित श्रीकृष्ण भी अपने भवन में प्राप्तहोता भया ८५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिअष्टषष्टितमोऽध्यायः १६८ ॥

एकसौउनहत्तरका अध्याय॥

जनमेजय कहने लगे कि हे वैशंपायन बड़ी भुजाओं वाला और जगत्कापति ऐसाश्रीकृष्णका परम माहात्म्य सुननेकोमैं फिरइच्छा करताहूं १ क्योंकि महात्मा और पुराण पुरुष ऐसा श्रीकृष्ण के कर्मोंके २ अनुक्रमको सुनतेमेरे तृप्तिनहीं होती है ऐसेसुन वैशंपायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय ३ श्रीकृष्ण के प्रभावका अंत कहने को सौवर्षोंतक भी मनुष्य नहीं समर्थ होताहै परंतु किंचित् अद्भुत प्रभाव को मैं वर्णन करताहूं सो तू सुन ४ शरशय्यापै सोता हुआ भीष्मजीसे प्रेरणा किया हुआअर्जुन५और राजाओंके मध्यमेंबैठाहुआ बड़ाभाई युधिष्ठिर के प्रति श्रीकृष्ण के माहात्म्य को वर्णन करनेलगा ६ अर्जुन कहनेलगा कि हे भ्राता संबंधियों के देखनेके अर्थ द्वारकामें गयाहुआ और भोज वृष्णि अंधक ऐसे उत्तम यादवोंसे पूजनकिया हुआ बास करताभया ७ सो महाबाहु और धर्मात्मा ऐसा श्रीकृष्ण एक दिनकेवास्ते कर्मकरनेको दीक्षित होताभया ८ और दीक्षावाला और आसनपै बैठाहुआ ऐसे श्रीकृष्ण को एक ब्राह्मण प्राप्तहो और कहनेलगा कि हे भगवन् तुम मेरी रक्षाकरो और तुम्हारे रक्षाकरनेमें अधिकारहै और रक्षाकरनेवाला पुरुष धर्म के चतुर्थांश फलको प्राप्तहोता है ९ ऐसे सुन श्री कृष्ण कहनेलगे कि हे ब्राह्मण तू डरेमत और मैं तेरी रक्षाकरूंगा और

वड़े दुःखसेभी होनेवाला कृत्यहै सो उसको मेरेप्रति तत्त्व से वर्णन कर १० और तेरा कल्याणहो ऐसे सुन वह ब्राह्मण कहने लगा कि हे महाबाहो मेरे पुत्र हो होके मृत्युको प्राप्तहोताहै इसप्रकार से मेरे तीनपुत्र मरचुके और हे कृष्ण अब मेरे चौथे पुत्रकी रक्षा करन को तुम योग्यहो ११ और हे जनार्दन अब ब्राह्मणीके पुत्र होनेका समयहै सो जैसे मेरेपुत्रकी मृत्यु नहोवे तैसे तुम बिधान करो १२ अर्जुन कहता है कि वह श्रीकृष्ण ब्राह्मणके वचनको ऐसे सुन और मेरेप्रति बोलाकि हेअर्जुन मैं यज्ञमें दीक्षितहूं औरब्राह्मणों की रक्षा तो वृद्धावस्थावाले पुरुषोंको भी करनी उचित है १३ सो हे नराधिप ऐसे श्रीकृष्णके बचनको सुन मैं बोला कि हे गोविन्द मेरेको आज्ञादो मैं ब्राह्मणकोभयसे रक्षाकरूंगा १४ ऐसे कहाहुआ श्रीकृष्ण मन्द मुसकानकर और मेरेको ऐसे बोला कि हे अर्जुन तू रक्षा करनेमें समर्थ है तब मैं लज्जित होताभया १५ और वह श्री कृष्ण मेरेको लज्जितहुआ जान और फिर ऐसे बोला कि हेकौरवों में श्रेष्ठ जो तू रक्षा करने में समर्थ है तोगमनकर १६ और बलदेव और प्रद्युम्न इन्होंके बिना और वृष्णि अंधक इन्हों में श्रेष्ठ महा रथी और तेरे अगाड़ी चलतेहुये ये भी सम्पूर्ण रक्षाकरो १७ और ब्राह्मणको अगाड़ीकर और सम्पूर्ण यादवों की सेनाकोसंगले और मैं ब्राह्मण के स्थानको जाताभया १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिनवषष्टितमोऽध्यायः १६९॥

एकसौसत्तरका अध्याय ॥

अर्जुनकहनेलगे कि हे भरतर्षभ एकमुहूर्तमें हमसेनासहिततिस ग्राममें जाके प्राप्तहुए १ और प्रकाशकरतेहुए पक्षी और क्रूर २ वचनोंको बोलतेहुए मृगये संपूर्ण जलती हुई दिशा में बसते हुए मेरेको भय निवेदन करतेभये २ और संध्याकावर्ण जयाके पुष्पको तुल्यपीला होताभया और सूर्यकांतिसे रहित होता भयाऔरउल्का पातहोनेलगा और पृथ्वीकंपनेलगी ३ और दारुण और लोमहर्षी

को उपजानेवाले ऐसेमहान् उत्पातोंको देख और इच्छाकरते हुये मनुष्योंको मैं आज्ञादेताभया ४ और सात्यकि आदि वृष्णि अंधक ऐसेयादव और मैं अपने २ रथोंमेंबैठ और हथियारोंको सांधस्थित होतेभये ५ और अर्द्धरात्रिके समय में भयसे व्याकुलहुआ ब्राह्मण उहांआके हमसे कहने लगा ६ कि मेरीब्राह्मणीकेपुत्रहोनेकासमय अब प्राप्तहुआ है सो जैसेपुत्रकी रक्षाहोवै सेहीतैय्यारहो और रक्षा करो ७ ऐसे कह ब्राह्मण अपने घरगया तब एक मुहूर्त मात्रमेंहीं ब्राह्मणके भवन में हरलिया २ ऐसारोदन सहित शब्दकोमैं सुनता भया ८ और हराहुआ बालककी आकाशमें उंह २ ऐसी बानीभीमैंने सुनी और आकाशमें किसीराक्षसको भी नहीं देखता भया ९ और तिसोवक्त हमनेवाणों की बर्षा से संपूर्ण दिशा आच्छादितकी परंच वह बालक हरहीलिया १० और वह ब्राह्मण बड़ा आर्तशब्द को करताहुआ और मेरेको बड़ी कठोर२बानी सुनानेलगा ११ कि मैं बालककी रक्षाकरूंगा ऐसेप्रतिज्ञाकर और नहीं रक्षा करता भया सो हे दुर्मते तू रक्षा करने के योग्य नहीं है १२ क्योंकि तू अतुल बुद्धिवाले श्रीकृष्ण के संग ईर्षाकरता है और जो यहां श्रीकृष्ण होता तो क्या हमारा पुत्र यहांसे जाता १३ और जैसेधर्मकीरक्षाकरनेवाला पुरुष धर्मके चतुर्थभाग को प्राप्तहोता है वैसेही हे मूढ़ पापके चतुर्थांशको विना रक्षाकरनेवाला प्राप्तहोता है १४ औरमैं रक्षाकरूंगा ऐसेतैंनेकहाथा और रक्षाकीनहीं सोतेरा गांडीव धनुष और पराक्रम और यश ये संपूर्ण वृथाहीहैं १५ और मैं ऐसेब्राह्मणका बचन सुन और संपूर्ण यादवों को संगले और द्वारकापुरी को प्रस्थानकरता भया १६ और द्वारकापुरीमें प्राप्तहो और श्रीकृष्णकोदेख लज्जा और शोकको मैं प्राप्तहोताभया १७ और वहब्राह्मण मेरेकोलज्जायमान देख और श्रीकृष्णके समीप निंदा करता हुआ बोला कि मेरीमूढ़ताको देखो मैं होजड़ाके बचन मेंश्रद्धाकरता भया १८ क्योंकि प्रद्युम्न और अनिरुद्ध बलदेव श्रीकृष्ण इन्होंसे अन्य मृत्युसे रक्षाकरनेमें कौनराजासमर्थहै १९ सो वृथाबोलने वा-

ला और अपने आत्माकी श्लाघा करनेवाला ऐसे अर्जुनको और इसके धनुषको धिक्कारहै २० ऐसे ब्राह्मण के मुखसे निन्दाकोसुन और वैष्णवी विद्याको प्राप्तहो और धर्मराजकी संयमनी पुरीको जाताभया २१ और तिसपुरीमें ब्राह्मणका पुत्रनहीं दीखातब और अग्निऔरनिऋति और सोम और कुवेरऔर वरुणइन्होंकीपुरियोंमें जाताभया २२ पीछे रसातल स्वर्ग इनआदि स्थानों में जाके ढूंढ़ने लगा परंतुकहींभी ब्राह्मणका पुत्रमिला नहीं २३ तब अपनी प्रतिज्ञाको भ्रष्टमान फिर अग्निमें जलनेकी इच्छाकरता हुआ मेरेको श्रीकृष्ण और प्रद्युम्न वे दोनों निवारण करतेभये २४ और श्री कृष्णबोलाकिमैं ब्राह्मणके पुत्रकोतुझे देऊंगाऔरतूअपनातिरस्कार मतमान और तेरीकीर्तिको संपूर्णमनुष्य पृथ्वीपरस्थापितकरेंगे२५ ऐसे श्रीकृष्ण मेरेको धीर्यतादे और स्नेह पूर्वक संभाषणकर और तिस ब्राह्मणको शांतकर और दारुक सारथीको बोला कि सुग्रीव औरसैव्य और मेघ पुष्प और वलाहक२६इनचारों घोड़ाओंकोरथ में जल्द युक्तकर ऐसेसुन दारुकरथको तय्यारकरताभया और तिसरथमें ब्राह्मण और दारुकको बैठा २७ और मेरेसे बोले कि तू घोड़ाओंको हांक तब श्रीकृष्ण और मैं और ब्राह्मण और दारुकये चारों २८ रथमें स्थितहो हे युधिष्ठिर सौम्यरूप उत्तरदिशाको गमनकरतेभये ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिसप्ततितमोऽध्यायः १७० ॥

एकसौइकहत्तरका अध्याय ॥

अर्जुनकहनेलगा कि हेयुधिष्ठिर पर्वत और नदीऔरबनइन्हों को अतिक्रमणकर और समुद्र में प्राप्तहोतेभये १ और वह समुद्र पूजा सामग्रीको ग्रहणकर और हाथोंको जोड़ता हुआ बोला कि हे श्रीकृष्णमेरेको आज्ञादो मैं तुम्हारीअवक्याखातिरीकरूं २औरभगवान् ऐसे सुन और पूजा सामग्रीको ग्रहणकर और समुद्रसे बोले कि हे नदीपते मैं रथकेमार्गको इच्छाकरताहूं सो मेरेको रस्तादे ३

ऐसे सुनवह समुद्रहाथजोड़ श्रीकृष्णसे बोलाकि हेभगवन्तुम ऐसे मतनहींकरो क्योंकि तुम्हारेसे अन्यपुरुषभी मेरे ऊपरसे उतरनेलगजावेंगे ४ सो हे जनार्दन तुमसेहींपहिले मैंअगाधस्थापितकिया हूं सो तुम्हारे मार्गसे मैंलघुताको प्राप्तहोजाऊंगा ५ सो हेगोविंद ऐसे बिचार और जैसेयोग्यहोवैसेहीतुमकरो ६ श्रीकृष्णबोले कि हे समुद्र ब्राह्मण और मेरे अर्थ मेरे बचनको पूराकर और मेरेसेअन्य और कोई पुरुष तेरा तिरस्कार नहीं करेगा ७ ऐसे सुनशापके भयसे फिर समुद्र श्रीकृष्णसेबोला कि हे भगवन् मैं मार्गदूंगा ८ और हे कृष्ण रथमें बैठ जिसरस्ते आपजाओगे उस जलको मैं शोषणकरूंगा ९ ऐसेसुन श्रीकृष्ण बोलेकि अनेक प्रकारके रत्नोंके समूहोंको मनुष्य नहीं जाने १० इसलिये तू शोषताको प्राप्त नहीं होगा यहबर मैंनेपहिले दियाहै ११ सोहेसमुद्र तूजलको रोक जैसे मैं सुखसे चलाजाऊं और तेरेरत्नोंके प्रमाणको कोई पुरुष नहीं जानेगा १२ ऐसेसुन समुद्र रास्ता देताभया औरमणियोंसे प्रकाशमान रस्ताको प्राप्तहो १३ और एमेसमुद्र और कुरु और उत्तरान्वय और गंधमादन इन्होंको अतिक्रमणकर १४ और सातपर्वतोंको जाके प्राप्तहुआ और जयंत और बैजयंत और नील और रजत पर्बत १५ और महामेरु और कैलास इंद्रकूट येसातों पर्वत पूजा सामग्रीको ग्रहणकर १६ और हाथजोड़के भगवान्की स्तुतिकर बोले कि हेश्रीकृष्ण हमको आज्ञादो अबहम तुम्हारा क्याकरें १७ ऐसेसुन भगवान् बोले कि हेपर्वताओ मेरेरथको मार्गदो १८ सो हेभरतर्षभ वेपर्बत श्रीकृष्णके बचनको सुन और जातेहुये श्रीकृष्णको इच्छापूर्बक मार्ग देतेभये १९ और समुद्रों सहित सातों द्वीप और द्वीपोंके प्रति सात २ पर्बत और लोकालोक पर्बत इन्होंको उल्लंघनकर और महा अंधकारमें जाके प्राप्तहुये २० और तिसपंकयुक्त अंधकारमें वेघोड़ा बड़ेदुःखसे रथको बहने लगे २१ और पर्बतरूप अंधकारको प्राप्तहो और यत्नरहित हुये वेघोड़ा स्थितहोते भये २२ तब श्रीकृष्ण अपनेचक्रसे अंधकारको दूरकर और रथके

मार्गके उनमान माफिक आकाशको दिखाताभया २३ और आकाशको देख और तिस अंधकारसे निकस और अरजीआ हूं ऐसे ज्ञानको प्राप्तहो और निर्भय होता भया २४ और तेजसे प्रकाशमान और संपूर्ण लोकोंको धारण करताहुआ ऐसे एक पुरुष को आकाशमें देखता भया २५ रथ और ब्राह्मण और मुझे उहांछोड़ प्रकाशमान और तेजका खजानारूप ऐसेभगवान् के शरीर में श्रीकृष्ण प्राप्तहोते भये २६ और ब्राह्मणके चारोंपुत्रोंको ग्रहण कर और एकमुहूर्तमें उहांसे निकला २७ और ब्राह्मण की गोदमें उन बालकोंको देतेभये २८ और वह ब्राह्मण पुत्रोंको देख खुशीको प्राप्तहुआ और मैंभी प्रसन्नहुआ आश्चर्यको प्राप्तहोता भया २९ और ब्राह्मणकेपुत्र और हमसब जिसमार्ग गयेथे उसीमार्ग उलटे आतेभये ३० और हे नृपसत्तम ध्यानसे पहिलेही एकक्षणभर में द्वारकापुरीमें प्राप्तहोते भये ३१ और पुत्रोंसहित ब्राह्मणको वह श्रीकृष्ण भोजन करवाय और बहुतसाधनसे तृप्तकर उसके घरमें प्राप्त करता भया ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिएकसप्ततितमोऽध्यायः१७१॥

एकसौबहत्तरका अध्याय ॥

अर्जुन कहने लगा कि ऋषियोंमें श्रेष्ठ ऐसे सौ ब्राह्मणों को भोजन करवा वह श्रीकृष्ण कृतकृत्य होताभया १ और हेभारतमें और वृष्णि और भोज ऐसे यादुओंके संग भोजन कर और चित्रविचित्र और अनेक प्रकारकी दिव्यकथा वर्णन करनेलगा २ और तिनकथाओंके अंतमें मैंने जो वृत्तांत देखाथा सो वृत्तांत श्रीकृष्णसे पूछनेलगा ३ कि हे कमलेक्षण ऐसा अगाध समुद्र तुमने कैसेतुच्छ करदिया और पर्वतोंमें रस्ता कैसे किया ४ और ऐसाघोर अंधकार चक्रसे कैसे उत्पाटन किया और बड़ेपरम तेजमें तुम प्रविष्ट कैसेहोते भये ५ और हेप्रभो उसने वे बालक किस वास्ते हरन किये ६ और ऐसेदीर्घमार्ग में जाके और उलटा जल्द

प्राप्तकैसे होताभया सो हे केशव यह संपूर्ण वृत्तांत मेरे प्रति तुम वर्णन करो ७ श्रीकृष्ण वर्णन करनेलगे कि मेरे दर्शनके अर्थ तिस महात्माने वे बालक हरन किये और जिसको मैं देखता भया ८ वह महान् तेजरूपब्रह्महै ९ और हेभरतश्रेष्ठमैं उसीकारूपहूं और वह सनातनमेरातेजहै और वहमेरीप्रकृतिहंकारादिकोंसे परहै और व्यक्तहै और अव्यक्तहै और सनातनी है १० और तिस प्रकृतिको प्राप्तहो महाज्ञानी मुक्तिकोप्राप्त होजातेहैं ११ और सांख्ययोग के जाननेवालेऔरतपस्वी इन्होंकीगतिरूपहै और हेअर्जुन जिसजगह सम्पूर्ण जगत् बिभागको प्राप्तहोताहै वहसम्पूर्ण परमब्रह्म है १२ और मेरेको तू उसीकातेज जाननेको योग्यहै और स्तब्धजलवाला वह समुद्रभी मैंहींहूं १३ और रुकनेवाला जलभी मैंहींहूं और जो अनेक प्रकारके सातपर्वत तैंने देखेथेवेभी मैंहींहूं १४ और पंकरूप अंधकारभी मैंहींहूंऔर अंधकारका पाड़नेवालामैंहींहूं१५और संपूर्ण भूतोंका काल और सनातन धर्म और चंद्रमा आदित्य और महा पर्वत और नदी और तलाव १६ और चारों दिशा और चारों वर्ण और चारों आश्रम १७ ये सम्पूर्ण हे अर्जुन मेराही रूपजानो १८ अर्जुन कहनेलगा कि हे भगवन् हे भूतोंकेईश मैं तेरे जानने की इच्छा करताहूं सो हे पुरुषोत्तम मेरेप्रति तुमवर्णनकरो और तेरेको नमस्कारहै १९ श्रीकृष्ण कहनेलगा कि हेपांडवब्रह्म और ब्राह्मण और तप और सत्य २० और उग्र और बृहत् और अंधकार इन सम्पूर्णोंकोमेरेहीसे उत्पत्तीहै और हे महाबाहो मैं तेराप्याराहूंऔर तू मेरा प्रियहै २१ इससे मैं तेरे अगाड़ी कहूंगा और अन्यके प्रति कहनेको मैं उत्साह नहीं करता और यजु साम ऋग् अथर्वयेचारों वेद और ऋषि और देवता और यज्ञ और पृथिवी वायु आकाश जल अग्नि ये पांचोंतत्त्व २२ और चंद्रमा सूर्य और दिनरात्रि और पक्षमास ऋतु और मुहूर्त और कला और क्षण और संवत्सर २३ और अनेक प्रकारके मंत्र और शास्त्र और विद्या और जाननेवाली वस्तु ये सम्पूर्ण मेरेसेहो उत्पन्न होतेहैं २४ और हे कुन्तीके पुत्र

क्षय और उत्पत्ति यह मेराहीरूपहै और सत् असत् यहभी मेराही आत्माहै२५ अर्जुन कहनेलगा कि प्रसन्नहुए श्रीकृष्णने मेरेप्रति ऐसे कहा तबमेरामन श्रीकृष्णमेंनिश्चलहोताभया२६ और हेराजन् जो तू मेरेप्रति पूछताहै वह श्रीकृष्णका माहात्म्य मैंनेसुनाभी और देखाभी २७ वैशम्पायनजी कहनेलगा कि हे जनमेजय वह कुरुओं में श्रेष्ठ युधिष्ठिर धर्मात्मा ऐसे सुन श्रीकृष्ण की पूजनकरता भया २८ और ऐसे सुन और सभामें स्थित राजा और भ्राताओं सहित युधिष्ठिर आश्चर्यको प्राप्त होताभया २९ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिद्विसप्ततितमोऽध्यायः १०२॥

एकसौतिहत्तरका अध्याय॥

जनमेजय कहनेलगा कि हे वैशम्पायन यादवों में सिंहरूपऔर बुद्धिमान् ऐसे श्रीकृष्णके अपरिमेय कर्मोंकी मैं फिर सुननेकोइच्छा करताहूं १ और अनेकप्रकारके और अद्भुत और असंख्येय और दिव्य प्रकृत ऐसे २ श्रीकृष्णके कर्मोंको सुन मैं बहुत प्रसन्न होता हूं सो हे तात मेरेप्रति वर्णनकरो ३ वैशम्पायन जी कहनेलगे कि हे महाबाहो बहुतसे आश्चर्यरूप श्रीकृष्णके चरित्र मैंने तेरे प्रतिवर्णन किये परंतु कुछ कर्मोंकाअन्त नहींआता४तथापिलेशमात्रसे मैंवर्णन करूंहूं ५ सो तू एकाग्रमनकरसुन ६ द्वारकापुरीमें बसताहुआ और यादवोंमें सिंहरूप ऐसा श्रीकृष्ण बहुतसे राजाओंके राज्योंको क्षोभित करताभया७ और प्राग्ज्योतिषपुरमें प्राप्तहो और विचक्रनाम दैत्यको मारतेभये ८ और समुद्रमें नरकासुर को मार और रणमें इन्द्रको जीत और पारिजात वृक्षको हरतेभये ९ और तालाब में वरुण भगवान् को जीततेभये और करुषकापुत्र और दक्षिण का राजा ऐसे दन्तवक्र को हनन करतेभये १० और एकसौ एक अपराध करने के बाद शिशुपाल को मारते भये और शोणितपुर में जाके महा पराक्रमवाला और एकहजार भुजाओंवाला और महादेवजीसे रक्षाकिया हुआ ऐसा बलिके पुत्र बाणासुर को महायुद्ध

मेंभुजा छेदनकर और जीवताही को छोड़तेभये ११ और पर्वत में अग्नि को जीतते भये और रणमें साल्व और भौमासुर को मारतेभये १२ और समुद्रको क्षोभकरवा और पांचजन्य दैत्य को बशकरतेभये और हयग्रीव और बहुतसेमहाबली राजाओंकोहनन करताभया १३ और जरासन्धको बधकर बहुतसे राजाओंको छुटाताभया और रथमेंबैठ और बहुतसे राजाओंको जीत और गांधार राजाकी पुत्रीको हरताभया १४ और भ्रष्टहोगयाहैराज्यजिन्होंका ऐसेशोकसे आर्तहुये पांडवोंको रक्षाकरताभया औरइन्द्रके खांडव बनको जलातेभये १५ और अग्नि का दियाहुआ गांडीव धनुष अर्जुनको संपादन करतेभये और हेजनमेजय १६ घोरमहा युद्धमें पांडवोंका सारथीपना करतेभये १७ और इस श्रीकृष्ण सेहीयादुवोंका कुलवृद्धिको प्राप्तहोताभया और भारतयुद्धके अंतमें तेरेपुत्रों कोमैंउलटाल्यादूंगा ऐसोकुंतीके अगाड़ीकोहुई प्रतिज्ञाको पूरीकरते भये १८ और बड़ेतेजवाला नृगराजा को दारुण शापसे छुटाते भये १९ और युद्धमें यवन दैत्यको और मैंद और द्विबिद ऐसेबानरों को २० और जांबवान् ऋक्षको जीतताभया और सांदीपिनीगुरूका पुत्रऔर तेरापिता २१ ऐसेधर्मराजके गयेहुओंको जिवाताभयाऔर संग्राममें प्राप्तहो बहुतसे राजा मृत्युको प्राप्तहोतेभये २२ और अद्भुत जयको प्राप्तहो और बहुतसे राजाओं को हनन करता भया और हेजनमेजय जो तैंने श्रीकृष्णका चरित्र पूछाथा सोमैंने तेरे अगाड़ी बर्णनकिया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिद्विसप्ततितमोऽध्यायः १७२ ॥

एकसौचौहत्तरका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा कि हेवैशंपायन यादुवोंमें सिंहरूप और बुद्धिमान् ऐसे श्रीकृष्ण के अपरिमित कर्म मैंने तुम्हारे मुखसे फिर सुने १ और तुमने पूर्वबाणासुरबर्णन कियाहै २ सो हे तपोधन उस को बिस्तार पूर्वक सुननेकी इच्छा करताहूं और देवताओं काभी

देवता ऐसेमहादेवके वहमहासुर कैसेपुत्र भावको प्राप्तहोताभया ३ कि गणोंसहित तिसमहात्मा महादेवने तिसकी रक्षाकी ४ और सौ भाइयोंमेंवड़ा और दिव्य अस्त्रोंको धारण करनेवाले ५ ऐसेएक हजारभुजाओंसेयुक्तऔर बड़ेशरीरोंवालेऔर असंख्य ऐसेसैकड़ोंसेनाओंसेयुक्त ऐसावाणासुरतिसे श्रीकृष्णने युद्धमें कैसे जीतलिया ६ और संरब्ध और युद्धको इच्छाकरताहुआ ऐसावाणासुर जीताही कैसेछोड़दिया वैशंपायनजी कहनेलगे कि हेजनमेजय तू सावधान होकेसुन ७ अमित तेजवाला श्रीकृष्णका और वाणासुरका जैसे महाविग्रह होताभया और जैसेतिस रणमें श्रीकृष्णके संग रुद्रका युद्धहोताभया ८ और जैसेरणमें जीताहुआ वाणासुरको छोड़तेभये और जैसेमहादेवने वाणासुरको वरदियाहै ९ और जैसेरुद्रके पुत्र भावको वाणासुर प्राप्तहोताभया ऐसेयह संपूर्ण वृत्तांत हेजनमेजय तू सुन १० और एकदिन खेलताहुये स्वामिकार्तिक को वाणासुर देख और आश्चर्य को प्राप्तहोताभया ११ और रुद्रको प्रसन्नकर और तिसके पुत्रभावको प्राप्तहुआ ऐसे तिसकी बुद्धिबड़ा घोरतप करनेको प्रवृत्त होतीभई कि कोईतरहसे मैंभी महादेवका पुत्रहोजाऊं १२ और वाणासुरके तपसे पार्वती सहित महादेव प्रसन्नहोताभया १३ और महादेवप्रसन्नहो वाणासुरको वोलेकि तेराकल्याणहो और हेवाणासुर तू इच्छापूर्वक बरमांग १४ तबवाणासुर वोला कि हेत्रिलोचन तेरादियाहुआ मैं पार्बतीका पुत्रहोनेकी इच्छा करता हूं१५ तव महादेव तिसकोवरदे और पार्वतीसे बोलाकि हे पार्वतीतू इसवाणा सुरको स्वामकार्तिकसे छोटापुत्रग्रहणकर १६ और तिसशोणितपुरमें स्वामकार्तिक उत्पन्नहुआहै वही इसकापुरहोवेगा१७ और मेरीरक्षा कियाहुआ वाणासुरकोकोईयोद्धा नहींसहसकेगा१८औरशोणितपुरमेंस्थितहोऔरदेवताओंकोक्षोभकरताहुआनित्यराज्यकरेगा१९ऐसेमहादेवसेवरकोप्राप्तहोऔर एकहजारभुजाओंकोधारण करताहुआ और मदसेसींचाहुआ ऐसावाणासुर देवताओंकोचिंत्तवन करताहुआ युद्धकी इच्छा करनेलगा२० और तिसपैखुशी

हुआ स्वामिकार्तिक अग्निके से तेजवालीध्वजा और मयूरबाहन इन्होंकोदेताभया २१ और देवता और गंधर्व और यक्ष और पन्नग ऐसेसंपूर्ण बाणासुरके युद्धमें महादेवके तेजसे नहींस्थित होतेभये २२ और महादेवसे रक्षाकियाहुआ और मदसे सींचाहुआवह बाणासुर युद्धको टोहताहुआ महादेवके पासजाता भया २३ और महादेवके पासप्राप्तहो और दंडवतकर पूछनेलगा २४ कि हे भगवन् साध्य और मरुद्गणों सहित संपूर्णदेवताओंकोमैंबारंबारजीतताभया२५ सो मैंअब युद्धसे निराशहुआ जीवनेको इच्छा नहीं करताहूं २६ और युद्धकेबिनामेराइनभुजाओं का धारण करनावृथाही है सो हे महादेव तुमकहो कबमेरे को युद्धप्राप्तहोवेगा २७ और हेदेव बिना युद्धकेमेरी प्रसन्नता नहींहोतीहै२८सो तुमसेरेपै प्रसन्नहो औरयुद्ध देवोऐसेसुन महादेव हंसकेबोले २९ कि हे बाणासुर तेरेस्थान में स्थापित कीहुई ध्वजाका जिससमय में भंग होवेगा ३० तब तेरे को युद्ध प्राप्तहोवेगा ३१ ऐसे सुन हंसता हुआ और प्रसन्न मुखको धारण करता हुआ और महादेव के चरणों में लोटता हुआ बोला ३२ कि हे भगवन् मेरी एक हजार भुजाओं का धारण करना अब सफल हुआ है ३३ और यह बड़ी कल्याण की वार्त्ता हुईहै कि इन्द्रको अब मैं फिर युद्धमें जीतूंगा ३४ ऐसे कहके और आनन्दरूपी आंशुओंसे नेत्रोंको पूर्णकरताहुआ ३५ औरअंजलियों से महादेवका पूजन करताहुआ चरणों में लोटता भया ३६ महा देव कहनेलगे कि हे शूरवीर तू उठ २ और तेरी भुजाओं के और कुलके समान युद्ध तुझको निश्चय प्राप्तहोवेगा ३७ वैशम्पायनक हतेहैं किबाणासुर आनन्दसे महादेवको नमस्कारकर औरध्वजाके स्थान से शोभायमान अपने स्थान को जाताभया ३८ और अपने स्थान में प्राप्तहुआ बाणासुर कुम्भांड से बोला कि आज एक बड़ा खुशी का वृत्तांत सुनाऊंगा ३९ ऐसे कहाहुआ कुम्भांड हंसता हुआ बाणासुर से बोला कि हे राजन् आज क्या प्रियबात सुनावोगे कि जिस आश्चर्य से उत्फुल्ल नेत्रों को धारण किये ऐसे हर्षित हुये

बोलतेहै। सो तुम से सुननेकी मैं इच्छा करताहूं ४० तुमकैसेकैउत्तम
बरको प्राप्तहुयेहै। और मैं पूछता हूं कि तुमको महादेवने त्रिलोकी
का राज्य दिया है जिससे ऐसे प्रसन्न हुये बोलते हो ४१ प्रश्न
है कि इसईश्वरके चक्रकेभयसे त्रस्तहुये दैत्य समुद्रमें बसतेहैं ४२
और प्रश्नहै कि तेरे भयसे इन्द्र पाताल को कब प्राप्तहोवेगा और
कब दैत्य विष्णुके परित्रास को छोड़ेंगे ४३ और प्रश्न है कि तेरे
बलकेआश्रयसेपातालको छोड़केयहांदैत्य कबआवेंगे४४ औरविष्णु
करके जीताहुआ और बांधाहुआ तेरा पिता समुद्रसे निकसके फिर
राज्यकोप्राप्तहोवेगा४५ और दिव्यमालावस्त्रचन्दन इन्होंको धारण
करनेवाले तेरेपिताको हम कब देखेंगे ४६ और विष्णुके तीनपैरों
से हरेहुये त्रिलोकीके राज्यको देवताओंको जीत फिर हम कबप्राप्त
होवेंगे४७ क्या युद्धमें सावधानरूप विष्णुको हम जीतलेवेंगे ४८
क्यातेरेपैमहादेव अतिप्रसन्न हुयेहैं जिसकरके तेरे हृदयकाकांपना
और आनन्दके अश्रुपात पड़रहे हैं४६ और क्यामहादेव स्वामिका-
र्तिक इन्होंकी प्रसन्नतासे हमको सर्वस्व राज्य प्राप्त होगया ५०
ऐसे कुंभांड दीवान के बचनों से प्रेरित किया हुआ बाणासुर श्रेष्ठ
बाणीसेबोला ५१ हेकुंभांड मेरेको बहुत दिनोंसे युद्ध नहीं प्राप्तहुआ
था सो मैंने अब महादेव से ऐसे पूछाहै ५२ कि हे भगवन् मेरेको
युद्धकरनेकीबड़ी इच्छा होरही है सोतृप्ति करने वाले युद्धकोमैं कब
प्राप्तहोऊंगा ५३ तबमहादेवजी मेरेसे बोले ५४ किहेबाणासुरजब
तेरीमयूरध्वजाका भंगहोवेगा तब तू अप्रतिम महान् युद्धको प्राप्त
होवेगा ५५ तबमैं अत्यंत प्रसन्नहो और वृषध्वज महादेवको ५६
शिरसे दण्डवत्कर अबमैं तेरेपास आया ऐसेकहाहुआ कुंभांडराजा
बोला ५७ कि हेराजन् ऐसे वचन तूकहै है सो तेरे को शुभदायक
नहींहै ऐसेराजा और दीवानके परस्परमें कहते हुये ५८ बेगसेटूट
के ध्वजा पृथ्वीमें गिरती भई और पृथ्वी में गिरीहुई ध्वजाको बा-
णासुर देखके ५६ अत्यंत आनंद को प्राप्तहोता भया और युद्ध भी
प्राप्त होवेगा ऐसे मानताभया फिर पृथ्वी भी कांपने लगी६० और

पृथ्वीमें अंतर्हितहुये बिलाव शब्दोंको करतेहुये गर्जने लगे और शोणितपुर में इंद्ररुधिरकी बर्षा करनेलगा ६१ और सूर्यको भेदन करतीहुई उल्का पृथ्वीमें गिरनेलगी ६२ और कृत्तिकोपरि उदयहुआ सूर्य भरणीको पीड़ादेनेलगा और ग्राम सूचक वृक्षोंमें से हजारहों रुधिरकी धारागिरनेलगीं ६३ और आकाशसे तारा टूट २ गिरने लगे ६४ और पर्बके बिना राहुसूर्यको ग्रसनेलगा और प्रलय काल के समबज्र पड़नेलगा ६५ और दक्षिणदिशामें धूमकेतु स्थितहोता भया और बड़ादारुणबायु चलनेलगा ६६ और श्वेत और रक्तऐसे वर्णोंसे व्याप्तऔर कालीग्रीवावाला और बिजलीकीतुल्यकांतिवाला ऐसा सूर्य तीनप्रकारके मंडलोंसे संध्यारात को आच्छादित करता भया ६७ और बाणासुरके जन्मनक्षत्र रोहिणी परसेऔर वक्रीहोके कृत्तिकापै आता भया ६८ और ग्रामका सूचक और अनेक शाखाओंवाले ऐसे बड़े२ वृक्षगिरते भये ६९ ऐसे अनेक प्रकारकेउत्पातों से वह बाणासुर दानवों की कन्याओं से पूजन किया हुआ मदोन्मत्त हुआ अपने तिरस्कार के निश्चय को नहीं प्राप्त होता भया ७० और बुद्धिमान् और तत्त्वका देखनेवाला ऐसा बाणासुरकामंत्री कुंभांडनाम अशुभको कीर्तन करताहुआ बिचेत होताभया ७१ और कहनेलगा कि अशुभको कथन करतेहुए ये संपूर्ण उत्पात यहां दीखतेहैं सोतेरे राज्यको निश्चय ये नष्टकरेंगे७२ औरमैं और अन्य मंत्री और भृत्ययें संपूर्णराजाके अन्यायसे नाशको प्राप्तहोवेंगे ७३ और जैसे ग्रामसूचक वृक्षका पतन हुआ है तैसेही युद्ध की इच्छा करताहुआ और गर्जताहुआ ७४ ऐसे अभिमान से तुम्हारा पतन होवेगा ७५ और महादेव के प्रसादसे तू त्रिलोकी के जयको प्राप्त होताभया और युद्धकी इच्छा करताहुआ गर्जता है ७६ ऐसे अभिमानसे अब तेरा नाश दीखता है ऐसे कुंभांड के बचनको सुन और प्रसन्नहुआ बाणासुर दैत्य और स्त्रियोंके संग उत्तमपानको करता भया ७७ और चिंतासे युक्तहुआ कुंभांड तिनउत्पातों के दर्शन से तत्त्वको चिंतवनकरताहुआ ७८ तिससमय राजाके स्थानमें गमन

करताभया और जयकी इच्छा करताहुआ और दुर्बुद्धि औरप्रमादी ऐसा बाणासुर मदसे युद्धकीही वाञ्छा करताहै और दोषोंको नहीं मानता ७९ और यहमहान् उत्पातोंका भयमिथ्यानहीं होवेगा८० और महादेव औरस्वामिकार्तिक येदोनों यहांस्थितहैंयासेमिथ्याही होजावेतोभी कुछिक तो हमारातिरस्कार होवेगा ८१ और उत्पन्न हुएदोषों से यह महाक्षय होवेगा क्योंकि मेरी बुद्धि यह निश्चय करतीहै कि दोषोंका नाशनहीं हुआकरता ८२ और राजाके दुरात्मापनेसे यहदोषही फलीभूतहोवेगा क्योंकि ये सब दानवदोषरूप होतेहैं ८३ परंतुदेवदानवसंघोंका कर्ता और त्रिलोकीमें प्रभु ऐसा स्वामिकार्तिक इस शोणितपुरको करताभया ८४ और महादेवको स्वामिकार्तिक औरबाणासुरयेदोनों प्राणोंसेभीप्रियहैं और बाणासुर विशेषकरके प्रियहै ८५ और गर्बसे अपनेनाशके अर्थ महादेवजीसे युद्धसंबंध बरमांगताभया सो वह बर अतिबुरा है ८६ और जोबिष्णु औरइंद्रआदि देवताओंका यहां आगमनहोगा तो आश्चर्यहीहै ८७ महादेव और स्वामिकार्तिक निश्चय बाणासुरको सहायकरैंगे ८८ और महादेवकाबचनमिथ्या कभीभीनहीं होगा इसवास्ते सबदैत्यों का नाशरूप युद्धहोवेगा८९ऐसे तत्त्वका देखनेवाला कुंभांडचिंतायुक्त हुआ कल्याणयुक्ति बुद्धिको धारणकरताभया फिर यह बोला९० कि जो पुण्य कर्मवाले देवताओं के संग बिरोध करते हैं जैसे बलि संपूर्ण राज्य हरलियाहै तैसे वे नाशको प्राप्त होजाते हैं ९१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतबिष्णुपर्वभाषायां शतोपरिचतुःसप्ततितमोऽध्यायः १७४ ॥

एकसौपचहत्तरका अध्याय ॥

वैशम्पायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय और एक समय में महादेव पार्वती के संग क्रीड़ा करते हुये रमणीय और शोभायमान ऐसे नदी के तीर पै स्थित होते भये १ और सैकड़ों अप्सरा और गन्धर्वपति तिस रमणीय सर्वर्तुक बनमें क्रीड़ा करते भये २

और पारिजात और संतानक इन्होंके पुष्पोंसे नदीकातीर और आकाश सुगन्धयुक्त होताभया ३ बेगु और बीणा और मृदंग और हजारहों पणव इन्होंके बाजोंसेयुक्त अप्सराओं के गीत सुनने लगा ४ और सूत मागधोंके तुल्य अप्सराओंकेगण देवताओंकाभोदेव और सुंदर शरीरवाला और माला और रक्तवस्त्रोंको धारणकरताहुआ५ ऐसे श्री मनोहर महादेवका पूजन करतेभये और फिर देवीकारूप धारणकर चित्रलेखानाम अप्सरा महादेवको प्रसन्न करतीभई ६ और तिसकोदेख पार्बती और अप्सराओंकेगण हंसनेलगे ७ और अनेकरूपोंवाले और महान् पराक्रमोंवाले ऐसे महादेवके पार्षद पार्वतीकी आज्ञासे जहां तहां बिचरनेलगे ८ और चतुर और वृषध्वजादि चिन्होंसेयुक्त और देवी के रूप को धारण करते हुये ऐसे महादेवके पार्षद औरअप्सराये संपूर्ण एकान्तमेंक्रीड़ा करनेलगे ९ और देवीका स्वरूप और लीला और मुख इन्होंको धारण करते हुये अप्सराओंकेगण और पार्वती ये सब चित्रलेखा का मन भंग करनेकेअर्थ हंसतेभये १० और किलकिला शब्दको सुन महादेव आनन्दको प्राप्त होतेभये और बाणासुरकी पुत्री ऊषा ११ बारह आदित्यों की तुल्य तेजवाले और प्रकाशमान ऐसे महादेवको नदी के तीरपै पार्वती के संग क्रीड़ा करते हुये देख १२ और पार्वती के प्यारकी इच्छा करतीहुई और अनेकरूपोंसे शरीरको धारणकरती हुई पार्वतीके समीप ऐसे मनोर्थ करतीभई १३ कि तिन स्त्रियोंको धन्यहै वे अपने भर्त्ताके संग एकांतमें रमण करतीहैं १४ ऐसे ऊषा के मनोरथको जानके पार्वती ऊषासे बोलीं १५ किहेऊषे जैसेशत्रुओं का नाश करनेवाले महादेव मेरे संग रमण करते हैं तैसेही तू भी अपनेभर्त्ताकेसंग जल्दही रमणकरेगी १६ तब पार्वती के बचनको सुन ऊषा बिचारनेलगी कि पतिके संगमें कब रमणकरूंगी१७ तब पार्वती हंसके बोलीं हे ऊषे जब तेरेको पतिका संयोगहोगा तिसको तसुन१८ कि बैशाखमासमें और द्वादशीकी रात्रिमें अपनी हवेली में स्थित हुई स्वप्न में जिसकेसंग रमणकरेगी वह तेरा भर्ताहो-

वेगा १९ ऐसेसुन अनेक कन्याओंसे युक्तहुई औरसुखपूर्वक बिचरती हुई ऊषा आनंद से उऊटीसुलटी बिचरनेलगी पीछे सखियोंके संग हंसती हुई और आनंदसे फूले हुए नेत्रोंवाली तालों के से निपातसे आपसमेंखेलती भई २० और किन्नरी और यक्षकन्याऔरदैत्यकन्या और अप्सराये संपूर्ण ऊषाकी सखीहोतीभई २१ और वेसखीकहि नेलगीं कि हेवराननें जोपार्वतीनेकहाहै सोतेराभर्ता शीघ्रहोवेगा २२ क्योंकि पार्वतीका वचन कभी मिथ्यानहींहोताहै इसवास्ते रूपऔर अच्छे कुलवाला पतितेरा कल्पित कियागयाहै २३ ऐसे सुन और सखियों के वचनको आदरदे और पार्वतीके मनोरथको भावना करतीहुई स्थित होतीभई २४ और पहलेदिन पार्वतीके संग क्रीड़ा बिहारका अनुभवकर फिर दूसरेदिन वे संपूर्णस्त्री २५ अपने २ स्थानों को जातीभई कोईक घोड़ोंपर कोईक पालकिओं में कोइक हस्तिओं औरकोईकरथोंमें २६ और कोईक आकाशमार्गोंमें होके ऐसे अपने २ पुरोंमें प्राप्तहोतीभई और पार्वतीभी तहांहीं अंतर्द्धान होतीभई और उसीदिनसे वह ऊषा कामदेवके बशहो २७ और पार्वतीके बचनको स्मरण करती हुई रात्रिमें निद्रा और दिनमें भोजन को प्राप्त नहीं होती भई २८ और पतिको याद करतीहुई और स्वर्गमें चंद्रमाको निंदित करती हुई और चंदन को नहीं सेवनकरतीहुई ऐसे ऊषा विलाप करनेलगी २९ और ज्वर रहितभी है परंच कामदेवके ज्वरसे पीड़ित हुई ऊषाको संपूर्ण सखी सेवन करनेलगीं ३० और चंदनसे लेपित किया हुआ हृदय तपनेलगा और कपोलों पर पीला चिह्न होताभया और नेत्रोंसे जलआनेलगा ३१ और जंभाई और निद्रा शरीरमें वर्तनेलगी ऐसे देख सम्पूर्ण सखी कामदेवसे पीड़ित हृदय को शीतल पद्मिनी और कन्दचूर्ण इन्हों से सींचने लगीं ३२ और व्यजनोंसे पवन करतीहुई ऊषासे बारम्बार पूछनेलगीं ३३ कि हे ऊषे तेरे क्या व्यथाहै और तेराशरीर ऐसा क्योंहोरहाहै और तेरे को कौनसी बस्तु अच्छी लगती है सो हे वरानने तू हमारे प्रति वर्णनकर ३४ और हे मनोरमे यह दुःखतेरे कहांसे उत्पन्न हुआहै

और तू देख ये मैना तेरे मनकेअनुसार वाक्य बोलतीहैं ३५ और हरे रंगोंवाले तोते मनुष्यों की नाईं पठन करते हैं सो हे सुभ्रु हमारे आनन्द की उपजानेवाली वाक्य तू मुखसे क्यों नहीं बोलती ३६ और हेबरबर्णिनि तेरापिता बड़ाशूरवीरहै और देवताओंकोभी दुर्जय है और पृथ्वीभर में तिसके युद्धके अगाड़ी कोईभी नहीं स्थितहोता है ३७ और बलिकापुत्र बाणासुर बड़ा महावीर अमरावती पुरी और शोणितपुर इन्होंको जीत स्थित होताभया ३८ और शोणित- पुरमें त्रिशूलको धारण करतेहुये महादेवएकदिन पार्वतीसे बोले कि हेपार्वतीइसबाणासुरको तू अपना पुत्रजान ३९ सो हे ऊषे तू सुन तेरी नासिकाका अग्रभाग शोभाको प्राप्त होरहाहै और तेरे मुखमें क्या व्यथा है जिससे तू बोलती नहीं ४० और तेरामुख ऐसाशोभा को प्राप्तहोताहै कि जैसे शरदऋतुमें कमलपै नोहारकीबूंद और जैसे बद्दलमें चंद्रमा ४१ सो हे ऊषे तू किस अर्थ शोभाको नहीं प्राप्त होती और ऊंचे श्वासोंको छोड़तीहै और प्रीतिको प्राप्त नहीं होती इसका कारणकह ४२ और दिव्य भोजन को ग्रहण नहींकरती और तांबूलमें हमेशह तेरी रुचि रहाकरतीथी सो तू ताम्बूल को भी क्यों नहीं ग्रहण करती ४३ और अन्य जनों को दुर्लभ ऐसी मिष्ठवस्तु- ओंको तू ग्रहणकर और उठ अपने शरीरकी पीड़ा को कह ४४ ऐसे ऊषाके स्थानमें कोलाहलको सुन संपूर्णदासी ऊषाकी मातासे जाके कहनेलगीं४५ किजबसे राजपुत्री स्थानमें आईहै तबसे गूंगीकीतरह प्रतीत होती है ४६ इस वास्ते हमसब दासीगण तुमसे कहती हैं कि मोह और मौन स्वाप और म्लानता ये दुःख ऊषाके कैसे हो रहेहैं ४७ सो हे देवि इस ऊषाको वैद्योंकोदिखा यह शिरसके पुष्प की समान कोमल ४८ यह ऊषाका शरीर व्याधि के भारको कैसे सहेगा और हंसकेसे गमनवाली ऊषाकी माता ऐसे सुन और ऊषा के पास प्राप्तहो ४९ और पल्लवकी तुल्य कोमलहाथ से ऊषाके को मलहाथकोपकड़ ५० और ऊषाको हलातीभई और कहनेलगी कि हे ऊषे तेरे शरीरमें क्या व्यथा है ५१ ये आयेहुए वैद्य तेरेकोपूछते

हैं वैद्य कहनेलगे कि यह राजपुत्री सखियों को संगले जलक्रीड़ा को प्राप्त हुई है सो तहां पार्वती के संग जलक्रीड़ा से परिश्रम उत्पन्न हुआहै ५२ सो तिस परिश्रम से ग्लानि और जृम्भण और स्वाप ये उत्पन्न होतेहैं सो तू भयमतकर ५३ ऊषाकीमाता कहने लगी कि हे वैद्यो ऊषाके हृदय लेप कियाहुआ शीतल चंदनशीघ्रही वुदवुदाओं की नाई आचरण करता है ५४ सो यह क्या कारणहै और हृदय में दाहकाही महान् खेदहै और किस कारणसुख इसके नहीं है सो शास्त्रसे निश्चयकरके कहो इसके क्या रोगहै ५५ वैद्य कहनेलगे कि हे देवि महादेव के समीप क्रीड़ा बिहारमें ऊषाको बहुतसी स्त्री मिली हैं सो यह राजपुत्री ऊषा बहुत रूपवती है इस से उन स्त्रियों ने दृष्टिपातकियाहै तिससे ऊषाकेपीड़ा उत्पन्नहुईहै सो मंत्र और पीत सिरसम इन्होंसे ऊषाको रक्षाविधानकरो ५६ और पानीसे अभिषेचनकरो ऐसे शांतिहोवेगी ऐसे संपूर्ण वैद्यकहके ५७ और कामदेव से उपजी हुई पीड़ाको जानते हुए राजाके स्थान से जातेभये ५८ और फिर पूछतीहुई लज्जाकरतीहुई और अत्यंतरोती हुई ऊषा मातासे बोली कि हे माता संभाषण और भोजन मेरे को अच्छा नहीं लगता ५९ और मेराहृदय उत्साहको नहीं प्राप्तहोता ऐसे कह ऊषा मौन होतीभई ६० तब संपूर्ण स्त्री तिसके मुखको देख और कहनेलगीं कि लताकेसी उपमावाली स्त्रियोंका यौवनही ऐसा होताहै ६१ और यह राजकन्या भर्त्ताको प्राप्तहोनेके योग्यहै सो माता पिताके प्रसादसे यह कन्या सदृशवरको प्राप्तहो ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिपंचसप्ततितमोऽध्यायः १७५ ॥

एकसौछिहत्तरका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय तहां स्थितहुई और चित्रकरके अद्भुत ऐसी नारियां स्थितथीं वैशाखमासके १ शुक्लपक्ष की द्वादशी तिथिकी रात्रिमें सखियों से युक्त और अपनी हवेली में सोती हुई ऐसी शोभायमान ऊषाके संग वह पार्वती का कहाहुआ

पुरुषस्वप्नमें रमण करताभया २ और स्वप्नमें रमणकीहुई और स्त्री भावको प्राप्तकीहुई जागी तब वह पुरुष नहीं दीखा ३ वहऊषास्वप्न के अन्तमें रक्तनेत्रोंको कर और रोतीहुई रात्रिमें जल्दसे उठतीभई और रोतीहुई और भयसेयुक्त ऐसीऊषाको देख ४ चित्रलेखाकोमल बचनसे बोली कि हे ऊषे तू डरेमत और रोतीहुईऐसे क्यों परिताप को प्राप्तहोतीहै ५ और बाणासुरकी पुत्रीहोके क्यों भय करतीहैसो हे सुभ्रु इसलोक में तेरेको भय प्राप्त नहींहै ६ और हे बामोरु देवताओंकानाश करनेवाला तेरा पिताही भयरहितहै और हेशुभे तू उठ और विषादमतकरे ७ क्योंकि तेरे पिताका मर्दनकियाहुआ इन्द्र अपने नगरमें नहीं प्राप्तहोताहै ८ यह तेरापिता देवताओं के समूहको भय देनेवाला है ६ और महासुरों में श्रेष्ठ और श्रीमान् ऐसा बलिकापुत्र महाबली है ऐसे चित्ररेखासे कहीहुई ऊषा १० अपने स्वप्नको चित्ररेखा के प्रति निवेदन करती भई ११ हे चित्ररेखे ऐसे खुशी की हुई मैं कैसे जीवने को उत्साह करती हूं और इस बंशका भूषण रूप पिताको मैं क्या कहूंगी सो मेरा मरणाही श्रेष्ठहै और अब जीना श्रेष्ठ नहींहै १२ क्योंकि बांछित पुरुष मेरेसे मिलापकरके चलागया अब जागने में मेरी यह अवस्थाहुई १३ सोकुलमें गंगारूपवालीमें कन्या कैसेजीऊंगी १४ ऐसे कहके और नेत्रोंसे आंशुओंको गेरतीहुई ऐसी कमलकेसे नेत्रों वाली ऊषा विलाप करनेलगी १५ और रोतीहुई और आंशुओं से व्याप्तनेत्रोंवाली ऐसे ऊषाकोबिचेतहुई सम्पूर्ण सखी बोलीं १६ कि हेदेविजोकोई दुष्टमनसे शुभऔरअशुभकरै है उसीकोपाप और पुण्य लगताहै सो हे सुभ्रु तेरामन दुष्ट नहींहै १७ सो हेभामिनि हठकरके जो तू दैवयोगसे पुरुषको भोगलीहै तो हे कल्याणि स्वप्न में भोगसे ब्रतकाभंग नहीं होताहै १८ और हे देवि अभिचारसे तैंने भोगनहीं कियाहै सो हे सुन्दरि मर्त्यलोक में स्वप्न का किया हुआ दोषनहीं लगता है १६ और हे देविमन और बाणी और शरीर इन्होंसे कियाहुआ कर्म लगताहै ऐसेधर्मज्ञ कहते हैं २० और जो

इनतीन प्रकारके कर्मोंसे पापकरती है सो वहस्त्री पापयुक्त होतीहै और हेभीरु तेरामन कभीभी चलायमान नहीं दीखता २१ सो हे ऊषेतू दोषसे युक्तनहीं है क्योंकि नित्यब्रह्मचारिणीहै जो तूसोतीहुई थी और शुद्धभावसे युक्तथी २२ तो तेरेधर्मकालोप नहीं हुआहै और जिसस्त्रीकामन दुष्टहोताहै वहस्त्री कुलटा होतीहै २३ सोहेऊषेकाल प्रभुबड़ा बलीहै उसनेतुझे इसअवस्थाको प्राप्तकिया २४ ऐसेरोतीहुई ऊषाको देखचित्ररेखाबोली २५ कि हे बिशालाक्षि तू शोककोत्याग और पाप रहित है २६ और हे ऊषेभर्त्ताको स्मरण करतीहुई तेरे को पार्वतीने वचन कहाथा सोतू सुन २७ कि वैशाखमासकेशुक्ल पक्षकी द्वादशीकी रात्रिके स्वप्नमें जिसपुरुषके संग बिहार करेगी वह तेराभर्त्ताहोवेगा २८ और शत्रुओंको मारनेवाला औरशूरवीरऐसा तेरापतिहोवेगा २९ सोयहपार्वतीकाबचनझूठानहींहोनेवालाहै ३० सोतू क्योंअत्यंत रोदनकरतीहै ऐसे चित्रलेखाको संभाषण की हुई ऊषा पार्वती के वचनको स्मरणकर ३१ शोकसे रहित होती भई और ऊषा कहनेलगी कि हे सखे मैं पार्वती के बचनको याद कर तीहूं कि जोकहाथा वह संपूर्ण तुझे हवेलीमें प्राप्तहुआ ३२ सो हे चित्ररेखे यह मेराभर्त्ता जैसे जाना जावे वैसेतू इसकार्यका बिधान कर ३३ और चित्ररेखा ऐसे सुन बोली कि हेऊषे तिसपुरुषका कुल और कीर्ति और पराक्रम इन्होंको कोईजानताहै ३४ सोतूक्योंमोह को प्राप्तहोरहीहै और बिगर देखाहुआऔरबिगरसुनाहुआ ऐसे पु- रुषको तू स्वप्न में देखतीभई ३५ सो उसरति के चोरको मैंकैसेजा नसकूंहूं ३६ और हेसखि अंतःपुर में आकेजिसने तूकोहठसे भोगी है वह कोई मनुष्य नहींहै ३७ क्योंकिआदित्यऔरवसु औररुद्रऔर अश्विनि कुमार ऐसे देवतेभी ३८ महापराक्रमोंवाले तिस शोणित पुरमें प्राप्तहोनेको समर्थनहींहैं ३९ सोयह शत्रुओंको मारनेवाला और देवताओंसे सौ गुण पराक्रमवाला और बाणासुर के मस्तक में स्थितहोकर यह पुरमें प्राप्तहुआहै सो हेऊषे जिसस्त्रीके ऐसायुद्ध का जाननेवाला भर्त्तानहींहै ४० उसस्त्री को भोगोंसे क्याअर्थ सिद्ध

होताहै सोतू धन्यहै और अनुग्रहीतहै ४१ जिस तेरेको ऐसा पार्वती कादियाहुआ और कामदेवके तुल्य पतिप्राप्तहुआ और इसका कौनकुल है ४२ और क्यानामहै और किसका पुत्रहै ऐसे तू निश्चयकर ४३ तब ऊषाबोली किहेसखि मैं कैसेजानूं तूही निश्चय कर और मेरे को उत्तर मतदे ४४ ऐसे रोतीहुई ऊषासे फिर कुंभांडकी पुत्रीबोली ४५ कि हे सखि संधि और बिग्रहमेंकुशल ४६ ऐसी चित्ररेखाअप्सराहै उसको तू आज्ञादे वह संपूर्ण त्रिलोकी को जानतीहै ४७ ऐसे सुन और ऊषा चित्रलेखाको बुला ४८ औरहाथ जोड़ संपूर्ण वृत्तांत कहनेलगी ४६ तब संपूर्ण वृत्तांतको सुन चित्ररेखा अप्सरा ऊषाको धीर्यताकराके कहती भई ५० और आश्चर्य युक्त हुई ऊषा फिर चित्रलेखा अप्सरासे एक कठोर वचन कहनेलगी ५१ कि हे भामिनि कमलके पत्रकी समान नेत्रोंवाला और मतवाला हस्तीके तुल्य गमन करनेवाला ऐसापतिको तू नहीं ल्यावे गीतो मैं प्राणोंको त्यागदूंगी ५२ तब ऊषाको आनंद कराती हुई चित्ररेखाबोली कि हेभामिनि ५३ कुल और वर्ण और शीलऔर रूप और देश ऐसे साक्षात् तिसपुरुषके मैं नहीं जान सकती ५४ किंतु अपनी बुद्धि के अनुसार जो करने को मैं समर्थ हूं उसको तू सुन ५५ और अपनी कामना को प्राप्तहो और हे सखि देवता और दानव और यक्ष और गंधर्व और सर्प और राक्षस और मनुष्य इन्होंमें जोरूप और प्रभाव और अभिजन ५६ इनगुणोंसे जो विख्यात है उन्होंको मैं लिखतीहूं ५७ और तिन्हसबको सात रातमें दिखादूंगी और काठकी पट्टीपै लिखे हुए को देख भर्त्ता के प्रति प्राप्त होजावेगी ५८ ऐसे सुन ऊषा चित्ररेखा सखीसे बोली कि ऐसेही कर ५६ ऐसे कहीहुई चित्ररेखा सातरात्रि भीतर तिन सबोंको चित्र विचित्र पट्टीपै लिखकर ल्यातीभई ६० और पट्टीको फैलाके ऊषा और संपूर्ण सखियोंको दिखाती भई कि ये देवताओं में मुख्य हैं और ये दानवोंमें मुख्यहैं ६१ और येकिन्नरोंमें मुख्य हैं और ये उरगों में मुख्य हैं और यक्ष और राक्षस और गंधर्व

और असुर और दैत्य६२ और मनुष्य ऐसे येभी संपूर्ण मुख्य मुख्य जानके और हेसखि तेराभर्त्ता मैंने लिखाहै और जो तैंने स्वप्न में देखाहै उसको तू निश्चयकर ६३ ऐसेसुन वह ऊषा क्रमसे संपूर्ण देवता और दानव और गंधर्व और बिद्याधर६४और इन्हेंकोदेख और संपूर्ण यादवोंको देखतीहुई ६५ और श्रीकृष्णको देखती भई और तहां अनिरुद्धको देख और आनंदसे नेत्रोंको फुलाती हुईबोली कि हे चित्ररेखे वहचोर यहहै ६६ और हवेलीमें स्थितहुई स्वप्नमें इससेमैं दुःखितकी हूं सोयह रतिका चोर अब कहांहै ६७ और हे शोभने तत्त्वसे इसका कुल और शील और नाम तूमेरे प्रति वर्णन कर ६८ फिर पीछेमैं इसकार्यकानिश्चय विधान करूंगी६९ऐसेसुन चित्ररेखा बोली कि त्रिलोकीकानाथ और बुद्धिमान् ऐसे श्रीकृष्ण का पौत्रहै और प्रद्युम्नकापुत्रहै और अनिरुद्ध इसकानाम है ७० और पराक्रममें इसके तुल्य और कोई त्रिलोकीमें नहींहै ७१ और यह पर्वतोंको उपाड़ और मिट्टीके फोड़डारताहै सोतू धन्यहै तेरा अनिरुद्ध पतिहुआ ७२।७३ ऐसेसुन ऊषाबोली कि हेवराननेतेरेसे अन्य और कोई मेरीगति नहींहै ७४ और तू आकाश में विचरने वाली और कामरूपिणी और योगिनी७५और इस उपायमें कुशल ऐसीजोतूहै सोशीघ्रमेरे प्यारेकोल्या ७६ और हे सुंदरि अर्थकेसिद्ध करे बिगर आना उचित नहींहै और जो बिपत्काल में मित्रकाम आताहै वहीपंडितोंने मित्रकहाहै ७७और हेसुश्रोणि मैं बहुतकामा तहूंऔर देवताओंकी तुल्य उपमावाला ७८ मेरे पतिकोजो तूशीघ्र नहीं ल्यावेगी तोमैं प्राणोंको त्यागदूंगी ऐसेसुन चित्ररेखा बोली७९ किहे कल्याणि तू मेरा बचन सुननेकेयोग्यहै कि जैसे बाणासुर की नगरी रक्षाकीहुईहै८०वैसेही द्वारकापुरी देवताओंकोभीदुर्द्धर्षहै८१ और लोहेसे प्रतिछन्नहै और यादवोंके कुमारोंसे रक्षाकी हुईहै८२ और चारों तरफ जलसे व्याप्तहै और ब्रह्माकी आज्ञासेघोरपुरुषों सेरक्षाकीहुई ८३ और पर्वतकाकोट और खाईसेयुक्त और दुर्गमार्गों से प्रवेशहोनेवाली और सातकोटोंसे रचीहुई ८४ ऐसी द्वारकापुरी

अजान पुरुषोंको प्रवेशहोनेमें समर्थ नहींहै ८५ सो हे ऊषेमैं औरतू और तेरापिता इनतीनोंकी रक्षाकर ८६ ऐसेसुन ऊषाबोली कि हेसखि उसद्वारकापुरीमें योगके बलसे तूप्राप्तहोनेको समर्थहै और हेसखि मेरेबहुत विलापसे क्याहै इसमेंतू एक कारणसुन ८७ पूर्ण चंद्रमाकेसमानअनिरुद्धके मुखकोजोमैंनहीं देखूंगीतो धर्मराजकेपुरमें पहुंच जाऊंगी ८८ और हे भामिनि दूतसेही कार्यकी सिद्धिहोती है और जो तूमेरे जीनेकी इच्छा करतीहै तोशीघ्र गमनकर ८९ और जो मेरेको तूअपनी सखीजानेहै तो शीघ्रमेरे पतिकोल्या और मैंतेरे शरणागतहूं ९० और जीवताहीको संदेह होता है और कामदेवसे आर्त और मदसे व्याकुल ऐसीस्त्री अपना जीवना और कुलकानाश इन्होंको नहीं देखतीहै ९१ और हेसखि कार्यमें यत्न करना यह शास्त्रकी आज्ञाहै सोहेभीरु तूद्वारका जानेमें समर्थहै ९२ ऐसे सुन चित्ररेखा बोली कि हेऊषे अमृतरूपी बचनोंसे तैंने मेरी बहुतस्तुति की ९३।९४ यासेमैं शीघ्र द्वारकामें जाऊंगी और द्वारकापुरीमें जाके बड़ीभुजाओंवाला और वृष्णिकुलमें उत्पन्न होनेवाला ९५ ऐसे अनिरुद्धकोमैं शीघ्र ल्याऊंगी ऐसे कह चित्ररेखा अंतर्द्धान होतीभई ९६ और अपनी सखियों सहित ऊषाचिंता करतीहुई स्थितहोती भई ९७ और तीसरे मुहूर्तमें बाणासुरके पुरसे चली हुई और सखीके प्यारकी इच्छा करतीहुई और ऋषिओंका पूजन करतीहुई और एकक्षणभरमें कृष्णकी पालनाकीहुई ९८ और कैलासके शिखरों के समान घरोंसे शोभायमान ९९ ऐसीद्वारकामें प्राप्तहो और ऐसे शोभायमान देखती भई कि जैसे आकाशमें तारा १०० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांशतोपरिषट्सप्ततितमोऽध्यायः १७६ ॥

एकसौसतहत्तरका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहने लगे कि हे जनमेजय वहचित्ररेखा द्वारकापुरीमें भवनके समीप स्थितहो और अनिरुद्ध के हरनेका उपाय चिंतवन करती भई १ ऐसेचिंतवन करतीहुई जलमें स्थित ध्यानकरता

हुआ नारदमुनिको देखतीभई २ और आनंदसे खिलेहुये नेत्रोंको धारणकरतीहुई नारदमुनिके समीपजा और नीचेको मुखकरस्थित होती भई ३ औरनारदमुनिआशीर्वाददे और चित्ररेखासे बोले कि तुयहां किसअर्थ आईहै ऐसे पूछताहूं ४ हाथ जोड़तीहुई चित्ररेखा देवताओं के ऋषि और लोक पूजित ऐसे नारद मुनिको बोली ५ कि हेभगवन् दूतकार्य करनेकोमैं इहां आईहूं और अनिरुद्धकोले जाऊंगी ऐसेसुन ६ और हेमुने शोणितनाम पुरमें बाणासुर नाम करके एक महासुरहै तिसकी पुत्री सुंदर जांघोंवाली ऊषानामसे विख्यातहै ७ और वह अनिरुद्धमें अनुरक्तहै और उसको पार्वतीने वरदियाहै कितेराभर्त्ता अनिरुद्ध होवेगा८ सोहेमुने मैं अनिरुद्ध को लेनेके अर्थ आईहूं तुमइसमें कोई उपाय बिधानकरो और शोणित पुरमें अनिरुद्धको प्राप्तकरूंगी ९ पश्चात् आपको अनिरुद्धका हरण श्रीकृष्णसे सुनाना योग्यहै क्योंकि तिसबाणासुरका श्रीकृष्णके संग युद्ध होवेगा १० और यह अनिरुद्ध बाणासुरके जीतनेकोसमर्थ नहीं है ११ सो हेभगवन् इस अर्थमें आपके समीप आईहूं कि श्रीकृष्ण को तुमसालूमकरो १२ जिससे श्रीकृष्ण और बाणासुरका युद्धहोवे और हे भगवन् तेरी कृपासे मेरेको श्रीकृष्णसे भयनहीं होवेगा क्योंकि वेतत्त्व अर्थके जानने वालेहैं १३ और क्योंकि वह श्रीकृ-ष्ण क्रोधहुआ त्रिलोकीकोभी दग्धकरने वालाहै सो ऐसा श्रीकृष्ण पौत्रकेशोकसे संतप्तहुआ मेरेकोशापसे दग्धकरेगा१४ सोहेमुनेजैसे ऊषापतिको प्राप्तहो और मेरेको अभय प्राप्तहो ऐसे तुम उपायकर नेको योग्यहो १५ ऐसेसुन नारदमुनि चित्ररेखाको शुभवाक्यबो लेकि भयमत करे और अभयरूपी मेरे बचन को तू सुन १६ कि अनिरुद्धको ऊषाके स्थानमें प्रवेशकिये पश्चात् जो युद्धहोवे तो हे शुचिस्मिते मेरेको यादकरना १७ सो हे मनोरमे युद्धदेखनेमेंमेरी बहुतकामनाहै १८और यह लोकको मोहन करनेवाली यहतामसी विद्या है सो तू इसको ग्रहण करके कृतकृत्य रहेगी १९ तब ऐसे सुन चित्ररेखा नारदमुनिको नमस्कार कर २०और आकाशमार्ग

हो द्वारकापुरी के मध्यमें अनिरुद्ध के शोभायमान गृह में प्राप्त होतीहुई २१ सुबर्णकी बेदिका और थांभोंवाला और पुष्पोंकीमालाओंसे युक्तऔर पूर्ण कुंभोंसे शोभायमान २२ और मयूर के कंठ के समान ग्रीवावाला और सूर्यों करके युक्त प्रसादवाला और मणि मूंगा आदिसे आस्तीर्ण देवता और गंधर्वोंसे शब्दायमान २३ ऐसे घरको देखतीभई और तिसघरमें शीघ्रही प्राप्तहो २४ वह चित्रलेखा श्रेष्ठस्त्रियों के मध्यमें चंद्रमाकीनाईं उदयहुआ अनिरुद्ध को देखतीभई २५ और क्रीड़ाबिहारमें स्त्रियोंसे जहांतहां सेवनकियाहुआ और माधुमध्वी मदिराको पीताहुआ और परम शोभासे युक्तहुआ २६ और कुबेरकी तुल्य श्रेष्ठ आसनपै प्राप्तहुआ और ताल बराबर बजरहीहै और मधुरगीत होरहेहैं २७इन्होंकोसुनता हुआ अनिरुद्ध का मन प्रसन्ननहीं होताभया क्योंकि अनिरुद्धभी ऊषा के संभोगका चिंतवन करताहै २८ और संपूर्ण गुणों वाली स्त्री तहांनृत्य करतीहैं तबभी अनिरुद्ध के मनकी प्रसन्नताकोचित्ररेखा नहींदेखतीभई २९ और चित्ररेखा विचार करनेलगी कि यह अनिरुद्धभोग और मदिराका सेवन नहींकरता यासे निश्चय इसकेभी हृदयमें कोई स्वप्नबर्तताहै ३० ऐसे निश्चयकरऔर स्त्रियों के मध्यमें इन्द्रकी ध्वजाकी तुल्य प्रकाशमान हुयेको देख ३१ और चिंतासे युक्तहुई औरकैसे यहकार्य करना चाहिये ऐसे विचार करतीहुई और अंतर्हितहुई वह चित्ररेखा अपनी तामसी विद्यासे अनिरुद्धसे अन्यजनों के नेत्रोंको आच्छादन करती भई ३२और अनिरुद्धको नेत्रोंकी शक्तिदे और अपनी आत्माको दिखा ३३ और एकांत स्थानमें मधुरबाणीसे बोलीकि हे बीरतू खुशीतोहै ३४ और यह रात्रि और दिनतेरा खुशीसे ब्यतीतहोताहै सो हेरति सुत मेरी प्रार्थनाको तू सुन ३५ कि मैं अपनी प्यारीसखी ऊषाके बचनको कहतीहूं कि जो तैंने स्वप्नमें देखीहै औरस्त्रीभावको प्राप्तकीहै ३६ वह ऊषातेरेको हृदयमें नित्य धारणकरतीहैसोउसकी मैंभेजीहूं और वह रोतीहुई और जम्हाई लेतीहुई और बारंबार श्वासोंको छोड़ती

हुई ३७ हे सौम्य ऐसी ऊषा तेरे दर्शन के अर्थ परिताप कोप्राप्त होतीहै और हेवीर जोतू वहां प्राप्तहोगा तो वह प्राणों को धारण करेगी ३८ और जो तुम्हारा दर्शन नहीं होवेगा तो मृत्यु को प्राप्त होजावेगी इसमें संशय नहींहै ३९ और आपको चाहने वाली स्त्रीके ऊपर हाथधारणकरना योग्यहै औरतिसकेअर्थपार्बतीने तूमनोरथको पूर्णकरनेवाला पतिदियाहै ४० और तेरे चिह्नसे युक्तकिया हुआएक पट्टमैंनेऊषाको दियाहै सो उसको देखजीती है सो तिसपरतू दया कर४१ऊषाऔर सबहम शिरोंसे प्रणाम करतीहैं और तिसऊषाकी उत्पत्ति और कुल और शील ४२ और स्थान प्रकृतिइन्होंको तूसुन और इसकेपिताकोभी सुनातीहूं बिरोचनका पुत्रबलि और बलिका पुत्रवाणासुर ४३ वह शोणितपुरमें बसता है और तिसकी यहऊषा नाम पुत्रीतेरी नित्य इच्छाकरती है और तेरेमें उसका मन है ४४ और देवीका दियातू पतिहै सो तेरेअर्थ प्राणों को धाररही है ४५ ऐसेचित्र रेखाके बचनको सुन अनिरुद्ध बोलाकि हे चित्ररेखे तैंनेभी वहऊषा स्वप्नामें देखीहै सोतूसुन४६कि तिसका रूपऔरकांतिऔर वुद्धि और संयोग और रुदित इन्होंको रातिभर चिंतवन करताहुआ मैं मोहको प्राप्त होताहूं४७और जो तू मैंने ग्रहणकरने को समर्थहो और मेरेप्यारकी इच्छा करतीहो तोहे चित्रलेखे मेरे को वहां प्राप्त कर ४८ और मैं उसेदेखनेकी इच्छाकरताहूं औरकहने लगाकि हे चित्ररेखे मैं ऊषाको संगमकी कामनाकरता हुआकाम देवसे भस्म हुआ जाताहूं और मैं तेरेप्रति हाथजोड़ताहूंकि तूमेरे स्वप्नको सत्य करवैशंपायन कहतेहैं ४९ तबवहचित्ररेखा अनिरुद्धके मनोरथको जान और प्रसन्न होकेबोली कि हे प्रियतथास्तु मैं तैसेही करूंगी ५० तबऐसे कह और स्त्रियोंके मध्य में बैठाहुआ अनिरुद्ध को अंत र्धानकर और ग्रहणकर ऊपर को उछलती भई ५१ और जिसको सिद्धचारण सेवन करतेहैं ऐसे रास्ताको प्राप्तहो औरवह मनके से वेगवाली चित्ररेखा शीघ्रही शोणितपुरको प्राप्तहोतीभई ५२ और चित्रविचित्र आभूषणोंसे भूषित और चित्रविचित्र वस्त्रों को धारण

करनेवाला और देवताओंकेसे रूपवाला ५३ ऐसे अनिरुद्ध को एकान्तमेंऊषाको दिखातीभई और दोनोंको एकस्थानमें प्राप्तकरती भई ५४ और प्रियाको देख हर्षसे नेत्रोंको फुलाती हुई ऊषा तहां अनिरुद्धका पूजनकरतीभई ५५ और चित्रलेखाको छातीसेलगाऔर सम्पूर्ण आख्यानको पूंछतीहुई और भयसे आर्त हुई शीघ्रहीचित्र लेखासे बोली ५६ कि हे कार्यांके जाननेवाली तैंने यहगोप्यकार्य कैसे किया सो इसको छिपाके रखनेमें मेरा कल्याणहै और इसके देखनेमेंमेरी मृत्युहै ५७ ऐसे कह वहऊषा डरतीहुई अपनेकांत सहित एकांतमें स्थित होतीभई ५८ और चित्रलेखा बोली कि हे सखि तू मेरा एक निश्चयसुन पुरुषार्थके कियेको दैव नाशताहै ५९ जोदेवी का प्रसाद तेरे अनुकूल होवेगा तो मायासे गोप्य किया हुआ इस पुरुषको कोई भीनहीं जानसकेगा६०ऐसे सखीके बचनकोसुन ऐसे ही होजाओ यह कहतीभई ६१ और ऐसेसुन ऊषाअनिरुद्धसेबोली कि यह बड़ी अच्छी मेरे कल्याण की बार्त्ताहुई कि स्वप्न में प्राप्त हुआ चौररूपपति मैंनेदेखा और दुर्लभ प्यारे की इच्छा करतीहुई प्रिय के अर्थ में बहुत दुःखित होती भई ६२ और हे महाबाहो तेरी कुशलहै क्योंकि स्त्रियोंका कोमल हृदयहोताहै जिससे मैं पूंछती हूं ६३ ऐसा ऊषाका कोमल और अर्थवाला बचन सुनकर अनिरुद्ध भी हंसकर बोला ६४ कि हे स्मितभाषिणि और हे सुंदर जांघोंवाली मेरी संपूर्ण कुशल है ६५ और हे सुदर्शने तेरेही प्रसादसे मैंने यह अदृष्टदेश देखा ६६ और हेभीरु रात्रिमेंस्वप्नमेंनेजैसा देखाथा वैसाही तेरे पास प्राप्तहुआहूं ६७ क्योंकि पार्वतीकाबचन मिथ्या नहीं होता और हेभामिनि पार्वती औरतेरी दोनोंकी प्रीति जान और तेरे प्यारकेअर्थ में आयाहूं ६८ सोमेरेऊपर तूप्रसन्नहो ऐसे प्रेरणाकीहुई ऊषा अपने अलंकारों को धारण करतीहुई ६९ और अपने कांतको संगलेतीहुई और भयकरतीहुई एकांतमेंस्थित होतीभई और गांधर्ब विवाहकर ७० और दोनों परस्पर में ऐसे रमणकरतेभये कि जैसे दिनमें चकवा चकवी ७१ और दिव्यपुष्प

और वस्त्र और माला और चंदन इन्होंको धारण करता हुआ ऐसे अनिरुद्ध को ऊषाके स्थानमें कोईभी नहीं जानताभया पीछे दिव्य माला आदिको धारणकरनेवाला अनिरुद्ध ७२ बाणासुरके द्वारपालोंको देखलिया ७३ और कन्या के अतिक्रमको बाणासुरके प्रति निवेदन करतेभये ७४ ऐसे सुन बाणासुरने अपनीसेनाको आज्ञादी ७५ कि जल्द उस दुर्मतीका हननकरो ७६ क्योंकि तिसदुष्टात्माने हमाराचरित्र और कुलदूषित कियाहै ७७ और वह बिनादीहुई कन्याको आपही ग्रहणकर और दूषित्त करताभया ७८ और इस दुर्मतिकावीर्य और धैर्य्य और धूर्तता यह आश्चर्य रूपहै ७९ कि जिससे यह शठ हमारे पुर और भवन में प्राप्तहुआ ८० ऐसे कह बाणासुर अपने किंकरों को फिर प्रेरणा करता भया ८१ और वे किंकर बाणासुरकी आज्ञाको ग्रहणकर अपने स्थानसे निकसते भये ८२ और अनिरुद्ध के समीप में जानेलगे ८३ और हाथोंमें अनेकप्रकारके अस्त्रोंको धारणकरतेहुए और अनेकप्रकारकेभयंकर रूपोंवाले और अनिरुद्धको मारनेकी इच्छाकरतेहुए और क्रोधहोते हुए ऐसे महाबली दानव अनिरुद्धके समीप प्राप्तहोतेभये ८४ तब ऐसी सेनाको देख नेत्रोंसे आंशुओंको गेरतीहुई और अनिरुद्धकेबध से डरतीहुई ऐसी बाणासुरकी पुत्री ऊंचेस्वरसे रोनेलगी ८५ पीछे मृगकेसे नेत्रोंवाली और हाकांत २ पुकारती हुई ऐसे रोतीहुई ऊषाको देख अनिरुद्ध बोला ८६ कि हे सुश्रोणि तू भयको दूरकर और मैं यहां स्थितहूं यासे तू भय नहीं करे और तेरे को अब आनन्दका समय प्राप्तहुआहै और इसमें कोई भयका कारण नहीं है ८७ और हे यशस्विनि जो बाणासुर के नौकरों का संपूर्ण समूह भी यहां चला आवे तौभी मेरेको कुछ चिंता नहीं है और हे भीरु अब तू मेरे पराक्रमोंको देख ८८ ऐसे कह और आतीहुई सेनाके शब्दकोसुन और वह श्रीमान् अनिरुद्ध यहक्याहै ऐसेकह कर वेगसे उठा ८९ और अनेक प्रकारके प्रहारोंसे उदयहोतीहुई और स्थानके चारों तरफ स्थितहुई ९० ऐसी सेना को देख और

वेगसे तिसके सन्मुख जाताभया और अपने बलको धारण कर और क्रोधहुआ दांतोंसे होठोंको चाबता भया ६१ तबबाण चलने लगे तब चित्रलेखा बाणासुरकी सेनाके युद्धको देख और देवदर्शन नारद मुनिको स्मरण करती भई ६२ और चित्रलेखाका स्मरण कियाहुआ नारदमुनि एक क्षणमात्र में शोणितपुर में प्राप्तहोता भया ६३ और आकाश में स्थितहुआ नारदमुनि अनिरुद्धसे बोला कि तू भयमतकरे मैंअभी तेरेपुरमें प्राप्तहोताहूं ६४ तब वह अनिरुद्ध नारदमुनिसेअभिवादनकर और खुशीमन हुआयुद्धकेअर्थप्रवृत्तहोता भया ६५ और तिनगर्जतेहुये संपूर्णोंके शब्दको सुन और वेगसे ऐसेउठा कि जैसे अंकुशका बेधन कियाहुआ हस्ती ६६ और बड़ी भुजाओंवाला और होठोंको चाबता हुआ और हवेलीपै आरोपण करताहुआ ऐसे अनिरुद्धको देख और भयभीत हुये वे दैत्य हवेली से दौड़ते भये ६७ और अंतःपुरकेद्वारपैस्थापित कियाहुआअतोल परिघको गृहणकर वह अनिरुद्ध दैत्योंके वधके अर्थ क्षेपणकरता भया ६८ और वे दैत्य बाण और गदा मुशल और खड्ग और शक्ति और त्रिशूल इन्होंसे अनिरुद्धको हनन करते भये ६९ और शस्त्रोंको जानने वाले और युद्धमें क्रोधहुये ऐसेदानवोंने बाण और परिघोंसे हनन कियाहुआ १०० वह संपूर्ण भूतोंका आत्मा और उष्णकालके मेघकी तुल्य गर्जता हुआ ऐसा अनिरुद्ध क्षोभकोप्राप्त नहीं होताभया और परिघको गहणकर दैत्योंके मध्यमें ऐसे स्थित होताभया कि जैसे आकाशमें विचरताहुआ मेघोंके मध्यमें सूर्य्य ऐसे देखदंड और कालेमृगके चामको धारणकरता हुआ और सराहताहुआ नारदमुनि अनिरुद्धसे बोला १०१ कि हेअनिरुद्ध अमित पराक्रम वाला और भयानक ऐसापरिघसे हनन किये हुये १०२ दैत्यभयसे ऐसेदौड़ते भये कि जैसेपवनसे प्रेरण कियेहुये मेघ और रणमें संपूर्ण दानवोंको भगाताहुआ और खुशी होताहुआ १०३ अनिरुद्ध रणमें सिंहकी नाईं गर्जता भया १०४ और अनिरुद्धके हनन कियेहुये १०५ और युद्धसे पराङ्मुख हुये संपूर्ण दैत्य

वाणासुरके पास जातेभये और रुधिरसे व्याप्त हुये और ऊंचे २ श्वासोंको छोड़तेहुये १०६ और भयसे व्याकुल हुये ऐसेदैत्यवाणा सुरके समीप स्थितहुये शांतीको प्राप्तनहीं होतेभये तबवाणासुर कहने लगा कि हेदैत्याहो भयमतकरो १०७ और त्रासका त्याग और एकजगह स्थितहुयेयुद्धकरो१०८और संपूर्णलोकमें विख्यात हुये यशको त्यागऔरहि जड़ोंकी नाईं क्यों व्याकुलता कोप्राप्त होतेहो १०९ और विख्यात कुलोंवाले और अनेकप्रकारकेयुद्धोंको जाननेवाले ऐसेअनेक दैत्य जिसकेभयसे दौड़तेहो सोयहकौन पुरुष है११० और तुममेरी सहायता अब नहींकरो और दौड़जावो और नाशकोप्राप्तहो १११ऐसेतिन दैत्योंको क्रूरवचनोंसेत्रासदेताहुआ महावली वाणासुर ११२ फिर अन्य दशहजार शूरवीरोंको आज्ञा देताभया ११३ और कोईकशूरवीर हस्तिओं की तुल्य शब्दों को करतेहुये पृथ्वीमें स्थित होतेभये ११४ और कोईक आकाशमें ऐसे शोभाको प्राप्तहोतेभये कि जैसे वर्षाऋतुमें मेघ ११५ और ऐसीसेना वटलीहुई कि संपूर्ण दिशाओंमें तिष्ठ २ ऐसीवाणीसुनने लगी११६ और वह शूरवीर अनिरुद्ध आश्चर्यको उपजाता हुआ फिर अनेक दैत्योंके संग युद्धकरने लगा ११७ और तिन्होंके परिघ और तोमरों को गृहणकर ११८ और उन्हींसे दैत्योंको हनने करताभया और फिर परिघको गृहण कर और रणके मध्यमें अकेलाही युद्धके मार्गोंको करने लगा कैसे कि भ्रांत और उद्भ्रांत और अविद्ध और आप्लुत और प्लुत ११९ ऐसेबत्तीस प्रकारके मार्गोंको विचरता हुआ युद्धमें नहीं दीखताभया और एककोही हजारहोंकीनाईं युद्ध में क्रीड़ा करताहुआ ऐसे देखते भये १२० कि जैसे मुखको फाड़ताहुआ अंतक और फिर अनिरुद्धसे संतापको प्राप्तकिये हुये और रुधिर से व्याप्तहुये १२१ऐसे दैत्य भग्नहुये फिर वाणासुरके पास जातेभये और हस्ती घोड़ा रथ इन्होंपै स्थितहुये १२२ और आर्तशब्दको करतेहुये और नष्ट पराक्रमवाले और भयसे पीड़ितहुये१२३ और रुधिरका वमन करतेहुये ऐसेदैत्य दशोंदिशाओंमें दौड़तेभये और

कहने लगेकि पहिलेभी देवताओं के संगयुद्धमें ऐसाभयनहींउत्पन्न हुआथा १२४ कि जैसा अनिरुद्धके संगयुद्धमें हुआ है १२५ और पर्वतके शिखरकी तुल्य कांतिवाले और गदात्रिशूल खड्ग इन्होंको हाथोंमें धारण करतेहुये ऐसेदानव १२६ रणमें बाणासुरको त्याग और भयभीतहुये आकाशमें दौड़तेभये और तबभग्नहुई अपनी संपूर्ण सेनाकोदेख १२७ बाणासुर ऐसे जलताभया कि जैसे यज्ञ में होमाहुआ अग्नि और आकाशमार्ग में प्राप्तहोकेसाधु २ ऐसेकहता हुआ १२८ और प्रसन्न होताहुआ ऐसानारदमुनि अनिरुद्ध के युद्ध में नृत्यकरनेलगा और इतनेही काल में अत्यंत कोपहुआ १२९ और महाबली ऐसाबाणासुर अपने रथमें स्थितहो और खड्ग को उठाताहुआ और रथमें स्थितहुआ ऐसा अनिरुद्धके पासजाता भया १३० और पट्टिश और खड्ग और गदा और त्रिशूल और फरसा इन्होंको उठाताहुआ एकहजार भुजाओंसे ऐसे शोभायमान होता भया कि जैसेसौध्वजाओं से इन्द्र १३१ और बड़ी २ भुजाओंवाला और अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे युक्तऐसा बाणासुर गोधा और अंगुलित्राणयुक्त भुजाओं से शोभाको प्राप्तहोताभया १३२ और सिंहके तुल्य गर्जताहुआ और धनुषको टंकोरताहुआ और क्रोधसे रक्तनेत्रों को धारण करताहुआ ऐसाबाणासुर तिष्ठ २ ऐसे अनिरुद्धको कहने लगा १३३ और तबअनिरुद्ध बाणासुर के बचनको सुन और युद्धमें तिसके मुखको देख हंसनेलगा १३४ औरसौघुंघुरुओंसे शब्दायमान और रक्तध्वजा और पताकाओं वाला और ऋष्य संज्ञक मृगों के चर्मोंसे मढाहुआ १३५ और चारहजारहाथ बिस्तार वाला और पहिले देवता और असुरों के युद्धमें जैसे हिरण्यकशिपु का रथयुक्त हुआ वैसेही एकहजार घोड़ाओं से युक्त १३६ ऐसे बाणासुर के रथको अनिरुद्ध देखता भया॥ १३७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांबाणानिरुद्धयुद्धं नामसप्तसप्तत्यधिकशततोऽध्यायः १७७ ॥

———※———

एकसौअठत्तरका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे कि तिस आवतेहुये दानवों को देखके प्रसन्नहुये अनिरुद्धजी युद्धमें तेजसे पूरित होनेलगे १ अर्थात् तलवार ढालकोधारण करनेवाले और वीर और संग्राममें लालसा वाले ऐसे अनिरुद्ध उसवक्त होतेभये जैसे हिरण्यकशिपु दैत्य को मारने के वक्त नृसिंहजी उद्यतहुयेतैसे २ पीछेतलवार चामआदि को धारणकरनेवाले और प्यादे ऐसे अनिरुद्ध को आवतेहुयेदेख ३ अनिरुद्धकोमारनेके अर्थ बाणासुर अतिप्रसन्नता कोप्राप्तहुआ और कवचकरके रहित औरहाथमें तलवार वाले ऐसे अनिरुद्धको जानके जितकाशी और अतिबलवाला ४ ऐसा बाणासुर क्रोधको प्राप्तहो कहनेलगा कि इसको ग्रहणकरो और मारो ऐसीबाणीको सुन युद्ध में क्रोधको प्राप्तहुआ ५ अनिरुद्ध हंसके रोवतीहुई और भयसे दुःखित ऐसी ऊषाकीतरफ को देखनेलगा। पीछेहंसके और ऊषाको आश्वासदे स्थितहुआ पीछे बाणासुर अनिरुद्धको मारने के अर्थ ६ बहुतसे बाणों को युद्धमें छोड़ने लगा और अनिरुद्ध बाणासुरके परा जयको चाहताहुआ बाणोंकोकाटताभया ७ पीछे बाणासुर अनिरुद्धको मारनेके अर्थ अनिरुद्ध के शिरपर बाणोंके जालोंको बरसाताभया ८ पीछे अनिरुद्ध अपनी ढाल पै हजारों बाणों को ओढ़के बाणासुर केसन्मुख स्थित हुआ जैसे प्रभातमें सूर्य ९ ऐसे स्थित हुये अनि रुद्धकोमर्म भेदी बाणोंके समूहोंसे बाणासुर बींधनेलगा १० तबबाणों से हतहुआ और खड्ग चर्मको धारण करनेवाला ऐसा अनिरुद्ध पृथ्वीमें पड़नेलगा तबपड़तेहुये अनिरुद्ध कोफिर बाणासुर ११ पैने पैने बाणों से बींधनेलगा सो बाणोंके बींधने से १२ क्रोधको प्राप्त हुआ अनिरुद्ध दुष्कर कर्म करनेके अर्थ बाणासुर के रथकेसमीपमें गया तब तलवार मूसल शूल पट्टिश भाले बाणोंके समूहइन्होंसे पीड़ित किया भी अनिरुद्ध कंपायमान न हुआ १३ और क्रोधको प्राप्तहो वेगसे रथपै तलवार मार पीछे बाणासुर के घोड़ों को

तलवारसे काटता भया १४ पीछे युद्धमार्ग में चतुर बाणासुरबाणों की बरसा पट्टिश भाले इन्होंकरके अनिरुद्धको आच्छादित करने लगा १५ तब मानों अनिरुद्ध मरगया ऐसे जानके राक्षसों के गण शब्दकरनेलगे १६ परंतु उसीवक्त बाणोंके जालोंको काटके बाणा सुर के रथके समीप में स्थित हुआ १७ तब घोर रूपवाली और भयानक और प्रकाशित और घंटोंके समूहसे व्याप्त और अग्नि १८ और सूर्य के समान प्रकाश वाली और धर्मराज के समान उग्रदर्शनवाली और महा उल्का के समान ज्वलित ऐसी शक्ति को बाणासुर ग्रहणकरताभया १९ तबआवती हुई शक्तिकोदेख पुरुषों में उत्तम अनिरुद्ध कूदके शक्तिको ग्रहणकर २० उलटी बाणासुर के अर्थ बलसे मारताभया तब वहशक्ति बाणासुरके देहका भेदनकर पृथ्वीतलमें प्राप्तभई २१ और तब अति बेधन कियाऔर दुःखित हुआ और पीड़ितहुआ बाणासुर ध्वजापट्टिशके आश्रित रहा पीछे मूर्च्छित रूपहुये बाणासुर से कुंभांडकहनेलगा २२ कि हेदानवेंद्र ऐसे उद्यतहुये शत्रुको आप कैसे छोड़तेहैं और बिकारोंसे रहित और लब्धलक्षवाला ऐसायहवीरप्रतीतहोताहै २३ इसवास्ते माया का आसरालेके युद्धकर अन्यथा यहनहींमरेगा और आपेको और मेरी कृपाकररक्षाकर २४ औरयहइसीवक्तमारनाचाहिये वरनेहम सबोंको यहमार और सैकड़ों हमारेमित्रोंको मारके ऊषाको ग्रहण कर गमनकरेगा २५ ऐसे कुम्भाण्ड केबचनों से प्रेरित कियाबाणा सुरक्रोधकोप्राप्तहो बाणासुर रूखीबाणी कहनेलगा २६ किइसके प्राणोंको हरनेवाले मृत्युको अबमैंरचताहूं अर्थात्इसको मैंमारूंगा जैसेसर्पोंकोगरुड़जी २७ऐसेकहकेरथध्वजाअश्ववेसारथीइन्होंकरके सहित बाणासुर गंधर्वनगरकी तरह दीखने से बैठरहा २८ पीछे मायाकोधारण करनेवाला बाणासुर बाणोंको बर्षा करनेलगा पीछे अंतर्हित हुये बाणासुर को जानके अपराजित रूप अनिरुद्ध २९ अपने पुरुषार्थ करके दशोंदिशाओं को जीतनेलगा पीछे तामसी विद्याको प्राप्तहुआ ३० बाणासुर पैनेबाणों को छोड़ने लगा तब

सर्परूपी बाणों से चारों तरफसे बंधाहुआ ३१ और वेष्टित हुआ और प्रयत्नसे रहित और अग्निके समान मुखोंवाले सर्पोंके शरीरों से विचेष्टित और मैनाक पर्वतकी तरह स्थितहै ३२ परंतुसर्प रूप बाणों से परिवेष्टित ऐसाहुआ कि कुछकर न सका ३३ परंतु कछु पीड़ाकोप्राप्तन भया ३४ तबबाणासुर समीपमें प्राप्तहोकेउग्रबाणी से कहनेलगा कि हे कुम्भांड यहदुष्ट जल्दमारने योग्य है ३५ इसने मेराचरित्र दूषित करदिया है ऐसे बाणा सुरके बचनको सुन कुम्भांड कहनेलगा ३६ हेराजन् कुछमैं कहताहूं जो इच्छा होतो श्रवणकरयह जाननाचाहिये किसका तो पुत्रहै और कहांसेआयाहै और किसने यहां लाके प्राप्त किया है और इन्द्रके समान पराक्रम करनेवाला ३७ और युद्धमें देवपुत्रके समान क्रीड़ाकरनेवाला और बलवान् और सबशास्त्रोंमेंचतुर ३८ ऐसा यहहेदैत्यसत्तममारने के योग्य नहींहै और गांधर्व बिवाह करके तेरीकन्याका इससे संयोग हुआहै ३९ इसवास्ते अन्यपुरुषके अर्थदेनेके योग्य और अन्यपुरुषके ग्रहण करनेके योग्य ऐसीतेरी कन्यानहीं रहीहै इसवास्ते चिंतवन करइसका वधकरना न चाहिये अर्थात् वधकरनेके योग्यनहींहै और इसको जानके तू इसकी पूजाकरेगा ४० और इसकेमारनेमें महान् दोषहै और इसकी पूजाकरनेमें महान् गुणहै इसवास्ते यह पुरुष सबकाल में मानके योग्यहै ४१ और चारोंतरफसे सर्पोंकरके वेष्टित शरीर वालाभी होके पीड़ाको प्राप्त नहींहोताहै और बड़ेबड़े योद्धा ओंसेभी युद्धकरके पीड़ित नहींहोताहै ४२ ऐसेइस पुरुषको तू देख और वधको प्राप्तहुआभी यह हमसबोंको नहींगिनता है ४३ और जो मायाके प्रभावसे नहीं वशमें कियाजाता तो सब दैत्य गणों के संग भी अकेला युद्धकर सकाहै ४४ और सब संग्रामके मार्गों को जाननेवाला औरतेरेवीर्य्यसे अधिकवीर्य्यवालाऔरबहतेहुयेलोहूसे भीजेहुयेअंगोंवालाऔर सर्पोंसेवेष्टित४५ऐसाभीयहत्रिशिखावालीभृकुटी को चढ़ाकर हमसबोंसे चिंतानहीं करताहै और इसअवस्थासे प्राप्तहुआ और अपने बाहु बल से आश्रितऐसायह ४६ हे राजन्

तेरे को चिंतवन नहीं करताहै और हजारबाहू वाले तेरे सन्मुख दो२बाहुओं वाला ४७ और बीर्यमदसेयुक्त तेरे बीर्यको चिंतवनही करताहै ४८ सोहेराजन्जो उचितजानो तोबीर्यबलसे समन्वित य हजाननायोग्यहै औरयहइसकेसाथ संगकरनेवाली तेरीकन्याअन्य केपास नहींजायगी ४९ औरजो महातमाओंके बंशमें उपजनेवाला यहबीरहोतौ तेरेसे पूजापाने योग्यहै ५० इसवास्ते इसकीरक्षाकरऐ-सेकुम्भांडके बचनकोसुन और अंगीकारकर बाणासुरने ५१ अनिरु-द्धकी रक्षाकेवास्ते दैत्योंको स्थितकर ५२ अपने स्थान में बलिका पुत्र बाणासुर प्राप्तहुआ पीछे माया करके बंधाहुये अनिरुद्ध को देख ५३ नारदमुनि आकाशमार्गकरके द्वारकापुरी को गमनकरते भये जब नारदमुनि गमनकरतेभये ५४ तब अनिरुद्धचिंतवनकरने लगा की यह बाणासुर दैत्य युद्धमें प्राप्तहो नष्टहोगा इसमें संशय नहीं ५५ क्योंकि यह नारदमुनि द्वारकामें जायके इसवृत्तांतको श्री कृष्णकेअर्थ प्रकाशितकरेगा ५६ पीछेनागोंसेविचेष्टित और आतुर ऐसे अनिरुद्धको देख आंशुओं से रुकगये हैं नेत्रजिसके ऐसी ऊषा रोनेलगी तबरोती हुईऊषासे अनिरुद्ध कहनेलगा ५७ किहेभीरु किसवास्तेतू रोदनकरतीहै तू भयकोमतप्राप्तहो हे मृगलोचने मेरे अर्थ प्राप्तहुये श्रीकृष्णको जल्द तू देख ५८ और जिसके शंखके शब्दको और बाहुके शब्दको और बलके शब्दको सुनके सब दैत्य और दैत्योंकी स्त्रियोंके गर्भ नाशको प्राप्तहोजावेंगे ५९ बैशंपायन कहनेलगे ऐसे अनिरुद्धके बचनको सुन बिश्रंभको प्राप्तहो ऊषानृशं सरूप पिताको शोचनेलगी ६० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांबाणानिरुद्धयुद्धे अष्टसप्त त्यधिकशततोऽध्यायः १७८ ॥

एकसौउन्नासीका अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे जब बाणासुरके पुरमें ऊषाकेसंग अनिरुद्ध बलिकेपुत्र बाणासुरने रोंकदिया १ तब कोटवती देबीकेरक्षाकेअर्थ

शरणागतहुए अनिरुद्धने जो स्तोत्रपढ़ाहै तिस स्तोत्र को सुन २
अब वहीस्तोत्र प्रकाशित कियाजाताहै॥ अनंतमक्षयंदिव्यमादिदेवं
सनातनंनारायणंनमस्कृत्यंप्रवरंजगतांप्रभुं ३ चंडींकात्यायनीं देवी
मार्यांलोकनमस्कृतां वरदांकीर्तयिष्यामिनामभिर्हरिसंस्तुतैः ४ ऋषि
भिर्दैवतैश्चैव वाक्पुष्पैरर्चितांशुभां तांदेवींसर्वदेहस्थां सर्वदेव नम
स्कृतां ५ अनिरुद्धउवाच महेंद्रविष्णुभगिनींनमस्यामिहितार्थवैमन
साभावशुद्धेनशुचिःस्तोष्येकृतांजलिः ६ गौतमींकंसभयदांयशोदानं
दवर्द्धिनीम् मेध्यांगोकुलसंभूतां नंदगोपस्यनंदिनीम् ७ प्राज्ञांदक्षां
शिवां सौम्यांदनुपुत्रविमर्दनीम् तांदेवींसर्वदेहस्थां सर्वभूतनमस्कृ
तां ८ दर्शिनींपूरणींमायां वह्निसूर्यशशिप्रभां शांतिध्रुवांचजननींमो
हनींशोसणींतथा ९ सेव्यांदेवैःसर्षिगणैःसर्वदेवनमस्कृतां कालींका
त्यायनींदेवींभयदांभयनाशिनीम् १० कालरात्रिंकामगमांत्रिनेत्रांब्र
ह्मचारिणीं ११ सौदामिनींमेघवरां वेतालींविपुलाननांयूथस्याद्यांम
हाभागां शकुनींरेवतींतथा १२ तिथीनांपंचमींषष्ठीं पूर्णमासींचतुर्द
शीं सप्तविंशतिऋक्षाणिनद्यःसर्वादिशोदश १३ नगरोपवनोद्यानट्टा
राट्टालकवासिनीम् ह्रीश्रींगंगांचगंधर्वीं योगिनींयोगदांसताम् १४
कीर्तिमायांदिशंस्पर्शां नमस्यामिसरस्वतीम् वेदानांमातरंचैवसावि
त्रींभक्तवत्सलां१५ तपस्विनींशांतिकरीमेकानंशांसनातनीं कौटिर्यां
मदिरांचंडामिलांमलयवासिनीं १६ भूतधात्रींभयकरींकूष्मांडींकुसुम
प्रियाम् दारुणींमदिरावासां विंध्यकैलासवासिनीम् १७ वरांगनां
सिंहरथांबहुरूपांवृषध्वजांदुर्लभांदुर्जयांदुर्गांनिशुंभभयदर्शिनीम्१८
सुरप्रियांसुरांदेवीं वज्रपाणयनुजांशिवां किरातींचीरवसनां चौरसेना
नमस्कृतां १९ आज्यपांसोमपांसौम्यांसर्वपर्वतवासिनीम् निशुं
भशुंभमथिनीं गजकुंभोपमस्तनीं २० जननींसिद्धसेनस्य सिद्धचार
णसेवितां चरांकुमारप्रभवां पार्वतींपर्वतात्मजां २१ पंचाशद्देवकन्या
नांपत्न्योदेवगणस्यच २२ कद्रूपुत्रसहस्रस्य पुत्रपौत्रवरास्त्रियः मा
तापिताजगन्मान्यादिविदेवाप्सरोगणैः २३ ऋषिपत्नीगणानांचयक्ष
गंधर्वयोपितां विद्याधराणांनारीषुसाध्विसुमनुजासुच २४ एवमेतासु

नारीसु सर्वभूताश्रयाह्यसि नमस्कृतासित्रैलोक्ये किन्नरोद्गितसे
विते २५ अचिंत्याह्यप्रमेयासि पासिसासिनमोस्तुते एभिर्नामभिर
न्यैश्चकीर्तिताह्यसिगौतमि २६ त्वत्प्रसादादविघ्नेनक्षिप्रंमुच्येयबं
धनात् अवेक्षस्वविशालाक्षिपादौतेशरणंव्रजे २७ सर्वेषामेवबंधानां
मोक्षणंकर्तुमर्हसि ब्रह्माविष्णुश्चरुद्रश्चचंद्रसूर्याग्निमारुताः २८ अ
श्विनौवसवश्चैव धाताभूमिर्दिशोदश मारुतासहपर्जन्यो धाताभूमि
र्दिशोदश २९ गावोनक्षत्रवंशाश्चग्रहानद्योह्रदास्तथा सरितःसाग
राश्चैवनानाविद्याधरोरगाः ३० तथानागासुपर्णाश्च गंधर्वाप्सरसां
गणाः कृत्स्नंजगदिदंप्रोक्तं देव्यानामानुकीर्तनात् ३१ देव्यास्तवमि
दंपुण्यं यःपठेत्सुसमाहितः सातस्मैसप्तमेमासिवरमन्यंप्रयच्छति ३२
अष्टादशभुजादेवी दिव्याभरणभूषिता हारशोभितसर्वांगी मुकुटोज्ज्व
लभूषणा ३३ कात्यायनीस्तूयसेत्वंवरमग्र्यंप्रयच्छसिअतस्तवीमि
तांदेवीं वरदेवामलोचने ३४ नमोस्तुतेमहादेवि सुप्रीतामेसदाभव
प्रयच्छत्वंवरंह्यायुः पुष्टिंचैवक्षमांधृतिम् ३५ बंधनस्थोविमुच्येयंस
त्यमेतद्भवेदिति ॥ ऐसे अपने बंधछुटानेके अर्थ अनिरुद्धनेदेवीकीस्तु
तिकरी ३६ तब वैशंपायन कहनेलगे कि महादुर्ग पराक्रम वाली
देवीकी जब स्तुतिकरी ३७ तब अनिरुद्ध के समीपमें हितके अर्थ
शरणवत्सला ३८ देवी बाणपुरमें बंधेहुये अनिरुद्धको छुटाती भई
और सांत्वन भी करातीभई ३९ और अमितप्रतापवाला वह अनि
रुद्ध भी देवीकी पूजा करताभया ४० और नागपाशसे बंधाहुआ
और ऊषाकरके हृतचित्तवाला ऐसे अनिरुद्धके बज्रकेसमान पंजर
को हाथके अग्रभागसे स्फोटनकर ४१ पीछेसन्मुख स्थितहुईअनि
रुद्धसे कहतीभई ४२ श्रीदेवीजी कहनेलगी कि हे अनिरुद्ध श्रीकृष्ण
भगवान् यहां आके बाणासुरकी हजार बाहुओंका छेदनकर और
इस बंधनसे तेरेको छुटा द्वारकापुरीमें प्राप्तकरेगा ४३ तब प्रसन्न
हुआ और चंद्रमाकेसमान मुखवाला अनिरुद्ध फिर देवीजीकी स्तु
तिकरनेलगा ४४ हे वरकेदेनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कारहै और
हे दैत्योंको नाशनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कारहै ४५ और हे का-

मनाको पूर्णकरनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे सबोंके हित और प्यारके करनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कारहै औरहेशत्रु ओंके भयको दूरकरनेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कारहै और हेबंधन से छुटानेवाली देवी तेरे अर्थ नमस्कार है ४६ और हे ब्रह्माणी हे इन्द्राणी हे रुद्राणी हे भूतभव्यभवे हेशिवे हे नारायणि सबप्रकार के भयोंसे मेरीरक्षाकर तेरे अर्थ नमस्कारहै ४७ और हे जगत्के नाथ रूप तेरे अर्थ नमस्कारहै हे प्रिये हे दांते हे महाब्रते हेभक्ति प्रिये हे जगन्मातः हे शैलपुत्रि हे बसुंधरे ४८ मेरी रक्षाकर और हे विशालाक्षि हे नारायणि तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे दैत्योंको भयकरनेवाली सब दुःखोंसे मेरी रक्षाकर ४६ और हे रुद्रकी प्यारी हे महाभागवाली हेभक्तोंके दुःखको नाशनेवाली देवीतेरेको शिरसे मैं प्रणामकरताहूं क्योंकि बंधनमें स्थितहुए मेरेको तैंने छुटा दियाहै ५० वैशंपायन कहनेलगे कि सावधानहोके जो मनुष्यइस देवीके स्तोत्रको पढ़ेगा वह सब पापोंसे रहितहोके विष्णुलोक में जावेगा ५१ और बंधनमें स्थितहुआ मनुष्य इसके पाठसे छुट सक्ताहै यह सत्यहै जैसे व्यासजीका बचन ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वान्तर्गतविष्णुपर्वभाषायांअनिरुद्धकृत आर्यास्तवेनवसप्त त्यधिकशतोऽध्यायः १७६ ॥

एकसौअस्सीका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे जब अनिरुद्ध गृहमें नहीं दीखा तब मृगि- योंकेसमूहके समान अनिरुद्धके गृहमें सबस्त्रियांरोदनकरनेलगीं १ आश्चर्यहै धिक्कारहै हे नाथ नाथरूप कृष्णके स्थितहुये अनाथोंकी तरह भयसेपीड़ित हम रोवतीहैं २ और इन्द्र आदि सब देवते जि सकी बाहुका आश्रयले स्वर्गमें बसतेहैं ३ तिसको इसलोकमेंमहा भय उपजाहै अर्थात् तिस श्री कृष्ण का पौत्र अनिरुद्ध किसने हर लिया ४ आश्चर्यहै तिसअनिरुद्धको भयनहींहै परंतु वह श्रीकृष्ण के दुस्सह रूप क्रोधको उत्पन्नकरेगा ५ अर्थात् जो श्रीकृष्ण के

सन्मुख वैरीप्राप्तहोताहै वह मृत्युकी दंष्ट्राके अग्रभागमें स्थितहै६ और इसप्रकार के विप्रियबचनोंको श्रीकृष्णके अर्थ कहतीभई और ईश श्रीकृष्ण के सन्मुख युद्धमें इन्द्र भी नहीं जीसक्ता ७ और हत हुआहै नाथ जिन्होंका और अनिरुद्धके वियोगसे हम सब मृत्युके वशमें प्राप्तहोवेंगी ८ ऐसे कहतीहुई और बारंबार रोदनकरतीहुई बहुतसी स्त्रियां नेत्रोंसे जलकीबर्षा करनेलगीं ९ अर्थात् तिनस्त्रियों के आंशुओंसे पूरितनेत्र प्रकाशितहोनेलगे जैसे बर्षाकालमें जलसे ब्याप्त कमल १० और तिन्होंके हंसोंके रुधिरसेगीले पलक और लोहूसे गीले नेत्रहोतेभये ११ और अनिरुद्धकी हवेलीमें स्थितहुई रोदनकरनेवाली हजारहों स्त्रियोंका महाशब्द होनेलगा १२ तब अपूर्वभयके समान प्राप्तहुये तिस शब्दको सुनके अपने अपनेगृहों से वेगसे भागकर पुरुष प्राप्तहोनेलगे १३ और कहनेलगे किस कारणसे अनिरुद्धके घरमें यह महाशब्दहोताहै और कृष्णसेरक्षित रूप हमारेको यह भय कहां से प्राप्तहुआ १४ ऐसे स्नेह और विक्लवसे गद्गदरूपहुये सब पुरुष आपसमें कहतेभये जैसे गुहासे निकसे धैर्य्यसे रहित सिंह १५ और जो श्रीकृष्णके गृहोंपै नक्कारे व नौबतखाने बजाकरते वे भी बंदहोरहेहैं १६ ऐसे देखकेआपस में पूछतेहुये और आपसमें वृत्तांतको कहतेहुये १७ और आंशुओं से पूरित नेत्रोंवाले और क्रोधसे लालनेत्रोंवाले और सबकहतेहुये और युद्धमें दुर्मद ऐसे यादव पुरुष स्थितहुये १८ जब सब चुपहो गये तब बारंबार रोदनकरतेहुये और सुबकतेहुये श्रीकृष्णको विप्र-थुकहनेलगा १९ कि हे पुरुषेंद्र तू चिंतासे ब्याप्तहुआ यह क्या है तेरे बाहुकेबलके आश्रितहो सब यादव जीवतेहैं २० और तेरे आ-श्रितहुये हम सब अलग अलग बसतेहैं और तेरे विषे जयपराजय को स्थितकर बलवाला २१ और शंकासेरहित ऐसा इन्द्र सुखपूर्ब-क शयनकरताहै सो ऐसे तुम कैसे चिंतासे ब्याप्तभये २२ औरसब तेरी ज्ञातिके मनुष्य शोकरूपी समुद्रमें डूबतेहैं तिन डूबतेहुओं का हे महाभुज तू अकेला उद्धारकर २३ और चिंतासे ब्याप्तहुआ तू

कुछ भी नहीं बोलताहै यह क्या है और हे देव तू वृथा चिंताकरने को योग्य नहीं है ऐसे विप्रथुके बचनको सुनके और बहुतकालतक रोदनकरके २४ बाक्यको जाननेवाला श्रीकृष्ण वृहस्पतिजोकीतरह आप वचन कहनेलगा २५ कि हे विप्रथो चिंतासे आविष्टहुआ मैंइसकार्यको चिंतवन करताभया परंतु इस कार्यकी गतिको मैं नहीं जानताभया और आपनेबहुतसा मेरे अर्थ कहा भी परंतु मैंने कछु भी उत्तर नहीं किया २६ अब मैं सब यादओं के मध्यमें अर्थवाली वाणीको कहताहूं सो हे यादओ जैसे मैं चिन्तासे अन्वितहूं तैसे तुम सुनो २७ जब अनिरुद्ध हरागया तब पृथ्वीमें सब राजे हम सबोंको असमर्थ मानेंगे २८ पहले शाल्वराजाने हमारा राजा उग्रसेन जब हरलियाथा तब हम सबोंने दारुणयुद्धकर फिर लाके प्राप्तकिया २९ और जब बालक प्रद्युम्न शंबर दैत्यने हरलिया तब समयपै शंबरको मार प्रद्युम्न यहां प्राप्तहुआ ३० परंतु यह बड़ा कष्टहै कि अनिरुद्ध कहां गया ऐसा मैंनहीं स्मरणकरसक्ता ३१ और जिसने भस्मसे अवगुंठितकिया पैर मेरे मस्तकपै प्राप्तकिया है तिसके मित्रोंसहित जीवितको रणमें मैं हरूंगा ३२ ऐसे श्रीकृष्णके वचनकोसुनके सात्यकि कहनेलगा कि हे कृष्ण अनिरुद्धको ढूंढ़नेके अर्थ ३३ पर्वत बन आदि मार्गोंसे व्याप्त पृथ्वीमें चार अर्थात् चाकर भेजने चाहिये ३४ तब इस बचनको उत्तम मानि श्री कृष्ण उग्रसेनसे कहनेलगे ३५ हे राजन् अभ्यंतर चर और बाह्य चर अर्थात् मनुष्योंको ढूंढ़नेकेवास्ते आज्ञादेनी चाहिये ३६ तब वैशंपायन कहनेलगे कि ऐसे श्रीकृष्णके वचनको सुनके वेगसे कहताहुआ उग्रसेन राजा अनिरुद्धके ढूंढ़नेके अर्थ मनुष्योंको शिक्षादेताभया ३७ पीछे राजाकी आज्ञासे शिक्षित किये मनुष्य अश्वरथ ३८ ये सब अभ्यन्तर विधिसे और बाह्यविधिसे ३९ अर्थात् कितनेक गुप्तहोके और कितनेक प्रकटहोके वेणुमान् लता वेष्टरैवत रिक्षवान् इन पर्वतोंमें ४० अश्वोंपै चढ़के मनुष्य अनिरुद्ध कोढूंढो और एक एक उद्यानवन इन्होंमें ढूंढो और सब प्रकार के उद्यानोंमें गमनक-

रो ४१ और हजारहों घोड़े और बहुतसेरथ इन्होंपै चढ़के जल्द अनिरुद्धको ढूंढो पीछेसेनापति अनाधृष्टि अक्लिष्ट कर्म करनेवालेश्री कृष्णसे भयभीतहोके बचन कहनेलगा ४२ हे कृष्ण मेरे बचनको सुनो जोमेरे रुचताहै बहुतकालसे मैं तुम्हारेप्रति कहनेको होरहा हूं ४३ सो असिलोमा पुलोमा निसुंध नरक शाल्व मैंद द्विबिद ४४ हयग्रीव ये सबदैत्य और योद्धे देवताओं के अर्थतुम्होंने मारेहैंऔर युद्धमें येसबकर्म हे गोविंद तुम्हींने कियेहैं ४५ परंतुकहींभी तुम्हारीमदत किसीदेवने नहींकरी ४६ पीछेतुम्हींने कल्पवृक्ष के हरनेमें दुष्करकर्मकियाहै ४७अर्थात् ऐरावतहस्तीपै चढ़ाहुआ इन्द्रतैंनेअपनी बाहुके बलसे जीतलियाहै४८ इसकरके तेरेसंग इन्द्र बैरकररहा है इसमें संशयनहीं ४९ सो आप इन्द्रनेआके अनिरुद्ध हरलियाहै और किसीकी शक्ति ऐसेकामकरनेकी नहींहै ५० ऐसे बचनको सुन के सर्पकीतरह श्वासलेतेहुये श्रीकृष्ण महाबलवाले अनाधृष्टि केअर्थवचन कहतेभये ५१ हे सेनानी हे प्रिय ऐसाबचन तूमतकहे क्यों किदेवते क्षुद्रकर्म करनेवाले नहींहैं और अकृतकर्मको करनेवालेभी देवतेनहींहैं और शबितभी देवतेनहींहैं और बालकोंकी तरहभोकर्मकरनेवाले देवते नहींहैं ५२ और देवताओंके अर्थ दैत्योंको नाश करनेको मैंने बहुत यतन किये हैं और देवताओंके प्यार के अर्थ गर्वित और महाबलवाले दैत्योंकोमैं मारताहूं ५३ औरदेवताओंमें तत्पर और देवताओं में मनवाला और देवताओंका भक्त और देवताओं के प्यारमेंरत ऐसे मेरेकोजानके कैसे देवतेपापकरेंगे५४और क्षुद्रतासेरहित और सत्यवालेऔर नित्यप्रति भक्तोंपैदयाकरनेवाले ऐसे देवताओंसे पापनहीं होसक्ता तू बालकपनेसे ऐसेकहताहै ५५ और देवते और इन्द्रसे ऐसाकर्म नहीं बनसकता परंतु यह मालूम होताहैकिकिसीपुंश्चलीस्त्रीने अनिरुद्धहराहै५६ वैशंपायन कहनेलगे ऐसेचिंतवन करनेवाले और अद्भुत कर्मवालेऐसेश्रीकृष्णके बचनको सुनपीछे अक्रूर मधुर बाणीसे बचन कहनेलगा ५७ किहेप्रभो जो इन्द्रका कार्यहै सो निश्चै हमारा कार्यहै ५८ और जो हमाराकार्य

है सो निश्चै इन्द्रका कार्यहै और देवते हमारी रक्षाकरतेहैं और हम देवताओं की रक्षाकरतेहैं ५६ और देवताओं के अर्थ हमोंने मनुष्य के शरीर धारणकियेहैं ६० ऐसे अक्रूर के बचनोंसे प्रेरित कियाश्रीकृष्णस्निग्धऔर गंभीरबाणी से फिरकहने लगा ६१ कि देवते गंधर्व यक्ष राक्षस इन्होंने हर्गिज अनिरुद्ध नहींहरा है किंतु किसीपुंश्चलीस्त्रीने हराहै ६२ अर्थात् मायासेबिदग्ध और पुंश्चली ऐसीदैत्य और दानोंकी स्त्रियें होतीहैं तिन्होंने अनिरुद्ध हराहै अन्य नहीं हरसक्ता ६३ वैशंपायन कहनेलगा कि ऐसे जब श्रीकृष्णने बचनकहा ६४ तबतिसी समयमें देशदेशांतरों से आयेहुये चाकर सांबके द्वारपै प्राप्तहोके शनैःशनै गद्गद बाणी से यहबचन कहने लगे ६५ किसब उद्यान गुहापर्वत सभानदी सरइन्होंमेंसे एक एक जगहतलाशकियागयापरंतुकहींभी अनिरुद्धनहींमिला६६ औरअन्य चाकर आकेकहने लगेकि हमोंने सबदेश देशांतर ढूंढ़लिया परंतु कहींभी अनिरुद्ध नहींदीखा ६७ हेयदुनंदन जो अन्य कछु बिधान करनेके योग्यहो अनिरुद्ध को ढूंढ़नेके अर्थसो हमारे प्रति आज्ञाकी जिये ६८ तबदीन मनवाले और आंशुओंसे आकुल नेत्रोंवाले ऐसे द्वारका वासी आंपसमें कहनेलगे कि अबक्या करना उचितहै ६९ और कितनेक संदस्ट रूपओष्ठ पुटोंवाले और कितनेक आंशुओं से व्याप्तनेत्रों वाले और कितनेक भृकुटियोंको चढ़ानेवाले ऐसेये सब अर्थकी सिद्धिके अर्थ सब चिंतवन करनेलगे ७० ऐसेचिंतवन करने वाले और बहुतसे अर्थोंको कहनेवाले ऐसे यादओंके अनिरुद्ध कहां गयायहमहा संभ्रमहुआ ७१ तबआपसमें देखनेवाले और प्राप्त हुआहै क्रोधजिन्होंके ऐसे औरबिगड़गयाहै मनजिन्होंका ऐसे सब यादवकहनेलगे ७२ कि अनिरुद्ध हरागया अबकैसे हम इसरात्रि को व्यतीतकरें ७३ ऐसे कहतेहुये यादओंके प्रभातहोगया तबन-क्कारों केशब्दसे और शंखोंके शब्दसे ७४ श्रीकृष्णका प्रबोधन कर तेभये ७५ जब प्रभातमें सूर्यप्रकट हुआ तबहंसतेहुये नारदयादओं की सभामेंप्राप्तहुआ ७६ पीछेकृष्ण के संग प्राप्तहुये सब यादओं

को देख के नारद मुनि जय शब्द करके प्रथम श्रीकृष्ण से पूजा हुआ नारद फिर श्रीकृष्ण को पूजता भया ७७ पीछे बिगड़ाहुआ है मन जिसका और युद्धमें दुर्जय ऐसा श्रीकृष्ण अभ्युत्थानकर मधुपर्क और सुंदर बाणी नारद के अर्थ देताभया ७८ पीछे सब प्रकारके आस्तरणों से संवृत्त और श्वेत आसन पै सुखपूर्वक और यथायोग्य नारदजी स्थितहो प्रयोजन संयुक्त बचन को कहने लगे ७९ कि चिंतासे व्याप्त और संगसे रहित और बिगड़े हुये मनवाले और उत्साहसे हीन ऐसे सब यादव हिजड़ों की तरह कैसेबढ़ेहो ८० ऐसे नारदके बचनको सुन श्रीकृष्णकहनेलगे कि हे भगवन् आप सुनिये ८१ हे ब्रह्मन् रात्रिमें किसीने अनिरुद्धकोहर लिया तिसके अर्थ हमसब चिंतासे युक्तहोरहेहैं ८२ जो यह वृत्तांत तुम्होंनेकहींसुनाहो व कहीं अनिरुद्धकोदेखाहो तो हेभगवन् आप कथनकीजिये यह आख्यान हमको अतिप्रियहै ८३ ऐसे श्रीकृष्णके बचनकोसुन हंसतेहुये नारदमुनि कहनेलगे कि हे मधुसूदन आप श्रवणकीजिये ८४ देवासुर युद्ध के समान युद्ध बाणासुर के संग अनिरुद्धकाहुआ ८५ और बलवाले बाणासुर के ऊषा नामवाली कन्याहै तिसके अर्थचित्रलेखा अप्सरा अनिरुद्धको हरके लेजातीभई ८६ तहां अनिरुद्ध और बाणासुरका आपसमें दारुणरूप महा युद्धहुआ जैसे किसीसमयमें बलि और इन्द्रका ८७ यह अद्भुतरूप युद्धहमोंने भीदेखा जब बाणासुरके वशमें अनिरुद्ध नहींहुआ ८८तब बाणासुरने माया करके नागोंसे अनिरुद्धको बांधलिया और मारने को भी चाहा ८९ परंतु बाणासुरका कुंभांडनामवाला मंत्री मारने से निवारण करताभया ९० ऐसे मायाकोप्राप्तहुये बाणासुरनेसर्पों से अनिरुद्ध बांधरक्खाहै सो तुमबहुतजल्द यशकेअर्थ और बिजयके अर्थउत्थानकरो ९१ और जयकी इच्छावालोंमें प्राणोंकी रक्षाके अर्थ यहकाल उत्तम नहींहै और वह अनिरुद्ध बीरबहुत पीड़ित है परंतु धीर्य्यतासे प्राणोंको बचारहाहै ९२ बैशंपायनकहनेलगे-ऐसेनारद जीके बचनों को सुनके श्रीकृष्ण यात्रासंबंधी संभारोंको आज्ञा देते

भये ९३ तब चंदन और धानकीखीलइन्होंको बखेरतेहुये श्रीकृष्ण उससभासे निकसे ९४ तब नारदमुनिकहनेलगे-कि हेमाधव गरुड़ जीका स्मरण करनेको आपकोयोग्यहै क्योंकि अन्यकरके वहमार्ग गमन करनेके योग्यनहींहै ९५ यहांसे ग्यारह हजार योजन दूर शोणितपुरहै ९६ जहांअब अनिरुद्ध स्थितहै इसवास्ते मनकेसमान वेगवाला और महाबीर्य और प्रतापवालाऐसागरुड़है ९७ तिसको तू बुला हेगोबिंद वहतेरेको एकमुहूर्त्त मेंप्राप्तकर बाणासुरको दिखा वेगा ९८ वैशंपायन कहनेलगे-नारदजीके बचन को सुन श्रीकृष्ण गरुड़का स्मरण करनेलगे तब श्रीकृष्ण के समीप में प्राप्तहो और अंजली बांधके गरुड़ स्थितहुआ ९९ और महाबलवाला गरुड़श्री कृष्णको नमस्कारकर मधुर बाणी से कहनेलगा १०० कि हे पद्म नाभ हेमहाबाहो किसवास्ते मेरास्मरण कियाजो तुम्हारा कृत्य है तिसको मैं सुननेकी इच्छा करूंहूं १०१ और हेप्रभो अपनेपांखोंके परिक्षेपसे किसकी पुरीका नाशकरूं और हे गोबिंद तुम्हारेप्रभाव से मेरेबलको कौननहीं जानताहै १०२ और तेरी गदाके वेग को और अग्निरूप चक्रको कौननहीं जानके मूढ़ात्मा गर्वसे नाश को प्राप्तहोवेगा १०३ और सिंहके समान मुखवाले हलको बलदेवजी किसकेअर्थ नियुक्त करेंगे और निर्भिन्न किया किसका देहपृथ्वीमें प्राप्तनहींहोवेगा१०४और शंखकेशब्दों करकेकिसकेप्राणोंको मोहि तकरोगे और अपनेकुटंबकरके सहित कौनधर्मराजके लोककोप्राप्त होवेगा १०५ ऐसेजब गरुड़ने बचनकहे तब श्रीकृष्ण कहनेलगे हे कहनेवालोंमें श्रेष्ठ तू सुन १०६ बलिके पुत्र बाणासुरने अपराजित रूप अनिरुद्ध शोणितपुरमें ऊषाके अर्थ बांधाहै १०७ अर्थात् काम से पीड़ित अनिरुद्ध को अधिक विषवाले सर्प्पोंसे बांधरक्खाहै सो हे पतगेश्वर तिसको छुटानेके अर्थ मैंने तेरा आह्वान कियाहै १०८ तेरेसमान वेगमें कोईभी नहींहै और पक्षियोंमें उत्तम तू है और अन्य किसीसे वहमार्ग गमनकरनेको अशक्यहै इसवास्ते हेकाश्यप १०९ जहां अनिरुद्धबसैहै तहां तू मेरेकोबहुतजल्दप्राप्तकर और हेबीरयह

तेरे पुत्रकी बधू और अपने पुत्रसे मिलनेकी इच्छावाली ऐसी प्रद्यु
म्नकी स्त्री वैदर्भी रोवतीहै ११० तेरे प्रसादसे यह पुत्रवाली होवेगी
और हे पन्नगनाशन तैंने पहले अमृत हरलियाहै १११ और मेरे
संग समागमकर तिसकालमें तू मेरा ध्वज होता भयाहै और ये सब
वृष्णिबंशके सब मनुष्य तेरे भक्तहैं हे पतगेश्वर ११२ तू मेरी मि-
त्रता और भक्तिको अबमान तेरे वेगके समान कोईभी नहींहै और
अन्य पक्षीभी तेरे समान नहींहै इसवास्ते हे सुपर्ण सुकृतकरके मैं
तेरेंको कहताहूं ११३ और दासीभावको प्राप्तहुई माता तैंने अके-
ले पहले छुटाईहै और क्षेप और बिक्षेप को आश्रित होके पहले
तैंने पीड़ा भी नाशीहै ११४ और सब देवताओं के गणोंको अपने
पृष्ठभाग पै प्राप्तकर मेरे अगमरूप देशोंको प्राप्तहो और तेरे आ-
श्रयसे बिजयहै ११५ और भारेपनसे तू मेरु पर्बतके समानहै और
हलकेपनेसे तू बायुके समानहै और पराक्रममें तेरे तुल्य तीनोंकालों
में कोईभी नहींहै ११६ इसवास्ते हे सत्यसंध हेमहाभाग हेबैनतेय
हेमहाकीर्त्ति वाले अनिरुद्ध के देखने के अर्थ अब मेरी सहायता
कर११७ गरुड़जी कहनेलगे—हेकृष्ण हेमहाभुज तुम्हारेबाक्य अति
अद्भुतहैं और हे महाभुज तुम्हारे प्रसाद से सब जगह बिजय
होताहै ११८ और हे मधुसूदन तुम्हारे स्तुति करने से मैं धन्यहूं
और अनुगृहीतहूं और मेरे करकै तुम स्तुति करने के योग्यहो और
हे महाभुज तुम मेरी स्तुति कैसे करतेहो ११९ और वेदोंके अध्यक्ष
और देवताओंके अध्यक्ष और सब कामनाओंको देनेवाले और अ-
मोघ दर्शनवाले और वरकी इच्छावालेंको वरके देनेवाले ऐसे तुम
हो १२० और चार भुजाओंवाले और चार मूर्त्तियोंवाले और चार
प्रकार के यज्ञ संबन्धी कर्मोंवाले और चार आश्रमोंवाले औरहोता
और चार पुरुषार्थों का नेता और महाकबि १२१ और धनुष और
चक्र शंख इन्होंको धारण करनेवाले ऐसे तुमहो और हेप्रभो पहले
देहोंमें भूमिको धारण करनेवाले भी तुम्हींहो १२२ और लांगली
मुसली चक्री इननामोंवाले और चाणूरदैत्यकोमथनेवाले और गायों

से प्यार करनेवाले और कंसको मारनेवाले ऐसे तुमहीं हो १२३
और गोवर्द्धनको धारण करनेवाले और मल्लोंके शत्रु और मल्लभावन
मल्लप्रिय महामल्ल महापुरुष इननामोंवाले १२४ और ब्राह्मणोंसे
प्यार करनेवाले और ब्राह्मणों पै हित करनेवाले और ब्राह्मणों को
जाननेवाले और विप्रभावन ब्रह्मण्य बरेण्य दामोदर इन नामों
वाले १२५ और प्रलंबको मथनेवाले और केशीको मारनेवाले १२६
और अशिलोमादैत्यको मारनेवाले ऐसेभी तुम्हींहो और रावणको
नाशनेवाले और बिभीषणको राज्य देनेवाले और बालिको नाशने
वाले १२७ और सुग्रीवको राज्यदेनेवाले और बलिराजा के राज्य
को हरनेवाले और रत्नोंको हरनेवाले और महारत्न १२८ और
धन्वंतरी और बरुण ऐसेभी तुम्हींहो और खड्गको धारणकरनेवाले
और शार्ङ्गधनुष कोधारण करनेवाले १२९ और दाशार्ह नामसे वि-
ख्यात और महाधन्वा और धनुःप्रिय गोबिंद इन नामोंवाले और
समुद्र ऐसेभी तुम्हींहो १३० और आकाश और तप और समुद्रको
मथनेवाले ऐसेभी तुम्हींहो और स्वर्ग और बहुत फलदेनेवाले और
स्वर्गमें विचरनेवाले १३१ और महामेघ और बीजकी निष्पत्ति
और त्रिलोकीमें गमनकरनेवाले और क्रोध लोभ रूप मनोरथवा-
ले १३२ और कामनाको देनेवाले और कामरूप और सब प्रकारके
धनुषोंको धारण करनेवाले और प्रलय और निलय और महान्
ऐसे तुम्हींहो १३३ और हिरण्यगर्भरूप को जाननेवाला और रूप
वाला और मधुसूदन और ईश और असंख्येय गुणोंसे अन्वित ऐसे
भी तुम्हींहो १३४ और हे देव स्तुतिके योग्य तुमहो और मेरेको
स्तुतिकरनेकी इच्छा करतेहो और जो तैंने नेत्रोंसे घोर रूप प्राणी
देखेहैं १३५ वे सब यमदण्ड करके हतहुये तिरछे प्रकारसे नरक में
गमन करतेहैं और जिन्होंको तुम प्रीतिसे देखतेहो १३६ वेइस-
लोकसे मरके स्वर्गमें गमन करतेहैं और हे महाबाहो मैं तेरे बशमें
और आज्ञामें स्थितहूं १३७ तब जयजय शब्द करके गरुड़ श्रीकृष्ण
से कहने लगा हेमहाबलमैं यहां स्थितहुआ तूमेरेपै सवारहो १३८

तब श्रीकृष्ण गरुड़जीके कंठमें बाहुडाल मिलापकर कहनेलगे हे मित्र शत्रुओंके नाशके अर्थ यह अर्घ ग्रहण कीजिये १३६ ऐसे अर्घ देके शंख चक्र गदा तलवार इन्होंको धारण करनेवाले श्रीकृष्ण गरुड़जीपै चढ़तेभये १४० और कृष्णके पासमें आनंदसे बलदेवजी भी स्थितहुये और सबोंको जीतनेवाले और कृष्णबर्णवाले १४१ और चारदंष्ट्रावाले और चारबाहुओंवाले और चारवेद और छःअंगों के जाननेवाले और श्रीबत्स से अंकित और कमल के समान नेत्रों वाले और ऊर्ध्वगत रोमोंवाले और कोमल त्वचावाले १४२ और समान अंगुलियोंवाले और समान नखोंवाले और अंगुली और नखोंके लाल अंतरवाले स्निग्ध और गंभीर ऐसा शब्दवाले उत्तम भुजावाले १४३ और गोड़ोंतक भुजावाले तांबाके समान मुखवाले और सिंहके समान स्पष्ट बिक्रमवाले और हजार सूर्य्यों के समान प्रकाशित १४४ और बिश्वात्मा और भूतोंके भावन और जिसको आठप्रकार काऐश्वर्य्य प्रसन्नहुये ब्रह्माजी देतेभये ऐसे १४५ और प्रजापति साध्य देवते इन्होंके ऐश्वर्यकोभी प्राप्तहोनेवाले और सूत मागध बंदी १४६ वेद वेदांगको जाननेवाले ऋषि इन्होंसे यथायोग्य रूपवान् ऐसे श्रीकृष्ण द्वारिकापुरीकी रक्षाकेवास्ते आज्ञादेके १४७ गमन के अर्थ मति करते भये प्रथम गरुड़पै श्रीकृष्ण स्थित हुये तिसके पीछे बलदेवजीभी स्थितहुये १४८ औरकेपीछे शत्रुओंकोजीत-नेवाला प्रद्युम्न स्थितहुआ और हे महाबाहो युद्धमें बाणासुर को जीत १४९ तेरे सन्मुख युद्धमें कोईभी स्थितहोनेको समर्थ नहींहै और तेरे प्रसाद से में स्थित निश्चय लक्ष्मीहै और तेरे पराक्रम से विजयहै १५० इसवास्ते सेनासहित बाणासुर दैत्येन्द्रको युद्धमें तू जीतेगा और सिद्ध चारण महर्षि इन्होंकी ऐसी बाणियों को १५१ श्रवण करतेहुये श्रीकृष्ण गमन करतेभये १५२

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत बिष्णुपर्व भाषायां कृष्णप्रयाणेऽशी त्यधिकशतोऽध्यायः १८० ॥

—※—

एकसौइक्यासीकाअध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे पीछेनक्कारोंके शब्दोंसे और शंखोंके महा शब्दोंसे और बंदी मागध सूत इन्होंकी स्तुतिसे १ और मनुष्यों के जय और आशिर्बादसे रूपवान श्रीकृष्ण चंद्रमा सूर्य शुक्र इन्होंके समान रूपको धारणकरतेभये २ और गरुड़जीके उड़नेसे और श्रीकृष्णके तेजसे व्याप्त हित ऐसा आकाश अतिशोभित होने लगा ३ और आठ बाहुओंवाला और पर्वत के आकार कांतिवाला और कमलके समान नेत्रोंवाला और बाणासुरके संग युद्धकी आकांक्षा वाला ऐसा श्रीकृष्णभी शोभित होनेलगा ४ और तलवार चक्र गदा बाण ये सब श्रीकृष्णने अपनी दाहिनी तर्फ स्थितकिये और कवच शार्ङ्ग धनुष और साधारण धनुष और शंख ये बांये तर्फ स्थितकिये ५ और श्रीकृष्णने हजारशिर धारणकिये ६ और बल देवजीने हजार शरीर धारणकिये ७ और प्रद्युम्नजीने सनत्कुमार का शरीर धारणकिया ८ ऐसे जब पांखोंके बलके बिक्षेपोंसे बहुतसे पर्वतोंको कंपाताहुआ गरुड़ गमन करनेलगा और पीछें पवनकी गतिको प्राप्तहो गरुड़ गमन करनेलगा ९ तब सिद्ध चारण इन आ- दिके मार्गको उल्लंघन करताभया १० पीछे बलदेवजी कहनेलगे हेकृष्ण अपनी कांतिसेहीन हम कैसे होगये ११ सब हम सोनाके समान कांतिवाले होगयेहैं क्या हम सुमेरुपर्बत के समीपमें प्राप्त भये यह तू वर्णन कर १२ जब श्रीकृष्ण कहने लगे कि हे अरिंदम बाणासुरके नगरके समीपमें हम आगयेहैं तिसकी रक्षाके वास्ते प्रकाशमान स्थितहुआ यह अग्नि निकसाहै १३ और आहवनीयजो यह अग्निहै इसकी कांतिसे हम सब दग्ध होतेहैं इसकरके हमारे वर्ण बिगड़गये हैं १४ तब बलदेवजी कहनेलगे कि बाणासुरकी पुरीके समीपमें आगयेहैं और अपनी कांतिसे रहित होगयेहैं तोजो कछु यहां हितहो वह करना चाहिये १५ तबश्रीकृष्ण कहनेलगे कि हे गरुड़ यहां जैसा होना उचित है वह कार्य तू कर जब तू वि-

धान करलेगा तब उत्तमकार्य मैंउरूंगा१६ वैशंपायन कहनेलगे ऐसे श्रीकृष्णके वचनको सुन महाबलवाले गरुड़जी हजारमुखों को धारणकरतेभये १७ तब जल्दगंगाजीमें प्राप्तहो अर्थात् आकाश गंगामें स्नानकर और बहुतसे जलका पानकर १८ आकाशमें स्थित हुआ तिसजलकी बर्षा करनेलगा ऐसे अग्नि गरुड़जीने शांतकिया १९ ऐसे आकाशगंगा के जलसे शांतहुआ हवनोय अग्निको देखके २० आश्चर्य को प्राप्तहुआ गरुड़ कहनेलगा कि प्रलयकालमें यही अग्निदग्धकरताहै २१ परंतु कृष्ण बलदेव प्रद्युम्न ये तीनों तीनलोकोंकोभी दग्ध करनेको समर्थहैं २२ पीछे जब अग्नि शांतहोगया तब गरुड़जी अपनी पांखबेगके बिक्षेपसे महाशब्दको करता हुआ चला २३ पीछे नानाप्रकारके रूपोंको धारण करनेवाले इन तीनों को देखके महादेव के अनुचर अग्नि कहनेलगे २४ कि किसवास्ते येतीनोइस जगह प्राप्तहुयेहैं और कौन येहैं और निश्चयको वे अग्निनहींप्राप्तहुये २५ तब तीनोंयादओंके संग संग्राम प्रवृत्तहुआजब युद्धहोनेलगा तब महाशब्द प्रकटहुआ २६ तिस शब्दको सुन के अंगिरानाम वाला अग्नि अपने पुरुषको भेजनेलगा २७ कि जहां वह युद्धहोताहै तहां तू गमनकर देरमतकर २८ और देखके तू यहां जल्दआके प्राप्तहो ऐसे कहा हुआ वह पुरुष बेगसेजाके युद्धको देख कहनेलगा कि सब अग्नियोंका श्रीकृष्णके संग युद्धहोरहाहै २९ अर्थात् कल्माष कुसुम दहन शोषण तपन इन नामों वाले पांचअग्नि ३० स्वाहाकारके बिषयमें बिख्यात स्थित होरहेहैं ३१ और पिठर पतंगस्वर्ण स्वगाध भ्राजये स्वधाकारके आश्रितहुये पांचअग्नि अपनी अपनी सेनाओंको लिये युद्ध कररहेहैं ३२ और ज्योतिष्टोम और बिभाग इननामोंवाले और वषट्कारके आश्रितहुये दोनोंअग्नि युद्ध कररहेहैं ३३ ऐसे भेजेहुये पुरुष के बचनको सुन अग्निरूपरथ में स्थितहो और प्रकाशितरूप बाणकोउठा ज्योतिष्टोम और बिभाग इनदोनों अग्नियोंके मध्यमें अंगिरा अग्निभी आके प्राप्तहुआ ३४ तब पैने बाणोंको छोड़ताहुआ अंगिरा अग्निसेक्रोधको प्राप्तहुआश्री-

कृष्ण विस्मय करानेकीतरह बारंबार कहनेलगा ३५ कि सबअग्नि यहां स्थितरहो अबमैं तुम्हारेको भयदेताहूं मेरेअस्त्रके तेजसे दग्धहु-ये तुम दिशा और विदिशामें भागके जाओगे३६ तब प्रकाशित त्रिशूलको हाथमें धारणकरनेवाला और क्रोधसे कृष्णके प्राणोंको हरने वाला ऐसा अंगिराअग्नि बेगसे युद्धमें श्रीकृष्णके सन्मुखभागा३७ तब अर्द्धचंद्र औरपैनेऔरसूर्यऔरअग्निके समानकांतिवाले ऐसे बा-णोंसे श्रीकृष्ण अंगिराअग्निके प्रकाशितरूप त्रिशूलको काटके ३८ पीछे स्थूणाकर्ण रूप और प्रकाशित ऐसे बाणकरके अंगिरा अग्नि की छातीकोबेधते भये ३९ तब लोहूके समूहसे भीजेहुये गात्रं कर केविध्वंधअंगोंवाला अंगिराअग्नि बिजलकी तरह बेगसे पृथ्वीमेंपड़ा ४० और शेष सब अग्नि और चारों ब्रह्माके पुत्र रूप अग्नितबयु-द्धसेभागकेबाणासुरके पुरमेंजाके प्राप्तहुये ४१ पीछे जहां बाणासुर कापुरथा तहां श्रीकृष्णभी आके प्राप्तभये पीछेबाणासुरके पुरको देख दूरसे नारदमुनिबोला ४२ कि हे महाभुज यह शोणितपुरहै तिसकोतूदेख यहां महातेजवाला महादेव पार्बतीकेसंग बसताहै४३ और इस बाणासुरकी रक्षाके अर्थ निरंतर स्वामकार्तिकभी बसता है ऐसे नारदके वचनको सुनके श्रीकृष्ण कहनेलगे ४४ किएक क्षण चितवनकरो परंतु हे महामुने सुनजो बाणासुरकी रक्षाके अर्थ महा-देवजीआवैंगे तो ४५ अपनीशक्तिके अनुसार हमभी महादेवजीके संग युद्धकरैंगे ऐसे कृष्ण और नारद के कहतेहुये४६ बाणासुरकेपुर पर आयपहुंचे तब अपने शंखको मुखमें धारणकर श्रीकृष्णबजाके४७ और दैत्योंको भयकी उत्पत्तिकरके अद्भुतकर्म करनेवाले ४८ बाण सुरके पुरमें प्रवेश करतेभये तहांशंखके शब्द और नक्कारोंके शब्दा तिन्होंकरके ४९ अनेक प्रकारके शब्दहोरहेहैं और तहां भयसे युद्ध में किंकरोंकी सेनाको आज्ञा दीगईहै ५० और बहुत से किरोड़हां दीप्तप्रहारों वालेयोद्धाखड़ेहैं और संख्यासे रहित और बड़ेबडेबद्दलों के समान कांतिवाले ५१ और नीलेपर्वत के समान और अबिनाशी और अप्रमेय और दीप्त प्रहारोंवाले ऐसे दैत्यदानव राक्षस ५२

प्रमाथगण ये श्रीकृष्णसे युद्धकरनेलगे और चारोंतरफसे प्रकाशित
मुखोंवाले यक्षराक्षस किन्नर लतावाली अग्नियोंकी तरहहोके ५३
कृष्णआदि चारोंके रुधिरको पीनेके अर्थ युद्धमें स्थितहुये तब महा
बलवाले बलदेवजी कहनेलगे कि हे कृष्ण हमारे बलका नाशहोता
है ५४ इसको तू देख हेकृष्ण हे कृष्ण हेमहाबाहो इन्हों को तू बड़ा
भय प्राप्तकर ऐसे बलदेवजीने प्रेरित किया श्रीकृष्ण ५५ तिन्हों के
नाशके अर्थ आग्नेय अस्त्रको ग्रहणकर ५६ जहां जहां वह सेना
दीखे तहांतहां बेगसे छोड़नेलगा ५७ अर्थात् शूलपट्टिश शक्ति रिष्टि
धनुष परिघ इन्हों से युक्त ५८ और प्रमाथों के गणोंसे विशेषकरके
युक्त ऐसी सेना पृथ्वीमें पड़नेलगी पीछे पर्वत और मेघके समानकां
तिवाले ५९ और नानाप्रकार के रूपोंवाले और भयानक ऐसे बाह
नोंपैस्थितहुये बहुतसेयोद्धायुद्धमेंप्राप्तहोनेलगे६० तबवायुसे फेंकेहुये
बद्दलों की तरह और दृढ़धनुष६१मूसल तलवारगदा परिघ इन्हों
करके पीड़ादेनेवाले स्थितहोनेलगे ६२ जब ऐसीसेनाको देखकेबल
देवजी श्रीकृष्णसे कहनेलगे ६३ हेकृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो यह
जो सेनादीखतीहै इसकेसंग युद्धकरनेको मैं इच्छाकरताहूं ६४ तब
श्रीकृष्ण कहनेलगे कि हेप्रिय इनयोद्धाओंके संग युद्ध करनेकीमेरी
इच्छाहै ६५ सो युद्धकरनेके वक्त पर्वको सुखकरनेवाले मेरे अगाड़ी
गरुड़जीरहेगा और बायेंतरफ प्रद्युम्न स्थित रहेगा और दाहने
तरफ आपस्थितरहो ६६ ऐसे आपसमें इस घोरयुद्धमें रक्षाकरो६७
बैशंपायन कहनेलगे ऐसे आपसमें कहतेहुये गदा मूसल हल इन्हों
करके युद्ध करनेवाला ६८ बलदेवजी का भयानकरूप हुआ जैसे
प्रलयकाल में सब प्राणियों को दग्धकरनेवाले कालका ६९ पीछे
हलसे सेना को खैंच और मूसल से मार मार युद्ध मार्ग में चतुर
बलदेवजी बिचरनेलगा ७० और युद्धकरतेहुये दैत्यों को महाबल
वाला प्रद्युम्न बाणों से चारोंतरफ बींधनेलगा ७१ और स्निग्ध
अंजनके समान कांतिवाला और शंख चक्र गदा इन्हों को धारण
करनेवाला ऐसा श्रीकृष्ण बहुत प्रकार से शंखको बजाके युद्धकरने

लगा ७२ और गरुड़जीने अपनी पांखोंके प्रहारसे और नख और मुखसे दारितकिये बहुतसे योद्धा धर्मराजके पुरमें प्राप्तकरदिये ७३ तिन्होंकरके हन्यमान दैत्योंकीसेना बाणोंकी बर्षासे मरनेलगी७४ जबसेना मरनेलगी तब रक्षाकरने के अर्थ तीन पैरोंवाला और तीन शिरोंवाला और छःभुजाओंवाला और नौ नेत्रोंवाला ७५और भस्मका प्रहारकरनेवाला और भयानक और कालप्रभुके समान उपमावाला और हजार मेघोंके समान शब्दकरनेवाला ७६ और ऊंचे श्वासलेनेवाला और जंभाईलेनेवाला और अतिनिद्रासे अन्वितशरीरवाला और नेत्रोंसे आकुलरूप मुखको बारंबार करनेवाला७७ और बारंबार भ्रमणवाला और संहृष्टरूपरोमोवाला और ग्लानरूप नेत्रोंवाला और भग्नचित्तकी तरह श्वास लेनेवाला और क्रोधको प्राप्तहुआ ऐसा ज्वर बलदेवजीसे साक्षेप बचनकहनेलगा ७८ कि ऐसाबलसेमत्तहुआहै कि युद्धमें मेरेको नहींदेखता स्थितहो स्थितहो इसयुद्धमें मेरेसे तू जीवतानहीं छूटेगा७६ऐसे कहके हंसताहुआऔर प्रलय कालकी अग्नि के समान घोर रूपभयको जनाताहुआ ऐसा ज्वर बलदेव के सन्मुखभया ८० और युद्धमें हजारहां प्रकारके मंडलोंको करनेवाले बलदेवजी के समीपमें प्राप्तभया और अतिबलवाले ज्वरने बलदेवजीके शरीर पै ८१ भस्मका प्रहारकिया तब शीघ्रतासे पर्वत के समान शरीरवाले बलदेवजीकी छातीपै भस्मपड़ा ८२ सो तिसकी छातीसेवह भस्म मेरुके शिखरतक प्राप्तहुआ और प्रकाशितहुआ पर्वतके शिखरको दारण करताभया ८३ और शेष भस्मसे बलदेवजी जलने लगे तब भग्नहुये और मूर्च्छित हुये बलदेवजी ८४ श्रीकृष्णसे कहनेलगे हेकृष्ण हेकृष्ण हे महाबाहो मैंजलताहूं मेरेको अभय दो ८५ और हे प्रिय मैं चारोंतरफसे दग्ध होताहूं कैसे मेरी शांतिहोगी ऐसे बलदेवजी के बचनको सुनके प्रहार करनेवालों में ८६ उत्तमरूप श्रीकृष्ण हंसके बचन कहने लगा किहेप्रिय डरोमत भयमतमानो ऐसेकहके बलदेवजीसे श्रीकृष्ण कोलीभरके मिलनेलगे ८७ तबस्नेहसे बलदेवजीका दाहशांतहुआ

ऐसे बलदेवजीको दाहसे छुटाके ८८ क्रोधको प्राप्तहुये श्रीकृष्ण ज्वरसे कहनेलगे कि हेज्वर तू यहांआओरजोतेरेमें शक्तिहोतोअपनी शक्ति के अनुसार मेरे से युद्धकर ८६ और जो तेरा पौरुषहो वह भीमेरे अर्थदिखा ऐसे दाहने और बायें दोनोंभुजाओंको फरका के श्रीकृष्णकहनेलगा ६० तब महाबलवाला ज्वरज्वाला गर्भ रूपभस्मको श्रीकृष्णके ऊपर गेरताभया तब एक मुहूर्त तकतोश्रीकृष्णका शरीरजलके ६१ पीछे अग्नी शांत हुआ जब अग्नि शांत हुआ तब सर्पों के आकार वाले बाहुओंसे ६२ ज्वरने एक मुक्का श्रीकृष्णकी ग्रीवापैमारा ६३ और श्रीकृष्ण ने ज्वरकीछातीमें एक मुक्कामाराऐसे दोनों सिंहरूप पुरुषोंका प्रहारहुआ ६४ पीछे आपसमें प्रहारकरनेसे पर्वतमें पड़तेहुये बज्र के समान शब्दहोनेलगा तब दोनों के मुक्कोंके घातोंसे उग्रयुद्ध होनेलगा और ऐसे प्रहार करनानहीं उचितहै ऐसे कहतेहुये ६५ दोनोंका आपसमें एक मुहूर्त तक युद्धहुआ पीछे आकाशमें बिचरनेवाले ज्वरको तिसयुद्धमें सोनाकेबिचित्र भूषणोंसे भूषित भुजासे जगत्का क्षयकरनेवाले और शरीरको धारण करनेवाले ऐसे ईश्वर रूप श्रीकृष्ण तिस ज्वरको पीड़ितकरतेभये ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायां कृष्णज्वरयुद्धे एकाशीत्यधिकशतोऽध्यायः १८१ ॥

एकसौबयासीका अध्याय ॥

वैशंपायनकहनेलगे पीछेमृतप्रायज्वरको जानके शत्रुओंकोसूक्ष्म करनेवाला श्रीकृष्णहाथोंके बलसे ज्वरको पृथ्वीमें फेंकनेलगा १ तब छूटेहैंगात्र जिसके ऐसा ज्वर अति बलवाले श्रीकृष्णके शरीरमेंप्रवेश करगया २ तब अति बलवाले ज्वरसे आविष्टहुआ श्रीकृष्ण बारंबार चलायमान होतेहुयेकी तरह पृथ्वीमें अत्यंत भ्रमनेलगा ३ कभी जंभाईलेवे कभीश्वासलेवे कभी बुरी चेष्टाकरे और कभी रोमावली खड़ाहोके निद्रासे ब्याप्तहोवे ऐसे बिकारोंको प्राप्तहुआ ४ और बारंबार जंभाईको लेताहुआ श्रीकृष्ण ५ ज्वरसे अभिभूत आपेकोजानके

पूर्वज्वरका नाशकरनेवाला ६ और घोरऔर बैष्णवतेजसे रचाहुआ और अतिउग्र और सब प्राणियोंको भयदेनेवाला और भीमपराक्रमवाला ऐसे ज्वरको श्रीकृष्ण रचताभया ७ पीछे श्रीकृष्णसे रचा हुआ ज्वर तिस पूर्वोक्त ज्वरको अपनेबलसे ग्रहणकर श्रीकृष्ण के अर्थ देताभया पीछे तिसको श्रीकृष्ण ग्रहण करतेभये ८ अर्थात् महाबलवाले और अति क्रोधको प्राप्तहोनेवाले ऐसे श्रीकृष्णअपने शरीर से तिस पूर्वोक्त ज्वरको अपने ज्वरके संग निकासतेभये ९ और तिस पूर्वोक्त ज्वरको पकड़के पृथ्वीमें सौ१००टुकड़े करने को श्रीकृष्ण उद्यतहुये तब ज्वर कहनेलगा कि हे भगवन् तुम मेरी रक्षा करनेके योग्यहो १० और जब श्रीकृष्णने तिस ज्वरको कड़ा पकड़ा तब शरीर से रहित आकाशबाणी बोली ११ कि हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो हे यादवोंको आनंदके देनेवाले इस ज्वरको तुम मत मारो हे अनघ तेरेको यह रक्षा करनेके योग्यहै १२ ऐसे आकाशबाणी को सुनके त्रिकालको जाननेवाले और जगत्के गुरु ऐसे श्रीकृष्ण ज्वरको छोड़तेभये १३ तब कृष्णके चरणारबिंदोंमें मस्तकसे नमस्कारकर शरणागतहो ज्वर कहनेलगा १४ हे गोविंद मेरे वचनको सुन और कछु आज्ञाकर और जो मेरा मनोरथ है तिसको हे देव तू कर १५ और हे तात मैं एक ज्वरहूं और इसलोक में दूसरा ज्वर न रहे तेरे प्रसादसे हे देवेश यह बरमांगताहूं १६ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे हे ज्वर जो तू चाहता है सो तेरा मनोरथ पूर्णहोगा क्योंकि मैं बरमांगनेवालोंको बरदेताहूं और तू तो मेरी शरणहोगया १७ इसवास्ते एकही पहलेकेतरह तूज्वर रह और मेरा रचाहुआ जो ज्वर है और मेरेही विषे लीनहोजाओ १८ वैशंपायन कहनेलगे कि ऐसे ज्वरके अर्थ बचनकहके महायशवाले और प्रहारकरनेवालोंमें श्रेष्ठ ऐसे श्रीकृष्ण फिर बचन कहनेलगे १९ कि हे ज्वर मेरी शिक्षाको सुन जैसे तू इसलोक में विचरेगा और सब जातियोंमें और स्थावरजंगममें विश्वासकर२० अर्थात् जो मेरे प्यारकी इच्छाकरेहै तो अपनीआत्माके तीन बिभा

गकर एक भागसे चौपायोंको पीड़ितकर और दूसरेभागसे स्थाव-
रोंको पीड़ितकर २१ और तीसरे भागसेमनुष्योंको पीड़ितकरऔर
तीसरे भागके चौथेहिस्से करके पक्षियोंको पीड़ितकर २२ और
एकांतर तृतीयक चातुर्थीक इन भेदोंसे बिभागकर २३ मनुष्यों में
वस और सब जातियोंमें बसनेकेयोग्यहै सो तू सुन २४ वृक्षोंमें
कीटरूपकरके तथा संकुचित पत्तोंवाला तथा पीलेरंगके पत्तोंवाला
ऐसा होके तू बस और फलों में एक प्रदेशगतजाल से संकोचित
हुआ तू बस २५ और जलमें तू काईरूप होके बस और मयूर के
शरीर में शिखाके दुभेदरूपकरके तू बस और कमलिनीमें हेमरूप
होके तू बस और पृथ्वीमें उषररूपहोके बस २६ और पर्वतोंमेंगेरू
रूपहोके तू बस और गायोंमें अपस्मारक और खुरोंकारोगहोके तू
बस २७ ऐसे तू बहुतरूपोंकरके पृथ्वीतलमें मेरेप्रसादसे तूहोवेगा
और तू दर्शनसे और स्पर्शनसे प्राणियोंको मारेगा २८ और देव
और मनुष्योंके बिना तेरेको अन्य कोई नहीं सहसकेगा २९ वैशं-
पायन कहनेलगे कृष्णके बचनको सुनके प्रसन्नहुआ ३० ज्वर
नमस्कारकर और अंजलिको बांध कछुक कहनेलगा कि हेमाधव
सब जातिका स्वामी मुझको तुमने किया इससे मेरेको धन्यहै ३१
सो हे पुरुषोत्तम फिर तेरे बचनको करनेकी मेरी इच्छाहै हेगोबिंद
इसवास्ते मेरेको आज्ञादे मैं क्या करूं ३२ और दैत्योंके कुलको
नाशनेवाले और त्रिपुरासुरको मारनेवाले ऐसे महादेवजीनेमुझेरचा
था और युद्धमें तैंने जीतलिया इसवास्ते तू मेरा स्वामी है और मैं
तेरा किंकरहूं ३३ और मैं धन्यहूं और अनुगृहीतहूं और जोतैंने
मेरेसे प्यारकिया है इसवास्ते हे चक्रायुध मेरे को आज्ञादे जोतेरे
को प्रियहो सो मैं करूं ३४ वैशंपायन कहनेलगे कि ऐसे ज्वर के
बचनको सुनके श्रीकृष्ण कहनेलगे कि जो मेरेसे प्यार चाहता है
तो मेरे कहनेको कर ३५ श्रीकृष्ण कहनेलगे कि जो मनुष्य महा
युद्धमें जो तेरा और इस पराक्रमरूप आख्यानको पढ़ेगा और मेरे
को एकांतमें मनकरके नमस्कार करके वह मनुष्य ज्वरसे छूटजा

वेगा ३६ और तीन पैरोंवाला और भस्मरूप प्रहार करने वाला और तीन शिरोंवाला और नौनेत्रोंवाला और सब रोगों का पति ऐसा ज्वर प्रसन्नहुआ मेरे अर्थ सुखदेओ ३७ और आद्यंतवाले और कवि और पुराण और सूक्ष्म और बड़े और शिक्षादेनेवाले ऐसे अनिरुद्धप्रद्युम्नवलदेवश्रीकृष्ण ३८ येचारोंमेरेज्वरोंकानाशकरोऐसे जो मनुष्य प्रार्थना करेगा उसकेभी ज्वरदूर होजाना चाहिये ३६ वैशंपायन कहनेलगे कि ऐसे महात्मा रूप श्रीकृष्णने ज्वरसे कहा तवज्वर श्रीकृष्ण के अर्थ कहनेलगा कि महाराज ऐसेही होजा वेगा ४० ऐसेश्रीकृष्णसे वरको प्राप्तहो और प्रतिज्ञाको कर और श्रीकृष्णको शिरसे नमस्कारकर और प्रसन्नहुआ ज्वर तिस युद्धसे भागताभया ४१ । ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्वभाषायांज्वरकृष्णसंवादेद्व्यशीत्यधिकशतोऽध्यायः १८२ ॥

एकसौतिरासीका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे पीछे वे तीनों अग्निके समान प्रकाशित हुये गरुड़जी पै चढ़के रणमें युद्धकरतेभये १ तब बाणोंकी वर्षासे सवसेनाओंको पीड़ितकरतेहुये और अतिशब्द करतेहुये शोभित होनेलगे२ पीछेचक्रहल वायुबाणोंकीवर्षा इन्होंसे पीड़ितहुई दैत्यों की सेनाको एकरनेलगी ३ तवजैसे सूखेकाष्ठमें अग्नि पड़तेही बढ़ के प्रकाश करतीहै तैसे श्रीकृष्ण के बाणोंसे उपजाहुआ अग्निबढ़ के ४ प्रलयकी अग्निके समान युद्धमें दैत्योंकी सेनाको दग्धकरता हुआ शोभित होनेलगा ५ ऐसे नानाप्रकारके प्रहारोंसे पीड़ित और जलतीहुई ऐसीसेनाको प्राप्तहो बाणासुर भागते हुयोंके प्रतिवचन कहनेलगा ६ इसलाघव को प्राप्तहोके भयसे विक्लव और दैत्यबंश में उत्पन्न होनेवाले ऐसेतुम इसमहायुद्धसे कैसे भागतेहो ७ और कवचतलवार गदाप्राश ढालफरसा इन्होंको त्यागत्यागकेआकाश चारीभी होके कैसे तुम भागतेहो ८ और अपना वास और अपनी

जाती और महादेवजी का संसर्ग इन्होंके माननेवालोंको भागना उचित नहींहै अबमैं युद्धमें स्थितहूं ६ ऐसे बाणासुरके बचनकोसुन के भयसे मोहित दैत्य फिर उलटे युद्धमें प्राप्त होतेभये १० और प्रमाथ गणोंकी सेना स्थितरही और जो उन्हों में अवशेषरहा सोई युद्धके अर्थ मन करताभया ११ और बाणासुरका मित्र और मंत्री और अतिबीर्यवाला ऐसा कुंभांड अपनी सेनाको कटती हुई देख यह बचन कहनेलगा कि युद्ध में यह बाणासुर स्थितहो रहा है और ये महादेवजी स्थितहोरहे हैं और येस्वामिकार्त्तिकजी स्थित होरहे हैं सो बलको त्याग मोहित हुये तुम कहांजातेहो १२ ऐसे कुंभांड के बचनकोसुनते हुये और भयसे बिह्वलहुये बहुतसे दैत्य दशोंदिशाओंको एकांतमें प्राप्तहुये १३ ऐसे कृष्णके सकाश से कटतीहुई सेनाको देखलालनेत्रोंवाले महादेव युद्धकरनेको स्थित हुये १४ पीछेबाणासुरकी रक्षाकरने के अर्थ अग्निके समान रथमें स्वामि कार्त्तिकजी स्थितहो के १५ और नंदीश्वरसे युक्त रथमेंबीर्य वाले और ओष्ठोंके पुटको दशनेवाले ऐसे महादेवजी जहां श्रीकृष्ण स्थितथे वहांगये १६ और मानोआकाश का पानकरते हुये और पौर्णमासी में बद्दलसे युक्त चंद्रमा होताहै तैसे १७ महादेवजी का रथ प्रकाशितहुआ पीछे नानाप्रकारके रूपोंवाले और भयदेनेवाले और नानाप्रकार के शब्दोंको करनेवाले ऐसेहजारहों गणोंसेयुक्त रथदशों दिशाओंको शोभित करनेलगा १८ और कितनेक सिंह सरीखे मुखोंवाले और कितनेक भगेराके मुखके समान मुख वाले और कितनेक सर्पअश्व ऊंटहाथी इन्होंके मुखोंके समानमुख वाले १६ और कितनेक सर्परूप यज्ञोपवीतों वाले और कितनेक खरोंके समान मुखोंवाले और कितनेक अतिबलवाले और कित नेक अश्वकी ग्रीवाके समान ग्रीवावाले २० और कितनेक बकरा मेढ़ाबिलाव इन्होंके मुखोंके समान मुखवाले और कितनेक चीरों को धारण करनेवाले और कितनेक चोटियोंवाले और कितनेक जटाको धारण करनेवाले और कितनेक ऊर्ध्वगत बालोंवाले २१

और कितनेक शंखनकारे इन्होंके शब्द करके आपसमें संशक्तहुये और कितनेक सौम्य मुखवाले और कितनेक दिव्य शस्त्रों से अलंकृत २२ और कितनेक नानाप्रकारके पुष्पोंसे गुथेहुयेमुकुट और नाना प्रकारके प्रहार करने के योग्य हथियारोंको धारणकरनेवाले और कितनेक बामने और कितनेक बिकट और कितनेक रुधिरसेभीजे हुये मुखोंकरके सिंह और भगेराके परिच्छेदवाले २३ और कितनेक महादंष्ट्रोंवाले और कितनेक बलिकोदेखके प्यारकरनेवालेऐसेसंग्रामके सन्मुख अनेक प्रकारकी लीलाकरतेहुये महादेवजी के चारोंतरफ स्थितहुये २४ पीछेअक्लिष्टकर्मकरनेवाले महादेवजीके दिव्यरथको देखके २५ गरुड़ पै चढ़े श्रीकृष्णरुद्रकेसंग युद्धकरनेको प्राप्तभये २६ तब गरुड़ पै स्थितहुये और बाणों को छोड़नेवाले और अग्रणी श्रीकृष्णकोआवतेहुये देख २७ कुपितहुये महादेवसौ १०० बाणों से श्रीकृष्णको बींधतेभये २८।२९ तब महादेवकीशरोंसे पीड़ितहुआ श्रीकृष्ण कोपको प्राप्तहो पार्जन्यअस्त्रको ग्रहणकरता भया तब पृथ्वी कम्पनेलगी ३० और ऊर्ध्वमुखवाले सर्प चलायमान होनेलगे और जलोंकीधारा से डूबतेहुये पर्वत चलायमान होनेलगे ३१ और कितनेक पर्वत अपने शिखरोंको छोड़नेलगे और दिशा विदिशा पृथ्वी आकाश ३२ ये सब महादेव और कृष्णके समागम में प्रकाशित की तरह दीखनेलगे और वज्रपात पृथ्वी पै पड़नेलगे ३३ और भयानक दर्शनोंवाले जीव अच्छी तरह के और बुरे शब्द करनेलगे और इन्द्र घोर शब्द और रुधिर की वर्षा करनेलगा ३४ और बाणासुरकी सेना पै पुच्छ से विस्तृतहो उल्कास्थितहुई और पवन चलनेलगा और सब तारागण आकुलता को प्राप्तहोनेलगे ३५ और सब ओषधियें प्रभासेहीन होतीभईं और आकाश में विचरनेवाले बंधहोगये और सब देवताओं करके सहित ब्रह्माजी उद्यतभये ३६ महादेवजीको जानके समीपमें प्राप्तभये और गंधर्व अप्सरा यक्ष विद्याधर ३७ सिद्धचारण इन्हों के समूह युद्धको देखने के अर्थ आकाशमें स्थितहुये तब विष्णुने महादेवके अर्थ पार्जन्यअस्त्र

फेंका ३८ जहां रुद्रकाअर्थ स्थित था तहां प्रकाशित हुआ अस्त्र प्राप्त पीछे हजारहां पैनेबाण सब दिशाओं से पड़नेलगे ३९ पीछे अस्त्र बिद्या जाननेवालों में उत्तम महादेवजी उग्ररूप आग्नेय अस्त्रको छोड़तेभये ४० तब अद्भुतकी तरह होताभया अर्थात् कटगई है देह जिन्होंकी ऐसे गरुड़ श्रीकृष्ण बलदेव प्रद्युम्न ये चारों ४१ अग्नि से दग्धहोतेहुये और शरों से आच्छादितहुये नहीं दीखतेभये तब सब दैत्य सिंहके समान शब्दकरनेलगे ४२ और आग्नेयास्त्रसे यह श्रीकृष्ण मारागया ऐसे सब दैत्य जानतेभये ४३ पीछे अस्त्रोंको जान नेवालों में श्रेष्ठरूप श्रीकृष्णजी हंसके बारुणास्त्र को ग्रहणकर जब छोड़नेलगे ४४ तब आग्नेयास्त्र शांतहोगया ४५ पीछे महादेवजी प्र- लयकी अग्निके समान पैशाच राक्षस रौद्र आंगिरस इननामोंवाले चार अस्त्रोंको छोड़तेभये ४६ पीछे श्री कृष्णभी बायव्य साबित्र बासव मोहन इननामोंवाले चार अस्त्रोंसे महादेवजी के अस्त्रोंको निवारण करनेके अर्थ छोड़तेभये ४७ ऐसे चार अस्त्रोंसे महादेवजी के अस्त्रोंका निवारण कर पीछे श्रीकृष्ण बिस्तृत मुखवाले कालप्रभु के समान उपमावाले बैष्णवअस्त्रको छोड़तेभये ४८ जब बैष्णवास्त्र छोड़ागया तब भूत यक्ष बाणासुरकी सब सेना ४९ भय और मोह से बिक्लवहुये सब दिशाओं को भागनेलगे ५० तब युद्ध करनेके अर्थ भयानकप्रहारोंवाले और घोर और महाबलवाले और महारथी ऐसे दैत्योंसे परिवृत बाणासुर बेगसे युद्ध के अर्थ सन्मुख प्राप्तहुआ जैसे देवताओं के गणोंसे युक्त इन्द्र ५१ बैशंपायन कहनेलगे कि जप होम औषधि इन्होंकरके ब्राह्मणबाणासुरका स्वस्तिबाचन करातेभये और पीछे बस्त्रसुंदरगाय फल पुष्प सोनेकीअसरफी ५२ इन्होंको ब्राह्मणोंके अर्थ दानदेताहुआ बाणासुर प्रकाशित हुआ जैसे कुवेर पीछे हजार सूर्योंवाला और बहुतसे बाजाओंसे संयुक्त और अनमोले रत्न और सोनासे चित्रित५३ और हजारहां चंद्रमा और तारागणोंसे युक्त और महा अग्नि के समान प्रकाशित और बड़ी ध्वजावाला ऐसे रथमें धनुष को धारण करनेवाला बाणासुर

स्थितहोके ५४ यादवों के अर्थ भयानकरूपको धारणकर सागर रूप दैत्योंकी सेनाको ले युद्धमें प्राप्त भया ५५ जैसे बातसे बढ़ा हुआ और तरंगोंसे व्याप्त संसार नाश करनेकेलिये समुद्र बढ़-ताहै ५६ उसी प्रकारसे सेना और रूपको धारणकर ५७ अपने स्थानसे युद्ध करनेके अर्थ बाणासुर निकसा ५८ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंशपर्वांतर्गत विष्णुपर्वभाषायांरुद्रकृष्णयुद्धेऽशीत्यधिक शतोऽध्याय: १८३ ॥

एकसौचौरासीका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे जब अंधकार रूपसंसारहुआ और बंदीगण औररथऔर महादेव ये तीनोंनहीं दीखतेभयेतब क्रोधकरकेऔरबल करके दुगुने दीप्तहुए१ब्रह्माजीसे सहितमहादेवजी बाणासुरकोग्रह णकर धनुषपै चढ़ायजब फेंकनेकी इच्छा करनेलगे३तब श्रीकृष्णने जानके जृम्भणनामअस्त्र छोड़ा वहमहादेवजीको जृम्भित करताभया ४ तबदेवते और राक्षसोंको जीतनेवाला महादेव संज्ञाकोप्राप्तनहीं हुआ ५ तब बलसे उन्मत्तहुआ बाणासुर बारंबार महादेवजी को उद्यत करताहुआ स्निग्ध और गंभीररूप बाणीकरके शब्द करने लगा ६ तबश्रीकृष्णभी पांचजन्य शंखकोऔर शार्ङ्ग धनुषको बजाने लगे ७ पीछे विजृम्भित रूप महादेवजी को देखक सबप्राणी उद्वेग को प्राप्तहुये और इसीअंतरमें महादेवजी के पार्षद ८ मायायुद्ध के आश्रयहो प्रद्युम्नजीके चारोंतर्फ को प्राप्तहुये तब प्रद्युम्नजी सब शत्रुओंको निद्राकेवशमें प्राप्तकर ९ बाणोंके जालसेदैत्य और पा-र्षद गणोंको नाशताभया १० पीछेअक्लिष्ट कर्म करनेवाले महादेव जी जबजम्हाई लेनेलगे तब महादेवजी के मुखसे दशदिशाओं को दग्ध करतीभई ज्वालाप्रकटभई ११ पीछेबड़ीबड़ी आत्मावालों से पीड़ित पृथ्वी कांपतीहुई ब्रह्माजी के समीपमेंगई १२ और कहने लगी हेदेवदेव हेमहाबाहो परम बलसेमैं पीड़ितहूं कृष्ण और महा-देवके भारसे आक्रांत होरहीहूं१३और हेपितामह यह भारअविषह्य

है इसलिये जैसेमैं हलकीहोके इस चराचर को धारण करूंतैसे तू चिंतवनकर १४ तबब्रह्माजी पृथ्वीसे कहनेलगे कि एक मुहूर्ततक आत्माको धारणकरतूजल्द हलकी होजावेगी १५ बैशंपायनकहने लगे कि ऐसेदेखिके ब्रह्माजी महादेवजी से कहनेलगे कि आपहीने महादैत्योंका बधरचाहै फिरकैसे रक्षा करतेहो १६ और हेमहाबाहो कृष्ण के साथ तेरायुद्ध करना उचित नहीं है और अपनाही दूसरे आत्मारूप श्रीकृष्णको क्या तुमनहीं जानतेहो १७ पीछे महादेवजी बरोंका चिंतवनकर और जो द्वारावती में कहागया था तिसका स्मरण कर १८ महादेवजी कुछभी उत्तर नहींदेतेभये १९ अर्थात् श्रीकृष्णको अपनी आत्मारूप जानके युद्धसे निकस अपनी प्रतिज्ञा को छोड़ते भये २० पीछे ब्रह्माजी से महादेवजी कहनेलगे कि हे भगवन् कृष्ण के संग में युद्ध नहीं करूंगा यह पृथ्वी हलकी होजावै २१ तब कृष्ण और महादेव आपस में मिलके परमप्रीत्ति को प्राप्तहो युद्धसे अलगहोतेभये २२ तिन दोनोंको एकरूप देखते हुये ब्रह्माजी उद्देशकर समीपमें स्थित २३ और दीर्घदर्शी ऐसे नारदसहित मार्कंडेयजी को जानके पूछतेभये २४ और ब्रह्माजी कहने लगे हे ब्रह्मन् मंदराचल के समीपमें नलिनीविषे रात्रिमें स्वपनांतरमें शिव और कृष्ण मैंने देखे २५ अर्थात् शंख चक्र गदा इन्होंको हाथमें धारणकरनेवाला और पीलेबस्त्रोंको धारणकरनेवाला २६ गरुड़पेस्थित ऐसा महादेव देखा और त्रिशूल पट्टिश व्याघ्र चर्म इन्होंको धारणकरनेवाला और बैलपै चढ़ाहुआ ऐसा श्रीकृष्णमैंने देखा २७ इस परमाद्भुतको देखके हे ब्रह्मन् मेरेको आश्चर्यहुआ है इसवास्ते हे भगवन् तुम यथार्थ से वर्णनकरो २८ तब मार्कंडेयजीकहनेलगे कि शिवविष्णुरूपहैं विष्णुशिवरूपहैं इनदोनोंमें अंतर नहीं है इसवास्ते शिव और विष्णु मेरेअर्थ कल्याणदेवो २९ और नहीं है आदि मध्य अंत जिसके और अक्षर और अबिनाशी ऐसे हरिहरात्मक रूपको तेरे अर्थ कहताहूं ३० और जो विष्णु है वह रुद्र हैं जो रुद्रहैं वह ब्रह्मा हैं ऐसे एक मूर्त्ति हैं और महादेव

विष्णु ब्रह्मा ये तीन देव हैं ३१ और बरके देनेवाले और लोकके कर्त्ता ३२ और लोकके स्वामी और आपही उत्पन्नहोनेवाले ऐसे ये तीनों देव हैं जैसे जलमें गेराहुआ जल जलरूप होजाताहै ३३ तैसे महादेवमें प्रवेशहुआ विष्णु महादेवरूप होजाताहै ३४ और जैसे अग्निमें मिला अग्नि अग्निरूपहोजाताहै तैसे विष्णुमेंमिला हुआ महादेव विष्णुरूप होजाताहै ३५ और अग्निरूप महादेव हैं और सोमरूप विष्णुहैं इसवास्ते यह स्थावर जंगम जगत् अग्नि सोमात्मक है ३६ और स्थावर और जंगम रूप जगत् के कर्त्ता हर्त्ता ३७ और जगत् के शुभकर्त्ता और प्रभु विष्णु और महेश्वर कर्त्ता और कारण के कर्त्ता ३८ और भूत भव्य भव इन्होंको जाननेवाले ऐसे ये दोनों विष्णु और शिव हैं और ये तीनों ब्रह्मा विष्णु शिव मेघरूपकरके बर्षतेहैं और वायुरूप करके बिचरते हैं और सूर्यरूपकरके प्रकाश करते हैं ३९ यह अतिगुह्य तेरे अर्थ कहा है जो इसका नित्यप्रति पाठकरताहै और जो नित्यप्रति इसको सुनता है ४० वह विष्णु और महादेव के प्रसादसे उत्तम स्थान में प्राप्त होताहै इस वास्ते ब्रह्माजी सहित विष्णु और शिव इन दोनों देवताओंकी स्तुतिकरताहूं ४१ ये दोनोंदेव जगत् की उत्पत्तिहैं और अविनाशी हैं और महादेवके परमरूप विष्णुहैं और विष्णुकेपरम रूप शिव हैं ४२ और एक आत्मा द्विधाभूतहुआ लोकमें बिचरता है इसवास्ते महादेवके बिना विष्णु नहीं हैं और बिष्णु के बिना महादेव नहीं हैं ४३ इसवास्ते विष्णु और शिव एकहीहैं अब हरिहरात्मक स्तोत्रवर्णन कियाजाताहै॥ नमोरुद्रायकृष्णाय नमःसंहतचारिणे ४४ नमःषडर्द्धनेत्रायसद्विनेत्रायवैनमः नमःपिंगलनेत्राय पद्मनेत्रायवैनमः ४५ नमःकुमारगुरवेप्रद्युम्नगुरवेनमः नमोधरणीधरायगंगाधरायवैनमः ४६ नमोमयूरपिच्छायनमःकेयूरधारिणे नमःकपालमालायवनमालायवैनमः ४७ नमस्त्रिशूलहस्तायचक्रहस्तायवैनमः. नमःकनकदंडायनमस्तेब्रह्मदंडिने ४८ नमश्चर्मनिवासायनमस्तेपीतवाससे नमोस्तुलक्ष्मीपतयेउमायाःपतयेनमः ४९

नमःखट्वांगधारायनमोमुशलधारिणेनमोभस्मांगरागायनमःकृष्णां गधारिणे ५० नमःश्मशानबासायनमःसागरबासिने नमोवृषभवा हायनमोगरुड़बाहिने ५१ नमस्त्वनेकरूपायबहुरूपायवैनमः नमः प्रलयकर्त्रेचनमस्त्रैलोक्यधारिणे ५२ नमोस्तुसौम्यरूपायनमोभैर वरूपिणे बिरूपाक्षायदेवायनमःसौम्येक्षणायच ५३ दक्षयज्ञबिना शायवलेर्नियम्नायच नमःपर्बतबासायनमःसागरबासिने ५४ नमः सुररिपुघ्नायत्रिपुरघ्नायवैनमः नमोस्तुनरकघ्नायनमःकामांगनाशि ने५५नमस्त्वंधकनाशायनमःकैटभनाशिने नमःसहस्रहस्तायनमो संख्येयवाहवे५६नमःसहस्रशीर्षायबहुशीर्षायवैनमःदामोदरायदेवा यमुंजमेखलिनेनमः ५७ नमस्तेभगवन्विष्णोनमस्तेभगवन्शिवनम स्तेभवतेदेवनमस्तेदेवपूजित ५८ नमस्तेकर्मणांकर्मनमोमितपराक्रम हृषीकेशनमस्तेस्तुस्वर्णकेशनमोस्तुते ५६ इसरुद्रकेऔरबिष्णुके इस स्तोत्रकोजोमनुष्य पढ़ै और सबऋषियोंकरकेस्तुति कियेबिष्णु और शिवइनदोनोंकीस्तुतिकरै६० औरवेदकोजाननेवाले वेदव्यासनेऔर नारदनेऔर भारद्वाजनेऔरगर्गनेऔरविश्वामित्रने६१औरअगस्त्य ने और पुलस्त्यने और धौम्यने स्तुतिकिये दोनोंदेवों को जोस्तवन करे और जोइसहरि हरात्मक स्तोत्रका नित्यप्रति पाठकरे ६२ वह मनुष्य रोगसे रहित और बलवान् ऐसाहोजाता है इसमें संशय नहीं और नित्यप्रति लक्ष्मीकोप्राप्तहोताहै और स्वर्गसे निवृत्तनहीं होता ६३ और अपुत्र पुत्रको प्राप्तहोताहै और कन्या सत्पति को प्राप्तहोतीहै और गर्भवाली स्त्री इसस्तोत्रका पाठसुनतो उत्तमपुत्र को जनतीहै ६४ और राक्षस पिशाच बिघ्न बिनायक ये सबभय नहीं करतेहैं जहांइसस्तोत्र का पाठहोवे ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिबंशपर्वांतर्गतबिष्णुपर्वे भाषायांहरिहरात्मकस्तवेचतुरशीत्यधिक शतोऽध्यायः १८४ ॥

—※—

एकसौपच्चासीका अध्याय ॥

जनमेजयकहनेलगेजवश्रीकृष्णऔरमहादेवजीयुद्धसेअलगअल-
गहोगयेतवफिर किन्होंका युद्धहोताभया १ वैशंपायनकहनेलगेकि
कुम्भांडसेसंग्रहोतकियेरथमेंस्थितहुआस्वामिकार्तिकश्रीकृष्णबलदेव
प्रद्युम्न इनतीनोंके सम्मुख दौड़नेलगा२ पीछेउग्ररूप सैकड़ोंबाणों
से क्रोधको प्राप्तहुआ अश्विनीकुमार तीनोंको बींधताभया ३ पीछे
वाणकरके कटेहुये गात्रोंवाले और तीनअग्नियोंके समान प्रकाश
वाले और लोहूके समूहसे भीजेहुये गात्रोंवालेऐसेतीनों स्वामिका-
र्तिकके संगयुद्ध करतेभयेपीछेयुद्ध मार्गको जाननेवाले तीनोंवायव्य
अस्त्र आग्नेय अस्त्र पार्जन्य अस्त्रइन्हों करके भेदन करने लगे ५
पीछे शैल वारुण सावित्र इननामोंवाले अस्त्रोंसे स्वामिकार्तिकउन
तीनोंको भेदन करनेलगा जव प्रकाशित बाणों के समूह वाला
और प्रकाशित धनुषकोधारण करनेवाला ६ ऐसे स्वामिकार्तिकके
वाणोंके समूहको अस्त्रमायाकरके तीनों ग्रसनेलगे तब क्रोधकोप्राप्त
हुआ और तेजसे प्रज्वलित ऐसा स्वामिकार्तिक ७ ब्रह्मशिर नाम
वाले अस्त्रको ग्रहणकर छोड़नेलगा जब सूर्य के समान कांतिवा
ला ८ और उग्र और परम दुर्द्धर्ष और लोक के क्षयकोकरने वाला
ऐसा ब्रह्मशिर अस्त्रकोयुक्त किया ९ तब हाहाकार करतेहुये सब यो
द्धा भागनेलगे और केशिको मथनेवाला श्रीकृष्ण १० सबअस्त्रों के
वीर्यको वारण और घातन करनेवाला सुदर्शन चक्रको ग्रहण कर
ताभया तिस चक्रने अपने बल करके ब्रह्मशिर अस्त्रप्रभासे रहित
करदिया जैसे वर्षाऋतुमेंवादलों से सूर्यका मंडल ११ जब अतिबल
वाला ब्रह्मशिर अस्त्र प्रभा और वीर्यसे रहित होगया तब क्रोधसेला
ल नेत्रोंवाला स्वामिकार्तिक१२ अतिशय करके ज्वलितहुआ जैसे
घृतसे बढ़ाहुआ अग्नी तब शत्रुओं को नाशनेवाली १३ प्रकाशित
और दिव्यसोना से वनीहुई और महाउल्काके समान प्रकाशवाली
और प्रलयकी अग्नीके समान कांतिवाली१३ और घंटाकी मालाओं

सेआकुल ऐसीशक्तिको कुपितहुआ स्वामिकार्तिक छोड़नेलगा १४ और शत्रुओंको भय देनेवाला उग्र शब्द करनेलगा तबब्रह्मण्य और महात्मारूप स्वामिकार्तिकने शक्तिछोड़ी १५ तब प्रदीप्त मुखवाली और आकाशमें फैलीहुई और कृष्ण के बधने की आकांक्षा करने वाली ऐसी शक्ति भागनेलगी १६ तब बिषराहुआ और सब दैत्यों के गणोंसे परिब्रत ऐसा इन्द्र प्रज्वलित शक्तिको देखके कृष्णादग्ध हुआ ऐसे कहताभया १७ और समीप में प्राप्तहुई शक्तिको महा- कार शब्दसे झिड़कके श्रीकृष्ण पृथ्वीतल में गिराताभया १८ जब महाशक्ति गिरपड़ी तब सब तरफ़से साधु साधुऐसे कहतेहुये इन्द्र आदि सब देवते सिंहके समान शब्दको करतेभये १९ पीछे जब सब देवते अच्छीतरहशब्दकरनेलगे तब अतिप्रतापवाला श्रीकृष्णदैत्यों को नाशनेकेयोग्य सुदर्शनचक्रको फिर ग्रहणकर छोड़नेको तय्यार हुआ २० जबश्रीकृष्णने चक्र छोड़नेकी तय्यारीकरी तब स्वामिका र्तिककी रक्षा के अर्थ सुंदर शरीरको धारण करनेवाली २१ और कपड़ोंसे नंगी और देवके बचनोंसे प्रबिष्ट और कोटवी और लंबमा- ना और महाभागा और पार्वतीजीके अष्टमभागसे उपजीहुई २२ और चित्रा ऐसी बाणासुरकी माता नग्नहोके बीचमें प्राप्तहुई पी छे स्वामिकार्तिक के और श्रीकृष्ण के बीच में स्थितहुई २३ तब स्वामिकार्तिककी रक्षा करनेवाली तिसनंगी देवीको देखपरकोमु खवाले श्रीकृष्ण बाक्य कहनेलगे २४ कि हे देवि परे हटजा परे हटजा तेरेको धिक्कारहै कि निश्चितकिये के बधके प्रति ऐसे बचन क्योंकरतीहै २५ वैशंपायन कहनेलगे ऐसे श्रीकृष्णके बचनको सुन कोटवीदेवी स्वामिकार्तिककीरक्षाके अर्थ बस्त्रोंकोनहीं धारणकरती भई२६तब श्रीकृष्णकहनेलगे किस्वामिकार्त्तिककोत्यागकेजल्दयुद्ध से अलगहोजा और मेरेसंग युद्धकरनेसे इसका कल्याणहोगा २७ जब वह देवी नहींहटी और स्थितहीरहीतब युद्ध में श्रीकृष्ण अपने चक्रको हरतेभये२८ऐसेजब श्रीकृष्णसे स्वामिकार्त्तिककी रक्षाकर और युद्धसे अलगकर महादेवजी के समीपमें प्राप्तभई २९ इसत्रं

तरमें महाभय उत्पन्नहुआ और देवीने स्वामिकार्तिककी रक्षाकरी ३०और स्वामिकार्तिक युद्धसे भागगया तब बाणासुर चिंतवन करनेलगा कि अब श्रीकृष्ण के संग मैं आप युद्धकरूंगा ३१ ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंश पर्वांतर्गत विष्णुपर्व भाषायां बाणयुद्धे गुहापयानेपंचाशी त्यधिक शतोऽध्यायः १८५ ॥

एक सौ छियासी का अध्याय ॥

तबवैशंपायनकहनेलगे भूत यक्षोंके समूह और बाणासुरकोबहुतसीसेना ये सब भयसे मोहित नेत्रोंवाले हो के दिशाओं के प्रति भागनेलगे १ और महादेवजी के पार्षदोंकी सेना जब कटनेलगी तब वेगसे युद्ध के अर्थ अभिमुखहुआ बाणासुर घरसे निकला २ और भीम प्रहार करनेवाले और घोर और महारथी और महाबलवाले और महावीर ऐसे दैत्येंद्रोंको संगलेके बाणासुर युद्ध करनेको तय्यारहुआ ३ जैसे देवतोंकोले के इन्द्र तब शत्रु के बधको कहते हुये पुरोहित और श्रुतिशीलसे बढ़हुये अन्य ब्राह्मण ये जप मंत्रऔषध इन्होंकरके बाणासुरका स्वस्ति बाचन करातेभये ४ पीछेनकारा के शब्दों करके और भय्यों के महाशब्दों करके और दैत्योंके सिंहके समान शब्द करके बाणासुर श्रीकृष्णके सन्मुखचला ५ युद्धकरने के अर्थ आवतेहुये बाणासुरको देखके श्रीकृष्णभी गरुड़पैचढ़ बाणा सुरके सन्मुखचले ६ पीछेगरुड़पैचढ़ श्रीकृष्णकोआवते हुयेदेख ७ बाणासुर क्रोधको प्राप्तहो बचन कहनेलगा ८ स्थितहो २ मेरेसे अबतू जीवता उलटा गमननहीं करेगा और द्वारकापुरी को और द्वारकावासी मित्रोंको हर्गिज नहींदेखेगा ९ और हेमाधव मेरे से अभिभूत और युद्धमें मरनेकी इच्छा वाला और कालसे प्रेरित ऐसातू आमलोनाके वर्णवाले वृक्षके अग्रभागों को तू देखेगा १० हे गरुड़ध्वज अब हजार बाहुओंवाले मेरेसंग तू कैसेयुद्धकरेगा ११ और बांधवों सहित तू अब मेरेकरके युद्धमें जीताहुआ इसशोणित पुरमें मरनेके वक्त द्वारकाका स्मरण करेगा और नाना प्रकार के

प्रहारोंसेयुक्त औरनानाप्रकारके बाजुबंधों से भूषित ऐसेमेरेहजार बाहुओंको अबतू किरोड़ संख्या से युत देख १३ और गर्जते हुये बाणासुरके बाक्योंके समूह ऐसेनिकसने लगे जैसे महाघोर और बायुसे उद्धत और तरंगोंवाले जलके समूह समुद्रसे १४ और क्रोधसे आकुलहुये दोनोंनेत्र बाणासुरके ऐसे हुये जैसे जगत्को दग्ध करनेवाला महासूर्य आकाशमें उदितहोताहै तैसे १५ पीछेबाणा सुरके गर्बित बचनको सुनके आकाशको भेदन करनेकी तरहनारद जी हंसतेभये१६ जो योगबलको प्राप्तहो युद्धदेखनेके अर्थ आकाश में स्थितहो रहेहैं और आश्चर्य करानेकेवास्ते बिचरते रहतेहैं १७ तब श्रीकृष्ण कहनेलगा हेबाणासुर मोहसे क्योंगर्जताहै शूरबीरों का गर्जना अच्छा नहींहै १८ और यहांआके युद्धकर तेरेइस वृथा गर्जनेसेक्याहै हेदैत्यजो बचनोंहिसे युद्धसिद्धहोतेहोवें तो तूभी नित्य प्रति असंबंधित बचनोंको कहताहै १९ इस्से हेबाणासुर यहांआके मेरेकोजीत अथवा मेरेसे जीताहुआ और नीचेको मुखवाला और दीन और पतितहुआ ऐसातू दैत्योंके संग शयन करेगा २० ऐसे बाणासुरको कहके मरमको भेदन करनेवाले और शीघ्रचलनेवाले और अमोघ ऐसेबाणोंसे बाणा सुरको श्रीकृष्ण बींधतेभये २१ जब पैने बाणोंसे श्रीकृष्णने बाणासुरको बींधा तब आश्चर्यमानताहुआ बाणासुर भी श्रीकृष्णपै बाणोंको बर्षाकरके २२ पीछे परिघ निस्त्रिं शगदा भालाशक्ति २३ मूसलपट्टीश इनशस्त्रोंसे आच्छादितकरता भया और हजारबाहुओं से गर्बित बाणासुर २४ दोबाहुवाले श्री कृष्णसे युद्धकरनेलगा पीछे श्रीकृष्णके लाघवसे क्रोधको प्राप्तहुआ बाणासुर २५ परमदिव्य और तपसे रचाहुआ और युद्धमें अप्रति हत और सबशत्रुओंको नाशनेवाला २६ और साक्षात् ब्रह्माजी से रचाहुआ ऐसे अस्त्रको बाणासुर छोड़ताभया तब सबदिशा अंधेरा से व्याप्तहोगई २७ और हजारहां घोररूपजीव प्रकट होगये और अंधेरासे आच्छादित संसारमें कुछभी नहीं दीखताभया २८ और साधुसाधु ऐसेकहके बाणासुरको दैत्यपूजतेभये और हाहाधिक्धिक

ऐसे देवताओंकी वानीसुनतीभई पीछे अस्त्रके बलके वेगकरकेदारुण और घोररूप ऐसीबाणोंकी वर्षाहोनेलगी२९ न पवन चले न बद्दल चलें और बाणासुरके अस्त्रकरके जबश्रीकृष्ण दग्धहोनेलगे ३० तब महावेगवाले और कालप्रभुके समान कांतिवाले ऐसे पार्जन्य अस्त्र को भगवान् ग्रहण करतेभये ३१ जबअंधेरा का नाशहो के अग्नि शांतहोगया और दैत्योंका संकल्प बिगड़गया ३२ फिर बाणासुर गरुड़पै स्थितहुये श्रीकृष्णको ३३ मूसलपट्टीश इन्होंकरके आच्छादितकरताभया तबबाणासुरकी बाणवृष्टिको ३४ हंसताहुआ श्रीकृष्ण निवारण करताभया ३५ और शारङ्ग धनुषपै चढ़ाके छोड़ेहुयेबाणों सेश्रीकृष्ण बाणासुरके रथध्वजा घोड़ेपताका ३६ कवच मुकुट धनुष औरहाथकाधनुषइन्होंके टुकड़ेटुकड़े करताभया ३७ औरएक बाण बाणासुरकीछातीमेंमारताभया तब मर्मसेकटाहुआबाणासुरयुद्धमेंमूर्छितहुआ३८तबप्रहारसे पीड़ित और मूर्छित ऐसेबाणासुरकोदेखके ऊंचे महलकी शिखरी पै स्थितहुआ ३९ औरअपने काखोंको बजानेवाला और नखोंको बजानेवाला ऐसानारदमुनिमंगलहुआमंगल हुआऐसे कहके फिर कहनेलगा ४० कि आश्चर्यहै मेरा जन्म अब सफलहुआ मेरा जीवन अब सफलहुआ जो मैंने यह चित्ररूपश्रीकृष्णका पराक्रम अवदेखा ४१ और हे महाबाहो देवताओंका बैरी और दिति के वंशमें उपजनेवाला ऐसे बाणासुरको तू जीत जिसके अर्थ तैंने अवतारलियाहै तिसकर्मको तू सफलकर ४२ ऐसे श्रीकृष्णकी स्तुतिकर और जहांसे पड़तेहुये बाणों करके आकाशको प्रकाशित करताहुआ नारदमुनि युद्धमें बिचरनेलगा ४३ पीछे बाणासुरका वाहन मयूर और श्रीकृष्णका वाहन गरुड़ ये दोनों पक्ष तुण्ड पैर नख ४४ इन्हों के प्रहारोंकरके आपसमें युद्ध करनेलगे ४५ पीछे क्रोधको प्राप्तहुआ गरुड़ दीप्त तेजवाले मयूरको ४६ शिर विषे ग्रहणकर और तुंडसे पतन करताहुआ और पांखोंसे फंकके ४७ और पैर और पांसुओंके अभिघातसे अनेक प्रकारकीचोट मार और खैंच ४८ ऐसे संज्ञासे रहित मयूरको आकाशसे गिरावा

भया जैसे आकाश से सूर्य्य जब मयूर पड़ता भया ४९ तब अति बलवाला बाणासुरभी अपने कार्यका चिंतवनकर पृथ्वीमें पड़ता भया और कहनेलगा कि बलके मदसे मैंने मित्रोंका बचन नहीं माना ५० सो देवते और दैत्यों के देखते हुये मैं उग्र आपद को प्राप्तहुआहूं तब दीनमनवाला और युद्ध में बिकल व ऐसे बाणासुर को जानके ५१ बाणासुरको रक्षा के अर्थ चिंतवन करतेहुये महा देव फिर गंभीरबाणीसे नंदिकेश्वरसे कहने लगे ५२ कि हेप्रिय जहां बाणासुर युद्धमें स्थितहै तहां दिव्य और सिंहोंसे युक्त और प्रकाशित ऐसे रथकरके बाणासुरकोयुद्धके अर्थ प्राप्तकर५३और मैं प्रमाथगणों के मध्यमें अस्थितहूं मेरामन ठीकनहींहै ५४ इसवास्ते बाणासुरकी रक्षाके अर्थ जल्द गमनकर ५५ ऐसे महादेवके बचन को ग्रहणकर नंदिकेश्वर रथ करके ५६ जहां बाणासुर स्थित था तहां जाके हलवें हलवें कहनेलगा हे दैत्य हे महाबल इस रथमें स्थितहोके जल्द प्राप्तहो ५७ पीछे दैत्योंके नाशकरनेवाले श्रीकृष्णसे युद्धकर तब महादेवके रथमें बाणासुर स्थितहो ५८ पीछे सब अस्त्रोंका घातकरनेवाला और महाघोर ऐसे ब्रह्मशरनामवाले अस्त्रको प्रकट करताभया ५९ जब ब्रह्मशर अस्त्र छोड़ागया तब सब लोक क्षोभको प्राप्तभये और जो लोककी रक्षाकेअर्थ जो चक्र रचागयाहै ६० तिसकरके श्रीकृष्ण ब्रह्मशर अस्त्रकोकाट पीछे संसारमेंबिख्यात यशवाला और युद्धमें कुशल और वेगमेंकुशल६१ ऐसे बाणासुर से श्रीकृष्ण कहनेलगा कि हे बाण जो तैंने पहले बचनकहेथे वे अब फिर क्यों नहीं कहता अब मैं युद्धमें स्थितहो रहाहूं तू पुरुषहोके मेरेसंग युद्धकर ६२ और हजारबाहुओंवाला और महाबली ऐसा कार्तवीर्यार्जुन ६३ पहले परशुरामजीने युद्ध में दोबाहुओंवाला करदियाहै तैसे तेरे भी बाहुओंकेबीर्य से उपजा सर्वहै ६४ सो इस तेरे गर्वकी शांति इस युद्धमें मैं करताहूं और जब तक तेरे गर्व की शांति करूं तब तक तू यहीं स्थित रह ६५ मेरेसे तू इस युद्धमें बचेगा नहीं पीछे परमदारुण और अति दुर्लभ

ऐसे तिस युद्धको देखके ६६ नारदमुनि नाचनेलगा और प्रद्युम्न
जीने तिससमयमें सब गण भी जीतलिये ६७ तब युद्धसे भाग
महादेवजीके पार्षद महादेवजीके समीपमें गये पीछे हजार आरों
वाला सुदर्शनचक्रको ६८ बाणासुरके नाशकेअर्थ ग्रहणकियापीछे
सब तारागणोंका तेज और बजकातेज और इन्द्रका तेज इन्होंको
चक्रमें व्यवस्थितकर ६९ और त्रेताग्निका तेज और ब्रह्मचारियों
का तेज और मुनियों का ज्ञान यह सब चक्रमें व्यवस्थितकर ७०
पतिव्रता स्त्रियोंकातेज मृग और पक्षियों के प्राण ७१ और नाग
राक्षस यक्ष गंधर्व अप्सरा इन्होंको तेज ७२ और त्रिलोकीकाबल
इन सबोंको श्रीकृष्ण सुदर्शनचक्रमें स्थापित करतेभये तिसतेजक
रके संयुक्त और सूर्यकेसमान प्रकाशित ७३ और अति तेजवाले
शरीरसे व्याप्त ऐसा चक्र बाणासुर के समीप में श्रीकृष्ण ने स्थित
किया ७४ तब अप्रमेय और किसीसे काटा नहीं जाय ऐसा और
त्रिलोकोमें अजेय अर्थात् जीतनेकेयोग्य नहीं ऐसा चक्र जब श्रीकृ
ष्णने धारणकिया ७५ तब लंबादेवी महादेवजीसे कहनेलगी हे
देव जब तक यह चक्र नहीं छूटे तबतक तू बाणासुरकीरक्षाकर ७६
पीछे महादेवके बचनको सुन लंबादेवीसे कहनेलगी हे लंबे बाण
की रक्षाके अर्थ जल्द प्राप्तहो ७७ तब पार्वती भी योगको प्राप्तहो
अकेले कृष्णको अपनेरूपको दिखानेवाली और अन्योंसे अदृश्यहो
के श्रीकृष्णके समीपमें प्राप्तभई ७८ पीछे चक्रको हाथमें धारण
करनेवाले श्रीकृष्णको युद्धमेंदेखके लंबा अंतर्ध्यानकोप्राप्तहो अपने
कपड़ोंकोत्याग बाणासुरकी रक्षाके अर्थ ७९ अपने कपड़ोंको फिर
त्याग श्रीकृष्णके सन्मुख स्थितहुई तब फिर प्राप्तहुई रुद्रकीमानी
हुई देवीको ८० और दूसरी लंबाको स्थितहुई देख श्रीकृष्णकहने
लगे कि हे देवी ८१ फिर तू बाणासुर की रक्षाके अर्थ कपड़ों को
त्यागके युद्धमें मेरे सन्मुख स्थितहुई मैं इसबाणासुर को मारूंगा
इसमें संशय नहीं ऐसे श्रीकृष्णके वचनकोसुनके बाणासुरको रक्षा
करनेवाली देवी मधुरवाणीसे श्रीकृष्णको कहनेलगी ८२ कि सब

लोकोंको रचनेवाले और पुरुषों में उत्तम और महाभाग महादेव और अनंत नील अव्यय ८३ पद्मनाभ हृषीकेश लोकोंकी आदिमें उत्पन्नहोनेवाले ऐसे जो तुमहो तुम्हारे को मैं जानतीहूं ८४ और हे देव युद्धमें इस बाणासुर को मारनेके योग्य तुम नहीं हो इस बाणासुरको अभयदानकरो और मैंने बाणासुरकी माताकेअर्थ यह बरदियाहै कि तेरापुत्र सदाजीतारहेगा ८५ इसवास्ते फिर मैंरक्षा करतीहूं सो हे माधव मेरे उद्योगको मिथ्याकरनेके अर्थ तुम योग्य नहीं हो ऐसे देबीके बचनकोसुन क्रोधको प्राप्तहुये ८६ श्रीकृष्णक हनेलगे कि हे भामिनी तू सत्यबचनको सुन हजार बाहुओं करके गर्बितहुआ बाणासुर शब्द करताहै ८७ इसवास्ते इसकी बाहुओं का छेदनकरना आवश्यकहै परंतु दोबाहुओंवाले बाणासुरकरके तू जीवत पुत्रिणीहोवेगी ८८ और दैत्यपनके गर्वको प्राप्तहो यहमेरा आश्रय नहीं लेवेगा ऐसे कृष्णकेबचनकोसुन देबी कहनेलगी ८९ कि हे देव देव यह बाणासुर तेरे आश्रितरहेगा पीछे पार्बतीजी को भी ऐसेही श्रीकृष्णकहके ९० क्रोधको प्राप्तहो बाणासुरसेकह नेलगा युद्धकर युद्धकर कोटवीदेवी स्थितहोरहीहै ९१ असमर्थों की नाईं हे बाणासुर तेरे पौरुषको धिक्कारहै ऐसे कहके नेत्रोंको मींच श्रीकृष्ण चक्रकोछोड़तेभये ९२ जिसके छोड़नेसे स्थावर जंगमलो क मोहको प्राप्तहोतेहैं ९३ और मांसोंको खानेवाले प्राणी युद्धमें तृप्तहोतेहैं ९४ तिस चक्रकरके बाणासुरकी बाहुओं को काटनेल गा ९५ और जलतेहुये काष्ठकीतरह जल्द भ्रमताहुआ और मानो दूसरा सूर्य ९६ ऐसा विष्णुका चक्र भ्रमनेलगा जिसकीशीघ्रता से रूप भी नहीं दीखा ९७ तब बाणासुरकी बाहुओंको काट ९८ और दोबाहुओंवाला और कटीहुई शाखाओंवाला वृक्षकी तरह स्थित ऐसाबाणासुरहोगया तब सुदर्शनचक्र फिर श्री कृष्णकेहाथ में प्राप्तभया ९९ बैशंपायन कहनेलगे कि जब सुदर्शनचक्र कृष्ण के हाथमेंप्राप्तभया और बहतेहुयेलोहूकेसमूहसे भीगताहुआ १०० और पर्बतकेआकार और छिन्नबाहुओंवाला और महाबली और

लोहूसेमत्त और बद्दलकीतरह अनेकप्रकारके शब्दोंको करनेवाला ऐसा बाणासुरहुआ १०१ तब बाणासुरके शब्दसे क्रोधकोप्राप्तहुये श्रीकृष्ण फिर बाणासुरके नाशके अर्थ सुदर्शनचक्र को छोड़नेलगे१०२तब स्वामिकार्त्तिकसहितमहादेवजी आकेकहनेलगे१०३ महादेव कहतेहैं हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो हे पुरुषोत्तम हे मधुकैटभको मारनेवाले हे देवदेव हे सनातन तेरेको मैं जानता हूं १०४ और हे देवलोकोंकी तू गतिहै और तेरेसे यह जगत्रचा गयाहै और देवते दैत्य सर्प इन तीन प्रकारके प्राणियोंसेतू जीतनेमें नहीं आसक्ता १०५ इसवास्ते दिव्य और उद्यतरूप इस सुदर्शनचक्रको मतछोड़े १०६ और हे केशिनिसूदन इस बाणासुर के अर्थ मैंने अभयदिया है १०७ सो मेरा मिथ्यावाक्य नहीं होजावे इसवास्ते तेरेको मैं क्षमाकराताहूं १०८ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे हे देव यह बाणासुर जीवतारहै यह चक्र मैंने निवृत्त किया और देवताओंके देवताओंकाऔरदैत्योंका तू मान्यहै१०९ सोतेरे अर्थनमस्कारहै जो मेराकार्यहै तिसके अर्थमें गमन करूंहूं इसवास्ते आप मेरेको आज्ञादीजिये ११० ॥

इतिश्री महाभारते हरिवंश पर्वांतर्गत विष्णु पर्वभाषायांबाणयुद्धे बाणभजच्छेदेषड़शीत्यधिकशततोध्याय: १८६ ॥

एकसौ सत्तासीका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगेऐसे महादेवजीको कहकेगरुड़जीकेसंगश्री कृष्णजहां बाणोंसे संयुक्त अनिरुद्ध स्थितथा तहांजाके श्रीकृष्णप्राप्तभये १ जब श्रीकृष्ण चलेगये तब नन्दीश्वर बाणासुरसे कहनेलगा हेबाण ऐसेही महादेवजी के अगाड़ी स्थितहो २ तब नन्दीश्वर के वचनको सुन के बाणासुर जल्द चलनेको तय्यारहुआ तबकटी हुई बाहुओंवाले बाणासुर को ३ रथ में स्थितकर जहां महादेव जी स्थितथे तहांजाके प्राप्तकिया पीछे नन्दीश्वर बाणासुरसे फिर कहनेलगा ४ कि हेबाण महादेवजीके अगाड़ी नृत्यकर इससे तेरा

कल्याणहोगा यह देव तेरेपर प्रसन्नहोवेगा ५ तब लोहू के समूह
से भीजेहुये अंगोंवाला और नन्दीश्वरके वाक्यसे प्रेरित और जीव
नेको चाहनेवाला ६ और भयसे संबिग्न और बिगड़ गया है मन
जिसका ऐसा और कृपण अवस्थाको प्राप्तहुआ और भयसे बिक्लव
नेत्रोंवाला और भयसे संबिग्न ऐसा बाणासुर महादेवजी के स
न्मुख नाचनेलगा ७ तब भयसे उद्विग्न और नृत्य करता हुआ
और नन्दीश्वर के बाक्यसे बेगवाला ऐसे बाणासुर के प्रति भक्तों
पै अनुग्रह करनेवाले और दया से संपन्न ऐसे महादेवजी कहने
लगे हे बाण जो तेरे मनमें हो सो बरमांग मैं तेरे पै प्रसादकरने
वालाहूं यह प्रेमका काल प्राप्तहुआहै८ तब बाणासुर कहनेलगाकि
हे बिभो जो आपमानो तो अजर और अमर ऐसामैं होजाउं प्रथम
यह बरदानकरो ९ तब महादेव कहनेलगे कि हे बाण तू देवताओं
के समानहै तेरा मृत्युनहींहै अन्य बरकोमांग मेरेसे तू अनुग्रहपाने
के योग्य है १० तव बाणासुर कहनेलगा कि जैसे लोहू से भीजा
हुआ और अति पीड़ित और घाओं से दुःखित ऐसा जोमैं नाचताहूं
जो ऐसे भक्तजन तेरे अगाड़ी नृत्यकरें तिन्हों के पुत्र की उत्पत्ति
होजावे ११ तब महादेव कहनेलगे भोजन को त्यागनेवाले और
क्षमासे संयुक्त सत्य और आर्जव में परायण ऐसे मेरे भक्तजो नृत्य
करेंगे तिन्होंके पुत्रकी उत्पत्ति निश्चय होजावेगी १२ फिर महादे-
वजी कहनेलगे हेबाण जो तेरे हृदयमें स्थितहो सो तीसरे बरको
मेरे से मांग हे पुत्रतेरे अर्थ मैंदूंगा और तू सफल होजावेगा १३
तब बाणासुर कहनेलगा कि हे शिव जो मेरेचक्रके लगने से घोर
और तीव्रपीड़ा होरही है यहशांत होजावे तीसराबर मैंने यह
मांगा१४ तबमहादेवजी कहनेलगे कि हेदैत्य सत्तम सुदर्शनचक्रके
काटनेसे जो घोररूपपीड़ातेरे उपजी है वहतेरे शरीरमें नहीं रहेगी
और तू बलवान् होजावेगा १५ फिरमहादेवजी कहनेलगे हे असुर
मनोबांछित चौथेबरको तेरेअर्थ मैं देताहूं सोतूमांगमैं तेरेसे बिमुख
नहींहूं १६ तब बाणासुर कहनेलगा कि हे बिभो प्रमाथ गणकेबंश

में महाकाल नामसे विख्यात प्रथममैं बहुतसे वर्षोंतक प्राप्तहूं १७ वैशंपायन कहनेलगे कि महादेवजी यह भी बरदान बाणासुर को देतेभये और फिर महादेवजी कहनेलगे कि मेरेआश्रयसे इनअंगों करके दिव्यरूपवाला और पीड़ासे रहित १८ और सब प्रकार के भयोंसेरहितऔर अति कीर्त्ति वाला ऐसातू होजायगा १६ परंतु फिर भी मैंतेरेको बरदेताहूं तू मांगअर्थात् जो तेरेमनमें बांछितहो सो तू मांग २० तब बाणासुर कहनेलगा कि हेदेवसत्तम मेरेअंगोंको बिरूपता मतरहै और दोबाहु होनेपै भी अवरूपसे रहित मेरादेहमत रहै अर्थात् सुंदररूपवाला देहहोजावे २१ तब महादेवजी कहने लगे हेदैत्यराज जो तू बांछित करताहै वह संपूर्ण तेरा होजावेगा और तू मेराभक्तहै और मेरेको भक्तोंके अर्थसर्बसुखदेना उचितहै २२ वैशंपायन कहनेलगे पीछेसमीपमें स्थितहुये बाणासुरको महादेव जीकहनेलगे जो तैंने कहा है वह संपूर्ण तेरासत्य होजावेगा २३ ऐसेकहके अपनेगणों से संयुक्त महादेव सब प्राणियों के देखते हुये तिस जगह अंतर्द्धान होगये २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतविष्णुपर्व भाषायांबाणबरलाभेसप्तशीत्यधिकशतोऽध्यायः १८७ ॥

एकसौ अट्ठासीका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे ऐसे बहुत से बरों को प्राप्तहो प्रसन्न हुआ बाणासुर महा कालत्व को प्राप्त हुआ महा देव के संग गमनकरताभया १ और युद्ध से निवृत्तहुआ श्रीकृष्ण भी नारद से पूछनेलगा हे भगवन् नागोंसे बंधाहुआ अनिरुद्ध कहां स्थितहै २ यह सुननेकी मेरीइच्छाहै और स्नेहसेगीला मेरामनहोरहाहै और जब से अनिरुद्ध हरागयाहै तबसे द्वारकावासी दुःखितहोरहेहैं ३ अब तिस अनिरुद्धको जल्द छुटावेंगे जिसके अर्थ हम प्राप्तहुये हैं और अब नष्टशत्रुवाले अनिरुद्धको देखनेकी हम इच्छा करतेहैं ४ सो वह जहां अनिरुद्ध स्थितहै उस देशको तुम जानतेहो ऐसे

श्रीकृष्णके बचनकोसुन नारदजी बचन कहनेलगे ५ हेमाधव नागों से बंधाहुआ अनिरुद्ध कन्यापुरमें स्थितहै पीछे इसी अंतरमें चित्र लेखा भी आके प्राप्तहुई ६ और कहनेलगी हे देव उत्तम पराक्रम वाला और दैत्योंका इन्द्र ऐसे बाणासुरका यह अंतःपुरहै इसमेंतुम सुखपूर्वक प्रवेशकरो ७ तब अनिरुद्धको छुटानेके अर्थ बलदेव गरुड़जी श्रीकृष्ण प्रद्युम्न नारद ये भीतर प्रवेशकरतेभये ८ तब गरुड़जीको देखके जो अनिरुद्धके शरीरको जो शररूप महासर्पवेष्टित कररहेथे ९ वे सब देहसेनिकस पृथ्वीके भीतर बड़तेभये और शर प्रकृतिमें स्थितरहे १० तब श्रीकृष्णने अनिरुद्ध को देखा औरस्पर्श कियातब प्रसन्नहोके अंजलीबांध अनिरुद्ध कहनेलगा ११ हे देवदेव सदायुद्धमें तुम जीतनेवालेहो तुम्हारे सन्मुख इन्द्र भी युद्धमेंस्थित होनेको समर्थ नहीं है १२ श्रीकृष्ण कहनेलगे हे अनिरुद्ध जल्द गरुड़पैचढ़ द्वारकापुरीको गमनकरें ऐसे श्रीकृष्णकेबचनकोसुन १३ ऊषाके संग स्थितहुआ अनिरुद्ध पराजितहुये बाणासुर को जानके बलदेवजीको और श्रीकृष्णको और गरुड़जीको १४ और चित्र बाणोंको धारणकरनेवाले पिताको बारंबार प्रणाम करताभया १५ पीछे सखियोंके गणों से परिवृत ऊषा अतिबलवाले बलदेवजी को और चार भुजावाले श्रीकृष्ण को १६ और असंख्यात गतिवाले गरुड़जीको प्रणामकर पीछे प्रद्युम्नजी को लज्जितहुई ऊषा प्रद्युम्नको प्रणाम करती भई १७ पीछे इन्द्रके बचनसे परम प्रकाश वाला और श्रीकृष्ण के समीप में स्थित ऐसे नारदमुनि हंसतेहुये फिर आके प्राप्तहो १८ शत्रुओं को जीतनेवाले गोबिंद की बड़ाई करतेभये और कहनेलगे कि हे गोबिंद अनिरुद्ध के समागमसे तू वृद्धिको प्राप्तहुआ यहबड़ीमंगलकी बातहै १९ पीछे अनिरुद्ध सहित चारोंनारदमुनिको प्रणामकरतेभयेपीछेआशीर्वादोंसे चारोंकोबढ़ाके नारदमुनि श्रीकृष्णसेकहनेलगे कि हेविभोवीर्याख्यनामसे विख्यात विवाह अनिरुद्धका करो और बिवाह के अनन्तर बरपक्षीयस्त्रियोंके परंपरा ब्योहारको देखनेकी मेरी इच्छा होरहीहै २० पीछे नारद

के वचनोंको सुनके सब हंसनेलगे और श्रीकृष्ण कहनेलगा कि हे भगवन् आप जल्दकीजिये देरमतकरो २१ पीछे इसीअंतरमें विवाह संबंधी सब सामग्रियों को ग्रहणकर और श्रीकृष्ण को नमस्कार कर कुंभांड प्राप्तहुआ २२ और कुंभांड कहनेलगा कि हे कृष्ण हे कृष्ण हे महाबाहो तू अभयका देनेवाला हो और हे देव मैं तेरी शरणहुआहूं इसवास्ते प्रसन्नहो और यह तेरे अर्थ अंजलीहै २३ सो नारद के वचनको सुन पहलेही श्रीकृष्ण कुंभांड के अर्थ अभय देतेभये २४ और कहनेलगे हे मंत्रियों में श्रेष्ठ कुंभांड तेरेपै मैंप्रसन्न हुआ और तेरे सुकृतको मैं जानताहूं और जब बाणासुर शिवलोक को चलागया इसवास्ते इस देशका पति तू रहा २५ और तू बाणा सुरका मंत्री और ज्ञाति का पुरुष है इसवास्ते तेरे अर्थ मैं राज्य दियासो मेरे आश्रयसे तू चिरकालतक जीवतारहो २६ ऐसे कुंभांडके अर्थ अभयदानकर ऊषाके संग अनिरुद्धका विवाह करानेलगे तब पीछे साक्षात् अग्नि देवभी आपही से अनिरुद्ध के विवाह में प्राप्त हुआ २७ और नक्षत्रभी शुभहोताभया और अप्सराओं के गणभी तहां आश्चर्य करनेको प्राप्तभये २८ पीछे सुंदरजलसे स्नान और गहनोंसे अलंकृत ऐसाअनिरुद्ध ऊषा भार्या के संगस्थितहुआ तब स्निग्ध और शुभ वाक्यों करके गंधर्व और विद्याधरों के गणविवाह में शोभाकरने के अर्थ गान करतेभये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांअनिरुद्धविवाहेअष्टाशीत्य धिकशतोऽध्यायः १८८ ॥

एकसौनवासीका अध्याय॥

वैशंपायनजीने कहा कि हे शत्रुओंके जीतनेवालेजनमेजय अनि रुद्धको विवाहकर १ पश्चात् अतिबुद्धिवाले और सबदेवताओंसे परि वृत और शत्रुओंकेपुरोंको जीतनेवाले ऐसेश्रीकृष्ण २ वरकेदेनेवाले महादेवजीकोऔर पार्वतीजी और स्वामिकार्त्तिकजो इन्होंसेआज्ञा लेकर शोणितपुर से गमन करने को चित्तधरतेभये पीछे द्वारका

पुरीको चलतेहुये ३ शत्रुओंको नाशनेवाले श्रीकृष्णजीकोजान और
प्रीति बढ़ानेवास्ते कुंभांड वचनकहनेलगा ४ कि हे कमल सरीखे
नेत्रोंवाले मधुसूदन कछु आज्ञा कीजिये परंतु बिनय है ५ बाणा
सुरकी बहुतसीगायें बरुणजी के समीपमें स्थितहैं ६ हे माधव वे
गायें अमृत के समान दूध देतीहैं जिस दूध के पीनेसे अतिबलवा
न् और दुर्ज्जय ऐसा पुरुष होजाताहै ७ऐसे कुंभांडके बचनको सुन
श्रीकृष्णजी आनंदितहो गमनकरनेकी मनसाकर सबोंको गमन क-
रनेवास्ते आज्ञा देतेभये ८ तब ब्रह्मलोक के वासियों सहित भग
वान् ब्रह्माजी श्रीकृष्ण को बरंब्रू हि ऐसे कहकर ब्रह्मलोकको जाते
भये ६ और मरुद्गणोंसे संयुक्त इन्द्रभी श्रीकृष्णको प्यार देनेवा-
स्ते श्रीकृष्णजी के संग द्वारका के सन्मुख गमन करनेलगे १० और
अपनी माता से प्यारकर और सखीगणों से परिवृत ऊषा भी
मयूर बाहन पर चढ़ द्वारकाको गमन करतीभई ११ पीछे बलदेव
जी श्रीकृष्णजी प्रद्युम्नजी अनिरुद्धजी ये चारों गरुड़ बाहन पर
सवार होतेभये १२ तब सब पक्षियों में श्रेष्ठ और अतितेजवाला
गरुड़ १३ रास्ते के वृक्षोंको गिराताहुआ और पृथ्वीको कंपाताहु
आ और सब दिशाओंको व्याकुल करताहुआ चलनेलगा. तब धू
लीसे आकाशमें अंधेरा भया १४ और अल्प तेजवाला सूर्यभी हो-
गया ऐसे बहुत दूर गमन करतेहुये १५ चारों पुरुष पश्चिमदिशा
में जाके १६ सुंदर दूधको देनेवाली गायोंको देखतेभये १७ और
कुम्भांडके बचनके अनुसार जानके तब प्रहरण करनेवालोंमें उत्तम
और तत्वसे अर्थ को जाननेवाले १८ श्रीकृष्णजी बाणासुर की गा
योंकोसुन ग्रहणकरनेको मनकर गरुड़ पै स्थितहुये और सब लोक
के आदि और अबिनाशी १६ ऐसे श्रीकृष्ण गरुड़से कहनेलगे कि हे
गरुड़ जहां बाणासुरकी गायोंका समूहहै तहां गमनकरो २०क्यों
कि सत्यभामाने मेरेसे बाण गाय मांगीहै तिसको तुम लाओ २१
क्योंकि इन बाणगायोंके दूधको पीनेसे असुर बुढ़ापाको प्राप्त नहीं
होतेहैं २२ और इस दूधकेपीनेसे ज्वरपीड़ित मनुष्य अर्थात् प्राणी

तत्कालज्वरसेरहित होजातेहैं इसवास्ते उनगायोंको प्राप्तकर अग-रकार्यका लोप नहीं होवे तो २३ और जो कार्यका लोप होतामालूमपड़े तो गायोंके लानेमें चित्तकोसतधर ऐसे मेरेको सत्यभामाने कहाहै सो वेगायें मैंजेजातीहैं २४ तब गरुड़नेकहा कि हे स्वामिन् ये सब गायें मेरेकोदेखके वरुणकेलोकमें प्राप्तहोतीहैं इसवास्ते जल्द कार्यकरनाउचितहै २५ ऐसे गरुड़जी कहकर अपनेपंखकी हवासे समुद्रको क्षोभितकरा वरुणकेस्थानमें प्रवेशकरताभया २६ तब वेगसे आतेहुये गरुड़जीको वरुणकेस्थानमें देख वरुणलोकमें बसनेवाले गण भ्रमको प्राप्तहो चलनेलगे २७ पश्चात् वरुणकी समस्तसेना अनेकप्रकारके शस्त्रोंकोग्रहणकर २८ श्रीकृष्णके सन्मुखआये तब श्रीकृष्णके सामने उससेनाका और गरुड़जीकायुद्ध होनेलगा २९ और युद्धमेंस्थितहुये वरुणगणोंमांहसे हजारहोंके शिर श्रीकृष्णजीने काटदिये ३० तब ऐसेप्रहतहुयेसेनागणवरुणालयमें प्राप्तहोनेलगी अर्थात् ६६००० हजार रथोंमें अनेक प्रकारके शस्त्रोंको ग्रहणकरे हुये वरुणलोक बासियोंकी सेना ३१ श्रीकृष्ण के बाणोंसे चारोंतर्फ़ पीड़ित और भग्नहोतीहुई कहीं भी रक्षाको प्राप्तनहींहुई ३२ पीछे अतिबलवाले और शूरवीर ऐसेबलदेवजी श्रीकृष्णप्रद्युम्न अनिरुद्ध गरुड़ इन्होंनेअनेकप्रकारके तीक्ष्णबाणोंसेबहुतसी सेनाका नाशकिया ३३ तब अक्लिष्टकर्मवाले श्रीकृष्णके हाथसे अपनी सेनाकानाश देख ३४ संभ्रांतहुआ वरुणदेव जहां श्रीकृष्णस्थित थे तहां गमन करनेलगा ३५ औरऋषिदेव गंधर्व अप्सराओंके गण इन्होंसे बहुत प्रकार स्तुतिको प्राप्तहोता हुआ ३६ और अतिप्रियमान और तेज संयुक्त और रंगमेंसफेद और पानीके किणकोंको झिराताहुआ ३७ ऐसेछत्रको धारण करेहुये और धनुषकोहाथमेंधारणकर और अपने बेटे और पोतोंकी सेनासे संयुक्तहो ३८ और अतिक्रोधको धारण करताहुआ ऐसावरुण सावधानहोके ३९ और धनुषकी टंकार करता हुआ युद्धके अर्थ बलदेव श्रीकृष्ण आदिको बुलाताभया ४० और अपने शंखको बजाताहुआ शत्रुओंके सन्मुख दौड़नेलगा ४१ और

बाणोंके जालोंसे आच्छादित करनेलगा जैसे श्रीकृष्णको महादेवजी तैसे४२ पश्चात् पांचजन्य शंखको बजाके श्रीकृष्णजी भी हस्तलाघवता से बाणोंके जालोंकर सब दिशाओंको आच्छादित करनेलगे४३पश्चात् अनेकप्रकारोंके बाणोंसेयुद्धमेंपीड़ितहुआ वरुण श्रीकृष्णको आश्चर्य दिखाताहुआ संगयुद्ध करता भया४४पश्चात्युद्धमें स्थितश्रीकृष्णजी घोररूप बैष्णव अस्त्रको अभिमंत्रितकरउत्तमबुद्धिवाले बरुणजीके सन्मुख कहनेलगे ४५ कि यह महाघोररूप और शत्रुओंको मर्दन करनेवाला ऐसाबैष्णव अस्त्रतेरे बधकरनेको मैंने तय्यार कियाहै अब तूठहर ४६ और स्थिर भावको प्राप्तहो ऐसे सुन बरुणभी बारुणास्त्रसे बैष्णवास्त्रको संयुक्तकर अतिशब्द करनेलगा ४७ सो हे युद्धको जीतनेवाले जनमेजय ऐसेरचेहुये बारुणास्त्र से झिरतेहुये जलबैष्णवास्त्रकी अग्निकोशांतकरनेलगे४८परंतुबैष्णवास्त्रकी अग्निशांत नहींहुई बल्कि बरुणलोकके बासी सब दग्धहोतेहुये ४९ सबदिशाओं में दौड़ने लगे तब प्रज्वलित रूप बैष्णवास्त्रको देख बरुण श्रीकृष्णजीसे ऐसेकहने लगा ५० कि हेमहाभाग अव्यक्तरूप और व्यक्त लक्षणोंवालीअपनीपूर्वकी प्रकृतिकास्मरण करो और तमोगुणको दूरकरो और आप तमोगुणसे कैसे मोहित होतेहैं ५१ और सत्त्वगुणमें स्थितहो हेयोगेश्वर महामते आप निरंतर आशीर्वाद रूपहैं इसवास्ते पंचमहाभूतोंसे उपजे दोषों को और अहंकार को त्यागो ५२ और यह जो आपकी बैष्णवीमूर्तिहै इससे हेबिभो मैं ज्येष्ठहों अतएव बड़ेके भावसे मानकरने लायक मुझको कैसे दग्ध करनेकी इच्छा करतेहो ५३ और अग्निअग्निके प्रति पराक्रम नहींकरताहै इसवास्ते हेयोद्धाओंमें श्रेष्ठ आपकोपको त्यागो और तेरेविषे हमप्रभु अर्थात् समर्थ नहींहैं क्योंकि तुम चराचर जगत् के उत्पत्ति स्थानहो अर्थात् आप से सब जगत् उपजा है ५४ और पहलेही आपने बीजधर्मवाली और पूर्व धर्म के आश्रयभूत और बिकारवाली ऐसी प्रकृति रचीहै५५और आदि में स्वभावसेअग्नि गुण संयुक्त और सौम्य गुणसंयुक्त सब जगत् आ

पने रचाहै इसवास्ते मेरेविषेकैसेआप मोहको प्राप्तहोतेहैं ५६ और आप अजेय अर्थात् जीतनेमें नहींआतेहैं और निरंतररूप हैं और आपदिव्य स्वरूपहैं और स्वतःहोनेवालेहैं और प्राणियों को उप जानेवालेहैं आप अविनाशीहैं और अक्षय रूपहैं और भावरूप हैं और अभावरूप हैं ५७ इसवास्ते हे महाप्रकाशवाले मेरीरक्षाकरो हे अनघ मैंआपके रक्षाकरनेके योग्यहूं और आपको मेराप्रणामहो और लोकोंके आपआदि कर्त्ताहो आपने यह बहुत कुछ कियाहै५८ सो हे महादेव आपयह बालकोंकी तरह क्या क्रीड़ाकरते हैं और मैं आपका प्रकृति से बैरीनहींहूं और प्रकृतिको दूषित करनेवाला भी नहींहूं ५९ और जो प्रकृति विकारोंको उपजाती है हेपुरुषर्षभ तिनविकारोंको शांतकरनेकेवास्ते यथार्थकर आपबर्ततहो६० और हे अनघ आपकेविकार भी विकारके अर्थनहींहैं क्योंकि अधर्मको जान ने वाले और मंद ऐसेभावोंको बिकारित करतेहो ६१ और जबयह प्रकृति रजोगुण से रचीहुई और तमोगुणसे संयुक्त होतीहै तबमोह उपजताहै ६२ और आप परावरके जाननेवालेहैं और सर्वज्ञहो और ईश्वरहो इसवास्ते प्रजापति की तरह हमको कैसे मोहित करतेहो ऐसेवरुण के बचनों को सुन लोककी रक्षाकरने वाले और भावोंको जाननेवाले और सर्वज्ञ और धीरऐसे श्रीकृष्णजी प्रसन्न होके ६३ हंसतेहुये कहनेलगे कि हे देव हे भीमबिक्रम शांति के वास्ते मेरेको गायोंको दीजिये ६४ ऐसे कृष्णके वचनको सुनबोल नेमें अतिकुशल वरुण फिर कहनेलगा कि हे मधुसूदन मेरे बचन को सुनो ६५ वरुण कहतेहैं हेदेव पहले मैंनेबाणा सुरकेसाथप्रति ज्ञाकीहै सो उस प्रतिज्ञाको कैसे मिथ्या करूं ६६ और आपसब तरहकी प्रतिज्ञाके भेदोंको जानतेहो कि प्रतिज्ञाकी हानि सत्पुरु षों को अच्छी नहींहै ६७ और प्रतिज्ञाको छोड़नेवाला मनुष्यधर्मों से रहितहोके हे मधुसूदन उत्तम लोकोंको प्राप्तनहीं होताहै किंतु महापापी होजाताहै ६८ इसवास्ते हे मधुसूदन मेरेपर प्रसन्नहो और मेरेधर्मका लोपनहींहो और हे माधव प्रतिज्ञाकी हानिकरानेके

वास्ते मेरेको युक्तकराने योग्यआप नहींहो ६९ और हे वृषभेक्षणजी बताहुआमैं गायनहींदूंगा किंतुमेरेको मारकरगायोंको लेजाओऐसी प्रतिज्ञा मैंने पहले करीहै ७० सो हे मधुसूदन ऐसे समय आपके प्रतिमैंने कही है हे महाबाहो यह सत्य रहनीचाहिये हे सुरेश्वर मिथ्या नहींहोगी ७१ और हे मधुसूदन जो मेरे पै अनुग्रहकरो तो मेरीरक्षाकरो अगर गायोंकेलेजानेकी इच्छाहोतो हेमहाभुजमेरेको मारकर लेजाओ ७२ बैशंपायन कहतेहैं कि ऐसे बरुणके बचनको सुन श्रीकृष्णजी गायसंबंधीबादको दूरकरतेभये ७३ और हंसके ऐसे कहनेलगे कि हेबरुण जो आपने बाणासुरके संग प्रतिज्ञाकी है ७४ इसवास्ते आपछोंड़े जातेहो और अनेक प्रकारके प्रियरूप बचन आपनेकहे तिन्होंसे आनंदित हुआ मैं हेबरुण हे बिभो तेरे संगकैसे बुरापन करूं ७५ इसवास्ते हेबरुण अपने स्थानपै जाओ और आप सत्यबादीहो ७६ और तेरेप्यारके अर्थ मैंने बाणगायभी छोंड़ीहै इसमें संशय नहीं पश्चात् तुरहीभेरीआदिको बजवाता हुआ बरुण ७७ अर्घग्रहणकर श्रीकृष्णकी पूजाकरनेलगा तब बरुणके दियेहुये अर्घको ग्रहणकर ७८श्रीकृष्णजी बलदेवजीकी पूजाकरने लगे पश्चात् बरुणके अर्थ अभय देकर ७९ अतिप्रताप वाले और इंद्रकी सहायतासे युक्त ऐसे श्रीकृष्णजी द्वारकापुरीके सन्मुख ग-मन करतेभये और तहांदेव मरुद्गण साध्य सिद्ध चारण८०गंधर्व अप्सरा किन्नर ये सब आकाशमार्ग से श्रीकृष्णजी के संगचलते भये ८१ और आदित्य संज्ञक देवते सबबसु सबरुद्र अश्विनीकुमार यक्षराक्षस बिद्याधरों के गण और शेष रहे सिद्धचारण येभी ८२ सब श्रीकृष्णजी के संग आकाशमार्ग से चलते भये ८३ और यश को तथा बिजयको प्रकाश करनेवाले और महाभाग ऐसे नारदजी भी द्वारका के प्रतिगमन करतेभये ८४ और बाणासुर का जीतना और बरुणके संगप्यारका करना इससे बहुत प्रसन्नहोतेभये ८५ और कैलसके शिखरके समान सुंदर और ऊंचे स्थानों से संयुक्त द्वारकाको देख८६ दूरसेही श्रीकृष्णजी पांचजन्यशंखको बजानेलगे

क्योंकि द्वारकापुरीवासियों को संज्ञा उपजाने के अर्थ ८७ और देवताओंका आगमन तथा पांचजन्य शंखके शब्दको सुन द्वारका पुरीमें अतिआनंद होनेलगा ८८ और पूर्णकलश धानकीखील अनेक प्रकारके फूलोंकी माला इन्हों से द्वारकापुरीके दरवाजे सजा ये गये ८९ और पुरीकीसवगलियोंमें पानीका छिड़काव करायागया और शोभायमान वहुत प्रकारके रत्नोंसे द्वारकापुरी शोभितकीगई और द्वारकापुरीमें प्रवेशकरतेहुये श्रीकृष्णजीके अर्थ उत्तमकुलके ब्राह्मण अर्घको ग्रहणकर ९० अनेक प्रकारके जयशब्दोंसे गरुड़जीपैस्थित नीलेपर्वतके समान कांतिवाले श्रीकृष्णजी को पूजनेलगे ९१ और प्रणाम करनेलगे पश्चात् क्रमसे तीनोंबर्णोंके मनुष्यभी श्रीकृष्णजी को पूजतेभये ९२ और ऋषि देवगण गंधर्व चारणये सव द्वारकापुरी के समीपमें स्थित ९३ श्रीकृष्णकी स्तुतिकरनेलगे तब सबयदुबंशी मनुष्य इस आश्चर्य्यको देख ९४ तथा अति वलवाले वाणासुर को जीतके आतेहुये श्रीकृष्णजीको देख अतिआनंदित्त होतेभये ९५ और द्वारकावासियों के मुखोंसे अनेकप्रकारको वाणी निकसने लगी ९६ कि वहुत दूरगमन कर गरुड़जीपै चढ़ेहुये श्रीकृष्णजीको आतेहुये देखऐसे कहनेलगे हमारेको धन्यहै और अति अनुगृहीत है जिन्होंका स्वामी ९७ और रक्षिता और दीर्घबाहु और महाबल वंत ऐसे श्रीकृष्णजी दुर्जयरूप वाणासुरको जीतकर गरुड़परसवार हो ९८ हमारे मनोंको आनंदित करतेहुये प्राप्तहुये उत्तम कुशल ताकी वातहै ऐसे वचन वोलते हुये द्वारकाबासियों के महारथों के समूह ९९ श्रीकृष्णजी के मकान में प्रवेश करनेलगे तब गरुड़ पर से श्रीकृष्ण वलदेव१०० प्रद्युम्न अनिरुद्ध ये सब उतरअपनेअपने गृहमें प्रवेश करतेभये पश्चात् आकाशमार्गमें बिचरतेहुये देवताओं के १०१ नानारूप वाले और हंस ऋषभ मृग हाथी घोड़ा सारस मोर १०२ इन्होंसे संयुक्त और प्रकाश मानऐसे हजारहों विमान आकाशमें स्थित दीखतेभये १०३ तब श्रीकृष्णजी हजारहोंद्वारका पुरीके वालकोंको और प्रद्युम्न आदि सबोंको प्रियवाणीसे कहने

लगे १०४ कि सबरुद्र और सब आदित्य और सबबसु अश्विनी कुमार साध्यदेवता इनआदि सबये हैं इन्होंको यथाक्रमसे प्रणाम करो १०५ और हजार नेत्रोंवाले और महाभाग्यवाले और दैत्यों को भयदेनेवाले और हाथीपै सवार होनेवाले और अपने गणों से सहित ऐसे इन्द्रजीको भी प्रणाम करो १०६ और महाभाग्यवाले और महात्मा ऐसे भृगु अंगिरा आदि सात ऋषियोंको भी यथाक्रम से प्रणाम करो१०७ और चक्रको धारण करनेवाले ये सबस्थितहैं इन्होंकोभी प्रणामकरो और सबसमुद्र सब हृदद्दिशा और बिदिशा मेरे प्यारके वास्ते जो प्राप्तहुयेहैं इनसबोंको दिशा और बिदिशा कोभी प्रणामकरो १०८ और अतिबलवाले बासुकीसे आदिलेसब सर्प १०९ और सबप्रकारकी गायें मेरेप्यार के वास्ते प्राप्तहुईहैं इनसबोंको भी प्रणामकरो और सत्ताईस नक्षत्रों करके सहित सब प्रकारके तारागण और यक्ष राक्षस किन्नर ११० ये सबमेरे प्राप्त के वास्ते जो प्राप्तहुयेहैं इनसबोंको भी प्रणामकरो१११ ऐसे श्री कृष्णजी के वचनको सुनके बिनय में स्थितसब बालक यथाक्रम से सब देवताओंको नमस्कार करतेभये ११२ और सब देवताओं को देखकर सब द्वारकाबासी आश्चर्य्य में प्राप्तहोपूजाके अर्थ सब सामग्री को इकट्ठी कर तत्काल प्राप्तहोतेभये और ऐसे कहनेलगे बड़ा आश्चर्यहै११३।११४ कि श्रीकृष्णके सकाशते सबदेवताओंके दर्शन प्राप्तहुये इसबाणी को कहके पीछे चंदनका बुरादा फूलोंकी गंध इन्होंसे द्वारकाबासी सब देवताओं को पजनेलगे ११५ और धान की खील और नमस्कार धूपबाणी बुद्धि नियम इन्होंसे भी देवताओंको पूजनेलगे ११६ पश्चात् आहुक बसुदेव सांबसात्य की उल्मुख बिप्रथु श्रीकृष्ण बलदेवजी अक्रूर निशठ इनसबोंसे मिल कर ११७ तथा इन सबोंके मस्तकको सूंघकर तथा ऐसेही अंधक यादवका सन्मानकर सबयादओंके प्रति इन्द्रऐसे कहनेलगा ११८ कि यह श्रीकृष्ण क्षणभर में अपने पौरुष से यशको बढ़ातेहुये महादेवजी तथा स्वामिकार्तिकके सन्मुख ११९ बाणासुरको जीत

के और उस राक्षस की हजार बाहुओं को काटदोबाहु अवशेष रख द्वारकापुरीमें प्राप्त हुयेहैं १२० और जिसकार्य्यके वास्ते मनुष्यों में महात्मा श्रीकृष्णजीका जन्महै सो सबको बिदितहै१२१इससे हम सबोंके शोक नष्टहोगये इसवास्ते माध्वीक मदिराको पानकर सब मनुष्य प्रीतिपूर्वक रमणकरो १२२ और बिषयोंमें आसक्तहो काल का निर्वाहकरो और इसमहात्मा श्रीकृष्णजीके प्रतापसे१२३ हम सब देवताभी सुखपूर्वक रमणकरेंगे ऐसे दैत्यों को नाशकरनेवाले श्रीकृष्णजीकी स्तुति करके१२४ इन्द्र पीछे सब देवगणोंसे परिवृत और महाभाग ऐसे श्रीकृष्णजीको पूंछ और लोकोंसे नमस्कृतरूप श्रीकृष्णजीसे मिलापकर१२५देवते औरमरुद्गणोंसे सहित इंद्रभी स्वर्गलोकको गमन करतेभये१२६ पश्चात् महात्मारूप सब ऋषि भी जयरूप आशीर्वाद देकर अपने अपने स्थानोंको गमनकरतेभये पीछे यक्ष राक्षस किन्नर ये भी अपने अपने स्थानों में गमन करते भये १२७ जब इन्द्र स्वर्गलोकको चलेगये तब अतिबलवंत श्रीकृष्णजी सबोंसे कुशलता पूंछकर १२८ पीछे द्वारकापुरी में सब कामार्थसे और शोभासे संयुक्त १२९ श्रीकृष्णजी सब यादवों के संग रमण करतेभये १३० ॥

इतिश्रीमहाभारतेखिलेपुहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्व भाषायांऊननवत्यधिक शतोऽध्यायः १८९ ॥

एकसौनब्बेका अध्याय॥

वैशंपायनने कहा कि पोछे महाबाहु और आनंदसे उतफुल्लनयनवाला ऐसाआहुक महाद्युतिवाले श्रीकृष्णजीसे कहनेलगा कि हे यदुनंदन श्रवणकरो १ अब अनिरुद्धके बिवाहका उत्सवकरो क्योंकि सब प्रियोंसे सहित अनिरुद्धजीका आगमनकुशलतासे भयाहै२ औरमहाभाग्यवालीऊषाभी अपनीसखियोंसे परिवारितहुई अनिरुद्ध के संगप्रीतिसे रमणकरो ३ और कुम्भांडकीपुत्री रामाको ऊषाके सखीमंडलमें प्रवेशकरो ४ तथा यही रामा सांबके अर्थदीजावे और

शेषरहीं सबकन्या सब कुमारोंके अर्थ यथाक्रमसे देनीचाहिये ५ और अनिरुद्धके स्थानमें तथा श्रीधन्वाके स्थानमें उत्सवका आरंभ करो ६ और इसपुरमें सबमदवालीनारी वाजा बजावो और अप्सरा नृत्यकरो और शेषरही अप्सरा गानकरो ७ और कोईक प्रसन्नहुई आपसमें प्रिय बचनकहो और कितनीक स्त्रीमाला और सुन्दरवस्त्रों कोधारणकरके क्रीड़ाकरतीहुई ८ आपसमें सन्मुखहोतीरहो औरकितनीकस्त्री मदकेबशहुई आपहीक्रीड़ाकरतीरहो औरकितनीकस्त्री हर्षसे फूलेहुए नेत्रोंसे संयुक्तहो ६ पांसोंसे चौसरखेलो और निज सखियोंसे परिबृत और देबीजीकी प्रेषितकी ऐसी ऊषामयूरोंके रथमें स्थितहो जाओ १० और कुलमें श्लाघा रूप और ऊषा इसनामसे बिख्यात और बाणासुरकीपुत्री ११ ऐसी बधूको हे रुक्मिणि ग्रहणकरो ऐसे उत्तमस्त्रीकहो १२ और ऐसे ग्रहणकरो और मंगलाचारसे स्त्रियोंकेद्वारा प्रवेशितकरीऊषा अनिरुद्धकेस्थानमेंबसो १३ और देवकी रेवतीरुक्मिणी अनिरुद्धको देखकर स्नेहके आनंदसे संयुक्त अश्रुपातकाढ़ो १४ पीछे अच्छेबाजों के शब्दोंसे शुभमुखवाली उत्तमनारियें क्रियाका आरंभकरो और अपने स्थान में प्राप्तहुई ऊषाभी क्रियाका आरंभ करो १५ पीछे सुंदरमहल में यथायोग्य उपभोगोंसे अनिरुद्धकेसंग रमणकरो १६ और सुंदर कटिवाली और अप्सराके रूपको धारण करनेवाली १७ ऐसी चित्रलेखा सखियोंकेगणकी और ऊषाकी आज्ञालेकर स्वर्गमें प्राप्तहोतीभई १८ औरजबसब सखियांचलीजावें तब मायावती प्रद्युम्नकी स्त्री निमंत्रणदे उषाको अपने स्थानमें प्राप्त कर १६ पीछे वही प्रद्युम्नकीस्त्री पुत्रकीबधूको देखकर बस्त्र अन्नपान इन्होंकरके ऊषाको पूजाकरतीभई २० पीछे सब यदुकुलकीस्त्रियां क्रमसे आचारको देखतीहुई अपनेअपने धर्मोंको करती भई २१ तबबैशंपायनने कहा हेजनमेजय यह सब तेरे प्रति मैंनेकहा जैसे बाणासुरको युद्धमें श्रीकृष्णनेजीता और केवल जीव मात्रछोड़ दिया २२ पीछे द्वारकापुरीमें यादवों के समूहसे परिबृत श्रीकृष्ण रमणकरतेभये और परमशोभासे संयुक्तहो २३ संपूर्ण पृथ्वीभरमें

शिक्षा देतेभये ऐसे हेराजन् पृथ्वीमंडल में यदुबंशमें बासुदेव इस नाम से विख्यात विष्णुअवतार लेतेभये २४ और इन कारणों से वसुदेव के सकाशसे देवकीमें विष्णु उपजेहैं जिनके जन्मको मेरेसे आप पूछतेहैं २५ और नारदजीके प्रश्नोंकी निवृत्तिकेपीछे जो मैंने विस्तारसे कहाहै सो हे जनमेजय आपने बिस्तारसे सुना २६ और विष्णुके माथुरकल्पमें जो बड़ासंशयहो वह सबमैंने कहदियाहै २७ और अन्य कुछ आश्चर्य्यनहीं है किंतु श्रीकृष्णही आश्चर्य्यरूप हैं और सब आश्चर्य्य कल्पों में बिष्णुसे रहित आश्चर्य्य नहीं है २८ और धन्य पदार्थों में धन्य और धन्यके करनेवाले और धन्यकेभावन ऐसे विष्णुहैं देवतों में और दैत्यों में बिष्णुसे उत्तम अन्य नहीं है २९ और सब आदित्य सबबसु सबरुद्र दोनों अश्विनीकुमार सब मरुद्गण आकाश पृथ्वी दिशा जल अग्नि ये सबविष्णुके रूपहैं ३० और यही बिष्णुधाताहैं और बिधाताहैं और संहर्ताहैं और कालहैं और सत्यहैं और धर्म्म हैं और तपहैं और सनातन ब्रह्माभी यही हैं ३१ और सर्प्पोंमें शेषनागहैं और रुद्रोंमें महादेवहैं और स्थावर जंगम सब जगत् नारायणसे उपजाहै ३२ इसलिये सबजगत् इन श्रीकृष्णसे उत्पन्नहुआहै ऐसे बिष्णुको हेजनमेजय प्रणामकरो ३३ और सब देवों के सनातन रूप ये पूज्य हैं ऐसे बाणासुर का युद्ध और विष्णुका माहात्म्य तेरे प्रतिकहा ३४ और इसके श्रवणसे वंशकी अति प्रतिष्ठाको मनुष्य प्राप्तहोवेंगे और इस बाणासुर युद्ध को और विष्णुके माहात्म्यको धारण करेंगे ३५ तिन्होंको पापलगे गानहीं ऐसे हेराजन् मैंने बिष्णुकी कथा तेरेप्रति कहीहै ३६ और इस आश्चर्य्य रूप पर्वको जो मनुष्य धारण करेंगे वे सबपापोंसे रहितहोके बिष्णुके लोकमेंप्राप्त होजावेंगे ३७ और जो मनुष्य सावधानहोके प्रभातमें उठनित्य प्रति इसका कीर्तनकरेंगे ३८ उन्हों को इसलोकमें व परलोकमें कोईभी पातकनहीं रहेगा और इसके कीर्त्तनसे सब वेदोंको जाननेवाला बिप्र होजावेगा औरक्षत्रिय बिजयको प्राप्तहोवेगा ३९ और अति धनवान् बैश्यहोजावेगा और

शूद्र सद्गतिको प्राप्तहोवेगा और मनुष्य को अशुभता की प्राप्ति नहींहोगी और आयुकी वृद्धि होजावेगी ४० अब सूतजीनेकहा किहे शौनक ऐसे जनमेजयराजा वैशंपायनजी के बचनोंसे कहेहरिबंशको सुन प्रसन्नमनवाला होताभया सो हेद्विजोत्तम४१ऐसे बिस्तारपूर्वक सबबंशतेरेप्रतिप्रकाशितकिये अबफिरक्यासुननेकीइच्छाहै४२॥

इतिश्री महाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतविष्णुपर्वभाषायांनवत्यधिकशतोऽध्यायः १९० ॥

यहांविष्णुपर्वसमाप्तहुआ ॥

एकसौइक्यानबेका अध्याय ॥

अथ भविष्यपर्व ॥

शौनककहनेलगे कि हेसर्वज्ञसूतजी जनमेजयराजाके कितनेपुत्र भये और महात्मारूप पांडवोंकाबंशकिसमें प्रतिष्ठितहुआ१यहकथा सुननेकी इच्छाकरूंहूं और आपकोमैं सर्वज्ञ जानताहूं २ तब सूतजी कहनेलगे कि जनमेजय राजाके काश्यारानी में दो २ पुत्रहोतेभये तिन्होंमें चंद्रापीड़ राजाहुआ और सूर्यापीड़ मोक्षको जाननेवाला हुआ ३ पीछेचंद्रापीड़के उत्तमधनुर्विद्यावालेसौ पुत्रहोतेभयेऐसेपृथ्वी में जनमेजय नामसे क्षत्रिय बंशबिख्यातहुआ ४ तिन्होंमें महाबाहु और यज्ञका करनेवाला और बहुत दक्षिणा देनेवाला औरसत्यकर्ण नामसे बिख्यातऐसा ज्येष्ठपुत्र हस्तिनापुरमें राजाहुआ ५ पीछे सत्यकर्णकेप्रतापवाला श्वेतकर्णपुत्रहुआयह पुत्रकी संतानसे रहित और धर्मात्माहोके तपोबनमें प्रवेश करताभया ६ पीछे बनमें बास करतेहुये इसीसे यदुवंशमें उत्पन्न होनेवाली और सुचारुकी पुत्री मालिनीनामसे बिख्यात ऐसी रानीगर्भको प्राप्त होतीभई ७पीछे गर्भके जन्महोनेसे पहले यही श्वेतकर्ण राजा पूर्बराजाओंकी रीतिसे महा प्रस्थान करताभया ८ तब इसराजाको चलतेहुए देखमालिनी रानीभी राजा के पीछेपीछे गमन करतीभई तब मार्गमें कमलके समान नेत्रोंवाले बालकको जनतीभई ९ पीछे उसबालक को त्यागवहरानी पतिकेपीछेपीछेगमन करतीभईजैसेपतियोंकेसंगपह-

ले द्रौपदी तैसे १० पीछे वह कुमारनामवाला बालक पर्वतकी कुंज में रोदन करनेलगा तब तिसकी पुष्टिकेअर्थ मेघप्रकट होतेभये ११ पीछे अविष्टाके पैपिलयादि और कौशिक इन नामोंसे प्रसिद्धदो दो पुत्र उस बालकको देख दयाभावमें प्राप्तहो ग्रहणकर पानीमें प्रक्षालन करातेभये१२तब तिस बालकके रुधिरसे युक्तदोनों पसली शिलापर १३ घिसनेसे अर्जुनबृक्ष के समान श्यामपसलियां होगईं इसलिये वे दोनोंपुरुष इस बालकका अज पार्श्व ऐसानाम धरतेभये १४ पीछे वह बालक उन दोनों ब्राह्मणोंने वेमककी शालामें रक्षासे बढ़ाया १५ पीछे वे मककीस्त्री उस बालकको पुत्रके कारणसे विवाहतीभई इसलिये वह वेमककापुत्र कहाया और वे दोनोंब्राह्मण इसके दीवानरहे १६ पीछे तिन्होंके एक कालमेंजी वन करनेवाले पुत्र और पौत्रबहुतसे होतेभये ऐसे पांडवोंका पौरव बंश प्रतिष्ठित हुआहै १७ इस बिषयमें वृद्धावस्था के बदलने से प्रसन्नहुये नहुषके पुत्र ययातिने एक श्लोकभीकहाहै १८ कि जब तक चंद्रमा सूर्य ग्रह पृथ्वीये बनेरहैंगे तबतक यहपौरवबंशबनारहेगा१९ औरकिसीकालमेंभीपौरववंशसे रहितपृथ्वीनहींहोवेगी २०॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंश पर्वभाषायांभविष्यपर्वणिएकनवत्यधिकशतोऽध्यायः १९१ ॥

एकसौबानबेका अध्याय ॥

शौनकजीकहनेलगे कि जैसे बुद्धिमान् वैशंपायनजीने वर्णनकिये थेतसेआपने हरिवंश और सब पर्वकहेहैं१सो आपका अप्रमित और इतिहाससे संयुक्त ऐसा कथन हमारेको अमृतके समान तृप्तकरताहै और सब पापोंको नाशकरताहै २ और हेवीर सुख पूर्वक सुनने से हमारे मनको आनंदित करैहै और हे सूतपुत्रइसउत्तमआख्यानकोसुन ३ जनमेजयराजा सर्पयज्ञके पश्चात् क्याकरताभया ४ तब सूतजी कहनेलगे कि जनमेजयराजा इस आख्यानको सुन सर्पयज्ञ केपीछे जिस कर्मका आरंभ करतेभये वह बर्णन करताहूं ५ जब सर्पयज्ञकी समाप्ति होचुकी तब जनमेजयराजा अश्वमेध यज्ञकेअर्थ

सामग्रियोंको इकट्ठीकरताभया और ऋत्विक् पुरोहित आचार्य इन सबोंको बुला यह कहतेभये ६ कि मेरेको अब अश्वमेध यज्ञ करना उचितहै इसलिये अश्वछोड़ना चाहिये ७ तब राजाके ऐसे मनोरथ कोजान महात्मा और परावरको जाननेवाले ऐसे बेदव्यासजी तत् काल जनमेजयराजाके देखनेको प्राप्तहुये ८ तब जनमेजय राजा आतेहुये बेदव्यासजी को देख अर्घपाद्य आसन देकर शास्त्रके अनु- सार पूजनकरताभया ६ पीछे वेदव्यासजी और जनमेजय अपने २ आसनोंपर स्थितहुए और तिनदोनोंके चारोंतरफ सब सभाकेलोग बैठतेभये और बेदों के अर्थसे संयुक्त और अति विचित्र ऐसी अनेक प्रकारकी कथा कहनेलगे १० पीछे कथाके अंतमें जनमेजय राजा पांडवों के पितामह और अपने प्रपितामह ऐसे बेदव्यासजी के प्रति प्रश्न करताभया ११ कि बहुत अर्थोंसे संयुक्त और बेदके समा न बिस्तारवाला और सुखसे श्रवण करनेके योग्य १२ और बिभूति के बिस्तारको करनेवाला और सबोंको यश देनेवाला ऐसा महाभा रत हेब्रह्मन् आपने रचाहै जैसे शंखमें दूध १३ और अमृतकेपानसे तृप्तिनहींहोती और स्वर्गके बाससे तृप्तिनहीं होती तैसे भारतको कथाको सुननेसे तृप्ति नहीं होती १४ हेभगवन् सर्वज्ञरूपआपका सन्मानकर मैं पूंछताहूं कि कुरुओं के नाशका कारण राजसूय यज्ञ मैंने मानाहै १५ और अतिबलवाले राजाओं का नाश राजसूय के अंतमें होताहै इसलिये राजसूयके अंतमें युद्धका होना संभवहै १६ और मैंनेसुनाहै कि प्रथम यह राजसूय चंद्रमानेकरीथी तिसके अंतमें तारकामय नामक घोरयुद्ध होताभया १७ पीछे बरुणजीने राज सूय यज्ञकिया तिसके अंतमें सबप्राणियों के नाशनेवाला देवासुर संज्ञक महायुद्धहोताभया १८ पीछे हरिश्चंद्र राजाने राजसूय यज्ञ किया तिसके अंतमें क्षत्रियोंके नाशनेवाला आड़ीवक संज्ञक युद्ध होताभया १६ पीछे राजा युधिष्ठिरनेराजसूय यज्ञकिया तिसके अंतमें महाभारत युद्धहुआ २० इसलिये लोकका नाशकरनेवाले युद्धका मूल राजसूय यज्ञहै सो हे देव आपने राजसूय यज्ञका निवारण

किसवास्ते नहींकिया २१ और इस राजसूययज्ञ के असंहार्य्य अंग है जो मिथ्याभूतक्रिया आदिहोजावै तो निश्चय प्रजाकानाशहो जाताहै २२ और हमारे पूर्वलों के आप पितामहहैं और अतीत अनागत केजाननेवालेहो और स्वामीहो और आपही हम सबोंके आदिकारणहो २३ सो आपसमाननेताके सन्मुखभी वेकैसे युद्ध और राजसूय करतेभये क्योंकि स्वामी और उत्तमनेताके बिनाही राजा अपराधको प्राप्त हुआ करतेहैं २४ तब वेदव्यासजो कहनेलगे कि हेराजन् कालसे बिपरीत भावको प्राप्तहुये तेरे पितामहमेरेसे भावी वृत्तांतको नहीं पूछतेभये और बिना प्रश्नकिये मैं नहीं कहता हूं २५ और भावीवृत्तांतको दूरकरनेको सामर्थ्य नहींदेखताहूं और कालकी गतिको कोईभीनहीं मेटसक्ताहै २६ और जो आपने इस विषयमेंमेरेसे पूछाहै सोमैं भविष्य वृत्तांत कहताहूं परंतु कालप्रभु वलवान्है कि आपसुनके भी करेंगे २७ और आरंभसे व संरंभसे कोईभी पौरुषमें स्थित नहींहोतेहैं क्योंकि कालको लिखीरेखाको कौन दूरकरसक्ताहै अर्थात् कोईभीनहीं २८ और सब यज्ञोंमें श्रेष्ठ अश्वमेधयज्ञ क्षत्रियोंके वास्ते सुनाहै इसलिये तेरे यज्ञमें इन्द्र विघ्नकरेगा २९ सोहेराजन् पुरुषार्थ से दैवयोगको जोतू निवृत्त करनेको समर्थहै तो इस अश्वमेध यज्ञको मतकरै ३० और न तो इसमें इन्द्र अपराध के योग्यहै और न उपाध्याय गणका अपराधहै और न इसमें यजमानका अपराध है किंतुकालही बलवान् है अर्थात् निवृत्त नहीं होसक्ताहै ३१ और तिस ईश्वर रूपकाल से गिनती किया प्रजासर्ग युग क्षयमें प्राप्तहोताहै ३२ और यज्ञके फलको वेंचनेवाले द्विजाति होजाते हैं इसलिये चराचर त्रिलोकी प्राप्त होतीहै ३३ तब जनमेजयने कहा हेभगवन् अश्वमेध कीनिवृत्तिमें क्या निमित्त होगा और सुनकेजो आपकी आज्ञाहोवेगी तो निवृत्तकर दूंगा ३४ तब व्यासजीने कहा हेप्रभो ब्राह्मणों के कोपका करानिमित्त होवेगा इसको निवृत्त करनेके वास्ते यत्नकर और तेरा कल्याणहो ३५ और तेरेसे व्रतकिये अश्वमेध को जब तक

पृथ्वी रहेगी तबतक क्षत्रियनहीं करेंगे ३६ तब जनमेजयने कहा ब्राह्मण शापरूप अग्निके तेजसे अश्वमेध की निवृत्तिमें मैंहीं जो निमित्तहूं तो मेरेको उग्रभय उपजताहै ३७ और सुकृत करनेवाला मेरा सरीखा मनुष्य अकीर्ति से संयुक्त हो कैसे उत्तमलोकों में जाने को समर्थ होवेगा जैसे फांसीसे बंधाहुआ पक्षी आकाशको नहींउड़ सक्तातैसे ३८ और जो अनागतनाश इसमें आपको दीखताहै तौभी फिर यज्ञका प्रारंभ कैसे कियाजावेगा इसलिये मेरे को आप अश्वास करानेके योग्यहैं अर्थात् मेरीधीर बंधाओ ३९ तब व्यासजीने कहाकि उपात यज्ञपुरुष देवताओंमें व ब्राह्मणोंमें उत्पन्नहोताहै जैसे तेजसे अभ्याहत तेजअग्निमें ठहरताहै ४० तैसे और औद्भिज संज्ञक अर्थात् पृथिवी को खोदनेसे कोईक योगी उत्पन्नहोगा सो वहकोई क सेनाकापति और ब्राह्मण और कश्यपनाम से विख्यात होगावह कलियुगमें फिर अश्वमेध यज्ञको समाप्तकरेगा ४१ और तिसके पीछे तिसी कुलमें उपजापुरुष राजसूययज्ञ को भी रचेगा जैसे श्वेतग्रह को प्रलयकाल ४२ और वही बलके अनुसार क्रियाकरने वालों को फल देवेगा और ऋषियोंससंवृत युगांतमें द्वाररूपबिचरेगा४३ तबसे लगायत मनुष्यों के प्राण पूर्व कर्तव्य को त्याग देवेंगे और वृत्तांतोंको आवर्त संसारनिवर्त्त नहींहोगा ४४ तबसूक्ष्म और अति तेजवाला और दुस्तर और दानरूपी मूल से संयुक्त और चारआ-श्रमों से शिथिलरूप ऐसाधर्म प्रकाशितहोवेगा४५तब थोड़े से तप करके मनुष्य सिद्धि को प्राप्तहोजावेंगे और हे जनमेजय युगके अंतमें जो मनुष्य धर्मका आचरण करेंगे वे सब अति धर्मात्मा और धन्य कहावेंगे ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्विनवत्यधिकशततोऽध्यायः १९२॥

एकसौतिरानबेका अध्याय॥

जनमेजय ने कहा आसन्न और विप्रकृष्ट ऐसेरूप कालको जो हमनहीं जानतेहैं तब द्वापरपर्य्यंत युगांतमें बांछाकरे हैं १ इसधर्म

तृष्णाकरके तिसकालको हमप्राप्तहुये इसलिये अल्पकर्मकरके सुख
पूर्वक परमधर्म को प्राप्तहोवेंगे २ शौनकने प्रश्नकिया कि हे धर्मज्ञ
प्रजाको उद्वेग करनेवाला और धर्मोंका नाशकरनेवाला ऐसा जो
युगांत उपस्थित हुआहै तिसको निमित्तों करकेआप कहनेकोयोग्य
हो ३ तब सूतजीनेकहा ऐसेप्रकार भविष्यकी गतिके अर्थपूछे हुये
वेदव्यासजी तत्त्वकरके चिंतवन करतेहुये तिससमयमें कहतेभये ४
सो वही विस्तार पूर्वकयुगांत धर्म वेदव्यासजी कहते हैं प्रजाकी
रक्षाकरनेसे रहित और बलि भागको ग्रहणकरने वाले और अपनी
रक्षामें निपुण ऐसेराजे युगांतमेंउत्पन्न होवेंगे ५ और क्षत्रियवंशसे
रहित राजेहोवेंगे और शूद्रके सकाशसे आजीवन करनेवाले ब्राह्मण
होवेंगे और ब्राह्मणोंके समान आचार धारण करनेवाले शूद्रहोवेंगे
ऐसेयुगांतमें व्यवस्थाहोवेगी६ और वेदपाठी ब्राह्मणशस्त्रों को ग्रहण
करेंगे और हेजनमेजय उसीयुगांतमें क्रियारहित द्रव्योंको एकपंक्ति
में बैठके सब वर्ण भोजन करेंगे ७ और हे जनमेजय युगांतमें शिल्प
विद्याको जाननेवाले और मिथ्याबोलनेमें कुशल मदिरा और मांस
में प्यारकरनेवाले और मित्रकी भार्यासे भोगकरनेवाले ऐसे मनुष्य
होजावेंगे ८ और राजकार्यों में स्थित चोर रहेंगे और राजा लोग
चोरोंसे प्यार करेंगे और नौकर मालिकके द्रव्यको चोरके भोजन
करेंगे९ और धनकी श्लाघाहोवेगी और सत्पुरुषोंके व्रतकीपूजानहीं
करेंगे और पतित मनुष्यकी निंदा नहीं होवेगी १० और नष्टचेष्टा
वाले और छुटेहुये केशोंवाले और चौलकर्मसे रहित ऐसेमनुष्य सो
लहवर्षसे पहलेही आपसमें मैथुनकर संतानोंको उपजावेंगे ११ और
सबदेशों के मनुष्यअन्न वेंचनवाले होजावेंगे और वेदको बेंचनवाले
ब्राह्मण होजावेंगे और योनिको वेंचनेवाली स्त्रियां होजावेंगी १२।
१३ और सब मनुष्य वेदको पढ़ेंगे और सब वाजनेपिसंहिता को
पढ़ेंगे और भो अर्थात् हे भगवन् ऐसा संबोधन आपसमें शूद्रबोलने
लग जावेंगे १४ और तपयज्ञफल इन्होंको वेंचनेवाले ब्राह्मण हो
जावेंगे और विपरीत भाव से वर्तनेवाले सबऋतु होजावेंगे १५

और सफेद दांतोंवाले अंचित नेत्रोंवाले और शिर आदिका मुण्डन करवाये हुये और गेरुआदिसे रंगेहुये कपड़ों को धारण करनेवाले ऐसेशूद्र धर्मको आचरण करेंगे और शाक्यबुद्ध इनमतोंमें प्राप्तहोके सब मनुष्य आजीवन करने लगेंगे १६ और श्वापद संज्ञक पशुओं की वृद्धिहोवेगी और गायोंका क्षय होजावेगा और स्वादु पदार्थों की निक्षति होजावेगी १७ और अंत्यजातीके मनुष्य ग्रामके मध्यमें बसैंगे और मध्यमें बसने के योग्य अंतमें बसैंगे और सब प्रजा निश्च प्रतिनीचेहीको प्राप्तहोवेगी १८ और दोवर्षके बछड़ोंकोबधिया और नाथ घालि देवेंगे और खेतीकरनेवाले किसान छोटो२ जो हड़ियों को वाह लेवेंगे और चित्रवर्षा करनेवाले मेघहोजावेंगे १६ और सब चोरोंके कुलमें जन्मेहुये आपसमें चोरीही करेंगे और अल्पही धनके मिलनेमें अतिधनवान् आपेको मानलेवेंगे२० और सबमनुष्य धर्म का आचरण नहीं करेंगे और ऊषररूप अर्थात् रणों से संयुक्त पृथ्वीहोजावेगी और चोरोंसे आवृत्तसबमार्ग होजावेंगे ऐसीव्यवस्था युगांतमें होवेगी २१ और सब मनुष्य कलियुग में व्यवहार करेंगे और पिताके दियेहुये द्रव्यका पुत्रविभाग करेंगे २२ और लोभसे दूसरेके धनको हरनेकीइच्छा करेंगे और सबकालमें मिथ्याबोलते रहेंगे २३ और सब अवस्थाओं में स्त्रियांकेशों को धारण करतीरहेंगी २४ और सब प्रकारके गृहस्थी मनुष्योंको भार्याके समानप्रिय अन्यनहीं कोईहोगा अर्थात् सब कार्योंमें भार्याही की सलाहलिया करेंगे २५ और शील स्वभाव से रहित पुरुष होजावें और बहुतसे अनार्य पुरुष होजावें और मिथ्या रूपों को धारण करनेलगें और पुरुषों को अल्पता होजावेगी और स्त्रियोंकी वृद्धीहोवे तब जानो युगांत उपजाहै २६ और तिस युगांतमें बहुत याचना करने वाले मनुष्य होजावेंगे और आपसमें कोईभी किसी को दाननहीं देवेगा और बिना विचारसे हीन जातिसेभी दानको ग्रहण करेंगे २७ और राजाचोर अग्नि दंड इन्होंसे पीड़ित मनुष्य नाशको प्राप्त होवेंगे और फल रहित खेतीकी उत्पत्ति होवेगी और तरुण मनुष्य वृद्धोंके

समान कार्य करेंगे २८ और इच्छाहीसे सब मनुष्य आपेही को सुखी मानलेवेंगे २६ और वैश्यों की तरह क्षत्रिय होजावेंगे और धन धान्यको भोगनेवाले ब्राह्मण होजावेंगे ३०वर्षासमयमें कठोर और ओलोंके गेरनेवाले ऐसे पवन चलने लगेंगे और संदेह युक्त परलोक होजावेगा ३१ और बिनाकहे कसम और नियमों को धारण करेंगे और करजाके लेने देने में अनेक प्रकार के बिषाद उपजेंगे३२ और फलसे रहित आनंदहोजावेगा और फलसे रहित क्रोधहोजावेगा और दूधके वास्ते सब बकरियोंको धारणकरेंगे ३३ और शास्त्रोंको कोई जानेगानहीं और ऐसे कहैंगे कि हम सबशास्त्र के अनुसार कर्मकरते हैं ३४ चिरसठी आदि से जटित गहनों को स्त्रियां धारण करेंगी और सब वर्ण आपही आप सब व्यवस्थाओं को जानने लगेंगे और वृद्धों की कोई भी सेवानहीं करेगा ३५ और कोईभी कवितासे रहित नहींहोगा और बुरेकर्मोंमें स्थित होने वाले ब्राह्मण नक्षत्रोंके द्वाराजीविका करेंगे ३६ और चोरोंसे प्यार करनेवाले राजा होजावेंगे ३७ और कुत्सित प्रकारों से उपजे हुये और मदिरा पीनेवाले ऐसे बेद शास्त्र को पढ़के हे जनमेजय युगांत में अश्वमेध यज्ञकरेंगे ३८ और धनकी तृष्णा से पीड़ितहुये ब्राह्मण यज्ञ करने से अयोग्य को यज्ञ करावेंगे ३६ और अभक्ष्य भोजन करेंगे और कोईभी पढ़ैगा नहीं ४० और आपसमें हेभगवन् ऐसे कहके बोलेंगे ४१ और नक्षत्रोंके वर्ण बदल जावेंगे और सब वर्णोंकी स्त्रियोंकी व्यवस्था एकसी होजावेगी और दिशाओंकी विपरीतता होजावेगी ४२ और संध्याकालमें पीलापना और दिग्दाह भी होनेलगेंगे और पुत्रपिता आदिसे काम करावेंगे और बधूश्वश्रू आदिसे कामकरावेंगी नीचजातिकी स्त्रियोंसेसबवर्ण भोगकरेंगे४३ और शिष्यवाणी रूपबाणसे गुरुओंकोझिड़केंगे ४४ और प्रमत्तपुरुष स्त्रीके मुखमेंभी भोगकरेंगे ४५ और अग्नि होत्रीभी पुरुष अतिथि को अर्थात् अभ्यागतकोअन्न नहींदेकेभोजन करेंगे और सबपुरुषन किसीको भिक्षा और न किसीकोबलि देवेंगे ४६ किंतुआपहीभोजन

करेंगे और स्त्रियां शयन करतेहुये पतियोंको छोड़कर अन्यपुरुषोंसे रमण करेंगी और पुरुष शयन करती हुई स्त्रियोंको छोड़कर अन्य स्त्रियोंसेरमण करेंगे ४७ और व्याधिसे रहित कोईनहींरहैगा और शूलसे रहित कोईनहीं रहैगा और सब पुरुषआपस में निंदा करने लगेंगे और सबकृतघ्नीहोजावेंगेऐसी युगांतमेंव्यवस्थाहोवेगी ४८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रिनवत्यधिक शतोऽध्यायः १९३॥

एकसौचौरानबेका अध्याय॥

जनमेजय कहने लगेकि ऐसे चंचल हुये लोकमें कि तसकरके पालित और कैसेआचारवाले और कैसेआहार बिहारवालेबसेंगे१ और क्या कर्म करेंगे और क्या चेष्टा करेंगे और क्याप्रमाणमानेंगे और कितनी उमरवालेहोंगे और किस दिशाको प्राप्तहोके कृतयुग में प्राप्त होंगे २ तब व्यासजीने कहा इससमय से उपरांत धर्म को हानि होनेपै गुणहीन प्रजाहोजावेगी और शीलव्यसनको प्राप्तहोके आयुकी हानिको प्राप्तहोवेंगे ३ और आयुको हानिसे बलकीग्लानि होवेगी और बलकी ग्लानिसे वर्णबिगड़ जावेंगेऔर वर्णबिगड़जाने से व्याधिरूपपीड़ा उपजेगी और व्याधिरूप पीड़ासेदुःख उपजेंगे४ और दुःख से आत्माका बोध उपजेगा और आत्म बोध से धर्म शीलता उपजेगी ऐसेपरम दिशाको प्राप्तहोके कृतयुगको प्राप्तहोवें गे ५ और कितनेक पुरुषउद्देशसे धर्मशील होवेंगे ६ और कितनक मध्यस्थता को प्राप्तहोवेंगे और कितनेक हेतुबादमें आश्चर्य्य करने वाले ईर्षाशील होवेंगे और प्रत्यक्ष और अनुमान प्रमाणको निश्चय करनेवाले अथवा प्रत्यक्षही प्रमाणको अंगीकार करेंगे और आपे को पंडित मानतेहुये सब बातों में नास्तिकही रहेंगे ७ और कित नेकजन वेदोक्तकोभी अप्रमाण मानेंगे तब बहुतसी स्त्रियां योनि के द्वारा आजीवन करनेवाली होजावेंगी ८ और बहुतसे नास्तिक हो जावेंगे और कितनेक धर्मनाशकहोजावेंगे और मंद और मूढ़मनुष्य आपेको पंडितमानलेवेंगे ९ और अल्पकाल श्रद्धावाले शास्त्रज्ञानसे

रहितऔर वादकरनेमें कुशल ऐसेदांभिक अर्थात् पाखंडी पुरुषहोजा वेंगे१० ऐसेचलायमान धर्महोनेपै दानसत्यसे अन्वितपुरुषशुभकर्मों का आचरणकरेंगे ११ और सबपदार्थों को खानेवाला अपनी रक्षा करने वालादथा और लज्जासेरहित ऐसालोक होजावेगातबकषाय कालक्षणहै १२और ब्राह्मणोंकी शाश्वती आजीविकाकोजबशूद्रकरने लगिजावेंगे तबकषायका लक्षणजानो १३ और कषायसेसंयुक्त और ज्ञानविद्याका नाशकरनेवाला ऐसे कालमें अल्पकालकरि सिद्धिको प्राप्तमनुष्यहोजावेंगे १४औरजबमहायुद्ध महावात महावर्षा महाभय ये युगांतमें होवेंगे तब कषायका लक्षणजानो १५ और ब्राह्मण रूप को धारनेवाले राक्षस और कर्म को जाननेवाले राजा युगांत में पृथ्वीकोभोगेंगे१६ और स्वाध्याय वषट्कारसे रहित और अन्यांय करनेवाले और अभिमानी और मांसखानेवाले और सर्वभक्षी और वृथा व्रतको धारणकरनेवाले १७मूर्ख और स्वार्थीऔर लोभी और क्षुद्र और उत्तम व्यवहारसे और शाश्वतधर्मसे रहित१८ और पर रत्नोंको हरनेवाले और परस्त्रीगामी और कामी और दुरात्मा और साहसमेंप्यार करनेवाले ऐसे ब्राह्मण युगांतमें उत्पन्न होवेंगे १६ और ऐसे उत्पन्न होनेपै बहुतरूपों को धारण करनेवाले मुनि जन भी जन्मलेवेंगे २० तब कथाके संयोगसे सब मनुष्य उन्होंकी पूजा करेंगे जब कछुक आनन्द होवेगा २१ और खेतों को चोरी करने वाले और वस्त्रकी चोरी करनेवाले और भक्ष्यभोज्यकी चोरीकरने वाले और करंड अर्थात् स्नान सामग्री के वंशमय पात्र की चोरी करनेवाले ऐसे मनुष्य युगांतमेंहोजावेंगे २२ और चोरोंकेभी चोरी करनेवाले और मारनेवालोंके भी मारनेवाले ऐसे मनुष्यहोजावेंगे और चोरोंकरके चोरोंकाक्षय होनेपै कुशलता होवेगी २३ और सार से रहित और क्षुधित और क्रिया रहित ऐसे लोक के होनेपर कर भारसे पीड़ित मनुष्य वनमें प्रवेशकरेंगे २४ और पुत्रसबप्रकार से पिताआदिको आज्ञाफरमावेंगे और वधू श्वश्रूआदिको आज्ञा फर मावेंगी २५ और शिष्य गुरुओं के वाणीरूप बाणोंसे पीड़ित

करेंगे यज्ञोंकेनहींहोनेसे राक्षसश्वापद२६ कीटमूषासांपये सब मनुष्योंकोपीड़ितकरेंगे और क्षेमसुभिक्षआरोग्यऔर बंधुओंमेंस्नेह२७ ये सब हेराजन् उद्देशसे होवेंगे २८आपही पालनाकरनेवाले और आपही चोरीकरनेवाले और युगसंभारको धारण करनेवाले ऐसे मनुष्य देश देशमें मंडलोंकरकेसहित अलगअलग विचरेंगे औरसार सेरहित और बंधुओंसे रहित ऐसे सब मनुष्य अपने देशोंको त्याग के ३० पीछेभयसे अपने बालकोंका अपने अपने कंधेपे चढ़ाक्षुधा रूपीभयसे पीड़ितहुये कौशिकीनदीको तिरके३१अंगवंग कलिंगका श्मीर मेकल ऋषिकांत गिरद्रोणी इनदेशोंका आश्रयलेवेंगे ३२और हिमालयके संपूर्ण पार्श्वमें और खार समुद्र के समीपमें और अनेक प्रकारके वनोंमें म्लेच्छ गणोंके संग बसेंगे ३३और न तो शून्यरूप न शून्यसे रहित रूप ऐसी पृथ्वी होजावेगी और रक्षा करनेवाले और बिन रक्षा करनेवाले सब शस्त्रोंका धारण करेंगे३४ और मृग मछली पक्षीश्वापद पशु सर्पकीट मधुरशाक फल मूल इन्होंको सब मनुष्य भोजन करेंगे ३५ और फटेहुये चीर पत्त मृगछालावृक्षों के वक्कल इन सबोंको धारणाकरेंगे जैसे मुनिजन३६ और झीलोंमें हलकेद्वारा बीजोंको बोनेकीचेष्टा करेंगेऔर बकरी भेड़गधाऊंट इन्हों कोभी यत्नसे पालनाकरेंगे ३७और तट में आश्रितहुई नदियों के स्रोतबंदहोजावेंगे औरपक्कान्नके व्यवहारसे तथावृक्षोंकेमूलफलसे आपसमें व्यवहार करनेलगेंगे ३८और शुद्धिसे रहित और कुलके लक्षणोंसे वर्जित ऐसी बहुतसी संतानों से संयुक्त मनुष्य होजावेंगे३९ और हीनसेभी हीनकर्मको प्रजाकरेंगी ४०और मनुष्योंकी परमआयु तीसबर्षकीहोवेगी औरदुर्बलऔर विषयोंसे क्षीणरजोगुण सेआलुप्त ऐसे मनुष्यहोवेंगे ४१ पीछे तिन्होंकी इंद्रियोंका संक्षयरोगों के द्वारा होनेलगेगा और आयु के नाशहोनेसे हिंसा कर्मको न करेंगे ४२ और सत् पुरुषोंकी टहल करनेवाले और साधुओं केदर्शनोंमेंतत्पर ऐसे मनुष्य होजावेंगे औरव्यवहारोंकेकी निवृत्ति होनेसे सत्यवचनको बोलने लगेंगे ४३ और कामोंके अलासे वृद्धों

के समान शीलता करने लगेंगे और अपने पक्षके क्षयसे पीड़ित हुये सब मनुष्य संकोच करेंगे ४४ और दानसत्य प्राणों की रक्षा इन्होंमें शुश्रूषा करनेवाले होंगे तब तिनपुरुषों को चारपैरों वाला धर्मश्रेयकारी होवेगा ४५ तब वे सबमनुष्य इससंसारमें स्वादुक्या है ऐसे जानके धर्मकोही स्वादु मानेंगे ४६ और जैसे धर्मकी हानि हुईहै तैसेही वृद्धि होनेसे कृतयुग प्राप्तहोवेगा ४७ और कृतयुग में सुंदर वृत्तहोतीहै और युगांतमें हानिहोतीहै और कालतो एकहीहै परंतुजैसे हीनवर्ण चंद्रमाहोताहै तैसे४८और जैसे अंधेरेसे ढकाहुआ चंद्रमा होता है तैसेकलि युगको जानो और जैसे अंधेरे से रहित और पूर्णचंद्रमा है तैसे कृतयुगमें कालहोताहै ४९ और अर्थ वाद परब्रह्महै ऐसे वेदोंमें मानाहै और निर्णयसे रहित और विनाजाने ऐसे दायभागको सबलोग ग्रहण करेंगे ५० और तपहीको वांछित सबपुरुष मानेंगे और सत्य बोलनेसे गुणप्राप्तहोवेंगे और गुणों से आनंद प्राप्त होगा ५१ और देश काल के अनुसार बर्तने वाली आशीर्वाद पुरुषको देख यथाकाल मुनिजनोंने कहीहै५२ और धर्म अर्थ काम देवते इन्होंको प्रतिक्रिया और आशीर्वाद ये युग युग में वर्तती रहेंगी ५३ ऐसे ब्रह्माके स्वभाव से वर्तते आतेहैं और नाश तथा उदयके विना क्षणमात्रभी जीवलोकनहीं ठहरेगा ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वणिभाषायां चतुर्नवत्यधिकशततमोऽध्यायः १९४ ॥

एकसौपंचानबेका अध्याय ॥

सूतजी कहनेलगे ऐसेजनमेजय राजाको आश्वास देनेवाले वेद व्यास के अतीतानागतरूप वाक्य को सभाके पुरुष सुनते भये १ तब वेदव्यासजीके वाणीरूप रससे सब पुरुषोंके कर्णइंद्री अमृत के समान तृप्त होतीभई २ अर्थात् धर्मकाम अर्थ इन्होंसे संयुक्त और दयारूप और वीरों को आनंद देनेवाला और रमणीय ऐसे संपूर्ण आख्यानको सभाके पुरुष सुनके ३ कितनेक रोदनकरने लगे और कितनेक ध्यान करनेलगे ऐसे वेदव्यासजी के इतिहासको चिंतवन

करनेलगे ४ पीछे सभापतियोंसे आज्ञालेके और अपने से सभाको दाहिनी तरफ़ करके फिर मैंतुमसबोंको देखूंगा ऐसे कहकरभगवान् बेदव्यास गमन करते भये५ पीछे संसारमें बर्णन करनेवालोंमें श्रेष्ठ बेदव्यासजीके पीछे२ सब सभाके पुरुष गमन करतेभये फिर ६ जब भगवान् बेदव्यासजी चलेगये तब वेही सब सभाके मनुष्य अर्थात् ब्राह्मण महर्षि ऋत्विक् राजा ये सब उसी स्थान में प्राप्तहुये ७ ऐसे घोर रूप सर्पों के बैरका बदला लेकर क्रोधको त्याग जनमेजय भी गमन करनेलगा जैसे बिषको त्यागके सर्प ८ पीछे हवनकी अग्निके समान दीप्त शिरवाले तक्षकसर्पकी रक्षाकर आस्तिकमुनि भी अपने स्थानको जातेभये ९ और राजाजनमेजयभी अपने मनुष्यों से संयुक्त होके हस्तिनापुरमें प्रवेश करते भये तब आप आनंदित रूप प्रजाको शिक्षाकरनेलगे १० फिर कितनेक कालमें जनमेजय राजा बिधिपूर्बक बहुतसी दक्षिणा दानदेकर अश्वमेध यज्ञके अर्थ दीक्षित हुआ ११ पीछे सुंदर रूपवाली काशीके राजाकी पुत्री और बपुष्टमा इसनाम से बिख्यात ऐसी जनमेजय की रानी संज्ञप्तरूप अर्थात् मारित अश्वके समीप में बिधि दृष्ट कर्म से बैठनेलगी १२ तब सुंदर रूप वाली उस रानीकी इन्द्र बांच्छा करके संज्ञप्तरूप अश्व में प्रवेशकरि तिस रानी के संग मिलता भया अर्थात् मैथुन करता भया १३ तब ऐसा बिकार उपजने के बाद तत्त्व से जानके राजा अधर्म से कहने लगा कि अश्व संज्ञप्त नहींहुआ इसवास्ते ध्वंस करनेके योग्यहै १४ तब जाननेवाला अध्वर्यु इन्द्रकी बिचेष्टाको जनमेजयके अर्थ कहता भया तब राजा इन्द्रको शाप देताभया १५ जनमेजयजी कहनेलगा प्रजाकी रक्षासे जो मेरातप और यज्ञ का फल है तिस संपूर्ण फल करके कहताहूं यह श्रवणकरो १६ अब से लगाके अजितेन्द्रिय और स्थिर ऐसे इन्द्र को अश्वमेध यज्ञ से क्षत्रिय नहीं पूजेंगे १७ सूतजी कहते हैं हे शौनक ऐसे क्रोधित हुआ जनमेजय राजा ऋत्विकों के प्रति कहनेलगा जोकि यह मेरे यज्ञमें बिघ्न हुआ है यह आपकी दुर्बलतासे हुआ है १८ इसलिये

मेरे देशमें बसने के लायक तुम नहीं हो और अपने बांधवों करके सहित गमनकरो ऐसे कहने से उत्पन्न हुआ है क्रोध जिन्हों को ऐसे ब्राह्मण राजाको त्यागते भये १६ और क्रोध से पत्नीशालामें प्राप्तहुई स्त्रियोंको परम धर्मज्ञ राजा जनमेजय कहनेलगा २० कि बुरे कर्म करनेवाली वपुष्टमा रानीको मेरे घरसे बाहरकरो क्योंकि जिसने धूलिसे गुंठित दोनों चरणमेरे मस्तक पै प्राप्तकरदिये २१ और जिसने मेरामाहात्म्य खंडितकरदिया और संसारमें फैलनेवाले यशका नाश करदिया और मानदूषित किया ऐसी बपुष्टमा रानी को देखनेकी इच्छा नहीं करता जैसे क्लेश देनेवाली मालाको २२ और जो पर पुरुषसे मर्दितकी भार्याको पश्चात् ग्रहण करै वह स्वादु पदार्थ को भोजन नहीं करै और एकांत में शयन करतारहै अर्थात् किसी कामके लायक रहैनहीं २३ और जैसे कुत्ताके जूंठे पदार्थको विद्वान् ग्रहण नहीं करते हैं तैसे २४ ऐसे ऊंचे प्रकारसे कहतेहुये और क्रोध से भरे ऐसे जनमेजय राजा से गंधर्वराज विश्वावसु यह वचन कहनेलगा २५ हेराजन् तीनसौ यज्ञोंकेकरनेवाले तेरेको इन्द्र नहीं सहताहै इसलिये इन्द्रने अप्सरा तेरी पत्नी बनादी २६ और रंभा नामवाली और काशीराज की पुत्री और देवी बपुष्टमा नाम सेविख्यात ऐसी यह तेरी पत्नी करीगई सो जिसको तू त्यागने की इच्छा करताहै २७ पीछे तेरे यज्ञमें छिद्रदेखके इन्द्रने विघ्न किया इसवास्ते हे कुरुश्रेष्ठ तू यज्ञका करने वालाहै और समृद्धि में इंद्रके समानहै २८ इसलिये तेरे यज्ञों के फलसे हे राजन् इन्द्रभय मानताहै इस कारणसे हे प्रभो तेरा यज्ञ इन्द्रने आवर्तित किया २६ और यज्ञमें छिद्रको प्राप्तहो संज्ञप्तरूप घोड़ेको देख ३० जोवपुष्टमा से मिलाप तू मानताहै यह इन्द्रने रंभा अप्सरा से कियाहै क्योंकि तेरे यज्ञमें विघ्नकरनेके वास्ते इन्द्रने माया रचीहै औरतीनसौ यज्ञ करानेवाले तैंने गुरु शापितकरादिये हैं ३१ और तू सब विप्र इन्द्र समान फलसे अंशित करवियेहो ३२ और जैसे तेरसे भयभीत इन्द्र होताहैतैसेही ब्राह्मणों से भी होताहै इसवास्ते दोनों से तिरजाने व

अर्थ ऐसीमायाकरीहै ३३ और नहींतो महातेजवाला और सबजगह जयपानेवाला ऐसा इन्द्र ऐसे बुरेकामको अर्थात् अपनेही बंशमेंउपजन वाले प्रपौत्रकी बधूसे कैसे अभिगमनकरै ३४ और जैसे पहले उत्तमबुद्धि उत्तमधर्म उत्तमशांतिपरम ऐश्वर्य्यकीतिये सबइन्द्रमें उपजे हैंवैसे तेरेमें भीसबबिराज मानहैं ३५इसलिये इन्द्रको और गुरुको और अपनेको और बपुष्टमा रानीको दोषसे संयुक्त मत जानो क्योंकि कालप्रभु दुरतिक्रमहै अर्थात् कालको दूरकरनेकी किसीको सामर्थ्यनहींहै३६इसलिये अश्वमें प्रवेशकर इंद्रने तुझको क्रोधितकर दियाहैभावीके अनुसार सुखार्थीपुरुषको बर्तनाचाहिये३७और जैसे बहती हुई नदीके स्रोतोंको उलटे तिरनेमें पुरुषसमर्थ नहींहोतातैसे कालकीगतिकोभीकोई दूरनहीं करसक्ता इसवास्ते पापसेरहित यह स्त्रीसुरत्न बिगतज्वर होके भोगनीचाहिये ३८ क्योंकि बिनापापके त्यागीहुई भार्या पुरुषोंको शाप दिया करतीहैं और हे राजन् जिन स्त्रियोंमें दोष नहीं होताहै ऐसी स्त्री बिशेष करके शापदिया करती है३९ और भानुकी प्रभास्त्रीहै और अग्निकी शिखास्त्री और होताकी वेदी और आहुतिस्त्रीहै परंतु स्त्रीकी इच्छाकेबिना कोई पुरुष जबर्दस्ती स्त्रीको मर्दित करदेवेतो वह स्त्री त्यागने योग्य नहींहै ४०और और बुद्धिमान् पुरुषोंको निरंतर अपनी स्त्री ग्रहण करनीचाहियेऔर लड़ानी चाहिये और अन्न बस्त्रादिकसे पालना करनी चाहिये और शील स्वभाव वालीस्त्रीको नमस्कार करना चाहिये और लक्ष्मी के समान पूजनी चाहिये ४१॥

इतिश्री महाभारते हरिबंश पर्वांतर्गत भविष्यपर्व भाषायां बिश्वावसुवाक्ये पंचनवत्यधिक शतोऽध्यायः १९५॥

एकसौछानबेका अध्याय॥

सूतजी कहनेलगे कि ऐसे बिश्वा बसुके कहनेसे शांतहुआ जनमेजय बपुष्टमारानीपै प्रसादकर मिथ्या शंकाको मनुष्यों के धर्मों से युक्तरूप शांति करताभया १ पीछे मनके श्रम से निवृत्तहो और

अपने यशको चाहताहुआ और धर्म्मबुद्धि और आनंदितमनवाला ऐसा जनमेजय वपुष्टमारानीसे रमण करताहुआ अपने देशको पालना करनेलगा २ और ब्राह्मणोंकी पूजाको नहीं त्यागताभया और शीलतायज्ञदान इन्होंसे मनको नहीं हटाताभया और अपने देशकी प्रजाकी पालना अच्छी तरह करनेलगा और वपुष्टमा रानीकी भी निंदाको त्यागताभया ३ और ब्रह्माजीके रचेको कौन दूरकर सक्ता है यह वेदव्यासजीने पहले ठीक वर्णन किया ऐसे आत्म ज्ञान में कुशल राजाचिंतवनकर क्रोधको त्यागता भया ४ और महात्मारूप वेदव्यासजीके इस महाकाव्यको पठनकरेगा वह मनुष्यों में अति पूजनेयोग्य होजावेगा और दुर्लभरूप बढ़ाहुआ आयु को प्राप्तिहो सर्वज्ञताके फलको प्राप्तहोवेगा ५ और इंद्रके अपराधको मोक्षणरूप इस संवादको पठन करनेसे सब पापोंसे रहित होके अनेक प्रकार के कामोंको प्राप्तहोवेगा और समाप्तकामोंवाला मनुष्य होके बहुत कालतक आनंदितहोवेगा ६ और जैसे वृक्षसे फूलफल उपजकेपीछे फिर फूलफल के बोनेसे वृक्ष उगतेहैं तैसे वेदव्यासजीकी कहीये वाणी तिस आनंदको उपजातीहै ७ और इसके प्रतापसे अपुत्र मनुष्य अतितेजवाले पुत्रोंको प्राप्तहोताहै और च्युत हुआ मनुष्य आत्माकी स्थितको प्राप्त होताहै और रोगोंको नहीं प्राप्तहोताहै और बहुतकालके बंधनको नहीं प्राप्तहोताहै और गुणोंसेयुक्त और पवित्र ऐसीक्रियाओंको प्राप्तहोताहै ८ और कन्या उत्तम पतिको प्राप्त होतीहै और वेदव्यासजीकी वाणीको सुनके स्वजनोंका हितकारी और वैरियोंको मर्द्दनकरनेवाले और गुणोंसे युक्त ऐसे पुत्रोंको पुरुष उत्पन्न करताहै ९ और क्षत्रिय वसुधाको जीतलेताहै और अत्यंत धन तथा शत्रुओंके जयको प्राप्तहोताहै औरवैश्य बहुत धनको प्राप्तहोताहै और शूद्र सुंदरगतिको प्राप्त होताहै १० और महात्माओं के चरित्र रूप इस पुराणको पढ़के पुरुष निष्ठावाली बुद्धिको प्राप्तहोताहै औरदुःखोंकोत्यागके संशय और रागद्वेषोंसे रहितहुआ पृथ्वी पैविचरताहै ११ ऐसे सूतजी शौनकादिक ऋषियोंसे वर्णनकरतेहैं कि

हे शौनकाहो यह आख्यान मैं तुम्हारेप्रति वर्णन करचुका फिरइस आख्यानको ब्राह्मणोंकी मंडलीमें परस्परमें स्मरण करतेहुये और स्थिरता तथा धैर्यताको धारणकरके बारंबार स्मरण करतेहुये इस लोकमें तुम विचरो १२ और अद्भुत वीर्य तथा कर्मोंवाले महात्माओंका यह चरित्र बेदब्यास कृत संक्षेप और बिस्तार करके तुम्हारे प्रति मैंनेबर्णनकिया और हेशौनकाहो इससे अन्य और कथासुनने की इच्छाकरतेहो अब मैं तुम्हारे प्रतिअन्यकथा बर्णनकरूं १३ ॥

इतिश्री महाभारतेहरिवंश पर्वांतर्गतभविष्यपर्व भाषायांषण्णवत्यधिकशतोऽध्यायः १९६॥

एकसौसत्तानबेका अध्याय॥

जनमेजयनेप्रश्नकिया कि हे वैशंपायन पद्मनाभकेप्रभावकोऔर समुद्रमें शयन करताहुआ परमेश्वरकी नाभिकमलमें जैसे ऋषिदेवताओंके समूह उत्पन्न होतेभये १ इस संपूर्ण आख्यानको मेरेअगाड़ी वर्णनकरो सोई परमेश्वरकी कीर्तिको सुनके मेरी तृप्ति नहीं होतीहै २ और वह पुरुषोत्तम कितनेकालको व्यतीत करके सोताहै और कालका संभव रूपईश्वर किस वास्तेकालमें शयन करताहै ३ और कितने कालमें सोके उठताहै और शयनसे उठके संपूर्णजगत् को कैसे रचताहै ४ और उसजगत्में पहिले कौनकौनसे प्रजापति हुयेहैं और हेवैशंपायन वह सनातन भगवान् इसबिचित्रलोकको कैसेरचताभया ५ और नष्टहोगये हैं स्थावर तथाजंगम जिसमें और नष्टहोगये हैं देवता तथा असुरोंके गण जिसमें और नष्टहोगये हैं सर्पतथा राक्षस जिसमें ६ और नष्टहोगये हैं अग्नि तथावायु और लोक जिसमें और नष्टहोगये हैं आकाश तथा पृथ्वी जिसमें और केवल गह्वरी भूत पंचमहाभूतोंकाहै नाश जिसमें ७ ऐसे एक समुद्र रूप महाघोर प्रलयमें महाभूतोंका पति और महान् तेजवाला और महान् बिस्तार वाला और देवताओं काभीदेवता वह भगवान्किस नियति को ग्रहण कर स्थित होता भया ८ सो हेब्रह्मन् मैं शरणागतरूप मेरेसे संशय रहित नारायण यशको तुम कहने को योग्य

हो ९ और धर्मरूप भगवान्‌कायश और भगवान्‌की प्रकटता और श्रद्धावालोंको विधि यह आख्यान मेरे प्रति बर्णन करने को योग्य हो १० वैशंपायनजी राजाजनमेजयके प्रतिबर्णनकरते हैंकि हे जनमे जय जो नारायणके यशरूपीज्ञानमें आपको इच्छाहै सो तेरे बंशमें उचितहै इसवास्ते यज्ञोंके द्वारातो परमेश्वरकापूजनरूप कार्य को करो ११ और हेजनमेजय जैसेपुराणोंसे और देवताओंसे और बर्णन करतेहुये ब्राह्मणके मुखसे मैंने सुनाहैवैसेहीआपसुनो १२ और बृह स्पति के तुल्य कांतिवालागुरुमैंनेतपसे देखापीछेवही पराशर ऋषि का पुत्रवेदव्यासजी मेरेअर्थ जैसेबर्णनकरतेभये १३ औरमैंभीशक्ति पूर्वकजैसासुनाहैवैसाही आपके प्रतिबर्णन करोंगाक्योंकिवेद व्यास जीके संपूर्णअर्थ जाननेको मैं समर्थ नहींहूं १४नारायणके परम तत्त्व कोअन्यपुरुष कौनजानताहै यासेब्रह्माभी संपूर्णतत्त्वको नहींजानता है १५सोईमैंने सुनाहै कि बिश्वेदेवाऔर महर्षिओंका वहतत्त्वरहस्य हैऔर संपूर्ण यज्ञोंका वह इज्यहैऔर तत्त्ववेदिओंका वहतत्त्वहै १६ और ज्ञानिओंका वह चिंत्यरूपहै और कर्मष्ठिओंका वह कारण है वहीदेव अधिदैव संज्ञितहै १७ और जो भूततथा अधिभूत और जो महर्षिओंका परम और सत्य और देवदृष्ट वेदवक्ता ऋषि जिसको कहतेहैं १८ और जगत्‌का कर्ताथाकारक और बुद्धित थामनतथा क्षेत्रज्ञऔर प्रधान तथापुरुष तथाशस्ता तथाशब्दरूप १९ औरकाल रूपईश्वर को शयन करनेवाला समय रूपकालतथा द्रष्टाऔर स्वा धीन तथा पंचप्रकारका प्राणतथा ध्रुवतथा अक्षय २० यह संपूर्ण भावों करके कहाहुआ भगवान्‌कारूपहै सो वह भगवान् जगत्‌को नानाप्रकार से रचता है और वही विकार को प्राप्तकरता है २१ और वह हम ऋषिलोगोंको कर्मकराताहै और हमतिसपरमेश्वरके वशीभूत हुये यज्ञोंकरके परमेश्वरको पूजते हैं और उसीकी इच्छा करतेहैं २२ और जो वक्ता तथा वक्तव्य और मैं कहने वाला तथा कल्याण और अकल्याणरूप २३।२४ और कथातथा गह्वर वेदमें बर्त तीहुई श्रुति तथाविश्व और विश्वपति तथादेवता ये सब नारायण

मय हैं २५ और सत्य तथा अनन्त और आदि तथा अक्षर और भूत तथा बर्तमान और भविष्यत् और चर तथा अचर और अव्यय यह कहा हुआ संपूर्णभगवान्का रूपहै २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपुष्करप्रादुर्भावेसप्तनवत्यधिक शतोऽध्यायः १९७॥

एकसौअट्ठानबेका अध्याय॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हेराजन् जनमेजय देवताओं के मानसे चारहजार बर्षोंकरके सतयुग का प्रमाण कहते हैं और आठसौ बर्षपरिमित संध्या होतीहै १ और सत युग में धर्म के चार पैर तथा अधर्मका एकपैरहै और मनुष्य अपने धर्ममें युक्तहुये परमे श्वरको पूजतेहैं २ और ब्राह्मण अपने धर्ममें और क्षत्रिय अपनी राजवृत्ति में और वैश्य कृषिकर्ममें और शूद्रतीनों बर्णोंकी शुश्रूषा में ऐसेचारों बर्ण अपने २ धर्मोंमें युक्तहोतेहैं ३ और सदा सत्य और तपतथा धर्मइन्हों की वृद्धिहोतीहै और श्रेष्ठपुरुष उत्तम कर्मकोकरते हैं और बर्णन करतेहैं ४ हेराजन् सतयुग में नीच योनिवाले भी पुरुष धर्म बुद्धि करके युक्त होतेहैं और संपूर्णप्राणी इस शुभ कर्म को करतेहैं ५ और तीनहजार दिव्य बर्षोंकरके त्रेतायुगका प्रमाण कहतेहैं औरछःसौदिव्यबर्षके प्रमाणसेत्रेतायुगकी संध्या बर्णनकरी है६ त्रेतायुगमें दोपैरोंसे अधर्म और तीनपैरोंसेधर्म स्थित है और सतयुगमें सत्यतथा सत्त्वगुण ये दोनोंसंपूर्णता से बर्तते हैं ७ और त्रेतायुगमें चारोंबर्ण धर्मकी चंचलताऔरदुर्बलतासे बिकारको प्राप्त होतेहैं ८ हेराजन् यहत्रेता युगकी बिधि आपके प्रति मैंने बर्णनकी और द्वापरयुगकी चेष्टाकी आपसुनो ९ और हे कुरु सत्तम अर्थात् कुरुओंमें श्रेष्ठ दोहजार दिव्य बर्षोंके मानसे द्वापर युगकी स्थिति है और चारसौ दिव्यवर्षों के मानसे द्वापरयुग की संध्या बर्णन की है१० और द्वापरयुग में ब्राह्मण धनकी प्राप्तिकरने में तत्पर होजा

तेहैं और ज्ञानी रजोगुणसे युक्तहोजाते हैं और शठलोग शठताको धारण करतेहैं और तुच्छजीव पैदा होजातेहैं ११ और तहांदोपैरों से धर्मतथा तीनपैरोंसे अधर्म स्थितहै और सतयुगके बांधेहुये धर्म के पुल शनैः२ अधर्मसे युक्तहोजाते हैं १२ और ब्रह्मण्यता तथा आस्तिकता तथा व्रत और उपवास ये संपूर्णद्वापरके अंतमें नष्टहो जातेहैं १३ और तैसेही दिव्यएक हजार वर्षोंके मानसे कलियुग की स्थितिहै और दिव्य दोसौ वर्षकी संध्या वर्णनकरीहै और यह कलियुग क्रूरतावालाहै १४ और तहां चार पैरोंवाला अधर्म तथा एकपैरवाला धर्मस्थितहै और तमोगुणसे युक्तहुये कामी पुरुषपैदा होतेहैं १५ और व्रतोंका करनेवाला तथा साधु तथा सत्य बोलने वाला और आस्तिक तथा ब्रह्मका वक्ताऐसे मनुष्य कलियुगमेंपैदा नहीं होतेहैं १६ और अहंकार से युक्ततथा क्षीणस्नेहवाले बांधव और ब्राह्मण शूद्रोंकी समान आचार वाले और शूद्र आचार में तत्पर १७ और आश्रमों को दोष लगानेवाले और वर्णोंका संकर अर्थात् मिलाप और अगम्य स्त्रियोंसे गमन करनेवाले ऐसेकलियुग में मनुष्य होतेहैं १८ और ऐसे दिव्य बारह हजार का एक युग होताहै पीछेयही इकहत्तर ७१ गुणकिया जावे तिसको मन्वंतरकह तेहैं १९ युगके अंतमें मनुष्योंको कर्तव्य में संदेह नहीं होता है और ऐसे देवताओं के बारह हजार वर्षोंके मानसे चारों युगों का प्रमाणहै २० और इससे हजारगुणा कालमें ब्रह्माका एकदिन व्य- तीत होताहै २१ सो ब्रह्माके एकदिनमें चौदहमनु राजकरतेहैं और जबब्रह्माका दिन पूराहोताहै तब संहारकी इच्छा करता हुआ महा देव संपूर्ण प्राणियों के देहकी निवृत्ति करदेताहै २२ और देवता तथा ब्राह्मण और दैत्य तथा दानवऔर किन्नर और यक्षऔरराक्षस २३ और देवर्षि और ब्रह्मर्षि और राजर्षि और गंधर्व और अप्सरा और नाग २४ तथा पर्वत और नदी और पशु और तिर्य्यक् योनिवाले पशु और मृगतथा पक्षी इनसबों के पंच भौतिक देहका नाशकरदेताहै २५ सूर्यरूपहोके चक्षु इन्द्रीको हरताहै और वायु

होके संपूर्ण प्राणियों को संहारकरताहै और अग्निहोके सबलोकों को दग्धकरताहै और मेघहोके फिरबर्षताहै २६ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौष्करप्रादुर्भावेअष्टनवत्यधिकशततोऽध्यायः १६८ ॥

एकसौनिन्नानबेका अध्याय ॥

बैशम्पायनजी बर्णन करते हैं कि हे राजन् वह महादेव जी सप्तमूर्ति अग्नि रूपहो के अपनी किरणोंकर के संपूर्ण समुद्रों को शोष लेता है १ और समुद्र और नदी और कूप और पर्वत इन सबोंके जलको पीके २ फिर पृथ्वी को हज़ार जगह से भेदन कर रसातलमेंप्राप्त होके रसातल के संपूर्ण उत्तम रसको पीलेता है ३ और जलमें गोलापन तथा अन्यबस्तु जो प्राणियोंके निमित्त रचीथी उन सब बस्तुओंको भगवान् ग्रहण करलेताहै ४ और बलवान्हुआ बायु सब जगत्को बिधूनकर पीछे देवतोंके प्राणोंका उदय ईश्वर वायुसे करताहै और देवता तथा प्राणियोंके इन्द्रियगण ५ जिससे उत्पन्न हुयेथे वे उन्हींमें लीन होजाते हैं जैसे पूय और घ्राण और शरीर ये गुण पृथ्वीमें प्राप्तहोते हैं ६ और जिह्वा तथा रस और रुधिर ये गुण जलमें प्राप्तहोतेहैं और रूपचक्षु तथा बिपाक ये गुण अग्निमें प्राप्तहोतेहैं७और स्पर्श तथा प्राण औरचेष्टा ये गुणबायुमें प्राप्तहोतेहैं और फिर येसंपूर्ण गुणपरस्परमें मिलकेईश्वरके शरीर में प्राप्तहोतेहैं ८ और फिर अंतर्यामी कर्ताकरके मिलेहुये औरसूक्ष्म वृत्तियों करके प्रेरेहुये इन्द्रियों केगण आदि और बायुसे कृष्यमाण हुये होतेहैं पश्चात् इन्होंकेसंघ रससे उत्पन्न हुआ अग्नि सौ प्रकार सेजलने लगजाताहै फिरवह संवर्त्तक नामअग्निसंपूर्णलोक९।१० और पर्वत तथा वृक्षऔर गुल्म तथा लता औरबल्ली तथा तृण और देवताओंके पुरातन और दिव्य बिमान और अनेकप्रकारके पुर११ और पवित्र आश्रम और देवताओंके स्थान और जो स्थित होनेके योग्यस्थान इनसबको वह संबर्तक नाम अग्नि भस्म करदेताहै१२ और भगवान् दग्धहुये लोकोंको फिर जलसे सेचनकरते हैं १३

और पश्चात् महातेज भगवान् इंद्ररूपहो के घृतकी तुल्य दिव्य जलसेपृथ्वीको तृप्तकरताहै १४ पश्चात् स्वच्छ और अमृत रूपऔर स्वादु और कल्याणरूप और पवित्र ऐसे परमजलसे वह पृथ्वी निर्वाण अर्थात् दूसरेशरीरको प्राप्तहोजातीहै १५ औरवहपृथ्वीकल्याणरूपपवित्र अत्यंत जल करके नाशको प्राप्तहोजाती है और जनोंसे रहित तथा एक समुद्ररूप वह पृथ्वी होजातीहै १६ तब पंच महाभूत परमेश्वरमें प्राप्त होजातेहैं और सूर्य और पवन तथाआकाश ये जिसमें नष्ट होगये हैं ऐसे जनरहित सूक्ष्म प्रलयमें बिषयोंमें ज्ञानका नाशकरके १७ फिर देहकी कल्पना करके पुराणपुरुषरूप होके अकेलेवसतेहैं १८ और वे भगवान् एकार्णव जलमें दशहजार वर्षोंके हजारहां सैकड़ा कालपर्यंत योगीहुए योगकी उपासना करतेहैं और उस अव्यक्त और व्यक्तरूप भगवान् को कोई पुरुष जाननेको समर्थ नहींहै १६ जनमेजय प्रश्न करतेहैं कि हे बैशंपायनजी वह एकार्णव बिधि कौनसी है और उस पुरुषका कौन नाम है और कौन योगहै और कौन योगवाला है २० ऐसे सुन बैशंपायनजी वर्णन करते भये कि हेराजन् सातहों समुद्रों के मिलापको एकार्णव विधि कहतेहैं उस बिधिमें जितनेकालपर्यंत भगवान् जो कार्य करताहै उसकार्यको कोई पुरुष नहीं जान सक्ता २१ क्योंकि उस समयमें भगवान्के विना अन्य कोई पुरुष दृष्टा और गमिता और ज्ञाता और कोई पासमें नहींहै २२ और आकाश तथा पृथ्वी पवन और प्रजापति और भुवनपति और सुरेश्वर और श्रुतियोंका स्थान पितामह इन्होंको प्रकाश करताहुआ महोदधिमें वह प्रभु अपने शयन स्थानको प्रकाश करताहै २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायां पौष्करप्रादुर्भावेनवनवत्यधिकशतोऽध्यायः १६६ ॥

दोसौका अध्याय॥

बैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हे राजन् जबलोकोंकाएकार्णव

होजाता है तब कांतिवाले भगवान् उस जलको आच्छादन करके सोजातेहैं अर्थात् शुद्ध चिन्मात्र रूपसे स्थित होजातेहैं १ और रजोगुण रूपी महार्णवमें सोतेहुये जिसब्रह्मरूप और निर्गुण भगवानको वेदकेबक्ता ब्राह्मण जानतहैं २ वह सत्रूप परमात्मा भगवान् तिर्यक् मनोरथरूप आत्माकरके आच्छादितहुये और आत्मरूप से प्रकाशितहुये और भूत भविष्य बर्तमान इनकालोंकेलोकोंका अधिष्ठितहोके सोजातेहैं ३ और यज्ञरूप और पररूप और अन्य बस्तु रूप और पुरुषरूप ऐसे यह संपूर्ण पुरुषोत्तम भगवान्का रूपहै ४ और यज्ञोंमें तत्पर और ऋत्विज् संज्ञक ऐसे ब्राह्मण परमेश्वर से यज्ञोंकेअर्थ उत्पन्न होतेहैं ५ ब्रह्मा और उद्गाता और होता इन्होंको मुखसे और अध्वर्युको भुजाओंसे प्रभु उत्पन्न करतेभये ६ और ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्मवेत्ता को और प्रस्तारको और मित्राबरुण को ब्रह्मत्वसे और प्रतिष्ठाता ७ और प्रतिहर्त्ता संज्ञकहोता इन्होंको उदर से और अध्यापकको जांघोंसे औरनेष्टा ८ तथा अग्नींध्र और ब्रह्मण्य तथा यज्ञिय और ग्रावाणइन्होंको हाथोंसे औरसुनेता तथा याज्ञिक इन्होंको भुजाओंसे ९ ऐसे संपूर्ण यज्ञोंकेबक्ता ऋत्विज् संज्ञकसोलह ब्राह्मणोंको भगवान् अपने अंगोंसे उत्पन्न करताभया १० और यह भगवान्यज्ञमयऔर वेदसंज्ञकहै और यह संपूर्णवेद उपनिषद् और क्रियाओंसे सहित भगवान्का रूपहै ११ और बैशंपायनजी बर्णन करतेहैं हेराजन् सोतेहुये भगवान्के शरीरमें मार्कंडेयजी पैदाहोते भये ऐसा आश्चर्यरूप वृत्तांत सुनाजाताहै १२ और वह महामुनि बहुत हजार बर्षोंको उमरको धारण करके जीर्ण होगया १३ और तीर्थोंकेअर्थ भगवान्की कुक्षिमेंबिचरनेलगा तब संपूर्ण आश्रम और तीर्थ और आयतन १४ और देश और राज और नाना प्रकारके पुर इन्होंको बिचरता हुआ और जप और होम और क्षांति और घोरतप इन्होंको धारण करताहुआ १५ शनैःशनैः मार्कंडेयऋषिभगवान्के मुखसे निकला और परमेश्वरकी मायाके बलसे व अपने आत्माको मुखसे निकलाहुआ नहीं जानताभया १६ और मुखसे

बाहर निकलके मार्कंडेयजी संपूर्ण समुद्रको अंधकारसे युक्तदेखता भया १७ फिर अंधकारको देखके मार्कंडेयजीको अपने जीनेमें संशय और अत्यंतभय उपजा और परमेश्वर की कुक्षि में पृथ्वी के विचरनेसे आश्चर्यको प्राप्तहोता भया १८ और समुद्रमें स्थितहोके मार्कंडेयजी विचार करनेलगे कि यह कोई मेरेको चिंताहुई अथवा कोई मोह पैदाहुआ अथवा कोई स्वप्नहुआ १९ यासे देखी हुई वस्तु मेरेको अन्यथा दीखतीहैं क्योंकि अयोग्य और असंक्लिष्ट ऐसी वस्तु सत्यनहींहोतीहैं२० और चंद्रमाऔर सूर्य तथापवन और पर्वतऔर पृथ्वी इन्होंसेरहित ऐसा यहलोककौनहै २१ ऐसी चिंता मेंमार्कंडेयजी स्थित होतेभये और मेघकी तुल्यऔर पर्वतकी सदृश औरसमुद्रमें मग्नसोतेहुये भगवान्को भी देखताभया२२ और तेजसे तपताहुआ और कांतिसे प्रकाश होताहुआ और गंभीरतासे जागता हुआ और सर्पकी तरह श्वास लेताहुआ २३ ऐसे भगवान्के प्रति मार्कंडेयजीने आश्चर्यसे प्रश्न करताभया फिर प्रश्नकिये प्रश्नको सुनके भगवान् फिर वैसेही मुनिको अपनी कुक्षि में प्रवेशकरते भये २४ फिर वह मुनि कुक्षिमें प्राप्तहोके सुनिश्चितहुआ और स्वप्न जानताहुआ वैसेही पृथ्वी पै विचरनेलगा २५ जैसे पहले पृथ्वी पै विचराथा उसी प्रकार विचरनेलगा और स्वर्ग औरपृथ्वीतल२६ व तीर्थ और पुण्य स्थान इन्होंको देखताभया और यज्ञोंकरके सहित यजमान इन सब सैकड़ों यज्ञिय ब्राह्मणोंको देखताभया २७ और श्रेष्ठ ब्राह्मण औरउत्तम व्रतोंको धारण करनेवाले ब्राह्मणों से आदिलेके चारोंवर्ण और ब्रह्मचर्य से आदिले चारों आश्रम ऐसे कुक्षिमें स्थितहुये इनसबको देखताभया२८और संपूर्णपृथ्वीको विचरताहुआ तब वह मुनि कुक्षिके अंतको नहीं प्राप्तहुआ२९ और वह मार्कंडेय ऋषि कभी एक समय फिर कुक्षिसे बाहिर निकसा तब वटकीशाखापै सोताहुआ एक बालकको देखताभया ३० फिर वहमुनि संपूर्ण प्राणियोंसे रहित और अव्यक्त भयानकरूप ऐसे एकार्णव रूपीजलमें ३१अज्ञानसे आश्चर्य युक्त और आनंदयुक्तहुआ

सूर्यके किरणों के समान प्रकाश कर्ताहुआ बालक के पास जाने-
को समर्थनहींहुआ ३२फिर जलके समीप स्थित होके बिचार करने
लगा कि यह रूप मैंने पहिले देखाथा या नहीं देखाथा ऐसे संका
युक्तहोताभया ३३ फिर वह मुनि भयानकरूप अगाधजलमें भगवान्
को कूद कूदके पकड़ताहुआ और भय तथा परिश्रम से बिह्वल
हुआ शांतिको प्राप्त नहीं भया ३४ ऐसे बैशंपायनजी बर्णन करतेहैं
कि हेराजन् वे भगवान् योगके बलसे बालभावको प्राप्तहुए और
मेघकी तुल्य मीठी २ बाणीसे मार्कंडेयऋषिके प्रति बोले ३५ कि
हेमार्कंडेय हेबत्स अर्थात् हेपुत्र तू बालकहै और परिश्रमसे पीड़ित
है सो अब डरेमत जल्द मेरेपासआ ३६ ऐसे सुन मार्कंडेयजीबोले
कि ऐसा यह कौन पुरुष है जो मेरातप और बहुत हजार बर्षोंकी
आयु इन्होंका तिरस्कार करताहुआ मेरेनामको लेके बोलताहै ३७
सो ऐसा व्यवहार तो देवताओंमें भी नहीं है क्योंकि वह बिश्वका
स्वामी ब्रह्माभी मेरे प्रति हे दीर्घायु ऐसे कहिके बोलता है ३८
सोमैं बहुत घोर तपवालाहूं और मेरेप्रति हे मार्कंडेय ऐसा नीच
संबोधन देताहुआ यह कौन पुरुषहै यह मृत्युके देखनेकी इच्छा
करता है ३९ बैशंपायनजी बर्णन करतेहैं हे राजन् तू मोह के
बसहुआ मार्कंडेय ऋषि ऐसे भगवान्के प्रति बोले ४० फिर ऐसे
मुनिके वचनको सुनके भगवान् फिर बोले हे बत्स अर्थात् हेपुत्र मैं
इन्द्रियोंका स्वामीहूं और तेरा उत्पन्न करनेवाला हूं और पोषक
हूं और गुरूहूं और आयुका देनेवालाहूं और पुराणपुरुषहूं सो
तू किस अर्थ मेरे पास नहींआताहै ४१ और तेरापिता अंगिरा
ऋषि अत्यंत तपको धारण करताहुआ पुत्रकी कामनासे मेराआरा
धन करता भया ४२ तब मैं प्रसन्न होके अंगिरामुनि को अमित
आयुवाला और अग्निकी तुल्यतेज वाला और घोरतप वाला ऐसे
गुणोंवाला तुझ पुत्रको देताभया ४३ सो तिस एकार्णवमें योगको
धारण कर क्रीड़ा करताहुआ मेरेको उस पुत्र से अन्य और कोई
प्राप्तनहीं होसक्ता ४४ बैशं पायनजी बर्णन करतेहैं कि हेराजन्

वह मार्कंडेय ऋषि महात्मा और दीर्घायु और लोकपूजित ऐसे नाम और गोत्ररूपी परमेश्वर के वचनको सुनके और हर्षित मुख और आश्चर्य से खिले हुयेनेत्र इन्होंको धारणकर ४५ और दोनों हाथों से मस्तकपै अंजली बांध और शिरको पृथ्वीमें नवाके परमेश्वरको नमस्कार करता भया और मार्कंडेय मुनिपरमेश्वर से बोले कि हे भगवन् अपनी मायाके बलसे एकार्णव जल में बालक का रूप धारण कर सोतेहोसो संपर्णता से उस मायाको जानने की इच्छामें करताहूं ४७ और हे प्रभो कौनसंज्ञावाला और कौनसा भगवान् इस लोक में विख्यातहो यासे मैं तर्कना करता हूं कि आप महा भूतहो क्योंकि और कोई भूत इसप्रलय में स्थित नहीं है ४८ फिर भगवान् बोले कि हे मार्कंडेय मैं नारा यण रूप ब्रह्माहूं और संपूर्ण भूतोंको उत्पन्न और नाशकरने वालाहूं ४९ और ऐन्द्रपद में इन्द्रऔर ऋतुओंमें बत्सर अर्थात् बर्षहूं और युगोंमें युगक्ष और युगोंका आवर्त्त रूपहूं ५० और संपूर्ण प्राणी और संपूर्ण देवता और नागोंमें शेष और पक्षियों में गरुड़ हूं ५१ और हजारशिर और सहस्र पैरोंवाला जीव और सूर्य और यज्ञपुरुष और हव्यव अग्नि और जलोंका पति समुद्रहूं ५२ और अपने धर्ममें शुद्धचित्त वाले ब्राह्मणों में जो ब्रह्मवित् सन्यासी कहिये है वह निरुद्धात्मा ब्राह्मणमैंहूं ५३ और आत्मा में जगत् को देखनेवाला ज्ञानी और योगियों में योगका जाननेवाला और संपूर्ण भूतोंमें कृतांत अर्थात् देवरूप और विश्वके ईश्वरों में कालसंज्ञक ऐसा मैंहूं ५४ और संपूर्ण प्राणियों में कर्मक्रिया करनेवाला जीव और संपूर्ण जीवों में निष्क्रिय ५५ और प्रधानपुरुष और सब आश्रम धारिओं का धर्म तथा तप ऐसामैंहूं ५६ और क्षीरोदधि समुद्रमें हयग्रीव और ऋतु अर्थात् सुंदरवाणी और सत्य और प्रजापति इनसबोंका रूप एकमैंहूं ५७ और सांख्य और योग और परमपद और यज्ञ और भव और विद्याधिप येभी सबमैंहूं ५८ और ज्योति और वायु और भूमि और आकाश और जल और समुद्र और नक्षत्र और दशों

दिशा और बर्ष और सोम और मेघ सूर्य ये भी मेरेही रूपहैं ५९
और क्षीरोद सागरहूं और बड़वानलहूं संबर्तक नाम अग्निहोके
फिर सूर्यरूप हुआ मैं जलका शोषण करताहूं ६० और श्रेष्ठपुराण
और भूत भविष्यत वर्तमान इनकालों की उत्पत्तिकरनेवालाऐसा
मैंहूं ६१ और जो कोई बस्तु दीखनेमें आतीहै और जो कोई बस्तु
सुनीजातीहै और जिसकाअनुभवहोताहै यह संपूर्णकहाहुआ मेराही
रूपहै ६२ और हे मार्कंडेय मैंने पहिलेजैसा विश्व रचाथा वैसाही
अब मैं रचताहूं और अबतू मेरेको देख और मैं युग २ प्र ति संपूर्ण
जगत् को रचूंगा ६३ और हे मार्कंडेय पूर्वकहाहुआ संपूर्ण वृत्तांतको
निश्चय करके शुश्रूषा और धर्मकी इच्छा कर्ताहुआ मेरी कुक्षिमें
बिचर और सुख को प्राप्तहो ६४ और मेरी कुक्षि में ब्रह्मा तथा
ऋषि और देवता ये संपूर्ण स्थितहैं यासे जयरूप और व्यक्ततथा
अव्यक्तयोग ऐसा मुझको तू प्राप्तहो ६५ और एक अक्षरवाला
और तीन अक्षरोंवाला और तीन पदोंवाला ऐसा धर्म अर्थ काम
इन्होंको देनेवाला परममंत्र मैंहूं ६६ बैशंपायनजी बर्णनकरते हैं
कि हे राजन् इसी वृत्तान्तको वेदव्यासजी महामुनि मार्कंडेयजीके
प्रति वेदांतसूचक पुराणोंमें वर्णनकरतेभये और परमेश्वर मार्कंडे-
यजीको अपनीकुक्षिमें प्रवेशकरातेभये ६७ फिर भगवान्की कुक्षि
में प्रविष्टहुआ महामुनि हंसरूपी भगवान्की सेवाकरताहुआ सुख
पूर्वक रमणकरताभया ६८ और नाशसेरहित नानाप्रकारसे शरीर
को धारणकर और चंद्रमा तथा सूर्य से रहित महार्णवमें शनैःशनैः
विचरताहुआ हंस संज्ञिक भगवान् प्रलयके अंतमें जगत्को रचता
हुआ बिचरताहै ६९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौष्करेमार्कंडेयदर्शने
द्विशततमोऽध्यायः २०० ॥

दोसौएकका अध्याय ॥

बैशंपायनजी बर्णनकरतेहैं कि हेराजन् अपनेकुंभसे उत्पन्नहुआ
अपनेशरीरको समष्टि अभिमानवाले अपनेहीशरीरसे आच्छादनकर

तपकोंकरनेलगा १ फिर तपसे अतिबलवानहुआ वह हंसावतार वशिष्ठमुनिकी तरहहोके लोककीरचनामें बुद्धिकोलगा और पंचमहा भूतोंकोचिंतवनकरताभया २ और तपकरके भावितात्मावाले हंसा वतार जब चिंतवन करनेलगा तब जलमें स्थितहो आकाशसेरहित और जलरूप और सूक्ष्म ३ ऐसे जगत्के लीनहोनेमें चिदात्माअधि ष्ठानमें स्थितहुआ ईषत्संक्षोभ अर्थात् समष्टिअहंकारवाला मैं ईश्वर हूं ऐसीमतिकरताहै फिर संकल्परूपी उर्मीकरके आकाशाख्यसूक्ष्म छिद्रहोताहै अर्थात् संकल्पकरके सूक्ष्म इन्द्रियादिसे ग्रहणकरनेके योग्य और छिद्रआकाशरूप होताहै ४ पीछे वह ईश्वर फिरअन्य संकल्पोंसे तिस आकाशमें शब्दरूपकरके गतिवालाहोके और पव- नरूप द्रवसे उत्पन्नहोके पीछे वही ईश्वर आकाशको प्राप्तहो के नहीं प्राप्तहुआकी तरह क्षोभसेरहित वायुरूपहोके बढ़ताभया ५ पीछे तिस बढ़तेहुये और बलवाले बायुने चिदात्मारूप समुद्र संक्षो भितकिया तब आपसकेवेगोंसे अभिहतहुये संकल्परूपतरंग चिदा त्मारूप समुद्रको मथनेलगे अर्थात् व्याकुल करनेलगे ६ पीछे जब क्षोभकोप्राप्तहुये बड़े समुद्रका जल व्याकुल होनेलगा अर्थात् मथिनरूप भया तब प्रभु और कृष्णमार्गवाला और अति प्रकाश वाला ऐसा अग्नि प्रकटहुआ ७ तब वह अग्नि बहुत से पानीको शोषताभया तब समुद्रके क्षयहोनेसे छिद्रहोके पूर्वोक्त आकाशनिक सा ८ और आत्माके तेजसे उत्पन्नहुये और पवित्र और अमृतके रसकेसमान उपमावाले ऐसे जलहै और छिद्रसे आकाश उपजाहै और आकाशसे वायुउपजा ९ और जलसे अग्निउपजा औरअग्नि से जल और जलसे पृथ्वी उपजी पीछे महाभूतादिको उत्पन्नकर- नेवाला ईश्वर पंचमहाभूतोंको देख प्रसन्नहोके १० फिर लोक सृष्टिके अर्थके तत्त्वको जाननेवाला ईश्वर ब्रह्माके जन्मको ढूंढ़नेल- गा ११ और चारयुगोंकी संख्यासे हजारयुगों पर्यंत जो पृथ्वीमें तपकरके भावितात्मावाले १२ और बहुत जन्मों में निरुद्ध आत्मा वाले और यति ऐसे उन पूर्वोक्त ब्राह्मणोंके मध्यमें उत्तम ब्राह्मण

और ज्ञानवान् और बिश्वरूपका उपासक और योगियोंकेयोगको जाननेवाला १३ और योगवान् और संपूर्ण ऐश्वर्यरूप बिक्रमवाला ऐसे पुरुषको ईश्वर बिश्वके अर्थ और ब्रह्माबनानेकेअर्थ नियुक्तकरताहै १४ पीछे तिस जलमें शयनकरताहुआ और नानाप्रकारकी क्रीड़ाकरताहुआ ब्रह्मांडका पतिहोके ईश्वर आनंदित रहताहै १५ पीछे हजारपत्तोंवाला और रजसेरहित और चारोंतरफ़से प्रकाशित और मनोहर ऐसे एक कमलको अपनीनाभीमें उत्पन्नकरता भया १६ पीछे अग्निरूप और प्रकाशित शिखाकी कांतिकेसमान कांतिवाला औररम्य औ विषयादिकोंकेस्वादसेरहित और शरदऋतुनेंमलसे रहित जो सूर्य तिसकेसमान तेजवालाऔर उदारप्रकाश वालाऔरहंसावतारकेशरीरमेंउपजाऐसाकमलप्रकाशितहुआ१७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंश पर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांएकाधिकद्विशतोऽध्यायः२०१॥

दोसौदोका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे पीछे योगको जाननेवालोंमें श्रेष्ठ और सब भूतोंके मनोंसे युक्त और सब भूतोंको रचनेवाला और चारों तर्फ़को मुखवाला १ ऐसा ब्रह्माजी को पूर्वोक्त अतिबिस्तार वाले और पार्थिवादि गुणोंसे लक्षित ऐसे कमलमें वह पूर्वोक्त ईश्वर नियुक्त करताभया २ और ऋषिजन और पुराण के जाननेवाले मनुष्य तिस कमलको पृथ्वी रुह और नारायणके अंगसे उपजा कहतेहैं ३ और उस कमलकाजो आसन है तिसको पृथ्वी कहते हैं और जो उस कमल के अंकुरहैं तिन्होंको दिव्य पर्वत कहतेहैं ४ और हिमवान् मेरु नीलनिषध कैलाश मुंजवान् गंधमादन पवित्र शिखर मंदराचल उदयाचल कंदर बिंध्यअस्ताचल ६ ये सब कामोंसे युत पर्वत देवते सिद्ध पुण्यात्मा इन्होंके आश्रम कहे हैं ७ और इन पर्वतोंसे इतर जो देशहै उसको जंबूद्वीप कहतेहैं जहां मुनिजन यज्ञ करतेभये वह कर्मभूमि कहाती है ८ और जो गर्भसे जो देवताओंका अमृतके रसकी उपमा के समान उपमावाला जो जल

झिरताहै वह दिव्य नदी कहातीहै ९ और जो कमलकी चारोंतर्फ से शरहैं वे इस विश्वमें असंख्यात धातुरूप पर्वतहैं १० और तिस कमलके उपरले जो पत्रहैं वे दुर्गम और पर्वतों से व्याप्त ऐसे म्लेक्ष देशकहेहैं ११ और जो उस कमलके नीचेके पत्ते हैं वे दैत्य सर्पइन्होंके निवासके अर्थ पाताल संज्ञक कहातेहैं १२ और तिस कमलका जो नीचरला भागहै वह जल रूपहै जहां महापातक करनेवाले जन डूबतेहैं १३ और जो कमलमें जलहोताहै वह चारोंदिशाओंमें विख्यात चार समुद्रहैं १४ ऐसे नारायण के शरीरसे उपजे कमलकी उत्पत्तिहै सो यह भगवान्‌से पुष्कर अर्थात् कमलका संभव हुआहै १५ और इसीकारणसे ईश्वरको जाननेवाले और यज्ञिय और पुरातन ऐसे परम ऋषियोंने यज्ञ में भगवान्‌का नाम पद्मचित्तीकराहै अर्थात् पद्मरूप इष्टिकाओंसे भगवान् का चिंतना कराहै और ऐसेही भगवान्‌को पद्मके बिषे संसारकी परमबिधि रचीहै और पर्वत नदी देवता आदि उपजेहैं १७ और सामर्थ्य वाला और अतिप्रभाव वाला और महात्मा और आपही उपजने वाला ऐसा ईश्वर शयनके समयमें समुद्रके बीच अपनी नाभी से इस जगन्मय कमलको रचतेभये १८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्व्यधिकद्विशतोऽध्यायः २०२॥

दोसौतीनका अध्याय॥

वैशंपायनकहनेलगे कि प्रलयकालके अंतमें तमोगुणसे उत्पन्न हुआ मधुनाम वाला महान् असुर उत्पन्न होताभया १ और रजोगुणसे उत्पन्न हुआ कैटभ नामवालादैत्य होताभयाफिर रजोगुण और तमोगुण से आविष्ट २ और एकार्णवके जलको क्षोभितकरने वाले कृष्ण और लालवस्त्रोंको धारणकरनेवाले श्वेत और दीप्तरूप उग्रदंष्ट्रावाले ३ और मदसे उन्मत्त केयूर और बलय से प्रज्वलित और महाविकराल और ताम्र सरीखे नेत्रोंवाले और भारीछाती और महाभुजावाले ४ और बडे शिरको हलानेवाले और चलने वाले पर्वतों के समान और नीलेमेघोंकी कांतिके समान कांतिवाले

और सूर्य के समान प्रतिमा और मुखवाले ५ और बिजली और बद्दल इन्हों के समान लालनेत्रों वाले और हाथोंकरके भयानक और पैरोंके वेग करके समुद्रके जलको फेंकतेहुये ६ और कमल में चारमुखोंवाले और शत्रुओंको मारनेवाले और शयनकरनेवाले ऐसे विष्णु को कंपातेहुये ऐसे वे दोनोंदैत्य ७ योगियोंमेंश्रेष्ठ और नारायणकी आज्ञासे प्रजाको रचनेके अर्थ और देवता और बिश्वेदेवा और ऋषिजन इन्होंको रचने के अर्थ उत्पन्न हुआ ऐसे ब्रह्मा जी को देखके ८ कहने लगेकि हे पुरुष कमलकेमध्य में स्थित गर्बित और युद्धकी इच्छा करनेवाले और क्रोधकोप्राप्तहुये और क्रोध से लालनेत्रोंवाले ऐसे वे दोनों दैत्य ६ और सफेदपगड़ीकोधारणकरने वाला और चारमुखों वाला और मोहसे हमारेकोनहीं गिननेवाला और सब दुःखोंसे रहित ऐसातू कौन है १० और हे कमलोद्भव यहां आके हमदोनों के संग बाहुयुद्धकर हमदोनोंके अगाड़ी स्थित होनेको तू समर्थ नहींहै ११ और तू कौन है और तेराउत्पन्न करने वाला कौनहै और किसका तू यहांप्रेरित किया है और कौन तेरेको रचने वालाहै और कौन तेरीरक्षाकरनेवाला है और किसनामसे तू विख्यातहै १२ ब्रह्माजी कहनेलगेजो संसारमें ब्रह्मानामसेबिख्यात और योगसे उत्पन्न होनेवाला और हजारहा तरहं से नहीं जाना जावे तिससे उत्पन्न हुआ ऐसे मेरे को क्या तुम नहीं जानते १३ तब मधु कैटभ दैत्य कहनेलगे कि हे महामते हमदोनोंसेबड़ा इस संसारमें कोईनहींहै और हमने तमोगुणसे और रजोगुणसे संसार आच्छादित करदियाहै १४ और यतियों को दुःख देनेवाले रजोगुण तमोगुण रूप हमदोनों हैं और धर्मवालों से छलकरने वाले और सब प्राणियों से अतिबलवाले ऐसे हमदोनोंहैं १५ और हम दोनोंसे युग युगमें मोहित रूप लोकहोजाता है और अर्थकामसब सामग्रियों सहितयज्ञ इन रूपभी हमदोनोंहैं १६ और जहांसुखहो और आनंदहो और जहां लक्ष्मीहो और जहां सम्यक् प्रकारकी निवृत्तिहो और इन्होंमें जो बांछितहै वह हमोंसे चिंतवन करनाचाहि

ये १७ तब ब्रह्माजी कहने लगे जो योगवालों को श्रेष्ठहै और जो मैंने सब अर्चित कियाहै वह सम्यक् प्रकारसे पुष्टकर गुणवाला मैं सतो गुणमें प्रतिष्ठित हुआहूं १८ और योगवालोंमें अक्षरसत्वर जो गुण और तमोगुणका रचनेवाला और जीवको उत्पन्न करनेवाला और जिससे सतोगुण आदिसे युक्त सबजीव उत्पन्न होते हैं १९ ऐसा और सबको वसमें करनेवाला ऐसा पुरुष तुम दोनों को शांत करेगा २० वैशंपायन कहने लगे तब शयन करतेहुये और अति शोभावाले और वहुत योजनोंतक बिस्तारवाले और पद्मनाभ और हृषीकेश ऐसेईश्वर को नमस्कार कर २१ दोनोंकहने लगे कि हे देव विश्वको योनि और एक स्वरूप और पुरुषोंमें सत्तम ऐसेतेरेको हम दोनों जानतेहैं और तेरी उपासना करने के अर्थ हमारी बुद्धि उपजीहै २२ और हे देव तुमको मुनिजन सत्य कहते हैं इसवास्ते तुम्हारे दर्शन अमोघहैं इस वास्ते तेरेदर्शनोंकी हम दोनों आकांक्षा करेहैं २३ और तेरे दियेहुये वरको हम चाहते हैं और हे देव तेरे अमोघ दर्शनहैं और जो जीतनेमें नहीं आसके तिसको तूजीतता है तेरेअर्थ नमस्कारहो २४ तब श्रीभगवान् कहनेलगेहे दैत्यो किन वरोंको तुमचाहतेहो जल्दकहो और मेरेसे दोहुई उमर वाले तुम दोनों फिर जीवनेकी इच्छा करतेहो २५ इसवास्ते दोनों मरने के योग्य होजाओ तब वेदोनों बढ़ेहुये और क्षतसे बर्जित ऐसे मधुकैटभ कहनेलगे २६ हे बिभो जिस देशमें कोईभी नहींमराहो वहां हमारा मृत्युहो और हे सुराधिप तेरे पुत्र भावको हमदोनों प्राप्तहोजावें २७ तबश्रीभगवान् कहनेलगेनिश्चै तुमदोनों होनेवालेभविष्यकल्पमेंमेरे पुत्रभावकोप्राप्तहोजाओगे इसमेंसंशयनहींमैंतुमदोनों से सत्यकहता हूं २८ वैशंपायन कहनेलगे ऐसेविश्वको धारण करनेवालेविष्णुतिन दोनों दैत्योंकेअर्थ वरदानकरपीछे तमोगुण और रजोगुण सेउत्पन्न हुये दोनोंदैत्योंको जांघकेतल भागमें देकै विष्णु मथतेभये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायां मधुकैटभवधेत्र्यधिक द्विशतोऽध्यायः २०३ ॥

दोसौचारका अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे पीछे तिस कमलमें ब्रह्मावेदोंमें श्रेष्ठ और ऊर्ध्वबाहु और महाबाहु ऐसे ब्रह्माजी घोरतप करनेलगे १ पीछे प्रकाशित और तेजस्वी और अपनीकांतिसे अंधेराको दूरकरनेवाले और सब धर्मोंमें स्थित और सूर्यके समान किरणोंवाले २ ऐसे ब्रह्माजी प्रकाशित होतेभये पीछे महादेव और नारायण आत्माको दो प्रकारसे करके और आत्माको आत्माकरके चिन्तवनकरतेहुये आतेभये ३ एक तो महायशवाला योगाचार्य्य और दूसरा उत्तम ब्राह्मण और कपिलनामसे बिख्यात और बुद्धिमान् ऐसा सांख्याचार्य्य ४ और ब्रह्मबिदों में श्रेष्ठ और देवर्षियोंसे स्तुत और महात्मा और अतिबलवाले एकता और अनेकता और मिथ्यात्व और अमिथ्यात्व बादनमें बिरोधवालेहुये ब्रह्मको प्राप्तहोतेहुये ५ और परावर बिशेषको जाननेवाले और महर्षियों से पूजित ऐसे दोनों अमितपराक्रमवाले ब्रह्माजीसे कहतेभये ६ पीछे बहुतसे दृढ़पैरोंवाला और विश्वात्मा और जगत्की स्थिति और सब भूतोंकास्वामी और लोकका गुरु और श्रेष्ठ ऐसा ब्रह्मा ७ तिन दूनोंके बचनको सुन तीन व्याहृतियोंका जपकरताहुआ इन तीनलोकोंकोरचता भया जैसे ब्राह्मणी श्रुति कहती है तैसे ८ पीछे सृष्टिमें स्नेहवाला ब्रह्मा अविनाशी और मनसे उपजाहुआ और भूनामसे बिख्यात ऐसे एक पुत्रकोरचतेभये ९ पीछे उत्पन्नहुआपुत्र अगाड़ीखड़ाहोके ब्रह्माजीसे कहनेलगा कि हे भगवन् मैं क्यातेरी सहायकरूं तुममेरेसेकहो १० तब ब्रह्माजी कहनेलगे कि यह कपिल और नारायण जोतेरे अर्थकहै हे महामते सोतकर ११ बैशंपायन कहनेलगे ब्रह्माजीके कहेहुये बचनको सुन कपिल और नारायणको जानके संशयको प्राप्तहुआ ब्रह्माकापुत्र अंजलीबांधके कहनेलगा कि हे नारायण हे कपिल मैं तुमदोनोंका टहलुआहूं और अंजली बांधके पूछता हूं कि मैंक्याकरूं १२ तब कपिल और नारायण कहनेलगे किजो

सत्यहै और अक्षरहै और परिणामसे रहित अठारहप्रकारकरकेकर्म जैसे५ज्ञानेंद्रिय५कर्मेन्द्रिय५ अंतःकरण चतुष्टय४इत्यादिकोंसे नियुक्तहोरहाहै और अमृत और परमऐसाजोब्रह्महै तिसका तू स्मरणकर १३ वैशंपायन कहनेलगे कि इस वचनको सुनके उत्तरदिशा को गमन करताभया तहां ज्ञानरूपीनेत्रोंसे ब्रह्मभावको प्राप्तभया १४ पीछे तिसपुत्रको मनसे कल्पितकर फिर सामर्थ्यवालाब्रह्मा मनसे भुव नामवाले दूसरे पुत्रको रचताभया १५ तब उत्पन्न हुआ पुत्र ब्रह्माजी से कहनेलगा कि मैं तेरी क्या सहायकरूं १६ तब ब्रह्माजी कहनेलगे कि कपिल और नारायण इन दोनोंसे पूछ जो येकहैं सोकर तब उन दोनोंके कहनेसे भागवती गतिको प्राप्तहो परमस्थानमें प्राप्तहोताभया १७ पीछे ब्रह्माजी भूर्भुव नामवाला और मोक्षके उपायमें चतुरऐसे तीसरे पुत्रको रचताभया १८ पीछे यह पुत्रभी दोनों पूर्वोक्त पुत्रोंकी तरह सद्गतिको प्राप्तभया ऐसे तीन पुत्र परम गतिको प्राप्तभये १९ और इन पुत्रोंको ग्रहणकर नारायण और कपिल मुनिभी अपनी गतिको प्राप्तभये २० और जबतक नारायण और कपिल मुक्तहुये तबतक ब्रह्माभी अतितीव्र और घोरतप करतारहा २१ पीछे ब्रह्माजी तपकरता हुआ रतिको नहीं प्राप्तहुआ तब अपने आधेशरीर से शुभ भार्या को रचताभया २२ अर्थात् तपतेजनियम इन्होंकरके लोककेरचनेमें समर्थ और आपके सदृश ऐसी भार्याको रचताभया२३पीछे तिसभार्याके संग तपोमय ब्रह्मारमणकरनेलगा और सबप्रजापतियोंको रचताभयाऔर समुद्र और नदियोंको रचताभया२४पीछे तीनपदोंवाली और बेदकीमाता ऐसी गायत्रीको ब्रह्माजी रचताभया और गायत्रीसे उपजेहुये चार वेदोंको भी ब्रह्मा करताभया २५ और अपने अर्थ ब्रह्माजी लोकको रचनेवाले पुत्रोंकोभी रचताभया जिन्होंसे ये लोकप्राप्त हुयेहैं २६ औरब्रह्माजी विश्वेशनामवालाऔर महातपवाला औरसबआश्रमोंमें तत्पर ऐसे प्रथम पुत्रको रचताभया और पवित्ररूप और धर्मनाम से विख्यात ऐसे दूसरेपुत्रको रचताभया २७ और दक्ष मरीचिमित्र

पुलस्त्य पुलह क्रतु बशिष्ठ गौतम भृगु अंगिरा मनु २८ इननामों वाले ब्रह्मर्षि रूप पुत्रोंको ब्रह्मा रचताभया और इन तेरा ऋषियोंके बंशोंसे यह संसार उपजाहै २६ और अदिति दिति दनुकाला अनायु सिंहिका मुनिप्रबोधा सुरसा क्रोधाबिनता कद्रु ३० ये बारह कन्याहुई और सत्ताईस नक्षत्रों के नामोंवाली सत्ताइसकन्या दक्ष प्रजापतिजीके हुई ३१ और मरीच ऋषिके तपसे निर्मित कश्यप पुत्र उपजा तिसके अर्थ अदिति आदि बारह कन्या दक्षप्रजापति देताभया ३२ और रोहिणी आदि नामोंवाली सत्ताइसकन्याओंको दक्षप्रजापति चंद्रमा के अर्थ देताभया ३३ और लक्ष्मी कीर्ति साध्या बिश्वाकामा मरुत्वति ये ब्रह्माजीकी रचीहुई पांचों कन्या ३४ धर्मको देखनेवाला ब्रह्माजीने धर्म नाम वाले पुत्रकेअर्थदी ३५ और जो ब्रह्माजीने अपने आधे शरीरसे भार्या रचीथी वह काम रूपिणी भार्या गौवन के ब्रह्माके समीपमें स्थितभई ३६ तव मैथुन के समयमें लोकपूजित ब्रह्मा गौओंके हितके बास्ते तिसके संग भोग करताभया ३७ पीछे लोक की सृष्टी के अर्थ ब्रह्मा से तिसविषेविपुल और धर्मवाले और अग्निके समान तेजवाले ऐसे ग्यारह पुत्रहुये३८वे रोतेहुये और भागतेहुये ब्रह्माजीको प्राप्तहुये फिर इस वास्ते वे निरुर्ति सर्प एकपात मृगब्याध पिनाकी दहन ईश्वर ४० अहिर्बुध्न्य कपाली सेनानी अपराजित् इन नामोंवाले ग्यारहरुद्रकहातेहैं ४१ पीछे तिसगायमें गायऔर बैल और माषसिक्ताष्णी अक्षत ४२ अजा एकबंशमें उपजनेवाले पशुअमृत उत्तम औषधि येभी सब उस गायसे उत्पन्नभये ४३ और बिषय काम धर्म नामवाले पुत्रसे लक्ष्मीकी उत्पत्तिहुई और साध्य संज्ञक देवते उत्पन्नहुये और भव, प्रभव, ईशान, सुरभी ४४ अरुंधती आरुणी बिश्वाबसु बल ध्रुव महीष तनूज बिज्ञान मत्सर बिभूति ये सब ब्रह्माजीके सकाशसे गायमें उत्पन्नहुयेऔरसुपर्वतवृष नग इनसब पुत्रोंको लोकोंसे पूजितऐसो साध्या जनतीभयीऔर यह देवी आगे कहे इन पुत्रों को भी जनती भई जैसे धर,ध्रुव४५ तीसरा बिश्वा

वसु चौथा ईश्वररूप सोम पांचवां पर्वत योगेंद्र ४८ बायु आठवां निरति वसु येभी सब धर्म के सकाश से साध्यामें उपजे ४९ और सब विश्वे देवता धर्म के सकाश से बिश्वा में उपजे और सुधर्मा महावाहु शंखपात ५० व पुष्मान अनंत महीरण बिश्वा बसु सुपर्बा विष्कुंभ ५१ और सूर्य्यके समान कांतिवाला रुद्र दक्ष यज्ञबसु उक्थ ये सब विश्वेदेवा कहातेहैं ५२ और धर्मके सकाश से मरुत्वतिमें विश्वे देवा उत्पन्न होतेभये ५३ और अग्निंचक्षु हविज्योति सावित्र मित्र अमरशर वृष्टिमहान् भुजावाला शंक्षय ५४ बिरजा शुक्रबिश्वा वसुविभा बसुअश्मंत चित्ररश्मि निष्कुपित ५५ नहुषआहुति चारित्र ब्रह्मपन्नगवृहंत वृहद्रूप परतापन इननामोंवाले मरुत देवतेउत्पन्न हुये ५६ और कश्यपजीके सकाशसे अदितिबिषेइन्द्र बिष्णुभग त्वष्टा वरुणअंश अर्य्यमासूर्य ५७ पूषामित्र मनुपर्जन्य इननामोंवालेबारह सूर्य्य उपजे ५८ और सूर्यके सरस्वती में रूप श्रेष्ठ बल श्रेष्ठ इन नामोंवाले दो पुत्र उपजे ५९ और अदितिमें देवते उपजे और दितिमें दैत्यउपजे और दनुमें दानव और सुरसामें सर्प और कालामें कालकेय संज्ञक असुर और राक्षस येसब उपजे ६० औ अनायुसामें आधि आर व्याधि और सिंहिकामें राहु और मुनीमें गंधर्ब ६१ प्राबोधामें अप्सरा गण और क्रोधामेंसव प्राणि पिशाच पक्षिगण ६२ गुह्यक गायबैल से रहित सब चौपाये ये सब क्रोधनाम वालीमें उपजे ६३ और विनता में अरुण और गरुड़ और कद्रू में सब पृथ्वीको धारण करने वाले बड़ेसर्प ये सब उपजे ६४ ऐसेये सब दक्षकी बारह पुत्रियों में उत्पन्न हुयेहैं ६५ ऐसे इस संसारमें सबलोक आपसमें वृद्धिको प्राप्त भये हैं ऐसे मैंने वेदव्यासजीके सकाशसे सुना है सो आनु पूर्वसे तेरे अगाड़ी वर्णन किया ६७ जो मनुष्य इस उत्तम आख्यान का श्रवण करेगा वह सब कामोंको प्राप्तहो और शोकसे रहितहो स्वर्गके फलोंको भोगेगा ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौष्करेसर्वभूतोत्पत्तौचतुरधिक द्विशतोऽध्यायः २०४ ॥

दोसौपांचका अध्याय॥

जनमेजय कहने लगे कि हे ब्रह्मन् दिव्य और आपसके संयोग से उत्पन्न हुआ और बहुत गुणोंसे पूजित १ और वृत्तवाले छंदों करके और बिस्तारवाले समासों करके और लघुरूप मधुरबाणियों करकेग्रथित और पदोंके बिग्रहों करके ग्रथित २ और धर्म अर्थ काम इन्हों करके संपन्न और शरीर के अंतर बिरचनेवाली इच्छा से ग्रथित ३ और ब्राह्मणों के प्रभाव और योद्धाओं के पराक्रम और वैरका निपातन और प्रतिज्ञा के पारको प्राप्त होनेवाले ४ और बैरो की स्तुति करने में संपन्न इन्हों करके युक्त ऐसा मैंने अपने बंशका चरित्र सुना ५ और कौरव और पांडव के बंशके मनुष्यों का नाश के अर्थ दुर्योधन के संग जो युद्धहुआ तहां जितने राजेमरगये तिन्होंके पुत्र अपने अपने राज्योंको प्राप्त होतेभये और राजायुधिष्ठिर श्री कृष्णकी आज्ञा को माननेवाला हुआ यहभी जाना ६ और तीनों वर्णों के धर्मभी बहुत प्रकार से कहे और शूरों का भी स्वर्ग का हेतु कहा ७ और प्राणियों के हितके वास्ते तुमने चारों वर्णोंके पृथक् पृथक् धर्मभी कहे ८ और गर्भबास को प्राप्त होने वाले मनुष्यों को बोध रूपभी कहा और क्षीणपुण्य होजावे तब देव संचारभी कहा ९ और दानकी बिधिभी बहुतप्रकार से कही ऐसे सवप्रकार मेरेप्रति आपने बर्णन किया १० सो यह बड़ा भारका अध्ययन एकदिन करके दिव्य चक्षु करके भी मेरेसे कहा नहीं जाता इसवास्ते ब्रह्माजी के दिनका बिस्तार श्रवण करने की इच्छाहै हे भगवन् यहअति आश्चर्यहै १२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांजनमेजयवाक्येपंचाधिकद्विशतोऽध्यायः २०५॥

दोसौछाका अध्याय॥

वैशंपायन कहने लगे हे राजन् पांचों इन्द्रियों से सावधान

होके तू विकार रहित चित्तसे कहनेवाले मेरेसे कथाको सुन १ हे राजन् जो वेद मूलकत्त्व करके संबद्धहै और और जो कर्मों करके भी अबद्धहै और ब्रह्म के जाननेवाले पुरुषों को प्राक्सिद्धहै २ और अव्यक्तहै और जो नित्यहै और जो सदसदात्मक है जो निष्कल है तिस ब्रह्मको तू सुन ऐसे ब्रह्मसेअहंकारसे युक्त ब्रह्मही उत्पन्नहुआ है३ और दिव्य और दिव्य शरीरवाला और सब भूतोंका पति और अचिंत्य और अविनाशि और युगोंकी उत्पत्ति करनेवाला ४ अमूत अर्थात् कालत्रयमेंभी असिद्ध और अजन्मा और सब जगहसे समता को प्राप्तहोनेवाला और अव्यक्तसेपरे और जिसको नारायणकेजान-नेवाले ततूरूप कहते हैं और चारोंतर्फ हाथ और पैरोंवाला और चारोंतर्फसे नेत्र शिरकान मुखइन्होंवालाऔरसबसंसारको आच्छा-दित करनेवाला ५।६ सत् और असत्का कारण और अव्यक्त और व्यक्तरूपमें स्थित और विचरता हुआभी दृष्टीमें नहीं आनेवाला ७ औरविकार पुरुष और व्यक्त और रूपसे रहित और रूपके आश्रित और सबोंमें अचिंत्यरूपहोके विचरनेवाला जैसे काष्ठमेंस्थित अग्नि तैसे८भूत और भव्यका उत्पन्न करनेवाला और सबकास्वामी और परमआकाशमें स्थितहोनेवाला और सब लोकका प्रभु९ऐसेईश्वर सेअहंकार उपजा और अहंकारसे युक्तहुआ वह ब्रह्म अव्यक्त और व्यक्ति को प्राप्त स्थावर और जंगम जगत्का स्वामी ऐसाब्रह्मा रूप उत्पन्नहुआ१० तिसको ब्रह्मकेभावकरकेजानो और वह ब्रह्मस्थावर और जंगम जगत्कापतिहै११सो वह ब्रह्ममैं ईश्वरहूं एसाअहंकार सेयुक्तहुआमैं प्रजारचूंगा ऐसा विचारता है और जिसी ब्रह्मसे यह प्रजातंतुरूपहो रही है१२ तब अनेकप्रकारका चिंतवन करनेवाला ब्रह्म शरीर को प्राप्तहो सुभावसे जलको रचताभया जिसकरके यह संपूर्ण जगत् विस्तृत हुआहै१३ और सर्वव्यापी निरालम्ब अग्राह्य अजय ध्रुव ऐसे ब्रह्मरूपमें ब्रह्मशब्दोसे शब्दित१४ और अव्यक्तरूप पांचतत्त्वोंके लक्षणोंकरके व्यक्तिको प्राप्तहुआ अनेक प्रकारके चिंत-वनकर अनेक वस्तुओंको शीघ्रधारण करताहै १५ जिस ब्रह्मकरके

यह सब संसारबिस्तृतहै तिसके स्वभावसे प्रेराहुआ ब्रह्मा जलको
रचताभया १६ और जलकी दृष्टिसे पहले बायुकोदेख मरीचिआदि
ऋषियोंमें सप्तमलोकमें संकेतित धातृ शब्दको धारण करता भया
१७ ऐसे बायुसे उपजा संपूर्ण जगत् समुद्रमें स्थित रहाहै १८
तब पृथ्वी शब्दकी इच्छा करनेवाले परमेश्वर ने जलसे पृथ्वी
अलग करी १६ और जलमें प्राप्तहुआ पृथ्वीरूप देवता चारोंतर्फ
को बाणीसे पूरताहुआ २० और पृथ्वीकहने लगी कि जलकेऊपर
स्थितहोनेकी इच्छाकरूंहूं और गंभीर रूप जलमें दुःखित होरही
हूं २१ और शरीरको धारण करनेवाली और सबभूतोंको उपजाने
वाली और सब जगह स्थानकी इच्छाकरानेवाली२२ ऐसी पृथ्वीके
कहेहुये शब्दको सुनके बराहरूपको धारणकर नारायणमहासमुद्र
में प्राप्तहो २३ पृथ्वी को उठाके और दुष्कर कर्मकर जलपै स्था-
पित कर पीछे आप अंतर्हित होगया २४ और जो ब्रह्ममय और
ज्योतिरूप और आकाशसंज्ञासे बिख्यात ऐसापृथ्वीका उद्धारकरने
वाला बिष्णु है तिसके सकाशसे सब प्राणियोंका पितामह ब्रह्मा
उत्पन्न हुआ २५ और अबभी शेष और कच्छप आदि रूप करके
ज्ञानयोग के द्वारा प्रजाका हितकरनेके अर्थ पृथ्वी को धारणकर
रहा है २६ और पृथ्वी के मध्य भाग को भेदन कर उत्पन्न
होनेवाला सूर्य अपनी किरणोंसे जलको खैंचताहुआ उत्पन्न
होताभया और सूर्यकेमंडलसे चंद्रमंडल निकसाहै येसनातन ब्राह्म-
णोंका राजाकहाताहै२७।२८और सोममंडलसे वर्णात्मक और ज्यो-
और तेजकरके बढ़ानेवाला ऐसा पवन अर्थात् निश्वास उत्पन्न
तिहुआहै २६ और वहसूर्य मंडलांतअधिदैवक अर्थोंकास्रष्टा सोमा
रूय ईश्वरसे बेदकोप्राप्तहो योगमयज्ञानसे सनातन और ब्रह्मयोनि
और दिब्य ऐसे पुरुषको रचताहै ३० जो द्रवरूपहै वह जल जानो
और जो घन रूपहै वह पृथ्वीजानो और छिद्ररूप आकाश जानो
और जोनेत्रहै वह अग्निजानो३१ और अग्निसे उपजा बायुजानो
और तिस देहमें सनातन रूपभूतात्मा पंचमहाभूतमय होके बसता

है ३२ और ऐसा वह सनातनरूप ब्रह्महै सो वह बुद्धिरूप गुहाके विषय ज्ञानरूप विचारा जाताहै ३३ और जो प्राणियोंके शरीर में अग्नि वसताहै वह सूर्यकाही रूपहै और शरीरमें नित्य धातुओंके संग युक्तरहताहै ३४ सो स्वभावसेही नाशहोजाताहै और स्वभाव सेही भयको प्राप्तहोता है और स्वभावसेही शांतिको प्राप्तहोता है स्वभावसेहीनहीं शांतिको प्राप्तहोताहै ३५ और ब्रह्मकेपदमें मोहित आहु और इन्द्रियोंकरके अतिमूढ़ात्मा ऐसाप्राणीजन्म और मृत्युके कर्मोंकरके प्राप्त होताहै ३६ और जबतक तत्त्वसे आनंदरूप ब्रह्मको नहींप्राप्तहोता तबतक जन्मोंको बारंबार प्राप्तहोताहै ३७ और जब इन्द्रियोंसे अतिरिक्तहुआ योगवेत्ता ब्रह्मभावको प्राप्तहोके इन्द्रियादिकोंमें स्वरूपानंद प्रतिष्ठाको प्राप्तहोताहै ३८ और ब्रह्मवेत्ता मनुष्य इस निषिद्धलोकको और राग व्ययकोनहीं प्राप्तहोता ३९ और गर्भ प्रवेशऔरमरण इन्हींको देखेहुये प्राणियोंसे जानलेताहै और आप इन्हींको नहीं प्राप्तहोता ४० और ब्रह्मको जाननेवाला कर्मकीनिवृत्तिसे पहलेमुक्तिके उपायोंको और अतीत अनागतआदि बिषयोंको जानताहै ४१ और कामादिकके लोभसे भिन्नहुई पूर्बयातना मनकरके चित्तकी ग्रंथियोंको रोकतीहै औरभेदन करतीहै जैसेबायु समुद्रको भेदन करताहै तैसे ४२ और बासनाको रोकनेसेज्ञाननेत्रकरके हृदय शुद्धहोता है जैसे बृह्मसे देह बंधनों से युक्त जीव आत्मा ४३ और तेजकी मूर्त्ति वाला योगी विद्याकरके उत्तमलोक को रचता है और इसलोककोभी रचलेताहै ४४ और तिर्यक् योनियोंमें प्राप्तहुओंको भी ब्रह्मयुक्त चित कर्मोंको छुटादेता है ४५ और मोक्ष और भोगदो हैं तिन्हों में भोग कर्मोंसे प्राप्तहोताहै और मोक्ष कर्मकी निवृत्तिसे प्राप्तहोता है ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपडाधिकद्विशतोध्यायः २०६ ॥

दोसौ सातका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि बढ़तेहुये सूर्यने जब पृथ्वीमें छिद्रकिया

तहां स्वभावसे रचाहुआ मैनाक पर्वत स्थित कियागयाहै १ और पर्वोंकरके पर्वत नामको प्राप्तहुआहै और नहीं चलनेसे अचल नाम को प्राप्तहुआहै स्वभावसे ऐसा मेरुपर्वतहै २ और तिसपर्वतके पृष्ठ भागमें महाऋद्धियोंवाला और ज्योतिसे उत्पन्न और स्वभावसेपर मात्मा करके रचाहुआ ऐसा पुरुषबसे हैं ३ और जो ब्रह्ममय तेजहै वह तिसके शिरके भीतर निहतकिया गयाहै ऐसा ज्योतिमय और दीप्त और पुरुषरूप शरीरवाला ४ और मुखसे निकसाहुआ और तेजसे प्रकाशित और चारमुख और चारभुजाओं से युक्त ऐसा ब्रह्म उत्पन्नहोताभया५ वही फिर महा भूतभावको प्राप्तहुआ औरतिस देवका बेदसे उपजा मुखहै औ तिनबेदोंको धारण करनेवाले ब्राह्म णोंमें मुख्यहैं ६ और जिसनेपहलेही समुद्रसे पृथ्वीका उद्धार किया है ऐसे अलोक रूपहोके भी शोकताका प्राप्तहुआहै ७ और पैरोंकी संधिमें मेरुकाशृङ्ग ब्रह्मलोकहै अर्थात् मुक्तिस्थान है और करोड़ही योजन ऊंचा और बिस्तार बालाहै ८ और इस प्रमाणसेभी चौगुना प्रमाण गिना जाताहै अथवा किसी प्राणीसे संख्याकरनेमें नहींआ सक्ता ऐसाहै ९ और जिस पर्वतमें सौसौ योजनवाली चार शिलाहैं सोतिन विस्तारवाली चार शिलाओंसे युक्तहै १० और जहां ब्रह्म- वादीयोगी सिद्ध वृत परायण ये सबकईकिरोड़ोंस्थित होरहेहैं ११ मरुद्गणदेवइंद्रग्यारहरुद्रआठवसुबारह सूर्य बिश्वेदेवा इन्हों करके सहितपृथ्वीकेराजाओंकी रक्षाकीजातीहै १२ औरपृथ्वीकी भीबिष्णुके संगहुआवह पर्वत रक्षाकरताहै और सूर्य और वरुणकरके सबजगह तेजकासंघातहै१३ और ब्रह्माका शरीररूपी ब्रह्मरूप बिष्णुमयतेज सर्वत्रसमताको प्राप्तहुआहै और जो बेदको जाननेवाले औरनियमों कोधारण करनेवाले और सत्यव्रतमें परायण ऐसे ब्राह्मणोंने ब्रह्म कहाहै१४।१५ऐसेही ये तीनोंलोक ब्रह्माकेदिनमेंस्थित रहतेहैं और तिसदिनमें अव्यक्तरूप जो ब्रह्म प्रतिष्ठितहै वहउपाधि में जीवरूप करके प्रकट होताहै १६ और ईश्वर के प्रभाव करके निश्वशित- मात्र बेदके द्वारा प्रेरित किया जो नित्यकर्म है वह नियत कर्म

करने से श्रेष्ठवादी पुरुष अपने कर्मको उपजाता है १७ इसवास्ते वेदोक्त कर्म सबकालमें करना उचित है ऐसे ब्रह्मबादियोंने यह हित कहाहै १८ और बहुतहोने से सत्यव्रतमें तत्पर रूप ब्राह्मणोंने विश्वशब्द युक्तकिया है १६ और विश्वरूप मनोरूप बुद्धिरूप ऐसे मानके पहले जोड़ाको रचताभया २० और वही सनातन ईश्वर देवीके साथ नानाप्रकारके भोगोंको करके पीछे अनुचरों सहित विचरताहै २१ और निर्बाणपदको प्राप्तहोनेवाले और अकिंचन मार्गकी इच्छाकरनेवाले इन्होंका ब्रह्मविदों में श्रेष्ठ बृह्मा यही हैं २२ और स्वर्गते छुटीहुई जलधारा रूप मूर्तिवाले परमेश्वरसे चंद्रमा उत्पन्नहुआहै और जिसधाराने भूतोंका स्वामिभावको महेश्वर प्राप्तकियाहै २३ और महादेवजीका अभिषेचन कर कर्मोंके स्वभावसे शब्दको करतीहै इसीवास्ते नदी कहातीहै २४ पीछे मार्गको रोकनेवाले पर्वतोंका तिरस्कारकर आकाशसे पृथ्वीमें प्राप्त भई इसीवास्ते गंगा कहातीहै २५ और यही सात प्रकारसे समुद्रके संगममेंगोदावरीरूपसे होगई है और हेजन्मेजय हजार प्रकारोंसे वारं बार इस अविद्या प्रभवलोकको बढ़ाती रहतीहै २६ और तिसीसे सबप्राणी बढ़तेहैं और महाभूतभी बढ़तेहैं और बुद्धिमानोंके सब क्रियाभी प्रवृत्त होतीहैं २७ और तिसदेवके चारमुखोंकरके वेदरूपकरके निकसीहुई जो अक्षरमई सिद्धिहै वह उपदेश भावको प्राप्तहोतीहै २८ और तिस देवके ज्ञानमय औचिन्मय और पुण्यकेकारण ऐसे चारपैरोंको धारणकिये हुये वह ईश्वर यज्ञ है २६ और बृह्मा उद्गाता होता अध्वर्युयेचारोंपैरहैं और सनातन और कर्मकाअनुष्ठाता ऐसाब्रह्माशुद्ध ब्रह्मरूपहैऔरजोधर्मके चारपैरहैं जिन्हों करकेयहजगत् धारणकियाजाताहै अर्थात् ब्रह्मचर्या श्रमधर्मकाएक पादहै ३० औरगृहस्थाश्रम धर्मकादूसरापादहै औरवानप्रस्थ आश्रम तीसरा पादहै और संन्यस्त चौथा पादहै ऐसे धर्मके चारपैर स्वर्गके कारण कहेहैं ३१ और न्यायसे और गुप्तधर्मसे ब्रह्मांडमें चंद्राधिष्ठित यह मन बढ़ताहै और वेदसेही प्रमाणित योगसे शाश्वतवेद

निवृत्तहोतेहैं ३२ और पूर्वोक्त प्रकारसे योगको जाननेवाले गृहस्थियोंको देखके पितर तृप्तहोतेहैं और पर्वतके शिर पै स्थित हुये ऋषिभी धर्मसे प्रसन्न होतेहैं ३३ और तिस मेरुपर्वत के शिखरको देखके ऋषियोंने पैरोंसे वृषणोंको पीड़ितकर बिचार कियाहै ३४ अर्थात् ग्रीवाका निग्रहकर और पृष्ठभागको निवाय और हसनेकी तरह नाभीदेशमें दोनोंहाथोंको स्थितकर और चारोंतर्फ़से अंगोंका संकोच कर ३५ और मस्तकमें ब्रह्मको प्राप्तकर ऐसा फिरवह ब्रह्मा अधिकारी मनकरके बिश्वरूप बिश्नुको रचताहै ३६ तबइन्द्रियोंसे रहित और बिंबसे बिंबकी तरह उधृत और तेजकी मूर्तिको धारण करनेवाला और आकाशमें उदितहुआ चंद्रमाकीतरह प्रकट होजाताहै ३७ और ब्रह्म योगकरके मानो आकाश के मध्यमें अतुल प्रभाव करके प्रकाशित दूसरा सूर्यहै ऐसे प्रकाशितहोताहै ३८ और मूढ़ोंके प्रत्यक्ष शाश्वत् ब्रह्मनहीं प्राप्तहोता और ललाटके मध्यमें स्थित और क्रियाके प्रति नियम्य और नियामकरूप करके स्थित ३९ और नेत्रोंको प्रकाशित करनेवाला ज्योति सूर्य और चंद्रमाको प्रकाशित करनेवाला ऐसे ईश्वरको ४० सत्यव्रतमें परायण और बेदको जाननेवाले और अध्यात्मविद्यामेंरत ऐसे ब्राह्मण देखतेहैं और जो अध्यात्मको नहींजानतेहैं वे उस साक्षात्कार ईश्वरको कदाचित् भी नहीं देखसकतेहैं ४१ अर्थात् जो पृथ्वीमें योगी प्राणियोंकी निग्रह अनुग्रह करनेको समर्थहोवे और ऐश्वर्य्यसे उपजेहुये मोहमें प्राप्तहुये चित्त करके अयोगात्माहुआ ४२ और सबके प्राणोंको दुःखदेने करके अयोगात्मा योगी साक्षात् ईश्वरको नहीं देखसकते और सब प्राणियोंको मारनेकी इच्छावाले मनुष्योंके कुत्सित कर्मोंकरके योगको प्राप्तहो अपने भोगोंके अर्थ वेभी साक्षात्कार ईश्वरको नहीं देखसकते ४३ और सावधान मनवाला मोक्ष प्राप्तहेतु करके ब्रह्ममें प्राप्तहो चंद्रमंडल संस्थान से मनको बशमेंकर ४४ हृदयमें प्रबेशकर सगुण ब्रह्मके नेत्रोंकेभीतर और गर्भसे उपजनेवाला और अकार उकार मकार अर्द्धमात्रा इन्होंकरके चार प्रकारवाला ब्रह्म ४५ और तेजसे

संयुक्त और शाश्वत और अविनाशि इन्द्रियोंसेअयुक्त और तेजरूप गुणसेयुक्त ४६ और चंद्रमाकी किरणोंसे शुद्ध और प्रकाशित ऐसे देव नेत्रोंसे ऋग्वेद और यजुर्वेदको उपजाताभया ४७ और जिह्वा के अग्रभागसे सामवेदको उपजाताभया और शिरसे अथर्वण वेद को उपजाताभया और उत्पन्न होतेहो चारोंवेद अपने अपने क्षेत्र को प्राप्त होतेभये ४८ और जो ये वेद ईश्वरके पदको जानतेहैं इसवास्ते ये वेदभावको प्राप्तभये और ये चारोंवेद शुद्धिकी उपाधि ताको प्राप्तहो अपने अपने गुणोंसे विशिष्ट रूपकरके ४९ दिव्य रूपवाला और सनातन और ब्रह्म ऐसेपुरुषको रचतेहैं अर्थात् उस ईश्वरकी उत्पत्तिको कहतेहैं और अथर्बवेद यज्ञकाशिर कहाहै ५० औरग्रीवाऔर बाहुओंका अंतर यह ऋग्भाग कहाहै हृदयऔरपश- ली यह सामभागकहाहै ५१ और बस्ति स्थानकटी देशजंघाऊरूपैर यह यजुर्भाग कहाहै ५२ और दिव्य रूपवाला और देवस्थान से उत्पन्न ऐसा पुरुष अर्थात् ईश्वर कहाहै ५३ और सर्बदेव मयऔरस- बभूतोंको सुखकादेनेवाला औरसनातनऔर हिंसासेबर्जितऐसायज्ञ दोनों लोकोंके अर्थ श्रेष्ठहै ५४ और योगसे आरंभवालाऔर कर्मों सेसाध्य और सनातन और सबभूतोंको उत्पन्न करनेवाला और ब्रह्मचर्य रूप और सनातन ऐसे ईश्वरको जानेवही वेदबित् कहा- ताहै ५५ और वही सिद्धऔरवही सबपापोंसेमुक्तवेदको जाननेवाले मुनियोंनेकहाहै ५६ औरवेदको जाननेवालेवेद और उपनिषदइन्हों में श्रांत ऐसे ब्राह्मणवैष्णव संबंधी यज्ञका रूपईश्वरहीहैऐसेकहतेहैं ५७ जनमेजयकहनेलगा मनसे ग्रहणकरनेके योग्यचित्तकी कामना सेउपलंभहोताहै सोइसकेकारणको सुननेकीइच्छाकरूंहूं हेविप्रजसे तूमानता है ५८ वैशंपायन कहनेलगे हे भारत इसका कारण कुछ भीबाह्य नहींहै किंतुशरीर और मानस भेदकरके अंतर्गतही कारण है ५९ जिस करके संशित व्रतवाले ब्राह्मणवेद्य कहतेहैं और कर्मों करके अवेद्य रूपभी जानानहीं जाता ६० और विनीत और ब्रह्मको सेवने वाला और सब काल में विदित तत्ववाला ऐसे ब्राह्मण का

सिद्धिका हेतु यहीहै ६१ अर्थात् सबकालमें पवित्रहो के वेदकर्म से नियत हुआ गुरुकेअर्थ अंजली बांधके ब्राह्मण स्थितहोवे ६२ और सायंकाल में और प्रातःकालमें ब्रह्मभाव करके बिनीत और समाहित बुद्धिवाला और तत्वको जाननेवाला ऐसा मुनि ब्रह्मभाव को जानके मोक्षकर्मों को करै ६३ और मनकरके उत्तमरूप बैष्णवपद को प्राप्तहोवे और समाहित बुद्धिवाला ब्राह्मण ध्यान करता हुआ प्रसन्न रहै ६४ और मोक्षभावको जाननेवाला और सब पदार्थों की ममता से रहित ऐसा ब्राह्मण बिकार रहित चित्तकर के परम्ब्रह्मको प्राप्तहोताहै६५ और जो पुरुष निर्बिकारचित्त करकेईश्वर का ध्यानकरता है और जन्मके प्रभावको जानताहै और बंधनरूप ममता से रहित रहता वह परम्ब्रह्मको प्राप्तहोताहै ६६ और जो ह्रास आदिसे रहितहै वही सनातन ब्रह्म है वही कर्म योग कर के बिधाकरके दिखाया गयाहै ६७ और बैष्णव पदमें बिनीत और सबप्रकारके द्रव्योंसे रिक्त और कामयोग को त्यागने वाले ६८ और फिर जन्मकी इच्छानहीं करनेवाले और कर्म कर्म में फल को नहीं चाहनेवाले ऐसे ब्राह्मणों को मोक्ष मिलताहै ६९ अर्थात् कर्म के फलको ग्रहण करनेसे प्राणीबंध जाताहै और कर्मके फलकोनहीं ग्रहण करनेसे छुटजाताहै और पूर्वजन्मके संस्कारसे हेराजन् ब्राह्मणोंके अर्थ क्रियाओं की प्राप्ति होतीहै ७० और इन्द्रियों के बंध से छुटा हुआ और परम पदको प्राप्त ऐसा मनुष्य फिर बार बार इस मनुष्य देहको प्राप्तनहीं होताहै ७१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गत भविष्यपर्वभाषायांसप्ताधिकद्विशततोऽध्यायः २०७॥

दोसौआठका अध्याय ॥

जनमेजय ने कहाकि उपसर्ग औरयोग औरध्यान करने केयोग्य पद इन्होंके प्रतापसे मनुष्य देहको फिर नहीं प्राप्त होसक्ताहै१ बैशंपायन कहनेलगे ब्रह्मादिकों के अनेक प्रकारों को बुद्धिकर के युक्त मनसे जैसे पूछताहै तैसे बिस्तार पूर्वक सुन २ पंचसिद्धि अर्थात्

दूर श्रवणादि जो है तिन्हों के शब्दादिक गुणों को त्यागकर और योगयुक्त मनसे पंचेंद्रिय निवासी ब्रह्मको चिंतवन करनेसे ३ सनातन और वहु रूप ऐसा ब्रह्मयज्ञ प्राप्त होता है और वैराग्य बल के अभावसे ब्रह्मयज्ञ निरोध को प्राप्त होताहै ४ और पांचइन्द्रियों वाला और नौ दरवाजों वाला और काम क्रोध लोभ इन्हों की मेधासे रुकाहुआ ५ ऐसेग्राम रूप शरीर के अनैश्वर्य्य से योगरुक जाताहै और भृकुटी और नासिका के मध्यमें निहित किये तेजकर के और नेत्रोंके प्रणिधान करके चित्तको संयुक्तकर स्थितहुये योगी के धूमांरूप जल अर्थात् ओसकी तरह बहुत सा निकसता है और नील और लोहित वर्णके समान कांतिवाले और पीत तथाश्वेत धातु ६ मजीठके रंगके समान कांतिवाले और कबूतरकेसदृश और शुद्ध वैडूर्य्यके वर्णके समानकांतिवाले और कमलकावर्ण औरपताके समान कांतिवाले ७ और स्फटिकरूप और मणीका वर्णके समान कांतिवालेऔरनागेशोंके सदृशऔर इन्द्रगोप कीड़ाका अर्थात्लाल रंगवाला तीजसंज्ञक जीवके वर्णके समान कांतिवाले और चंद्रमा की किरणों के पानीके समान कांतिवाले ८ और वहुत वर्णों वाले और इन्द्र के धनुषके समान कांतिवाले और मेघों की तरहसमागम में पड़नेवाले ९ और पांखोवाले पर्वतों की तरह आकाश को रोकनेवाले ऐसे धूमें बद्दलों मे और वसुधा तल में प्रवेश करते हैं १० और शिर में परम योगसे युक्त और सैकड़ों लटाओं से आवृत ऐसा मनसे उपजने वाला महान् अग्नि स्थितहै ११ और तिसका प्रकाश लाखों किणके युगाग्नि के समान प्रकाशित सब अंगोंसे झड़तेहैं १२ और जितने वर्ष और राष्ट्र हैं तितनेहीं अग्नि की लटाकही हैं और जलकी धाराओंकी तरह विख्यात हैं १३ श्वेत लोहित वर्णोंकरके दिव्यसिद्ध गुणोंसे उत्पन्न और सूक्ष्मप्राण को वढ़ानेवाला १४ और वेगवाला और भयानक शब्दवाला और बलवान् और प्राणगोचर और अग्निकेसंघातरूपधातुओंसे संगत ऐसावायु अतिचलताहै १५ और हजारहं अलग अलगमूर्तिकोकर

और अग्नि वायुजल पृथवीधातु ये ब्रह्मसे प्रेरितहुये १६ संवाय भावको प्राप्तहो बीजभूतहोके ब्रह्मवेग करके संघात को प्राप्त हुये धातुकार्यकारण भावको प्राप्त होतेभये १७ और दोनोंनेत्रोंके मध्यमें सूक्ष्म और पुरुष और बिराट ऐसाजो ब्रह्महै वहसूक्ष्म और बिराटके बहुतसे सूक्ष्मोंको रचताहै १८ और वही भगवान् और व्यक्त और अव्यक्त और सनातन और सब बिद्याओंका आधार और प्रलय में प्रलयके अंतको करनेवाला ऐसाबिष्णु वहीहै १६ और धातुओं से बंधेहुये तिस बिष्णुमें सुख दुःखके ज्ञाता और ब्रह्मसे प्रेरितऐसेसब पुरुष प्रवेश करतेहैं २० और चेष्ठाकरनेको आरंभ करनेवाले और ब्रह्मसे संमितऐसी मूर्ति पृथ्वीको भेदन करके दशदिशाओं में प्राप्त होतीहै २१ और ये सबराजे और सबऋषि तहांप्रलयको प्राप्तहुये पृथ्वी तल को प्राप्तहोजातेहैं २२ और कर्मके क्षय से छुटजातेहैं और कर्मक्षयसे छूटनेसे और इन्द्रियों के बंधन से छुटनेके बाद २३ पश्चात् तिसकर्मके अनुसार संसारमें उत्पन्न होजातेहैं और अग्नि होत्रआदि कर्मकरनेवाले मनुष्यतपोमई अर्थात् कृच्छ्र चांद्रायणआदि कर्मकरनेवाले होते हैं २४ और धूमासे बद्दल उपजते हैं और बद्द लोंसे निर्मलजल उपजताहै २५ और जलसे पृथवी और पृथवी में फल और फलसेरस और रससे शरीरधारियों के प्राण उपजतेहैं २६ और यज्ञमें जो सनातन ब्रह्महै तन्मय ब्रह्म चैतन्य रूप रसहै और बहुतसे कारणों करके सत्य ब्रतमें परायण और तपसे श्रान्त ऐसे ब्राह्मणोंने प्रधानभूत ब्रह्मकहाहै २७ और अव्यक्त और अपनेभाव करके व्यक्त भावको प्राप्त और सबभूतोंके भीतर स्थित और बिद्या के संगबिचरनेवाला २८ और कर्मकर्ता इस बिषय में अनेक प्रकार से स्थित ऐसाब्रह्म तप करके दग्धपापों वालोंको नेत्रोंसे नहींप्राप्त होताहै २६ और ब्रह्मको जाननेवाले ज्ञानियों करके नेत्रोंसे प्राप्त होताहै और दोनों भृकुटियोंकेमध्यसे निकसाहुआ ईश्वर ऐसेप्रत्यक्ष होताहै जैसेमेघसे छुटाहुआ सूर्य ३० और पक्षियोंकी तरह लोक में बिचरनेवाले द्वंद्व और परिग्रहसे रहित ऐसे मनुष्यों ने योगधर्म

करके हे जनमेजय निश्चै फलकी प्राप्तिहोतीहै ३१ और भूतों से उत्पन्नहुये प्राणीके उत्पत्ति नाश ऐश्वर्य सैकड़ों प्रकार से ब्रह्मा रचताहै ३२ और कर्मोंके कर्मयोगको जाननेवाला ब्रह्माका लोकके अविनाशके अर्थ और धर्मकी पुष्टीके अर्थ ३३ तेरह हजार युगोंसे परिमाणित कालयुगों में प्रथमयुगरूप ब्रह्म युग कहाताहै ३४ और सहस्र युगों के अन्तमें संहार और प्रलयके अन्तको करनेवाला लोकोंका निर्विकार और अचेतन ऐसासूक्ष्म होताहै ३५ जैसे कारणरूप गुणों करके सूक्ष्म ब्रह्म प्राप्त होताहै तैसेयह सनातन जगत्प्रलय को प्राप्त होताहै ३६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांअष्टाधिकद्विशतोऽध्यायः २०८॥

दोसौनवका अध्याय ॥

जनमेजयकहनेलगाकि हेमहामुने सगुण ब्रह्म को जाननेवालेका और आद्ययुगोंका विस्तारकरके आग वंशको सुननेकी इच्छा करूं हूं १ वैशंपायन कहनेलगे कि दैवके निश्चय को सिद्ध करनेवाले और बुद्धिसे उपपन्न ऐसे मनकरके जो मेरेको पूछताहै वह बिस्तार पूर्वकसुन २ वृद्धिको प्राप्तहुआ और योगात्मा और ब्रह्मसे उत्पन्न हुआ और प्रभुऐसा ईश्वर प्राणियोंके बहुल भावको करताभया ३ और वेगसे विक्षिप्तरूप और ब्रह्मासनपै स्थितहुआ ऐसा ब्रह्मस्थाणुभूत अचल भाव करके ४ मोक्षविषय में और ज्ञानमय पदमें रक्तहै जिससे हजारह पद उपजते हैं और स्थितहैं ५ और सब कालमें वेदात्मक ब्रह्मयज्ञ को करता है और ब्रह्मा को बिपुल ज्ञान और ऐश्वर्य प्राप्त होता है ६ पीछे ब्रह्मभूत और प्राणियों पै हितकी इच्छाकरनेवाला ऐसे ब्रह्माने प्रथम ऐश्वर्य प्रवृत्तकिया है ७ और निर्विकार कर्मकरके ब्रह्मभूत ब्रह्माके ऐश्वर्यरूप आकाश प्रवृत्त होताहै ८ और तब निर्मल और आकाशरूप और अविनाशी ऐसा ब्रह्म प्राप्तहोताहै और सब भूतोंका संहार और ऐश्वर्य योगवाले मनुष्यों का और शरीरवाले जीवका संहारहोताहै ९ और आकाश

रूप ऐश्वर्यसे उपजा और संयुगमें ब्रह्मबादी और तिसकरके प्रव र्तमान ऐश्वर्य वायुभावको करताहै और बहुतसे विकारोंकरके और पड़तेहुये महाबलोंकरके संवृत और निरुद्धरूप १० इन बिकारों करके निश्चय ऐश्वर्य्यको प्राप्तहुआ ब्राह्मण सिद्धहोताहै ११ और शरीरसे निकस आकाशकरके भागताहै जैसे निरालंबहुआ मनुष्य व्याघ्र आदिकोंसे १२ और ऐश्वर्यभूत जो भूतात्माहै वह आकाशमें बिचरताहुआ इन्द्रकेसमान लोकोंके नेत्रोंकरके नहीं दीखताहै १३ और जो उत्तम ब्राह्मण मनकरके ओंकार का अध्ययन करते हैं वे सब कर्मोंसे बिमुक्तहुये जिसको योगी देखतेहैं तिस ईश्वरको प्राप्त होजातेहैं १४ और बुद्धिमान् ब्राह्मणोंका यह परम्ब्रह्महै यह प्रा- णियोंके भीतर बुद्धिकरके सहित बिचरताहै १५ और महा शब्द वाला और पुरातन ब्रह्मसे उत्पन्न होनेवाला और वायुसे उत्पन्न और अक्षरभावको प्राप्त ऐसेई शब्दको ब्राह्मण कहतेहैं १६ और रूपसेरहित और ऐश्वर्यात्मक रूपसे संपन्न और धातुओंसे संगत और स्वतंत्र इच्छावाला और संगसेरहित ऐसा यह ओंकार प्राणियोंके भीतर बिचरताहै १७ और पहले इस ओंकारको मन करके ध्यावतेहुये और वेदात्मक यज्ञको चिंतवन करनेवाले १८ और पवित्र और दान्त और ब्रह्मलोककी आकांक्षावाले ऐसे ब्राह्मण वैष्णवपदको प्राप्तभयेहैं १९ और पदके अर्थ बिगत ज्वररूप मनु ष्य सब क्रियाओंको करतेहैं वे जन्मग्रहण निमित्तकसंसारको नहीं चाहते २० और जो बिश्व तैजस प्राज्ञ इन तीनोंको समर्पणकरने वाले जो माल्य और उपहार आदिकरके सत्य पराक्रमवाले और परमात्मा ऐसे बिष्णुको वेदोक्त बचनोंकरके यजन करतेहैं २१ वे साक्षात् वैष्णवतेजसे संयुक्तहोके ब्रह्मको प्राप्तहोजातेहैं और हेनृप वेदोक्त वचनोंकरके ब्रह्मा भी बैष्णवतेजहै २२ और वेदको जानने वाले और ब्रह्मवेत्ता और ब्रह्मबादी और कर्मोंसे निर्मुक्त २३ और सत्यब्रतमें परायण और पवित्र ऐसे ब्राह्मणोंको परमात्मा अच्छे प्रकारसे दीखताहै २४ और वही परब्रह्म और अद्भुत बैष्णवतेज

और रसात्मक और ऐश्वर्य ऐसा विकारके अंतमें दीखताहै २५ और घोररूप विकार महात्माओंको दुःखितकरते हैं और अत्यन्त जलकरके आच्छादित और तरंगोंसेक्षुभित और विचेतनऐसा जीव शीत उष्णरूप तरंगों से आक्षादित किया जाताहै २६ और महा समुद्र मेंगतजीव दग्धहोता है और भग्न हुई महानदी जल से ही दुःखितहोती है२७ और जलमें सीदमान और आसन और आच्छा दनसे छुटाहुआ और विचेतन २८ ऐसा जीव शीतसे गिरायाजाता है और सुंदर बद्दलमें प्राप्तहुआ जलके द्वारा सींचाजाता है और शुक्लवर्णवाले स्रोतों से शिरविषें चारोंतरफसे २९ ऊर्ध्वज्योति शुक्ल भावसे पीत बाधितहोताहै जैसे बारीसेपूरित अर्थात् जलसे पूरित बिजलियोंसे ३० इन संवृत और निरुद्धरूप बिकारोंकरके ऐश्वर्य्य को प्राप्तहो ब्राह्मण सिद्धहोजाताहै३१ और रसात्मकऐश्वर्य्य तत्सा ध्यरसास्वादसे निकसाहुआ और हजारहों धारावाला और बिस्तृत ऐसाहोके मेघभावकोप्राप्तहोताहै ३२ और सब भूतोंके योग प्राप्त हेतुकरके धातुकेअर्थयोग से सिद्धहुआ ईश्वर नानाप्रकारके रसोंको रचताहै ३३ और तेजके रूपवाला ऐश्वर्य्य और आत्माको विघ्न करनेवाला होके विकारों के साथ वढ़ताहै और ब्राह्मण कारणमें स्वस्थहै ३४ और उग्ररूपवाले और बिरूपवाले और दंडकोहाथ मेंलेनेवाले और घोररूप और अतिगंभीर और पिंगरूप नेत्रोंवा ले ऐसे मनुष्योंकरके ३५भयानक नेत्रका उद्धार करताहुआ अंगों से कटता है और वारंबार जृम्भमाण ३६ एक बारमें नादकरते हैं फिर बहुत रूपवाला होके नाचतेहुये गातेहैं और बिशेष करके तृप्तकरतेहैं ३७ और स्त्रिभूतहोके युक्तहुये बहुत रूपों करके और विघ्नोंसे लोभदेनेवाले ऐसेहोके कंठविषे लटकतेहैं ३८ और मधुर अभिधानों से भीत पुरुषकी तरह नहीं बोलते और मस्तकों करके सब एककालमें पैरोंमें पड़तेहैं ३९ और योगकेप्रसादकी आकांक्षा करनेवाले और योगके भीतरके बहुत प्रकारोंको कहनेवाले नाचते हैं और तिर जातेहैं ४० इसप्रकार अनेक प्रकारके बिकारोंकेचारों

तरफ रोकनेसे रहित हुआ ब्राह्मण निश्चय ऐश्वर्यको प्राप्तहोके सिद्धिको प्राप्तहोताहै ४१ और तहां वे जलकी बिंदु सूर्यकी किरणों की तरह तेजरूप ऐश्वर्यको प्राप्तहोतीहैं ४२ और वही जल मेघ रूपहोके आकाशमें प्राप्तहोके चंद्र सूर्यात्मक ज्योतिरूप होजाता है४३ऐसे चंद्र सूर्यात्मक और दिव्य और ज्योतिवाला उत्तमबनरूप यह कालचक्र इस संसारमें प्रकाशित होरहाहै ४४ और पक्षमास ऋतु संबत्सर क्षण लव मुहूर्त्त कलाकाष्ठा ४५ अहोरात्र निमेष उन्मेष तारागणोंकीगति और बिशेषकरके ग्रहोंकीगति ४६ यह कालचक्र कहाहै और बिकारोंके स्वीकार से उपजाहुआ पार्थिव ऐश्वर्यको अभिग्रस्तहुये योगी अतुलरूप आसन से गिरतेहैं४७ और अलोभसे ऐश्वर्य छेदितहोताहै और बिघ्नसे भी योगीकांपताहै और पृथ्वीमें बारंबार भेदनहुआ निंदाको प्राप्त होताहै ४८ और प्राणियोंके बहुतरूपों करके और अन्य लोक बासियोंकरके बिषयों से जल्द युक्त होताहै और संक्षेपसे रुकजाताहै ४६ पीछे पार्थिव ऐश्वर्यको चारोंतरफसे सेवनेवालायोगी मूर्तिवाले धातुओंसे मारा जाताहै५०अर्थात् शक्ति भाला निस्त्रिंश गदा तलवार हजारहछुर धार ५१ और मर्मको भेदन करनेवाले पैनेबाण इन्होंकरके काटा जाताहै और इनबिकारों करके चारोंतरफ रुकाहुआ ५२ ब्राह्मण निश्चय ऐश्वर्य को प्राप्तहोके सिद्धिको प्राप्त होजाताहै और पार्थिव ऐश्वर्यसे मुक्तयोगी५३समाधिकेनाशमें प्रकटहोके दिव्यगंधको सूंघ दिव्यअर्थोंको सुनताहै ५४ और दिव्यरूप पुरुषोंकरके छेदित नहीं होताहै औरभेदित नहीं और सुकृतियोंकेलोकमें प्राप्तहोजाताहै ५५

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांनवाधिकद्विशतोऽध्यायः२०६॥

दोसौदशका अध्याय॥

बैशंपायनकहनेलगे पीछेअन्यधारणाकोअर्थात् ब्रह्मकर्मसमारंभ को प्राप्तहो १ और मनकरके सबांग धारणाकोकर और निर्मुक्तरूप अंतरात्मारूप ब्रह्मयोग करके ब्रह्मामनमें प्रजाको रचताहै२अर्थात्

नेत्रकरके रूपसेसंपन्न अप्सराओंको रचताहै और नासिकाके अग्र भागसे चित्रवस्त्रोंवाले३ और नृत्यवादित्र सामगीत इन्होंमें कुशल और तुंबरु आदिनामोंसे विख्यात ऐसेलाखोंगंधर्वोंको रचताहै४और योगको जाननेवालाब्रह्मा ब्रह्मयोगकरके सुंदर नेत्र केश भृकुटी मुख वाली५ और सौ १००पत्तोंवाले कमलसेशोभित और पवित्रवाणी वाली और सेवनेकेयोग्य और मूर्त्तिवाली ऐसीब्राह्मी लक्ष्मीको६ सब प्राणियोंका भूतात्मा ब्रह्मा सम्यक् चित्तकरके और भावयोग करके और मनकरके रचताभया ७ और नेत्रोंसेरूपसंपन्न अप्स-राओंको रचताभया और नासिकाके अग्रभागसे गंधर्वोंको और बाजे बजानेवालोंको रचताभया८और गंधर्वोंकेवास्ते गानविद्याको और ब्राह्मणोंकेवास्ते साम आदि वेदोंकेगानेको मन आदिकोंसे रच ताभया ९ और पैरोंकरके गतिवाले जीव नर किन्नर यक्ष पिशाच सर्प राक्षस १० हाथी सिंह व्याघ्र मृग इन आदि हजारहों जाति योंको और तृण आदिकोंको और बहुतसे चतुष्पदजीवोंको ब्रह्मा रचताभया ११ और जो प्राणीहाथोंमेंलेके भोजनकरतेहैं तिन्होंको कर्महेतुकरके ब्रह्मा अपनेहाथोंकरके रचताभया और मनकरकेरच ताभया १२ और प्राण आदि रूपोंकरके ऐसे अनेकप्रकार रचके फिर पंचेंद्रियोंकी समाधिमें स्थित मुक्तहुआ ब्रह्मा रहताहै १३ और हृदयसे ब्रह्मा गायोंको रचताभया और बाहुओंसेपक्षियों को रचताभया और जलसे उपजनेवाले सत्वोंको अर्थात् जीवोंको अनेक प्रकारके भेदोंसे अलगअलग रचताभया १४ और प्रज्वलिततेजवा ले और ब्रह्मवंशको करनेवाले और दिव्य और इन्द्रियोंको वशमें करनेवाले ऐसे अंगिराऋषिको १५ योगेश्वर ब्रह्मा भृकुटियोंके मध्यसे जन्माताभया पीछे ब्रह्मवंशको करनेवाला और दिव्य और गुरु और परमधार्मिक १६ और प्याराहै विग्रह जिसको ऐसे नारदको ब्रह्मा अपनेमस्तकके मध्यसे रचताभया और सनत्कुमार जीको ब्रह्मा अपनेशिरसे रचताभया १७ और अभिसिक्त और ब्राह्मणोंकाराजा और निरंतर रात्रिकास्वामी ऐसे चंद्रमाकोब्रह्मा

जो युवराज बनातेभये १८ और अति तपकरके युक्त और ग्रहोंमें मुख्य ऐसा चंद्रमा अपनी कांतिकरके आकाशके मध्यमें बिचरता भया १९ सो योगसे गात्र और मनकेद्वारा सिद्धिको प्राप्तहुआ ब्रह्मा स्थावर और चररूप सब जगत्को रचताभया २० तहां प्राणियोंके स्थान और नानाप्रकारके योग इन्होंको ब्रह्मा युक्त करताभया २१ यह ब्रह्ममय यज्ञ और योग और सांख्य और विज्ञान और स्वभाव क्षेत्र और क्षेत्रज्ञ २२ एकत्व और पृथक्त्व संभव और निधनकाल और कालक्षय इन्होंका रूप यही ब्रह्मा है २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांदशाधिकद्विशतोऽध्यायः २१० ॥

दोसैग्यारहका अध्याय ॥

जनमेजय कहने लगा युगोंमें प्रथमरूप ब्रह्मयुग मैंनेसुना और हे ब्रह्मन् १ अब संक्षेपसे सहित और बिस्तारवाला और बहुतसे नियमोंसे युक्त और उपाय यज्ञोंसेकथित और कर्त्तव्योंसे शोभित क्षत्रयुगको श्रवणकरनेकी इच्छाकरताहूं २ वैशंपायन कहनेलगे कि यज्ञकर्मोंसे अर्चित और दान धर्म और नानाप्रकारकी प्रजासेउप- शोभित ऐसे क्षत्रयुगको तेरे अर्थ कहताहूं ३ और सूर्यकी किरणों से अर्दितहुये अंगुष्ठमात्र मुनि मोक्षप्राप्त बिधिकरके प्रलय को प्राप्तहो४ यज्ञादिकोंमें प्रवृत्त और शमादिकोंमें प्रवृत्त और ब्रह्मपरा- यण अर्थात् एक वेदकी शरणहुये अर्थात् वेदोक्त कर्मोंमें तत्पर ५ और बित्तमें संपन्न और श्रीसंज्ञक साम यजुर्वेदोंकी ऋचाओं से संपन्न और ब्रह्मज्ञानसे संपन्न ऐसे ब्राह्मण पीछे हजारहों युगोंके अंतमें बित्तसे संपन्न और ज्ञानसे सिद्ध और समाहित ऐसे वे ब्राह्मणअग्रिम अर्थात् अगिलेकल्पमें वेही ज्ञानरूप ब्राह्मण उत्पन्न हुयेहैं तिन्होंमेंसे व्यतिरिक्त इन्द्रियोंवाला और योगात्मा और ब्रह्मासे उत्पन्नहुआ ऐसा दक्षप्रजापतिहोके नानाप्रकारकी प्रजा- ओंको रचताहै और शुद्ध सत्त्ववाले ब्रह्मसे सौम्यरूप ब्राह्मणहुये और सत्त्व और रजोगुणवाले ब्रह्मसे क्षत्रियहुये और रजोगुणरूप

ब्रह्मसे वैश्यहुये और तमोगुणरूप ब्रह्मसे शूद्रहुये ६ ऐसे सतोगुण रजोगुण तमोगुणकर इन गुणोंकरके ईश्वरके चिंतवनसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र १० इन जातियोंसे बिख्यात चारिबर्ण पैदाहुये हैं सो येचारिवर्ण कहातेहैं ११ और एक चिह्नवाले और पृथक् धर्मोंवाले और दो पैरोंवाले और कर्मफलके भोगके अर्थ संपन्न और सबकर्मोंमें गतिको जाननेवाले १२ ऐसे ये मनुष्य बर्णभाव को प्राप्तहुये और ब्राह्मण क्षत्रिय बैश्य इन तीनोंबर्णोंको वेदोक्त क्रियामें अधिकार कहा १३ कर्मोंमें अनुगतहुआ और दक्षप्रजापति रूप ऐसा बिष्णु भगवान् के चित्तसे उत्पन्न १४ और निर्माण से उत्पन्नहुये और कर्मसे बर्जित ऐसे शूद्रहुयेहैं इसवास्ते वे शूद्र वेद के अध्ययन और संस्कारको नहीं प्राप्तहोसक्ते१५और जैसे अरणी केमथनेसे उपजा अग्निकर्ममें युक्तकियाजाताहै और अन्य नहीं१६ तैसे पृथ्वी में समग्र जन्म करके असंस्कृत शूद्र कहेहैं और वेद संस्कृतकर्ममें युक्त नहीं है १७ और ब्रह्मकीयोनि और बलवाले और महाउत्साहवाले और महाबीर्यवाले और महापराक्रमवाले ऐसे दक्षके पुत्र अन्य भी होतेभये १८ तब दक्षकहनेलगा हेपुत्रोमैं तुम्हारेमुखसे तुम्हारी माताकेसिद्धांतको सुननेकी इच्छाकरूंहूं१६ क्योंकि मैं जाननेको समर्थ भी हूं परंतु तुम्होंको मेरे समान रहनाचाहिये और तुम्हारेसे तुम्हारी माताके सिद्धांतकोसुन और तुम्हारे बलाबलको जान प्रजाको विपुल बल प्राप्त करूंगा २० और विपुल मायाकेसारको जाननेवाले दक्षके पुत्रोंको जननेवाली माता नेत्रोंसे रूपको नहीं दिखातीभई २१ और तिन दक्षप्रजापति के पुत्रोंको शुद्ध सत्त्वमय भावमें चेतनकरके प्रेरितहुई माया सब भूतोंको और अंडज और स्वेदजोंको जनातीभई २२ और कर्म के भोगनेवाले जंतुओंको सूक्ष्म और बिस्तृतभावसे चेतनकी प्रेरीहुई माया प्राप्त करती भई २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांएकादशाधिकद्विशततोऽध्यायः २११॥

—*—

दोसौबारहका अध्याय॥

जनमेजय कहनेलगा कि हे ब्राह्मणोत्तम केवल प्रवृत्त्यात्मक यज्ञादिरूप धर्ममें जिसको जानके सब बिद्याओंका प्रतिपाद्य और अबिनाशी है तिसको सुननेकी इच्छाकरताहूं १ बैशंपायन कहनेलगे कि योगकरके दक्षप्रजापतिकी आत्मासे उपजी स्त्री अर्थात् माया को वह दक्षप्रजापति योगकरके स्त्रीभावको प्राप्तहो २ अर्थात् सुंदर गोड़ोंवाली और पुष्ट पींडियोंवाली और सुंदर भृकुटियोंवाली और कमलके समान मुखवाली और लालरूप नेत्रोंवाली और सब प्राणियोंके मनोंमें रमनेवाली ३ ऐसी स्त्रीमें दक्षप्रजापति कमलके समान मुखवाली वहुतसी कन्याओंको जन्माताभया ४ पीछे स्त्रीभावकोत्याग और पुरुषभावमें दक्षप्राप्तहुआ पीछे उनकन्याओं को ब्राह्मय बिवाहको बिधिसे ५ धर्मके अर्थ दश और कश्यपकेअर्थ तेरह और चंद्रमाके अर्थ सत्ताईस ६ ऐसे पत्नीभावसे कन्याओंको देके ब्रह्माजीके उत्सवके योग्य और पवित्र ७ ऐसे प्रयाग अर्थात् अध्यात्मक्षेत्रमें समाहित मनवालाहोके तृण मूल फल तप इन्हों से वारंवार वृद्धिकोप्राप्तहुआ८और तपस्वीहोके मृगोंकेसंग पृथ्वी में बिचरताभया तिसके तपकरके ९ मृग प्रसन्नहोतेभये और दीक्षित और पवित्रकर्मकरनेवाले और तपकरके दग्धभया१०पापों वाले ऐसे ब्राह्मण फलको प्राप्तहोतेभये और संग्रामकालमें काल को जाननेवाला और शरीर आदिकोंकेपति ऐसा मुनि कर्म यज्ञकृत् लक्षणोंवाली सिद्धिको देखनेलगा ११ और दानमानसे युक्त और उद्वेगसे रहित और मांसको त्यागनेवाले और तपस्वी औरपत्नियों करके सहित १२ ऐसे मुनि मृगोंके संग वृद्ध अवस्थाको प्राप्त होतेहैं अर्थात् इस देहको ब्रह्मक्षेत्र संज्ञक करतेहैं १३ और कर्मों से मुक्त और क्रोधसे रहित और जितेंद्रिय और अकिंचन मार्गकी इच्छा करनेवाले और पृथ्वीमें बिचरनेवाले १४ ऐसे ब्राह्मणोंने अध्यात्मको प्रयाग कहके वर्णन कियाहै और जो प्रजा

पहले ईश्वरके शरीरमें लय होगईथी सो वही अपने अपने स्वभावों वाली १५ और अव्यक्त और व्यक्तभावको प्राप्त और स्वभाव से दुरतिक्रम ऐसीकालधर्म्मसे फिर प्रकटहोनेलगी १६ अर्थात् स्थावर जंगम स्थूलरूप सूक्ष्म ये कालयोगकरके उत्पन्नहोतेहैं और नष्टहो-जातेहैं १७ सोकालधर्म्मसे संयुक्त यह सबप्रजा कश्यपजीकेसकाशसे दक्ष प्रजापतिकी कन्याओंमें उत्पन्नहुईहै १८ और बारहआदित्य आठ वसु ग्यारह रुद्र विश्वेदेवा मरुद्गण अनेक शिरोंवाले सर्प साध्य साधारणसर्प १९ गंधर्व किन्नर यक्ष पक्षि गरुड़ और यक्षों सहित किन्नर २० और गायआदि सब पशू और मनुष्य चर और अचर पृथ्वीको धारण करनेवाले २१ अर्थात् पर्वत और हाथी सिंह व्याघ्र घोड़े पक्षी गैंड़ा सींगोंवाले बैल मृग २२ चारसींगोंवाले और सब लक्षणोंसे संपन्न कामरूपी प्राणी ऐसे उपजेहैं २३ तिन्हों के रूप और अंग शील पराक्रम इन्हों करके सनातन ब्रह्मक्षेत्रमें मुनि उपजेहैं २४ और मनुष्यलोकमें धर्मवाले और वेदगोचर ऐसे ऋषिहोतेहैं और जहां उत्पन्नहुये देवते स्वर्गलोकमें प्रतिष्ठित हुये हैं २५ और तपसेसिद्ध गृहस्थी और ब्रह्मचर्यसेयुक्त ऐसे गृहस्थी गुरुकी टहलमें प्राप्तहुये २६ और जो सिद्धहेतुकेवास्ते योगगतिको प्राप्त होतेहैं वे कर्म जन्यवृत्तिको प्राप्तहोतेहैं २७औ कितनेकशिलो-ञ्छवृत्तीवाले और सपत्नीक और दृढ़व्रतोंवाले मुनिहोके आकाश में विचरने लगे २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्वादशाधिक द्विशतोऽध्यायः २१२ ॥

दोसौतेरहका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि ब्रह्माजी को अगाड़ीकर जटा और अजिनको धारणकरनेवाले और क्रोधकोत्यागनेवाले और इन्द्रियों को जीतनेवाले ऐसे मुनिजन १ पर्वतांतरोंसे संसिद्ध और बहुतसे वृक्षोंसे आच्छादित और धातुसे रंगीहुई शिलाओंवाली और समान

और तृण और कांटोंवालीसे रहित ऐसीपृथ्वी में स्थितहोते हैं २ और तीन वेदोंके पंचस्वरों से बिराजित ऐसे मेरुपृष्ठपै सावधान होके मंत्रयज्ञको बिचारनेके अर्थ स्थितहुये नित्यव्रतमेंरतरहतेहैं ३ पीछे सब ब्राह्मण एक अग्निको मंत्र बिषयों करके तीनप्रकार से भेदितकरतेभये४इसीवास्ते एकही प्राणाग्नी प्राणायामकेअभ्यास करनेवालेके द्रव्यकरके प्रवृत्तहोताहै ५ और मंत्रोंके कार्यकीसिद्धि के अर्थ स्वधाकारसे प्रवृत्तहोताहै ६ और तहां प्राणियों से सत्कृत और सूत्रात्मा और सब ऐश्वर्योंसे संपन्न और सबोंको रचनेवाला और सब प्राणियोंका पितामह ऐसा ब्रह्मा प्राप्तहुआ ७ और दंड ढाल बाण खड्ग इन्होंको धारणकरनेवाला और शिखि और कमल के समान मुखवाला और संतापसे रहित और क्रोधको त्यागने वाला और इन्द्रियको जीतनेवाला ८ ऐसा ब्रह्मामेधाकेसाथ संगत हुआ आत्मतीर्थमें यज्ञकरताहै तहां इन्द्रके कहेहुये सामोंको ब्रह्म-वादी गातेहैं ९ और घृत दूध यव ब्रीही सुन्दर उत्तमघृत यज्ञमें प्राप्तकिया ब्रह्मपदमें प्राप्त होताहै १० और शमी गर्भ से उठीहुई आग्नेयी अरणीको मथके ब्रह्मा तिसमें अग्निके क्रोधको प्राप्तकरता है ११ और जैसे यज्ञकर्ममें अग्नि बिधान किया जाताहै तैसे अल्प द्रव्यकरके तहां अनेक प्रकारके द्रव्योंको और फलों को ब्रह्मबादी मुनि यज्ञमें सबप्रकारके द्रव्यों को प्रयुक्त करतेहैं १२ और तहां छः महीनोंतक चारोंवेदों को बृहस्पतिजी पढ़ते भये तब वह यज्ञ मानों दूसरा ब्रह्मलोक है ऐसे प्रकट होनेलगा १४ फिर सरस्व-तीको प्राप्तहुई बिद्या बृहस्पतिके सब शिष्योंको प्राप्तहोगई १५ और फिर ब्रह्मासे कहा तिस ब्रह्मज्ञान करके वह यज्ञ ब्रह्मलोककी तरह भानहोतीहै १६ और यह यज्ञ ब्रह्माके मुखसे निकसीहै और अनामय ब्रह्मशब्दोंको कहतेहुयेकी तरह बढ़तीहै १७ और समिध और जलके कलशपात्र यव ब्रीही घृत और पूर्णजलके पात्र १८ कर्म में प्राप्तहोनेके योग्य पशू और दूधको देनेवाली गायें और कोमल-रूप बास इन्होंसे युक्त १९ और ब्रह्मसे बढ़ाहुआ और तपसे वृद्ध

और ब्रह्मज्ञानमय और विद्याकेसाथ संगत २० और मरुद्गणोंके सहित ऐसा ब्रह्मा अरणीसे निकासीहुई अग्निके द्वारा यज्ञ करने लगा २१ तेजमूर्त्ति को धारणकरने वाले और तिस यज्ञके कर्ममें युक्त ऐसे ब्रह्माजी वेदप्रोक्त विधिसे२२शमीगर्भसे अग्निको उत्पन्न कर विधिसे यज्ञकर्म करतेहैं २३ और तिस यज्ञमें सदस्यब्राह्मण मधुरवाणी बोलतेहैं और तिन्होंके अनुसार क्रिया करतेहैं२४और तहां कर्म और तप इन्होंसे युक्त वेदऔर वेदांगके पारकोजाननेवाले और सूर्य और चंद्रमाके सदृश ऐसे मुनिजनोंसे युक्त वह यज्ञप्रकाशित होनेलगा २५ और वेदके घोषकरके मानों दूसरा ब्रह्मलोक के समान प्रतीत होनेलगा २६ और वेद वेदांगको जाननेवाले और विनीत और ब्रह्मबादी तपस्वी इन्होंकरके वहयज्ञ मनुष्यलोकमें पूजित होताहै २७ और प्रकाशितरूप तीनिबिप्र और यज्ञने तीनअग्नियोंकी तरह वह यज्ञ ब्रह्मलोकके समान प्रकाशितहै २८ और तिसयज्ञमें इंद्रके कहे सामवेदको और यजुर्वेदको गातेहैं २९ और तपसे शांत और ब्रह्ममें तत्पर और सत्यब्रतमें समाहित ऐसे मुनि तहां प्राप्त होतेभये ३० और तिस यज्ञमें मूर्ति भेद करके होता और ब्रह्मा बृहस्पति होते भये और सब धर्म वेत्ताओं में श्रेष्ठ और पुरातन और ब्रह्म से उत्पन्नहोने वाला ३१ ऐसा यजमान यज्ञके अंतमेंपूजाको बिष्णुके अर्थ समर्पणकरताभया ३२ और नहीं जन्मनेवालाअर्थात् कर्म प्राप्तब्रह्म ब्रह्मबित निर्द्वंद्व और निष्परिग्रह और जिससे हजारों इन्द्र आदि पद हुये और होतेहैं तिस वैष्णव परमपदकोप्राप्तहोताहै ३३ और अवध्य अप्रमेयकर्मों से व्यतिरिक्त ऐसापरमपदहै और तिसब्रह्मके सब मुनिजन आत्मा कहेहैं ३४और रूपआदि सवबिषय रागादिदोषोंसे कल्पित हुये एक कालमें वलसे मनको आच्छादित करतेहैं ३५ और इन्द्रिय ग्राम विषयमें विचरतेहुये मुनिजन परिग्रहको अबिद्या लक्षण कहतेभये ३६ और हेराजन् जो मुनिशब्द करिके ब्रह्मबादियोंसे ग्रहणकिया जाताहै तब विद्यालक्षणके संयोगसे मन आच्छादित नहीं होता ३७

और बेदबिद्या व्रत इन्होंसे स्नातरूप मुनियोंकरके आकाशमें लोक प्रतीतहोतेहैं ३८जहां हब्यसे पुष्टहुये देवते क्षय भावको नहीं प्राप्त होते और अपने भोगोंकरके ३९ दुःखसे रहितहुआ यजमान अपनी पत्नियों के संग आनंदित होताहै और यज्ञकेअंतमें दिव्यदेहको सबभूतोंपै दयाकेअर्थ बिष्णु ब्राह्मणोंके अर्थ देताभया ४० तिस दिव्यदेहको सबउद्यमोंकरकेभी बिभाग करनेको नहींप्राप्त होतेभये ४१ तब सब ब्राह्मणगण परिश्रमसे अभिहतऔर बर्णसे रहित४२ मुखवाले होके पृथ्वीमें स्थितहुये तब वह सद्गुरु सब ब्राह्मणों को मधुरबाणीसे कहनेलगा ४३ कि हे प्रियो आपसमें बिरोध करनेवाले तुम्होंसे बलकरके इसका भेदन दिव्य सौ बर्षोंकरके भी नहीं हो सक्ता ४४ जब अबिरोध करके एकीभूतहुये तुम सब समाहित होजाओगे तब इसकाविभाग करसकोगे ४५ और राग और दोषोंसे संयुक्त बल घटता रहताहै और राग और दोषोंसे विमुक्त ब्रह्म बढ़ाकरताहै ४६ जब मैं स्वर्गको भेदनकरनेवाले और शिलाओंसे फेंकेहुये और चलनेवाले धातु और गिरनेवाले शिखर इन्हों करके भेदन करूंगा ४७ और बिशीर्ण रूप छिद्रोंकरके और गलित रूप नागोंकरके और बहुतसेसर्पोंकरके प्रेरितहुआ मैंहूं ४८ ऐसे तिसके बचनको ग्रहणकर वे सब ब्राह्मण मौनको धारण करतेभये ४९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रयोदशाधिकद्विशतोऽध्यायः२१३॥

दोसौचौदहका अध्याय॥

वैशंपायन कहने लगे कि तबसे लगायत तिन ब्रह्मबिदोंके ब्रह्मवादियों करके कर्म भूतलमें १ बलि और होम और देवताकी पूजा नित्यप्रति बढ़तीरहतीहै २ और तृणकंटक आदिसेरहित, ऐसेब्रह्मसदनमेंइन्धन और तृणआदिसे बिस्तृतबिंध्यपर्वतकेसमीपमें ३ भगवत्की क्रियाकोदेख तपकीइच्छाकरनेवाले और महाभाग और ब्रह्मचर्यब्रतमेंस्थित४ऐसे मुनिजनबसतेहैं और गृहस्थधर्ममें रत क्रोधकोजीतनेवाले ५ बनके कर्म और फलोंमें रत और अग्निहोत्र ब्रतमें युक्त और

समाहित ६ और दैवकर्म करके युक्त चीर और बक्कलको धारण करनेवाले और जितेन्द्रिय ७ और ब्रतको धारणकर ब्रह्मचर्यको करनेवाले ऐसे यती परब्रह्मकी आकांक्षा करतेहैं इसबिधिकरके हे-राजन् पूर्वले ब्रह्मबादियोंकरके ८ आचरित संस्कारको प्राप्तहुये हैं और वेदको नहीं जाननेवाला गृहस्थधर्मको नहीं प्राप्तहोसक्ता है ९ और गृहस्थधर्मके बिना संन्यस्तको धारण नहीं करसके और त्यागकरके गृहस्थधर्मको नहींत्यागै १० और बेदके संचयको प्राप्तहुयेबिना स्थानको नहींप्राप्तहोवे ११ और पुत्रवालाहोकेगृहस्थ धर्ममें सदा रहनाचाहिये और तपमें श्रांत ब्राह्मणोंको गुरुकीपरिच-र्यामें रहनाचाहिये १२ और जिसने हेराजन् बेद नहींसुना और नहीं हितकिया ऐसे ब्राह्मणको धार्मिक राजा शूद्रकर्म करावै १३ और जो प्रथमहीं ब्राह्मण ब्रह्मचर्यऔरबेदका नहीं आदरकरे उसको राजा शूद्रही बनादेवे १४ और भूतिसे संपन्न और अपनी भूतिकी इच्छा करनेवाला ऐसा ब्राह्मण बेदपूर्वक सब इन्द्रियोंके आरंभों को सम्यक्प्रकारसे आचरण करै १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांचतुर्दशाधिकद्विशततोऽध्यायः२१४॥

दोसौपंद्रहका अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे वे नारद आदि गंधर्व और ऋषि बेदप्रधा-नवाणी और ब्राह्मण और रजकीप्रकृतिवाले ऐसेब्राह्मण १ अमावा-स्या और पूर्णमासी को अगाड़ीकर ब्राह्मण और देवते ऋषि इन्हों को दक्षिणाओं करके पूजतेहुये यज्ञमें २ ब्राह्मणकी पूजाके क्रमकर-के ब्रह्माजीकोभी पूजतेभये पीछे सबभूतोंको हितकेदेनेवाले और पांचों इन्द्रियों को निश्चलकरनेवाले और सबभूतों से प्यार करने वाले ३ ऐसे वचनोंसे स्तूयमान ब्रह्माभद्रहै ऐसे कश्यपको कहके ४ फिर कहताभया कि हेपुत्र तूभी पुत्रोंकरके पृथ्वीतल में पूजाको प्राप्तहोवेगा ५ और वर दक्षिणाओंवाले यज्ञोंकरके दैत्य और देवते आपसमें पहले हम यज्ञकरें और पिताको पूजें ऐसे कहते हुये ६

और बलसे गर्बित और आपसमें जयकी इच्छा करनेवाले ऐसे देवते७ और दैत्य बड़ीबड़ी भुजाओंको धारणकरेहुये युद्धकरने लगे ८ और तप करके दग्धपापोंवाले और वेद वेदांग के पारको जाननेवाले ऐसे ऋषियोंने निवारणभी किये६ परंतु देवते और दैत्य इस बिषयमें युद्ध करनेलगे जैसे गोकुलमें बैल पीछे युद्धसे संक्रांत हुये १० और जीतके चाहनेवाले ऐसेहोके सब प्राणियों के देखते हुये मृत्युकेबिषयमें प्राप्तहुये पीछे अति शब्दकरके महाबलवाले११ बाहुओं करके रोकतेभये तब पृथ्वी चलायमान होनेलगी १२ जैसे घनेपुरुषोंसे आक्रांत नाव जलमें तैसे और जैसे हस्ती शब्द करते हों तैसे पर्वत फूटनेलगे १३ और पवनसे ताड़ित सबनदी क्षोभको प्राप्त होनेलगीं पीछे मधुदैत्यका और बिष्णुका आपसमें १४ प्रलयको करनेकी तरह और घोर और सबप्राणियोंको भयकाकरनेवाला ऐसायुद्धहोनेलगा तब बिष्णु बलवाले दैत्यको मथताभया १५ जैसे प्रकाशित अग्नि जलसे शांतहोजाता है तैसे बिष्णुसे मधुदैत्य शांतहोनेलगा १६ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायां पंचदशाधिक द्विशतोऽध्यायः २१५

दोसौसोलहका अध्याय ॥

वैशंपायनकहनेलगे पीछे भीमपराक्रमवाला औरअतिबलवाला मधुदैत्य फांसोंकरके पर्वतके बीचमें महेन्द्रको बांधताभया १ और प्रह्लाद के बचन से भविष्यरूप इन्द्रके ऐश्वर्यकी आकांक्षा करता हुआ और लक्षणोंको जाननेवाला ऐसा मधुदैत्य २ और मर्मभेदन करनेवाली फांसीसे भिन्न फासियोंसे लोहसे युक्तोंसे इन्द्रको बांध ३ अग्रणीहोके बिष्णु और महादेवको कालके बशहुआ बुलाताभया४ पीछे द्वैधीभूत हुये काश्यपेय मधुके बशमें प्राप्तहो नानाप्रकार की गदाओंको ग्रहणकर युद्धकेअर्थ भागनेलगे५ और गीतमें औरबाद्य में कुशलरूप गंधर्व और किन्नर नाचनेलगे और गानेलगे और

हंसनेलगे ६ और मधुरबाणीसे युद्धकरतेहुये मधुके मनको कंपाने लगे ७ मधुदैत्यके विकारके वास्ते ब्रह्माजीके नियोग से सत्यवादी गंधर्वइनविकारोंको करतेहैं ८तब तिसगांधर्व विद्यामेंमधुदैत्यकामन शक्त होगया और सब दानव प्रत्यक्ष नादकरतेभये ९ पीछेमधुकेमन कोप्राप्तहो और योगरूप नेत्रकरके देखतेहुये विष्णु अंतर्हित होगये जैसेकाष्ठमें अग्नि१०और ब्रह्माजीको अगाड़ीकर कछुक दुःखितमन वाले ऋषिजनभी क्षणभरमें अंतर्हितहोगये ११ तब मधुकेसमाननेत्रों वाला मधु विष्णुको मुक्कासे शंखदेशके समीपमें मारताभया परंतु कछुभी विष्णु कंपायमान नहींहुआ १२ तब बिष्णुहाथके अग्रभाग करके दैत्यकेअस्तनोंकेबीचमें मारताभया तबगोड़ोंसे दैत्य पृथ्वीमेंप- ड़ा और रुधिरकोथूकनेलगा १३ तबबाहू युद्धकेसमयको माननेवाला विष्णुपतितहुये दैत्यको फिरनहीं मारताहुआ १४ पीछे क्रोधसेयुक्त और नेत्रसे दग्ध करताहुआकी तरह मधुगोड़ों के द्वारा महीतलसे इन्द्रध्वजकी तरह उठ १५ कठोरवाणीसे गर्जनेलगा तबफिरदोनों दैत्य और विष्णु गर्जतेहुये दृढ़ प्रहारों करके आपसमें बाहुयुद्धके द्वारा शोभित होतेभये१६और दोनोंबाहुबलवाले और दोनों युद्धमें विशारद और दोनोंतपसे शांतरूप और दोनों सत्यपराक्रमवाले१७ और दृढ़ प्रहारवाले और शूरवीर और आपसमें खींचतेहुये जैसे पंखोंवाले पर्वत युद्धकरतेहों तैसे१८और आपसमें पृथ्वीमें खींचते हुये और बमन करतेहुये हाथियोंके दांतके मारनेकी तरह नखाग्र भागकरके युद्ध करतेभये १९ पश्चात् वृणोंके द्वारा बहुतसारुधिर तिन्होंके शरीरसे निकसताभया जैसे बर्षासमयमें जलसे पर्वत में से धातु वहके आवतीहो तैसे २० तब शरीरसे झिरतेहुये लोहूसे भीजेहुये दोनोंपैरोंके अग्रभागसे पृथ्वीका बिदारण करनेलगे२१ पीछे आपसमें अनेक प्रकारसे प्रहारकर मांसके अर्थ जैसे दोपक्षी लड़तेहैं तैसेयुद्ध करतेभये २२ तब आकाशमें सब भूत सिद्धोंकेमुख से कहीहुई और उत्तमवर्णोंकी संपदासेयुक्त २३ ऐसी स्तुतिको सुनते भये और धातुसे संयुक्त शरीर और चेतनासे संयुक्त २४ ब्रह्म और

तेजोभूत और सनातन ऐसे ब्रह्मको सबप्राणी स्थितहोतेहैं२५ फिर सूक्ष्मरूप और अनेकरूपभाव सब भूतोंमें उपजताहै और तीनोंलोकोंमें कामनाका देनेवाला २६ और स्वरूप ऐसा ईश्वर बहुतरूप वाले लोकोंमें बसीहोके बिचरताहै और मनुष्यके शरीरको प्राप्तहो बहुतसे कारणों करके २७ योगात्मा पीछे शेषनाग रूप होकरके पृथ्वीको धारण करताहै ब्रह्मरूप परमरूप ईश्वर २८ वेदमयरूप करके ब्राह्मणोंको प्राप्तहो बसताहै और युद्धमयरूप करके क्षत्रियों को प्राप्तहो बसताहै और प्रदानकर्म करके वैश्योंको प्राप्तहो बसता है और परिचार कर्म करके शूद्रोंको प्राप्तहो बसताहै २९ और दूध के देने करके गायोंको प्राप्तहो बसताहै और यज्ञोंमें प्रोक्षण कर्मके द्वारा अश्वोंमें बसताहै और भोजनके गरमभागमें प्राप्तहो पितरों के अर्थ बसताहै और देहभाग करके देवताओंके अर्थ बसताहै ३० और चारि व्यतिरिक्त अंगवाले और तीन अन्य अर्थात् मनोबाक् प्राण और सात अन्यपितर इन्होंकरके नित्य त्रिलोकीकी रक्षाकरते हो ३१ और तद्रूपहुये नित्य चंद्र सूर्यात्मकहो और प्रकाश और अप्रकाशको अपने तेजकरकेलहको रखतेहो ३२ और तीनपितरनित्य प्रति सूर्यको बढ़ातेहैं और चारिपितरोंसेमंडलमें चंद्रमाबढ़ताहै ३३ और तीनपितर नित्यपिंडों को ग्रहण करतेहैं और चारिअन्यपितर और पांचपितर अर्थात् पांचइन्द्रियों के बिषय येसब आत्मता कर के देहादिकोंकी प्राप्ति करतेहैं ३४ सो ईश्वरके प्रतिकहतेहैं कि हे बिभो तुमहीं तिनपांच धर्मोंके रूपहो जैसेसुबर्णके कुंडलादिक होवें तैसे और शाश्वतहो ब्रह्मसंभवहो ३५ इसवास्ते तिसतेजको ग्रहण करतेहो और सब प्रकार करके अग्नि और बायु रूपभी तुमहो सो आदित्य रूपभी तुम्हींहो ३६ और अपनी किरणों करके जगतको दग्ध करताहुआ की तरह युगांतकाल में परम सिद्धिको प्राप्तहुआ है ३७ और पक्ष की संधि में और अमावास्या में सूर्य चंद्रमा बसु इन्होंकेसंग गूढ़ात्माहोके मानुष लोकमें बिचरता है ३८ और फल सहितकर्मको करताहुआ और यज्ञवालोंकी पुष्टीको बढ़ानेवालाऐसा

कर्मविपर्यय हेतुओंके विकारकेअर्थ मतहो ३९ और बनस्पति और ओषधियों को एक कालमें प्राप्तहोताहै और बालभावके अर्थ पृथ्वी विषे पक्षपक्षमें तेरी उत्पत्तिहै ४० पृथ्वी में भूतोंके होने के अर्थ जो कछु द्रव्यहै वहसब सर्व तत्त्वमय है ४१ और तूही नानाप्रकार के शाश्वतधर्महै और तूही देव यज्ञहै और तूही मंत्रवाक्यहै और तूही आत्मयज्ञहै और तूही मनुष्ययज्ञहै ४२ और दोप्रकारका स्वर्गमार्ग भी तूहीहै सूर्य और चंद्रमाभी तूहीहै पितृयान और देवयानभीतूही है ४३ और बसुधा में युक्त सीमा करके विश्वमें बिचरने वाला भी तूहीहै ४४ और सबगणों को एकीकार कर और परलोक में फेंक और पुराण पुरुष बिराट अक्षय अप्रमेय कामकार करबसी ४५ इन नामोंवाला अकेलातूही है और तेजमें प्रकाश करनेवाला तूहीहै और आकाशचारीबायु भी तूहीहै और सातरूपों करके नित्यप्रति आच्छादितभी तूहीहै ४६ और साधन निर्माण संहार प्रलय धारण काल इन्होंमें सत्यवादी ४७ और जितेंद्रिय और बिगत पातकवाले ऐसेमुनि गणोंसे सेव्यमान तूही है ४८ और नानाप्रकारकी स्तुतियोंसे स्तूयमान हयग्रीव रूप तू अपनेदेहका स्मरण करताभया ४९ तब वेदमयरूप हुआ और सर्व देवमय शरीरहुआ और शिरके मध्यमें महादेव और हृदयमेंब्रह्मा ५० और सूर्यकी किरणवालाहुये और सूर्य और चंद्रमा नेत्रहुये और वसुओर साध्य जंघाहुये और सबसंधियों मेंदेवते स्थितहुये ५१ और अग्नि देवजीभहुआ और सत्यादेवी वाणी हुई मरुत और वरुण जानुदेशमें स्थितहुये ५२ ऐसे अद्भुत रूपको कर क्रोधसे लालनेत्रोंवाला तू मधुदैत्य को पीड़ित करताभया ५३ तब मधुदैत्यके मेदसे पूरितहुई पृथिवी दीखतीभई ५४ तभी से इस पृथ्वी का मेदिनी नाम हुआ और इसपृथ्वीका मेदिनीनाम हजारहों दैत्योंमें प्रतिष्ठित कियाहै ५५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांषोड़शाधिकद्विशतोऽध्यायः २१६

दोसौसत्तहका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे मधुके निपातको देख सबप्राणि कमलमें प्रवेश कर गानेलगे और नाचनेलगे १ और वह पूर्वोक्त सुंदरपार्श्व वाला गिरि मुख्य अर्थात् दिव्यदेहभी बहुतसी धातुओंसे और शिख रोंसे प्रकाशित होताभया २ और धातुओंके रंगेहुये पर्वतभीशिखर के अग्रभागों करके शोभित होनेलगे जैसे बिजलियों से बद्दल ३ और पक्षवायु से उठीहुई धूली चुन्ना और बालुरेतसे मिलके पर्वत के अग्रभागको आच्छादित करताहुआ महामेघकी तरह प्रकाशित होनेलगा ४ और मेघसे मिलेहुये शिखरोंवाले और पक्षसे फेंकेहुये वृक्षोंवाले और कांचनके उद्भेदसे बहुलित ऐसे पर्वतआकाशमेंस्थित होतेभये ५ और पंखवाले और शिखरोंवाले और सोनाकी धातुओं करके चिह्नित और पवनकरके उद्धत ६ स्फटिक और मणियोंकर के व्याप्तसूर्यकांत और चंद्रकांत मणियोंसे निर्मल ७ ऐसे पर्वतपक्षि योंको त्रासित करनेलगे और श्वेतधातुओं करके व्याप्त और कांचन और शिखर और प्रकाशमान ८ मणि और तांबाके समान रंगवाले शिखर और अपने तेजसे दीप्यमान शिखर इन्हों करके व्याप्तहुआ हिमवान् पर्वत शोभित होनेलगा ९ और उग्रशिखरवाला स्फटिक और मणियोंसेव्याप्त और हीराकी खानिवाला ऐसामंदराचल स्वर्ग के समानरूपहोके प्रकाशित होताभया १० और हजारशृंगोंवाला शिला और धातुओं से प्रकाशित और तोरण निविड़ धूली वृक्ष इन्होंसे व्याप्त ११ और वजानेवाले गंधर्व और गानेवाले किन्नर और अप्सराओंके कटाक्ष इन्हों करके अतिशोभित होताभया १२ और मधुररूप बाद्य और गीतनृत्य और अभिनय और शृंगार और संप्रहार इन्होंकरके कैलाश भी शोभित होनेलगा १३ और सूर्यकी कांतिसे भाषितहुये भिन्नांजनके संचयसमान शृंगोंकरके युक्तनील बद्दलकी तरह श्याम ऐसा बिन्ध्य पर्वतभी शोभित होताभया १४ और मेरुपृष्ठपै स्थितहुये सबप्राणी नाना प्रकारके पानीको उगलते

भये जैसे मेघऔर बहुत चित्ररूप शिलाओंकरके१५और बहुतरूपों
वाली धातुओं करके झरतेहुये गुहाद्वारोंसे स्फटिकके समान कांति
वालाजल होताभया १६ और वर्षाकाल में वायु से आच्छादित
बिजली सहित बादल होतेहैं तैसे चित्रफूलोंकरके वृक्षोंके गण शो-
भितहोनेलगे १७ और सोनाके बिचित्र आभूषणोंकी तरह भूषित
हाथी पक्षियोंकी कांतिकरके लीनहुये लता और वृक्षोंमें समाश्रित
होनेलगे १८ और लंबितहुये और वायुसेहिलतेहुये और फूलोंवाले
ऐसेवृक्ष वैशाख मासकीतरह फूलोंके समूहको छोड़नेलगे१९ और
बलवाले और पुष्टशाखा और स्कंधको धारण करनेवाले और अनेक
वर्णोंवाले ऐसे वृक्षोंकरके पृथ्वी शोभित होनेलगी २० और मधुको
प्यार करनेवाले और मधुसेमत्त ऐसे पक्षिकामदेव के आगमन के
संभवको गावतेहुये झिंगार देनेलगे २१ और मधु को मारनेवाला
विष्णु बहुत जलवाली अंगार बर्णके समान बालुरेतवाली औरमधु
तीर्थनामसे विख्यात २२ और मनोरम और बिमलरूप पानियों से
पूरित फूलोंके संचयको बहानेवाली ऐसी नदीको करतेभये २३ सो
वहनदीब्रह्मवादी और ऋषि और ब्रह्माइन्होंके बचनसे प्रेरितपुष्कर
में प्रवेश करतीभई २४ और धातृ कपिलागायवनके ब्रह्माके बाक्य
सेप्रेरितहुई तिसयज्ञमें मधुरदूधको झिरानेलगी २५ फिरवहपृथ्वी
कुटस्थ वस्तुको धारण करनेमें समर्थभी अपने उपादान जलकेप्रति
प्राप्तहोके गतवतीहोगई तबयोगी ब्रह्मानिर्बिकल्पसमाधि करकेआ-
त्माकोभजताहै २६ और वेदवाणीसे समुद्भूत ज्ञानमात्र औरअज्ञान
विरोधी और ऐसाब्रह्मसर्वदा आकाशमें स्थितहै अर्थात् आकाशभी
उसके आश्रयहीहै २७ और सुंदर रूपवाली और धर्म को जानने-
वाली और अजारूप करके आच्छादित करनेवाली और तपसेयुक्त
चित्तकरके २८ ऐसी वहनदी और सन्मात्रलेशसे मुक्त अर्थात् अहं-
कारादिकोंसे जाग्रत् अवस्थामें संत्की तरहभान ऐसा महान् पर्वत
शाश्वतरूप सिद्धजनोंसे सेवितहै २९सोनाके बर्णकेसमान रूपको
साक्षात्कार करनेलगी और चित्ररूप वेदिकाओंकरके और पांचप्र

कारकी धातुओं करके आवृत ऐसावह पर्वतहै ३० और तिसपर्बत का रूप पांचधातुओं से युक्तहै और चेतनासे संपन्न और रूपकरके अद्भुतदर्शनवालाहै ३१ और मनकरके मैं ऐसे करूंगा ऐसे धर्मचारी और नानाप्रकारके रूप और पार्थिवी चेतना इन्होंकरके ३२ और पांचधातु लक्षण अर्थात् इंद्रियादिकोंकरके तीनलोकों में प्राप्तहूंगा और छठामनकरके धर्मचारी बिद्या अर्थात् मायारचीजाती है ३३ और संगोंमेंभाव और मोहकरके सब संगों से बिमुक्तहुये मेरे को देखेंगे ३४ और कामरूप मनवाले मुझको मनकरके कोई जानेगा नहीं क्योंकि पंचधातु अर्थात् पंचेन्द्रियों करके अनेक प्रकार की प्रेरणाओंसे बंधरहे हैं ३५ और जो अनेकप्रकारसे बिष्णु का ध्यानकरेंगे वे तपकरके दग्धपातकोंवाले प्राणी मेरेको देखेंगे ३६ और धर्ममार्गमें स्थितहुये जो मेरेविषे प्राप्तहोवेंगे वे स्वर्गको जीत के ग्लानिसेरहितहोके मेरेको स्वर्गमें देखेंगे ३७ और जो मेरुपृष्ठ पै प्रांशुरूप पर्बतहै तिसपैचढ़ युद्धकरो और प्राणोंके त्यागमें निर्म हों ३८ और अप्सराओंसे समागमकर मनरूपी वेगसे नंदनबन और काम्यक बनको प्राप्तहो ३९ और इसबिद्याको प्राप्तहुये मेरे भक्त अनेकप्रकारके ब्रतोंसे शरीरको छोड़देवेंगे ४० और सिद्धिको प्राप्तहो बहुतप्रकारके कामोंकरके इसलोकमें और परलोकमें सुख पूर्बक प्राप्तहोवेंगे ४१ और समाहित योगीजन तपके वृत्तांत से प्रभावको दिखातेहैं और गौरी अर्थात् पराब्रह्मबिद्या तीनोंलोकोंमें सिद्धहै ४२ और वे योगीजन ज्ञानवृत्तिमें रहनेसे धातु निर्मुक्त अर्थात् तिन्होंका बंधछूटजाताहै औरवे ज्ञानहोनेसे निरालंभहै ४३ और जैसे हजारगुणीकरदेके राजाकी प्रीतिहोनेसे बंधसेछूटजावे है तैसेही ब्राह्मणोंके शुद्धमन अर्थात् कामरहित मनकरके फिर दान कर्मकरनेसे छूटजातेहैं ४४ और सर्बज्ञ धर्मज्ञपुरुष अत्यंतदुःखहारी परमेश्वरकी प्रीतिसे सबमें उत्तमफलको प्राप्तहोतेहैं ४५ और ब्राह्मणकरके यज्ञकरानेवाले यजमानादिक और वे ब्राह्मणभी पूर्बोक्त फलको प्राप्तहोतेहैं ४६ तदपि दान यज्ञमें और गौरी अर्थातब्रह्म

विद्यामें भेदहै क्योंकि वह मानसहोनेसे अनंताहै ४७ और अवि द्याका दूरकर ज्ञानका उपजाना यह सत्यरूप धर्म कहाहै इसमें संशय नहीं ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांसप्तदशाधिकद्विशतोऽध्यायः २१७॥

दोसौअठारहका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे मोक्ष अवस्थाको प्राप्तहोनेवाला धातुनि-श्चयरूप शरीरमें और पर्वतरोध अर्थात् नाशिकाकामूल और भृकु-टियोंकी संधिमें १ परमधर्मात्मा विष्णु एक पैरसे स्थितहुआ दश हजार बर्षोंतक आत्मामें २ आत्माको तपसे स्थापितकर मोक्षके अर्थ चेष्टाकरताहै ३ और भस्मसे अंगोंको आच्छादितकर प्रका-शितहुआ सोम नौहजार बर्षोंतक अपने तेज करके ४ तारागणों को प्रकाश करते हुये और जगत् पालते हुये आकाश के बीच में वे योगात्मा भगवान् स्थित होतेहैं ५ और सोमके अर्थात् चंद्रमा के विषयका अधिकार करके और मनसे मनको धारणकर योगा-त्मा और परम धर्मात्मा बृह्मको सिद्धिको उपागत होताहै ६ फिर सोमात्मक होने से नानाप्रकार के रसों से प्राप्तहो पृथ्वी में और आकाश में कर्मप्रकाश नक्रिरूप स्थित रहता है ७ और अतिगू-ढ़ात्मा वह भगवान् शिवरूपहोके वृषरूप अर्थात् धर्मरूपसे स्थित रहताहै और निष्काम जपादिक पादको आगेकर और बायुको भ-क्षण करताहुआ समाहित अर्थात् स्थित रहताहै ८ और बृह्म संभ वह महादेव नियमकरके नवहजार बर्षतक नियमसे समाहित रहता है ९ अब योगज धर्म से विश्वको द्योतन करते हुये वृष-रूप शंकरसे मेघकी उत्पत्ति कहतेहैं पश्चात् तिस शिवजीके अंतर घनीभूत अर्थात् निपीड़ित रुईकीतरह कठिनी भूतहुआ बायुहोताहै तबफेनीभूत बायुको मुखसे बाहिर निकासतेहैं १० तब प्राणसे उद्गारित बायुकरके अन्यरूप निर्य्यास अर्थात् वृक्षमद होके गिरता भया और वह गीलाभीनहीं और पार्थिव अर्थात् पाषाणादिकोंकी

तरह शुष्कभीनहीं ११ फिर शिवके मुखसे निकसाफेन अर्थात् चर्म कोशाकार जलकोग्रहणाकर आकाशमें बिचरताभया और कछुगीला नहीं और कुछ शुष्कभीनहीं ऐसा बायुका संघात प्राप्तहोगया १२ और पश्चात् बायुजलके सहित फेनको उत्क्षिप्य अर्थात् उठाकेआ-श्रयसे रहित आकाशमें प्राप्तकरताहै फिर वे बादलहोजातेहैं १३ फिर अपनेही रूपकरके घनत्वको प्राप्तहुये और नीलबर्णको प्राप्त हुये वे मेघसूर्यकरके घनीभूत जलवालेहोतेहैं १४ और पश्चात्स्वस्थ और सब जगह बिचरनेवाला वायु ब्राह्मणशरीरको धारणकर एक हजारबर्षतक बिपुलतप करताभया १५ और अग्नि बहुतजटाओंको धारणकर वक्कलोंको धारणकर आहारसे रहितहुआ और मौनको धारण कियेहुये आकाशमें तप करताभया १६ और चार हजार वर्षोंतक यत्नसे तिस अग्निके तप करतेहुये तिनके तेज से महान् अग्नि प्रवर्त्त होताभया १७ और स्वर्गमें वासकरनेवाला औरप्रका शकरनेवाला और ब्राह्मणकेरूपको धारणकर तपकरताभया १८ सो हेराजेंद्र तिसअग्निका तम अर्थात् धुवांपृथ्वीमें मनुष्योंमें स्थित-तहै और तिस तेजकासंहार अर्थात् समूहरूपं उत्कृष्टतमसूर्यहै १९ और हे राजन् सूर्यकातेज आक्षिप्तहोके सब मनुष्यों में बर्तै है और इसप्रकार ब्राह्मण के निरंतर नहीं बर्तता है २० और वह उक्त सूर्य तिस तम अर्थात् धुवांको रात्रि में नाशकरता है और अक्षय पदको प्राप्त करानेवाला द्विनउपासको लब्धहोता है और स्वस्थकुबेरयक्ष आकाशमें स्थितहुआ तपकरता है २१ और शिवजी के शिरसेजि-तनी जलकी धारापृथ्वीमें आती हैं वे सबशरीरोंको प्राप्तहो पृथ्वी में प्रकाशमान होतीहैं २२ और वह कुबेर पृथ्वीमें गोड़ोंसे पतित हुआ अर्थात् सूर्यको नमस्कार करताहुआ हजार बर्षतक आकाश में दीखताहुआ और नेत्रोंके खोलने मीचने करके तहां जगत्कोदे-खताभया २३ और जब सूर्यमध्यमें प्राप्तहोता तबसूर्यकी किर-णोंकरके अनेक नेत्र तिसके प्रकाशमान होतेभये २४ और वे नेत्रों की कांति सूर्यके मंडलसे इसप्रकार प्रकाशमान होतीभई कि जैसे

यज्ञमें ऋत्विजों करके अग्नि प्रकाशमान होरही तैसे २५ और वह कुबेरनेत्रके समीप भागसे अग्निके किरणके छोड़ताहुआ सूर्यकोप्राप्त होताभया और वह कुबेर देहारंभ कर्मके क्षय होनेपीछे अथवा प्रलयकालमें ऐसातप करताभया २६ और वह कुबेर युगांतमें ऐसे वहुताप रूपहोके किरणोंके विषेऐसे दारुण तप करताभया २७ और सबइन्द्रियोंको निगृहीत अर्थात् वशमेंकर अप्सराओंके संग रमण करताभया और सुमेरु पर्वतकी शिखरपै प्राप्तहोके कामकरके रसों को सींचताभया २८ और वह नर वाहन कुबेर तिस तपमें विष्णुही का रूपहै यहजानो २९ क्योंकि विष्णुके बिना ऐसा पुरुष कोई नहींहै कि जोइसप्रकारतपकरै किंतु वह कुबेर विष्णुहीकाअंशहै ३० औरवहुत शिरोंवाला बासुकी सर्प मौनको प्राप्तहो तप करनेल- गा ३१ और सत्यको धारण करनेवालाशेषनाग वृक्षको प्राप्तहोनीचे को मुखकर तप करनेलगा ३२ और अपनी जीभोंसे अंगको चाटता हुआ शरीरके विषको छोड़ताहुआ हजार वर्षोंतक निराहार हुआ संपूर्ण तप करताभया ३३ सो वह बिष कालकूटस्थ नामसे प्रसिद्ध है इसबिषसे अभिग्रस्तहुआ जन नहीं जीताहै ३४ और यहतीक्ष्ण विष सब सर्पोंमें अनुगतहै और जंगम स्थावरसबविषयोंमें अनुगत है ३५ और परस्पर बढ़ा हुआ यह बिष तीक्ष्णतासे अंगोंको नाश कर देताहै ३६ पीछे ब्रह्माजी संसार के कल्याणके अर्थ अहिंसक रूपमंत्रको रचताभया ३७ अब वही मंत्र प्रकाशित किया जाताहै गरुत्मान्विततैःपक्षैर्नखाग्रैस्सलिलंमहीं समासहस्त्रंसंपूर्णंचूलाग्रे णैवावलंबिना ३८ पर्णभारैश्चविकचैर्विस्तीर्णैर्वसुधातले रराजवसु धाचैव पर्णैर्वहुविचित्रितैः ३९ अथन्यासः॥ओंवांगरुत्मान्हृदयायनमः अंगुष्ठयोः ओंवींगरुत्मान्शिरसेस्वाहा तर्जन्योः ४० ओंवूं गरुत्मान् शिखायैवषट् मध्यमयोः ओंवैंगरुत्मान्कवचायहुं अनामिकयोः ४१ ओंवैंगरुत्मान्नेत्रत्रयायवौषटकनिष्ठयोः ओंवःगरुत्मान् अस्त्राय फट्करतलकरपृष्ठयोः ४२ ओंवलाहलवषट् इति ब्रह्मऋषिर्गाय- त्रीछंदः गरुत्मान्देवता वंबीजंहूंशक्तिःलंकीलकंविषनाशनेविनि-

योग: ४३ इस मंत्रकरके सर्पके बिषका नाशहोता है इसमें संशय नहीं और इसी मंत्रकरके इसलोकमें और देवलोकमें सबप्राणी जीवतेहैं ४४ पीछे सुतलको प्राप्तहो प्रांशुदेहवाली पृथ्वीको प्राप्तहो और दाहिनेबाहु को उठा और बायुका भक्षणकर ग्यारहसौबर्षतक अगाधात्मा और परमात्मा बिष्णु भगवान् तप करनेलगा ४५ और दिनमेंतो अर्थात् बिद्यामें बिद्यैकलभ्य और रात्रि अर्थात् अबिद्या में स्थिरहुआ और सत्यमें युक्त और धर्मात्मारूप ऐसा बिष्णुभगवान् लीलाके सृष्टिकी प्रबृत्ति करताहै ४६ और इस बिष्णुभगवान् के भक्तों के उद्धारके वास्ते उठायाहुआ जोहाथहै सो उद्धारकत्व होनेसे पृथ्वीके समहै और अबिद्याबिषे तपन अर्थात् प्रकाश बिवेक देनेवाला है ४७ सो वह धर्मरूप चंद्रा अर्थात् मनके बिषयोंके बंधको नाशकरताहै और ग्रहादिक अर्थात् चक्षुरादिक इन्द्रियों की गतिको शांतकरता है ऐसा शमदमरूप धर्म है ४८ और वह धर्म अबिद्यारूप रात्रीको शिथिलकरताहै और पृथ्वीबिषे दक्षिण हस्तहै और चित्तकी शुद्धिको देनेवालाहै ४९ और वह अबिद्यारूप रात्री निर्वचनीयत्वसे वेद प्रमाणसे शून्यहुई और मरीचिका जलकीतरह अपचयशून्यहै ५० अब पृथ्वीके चंद्रूपहोनेका प्रकारकहते हैं सब अंगोंको इकट्ठा कर और तीर्थस्नानकर फिर यह पृथ्वीतपमें स्थितहोतीभई ५१ और जलघनीभावरूप चंदोभूता पृथ्वी सूर्यके अभ्यास से गंगारूपहुई यह कहतेहैं कि सूर्यकी किरणोंसे पीयमान पृथ्वी सूर्यसे मिलतीभई ५२ और सूर्यकी किरणोंकरके प्रकाशमानहोती भई और मणि धातु सुवर्ण इन्होंसे युक्त हुई पृथ्वी महानदीरूपदीखतीभई ५३ और सूर्यकी किरणोंकरके ग्रस्तहुई यही पृथ्वी नहीं दीखतीभई ५४ फिर सूर्यकी किरणोंसे उतरके जलरूप आत्मायह पृथ्वी वेगसे बहतीभई तब बिपुलजलके शरीरोंकरके आकाश गंगा कहातीभई ५५ और शीतल छायावाले वृक्षोंकरके और सुगंधवाली बेलोंकरके और अनेकप्रकारके पक्षोंकरके पृथ्वी शोभितहोती भई ५६ और सुवर्णके मुकुटवाली और मणियोंकी मेखलावाली

और पद्मकी रेणुसे पीलीहुई और चकवा चकवी बोलरहे ५७ और नीलगर्भ केशोंवाली और पुष्पोंके समूहसे संकुल ऐसी गंगाजीवहतीहुई शोभितहोतीभई ५८ ऐसी यह पृथ्वी गंगारूपहुई सुंदर तप को करतीहुई तपको प्राप्तहोतीभई अर्थात् सर्वात्म्य पवित्रता को प्राप्तहोतीभई ५९ फिर वह पृथ्वी गंगारूपहोके सरस्वतीरूपहोके अकार उकार मकार इन्होंको कहतीहै और व्यक्तस्वरोंकरके वेदों को कहतीहैऔर संदराख्य अर्थात् नासा और भृकुटीस्थानमें स्थित होती है ६० और चारपदों से आवृत्त ऐसे ऋङ्मय चार वेदों को शिक्षाकरके कहतीहै ६१ और स्थूल शरीररूपी पर्वतके एक देशमें भ्रूनासामें ब्रह्मरूपको ऋषियोंकरके परोद्धारहोताहै ६२ और यह सरस्वतीका शब्द अर्थात् नाद नियमोंकरके नहीं सुनता है और मंदराग्र अर्थात् स्थूल प्रपंचके आगे जो शब्दहोताहै वह ब्रह्मनाद इन्द्रियोंकरके अग्राह्यहै ६३ और सब प्राणी चुपहुये बिरामनियम को प्राप्तहोजातेहैं तब वह सरस्वती नियमसे कुछनहीं कहतीहै ६४ और सब प्राणी चुपकेहुये बलकरके ब्रह्म के अभिधान कहने को समर्थ नहीं है ६५ और वह सरस्वती मन करके योगका बिभागकर सब भूतोंमें अनुग्रह के वास्ते महास्वन अर्थात् ब्रह्मका ज्ञान करादेतीहै ६६ और देहधारी जीव सरस्वतीको प्राप्तहो के शिक्षा को ग्रहणकरतेहैं और तिसोकी शिक्षा करके आत्माका गायनकरते हैं ६७ और आदित्य, वसु, मरुद्गण, अश्विनीकुमार ये सबजटा को धारणकियेहुये और पुरातन वस्त्रोंको धारणकिये और मूंजको मेखलाको धारणकियेहुये ६८ और गंधर्व किन्नर नाग वरुण ये सब गानकरनेलगे और तपको करनेवाले मुनि ६९ और कीट पतंग सर्प ये सब शरीरोंको सोखनेलगे ७० और विष्णुभावको प्राप्त हुआ विष्णु अन्य अवतारकोप्राप्तहो तिन सब सहचारियोंकी रक्षा करताहै ७१ और पुष्कर अर्थात् सर्वकार्यात्मक जगत्में विष्णुनर नारायण रूपहोके लोक शिक्षाकेवास्ते आदि लीलाकरता है ७२ फिर वह विष्णु अग्नि अर्थात् मन कल्पित गार्हपत्यादि रूपहोके

पृथिव्य अभिमानी देहकी इच्छाकरताहै फिर अग्निहोत्री आदि-
कोंको तिसरूप कर्मरूपहोके गतिकोदेताहै ७३ और देहात्मबादी
तिस बिष्णुकी सामर्थ्यसे मोहादिकदग्धहोजातेहैं औरअग्निअर्थात्
बिष्णु दीप्तरहताहै ७४ और बिष्णुरूपमें रत बिषयासक्त जोहैं ते
बिष्णुलिंग अर्थात् ब्रह्मादिकरूपों के उलंघनेमें समर्थ नहींहै जैसे
सूर्यको उलंघनेको कोई समर्थ नहीं है तैसे ७५ सो बिष्णु बिपुल
प्रकाशकरके द्रव्य देवतादिकोंको अनेकप्रकार करके स्थितहुआ
ऋत्विकोंकरके अनेकप्रकारसे कियाजाताहै ७६ सोतहां यज्ञमेंद्रव्य
देवतादिकरूपसे प्रकाशमानहो निर्धूम अग्निकीतरह स्थितरहताहै
अर्थात् बिष्णु यज्ञमें तदंगतत्फल रूपहै ७७ और रक्षाकरकेस्थित
रहताहै और बिष्णुही शतशरीरीहोके मेघविषे स्थितहोताहै अर्थात्
यज्ञकाफल वृष्टिरूप भी बिष्णु है ७८ और आत्मसंसृष्ट अर्थात्
जठराग्निरूप बिष्णुहोके भूतोंकेहितकेवास्ते ज्ञानरूप बर्षाकरता
है ७९ और तिस पुष्करमें उपजीहुई अपनीरची उग्रअग्नीको आप
मेघरूपहोके पानीसे शांतकरतेभये ८० पीछे सिद्धगणोंसे युक्त
बिष्णु अपनेमनकरके आत्माका संहारकर तपकरनेलगा ८१ पैर
आदि अंगोंको संकोचकर और मनको शिरमेंधारणकर अचलस्था-
नको प्राप्तहो बिष्णु मौनको धारणकरताभया ८२ और निरुपाधि
स्वभावसिद्ध भगवान् धर्मरूपहै और यहां और परलोकमें सबभू-
तोंको हितदायकहै ८३ पीछे हतहुये दैत्य अपने अपने शस्त्रोंको
ग्रहणकर और मायासेप्राप्त अनेकप्रकारके नगरोंसे आच्छादित
हुये ८४ प्राप्तहोके तिस प्रकाशित बिष्णुको पर्बतोंके अग्रभागकर-
के बुझानेलगे ८५ और मायाकरके मेघाभूतहुये और बलसेदर्पित
हुये दैत्य तिससमूहमें महाबलकरतेभये ८६ परंतु तिसकीलताओं
स दग्धहुये लाखोंदैत्य अग्निको बुझानेके अर्थ समर्थ नहीं होते
भये ८७ और वे दैत्य अग्निके बुझानेमें समर्थ नहीं होतेभये जैसे
सूर्योदयमें आकाश दीप्तहोताहै ऐसे वह अग्नि दीप्तहोतीभई ८८
पीछे उद्यमोंसे रहितहुये दैत्य गंधमादन पर्वत के शिखर पै प्राप्त

होतेभये ८६ तव बैष्णव तेजोंसे संयुक्त वह अग्नि आकाशचारी दैत्योंकोदग्ध करताहुआ विचरनेलगा ६० तव आपही बिष्णु जो यज्ञसे दृष्टिरूप होताहै तिसरूपको धारणकर मेघकीतरह पृथ्वीमें वर्षाकरतेभये ६१ और मंत्रोंकरके प्रेराहुआ वृष्ट्याधिष्ठात्री देवता मेघोंके समूहोंको छोड़ताहै ६२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांअष्टादशाधिकद्विशतोऽध्यायः २१८॥

दोसौउन्नीसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा तपसे संयुक्तहुये देवते पीछे क्याकरतेभये और ऐसा लोकमें कोई भी पदार्थ नहींहैजोतपसे नहीं लब्धहोताहै १ बैशंपायन कहनेलगे कि तब सब बिष्णुमय गणदीक्षाको प्राप्तहो पुष्करसे अग्निका उद्धारकर और यथाबिधि ग्रहणकर २ मंत्रोंकरके प्रेरेहुये ब्राह्मण यथाबिधि से मंत्रपूत द्रव्यकरके हवन करतेभये ३ तवब्रह्मतेजसे बढ़ाहुआ और तेजोंसे बहुलीभूत ४ और ब्रह्मदंडइस नाम से विख्यात और शरीर कृशके दग्ध करनेकीतरह और दिव्य रूपको धारण करनेवाला ५ औरखड्ग ढाल धनुष गदा लांगलचक्र बाण फरसा शूल वज्रशक्ति इन्होंको धारणकरनेवाला अग्निप्रकाशितहुआ और चक्र तलवार मूशल हल इन्होंको बिष्णु धारणकरताभया ६ और इन्द्र बज्रको धारण करताभया और महादेवशूल और पिनाक धनुषको धारण करताभया ७ और धर्मराज दंडको और वरुणपाशको और काल शक्तिको और त्वष्टा फरसाको और कुवेर प्राशको ऐसे अनेक प्रकारके शस्त्रोंको धारण करतेभये ८ विश्वकर्मा और त्वष्टा शस्त्रोंको वनातेभये ६ और विष्णु इन्द्र के अर्थ और सूर्यके अर्थ और रुद्रके अर्थ रथदेताभया १० और वेदोंकी रीतिसे त्वष्टा सेना वनाताभया और विश्वकर्मा अनेक प्रकारों के विमानोंको रचताभया ११ और सत्यपराक्रम वाला बिष्णु अपने अंशसे सेनाको रचताभया १२ और सूर्यके और नक्षत्रोंकी स्थितिके अर्थ विष्णु बाणसे आकाश को रचताभया १३ और इंद्रने असुरों

के अर्थ छोड़ाजोदंड तिसको अंतर्हितहुआ ब्रह्मा ग्रहणकरताभया १४ तब अपने अपने प्रभाओं से ऐंद्रास्त्र आग्नेयास्त्र बायब्यास्त्र रौद्रास्त्र ऐसे ये चार होतेभये १५ इन बिकारों करके संयुक्त महाबल वाले दितिके पुत्र तप शिक्षा अस्त्रप्रहार १६ चतुरंगसेना बीर्य इन्हों से युक्त अप्रधृष्य संपन्नहोतेभये और पर्बतोंमें बिचरनेलगे १७पश्चात् वे सबमंदराचल पर्बतमें बिचरतेभये और सब देवताओं को जीततेभये १८ तबमहायोगी बिष्णु दैत्योंकी चतुरंगसेनाकासंहार कर पृथ्वीतलमें बिचरताभया १९ तब देवते और ब्राह्मणोंके संग फिर दैत्य तप करनेलगे २० और पश्चात् सबदेवते चर्म चीरा अर्थात् मृगछालाको धारणकर अन्य महान् तप ब्रह्माके समेत सब करतेभये २१॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांऊनविंशत्यधिकद्विशतोध्याय:२१९॥

दोसौबीसका अध्याय॥

जनमेजयकहनेलगा हे ब्रह्मन् मर्यादासे रहितलोहाके शंकुके तुल्य अबिनाश समयमें कैसेप्रजा होतीभई १ बैशंपायन कहनेलगे प्रजाधर्ममें परायण ब्रह्मा पहिले ऋषियोंकेसंगबेनकेपुत्रपृथुराजाको राज्यके अर्थ अभिषेचित करता भया २ और यहहमारा परमराजा और बृत्तिका देनेवाला और बिप्रोंकी रक्षा करनेवाला ३ और सब भूतोंको रचनेवाला सत्य प्राप्तकर्म करके यहीहैऐसे आपसमें ऋषिजन कहतेभये ४ पीछे इसी अंतरमें गंधमादन पर्बतकी गुफाओं में बहुतसे नियमोंसे देवते श्रांतहुये और दुःखितहुये तहां प्राप्तहो फिर ५ बैशाख केमहीने में चारोंतर्फ के गंधको सूंघ के प्रसन्न मन वालेहुये और दैत्यभी तिस पार्थिव गंधको सूंघके प्रसन्नमनवाले होतेभये ६ तबगंधसे गर्बितहुये देवते और दैत्य किंचित् आश्चर्य को प्राप्तहो और प्रसन्न मनवालेहो परम सुख को प्राप्तहो ७ फिर तिसगंधसे अभिमानमें युक्तहो यह कहतेभये कि पुष्प मात्रकी गंध का क्या फलहै ८ सो देहधारी प्राणियों को बिबिध प्रकारके कर्म

वुद्धि अनुमानसे जानना चाहिये और वुद्धिके प्रमाण से शुभाशुभ विचारना ६ इसवास्तेहम आपसमें मिलके समुद्रमें सब औषधियां गेर मंदराचल से समुद्रको मथेंगे १० तहांजलसे उपजा अमृतनिकसेगा तिसका पानकर आनंदपूर्वक स्थितरहेंगे ११ और महसबोंमें अग्रणी विष्णु रहेगा ऐसे स्वर्गको और पृथ्वीको भोगेंगे तब बलवाले दैत्योंनेविचारकिया कि हम अकेले इसकर्मको करेंगे तब मूल पत्र शाखा पुष्पफल वृक्षइन आदिसब प्रकारकी औषधियोंको १२ पर्वतोंसे ल्याके समुद्रमें गेरनेलगे और मंदराचलको उठाने के अर्थ सबदैत्य बतलाके तिसपर्वतको उठानेकेवास्ते १३ भांजतेभये और पृथ्वीको अपनी २ बाहुओं से कंपातेभये १४ अपनी अपनी बाहुओंसे बलभी करतेभये परंतु मंदराचलको उठानेमें समर्थ नहींहुये और गोड़ोंकोतानतिस पर्वतमें गिरतेभये १५ पश्चात् तपसे दग्ध पापोंवाले देवते और दैत्यतब ब्रह्माजीके समीपमें जाके पैरोंमेंशिर देतेभये १६ तवतिन्होंके मनोरथको जाननेवालाब्रह्मा बहुतप्रकार की वाक्योंकरके वाणीका उच्चारण करताभया १७ और शरीरस्थ ब्रह्मा अशरीरा अर्थात् आकाश वाणीको सबलोकोंके हितके वास्ते कहनेलगा १८किहेदैत्योसब आदित्य सबबसुसबरुद्र सबमरुद्गण यक्षसबदेवते यज्ञगंधर्व किन्नर इन्होंसे सहित१६ तुमहोके धातुओं से रंजितहुये मंदराचलका उद्धार करसकतेहो २० और तुमसब देवते और दैत्यइस पर्वतको उखाड़िके बेलोंकेरसोंसे युक्त इसपर्वतको हाथमें लेवोगे २१ फिरऐसा सुनके सबके समीप दैत्य मनसे और वचनोंसे इकट्ठे होतेभये २२ फिरक्रोड़ा करतेहुये बहुतप्रकारों से तिससमुद्रमें पुष्कर अर्थात् मथनके दंडकेसमीप में प्राप्तहोतेभये २३ तबसबदेवते और दैत्य आपस में मिलके मंदराचलको उठा समुद्रमें गेरवासुकी सर्प का नेताबना मथनेलगे २४ फिर हजार १००० वर्षतक वहजल औषधियों से युक्त मथा तब दूधरूप होके तिसमें अमृत पैदाहोताभया २५ तबजो अमृत निकसा तिसको लोभ से ग्रसित हुये दैत्य हरतेभये पीछे धन्वंतरि मदिरा लक्ष्मी

कौस्तुभमणी २८ चंद्रमा उच्चैश्रवा घोड़ा ये निकसलिये तब निकरे हुये अमृतको ग्रहणकर मोहनीरूपमें स्थितहुआ बिष्णु २९ देवतों को अमृत और दैत्योंको मदिरादेनेलगा तब देवताके रूपको धारण किये देवताओंकी पंक्तिमें स्थितहुये राहुको ३० देवते बिष्णुके अर्थ प्रकट करतेभये तब बिष्णु राहुके शिरको काटताभया ३१ तब अमृत से ब्रह्मके वाक्यसे प्रचोदितहुई पृथ्वीभी इन्द्रकेहाथसे परंपरा संबंध से अमृतको ग्रहणकर ब्रह्माके शिष्यभावको प्राप्तभई ३२

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २२० ॥

दोसैइक्कीसका अध्याय॥

जनमेजय कहनेलगा विष्णुके पराक्रमसे मोक्षकरके रहित हुये दैत्य और दानव क्या करतेभये १ बैशंपायन कहनेलगा कि महा पराक्रम और महाबलवाले दैत्यराज्यकी इच्छा करनेलगे सत्यरूप पराक्रमवाले देवते तपकी इच्छा करनेलगे २ जनमेजय कहनेलगा ऐश्वर्य्य से संयुक्त और कामना का देनेवाला ऐसा हिरण्यकशिपु अर्थात् बलिराजा कैसे ब्रह्मक्षेत्रमें यज्ञकरताभया ३ बैशंपायन कहने लगे कि बहुत सुवर्णसे संयुक्त राजसूय यज्ञ करके महाबलवाला बलि पृथ्वी में यज्ञ करताभया ४ और गंगा यमुनाके मध्यमें जहां उत्तम क्षेत्रहै तहां बलिराजाकी यज्ञमें ५ बेदको जाननेवाले और महाव्रतों में परायण ऐसे ब्राह्मण और यति और सिद्ध योगी ६ मुनी बालखिल्यमुनी और धर्म्मोंमें परायण अनेक प्रकारके ब्राह्मण ७ और ब्राह्मणों से पूजित और महाभाग हजारों प्रकारके ऋषि तहां प्राप्तभये ८ तब अपने पुत्रकरके सहित शुक्राचार्य बलिराजाकी यज्ञ को करानेलगा ९ तब बलिराजा कहनेलगा, किमैं अपनी इच्छासे बरदेताहूं कोई मांगो १० तब बामनरूप करके विष्णु बलिराजासे तीनपैर प्रमाण पृथ्वीरूप भिक्ष्याको ग्रहण करता भया ११ तब बिष्णुने अपनेशरीर को बढ़ा तीनपैरोंमें तीनलोक मापलिये १२ तब दैत्यकाराज्य छीनागया तब सेनाआदि गणोंसे संयुक्त दैत्य पाताल

लोकमें स्थितभये १३ पीछे प्राश तलवार भाला यंत्र लाठी पताका रथध्वज ढाल कवच कोश १४ इन आदि हथियारोंवाले इन्द्र आदि सबदेवते उत्थितहोके संसार में १५ स्वधारूप अमृतकरके पितरों कोऔर हव्यकरके देवताओंकोबनाके इंद्रकेअर्थ राज्यदियागया १६ तबब्रह्माआदि सब देवते तहां बैरियोंके रोमोंको हर्षण अर्थात् खड़ा करदेवे ऐसा शंखको बजाते भये १७ तिस शंखके शब्दको सुनके सावधान हुये तीनोंलोक परमनिवृत्तिको प्राप्तभये १८ और सब विषयोंको हरलेवें ऐसी इंद्रिय और मंदाराग्र अर्थात् स्थूल देहमें संयुक्त ऐसे तीनोंलोक परमसुखको प्राप्तहोतेभये १९

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांएकविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः२२१॥

दोसौबाईसका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे इस वृत्तांत के पश्चात् जब देवताओंका स्थितराज्य हुआ तब देवते और मनुष्योंका सहबास होताभया १ और एकही जगह पठन और शब्द होनेलगा और यज्ञकर्ममें अपने अपने भागको सबदेवते ग्रहण करनेलगे २ और एक समयमें प्रचेता के पुत्र दक्षको ऋषियोंसे परिवारित बृहस्पति अश्वमेधयज्ञ कराने लगा ३ तहां भागके अर्थ नंदिगण करके सहित रुद्र दक्षप्रजापति कोही ४ पशुरूप जानके मारताभया और तहां अच्छेरूपवाले और बुरेरूपवाले ५ कितनेक बुरे नेत्रोंवाले और कितनेक घड़ाकेसमान उदरवाले और कितनेक ऊपरको नेत्रोंवाले ६ कितनेक बड़े शरीरों वाले और कितनेक बिकट और कितनेक बावने ७ और कितनेक ऊंचीचोटीवाले और कितनेक जटाओंवाले और कितनेक तीननेत्रों वाले ८ और कितनेक शंकुके समान कानोंवाले और कितनेक चीर और चर्म्मोंको धारण करनेवाले और कितनेक मुद्गरको हाथोंमें लेनेवाले और कितनेक घंटाको धारण करनेवाले ९ और कितनेक मुंजकी मेखलाको धारण करनेवाले और कितनेक सोनाके कुंडलों को धारण करनेवाले और कितनेक डमरु भेरी मृदंग बांसुली १०

इन्होंको बजानेवाले इन्होंसे परिवृत और शंख मृदंग त्रिशूल पिनाक धनुष इन्होंको धारण करनेवाला महादेव ११ तिस यज्ञमें प्राप्तभया और जगत्को दग्धकरनेवाला अग्नीकीतरहप्रकाशितहुआ महादेव और नंदिगण यज्ञका बिध्वंस करतेभये १२ जैसे प्रलयकालमें अग्नि और कितनेक राक्षसोंकेगण यज्ञकेस्तंभको उखाड़के भाजतेभये १३ और कितनेक चोर और चर्मोंकोधारणकरनेवाले राक्षस मुनिजनोंको दुःखित करतेभये १४ और कितनेक तांबाके समान नेत्रोंवाले राक्षस यज्ञमें स्थित घृतका पान करतेभये और कितनेक जीभोंको चाटने वाले राक्षस १५ यज्ञमें पशुओंको भक्षण करतेभये और कितनेक राक्षस पानीसे यज्ञकी अग्निको बुझातेभये १६ और कितनेक राक्षस यज्ञके जलको हरतेभये औरकितनेक राक्षस हाथोंसे डाभों को काटते भये १७ और कितनेक राक्षस यज्ञोंके स्तंभोंके अग्रभागोंको तोड़तेभये और कितनेक कलशोंको फेंकतेभये और कितनेकराक्षस शोभाकेअर्थ रचेहुये कांचन वृक्षोंको काटतेभये १८ और कितनेक राक्षस यज्ञके पात्रोंको फोड़तेभये और कितनेक राक्षस अरणियोंको मथतेभये १९ और कितनेक राक्षस प्राग्बंश को तोड़ते भये और कितनेकराक्षस पुरोडासोंको खातेभये २० ऐसे दिन और रात्रिमिथ्यमानहुआ महायज्ञ पुकारनेलगा जैसे बिध्यमान समुद्र २१ पीछेब्रह्माके दियेहुये धनुष पै बाणोंको चढ़ा महायज्ञके जानु भागसे स्थित होके महादेव मारताभया २२ तब बिद्धहुआ यज्ञ ऊपरको उछलताहुआ मृग होके नईमानहुआ ब्रह्माजी के समीपमें भागने लगा २३ क्योंकि बाणकरके अभिहितहुआ यज्ञ पृथ्वी भरमें कहीं भी सुखको प्राप्त नहीं हुआ २४ तब ब्रह्माकी शरणमें गयातिस मृग रूप यज्ञसे ब्रह्मकहनेलगा २५ कि इसीरूप से तू महामृगहो के आकाशमें रहेगा क्योंकि रुद्रके बाणसे जीताहुआ तू २६ नक्षत्रों के शिरपै रुद्रको नक्षत्रके संगनित्य सर्बदा स्थितहोताहुआ २७ पीछे अबिनाशिरूप चंद्रमाके साथ संयुक्तहो और तारागणोंसेमिलाहुआ तू बिचरेगा २८ ऐसे तारागणोंका और ध्रुवतारा काभी प्रकाश

करनेवाला तूरहेगा और जो तेरेकटेहुये शरीरसे दिव्यरुधिर निकसाहुआ २९ वेगकरके भाजनेसे आकाशमें पतितहुआहै यह बहुत वर्णोवाला और मंडल संज्ञक क्षेत्र ३० और भूतोंका निमित्त भूत और वर्षाकालमें वृष्टीका देनेवाला ३१ और देखने करके प्राणियों को सुखदुःखका देनेवाला और इन्द्रधनुष इसनाम से बिख्यात ऐसा इन्द्रधनुष होवेगा तिसको मनुष्यके नेत्र आश्चर्य से देखेंगे और यह रात्रिमें नहींदीखेगा ३३ पीछे दक्षप्रजापतिके सैकड़े प्रिय जहांतहां भाजतेभये तब महादेवजीके ३४ आधेशरीरसेउपजाहुआ नंदीगण युगांतकालमें ज्वलितरूप ब्रह्मदंडकी तरह स्थितरहा ३५ तब एकहाथमें शार्ङ्ग धनुष और दूसरे हाथमें सुदर्शनचक्र और तीसरेहाथमें घंटासहितगदा और चौथेहाथमें तलवार ऐसे धारणकर महादेव के सन्मुखबिष्णु प्राप्तहुआ ३६ तबशंख को बजाताहुआ और बाणोंको धारण करनेवाला ऐसाबिष्णु स्थितहुआ ३७ फिर शृंगभागसे उत्पन्न हुआ शार्ङ्ग धनुषका अधिष्ठात्री देवताऐसेभान होताभयाकि जैसेचंद्रमा सहित मेघकी शोभाहोवे तैसे३८फिर वह देवताबिपुल अर्थात् बड़ेधनुष को धारणकर और पैने बाणों को धारणकरताभया ३९ तब सब आदित्य सबबसु ये बिष्णु के चारों तर्फ स्थितहुये ४० और मरुद्गण और बिश्वेदेवा ये रुद्र के चारोंतर्फ स्थितहुये तब गंधर्व किन्नर नाग यक्षसर्प ४१ ऋषि ये दोनोंके पक्षोंमें हितको चाहनेवाले लोकोंके हितकेअर्थ ४२ शांति काजाप करनेलगे तब अग्नीरूप महादेव शरकरके बिष्णुका हृदा और सब अंगोंकी संधियोंमें बींधताभया ४३ परंतु क्रोध आदिको जीतनेवाला और सर्वात्मा ऐसा बिष्णु कंपायमाननहुआ ४४ पीछे बिष्णुभी धनुषको नवाय तिसपै बाणको संयुक्तकर महादेवकी नाडके जोतेमें मारताभया४५तब महादेवभी कंपायमान नहीं हुआ तब बिष्णु कूदके सनातनरूप रुद्रके कंठको ग्रहण करताभया ४६ तब फिर हठसेकूदके प्रहार करनेसे वह महादेव नीलकंठ होगया पीछे आदिअंतसे रहित और देव ४७ और सबभूतोंका आगमाचा-

र्य्यं मेरा और कर्म्मोंका कर्त्ता और बिकर्त्ता और सब प्राणियोंमें उ-
त्तम ४८ और अंतरयामि रूप करके आपही कर्मोंको करनेवाला
कर्त्ता और कारयिता से अन्य ४६ ऐसा तू क्षमाकर सो तू है सो
हे सनातन तेरेअर्थ नमस्कार हो ५० ऐसी सिद्धोंके मुखसे कही
और अद्भुतबाणी आकाशसे सुननेलगी ५१ पीछे रुद्रसे उप-
जाहुआ नंदीगण क्रोधको प्राप्तहो धनुषको खैंच बिष्णुके मस्तकमें
बाण मारताभया ५२ तब नंदीको देख हसताहुआ बिष्णु नंदीको
थांभताभया ५३ पीछे ब्रह्माके समान और तेजसे प्रकाशित और
क्षमासेसंयुक्त और पर्वतकी तरह अचल ५४ अचिंत्य और अप्रमेय
और अजेयऔर शत्रुओंके दमनेवाला और प्रलय अग्नि के समान
और शांतात्मा ५५ और कर्मरूपी फांसियोंको हरनेवाला और
अबिनाशि ५६ ऐसा बिष्णु प्रसन्नहोके महादेवके अर्थ भागको
कल्पना करताभया ५७ ऐसे बिष्णुने वह यज्ञ फिर संधित किया
ऐसे यहयज्ञ लोक में प्रतिष्ठितहै ५८ सो हेराजेन्द्र ऐसे यज्ञ सना-
तन कहाहै पीछे दक्षप्रजापति भी यज्ञके फलको प्राप्तहुआ ५६
जो बुद्धिमान् इस कहीहुई दिब्यकथाको बिप्रोंके अर्थ सुनावे ६०
वह देवलोकमें आत्मभावमें प्राप्तहोताहै ऐसे पौष्कर प्रादुर्भाव मैं
ने व्यासजी के ६१ मुखसे सुनाहै सो क्रमपूर्बक मैंने कहा जो इस
उत्तम आख्यानको सब कालमें सुनेगा ६२ वह सबकामोंको प्राप्तहो
इसलोकमें और पर लोकमें स्वर्गफलोंको भोगेगा ६३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्वाबिंशत्यधिकशततोऽध्यायः २२२॥

दोसौतेईसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा कि हे बिप्र पुराणों में अमिततेजवाले बि-
ष्णुका बाराह अवतार सत्पुरुषों से सुना १ परंतु तिसका चरित्र
बिधि बिस्तार कर्म गुण संतानहेतु बांछित इन्होंकोमैं नहीं जानता
२ किस आत्मावाला बाराहहुआ तिसने कैसाशरीर धारण किया
और तिस मूर्तिका कौन देवताहुआ और किस आचारवाला किसप्र-

भाववाला और तिसने पहले क्याकिया ३ यह बिस्तारपूर्वक बा-
राह आख्यान यज्ञके अर्थ इकट्ठे हुये ब्राह्मणोंके अर्थ और मेरेअर्थ
वर्णनकर४ बैशंपायन कहनेलगे वेदके समान और नानाप्रकारकी
श्रुतियोंसे युक्त और व्यासजीके मुखसे कहा ऐसा महा बाराह चरित्र
तेरे अर्थ कहूंगा ५ जैसे नारायण बाराह शरीरको प्राप्तहो समुद्रमें
स्थितहुई पृथ्वीको६ अपनी जाड़पेधरके श्रुतियोंसे अलंकृत बाराहजो
बाहेर निकासताभया इस आख्यानको पबित्र और मौनरूपहोके
हे जनमेजय तू सुन ७ और पबित्र और परम और बेदोंके सम्मित
और नाना प्रकारकी श्रुतियोंसे युक्त८और सांख्य और योगसे युक्त
ऐसा यह पुराणरूपआख्यान नास्तिक के अर्थ कहना उचित नहीं
है६ और जो इसके अर्थको समथबिधि करके जानेगा वही योगी और
ज्ञानीहै और बिश्वेदेवा साध्य १०।११सब रुद्र सब आदित्य दोनों
अश्विनीकुमार सब प्रजापति सप्तमहर्षिऔरमनके संकल्पसे उपजे
ऋषि पूर्वज ऋषि१२और सबबसु और सबअप्सरा और गंधर्व यक्ष
राक्षस दैत्य पिशाच सर्प नानाप्रकारके प्राणी १३ ब्राह्मण क्षत्रिय
वैश्य शूद्र म्लेक्षाआदि प्राणि चारपैरोंवाले प्राणि तिरछीयोनिवाले
प्राणि१४और जंगमरूप प्राणी और अन्यभीजीव संज्ञकयेसबयुग
सहसके अंतमें जब ब्रह्माका दिन पूराहोलेहै १५ तब साक्षात् महा
देवरूप अपनी शिखाओंसे लोकों को कंपाताहुआ १६ सब प्राणि
योंको शोषताहै तबतिसके तेजकी किरणोंसे दह्यमानहुये१७ और
बिगड़ेहुये वर्णवाले और दग्ध अंगोंवाले और सबवेदांग उपनिषद
वेद इतिहास १८ सबविद्या क्रिया सत्यधर्म इनआदि सबचारमुख
वाले ब्रह्माको अगाड़ीकर १६ और सबदेवते ब्रह्माके दिनकीपूर्ति
में हंसावतार नारायणमें प्रवेश करतेहैं २० तब प्रलयकी उत्पति
होजातीहै जैसे सूर्यका नित्यप्रति उदय २१ और अस्तहोताहै तैसे
युगसहस्रके अंतमें प्रलयभी होताहै २२ जहां जीवमात्र नहींठहर
सकता ऐसे सबलोकोंको अपने गर्भमें स्थितकर अकेलाईश्वर बस
ताहै २३ पीछे ऐसेही कल्पके अंतमें बारंबार सबभूतों को रचताहै

और जबसूर्यकी किरण और चंद्रमाकी किरण नष्टहोगई है २४ और धूमा अग्नि पवन यज्ञ तपक्रिया इन्होंका नाशहोगयाहै पक्षिआदि सब प्राणी कोई भी नहीं रहा है २५ और मर्यादा से आकुल और भयानक और चारोंतर्फ से अंधेरा से आवृत और नहीं दीखने के योग्य ऐसे सबलोक होजातेहैं और सब कर्मों का अभाव होजाता है २६ और बैर आदिका नाशहोजाताहै तब पीत वस्त्रोंवाला और लाल नेत्रोंवाला और कृष्णबदल के समान कांतिवाला २७ ऐसा ईश्वर हजारहैं। शिखारूप जटाके भारों को धारण कियेहुये और लक्ष्मीका चिह्न और लालचंदनसे रूषित २८ छातीको धारणकिये हुये और जिसकी पत्नि लक्ष्मी आप देहको आहत्यहोके २९ स्थितहोती है और हजारहों कमलों की माला को धारण करनेवाला ईश्वर शयन करने लगेहै ३० तब निद्रा योगको प्राप्तहोताहै पीछे हजारहों बर्षों में आपही जागताहै ३१ तब फिर संसार में सृष्टिको रचनेकी आपही चिंतवन करके इच्छा करै है ३२ तब पितर देवते दैत्य मनुष्य इन्हों को पारमेष्ठ्य कर्म करके चिंतवन करता है ३३ और सबलोक का संभव और बाणी का पति कर्त्ता और विकर्त्ता और संहर्त्ता और प्रजापति ३४ और धाता बिधाता संयम नियम यम ऐसा नारायण है सो सब वेदभी नारायणमें तत्परहै और सब क्रियाभी नारायणमें तत्परहै ३५ और यज्ञभी नारायण में तत्परहै और श्रुतिभी नारायणमें तत्परहै और मोक्षभी नारायण में तत्परहै और गतिभी नारायणमें तत्परहै ३६ और धर्मभीनारायणमें तत्पर है और यज्ञभी नारायणमें तत्परहै औरज्ञानभी नारायणमें तत्परहै है और तपभी नारायणमें तत्पर है ३७ और सत्यभी नारायण में तत्परहै और परमभी नारायणमें तत्परहै और नारायण से परे देव न हुआ नहोगा ३८ वहीआप उत्पन्नहोताहै और वही लोकों कास्वामी ब्रह्माहै और वही बायुहै और वहीयज्ञहै और वहीप्रजा पतिहै ३९ और सत् असत्भी वहीहै और वही सर्वज्ञहै और वही प्रजाको रचने वालाहै और वहीदेवतों सेभी नहींजाना जाताहै४०

और जिसके अंतको प्रजापति और महर्षि और देवतेभी नहीं जान सकते ४१ इसवास्ते वही अनंतहै और जो इसका परमरूपहै तिस को देवतेनहीं देखसकते ४२ अर्थात् अवतारलिये ईश्वर को देवते पूजते और देखतेहैं और जिसको यह नहींदिखावताभया तिसको कौनढूंढ़ सकताहै ४३ और यही सब भूतोंका स्वामीहै और अग्नि और पवनकी गतिभी यहीहै ४४ और तेजतप अमृत इन्होंका निधानभी यहीहै और चारों धर्मोंका ईशभी यहीहै और चातुर होत्रके फलको खानेवालाभी यहीहै ४५ और चारों समुद्रों पर्यंत चतुर्युग का निवृत्तकभी यहीहै और अपने गर्भमें स्थित जगत्को कर ४६ और हजारहों वर्षोंतक धारणकर यही अंडको छोड़नेवालाहै ४७ और देवते दैत्य पक्षी सर्प अप्सरागण वृक्ष औषधी पृथ्वी पर्वत यक्ष गुह्यक प्राणि इन आदि जगत्को रचनेवाला प्रजापति भी यहीहै ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांवाराहेप्रादुर्भावे त्रयोविंशत्यधिकद्विशततोऽध्यायः२२३ ॥

दोसौचौबीसका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे प्रजापतिकी मूर्तिमय यह जगत्रूपी अंड संपूर्ण सुवर्णमय होताभया ऐसे वेद कहताहै १ पीछे हजारहो वर्षके अंतमें लोककी उत्पत्तिके हेतुको जाननेवाला ईश्वर ऊर्ध्वमुख २ और अधोमुख ऐसे अंडका भेदन करताभया पीछे आठप्रकार से भेदन करताभया ३ जिसमें जगत्का बिभाग करदियाहै और जो छिद्ररूप ऊर्ध्व आकाशहै वह सुकृति जनोंकी परमगतिहै और जो अधोमुख भागहै वह रसातलहै ४ और जो पहले देवलोक रचने की इच्छा करके अंड रचताभया तिसके सबतर्फ आठछिद्र करता भया और शेषरूप आठप्रकार छिद्रहैं और दिशा और विदिशा बनादियेहैं ६ और नानाप्रकार के राग और विराग वाले अंडके टुकड़ेहैं वे सब अनेक वर्णोंको धारणकरनेवाले बद्दलहैं ७ और जो

अंडका मध्यभासे द्रवरूप निकसाहै वह समुद्ररूप होके चारोंतर्फ से पृथ्वी को आच्छादित कररहेहैं ८ और जो ऊर्ध्वमुख अंडहै उस में जो जलनिकसाहै वह कांचन का पर्वतहै और तिसी जल करके आप्लुतहुये दिशा और बिदिशाहैं और आकाश और स्वर्ग व अन्यत् कछुक अंतरहै ९ तहांतहां स्कंदरूप जलकरके पर्वत उत्थित हुआ है ऐसे बहुत योजन बिस्तारवाले पर्वतोंके समूहसे १० यह पृथ्वी बिषमरूप हुईहै तब बोझसेपीड़ितहुई पृथ्वीहिरण्यमयतेजको त्याग केधारणकोनहीं समर्थहुई नीचेको प्रवेश करतीहुई ११ तब नीचेको प्रवेश करनेवाली पृथ्वीकोदेख लोकोंके हितकी कामना करके भगवान् उद्धारकरनेके अर्थ मन करतेभये १२ भगवान् कहनेलगे यह मेरे तेज से बीर्यको प्राप्तहो तपश्विनी पृथ्वी पाताल में प्रवेश करती है जैसे कीचमें दुर्बलगाय १३ पृथ्वी कहनेलगी त्रिबिक्रम अमित बिक्रमवाला महान्‌सिंह चतुर्भुज शार्ङ्ग चक्र तलवार गदा इन्होंको धारण करनेवाला और मनोबांछितबरको देनेवाला ऐसा जो तू है तेरे अर्थ नमस्कारहो१४हेदेव तैने आत्मा धारणकरिये हैं और तूही जगत् को धारण करताहै और तूहीभूतोंको धारणकरता है और तूहीसंसारको पोषताहै१५ और तेरे धारणकियेको मैं धारण करतीहूं १६ और तेरेसेनहीं धारण कियेको मैंनहीं धारण करती और ऐसाकोईभी नहींहै जिसको तू धारण नहीं कररहाहै १७ और हे नारायण जगत्‌के हितकी कामना करके तूही मेरेभारको उतार ताहै १८ और दैत्योंके तेजसे आक्रांत और रसातलमें प्राप्तहुई ऐसी मेरेकोतू रक्षाकर १९ क्योंकि हेसुरश्रेष्ठमैं तेरीशरणहुईहूंदैत्य और राक्षसों से पीड़ितहुई मैं सदातेरीशरण होतीहूं २० और जब तक मेरेको भयहै तब तक तेरी शरण को मैं नहीं होती २१ भगवान् कहनेलगे हेपृथ्वी भयमतकरे और सावधानहोके शांतिको प्राप्तहो और मनोवांछित स्थानमें तेरेको मैं प्राप्त करताहूं २२ बैशंपायन कहनेलगे पीछेमहात्मा ईश्वरमनकरके दिव्यरूपको चिंतवन करने लगाकि किसरूपको धारणकर जलमें डूबीहुई इस पृथ्वीका मैं उ-

द्धार करूं २३ ऐसे विचारके विष्णु जलक्रीड़ा में रुचीवाले बारा
शरीरका स्मरण करताभया २४ और जब पृथ्वीका उद्धार करने मे
युक्तहुआ तभीभूमि धृक् इसका नामहुआ २५ पीछे सबप्राणियों से
अधृष्य और वाङ्मय और ब्रह्मसंज्ञक और चालीसकोश बिस्तार
वाला और चारसैकोश ऊंचा २६ और नीलबद्दलके समान कांति
वाला और मेघके गर्जने के समान शब्दवाला और पर्वतोंको संह
नन करनेवाला और भीम श्वेत और दीप्त ऐसी उग्रदंष्ट्रावाला २७
बिजली और अग्निके समान प्रकाशित नेत्रोंवाला और सूर्य के
समान तेजवाला और पुष्ट और गोलरूप बिस्तृत स्कंधोंवालाऔर
गर्वित शार्दूल के समान पराक्रमवाला २८ पीन और उन्नतकटि
देशवाला और बैलकेलक्षणोंसे लक्षित ऐसे बाराहरूपको धारणक-
र२६ विष्णु पृथ्वीके उद्धारके अर्थरसातल में प्रवेश करताभया और
चारवेदोंरूपपैरोंवाला और यज्ञस्तंभरूप दंष्ट्रावाला ३० और यज्ञ
रूपहाथोंवाला और चितिरूपमुखवाला और अग्निरूप जिह्वावाला
और डाभरूप रोमोंवाला और ब्रह्मरूप शिरवाला और महातपको
धारणकरनेवाला ३१ और दिनरात्रि रूप नेत्रोंवाला और बेदांग
रूप श्रुतियों से भूषित और घृतरूप नाशिकावाला और श्रुवरूप
तुंडवाला और सामवेदके घोषरूप बाणीवाला और सत्य धर्म क्रम
बिक्रम इन्हों से सत्कृत् ३२ और क्रिया और यज्ञरूप घोणवाला
और यज्ञपशुरूप गोड़ोंवाला और महायज्ञरूप आकृतिवाला और
उद्गातारूप आंतोंवाला और होमरूप लिंगवाला बीज और औ-
षधिरूप महाफलवाला ३३ वायुरूप अंतरात्मावाला और शत्ररूप
फींचवाला और बिक्रित और सोमरूप लोहूवाला और वेदीरूप
स्कंधवाला और द्रव्यरूप गंधवाला और हव्य और कव्यरूप अति
वेगवाला ३४ और प्राग्वंशरूप शरीरवाला और कीर्त्तिवाला और
नानाप्रकारकी दीक्षाओंसे अन्वित और दक्षिणारूप हृदयवाला और
योगी और महाशत्रमय और महान् ३५ और उपाकर्मरूप ओष्ठों
से रुचक और प्रवर्ग्यरूप आवर्त भूषणोंवाला और नानाप्रकारके

छंदरूप गतिमार्गवाला और गुह्य और उपनिषदरूप आसनवाला ३६ और छायापत्निरूप सहायवाला और मणिश्रृङ्गके समान उच्छ्रित ऐसा यज्ञबाराह होके नीचेको प्रवेश करता भया ३७ और पानीसे आच्छादित हुई रसातलमें प्राप्तहुई ऐसीपृथ्वीको रसातल में जाके ३८ लोकके हितके अर्थ दंष्ट्राके अग्रभाग पै स्थापितकर अपने स्थानपै आके पृथ्वीको छोड़ताभया ३९ तब पृथ्वी तिसदेव के अर्थ नमस्कार करती भई तब उद्धतहुई पृथ्वी पहलेकी तरह स्थापित होगई पीछे पृथ्वी का उद्धारकर जगत्को स्थापन की इच्छाकरके ४० यज्ञ भगवान् बिभाग के अर्थ मन करताभया तब रसातलमेंगई पृथ्वीको ४१ अति पराक्रमवाला बाराहजी लोकके हितके अर्थ ऐसे स्थापित करताभयाहै ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांवाराहेपृथ्व्युद्धरणेचतुर्विंश त्यधिकद्विशतोऽध्यायः २२४॥

दोसौपचीसका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे कि तिस जलके समूहके ऊपर बड़े जहाज की तरह स्थापितकरके और बिस्तृतवाली होनेसे पृथ्वीजलमें डूबी नहीं १ पीछे बिष्णु बिभागको चिन्तवन करनेलगा तब सब पर्वतों के चारों तर्फसे समुच्छ्रय २ बिलेखन प्रमाण गति प्रभाव इन्हों का और नदियोंका माहात्म्य और बिशेषको चिंतवन करताभया ३ और महा समुद्रोंसे वेष्टित और चौकुंठी ऐसी पृथ्वीको कर और पृथ्वीके मध्यभागमें ४ चारसौ कोश बिस्तारवाला और चारहजार कोश ऊंचा और अतिसुंदर और सूर्य्यकी कांतिके समान ५ शृङ्गों से शोभित और आत्मतेज और गुणोंसे संयुक्त और नानाप्रकार के सुवर्णमय स्कंधोंवाले ६ और नित्य पुष्पफलोंसेयुक्त ऐसे वृक्षोंकरके शोभित ऐसे मेरुपर्बत को करता भया और पूर्बदिशामें जाके ७ चारसौकोश बिस्तारवाला और आठसैकोशऊंचा ऐसे उदयपर्बत को करताभया ८ और नानाप्रकारके हजारों रत्नों करके संयुक्त

और वहुत वर्णोंवाली वेदिकाओं से संयुक्त और संध्यासमयके बद्दलों के समान कांतिवाला ६ और नानाप्रकारकी मणियोंसे संयुक्त और वृक्षोंका वनसे संयुक्त और चारसैकोश ऊंचा १० और हजारहों शृंगोंवाला ऐसा सौमनस पर्वतको वह बिश्वकर्मा प्रजापति अपना स्थान करताभया ११ औरतुषारके समूहकेसमान कांतिवाला और दुर्गवनोंसे संयुक्त और कंदरा के अंतरों से मंडित १२ ऐसा शैशिर पर्वतको करता भया और शैशिरसे उत्पन्नहुई औरपक्षियोंके गणोंसे आकुल १३ और पुलिनसे संयुक्त ऐसी बसुधाराको करता भया यह नदी अमृतके समान सैकड़ों मुखोंसे संयुक्त हुई शोभित होनेलगी१४और नित्य पुष्प फलोंसे संयुक्त और आच्छादित करनेवाले और तीरपै उपजनेवाले ऐसे वृक्षोंकरकेअधिकभूषितहुई नदी शोभित होनेलगी १५ ऐसे पूर्वदिशाका बिभागकरके पीछे दक्षिण दिशामें यज्ञभगवान् आधाचांदीका और आधासोनाका ऐसे रम्य पर्वतकोकरताभया१६तब एकतर्फसे सुईकेसमान कांतिवाला और एकतर्फसेचंद्रमाकेसमानकांतिवाला ऐसेदोवर्णोंकोधारणकरनेवाला पर्वत१७अतिशोभित होनेलगाऔरचंद्रमा और सूर्यकेतेजकरके एक कालमेंव्याप्त और उत्तमशरीवाला ऐसा भानुमंत पर्वतको करताभया१८औरदिव्यऔर मनोहरसबकामके फलवालेवृक्षोंकरके परिवृत और हाथीके समान आकृतिवाला ऐसा कुंजरपर्वत को करता भया१६और चारोंतर्फ से सुवर्णकी गुफावाला बहुतसे योजनोंसे बिस्तृत और बैलके समान प्रतिमावाला ऐसा ऋषभ पर्वतको करता भया २० और पीले चंदनके वृक्षोंसे युक्त पुष्पहास पर्वतको करता भया और चारसैकोश ऊंचा२१और अनेकप्रकारके शृंगों से संयुक्त और पुष्पित वृक्षोंसे व्याप्त ऐसा महेंद्रपर्वतको करताभया२२ और नानाप्रकारके रत्नोंसेआकीर्ण औरसूर्यऔर चंद्रमाकेसमान कांतिवाला और चित्रपुष्पोंवाले वृक्षोंसे संयुक्त ऐसे मलय पर्वतको करता भया२३और शिलाजालसे आकुल और विस्तारवाला ऐसे मैनाक पर्वतको करताभया २४ और हजार शिखरोंवाला और नानाप्र-

कारके वृक्ष और लतासे आवृत ऐसे बिंध्यपर्वतको करताभया २५ और विपुलरूप आवर्तवाली और पुलिनरूप श्रोणिसे भूषित और दूधके समान जलवाली और रमणीक और विचित्र २६ और दिव्य रूपसैकड़ों तीर्थोंसे संयुक्त और दक्षिणदिशाको जलसे पवित्रकरने वाली ऐसी पयोधारानदीको करताभया २७ ऐसे दक्षिण दिशाको प्रतिस्थापित कर पीछे पश्चिमदिशामें यज्ञ भगवान् जाके चार से कोशऊंचा २८ और चित्ररूप शिखरोंसे शोभित और सुवर्ण रूप शिला और गुफाओं से भूषित २९ और सूर्यके समान प्रकाशित शाल और तालवृक्षोंसे आकुल ऐसे पर्वतमें साठ हजार पर्वतोंको प्रवेशित करता भया ३० और हजारहों जलधाराओंसे संयुक्त और मेरुपर्वत के समान कान्तिवाला ३१ और पवित्ररूप तीर्थके गुणों से युक्त और साठयोजन बिस्तारवाला और साठ योजनऊंचा ३२ ऐसे आत्माके रूपके समान बाराह पर्वतको करताभया और तहां वैडूर्य्य पर्वतको करताभया ३३ और चक्रके सदृश चक्रवान् पर्वत को करताभया ३४ और सहस्र कूट पर्वतको करताभया और शंख के समानरूपवाला और चांदी से संयुक्त ३५ और सपेद वृक्षों से आकीर्ण ऐसे शंखपर्वत को स्थापित करताभया और सुवर्ण और रत्नों से संयुक्त और पारिजात महावृक्षों से संयुक्त ऐसे ३६ पुष्प हास पर्वतको स्थापित करताभया और अतिरसवाली और पवित्र और घृतधारा नामसे विख्यात ३७ ऐसी नदीको करताभया ऐसे पश्चिमदिशामें कार्यकोकर उत्तरदिशा में यज्ञभगवान् जाके कांच न के समान प्रकाशित ३८ गुणोत्तर पर्वतको करताभया पीछे आ काशके प्रमाणसे और सोमरूप धातुओं से प्रतिच्छन्न और सूर्य के समान कांतिवाला ऐसा ३९ सौम्यपर्वतको करताभया जिसकेतेज से सूर्यके बिना भी देश प्रकाशित रहता है ४० और जैसे तपता हुआ सूर्यकी शोभाहोतीहै तिससेभी अधिक शोभाहोतीहै और सूक्ष्म रूप करके सूर्य तपताहुआ की तरह मालूम होता है ४१ और हजारहों शिखरोंवाला और नानाप्रकारके तीर्थों से संयुक्त और

रत्नोंसे संकीर्ण ऐसे अस्ताचलनामसे विख्यात ऐसे अस्तपर्वत को करताभया ४२ और मनोहर गुणोंसे संयुक्त मंदर पर्वतको करता भया और पुष्पोंकी गंधोंसे संयुक्तरूप गंधमादन पर्वतको करता भया ४३ और तिसके शृंगों में सुवर्ण के रससे उत्पन्न और अत्यंत अद्भुतरूप दर्शनवाली ऐसी जंबूको रचताभया ४४ और त्रिशिखर पर्वतको रचताभया और पुष्कर पर्वतको करताभया और श्वेत और पांडुरमेघके समान कांति वाला और पर्वतों में उत्तम ऐसे कैलाश पर्वत को स्थापित करता भया ४५ और दिव्यधातुओं से विभूषित ऐसे हिमवान् पर्वतको बाराह शरीरको प्राप्त हुए हरि स्थापित करताभया ४६ और सब गुणों से संयुक्त और दिव्य और सैकड़ों मुखोंसे आकुल ऐसी मधुधाराको करताभया४७ ऐसे पाखोंवाले और इच्छापूर्वक बिचरनेवाले ऐसे सब पर्बत यज्ञ बराहने कियेहैं ४८ ऐसे पृथ्वीका बिभाग करके देवते और दैत्यों की उत्पत्ति के अर्थ बुद्धिको करता भया ४९ ऐसे सब दिशाओं में नानाप्रकारके पर्वतोंको और जलसे युक्त नदियोंको लोक के हितके अर्थ करताभया ५० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबाराहप्रादुर्भावे पंचविंशत्यधिकद्विशतोऽध्याय: २२५॥

दोसौछब्बीसका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे कि जगत्को रचनेवाला बिष्णु चिंतवन करनेलगा तब तिसके मुखसे एकपुरुष निकसताभया १ तब वह पुरुष विष्णुसे कहनेलगा कि मैं क्याकरूं तब बिष्णु कहनेलगा २ कि आत्माका बिभागकर ऐसे कहके ईश्वर अंतर्हित होगया तब तिस देवकी कही वाणीको चिंतवन करताहुआ अकेला ३ आपही प्रजापतिरूप करके स्थितरहा ४ और जो वेदोंसे स्तुतिकिया हिरण्य गर्भ भगवान्है वह पहले एक प्रजापतिरूप रहा तब तिसकी प्रभृतिसे यज्ञभाग होताभया ५ तब प्रजापति कहनेलगा तिस महा-

ह्माने मेरेको आत्माको बिभाग के अर्थ बचनकहा सो कैसे आत्मा का बिभाग करना योग्यहै यहां मेरेको अति संशयहै ६ ऐसे चिंतवन करतेहुये ब्रह्माके ॐ ऐसा स्वर पृथ्वी और आकाश और स्वर्ग में शब्द करता भया ७ पीछे तिस ॐकार का अभ्यास करनेवाले ब्रह्मा के हृदय से वषट्कार सम्यक प्रकारसेउत्थित हुआ ८ पीछे भूर्भुवःस्वये तीन ब्याहृती उत्पन्नहुईं पीछे वेदोंमेंश्रेष्ठ देवी और चौबीस अक्षरोंवाली ऐसी गायत्रीको ईश्वर करता भया पीछे ऋक् साम अथर्व यजु इनचार वेदोंको ईश्वर करताभया १० पीछे तिसके मनमें सन सनक सनातन सनंदक सनत्कुमार ११ रुद्र ये छः महर्षि मनसे उत्पन्न होते भये और ब्रह्म और कपिलभी होतेभये १२ इस प्रकार उन ब्रह्मयोगियों को रचतेभये कि जिन्होंको यतिजन योग तंत्रोंमें स्तुतकरतेहैं १३ पीछे मरीचि अत्रि पुलस्त्य पुलह क्रतु अंगिरा मनु और प्रजापति १४ और सब भूतोंके और देवते दैत्यराक्षस इन्होंके पितर और आठ महर्षि इन्होंको रुद्र रचताभया १५ ऐसे युगसहस्रके अंतमेंजोप्रजा रचीजाती है फिर कल्पके अंतमें प्रलय होजाताहै १६ औरपश्चात्हजारबर्षोंके पीछे इन्हीं देवताओंकी और प्रजाकेकारणरूप योगियोंकीउत्पत्तिहोतीहै १७ और किंतुकर्म विशेष करकेतो देवताओंकी उत्पत्ति युगयुगमेंहोतीहै और युगके विपर्यय अर्थात्प्रलयके अंतमेंनाम विशेषहोतेहैं १८ तसी ईश्वरकेदाहिनेअंगूठेसे दक्ष उत्पन्नहुआ औरबायेंअंगूठेसे दक्षकीभार्या उत्पन्नहुई १६ फिर दक्षप्रजापतिसे भार्यामें बहुतसी कन्या उत्पन्नहुईं जिन्होंकी संतानोंसे ये लोक व्याप्तहुयेहैं २० और अदिति दिति दनु प्राधा मुनि षसा अनायुषा कद्रु बिनता सुरभी २१ ईरा क्रोधबसा सुरसा ये तेराकन्या दक्षप्रजापतिने कश्यपकेवास्ते दी २२ और गति को जाननेवाला अंतरात्मा भगवान् मन करके प्रजाकाचिंतवनकर अरुंधती वसु यामी लंबा भानु मरुत्वति २३ संकल्पा मुहूर्त्ता साध्या विश्वा इन दश कन्याओंको दक्ष ब्रह्माके पुत्र मनुके अर्थ देता भया २४ पीछे कमलकेसमान नेत्रोंवाली और पूर्णचंद्र के समान

मुखवाली और दिव्य और गंधवाली और मनोरम २५ ऐसी और कीर्त्ति लक्ष्मी धृति तुष्टि बुद्धि मेधा क्रिया मति पुष्टि लज्जा इन दशनामोंवाली कन्याओंको दक्ष धर्मके अर्थ देताभया २६ और रोहिणी आदि सत्ताईस नामोंवाली कन्याओंको दक्ष अत्रिका पुत्र चंद्रमाके अर्थ देताभया २७ सो कश्यपके सकाशसे अदिति में सूर्य वरुण मित्र पूषा धाता इंद्र त्वष्टा भग अंश अर्य्यमा पर्जन्य इन आदि नामोंवाले देवते उत्पन्नहुये २८ और कश्यपजीसे दितिमें अतिपराक्रमवाले कश्यपके समान उपमावाले ऐसे हिरण्य कशिपु और हिरण्याक्ष ऐसे दोपुत्रहुये २९ और हिरण्यकशिपुके प्रह्लाद संह्लाद अनुह्लाद हृद अनुहृद इन नामोंवाले पांचपुत्र हुये ३० और प्रह्लादके बिरोचन जंभ कुजंभ ऐसे नामोंवाले तीन पुत्र हुये ३१ और बिरोचनके बलिपुत्रहुआ और बलिके अकेला बाण नाम पुत्रहुआ ३२ और बाणके इंद्रदमन पुत्रहुआ और दनुकेमहा बलवाले बहुतसे पुत्रहुये ३३ तिन्होंमें प्रथमराजा बिप्रचितिहुआ और गणनामक क्रोधाकेबिषे अनेकपुत्र पौत्रोंको उपजाताभया ३४ और क्रोधाके क्रोधके बसीभूत और क्रूरकर्मवाले ऐसे रौद्रगणउत्पन्नहुये ३५ और सिंहिकाके चंद्रमा सूर्यको मर्दन करनेवाला राहु ग्रह उत्पन्नहुआ और कालाके कालेयगण उत्पन्नहुये ३६ और कद्रूके शेषनाग वासुकी तक्षक इन आदि नामोंवाले बहुतसे सर्प उत्पन्नहुये ३७ और धर्मात्मा और वेदकोजाननेवाले और सबकालमें प्राणियोंके हितमें रत ३८ और बरको देनेवाले और कामदेव रूपवाले और ताक्ष्य आरिष्टनेमि गरुड़ ३९ अरुण आरुणी ऐसे नामोंवाले बिनिताके पुत्रहुये और ये सब नानाप्रकारकी ४० और अलंवुसामिश्रकोशी पुंडरीकातिलोतमा ४२ सुरूपा लक्ष्मणा क्षेमा रंभा मनोरमा असिता सुबाहू सुव्रता सुमुखी ४३ सुप्रिया सुगंधा सुरसा प्रमाथिनी काम्या सारद्वती बिश्वावसु और भरण्य गंधर्व ४४ इन नामोंवाली अप्सरा और गंधर्व प्राधाके उत्पन्नहुये और मेनका सहजन्या परिणिनी पुंजिकस्थला ४५ घृतस्थला घृताची

विश्वाची उर्बशी अनुम्लोचा प्रम्लोचा मनोवती ४६ इननामोंवाली अप्सरा प्रजापतिके संकल्पसे उत्पन्न हुईहैं और जगत्में प्रियरूप वालीहैं ४७ और अमृत ब्राह्मण गाय और रुद्र ये सुरभीमें उत्पन्न हुयेहैं ४८ ऐसे कश्यपजीकी संतानहुई अब संक्षेपसे मनुके वंशको जान ४६ बिश्वाके बिश्वेदेवे और साध्याके साध्य और मरुत्वती के मरुद्गण और बसुके सब बसु ५० और भानुके सब भानु और मुहूर्त्तके मुहूर्त्त और लंबाके घोस और जामीके नागबीथी ५१ और अरुंधतीके पृथ्वी विषयक सब पदार्थ और संकल्पाके संकल्प ऐसे संतान उत्पन्न होतेभये ५२ और धर्मके सकाशसे लक्ष्मीमें जगत्को प्रिय ऐसाकामदेव पुत्र हुआ और कामदेव के सकाशसे रति भार्यामें हर्ष और यश इननामोंवाले दोपुत्र उत्पन्नहुये ५३ और चंद्रमाके सकाशसे रोहिणीमें महाप्रभावाला बर्चा पुत्रहुआ जिसकरके उदय हुआ चंद्रमा अति तेजवाला प्रतीतहोताहै ५४ ऐसे स्त्रियोंके हजा-रह पुत्र उत्पन्न हुयेहैं और इतनाही जगत्कामूलहै जहां त्रैलोक प्रतिष्ठित होरहेहैं ५५ पीछे प्रजापति भगवान् गुणसे मनुष्यों को देखके राज्यस्थान पै युक्त करताभया ५६ और दशदिशा पृथ्वी ऋषि समुद्र वृक्ष औषधी सर्प नदी देवते दैत्य लोकको रचनेवाले प्रजापति आकाश पाताल क्रिया यज्ञ पर्बत इन्होंको भगवान् करता भया ५७

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्व भाषायांबाराहेजगत्सर्गे षड्विंशत्यधिक द्विशतोऽध्यायः २२६॥

दोसौसत्ताइसका अध्याय॥

बैशंपायनजी बर्णन करतेहैं कि हेराजन् सूर्यकेसमान तेजवाला इंद्रको ब्रह्माजी तीनोंलोक और देवताओंकाराजा करतेभये१ और वह बज्र और कवचको धारणकरनेवाला और जयरूप इन्द्र अदि-तिके ऐसे पैदा होताभया कि जैसे अध्वर्यु संज्ञक ब्राह्मणोंसे स्तुति कियाहुआ था २ और वेदकीसहायता करनेवाला भगवान् यज्ञमें

उत्पन्नहोताहै और वह इन्द्र अदितिसे उत्पन्नहोतेही कुशाओंको धारणकर उसीसमय से देवताओंका ईश और कौशिक संज्ञा इस अधिकारको प्राप्तहोताभया ३ और इन्द्रको गद्दो पै बैठा और अभिषेचन कर्म कर फिर ब्रह्माजी क्रमसे राज्यका अधिकार वर्णनकरते भये ४ और यज्ञ तथा तप और नक्षत्र और ग्रह और ब्राह्मण और औषधि इन सबोंका राजा चंद्रमा को करतेभये ५ और प्रजाका स्वामी दक्ष और जलोंका स्वामी वरुण और पितरोंका स्वामी अग्नि ६ और संपूर्ण गंध और शरीर रहित भूत और शब्द और आकाश और बल इन्होंका स्वामी बायु ७ और संपूर्ण भूतपिशाच और मातृगण और गौ और उत्पात ग्रह और रोग और ब्याधि ८ और संपूर्ण प्रेत इन्होंका स्वामी महादेव और यक्ष और रक्ष और गुह्यक और धन ९ और संपूर्ण रत्न इन्होंका स्वामी कुबेर और संपूर्ण डसनेवालों का स्वामी शेष और नागोंका स्वामी वासुकि १० और संपूर्णसरीसृप संज्ञक नागोंका स्वामी तक्षक और समुद्र और नदी और मेघ और बर्षा इन्होंका स्वामी पर्जन्य और गंधर्वोंका स्वामी चित्ररथ १२ और संपूर्ण अप्सराओं का स्वामी कामदेव और संपूर्ण चौपाया और संपूर्ण वाहन १३ इन्हों का स्वामी महेश्वर ध्वजनाम गोवृष और दैत्योंका स्वामी बड़े तेजवाला हिरण्याक्ष १४ और यौवराज्यका स्वामी हिरण्यकशिपु और दानव और संपूर्ण असुर १५ इन्होंकास्वामी बिप्रचित्ति और कालकेयसंज्ञक गणोंका स्वामी महाकाल १६ और अनायुषाके पुत्रोंका स्वामी वृत्रासुर और अशुभोंके करनेवाले संपूर्ण उत्पातों का स्वामी सिंहिका का पुत्र राहु १७ और ऋतु और मास और युग और पक्ष और रात्रि और दिन और पर्व तिथि और कला और काष्ठा और मुहूर्त्त और गति और अयन १८ और योग और गणित इन्होंका स्वामी संवत्सर और पक्षि और चक्षु इन्होंका स्वामी महाबल १९ और भोगियोंका स्वामी गरुड़ और योग और साध्य इन्होंका स्वामी जवाकेपुष्पके सम कांतिवाला अरु-

ग २० और पूर्वदिशाका स्वामी कश्यप प्रजापतिका पुत्रबिरथ और सूर्यकापुत्र औरबड़ेयशवालाऐसे धर्मराजको दक्षिणदिशा का स्वामी करतेभये २१ और तिसका सत्कार इन्द्र भी करताहै और कश्यप का और सपुत्र २२ पहिले जलमें प्राप्तहुआ और अंबुराजनाम वाला तिसको पश्चिमदिशाका स्वामी करतेभये और कांतिमान् और इंद्रके तुल्य पराक्रमवाला और राकाक्ष और पिंगलनामवाला ऐसा पुलस्त्यऋषिके पुत्रको उत्तर दिशाका स्वामीकरतेभये२३ और संपर्णलोकोंको रचनेवाला ब्रह्मा ऐसे राज्योंका विभागकर और स्वर्ग के लोकोंको पृथक् पृथक् देताभया २४ और किसीको बिजलीके समान प्रकाश करताहुआ लोकको देताभया २५ और किसीको नानावर्णवाले और इच्छापूर्बक भोगोंको देनेवाले और सैकड़ोंयोजन बिस्तारवाले ऐसे चंद्रमाके तुल्य कांतिवाले लोकोंको देतेभये२६ और उन लोकोंमें महात्मा और सुंदरकर्मोंकेकरनेवाले पुरुष प्राप्तहोतेहैं २७ और पापिओंको दुर्लभहैं और वे लोक कैसेहैं कि ग्रह और तारागणोंके तुल्य प्रकाशहोतेहैं २८ और महात्मा तथा पुण्यके करनेवाले और नानाप्रकारकी यज्ञोंसे परमेश्वरके पूजन करनेवाले और ब्राह्मणोंको दक्षिणा देनेवाले २९ और अपनीस्त्रियोंसे रमणकरनेवाले और सरल सुभाओंवाले और सत्यकेबक्ता और दीनपुरुषों पै दयाकरनेवाले और ब्राह्मणोंकी भक्तिवाले ३० और लोभ और रजोगुणसे रहित और तपके करनेवाले ऐसे संत लोग उन लोकोंमें प्राप्तहोतेहैं ३१ और ब्रह्मा अपने पुत्रोंको तिस तिस अधिकारमें प्राप्तकरके और कमलरूपी अपनेस्थानमें प्राप्त होतेभये ३२ और इंद्रसे पालनकियेहुए देवता ब्रह्माके दियेहुए अपने अपने लोकोंमें रमणकरतेभये ३३ और ऐसे ब्रह्माने इन्द्रसे आदिले संपूर्ण देवता जगत् को पालनाकरनेमें तत्परकिये और ब्रह्माजी को सुंदरयश भी स्वर्ग में प्राप्तहोता भया और यज्ञों के भागको भोजन करनेवाले देवता आनंदको प्राप्त होतेभये ३४

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांसप्तविंशाधिकद्विशततमोऽध्यायः २२७॥

दोसौअट्ठाइसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हेराजन् एकसमय पर्वत धरणी को त्यागके परमेश्वरकी मायाके बलसे अपने पांखोंको फैलाके उड़तेभये १ और पश्चिमदिशामें असुरोंके स्थानमें प्राप्तहोके एक तलावमें हाथियोंकी नाईं स्नान करते भये २ और वे पर्वत असुरों के प्रति स्वर्गके ऐश्वर्यको वर्णन करतेभये वे असुर ऐसे सुन स्वर्ग के ऐश्वर्यको हरनेका उद्योग करनेलगे ३ और बड़ेपराक्रमों वाले और क्रूर और पृथ्वीके हरनेमें रतहुये ऐसे भयंकर दैत्य आयुधोंको ग्रहण करते भये ४ और चक्र तथा तलवार और अशनी और भुशुण्डी और धनुष और प्रास और पाश और शक्ती और मुशल और गदा ५ ऐसे दिव्य हथियार और कवचोंको धारणकरते भये और कोई असुर मतवाले हाथियोंपै और कोई रथों पै और कोई घोड़ों पै ६ और कोई ऊटों पै और कोई बैलोंपै और कोई भैंसोंपै और कोई गधोंपै ७ और बहुतसे असुर अपनी भुजाओंके बलरूपी सवारियोंपै ऐसे अपनी अपनी सवारियों पै स्थितहोके और हिरण्याक्ष को प्राप्तहो ८ और युद्धकी इच्छा करते हुये जहां तहां बिचरनेको लगे और देवताभी संपूर्ण इन्द्रके स्थानमें प्राप्तहुये और दैत्योंके उद्योगको देख और अपने परम उद्योगको करतेभये ९ और अपनी चतुरंगिणीसेनासे सावधानहुये और धनुष और अंगुलीत्राण शस्त्र और बाणों से भरेहुये तर्कश १० और उग्रहथियार इन्हों को धारणकर और अपनी २ सेना में प्राप्तहो और ऐरावत हस्थी पै स्थितहुये इन्द्र के पीछे २ स्थित होतेभये ११ और तूर्य तथा भेरी इन्होंको बजाताहुआ हिरण्याक्ष इन्द्रके सामने दौड़ताभया १२ और पैनाफरसा और निस्त्रिंश और गदा और तोमर और शक्ति और मुशल और भिंदिपाल इन हथियारों से इन्द्रको आच्छादन करता भया १३ और बलसे फिंकेहुये बड़ेघोर रूप और प्रकाश करते हुयेऔर बड़ेबेगवाले ऐसे बाणों की बर्षा इन्द्रपैहोनेलगी १४ और

फरसा और परिघ और खड्ग और क्षेपणीय और मुद्गर १५ और गंड शैल और घातनी और शतघ्नी और यंत्र और विदारण ऐसे २ हथियारोंसे वे दैत्य १६ संपूर्ण देवता और इन्द्रको हननकरतेभये और नानाप्रकारके हथियारोंको धारणकरताहुआ १७ और सायं कालके बद्दलकेसम लालकांतिको धारणकरताहुआ और उत्तम किरीटको धारणकरता हुआ १८ और नीले और पीतवस्त्रोंको धारण करताहुआ और सफ़ेद २ उपरले दांतोंको मुखसे बाहर काढ़ता हुआ १९ और गोड़ोंपर्यंत भुजाओं वाला ऐसा धूम्रकेश और हरिस्मश्रु और प्रकाशमान वैडूर्य्य युक्त आभूषणोंको धारण करता हुआ २० और ऊपरके हथियारोंको उठाताहुआ ऐसा हर्यक्ष दैत्य और दैत्यों के भयको दूरकरनेवाला और युगांत अग्निके सम कांतिवाला और मृत्युके तुल्य ऐसा हिरण्याक्ष दैत्य भी ऐसे दैत्यों को देखके इन्द्र और संपूर्ण देवता भय से कांपते भये २२ और पर्वतके समान शरीरको धारणकरता हुआ हिरण्याक्ष और जंगम दैत्य इन दोनोंकोदेख देवता अपने अपने धनुषोंको धारण करतेभये२२और देवता इन्द्रको अगाड़ीकरके रणमें स्थित होतेभये और सोनाके कवचोंको धारणकर दैत्योंकी सेनाभी शोभाको प्राप्त होतीभई २३ और शरदऋतुकी चांदनी के सम प्रकाशमान होती सेना परस्पर में हथियारोंको चलाती हुई अपने अपने मोरचे पै स्थित होतीभई २४ और योद्धा परस्पर में द्वंद्वयुद्ध करतेहुये भुजा ओंको छेदनकरतेभये और परस्पर में गदा और बाणोंसे अंग भंग हुआ पृथ्वीपै गिरताभया २५ और कोई पृथ्वीपै घूमताभया और कोई रथको तोड़ताभया और कोई किसीको मर्दनकरता भया २६ और कोई संकटको प्राप्त होताभया और रथ चलनेको समर्थ नहीं होतेभये और दानवोंकीसेना मेघरूपहै और देवताओंके शस्त्र बिज- लीके तुल्यहैं २७ और परस्परमें बाणोंकीबर्षासे युद्धरूपी दुर्दिन तिससमय भानहोताभया और दितीकापुत्र हिरण्याक्ष महाबली क्रोधको प्राप्तहो २८ ऐसे वृद्धिको प्राप्त होताभया कि जैसे महा

पार्वणीमें समुद्र वृद्धिको प्राप्तहोताहै २९ और क्रुद्धहुआ हिरण्या-
क्षके मुखमेंसे अग्निके कणका और अग्निसे मिलाहुआ धूमा निक-
लताभया ३० और तिसके समीपसे भयानक पवन चलताभया
और नानाप्रकारके अस्त्रोंकेजाल और धनुष और परिघ इन्होंकी
वर्षासे आकाश ऐसे आच्छादन होताभया ३१ कि जैसे उछलते
हुए पर्वतोंसे आकाश छादनहोताहै और बहुतसे देवता हिरण्यक-
शिपुके हथियारोंसे अंगभंगहुये और युद्धसे चलनेको समर्थ नहीं
होतेभये ३२ और यत्नवाले भी देवता यत्न करनेको समर्थ नहीं
होतेभये और हिरण्याक्ष से रणमें रोकाहुआ इन्द्रचलने को स-
मर्थ नहीं होताभया ३३ और संपूर्ण देवताओंको जीत और इन्द्र
को रोक और संपूर्ण जगत्को अपने आत्मामें मानताभया ३४
और सजलमेघके तुल्य शब्दको करताहुआ और मतवाले हस्ति
को भेदनकरताहुआ और सिंहकेतुल्य पराक्रमको करताहुआ और
धनुषको टंकोरताहुआ ऐसे स्थितहुआ हिरण्याक्षको देवता देखते
भये ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांअष्टाविंशत्यधिकद्विशतोऽध्यायः२२८

दोसौउनतीसका अध्याय ॥

और वैशंपायनजी वर्णनकरतेहैं कि हे राजन् चक्र और गदा
को धारणकरनेवाला भगवान् हाराहुआ इन्द्र और देवताओं को
देख हिरण्याक्षके मृत्युकाउपाय करताभया १ और पहिले पर्वत
नाम वाराह वर्णनकियाहै सो वह असुरोंका नाशकरनेवाला भग-
वान्रूप होके आवताभया २ और वह भगवान् चंद्रमासरीखीकां-
तिवाला शंख और एकहजार आराओंवालेचक्रको ३ ग्रहणकरता
भया और महादेव और महाबुद्धि और महायोगी और महेश्वर
और अव्यय ऐसे नामोंवाले भगवान्को देवता गुह्यनामोंसे पढ़ते
हैं ४ और भगवान्को सत्पुरुष सदा सेवनकरतेहैं और पूजतेहैं
और पुराणोंसे गातेहैं और वह भगवान् सुरेन्द्राओंमें बैकुंठरूप है

और भोगिओंमें अनंतरूपहै और योगिओंमें विष्णुरूपहै और यज्ञ
के कर्मकर्त्ताओं में यज्ञ रूपहै ५ ऐसे भगवान् की कृपासे संपूर्ण
देवता पृथ्वीमें स्थितहुए यज्ञोंमें तीनप्रकार से होमाहुआ घृतको
भोजनकरतेहैं ६ और वह भगवान् दैत्योंका नाशरूप अग्निहै और
देवताओंका गतिरूपहै और पवित्रोंमें पवित्ररूप है और स्वयंभुवों
में ब्रह्मारूपहै ७ ऐसे भगवान् के चक्रमें स्थितहुए दैत्योंके कुल युग
युगके प्रति नाशको प्राप्तहोतेहैं ८ और वह भगवान् अपने बलसे
दैत्योंके जीवनमें संदेहको उपजाताहुआ तिससमय अपने पुराने
शंखको बजाताभया ९ और भयानक शंखके शब्दको सुनके संपूर्ण
दैत्य दशोंदिशाओंमें देखनेलगे १० और वह महान् असुर हिर-
ण्याक्ष लाल लाल नेत्रोंको धारण करताहुआ और यह शंखको
बजानेवाला कौनहै ११ ऐसे कहताभया और अपने सामने स्थित
बाराह और पुरुष शरीरको धारण करताहुआ और शंख चक्र गदा
इन्होंकोधारण करताहुआ १२।१३ ऐसे भगवान् को देखताभया और
वह भगवान् ऐसे शोभाको प्राप्तहोताभया कि जैसे सूर्य चंद्रमाके
बीचमें नीलामेघ शोभाको प्राप्तहोताहै १४ और संपूर्ण असुर हि-
रण्याक्षके पास इकट्ठे हो और आयुध और निस्त्रिंश ऐसे हथियारों
को उठा भगवान् के सामने दौड़तेभये १५ और अति बलवान्
दैत्योंसे पीड़ित कंपाहुआ भी भगवान् अपने रणको छोड़के नहीं
चलताभया १६ और बलवान् हिरण्याक्ष दैत्य अपनी प्रकाशकर-
तीहुई शक्तिको उठाके भगवान् की छातीमें मारताभया १७ और
शक्तिके प्रहारको देख ब्रह्माको बड़ा आश्चर्य्य पैदाहुआ तब भग-
वान् समीपआतीहुई शक्तीको देख १८ और अपनेहुंकार शब्दसे
पृथ्वीमें गेरतेभये और पृथ्वीमें गिरीहुई शक्तिकोदेख ब्रह्माजी वाह
वाह कहनेलगे १९ और क्रोधमें प्राप्तहुआ भगवान् सूर्यकी कांति
के सम तेजवाला चक्रको ले २० और उत्तम कर्मसे हिरण्याक्ष की
नाडमें मारताभया और उसीसमय हिरण्याक्षका शिर टूट पृथ्वीपै
ऐसे पड़ताभया कि २१ जैसे बज्रसे टूटाहुआ पर्वतका शिखरपड़-

ताहै फिर मराहुआ हिरण्याक्षको देखके संपूर्ण दैत्य २२ दशोंदि-
शाओंमें दौड़तेभये २३ और जैसे प्रलयकालमें खड्गपाणि भग-
वान् शोभाको प्राप्तहोताहै वैसेही युद्धमें चक्रपाणि भगवान् शोभा
को प्राप्त होताभया २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांऊनत्रिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः २२६

दोसौतीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णनकरतेहैं कि हे राजन् भगवान् संपूर्ण दैत्यों
को रणमेंसे भगाके और इन्द्रसहित बंधेहुये संपूर्ण देवताओं को
छुटाताभया १ और वे संपूर्ण देवता स्वस्थचित्तहो और इन्द्रको
अगाड़ीकर परमेश्वरसे बोले २ कि हे भगवन् आपकीकृपा और
भुजाओंके वलसे अब कालके मुखमें से बचेहैं ३ और हे भग-
वन् हमको आप आज्ञादीहै अब हम कौन कर्मकरें और हम आप
के चरणोंकी शुश्रूषाकरनेकी इच्छा करतेहैं ४ वैशंपायनजी वर्णन
करतेहैं कि हे जनमेजय पुंडरीक कमलकेसमान नेत्रोंवालेभगवान्
देवताओंकेवचनको सुन-देवताओंसे वोले ५ कि हे देवताओ जि
सका जो लोकहै वह मैंनेही पहिले विधानकियाहै सो अपनेलोक
की यत्नसे पालनाकरो ६ और जहां तहां मेरीआज्ञाको पालनाक
रो और ऐश्वर्य और यज्ञोंकेभागको प्राप्तहो यहमैंने पहिले तुम्हा-
रे अर्थ विधानकियाहै ७ और इन्द्रसे भगवान् बोले कि हे इन्द्र
सत्पुरुप और असत्पुरुषोंमें तू यथायोग्य न्यायकर ८ और व्रतोंके
धारणकरनेवाले मुनि तपकरके स्वर्गको प्राप्तहों और यज्ञोंकेकरने
वालेपुरुष परमेश्वरका पूजनकर और फलको प्राप्तहों ६ औरश्रेष्ठ
धर्म और श्रेष्ठस्वभाववाले पुरुषोंका भाव फलो और पापकर्मकर
नेवाले पुरुषोंको अभावका फल प्राप्तहो और संपूर्ण आश्रमों में
निवासकरनेवाले पुरुष स्वर्गमें प्राप्तहो १० और सत्य तथा दान
और रण इन्होंमें शूरवीरता करनेवाले और निंदासेरहित ऐसेपुरुष
स्वर्गकेफलको प्राप्तहो ११ और श्रद्धासेरहित और कामी औरशठ

और ब्राह्मणोंको भक्तिसे रहित और नास्तिक ऐसे पुरुष नरक को प्राप्तहों १२ और हे देवताओ मेरे कहे हुये इस बाक्य को करो और जहां मैं स्थितहों उहां तुमको शत्रु बाधा नहीं करेंगे १३ ऐसे कहिके भगवान् अंतर्द्धान होतेभये और देवताओं को बड़ा आश्चर्यपैदाहोताभया १४ और बाराहजी महाराजके अद्भुतरूपीचरित्र को देख और बाराहजी को नमस्कार कर देवता स्वर्गमें प्राप्तहोतेभये १५ और अपने अपने अधिकारों में प्राप्तहोतेभये और इन्द्र भी संपूर्ण लोकोंके अधिकार में प्राप्तहोताभया १६ और दैत्यों से छुटीहुई पृथ्वी अपनी प्रकृतिको प्राप्तहोतीभई फिरपृथ्वीकी स्थिरताके हेतुपर्बतोंको जान पांखोंसे उड़तेहुये१७पर्बतोंको अपने २ स्थानोंमें स्थापितकर और सौ पर्बोंवाले बज्र से पांखोंको छेदन करता भया १८ और देवताओंसे प्रीति करताहुआ एकमैनाक पर्बत शेष रहताभया १९ ऐसे बाराहजी नारायणका प्रादुर्भाव ब्राह्मणों ने वर्णन कियाहै और पुराणोंमें बाराह कहाहै २० और यह वेदव्यासजीकामत नानाप्रकारकी श्रुतियों करके प्रमाण किया हुआहै और अशुद्ध और पापी और दयारहित और तुच्छ और नीच और गुरुद्वेषी और कुशिष्य और कृतघ्नी ऐसेपुरुषोंको यह आख्यान नहीं सुनाना चाहिये २१ और आयु और पृथ्वी और यश और जयइन्हों को इच्छा करताहुआ पुरुषको यह देवताओंका जयरूपी आख्यान सुनना उचितहै २२ और यह पुराण परमेश्वर रूपहै और पवित्रहै और कल्याण का स्थान और संपूर्ण प्राणियों के सत्त्वका उपजानेवालाहै २३ और हेराजन् बाराहजी महात्माका यह प्रकाश मैंने आपके प्रतितत्त्वसे बर्णनकिया२४और जोपुरुष यज्ञोंसे देवता और पितरोंका पूजन करते हैं वे पुरुष अपने आत्माकरके अपने आत्मा बिष्णुको पूजतेहैं २५ और लोकायन और त्रिदशायन और ब्रह्मायण और आत्मप्रभायन और नारायण और आत्म हितायन और महाबराह ऐसे भगवान् को हे राजन् तू नमस्कार कर २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २३०॥

दोसौइकतीसका अध्याय॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हेराजन् बाराह अवतार मैंने आपकेप्रतिवर्णनकिया और नारसिंहअवतार को सुनोजहां सिंहरूप होके भगवान् हिरण्य कश्यपको मारतेभये १ और हेराजन् वह हिरण्य कश्यप पहिले सतयुगमें अत्यंत तपको करताभया २ और एकस्थान और मौन ऐसे दृढ़व्रतको धारणकर ग्यारह हजार और पांचसौवर्ष जलमें बासकरताभया ३ और तप और नियम और शम दम और ब्रह्मचर्य इन्होंकरकेब्रह्मा।तिसपै प्रसन्न होताभया ४ और आदित्य और वसु और साध्य और मरुत और देवता और रुद्र और विश्वेदेवा और यक्षराक्षस किन्नर ५ और दिशा और बिदिशा और नदी और सागर और नक्षत्र और मुहूर्त और ग्रह ६ और देव ता और ब्रह्मर्षि और सिद्ध और सप्तर्षि और राजर्षि और गंधर्व और अप्सरा ७ इन्होंकरके सहित और हंसकर के संयुक्त और सूर्य केसी कांतिवाला ऐसा बिवांनमें बैठ ब्रह्मातहां प्राप्तहोताभया और दैत्यसेबोला ८ कि हेहिरण्य कश्यप मैं तेरेपै बहुत प्रसन्नहुआ और तूमेरेसेइच्छापूर्वक वरमांग और तूसंपूर्ण कामनाओंको प्राप्तहोगा ९ ऐसे भगवान्के वचनको सुन हिरण्य कश्यप हाथजोड़ ब्रह्माजी से बोला १० कि हे भगवन् मेरेको ऐसा बरदोकि देवता और असुर और गंधर्व और यक्ष और उरग और राक्षस और मानुष और पिशाच इन संपूर्णोंसे मेरी मृत्युनहींहोवे ११ और ऋषियोंके शापसेभी नहीं मरूं १२ और शस्त्र और अस्त्र और गिरि और पादप और शुष्क वस्तु और गीलीवस्तु इन्होंसेभी मैंनहींमरूं १३ और स्वर्ग और पाताल और आकाश और पृथ्वी और भीतर और बाहिर और रात्रि और दिनइन्होंमेंभी मेरामृत्यु नहींहोवे १४ और जो एकहाथसेनाश केहित मेरेमारनेको समर्थहो वह मेरेको मारेगा १५ हेभगवन् ऐसा वरमेरेकोदो और सूर्य और चंद्रमा और वायु और अग्नि और जल और आकाश और नक्षत्र और दशोंदिशा १६ और कामक्रोध और

बरुण और इन्द्र और यम और कुबेर और यक्ष और किंपुरुष १७ ऐसामेरा रूपहोजावे और हेब्रह्मन् और संपूर्णअस्त्र अपनी २ मूर्ति धारणकर महायुद्धमें मेरेको प्राप्तहों १८ ऐसे हिरण्यकश्यपकेबचन को सुन ब्रह्माबोलेकि हेपुत्र अद्भु तबर संपूर्णतेरे प्रतिमैंनेदिये और संपूर्ण कामना को तू निस्संदेह प्राप्तहोवेगा १९ बैशं पायन जी बर्णनकरतेहैं हेराजन् ब्रह्माजी ऐसेकहि अपने ब्रह्मस्थान को जाते भये २० और देवता तथानाग और गंधर्व और ऋषिये सबहिरण्य कश्यपके बरकोसुन पितामहके पासप्राप्त होतेभये २१ और ब्रह्मा के प्रतिदेवता बोलेकि हे भगवन् इस बरको प्राप्तहोके यह असुर हमको पीड़ा देवेगा सो इसके बधका उपाय करो २२ बैशंपायनजी बर्णन करतेहैंकिहे राजन् वहब्रह्मासंपूर्ण लोकोंका आदिकर्ता २३ औरस्वयंभू और हव्यकव्योंका रचनेवाला ऐसाब्रह्मालोकके हितकारी बचनोंकोसुन सुंदर शीतल जलरूपी बचनों से २४ देवताओं को प्रसन्न करताभया और कहने लगा कि हे देवता ओ वह असुर निश्चय तपके फलको प्राप्तहोवेगा और तपकेअंतमें भगवान्बिष्णु उसको मारेंगे २५ ऐसे ब्रह्माके वचनको सुनसंपूर्ण देवता अपने २ स्थानोंको प्राप्तहोतेभये २६ और वह हिरण्य कश्यप दैत्यबरदान से मदोनमत्तहुआ संपूर्ण प्रजाको बाधा देनेलगा २७ और आश्रमों में संपूर्ण मुनियों और ब्रत और सत्यतथा धर्म इन्होंके धारणकरने वालेपुरुषों को दुःख देनेलगा २८ और वह महासुर त्रिभुवन में स्थितहुआ देवताओं को जीत और त्रिलोकी को बशकर स्वर्ग में वासकरताभया २९ और काल प्रभुकी प्रेरणा से मदोन्मत्त हुआ यज्ञोंमें देवताओं का भागछीन दैत्योंको देताभया ३० फिर तिस समयमें आदित्य और साध्य और बिश्वेदेवा और बसु और रुद्र और देवता और यक्ष और महर्षि ये संपूर्ण इकट्ठे हो ३१ भगवान् केशरण जातेभये और देवमय और यज्ञमय ऐसेभगवान्को स्तुति करनेलगे ३२ हेनारायण हेमहाभाग येसंपूर्ण देवता आपके शरण आयेहैं सोइन्होंकी रक्षाकरो ३३ और इसदैत्यकोनष्टकरो और ब्रह्मा

दि देवताओंके हमारेधाताहो और परमगुरू और परमदैवहो ३४ ऐसेसुनविष्णु महाराज देवताओंसे बोलेकि हेदेवताओ अबतुमभय को त्याग और अभयको प्राप्तहो और थोड़ाही कालमें अपनेस्वर्ग में प्राप्तहोजाओगे ३५ और मदोन्मत्त सेनासहित दैत्यकोमैं मारूं गा ३६ ऐसेदेवताओंकोकहि भगवान् हिरण्य कश्यप दैत्यकेमारने का संकल्प करतेभये ३७ और हिमवान् पर्वतके पासआके बिचार करनेलगेकि मैंकौनरूप धारके दैत्यको मारूं ३८ और कौनसा रूपजल्द मृत्युकी सिद्धिकरताहै ऐसेविचार भगवान् नृसिंहरूपको धारणकर ३९ बड़ेविस्तारवाला और दिव्यरूपवाला ॐकारशब्द को सहायता मेंले और हिरण्यकश्यप के स्थानमें जाकेप्राप्त होते भये ४० और सूर्यके समान तेजवाला चंद्रमाके समानकांतिवाला और आधा मनुष्य का शरीर और आधा सिंहके शरीर को धारण कर ४१ फिर नरसिंह शरीरकरके हाथसे हाथकास्पर्श करफिर और मनको खुशीकरनेवाली और संपूर्ण कामनाओंसेयुक्त ४२ ऐसीहिर: ण्यकश्यपकी सभाको देखताभया और सौयोजन चौड़ो और पांच योजन ऊंची ४३ और आकाश में विचरनेवाली और जराशोकको ग्लानी इन्होंसे रहित और कल्याणरूप और शुभदायक ४४ और सुंदर २ आसनोंवाली और मनोहर और प्रकाश करती हुई और तलाओंसे युक्त और विश्वकर्माकी रची हुई ४५ और रत्नमयवृक्षों से युक्त और नीलपीतसित श्याम श्वेतलोहित ऐसेवृक्षोंसे युक्त४६ और कपड़ छत्त और सैकड़ों मंजरिओंको धारण कर्ती हुई वेलोंसे युक्त ४७ और सफेद बद्दलकीसी कांतिवाली और प्रकाशमानऔर सुंदर सुगंधवाली और मनको हरनेवाली ४८ औरनहीं अत्यंत शी तल और नहीं अत्यंतगरम और क्षुधा प्यास इन्हों से रहित ४९ और नानावाणोंसे रचीहुई और मणिमय स्थंभोंसे युक्त और चन्द्रमा सूर्य अग्नि इन्होंकोभी प्रकाश करतीहुई ५० और संपूर्ण कामना ओंकी देनेवाली और रसवाले भक्ष्य और भोज्य पदार्थोंवाली ५१ औरसुंदरसुगंधवालीमालाओंसेयुक्तऔरनित्यपुष्पफलोंवालेवृक्षोंसे

युक्त और उष्णसमयमें शीतलजलोंवाली और शीतकालमें गरमजलों वाली ५१ और पुष्पयुक्त शाखा और कोमल कोमल पत्रवाले वृक्षोंसे युक्त और बेलोंकी छतवाली और तलाव और नदी ५२ और नानाप्रकारके वृक्षोंसे युक्त और सुगंधिवाले पुष्प और रसोंवाले फल और संपूर्णतीर्थ इन्होंसे युक्त ५३ और नलिन और पुंडरीक और सुगंधि वाले शतपत्र और रक्त और कुवलय और नील और कुमुद ५४ ऐसे कमलोंसे युक्त शीतलजलोंवाले तलावोंसेयुक्त और कांतिवाले धार्त्तराष्ट्र हंस और राजहंस और कारंडव ५५ और चकवा और सारस और कुरर ऐसे पक्षियोंसे युक्त और वृक्षोंपै लिपटीहुई और सुगंधिवाले पुष्पोंको धारण करनेवाली ऐसी लताओंसेयुक्त ५६ और केतकी और शोक और पुंनाग और तिलक और अर्ज्जुन और आम्र और नीप और कदंब और नागपुष्प और प्रियंगु ५७ और शाल्मलि और पाटलीवृक्ष और जंबुल और सहरिद्रु और शाल और ताल और प्रियाल ५८ और चंपक ऐसे और भी पुष्पोंवाले वृक्ष और वैद्रुम और द्रुम और अग्निकेसे कांतिवाले देवताओंकेवृक्ष ५९ और सुंदर शाखा और डालोंवाले ऊंचे ऊंचे वृक्ष और अंजन और शोक और पर्णाश और बंजुलद्रुम ६० और वरुण और बत्सनाभ और पनस और चंदन और नील और सुमनस और पीत और अश्वत्थ और तिंदुक ६१ और प्राचीन और मलक और लोध्र और मल्लिका और भद्रदारु और अंबाड़ा और जामन और बड़हल और एलवा ६२ और सर्ज्जरस और कुंदुरु और पुन्नाग और कुटज और रक्त और कुरुवक और नीप और अगुर ६३ कदंब और भव्य और दाड़िम और बीजपूरक और कालीयक और दुकूल और हिंगु और तैलपर्णिक ६४ और खजूर और नारियल और चर्मवृक्ष और हरीतकी और मधूक और सप्तपर्ण और बिल्व और पारावत ६५ और पनस और तमाल और नानाप्रकारके पुष्पफलोंवाले ६६ और गुल्मलताओंवाले ऐसे फूले और फलेहुये बृक्षोंके ऊपर रक्त और पीत और सफेद वर्णोंवाले चकोर ६७ और शतपत्र और मतवाले

कोकिला और मैना ऐसे पक्षि फल फूलों को खातेहुये परस्पर में देखते हुये आनन्दको प्राप्त होतेहैं ऐसे गुणोंवाली सभाको नृसिंहजी महाराज देखतेभये ६८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांएकत्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः२३१॥

दोसौबत्तीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हे राजन् ऐसी सभामें सूर्यकी कांतिकी समकांतिवाले आसन पै १ प्रकाश करताहुआ कांचनके कुंडलोंवाला हिरण्यकशिपुदैत्य शोभाको प्राप्तहोता भया २ और आसनपै बैठेहुये दैत्यके समीपमें सुखको उपजानेवाला और सुगंधि को लिये ऐसा मंदमंद पवनचलताभया ३ और देवता और गंधर्व और अप्सरा सुंदर तालदेदेके गायनविद्याको करतेभये ४ और बिश्वाची और सहजन्या और प्रम्लोचा और बिश्रुता और दिब्या और सौरभेयी और समीची और पुंजिकस्थला ५ औरमिश्रकेशी औररंभाऔर चित्रसेना और शुचिस्मिता और चारुनेत्रा और घृताची और मेनका उर्वशी ६ ऐसेही और भी बहुतसी नृत्य और गीतोंको जाननेवाली अप्सरा हिरण्यकशिपुको प्रसन्न करती भईं ७ और बिचित्र आभरणोंको धारण करता हुआ और उज्वल कुंडलोंको धारण करता हुआ ८ और हजारहां स्त्रियोंसे युक्त हिरण्यकशिपुका पुत्र शूरबीर तिस सभामें स्थित होताभया ९ और आसन पै बैठेहुये महाबाहु हिरण्यकशिपुको ये सब सेवन करतेभये १० और बलि और नरक और पृथ्वींजय और प्रह्लाद और विप्रचित्ति और गविष्ठ ११ और चंद्रहंता और क्रोधहंता और सुनामा और सुनति और घटोदर और महापार्श्व और क्रथन और पिठर १२ और बिश्वरूप और सुरूप और विरूप और दशग्रीव और वाली और मेघबासा १३ और घटाभ और विकटभ और संहाद और इन्द्रतापन और संपूर्णदानव औरदैत्य उज्वलकुंडलऔरमालाओंको धारण करतेहुये १४ और बहुत बोलने वाले और सुंदर चरित्रोंके करनेवाले और संपूर्ण वरोंको प्राप्तहुये

और शूरबीर और मृत्युसे रहित १५ और संपूर्ण आभूषणोंको धारण करते हुये औरभी बहुतसे दैत्य हिरण्यकशिपुको सेवन करतेभये १६ औरभी बहुतसे आभूषणोंको धारण करतेहुये और अग्निकी तुल्य प्रकाशमान बिमानों में बैठेहुये और बिचित्रवस्त्रों को धारणकरते हुये १७ और बिचित्रशस्त्र और कवचोंको धारण करतेहुये और विचित्र ध्वजा और सवारियोंको धारण करतेहुये १८ और इंद्रकेधनुष की कांति सदृश बाजुओंसे अपने अपने शरीरोंको शृङ्गारतेहुये और सुवर्णजड़ित मुकुटोंको धारणकरतेहुये ऐसे संपूर्णदैत्यहिरण्यकशिपु की उपासना करतेभये १६ और सुवर्ण और मणिजड़ित बिचित्र वेदिका और निर्मल हीराओंसे जड़ित २० छोटीगली और हाथियों के दांतोंसे रचेहुये झिरोखा ऐसे कामोंसे शोभायमान सभामें आसनपै बैठाहुआ और निर्मल सुवर्णके हारको धारण करताहुआ २१ और सूर्य की कांतिके तुल्य प्रकाशमान ऐसे हिरण्यकशिपु को नृसिंहभगवान् देखतेभये २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्वात्रिंशदधिकद्वात्रिंशोऽध्यायः२३२॥

दोसौतेतीसकाअध्याय॥

वैशंपायनजी बर्णनकरतेहैं कि हेराजन् बड़ीभुजाओंवाला और कालचक्रकी नाईं आता हुआ और भस्ममें दबाहुआ अग्नि जैसे होताहै तैसे नृसिंह शरीरमें लुकाहुआ ऐसेभगवान्को हिरण्यकशिपु देखताभया १ और तिससमयमें नृसिंहजीका रूप शोभाको प्राप्त होता भया और संपूर्ण दानव और हिरण्यकशिपु ऐसे कहते भये कि शंख और कुंद और चंद्रमा २ इन्होंकी कांतिकीतुल्य यहरूपबड़ा बिचित्रहैऐसेकहतेहुये दैत्योंके मध्यमेंहिरण्यकशिपुकापुत्र प्रह्लाद नाम ३ और बड़ापराक्रमवाला अपने दिब्यचक्षुसे नृसिंहरूपको भगवान्का रूप देखताभया ४ और सुवर्णके पर्वतकी समान अपूर्व मूर्त्तीको धारण करताहुआ भगवान्को देखदानव और हिरण्यकशिपु आश्चर्य्यको प्राप्तहोतेभये ५ और प्रह्लादजी हिरण्यकशिपु

से बोलेकि हे महराज हे महाबाहो ऐसा नृसिंहरूप मैंने ना कभी देखा और ना कभी सुना ६ और अद्भुत और दैत्योंका नाशकर्त्ता ऐसा यहरूप हमारे मनमें संदेहको उपजाताहै ७ और देवता और समुद्र और नदी और हिमवान् और पारियात्र और इन्होंसे आदि ले संपूर्ण पर्वत ८ और चन्द्रमा और नक्षत्र और आदित्य और अग्नि और कुवेर और बरुण और यम और इन्द्र ९ और पवन और देवता और गंधर्व और ऋषि और नाग और यक्ष और पिशाच और राक्षस १० और ब्रह्मा और मस्तकमें स्थितहुआ चंद्रमा और स्थावर और जंगम ११ और तुम्हारा शरीर और संपूर्ण दैत्योंसहित मेरा शरीर और हजारहां बिमानों सहित यह भीतरकोसभा १२ और संपूर्ण त्रिलोकी और धर्म्म ये सब नृसिंह के शरीरमें ऐसे भान होतेहैं कि जैसे निर्मलचंद्रमा विषे जगत् भानहोताहो १३ और प्रजापति और मनु और ग्रह और योग और पृथ्वी और आकाश और उत्पातकाल और स्मृति और धृति और रज और सत्व और तप और दम १४ और सनत्कुमार और बिश्वेदेवा और बसु और क्रोध और काम और हर्ष और दर्प और संपूर्ण पितर ऐसे हे राजन् इस नृसिंह के शरीरमें ये संपूर्णभान होतेहैं १५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रयस्त्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २३३ ॥

दोसैचौंतीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णनकरतेहैं कि हे राजन् हिरण्य कशिपु ऐसे प्रह्लाद के वचनकोसुन संपूर्ण दानवोंसेबोला १ कि हे दैत्यो इससिंह को पकड़लो और जोयह पकड़ानहींजावे तोयह बनगोचर बधकरने केयोग्यहै २ ऐसे संपूर्ण दैत्य बचनको सुनके और आनन्दित हुये और हथियारोंको ग्रहणकर नृसिंहजीके मारनेको प्रवृत्तहोतेभये ३ तब वे नृसिंह रूपी भगवान् अपने सिंह शब्दको कर उस दिव्य सभाको ऐसे भेदनकरतेभये ४ किजैसे मुखको फाड़ताहुआ कालप्रभु मनुष्यको नष्टकरदेताहै ५ और हिरण्यकशिपु भेदनकीहुई सभाको

देख बड़े घोररूप अस्त्रोंको भगवान्‌पै छोड़ताभया ५ धर्मचक्र और अजितनाम महाचक्र और रौद्रचक्र और ऋषिचक्र ६ और महचक्र और त्रैलोक्य संहत और अशनिऔर शुष्कअशिनि और आर्द्रअशिनि ७ और त्रिशूल और कालनाम मुशल और ब्रह्मशरनाम अस्त्र और ब्राह्मअस्त्र ८ और ऐषिकअस्त्र और ऐन्द्रअस्त्र और आग्नेयास्त्र और शैशिरअस्त्र और वायव्यअस्त्र और मथनअस्त्र और कापालअस्त्र और किंकरअस्त्र ९ और शक्ति और क्रौंचअस्त्र और हयशिरास्त्र और सोमअस्त्र और पैशाच अस्त्र १० और सर्पअस्त्र और मोहन अस्त्र और शोषणअस्त्र और संपातन और बिलापन ११ और जृम्भणास्त्र और पातनअस्त्र और त्वाष्ट्र अस्त्र और कालअस्त्र और क्षोभणअस्त्र १२ और संबर्तअस्त्र और मायाधर अस्त्र और गांधर्वअस्त्र और दयितअस्त्र और असिरत्न अस्त्र और नंदकास्त्र १३ औरप्रस्वापनअस्त्र और प्रमथनअस्त्र और बारुणअस्त्र और पाशुपतअस्त्र १४ जैसे जलताहुआ अग्निमें आहुति छोड़तेहैं वैसेही इन संपूर्ण अस्त्र और शस्त्रोंको नृसिंहजीपै हिरण्यकशिपु छोड़ताभया १५ और जैसे उदयकालमें सूर्य भगवान् अपनी किरणोंसे हिमवान पर्वतको आच्छादन करलेतेहैं वैसेही नृसिंहजीकोहिरण्यकशिपु अपने अस्त्रों से आच्छादन करताभया १६ और जैसे मैनाकपर्वतको समुद्र चौगिर्दसे घेरलेताहै तैसेही दैत्योंका सेनारूपी समुद्र भगवान्‌कोघेरलेताभया १७ और प्रास और पाश और खड्ग और गदा और मुशल और वज्र और अशनि और शिला और द्रुम १८ और मुद्गर और कूटपाश और शूल और लूखल और पर्वत और शतघ्नी और दंड ऐसे १६ हथियारोंसे भगवान् के शरीरका किंचित् मात्र भी नहीं छेदनहोताभया २० तब वे दानवअपने २ हाथोंमें फाशिओंको ग्रहणकर और इन्द्रकेबज्रके तुल्य बेगसे दौड़तेहुये भगवान् के चारोंतरफ ऐसे ऐसे स्थित होतेभये कि जैसे तीन २ शिरोंवाले नागोंकेबच्चे स्थितहोतेहैं २१ औरसुवर्णऔर मोतिओंकी मालाओंसे शरीरकोभूषितकियेऐसेशोभाकोप्राप्तहोतेभयेकिजैसेसुंदरपांखोंवाले

हंस शोभाको प्राप्तहोते हैं २२ और प्रातःकालके सूर्यके किरणों को समकांतिवाले और वायुके समान पराक्रमवाले ऐसे दैत्य भगवान्के चारोंतरफ शोभाको प्राप्तहोतेभये २३ और प्रकाशमान अग्निके तेजके तुल्य तेजवाले भगवान् शस्त्र और अस्त्रोंकी वर्षा से ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे मेघोंकी वर्षासे आच्छादन किया हुआ पर्वत शोभाको प्राप्त होताहै २४ और बलवान् दैत्योंके शस्त्रोंसे पीड़ित किया हुआ भगवान् युद्धमें कंपायमान नहीं होता भया और ऐसे स्थित होताभया कि जैसे हिमवान पर्वत एकजगह पै स्थितहै २५ और नृसिंहरूपी भगवान् से भयभीत हुये संपूर्ण दैत्य युद्धसे ऐसे दौड़तेभये कि जैसेपवनसे समुद्रकीझाल दौड़जाती है २६ और क्रोधसे भस्महोते हुये संपूर्ण महासुर सैकड़ों धनुषों को धारणकरअत्यंत वेगसे नृसिंहजीपै बाणोंको छोड़तेभये २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांचतुस्त्रिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः२३४ ॥

दोसैपैंतीसका अध्याय॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हेराजन् खरोंकेसे रूपवाले और खरोंकेसे मुखोंवाले और मच्छ और सर्पोंकेसे मुखोंवाले और मृगों केसे मुखोंवाले और वाराहकेसे मुखोंवाले १ और बालसूर्यके मुखों वाले और धूम्रकेतुकेसे मुखवाले और चंद्रमा और अर्द्ध चंद्रमाकेसे मुखोंवाले और जलतीहुई अग्नि केसे मुखवाले २ और हंस कुक्कुट केसे मुखवाले और फटेहुये मुखोंवाले और पंचमुखोंवाले और गलूफोंको चाटतेहुये और काक और गृध्रों केसे मुखोंवाले ३ और बिजलीकीसी जिह्वावाले और तीन शिरोंवाले और ग्राहोंकेसेरूप वाले और बलसे मदोन्मत्त हुये ४ दानव शरोंकी वर्षासे पर्वतकेसे भगवान्के शरीरमें पीड़ाकरनेको समर्थ नहीं होते भये ५ और दानव फिर भगवान्की छातीमें घोररूपी बाणोंको छोड़के ऐसेक्रोध होतेभये कि जैसे सर्प क्रोधको प्राप्तहोतेहैं ६ और नृसिंहजीपै छोड़े हुये बाण ऐसे नष्ट होतेभये कि जैसे आकाशमें प्रकाश करतेहुये

खद्योत नष्ट होजाताहै ७ और क्रोधसेभस्महोतेहुये दैत्यप्रकाशमान और घोररूप चक्रोंको लेके फिर नृसिंहजीपै छोड़ते भये ८ और पड़तेहुये चक्रोंसे आकाश ऐसे आच्छादित होताभया कि जैसे प्रलय कालमें प्रकाशमानहुये चंद्रमा और सूर्यसे आच्छन्न होताहै ९ और अग्निकैसे प्रकाश करतेहुये संपूर्ण चक्रोंको वे नृसिंहरूप भगवान् मुखमें निगलतेभये १० और मुखमेंप्राप्तहोतेहुये चक्रऐसेप्रकाशकरते भये कि जैसे मेघकी बड़ी उदररूपी गुफाको चंद्रमा सूर्य प्रकाश करतेहैं ११ और हिरण्यकशिपु फिर भगवान्पै अग्नि और बिजलीकी तुल्य प्रकाश करतीहुई अपनी शक्तिको छोड़ताभया १२ और सिंहरूपी भगवान् आतीहुई घोर शक्तिको देख अपनेहुंकार शब्दसे छेदन करतेभये १३ और भगवान्से छेदनकीहुई वहशक्ति पृथ्वी पैऐसे शोभाको प्राप्तहोतीभई किजैसे आकाशसे पड़तीहुई बिजली शोभाको प्राप्तहोतीहै १४ और असुरोंने दूरसेफेंकीहुई बाणोंकीपंक्ति नृसिंहजी की ग्रीवामें ऐसे शोभाको प्राप्तहोतीभई कि जैसे नीला कमल और केसुओंकीमाला शोभाको प्राप्तहोती है १५ और फिर नृसिंहजी अपनेपराक्रमकोकर औरइच्छापूर्वक गर्जके दैत्योंकीसेना कोऐसे भगाता भया कि जैसे तृणको पवन उड़ादेताहै १६ और वे दैत्य आकाशमें प्राप्तहोके शिला और पर्वतोंके शिखरोंकी बर्षा नृसिंहजी पै करतेभये १७ और वे पत्थर नृसिंहजीके लाग२ और फूट २ के दशोंदिशाओं में ऐसे बिखरतेभये कि जैसे पटबीजणों के समूह चिमक २ बिखरजातेहैं १८ और बारंबार शिलाओंकी बर्षा से भगवान्को ऐसे आच्छादन करतेभये कि जैसे रूपाके पर्वतको बर्षाओंसेमेघ आच्छादनकरतेहैं १९ और वे दैत्य स्थितहुये भगवान् को एक जगहसे नहीं डिगा सक्ते भये कि जैसे मंदराचल पर्वतको समुद्र नहीं चलासकताहै २० और पत्थरोंकी बर्षा नष्टहोनेसे उपरांत गाड़ीके धुरासरीखी जलधाराओं से नृसिंहजीपै बर्षा होने लगी २१ और आकाशसे पड़तीहुई बड़े बेगवाली हजारहां धारा आकाश और दिशा और बिदिशाओंको आच्छादन करतीभई २२

और धाराओंके पड़नेसे और बायुके बेगसे और बंधीहुई बर्षासे तिससमय कुछभी नहीं मालूम होता भया २३ और युद्धमें स्थित हुये मायारूपी भगवान्से दूरदूर वे मेघ बर्षा करतेभये २४ और पत्थरोंकी वर्षा तथा जलोंकी बर्षाको नष्टहुई देख वे दैत्यफिर बायु से युक्त अग्निरूप मायाको रचते भये २५ और आकाशसे उतरा हुआ और वहुतबेगवालाऔरअग्निरूपमालाओंवालाऔर बड़ाभया नक और जलताहुआ २६ ऐसा हिरण्यकशिपुका रचाहुआ अग्नि नृसिंहजीके जलानेको समर्थ न होताभया २७ और महान् कांति-वाला इंद्र अपने मेघोंकोलेके जलकी बर्षासे अग्निको शांत करता भया २८ और नष्टहुई अग्निरूप मायाको देखके संपूर्णदैत्य अपनी घोर अंधकार रूप मायाको रचते भये २९ तब संपूर्ण लोकको अंधकार से युक्त देख भगवान् दैत्यों के अस्त्र शस्त्रोंमें ऐसे प्रकाश करतेभये किजैसे सूर्य प्रकाशकरतेहैं ३० और भगवान्के मस्तकमें तीन शिखाओंवाली और क्षोभयुक्त भृकुटीको वे दानव ऐसे देखते भये कि जैसे त्रिकूट पर्वतपै स्थित गंगाको देखतेहैं ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपंचत्रिंशदधिकद्विशततोऽध्यायः२३५॥

दोसौ छत्तीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी बर्णनकरतेहैं कि हे राजन् ऐसे नष्टहुईसंपूर्णमाया ओंको देखके दुःखित हुए संपूर्णदैत्य हिरण्यकशिपु के शरणजाते-भये १ तब हिरण्यकशिपु क्रोधसे जलताहुआ और नेत्रोंसे भस्म करताहुआ संपूर्ण पृथ्वीको चलायमान करताभया २ और क्षुभित हुये समुद्र और संपूर्ण पर्वत और संपूर्ण बनचलायमान होतेभये३ और हिरण्यकशिपुकेक्रोधरूपी अंधकारसे संपूर्ण जगत् अंधकारयु-क्तहोताभया औरजगत्में कुछनहींदिखताभया४तिससमय आवहत-थाप्रवहतथाविवहतथापरावहतथा संवहतथाउद्वहतथापरिवहये ५ औरसातोंपवन उत्पातके भयसे क्षुभितभये ऊपरनीचे उलट पलटके चलनेलगे ६ और जौनसाग्रह प्रलयकालमें प्रकटहुआ करतेहैं वे

ग्रह प्रलयके उत्साहसे खुशी होके बिचरनेलगे ७ और स्वर्गमें चंद्रमा कांतिसे रहित होताभया और ग्रहतथा नक्षत्र इन्होंकेसहित रात्रिमें आकाश अग्निके सम जलनेलगा ८ और सूर्यनारायण बिवर्णता को प्राप्तहोताभया और आकाशमें बिनाशिर पुरुष दीखनेलगा ९ और आकाशमें स्थितहुआ सूर्यके मंडल होताभया और धूमाकीकांतिकीसमकांतिवाले घोररूप सातसूर्यआकाशमें दीखनेलगे १० और आकाशमें स्थित चंद्रमाकेऊपर स्थानमें संपूर्ण ग्रह स्थितहोतेभये ११ और चंद्रमाके बामभागमें शुक्र और दक्षिणभागमें वृहस्पति स्थित होताभया और शनैश्चरका लालरंग होताभया और मंगल सूर्य के समान प्रकाश होगया १२ और भयानकपक्षी कोकिलाओं को आरोहण करतेभये और नक्षत्र और ग्रहोंसे युक्त हुआ चंद्रमा रोहिणीकोनहीं प्राप्तहोताभया १३ और राहु उल्का पातसे सूर्यको हननकरताभया और जलतीहुई उल्का चंद्रमाके सामनेचलती भई और देवताओंकाभी देवताइन्द्र रुधिरकीबर्षा करताभया और बज्र से शब्दको करतीहुई आकाशसे बिजलीगिरतीभई १४।१५ और अकालमें वृक्ष और लता फल और पुष्पोंको धारण करतेभये १६ और पुष्पोंमें पुष्प और फलोंमें फल उपजते भये और संपूर्ण देवताओंकी मूर्त्ती आंखोंको खोलनेलगी और मीचनेलगी और हंसने लगी और रोनेलगी १७ और अत्यंत शब्दको करनेलगी और धूमाकीसी कांतिको धारणकर जलनेलगी १८ और बनके पशु और गांवके मृग और पक्षी अत्यंत भयानकशब्दको करतेभये १९ और संपूर्ण नदी गिधलेजलोंसे उलटी बहनेलगी और लालरेतके उड़ने से दिशा प्रकाश नहीं होती भई २० और पूजन करने के योग्य वृक्षोंका पूजन नहीं होताभया और बायुके बेगसे वृक्ष नष्ट होते भये २१ औ डालोंमेंसे टूटतेभये और शब्द करतेभये और दुपहर पीछे संपूर्ण प्राणियोंके देहकी छाया नष्ट होतीभई २२ और हिरण्यकशिपुके स्थानके ऊपर और बर्तनोंके स्थानमें और हथियारों के स्थानमें सहद लगताभया २३ और हथियारोंके स्थानमें धूमा

कीपंक्ति दीखनेलगी ऐसे महान् उत्पातोंको हिरण्यकशिपु देखके २४ अपने शुक्राचार्य पुरोहितसे बोला कि हेभगवान् ये उत्पात किस अर्थ उठतेहैं सो मैं सुननेकी इच्छा करताहूं मेरे बड़ा आश्चर्यहोता है २५ फिर शुक्राचार्यजी वर्णन करतेभये कि हेराजन् ये उत्पात महाभयकेदेनेवालेहैं२६ और जिसअर्थदीखतेहैं सो मेरेमुखसे तू सावधानहोके सुन हेमहासुर जिसराजाके राज्यमें ये उत्पात दीखतेहैं तिस राजाका देश नष्ट होजाताहै अथवा वह राजा नष्ट होजाता है २७ और हेमहासुर बुद्धिसे देख और ग्रहणकर थोड़ेहीकालमें बड़ाभय प्राप्तहोवेगा २८ ऐसे शुक्राचार्यजी हिरण्यकशिपुसेकहिके और तेरा कल्याणहो ऐसेकहिके फिर अपनेस्थानको जातेभये २६ और हिरण्यकशिपु दीनताको धारणकर और एकजगह स्थितहोके शुक्राचार्यकेवचनको याद करताहुआ बिचार करनेलगा ३० कि असुरोंके नाशकेअर्थ और देवताओंके बिजयकेअर्थ ये घोर नानाप्रकार के उत्पात दीखतेहैं ३१ हिरण्यकशिपु ऐसे बिचारकर अपनी गदाको ले धरणीको कंपावताहुआ दौड़ता भया और पृथ्वीको कंपाता भया ३२ और पैरोंसे पृथ्वीको फोड़ताहुआ क्रोधसे अपने ओठोंको ऐसे चावताभया कि जैसे वाराहजीको देखके हिरण्याक्ष होठोंको चावताभया ३३ और पृथ्वीके कांपनेसे बहुतसे सर्प भयसे व्याकुल हुये पर्वतोंसे पृथ्वीपै गिरतेभये ३४ और जहरकी ज्वालायुक्त मुखों से अग्निको छोड़ते भये ऐसे चार शिरोंवाले और पांचशिरोंवाले और सातशिरोंवाले ३५ और वासुकि और तक्षक और करकोंके और धनंजय और एलापत्र और कालिय और महापद्म ३६ और हजार शिरोंवाला और हंसतालध्वज और शेष और दुष्प्रकंप और प्रकंपित ३७ और सातों पातालवासी सर्प और जल और रसये संपूर्ण क्रोधहुआ दैत्यके भयसे कांपतेभये ३८ और भागीरथी नदी और सरयू और कौशिकी और यमुना और कावेरी व कृष्णवेणा ३६ और तुंगवेणा और महाभागा और गोदावरी चर्मणवती और नदियोंका पति समुद्र ४० और मेकलप्रभव और शोण और मणिनिभोदक

और सुस्रोता और नर्मदा और बेत्रवती ४१ और गोमती और गोकुला और कीर्णा और सरस्वती और मही और कालमही और तमसा और पुष्पबाहिनी ४२ और सीता और ईक्षुमती और देविका और जांबूनद और रवचित्र ४३ और सुबर्ण कुंडक और सुबर्णकी ध्वजान और महानद और सुबर्ण से युक्त हुआ लोहित्य पर्बत ४४ और कौशिक आदि देशोंके शहर और चांदीकी खानोंवाला द्रविड़देश और मागधदेश और बड़े २ ग्राम और पौंड्र देश और बंगदेश ४५ और सुह्मदेश और पल्हदेश और बिदेहदेश और मालवदेश और काशिकदेश और बैनतेयका भवन और सुपर्ण काभवन येसंपूर्ण हिरण्यकशिपु दैत्यके भयसे कांपतेभये ४६ और रक्तजलवाला लोहित्य नामतलाव और सफेद मेघकीसी कांतिवाला क्षीरोदनाम सागर ४७ और सौयोजन ऊंचाउदय नामपर्बत और सुबर्ण की वेदियोंवाला और मेघकी पंक्तियोंसे युक्त ४८ और सूर्यकी कांतिकीसदृश और सुबर्णमय ऐसे वृक्षोंसेयुक्त औरसालवृक्ष और तालवृक्ष और तमालवृक्ष ४९ और पुष्पोंवाला कर्णिकारवृक्ष ऐसेवृक्षोंसे प्रकाशमान और धातुओंवाला अयोमुख नामपर्बत ५० और तमालवन गंधपर्वत और मलय पर्बत और सुराष्ट्र देश और वाह्लीकदेश और मद्रदेश और आभीरदेश ५१ और भोजदेश और पांड्यदेश और अंगदेश और कलिंगदेश और ताम्रलिप्तक देश औरअंडदेश और बामचूलदेश और केरलदेश५२और देवता और अप्सराओं के गणये संपूर्ण दैत्यकेभयसे कंपायमान होतेभये और प्राचीन अगस्त्यजीका भवन ५३ और सिद्ध और चारण इन्हों के समूहोंसे सेवित और सुमनोहर और नानाप्रकार के पक्षियों वाला और सुंदर फूलीहुईलता और वृक्षोंवाला ५४ और सेनाके शिखरों वाला और अप्सराओंसे सेवित और लक्ष्मीवान् ५५ और समुद्र कोफोड़के निकसाहुआ और चंद्रमासूर्यकामित्र और बड़े २ शिखरों से शोभायमान ५६ और चंद्रमा और सूर्यकी कांति से युक्त और समुद्रके जलोंसे आवृत ऐसे गुणोंवाला बिद्युत्वान् नामपर्बत और

श्रीमान् और सौयोजन चौड़ा ५७ और विजलियोंवाला ऐसाविद्यु
त्वान् नामपर्वत और श्रीमान् ऋषभ नामपर्वत ५८ और जिसजग
गह अगस्त्यजीका स्थानहै ऐसा कुंजरनाम पर्वतऔरसुंदर गलियों
वाली और शत्रुओंको अगम्यऐसी सर्पोंकी भोगवतीपुरी ५९ तिस
हिरण्यकशिपु दैत्यको कंपादी और महामेघ पर्वत और पारिपात्र
नामपर्वत ६० और चक्रवान् पर्वत और बराह पर्वत और जिसमें
नरकासुर बसताभया ६१ ऐसासुवर्ण से रचाहुआ जोतिषपुर और
मेघपर्वत और मेघगंभीर पर्वत और जिसमें साठहजार पर्वतास्थित
हैं ऐसाउदय होतासूर्यकी तुल्य कांतिवाला सुमेरु पर्वत और मेघ
सरीखा शब्दकरनेवाला पर्वत और यक्षराक्षस गंधर्व इन्होंसेसेवित
और शोभायमान और मनोहर६२ और नित्य खिलेहुये पुष्पोंसेयुक्त
वृक्षोंवाला ऐसाकैलास पर्वत और सुवर्णकेसी कांतिवाले कमलोंसे
आच्छादित ६३ ऐसा बैखानसनाम तलाव और राजहंसोंसे सेवित
ऐसामान सरोवर और त्रिशृंगपर्वत और नदियोंमें श्रेष्ठकुमारीनदी
६४ और मंदरपर्वत और उशीरबीज पर्वत और रुद्रोपस्थपर्वत ६५
और ब्रह्माका स्थान और पुष्कर पर्वत और देवा वृत्थपर्वत पर्वत
और वालुक पर्वत६६ और क्रौंचपर्वत और सप्तर्षिपर्वतऔरधूमवर्ण
पर्वत और भी अन्यपर्वत और जनपददेश६७ और नदी और समुद्र
और कपिल मुनि और व्याघ्रनामा पृथ्वीकापुत्र ६८ और पाताल
में वसनेवाले रारिके पुत्रखेचर नामोंवाले और मेघ नाम और
अंकुशा युध और उद्वेग और भीमवेग ऐसे महादेवके गण संपूर्ण
कंपायमान होतेभये ६९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांषट्त्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः२३६ ॥

दोसौसैंतीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हेराजन् आदित्य और साध्य
और विश्वेदेवा और वसु और रुद्र और देवता और पवनयेसंपूर्ण १
लोक के क्षयहोनेके भयसे डरतेहुये नृसिंहजी के पासआके कहते

भये २ किहे भगवन् लोकोंका नाशकरने वाला और खोटेआच-रणकरनेवाला और संपर्ण दैत्योंसे युक्त ३ ऐसे हिरण्यकशिपुको जल्दमारो और आपही दैत्योंके नाशकहो और तुमसे उपरांत और कोईनहीं है सोइस दैत्यको मारके लोकोंका कल्याणकरो ४ और हेभगवन् तुम्हीं संपर्ण लोकोंके गुरूहो और तुम्हीं इन्द्रहो और तुम्हीं पितामहहो और तुम्हीं शरणहो सो तुमसे अन्य और कोई शरण न तो पीछेहुआ और न अगाड़ी होवेगा ५ ऐसे देवतों के वचनको सुनके भगवान् मेघके शब्दके समानअत्यंत भयानकशब्द करतेभये ६ और ऐसेनृसिंहजीके भयानक शब्दको सुनके दैत्यों के हृदय और मनफाटते भये ७ तबऐसे भगवान् के शब्द को सुनके क्रोधवश और कालकेय और वेग और वेगलेय और सैंहिकेय ८ और संहादीय और महाह्रादीय और बिद्वेष औरकपिल और व्यघ्राक्ष और क्षितिकंपन ९ और खेचर और रौद्र और मेघनाद और अंकु-शायुध १० और उद्वेग और भीमवेग और भीमकर्म और अर्क लोचन और वज्री और शूली और कराल ११ ऐसेअसुरों के गण और जीमूतमेघ की तुल्यप्रकाशवाला और जीमूतमेघकी तुल्यवेग वाला और जीमूतमेघकी तुल्यशब्दवाला और जीमूतमेघकी तुल्य कांतिवाला और मदोन्मत्तहुआ ऐसाहिरण्यकशिपु १२ दैत्यहथि-यारोंकोले नृसिंहजीपै दौड़ताभया तबनृसिंहजी कूदके और पैने २ नखोंसे तिसको फाड़ के युद्ध में मारतेभये १३ तब पृथ्वी और लोक और चंद्रमा और आकाश और ग्रहऔर सूर्य और संपूर्णदिशा और नदी और पर्वत और समुद्रये संपूर्ण हिरण्यकशिपु के मृत्युसे खुसीहोतेभये १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांसप्तत्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २३७

दोसौअड़तीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हे राजन् खुसीहुये देवताऔर ऋषि नानाप्रकारके स्तोत्रोंसे भगवान्की स्तुति करतेभये १ कि

हे भगवन् धारणकिया हुआ इस तेरे नृसिंह शरीरका परमतत्त्व के जाननेवाले महात्मा पुरुष पूजनकरेंगे २ और हे भगवन् हे नृसिंह ऐसे कहिके मुनीश्वर आपका गायन करेंगे३ और हेभगवन् आपकी कृपासे अपने स्थानोंको अब हम प्राप्तहोतेभये ऐसे नृसिंह जीके प्रति कहतेहुये देवताओंके मध्यमें४ प्रसन्नहुआ ब्रह्मा परमेश्वर के स्तोत्रको उच्चारण करताभया ५ कि हे भगवन् आप अक्षरहो और अव्यक्तहो और अचिंत्यहो और गुह्यहो और उत्तमहो और कूटस्थहो और अकर्ताहो और सनातनहो और अनामयहो ६ और हे भगवन् सांख्य और योगमें तत्त्वार्थ युक्तनेष्ठा वाली वुद्धिको विद्यात्मारूप भगवान् तुम जानतेहो ७ और स्थूलरूप और सूक्ष्म रूप और ब्रह्मा और देवता और आत्मा यह संपूर्ण आपका रूप है ८ और संपूर्ण जगत् तुमसेही उपजता है और हेभगवन् श्रीकृष्ण और बलदेव और प्रद्युम्न और अनिरुद्ध ऐसें चारप्रकारसे बिभाग कीहुई मूर्तीरूप तुमहो ९ और संपूर्णलोकोंके गुरू और पालकहो और सतयुग त्रेता द्वापर कलियुग ऐसी एकहजार चौकड़िओंके स्वामीहो १० और संपूर्ण लोकों के काल के भीकालहो और चारों वेदरूपहो और चतुर्होत्र यज्ञरूपहो और चतुरात्मा अर्थात् मन बुद्धि चित अहंकार रूपहो११ और सनातन हो और संपूर्ण लोकोंके स्थान रूपहो और अनंत बलरूप और पुरुषार्थ रूपहो १२ और कपिलदेवसे आदिले संपूर्ण यतियों की गतिरूपहो और अनादिहो और मध्यहो १३ और नाशरूपहोऔर संपूर्णजीवोंकी आत्माहो और पुरुषोत्तमहो औरजगत्कोरचनेवालेभी तुमहो १४ और नाशकरने वाले भी तुमहो और पालनकरनेवाले भी तुमहो और ब्रह्मा भी तुमहो १५ और रुद्रभी तुमहो और बरुण और यम और कर्ता और विकर्ता और लोकोंका उत्पन्न करनेवाला औरअव्यय१६ औरपरमवुद्धि औरपरमदेवऔरपरममंत्रऔरपरमतप और परमधर्म और परमयश और परमसत्य१७और परमहवि और परमपवित्रऔर परममार्ग और परमयज्ञ १८ और परमहोत्र और

परमशरीरऔर परम धाम और परमयोग १६ और परमवाणी और परमरहस्य और परमगति और परमपद २० और परमप्रभु और परमप्रधान और परमतत्त्व और परम पुराण २१ और परम गुह्य और परमगुप्त हे भगवन् यह संपूर्ण तुम्हाराही रूपहै २२ वैशंपायन जी बर्णन करते हैं कि हेराजन् वह संपूर्ण लोकोंका पितामहब्रह्मा ऐसेनृसिंहजीकी स्तुतिकर अपने ब्रह्मलोकको जाता-भया २३ और बाजतेहुये नगाराओंको और नाचतीहुई अप्सराओं को छोड़के नृसिंह भगवान्भी वहांसे क्षीर समुद्रके उत्तर कूल पै जाके प्राप्तहोतेभये २४ और तहां अपने नृसिंह रूपकोत्याग और नृसिंह मूर्तीको स्थापनकर अपना पुराना रूपको धारणकर २५ और गरुड़पै सवारहोके वहांसे जातेभये ऐसे नृसिंह रूपको धारण कर हिरण्यकशिपुको मारतेभये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांअष्टत्रिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः२३८॥

दोसौउनतालिसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी बर्णन करतेहैं कि हे जनमेजय मैंने आपकेअगाड़ी नृसिंह रूपको बर्णनकिया और यही फिरबामन रूपकोधारणकर-तेभये और वे भगवान् राजाबलिकी यज्ञमेंजाके १ और तीन पैंड़से संपूर्ण त्रिलोकीको नापके राजा बलिके पाससे खोसतेभये २ और नाना प्रकार के पर्वतोंसे शोभायमान ऐसी पृथ्वीको खोस इन्द्रको देतेभये ३ जनमेजय पूछताहै कि हेवैशंपायनजी इस आख्यानको सुन मेरे यह संदेह और आश्चर्य प्राप्तहुआ है कि वे नारायण कैसे बामनरूप को प्राप्तहोतेभये४और पुराणोंमें पुराणात्मा औरनारा-यण और विभु और पद्मनाभ और लोकोंके प्रकृति५ और अनादि और मध्य और नाशरूप और सनातन और देवतोंकाभीदेव और सुराध्यक्ष और कृष्ण६और हव्यऔर कव्यको प्राप्तकरनेवाला और हव्य कव्यको भोगनेवाला ऐसाभगवान् अदितीके गर्भमेंकैसे प्राप्त होताभया ७ और इन्द्रकाभी रचनेवाला ऐसा भगवान्इंद्रका छोटा

भाई कैसे होताभया और स्वर्गमें जन्मलेके विष्णुताको कैसे प्राप्तहो-
ताभया ८ सो हेवैशंपायनजी यह बामनजीकी उत्पत्तिमेरे अगाड़ीबि-
धिपूर्वक वर्णनकरो ९ ऐसेसुन वैशंपायनजीवर्णनकरतेहैं कि हेराजन्
उत्तमऋषियोंनेश्लाघाकीहुई औरकबिऔरब्रह्मा औरब्राह्मणइन्होंने
अपनेमुखसे वर्णनकी १० ऐसीकथाको आपसुनो मैं बर्णनकरता हूं
हे जनमेजय मरीची ऋषिकापुत्र कश्यपके अदिति और दिति दोस्त्री
होतीभईं ११ और अदिति रानी के कश्यपजीके सकाशसे धा-
ता और अर्यमा और मित्र और बरुण और अंश और भग १२
और इंद्र और विवस्वान् और पूषा और पर्जन्य और त्वष्टा और
विष्णु ऐसे देवतापैदा होतेभये १३ और दितिरानीके हिरण्य-
कशिपु और हिरण्याक्ष ऐसेदोपुत्र पैदा होतेभये १४ और हिरण्य
कशिपुके प्रह्लाद और संह्लाद और ह्लाद और जंभ और अनु-
ह्लाद ऐसे पांचपुत्र होतेभये १५ और प्रह्लाद के बिरोचन और
विरोचनके वलि ऐसे पुत्र और पौत्रोंसे तिन्होंकाकुल अक्षय होता
भया १६ और दैत्योंके हजारहां समूह के समूह देश देशान्तर में
प्राप्त होतेभये १७ और वे दैत्य नृसिंह जी से मारेहुये हिरण्य
कशिपुको देखके और देवताओंके बधके अर्थ बलिको राजा करते
भये १८ और धर्ममें तत्पर और सत्यका बक्ता और जितेन्द्रिय और
शूरवीरता और विद्याओंसे संपन्न १९ और संपूर्ण ज्ञानका जानने
व तत्वका देखनेवाला और तेजवाला कृत और कृतज्ञ ऐसे गुणों
वाले बलिको २० अभिषेचन कर्मकर और राज गद्दीपै बैठा वेसंपू-
र्ण दैत्य पूजन करतेभये २१ और संपूर्ण तीर्थोंके जलोंसे भरेहुये
सुवर्णके कलसोंसे ब्रह्मानेभी प्रसन्न होके बलिका पूजनकिया २२
तब संपूर्णदान व जय शब्दोंको करनेलगे और संपूर्णदैत्य बलिको
राजाकर २३ और पृथ्वीमें शिरोंकोनवा ऐसे विज्ञापन करतेभयेकि
हे दैत्येन्द्र इस संपूर्ण वृत्तांतको आपजानतेहो कि स्थावर
और जंगमों करके सहित यह संपूर्ण त्रिलोकीका राज पहिले
हिरण्यकशिपु के होताभया २४ और हिरण्य कशिपुको मारतीनों

लोकोंका राज्यको खोस वे संपूर्ण देवता इन्द्रको अपना राजा करतेभये २५ सोतू अपने दादाके राज्यको इन्द्रसे हरनेको योग्य है २६ और हमआपकी सहायता करैंगे और हे राजन् तू अतोल प्राक्रम वालाहै २७ और हजारहां दैत्योंके गणोंसे युक्तहै सो अब स्वर्गमेंजाके इन्द्रकोजीत औरअपने पितामहके यशको प्राप्तहो२८

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपरवान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायां ऊनचत्वारिंशदधिकाद्विशतोऽध्यायः २३६ ॥

दोसौचालीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णन करते हैं कि हे राजन् वह बलितिन दैत्योंके बचनको सुन और प्रसन्न मनहो दैत्योंसे आज्ञापन करता भया १ कि हे दैत्यो अभीमैं त्रिलोकीको जीतूंगा ऐसे बलिकेबचनको सुनसंपूर्ण दैत्य युद्धके अर्थ परमउद्योग करतेभये २ सो दैत्यों का नामबर्णन करतेहैं कि महापद्म और निकुंभ और पूर्णकुंभ और कांचनाक्ष और कपिस्कंध और व्यघ्राक्ष और क्षितिकंपन ३ और सितकेश और उर्द्ध्ववक्त्र और वज्रनाभ और शिखी और जटी और सहस्त्रबाहु और विकच और मीनाक्ष और प्रियंदर्शन ४ और एकाक्ष और एकपाद और मुंड और विद्युदक्ष और गजोदर और गजशिरा और गजस्कंध और गजेक्षण और अष्टदंष्ट्र और चतुर्दंष्ट्र और मेघनादी और जलंधम५।६औरकराल और ज्वालजिह्व और शतांग और शतलोचन ७ और सहस्त्रपात् और कृष्णमुख और कृष्ण और रणोत्कट और दानपति और शैलकंपी और कुलाक्ष ८ और सुक्षुद्र और रभसश्चंड और धुम्र और प्रियकुर और गोव्रज और गोखुर और रौद्र और गोदंत और स्वस्तिका और ध्रुव ६ और मासथ और मांसभक्ष और केतुमान् और शिवि और पंकदिग्ध शरीर और वृहत्कीर्ति और महाहनु १० और विकुंभांड और विरूपाक्ष और हर और अहर और श्वेतशीर्ष और चंद्रहनु और चंद्रहा और चंद्रतापन ११ और विक्षर और दीर्घकंठ और

मद्यप और मारुताशन और कालकंज और महाक्रोध और शलभ और कुलभ और क्रप्य १२ और समुद्रमथन और नादी और विदर्भ और महाबल और प्रलंब और नरक और वालीखश्रम और काललोचन १३ और वरिष्ट और गविष्ट औ भूतलोन्मथन और विभु और सुप्रसाद और किरीटी और सूचीवक्र १४ और सुबाहु स्वजंबाहु और वरुण और कलसोदर और सोमय और देवयात्री वीरमर्दन १५ और शुश्रूष और चंडशक्ति और कुशनेत्र और शशिध्वज ये दैत्यजाथे सो वैशंपायनजी बर्णान करते हैं कि हे राजन् मैंने आपके प्रति वर्णनकिये हैं १६ औरभो बहुतसे नाना प्रकार के आभूषणोंसे आभूषितहुए और दिव्यमाला और वस्त्रोंको धारण करते हुए और दिव्य कंधों को धारण करेहुए और ऊंची २ ध्वजाओंको धारण करेहुए १७ और मेघोंकी नाईं गर्जते हुए और रथोंके शब्दसे पृथ्वीको कंपावते हुए और सर्पों के शरीर कीसी भुजाओंसे दिव्य अस्त्रोंको धारण करते हुए और लाल २ नेत्रोंवाले १८ और इन्द्रके वज्रकी तुल्य वेगवाले और जाड़ों को काटतेहुए और शरद ऋतुके मेघोंकी नाईं गर्जतेहुए १६ और एकहजार भुजाओंको धारण करताहुआ बलिका पुत्र बाणासुर एककरोड़ रथियों को लेके सावधानहो ऐसे संपूर्ण दैत्य युद्धकेअर्थ स्वर्गको जातेभये २० और नानाप्रकार की मायाओंको धारण करतेहुए और बलरूपी मदोंसे सीचेहुए २१ और सुबर्णके पर्वतों कीसी कांतिवाले और किरीट और मुकुट और पगड़ी इन्हों को धारणकरेहुए२२और सुवर्णके कवचोंको पहिरेहुए और रथोंमें बैठे ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे शरदऋतुके आकाशमें ग्रह शोभाको प्राप्त होतेहैं २३ और प्रलय कालके जलतेहुए अग्निकी सी कांति वाली धुकधुकीओंको धारणकर ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे सुवर्णके पर्वतोंपै फूलाहुआ केसू शोभाको प्राप्त होताहै २४ और शक्ति और गदा इन्होंको धारणकर तीनसौ हाथ चौड़े रथमें बैठाहुआ बाणासुर दैत्योंकेमध्यमें ऐसे शोभाको

प्राप्त होताभया कि जैसे बर्षाकालमें मेघ शोभाको प्राप्त होता है २५ और चित्र ध्वजासे शोभित और सुवर्णकी जालियोंसे बिभूषित ऐसे रथमें बैठाहुआ बाणासुरकी अनेक दैत्य रक्षा करतेभये २६ और सुबाहु और मेघनाद और भीमवेग और गगन मूर्द्धा और केतुमान् २७ इननामोंसे युक्त और महा पराक्रमों वाले और युद्ध में मदोन्मत्त और मुखको फाड़तेहुए और भयानक रूप वाले ऐसेपांच दैत्य बाणासुरके रथकी रक्षा करतेभये २८ और अनायुषा का पुत्र बलनाम महासुर एकलाख रथोंको लेके और नोलालोहमें जड़ाहुआ २९ और कागके शरीरकीसी कांति वाला और सौ ऋच्छोंसे युक्तऐसारथमें बैठ ३० और नीले वस्त्रोंकोधारणकर स्वर्गकोजाता हुआ सेनारूपी समुद्रमें ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया ३१ कि जैसे प्रभात समयमें उदय होताहुआ सूर्य मुद्रमें शोभाको प्राप्तहोता है ३२ और तपाहुआ सुवर्णकीसी कांतिवाला किरीटसे बिजलीकी नाईं प्रकाशमान हुआ ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे बड़ा ऊंचा शिखरसे पर्वत शोभाको प्राप्तहोताहै ३३ और खरोंसे युक्त और मेघकी तुल्य शब्दोंको करनेवाले ऐसे साठ हजार रथ और नाना प्रकारसे युद्धोंके करने वाले ३४ और बड़े मेघोंकेसे शरीरों वाले और वेगवंत और महाबली ऐसे २ दैत्य नमुचि असुरके संग स्वर्गको तैयार होतेभये ३५ और एक हजार व्याघ्रोंसे युक्त और संपूर्ण रत्नोंसे भूषित और सुवर्णकी ध्वजामें शार्दूलके चिह्नसेयुक्त ३६ ऐसा नमुचि असुरका रथ संपूर्ण रथोंमें ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे मध्याह्न कालमें सूर्य शोभाको प्राप्तहोताहै ३७ और वहनमुचि असुर बड़े वेगवाला और महाबली नीलेवस्त्र और सुवर्णके कवचको धारण करताहुआ ३८ और धनुषको धारणकर ऐसे हिमवान् पर्वतकी नाईं स्थितहोताभया कि जैसे तृणको धारण कर दिग्गज स्थित होजाताहै ३९ और घूंघरुओंसे शब्दायमानऔर प्रकाश करतेहुए सामानों वाला और पताका तथा ध्वजाओंसे युक्त और संध्याकालके मेघकी तुल्य कांतिवाला ४० और चारचक्रों से

युक्त और आठसौ हाथचौड़ा और सुवर्णके झरोखोंसे युक्त और कालचक्रकी नाईं प्रकाश करताहुआ ४१ और नाना आयुधों को धारण करताहुआ और व्याघ्रोंके चर्मसे आच्छादित ४२ और सेकड़ों तर्कस और शक्ति और तोमर और गदा और मुद्गर इन-हथियारोंसे युक्त ४३ और प्रकाश करते हुऐ लंबायमान बालोंवाले एक हजार ऋच्छोंसेयुक्तऔर चांदीके पर्वतकीनाईं शोभायमान४४ ऐसे रथमें मयनामा असुर स्थित होताभया और विश्वकर्माका रचाहुआ रत्नरूपी रथमें बैठाहुआ वह बलवान् असुर ऐसे शोभा को प्राप्त होताभया कि जैसे उदय काल में सूर्य शोभाको प्राप्त होताहै ४५ और प्रकाश करतीहुई चांदीकी बिंदुओंसे शोभाय मान और उज्वल सुवर्ण और सुंदरमणि इन्होंसे जड़ित ऐसे दश करोड़ रथ मयनामा असुरके पीछे२ जातेभये ४६

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांचत्वा रिंशदधिकद्विशतोऽध्याय: २४० ॥

दोसौइकतालीसका अध्याय॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हे राजन् शत्रुओंके रथोंको तोड़नेवाला१और पर्वतकी तुल्यऊंचा और लोहके झरोखोंसे युक्त और चक्रोंके शब्दसे समुद्रकी नाईं गर्जताहुआ२और गदा और परिघ और निस्त्रिंश और तोमर और फरसा और शक्ति और मु-द्गर ऐसे हथियारोंसे सजल मेघकीनाईं पूरित३और एक हजार ऊंटोंसे युक्त और वायुके समान वेगवाला ऐसे लोहरूपी रथमें स्थितहोके वह पुलोमा दैत्य युद्धमें मदोन्मत्त ऐसे सामानसे युद्धके अर्थ प्रस्थान करताभया ४ और सूर्यकी तुल्य कांतिवाले और प्रकाश करतेहुए ऐसे साठ हजार रथ पुलोमादैत्यके पीछे२ गमन करतेभये ५ और तपाहुआ सुवर्णकी तुल्य कांतिवाले खड्ग और ध्वजाओंसे वह पुलोमादैत्य रथमें स्थितहुआ ऐसे शोभाको प्राप्त होताभयाकि जैसे पर्वतपै स्थितहुआ सूर्य शोभाको प्राप्तहोताहै६

और सुंदर सुवर्णके पत्रोंसे जड़ित और कालकीतुल्य ऐसी गदाको ग्रहणकर वह महात्मा पुलोमादैत्य अपनी सेनामें ऐसे शोभा को प्राप्त होताभया कि जैसे ऊंचीध्वजा शोभाको प्राप्त होतीहै ७ और पर्वतकी तुल्य कांतिवाला और शत्रुओंके रथको भंजन करनेवाला ऐसे रथमें स्थितहोके ८ और हयग्रीव संज्ञक असुरोंको और एक लाख रथोंको संगलेके वह हयग्रीवनाम असुर युद्धके सन्मुखस्थित होताभया ९ और सफेदपर्वतकीतुल्य प्रकाशमान और सफेदकुंड-लोंसे भूषितहुआ हयग्रीवदैत्य रथमेंस्थितहोके ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे सफेदशिखरवालापर्वत शोभाकोप्राप्तहोताहै १० और अतुलबल और पराक्रमोंवाले और वृद्धिको प्राप्तहोतेहुयेमहा रथियोंकेपीछे २ सैकड़ोंअसुरोंके गण ऐसे गमन करतेभये कि जैसे चलतेहुयेइंद्रके पीछे देवताओंकेगणचलतेहैं ११ और बड़ा बुद्धिमान् और संपूर्णशास्त्रोंकाज्ञाता और संपूर्णमायाओंका जाननेवालाऔर श्रीमान् और सैकड़ोंयज्ञोंकाकरता१२और अग्निकीतुल्यकांतिवाला ऐसेगुणोंसे युक्त प्रह्लाददैत्य अपनेकवचकोधारणकर और मेघकी नाईं गर्जतेहुयेरथोंकेसमूहसेसंयुक्त१३और सुवर्णकेकुंडलोंकोधारण करतेहुये अति बलवंत शूरमा इन्होंसे प्रह्लाद ऐसेयुक्त होता भया कि जैसे देवताओंसे संयुक्त ब्रह्मा होताहै १४ और अपने पराक्रमसेगर्वित और उन्मत्त हस्तीकी नाईं पराक्रमको धारणकर ताहुआ देवताओंकी सेनापै क्षुभितकी नाईं स्थितहोताभया १५ और धैर्यतामें समुद्रकीतुल्य धैर्यवाला और अग्निकीतुल्य प्रकाश वाला और सूर्यकीतुल्य तेजवाला और क्षमामें पृथिवीके समान१६ और तालकी ध्वजासे प्रकाश करता हुआ रथमें बैठाहुआ और देवताओंकी सेनाके प्रतिजाताहुआ ऐसे प्रह्लादके पीछे २ दानवों के सैकड़ों समूहजातेभये १७ और सुवर्णके कवचों वाले औररत्नों से भूषित और दिव्य अंगोंमें चंदनादिक और आभूषणोंको धारण करतेहुये और युद्धमेंनहींउलटे फिरनेवाले १८ सेनासे जड़ितअंगों वाले और मणियोंसे जड़ित बाजुओंको धारणकरतेहुए संपूर्णदैत्य

दिव्य रथोंमेंऐसे स्थित होतेभयेकि जैसे आकाशमें महा ग्रहस्थित होतेहैं १९ और आचारवान् और जितेंद्रिय और धर्ममेंरत और सत्यका वक्ता और निद्रासे रहित और अग्नि और मेघ और वायु इन्हों केतुल्य रूपकोधारण करताहुआ प्रह्लाद युद्धमें ऐसे स्थित होताभया कि जैसे प्रलय कालमें काल प्रभुस्थित होता है २० और वहुत मायाओंको जाननेवाला और दैत्योंकी रक्षाकरनेवाला और संपूर्ण यज्ञोंको जाननेवाला २१ और रक्त नेत्रोंको धारण करता हुआ और दीर्घभुजाओंवाला और प्रकाशमान कुंडलोंको धारण करताहुआ और जीमूतनाम मेघकीतुल्य कांतिवाला और दिव्य माला और चंदनको धारण करताहुआ २२ वह शंबरनाम दैत्य अपनेरथमें स्थितहोके २३ और मणितथा रत्न और वैडूर्य इन्होंसे जड़ित और बिजलीतथा सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान ऐसा मुकुट २४ और प्रकाशमान कवच इन्होंसे ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे संध्याकालके रक्तबादलसेअस्ताचल शोभाकोप्राप्तहोताहै २५ और कालके तुल्य और महाबली और बिचित्र युद्धको करनेवाले ऐसे नवलाखदैत्य शंबरके पीछे २ गमन करते भये २६ और सफेद वर्ण वाले एकहजार घोड़ोंसे युक्त और प्रकाशमान क्रौंच चिह्न से युक्त ध्वजावाला और युद्धमें शोभायमान २७ और प्रकाशमान मणि और सुवर्णके झरोखोंसे युक्त और नानाप्रकारके पक्षियोंकी रचनासे युक्त और बिजलीके प्रकाशकीतुल्य प्रकाशमान औरघोर शब्दको करनेवाला और अत्यंत वेगवाला ऐसे रथमें स्थित होके शंबरदैत्य शोभाको प्राप्त होताभया २८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांएकचत्वारिंशदधिक द्विशततोऽध्यायः॥ २४१॥

दोसौबयालीसका अध्याय॥

वैशंपायनजी वर्णन करते हैं कि हे जनमेजय और चार चक्रों वाले और तीनसौ हाथचौड़ा और सिंहकेसे मुखोंवाले और महा

बलवंत ऐसे घोड़ोंसे युक्त १ और भयानक अतिघोर शब्दवाला ऐसे रथके पहियोंके शब्दसे संपूर्ण पृथ्वीको कंपाताहुआ २ और युद्धकी इच्छा करताहुआ और शत्रुओंके पुरको जीतनेवाला ऐसा अनुह्रादनाम हिरण्यकशिपुका पुत्र रथमें बैठ युद्धको जाताभया ३ और नाना शब्दोंको करतेहुये दैत्य चारोंतरफको परिवारित हुये और सोनेकी मालावाले करोड़हों रथ स्थितहुये ४ औरपरिघ और भिंदिपाल और प्रास और पाश और फरसा और त्रिशूल और मुद्गर ऐसे २ नानाहथियारोंको हाथोंमें धारण करतेहुये ५ और सुवर्णके झरोखोंवालेरथ और बज्र और कवच इन्होंसे शोभायमान हुये ६ और शोभायमान ऊंचेपर्वतके समान और सुवर्णतथा रत्नों से जड़ित और अप्रतिमेयरूप ऐसे रथमेंस्थितहुआ दैत्योंका अधि- पति और महा पराक्रमवाला अनुह्राद शोभाको प्राप्तहोताभया ७ और संपूर्ण आयुधोंसे युक्त और घुंघुरू और झरोखाओंसे शोभाय मान और बेगसे चलनेवाले एकहजार श्रेष्ठ घोड़ाओंसे युक्त ऐसे रथमें स्थितहुआ ८ अग्निके तुल्य कांतिवाला और संपूर्ण अस्त्र और शस्त्रविद्याओंमेंकुशलऔर व्यूहोंकीरचनाओंको जाननेवाला ९ और ज्ञानतथा विज्ञानके तत्त्वको ऐसे जानताहुआ कि जैसेदेवता- ओंमें इन्द्र जानताहै १० ऐसे गुणोंवाला बिरोचन दैत्य सुमेरुपर्वत के तुल्य शोभाकोप्राप्त होताभया ११ और मूंगातथाजांबूनद सुवर्ण कीरचनाओंसेचित्रितकिया हुआ १२ औरलटकतीहुईमोतिओंकी मा- लाओंसेशोभायमान ऐसेरथमेंस्थितहोकेयुद्धके सन्मुखजाताभया १३ औरसुवर्ण सेजड़ितहजारहों रथऔरमद में सींचेहुए और देवताओं केशत्रु और प्रास और पाश और गदा इन शस्त्रोंको धारण करयुद्ध कीइच्छा करते हुये १४ इन्होंसे युक्त हुआ और कालेपर्वतके स- मान शरीरवाला और सूर्यके तुल्य प्रकाशमान मुकुट और संपूर्ण रत्नोंसे जड़ित कवच इन्होंको धारण करताहुआ १५ और बहुत पराक्रम वाला ऐसा विरोचनका छोटाभाई जंभनामवाला १६ तालवृक्ष की ध्वजा सेशोभायमान और सुवर्ण से जड़ित रथमें बैठा

हुआऐसे शोभाको प्राप्तहोता भया कि जैसे सुमेरुपर्वतपै सूर्यशोभा को प्राप्त होताहै १७ और रणमें चतुर और पराक्रम वाला और बुद्धिमान् ऐसा जंभनाम दैत्य देवताओंकी सेनाके प्रति युद्धके अर्थ वेगसे ऐसे जाताभया किजैसे वृत्रासुरके मारनेकोइंद्र जाता भया १८ और पर्वत तथा वृक्षोंको धारणकर युद्धके करने वाले और नानारूपोंको धारण करनेवाले १९ और त्रिशूलोंको धारण करते हुये और आकाशमें बिचरनेवाले २० और मेघोंके सम गर्जते हुये और प्रकाशमान धुक धुकियोंको धारणकर आकाश कोऐसे आच्छादित करतेहुए कि जैसे वर्षा कालमें उठहुयेमेघआ-च्छादित करतेहैं २१ और ऐसे२दैत्योंसे युक्तहुआ औरपर्वत रूपी हथियारको धारणकरताहुआऔर भयानकशरीर तथाभयानक मुख कोधारण करताहुआ२२ औरगाडीकेपैहियाओंकी तुल्यनेत्रतथावहुत वड़े शरीर कोधारणकरता हुआऔरवड़ी२दाढ़ और काले२वस्त्रोंको धारण करताहुआ २३ऐसाअसिलोमादानवस्वर्गकोजाताभया२४ और सौघुंघुरुओंसेशब्दायमानऔर संपूर्ण उज्ज्वलवस्तुओंसेप्रकाश मान औरएकहज़ारघोड़ोंसेयुक्त२५ औरध्वजा और रक्तपताकावाले बहुतसेरथोंसे युक्त ऐसे दिव्य रथमें स्थितहोके २६ दैत्योंके आनंद कावढ़ाने वाला औरदेवताओंकाशत्रुवड़ेशरीर वालाऔर लालमुख वाला और प्रकाश मान जिह्वाको मुखसे वाहर काढ़ताहुआ २७ और ऊंचे२ रोमोंवाला और महाबलवान् और नीले शरीर वाला और लाल ग्रीवावाला और मुकुट और लालवस्त्रों को धारण कर-ताहुआ २८ घोंटोंतक लंबीभुजाओंवाला और बड़ा भयानक और मुखसे वाहर सफेद दाढ़ोंको काढ़ता हुआ २९ और बड़ी माया-ओंको धारण करने वाला और सुवर्ण के वाजुओंसे भूषित और वहुतसे मणियोंसे जड़ित कवच और मालाओंको धारण करता हुआ ३० ऐसा अनायुषकापुत्र वृत्रनाम महासुर युद्धके अर्थ स्वर्ग को जाताभया ३१ और तपेहुये सुवर्ण के बिंदुओं के तुल्य पीत नेत्रोंवाला और दैत्योंमेंवृषभरूप औरदैत्योंकी सेनाका सरदार३२

और खिले हुये कमलकी कांतिके तुल्य सुन्दर मुख वाला और सफेद दांतोंवाला ऐसा वृत्रासुर रथमेंस्थित हुआ ३३ शोभाको प्राप्त होताभया और सूर्य और कालप्रभु और रुद्र इन्होंके चक्रकी नाईं उदयहोताहुआ ३४ एकचक्र ऐसे नामवाला असुर संपूर्ण आयुधसे पूरित और प्रकाशमान ऐसे अपने दिव्य रथमें स्थितहो केस्वर्ग कोजाता भया ३५ और तिसके संग साठ हजार महारथी विचित्र युद्धके करने वाले और लोह और सुवर्णके कवचोंको धारणकरतेहुये ३६ और रथोंपै स्थित ऐसे शोभाको प्राप्तहोतेहुये कि जैसे नीलमेघ शोभाको प्राप्त होतेहैं ३७ काल के तुल्य रूपोंवाले और लाल२नेत्रोंवाले और महाबलवंत और क्रोधसेओठोंकोचावते हुये३८औरभयानक शरीरोंवाले और देवताओंकीसेनाके मारनेके अर्थ सावधान होतेहुये३९ और युद्धमेंदुर्जय और समुद्रके उदरकी तुल्य गंभीरताको धारणकरतेहुये और नीले२मुखोंवाले औरअसुरों में श्रेष्ठ इसप्रकारसे स्वर्गको जातेहुये ४० ऐसे गर्जते भये कि जैसे अपनी मर्यादाको छोंड़तेहुये समुद्र गर्जतेहैं ४१ और बहुत माया धारी और शरीरको बढ़ातेहुये और मुकुटोंको धारण करतेहुये ४२ और सुवर्णसे भूषित अंगोंवाले और हथियारोंको हाथोंमें धारण करतेहुये संपूर्णदैत्य स्वर्गको ऐसेजातेभये कि जैसे पंखों सहितपर्वत आकाशमें जातेहों ४३ और देवताओंकी सेनाको मार और कवच को धारणकर ऐसे बलिके पुत्रसे आज्ञा दियाहुआ ४४ वृत्रासुरका भ्राता बलनाम और महापराक्रमवाला और सुवर्णकी माला को धारण करताहुआ ४५ और बड़ी बड़ी दाढ़ोंवाला और फूलोंकी माला और सुंदर कुण्डलोंको धारण करताहुआ और रक्तवस्त्रोंको धारण करताहुआ ४६ और युद्धमें दुर्जय और बड़े नेत्रोंवाला और मुकुट और धनुषको धारण करनेवाला ४७ और मदोन्मत्त हस्ती और शार्दूलकेसम पराक्रमवाला और बड़े तालके वृक्षके समान ४८ और बज्रपड़नेके तुल्य शब्द करनेवाला ऐसे धनुषपै बड़े बेगवाला और शोभायमान बाणको धारणकर ४९ और बड़े शब्द

को करताहुआ और सर्पके चिन्हयुक्त ध्वजावाला और खरोंसे युक्त ऐसे रथमें बैठाहुआ कैसे शोभाको प्राप्तभया कि जैसे संध्या कालमें सूर्य शोभाको प्राप्तहोताहै ५० और सुवर्णके पत्रोंसे भूषित और त्रिशूल और मुद्गर इन्होंसे पूरित ऐसे २ हजारहों रथोंको संगले युद्धमें तैयारी करताभया ५१ और पवनकेतुल्य वेगवाला और सुंदर छातीवाला और खिलेहुये कमल के गर्भकेतुल्य गौर वर्णवाला ऐसा बल नामदैत्य ५२ अपने रथमें स्थितहोके और बहुत वेगसे युद्धमें प्राप्तहोताभया ५३ औरपर्वतके तुल्यशरीरवाला और सौशिरोंवाला और सौ उदरोंवाला और पीतमाला और पीत वस्त्रोंको धारण करताहुआ ५४ और जांबूनद सुवर्णसे भूषितअंगों वाला और कोमल मणि केतुल्य कांतिवाला और कमलके पत्रके तुल्य नेत्रोंवाला ऐसा सिंहिकाकापुत्र राहु ५५ और सुवर्णसे जड़ित और मणि और झरोखाओंकी रचनासे युक्त और सौपताकाओं से शोभायमान ५६ और श्रेष्ठ घोड़ाओंसे युक्तऐसेरथमें स्थितहोके और पृथ्वीतलको कंपाताहुआ और महाघोरशब्दको करता भया ५७ और मयनाम दैत्य की रचीहुई ध्वजा और मयूर केपंखोंके तुल्य कांतिवाला लोहेका कवचइन्होंको धारणकरताहुआ ५८ औरनाना प्रहारोंको करनेवाले और प्रकाशको करतेहुये और वेगवाले ऐसे रथोंसे युक्तहुआ ५९ और असुरोंका सेनापति और हस्तीके तुल्य गमनकरताहुआ बहराहु दैत्य शत्रुओंकी सेनाकेसन्मुख ऐसे जाताभया कि जैसे अस्ताचलको सूर्य प्राप्तहोताहै ६० औरमायाओंको धारणकरनेवाले और शूरवीर और अस्त्रोंको धारणकरते हुये ६१ और रणमें दुर्जय और कमलके गर्भकीतुल्य कांतिवाले और मेरुपर्वतके शिखरके तुल्य शरीरको धारणकरतेहुये ६२ और मयनाम दैत्यके रचेहुये रथोंमें स्थित होके बिचरतेहुये दैत्य ऐसे शोभाको प्राप्तहोतेभये किजैसे शरद ऋतुकेमेघ आकाशमें बिचरते हुये शोभाकोप्राप्तहोतेहैं ६३ और हंसोंकेचिह्न युक्त ध्वजाओंवाले और सफेद दंडकीतुल्य ऊंचे ऊंचे शरीरोंवाले और सफेद वस्त्रोंको

धारणकरतेहुये ६४ और सफेदमालाओंसे भूषितहुये और सफेद छत्र और सफेद कुंडलोंसे शोभायमान और मोतियोंके हारोंसे देवताओंकीनाईं शोभायमान होतेहुये ६५ और महाग्रहोंके तुल्यकांति वाले और शत्रुओंके शरीरोंमें रोमहर्षको उपजानेवाले ६६ और रक्त और बिचित्र बस्त्रोंको धारण करनेवाले और बिचित्र आभरणोंसे भूषित अंगोंवाले ऐसे दैत्य ६७ और पुत्र और पौत्र इन्होंको अपने संग लेताहुआ वह दनुकेबंशको बढ़ानेवाला श्रीमान् और ब्रह्माकेतुल्य तेजवाला ६८ और एक हजार यज्ञोंका करता और बेदका जाननेवाला और तपका करनेवाला और ब्रह्मासे बरोंको प्राप्त होताहुआ ६९ और आपभी बरोंके देनेमें समर्थ और ईशित्व और बशित्व और महत्त्व ऐसी महासिद्धियोंमें युक्तहुआ ७० ऐसाकश्यपकापुत्र विप्रचित्ति युद्धके अर्थ कवचको धारणकर ७१ और कैलासके शिखरके तुल्य आकारवाला और आठसौ हाथचौड़ा और सफेद रंगवाले एक हजार घोड़ाओंसेयुक्त ७२ और सौपताकाओंवाला और नानायुद्धोंको देनेवाला ऐसे त्रैलोक्य बिजयनाम वाले रथमेंस्थितहो रुवर्गकोजाताभया ७३ और हंस तथा इंदुकुंद इन्होंके तुल्य कांतिवाला और शोभायमान ७४ ऐसा सफेदछत्र विप्रचित्ति दैत्यपै धारण कियाहुआ ऐसे शोभायमान होताभया कि जैसे सफेदपर्वतके मस्तकपै स्थितचंद्रमा शोभायमानहोताहै ७५ और एक करोड़घंटाओं से शब्दायमान और दिब्यभैंसोंसे संयुक्त और बड़े मेघके तुल्य आकार वाला ७६ और ऊंटके चिह्नसे युक्त और नीले केसर के तुल्य कांतिवाली ध्वजा और नाना रंगोंसे चित्रांगों वाली पताका इन्होंसे शोभायमान ७७ ऐसे उत्तम रथमें स्थित हुआ लाल २ नेत्रों वाला और नीले मेघकेतुल्य कांतिवाला ७८ और भयानक शरीर वाला और महा ग्रहके तुल्य शरीर वाला और शत्रुओं के रोम हर्षको उपजाने वाला ७९ और बिचित्र माला और बस्त्रोंको धारण करताहुआ और रक्त आभरणों से भूषित ८० और सौ नेत्र और भुजाओं वाला और

शंकुके तुल्य कानों वाला और ऊंचे शब्दको करताहुआ ८१ और दानवों में मुख्य ऐसा केशीदानव बड़े उग्रतेज वाले बावन हजार रथोंको संगले और युद्ध के अर्थ देवताओंके प्रति जाता भया ८२ और वैडूर्य मणि और सुवर्णसे जड़ित और बिजली तथा सूर्य इन्होंके तेजके तुल्य ऐसा प्रकाशमान मुकुट केशी दैत्य का ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया ८३ कि जैसे दावाग्नि से जलताहुआ पर्वत काशिखर शोभाको प्राप्त होताहै ८४ और तपेहुये सुवर्ण से जड़ित जूआवाला और भारका सहने वाला और गहनों से जड़ित और पहियाओं से शोभायमान ८५ और सूर्य की किरण तथा नक्षत्र तथा बिजली इन्होंके तुल्य प्रकाश मान ऐसे रथ में स्थित हुआ श्रीमान् वह वृषपर्वा असुर ऐसे स्थित होता भया ८६ कि जैसे मेरु पर्वत के शिखरपै सूर्य स्थित होताहै ८७ और मोतियों से जड़ित बाजूबंद और एक हजार सुवर्ण के फूलों से जड़ित कवच और युद्धमें लेजाने के योग्य ८८ आभरण इन्होंके तेज से मध्याह्नकालके सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान होता भया और महाबली और अंगुलिओं की रक्षाके अर्थ अंगुलित्राण अस्त्रको धारण करता हुआ ८९ और केशुओंके तुल्य लाल नेत्रों को धारण कर और नेत्रों को फाड़ता हुआ ९० और सुवर्ण से जड़ित धनुषको ग्रहणकर युद्धमें स्थित होताभया ९१ और वैडूर्य और सुवर्णसे शोभायमान और बिजलीके तुल्य कांतिवाला और सोलह हाथ चौड़ा और देवताओंके रथकी नाईं प्रकाशमान ९२ और हजारहों मायाओंको धारणकरनेवाला मयनाम दैत्यका रचाहुआ ऐसे रथमें बलिदैत्य युद्धके अर्थ स्थित होताभया ९३ और हाथियोंके मुखोंके तुल्य मुखोंवाले और बुरीआकृतियों वाले और सुवर्णके आभूषणोंसे भूषित अंगोंवाले ९४ और वर्षा कालके मेघोंके तुल्य गर्जतेहुये ऐसे एकहजार दैत्य बलिके रथके पीछे स्थित होतेभये ९५ और घुंघुरुओंसे युक्त और सैकड़ों सुवर्ण के कमलोंसे शोभायमान ९६ और सुवर्णके बिचित्र २ पुष्पोंसे युक्त

ऐसी बैजयंती मालाको अपने कंठमें धारण करता हुआ ९७ और संपूर्ण समृद्धियोंसे युक्त और शोभायमान अपनी भुजाओंसे ऐसे प्रकाशमान होताभया ९८ कि जैसे आकाशमें स्थितहुआ सूर्य प्रकाशमान होताहै ९९ और हारकीतुल्य बैजयंती माला और संपूर्ण समृद्धियोंसे युक्त वह बलि ऐसे प्रकाशमान होताभया कि जैसे शरदऋतुमें चंद्रमा प्रकाशमान होताहै १०० और प्रास तथा पास और सुवर्णसे जटितढाल और खड्ग और फरसा और इंद्र के धनुषकी तुल्य कांतिवाला धनुष १०१ और दिव्यगदा औरबज्र के मुखकीतुल्य शक्ति और दिव्यत्रिशूल औरप्रकाशमान बाण१०२ और बाणोंसे परित नानाप्रकारके तरकस ये संपूर्ण हथियार बलि के रथमें स्थितहुये ऐसेप्रकाशमान होतेभये कि जैसे बिजलीप्रकाश-मान होतीहै १०३ और देवताओंको पीड़ादेने वाले और बड़ी २ दाढ़ोंवाले और सुवर्ण और मोती और मणि इन्होंसे चित्रित हु-ये १०४ और रथमेंसमीप बैठेहुये और बीजनाओंसेबलिके पवनकर-ते भये १०५ और अयः शिरा और बाजिशिरा और दुराय और शिवि और मतंग १०६ और विकच और जय और निकुंभ और कुपथ १०७ और दशदानव ये दशयोद्धा बलिके पीठकी रक्षाकरने को स्थित होतेभये १०८ और शतघ्नी और चक्र और अशनि और शक्ति इन हथियारोंको हाथोंमें धारण करतेहुये १०९ और पवन की तुल्य वेगवाले ऐसे हजारहां असुर पैदल बलिकी रक्षाके अर्थ अगाड़ी २ गमन करतेभये ११० और घंटा और शंख और झाझ और डमरू और नगारा ऐसे २ बाजे बलिके प्रयाण कालमें बाजते भये१११।११२और बहुत ऊंची और सुवर्णकी वेदियोंसे युक्तऐसी पताका और प्रकाशमान ध्वजा और सुवर्णमय छत्र और कंठमें सुवर्णकी मालाये संपूर्ण ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे आकाशमें सूर्य शोभाको प्राप्त होताहै११३और दैत्योंमें ऋषि रूप दैत्य हाथोंको जोड़तेहुये उपासना करतेभये ११४ और वेदके वक्ता और शीलस्वभाव और वृद्धअवस्थावाले ऐसे पुरोहित मंत्र

को जपतेहुये तिससमय ओषधियोंको ग्रहणकर बलिकेअर्थ स्वस्ति वाचन करतेभये ११५ और वस्त्र और सुंदरगौ और रत्न और धुकधुकी इन्होंको ब्राह्मणोंके अर्थ देताहुआ बलिऐसे अत्यंत शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे कुवेर शोभाको प्राप्त होताहै ११६ और एक हजार सूर्योंकीतुल्यप्रकाशमान और बहुतसे घुंघरुओंसेशब्दायमान ११७ और बहुतसे हिंगा जांबूनद सुवर्णसे जटित और एक हजार चांदोंवाला और दश हजार ताराओंवाला ११८ ऐसा वलिकारथ अग्निकी तुल्य शोभाको प्राप्त होताभया ११९ और महावलवान् और बाणोंसहित धनुषको धारण करताहुआ और देवताओंकी सेनाको भयभीत करताहुआ १२० और वेगवाला और वड़ा भयानक रूपको धारण करताहुआ और दैत्यों की सेनासे समुद्ररूप हुआ १२१ ऐसा बलि तिस अपने रथमें स्थितहोके और देवताओंकी सेनाके प्रतिऐसे चलताभया कि जैसे लोकोंके नाशके अर्थ अपनी मर्यादाको छोड़के समुद्र चलता है १२२ और तीनों लोकोंको त्रास देनेवाले शरीरोंको धारण करतेहुये और महा बलवंत और धनुषों से ऊपरको उठातेहुये १२३ वेदैत्य वलिके अगाड़ी ऐसे प्रकाश होतेभये कि जैसे बनमें पर्व्वत प्रकाश होतेहैं १२४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्वाचत्वारिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २४२ ॥

दोसौतैतालिसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हे जनमेजय दैत्योंकी सेनाका विस्तार आपनेसुना और अब देवताओंकी सेनाका विस्तार आदिसे सुनो १ और देवता तथा मरुद्गण और आदित्य और बिश्वेदेवा और साध्य २ और आठोंवसु और यक्ष और रक्ष और महोरग और विद्याधर और गंधर्व ३ और महार्णव और शैल और वड़े पराक्रमवाले रुद्र और यम और वैश्रवण और बरुण ४ और सिद्ध और पितर और सैकड़ों राजर्षि और योग सिद्ध ५ इन

संपूर्ण देवताओंको इंद्र ऐसे आज्ञा देताभया कि हे देवताओ तुम कवचोंको धारण करो और दैत्योंकी सेनाका नाशकरो ६ तब वे संपूर्ण देवता ऐसे इंद्रके बचनको सुन वे महात्मा और इंद्रकीतुल्य पराक्रमवाले अपने २ कवचोंको धारण करते भये ७ और नाना कवचोंवाले और बिचित्र कवच और ध्वजाओंवाले और मदोन्मत्त हाथियोंकी नाईं नानाप्रकारसे युद्धोंको करनेवाले ८ ऐसे२देवताओंमेंसे कोई व्याघ्रोंपै कोई रथोंपै और कोई हाथियोंपै और कोई बैलोंपै ६ और हरिस्मश्रु वाला और हरितनेत्र वाला ऐसे हाथीके चिह्नसे युक्त ध्वजावाला और हरिसंज्ञक घोड़ोंसे युक्त ऐसे रथपै स्थितहो युद्धके प्रति जाताभया १० और सूर्यकीतुल्य प्रकाशमान और जांबूनद सुवर्णके झरोखा और सुबर्णकी रज्जुओंसे भूषित११ और बिजलीकी नाईं प्रकाशमान और कैलासके शिखरकी तुल्य और हजारहां ताराओंसे शोभायमान १२और प्रकाशमान देवताओंकी मालाओंसे मंडित और ऊंची ध्वजावाला १३ और तेजरूप और बहुत वेगवाला और परमेश्वरके लिये ब्रह्मासे रचाहुआ १४ ऐसे रथमें स्थितहोके वह शचीपति और लोककापति और देवताओंका ईश १५ और बज्रका भर्त्ता और संपूर्ण भुवनका गोप्ताऐसा महात्मा इंद्र युद्धके अर्थ तय्यार होकर गमन करताभया १६और अग्नि और सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान और एक हजार ताराओं से युक्त ऐसा कवच और सूर्यकी तुल्य प्रकाशमान मुकुट और सुवर्ण युक्तबैजयंती माला इन्होंको धारणकर १७ और सूर्यकी किरणों कीतुल्य प्रकाशमान और पैनी और भयानक अनेक धाराओंवाला और असुरोंके रुधिरको भोजन करनेवाला और सौ पर्वोंसे भयानक रूपवाला ऐसा त्वष्टाकारचा हुआ बज्रको धारणकर १८और ग्रहोंकी कांतिकी तुल्य कांतिवाले दो वज्र और बड़ी भयानक अमोघशक्ति और चक्र और धनुष इन्होंको ग्रहणकर इंद्र युद्धकेअर्थ प्राप्तहुआ और खड्ग और व्याघ्रके चर्मसे मढ़ीहुई ढाल १६ और क्षीरोद समुद्रसे निकले हुये और चंद्रमा और सूर्य और नक्षत्र

और बिजली इन्होंकी कांतिकी तुल्य कांतिवाले ऐसे आभूषण२०
इन्होंको और अदितिके दियेहुये कुंडलोंसे भूषित और दिशा और
विदिशाओंकोप्रकाश करताहुआ २१ और एकहजारनेत्रोंवाला इंद्र
युद्धकेसन्मुख स्थितहुआ ऐसेशोभायमानहोताभया किजैसेशरदऋतु
में मेघोंकासमूह शोभाको प्राप्तहोताहै २२ औरअत्रि और वशिष्ठ
और जमदग्नि और और्व और बृहस्पति और नारद और पर्वत ये
संपूर्ण ऋषि जयरूप आशीर्बादोंको देतेहुये २३ और सुंदर बचनों
से युद्धके अर्थजातेहुये इंद्रकी स्तुति करतेभये २४ और विश्वेदेवा
और संपूर्ण मरुद्गण और साध्य और आदित्योंके गण २५ और
देवताओंके गण ये संपूर्ण इंद्रके पीछे २ जातेभये २६ औरब्रह्मर्षि
और सुरर्षि और राजर्षि ये संपूर्ण प्रकाशमान २७ त्रिशूल और
फरसा और धनुष और सूर्यकी किरणोंकी तुल्य प्रकाशमान सुवर्ण
के कवच इन्हों को धारण कर इंद्रके पीछे २ जातेभये २८ और
एक हजार घोड़ाओंसे युक्त और बहुत मोलवाला ऐसे रथमें स्थित
हो २९ और प्रकाशमान गदाको धारणकर वह कुबेर युद्धके अर्थ
जाताभया ३० और रात्रिमें बिचरनेवाले और घमाकीतुल्य शरीरों
वाले और प्रकाशमान नानाप्रकार के हथियारों को ग्रहण करते
हुये ३१ और लाल २ नेत्रोंवाले और अंजनकी तुल्य बर्णोंवाले
और प्रास और गदाऐसे२हथियारोंको हाथोंमें धारणकरतेहुये ३२
ऐसेरक्षऔर यक्ष अपने राजाकुबेरके अगाड़ी २ जातेभये ३३ और
पुण्यात्मा और प्राणोंकापति और धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ वह धर्मराज
और बिजलियोंकी तुल्य कांतिवाला और सौघोड़ाओंसे युक्त और
सूर्यकीतुल्यप्रकाशमानऐसेरथमें स्थितहोके युद्धमें जाताभया ३४
और पापोंसे रहित और तपोंसे प्रकाशमान और नानाप्रकारके
आयुधोंको हाथोंमें धारण करतेहुये ऐसे पितर धर्मराजके पीछे २
गमन करतेभये ३५ और वह धर्मराज संपूर्णलोकोंका अंकुशरूप
दंडको धारणकर और उत्पलसंज्ञक सुवर्णमय कमलोंकी मालाको
कंठमें धारणकर ३६ और असुरोंके मेद मज्जा मांस रुधिर इन्होंसे

भीगाहुआ और तेजरूप मुद्गरको धारणकर और संपूर्ण ३७ असुरों के मृत्युकी इच्छा करताहुआ और व्याधियें के गणों से युक्त हुआ और संपूर्ण असुरोंके मृत्युके अर्थ ऐसे बुद्धि धारण करता भया कि जैसे व्याधियोंका पति काल प्रभु धारण करताहै ३८ और वैडूर्य और मोती और मणि इन्होंसे भूषित अंगोंवाला और तेजमय और हाथोंमें फांसीको ग्रहणकरताहुआ और चांदीके बाजुओंको भुजाओं में धारण करताहुआ ३९ और कैलासके शिखरकीतुल्य शरीरवाला और समुद्रका पति और अमृतका पीनेवाला और सर्पों और अपने पुत्रोंसे रक्षा किया हुआ ४० और जलके देवताओंसे अन्वियमान हुआ और जलके जीवोंसे सेवा किया हुआ और ऋषियोंसे स्तुति किया हुआ और नागोंसे पूजा किया हुआ ४१ । ४२ ऐसा बरुण देवता तीन शिरोंवाले सर्पोंसे युक्त और सुबर्ण से जटित और कुंद और चंद्रमाकी तुल्य कांतिवाला ४३ ऐसे रथमें स्थितहो के युद्धके अर्थ जाता भया और तिससमय संपूर्ण प्राणी हर्षित हुये ४४ और हाथों की अंजलियों को जोड़ते हुये और युद्धके अर्थ जाता हुआ बरुण को चंद्रमाकी तुल्य प्रकाशमान देखतेभये ४५ और धाता और अर्यमा और अंश और भग और बिवस्वान् और पर्ज्जन्य और मित्र और शशी और त्वष्टा और बिश्वकर्मा और पूषा ये संपूर्ण देवता ४६ और कोई रथ सूर्य की तुल्य प्रकाशमान और कोई अग्नि की तुल्य प्रकाशमान और कोई चंद्रमा की तुल्य कांतिवाला और कोई बिजलीकी तुल्य प्रकाशमान ४७ और कोई नीलमेघकी तुल्य कांतिमान और कोई काललोहे की तुल्य कांतिमान ऐसे २ रथों में स्थितहोके और दिव्य और प्रकाशमान और त्वष्टाके रचेहुये ४८ ऐसे कवचोंको धारणकर और सुबर्ण की तुल्य कमलोंकी मालाओं को धारणकर युद्ध के अर्थ जाते भये ४९ और महानुभाव और उत्तमरूपवाले और धर्मधारियोंमें श्रेष्ठ और सुबर्ण केसे बर्णवाले ऐसे अश्विनीकुमार देवता दोनों अपने सुन्दर रथमें स्थित होके रणमें जाते भये ५० और मनुकेपुत्र और आठोंबसु ये

संपूर्ण बलवंत देवता रथ और नागोंपैस्थितहो और हाथोंमें पैने२ खड्गों को धारणकर और दैत्योंके बधकेअर्थ युद्धमें जातेभये ५१ और रक्त और धूम्रवर्णोंवाले और सफेद बैलों पै स्थितहुये ५२ और महान् पराक्रमोंवाले और सत्वगुणसे युक्त और अपने अत्यंत तेजोंसे प्रकाशमान होते हुये ५३ और हाथोंमें नानाहथियारोंको धारण करतेहुये और मानोलोकोंको दग्धकरतेहुये ५४ ऐसे संपूर्ण रुद्र अपनी सेनाओंको संगले और प्रकाशमान मालाओं को कंठमें धारण करतेहुये युद्धके अर्थ ऐसे जाते भये ५५ कि जैसे बिजलियोंसे विद्योतमान हुये मेघजातेहैं और तपसे प्रकाशमान होतेहुये ५६ और उत्तम पराक्रमवाले और सूर्यकी किरणोंकी तुल्य प्रकाशवाले और युद्धमें बड़े दुःखसे उलटे मुड़नेवाले ५७ और बड़े उत्कटबलों वाले और कमलोंकी मालाओंवाले और वैडूर्य और मोती और मणि और सुवर्णमय रज्जु इन्होंकी रचना से प्रकाशमान रथोंमें स्थित होतेहुये ५८ और नानाआयुधों से ब्याप्तहुये और सुवर्णके झरोखाओं से चित्रित और अत्यंत निर्मल और अग्निकी तुल्य प्रकाशमान ऐसे चंचलायमान सफेद छत्रों से शोभायमान होते हुये ५६ और घुंघरुओं से युक्त कवच और ध्वजाओं को धारण करतेहुये ऐसे विश्वेदेवा ६० वायुकी तुल्य बेगवाले घोड़ा और कैलास के शिखरको तुल्य और महाबलवंत ऐसे हाथी इन्हों पै स्थितहो और युद्ध में जातेहुये प्रलयकालको बिजलीकी नाईं प्रकाशमान होते भये ६१ और महाप्रभावोंवाले और अपने आधीन चक्रोंवाले और प्रकाशमान मुखोंवाले ६२ और जांबूनद सुवर्ण से भूषित अंगोंवाले और गंगाके प्रवाहकी तुल्य बलोंवाले और दिशा और विदिशाओं को प्रकाश करतेहुये और महाबलिष्ठ और जयकारियोंमें श्रेष्ठ ६३ और अष्टभुजाओंवाला और अग्नि और सूर्य की तुल्य प्रभावोंवाले और वेदके वक्ताओं को नमस्कार किये हुये और इन्द्रसहित देवताओंसे पूजेहुये ६४ और गंधर्वोंके संग जिन्हों के पीछे गम्यमानहैं ऐसे साध्यदेवता युद्धके अर्थ जातेभये ६५ और

वैडूर्य और रत्न और स्फटिक और सुबर्ण और ध्वजा इन्हों से शोभायमान ६६ और अत्यंत प्रकाशमान ऐसा देवताओंका रूप दैत्योंके बधके अर्थ होता भया ६७ और अत्यंत बल और कवच और ध्वजा इन्होंसे शोभायमानवे साध्यदेवता शंखके शब्दकीतुल्य और सिंहोंकी तुल्य गर्जते हुये बड़ी शोभाको प्राप्त होते भये ६८ और अत्यंत पराक्रमोंवाले और उत्कटबलोंवाले और महामेघकी समानवर्णवाले और मेघोंकी समान गर्जते हुये ६९ और असुरों को मारनेवाली गदाओंको ग्रहण करतेहुये और रणमें मदोन्मत्त और रक्तचंदनसे चर्चितहुये और सुगंधियुक्त माला और वस्त्रइन्हों से भूषित अंगोंवाले ७० और युद्धमें चतुराई से लड़नेवाले और प्रकाश मान सुंदर भुजाओंवाले और क्रोध से रक्तनेत्रों वाले और सुबर्णयुक्त कमलोंकी मालाओंको धारण करतेहुये और इच्छा पूर्वक आयुध और रूपोंको धारण करतेहुये ७१ और वैडूर्य और सुबर्ण इन्होंसे शोभायमान कवचों को धारण करतेहुये ऐसे मरुतोंके गणयुद्धके अर्थ जातेभये ७२ और सूर्यकी किरणोंकी तुल्य प्रकाशमान और सुवर्णकी वेदियोंसे युक्त ऐसीऊंची २ ध्वजाओं से शोभायमान और उग्रतेजवाली और सिंहोंकीतुल्य गर्जतीहुई युद्ध के अर्थ जातीभई ७३ और दैत्यों के बधके अर्थ युद्धको जाताहुआ इन्द्रकी सुंदर महाप्रभाव वाली और भयानक रूपवाली ऐसीसेना होतीभई ७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रिचत्वारिंशदधिक द्विशतोऽध्यायः २४३ ॥

दोसौचवालिसका अध्याय ॥

बैशंपायनजीबर्णन करतेहैं कि हे जनमेजय तिससे उपरांतदेवता और असुरोंका ऐसे संगम होताभया कि जैसे प्रलयकालमें अपनी मर्यादाको छोड़समुद्र परस्पर में मिलजातेहैं १ और नानाप्रकारके आयुधोंसेप्रकाशित अंगोंवाले और महाबलवंत और धनुषोंकोसाव-

धान करतेहुये और हाथियोंके शुंडोंकेसे भुजाओंवाले और मेघोंकी तुल्य गर्जतेहुये २ और धनुषोंको टंकोरतेहुये और सूर्यके प्रकाशकी तुल्य प्रकाशवाले चक्रोंको चलातेहुये और घोररूप अशनि और खड्ग और वज्रकेसे मुखवालीशक्ती ३ और सुवर्णके पत्रोंसे जटित गदा और धनुष और मुद्गर और त्रिशूल और वृक्ष और ऐसे २ हथियारोंको ग्रहणकर शूरवीर रणमें सिंहोंकी तुल्य गर्जतेभये ४ और तिससमय हनन करतेहुये देवता और दैत्योंका परस्परमें द्वंद्व युद्धहोनेलगा ५ और महाबलवाला और देवताओं में श्रेष्ठ ऐसा सावित्रनाम पवन बाणासुरके संगयुद्ध करताभया ६ और महासुर और रणमें बड़ाउग्र युद्ध करनेवाला ऐसा अनायुषाकापुत्र बलनाम ध्रुवनाम वसुके संगयुद्ध करताभया ७ और अपनीसेनासेयुक्त और पर्वतकेतुल्य शरीरवाला और कवचकोधारण करताहुआ ऐसापुलोमा दैत्य वलिनाम वायुके संग युद्ध करताभया ८ और संपूर्ण सेनासे युक्त और कालकीनाई मुखको फाड़ताहुआ और असुरोंमें श्रेष्ठऐसा नमुचि नामअसुर धरनाम देवताकेसंगयुद्ध करताभया ९ और देवता ओंमें श्रेष्ठऐसा विश्वकर्मा मयनामा दैत्यके संगयुद्ध करताभया १० और शूरवीर और अमित पराक्रमोंवाला और सूर्यको समतेजवाला ऐसापूषा देवताके संगहयग्रीव नामदैत्य युद्धकरताभया ११ और महा पराक्रमवाला और बड़ी मायाओंवाला और युद्धमें मदोन्मत्तऐसा शंवरदैत्य भगनाम देवताके संगयुद्ध करताभया १२ और दैत्योंमेंचंद्रमा और सूर्यरूप ऐसाशरभ और शलभ नामदैत्यअपने शिशिरनाम अस्त्रको ग्रहणकर चंद्रमाकेसंगयुद्ध करतेभये १३ और वलिकापिता विरोचन नाम दैत्य साध्यसंज्ञावाला और विष्वसेन नामऐसा देवताके संगयुद्ध करताभया १४ और बड़ेतेजवाला ऐसा हिरण्य कशिपूका पुत्रकुजंभनाम अपना प्रासहथियारको ग्रहणकर अंशदेवताकेसंगयुद्धकरताभया १५ और प्रकाशमान मुखवाला और पर्वतकोधारणकरताहुआऐसा असिलोमादैत्य वलिनामपवनदेवता केसंगयुद्धकरताभया १६ और अनायुषाकापुत्र वृत्रासुरनामदेवताओं

का वैद्य अश्विनीकुमारोंके संग १७ और चक्रको धारणकरताहुआ और देवताओंकाशत्रु ऐसा एकचक्रनाम दैत्यसाध्य देवता के संग युद्ध करताभया १८ और पीत नेत्रोंवाला और वृत्रासुरका भ्राता ऐसा बलनाम महासुर मृगव्याधनाम रुद्रकेसंग युद्ध करताभया १९ और बिकृत आकारवाला और सौशिरोंवाला और बड़े उदरवाला ऐसा राहुनाम दैत्य अजैकपाद देवताके संग युद्ध करताभया २० और दानवोंमें श्रेष्ठ और बर्षाकालके मेघोंकीतुल्य शरीरवाला ऐसा केशीदैत्य धनेश्वर देवताकेसंग युद्ध करताभया २१ और निष्कुंभनाम विश्वदेवा देवताके संग वृषपर्वानामदानव युद्ध करताभया २२ और महापराक्रमी और अपनेपुत्रोंसे युक्त और रणमें प्रभुकी नाईं स्थित हुआ २३ ऐसा प्रह्लादकालदेवताके संग युद्धकरताभया २४ औरमहा बलवंतऔरदेवताओंकी सेनाको कोपकराताहुआ ऐसा अनुह्लादनाम दैत्यकुबेरकेसंग युद्ध करताभया २५ और दैत्योंके आनंदका करने-वालाऔर युद्धको चाहताहुआ ऐसा बिप्रचित्तिदैत्येंद्र बरुण महात्मा के संगयुद्धकरताभया २६ और देवताओंकाराजा और महाबली और महात्मा ऐसे इन्द्रकेसंग बलवान् बलिनामदैत्य युद्ध करता भया २७ और शेष देवता और दैत्य रणमें गर्जतेहुये २८ प्रास और खड्ग और बाण और शक्ति इनहथियारोंसे परस्परमें हनन करतेभये २९ और तिस समय सातोंपवन क्षोभको प्राप्तहोतेभये और पर्वत फाटने लगे ३० और समुद्रोंको सोखतेहुये सात सूर्य तपने लगे और पवनोंसे मथनकीहुई ३१ बर्षाओंकी धारा पड़नेलगी और पेटोंपै इन्द्रके धनुषसे अंकित हुये ऐसे महा मेघ आकाशमें उठने लगे ३२ और संपूर्णप्राणीशब्दकरनेलगे और संपूर्णदिशा अंधकारसेयुक्तहोती भईं और देवताओंके अन्याय और क्रूरता ऐसा प्रलयका सूचक महा उत्पात होनेलगा ३३ और आकाश और दिशा पृथ्वी और सूर्य ये संपूर्ण धूलिसे नहीं दीखते भये ३४ और धुवाओं से युक्त अत्यंत भयानक पवन चलने लगे और संपूर्ण दिशाओंमें अंधकार होता भया और पृथ्वी तथा आकाश इन्होंमें ईश्वरके रचे हुये ३५

और भी महाउत्पातदीखनेलगे और मणिमयजटित थांभोंसेयुक्त और सुंदर प्रकाश करताहुआ ३६ और हजारहों प्राणियोंसे युक्त और तपेहुये सुवर्णकी रस्सियोंसे जटित और सैकड़ों भेरियोंके शब्दों से शब्दायमान ३७ और नक्षत्र और चन्द्रमा इन्होंकी किरणोंके तुल्य प्रकाशमान और मणि और चंद्रमा और सूर्य ३८ इन्होंसे शोभायमान ऐसे अपने बिमानमें स्थित हो और अंगों सहित चारों बेद और विद्या और सिद्ध और श्रेष्ठऋषि इन्होंको संगले देवता और दैत्योंके युद्धको देखताभया ३६ और तिस बिमानमेंस्थितहुये पुलह और पुलस्त्य और मरीचि औरभृगु और अंगिराये संपूर्ण ब्रह्माके पुत्र सामवेदकी ऋचाओंसे स्तुति करतेहुये सेवनकरतेभये ४० और अग्नि और यज्ञों के देवता और अन्य बहुतसे प्राणियों से संपूर्ण देवताओं का गुरु और भुवन का स्वामी और महानुभाव ऐसे ब्रह्माको सेवन करतेभये ४१ और महर्षियोंमें मुख्य २ महर्षि और वैषानस और देवताओं के पुरोहित ये संपूर्ण युद्ध देखनेकी इच्छा करतेहुये रणभूमिमें जातेभये ४२ और सूर्यकीसीकांति वालेऔर बचन रूपी आभूषणोंसे भूषित अंगोंवाले ऐसे छः ४३ योगेश्वर और नारायण और नरदेव ये संपूर्ण बिमानोंमें अंतर्हितहुये युद्धको देखतेभये ४४ और चारोंवेदोंको धारणकरनेवाले और चंद्रमाकीसी कांतिवाले ऐसे चारोंमुखोंसे ४५ ब्रह्मा दिशाओंको ऐसे प्रकाश करताभया कि जैसे नवीन उदयहुआ चंद्रमा प्रकाशकरताहै ४६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांचतुश्चत्वारिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः २४४ ॥

दोसौपैंतालीसका अध्याय ॥

वैशंपायनजी वर्णन करतेहैं कि हे जनमेजय अपने शब्दसे त्रिलोकीको चलायमानकरतीहुई दोनोंसेनाओंका फिर युद्धप्रवृत्तहोता भया १ और गोमुख और आडंबर और भेरी मुरज और झर्झरी और डिंडिम इन बाजाओंका महान् शब्द सुननेलगा २ और रोमहर्षी

को उपजानेवाला और अत्यंत शब्दोंवाला और स्वर्गमें गीयमान और शूरबीरोंसे प्रशंसा कियाहुआ ३ ऐसा देवता और दैत्यों का रणभूमिमें यज्ञरूपी युद्धहोनेलगा४ और युद्ध यज्ञका प्रह्लाद दैत्य नेताहोताभयाऔरबिरोचनअध्वर्य्युहोताभया५ औरनमुचिदैत्यहोता होताभया और वृत्रासुर उपकल्पक होताभया और अपने पिताकेबराबर ६ अथवा अधिक बलोंवाले संपूर्णदैत्य तिस यज्ञ कर्ममें मंत्ररूप होतेभये और बाणासुर यष्टा होताभया ७ और ऐंद्र और पाशुपत और ब्रह्म ऐसा दुर्जय और युद्ध रूपी यज्ञमें अनुह्राद दैत्य के प्रेरणा कियेहुये संपूर्ण दैत्यश्रेष्ठ प्रकार से बर्ततेभये ८ और शोभायमान और शत्रुओंके भय उपजाने वाला और गर्जता हुआ और देवताओंकी सेनाओंको रणसे भगाताहुआ ऐसा श्रीमान् मयनामदैत्य उद्गाता होताभया ६ और महाबली और अग्निकीतुल्य कांतिमान् और जयरूप होमों से युक्त ऐसा बलिदैत्य ब्रह्माहोताभया १० और रणरूपी जलतीहुईअग्निमें और रथरूपी वेदीमें और सुंदरसंस्कार कियाहुआ बैररूपी ईंधनको वेसंपूर्णदैत्य होमतेभये ११ औरबलदैत्य और बलकदैत्यऔर पुलोमादैत्ययेसंपूर्ण रणभूमिको चमसपात्रविधानकर युद्धरूपी यज्ञकोकरतेभये १२ और चित्रविचित्र दंडाओंवाले और उज्ज्वल और बड़े ऐसे रथोंको बड़े फलरूपीयुद्धयज्ञमें यूपोंकी कल्पना करतेभये १३ और तोमरतथा धनुष येसंपूर्ण हथियार तिसयज्ञमें सोमकलश होतेभये १४ और अस्थितथाकपाल येसंपूर्ण पुरोडास होतेभये और युद्धयज्ञमें रुधिर रूपीघृत होताभया और सेनाका मंडल होमके योग्य काष्ठ होता भया १५ और गदाओं का परिस्तरणहोता भया और हयग्रीव और असिलोमा और राहु और केशी १६ और बिरोचन और जंभ और कुजंभ और बिप्रचित्ति येसंपूर्ण यज्ञसभापति होतेभये १७ और रथोंके धुरोंकी सदृश बाणश्रुवा होतेभये और धनुषकी कोटी और धनुषकी ज्या येसंपूर्ण सुचिहोती भई १८ और वृषपर्वा प्रतिप्रास्थानिक कर्म को करताभया १६ औरबलिदीक्षितहोताभया और

संपूर्ण सेनाबलिकी स्त्रीरूपहोती भई २० और बिस्तारित यज्ञकर्म में शंवरदैत्य शामित्र कर्मको करताभया २१ और कालनेमि तिस यज्ञकी दक्षिणा होताभया २२ और दैत्योंने प्राणोंसे रहितकियेहैं शरीरजिन्होंके ऐसेदेवताओंकी सेनाकायज्ञाभिसेचनबधताभया २३ और युद्धमें खुशीहो गर्जतेहुये दैत्यदेवताओंके रुधिरकोऐसेपीतेभये किजैसे यज्ञमें सोमपान २४ और तिससमयमें बलिने देवताओंका पराजयकियाउसीसमयमेंअवभृथस्नानहोताभया २५ औरमहाअसुरों केपति और यज्ञोंकेकर्ता और वहुतदक्षिणादेनेवाले और वेदोंकेवक्ता और व्रतधारी और शूरबीर २६ और युद्धमेंशरीरत्यागने वाले और त्रिलोकीके हरनेमेंयुक्त और युद्धरूपीयज्ञके अर्थदीक्षित और हरिणों केचर्मको धारण करनेवाले और मूंजकेयज्ञोपवीत और कटिबंधको धारण करनेवाले २७ और एककार्यमें निश्चयवालेऐसे देवता और दानवोंकी सेनाका युद्धमें महाशब्द होताभया २८ और हाथोंमें अनेकप्रकारके हथियारोंको धारण करतेहुये और बेगसे दौड़तेहुये ऐसे शूरवीरोंकाअत्यन्तक्षोभयुक्तशब्द २९ और हथियारोंका अत्यन्त शब्द और शंख और नक्कारोंका शब्द ३० और घोड़ाओंका हिनहि- नानाशब्द और रथोंके पहियाओंका घोरशब्द ऐसे२शब्दोंसे युद्धमें वड़ा तुमुलशब्द होताभया ३१ और दानवोंकी सेना बड़े भयानक शब्दको करतीहुई शोभाको प्राप्त होती भई ३२ और सुवर्ण से भूषित और प्रकाशमान हस्ती और रथ युद्धमें ऐसे दीखतेभये कि जैसे बिजलीसे युक्तमेघ ३३ और ऋष्टि और शक्ति और गदा और त्रिशूल और खड्ग और फरसा ये संपूर्ण हथियार अपनी अपनी सेनाओंमें ऐसे प्रकाशमान होतेभये ३४ कि जैसे अनेकप्रकारके सै- कड़ोंहजारों सुवर्णसे आच्छादित शिखरोंवालेपर्बत ३५ और सूर्यके समान प्रकाशमान सुवर्णके कवचोंको धारणकरतेहुये देवता और दैत्योंके सेनापति युद्धमें ऐसे दीखतेभये ३६ कि जैसे आकाशमें तारागण और खड्गमुष्टियोंको धारण करतेहुये और ध्वजाओं वाले ऐसे देवता और दानव ३७ युद्धमें अनेक प्रकारके हथियारों

से शोभाको प्राप्त होतेभये और युद्ध करतेहुये ३८ और युद्धमेंकुशल ऐसे देवता और दैत्योंके पताका और ध्वजाओंको रणमें पवन कंपायमान करताभया ३६ और ध्वजा और आभूषण और वस्त्र और ढाल और कवच इन्होंको सूर्यनारायण अपनी किरणोंसे प्रकाश करताभया ४० और अतोलबलोंवाले योद्धाओंके पैरोंसे उठाहुआ रजदिशाओंको आच्छादन करताभया४१ और प्रकाशमान बस्त्रोंको धारणकरतेहुये और रणमें स्थित ऐसे शूरबीर परस्परमें सेनाओंको रोकते भये और मुद्गर और मुशल और त्रिशूल और अपस्तुंड और उलूखल४२ और बज्र और अशनि और खड्ग और वृक्ष और बाण ऐसे चित्र बिचित्र४३ अनेकप्रकार की पैनीधाराओंवाले हथियारों से पर्वतों की तुल्य शरीरोंवाले देवता और दानव परस्परमें हनन करतेभये४४ और सावित्रके बधकी इच्छाकरताहुआ बाणासुर धनुषको धारणकर और दिब्य शरोंके जालसे आच्छादन करता भया ४५ और ऐसे प्रकाशमान होता भया कि जैसे मंत्रोंसे होमा हुआ अग्नि और देवताओंकी समुद्ररूपी सेनाको वह दैत्योंमेंश्रेष्ठ बाणासुर अपने बाणोंसे ऐसे सोखन करता भया ४६ कि जैसे अपनी किरणोंसे समुद्रको सूर्य सोखलेताहै और वह सावित्रपवन अपनी उत्तम शक्तिको ग्रहणकर४७ और बाणासुरपै ऐसे फेंकताभया कि जैसे पर्वतों पै बज्रको इंद्र और बिजली की समान प्रकाश करती आतीहुई ४८ शक्तिको बाणासुर अपने पैने बाणसे दोटूककर पृथ्वी पै गेरता भया ४६ और वह देवताओं में श्रेष्ठ सावित्र नष्टहुई शक्तिको देख फिर तीक्ष्ण और दानवोंको मर्दन करनेवाला औरपीत धारवाला और चंद्रमाकीसी कांतिवाला ५० और जहरे सर्पकीनाईं कार्यकी सिद्धि करनेवाला ऐसा बिश्वकर्मा का रचाहुआ खड्गको हाथमें ग्रहणकर युद्धके मध्यमें स्थित होताभया ५१ और बाणासुर तहां स्थितहुआ सावित्रको देख गर्जताभया ५२ और सूर्यके किरणों की तुल्य प्रकाशमान बज्रकी तुल्य आकारवाले और जहरे सर्पकी तुल्य ५३ और सुवर्णके परोंवाले और पैने अग्रभागवाले और बड़े

वेगवाले और गहनों से आभूषित ५४ ऐसे बाणोंके समूहको धनुषपै स्थितकर और कानतक धनुषको चढ़ाय सावित्रपै छोड़ताभया ५५ और अग्निकी तुल्य प्रकाशमान और बड़े दृढ़ धनुषसे छोड़े हुये वे संपूर्ण बाण सावित्र को ऐसे आच्छादन करतेभये कि जैसे कैलासको मेघ ५६ और बाणासुरके शस्त्रोंसे आच्छादित कियाहुआ वहसावित्र रणसे मुखफेरके जाता भया ५७ और बाणासुर सावित्रको जीत और हर्षित हुआ ५८ फिर घोर धनुषको धारणकर और इंद्रके रथ के सामने जाता भया और असुरोंमें श्रेष्ठ बलदैत्य बड़ी जबर गदा को धारणकर ५९ और ध्रुवनाम बसुके मस्तक में मारताभया ६० और तिस गदाके वेग से ध्रुवका कंधा और सुवर्णका कवच भेदन होता भया ६१ और शेष संपूर्ण वसु अपने अस्त्रोंको ग्रहणकर और बलदैत्यको अस्त्रोंसे ऐसे आच्छादन करतेभये किजैसे सूर्यकोमेघ ६२ और बाणोंसे क्रोधयुक्त हुआ बलदैत्य गदाको ग्रहण कर वेगसे रथसे उतरता भया और तिस गदाको शत्रुओंके शिरपै चलाताभया ६३ और वह महागदा संपूर्ण देवताओंको ऐसे दिशाओंमें दौड़ाती भई कि जैसे शत्रुओंको इन्द्रकावज्र ६४ और बिजलीके शब्दकी तुल्य तिस गदाके शब्दसे डरतेहुये देवता रथोंको त्याग दौड़ते भये ६५ और देवता फिर बाणोंकीवर्षा करनेलगे ६६ और पैनीधाराओंवाला भाला और बछड़ोंके दांतोंकीतुल्य पैने पैने बाण ऐसे शस्त्रोंसे वह ध्रुवबलकको वेधन करताभया ६७ और बड़ोबड़ी भुजाओंवाला और कालकी नाईं मुखको फाड़ताहुआ और बिजली तथा सूर्यकी तुल्य कांतिवाला और अग्निकी सम प्रकाशमान ६८ ऐसा बलकदैत्य ध्रुवके छोड़ेहुये बाणोंको मानोंमुखसे पीताहुआ ऐसे दौड़ताभया कि जैसे प्रलयकालमें मर्यादाको छोड़के समुद्र दौड़ताहै ६९ और वह बलक दिशाओंको अपने पराक्रमसे शब्दायमान करताहुआ और देवताओंको ऐसे भेदन करताभया कि जैसे वृक्षोंको नदीकावेग ७० और वह बलकरके देवताओंके धनुषोंको तोड़ ७१ और आप और अनिल नामवाले ऐसे दो वसुओंके संग युद्ध करने लगा तब वे महा

प्रतापवाले बसु तिस दैत्यपै बाणोंकी बर्षा करनेलगे ७२ तबवहदैत्य आते हुये बाणोंको आकाशमें छेदन करताभया और तिस दैत्यके घोरकर्मको नहीं सहताहुआ ध्रुव तिसकेसामने दौड़ताभया ७३ और यशके करनेवाले और शूरबीर और अभिजनऐसे दोनोंशूरबीर बाणों की बर्षासे परस्परमें हनन करतेभये ७४ और वे दोनों बाणोंसे परस्परमें ऐसे युद्ध करतेभये कि जैसे नखोंसे शार्दूलऔर जैसे दांतोंसे हस्ती और बाणोंसे शरीरको भेदन करतेहुये ७५ और लिखतेहुये और परस्परमें रोकतेहुये और रणमें स्थितहुये ७६ अपने शरीरोंको पीड़ित करते भये और अनेक प्रकारसे युद्धके मार्ग और मंडलोंको करतेहुये और क्रोधयुक्तहुये परस्परमें बारंबार हनन करतेभये ७७ और दोनों पर्बतकी तुल्य शरीरवाले खड्गोंसे ढाल और धनुषोंको भेदनकर और बाहु युद्ध करनेलगे ७८ और चौड़ीचौड़ी छातियोंवाले और बड़ीबड़ी भुजाओंवाले और युद्धमें चतुर वे दोनों भुजाओंसे ऐसे मिलतेभये कि जैसे लोहेके परिघ ७९ और तिनकी भुजाओंके घात से बैर और बंधन और बड़ाभयानक शब्द ऐसे होता भया कि जैसे पर्बतपै बज्रके पड़नेसे होताहै ८० और परस्परमें मिलेहुये दोनों सवादोघड़ीतक ऐसे युद्ध करतेभये ८१ कि जैसे दांतोंसे हस्ती और सींगोंसे महावृष और बलक से हारा हुआ वह ध्रुव दैत्यके भयसे रणको त्याग दौड़ता भया ८२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्बांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपंचचत्वारिंशदधिक द्विशतोऽध्यायः २४५ ॥

दोसौछियालीसका अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय क्रोधहुआ नमुचि और धर इन दोनोंका फिर बड़ा दारुण महायुद्ध होताभया १ और बड़ी भुजाओंवाले और बड़े धनुषोंको धारण करतेहुये और शत्रुओंको दमनकरनेवाले और क्रोधकोधारण करतेहुये और मानोंनेत्रोंसेभस्म करतेहुये दोनों परस्परमें देखते भये २ और सुवर्णकी पीठवाला

और महाकठोर ऐसा महाधनुषको टंकोर वहधर अपने प्राणोंका त्यागन करताहुआ नमुचिकेसंग युद्ध करताभया ३ और प्रकाशमान बाणरूपी जालोंको वहधर नमुचि दैत्यके रथके प्रति छोड़ताहुआ सूर्यकी प्रभाको आच्छादन करताभया ४ और शिलाओंकी समपैने और प्रकाशमान और बड़े वेगवाले और असह्य ऐसे बाणोंको नमुचि हंसताहुआ धरपै छोड़ताभया और महातेजवाला और बड़ीभुजाओं वाला और महावेगवाला५ और महारथी और अतिरथी ऐसा नमुचि पैनेपैने नवबाणोंसे धरको बेधन करताभया ६ और जैसे अंकुशों से भेदन किया हुआ हस्ती क्रोधितहोताहै तैसेही बाणोंके बेधनसे क्रोध हुआ धर नमुचिके सन्मुख दौड़ताभया ७ और वेगसे आते हुये धरको वह नमुचि देख और ऐसे सन्मुख दौड़ताभया कि जैसे मदोन्मत्त हस्तीके प्रति मदोन्मत्त हस्ती ८ और सौभेरियोंके समान शब्द वाले शंखको बजाय और उछलते हुयें समुद्र की तुल्य शत्रुकी सेनाको अत्यंत क्षोभकर ९ और श्रेष्ठवर्ण वाले शत्रुकेघोड़ाओंसे अपने हंसकी तुल्य कांतिवाले घोड़ाओं को मिलाता हुआ नमुचिशरोंकी वर्षासे धरको आच्छादन करताभया १० और नमुचि और धर इन दोनोंके रथोंको परस्परमें मिलेहुये देख देवताओंकी सेना अत्यंत कांपनेलगी ११ और क्रोधयुक्त लाल२नेत्रों से परस्परमें देखतेहुये और शार्दूलोंकी तुल्य गर्जतेहुये और मत्तहस्तियोंकी तुल्य भेदन करतेहुये १२ ऐसे दोनों योद्धाओंका मनुष्य हस्ती घोड़ा इन्होंसे व्याप्त १३ और धर्मराजके युद्धकीसम ऐसा युद्ध होताभया १४ और तिस युद्धको समाजकी नाईं देखतेहुयेमहारथी और तिन्होंके जयकी इच्छा करतेहुये युद्धमें समूहके समूह स्थित होतेभये और सिद्धतथा गंधर्व और मुनि ये संपूर्ण समीप प्राप्तहो १५ और महाअस्त्रोंको धारण करतेहुयेदेवता और दानवों के युद्धको देखतेभये और वे दोनों परस्परमें बाणोंकी बर्षा करते हुये शरोंके जालोंसे आकाशको आच्छादन करतेभये १६ और तीक्ष्णबाणोंसे परस्परमें हनन करतेहुये दोनों महारथी रणमें ऐसे

स्थित होतेभये कि जैसे जलोंकी बर्षा करतेहुये मेघ १७ और सुबर्णसे जटितबाणोंको छोड़तेहुये आकाशको सूर्यकी सम प्रकाशमान ऐसे करतेभये १८ कि जैसे बिजली प्रकाशकरतीहै और नमुचि और धर इनदोनोंके बाण आकाशमें ऐसे प्रकाशमान होतेभये कि जैसे शरदऋतु के आकाशमें मतवाले सारसोंकी पंक्ति १९ और मरेहुये देवता और घोड़ा और हस्ती इन्हों से पृथ्वी ऐसे व्याप्त होती भई कि जैसे मेघों से आकाश २० और पैनी धारवाला और सूर्य के मंडलकीतुल्य कांतिवाला और जलताहुआ ऐसाचक्रको नमुचिदैत्य धरके सन्मुख छोड़ताभया २१ और ध्वजा और आयुध और घोड़ा इन्होंसे युक्त और सूर्यकी सम प्रकाशमान ऐसे रथको नमुचिका चक्र दग्ध करताभया २२ और वहधर चक्रके तेजसे दग्ध हुआ रथको त्याग और नमुचिके भयसे आकाशमें जाताभया २३ और धर देवताको जीत नमुचि दैत्य बलसे गर्वितहुआ अपनी सेनाको संगले फिर देवताओंकी सेनाके प्रति जाताभया २४ और विख्यात और श्रेष्ठ और सैकड़ों मायाओंका जाननेवाला २५ देवता और दैत्योंमें श्रेष्ठ और महात्मा ऐसात्वष्टा देवता और मय दैत्य इन्होंका महायुद्ध होनेलगा २६ और बलसेगर्वित वह त्वष्टा मय दैत्यको आक्रमणकर और बहुतसे बाणोंसे बेधन करता भया २७ और ऐसे आतेहुये बाणोंको देख और बहुतपैने और वेगवाले और सुवर्णसे जटित ऐसे बाणोंसे मयदैत्य त्वष्टाको बेधन करताभया २८ और त्वष्टा अपने पैने बाणोंसे मयको भेदनकर और दैत्योंकी सेनाके प्राणोंको टोहताहुआ और क्रोधसे गर्जता भया २९ और सुवर्ण और मणियों से जटित बिचित्र दंडवाली और महाकांति वाली ऐसीशक्तिको त्वष्टा ग्रहणकर और मयके प्रति ऐसे छोड़ताभया ३० कि जैसे बज्रको इंद्र और सूर्य और अग्निकी तुल्य कांतिवाला ३१ और त्वष्टाकी भुजाओंसे छुटी हुई ऐसी शक्तिको मयदैत्य सातबाणोंसे छेदन करताभया ३२ और त्वष्टाके प्राणोंको हरनेके अर्थ मयदैत्य कोपयुक्तहुआ फिर बाणों

को छोड़ताभया ३३ और त्वष्टा अपने प्रकाशमान बाणोंसे मयके बाणोंको छेदन करताभया ३४ और महाबली वृषोंकीनाईं गर्जते हुये और सिंहोंकी तुल्य पराक्रमोंको करते हुये और परस्परमें दांवदेखते हुये ३५ हनन करते भये और जहरे सर्पोंकी नाईं परस्परमें देखतेहुये ३६ और बड़े विस्तारवाले धनुषसे छोड़ेहुये बाणोंसे ऐसे हनन करतेभये कि जैसे दांतोंके अग्रभागसे मदोन्मत्त हस्ती ३७ और बड़े बिस्तारवाली और प्रकाशमान और सुवर्णके बाजुओंवाली और संपूर्णोंकेप्राणोंको हरनेवालीऐसीगदाकोग्रहण कर ३८ वह मयदैत्य उत्तम घोड़ोंवाले त्वष्टाको ऐसे हनन करता भया ३६ कि जैसे बज्रसे पर्वतोंको इंद्र और युद्धमें क्रोधहुआमय दैत्य बहुत पैनेदो बाणोंसे फिरत्वष्टाके रथकी ध्वजाको छेदन कर और सारथीको धर्मराजके प्रति पहुंचाय ४० बड़े शरीरवाले और बड़े वेगवंत ऐसे श्रेष्ठ घोड़ाओंको गदासे मारताभया और वहत्वष्टा रणमें भेदनकी हुई ध्वजा और सूतको देख ४१ और घोड़ा तथा सूत इन्होंसे रहित रथको त्याग पृथ्वीमें स्थितहुआ और युद्ध के अर्थ अपने महान् धनुषको टंकोरता भया ४२ और मयदैत्यके घोड़ा और सूत और रथ इन्होंको भेदनकर और जयरूपी शोभा से सेवनकिया हुआ युद्धमें ऐसे स्थित होताभया ४३ कि जैसे प्रकाशमान अग्नि और कालकी तुल्यप्रसिद्ध और हाथमें धनुषको धारण करताहुआ ऐसा मयदैत्य देवताओंकी सेनाको दग्धकरता हुआ ऐसे दीखताभया किजैसेबनको दग्धकरताहुआ दावाग्नि४४ और अत्यंत तेजवाले और शिलापै पैनाये हुये और अनेक प्रकार की आकृतियों वाले ऐसे चौदह बाणोंको ४५ मयदैत्य त्वष्टा पै छोड़ताभया और सुवर्णके गहनोंवाले वे बाण त्वष्टा देवताके रुधिरको ऐसे पीतेभये कि जैसे कालप्रभुके प्रेरणाकियेहुये ४६ सर्प और रुधिरमें भीगेहुये वे बाण ऐसे शोभाको प्राप्तहोते भये कि जैसे आधे प्रवेशहुये ४७ और क्रोधयुक्त बिलोंमें महान् सर्प और सुवर्णसे भूषितहुये बाणोंसे त्वष्टा मय दैत्यको बेधनकर और

अत्यंत उग्र चौदहबाणोंसे भुजाको बिदारण करताभया ४८ और वे बाण मयदैत्यकी सव्यभुजाको भेदनकर और भूमिमें ऐसे प्राप्त होतेभये कि जैसे सर्प ४६ और वे बाण पृथ्वीमें प्राप्तहुये ऐसे प्रकाश करतेभये कि जैसे अस्ताचल को जातेहुये सूर्य में प्रवेश होतेहुये किरण ५० और रुधिरको भोजन करनेवाले और अत्यंत उग्र और जलतेहुये ऐसे तीनबाणों से मयदैत्य त्वष्टा को भेदन करताभया ५१ और मयदानवके बाणोंसे पीड़ितहुआ त्वष्टा अपने रथको त्याग और लज्जितहुआ रणसे जाताभया ५२ और सूत और घोड़ाओंको मार और जहरसे रहित सर्पकी नाईं त्वष्टा को रथसे रहितकर मयदानव आनंदको प्राप्त होताभया ५३ और अत्यंत सुंदर और सुवर्ण के बाजुओंवाला और अत्यंत दृढ़ ऐसे धनुषको टंकोरताहुआ रणमेंऐसे स्थित होताभया कि जैसे प्रकाश मान अग्नि ५४ और बलमें श्लाघावाला और मदोन्मत्त ऐसा पुलोमादानव सफेद घोड़ाओंवाले रथ में स्थितहो रणमें दीखता भया ५५ और संपूर्ण प्राणियों के शरीर में स्थित होनेवाला और काल प्रभुकी तुल्य बलवान् ऐसे वायु देवताके संग पुलोमा युद्ध करनेलगा ५६ और पुलोमा दैत्यके धनुष की ज्याके शब्दको पवन देवता ऐसे नहीं सहताभया कि जैसे मदोन्मत्त हस्ती के शब्द को मदोन्मत्त हस्ती ५७ और पुलोमादैत्यके छोड़ेहुये बाणों से दशों दिशा ऐसे आच्छादन होतीभईं कि जैसे सूर्यकी किरणोंके जालसे आकाश सहित जगत् ५८ और तांबा केसे नेत्रोंवाला और महान् सर्पकी नाईं श्वास लेताहुआ ऐसा बायु देवता ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे किरणोंसे सूर्य ५६ और मोरके पंखों की तुल्य वर्णवाले और सुवर्णकी पंखोंवाले ऐसे पुलोमा दैत्यकोभुजाओं से छुयेहुये बाण ऐसे प्रकाशित होतेभये कि जैसे हंसों की पंक्ति ६० और अत्यंत तीक्ष्ण और सुवर्ण से बिकृत और चित्र बिचित्र इन बाणोंको पुलोमा ऐसे छोड़ताभया ६१ कि जैसे अग्निमें पतंग ६२ और क्रोधहुआ और कालप्रभुकी नाईं आताहुआ ऐसा पुलोमा

दैत्यको पवन देवता प्राणों को त्यागता हुआ नव बाणोंसे वेधन करता भया ६३ और तिसके असह्य वेगको देख वह वायु देवता अपने उत्तम पराक्रममें स्थितहो और बाणोंके समूहको नष्ट करता भया ६४ और वह बलवान् पवन देवता शरोंके जालको नष्टकर और पैने मुखोंवाले बाणोंसे पुलोमा दैत्यको वेधनकरताभया ६५ और पवनोंके गणोंमें श्रेष्ठ और महापराक्रम वाले ऐसे दश देवता वेगसे वाह २ ऐसे कहसिंहकेसे शब्दोंको करतेभये ६६ और तुमुल और रोमहर्षको उपजानेवाले ऐसे शब्दको सुन वे पौलोम संज्ञक दैत्य और क्रोधमें मूर्च्छितहुये ६७ पवनके सन्मुख दौड़तेभये और शरोंकीवर्षासे पवनको ऐसे आच्छादन करतेभये कि जैसे बर्षाकाल में जलोंकी धारासे पर्वतको मेघ ६८ और क्रोधहुये सातमहारथी पवनदेवताको ऐसे पीड़ितकरतेभये कि जैसे प्रलयकालमें महाघोर रूप सातग्रह चंद्रमाको पीड़ितकरतेहैं ६९ और अनेकप्रकारकेरत्नों से भूषित और हस्तीके सूंड़की तुल्य आकारवाले ऐसे दाहिने हाथ को युद्धमें उठा ७० और दैत्योंके मस्तकमें मारताभया और अपने वायुके वेगसे सातरथोंको फेंकताभया ७१ और वह पुलोमाप्राणों को त्याग करताहुआ और नवबाणोंसे वायुको वेधन करताभया और वह वायुदेवता प्रकाश करतेहुये७२और अचिंत्य ऐसे पुलोमा के बाणोंके समूहकोदेख और अपनेबाणोंसे दैत्योंकी सेनाकोबिदा रण करताभया ७३ और रुधिरमें भीगेहुये मुकुटोंवाले और छिन्न भुजा और अस्थियोंवाले संपूर्णदानव युद्धभूमिमें पड़ेयेहु ऐसेशोभा को प्राप्तहोतेभये कि जैसे गेरूमें रंगेहुयेपर्वत७४औरभेद नकियेहुये मदोन्मत्त हस्ती ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये कि जैसे फूलेहुये वृक्ष७५और दानवोंकेफटेहुये शरीरोंसेबड़ीभयानक औरडरनेवालों के भयको बढ़ानेवाली ऐसीनदी बहनेलगी ७६ और देवता और दानव और हस्ती और घोड़ा इन्होंके रुधिर से वहरण भूमि बड़ी भयानक होतीभई ७७ और गतप्राणोंवाले राक्षस खेचर और धनुप और यक्ष और ध्वजा और रथ और घंटाओंसे भूषित ऐसे

फूटेहुये मस्तकोंवाले हस्ती ७८ और प्रकाशकरतेहुयेसुबर्णकेपंखों वालेबाण और प्रास और तोमर ७६ और भाला और शक्ति और फरसा इन्होंके खंड और सुबर्णसे जटित धनुष और गदा और मुशल पट्टिश और सुबर्णके बाजू और मुकुट और शोभायमान कुंडल ८० और तनुत्र और तलत्र और हार और धुकधुकी और शस्त्र और रथोंसे रहित भेदन कियेहुये दैत्य इनसंपूर्णोंसे वह रणभूमि ऐसेशोभाको प्राप्तहोतीभई ८१ किजैसे ग्रहोंसे आकाश और ध्वजा और रथ और घोड़ा और हस्ती इन्होंके मरने से ८२ देवता और दैत्योंका युद्धबराबर शोभाको प्राप्तहोताभया ८३ और गदा और मुशलोंको धारण करतेहुये ऐसेक हजारदैत्यों को संगले पुलोमा दैत्यबायु देवताको आबृत्त करताभया ८४ और वे दानवोंमें श्रेष्ठ एकलाख दैत्यपवनदेवताको हननकरतेभये और तिनदैत्योंसे ताड़ना कियाहुआ पवनऐसे शोभाको प्राप्तहोता भयाकि जैसे अंकुश से ताड़ना कियाहुआहस्ती ८५ और वहमहाबायु पवन आठसौदैत्यों को मार और रस्ताकर और रणसे जाताभया ८६ और वहमार्ग अवतकभी आकाशमें दीखताहै ८७ और तिसबायु पंथानाम मार्ग को सिद्धजन सदादेखतेहैं ८८ और बैशंपायनजी कहतेहैं कि हेराजन् महाबली हयग्रीव दैत्य पूषाको प्राप्तहो और सिंहकी नाईं उसे शब्दसे गर्जताभया ८९ और सुबर्णके जालोंसे भूषित धनुष को टंकोर और क्रोधहुआ घोरनेत्रों से पूषा को देखता भया ९० और बाणोंको भुजाओंसे लेताहुआ और सांधताहुआ और छोड़ता हुआ और खैंचताहुआ ऐसाकर्मको करताहुआ हयग्रीव के बीचमें अंतर नहीं देखताभया ९१ और दाहिने और बांयेंहाथसे फेंकेहुये बाणोंकाऐसाचक्र होताभया कि जैसे घुमायाहुआ अग्निकाचक्र ९२ और सुबर्णके पंखोंवाले और शिलापै पैनायेहुये और धनुषोंसेछोड़े हुये ऐसेबाणोंसे सूर्य और दिशाओंको आच्छादन करते भये ९३ और सुबर्णके पंखोंवाले और पैनीधारोंवाले ऐसे बाणोंको आकाश में बहुतसमूह दीखनेलगे ९४ और पर्वतके शिखरकीतुल्य आकार

वालेधनुषसे छोड़ेहुये ९५ और पंक्तिरूपहुये बाण आकाश में जाते हुयेऐसे प्रकाश करतेभये कि जैसेआकाशमें जातेहुये क्रौंच९६और शिलापैपैनाये हुये और सुवर्णसेभूषित और महाबेगवाले ऐसेबाण हयग्रीवछोड़ताभया ९७और धनुषके बलसे घुमाये हुये और बहुत पैनेऐसेबाण पूषाके शरीरको आच्छादन करतेभये९८और सुवर्ण से जटितहुये वेबाण आकाशमें ऐसे प्रकाशितहोतेभये ९९ किजैसेबर्षा ऋतुमें आकाशमें जातेहुये हजारहों पटबीजना १०० और शिलापै पैनाये हुये और पैने अग्रभागोंवाले ऐसे बाण पूषाको बेधन करते भये १०१ औरवहहयग्रीव बाणोंकी बर्षासे पूषाको ऐसे आच्छादन करताभया कि जैसे पर्वतको मेघ और पूषाका बल और शूरबीरता और पराक्रम और परिश्रम १०२ इन्हों को संपूर्णदेवता आश्चर्य रूप देखतेभये और हयग्रीव के धनुषसे होतीहुई शरों की बर्षा से पूषा कुछ भी चिंतानहीं करताभया १०३ और क्रोध से हयग्रीव केसामने दौड़ता भया १०४ और सुबर्ण की पीठवाला और बड़ा शब्द करने वाला और इन्द्रके धनुष की नाईं सुन्दर सुड़ हुये ऐसे धनुष को पूषा ग्रहणकर और बाणों से आकाश को आच्छादन करता भया१०५और पूषाके धनुषसे सुबर्णके पंखोंवाले बाणों की आकाशमें विस्तार रूपमाला होतीभई१०६ और पूषाके छोड़े हुये शरोंके जालोंको हयग्रीवकेपैने२ बाणनष्टकरते भये१०७ और सुवर्ण के पंखोंवालेऔर कंककेवर्णकीनाईं वस्त्रोंवाले ऐसे पड़तेहुये हयग्रीव केबाणोंसेआकाश आच्छादन होताभया१०८और शिलासे पैनाये हुयेऔर अपने नामसे अंकित और सूर्यके तेजकी समतेजवाले और सुवर्णसेजटित ऐसेबाणोंसे पूषाहयग्रीव पैफिरवर्षा करनेलगा१०९ और हयग्रीव फिर क़िला और शरोंकीवर्षाको रचताभया और ध्वजा और पताका और धनुष ११० और रश्मी और सूत और घोड़ा इन्हों को वहमहाबली और अग्निकी नाईं दग्धकरता हुआ ऐसा महा क्रोधयुक्त हयग्रीव छेदन करताभया १११ और चार बाणोंसे फिर घोड़ाओंको मार और रथ पैसे फिर सूतकोपृथ्वीमेंगिराताभया

और हयग्रीवने रथसे रहितकियाहुआ पूषाऔर भयभीतहुआ ११२ ऐसे कांपताभया कि जैसे समुद्रकी तरंग और मृत्युके मुखमें से निकसाहुआ इन्द्रके समीपजाताभया ११३ और शंबर और भग इन दोनोंका फिर घोर और बड़ा दारुण और अद्भुतऐसायुद्ध होता भया११४ और सातहाथ आदिप्रमाण के समानलंबा और इन्द्रके बज्रकीतुल्य शब्दवाला और दृढ़ज्यावाला औरबहुत भारको सहनेवाला ११५ ऐसा धनुषको धारण करताहुआ और रथकेधुराकी तुल्यबाणोंको छोड़ताहुआ और क्रोधसेरक्तनेत्रोंको धारणकरताहुआ और संपूर्ण योगका जाननेवाला११६ ऐसा शंबरदैत्यको देवताओं की सेना देख ऐसे कंपायमान होती भई कि जैसे समुद्र की महा तरंग ११७ और बुरेनेत्रोंवाला और भयानकऐसे आतेहुये शंबरको देख और क्रोधसे कंपायमान ओठोंको धारण करताहुआ जल्दीकरताहुआ भगदेवताशंबरदैत्यकोनिवारण करताभया ११८ और बड़े धनुषवाला भगदिब्य धनुषको टंकोरताहुआ और धनुषकी ज्याके खैंचनेसे संपूर्ण दिशाओंको शब्दायमान करताहुआ ११९ बाणोंकी वर्षा करताभया और बाणों को फेंकताहुआ शंबर दैत्य के प्रति भग ऐसे जाताभया कि जैसे हस्तीके प्रति हस्ती और वृषके प्रति वृष१२०और महा बेगवाले वेदोनों धनुषोंको ग्रहणकर और परस्परमें छेदन करतेहुयेबाणोंसे आच्छादित होतेभये १२१और भग और शंबर इन दोनोंका भयानक और बे प्रमाण ऐसा तुमुल और घोर युद्धहोताभया१२२ और बड़ेपैने पर्वतोंवाले और बड़बेग से छोड़ेहुये ऐसे बाणोंसे परस्परमें हनन करतेभये१२३औररुधिर से भरेहुये और भेदनकिये अंगोंवाले और रथोंमें बैठेहुये औरमदोन्मत्तहुये १२४ और पैने बाणोंसे परस्परमें छेदन करतेहुये और परस्परमें देखनेको समर्थनहीं होतेभये १२५ और क्रोधसे लाल २ नेत्रोंको करताहुआ औरकालप्रभु औरधर्मराजकीतुल्य उपमावाला और जल्दीकरताहुआ १२६ ऐसा शंबर दैत्य बाणोंसे भगको ऐसे भेदन करताभया कि जैसे महान्सर्पोंको गरुड़ १२७ और सामने

आतेहुये और शंबरके प्रेरित और प्रकाशमान और वेगवंतऔर सूर्य कीसम कांतिवाले ऐसेबाणोंको भगदेवता अपनेबाणोंसे आकाशमें छेदन करताभया १२८ और अत्यंत तीक्ष्ण और सुंदरपैने मुखोंवाले और अत्यंत वेगवालेऐसे चौंसठि बाणोंसे शंबरदैत्यभगको बेधन करताभया १२९ और बहुतकाल पर्यंत दोनोंका बराबरयुद्ध होता भया १३० और धनुषको धारण करताहुआ रथमेंस्थितहुआ १३१ भगको शंबरकीमायाओंसे अंतर नहीं दीखताभया १३२ और वज्र की तुल्य धनुषोंका शब्द सुनताभया और शंबरदैत्य भगके घोड़ा-ओंको भेदनकर और ध्वजाको छेदनकर १३३ और बाणोंकीवर्षा ऐसे करताभया कि जैसे मेघजलकी वर्षाकरते हैं और शंबरदैत्यके बाणोंसे सूर्यरूपी भगदेवताके शरीरमेंबिना छिद्रकेदो अंगुलकाभी अंतरनहीं रहताभया १३४ और महाबलीऔरमायाधारी ऐसाशंबर दैत्य अपनी माया और लाघवतासेभगदेवताको छलताभया १३५ और एकहजार मायाओंको धारनेवाला और कांतिमान् और देव-ताओंकी सेनाको भेदन करनेवाला ऐसा शंबरदैत्य सौबाणोंसे आच्छादित दीखताभया १३६ और वह महाबली शंबर फिर प्राणोंसे रहितहुआ पृथ्वीमें पड़ाहुआ दीखताभया और फिर सौ पर्वतों की तुल्य दीखनेलगा १३७ और फिर दिग्गज हस्तीपर स्थितहुआ दीखनेलगा और फिर प्रादेशमात्ररूप धारणकरऔरपर्वतकी तुल्य दीखनेलगा १३८ और महामेघकारूप धारणकरकभी ऊपर और कभी तिरछा दीखनेलगा और फिर घोर और विरूप और विकृत ऐसा भयानकरूपको धारणकर १३९ और संपूर्ण देवताओंकी सेना को डरानेलगाऔर देवता तिसके भयसे ऐसे दौड़तेभये कि जैसे सिंह से मृग १४० और फिर सूक्ष्मनवीनदेह धारणकर और दिशाओंको शब्द से पूर्ण करताहुआ ऊंचा बढ़नेलगा १४१ और आकाशमें प्राप्तहो और प्रलयकालके संवर्त्तकमेघकीतुल्य भूमिको जलसेपूर्ण करताहुआ १४२ इंद्रकी तुल्य वर्षनेलगा और बड़ा पराक्रमवाला और सौआवर्तोंवाला और सौशिखाओंवाला ऐसा संवर्तकअग्निहो

फिर संपूर्णदेवताओंको दहनकरनेलगा १४३ और सौमार्गोंवाला और सौगुफाओंवाला दोघड़ीमें ऐसा पर्वत दीखनेलगा और मानो गिरताहुआ आकाशको थांभताहुआ कैलासपर्वतकीनाईं दीखनेलगा १४४ और आदित्य और साध्य और बिश्वेदेवा और देवता इन्हों को जितने अस्त्रफेंके तिन्होंको ग्रसताभया १४५ और रणमें युद्ध करताहुआ और अपनेरथ सहितगंधर्वनगरकीनाईं तिसीजगह अंतर्धान होताभया १४६ और हजारमायाओंको धारण करनेवाला और चित्रतासे युद्ध करनेवाला ऐसा शंबरदैत्यकोदेखतेहुये देवता भयभीत होतेभये १४७ और शंबर के युद्धमें स्थित भगदेवताभी भयभीतहुआ इन्द्रके शरणजाताभया १४८ और शंबर दैत्य युद्धमें भगदेवता को जीत और प्रकाशकरता हुआ अग्नि देवताके प्रति जाताभया १४९ और अग्निदेवताको मैंतेरामारनेवालाहूंऐसेकठोर बचनोंसे भेदनकर और अंतर्धान होताभया १५० और ब्राह्मणों का राजा और महाबली और शीत अस्त्रोंवाला ऐसा चंद्रमा तिसी समयमें दैत्योंकी सेनाको हनन करताभया १५१ और कैलास के शिखरकी तुल्य आकारवाला और महाकांतिवाले यहां से युक्त ऐसा चंद्रमा दानवोंको ऐसे हनन करताभया कि जैसे दंडपाणि कालप्रभु १५२ और रथोंको तोड़ताहुआ और घोड़ाओंको मारता हुआ दैत्योंमें ऐसे बिचरता भया किजैसेप्रलयकालमें बलवंतकालप्रभु १५३ और बड़ेबेगसे रथोंको तोड़ताहुआ दैत्यों को ऐसेदग्ध करताभया किजैसे बनको दावाग्नि १५४ और वहचंद्रमा शीतसे संपूर्ण दानवोंकी सेनाको ऐसे हनन करता भया कि जैसे वृक्षों को वायु १५५ और चंद्रमाका अस्त्र शत्रुओंके रुधिरसे ऐसेभीगताभया किजैसे क्रोधसे पशुओंको मारताहुआ महादेवका अस्त्र १५६ और बारबार भगतीहुई देवताओंकी सेनाको निवारणकर १५७ और कालप्रभुकी तुल्य महाबली ऐसा चंद्रमादैत्योंकी सेनामेंबिचरता भया और मृत्युकी नाईं आताहुआ चंद्रमाको देखयोधा बिस्मयको प्राप्तहोतेभये १५८ और अंधकारको दूरकरने वालाऐसा शिशिरास्त्र

को चंद्रमाजहांजहांप्रवेश करनेलगा तहांतहां संपूर्ण दैत्योंकी सेना नष्टहोतीभई १५६ और अपनी सेनासेयुक्तहुआ और दैत्योंकी सेनाको विदारणकरताभया और मुखको फाड़ताहुआ कालकीनाईं दैत्योंकी सेनाको ग्रसन करताहुआ १६० और भयानक कर्मको करताहुआ और अस्त्रोंको धारण करताहुआ और महायुद्धमें १६१ आताहुआ ऐसा चंद्रमा को देख वे दैत्योंमें चंद्रमा और भास्कररूपी और ताल-वृक्षके प्रमाणमात्र धनुषों को आकर्षण करतेहुये १६२ और महा बलवंत ऐसे दो योद्धा बाणों से चंद्रमाको ऐसे आच्छादन करतेभये किजैसे वर्षाकरते हुये महामेघ और धनुषोंके खैंचनेसे १६३ और हस्तियोंके गर्जनेसे और घोड़ाओंके हींसनेसे और भेरी शंख मृदंग इन्होंके बजनेसे ऐसा दिशाओं को शब्दायमान करताहुआ १६४ आकाशमें महातुमुल शब्द होताभया १६५ और युद्धतथाजय और यश इन्होंको इच्छा करतेहुये योद्धापरस्परमें ऐसेगर्जते भये किजैसे गोशालाओं में गोवृष १६६ और पैनेबाणोंसे छेदन कियेहुयेदोनों सेनाओं के शिरोंकी आकाशमें ऐसे बर्षा होनेलगी १६७ किजैसे पत्थरों की और कुण्डल और पगड़ियों को धारण करेहुये १६८ और सुवर्णकी मालासे युक्तऐसे २ शिररणमें पड़ेहुये दीखते भये और बाणों से छेदित शरीर और धनुषों से युक्तभुजा १६९ और रुधिरमें भीगेहुये कवचों से युक्तशरीर और जांघ और प्रकाशमान मुख १७० और हस्ती मनुष्य घोड़ा इन्होंके शरीरों से भूमि एक मुहूर्त में भरपूर होतीभई १७१ और धनुषरूपी घटा शस्त्रों रूपी बिजली १७२ और बाहुका शब्द गर्जन रूप और रुधिररूप वर्षा और प्रहाररूप तुमुलशब्द १७३ ऐसा देवता और दैत्यों के युद्ध में वर्षाका रूपक होताभया १७४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांषट्चत्वारिंशदधिक द्विशततोऽध्यायः २४६ ॥

दोसैसैंतालिसका अध्याय॥

वैसंपायनजी कहनेलगेकिहे जनमेजय तुमुल और रोमहर्षोंको उपजाने वाला और भयानक ऐसा महायुद्धमें देवता और दानव क्रोधहुये बाणोंकीबर्षा करनेलगे१ और जिन्होंके सवाररहतहोगयेहैं ऐसेहस्तीबाणोंसे पीड़ितहुये बड़ेशब्दको करतेभये और घोड़ादशों दिशाओंमें दौड़लेभये २ और कोईक बाणोंकी बर्षासे पीड़ितहुये ऊपरको उछल २ के पृथ्वी में गिरतेभये और शूरवीर और बड़वेग वाले और हस्ती और घोड़ा और रथइन्होंपै चढ़हुये ३ ऐसेदेवता और दानवोंके धनुषोंकी ज्या के शब्दोंसे रणमें कोई भी नहीं जान सकै ४ और बाण और शक्ति और गदा और खड्ग इन्हों से अत्यंत तेजवाले शूरवीर परस्परमें दोसेनाओंको हनन करतेभये ५ और भुजा और उत्तमअंग और धनुष इन्होंका समूह पड़ाहुआ देवता और दानवोंके युद्धमें दीखनेलगा ६ और देवता और दैत्यों के बाणोंसे मराहुआ घोड़ा और हस्ती और रथ इन्होंका अंतनहीं प्राप्तहोताभया ७ और गदा और असि और प्रास और बाणइन्हों से योद्धा और भी बहुतसे हस्ती और घोड़ाओंको हनन करतेभये८ औरकेशरूपी शेवाल और दूबवाली और बड़ावेग और तरंगोंवाली ऐसीसेनाओंके मध्यमें रुधिरकी घोररूपनदी प्रवर्त्तहोतीभई ९ और रणमेंदानवोंसे हननकियेहुये देवताओंका महाहाहाकार शब्दहोता भया और भयको देनेवाला और महाघोररूप ऐसाएकयुद्ध देवता ओंका दैत्योंके संगहोताभया १० और रक्तनेत्रोंको धारणकरताहुआ और परम धनुषको धारण करताहुआ ऐसा विष्वक्सेन नामवाला साध्य देवताको उसीरणमें बिरोचन हननकरताभया ११ और आता हुआ बिरोचन को वह विष्वक्सेन देख और तीन बाणोंको धनुषपै चढ़ातिसको छाती में मारताभया १२ और बिष्वक सेनके बाणोंसे हननकिया हुआ बिरोचन क्रोधसे ऐसे जलताभया किजैसे यज्ञ में अग्नि१३ और प्रकाशसमान और वेगवाले ऐसेसात बाणोंको बिरो-

चनअपनेधनुषपैचढ़ा और युद्धमें बिष्वकसेनको सातबाणोंसे बेधन करताभया १४ और वलवान् बिरोचनसे अत्यंत बेधन कियाहुआ बिष्वकसेनमूर्च्छाको प्राप्तहोताभया १५ और विष्वकसेनसावधानहो और धनुषकी टंकोर फिर दैत्योंके मध्यमें स्थितहोताभया १६ और वहविरोचन फेर२ वाणोंसे देवताओंकी सेनाको क्षोभ करता हुआ फिरयुद्ध करताभया१७ और युद्धकरताहुआ औरजीमूतमेघकीनाई गर्जताहुआ ऐसा बिरोचन दैत्यकायुद्धमें बड़ा शब्दसुननेलगा १८ और वहविरोचन देवताओंकी सेनाको हनन करताहुआऐसेगर्जता भया किजैसे ओलोंकी वर्षाकरताहुआ और बिजलियोंसहित चंड मेघ१९ औरअस्त्रोंको उठाताहुआ और बाणोंकी वर्षासेसंपूर्णदेवता ओंकी सेनाको युद्धसे भगाताभया २० और रथोंपैसे रथी और घोड़ोंपैसेसवार और प्यादेये संपूर्ण बिरोचनके भयसेदौड़तेभये२१ और बज्रके शब्दकी तुल्यधनुषके शब्दको सुन भयसे रणमें संपूर्ण देवताओं की सेनालुकती भई २२ और बिरोचनके भयसे डरतेहुये रथी और प्यादा इन्होंके समूह इन्द्र के समीप प्राप्तहोतेभये २३ और वहमहाबली बिरोचन बिष्वकसेनके चौदह हजार पीठकीरक्षा करनेवालों को हननकरता भया २४ और घोड़ा और हस्ती और रथ और प्यादा इन्होंके समूहमें वह बिरोचन हनन करताहुआदीख नेलगा २५ और वहबिरोचन सिकराकीनाई पांखोंकोफैलाताहुआ देवताओंकी सेनाको मारतार शिरोंको छेदन करताभया २६ और घोड़ोंकेसवार और प्यादा और मरनेसबचेहुये रथीये संपूर्णबिष्वक् सेनके संगही और बिरोचनके प्रतिदौड़तेभये २७ और खड्गढाल गदा शक्तिपरिघ प्रासतोमर इनहथियारों से हनन करतेहुये सिंह शब्दको करतेभये २८ और वहबिरोचन फिर अपनी तलवार को ग्रहणकर और वेगसे रथियोंका शिर और धनुषको २९ काटता भया और रथहस्ती घोड़ा इन्होंके समूह में स्थित और शत्रुओं को मर्दन करनेवाला और महाबली ऐसा बिरोचन इक्कीसप्रकार के मार्गोंको आचरण करता हुआ ३० और भ्रांत उद्भ्रांत आविद्ध

आप्लुत प्रसृत प्लुत संपात समुदीर्ण इन्होंको दिखाताभया ३१ और महात्मा बिरोचनने पैनीतलवारसे भग्न कियेहुये कवचोंवाले कितनेक देवता गर्जतेभये और कितनेक प्राणोंसे रहित पृथ्वीमें गिरते भये ३२ और महात्मा बलिने पीछेसे छेदन कियेहुये और बाहनेसे रहित कियेहुये ऐसे देवताओंमें हस्तीरूपा ३३ देवता उलटे दौड़ते हुये अपनी सेनाको मारतेभये और बिरोचनके दृढ़ धनुषको छेदन कियेहुये अनेकप्रकारके तोमर और धनुष और पीलवानोंके शिर आकाशसे भूमिमें गिरनेलगे ३४ और वह बिरोचन कितनेक रथियोंका तिरस्कारकर ३५ और कूदके अपने खड्गसे सूत और ध्वजाओंको छेदन करताभयाथा ३६ और बारबार कूदताहुआ और दौड़ताहुआ और चित्र विचित्र मार्गोंको आचरणकरताहुआ ऐसे बिरोचनको देख संपूर्ण असुर बिस्मयको प्राप्तहोतेभये ३७ और किसीको पैरसे मारताभया और किसीको खड्गसे छेदनकरताभया और किसीको शब्दसे भयभीतकरताभया ३८ और कोई बिरोचनको देख प्राणोंको त्यागताभया ३९ और रथोंका समूह और घोड़ा और हस्ती और देवता इन्होंका नाशरूप महायुद्धमें ४० दैत्योंमें श्रेष्ठ जंभदैत्य अंश देवतासे ऐसे युद्धकरताभयाकि जैसे वृषके प्रतिवृष ४१ और पर्वतकी समरूपवाला और मत्तहस्तीकी तुल्य पराक्रमवाला ऐसा जंभदैत्यने और वेगवन्त ऐसेबहुतबाणोंसे अंशदेवताको बंधनकरताभया ४२ और रथोंसेसहित देवताओंकी हजारहां सेना जंभके बाणरूपी पंथासे प्राप्तहोउलटी नहीं आतीभई ४३ और संपूर्ण प्राणीशब्द करतेभये और दिशा अंधकार युक्त होतीभई और देवताओंकी बड़ी दारुणहार दीखनेलगी ४४ तब देवताओंमें श्रेष्ठ और उत्तम पराक्रमवाला ऐसा अंशदेवता जंभ दैत्यकी बड़ी बेगवाली दशहजार हस्तियोंकी सेनाको मारताभया ४५ और शत्रुओंको दमनकरनेवाला ऐसा कुजंभ दैत्य आतीहुई हस्तियों की सेनाको देख और हाथमें गदाको धारणकर और अपना रथसे नीचे स्थित होताभया ४६ और पर्वत की तुल्य सारवाली और बड़ीऐसी गदाको ग्रहणकर हस्तियोंकी सेना पै ऐसे दौड़ताभयाकि

जैसे मुखको फाड़ताहुआ कालप्रभु ४७ और दानवों में श्रेष्ठ यह कुजंभ दैत्य अपनी गदासे हस्तियोंको हतन करताहुआ रणमें ऐसे विचरताभया कि जैसे दंडको हाथमें ग्रहणकरता हुआ काल ४८ और दानवों में श्रेष्ठ और महाबली ऐसा कुजंभ हस्तियोंके दांत और मस्तकोंको भेदन करताभया ४९ और टूटे दांतोंवाले और भेदित मस्तकोंवाले ऐसे हस्ती कुजंभ दैत्यके भेदित किये हुये दशों दिशाओं में दौड़तेभये ५० और कुजंभ दैत्यके दिव्याल सिमल और तीक्ष्ण बाणोंकी वर्षा करतेभये ५१ और क्षुर और क्षिरप और भाला और तोमर और अंजलिक ऐसे हथियारोंसे कुजंभ दैत्य देवताओंके अंगों को छेदन करताभया ५२ और गिरतेहुये शिरोंकी वर्षासे आकाश ऐसे पूरित होताभया कि जैसे ओलोंकी वर्षासे पूरित होताहै ५३ और हस्तियोंपै बैठेहुये देवता शिरोंसे रहित ऐसे दीखतेभये कि जैसे शिरोंबिना ताल के वृक्ष ५४ और सन्मुख आतेहुये और मदोन्मत्त ऐसा अंध देवताका हस्तीको जंभदैत्य एक बाणसे बेधन करताभया और बेधितहुआ हस्ती उलटा जाताभया ५५ और दानवोंमें श्रेष्ठ और गदायुद्धका जाननेवाला ऐसा कुजंभदैत्य हस्तियोंकी सेनाको मर्दनकर और गदासे देवताओंके सेनापतियों को हनन करताभया ५६ और कुजंभने एकप्रहारसे मारेहुये और पर्वतकी नाईं पड़ेहुये ऐसे हस्तियोंको संपूर्ण देवता देखतेभये ५७ और कुजंभके आगाड़ी हस्ती ऐसे भेदन होतेभये कि जैसे इन्द्रके वज्रसे पर्वत ५८ और हस्तियोंके रुधिरसे भीगीहुई ऐसी लोहेकी गदाको धारण करता हुआ और मुखको फाड़ताहुआ ऐसा कुजंभ दैत्य क्रोधहुआ बड़ा भयानकरूपको धारण करताभया ५९ और जैसे प्रलयकालमें प्रजा के नाशके अर्थ कालप्रभु क्रोध होताहै तैसेही अपनी गदासे रणमें क्रीड़ा करताहुआ कुजंभ दैत्य क्रोध होताभया ६० और दंडको धारणकर और हस्तियोंको ऐसे दौड़ाताभया कि जैसे गौओंको पाली ६१ और बड़ा पराक्रमवाला और दंडको उठाता हुआ ऐसा कुजंभ दैत्यको संपूर्ण देवता कालकी नाईं दीखते भये ६२

और कुंजभ देवताओंकी सेना और हस्तियोंको रणसे भगाताहुआ ६३ और रणमें ऐसे स्थित होताभया कि जैसे कालप्रभु ६४॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वं तर्गतभविष्यपर्वभाषायांसप्तचत्वारिंशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २४७॥

दोसौअड़तालिसका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे कि हे जन्मेजय जिससे उपरांत संपूर्ण देवताओंकी सेना बड़े भयानक शब्दोंको करतीहुई और दैत्योंके प्रति दौड़तीभई १ और असंख्य और रथ हस्ती घोड़ा इन्होंसे व्याप्त और शंखनकारोंसे शब्दायमान २ और बाणसे आतीहुई और दुःखसे पारहोनेवाली और धूलीसे व्याप्त ऐसी विमानरूप देवताओंकी सेना को देख और समुद्ररूप दैत्योंकी सेना ऐसे क्षोभमान होतीभई कि जैसे पर्वमें समुद्र ३ और आश्चर्यरूप और अंतरहित और बड़ी अद्भुत और रथ हस्ती घोड़ा इन्होंसे व्याप्त ऐसी देवताओंकी ४ महासेनाको रोकि और वह महाबली कुजंभ रणमें ऐसे निश्चल स्थित होताभया कि जैसे सुमेरुपर्वत ५ और कुजंभसे निवारणकीहुई देवताओंकी सेना निरुद्यम होतीभई और फिर असिलोमा और हरि ये दोनों परस्परमें युद्धकरनेलगे और दानवोंका अधिपति ६ और देवताओंकी सेनाके अर्थ धूमकेतुकी नाईं उठाहुआ और महाक्रोधी ऐसा असिलोमा दैत्य देवताओंकी सेनाको ऐसे नष्ट करता भया कि जैसे अंधकारको सूर्य ७ और एक हजार सूर्योंकी तुल्य कांतिवाला और मायारूपी ऐसा असिलोमा दैत्यका रथ देवताओंकी सेनापै मेघकी नाईं शरोंकी वर्षाकरताभया ८ और घोरदर्शनवाला और रुद्ररूप और सेनामें दुःखसे निवारणहोनेवाला ९ और कालप्रभुकी नाईं ग्रसताहुआ ऐसा असिलोमा दैत्य हरिके संग युद्धकरने लगा और भयानकमुखवाला और महान् हस्तियोंको मर्दन करताहुआ १० ऐसा असिलोमा दैत्य देवताओंको मार और एक ऊंचादर चुनता भया और देवताओंको प्रसन्नकरताहुआ और शरोंकेसी दाढ़ोंवाला और महाप्रतापी ११ और तलवारकी तुल्य जीभवाला और धनुष

की तुल्य मुखकोफाड़ताहुआ और फरसाको धारणकरताहुआ और मृदंगकी तुल्य शब्द करताहुआ १२ और दानवोंमें व्याघ्ररूपऐसा असिलोमा रणमें व्याघ्रकी नाईं स्थित होताभया १३ और सेना का समूह घोर समुद्ररूप और भुजा ग्राहरूप १४ और धनुषोंकी ज्याका कांपना तरंगरूप १५ और बाणोंका आवर्त्त तलावरूप और गदा तथा तलवार मच्छरूप और धनुषकी ज्यातटरूप और बाण मीनरूप ऐसा गर्जताहुआ १६ सेनारूपीसमुद्रमें घोड़ा हस्ती प्यादा रथ शूरवीर महारथी इन सबको वह दानवेश्वर असिलोमा डुबोताभया १७ और श्रीमान् दैत्योंमें श्रेष्ठ और महाबली असिलोमा संपूर्ण देवताओंके समूहको मर्दनकरताभया १८ और शुद्ध सुवर्ण की तुल्य कांतिवाला और कवचको धारण करताहुआ १९ और युद्ध करताहुआ और अग्निकी तुल्य जलताहुआ और मध्याह्न कालके सूर्यकी तुल्य तपताहुआ २० ऐसा असिलोमाको संपूर्ण सेना देखनेको समर्थ नहीं होतीभई और ग्रीष्मऋतुमें बढ़ाहुआ अग्नि जैसे फूसको २१ जलादेता है तैसेही देवताओंको असिलोमा अपने तेजसे दहनकरताभया २२ और देवता और दानवोंकी सेना भया नक शब्दको करनेलगी और संपूर्ण शूरवीर व्याकुल और मूढ़होते भये और हस्ती रथ घोड़ा इन्होंपै स्थितहुये २३ और श्रेष्ठबुद्धिको धारणकरतेहुये ऐसे शूरवीर रणको नहीं त्यागतेभये २४ और व्यघा कुल रूप और रोमोंको उपजानेवाला और रुधिरकीनदी और कीच वाला २५ ऐसा देवता और दानवोंका महाघोरयुद्धहोताभया और भयरूपी ग्राहसे पीड़ितहुये संपूर्ण दिशा २६ और अनेक प्रकारसे कियेहुये दानवोंके शस्त्र घात इन्होंको नहीं जानते सर्पे और महारणमें मूढ़चित्त और व्याकुलहुये परस्परमें हननकरतेभये २७ और सूर्योंके तेजसे विमूढ़हुये अपने और परायोंको नहीं जानते भये और कोईक शूरवीर हाथोंको चाबताहुआ किसीक शूरवीरके केशोंको ग्रहणकर २८ और खड्गसे शिरको छेदन करता भया और शस्त्रोंको त्याग और वज्रकी तुल्य २९ और महाक्रोध

ऐसी भुजा और मुष्टियोंसे रणमें परस्परमें प्रहार करते भये ३०
और संकुल और तुमुल और भयके उपजानेवाले ऐसे बर्तमान
महा युद्धमें घोड़ा घोड़ाको और हस्ती हस्तीको और शूरबीर शूर-
बीरको बड़ेवेगसे भगाताभया ३१ और समीपसे हनन करताभया
और बड़े पराक्रमोंवाले और महारथी ३२ ऐसे देवता और दैत्य
प्राणोंको त्यागतेहुये परस्पर में हनन करतेभये और खुले केशों
वाले और कवचोंसे और रथोंसे रहित और छिन्न धनुषोंवाले ३३
ऐसे दानव देवताओंके संग हाथ और पैरोंसे युद्ध करतेभये ३४
और हरि अपने पैने भालाको असिलोमाके सामनेफेक और
तिसीभालासे धनुषकी कोटीको छेदनकर पृथ्वी में गिराताभया
और फिर पैनी धारोंवाले सौ बाण असिलोमाके प्रति छोड़ता
भया ३५ और छोड़े हुये वे बाणपवनके वेगसेबड़े वेगवंत हुयेऔर
असिलोमाके देहमें आधेबढ़े हुये ३६ ऐसे शोभाको प्राप्त होतेभये
कि जैसे पर्वतमें सर्प ३७ और छेदनहुये और रुधिरको झिरते हुये
ऐसे अंगोंसे वह असिलोमा ऐसे शोभायमान होताभया ३८ कि
जैसे गैरिकादि धातुओंको त्यागताहुआ सुमेरु पर्वत और वह अ-
सिलोमा क्रोधितहो और फिर अन्य धनुषको धारणकर ३९ और
सुवर्णके पंखोंवाले और बहुतपैने ऐसे बाणोंको हरिके प्रति प्रेरणा
करताभया और सर्प और अग्नि और बिष इन्होंकी तुल्य उपमा
वाले ऐसे तिनबाणोंसे हरिके मर्मको वेधनकर ४० और शरीरको
ऐसे आच्छादन करताभया कि जैसे पर्वतकोमेघ और कालकी
तुल्य उपमावाले और सुबर्णकी पंखोंवाले और सूर्यकी तुल्य
कांति वाले ४१ ऐसे सौ बाणोंको फिर धनुषपै संधानकर हरिके
प्रति छोड़ताभया और तिनबाणों से वेधितहुआ ४२ हरि मोहको
प्राप्तहो पृथ्वीमें गिरताभया और तिससमय में देवताओंका
कियाहुआ ऐसे हाहाकार होताभया ४३ कि जैसे सूर्यके गिरने से
होताहै ४४ और वह दानवों में श्रेष्ठ असिलोमा इकतीस हजार
हरिके परिवारके देवताओंको मारताभया४५और जयरूपी शोभासे

सेवित हुआ और अग्निकी तुल्य प्रकाशमान हुआ ४६ अपनेघोर धनुषको धारणकर इंद्रके रथकेप्रति जाताभया और तिसयुद्धमें दोनों अश्विनीकुमार देवताओं के शत्रु और महाबली ऐसा वृत्रासुरके प्रति युद्ध करनेलगे ४७ और तर्कश और धनुष को धारण करता हुआ और युद्धमेंप्राणों को त्यागनेवाला ऐसा वृत्रासुर अश्विनीकुमारोंको प्राप्तहो युद्धमें ऐसे अचल स्थित होताभयाकि जैसे पर्वत ४८ और युद्धमें शत्रुओंके रोमोंको उपजानेवाले ऐसे शंखकोवजा और धनुषकीज्याके शब्दोंसे संपूर्ण प्राणियोंको मोहित करताभया ४६ और हर्षित रोमोंवाले यक्ष और देवताओं के समूह ये संपूर्ण समुद्रके शब्दकी तुल्य शब्दवाला ऐसा शंख का शब्द सुनतेभये ५० और गदापरिघ अस्त्रशक्ति त्रिशूलफरसा येसंपूर्ण हथियार यक्ष राक्षसोंकी भुजाओंमें शोभाको प्राप्त होतेभये ५१ और बड़े शरीरोंवाले योद्धाओंकी तिनभुजाओंसे फेंकेहुये त्रिशूल शक्ति फरसा इन हथियारों को वह वृत्रासुर अपने बड़ेवेग और शब्दोंको करनेवाले भालोंसे भेदन करताभया ५२ और वहवृत्रासुर आकाश और पृथ्वीमेंविचरतेहुये और गर्जतेहुये ऐसे देवताओं के शरीरोंको छेदन करताभया ५३ और वृत्रासुरकी भुजाओं से छोड़ेहुये बाणोंसे छेदन कियेहुये बहुतसे यक्ष और राक्षसोंके शरीर और शिर पृथ्वीपै दीखनेलगे ५४ और गदा परिघ इन्होंसे भेदन कियेहुये देवताओंके शरीरोंसे रुधिरकी महाबर्षा पृथ्वीको सेचन करतीभई ५५ और बड़े भीम पराक्रमवाले वृत्रासुरको संपूर्णप्राणी देवताओंके समूहों से ऐसे आच्छादित देखते भये कि जैसे मेघोंसे सूर्य ५६ और महाबली और सूर्यकीनाईं तपताऐसा वृत्रासुर मर्मवेधी बाणोंसे देवताओंको वेधन करताभया ५७ और देवताओंके बाणोंसे भेदितकिया हुआभी अनेक प्रकारके शब्दोंकोकरताहुआ ऐसा वृत्रासुर से देवता कुछभी भय नहीं देखतेभये ५८ और खड्गशक्ति गदापरिघ प्रास तोमर फरसा त्रिशूल ऐसे हथियारोंकी वे संपूर्ण देवता वृत्रासुर पै बर्षा करनेलगे ५६ और सत्य

पराक्रम वाला और महाबली और तिन बाणोंसे वेधितहुआ ऐसा
वृत्रासुर क्रोधितहो और संपूर्ण देवताओंपै बाणोंकी बर्षा करता
भया६० और बेधन किये हुये महा आयुधों से आच्छादित ऐसे
देवता वृत्रासुरके भयसे पाड़ितहुये और घोरआर्त्त स्वरको करते
भये ६१ और गदाशक्ति त्रिशूल खड्ग फरसा ऐसे हथियारों को
त्याग और वृत्रासुरके त्राससे संपूर्ण देवता उत्तरदिशा में जाते
भये६२ और दीर्घछातीवाला और महाभुजाओंवाला और त्रिशूल
गदाको हाथोंमें धारण करताहुआ ऐसा वृत्रासुर चराचर सहित
संपूर्ण देवताओंको त्रासदेता हुआ६३ और रणमें धीर्यतासे
स्थित होताभया और महाभुजाओं वाला और त्रिशूलको धारण
करता हुआ ऐसाएक अश्विनी कुमार तिसरणमें स्थित हुआ ६४
और दैत्योंका अधिपति और तुल्यतासे रहित ऐसे वृत्रासुर के
सन्मुख दौड़ताभया ६५ और भेदित कियाहुआ हस्ती की तुल्य
वह अश्विनीकुमार धनुषको धारणकर और बछड़ोंके तुल्य तीक्ष्ण
तीन बाणोंसे वृत्रासुरके पार्श्वमें वेधन करताभया६६ औरबड़ेधनुष
वाला और अत्यंत कोपको धारण करताहुआ और महाबली और
गदा युद्धका जानने वाला ६७ ऐसा वृत्रासुर अत्यंत वेधन किया
हुआ गदाको धारण करताभया६८ और पर्वतकी तुल्य भारवाली
और बड़ी दृढ़ और भयानक ऐसी गदाको ग्रहणकर और वेग
से अश्विनीकुमारको ताड़ना देताभया ६९ और प्रकाशमान
और दीर्घ और दृढ़ और रोमहर्षोंको उपजानेवाले ऐसे त्रिशूल
को अश्विनीकुमार धारणकर वृत्रासुरको मारता भया ७० और
गदा युद्धको जाननेवाला वृत्रासुर अपनी गदाके अग्रभाग से
त्रिशूलको भेदनकर और वेगसे अश्विनीकुमारके प्रति ऐसे दौड़-
ताभया कि जैसे सर्पकेप्रति गरुड़ ७१ औरवह वृत्रासुर आकाश
में कूद और पर्वतके शिखरकीतुल्य उपमावाली ऐसी गदाकोघुमा
अश्विनी देवताकी छातीमें मारताभया७२ और गदासेहनन हुआ
अश्विनी देवता त्रिशूलको त्याग और वेगसे इन्द्रके पासजाता

भया ७३ और बड़े पराक्रमी अश्विनी देवताको रणमेंजीत और जयरूप शोभासे सेवितहुआ वृत्रासुर युद्धमें स्थित होताभया ७४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशांतर्गतभविष्यपर्वभाषायां अष्टचत्वारिंशदधिकद्विशतोऽध्यायः ॥ २४८ ॥

दोसौउंचासका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे कि हे जनमेजय और देवताओं में श्रेष्ठ रणाजिनाम देवतातिसी युद्धमें एक चक्र दैत्यकेसंग युद्धकरने लगा १ और वह रणाजि रथके पंथाको रोक और बड़े शब्दोंको करनेवाली ऐसी एकचक्रकी सेनाको बाणोंकी बर्षा से आच्छादित करताभया २ और महाबीर्य वाले और महापट्टिशोंसे युद्ध करने वाले ऐसे महाअसुर त्रिशूल और भुशुंडी इन हथियारोंको रण में देवताओंके सन्मुखफेंकनेलगे ३ और गदा शक्ति इन्हीं से मिली हुई और अकल्याणरूप दैत्योंकी कीहुई ऐसी त्रिशूलोंकी बर्षाहोने लगी ४ और महापर्वतों के शिखरोंकीतुल्य आकारवाले और महा-पराक्रमोंवाले और महारथीरूप ऐसे देवता और असुर परस्पर में सन्मुख होके युद्ध करनेलगे ५ और एकचक्र दैत्यके रथके सैकड़ों घोड़े युक्त होतेभये और ऐसे हिरण्यकशिपुके रथकी तुल्य रथमें स्थितहो युद्ध करनेलगा ६ और घोड़ोंके पैरोंसे और रथके पहियों के शब्दसे और एकचक्रके बाणोंसे सैकड़ों देवता मृत्युको प्राप्त होतेभये ७ और छोटे और चित्र विचित्र और मोटी गांठोंवालेऐसे बाणोंसे वह रणाजि देवता सैकड़ोंहजारहों योद्धाओं को छेदन करताभया ८ और देवताओंके तीक्ष्ण बाणोंसे बध कियेहुये हस्ती घोड़ा और दानव मृत्युको प्राप्त होतेभये ९ और क्षीयमाणदैत्यों को देख और धनुषोंको धारण करते हुये अन्य दैत्य देवताओं को निवृत्त करतेभये १० और प्रहार करतेहुये दैत्य दिशा और विदि-शाओं में स्थितहो और पैने २ बाणों से देवताओं को हनन करते भये ११ और जलते हुये अत्यंततेज वाले और घोररूप ऐसे

मथननाम अस्त्रको रणाजि दैत्योंपै छोड़ताभया १२ और शस्त्र और त्रिशूल ऐसे हजारहों हथियारोंको वह एकचक्र अपने अस्त्रसे छेदन करताभया १३ और संपूर्ण त्रिशूलोंको छेदनकर वह एकचक्रमहासुर और पैने २ दशबाणोंसे तिस रणाजिके बेधन करताभया १४ और वह एकचक्र शस्त्रोंके वेगको हननकर और जलतेहुये और वेगवंत ऐसे अस्त्रोंसे देवताओंके हज़ारहों सेनापतियों को मारता भया १५ और छेदन कियेहुये तिन्होंके शरीर ऐसे रुधिरको छोड़ते भये कि जैसे बर्षाकालमें जलको पर्वतोंके शिखर १६ और इंद्रके बज्रकी तुल्य स्पर्शवाले और वेगवंत और कुटिलता रहित ऐसे दैत्योंसे हनन कियेहुये देवता त्रासकोप्राप्तहोतभये १७और संपूर्ण आभूषणोंसे शब्दायमान और समुद्रके शब्दकीतुल्य शब्दवाले १८ और मदोन्मत्त और श्रेष्ठ पीलवानोंसे युक्तऔर अच्छेकुलोंमेंउत्पन्न वाले और बड़े पराक्रमोंवाले १६ और गजशिक्षामें निपुण और ऐरावत हस्तीकी तुल्य ऐसे हस्तियोंको वह एक चक्र अपने फरसों शरोंसे हनन करताभया कि जैसे हस्तीको हस्ती २० और भयानक रूपवाले और तीन जगहसे मदोंको झिरतेहुये औरमेघके गर्जितकी नाईं शब्द करनेवाले और महापर्वतकी नाईं ऊंचे और हजारहोंमें श्रेष्ठ और सुबर्णके गहनोंवाले और तरुण सूर्यकी तुल्य कांतिवाले २१ ऐसे हस्तियोंको गदायुद्ध करनेवालोंमें श्रेष्ठ और हाथमें गदाको धारण करताहुआ एकचक्र ऐसे दौड़ाता भया कि जैसे मेघोंको बायु २२ और हस्तियोंको हनन करने वाला एकचक्र गदासे संपूर्ण हस्तियोंको हननकर और फिर घोड़ाओंके समूहको देखता भया २३ और सूआके समान बर्णवाले औरऋच्छ और मोर इन्होंकी तुल्य बर्णोंवाले और कबूतर और हंस इन्होंके समबर्णोंवाले २४और मल्लिकाकी तुल्यनेत्रोंवाले और क्रौंचकीतुल्य बर्णोंवाले और मनकी तुल्य वेगवाले ऐसे घोड़ाओंकी सेनाको वह महाबाहु एकचक्र अपनी गदासे भेदन करताभया २५ और अचिंत्य पराक्रम वाला और श्रीमान् ऐसा रणाजि तिस रणमें एक

चक्रके कर्मको देख २६ और रणसे उपरामको प्राप्त होताभया और गदायुद्धमें कुशल और रथोंके समूहोंकापति २७ और महाबाहु ऐसा रणाजि इंद्रके समीप जाताभया और वह एकचक्रतीस हजार योधाओंको मार २८ और रणमें ऐसे स्थित होताभया कि जैसे धूमा रहित अग्नि और तिसो संग्राममें महाबाहु बलनाम दैत्य २९ मृगव्याध रुद्रकेसंग युद्ध करनेलगा और होमीहुई अग्निके तुल्य तेजवाले ऐसे मृगव्याध के पार्षद ३० मतवाले हस्ति और रथघोड़ा इन्होंपै सवारहो और बलकोदेख सन्मुख दौड़तेभये ३१और पैनेअस्त्र और तीक्ष्णभाला इन्होंसे युक्तहुये३२ प्रकाशमान और सूर्यकी नाईं उदय होताहुआ और सूर्यके किरणोंकी तुल्यमाओंवाला और महावेगवंत और महाबली ३३ और महामति वाला और बड़े उत्साहवाला और बड़ा शरीरवाला और बड़ा रथ वाला और महायोद्धा और संपूर्ण दिशाओंमें स्थित ऐसा बलदैत्यको देख ३४ और एक वेर चौगिर्दसे संप्रहार करने लगे और पीतरंगवाले और तीक्ष्ण मुखोंवाले ३५ ऐसे बाणोंको वह मृगव्याध बलके महा पर्वत सरीखे शिरमें मारताभया ३६ और शिरमें अर्पित कियेहुये बाणोंसे बेधितहुआ ३७ बलदैत्यदशों दिशाओं को शब्दायमान करताहुआ और आकाशमें उछलता भया ३८ और धनुषको चढ़ाताहुआ और महाबली और रथमें स्थित ऐसा मृगव्याध खुशी होताहुआ और आकाशमें बलके पीछे दौड़ताभया और तिस बलको आकाशमें बाणोंकी बर्षासे ऐसे आच्छादन करताभया ३९ कि जैसे ग्रीष्मकालके अंतमें पर्वतको मेघ और मृगव्याधसेपीड़ित कियाहुआ वह बलदैत्य आकाशमें मेघकी तुल्य बड़ा घोरशब्द करताभया ४० और बलदैत्य आकाशमें ऊंचे चढ़ और मृगव्याधके रथपै ऐसे पड़ताभया कि जैसे पांखोंवाला पर्वत ४१ और टूटाहुआ रथका परित्यागकर वह मृगव्याध भूमि में स्थित होताभया ४२ और हाथोंमें मुद्गरोंको धारण करतेहुये और क्रोधयुक्त लाल २ नेत्रोंवाले ऐसे रुद्रके पार्षद रथसे रहित

रुद्रको देख और आकाशमें जातेभये ४३ और वह बल जल्द उठ और आकाशमें युद्ध करनेलगा और तिन के मुद्गरोंसे ऐसे मर्दित होता भया ४४ कि जैसे फरसाओं से वृक्ष और गरुड़ की सम पराक्रमवाला वह बल दैत्य तिन गणोंके वेगसे हननहुआ फिर भूमिमें गिरताभया ४५ और वह बल शाखाओंसे युक्त तालवृक्ष को उखाड़ और संपूर्ण रुद्रके गणोंको हनन करताभया ४६ और तिन गणोंसे छेदन कियाहुआ और रुधिरके समूहोंसे युक्तहुआ ऐसे शोभाको प्राप्त होताभया कि जैसे उदय होताहुआ बाल सूर्य ४७ और मृग सर्पवृक्ष इन्हों सहित पर्वतके शिखरको उपाड़ और वह बलसेपूर्णरुद्रकेपार्षदोंको हननकरताभया ४८ और घोड़ोंसेघोड़ाओं को और हस्तियोंसे हस्तियोंको औरयोधाओंसे योधाओंको ४६ और रथोंसे रथोंको वह बल ऐसे रुद्रकी शेष सेनाको ऐसे हनन करता भया कि जैसे प्रलयकालमें प्रजाकोकालप्रभु ५० और हननकिये हुये घोड़ा हस्ती रथों सहित देवदानव इन्होंसे संपूर्ण पृथ्वी भया-नक मार्गवाली होतीभई ५१ और इसप्रकारसे बलदैत्य और मृग व्याध रुद्र ये दोनोंवली रणमें ऐसे युद्ध करतेभये कि जैसे मतवाले हस्ती ५२ और तीनोंलोकों में विख्यात और क्रोधकी मूर्त्ति और एक पैरवाला ऐसा दूसरा अजनाम रुद्र तिसी रणमें राहुके संगयुद्ध करनेलगा ५३ और जयकी इच्छा करतेहुये तिन दोनों शूरबीरोंका बड़ातुमुल और रोमहर्षोंको उपजानेवाला और भयानक औररौद्र ऐसा युद्ध होताभया ५४ और देवता और दानवोंके शरीरोंसे बड़ी दुस्तर और केशरूपी दूबोंको बहानेवाली और शरीरोंके समूहोंको बहातीहुई और ऐसी रुधिरकी नदी बहनेलगी ५५ और भयानक आकृतिवाला और समर्थ ऐसा क्रोधहुआ रुद्र शत्रुओंकी सेनाको विदारण करनेवाला और सौ मुखोंवाला ऐसाराहुको युद्धमें हनन करताभया ५६ और दैत्योंके बाणोंसे क्रोधहुआ वह श्रीमान् रुद्र राहुका घोड़ा और सारथी इन्हों सहित सुवर्ण जड़ित रथको भेदन करताभया ५७ और महाबली एक रुद्रका पार्षद खुशी होताहुआ

रणमें अपनी शक्तिसे राहुको छातीमें बेधन करता भया और दानवोंमें श्रेष्ठ और क्रोधसे मूच्छित ऐसा राहु आताहुआ रुद्रका रथ कोतल हथियारसे भेदन करताभया ५८ और बड़ा पराक्रमवाला राहु पैंने २ बाणोंसे रुद्र और रुद्रके पार्षदोंको बेगसे भेदन करता भया ५६ और शरोंकी बर्षाकरताहुआ ऐसा घोरदर्शनवाला राहुको मोटी गांठोंवाले बाणोंसे अजनाम रुद्रगणने भेदन करताभया ६० और रोम हर्षोंको उपजानेवाला और रौद्र ऐसा वर्त्तमान युद्ध में रुधिरके समूहोंको बहनेवाली ऐसी बहुतसीमहानदी बेगसे बहने लगीं ६१ और नीला पर्वतकी तुल्य उपमावाला राहुदानव पैंने २ बाणोंसे रुद्रको ऐसे बेधन करता भया कि जैसे किरणोंसे मेरु पर्वतको सूर्य ६२ और त्रिशूल शक्ति फरसा इन्होंसे हननहुये और पृथ्वीमें गिरेहुये और इच्छापूर्वक विचरनेवाले ६३ ऐसे दानवोंमें मुख्य दानवोंसे कियाहुआ और रोम हर्षोंको उपजानेवाला और महाघोर ऐसा वर्त्तमान युद्धमें महामेरु और मृदंग और पणव ६४ और शंख और पटह इन्होंका महाशब्द होताभया और शब्दको करतेहुये ऐसे मरेहुये दैत्य ६५ और देवता तिन्हों का तिस रणमें दारुण शब्द सुनता भया और घोड़ाओंका सुम और रथकीपुठी ६६ इन्होंसे उठीहुई पृथ्वीकी रजसंपूर्ण योधाओंका मार्ग और नेत्रोंको रोकती भई और शस्त्ररूपी पुष्पोंको देनेवाली ६७ और दुःख पूर्वक दर्शनवाली और दुःखसे प्राप्त होनेको योग्य और मांस रुधिर इन्होंके कीचवाली वह रणभूमि ऐसी होतीभई और भाला खड्ग गदा शक्ति तोमर पट्टिश ६८ इन हथियारोंसे हनन हुये संग्रामके करने वाले सैकड़ोंरथ और मतवाले हस्ती और देवता और दानव ६६ ऐसे मांसके भोजन करने वालोंसे व्याप्त और महाघोर ऐसा युद्ध होताभया ७० और जयकीइच्छा करतेहुये और परस्परमें बद्धबैरो वालेऐसे शूरवीरोंके संपूर्ण दिशाओं में शिरोंसे रहित धड़ उछलने लगे ७१ और युद्धसे नहीं उलटे हटनेवाले और सम्यक प्रकार से युद्ध करनेवाले ऐसे शूरवीरोंका बड़ा भयंकर प्रहार होनेलगा ७२

और एकपैरवालाअज और राहुऔर युद्धमें प्राप्तहोतीहुई संपूर्णसेना इन्होंका ऐसे शब्द होताभया ७३ कि जैसे प्रलयकालमें मर्यादा को छोडतेहुए समुद्रों का होताहै और गदा पट्टिश त्रिशूल इन्होंको धारणकरत हुआ और महाबली और बड़ाभीम ऐसा धूम्राक्ष नाम रुद्र७४तिसी युद्धमें केशीको भेदन करताभया और अनेक प्रकारसे प्रहारकरनेवालेऔर भयानकनेत्रोंवाले औरभयानकदर्शनोंवाले७५ और रुद्रकेप्यारे ऐसे पार्षद केशीके सन्मुख दौड़तेभये और शोभाय मान और तपाहुआ सुवर्णके कुंडलोंवाला ७६ और दानवोंसे युक्त और दुर्जय ऐसा केशीरथमेंस्थितहो और रुद्रसे युद्धकरनेलगा और संग्राममेंचतुर औरउग्रपराक्रमवाला ऐसा युद्धकरताहुआ ७७ केशीके मुखसे विस्तार करतीहुई अग्निकी ज्वाला निकलती भई और सिंहकी तुल्य ऊंचा कांधोंवाला और शार्दूलकी सम पराक्रम वाला ७८ और महामेघकीतुल्य कांतिवाला और मृदंगकेतुल्यशब्द वाला और दानवोंसे युक्त ७९ऐसा युद्धकेसन्मुख पडताहुआ केशी दैत्यका स्वर्गको क्षोभकराताहुआ महान् शब्दहोताभया और तिस शब्दसे डरतीहुई देवताओंकासेना ८० पहाड़ औरपर्वतोंको फोडती तोडती फिर आपसमें युद्ध करनेको प्रवर्त होतीभई ८१ ऐसे तिस सेनाके पड़नेका तुमुल शब्दहोताभया और लोकोंको भयका देने वाला होताभया और तिन्होंका युद्धमहाघोर और रोमोंको हर्षकराने वाला होताभया ८२ और तिसमहान् युद्धमें देवता और दानवों केसमूहके प्राणोंका नाशहोता भया और वेसब अतिबलवाले और शूरवीर और पर्वतके समान कांतिवाले८३ और सब अस्त्रविद्याओं मेंनिपुण और सबशस्त्रों को उठाये हुये ऐसेदेवता और दानव आ- पसमें मारनेकी इच्छा करनेवाले प्राप्तहोते भये ८४ और तिन्होंके गर्जनेका शब्दमेघके गर्जनेके समान सुनताभया और महा घोर और जंगम और स्थावर जगत् को कंपाने वाला होताभया ८५ और रक्तकांतिवाली भयंकरधूली उत्पन्न होतीभई और तिन्हदेवते और दैत्योंके समूहोंसे दशोंदिशा रुकतीभई ८६ और तिसधूलीसे

संयुतहुये आपसमें नहींदेखतेभये८७और नध्वजान पताकानवर्मन आयुध न घोड़ा न रथ न सारथी देखतेभये ८८ केवल आपस में दौड़तेहुयेोंका शब्दसुनाता भया और रूपनहीं प्रकाशित हुआ ८९ और आपसमें दैत्यही दैत्योंको मारतेभये और देवतेही देवतों को काटतेभये ९० ऐसे देवते और दैत्यरुधिरसे गीली पृथ्वी को करते भये ९१ पीछे लोहूके समूह से भीजीहुई धूलीकोमल होगई ९२ पीछेशूल शक्ति गदा तलवार परिघ प्राश तोमर इन्हों करके देवते और दैत्य आपसमें काटनेलगे ९३ और परिघोंके आकार बाहुवों करके रुद्रके पार्षद दैत्योंको पीड़ित करनेलगे ९४ और दानव भी बड़े२वृक्ष पत्थर शर इन्हों करके रुद्रके पार्षदों को काटनेलगे ९५ इसी अंतरमें क्रुद्ध हुआ केशीदैत्य दिव्यरूप वज्रास्त्र करके रुद्र के पार्षदों को काटनेलगा ९६ तबपीड़ित और भ्रांत हुये रुद्रके पार्षद पृथ्वीमें पड़तेभये९७जैसे वज्रसे हतहुये पर्वत ऐसे घोर युद्धकेशीका और रुद्रका अद्भुत हुआहै ९८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांवामनप्रादुर्भावेदेवासुरयुद्धेऊनपंचाशदधिकद्विशततोऽध्यायः २४९ ॥

दोसौपचासका अध्याय ॥

वैशंपायन कहते हैं हे जनमेजय वृषपर्वा दैत्योंका राजा लाल सूर्यके समान कांतिवाले और अद्भुत पराक्रमवाले ऐसे निष्कंभुसे युद्ध करताभया १ पीछे क्रोधसे मूर्च्छित मुखवाला वृषपर्वा अपने धनुषको कंपाताहुआ शत्रु की सेनाको देख सारथी के अर्थ बेग से कहनेलगा २ कि हे सारथे इस मेरे रथको यहीं तुम प्राप्तकरो ये सब देवते मेरीसेना को नाशतेहैं ३ इसवास्ते युद्धमें श्लाघा वाले इन देवताओंको मैं मारनेकी इच्छाकरताहूं और इन्हीं देवताओंने शत्रुओंकी सेनामें बड़ा छिद्र करदियाहै ४ तब अति बेगवाले रथमें स्थितहुआ वह दैत्य बाणोंसे शत्रुओंको मारनेलगा ५ तब देवते सन्मुख ठहरतेभी नहीं भये अर्थात् वृषपर्वाके बाणोंसे हतहुये देवते

भागनेलगे ६ तब मृत्युके बसमें प्राप्तहुये तिन देवताओंको देख के महाबलवाला निष्कंभु युद्ध करनेको तय्यारहुआ ७ और तिस निष्कंभुको देखकेबहुतसे देवतेइकट्ठे हो निष्कंभु के चारोंतर्फ सहायता करनेलगे ८ और निष्कंभु के अस्त्रके बलके तेजसे सब देवते बल वाले होनेलगे ९ तब पर्वतके समान स्थितहुये निस्कंभुकेअर्थ वृषपर्वा बाणोंको वर्षाकरनेलगा १० तब शरीर में लगतेहुये बाणों का नहीं ख्यालकर सेनाके मुखमें स्थितहुआ निष्कंभु ११ हंसके पृथ्वीको कंपावताहुआ बेगसे वृषपर्वाकी तरफ दौड़नेलगा १२ तबभागतेहुये निष्कंभुकारूप प्रकाशमान अग्नि की तरह प्रकाश हुआ १३ और रथको त्याग क्रोधको प्राप्तहो बड़ी शाखावाला और बहुत ऊंचे वृक्षको उखाड़के वृषपर्वाकी तरफ फेंकताभया १४ तब तिस वृक्षको एक हाथसे ग्रहणकर १५ और बहुतसा शब्दसे भ्रमाके वृषपर्वा हाथी पीलवान रथ और रथ में बैठनेवाले १६ ऐसे देवताओंको मारताभया तब प्राणोंके हरनेवाले धर्मराजके समान १७ वृषपर्वाको प्राप्तहो सब देवते भागनेलगे और देवतों को भयदेनेवाला १८ वृषपर्वाको आवतेहुये देखके निष्कंभु शब्द करनेलगा और क्रोधको प्राप्तहोताभया और मर्मको भेदन करने वाला और पैने ऐसे तीस बाणोंसे वृषपर्वाको भेदताभया १९ और दैत्योंके बाण और बरछी आदिसे पीड़ितहुआ निष्कंभु युद्धमें स्थित शरीरसे बहुतसा रुधिर को झिराताभया २० और उद्विग्न और छूटगयेहैं बालजिन्होंके और गर्वसेरहित और पराजित २१ और स्वासको लेतेहुये ऐसे देवतेवृषपर्वा दैत्यकेभयसे भागतेभये और वृषपर्वासे दुःखितकिये देवते आपस में बिलोडन करने लगे २२ और दुःखसे मूढ़हुये पीछे को वारम्वार देखनेलगे ऐसे युद्धमें वृषपर्वाने सबदेवतोंके शस्त्रगिरादिये २३ और तिसीकालमें लाल नेत्रों वाला और महा बीर्यवाला २४ और हिरण्य कशिपु कापुत्र ऐसाप्रह्लाद युद्धकरनेलगा और तब प्रह्लादकेहाथसे २५ शुक्राचार्य जयको देनेवालेकर्म करानेलगे और अग्नि में हवन करनेसे

और ब्राह्मणों को नमस्कार करनेसे २६ उसवक्त आज्यके गंधको बहनेवाला सुंदरपवन चलनेलगा और जपके अर्थ अभिमंत्रितकर २७ अनेक प्रकारकी मालाओंको आप शुक्राचार्य प्रहलादकेशिरपै बांधताभया २८ और अतिवीर्यवाले प्रहलादके युद्धकरनेकेसमय में शुक्राचार्य शांतिकर्म करानेलगे अर्थात् शुक्राचार्य के दसहजार शिष्य दैत्योंकी जयके अर्थ शांतिकर्म में जाप करनेलगे २९ और दिव्य और ब्रह्माकीस्तुतिसे प्रेरित और विजयका देनेवाला ऐसा वेदकी रीतिसे कर्म करवाया ३० पीछे सब अस्त्रोंको जानने वाले और युद्धसेनहीं भागनेवाले ३१ और विद्याव्रतसेयुक्त और कल्याण रूप कर्मों से युक्त और धनुषों को हाथों में धारण करने वाले औरकवचोंको पहनेहुये ऐसे सब दैत्य ३२ बलि राजाकी पूजाकर प्रहलादके चारोंतर्फ स्थितहुये तबदिव्य और शत्रुकेरथकोभयदेने वाला और नानाप्रकारके शस्त्रोंसे आकीर्ण ऐसेरथ में स्थित हुआ ३३ तव अनेक प्रकारकी सेना प्रकाश होनेलगी तवकमलकेफूलों की मालावोंसे विभूषित ३४ दैत्य युद्ध करनेके अर्थ अपने अपने भ्राताओं से मिलके तैय्यार होतेभये और बड़े बड़े शस्त्रोंकोधारण करनेवाला और सुंदर कवचको धारण करनेवाला ३५ और धनुष को हाथमें लिये और सिंह शार्दूल के समान गर्वितहुई बहुतसी सेनासे संयुक्त ३६ और सत्तररथ और सत्तरहाथी इन्होंके मध्यमें स्थित और धनुषको कंपाताहुआ ऐसा काल नेमीदैत्य शब्दकरने लगा ३७ और हंसताभया और हजारहों प्रकारकेबाणोंको छोड़ने लगा और शरीरको बढ़ाके पक्षोंके द्वारा बिस्तार करनेलगा ३८ ऐसे सबदेवताओंसे भेदनकरनेकोयोग्य ऐसादानव व्यूहहोताभया ३९ पीछे धनुष को धारण करनेवाले दैत्य लक्षोंथे और नानाप्रकारके शस्त्रोंवालोंका कछुपरिमाण नहीं और गदा परिघ निस्त्रिंश शूलपट्टिशमुद्गर ४० इन्होंकरके दैत्य शोभितहोनेलगे जैसे पर्वत पीछे शब्दकरतेहुये और पुकारतेहुये ४१ और महाबीर्यवालेऔर युद्धसेनहीं भागनेवालेऐसे दैत्य युद्धकरनेलगे तब हजारहों प्रकार

के बाजेबजनेलगे ४२ और अतिबेगवाले घोड़े और हाथियोंकेगर्जने से और नक्कारों के बाजनेसे आकाशके गर्जनेके समानशब्दहोनेलगा ४३ और शंख नक्कारे भेरी इनआदिके शब्दोंकरके रथोंकेशब्द से आकाश शब्दित होनेलगा ४४ ऐसे सागरके समान सेनासे परिवृत ४५ और कालरूपी धर्मराजकी उपमाकेसमान प्रह्लाद युद्धकरनेलगा तब प्रह्लाद के घोर शब्दकरके ४६ सब प्राणी हाहाकार करनेलगे और आकाशसे उल्का पड़नेलगी और कठिन बायुचलनेलगा ४७ और अग्निको प्रकटकरतीहुई शिवाभीप्रकाशित होनेलगी तब महाबीर्यवाला प्रह्लाद हंस करके ४८ तिस कालके योग्य उत्तमबचन को कहनेलगा कि अबमें अपनी बाहूके बलको दिखाऊंगा ४९ और हेदैत्यो मेरेबाणोंसे मरेहुये देवताओं को तुमदेखोगे और अब शत्रुओंके मांस को दैत्यखावेंगे और इस युद्धमें जो उठीहुई धूलीहै ५० इसको शत्रुओंके लोहूके छिड़कने से शांतकरूंगा और अंधेराके समूह से हतहुआ है सूर्य जिसमें और सेनाकी धूलिसे लोहितहुआ ऐसे आकाश में पटबीजना के समान मेरे बाण पातन करेंगे ५१ और हे दैत्यो अब तुम सब प्रसन्न होके देवताओं से भयको त्यागो और अब मैं कालरूपी इन्द्रको अपने धनुषसे मारूंगा५२और बलवालोंमें श्रेष्ठबलिराजा को प्रसन्नकरूंगा ५३ और उग्रबाणोंकरके सब देवताओंको युद्धमें जीतूंगा क्योंकि मेरे पाश तूण और सर्पोंके समानबाण अक्षय रूपहैं ५४ और मेरे अगाड़ी युद्धमें जीवने की इच्छावाले ठहरने को कौनसमर्थ है और शत्रुओंके समूह को मारके प्रसन्नता और प्रीति राजाके अर्थ करूंगा ५५ और युद्धमें मरेहुयेका स्वर्गलोक मेंबासहोताहै इसवास्ते युद्धकेसमान उत्तमगतिनहींहैसो सब दैत्य भयकोपछाड़ी कर ५६ सबदैत्य शत्रुओंको मारके नंदनबनमें आनंदकरो ऐसे प्रह्लाददैत्य अपनी सेनाको कहके ५७ बेगसे कालकी सेनाको मर्दित करताभया और सबअस्त्रोंको जाननेवाला और शूर और अपराजित ५८ और युद्धमें सन्मुखरहनेवाला और अपनीबाहू

केवलसे गर्वित ऐसा प्रहलाद युद्धमें सन्मुख खड़ाहुआ और नाना-
प्रकार के शस्त्रों को धारण करनेवाले दैत्योंके साठि हजार रथ
स्थितहुये ५६ और बहुतसे प्रहलादके पुत्र स्थितहुये और नाना-
प्रकारकी यज्ञोंके करनेसे ६० क्षमावाले और धर्म करनेवाले और
नित्यप्रति व्रतोंमें परायण और दाताऔर प्रियबचनको कहनेवाले
और शास्त्रों को जाननेवाले ६१ और अपनी स्त्रियोंमें रत और
इन्द्रिओंको जीतनेवाले और ब्राह्मण और सत्य बोलनेवाले और
नित्यप्रति यज्ञकरनेवाले और नित्यप्रति अध्ययन करनेवाले ६२
और बाण और अस्त्र बिद्यामें चतुर और बहुत से पराक्रम वाले
और मदवाले हाथीके समान चलनेवाले और शत्रुकीसेनाको मर्दन
करनेवाले ६३ और युद्धकरनेकी इच्छावाले और क्रोधसे रंजित
नेत्रोंवाले ६४ और अपने २ ओष्ठके पुतोंको दशनेवाले और अप-
ने २ भुजाओंको बजाके आपस में प्रसन्न करनेवाले ऐसे दैत्य
शंख आदि अनेक प्रकारके शब्दोंकरके कूद कूद युद्ध में प्राप्त
होनेलगे ६५ और कितनेक दैत्य ताड़वृक्षके समान लंबे लंबे धनु-
षोंको खैंचनेलगे ६६ और कितनेक बाणोंको हाथमें लेनेलगे ६७
और तपायेहुये सोनाके गहनोंको धारणकिये और सफेद बस्त्रोंको
धारणकिये ६८ और अभिमानी और स्वर्गकी इच्छा करनेवाले
और जयकीइच्छा करनेवाले और शत्रुओंके मारनेमें पुरुषार्थ करने
वाले ६९ ऐसे दैत्य देवते और दैत्यों से नहीं जीतनेके योग्य ऐसे
कालसे युद्धकरनेलगे तब पताका ध्वजा माला इन्होंसे संयुक्त और
हाथी घोड़ा रथ इन्होंसे संयुक्त और स्वर्गके मार्ग की इच्छा करने
वाली७० और गर्वित ऐसी दैत्योंकी सेना शोभायमानहुई तब भीम
पराक्रमवाला और बहुत शब्द करताहुआ और बड़े शरीरवाला
और बहुतसी व्याधियों से परिवृत ७१ ऐसा कालप्रभु बलवाले
और आनंदवाले और सन्मुख गर्जनेवाले दैत्योंकी सेनाको देख-
ताभया ७२ और तिस दैत्यकी सेनाको आवतीहुई देख व्याधियों
करके सहित काल प्रतिलोम प्रकारसे घेरताभया ७३ अर्थात्

दैत्योंकी सेनामें प्रवेशकर लोहूके समान लालनेत्रोंवाला और अपनी सेनासे परिवृत ७४ ऐसा काल दैत्योंकी सेनाका नाशकर पीछे प्रह्लाद दैत्यको दंड मुद्गर पट्टिश ७५ इन्होंकरके मारनेलगा और शरशक्ति ऋष्टि तलवार शूल मूशल गदा परिघ फरसा धनुष शतघ्नी इन्होंकरके सब व्याधियें दैत्योंकी सेनाको मारनेलगे ७६ और बहुतसी व्याधी युद्धमें दैत्योंको मारतीभई और बहुतसे दैत्यभी बहुतसी व्याधियोंको मारनेलगे ७७ अर्थात् कितनीक शूलसे और और कितनीक फरसासे और कितनीक परिघसे ७८ और कितनीक तलवारसे ऐसे कटीहुई व्याधी दैत्योंके हाथसे होतीभई ७९ और कितनेक तलवारोंसे और कितनेक भालोंसे और कितनेक मुद्गरोंसे ८० और कितनेक पट्टिशोंसे और कटेहुये दैत्यभी व्याधियोंने करदिये ८१ और कितनेक शस्त्रोंसे कटेहुये और कितनेक मुक्कों से मथितहुये और कितनेकदांत और नेत्रोंसे रहितहुये ऐसे दैत्यलोहूको मुखसे बहातेभये ८२ तब कितनेक आर्त्त शब्दको करतेहुये और कितनेक सिंहकेसमान गर्जतेहुये तिन्होंका युद्धमें उग्रशब्द होनेलगा ८३ और कितनेक मुक्कोंकीमारसेपृथ्वीतलमेंप्राप्तहोतेभये ८४ तब ब्रह्मरूपी झागोंवाली और ध्वजावोंसे आवृत और कटेहुयेबाहुरूप सर्पोंवाली और शूलशक्ति इन रूपमच्छोंवाली और धनुषरूप ग्राहोंसे संयुक्त ८५ और रथरूपी पत्थरोंसे संयुक्त और ध्वजारूप वृक्षोंसे संयुक्त और घोरशब्दोंकरके बिस्तारवाली ऐसीलोहूकीनदी बहनेलगी ८६ पीछे प्रह्लाद और काल दोनों धनुषोंको धारणकर बाणोंकी वर्षा करनेलगे ८७ और आपसमें सेनाओंको बज्रके समान बाणोंसे काटनेलगे ८८ तब दोनोंके युद्धमें योद्धाओंकेभी यह निश्चयहुआ कि अब जीवना मुशकिलहै ८९ तबकितनेक बाणोंसे कटेहुये अंगोंवाले और कितनेक प्राणोंसे रहित और कितनेक लोहूसे भीगीहुई छातीवाले ऐसे योद्धा पृथ्वीमें पड़नेलगे ९० और शीघ्रपनेसे दोनों महाबलवाले मंडलीकृत धनुषोंको धारणकर एकसेही दीखतेभये ९१ पीछेप्रह्लादकेबाणोंके समूहसे तिसकालरूप

धर्मराजकी सेना कटतीहुई भागनेलगी ६२ जैसे बायुसे बद्दलोंके मंडल तब गर्वसेरहित और युद्धसे भागनेवाला और अपने बशमें स्थित ६३ ऐसे धर्मराजको जानके युद्धमें दुर्मदप्रह्लाद धर्मराजकी सेनाको फिर मर्दन करनेलगा ६४ तबकाल और प्रह्लादका आपसमें ऐसा युद्ध होनेलगा कितनेकभी पहलेहुआ और नकभी अगाड़ी होगा ६५ ऐसे अद्भुत वीर्यवाला प्रह्लादवृद्धीको प्राप्तहुआ और धर्मराजयुद्धसे भागताभया ६६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबामनेदेवासुरयुद्धे पंचाशदधिक द्विशतोऽध्याय:२५० ॥

दोसौइक्यावन का अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे प्रह्लादका छोटाभ्राता अनुह्लाद अपनी सेनाकोले यक्षोंकीसेनाको क्षोभित करताहुआ कुवेरकेसंग युद्धकरनेलगा १ अर्थात् बहुतसी सेनाकोले अति प्रतापवाला अनुह्लाद कुवेरको पीड़ित करनेलगा २ और शस्त्रोंको धारणकरनेवाले और युद्धमें स्थित ऐसे देवताओंको नहीं सहताहुआ अनुह्लाद दैत्य धनुषको हाथमेंलेके देवताओंकी सेनाको काटनेलगा ३ तबदेवतेऔर दैत्यों के शरीरों करके पृथ्वीव्याप्तहुई जैसे पर्वतोंसे ४ और मेरुपर्वतका पृष्ठभाग लोहूसे रंगाहुआ प्रकाशित होनेलगा जैसे केसूकेफलोंसे चारोंतर्फ वैशाखका महीना ५ और तब मरेहुये हाथी और घोड़ोंकरके व्याप्त ६ विष्टा और मेदरूप कीचड़वाली और कंक सारस आदि पक्षियों से शब्दित ७ और बशारूप झागों से आकीर्ण और बद्दलोंके समान शब्द करनेवाली ८ और कुत्सित पुरुषोंसेसंयुक्त ऐसी लोहूकी नदी बहतीभई ९ तिस नदीको दैत्य और देवते तिरतेभये जैसे कमलिनीको हाथी १० पीछे बाणोंको छोड़नेवाला और रथमें स्थित और यक्षोंकी सेनाको मारनेवाला ऐसे अनुहलादको देखके ११ क्रोधको प्राप्तहुआ कुबेर दैत्योंकी सेनाको काटनेलगा जैसे बायुबद्दलोंको १२ तबतिस उग्रयुद्धको देख

के अनुहलाददैत्य आदित्य बर्णवाले रथमें स्थितहो कुबेरके सन्मुख
चला १३ और धनुष विद्यावालों में श्रेष्ठ अनुहलाद युद्ध में धनुष
खैंचके पैने २ बाणों की बर्षा कुबेरके अर्थ करने लगा १४ तब वे
बाण कुबेरकोबेधके पृष्ठ भागमें स्थितहुये यक्ष राक्षसोंको भी मारते
भये १५ तब अग्निके समानप्रकाशवाले और पैने ऐसे बाणोंसेहत
हुआ कुबेर युद्ध में क्रोध को प्राप्तहो अनुहलाद दैत्य के सन्मुख
भागा १६ तब बहुत सी यक्षोंकी सेनासे परिवृत्त और अति बीर्य
वाला ऐसा कुबेर बाणोंकी बर्षा करनेलगा १७पीछे जैसे शरदऋतु
की बर्षाकी बूंदोंको गाय और बैल शिरपै सहतेहैं तैसे १८ वह
अनुहलाद दैत्य बाणोंकी बर्षाको सहताभया१९तब बाणोंकी बर्षा
से क्रोधको प्राप्तहुआ अनुहलाद दैत्य अपने सन्मुख इन्द्रकी केतुके
समान प्रकाशवाला २० और बढ़ीहुई शाखाओंवाला और फलों
से संयुक्त ऐसे वृक्षको देखके उसीवक्त उखाड़ हाथमें ग्रहणकर
कुबेरके अति बेगवाले घोड़ोंको मारताभया तब अनुहलादके इस
महत्कर्मको देखके २१ सबदैत्य सिंहोंके समान शब्द करनेलगे
पीछे अनुहलादका और कुबेरका युद्ध आपसमें होनेलगा २२ तब
क्रोधकरके लालानेत्रोंवाले और आपसमें दूसरेकोमारनेकी इच्छा
वाले ऐसे दोनों नाना प्रकारके घोर शस्त्रों करके युद्धमें आपसमें
काटनेलगे २३ और बलवाले देवताओंने बहुतसे दैत्यमारदिये और
क्रोधको प्राप्तहुये दैत्योंने बहुतसे देवते पृथ्वी तलमें गेरदिये २४
पीछे क्रोधको प्राप्त हुये दैत्यअग्निकेसमान प्रकाशवाले और कंक
पक्षीकी पांखोंसे संयुक्त २५ और टेढ़ेनहीं चलनेवाले ऐसे पैने बाणों
करके देवतोंको बींधनेलगे तब दैत्योंके समूहसे कटतेहुये देवतेफिर
भयसे रहितहो कर्म करनेलगे २६ अर्थात् गदापट्टिश शूल मुग्दर
परिघ बाण इन्होंकरके दैत्योंको पीड़ा देनेलगे २७ तब बाण और
तलवार आदि शस्त्रोंसे पीड़ितहुये दैत्य पत्थर और वृक्षोंको ग्रहण
कर २८ बारम्बार बीर्य से लाखों देवताओं को मथतेभये २९ तब
बड़े२ पत्थर और बड़े २ वृक्षोंकरके घोर युद्धहोने लगा ३० अर्थात्

परिघ पट्टिश भिंदिपाल फरसा इन्होंकरके कितनोंके शिर काटेगये और कितनों के शरीर काटेगये ३१ और कितनेक मरके लोहूसे भीगेहुये पृथ्वीमें पड़तेभये और कितनेक भाजते भये ३२ और कितनेकोंके हृदय कटतेभये और कितनेक पैरोंके कटजानेसे पृथ्वीमें पड़तेभये ३३ ऐसे देवले और दैत्योंकी दशाहुई तब कुबेर धनुषको धारणकर क्रोधको प्राप्तहो बाणोंकी बर्षा से दैत्योंको दिशाओंमें भगानेलगा ३४ तब कुबेरसे पीड़ित सेनाकोदेख क्रोधसे दुगुनेलाल नेत्रोंवाला ३५ और पिता हिरण्यकशिपु के समान पराक्रमवाला अनुहलाद एक शिलाको ग्रहणकर कुबेरके रथपै फेंकताभया ३६ तब गदाको धारणकरनेवाला कुबेर आवतीहुई शिलाको देख बेग से रथसे कूद पृथ्वी में प्राप्तभया ३७ तब चक्र कूबर ध्वजा घोड़े शरासन इन आदिसे संयुक्त रथको तोड़ वह शिला पृथ्वीमें पड़ी ३८ ऐसेकुबेरकेरथकोतोड़अनुहलाददैत्य वृक्षोंकरकेदेवताओंकी सेनाको मारनेलगा ३९ तब कटेहुये शिरोंवाले और लोहूसेभीजेहुये बहुतसे देवते पृथ्वीमें पड़तेभये ४० ऐसे देवताओंकी सेनाको काटके पर्वत के बड़े शृङ्गको ग्रहणकर कुबेरके सामनेभागा तब आवतेहुये दैत्यको गदाको धारण करनेवालाकुबेर बुलानेलगा ४१ और दैत्य की छातीमें गदाका प्रहारभी करताभया ४२ तब क्रोधसे लाल नेत्रोंवाला अनुहलाददैत्य प्रहारका चिंतमनकर कुबेरके ऊपरउस पर्वत के शृङ्गको गेरताभया ४३ तब पर्वतके शृङ्ग से ताड़ित और विह्वलरूप अंगोंवाला और पीले नेत्रोंवाला ऐसा कुबेरहोके पृथ्वी में पड़ताभया ४४ तब विह्वल रूप कुबेरको देखके सब यक्ष और राक्षस ४५ चारोंतर्फसे रक्षा करतेभये ऐसे दोघड़ीतक बिह्वल रह के ४६ फिर बेगसे उठ त्रिलोकीको शब्दित करताहुआ कुबेर फिर शब्द करनेलगा ४७ तब पर्वतों को कंपानेवाला और अवध्यरूप और फिर उठाहुआ ऐसे कुबेरको जानके ४८ और आवते हुयेको देख सब दैत्य भागतेभये ४९ तब तिन भागते हुये दैत्यों के प्रति अनुहलाद कहनेलगा कि कालनेमि सुनेमि महानेमि इनदैत्योंको

और आपको और अपने वीर्यको और अपने कुलको भूलके भयसे पीड़ित हुये ५० कहां गमन करते हो सब उलटे चलेआवो क्या प्राणोंकी रक्षाकरतेहो ५१ यह कुबेर युद्धके अर्थ समर्थनहींहै और यह हमारी सेना बड़ीभय मानतीहै ५२ परन्तु मैं अपनेपराक्रमसे कुबेरको मारूंगा तुम सब चलेअवो ५३ तब सब दैत्य उलटे फिरके क्रोध-को प्राप्तहो देवताओंकी सेनाको मारनेलगे ५४ और जब युद्धमें शस्त्रटूटगये तब गर्बके प्रतापसे भुजाओं के द्वारा प्रहार करनेलगे और कितनेक धूलीकरके और कितनेक काष्ठोंकरके और कितनेक पत्थरों करके ५५ और कितनेक हाथों करके और कितनेक मुक्कों करके और कितनेक नखोंकरके ५६ और कितनेक महा शाखा वाले वृक्षों करके ऐसे सब दैत्य और देवते युद्ध करनेलगे तब क्रोधकोप्राप्तहुआ अनुह्लाद दैत्य देवताओंकी सेनाको ५७ जलाने लगा जैसे बनोंको अग्नी तब लोहूसे भीजेहुये बहुतसे योद्धाकटेहुये पृथ्वीमें पड़तेभये ५८ और कुबेरभी सर्पोंके समान बाणोंकरके ५९ अनुह्लाद दैत्यको बींधताभया तब अनुह्लाद के मुख से बहुत सी अग्नि निकसनेलगी ६० पीछे अनुह्लाद दैत्य कुबेरको हजारबाणोंसे बींधनेलगा ६१ तबबाणोंसे बींधाहुआ और चारोंतर्फसे लोहूकरके भीजाहुआ ६२ ऐसे कुबेरके शरीरसे बहुतसा लोहू झिरताभया जैसे पर्बतों से पानी ६३ तब फिर संज्ञाको प्राप्तहो कुबेर गदाको ग्रहण कर ६४ अनुह्लाद के मारनेलगा तब अनुह्लादने अपनी गदासे वहगदा मार्गमेंही ६५ तोड़दी तबबड़ा आश्चर्य होताभया फिर दूसरी गदाको ग्रहणकर कुबेरदैत्य के सन्मुख जानेलगा ६६ तब कैलाश पर्बतके समान कांतिवाला किसी पर्बतके शृंगको ग्रहणकर ६७ अनुह्लादभी सन्मुखभागा तबआवतेहुये अनुह्लाद को देखकर कुबेर ६८ युद्धभूमिको त्याग भयसे भागके जहांइन्द्र स्थित था तहां प्राप्तहुआ ६९ और भयसे पीड़ित हुआ और बड़ा आश्चर्य मानताभया ७० ॥

श्रीहरिवंशांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांवामनेदेवासुरयुद्धेएकपंचाशदधिकद्विशतोऽध्यायः२५१॥

दोसौबावनका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे कि दैत्योंका स्वामी विप्रचित्तिदैत्यप्रकाश रूपऔर सर्पोंके समान ऐसेबाणों करके बरुणको बींधनेलगा१तब दैत्यके बाणोंसे दग्ध होताहुआ वरुणयुद्धमें कर्तव्यको नहींजानता भया २ जैसेसर्व लोकके स्वामी विष्णुके अगाड़ी ब्रह्माजी स्थितहोने को समर्थ नहींहै तैसेविप्रचित्ति दैत्यके सन्मुख बरुण स्थितहोनेको समर्थ नहींहुआ ३ और बज्रनाम व्यूहको रचके सबदैत्य देवताओं कीसेनाके संगयुद्ध करनेलगे ४ और अग्नीकी लटाके समान प्रका- शित और सूर्यके मंडलके समान तेजवाला ऐसामुख विप्रचित्तिदैत्य का उस समयमें होताभया ५ तबमहा तेजवाला वरुण बिप्रचित्ति दैत्यको अपने नेत्रोंके तेजसे दग्ध करताहुआ और जीतनेकी इच्छा के अर्थ दैत्यके सन्मुख देखनेलगा ६ और मालाआदियोंसे भूषित और पांचअंगुलके अंतरसेयुक्त और कैलाश पर्वतके शिखरकेसमान उपमावाला ७ और सोनाकी डोरियोंकरकेबंधाहुआ और धर्मराज के दंडके समान और दैत्योंके भयको दूरकरने वाला ८ ऐसेपरिघ शस्त्रको विप्रचित्तिदैत्य ग्रहणकर और भ्रमाने लगा ९ तबकंठ में स्थित धुकधुकी करके और भुजाओंपै स्थित बाजुओं कर के और विचित्ररूप कुंडलों करके और विचित्ररूप मालाकरके १० और तिसलोहेके परिघ करके बिप्रचित्ति शोभित होनेलगा जैसेइन्द्र का धनुष बिजली गर्जना इन्हों करकेमेघ ११ तबबिद्या धरोंके समूह और गंधर्व नगर और अमरावती और सिद्धलोक इन्हों करके सहित १२ और ग्रहनक्षत्र इन्हों से रचाहुआ और सूर्य और चंद्रमा से विभूषित ऐसा आकाश विप्रचित्ति के परिघ के फेंकने से भ्रमने लगा १३ और उसपरिघसे युगांत समयका अग्नीकेसमान अग्नी उठताभया १४ तब बरुण और सबदेवते भय से झिरते हुये तहां ठहरनेको समर्थ नहींहोतेभये तहां अकेला इन्द्रही निर्भयहो स्थित रहा १५ पीछेसूर्यके समान तेजवाले उसपरिघको बिप्रचित्ति दैत्य

बरुणकी सेनापै गेरताभया १६ तब दशहजार सेनातिस परिघसे मरतीभई १७ अर्थात् दशहजार देवतोंके शरीरोंके हजारहां टुकड़े होतेभये १८ फिरउस परिघ को भ्रमाके बरुणके अर्थ छोड़ता भया तबतिस प्रहार करके बरुणके शरीरसे १९ बहुतसी जगहसे लोहू निकसनेसे निकसकर पटबीजनोंकी तरह निकसनेलगा २० पीछे तिस लगनेसेबरुण चलाय मान होनेलगा जैसेभूमि कंपमेंपर्बत२१ पीछेजब बरुणकी सेनाकटगई तबदोघड़ी तक अतिबलवाला बरुण क्रोधको प्राप्तहो २२ शत्रुओंका संहार करनेलगा और चारसमुद्रों से परिवृत्त २३ और बहुतसे प्रकाशमान सर्पोंसे परिवृत्त और शंख मोतिमणिइन्होंकेसमान और जलमयशरीरकोधारण करनेवाला २४ और सफेद वस्त्रोंको धारण करनेवाला और नाना प्रकार के रत्नों से जटित बाजूबंधको धारण करनेवाला और फांसियों को धारण करनेवाला और कछुवे और मच्छियोंसे युक्त २५ ऐसा बरुण क्रोध कोप्राप्तहो और अपनीसेनाको देखकहने लगाकि हेदेवताओ दैत्यों को मारनेकी इच्छा करके युद्धकरो २६ और मैं इसबिप्र चित्ति को मारूंगा इसवास्ते भयको छोड़लड़ो २७ तब समुद्र में बसनेवाले सबसर्प युद्धमें दैत्योंको मारनेलगे और नालीक बाणगदा मूसल २८ इन्होंकरके बरुणकी सेनादैत्योंको काटनेलगी तबक्रोधकोप्राप्त हुआ और महाबल पराक्रमवाला बिप्रचित्ति दैत्य २९ गारुड़अस्त्र करके सर्पोंको मारनेलगा ३० तब बाणों से पीड़ित और कटेहुये शरीरोंवाले ऐसे सर्प पृथ्वीमें पड़नेलगे ३१ जैसे अति बलवाले हाथियोंसे अल्पबलवाले हाथी ३२पीछेदीप्त रूपबाणोंकरके क्रोधको प्राप्तहुआ बरुण युद्धमें बिप्रचित्तिके अर्थभागा तब बरुणके बाणोंसे कटे हुयेहजारहों दैत्य ३३ दशोंदिशामें भागतेभये ऐसे इन्द्रकेअर्थ पराक्रम करनेवाला बरुण युद्धकरता भया ३४ और बरुणकी सेना पत्थरोंसे और मुक्कोंसे बिप्रचित्ति दैत्यके चारोंतर्फ मारनेलगी ३५ तबअनेक प्रकारके शस्त्र और पत्थरोंसे ३६ बिप्रचित्ति दैत्यभीबरुण की सेनाको भगानेलगा और अग्निके समान प्रकाशवाले और जल्द

चलनेवाले ३७ऐसेबाणोंसे महावेगवाले वरुणके घोड़ोंको बिप्रचित्ति दैत्य बाँधताभया ३८ तिसकर्म करके विप्रचित्ति दैत्यका तेजबढ़ता भया ३९ जैसेघृतकी आहुतीसे अग्निका पीछेसूर्यके समान प्रकाश वाले ४० बाणोंसे बिप्रचित्ति दैत्यवरुणकी सबसेनाको मथने लगा तवक्षीण होगयेहैं शस्त्र जिसके और बाणोंसे आक्रांत और बाणोंके जालकरके मोहित ४१ और शूल शक्ति रिष्टि इन्हों से कटीहुई और लोहूसे भीजीहुई ऐसीवरुणकी सेनाहोतीभई ४२ पीछेदैत्य के भयको मान अपनी सेनाकरके संहित वरुण भाग के इन्द्रकीशरणमें जाके स्थित हुआ ४३॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबामनेदेवासुरयुद्धे द्विपंचाशदधि कद्विशतोऽध्यायः २५२॥

दोसौतिरपनका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे ऐसेदेवताओंके पराजय को देखब्रह्मर्षियोंसे स्तुति किया और देवताओंमें उत्तम ऐसाअग्नी दैत्यों के मारनेवास्ते मन करताभया १ अर्थात् स्वयंप्रभा नामवाली शांडिलीका पुत्र और हव्यको बहनेवाला और हिरण्य रूप वीर्य्यवाला और पीले नेत्रों वाला और देव दूत और आहूती को खानेवाला २ और लालरंग वाला और लालग्रीवा वाला और हरता और दाता और हवि और कवि और पावक और बिश्वभुक् और देव इननामोंवाला और सब देवताओंका मुख और सकराजा ३ और लोकसाक्षी और ब्राह्मणके हाथकी आहुतीको प्रियतासेग्रहण करनेवाला और प्रभु ब्रह्मात्मा४ सुवर्चस्त् सहस्रार्चि और बिभावसु कृष्णवर्त्मा चित्रभानु देवाग्रचित्र अर्चिष्मान् वषट्कृत् हव्यभक्ष शमीगर्भ श्वयोनि ५ इन नामोंवाला और सब कर्मोंको करनेवाला और सब भूतोंको पवित्रकरने वाला और देवताओंकी तपकीखान और सबके पापोंको शांतकरने वाला और लेलिहान और तनूनपात् ६ और प्रदक्षिणावर्त शिखसुचि रोमा मखाकृती हव्यभुक् भूतभव्येश हव्य भागहर हरि ७ सोमप

महातेजा भूतेश सर्वभूतपात् और अधृष्य और पावक भर्ती भूतात्मा स्वधाधिप ८ स्वाहापति सामगीत सोमपूताशन अर्चिधृक् देवदेव महाक्रोध रुद्रात्मा ब्रह्मसंस्तुत ९ धूमकेतु धूमशिखसुरोत्तम इननामों वाला ऐसा अग्नी लाल घोड़ोंसे जुताहुआ और बायुके समान पहियोंवाला ऐसे रथमेंनीले वस्त्रोंको पहनकेबैठ १० और दिव्य आग्नेयअस्त्रको ग्रहणकर अग्निदेव दैत्योंके हजारलाख अर्ब ११ इतनीपरिमित सेनाको जलानेलगा और सबप्राणियोंका प्राणरूप होके देहमें पांचप्रकारसे स्थित होनेवाला १२ और अग्नीकासारथी और मित्र और प्रभु और ईश्वरऔर सबलोकोंका प्रभंजनरूपऔर युगांतमें सबोंको नाशनेवाला १३ और जिसकी योनि सात स्वरोंके द्वारा बाणीसे उच्चारित करीजायऐसा और आकाशमें रहनेवाला और दूर गमन करनेवाला और शब्द को उपजानेवाला १४ और कर्त्ता विकर्त्ता और गतिवालोंकी गति और वेदकर्त्ता और ब्रह्माके समान लोकमें सनातन १५ और मूर्तिसे रहित और महाभूत ऐसा बायु अग्नीको सहायता देताभया १६ अर्थात् स्वर्गको प्राप्त होने वाली लटाओंसे दशोंदिशाओंमें जभमाणअग्नीदैत्योंके नाशके अर्थ प्रलयकी अग्नीकेसमान होताभया १७।१८ तबमेद और मज्जारूप कीचड़वाला और केशरूप हरियाई और काईसे संयुक्त और योद्धा-ओंके शिररूपपत्थरोंसे संयुक्तऔर मरेहुयेहाथी रूपतटसेसंयुक्त १९ ऐसी लोहूकी बहतीनदीको देखके दैत्योंको भयदेनेवाला अग्निदेव बलकरनेलगा २० तब प्रह्लादआदि सबदैत्योंको यहअग्नीपराजित अर्थात् सबोंको जीतताभया २१ और कितनेक दैत्यजलतेहुये मुकुटों से संयुक्त और कितनेक दैत्यजलतेहुये केशोंसे संयुक्त और कितनेक दैत्यजलतेहुये संपूर्णअंगों से संयुक्तहोनेलगे और कितनेक दैत्योंके हाथ और मुखजलनेलगे २२ और कितनेक दैत्योंकी जांघजलनेलगी और कितनेक दैत्योंके छत्रध्वजारथ ये जलने लगे ऐसेप्रकाशितहुये अग्नीसे सबदैत्य दग्ध होनेलगे २३ तबभयसे पीड़ितदैत्यसबप्रकार के शस्त्रोंको त्यागके दशों दिशाओंको भागनेलगे २४ और अग्नीसे

हारेहुये और भयभीत दैत्य युद्धमें प्राप्तहोनेलगे तब युद्धमें प्रकाश मान अग्निको नहीं देखतेभये २५ और दिशा आकाश पृथ्वी मेघ इन सबोंको जलतेहुये देखनेलगे तब सबदैत्य कहनेलगे कि निश्चै ब्रह्माजीने यह अग्नी रचाहै २६ तबमय औरशंबर इननामों वाले दो दैत्य २७ पानीको झिरानेवाली पार्जन्य और वारुणी इन नामोंवाली दो मायाओंको रचतेभये तब तिनदोनों मायाओंके प्रतापसे पर्वतके समान पानीकी धारा करके सेच्यमान अग्नी युद्ध में कोमल तेजवाला होनेलगा तबदैत्योंको नाशनेवाला २८ और युद्धमें कोमल तेजवाला ऐसे अग्नीसे बड़ी कीर्तिवाला और अति तेजवाला बृहस्पतिजी कहनेलगा २९ हे हिरण्यरेत हेसुशिख हे ज्वलन हेअक्षय हे सर्वभुक् हेसप्तजिह्व हेअनलहेक्षाम हे लेलि-हान हे महाबल ३० हे विभो तेरावायु आत्माहै और घास तेरा शरीरहै और जलतेरी योनिहै और जलकी तूयोनिहै ३१ और हे महाभाग तेरीलटा ऊपरको व नीचाको व पार्श्वको व चारों तर्फ विचरतीहैं ३२ और हेअग्ने सर्वरूप तूहीहै और तेरे बिषे यह सब जगत्है और प्राणियोंको धारण करनेवाला तूहीहै और इससंसार को भरनेवालाभी तूहीहै ३३ और हव्य बाटभी तूहीहै और परम हबि रूप द्रव्यभी तूहीहै और यज्ञोंमें तेरेहीको सबकालमें संतपूजते हैं ३४ औरतूही प्राणियोंके शरीरोंमें अन्नको खाताहै और जलको पीताहै और तेरेसेही यह बिजय प्रवृत्त हुआहै और तेरेबिषे ये सब लोकप्रतिष्ठितहैं ३५ और इनतीन लोकोंको रचके समय पै पकाने वाला तूहीहै और तपके अर्थ जातवेद नामसे विख्यात भी तूहीहै और तेरे सिवाय अन्यतप्ता कोपभी नहींहै ३६ और तूही शिवरूप है और तूही समुद्रोंका पतिभीतूहीहै और यज्ञोंमें अग्रभागको हरने वालाभीतूहीहैऔर संसारकी बिभूतिभी तूहीहै और तेरेहीसे संसार उपजाहै और तेरेहीमें सम्पूर्ण संसारस्थितहोताहै ३७ और हे अग्ने तू अपनी किरणोंकरके जलको रचे है और ओषधिभी तूही है और ओषधियोंका रसभी तूहीहै और प्रलयकाल में इस संसारको तूही

ग्रहणकरताहै और उत्पत्ति कालमें तूही इस जगत्को रचनेवाला है ३८ और हे अग्ने सब प्राणियोंका योनि तूही वेदमें गायागयाहै सो देवताओंके कल्याणके अर्थ तैंने बहुत से दैत्यों का नाशकिया है ३९ सो तू इस जलसे उपजाहै सो जलको प्राप्तहो क्योंशिथिल होताहै ४० हे देव सत्तम इन देवताओंको दैत्योंके भयसे रक्षाकर और हे युगांताभ अर्थात् प्रलयकी अग्नीके समान हे दैत्योंका नाश करनेवाला और बिश्वकर्म सहस्रभुक् ४१ पिंगाक्ष लोहितग्रीव कृष्ण-वर्त्म हुताशन इननामोंवाला हे अग्ने तूही रक्षाकरनेकेयोग्य है ४२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांदेवासुरयुद्धे अग्निस्तवेत्रिपंचाशदधिकद्विशततमोऽध्यायः २५३॥

दोसौचौवनका अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे ऐसे वृहस्पतीजीके सत्य बचनको सुनके युद्ध में फिर अग्नि प्रज्वलितहुआ जैसे घृतसे यज्ञमें १ तब अग्नीने सब दैत्योंकीमाया नाशितकरी तबमाया और सेनासेरहित बहुतसे दैत्य बलिराजाके पास प्राप्तहुये २ अर्थात् अद्भुत कर्मवाले अग्नीने जब सब दैत्य जीतलिये तब प्रहलाद दैत्योंका राजा राजाबलिसे कहने लगा ३ हे दैत्यसत्तम तूही अग्नी है और तूही बायुहै और तूही सूर्यहै और तूही जलहै और तूही चंद्रमाहै और तूही नक्षत्र रूप है और तूही आकाशरूपहै और तूही दिशारूपहै और तूही पृथ्वी रूप है ४ और तूही भूतहै तूही भविष्यहै और तूही वर्तमानहै ब्रह्माजीने तेरे अर्थ वरदान दियाहै ५ तिससे तू इंद्रपनाको और अमरपना को और युद्धमें जीतको और ऐश्वर्यको और सबको बशमें करनेको और अप्रमित्त बलको तू प्राप्तहुआहै ६ और सब भूतोंका ईश्वरभीतूहीहै और सब कालमें प्रभुभी तूहीहै और महा योगियोंका ईश्वरभीतूही है और युद्धमें शूरवीरभी तूहीहै ७ और सात्विक गुणभी तेरे बीचमें है ऐसा तू इन्द्र और सब देवताओंको जीत ८ क्योंकि ब्रह्माजी ने जैसे कहाहै तैसेहीहोगा और अन्यथानहीं तबप्रहलादके बचनको

सुन ९ तव परम प्रसन्नहुआ बलिराजा जहां इन्द्रका रथ खड़ाथा तहां जाके प्राप्तहुआ १० तब इन्द्रके समीपमें दैत्योंका इन्द्र और उत्तम शोभावाला ऐसा बलिराजा गमन करनेलगा तबबलिराजा की मंगलरूप पक्षी और मंगल रूप पशु परिक्रमा करनेलगे ११ और गमन करनेके वक्त बड़ी जटाको धारणकरनेवाले तपस्वीऔर कवी नानाप्रकारके मंगलरूप मंत्रोंसे बलिराजाकी स्तुति करने लगे १२ तब तपायमान सोनाके चित्रा पक्ष और नानाप्रकार के दिव्यरत्न इन्होंसे अलंकृत और उत्तम तेजसेशोभित ऐसा बलिराजा अग्निके समान प्रकाशित होनेलगा १३ तब उत्तम वीर्य औरपरा क्रमवाला बलिराजा शत्रुओंको सेनासे पीडित अपनी सेनाकोदेख-ताभया जैसे वायुसे आकाशमें बद्दल १४ तब चारोंतर्फसे युद्धमें अग्निसे रक्षित देवताओं की सेनाको देख १५ पीछे शूल बरछी रिष्टी गदा तलवार बाण इन्होंको शत्रुओंकी सेनामें फेंकता हुआ मदोन्मत्त हाथीकी तरह शब्दकरताभया जैसे वर्षाके समय में बद्दल १६ पीछे दिव्यअस्त्ररूप धर्मावाला और भुजाओंके वेगरूप वायुवाला और महाबलवाला और पौरुष और पराक्रमरूप इन्धन वाला ऐसाबली घोररूप अग्नीकेसमान युद्ध में प्रकाशित होता भया जैसे प्रजाको दग्ध करनेवाला कालवह्नी १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांवामनेदेवासुर युद्धेचतुःपंचाशदधिकद्विशततोऽध्यायः २५४ ॥

दोसौपचपनका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे तब बलिराजाने एक इन्द्रकेबिना बाणों करके सब देवतेबांध और सेनासहित जीतलिये१ तब दैत्यों करके मरतेहुये और बलिके जीतेहुये सबदेवते महाबलवाले इन्द्रसेकहने लगे २ कि हे इन्द्र तुही हमारा इन्द्रहै और तूहीधाता है और लोकोंका प्रभूभीतूहीहै और तूहीअविनाशीहै और अप्रतिमकर्म करनेवाला भी तूहीहै और उत्तम कीर्तिवालाभी तूहीहै ३ सो हे देव

ताओंका ईश्वर सबदेवताओं सहित सेनाभागी जाती है और रथ चक्रध्वजा आदिसब दैत्योंने तोड़दियेहैं ४ औररथ हाथी घोड़ेयोधा हजारहांप्यादे गदा मूसल पट्टिश ५ इन्हों करके सैकड़ों छिन्नभिन्न करदिये हैं सो बलिराजाने ऐसा भयानकरूप युद्धमें किया है सो दैत्यों करके मरती हुई अपनी सेनाको आपक्यों त्यागते हैं ६ हे देव श्रेष्ठ हे शरण्य शरण को प्राप्तहुये देवताओं की रक्षाकर ऐसे देवताओंके बचनको सुनके ७ शंवर्तक अग्निकेसमान क्रोध को प्राप्तहुआ इन्द्र सबदैत्योंको दग्ध करनेलगा अर्थात् सूर्यकी किरणोंके समान प्रकाशवाले मुकुटको धारन करनेवाला ८ और वैडूर्य रत्नकेसमान कांतिवाला और अनेकप्रकार के रत्नोंसेजटित बाजूबंधको धारण करनेवाला और धूम्र नेत्रोंवाला और सौ बाहू और हजार नेत्रोंवाला ६ और अकेला और हरी डाढ़ीवाला और हाथीकीध्वजावाला औरमहाबलवाला औरबज्रकाप्रहारकरनेवाला और योगी और सौ शिरोंको धारण करनेवाला १० और धनुष और कवचको धारण करनेवाला सौ सूर्य्योंके समान तेजवाला और देवते गंधर्व यक्ष इन्होंके समूहसे परिवृत्त ११ और सामवेद को गानेवाले और जाप करनेवालेऐसे महर्षियोंसे स्तुतकिया और सौ पर्वोंसे संयुक्त और महाहृद्द और सब तर्फको मुखवाला १२ ऐसे बज्रको धारण करनेवाला ऐसा इंद्र सब दैत्योंसे युद्ध करने लगा १३ और तब बलिराजाका और इन्द्रका आपसमें उग्र युद्ध होनेलगा १४ तब प्रह्लाददैत्यने सैकड़ों स्तुतिरूप जयके देनेवाले कर्मोंकरके बलिराजा प्रबोधितकिया तबअग्नीके समान प्रकाशित होताभया १५ ऐसे इन्द्र और बलिराजाके युद्धको देख दैत्य और देवताओंका फिर युद्ध होनेलगा १६ फिर अस्त्रों करके इंद्रबलिको बींधनेलगा तब बलिराजाने शस्त्रोंके सौसौ टुकड़े करदिये १७ पीछे क्रोधको प्राप्त हुआ इन्द्र दुर्वारणरूप आग्नेय अस्त्रको बलिके अर्थ छोड़ताभया १८ तब आवतेहुये अग्नीके समान अस्त्रको देख बलिराजावारुणास्त्रसेशांतकरताभया अर्थात् बुझावताभया१९पीछे

फिर क्रोधको प्राप्तहुआ इन्द्र बलिराजाको मारनेकेअर्थ पर्वत के समान वज्रको ग्रहण करताभया २० तब आकाशवाणीहुई अर्थात् उस आकाशवाणीको इन्द्र सुनताभया २१ तब आकाशवाणीकहने लगी हे इंद्र युद्धसे अलग होजा इस बलिराजाको युद्धमें तू नहीं जीतसकेगा २२ क्योंकि तप करके बलिराजा तेरेसे उत्तमहै और ब्रह्माजीके वरदानसे और सत्य बोलनेसे और धर्मोंकेकरनेसे बलिराजा तेरेसे अधिकहै २३ सो सब देवताओं सहित तेरेसेभी यह नहीं जीता जावेगा जो इसको जीतनेवाला सनातनहै तिसको तू श्रवणकर २४ जो ब्रह्माका सर्वस्व और देवताओंकी परमगतिऔर धर्मका परम रहस्य २५ और परतेपरे गतिरूप व्यक्त और अव्यक्त और महाभूत और भूतभविष्य बर्तमानको जाननेवाला २६ और हजार शिरोंवाला और हजार पैरोंवाला और हजारों नेत्रोंवाला और शंख चक्र गदा पद्म इन्होंको धारण करनेवाला और पीले वस्त्रोंको धारणकरनेवाला और दैत्योंको मारनेवाला २७ औरसब को जीतनेवाला और आप किसी से जीतमेंनहीं आनेवाला ऐसा पुरुष २८ इस बलिराजाको जीतेगा तब ऐसी दिव्यरूप वाणीको सुनके सब देवताओं करके सहित इन्द्रयुद्धसे निवृत्त होताभया २९ जब इन्द्र चलागया तब सब दैत्य युद्धमें उग्र शब्दको करनेलगे अर्थात् किलकीशब्दऔरअपने अपने भुजाओंकोबजानेका शब्द ३० और शंखोंके शब्द और जोद्धाओंकी टेढ़ी बोलीके शब्द और अनेक प्रकारके बाजाओंके शब्द ये सब होनेलगे ३१ पीछे जय जयशब्द करतेहुये दैत्यों से संयुक्त बलिराजा अपने स्थानमें प्राप्तहुआ ३२ और हिरण्य कशिपु दैत्यके समान प्रकाशित होनेलगा ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांवामनेदेवासुरयुद्धे शक्रापयानेपंचपंचाशदधिकद्विशतोऽध्यायः २५५ ॥

दोसौछप्पनका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि प्रयत्नसे रहित देवते होतेभये और

दैत्योंसे रक्षित त्रिलोकी होतीभई और बलवालेबलिकी जयहोती भई १ और सब दिशा शुद्ध होतीभई और धर्म कर्म प्रवृत्त होनेलगे और अधर्मके मार्गदूरहोनेलगे २ और प्रह्लाद शंबर मय अनुह्लाद इन्होंसे चारोंदिशा रक्षित होनेलगी और सबदैत्योंसे आकाश की पालना होनेलगी ३ और अपनी प्रकृतीमें स्थित लोकको होने से और सत्मार्ग प्रवृत्त होनेलगा ४ और सब पापोंका अभाव होने लगा और भावकी स्थिरता होनेलगी और सिद्धों का तप प्रवृत्त होनेलगा और पापकर्म वालोंका अभाव होनेलगा ५ और चार पैरोंवाला धर्मस्थित होनेलगा और एक पैरवाला पापस्थित होने लगा और प्रजाकी पालनाकरनेमें युक्तराजा होनेलगे ६ और सब आश्रम निवासी अपने अपने धर्मोंमें स्थित होनेलगे ऐसे काल में देवराज्य पै दैत्योंने बलिराजाका अभिषेक किया ७ और पद्मासन में स्थित और पद्मोंको हाथमें धारण करनेवाली और देवी ८ और वरकेदेनेवाली और शूरबीर को सेवनेवाली ऐसीलक्ष्मी बलिराजा को प्राप्तहोके कहनेलगी ९ हे बलवालोंमें श्रेष्ठ दैत्यराज मैं तेरे पै देवताओं के पराजय से प्रसन्नहुई तेरे को मंगल प्राप्तहोगा १० और तैंने अपने बलसे युद्धमें इन्द्रजीत लिया तब तेरे उत्तम बलको देखके मैं आपही प्राप्तहुई हूं ११ सो हे दैत्य श्रेष्ठ हिरण्य कशिपु के कुलमें उपजे हुये तेरे ऐसे कर्मोंमें आश्चर्यनहीं १२ और हेराजन् तेरा पितामह हिरण्य कशिपुने संपूर्ण यह त्रिलोकी भोगीहै १३ परन्तु तिससे तू धर्म मार्गमें विशेषहै इसवास्ते तूभी इस त्रिलोकी को भोगेगा १४ ऐसे कहके बरके देनेवाली और सौम्य ऐसीलक्ष्मी दैत्यपति बलि राजाके शरीर में प्रविष्टहुई १५ औरह्री कीर्त्ति द्युति प्रभाधृति क्षमाभूति नीति दया मति १६ स्मृति मेधा तुष्टि पुष्टि मुक्ति श्रुति प्रीति इड़ा कांति शांतिक्रिया १७ ये सब दिव्य अप्सरा नृत्य और गीतमें कुशल ऐसी बलिराजाको प्राप्तभई १८ ऐसे ब्रह्मबादी बलिराजानेदैत्यों के संगचराचर त्रिलोकीका ऐश्वर्यप्राप्तहुआहै १९॥

श्रीहरिवंशांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबासनेदेवासुरयुद्धे षटपंचाशदधिकद्विशतोऽध्यायः २५६

दोसैसत्तावनका अध्याय ॥

जनमेजय प्रश्न करनेलगा हे मुने दैत्योंसे पराजित किये देव
ते क्याकरतेभये और देवताओंकोफिर स्वर्गलोक कैसेप्राप्तहुआ १
वैशंपायन कहनेलगे कि तिस आकाश वाणीको इंद्रसुनके देवता
ओंको संगले अदितिके उत्तम स्थानमें प्राप्तहोनेके अर्थ पूर्वदिशा
को जाताभया पीछे अदितिके स्थानको प्राप्तहो जो युद्धमें आका-
शवाणी के मुखसे सुनाथा वहसबवृत्तांत अदितिकेअर्थ कहताभया ३
तब अदिति कहनेलगी किहेपुत्र सबदेवताओंके सहिततेरेकरके जो
विरोचनका पुत्र बलिराजा युद्धमें नहीं मरसक्ताहै ४ तौहे सहस्राक्ष
हजारशिरवाले परमेश्वरके हाथसे निश्चैयमरेगा अन्यसेनहीं ५सो
मैं बलिराजाके पराजयके अर्थब्रह्मवादी और कश्यपनामसे विख्यात
ऐसे तुम्हारे पिताके पासजाके पूंछतीहूं ६ तब अदितिकरके सहित
संपूर्ण देवते कश्यपजीके समीपमें प्राप्तहो दीप्ततपके खजानेवाले ७
और आद्य और देवताओंके गुरू और दिव्य और तेजकरके सूर्यके
आकार और गौर और अग्नीकी शिखाके समान कांतिवाला ८ और
न्यस्तदंड और तपसेयुक्त और कृष्णमृग छालाको कांधपैधारणकर
नेवाला और वृक्षोंकेबक्कलोंको शरीरपै धारण करनेवाला और जटा
के समूहसे भूषित ९ और आज्यमंत्र पुरस्कृतरूप अग्निकी तरहदी-
प्यमान और स्वाध्यायमेंरत और साक्षात् अग्निके समान प्रकाशित
१० और ब्रह्मवादियोंमें श्रेष्ठ देव और दैत्योंका गुरू और तपतेहुये
सूर्यकेसमान तेजवाला और मरीचिऋषि का पुत्र ११ और सबप्रा-
णियोंको रचनेवाला और प्रजाकापति और आत्मभाव विशेष कर
केतीसरा प्रजा पति १२ ऐसे कश्यपजीको देखतेभये पीछे अदिति
सहित सब देवते प्रणामकर अंजलि बांध वचन कहने लगे जैसे
ब्रह्माजीसे ब्रह्माकेपुत्र १३ और जोयुद्धमें आकाशवाणीके सकाशसे
इन्द्रनेश्रवणकियाथा कि सबदेवताओंकरके बलिदैत्यजीतनेमें नहीं
आसक्ता यह सबवृत्तान्त कहतेभये १४ तबतिन पुत्रोंके बचनको

सुनके लोकको रचनेवाला कश्यपमुनि ब्रह्मलोक में गमन करनेके अर्थ बुद्धि करताभया १५ और कश्यपमुनि कहनेलगे कि हे पुत्रो ब्रह्मलोकमें हमसब चलेंगे सोजैसे तुम्होंने आकाश वाणीसे सुनाहै वह सब ब्रह्माजीके सन्मुख वर्णन करना १६ तब वैशंपायन कहने लगे देवर्षिगणोंसे सेवित ब्रह्मलोकको कश्यपजीके गैल अदिति और सब देवते गमन करने लगे १७ तब दिव्यरूप विमानोंमें बैठकेएक मुहूर्तमें ब्रह्मलोकमें जाके प्राप्तहुये १८ तब यथायोग्य तपकीराशि और अविनाशी ऐसे ब्रह्माजीको देखनेकेअर्थ १९ भौरोंके गानसेसं-युक्त और सामवेदके गानसे मिलीहुई और कल्याणके करनेवाली और शत्रुओंको नाशनेवाली २० ऐसी ब्रह्माजीकी सभाको देखके प्रसन्न होतेभये और वेद और वेदांगके पारको जाननेवाले ऋच और वहृच इन यज्ञसंबंधी नामोंसे विख्यात् ऐसे ब्राह्मणों के बिस्तारितकिये २१ कर्मोंसें अनेक प्रकारकी वाणीको श्रवण कर-तेभयेऔर यज्ञवेदांगआदिकर्म इन्होंकोजाननेवाले२२ औरपदकेक्रम को जाननेवाले २३ ऐसे ब्रह्मर्षियोंके शब्दसे शब्दित होतेभये और यज्ञकी स्तुतिको जाननेवाले और शिक्षावाले २४ और शब्दके यथार्थ अर्थको जाननेवाले और सब विद्याओंमें कुशल और मीमां शारूप वाक्योंको जाननेवाले और सब प्रकारके वेदोंको जानने वाले २५ और हृष्ट पुष्ट स्वरवाले ऐसे ब्राह्मणोंके शब्दोंसे शब्दित देवलोकसे भी २६ उत्तम ब्रह्मलोकमें वेदोंकीध्वनिको सुनतेहुये सब देवते प्राप्तहोतेभये और सब देवते अपने अपने शरीरोंको पवित्र मानते भये इसमें संशयनहीं २७ पीछे मौनको धारण करनेवाले और ब्रह्माजीके अर्थ मनको लगानेवाले और आश्चर्यकरके फूलेहु-ये नेत्रोंवाले ऐसे देवते आपसमें देखनेलगे २८पीछे मनसे प्रसन्न हुये सब देवते कश्यपजीको अगाड़ी कर जगत्केस्वामी ब्रह्माजीसे प्रणाम करतेभये २९ और अनेक प्रकार के शब्दोंको श्रवण करते भये ३० और तहां तहां ब्रह्मलोकमें उत्तम व्रतकोधारण करनेवाले और जप होम आदिकर्मोंको करनेवाले ऐसे ब्राह्मणोंको देवते देखते

भये ३१ और तिस सभामें लोकका पितामह देवते और दैत्योंका गुरु और दिव्य मायाको धारण करनेवाला ३२ ऐसे ब्रह्माजी स्थित हैं और तिस ब्रह्माजीको दक्ष प्रचेता पुलह मरीच ३३ भृगु अत्रि वशिष्ठ गौतम नारद विद्यामन आकाश वायु तेज जल पृथ्वी ३४ शब्द स्पर्श रूप रस गंध प्रकृति विकृति और सब प्रकारके पृथ्वीकेकारण ३५ अंग और उपांगों सहित चारोंवेद सब क्रिया सब यज्ञ संकल्पप्राण ३६ अर्थ धर्मकामद्वेष हर्ष ३७ शुक्र बृहस्पति संवर्त बुध शनैश्चर राहु शेषरहे सबग्रह ३८ मरुत् विश्वकर्मा सब नक्षत्र सूर्य चंद्रमा ३९ गायत्री सात प्रकारकी वाणी सब स्मृति शास्त्र सब गाथासब निगम ४० और देहवाले सबभाष्य रूपशास्त्र और क्षण लव मुहूर्त दिन रात्री ४१ पक्ष मास छहोंऋतु संवत्सर कृतयुग त्रेतायुग द्वापर कलियुग संध्या ४२ कालचक्र ये सब और अन्यभी बहुतसे ब्रह्माजीके समीपमें स्थितथे ४३ अर्थात् सेवामें लगरहे ऐसे दिव्यरूप औरसब कामना देनेवाली ऐसी ब्रह्मसभामें देवताओं करके सहित कश्यप ऋषि प्रविष्टहो ४४ पीछे सब प्रकारके तेजोंसेसंयुक्त और दिव्य और ब्रह्मर्षि गणोंसे सेवित और ब्रह्माकेयोग्य लक्ष्मीसे प्रकाशित और और चिंता और ग्लानिसेरहित ४५ और परम आसन में स्थित ऐसे ब्रह्माजीकोदेख शिरकरके प्रणाम करतेभये ४६ पीछे अपने अपने शिरोंकरके ब्रह्माजीके चरणोंका स्पर्शकर सबपापोंसे विमुक्त शांतरूप ऐसे कश्यपसहित सबदेवते होतेभये ४७ तब कश्यपके सहित सब देवताओंके आगमनको देख अतितेजवाला और सब देवताओंका ईश्वर ऐसे ब्रह्माजी बचन बोलतेभये ४८ ॥

इतिश्रीमहाभारते हरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांवामनेब्रह्मलोकगमने सप्तपंचाशदधिकद्विशततोध्याः २५७ ॥

दोसैाअट्ठावनका अध्याय

ब्रह्माजी कहनेलगे हे देवताओं जिस प्रयोजन के अर्थ तुम यहां आके प्राप्तहुयेहो तिसअर्थकोमैंयथार्थजानताहूं १ सो तुम्हारावांछित

मनोरथ होगा अर्थात् बलिदैत्यको जीतनेवाला उत्पन्न होवेगा २ सो केवल दैत्योंकाही जीतनेवाला नहीं किंतु त्रिलोकी का और देवताओंका जीतनेवाला ३ और सब प्राणियोंको पालने वाला और सनातन और हिरण्यगर्भ नामसे बिख्यात ४ और सबोंसेबड़ा और किसीकी जीतमें नहीं आनेवाला ५ और अतिबीर्यवाले बलि राजाको जीतनेवाला और मेरे आदिसबों से पहले उपजनेवाला ६ और बलिराजा की और इस जगत्की उत्पत्ति करनेवाला और अचिंत्य और बिश्वात्मा और योगयुक्त और जिसको देवतेभी नहींजान सक्ते कौनहै ७ ऐसा और देवतोंको और मेरेको और इस संसारको जीतनेवाला ऐसा ईश्वरहै ८ तिसके प्रसाद से परमगतिको मैं कहताहूं९ सो क्षीर सागरके उत्तरकूलपै उत्तरदिशाको अमृत नामसे बिख्यात तिस देवका स्थान है १० सो तहां तुमजाके घोर तपको करो ११ पीछे स्निग्ध और गंभीर शब्दवाली और समुद्रके समान गर्जनेवाली १२ और दिव्य और स्पष्ट अक्षर और पदोंसे युक्त और रमणीय और अभयकी देनेवाली और पवित्र और सत्य और परम संस्कार से युक्त १३ और सब पापोंको नाशनेवाली और साक्षात् अवतार लेनेवाले ईश्वर की कहीहुई १४ ऐसी बाणी को तपके अंतमें तुम श्रवण करोगे १५ तब वहदेव ऐसे कहेगा कि हे देवता ओ तुम्हारा आगमन सफलहै सो मैं किसके अर्थ किस बरकोदेऊं और बरका देनेवालामैं स्थितहूं १६ तब अदिति और कश्यप तिस देवके पैरोंमेंशिरदेके यह बरमांगो१७ कि हे देव तुम साक्षात् हमारे पुत्रहोजाओ तब वहदेव यही बरदानदेगा १८ ऐसे तिसईश्वरसेबरको प्राप्तहो कृत कृत्यहुये सब देवते अपने अपने स्थानोंको गमन करियो १९ तब ऐसेही होजाओ ऐसे कहके सब देवते और कश्यप अदिति येसब ब्रह्माजीके चरणारबिंदोंमें नमस्कारकर२० उत्तरदिशा को जानेलगे तब थोड़ेसेही कालमें ब्रह्माजीके कहेहुये क्षीर सागरको प्राप्तहुये २१ अर्थात् बहुतसे समुद्र पर्वत बन दिव्यरूपनदी इन्हों को उल्लंघनकर घोररूप और सब प्राणियोंसे बर्जित २२ और सूर्य

के प्रकाश सेभी रहित और अंधेरासे आच्छादित ऐसी दिशाको दे-
खतेभये २४ तहां अमृत स्थानको प्राप्तहो कश्यपजी करके सहित
सब देवते दीक्षा को ग्रहणकर दिव्य व्रतको हजार बर्सोंतक धारण
करतेभये २५ अर्थात् देवताओंका ईश और योगरूप और नाराय-
ण और देव और हजार नेत्रोंवाला २६ ऐसे ईश्वरको प्रसन्नकरने
के अर्थ ब्रह्मचर्य मौन स्थान आसन शांति इन्होंकरके उग्र तप कर
नेलगे २७ और कश्यपजी उस ईश्वर को प्रसन्न करने के अर्थ
वेदोक्त उत्तम स्तोत्रको कहताभया २८ ॥

श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबामनेअष्टपंचाशदधिकद्विशतोध्यायः२५८॥

दोसौउनसठका अध्याय ॥

अब बेदोक्तस्तोत्रकहाजाताहै कश्यपउवाच नमोस्तुतेदेवदेवेशए
कशृङ्गवराहबृषार्च्चिंषसिंधुबृषबृषाकपे सुरबृष सुर १ निर्मित आन-
र्म्मित भद्र कपिल बिष्वक्सेन ध्रुव धर्म्म धर्म्मराज बैकुंठ त्रेतावर्त २
अनादिमध्य निधन धनंजय शुचिश्रवः अग्निजवृष्णिज अज अजय
अमृतेशय ३ सनातन बिधातस्त्रिकाम त्रिधाम त्रिककुत्क कुम्भिन्
दुन्दुभे महानाभ लोकनाभ ४ पद्मनाभ लोकनाथ बिरंचे बरिषृवहु
रूप क्षयअक्षय बिरूप बिश्वरूप ५ सत्याक्षर हंसाक्षर हव्यभुक्खण्ड
परशो शुक्र मुञ्जकेश हंसमहाहंस ६ महदक्षरहृषीकेश सूक्ष्म परम
सूक्ष्म तुराषाट् बिश्वमूर्तेसुराग्रज नील निस्तमो ७ बिरजस्तमोरजः
सत्त्व सत्त्वधाम सर्बलोक सर्बलोक प्रतिष्ठिशिपिबिष्टि सुतप ८ स्त
पोग्रअग्रअग्रजधर्मनाभ गभस्तिनाभधर्मनेमे सत्यधामसत्याक्षर ९
गभिस्तिनेमे चंद्ररथ बिपापान् त्वमेवसमुद्रवास अजैकपात् सहस्र-
शीर्ष १० सहस्रसश्चित महाशीर्ष सहस्त्रदक सहस्त्रपात् अधोमुख
महामुखमहापुरुष ११ पुरुषोत्तम सहस्त्रबाहो सहस्त्रमूर्ते सहस्त्रास्य
सहस्त्रभुज सहस्त्राक्ष सहस्त्रप्रभ १२ सहस्त्रशस्त्वा माहुर्बेदाः विश्व
देव विश्वसंभव सर्बेषामेव देवानां १३ सौभग आदौगतिः बिश्वंत्त्व
माग्नयनं विश्वंत्वामाहुः पुष्पहास परमबरदस्त्वमेव१४ बषट्कार

वौषट ओंकारस्त्वामेक माहुर ग्यंमखभाग प्राशिनम् ॥ सतधार १५ सहस्रधार भुर्द्दभुवर्द्द स्वर्द्द भूर्भुवस्वर्द्द त्वमेवभूत भुवनस्वधात्वमेव ब्रह्मशय १६ ब्रह्ममय ब्रह्मादिस्त्वमेव द्यौरसि पृथिव्यसि पूषासि मातरिश्वासि धर्म्मासि मघवासि १७ होता पोता हन्ता नेत्तामन्ता होम्यहोता परस्परत्वं होम्यहोता त्वमेव॥अपासि बिश्वबाक् १८ धात्रापरमेष्ठा धाम्ना त्वमेवदिग्भ्यः स्रुक्स्रुग्भाण्ड ईज्योसियष्टात्वमसि समिद्धस्त्वं १९ गतिर्गतिमतामसि मोक्षोधिधात्तासिगुह्योसि सिद्धोसि धन्योसि योगोसि परमोसि यज्ञोसि सोमोसि जूपोसि दीक्षासि २१ दक्षिणासि बिश्वमसि स्थविष्ठ स्थविर बिश्वतुराषाट हिरण्यगर्भ हिरण्यनाभ हिरण्यनारायण २२ नारायणांतर नृणा मयन आदित्यवर्णा आदित्यतेजो महा पुरुष सुरोत्तम आदिदेव २३ पद्मभास पद्म शय पद्माक्ष पद्मगर्भ हिरण्याग्र केशशुक्ल बिश्वेदेवबिश्वतोमुख २४ बिश्वाक्षबिश्व सम्भव बिश्वभुक त्वमेव २५ भूबिक्रम भुवि बिक्रम स्वबिक्रम क्रमावभ्रु क्रमाक्रम सुबिभु २६ प्रभाकर शम्भुः स्वयंभूश्च भूतादिः भूतात्मन् शुभ्रषुर्महाभूत २७ बिश्वमूत बिश्वं त्वमेव बिश्व गोप्तासि बिश्वसंभव पवित्रमसि होत्रमसि २८ सत्यमसि तेजोसि सर्बमसि हबिर्बिश्वभुक् उर्द्धकर्मन् अमृतेन्धन अमृतन्धम २९ दिवस्पते ओतप्रोतबिश्वस्पृकबिश्वपते घृतार्चिः अग्नेरोहिणा सुरासुरगुरो ३० महादेव नृदेवदेवस्तुत द्रुहिन अनंत कर्म्मन् वंश ३१ प्राग्वंश बिश्वपात्वं त्वमेवबिश्वंबिभर्षि बरार्थिनो नस्त्रायस्वेति ३२ इसस्तोत्रकेपाठ से हेदेव तूहमारी रक्षाकर ३२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबामनमहापुरुषस्तवेऊनषष्ट्याधिकद्विशतोऽध्यायः २५९ ॥

दोसौसाठिका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे वेदको जाननेवाले कश्यपजी के मुख से कहेहुये इसस्तोत्रको १ और बद्दलके समान शब्दवाला और स्निग्ध गंभीर रूपऐसे देवताओं के शब्दको सुनके प्रीतियुक्त मन

करकेस्पष्टरूप २ वचनको कहनेलगा अर्थात् आकाशसे शब्दसुनने लगा और विष्णुका साक्षात् दर्शनहुआ नहीं ३ ऐसे प्रीति वाला बिष्णुकहनेलगा हेदेवताओ तुम्हारे निश्चयसे मैंतुम्हारेअर्थप्रसन्न हुआ ४ सो वरकोमांगो तुम्हारा कल्याणहोगा मैंतुम्हारेकोवरदेने वालाहूं ५ तब कश्यप ऋषि कहने लगे हेदेव श्रेष्ठ जोहम सबों पै तुम प्रसन्न हुयेहोतो हमभी सबकृतकृत्य हुये क्योंकि तूही हमारी परम गतिहै ६ और जो प्रसन्नहोके बरदेना चाहतेहो तो इन्द्रका छोटाभ्राता और देवताओंके आनंदको बढ़ानेवाला ७ ऐसे तुममेरे पुत्र अदितिके शरीर में जन्मले ओ ८ बैशंपायन कहनेलगे कि देवताओंकी माता अदितिभी कहनेलगी ९ किहेदेव तुममेरेपुत्रहो- जाओ १० और देवतेकहने लगेकि हमारे कल्याण के अर्थहे देव हमाराभ्राता और स्वामीऔर भर्ता और घाता और शरणरूपतूही हो ११ और हेदेव जबतू अदितिके पुत्रभावको प्राप्तहोगा तबइन्द्र आदि सबदेवते तेरेको देवकहके बोलेंगे इसवास्ते कश्यपजी के पुत्र तुमहोजाओ १२ बैशंपायन कहनेलगे कि इनपूर्वोक्त बचनोंको सुन के बिष्णुभगवान् देवते और कश्यप मुनिके अर्थ कहनेलगे ऐसेही होगा १३ और तुम्हारे मंगलकी प्राप्तिहोवेगी और तुममनोवांछित कामनाको प्राप्तहोजाओगे और जोतुम्हारेशत्रुहैं वेसब एकमुहूर्तभी मेरेअगाड़ी स्थितनहीं रहेंगे १४ अर्थात् सबदैत्योंके समूहको और शेषरहे देवशत्रुओंको मारके यज्ञ भाग में अगाड़ी भोजनकरनेवाले सबदेवताओं को करूंगा १५ और हेदेव श्रेष्ठो हव्य को खानेवाले देवताओंको और कव्यको खानेवाले पितरोंको प्राजापत्य कर्मकर के मैं करूंगा १६ और जिसमार्ग करके तुम आयेहो उसीमार्ग के द्वारातुमगमनकरो और देवताओंकी माताअदितिका और महात्मा रूप कश्यपजीका १७ मनोवांछित सफल करूंगा इसलिये तुम अपने अपने स्थानोंको प्राप्तहो १८ बैशंपायन कहनेलगे ऐसेबिष्णु भगवान्के बचनको सुनके प्रसन्नहुये देवते अच्छे प्रकारसे बिष्णु को पूजते भये १९ पीछे विश्वेदेवा कश्यपजी अदिति साध्य देवते

मरुद्गण देवते और महाबलवाला इन्द्र २० ये सब तिस बिष्णुके अर्थ प्रणामकर पूर्बदिशामें कश्यपजीके आश्रममें प्राप्तहुये २१ तब ब्रह्मर्षि गणोंसे सेवित कश्यपजीके आश्रममें वेदशास्त्रका पाठकरते हुये २२ सबदेवते बिचरनेलगे परंतु कब अदिति गर्भको धारणकर इसबातकी इच्छाको चाहतीभई २३ तब देवताओंकी माता अदिति भूतात्मा और महात्मा और अतितेजवाला ऐसेगर्भको दिव्यहजार बर्षोंतक धारण करतीभई २४ जब दिब्यहजारबर्ष पूरण होगये तब देवताओंके भयको दूरकरने वाला और दैत्योंको नाशनेवाला २५ ऐसे उत्तमगर्भको जनतीभई और गर्भस्थितइसबिष्णुने त्रिलोकीके तेजोंकोग्रहण करनेसे सबदेवते रक्षित करादिये २६ और जब यह देवजन्म लेताभयातब त्रिलोकीमें सुखहुआ और देवताओंमें आनंद बढ़नेलगा और दैत्योंको भयदेनेलगा २७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबामनेबामनप्रसूतौषष्ट्यधिकद्विशतोऽध्यायः २६०॥

दोसौइकसाठका अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगेकिबामनजीकाजन्म हुआतब सातप्रजापति और सातमहर्षि ये तिसदेवको नमस्कार करतेभये १ और भरद्वाज कश्यप गौतम बिश्वामित्र जमदग्नि वशिष्ठ अत्रि २ मरीचि अंगिरा पुलस्त्य पुलहकृतु दक्षप्रजापति ३ बशिष्ठकापुत्र औबंस्तम्ब कश्यप कपीवान् अकपीवान् दत्त अली चयवन ४ बशिष्ठ नामसे बिख्यात सात बशिष्ठके पुत्रहिरण्यगर्भके पुत्र ५ गार्ग्यपृथु अत्र्यजान्य बामन देवबाहु यदुद्ध सोमका पुत्र पर्जन्य ६ हिरण्यरोमा वेदशिरा सत्य नेव बिश्ववेदेवा अतिबिश्व दूसरा च्यवन सुधामाबिरजा ७अतिनाम सहिष्णु येसब नमस्कार करतेभये और प्रकाशमान शरीरवालेऔर संपूर्ण गहनों से भूषित ८ ऐसे अप्सराओं के गणभी नृत्य करने लगे और गंधर्बअपने बाजोंको बजानेलगे ९ और आकाशमें गंधर्बों के संग तुंबरु गंधर्बगानकरनेलगा और महाश्रुति चित्रशिरा ऊर्णायु

अनघ १० गोमायु सूर्यवर्चासोमवर्चा युगप तृणप कार्त्ति नन्दि चित्ररथ ११ शालि शिरा पर्जन्य कलि नारद १२ हाहाहूहू गंधर्व और अतिकीर्त्ति वाला हंस ये देव गंधर्व गायन करतेभये १३ और प्रसन्नहुई और सव प्रकारके गहनों से भूषित ऐसी अप्सरा नृत्य करनेलगो १४ और गानकरनेलगी और अनूकासुमध्या चारुमध्या प्रियामुख्या बरानना १५पासी मिश्रकेशी अलंबुषा मरीचि शुचिका विद्युत्पर्णा तिलोत्तमा१६ अद्रिका लक्ष्मणा रम्भा मनोरमा अशिता सुवाहु स्त्रबिष्ठासुभगा१७उर्बशीचित्रलेखा सुग्रीवी सुलोचनापुंडरीक सुगंधा और सुरथा प्रमाथिनो १८कान्या सारद्वती मेनकासहजन्या पर्णिका पुंजिकस्थला१९ येभी अन्यभी हजारहों अप्सरानृत्यकरती भईं और धाता अर्यमा मित्र बरुणअंशभग २० इन्द्रपूषा बिवस्वान् त्वष्टा सविता बिष्णु यह काश्यप गण कहा है २१ और अग्निके समान तेजवाले बारह सूर्य तिस जन्मेहुये को नमस्कार करते भये २२ और मृगव्याध सर्पनीअति अजैकपात् अहिर्बुध्न्य पिना-की २३ हवन ईश्वर कपाली स्थाणुभव इन नामोंवाले रुद्र २४ और दोनों अश्विनी कुमार और आठबसु और महाबलवाले मरुत् विश्वेदेवा साध्य २५ और शेषनागजीके छोटेभ्राता और बासुकीहै मुख्यजिन्हों में और कच्छप अपकुंज धृतराष्ट्र बलाहक २६ इन नामोंवाले और महाक्रोधी और महाबलवाले ऐसे सर्प शेषरहे २७ और भी बहुतसे सर्पपै सब अंजलीबांधके तिस जन्मेहुये ईश्वरको नमस्कार करतेभये २८ और तार्क्ष्य अरिष्टनेमिऔर महाबलवाला गरुड़ और अरुण आरुणि येभी सब अंजलीबांधके स्थितहुये २९ और आप ब्रह्माजो भी सव महात्माओं के संग आके तहां कहने लगे ३० कि जिससे यहलोक उत्पन्न होताहै ऐसा सनात्म बिष्णु यहहै और लोकका ईश्वर और श्रीमान् और विष्णुभी यहीहै ३१ ऐसे कहके देवर्षियों सहित ब्रह्माजी नमस्कारकर स्वर्गको प्राप्त भये ३२और देवताओंकास्वामी कश्यपकापुत्र और नवीनदुर्दिनमें मेघके समान कांतिवाला और लाल नेत्रोंवाला और बामनरूपको

धारण करनेवाला ३३ और श्रीवत्सकरके शोभित ऐसे वामनजी उत्पन्नहुये तब उत्फुल्ल नेत्रोंवाली अप्सरा तिसको देखनेलगी ३४ और आकाशमें हजारसूर्य्योंसे एक बेरजोकांति उपजतीहैतैसीकांति वाले बामनजीहुये ३५ और देवर्षियोंके समान उपमावाला और श्रीमान् और भूतभविष्यत् बर्त्तमानको जाननेवाला और शुद्धरोमों वाला और बड़ी छातीवाला और सब प्रकारके तेजोंसे संयुक्त ३६ और पुण्यशीलोंका गतिरूप और पाप कर्मवालों का अगतिरूप और योगको जाननेवाला ३७ और आठगुणोंवाला औरदेवताओं में श्रेष्ठ और मोक्षकी इच्छावाले ब्राह्मण जिसको प्राप्तहोके ३८ जन्मसे और मरणसे छुटजातेहैं ऐसा और सबआश्रमनिवासी जिस को तपकहतेहैं ३९ ऐसा और जिसकोउग्रव्रत करनेवाले मुनि सेवते रहतेहैं ऐसा और सर्प्पोंमें अनंतनामसेबिख्यात और सब प्रकारके सर्पोंकरके सेवित ४० और हजारशिरोंवाला और लालनेत्रोंवाला और यज्ञ और स्वर्गके अर्थ इच्छा करनेवालेब्राह्मणोंसे पूजित ४१ और नानाप्रकारकेस्थानोंमें प्राप्त औरश्रीमान् और अतिउत्तमकवि और जिसको वेदवेत्ता कहतेहैं ऐसाऔर सबकेअर्थयज्ञभागकोप्राप्त करनेवाला ४२ और चंद्रमा सूर्यरूप दो नेत्रोंवाला और देव और आकाशमें बिग्रहवालाऐसा बामनजीजाननेवालाभी योगकरकेबाल भावकोप्राप्तहुआ मधुरबाणीसे सबदेवताओंके प्रतिकहनेलगा ४३ कि हे देव श्रेष्ठोमें क्याकरूं और किसबरकूंतुम्हारे अर्थदेऊं ४४ और जो तुम्हारेको बांछितहो वह प्रसन्न होके तुमकहो तब ऐसे तिस बामनजीके बचनको सुनके ४५ प्रसन्न मनवाले इन्द्रआदि सब देवते अंजलीबांधके बामनजीसे कहनेलगे ४६ कि ब्रह्माजीके बर-दानसे और तप और पराक्रमसे ४७ बलिराजाने हमारायहसबजगत् हरलियाहै और वह बलिराजा हमसबोंसे अबध्यहै अर्थात् मरनहीं सकता ४८ सो तुम तिसका तिरस्कार करनेको योग्यहो अन्यकोई नहीं इसवास्ते हम सब तेरी शरणहैं ४९ सो हे सुरेश्वर ऋषियोंके और लोकोंकेहितके अर्थ ५० और अदिति और कश्यप के प्यारके

अर्थ पितरोंको कव्य और देवतोंको हव्य प्रवृत्तकर ५१ और हे महाबाहो इन्द्रके ऋणको दूरकरनेके अर्थ इस त्रिलोकीको इन्द्रके अर्थ फिर प्राप्तकर ५२ और इससमयमें बलिराजा अश्वमेध यज्ञ करनेलग रहा है ५३ सो जिस प्रकार लोकोंका फिर राज्य इन्द्रको मिलै ऐसा चिन्तवनकरो ५४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबामनेब्रह्मवाक्ये एकषष्ट्यधिकद्विशतोऽध्यायः २६१ ॥

दोसौबासठिकाअध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे ऐसेदेवताओंके बचनकोसुन सब देवताओंको प्रसन्न करनेवाले और बामनरूपको धारण करनेवाले ऐसे विष्णु वचन कहनेलगे १ कि हे देवताओ वेदके पारको जाननेवाला औरबड़ाऋषिऔरउग्रतेजवाला और अंगिराऋषिकापुत्रऐसा बृहस्पति २ बलिराजाकी यज्ञमें मेरेको प्राप्तकरो तहांमैं प्राप्तहोके यथायोग्य त्रिलोकीको हरनेके अर्थ यज्ञभूमिमें बिचरूंगा ३ तब वैशंपायन कहनेलगे पीछे श्रीमान् बृहस्पतिजी बलिराजाकी यज्ञ होनेलगरहीथी तहां बामनजीको प्राप्तकरते भये ४ अर्थात् मुंजकी तागड़ीको धारण करनेवाला और यज्ञोपवीत अर्थात् जनेउको धारणकरनेवाला ५ औरछत्रदंड मृगछाला इन्होंको धारण करनेवाला औरधूम्र और लालरंगनेत्रोंवाला औरबालकरूपकोधारणकरनेवाला ६ और लोकेश्वरोंकाभी ईश्वर और ब्रह्माआदि देवतोंका भेजा हुआ और बालक होकेभी वृद्धोंकेसमान कर्मकरनेवाला ७ ऐसा बामनजी दैत्योंकेपति बलिराजाकेयज्ञस्थानमें प्राप्तहुआ ८ और युद्धकेयोग्य सामग्रीवाले दैत्योंकरके आच्छादित यज्ञद्वार में भी बामनजीके वेगकरके प्रवेश करताभया ९ तहां मंत्रोंको उच्चारण करनेवालेऋत्विक् जनों करके चारोंतर्फसे परिवारित दैत्यों के राजेबलिके समीपमें स्थितहुआ १० और ब्रह्मर्षि गणोंसे सेवित तिस यज्ञभूमिमें प्राप्तहो यज्ञकी सराहना करनेलगा ११ और यथायोग्य

यज्ञका वर्णनकर बिस्तार पूर्वक नानाप्रकार के प्रयोगों से शुक्रा-
चार्य आदि ऋत्विजोंको १२ यज्ञकर्मका जाननेवाला बामन उत्तर
देनेको असमर्थ करताभया १३ पीछे सब ऋत्विक् बलिराजाके समी-
पमें अल्परूप यज्ञको अप्रकाशरूप वैदिक मंत्रोंकरके ऋषिकेसमू
होंके प्रत्यक्ष देखाताभया १४ तब सब और बृद्धरूप सब उपाध्याय
और मुनियोंकोजब वालकरूप वाला बामन उत्तरदेनेको असमर्थ
करताभया १५ तब बिरोचनका पुत्र बलिबामनजीको अद्भुत मान
नेलगा १६ अर्थात् मस्तक सहित अंजलिको बांध बिस्मित हुआ
बलि बचन कहनेलगा १७ कि कहांसे तू आयाहै और कौन तू है
और किसका शिष्यहै और यहां क्यातेरा प्रयोजनहै १८ और ऐसे
उत्तम ज्ञानवाला ब्राह्मण पहिले मैंने कभी नहीं देखा और बालक
और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ ज्ञान और बिज्ञान को जाननेवाला १९
और शिष्टों कीवाणी और रूपसे संपन्न और मनोहर और प्रिय-
दर्शन ऐसा तूहै २० परन्तु देवते और ऋषियोंके भी ऐसेतेरे समान
पुत्रहीहैं और नाग यक्ष दैत्य राक्षस पितर सिद्ध गंधर्ब इन्हों के
भीपुत्रतेरे समाननहींहै २१ सो जैसा तैसा रूपवाला तूहै तेरेअर्थ
नमस्कार करूंहूं और तू कह मैं तेरे किसकाम कोकरूं २२ बैशं-
पायन कहनेलगे ऐसे बलिराजाके बचनको सुन उपाय के तत्त्वको
जाननेवाला बामनजी मंदमुसुकान सहित बचनको कहनेलगा २३
किबहुत खानेकेपदार्थों से युक्त और सुंदर संस्कारोंसे युक्तऐसायज्ञ
बलिराजाका होरहाहै २४यह अति आश्चर्यहै जैसे पहिले ब्रह्माजी
कायज्ञहुआथा तैसे २५ और हेदैत्योंके इन्द्र बलिराजा देवताओं के
स्वामी इन्द्र यम बरुण इन्होंके यज्ञोंसेभी तैंने बिशेषयज्ञ करेहैं २६
और स्वर्गमार्गको दिखानेवाला और सबयज्ञों में उत्तमऐसे अश्व
मेध यज्ञकरके सब पापोंकेनाशके अर्थ तूपूजाकरताहै २७ सो ब्रह्म
बादियोंने सर्वकामनासे संयुक्त और सब यज्ञों में उत्तम और अश्व
मेधनामसे बिख्यातऐसातेरा यज्ञमानाहै २८ और सुवर्णके शृङ्गों
से संयुक्त और महानुभाववाला और बायुकेसमान बेगवाला और

महात्मा और सत्यरूप नेत्रोंवाला और विश्वयोनि ऐसातेरा अश्व-
मेधहै अर्थात् पवित्रहै २९ और अश्वमेधयज्ञ करके मनुष्य पापों
को तिरतेहैं और अश्वमेधयज्ञके घोड़ेको वेदको जाननेवाले विप्र
अग्निरूपकहतेहै ३० और जैसे सब आश्रमों में उत्तम गृहाश्रम है
और जैसेसवमनुष्योंमें उत्तम ब्राह्मणहै और जैसे सब दैत्योंमें उत्तमतू
वलिराजाहै ३१ तैसे सव यज्ञोंमें उत्तमयहअश्वमेधयज्ञहै ३२ वैशंपा-
यनकहनेलगे कि ऐसे वामनजीके कहे वचनकोसुनकेआनंदसे प्रस
न्नहुआ दैत्योंकापति बलिराजा कहनेलगा ३३ कि हेब्राह्मणों में श्रेष्ठ
किसका तूशिष्यहै और क्या इच्छाकरैहै जोमैं तेरे अर्थ देऊंसोतेरा
कल्याणहोगा ३४ मेरे से वरमांग अर्थात् मनोवांछित फलको तू
प्राप्तहोवेगा ३५ तव वामनजी कहनेलगे राज्य असवारी रत्नभार्या
इन्होंको मैंनहींमांगता ३६ जोतूमेरेपै प्रसन्नहुआहै और धर्ममेंतेरी
वुद्धिहै तो भारी प्रयोजनको मेरे अर्थदे अर्थात् हे दैत्यराज तीनपैग
पृथ्वीका दान मेरे अर्थ देयही परमवरहै ३७ तब वलिराजा कहने
लगाकि हे विप्रेन्द्र तीनपैग पृथ्वीकरके तेरेको क्याहोगा दश बीस
लाखपैग पृथ्वीकोमांगो ३८ तबशुक्राचार्यकहनेलगे हेराजन् पृथ्वीका
दान मतकर तू नहीं जानताहै ३९ मायाकरके आच्छादितसाक्षात्
विष्णु यहहै सो वामनरूपको धारके इन्द्रके प्यारके अर्थ तेरेकोठग-
नेकेअर्थ वालकके रूपको धरके आयाहै ४० ऐसे शुक्राचार्यकेवचन
कोसुन वहुत कालतक चिन्तवनकर आनंदित हुआ वलिराजा ४१
वामनजीसे उपरांत अन्य पात्रको नहीं जानके अशरफी को हाथमें
ले कहनेलगा ४२ हे विप्रेंद्र मैं पूर्वको मुखकरे स्थितहूं और आप
उत्तरको मुखकरो और तीनपैग पृथ्वीग्रहण करनेके अर्थ मेरे हाथ
में जलकी प्राप्तिकरो ४३ क्योंकि तेरे गुरू को वांछा पूर्ण होनी
चाहिये ४४ फिर शुक्राचार्य कहनेलगे हे दैत्य इसके अर्थ पृथ्वी का
दानमत दे और मैंने जानलिया कि यह साक्षात् विष्णुहै ४५ सो
तेरेको ठगताहै ठगाईमें मतआवे ४६ तब वलिराजा कहनेलगा कि
इस यज्ञमें साक्षात् आप विष्णुआके प्राप्तहोगये ४७ सो जिस २

बातकी इच्छा ये विष्णु भगवान् करेंगे सोई मैं देऊंगा ४८ औरइस विष्णुसे उपरांत अन्य उत्तम कौन पात्रहै ऐसे कहके उसीवक्त बलि राजा अपने हाथमें जल ग्रहण करताभया ४९ तब बामनजी कहनेलगे हे दैत्येन्द्र मेरे पैरोंसे मापीहुई तीनपैग पृथ्वी की मैं इच्छा करताहूं ५० सो मुझे मिलनी चाहिये अन्य पदार्थकी इच्छानहीं ५१ तब बैशंपायन कहनेलगे ऐसे बामनजीके बचनको सुनके कालेमृगछालाको कंधापै धारण करनेवाला बलिराजा कहनेलगा कि ऐसे ही होगा ५२ तब पानी से पूरित अशरफी को अच्छी तरह हाथमें धारण करनेलगा ५३ तब बलिराजा के राज्यको खोनेकी इच्छा वाला बामन तत्काल अपने हाथको पसारता भया ५४ जब पूर्व को मुखवाला बलिराजा मनकरके अशरफी सहितजलको बामनजी के हाथमें देनेलगा ५५ तब अचिंत्य और अति पराक्रम वाले और बलिराजाकी लक्ष्मीको हरनेवाले ऐसे बामनजीके रूपकोदेख ५६ लक्षणोंको जाननेवाला और बुद्धिमान् ऐसा प्रह्लाद बचन कहने लगाकि हे प्रिय बामनरूप धारण करनेवाले इस बालकके हाथमें जलमतदे ५७ यह वह विष्णु है जिसने तेरा प्रपितामह हिरण्य कशिपु माराहै सो तेरेको ठगनेके वास्ते इसजगह प्राप्त हुआहै ५८ तब बलिराजा कहनेलगा कि इस देवकेअर्थमें प्रतिग्रह देउंगा और जो यह साक्षात् विष्णुहै ५९ तौ बड़ी अच्छी बातहै और ब्रह्माजी सेभी उत्तम यह पात्र हमकोप्राप्तहुआ ६० और हे असुरश्रेष्ठदीक्षित पुरुषको आवश्यक दान देनाचाहिये ६१ ऐसे दैत्यों के समूह में कहके बलिराजा तीनपैग पृथ्वी बामनजीके अर्थ देताभया ६२ और जिसवक्त बामनजीके हाथमें बलिराजा जलदेनेलगा ६३ तब फिर प्रह्लादबोला कि हे दैत्यराज इस ब्राह्मणके अर्थ प्रतिग्रह तू मत दे इस बालकको मैं ब्राह्मणका पुत्रनहीं जानता ६४ और ऐसा ब्राह्मणनहींहोयहै और हे दैत्येंद्र इस रूपकरके फिरतिस नृसिंहजी के आगमनको मैं मानताहूं ६५ तब बलिराजा कहनेलगा हे दैत्य जो ब्राह्मण दानकी याचनाकरै ६६ और तब जो दातादान नहीं देवे

तव दोनोंको अलक्ष्मी यजमान के शरीरमें प्रवेश करतीहै ६७ और
जो यजमान ब्राह्मणके अर्थ प्रतिज्ञा करके प्रतिग्रह नहींदेताहै ६८
तव मित्र गोत्रसे संयुक्त वह पापी मनुष्य नरकमें जाकेबसै है ६९
इसवास्ते अलक्ष्मीके भयसे भयभीत हुआमैं इस पृथ्वीका दान
करताहूं ७० और इसवक्त मेराहृदय अतिप्रसन्नहै और वामनरूप
को धारण करनेवाले इस उत्तम ब्राह्मण को देखिके अभीमैं दान
देताहूं ७१ किसीके कहनेसेभीमैं निवारित नहींहूंगा ऐसे कहकेफिर
वामनजीसे बलिराजा कहनेलगा ७२ हे स्वल्पमते तीन पैग पृथ्वी
से तेरेको क्याहोगा सब समुद्रोंसे परिवृत इससमस्त पृथ्वीको मैं
तेरे अर्थ देताहूं ७३ तब वामनजी कहनेलगे कि समस्त पृथ्वीको
लेने की मेरी इच्छा नहींहै मैं तीन पैग पृथ्वीसे प्रसन्नहुआ हूं ७४
यह बरदान मेरेको देना चाहिये ७५ तब बैशंपायन कहनेलगे कि
ऐसेही होगा यह बचन बलिराजा कहके तीनपैग पृथ्वी वामनजी
के अर्थ देनेको अपने हाथ से दक्षिणा सहित जलको वामनजी के
हाथमें छोड़ताभया ७६ जब वामनजी के हाथके जलका स्पर्शहुआ
तब वामनजीवामनरूपको त्याग सर्वदेवमय रूपकोदिखातेभये ७७
अर्थात् पृथ्वी है दोनोंपैर जिसके और आकाशहुआहै शिर जिसका
चंद्रमा और सूर्य हैं नेत्रजिसके ७८ पिशाच हुयेहैं पैरोंकी अंगुली
जिसकी और गुह्यक हुयेहैं हाथोंकी अंगुली जिसकी ७९ और विश्वे-
देवा हुयेहैं जानु गोड़ जिसके और साध्य देवता हुयेहैं जांघ जि-
सकी और यक्षहुयेहैं नखजिसके ८० और अप्सराभी हुई हैं नख
जिसके और बिजली हुईहै दृष्टि जिसकी ८१ और सूर्य्यकी किरणें
हुईहैं केश जिसके और तारागण हुयेहैं रोमकूप जिसके ८२ और
महर्षि हुयेहैं रोमाजिसके और विदिशा हुईहैं बाहुजिसके ८३ और
दिशाहुई हैं कानजिसके और दोनों अश्विनीकुमारहुये हैं कानके
भीतर सुननेका शब्द जिसके ८४ और वायुहुआहै नासिका जिसके
और चंद्रमा है प्रसाद जिसके और धर्म है मनजिसका और सत्य
है वाणी जिसके और सरस्वती है जिह्वा जिसकी और ८५ अदिति

है ग्रीवा जिसकी और प्रकाशवाला सूर्य्य है तालुवा जिसके ८६ और स्वर्ग का द्वारहुआहै नाभि जिसके मित्र और त्वष्टा ये दोनोंहैं भृकुटी जिसके ८७ और अग्निहै मुखजिसके और दक्ष प्रजापति है वृषण जिसके ८८ ब्रह्माजीहैं हृदय जिसके और कश्यपजीहैं पुरुष पना जिसके ८६ और पृष्ठभागमेंहै बसुदेवते जिसके और मरुत्‌देवते हैं सब संधियोंमें जिसके ६० और सबछंदहैं दांतोंकी जगह जिसके और ज्योतिर्गण है प्रभाजिसके ६१ और महादेव हैं ऊरु जिसके और समुद्रहै धैर्य्य जिसके ६२ और गंधर्ब और दिव्य सर्पहैं उदर जिसके और लक्ष्मीमेधा धृतिकांति सब बिद्यायेहैं कटिजिसके ६३ और परमात्माका स्थानहै मस्तक जिसके और सबज्योति हैं तप जिसके ६४ और देवताओंका राजा इंद्रहै तेज जिसके और चारों वेदहैं दोनों चूंची और काखजिसके ६५ और यज्ञहै ओठ जिसके और ब्राह्मणोंके चेष्टितहैं इष्टि जिसके ६६ ऐसे तिसबिष्णु के रूप को देख क्रोधको प्राप्तहुये महादैत्य समीपमें प्राप्त होनेलगे जैसे पतंग अग्निमें ६७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांबामनेबिश्वरूपप्रकाशेद्विषष्ट्यधिकद्विशततोऽध्याय.२६२॥

दोसौतिरसठिका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे हे जनमेजय तिन दैत्योंकेनाम रूप आभरण और मुख्य शस्त्र तिन्हों को श्रवणकर १ और बिप्रचित्ति शिवि शंकुरय शंकु अयःशिरा अश्वशिरा हयग्रीव वेगवान् २ केतुमान् उग्रसोग्र व्यग्र पुष्कर पुष्कल शाश्व अश्वपति ३ प्रह्लाद अश्वशिरा कुंभ संह्लाद गगनप्रिय अनुह्लाद हरिहर ४ बराह संहर अरुज वृषपर्वा विरूपाक्ष मुनींद्र चंद्रलोचन ५ निष्प्रभ सुभ्रम निरुदर एकवक्र द्विबक्र ६ महाबक्र कालसन्निभ वृहत्कीर्ति महाजिह्व शंकुकर्णमहाध्वनी ७ शरभ शलभ कुपथ कापथक्रथ दीर्घ जिह्व ८ अर्क नयन मृदुचाप मृदुप्रिय बायु गविष्ठनमुचि ६ शंबरमहान् वीक्षर चंद्र-

हंता क्रोधहंता क्रोधबर्द्धन कालक १० कालकाक्ष वृत्र क्रोध बिमोक्षण गरिष्ट हविष्ट प्रलंबनरक ११ पृथु इन्द्रतापन वातापी केतुमान् बलदर्पित असिलोमा १२ पुलोमा बाष्कल प्रमद मद खसिम का लवदन १३ कराल केशि एकाक्ष राहु तुहुंड समल सृप १४ इन नामोंवाले सब और अन्यभी बहुतसे और कितनेक फांसीको हाथमें लेने वाले और कितनेक मुखको फाड़ने वाले १५ और कितनेक गधाके समान शब्दको करनेवाले १६ और कितनेक शतघ्नी और चक्रको हाथों में लेनेवाले १७ और कितनेक फरसाको धारण करने वाले और कितनेक प्राशमुद्गर परिघ इन्होंको हाथोंमें धारणकरने वाले १८ और कितनेक महाशिला शूल और महावृक्ष इन्हों को हाथोंमें धारणकरनेवाले १९ और महापट्टिश और मुशलगदा बंदूक वज्र इन्होंको हाथोंमें धारणकरनेवाले २० और कितनेक तलवारों को हाथोंमें फिरानेवाले २१ और कितनेक नानाप्रकारके प्रहारोंको धारणकरनेवाले और कितनेक युद्धमें दुर्मद २२ और कितनेक नाना प्रकारके वेषोंको धारणकरनेवाले और कितनेककछुआ और मुरगाके मुखोंके समान मुखवाले २३ और कितनेक हंसाके मुखके समान मुखवाले और कितनेक गधा और ऊंटकेमुखकेसमान मुखवाले २४ और कितनेक शूकरके मुखके समान मुखवाले और कितनेक मच्छ के मुखके समान मुखवाले २५ और कितनेक शिशुमार मच्छ के मुखके समान मुखवाले २६ और कितनेक बिलावतोता अश्वगाय मषक मृगऊंट सेह हाथी नकुल वाज २७ बरेवा वानर बकराभेड़ भैंस कुत्ता क्रौंच चकवा गोधा मत्स्य ऋक्ष शार्दूल गैंड़ा सिंह इन्हों के मुखोंके समान मुखवाले २८ और कितनेक हाथीके चामकेवस्त्रों वाले और कितनेक मृगछालाके वस्त्रोंवाले २९ और कितनेकचीर रूप वस्त्रोंवाले और कितनेक वृक्षोंके वक्कलोंके वस्त्रोंवाले ३० और कितनेक पगड़ीको बांधनेवाले और कितनेक मुकुटको धारण करने वाले ३१ और कितनेक कुंडलोंको पहिननेवाले और कितनेकलंबी चोटीवाले ३२ और कितनेक शंखके समान ग्रीवावाले और कितनेक

सुंदर तेजवाले ३३ और कितनेक नाना प्रकार के बेषोंको धारण करनेवाले ३४ और कितनेक नानाप्रकारकी माला और चंदनआदि अनुलेपों को धारण करनेवाले ३५ ऐसे सब दैत्य नाना प्रकारके प्रकाशितरूप अपने अपने शस्त्रोंको ग्रहणकर ३६ पैरों से पृथ्वी को मापनेवाले बिष्णुके समीपमें प्राप्तहुये ३७ तब पैर और हाथों के तलवों करके सब दैत्योंको मथके तीन पैरोंसे स्वर्गलोकको ३८ और बड़े शरीरवाले रूपको धारणकर पृथ्वी को भगवान् हरते भये ३९ और त्रिलोकीको हरनेके वक्त बिस्तृतरूप वाले बिष्णुको सूर्यके समान कांतिहुई ४० और पृथ्वी को बिक्रमण करनेके वक्त तिस बिष्णु के चंद्रमा और सूर्य दोनों चूंचियों के मध्यस्थान में स्थित हुये ४१ और आकाश में प्रक्रमण करनेके वक्त बिष्णुके सक्थि देशमें चन्द्रमा और सूर्य स्थित हुये अर्थात् कटिके समान भाग में स्थित हुये ४२ और बिष्णुके अतिबिक्रमण करनेके वक्त चन्द्रमा और सूर्य पादमूलमें स्थितहुये ४३ ऐसे अमित बीर्यवाले विष्णु के यशको ब्राह्मण कहते हैं ४४ पीछे सब लोकोंको जीतके और बहुतसे दैत्योंको मारके लोक नमस्कृत बिष्णु भगवान् इन्द्रके अर्थ पृथ्वी देतेभये ४५ और पृथ्वी तलके नीचेसुतल नाम पाताल बलिराजा के निवास के अर्थदेतेभये ४६ और बलि राजा उत्तम मतिको प्राप्तहो पातालमें बासकरनेलगा ४७ और तहांपरम ध्यानमें स्थितहुआ बलिराजा बिष्णुभगवान्से वचनकहनेलगा ४८ कि हेदेव मुझे क्या करना चाहिये आपबिस्तार से बर्णनकरो ४९ तब बलिराजासे बिष्णु भगवान् कहनेलगे हेमहा भागतेरे अर्थबर देउंगा तू वरकोमांग ५० मैं प्रसन्नहुआ तेरा कल्याणहो और मनो वांछित फलको प्राप्तहो ५१ और इन्द्रके बचनको कभीभी हंसना नहीं मैंतेरेको आज्ञादेताहूं ५२ तूसुखको प्राप्तहोगा ऐसेकहके फिर बलिराजाको मधुरबाणीसे सांत्वन करनेवाले और सबलोकको करने वाले ऐसेविष्णु कहनेलगे ५३ जोतैंने अपनेहाथसे जलदिया और मैंने वह जलग्रहणकिया इसवास्ते दैत्य और देवताओं से तू नहीं

मरेगा ५४ और सुतलनाम पाताललोकमें सबदैत्यगणोंके संग तू मेरे प्रसादसे वासकर ५५ और देवताओं का देव और अतितेज वाला ऐसे इन्द्रकी शिक्षाका नाश नहींकरना मेरीशिक्षा को मानके ५६ और तू सब देवताओंको पूजा करनी इसकरके हे महाभाग मनो वांछितरूप दिव्य कामनाओंको तू प्राप्तहोवेगा ५७ और इसलोकमें और परलोकमेंसुखको और नानाप्रकारके स्थानोंको ५८ और दैत्यों के राजपनेको और नानाप्रकारके भोगोंको और दक्षिणा वालेयज्ञों को तू मेरे प्रसादसे प्राप्तहोवेगा ५९ और जोतू मेरीकही मर्यादाको उल्लघनकरेगा तो तेरेको अतिबलवाले सर्प अपनेफणोंसेमारेंगे६० इसवास्ते देवताओंका पतिइन्द्र तेरेको नमस्कार करनेयोग्यहै ६१ और मेरावड़ा भ्राता और देवताओं में श्रेष्ठ ऐसे इन्द्रकी शिक्षासब कालमें ग्रहण करनी उचितहै ६२ तब बलि कहनेलगा हे देवदेव हे महाभाग हे शंखचक्र गदाधर हे सुरासुर गुरु श्रेष्ठ हे सबलोक महेश्वर ६३ पाताल में वास करनेवाले मेरेको भाग वर्णनकर और कैसेमें तहांस्थिति करूं और मेरे भोजन के अर्थ मेरेको क्या मिलेगा ६४ जिस करके अक्षय मेरी तृप्तहोवे तब विष्णु भगवान् कहनेलगे ६५ हे दैत्यसत्तम वेदको जाननेवालेके विनाश्राद्ध किया और व्रतके विनावेदका पाठकिया ६६ और दक्षिणा रहित यज्ञ और ऋत्विक् के विनाहवन और श्रद्धाके विनादान किया ६७ और संस्कारसे रहित हवि अर्थात् द्रव्ययेछः भागतेरेहैं ६८ और मेरेसे वैरकरने वालोंका और मेरेभक्तों से वैरकरनेवालों का पुण्य और क्रयविक्रय करनेवाले ६९ अग्निहोत्रियोंका पुण्य और श्रद्धा से रहितदान और पूजन यहसब है दैत्येंद्र मेरे प्रसाद से तेराभाग होगा ७० वैशंपायन कहनेलगे ऐसेविष्णु के वचनको सुनके ऐसे होहो इस वचनको कहके और विष्णुकी आज्ञाको प्रतिपालन करके पाताल लोकमें प्रवेश करताभया ७१ पीछे इसीकालमें देवताओंसेपूजित विष्णु भगवान् राज्यका विभाग करनेलगे ७२ अर्थात् इन्द्रको पूर्वदिशाको अमित तेजवाले इन्द्रके अर्थदेतेभये ७३ और

दक्षिण दिशाको पितरोंका राजा धर्मराजके अर्थ देतेभये और पश्चिम दिशाको बरुणजीके अर्थदेतेभये और उत्तर दिशाको यक्षोंका राजा कुबेरके अर्थदेतेभये ७४ और नीचे के लोकोंको शेषनागके अर्थ देते भये ७५ और ऊर्ध्व दिशाको चंद्रमाके अर्थ देतेभये ७६ ऐसे बल-वालोंमें उत्तम विष्णु त्रिलोकीका विभागकर देवताओं के शोक को दूर करतेभये ७७ ऐसे सबप्राणियोंमें इन्द्रकी प्रतिष्ठाकर महर्षियों से पूज्यमान बामनजी स्वर्गको प्राप्त होतेभये ७८ और अतितेज-वाले बामनजी जब गमन करतेभये तब सब देवते इन्द्रको अगाड़ी कर आनंदित भये ७९ वैशंपायन कहनेलगे जब बामनजी बलि राजाको सातशिरों वाले और कंवल अश्वतर इनआदि नामोंवाले सर्पों से बांधके स्वर्ग में चलेगये ८० तबनागों के बंधनसे पीड़ित रूप बलि राजाके समीपमें यदृच्छा करके नारदमुनि प्राप्तहुआ ८१ तब कृच्छ्रगत बलिराजाकोदेख दयासेयुक्त नारदमुनिकहनेलगे ८२ हे दानव श्रेष्ठतेरे अर्थ इसपीड़ासे छूटने का उपायदेताहूं ८३ देव-ताओंका देवता और वासुदेव नामसेविख्यात और नहींहै आदि और अंतजिसके ८४ औरअक्षयअविनाशी ऐसे विष्णुकेस्तोत्रकातूवि-शुद्ध अंतरात्माकरके तद्गतमनको लगा ८५ पाठकर तत्काल इस दुःखसे छूटजावेगा ८६ तब विरोचनकापुत्र बलिराजा अंजलीबांध मोक्षविंशकस्तोत्र को नारदजीसे पढ़ताभया ८७ पीछे नारदजीसे कहेहुयेतिसस्तोत्रको पढ़नेलगा ८८ जिसकरके इसपृथ्वीकाउद्धार हुआथाअबजिसस्तोत्रको बलिराजा जपतेभये वहस्तोत्रबर्णनकिया जाताहै ८९ और फलकीप्राप्तिकेवास्ते संस्कृतरूपस्तोत्रलिखागयाहै नमोस्त्वनंतपतयेअक्षयायमहात्मने जलेशयायदेवायपद्मनाभायवि-ष्णवे ९० सप्तसूर्यवपुःकृत्वात्रीन्लोकान्क्रांतवानसिभगवान्कालका लस्त्वंतेनसत्येनमोक्षय ९१ नष्टचन्द्रार्कगगनेक्षीणयज्ञतपःक्रियेपुन श्चिंतयसेलोकांतेनसत्येनमोक्षय९२ब्रह्मरुद्रेन्द्रवाय्वग्निसरिद्गुजग पर्बताः त्वत्स्थादृष्टाद्विजेन्द्रेणतेनसत्येनमोक्षय ९३ मार्कण्डेनपुरा कल्पे प्रविश्यजठरंतव चराचरगतंदृष्टंतेनसत्येनमोक्षय ९४ एको

विद्यासहायस्त्वंयोगीयोगमुपागतःपुनस्त्रैलोक्यमुत्सृज्यतेनसत्येनमोक्षय ९५ जलशय्यामुपासीनोयोगनिद्रामुपागतःलोकांश्चिंतयसेभूपतेनसत्येनमोक्षय ९६ वराहरूपमास्थायवेदयज्ञपुरस्कृतं धराजलाद्धृतायेनतेनसत्येनमोक्षय ९७ उद्धृत्यदंष्ट्रयायद्गांत्रीन्पिण्डाकृतवान्पित्वंपितॄणामपिहरेतेनसत्येनमोक्षय ९८ प्रदुद्रुवुःसुराःसर्वेहिरण्याक्षभयार्दिताः परित्रातास्त्वयादेवतेनसत्येनमोक्षय ९९ दीर्घवक्त्रेणरूपेण हिरण्याक्षस्यसंयुगे शिरोजहारचक्रेणतेनसत्येनमोक्षय १०० भग्नमूर्द्धास्थिवक्षस्को हिरण्यकशिपुःपुरा हुंकारेणहतो दैत्यस्तेनसत्येनमोक्षय १०१ दानवाभ्याहतादेवा ब्रह्मणःपश्यतः पुरापरित्रातात्वयादेवतेनसत्येनमोक्षय १०२ कृत्वाहयशिरोरूपंहत्वातुमधुकैटभौब्रह्मणेतेर्पितावेदास्तेनसत्येनमोक्षय १०३ अपान्तरतमानामजातोदेवस्यवैसुतःकृताश्चतेनवेदार्थास्तेनसत्येनमोक्षय १०४ देवयज्ञाग्निहोत्राणिपितृयज्ञहवींषिचरहस्यंतवदेवस्यतेनसत्येनमोक्षय १०५ ऋषिर्दीर्घतपानामजात्यंधोगुरुशापतः त्वत्प्रसादाच्चचक्षुष्मांतेनसत्येनमोक्षय १०६ ग्राहग्रस्तंगजेन्द्रंचदीनंमृत्युवशेस्थित भक्तंमोक्षितवांस्त्वंहितेनसत्येनमोक्षय १०७ अक्षयश्चाव्ययश्चत्वं ब्रह्मण्योभक्तवत्सलःउच्छ्रितानांनिहंतासि तेनसत्येनमोक्षय १०८ शंखचक्रगदातूणं शार्ङ्गं गरुडमेवचप्रणादयामिशिरसातेबन्धान्मोचयंतुमां १०९ इस स्तोत्रकेपाठसे प्रसन्नहुये विष्णु भगवान् पक्षियोंमेंउत्तमऔर सर्पोंकोमारनेवाले ऐसेगरुड़जीसेकहनेलगे ११० हेप्रियबलिराजाको बंधनसे छुटा पीछे अतुल पराक्रमवाला गरुड़ पांखोंको फैंकताहुआ जहां बलिराजा स्थित था तिस पृथ्वीके मूलमें प्राप्तहुआ १११ तब गरुड़जीके आगमनको जान बलिराजाको छोड़के गरुड़जीकेभय से पीड़ित सब सर्प भोगवतीपुरी में प्राप्तहुये ११२ पीछे विष्णुके प्रसादसे छुटाहुआ और विष्णुको चिन्तना करनेवाला ११३ और लक्ष्मीसे भ्रष्ट और सर्पोंके बंधनसे रहित ऐसे बलिराजाको गरुड़जी कहनेलगे ११४ हे दानवेन्द्र हे महाबाहो विष्णु तेरेसे कहतेभये हे किंपुत्रजन बांधवों सहित तू पातालमें बस ११५ और यहांसे

र ने दोकोशभी गमननहीं करना जोतू इस प्रतिज्ञ को भेदनकरेगा
तोतेरा मस्तकके सौसौटुकड़े होजावेंगे ११६ ऐसे गरुड़जी के बचन
कोसुन बलिराजा कहनेलगा तिसविष्णुकी आज्ञाको मान समयपै
मैं स्थितहूं ११७ परंतु वही ईश्वर मेरे जीवनेके अर्थ भोजन का
उपाय करो जिस करके यहीं स्थित हुआ मैं पुष्टरहूं ११८ ऐसे
वलिके बचनको सुनके गरुड़जी कहने लगे कि हे राजन् ११६
तेरे जीवनेका उपाय पहले ही विष्णु ने करदिया है१२० अर्थात्
विधिको नहीं जानने वाले० और प्रायश्चित्त को नहीं जानने वाले
और ऋत्विक् संज्ञा से भिन्न ऐसे ब्राह्मण जो यज्ञको करेंगे वह
यज्ञ भागतेराहै १२१ अर्थात् तिस यज्ञ भागको देवते नहीं ग्रहण
करेंगे इस करके पुष्टहुआ तू सुख पूर्वक यहीं बसेगा १२२
तब वैशंपायन कहनेलगे ऐसे बिष्णुके संदेशको वलिराजाके अर्थ
गरुड़जी कहतेभये १२३ इस पूर्वोक्त स्तोत्रको जो पढ़ेगा तिसकेसब
पाप नाशकोप्राप्तहोजावेंगे १२४ और गायको मारनेवाला गोहत्या
से छूटजावेगा और ब्रह्मघ्नब्रह्महत्यासे छूटजावैगा १२५ औरजिसके
पुत्रनहीं होवे वह पुत्रकोप्राप्त होवैगा औरकन्या बांछितरूप पतिको
प्राप्त होवेगी १२६ और लग्न गर्भवाली स्त्रीगर्भ से छूटजावेगी
और गर्भिणी स्त्री पुत्रको जनेंगी १२७ और इसस्तोत्र के प्रतापसे
मोक्षको इच्छावाले योगीश्वेत द्वीप में जाके प्राप्तहोंगे १२८ यह
बिष्णुका स्तोत्र सब कामनाओंका देने वालाहै १२६ और पवित्र
रूपमनुष्य प्रभातमें उठके इस स्तोत्रका पाठकरेगा वहमनुष्य सब
कामनाओंको प्राप्तहोवेगा इसमें संशयनहीं १३० यह वामन अव-
तारवेदको जाननेवाले बिप्रोंके कहनेके योग्यहै १३१ इसबामन के
आख्यानको जो पर्वकालमें भक्तिसे राजा श्रवणकरे तो शत्रुओं को
निश्चयजीते जैसेमहाबलवाला बिष्णु १३२ और उत्तम यश और
सद्गतिको प्राप्तहो और सब प्राणियोंका प्रियहो और धन्यबुद्धि
वाले और गुणवाले ऐसेपुत्रोंको प्राप्तहोवे १३३ और इसस्तोत्रको
पठन करने वाले मनुष्यपै सब कामनाओंकोदेनेवाला १३४ बिष्णु

भगवान् प्रसन्नहो जाताहै ऐसे वेद व्यासजीने कहाहै १२५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्व भाषायां वामनप्रादुर्भावेत्रिषष्ट्य धिकद्विशतोऽध्यायः २६३ ॥

दोसौचौंसठका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा कि हे देवताओं के देवते विष्णुभगवान् महादेव के आलय रूप कैलाश शिखरमें किसवास्ते प्राप्तहुये १ और नारद आदि वृद्धतपस्वियोंने नीललोहित रूप महादेव देखा और हेविप्र उत्तमतपको करनेवाले विष्णुने महादेवका पूजनकिया यहमैंने सुनाहै २ और तहांपुरातन और जगत् केनाथ ऐसेमहादेव और विष्णुकीइन्द्र आदि देवताओंने पूजाकरी ३ और एकआत्मा वाले और जगत्की योनि और सृष्टि और संहार को करनेवाले ४ और आपसकेसमा वेपसे जगत्का पालनामें स्थितहरि और महा देव इनदोनामोंवाले ऐसेइनदोनोंका जैसे कैलाशपर्वतमेंवृत्तांतबीता है ५ और इनदोनों पुरुषोत्तमों को देखके सबऋषि क्याचेष्ठा करते भये यहसव विशेप करके हे सत्तम तुम कहनेको योग्यहो ६ और जैसे पुरातन विष्णुरूप कृष्ण कैलाशमें प्राप्तभये ७ और जैसेसर्पों के भूषणवाले महादेवजी कुछकर्तव्य करतेभये यह सब ध्यान से वर्णनकरो ८ वैशंपायन कहनेलगे हे राजन् जैसे कृष्ण भगवान् कैलाशको प्राप्तभये और जैसेमहा देवजी देखे ९ तिस वृत्तांत को तू सावधान होकेसुन और जैसे कृष्ण भगवान् तपकरतेभये और जैसे मुनिजनभी प्राप्तभये ऐसेइन दोनोंके वृत्तांतको हे नरोत्तम श्र- वणकर १० जैसे वेदव्यासजी मेरेसे कहते भयेहैं गरुड़ बाहनवाले श्रीकृष्णको नमस्कारकरतेसमैं भीकहता हूं ११ यह आख्यानसुश्रुषा से रहित और नृशंस और तपसे रहित और मूर्खइन्हों के अगाड़ी कहना उचित नहींहै १२ और यह आख्यान पुण्यवालों के पुण्य रूपहै और स्वर्ग और यशका देने वालाहै और धन्यहै और सब कालमें बुद्धि और शुद्धिको करने वालाहै १३ और पुण्यात्माओंके

नित्यप्रति ध्यानकरनेके योग्यहै और वेदके अर्थोंसे निश्चितहै १४ इस आख्यानको नारद आदिमुनि नित्यप्रति सेवतेहैं और कैलाश पर्बतमें १५ बिष्णुका और शिवका अद्भुतरूप वृत्तांत हुआहै और जब नरका सुरआदि दैत्योंके समूह मारेगये १६ और कछुक शत्रु शेषरहगये तब श्रीकृष्ण भगवान् पृथ्वीमें शिक्षादेनेलगा १७ और द्वारकापुरीमें वृष्णियोंके साथ बासकरने वाले और रुक्मिणीरानीके संग श्रीकृष्ण वसतेभये १८ पीछे किसी समय में रुक्मिणी के संग रात्रि में क्रीड़ा करने वाले और प्रसन्न हुये विष्णु शयन करनेलगे १९ तब रुक्मिणी कहनेलगी हे देवेश हे माधव सोनाके गहनोंको धारण करनेवाला और आनन्द का देने वाला २० और अतिबलवान् और रूपसे संपन्न और तेरेरूप के समानरूपवाला और वृष्णि बंशवालोंका नेता और अतिबीर्यवाला और तपकासमुद्र २१ और सबशास्त्रके अर्थमें चतुर और राजबिद्या में अतिचतुर इनआदि गुणोंसेयुक्त पुत्रको तेरेसे चाहतीहूं सो तुमदेने कोयोग्यहो २२ और तेरेबिषे सबोंको देनानित्य प्रतिस्थितहै और तू सब जगत्का करताहै और तूही दाताहै और तूहीभोक्ताहै और तूही जगत्पतिहै २३ और सुश्रुषा करनेवाले भृत्योंका तूहीस्वामी है और हेदेवेश जोतेरेबिषे मेरी पूर्णभक्तिहै २४ और मेरेपै अनुग्रह है तो हेजनार्दन वीर्यवाले पुत्रको तुमदेने को योग्यहो २५ वैश पायन कहनेलगे ऐसेप्रिया रुक्मिणीके वचनको सुनके रुक्मिकेशत्रु और यदुबंश में उत्पन्नहोने वाले २६ ऐसे श्रीकृष्ण रुक्मिणीसे कहनेलगे हेमानिनी जैसेपुत्रकी इच्छाकरतीहै तैसेपुत्रको मैंतेरेअर्थ दूंगा २७ और तुमेरी नित्यप्रति भक्तिनीहै इसवास्ते तू संशयमत करनिश्चय शत्रुओंको जीतने वालातेरे पुत्रदूंगा २८ और पुत्रकरके उत्तमलोकोंमें मनुष्य प्राप्त होतेहैं और पुत्रनामहै नरकका अथवा दुःखका २९ तिससेजो रक्षाकरे तिसको पुत्रकहतेहैं ऐसेपुत्रकोइस लोकमें औरपरलोकमेंचाहतेहैं और हेप्रिये पुत्रवालेमनुष्यका अनंत श्रमरूप लोकप्राप्त होतेहैं ३० और प्रथम पतिभार्य्यामें प्रवेशकरेहै

पीछेमाता के पेटमें गर्भरूपहोके रहेहै पीछेतिस माताकेसकाश से फिरनये रूपको धारणकर दशयेंमहीनेमें जन्मताहै ३१ और पुत्र वालेमनुष्यसे इन्द्रभी भयमानताहै और पुत्रसे रहित मनुष्य उत्तम लोकोंकोनहीं प्राप्तहोसक्ता परंतु कुपुत्रसे बंध्याभार्य्या रहनी उत्तमहै और कुपुत्रसे नरक होताहै और सुपुत्र से स्वर्गहोताहै इसवास्ते विनीत श्रुतवाला दयावान् ३३ और बिद्यासे विनय होताहै इस वास्ते विद्यावाला सुधार्मिक ऐसे पुत्रकी कामना वाला पुरुष इच्छा करे ३४ इसवास्ते विद्यावान् और धार्मिक ऐसेपुत्र को तेरे अर्थदेऊंगा अब पुत्रकीप्राप्तिकेअर्थ पर्व्वतोंमें उत्तम कैलाश पर्वत को गमनकरताहूं ३५ तहांनील लोहित रूपमहा देवकी उपासनाकर प्राणियोंपै दया करनेवाले महादेवजी के सकाश से पुत्रको प्राप्त हूंगा ३६ और तपसे ब्रह्मचर्य्यसे महादेवजीको प्रसन्नकरूंगा ३७ सो महादेवजीको देखनेकेअर्थ अबहीं मैं गमन करताहूं और तप करके प्रसन्नहुआ महादेव मेरेको पुत्रदेवेगा ३८ तहांगमन कर पार्वती सहित महादेवको नमस्कार कर पवित्र मुनियोंसे युक्तपो मयी ३९ और अग्नि होत्रोंसे आकुल और दिव्य गंगाजलसे प्लावितमृग और पक्षियोंसेयुक्तसिंह और हाथियोंकेसैकड़ेसे आकुल ४० और वडबेरीके फलोंसे पूरित और वानरों करके शोभितवृक्षों वाली और वेत्रआदि से आरूढ़ महावृक्षों वाली और केलाओं से मंडित ४१ और वेदोंकेतत्त्वार्थ के विचार में निपुण और प्रमाणमें निपुण ४२ ऐसेमुनियों करके युत और यह एकहै और यह तत्वहै ऐसे निश्चित मनवाले मुनियोंसे उपास्यमान ४३ और इतिहास पुराण इन्होंको जाननेवाले महर्षि और सिद्धोंसे सेव्यमान और स्वर्गको जानेके वक्त इस शरीरको त्यागके ४४ तब प्रसिद्ध सुकृत स्थानरूप ऐसी वदरी पुरीमें प्रवेश कर स्थित हूंगा ऐसे कहके श्रीकृष्ण विरामको प्राप्तभये ४५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांकैलाशयात्रायांचतुःषष्ट्यधिक द्विशतोऽध्यायः २६४ ॥

द्वोसौपैंसाठका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे जबरात्रि व्यतीतहुई और प्रभात होगया तब गमन करनेकी इच्छावाले श्रीकृष्ण अग्नि में हवनकर और दक्षिणा दान दे १ और गौओं का दान ब्राह्मणोंके अर्थ देके और ब्राह्मणोंको नमस्कारकर अपने बैठनेके स्थानमें प्रवेश करतेभये २ तहां सुंदर आसनपेस्थितहो सबवृष्णिवंशको और बलदेव सात्यकि कृतवर्मा शठ सारण ३ उग्रसेन और नीतिमें कुशल और जिस की बुद्धिके आश्रयहो सबदेवते सुखपूर्वकजीवतेहैं ४ ऐसा और सब यदु और सबवृष्णियों का नेता और धर्ममें तत्पर और जिसकी नीतिसे देवतेभी भय मानतेहैं ५ ऐसा और जिसकी बुद्धिके वशसे समस्त पृथ्वीको शिक्षित करतेभये ऐसा और वृष्णियों में श्रेष्ठ और बीर और देवताओंके समान कांतिवाला ६ ऐसा उद्धव और अन्य भी सब यादव इन्होंसे श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे हेयादवाः मेरे बचनको तुम सबसुनो ७ और हे उद्धव मेरेपिताने जोमेरे अर्थवचन कहाहै वहभीसुन दुष्टोंके निग्रह करनेमें ८ मैंनेबाल्य अवस्था से यत्नकियाहै सोप्रथम पूतना मारीहै पीछेकेशी मैंने बालकहीमेंमारा है ९ पीछेगोवर्द्धन पर्वत धारण कियाहै और गौओंकी प्रतिपाल करीहै पीछे इन्द्रनेमेरा अभिषेक कियाहै १० पीछेचाणूर मुष्टिककर के सहित कंसभी माराहै और उग्रसेनका अभिषेक कियापीछे द्वार का पुरीबसाईहै ११ और भी बहुतसे बलवाले राजामैंनेमारेहै और जरासंध राजाभी बलवाले भीमसेनके हाथसे मैंनेमरवादियाहै १२ और गोमंत पर्बतसे गमनकरने वाले मैंनेयुद्धमें शृगाल राजाकोभी माराहै १३ और बीरदुरात्मा ऐसानरका सुरभी मैंनेमाराहै ऐसे निष्कंटक लोकमैंने करादियाहै १४ परंतु भौमासुरका सखा और बीर और बीर्य्य बालोंकानेता और सबकालमें मेराबैरी १५ और द्रोणाचार्यका शिष्य और बलवाला और ब्रह्मास्त्रको जानने वाला और पंडित और शास्त्रोंकोजाननेवाला और नीतिवाला और सबों

कानेता और यत्नवाला १६ और योद्धा और युद्धमेंप्रियतामानने वाला और मानोंदूसरा परशुरामजीहै ऐसा और मेराएकांत द्वेषो और सबकालमें मेरेछिद्रको ढूंढ़नेवाला १७ ऐसापौंड राजाछिद्रको प्राप्तहो पुरीको पीड़ितकरेगा और वह अल्पसाध्यराजानहींहै १८ इसवास्ते हेयादवो तुमधनुषबाणआदिसे सावधानरहियोजैसे पौंड राजा इस द्वारकापुरीको बाधेनहीं १६ और किसी कारणसे मैं कैलाशको महादेवजी के देखनेके अर्थजाताहूं २० जबतकमेराआग मनहो तबतक सावधानरहो और मेरेसेरहित इस पुरीको जानके २१ पौंडराजा इस पुरीमेंआके युद्धकरेगा और वह राजा इसपुरी को यादवोंसे रहित करसक्ताहै २२ इसलिये तलवार पाश फरसा भिंदिपाल इन आदि शस्त्रोंको धारणकर सावधानरहो २३ और द्वारकापुरीके सब दरवाजोंको किवाड़ोंसे वंदकर एक बड़े द्वारको जाने आवनेके वास्ते खुलारक्खो २४ और जो राजाके सन्मुखमें गमनकर वह छापालगवाके गमन करसके और छापासे रहितद्वार पालके देखते कोईभी प्रवेशनहीं करसके २५ जबतक मेरा आगमन नहो तबतक ऐसेहोना चाहिये और न सिकारखेलन जानाचाहिये और न पुरीसे बाहर क्रीड़ा करनी चाहिये २६ और आने जानेमें अपने पराये पुरुषको जाननाचाहिये जबतक मेरा आगमनहो २७ तबतक ऐसे सब यादवोंको कहके फिर सात्यकीसे कहतेभये २८॥

इतिश्रीहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलाशयात्रायांपंचषष्ट्यधिकद्विशततोध्यायः२६५

दोसौछाछठका अध्याय ॥

श्रीकृष्ण भगवान् कहनेलगे हे सात्यके मेरे वाक्यकोसुनो और हेयुधाम्वर सावधानहोजा और तलवार गदाधनुषबाण इन आदि हथियारोंको ग्रहणकर १ इस पुरीकी रक्षाकर और हे प्रियतूने रात्रिमें शयनकरनानहीं २ और हेशास्त्रकुशलतूने शास्त्रकोव्याख्या भी करना नहीं और वादीजनोंके संग वादभी करनानहीं ३ औरतूही योद्धाहै और तूही बलवालाहै और तूही धनुर्वेदको जानने वालाहै

तैसे करना कि हम उपहास्यताको प्राप्तहोवेंनहीं ४ तब सात्यकी कहनेलगे हे जनार्दन अपनी शक्ति पूर्वक तेरे बचनोंकोकरूंगा और हेजगन्नाथ तेरी आज्ञाको सबकालमें धारण करूंगा ५ और हे माधव बलदेवजीके भृत्यकेसमानहोके बिचरूंगा और जबतक आप का आगमनहोगा तबतक यत्नसे रहूंगा ६ और हे गोविंद तुम्हारी कृपाजोमेरेमें रहेगी तो शत्रुओंके निग्रह करनेमें मेरेको कुछभी दुस्साध्य नहींहै ७ जो इन्द्र धर्मराज कुबेरवरुण इन देवताओंकोभी जीतसक्ताहूं फिरएकमनुष्यरूप पौंडराजाको जीतनेकीकौनकथाहै ८ सो हे प्रिय तू अपने कार्य के अर्थ गमनकर मैं निरंतर सावधान हूं पीछे श्रीकृष्ण उद्धवजीसे कहनेलगे ९ हे उद्धव तू यत्न पूर्वक मेरे बचनको करेगा सो इस पुरीकीरक्षाकरना १० और सावधानहोके हमारीसहायकरना औरतेरेआगाड़ी कहनेमें मेरेकोलाजआतीहै ११ क्योंकि समग्र बिद्याके पारकात नेताहै इसलिये बिद्यावालेके सन्मुखकौनशिक्षादेनेको समर्थहै और कार्य और अकार्यको अच्छी तरहसे आप जानतेहैं इसवास्ते आपके सन्मुख कुछ बिशेषकहना उचित नहीं १२ तब उद्धव कहनेलगे हे गोबिंद आप कैसे मेरे प्रतिकहतेहैं आपको प्रसन्नताहै या प्रीतिहै १३ और हे जगन्नाथ आपके बिस्तारको मैं जानताहूं जिसपै तुम प्रसन्नहोतेहो तिसको क्या नहींहोता १४ और तुम सबजगत्के कर्त्ता और हर्त्ताहो और सब कार्यों के उत्पत्ति स्थानहो १५ और वक्ता और श्रोता और प्रमाणकोजाननेवाले और धाता और ध्यानमयऔर ध्येयऐसेतुम्हारे को ब्रह्मको जाननेवाले कहतेहैं १६ और शत्रुओंके तुम जीतने वालेहो और देवताओंकी तुम रक्षा करनेवालेहो और तुम्हारीही कृपासे हतहोगयेहैं बैरी जिन्होंके ऐसे हम जीवतेहैं १७ और नीति को जाननेवालेभी तुमहो और सब कार्योंके नीतिरूपआपतुमहो १८ और तुम्हारेबिना नीतिको जाननेवाला कौनहै ऐसे मेरी निश्चित मतिहै १९ और यह नीति मार्ग दुर्गंठहै ऐसेनीतिके जाननेवालों नेकहाहै २० और हे जनार्दन चारप्रकारसे नीतिकहीहै सामदाम

दंड भेद सो दंडके देनेयोग्यों को दंडदेना उचितहै और सामान्य सामउचितहै २१ और बलवालोंमें देना उचितहै और इन तीनों से जो वशमें नहीं आवे तहां भेदकरना उचितहै २२ ऐसे नीतिवालों का मतहै और तहां तहां सब कार्योंमें तेरेको प्रमाणरूप मानते हैं २३ यहां बहुत कहनेसे क्याहै सबकार्य तेरेईविषे समर्पितहै २४ वैशंपायन कहनेलगे कि ऐसे कहके नीतिको जाननेवाला उद्धवशांत हुआ तब श्रीकृष्ण २५ यादवोंकी सभामें बड़ी भुजावाले बलदेव जीसे और राजा उग्रसेनसे और कृतवर्मासे कहतेभये २६ पीछे फिर श्रीकृष्ण बलदेवजीसे कहनेलगे कि तुम्हारेको प्रमादनहीं करना सब कालमें यत्नवालेरहो २७ और हे महाबाहो जहां तुम स्थित रहोगे तहां जगत्को पीड़ानहीं होती इसवास्ते हे आर्य सबकालमें गदा को धारणकर २८ सब यत्नसे इस द्वारकापुरीकी रक्षाकरो और जैसे हम उपहास्यताको प्राप्तनहीं होवें तैसेकरो २९ और सबकाल में उत्साह करना और यत्नसेभी उत्साहका त्याग नहीं करना इस वचनको सुनके बलदेवजी श्रीकृष्णसे कहनेलगे कि आपकाकहना ठीकहै ३० पीछे सब यादव अपने २ स्थानोंको जातेभये तब कैलास पर्वतको जानेके अर्थ श्रीकृष्ण भगवान् गमन करने की इच्छा करनेलगे ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांषट्षष्ट्यधिक द्विशतोऽध्यायः २६६ ॥

दोसौसरसठिका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे तदनंतर श्रीकृष्ण पक्षियोंमें श्रेष्ठ गरुड़ जी को चिंतवन करतेभये अर्थात् हे गरुड़जी जल्द आवो १ पीछेउसी वक्त वेदोंका जाननेवाला और अति बलवान् और योग शास्त्रको जाननेवाला २ और यज्ञमूर्त्ति और पुराणात्मा और साममूर्द्धा और पवित्र और ऋग्वेद रूप पांखोंवाला और पिंगल और जटिल के समान आकृतिवाला ३ और तांबाके समान तुंडवाला और अमृत

को हरनेवाला और शत्रुओंको जीतनेवाला और महा शिरवाला और सर्पोंका बैरी और कमलके फूलोंके समान नेत्रोंवाला और साक्षात् बिष्णु भगवान्के समान मानो दूसरा ४ बिष्णु और श्री कृष्णका बाहन और दैत्योंकी स्त्रियोंके गर्भको खंडन करने वाला और राक्षस और दैत्योंके समूहको पांखोंके बलसे जीतनेवाला ५ ऐसा गरुड़जी श्रीकृष्णके अगाड़ी प्रकटहो गोड़ोंसे पृथ्वीमें पड़ हे विष्णो हे जगत्पते ६ हे देवदेवेश हे स्वामिन् हे हरे ऐसे कहता हुआ नमस्कार करनेलगा तब श्रीकृष्ण अपने हाथसे स्पर्श करते भये और कहने लगेकि हे गरुड़ तेरासुंदर आगमन हुआ ७ और हे प्रिय महादेवजीको देखनेकेअर्थ कैलास पर्वतको गमनकरूंगा ८ तब गरुड़जी कहनेलगे कि महाराज ठीकहै तब गरुड़जीपै श्रीकृष्ण सवारहोके समीपमें स्थितहुये यादवोंसे कहनेलगे ९ कि हे प्रियो तुम स्थितरहो तब ऐशान्यदिशाको भगवान् गमन करनेलगे पीछे बड़े वेगकरके त्रिलोकीको कंपावने वाला १० और पैरोंसे समुद्र को क्षोभित करनेवाला और पांखोंसे सब पर्वतोंको कंपावने वाला और श्रीकृष्णको बहनेवाला ११ ऐसा गरुड़ समुद्रको क्षोभितकरता भया पीछे आकाशमें स्थित देवते और गंधर्व इष्टरूप बाणियों से श्रीकृष्णकी स्तुति करनेलगे १२ अर्थात् यहांभी फलकी प्राप्ति के अर्थ संस्कृतमें स्तोत्रप्रकाशित कियाजाताहै ॥ जयदेवजगन्नाथजय विष्णोजगत्पते ॥ जयाजयनमोदेवभूतभावनभावन १३ नमःपरम सिंहायदैत्यदानवनाशन ॥ जयाजयहरदेवयोगिध्येयपरागते १४ नारायणनमोदेवकृष्णकृष्णहरेहर ॥ आदिकर्तःपुराणात्मनब्रह्मयोने सनातन १५ नमस्तेसकलेशायनिर्गुणायगुणात्मने॥भक्तिप्रियायभ क्तायनमोदानवनाशन १६ अचिंत्यमूर्त्तयेतुभ्यंनमस्तेसकलेश्व इस स्तोत्र करके १७ देव गंधर्व ऋषि सिद्ध चारण श्री कों स्तुति करतेभये पीछे स्तुति वाक्यों को सुनते हुये कृष्ण देवते और मुनियोंके संग जहां पहिले लो नर कामनाकरके दशहजार बर्षोंतक उग्रतपको कर

नारायण नामसे दो शरीरोंको उत्पन्न करतेभये तहां प्राप्तभये २०
और जहां सबनदियोंमें श्रेष्ठ और पवित्रगंगाजी मध्यभागमेंचलती
हैं और जहां वेदार्थोंकेतत्त्वको जाननेवाले वृत्रासुरको २१ इंद्रमारके
ब्रह्महत्या दूर करनेके अर्थ दशहजार बर्षोंतक तप करताभया है
और जहां विष्णुका ध्यानकर सिद्ध स्थित रहतेहैं २२ और जहां
रावणको मारके रामचंद्र शिक्षादेनेकी इच्छाकरके घोर तपकोकरते
भयेहैं २३ और जहां पवित्ररूप देवते और मुनि सिद्धिको प्राप्त
होतेहैं और जहां नित्यप्रति साक्षात् विष्णु बसतेहैं २४ और जहां
मुनि गणोंके सहित यज्ञहोतेहैं और जिसके स्मरण करनेसे मनुष्य
स्वर्गको गमन करताहै २५ और जिसको मुनिजन साक्षात् स्वर्ग
की सीढ़ी मानतेहैं और जहां बसके शत्रुभी मित्र भावको प्राप्त हो
जातेहैं २६ और जो पुण्यशीलोंका और उत्तम धर्मवालोंका परम
स्थानहै और जहां बिष्णुकी आराधनाकर देवते स्वर्गमें प्राप्तभये
हैं २७ और जिसको मत्सरता रहित मुनिजन सिद्धक्षेत्र कहते हैं
ऐसी बिशाला बदरीको देखनेके अर्थ २८ सायंकालमें देवताओं
केगण और तत्त्वोंको जाननेवाले मुनियोंकेसंग ऋषियोंसे जुष्ट और
महापवित्र ऐसे तपोवनमें प्रवेश करतेभये २९ अर्थात् अग्निहोत्रों
से आकुल कालहो रहाहै और पक्षियोंके बोलनेसे संकुल काल हो
रहाहै और सब पक्षी अपने अपने घोंसलोंमें स्थित होरहे हैं और
गायें दुहीजातीहैं ३० और अपने अपने आसनोंपै मुनिजन स्थित
होरहेहैं और समाधिमेंस्थित होनेवाले मुनिजन विष्णुको चिंतवन
करनेलग रहेहैं और जहां घृत गर्म होरहाहै और जहां अग्नि
प्रज्वलित होरहाहै और जहां चारोंतर्फ अग्निमें हवन होरहाहै ३१
और जहां अतिथिकी पूजा होरहीहै ऐसी वेलामें देवताओं के संग
कृष्ण ३२ मुनियोंसे जुष्ट और तपोमयी ऐसीबदरीपुरी अर्थात्बद्-
रिकाश्रममें प्रवेशकरनेलगे ३३ तब आश्रमकेमध्यभागमेंश्रीकृष्णप्रवेश
करिके उत्तरदीपकाओंसे दीपितप्रदेशमें प्रथमस्थितहुये ३४ ॥

इति श्रीमहाभारते हरिवंशे भविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांसप्तषष्ट्यधिकद्विशतोऽध्यायः २६७ ॥

दोसौअरसठका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे तब देवताओंके देव श्रीकृष्णको स्थितहुये मुनिगण देख अग्निहोत्रोंको समाप्तकर और अतिथियों का पूजन कर १ और कितनेक दीर्घकालसे तपकरनेवाले और कितनेक समाधिमें निश्चय करनेवाले और कितनेक जटाको धारणकरनेवाले और कितनेक मुंडको मुंडानेवाले और कितने कनसोंसे व्याप्त २ और कितनेक मज्जासे रहित और कितनेकरससे रहित ३ औरकितनेकवेतालोंकी तरहरहनेवाले और कितनेकपत्थरसेकूटहुये पदार्थको खानेवाले और कितनेक परभिक्षा करनेवाले ४ और कितनेक वेद विद्याव्रतों से स्नान और कितनेक भोजनको नहीं करानेवाले और कितनेक सबकालमें बिष्णुका स्मरण करनेवाले ५ और कितनेक आसनमुक्तिवाले और कितनेक ध्यानमेंतत्पर और कितनेक ध्यानमेंमन से बिष्णुको देखनेवाले ६ और कितनेक तपहीको धन माननेवाले और कितनेक एक वर्षमें भोजन करनेवाले और कितनेक जलमें बिचरनेवाले और कितनेक इन्द्रकोभी भय देनेवाले और कितनेक श्रुति स्मृतिमें परायण ७ और बशिष्ठ बामदेव रैभ्य धम्म जाजली काश्यप कण्व भरद्वाज गौतम ८ अत्रि अश्वशिरा शंखनिधि कुणि वेदव्यास पवित्राक्ष याज्ञवल्क्य९ कक्षीवान् अंगिरा दीर्घतपाअसित देवल और महातप करनेवाला वाल्मीकि१० इन आदि नामोंवाले ऐसेमुनि अर्घको ग्रहणकर श्रीकृष्णको देखनेके अर्थ अपनी अपनी कुटियोंसे आके ११ भक्तिसे नम्रहुये मुनिभक्त वत्सल श्रीकृष्ण को प्रणाम करतेभये १२ और कहने लगे हेकृष्ण हेकृष्ण हे देवदेव हेप्रणवात्मन् हे जगन्नाथ हेहरे हम शिरसे नमस्कार करतेहैं १३ और हे कृष्ण हे विष्णो हे केशव हे हृषीकेश तेरेको सब मुनि जगत्के पति मानतेहैं सो यह अर्घ्य यह पाद्य यह आसन ग्रहणकरोऔर तैंने हमसब को कृतकृत्य करदियेहैं इसवास्ते हेदेव हमारेपरप्रसन्नरहो १४ और हमक्याकरैं और क्या हमारा कृत्यहै

और हमसे कोई दोषहुआहै कि ऐसे श्रीकृष्णके देखतेहुये सब अंजली बांधके कहतेभये १५ तब सबदेवताओंसे युक्त श्रीकृष्ण कहने लगे कि हे मुनिवरो तुम्हींने सब सुकृतकियाहै इस वास्ते तुम्हारा तप बढ़तारहै १६ ऐसे कहतेहुये और तिस गरुड़जीके संग प्रसन्न हुये रात्रिमें श्रीकृष्ण आसनको प्राप्त होतेभये १७ पीछे सब मुनियों से अग्निहोत्रमें तपमें भृत्योंमें कुशल पूछनेलगे १८ तब सब मुनि श्रीकृष्णके अर्थ कुशल बतातेभये १९ पीछे नीवार धान्य फल मूल इन आदिसे सबदेवताओंका और विशेषकरके श्रीकृष्णकामुनिजन आतिथ्य करतेभये २० सो आतिथ्यको प्राप्तहोके श्रीकृष्ण अति प्रसन्नहुये २१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायां अष्टषष्ट्यधिकद्विशतोऽध्यायः २६८ ॥

दोसौउनहत्तरका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे नहीं जानीजावेगति जिसकी ऐसे विष्णु भगवान् जहां पहिले तपकरतेभये १ गंगाजीके उत्तर तीर पै तिस देशके देखनेको साक्षात् हरि भगवान् तपो वनमेंप्रवेश करतेभये २ तहां मनोरम देशमें प्रवेशकर उत्तमआश्रममें स्थितहोके ३ समाधि में मनको युक्त करतेभये तब देवताओं के ईश्वर श्रीकृष्ण ध्यान करके ४ समाधिमें दीपककीनाईं प्रकाशितहुये तब महा घोर रूप शब्द चारोंतर्फसे प्रकट होनेलगा ५ कि खाओ खाओ प्रसन्न हो इन मृगोंको प्राप्तहो और श्रीकृष्णके प्रसादसे सबकुत्तोंको मैंप्रेरता हूं ६ और विष्णु कृष्णहरि ईश अच्युत यह स्थितहै सो हे विष्णो हे देवेश हे स्वामिन् हे माधव हे केशव तेरेअर्थ नमस्कारहो ७ इस आदिघोर शब्दमृगोंके पीछे भागतेहुयोंका और भयवाले मृगोंका और ऋच्छोंका और गैंड़ोंका ८ और गर्जनेवाले हाथियोंका जहां तहांसेबढ़ताहुआ और महावायुसेक्षुभितहुये समुद्रकेशब्दकेसमान ९ और त्रिलोकीमें त्रासका देनेवाला ऐसा शब्द रात्रिमें प्रकट होने लगा तब तिस शब्दको श्रीकृष्णसुनके १० समाधिके क्षोभकोप्राप्त

हो और श्वासले चिंतवन करनेलगे कि यह महाशब्द क्याहै ११
और मेरीस्तुतिसे संयुक्त किसका यह ऐसा शब्दहै और आश्चर्यहै
इस वनमें शिकारके अर्थ बिचरतेहुये कुत्तोंकाशब्द १२ और सब
मृगोंकाशब्द और मेरी स्तुतिसे मिलाहुआ ऐसा शब्द होरहाहै १३
ऐसे मनमें चिंतवन करके सब दिशाओंको चारोंतर्फसे देख १४
पीछे जहां श्रीकृष्ण स्थित थे तहां मृग भागते हुये आये और तिन्हीं
के पीछे कुत्ताओंका समूह भागताहुआ १५ आया और तहां सैकड़ों
हजारों दीपकोंसे चांदना हो रहाथा इसवास्ते अंधेरा का नाश हो
दिनका समय होगया १६ पीछे भूतोंके समूह तहां दीखनेलगे पीछे
बहुतसे शब्दोंको करनेवाले १७ और मांसको खातेहुये और लोहू
को पीवतेहुये और बिकृत मुखोंवाले और महाघोर ऐसे पिशाच
प्रकटहोतेभये १८ और जहां तहांसे भागतेहुये और बाणोंसे बिंधे
हुये मरनेकेयोग्य और मरेहुये मृगपड़नेलगे १९ ऐसे हजारहोंमृग
तहां प्राप्तहुये जहां श्रीकृष्ण स्थितथे २० और श्रीकृष्ण के चारोंतर्फ
बिकृत आकारवाली और कराल रूपवाली और जिन्होंको देखनेसे
रोमावली खड़ीहोजावे २१ ऐसी और पुत्रोंवाली ऐसी पिशाचोंकी
भार्या प्राप्तहुई और तहां चारोंतर्फको कुत्तोंके गण बिचरनेलगे २२
तब श्रीकृष्ण भगवान् सबोंको देखके आश्चर्यको प्राप्तहो तहांहीं
स्थित रहे २३ और कहनेलगे किसका यह बिस्तारपूर्वक शब्द है
और किसका यह कुटुम्ब यहां प्राप्तहुआ है और कौन मेरी भक्ति
स्तुति कररहाहै और मैंभी प्रीतिवालाहूंगा २४ और जबमैं प्रसन्न
हुआ तब किसको मुक्ति दुर्लभ है ऐसे चिन्तवन करके मनुष्यकी
तरह भगवान् स्थित होते भये २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांजनस्त्र
त्र्यधिकद्विशततोऽध्यायः २६९ ॥

दोसौसत्तरका अध्याय ॥

बैशंपायन कहनेलगे कि पीछे बिकृत मुखवाले और धूलिको

उड़ानेवाले और पिंगल रोमोंवाले और लंबी जिह्वा वाले और बड़ी ठोढ़ीवाले १ और लम्वे केशोंवाले और विरूप नेत्रोंवाले और हीही हाहा ऐसे वोलनेवाले और मांसकी बोटीको खानेवाले और बहुत से रुधिर को पीनेवाले २ और आंतों से वेष्टित अंगोंवाले और लंबे और कृशरूप उदर वाले और लम्बाग्र मान शूल सरीखे शिरको धारण करनेवाले ३ और दोनों भुजाओंसे मुरदों के शिरोंको खैंचनेवाले और नानाप्रकारके हासको हसनेवाले और अपनी जातिके सदृश चेष्टा करनेवाले ४ और बहुतसे रूपों से संयुक्त वचनों को कहने वाले और अपनी जांघों से बड़े बड़े वृक्षोंको कंपानेवाले ५ और सृक्किणी अर्थात् अपने ओष्ठ प्रांतदेश को अपनी जीभसे चाटनेवाले और दांतोंको चाबनेवाले और हाड़ और नसोंसे आकीर्ण और धमनीरूप रज्जुसे बिस्तृत ६ और हे कृष्ण हे कृष्ण हे माधव इन वचनोंको निरंतर कहनेवाले और किस कालमें विष्णुदीखेगा और विष्णु अब कहां स्थित है ७ और मेरा स्वामी श्रीकृष्ण कहां बसताहै और कैसे देखनेको हमयत्नकरैं और किस देशमें वह देवेश रूप ईश्वर बसताहै ८ और कमल केपत्तोंके समान नेत्रोंवाला और साक्षात् इन्द्रका छोटाभ्राता और जिसको ब्रह्मको जाननेवाले विद्वान् साक्षात् ब्रह्मकहतेहैं ६ ऐसा औरजन्म से रहित और बिश्वको रचनेवाला ऐसे ईश्वरको देखनेको हमयत्न करतेहैं और अंतकालमें इसी ईश्वरमें तीनोंजगत् लयहोते हैं १० ऐसे ईश्वरको जल्द हमकैसे देखेंगे और संसारमें अतिघोर रूप और सब जंतुओं करके त्यागीहुई ११ और पिशाचोंके योग्यऔर मनुष्योंके मांस और हाड़ आदिको ग्रहण करानेवाली और सब प्रकारके भयको देनेवाली १२ ऐसी वुरीदशा कैसे हमारेको प्राप्त हुई कि आश्चर्यहै १३ कि पूर्व जन्ममें हमोंने बहुत बुरेकर्म करेहैं जिसकरके इनपूर्वोक्त वुरेकर्मोंमें हमारी प्रीति सबकाल में उपजती है १४ और जबतक यह हम दोनोंसे किया बुराकर्म स्थित रहेगा तबतक प्राणियोंको पीड़ाकरनेवाली और सबोंसे त्यागीहुई ऐसी

दशा हमारी रहेगी १५ और बहुत जन्मोंकरके हमसे बुराकर्म बन आया है इसवास्ते यह घोररूप फल अब भी निवृत्त नहींहोता १६ क्योंकि कुत्तोंके समूहों के संग प्राणियों को मारनेके अर्थ हम सावधानहैं और बाल्य अवस्थामें१७ अज्ञानमें आवृत चित्तवालेप्राणी कृत्य और अकृत्यको नहींजानते और यौबन अवस्थामेंबिषयों करके बचेहुये चित्तोंवाले मनुष्य अपने कल्याण के अर्थ यत्न नहीं करते हैं १८ और वृद्ध अवस्थामें घोररूप ज्वरआदि अनेक प्रकारकी ब्याधियोंसे पीड़ित १६ और नष्ट इन्द्रियोंवाले होके मनुष्यकल्याण के अर्थ यत्ननहीं करतेहैं पीछेमरके विष्ठा और मूत्रसे युक्तगर्भबास में निरंतर बसतेहैं २० पीछे बहुतसे दुःखोंकरके ब्याप्तहुये घोररूप गर्भसे संसारमंडलमें जन्मतेहैं २१ पीछे आपसमें हिंसाकरते हुये और कर्मकासंचय करतेहुये इसदुःख युक्त घोर संसारमें२२ अज्ञान से बहुतसेपापोंको करतेहैं ऐसेसंसारकी महिमा प्राणियोंमें बिस्तृत है२३ और शस्त्रआदि अनेक प्रकारके उपायोंसे अछेद्य अर्थात् कटने के योग्य नहींहै इसवास्ते प्राकृत बुद्धिवाले मनुष्य इस संसार से निवृत्त नहीं होते २४ और इस मनुष्येंद्र को मारके इसके धनको मैं हरूं और इसके धनको चोराय मैं अपना बनालूं २५ और इसश त रूप मनुष्यको झिड़कके धनकोहरूंगा इनआदिमनोरथोंसे ब्याकुल हुये मूर्ख प्राणियोंको पीड़ादेनेके अर्थ यत्न करतेहैं २६ और इस दुःखके मूलरूप संसारका सबकालमें शंखचक्र गदाको धारणकरने वाला२७और आदिदेव और पुराणात्मा और ब्रह्मको जाननेवालों का आत्मा ऐसा बिष्णु औषध है इस वास्ते सब यत्न करके सब कालमें तिस बिष्णुको हम देखेंगे २८ ऐसे बोलतेहुये दोनोंपिशाच बिष्णुके अगाड़ी प्रकट होतेभये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलाशयात्रायां सप्तत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २७० ॥

दोसौइकहत्तरका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे पीछे बिष्णु भगवान् मांसको भक्षणकरने वाले और दीपकाकोधारणकरनेवाले १ऐसेमहाघोररूप दोपिशाचों को देखतेभये और वे दोनों पिशाच सुंदर आसनपै स्थितहुये बिष्णु को देखतेभये २ तब लोकेश्वरोंके ईश्वररूप बिष्णुको देखके और बिष्णुके समीपमें जाके और बिष्णुको मध्यमें कर दोनों पिशाच कहनेलगे ३ हे मनुष्य तू कौनहै और किसका शिष्यहै और कहां से आयाहै और मृगोंसे व्याप्त और मनुष्योंसे रहित और हाथियों से आवृत और पिशाच गणोंसे सेवित और स्वापद प्राणियोंसे और सिंहोंसे सेव्यमान४ऐसे बनमें तू किसवास्ते प्राप्तहुआहै और कुमार अवस्थावाला और सुन्दरअंगोंवाला और साक्षात् मानोदूसराविष्णु है ऐसा और पद्मकेपत्तोंकेसमान नेत्रोंवालाऔरश्याम और कमलके समानकांतिवालाऔर शोभाकापति५औरहमारेको प्रीतिकरनेवाला ऐसातूदेवहैवयक्षहै व गंधर्वहै व किन्नरहै६वइन्द्रहैवकुवेरहै, व यमहैव वरुणहै और ध्यानार्पित मनवालाकी तरह इस बनमें तू कौन है ७ हे मनुष्य यथार्थ करके वर्णनकर मैं जाननेकी इच्छा करताहूं ऐसे पिशाचोंसे पूंछाहुआ श्रीकृष्ण कहने लगा कि यदुबंशमें उत्पन्न होनेवाला और क्षात्र वृत्तमें अनुष्ठित ८ और लोकोंकी रक्षा करने वाला और सबकालमें दुष्टोंको शिक्षा देनेवाला ऐसा मैं क्षत्रियहूं सो महादेवजीको देखनेके अर्थ कैलाश पर्वतको गमन करनेवाला हूं ९ ऐसे मेरा वृत्तांतहै परंतु तुम दोनों कौनहौ यहकहो और इस ब्राह्मणाश्रम में तुम किसवास्ते प्राप्तहुयेहौ १० और पवित्र और नानाप्रकारके विप्रोंसे सेवित ऐसी यह बदरीपुरी विख्यातहै और यह क्षुद्र पुरुषोंसे कहीं भी सेवितनहीं ११ और तपस्वियों से जुष्ट और सिद्धोंसे सेवित ऐसा यह बदरिकाश्रम है यहां कुत्तोंके गण और मांसको भोजन करनेवाले पिशाच नहीं दीखते हैं १२ और यहां मृगनहीं मारनेके योग्यहै और यहां शिकार नहीं खेलाजाताहै

और क्षुद्र कृतघ्ननास्तिक इन्होंका प्रवेश यहां नहीं होसकताहै १३ और इस देशका मैं रक्षा करनेवालाहूं इसमें संशयनहीं और जो व्यतिक्रम होवे जबभीमैं यत्नसे शिक्षा करनेवालाहूं १४ और तुम दोनों कौनहो और कहांको जातेहो और किसकी यह बड़ीसेना है और यहां से अगाड़ी तुम प्रवेश नहीं करना क्योंकि अगाड़ी ऋषि जन बसतेहैं १५ और तपस्वियोंके तपमें बिघ्नहोसकताहै इसवास्ते प्रथम यहीं स्थितरहो और पीछे सुखपूर्वक बोलो १६ और जोमेरे बचनको नहीं मानोगे तोबलसे और बाक्यसे रोकदेऊंगा १७ वैशंपायन कहनेलगे ऐसे पूंछेहुये दोनोंपिशाच कहनेको समीपमें प्राप्त हुये परंतु तिनदोनोंमें जोएक महाघोर और दीर्घबाहुओंवाला १८ ऐसा एक पिशाच हृदयमें जो बचनथा सो कहताभया १९ पिशाच कहनेलगा जगत्केनाथ और जगत्केपति और हरि ऐसे कृष्णको नमस्कार करमैंबर्णन करताहूं तू सावधान मनवाला होके सुन२० और आदिदेव और अज और वरेण्य और अनघ और पवित्र ऐसे बिष्णुका ध्यानकर मैं संपूर्ण कहूंगा जोतू इच्छा कियेहै तैसेसुन२१ मांस को खानेवाला और घोर दर्शनवाला और विकृत और घोर और मृत्युके समान मानों दूसरा मृत्यु २२ और महादेवका मित्र और कुवेर का अनुचर ऐसा मैं घंटाकर्ण नामसे बिख्यात पिशाच हूं और यह मेरा छोटा भ्राताहै और मैं अंतकका भी अंतकहूं २३ और यह बड़ी शिकार बिष्णुकी पूजाके अर्थहै और यह मेरीसेनाहै और कुत्तोंका गणभी मेराहीहै २४ और मैं कैलाश पर्वतसे आया हूं और पाप करनेवाला और पिशाचके वेष करके युक्त २५ मैं निरंतर बिष्णुको दूषितकरताहुआ दोनों कानोंमें घंटाओंको बांध के कि मेरे कानों में बिष्णु का नाम प्रवेश नहीं करे ऐसे चिन्तवन करके २६ पीछे कैलाश पर्वतमें जाके महादेवजीकी आराधनाकर निरंतर महादेवजीकी स्तुति करताभया २७ तब प्रसन्न हुये महादेव मेरेसे कहनेलगे कि बरमांग तबमैंने महादेवके समीपमें मुक्ति की प्रार्थना करी २८ तब मुक्तिकी प्रार्थना करनेवाले मेरेकोमहा-

देव कहनेलगे कि सबोंको मुक्तिका देनेवाला बिष्णुहै इसमेंसंशय नहीं २६ तिस कारणसे वदरिका श्रममें जाके बिष्णुभगवान् की आराधना करनेसे तू मुक्तिको प्राप्तहोगा ३० ऐसे महादेवजीकेकहनेसे तिसीविष्णुको परममानके गरुड़ध्वज रूप गोबिंदको जानता भया ३१ तिससे मुक्तिकी प्रार्थना करनेवालामें इस देशमें प्राप्तहुआहूं अन्यभी मेराकार्य सुन जो तेरेको आश्चर्यहै तो ३२ पश्चिम समुद्रके तटपै यदुवृष्णियोंसे आकीर्ण और समुद्रके तरंगों से आकुल ३३ ऐसी द्वारवती पुरी है तिस पुरीमें हरिभगवान् बसतेहैं तिसको देखने के अर्थ ३४ इन अनुचरोंके संग हम निकसके प्राप्त हुयेहैं सो सबोंका ईश्वररूपबिष्णु हमको अब देखनायोग्यहै ३५ और लोकोंका उत्पत्तिस्थान और संसारकी रक्षा करनेवाला और कर्ता और हर्ता औरजगत्कापति और आदिकाभीआदि और सबों काउत्पत्ति स्थान और कारण ३६ और सबोंका करनेवाला और सबोंके पापोंको हरनेवाला और पुरातन और प्रभुओंकाभी प्रभु और सत्य आत्मावाला और बरका देनेवाला और आदिदेव ऐसे विष्णुको देखनेके अर्थ अब हम सब यत्न कररहेहैं ३७ और जिसके प्रसादसे प्राणी गंधर्व महा सर्प इन्होंका समूह रूप जगत् ऐसा होताभया और देव और जगत्केयोनि और अजन्मा और दुष्टजनोंको पीड़ादेनेवाले ऐसे बिष्णुको देखनेके अर्थ अब हम यत्न कररहेहैं ३८ और जिसके उदरसे यह बिश्व उपजताभया औरप्रलयमें जिसके शरीरमें यह जगत् लयहोगा और जिसके साक्षात् वशवर्ती संसार है ऐसे पुरुषोत्तम रूप विष्णुको देखैंगे ३६ और सब संसारका रचनेवाला और पालनेवाला और देव और हर्ता और भुवनकाईश्वर और हरि और पुरातन और आद्यमें होनेवाला ४० और अबिनाशी ऐसे विष्णुको हम देखैंगे और ब्रह्मा आदिको करनेवाला और भुवनकागोप्ता और पातालकाकर्ता और जिसकी कृपासे शुद्धबुद्धिकी प्राप्तिहोती है ऐसा हरि एक है ४१ और इस संपूर्ण जगत्को निगलके साक्षात् बालककी तरह होके

बड़के पत्रमें स्थितहो पैरोंको फंकताहै और हाथोंको कंपाताहै ४२ और जिसकी नाभिसे सोनाके समान कांतिवाला औरपत्तोंसेसहित कमल प्रकटहुआ तिसमें जगत्की सृष्टिकेअर्थ ब्रह्माजी जन्मेहैं ४३ और जोअपनी डाढ़के अग्र भाग पै पृथ्वीको स्थापितकर महामेघ की तरह शब्द करताहुआ ऐसा बराहजी पृथ्वीको धारण करता भया ४४ और वही बराह हरि पुराण पुरुषोत्तमप्रभु समस्तकाकर्ता सबकासाक्षी यज्ञात्मक यज्ञपति जगत्पति ऐसाजोहैतिसको देखने को हम उद्यतहुयेहैं ४५ और कितनेक इसदेवको बहुत रूपोंकरके बर्णन करतेहैं और कितनेकएकरूपकरके बर्णन करतेहैं औरबेदांत करके संस्थापित सत्त्व संयुक्त ऐसे तिस ईश्वरके देखनेकोहमउद्यत होतेहैं ४६ और श्रुति स्मृति न्याय इन्होंसेनिबिष्ट चित्तवालेबहुत से बहुत प्रकारसे कहतेहैं और अजन्माहै और साक्षात् आत्माहैऐसे ईश्वर के भी देखनेको हम सब उद्यत हुयेहैं ४७ और जोआद्यहै बरका देनेवालाहै और श्रेष्ठ प्रकाशवालाहै और एकांत तत्त्ववालाहै और सब प्राणियोंमें स्थितहै और देवहै और दुष्टोंका पीड़ादेनेवा- लाहै ऐसे ईश्वरको हम देखनेको यत्न करतेहैं ४८ और आदिका- लमें जिस जगत्पतिमें यह बिश्व स्थितहै तिसकोभी देखनेको हम सावधानहैं और अबहम क्याकहेंगे ४९ हे मनुष्यहम अन्यजगह गमन करतेहैं और तू अन्यजगह गमनकर और जोतेरेरुचेहैं तोअ- भी मनो वाञ्छित देशकोचलाजा ५० ऐसे कहके बिकृत मुखवाला और घोररूप ऐसा पिशाच ५१ इस देशमें वहुतसा रुधिरका पान कर और यथायोग्य मांसके समूहका भक्षणकर ५२ और कुल्ले कर और समीपमें सब प्रकारके साधन और महाघोररूप अंत्रपाशको स्थापनकर ५३ पीछे कुशके आसनको बिछा पानीसे आप पवित्रहो और सब कुत्तोंके गणोंको त्यागसुंदर ५४ आसनपै स्थितहो समा- धिके अर्थ यत्नकरनेलगा पीछे एकचित्तहोके ५५ और बिष्णुको नमस्कार कर घोररूप पिशाच इस मंत्रका पाठ करनेलगा भगवान् को नमस्कारहै और बसुदेवके पुत्र ५६ और चक्र गदाको धारण

करनेवालेको नमस्कारहै और नारायणकेअर्थ नमस्कारहै विष्णु और प्रभ विष्णु इन नामोंवालेको नमस्कारहै ५७ और हे केशव तेरेकीर्तनसे मेरी आत्माकी शुद्धिहो और यह घोररूप जन्म मेरे मत हो ५८ और हे गोपते तेरे स्मरणसे मैं देवदूत होजाऊं और तेरे चक्रके प्रहारसे मेरा शरीर नष्टहोजावै ५९ और मेरेको फिर यह संसारन्नहीं मिले यह मेरी प्रार्थनाहै और अर्थियोंका कल्पवृक्ष तूहीहै और सब कालमें सबोंका दाता तुहींहै ६० और हे देव जहां जहां मेरा जन्महोवे तहां तहां मेरे हृदयमें तू स्थितरहै यह दूसरी मेरी प्रर्थनाहै ६१ और तेरे अर्थ वारंबार नमस्कारहै और विघ्नोंसे रहित मेरी प्रार्थनाहो सो तेरे अर्थ नमस्कारहै ६२ और जब मेरी मृत्युहोजावे तबभी स्मृति बनीरहै और दिनरात्रिमें और क्षण क्षणमें मेराचित्त तुम्हारे विषे स्थितरहै ६३ हे देव ऐसेमेरेकोप्रेरित कर और नृशंसरूप यह पिशाचहै इसपै दया करनीक्या उचित-है ६४ ऐसा तेराचित्त मतहो और पराई पीड़ाके अर्थ मत्तमतहो हे भगवन् हे प्रभो नमस्कारहै ६५ और सब इन्द्रियां इंद्रियकेअर्थोंको मतभजो यह तुम्हारे प्रसादसे अब और अंतकालमें होजाओ ६६ और पृथ्वी मेरीनासिकाकी रक्षाकरो और जलमेरी जिह्वाकी रक्षाकरो और सूर्य मेरे नेत्रोंकी रक्षाकरो और वायु मेरे स्पर्सकी रक्षाकरो ६७ और आकाश मेरेकानोंकी रक्षाकरो और मन मेरे प्राणोंकी रक्षाकरो ऐसे जलपृथ्वी ६८ सूर्य वायु आकाश दुःखोंसे मेरी रक्षाकरो ६९ और मेरामन विषयोंमें नहींलगे ऐसी मेरीरक्षा करो और मनके विपर्ययहोनेसे पुरुषोंका नाशहोताहै ७० औरयही मन मनुष्यको पापोंमें और परपीड़ामें युक्तकरताहै इस वास्तेहेदेव वारंवार मेरे मनकी रक्षाकरो ७१ और मेरे मनमें कालिसमतरहो और मेरामन निर्मलहोजाओ और जिसकाचित्त कालिससे संयुक्त होताहै वह नरकमें बसताहै ७२ और बाह्य इन्द्रियेंभी मेरी सब निर्मलहोजाओ और जिसका मन कालिससे संयुक्तहोताहै तहां ये इंद्रियें कुछ कार्य नहीं करसक्ती ७३ और जो बाहरसे स्नान कर

सक्ताहै और भीतर मनमें कालिसराखे ७४ उसका स्नान वृथाहै इसवास्ते सब यत्न करके हे जनार्द्दन मेरे चित्तकी तू रक्षाकर ७५ और यहइन्द्रियोंका समूह वलवान्है इसके विषयोंकोभी निवारण कर और हे जगन्नाथ परबाद से बाणी की रक्षाकर ७६ और हे जनार्द्दन पराये द्रव्यसे और पराई स्त्रीसे मेरी रक्षाकर और हेकेशव तेरे प्रसाद से ७७ सब जगह दया और बिषे अचलरूप भक्ति रहै और बहुतकहनेसे क्याहै हे भगवन् तू मेरे एकबचनकोसुन७८सुख दुःखप्रीति भोजन गमन जागना और सोना इन सब वक्तों में मेरा मन तेरेमें लगारहै ७६ और हेजनार्द्दन तेरेअर्थ नमस्कारहै ऐसे कह नेवाला ८० वह पिशाच भगवत्काभक्तहोके समाधिको प्राप्तभया अर्थात् आंतोकी फांसी करके अपना शरीरको बांध८१ निश्चल रूप मनकरके सुख पूर्वक बैठाहुआ हरि जगद्योनि बिष्णु पीतांबरशिव ८२ मुकुंद आदि पुरुष एकाकार अनामय नित्यशुद्ध ज्ञानगम्य सब प्राणियोंका कारण ८३ ऐसे श्रीकृष्णका ध्यान करताहुआऔर ओंकाररूप सनातन बेदको पढ़ताहुआ ८४ और नासिका के अग्र भाग को देखता हुवा निरंतर एकाग्र चित्त को बिष्णु में समर्पित करके ८५ और बिकल्प से रहित चित्त को हृदय के मध्य में प्राप्त कर ८६ पीछे कमलरूप हृदयमें बिष्णुको स्थापन कर और तीन प्रकारसे सनातन बिष्णुको जपताहुआ पिशाच सुख पूर्वक योगी होके स्थितहुआ ८७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलाशयात्रायांघंटाकर्णसमाधौएकसप्तत्यधिकद्विशतोध्यायः २७१ ॥

दोसौबहत्तरका अध्याय ॥

बैशंपायन कहनेलगे पीछे अपने आत्माको चिंतवन करनेवाला और शुद्ध और शुद्धिसे समन्वित १ और आत्मामेंस्थित और अकेले ओंकारको पढ़नेवाला और अपने आत्मासे प्रार्थना करनेवाला २ ऐसे पिशाचको बिष्णु भगवान् देखतेभये पीछे पुण्यको संचयकरने

वाला और पुण्यकर्मका कारण ३ और कुबेरके उपदेश करके पृथ्वीमें वासुदेव कृष्ण माधव ४ जनार्द्दन हरि विष्णु भूतभावन भावन नरकारि जगन्नाथ नारायण परायण ५ इननामों करके दिनरात और सोताहुआ जागताहुआ और स्थितहुआ और भोजन करता हुआ और गमन करताहुआ और कहताहुआ ६ मेरेको जपता है और मांसकी बोटीको खाताहुआ और लोहूको पीवता हुआ और बहुतसे मृगोंको मारताहुआ ७ और मारनेमें भोजन करनेमें जागते में और सोतेमें सब कार्य्योंमें मैं करताहूं ऐसे मानताहूं ८ सो इस घोर कर्मका पापयहीहै और ऐसे निश्चय करनेसे जगन्नाथ अर्थात् श्रीकृष्ण प्रसन्नहोके ९ अपने स्वरूपको दिखातेभये अर्थात् जब पिशाचका अंतः करण शुद्धहोगया १० तब वह घोररूप पिशाच अपनेही आत्मामें पीलेवस्त्रोंको धारण करनेवाला और कमल के समान नेत्रोंवाला और श्याम रंगवाला ११ और शंख चक्र गदा माला मुकुट कौस्तुभमणि इन्होंको धारण करनेवाले और श्रीवत्स चिह्नसे आच्छादित छातीवाले १२ और नीलेमेघके समान कांति वाला और प्रकाशित और गरुड़पै स्थित और चारभुजाओं वाला और सुंदरवाणीवाला और निश्चल १३ औरसर्व्वगत और कल्याण रूप और नहींहैआदि और अंतजिसका और नित्य और मायावाला और मायासे रहित और सत्यरूप और सबकालमें शुद्ध और बुद्धि में प्राप्तहोनेके योग्य और सबकालमें मलसे रहित १४ ऐसेश्रीकृ-ष्णको अनेक प्रकारसे मनमें देखताभया पीछे आखों को मीच के कृतार्थहुआहूं ऐसा मानता भया १५ और कहनेलगा कि अब सा-क्षात्विष्णु मैंनेदेखा और विष्णुमेरे अर्थप्रसन्नहैं इसवास्ते मेरे को विष्णुके दर्शनहुये १६ और मेरेजन्मका कृत्यसिद्धिहुआ और इसके उपरांत मेरेको कोईभी कृत्यनहींहै और मेरेहृदयकी ग्रन्थी फूटगईहै और वशमें मेरी इन्द्री होगईहैं १७ और विशेष करके मैंने मनभी जीतलियाहै और मेरेसे इच्छा दूरहोगईहै और मैं प्रसन्नहोगया हूं और इनपिशाचोंसे भी मैं अलग होगयाहूं और जोमेरा छोटा

आताहै वहभी मेरीतरह बिष्णु भगवान् काभक्तहै १८ और समय पाके निर्मुक्त हुआ बिष्णुके समीप में प्राप्तहोगा ऐसे चिंतमनकरके आंत्रपाशकोभेदनकर १९ क्रमसे अपनेप्राणोंकोउतार और सब दिशाओंको देख और शरीरको समरूपकर सुखसे संयुक्तहुआ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलाशयात्रायांघंटाकर्णस्य बिष्णुसाक्षात्कारेद्विसप्तत्यधिकद्विशततोऽध्यायः २७२॥

दोसौतिहत्तरका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि जैसे वह पिशाच समाधिमें श्रीकृष्ण को देखताभया तैसेही पृथ्वीमेंभी स्थितहुआ श्रीकृष्ण देखा १ तब यह बिष्णुहै यहबिष्णुहै ऐसेवह पिशाच कहने लगा २ और नाचता और हंसता हुवा फिरबोला ३ कि चक्रशर शार्ङ्ग धनुष गदारथी तूण इन्होंको हाथमें धारण करनेवाला और हजार शिरों वाला और सबदेवताओंका स्वामी और जगत्का निवास ऐसाबिष्णु भगवान् यहहै ४ और सबों को जीतने वाला और जगत्का स्वामी और पुरातन और पुरुषोंमें उत्तम और बिश्व का ईश और विश्वका कर्ताऐसासनातन बिष्णु यहहै ५ और इसबिष्णुके दोनों चूंचियोंके बीचमें कौस्तुभमणि बिराजमान है जिसकरके चंद्रमाकी तरह रात्रि प्रकाशित होरहीहै ६ और जो जलके समूहसे पृथ्वीको अपनी डाढ़पैधर बाहर काढ़ताभया और साक्षात् बराहके रूपको धारणकरने वाला ऐसाबिष्णु यहहै ७ और उग्र पौरुषवाले बलि दैत्यकोबांधके इन्द्रकेअर्थ राज्यदेताभया तबपुरातन मुनियोंनेस्तुति किया ऐसाबिष्णु यहहै ८ और डाढ़ोंकरके कराल और बड़ेरूपको धारण करनेवाला होके युद्धमें दैत्योंको मार शोक से रहित इस लोकको करताभया ऐसाबिष्णु यहहै ९ और आदिमें एकभुजा कर के मंदराचल पर्वत को धारणकर और समुद्रमें सब दैत्योंको जीत इन्द्रकेअर्थ अमृत देताभया ऐसाबिष्णु यह स्थितहै १० और मधु कैटभ दैत्योंको मारके समुद्रमें शेष नागरूप शय्यापै शयन करने

वाला ११ और आद्य और जगत्‌का पति और सबका धाता और अजन्मा और अन्योंको जनानेवाला और सूक्ष्मसेसूक्ष्म और मोटा से मोटा ऐसाबिष्णु यहहै १२ और संहार कालमें यह जगत् जिस में स्थित होताहै और आदिमें जिससे उत्पन्न होताहै ऐसा बिष्णु यहहै १३ और जिसकी इच्छाकरके यह जगत् प्रवृत्त और निवृत्त होजाताहै और पुरुषोत्तम और शिव और यादवेश्वरऐसाबिष्णु यह मेरे समीपमें स्थितहै १४ और जो भृगु बंशमें परशुराम नाम से उत्पन्नहो और महादेवका शिष्यहोके युद्धमें फरसा करकेमहाबल वाला १५ और कृतबीर्यका पुत्र और घोड़ेहाथीरथ इन्होंमें बैठने वाला ऐसे सहस्राबाहु को मारतेभये १६ पीछे इक्कीस बार क्षत्रियों से रहित इसलोकको करतेभये पीछे कुरुक्षेत्र में प्राप्तहो पितृक्रिया करतेभये ऐसे बिष्णु यहीहै १७ और रघुबंश में उत्पन्न होनेवाले और सीता और शोभासे संयुक्त और अनुचररूप लक्ष्मण भ्रातासे संयुक्त और बिद्वान् १८ और रामचंद्र समुद्रमें सेतुको बनाय और पैने बाणोंसे रावणको मार और बिभीषणके अर्थ राज्यदे पीछेदश अश्वमेध यज्ञकरतेभये २० ऐसेबिष्णुभी यहीहै और बसुदेवके कुल में जन्मनेवाले और बासुदेव नामसे बिख्यात और बलदेवजी के संग गोकुलमें क्रीड़ाकरनेवाले २१ और सिधेशयन करतेहुये और बालक के रूपको धारण करनेवाले ऐसेश्रीकृष्ण पूतनाके दियेहुये स्तनको पीने से पूतना को मारके पीछे सुखपूर्बक बसते भये २२ और दूधके पीनेसे औरनौनी घृतके खानेसे क्रोधकोप्राप्तहुई माताने रस्सीसे दृढ़बांधदिये २३ तब दृढ़रूप रस्सी से बंधेहुये यमलार्जुन वृक्षोंको गेरतेभये और गोकुलमें बसके गोपियोंके संगमुखऔरस्तन कोआच्छादितकर क्रीड़ा करतेभये २४ और गोपोंके बालकोंके संग यमुनामें कालिय सर्पके फणोंपै क्रीड़ाकर और बीर्यके अतिशयको देखनेके अर्थ कालिय सर्पको नाथतेभये २५ और तालबनमें उग्र रूप धेनुक दानवको तिसी बनके फलोंकरकेमार गोपों को आश्चर्य दिखातेभये २६ और मेघके समागममें इन्द्रकेबलको बिडंबनकरते

हुये और गोप गोपि गोकुल इन्होंको आनंदित करते हुये २७ उग्र रूपगोवर्द्धन पर्वतको धारण करतेभये और मायाकरके मनुष्य देह कोधारण करनेवाले और गोपियोंके अधरामृत को पीनेवाले और गोपियोंके स्तनों के मध्यमें इच्छापूर्वक क्रीड़ाकरने वाले २८ और गोपियोंके संगरात्रिमें एकांत स्थान में शयन करनेवाले २६ और अक्रूरके संग बुलाये हुये रस्ता में चलनेकेवक्त अक्रूर ने यमुना के जलमें जोईश्वर देखेवही रथमेंभी देखे ३० और मथुरापुरी में चलतेहुये मार्ग में अपने बलसे उग्ररूप रजक अर्थात् धोबीको मारके मनोवांछित बस्त्रों को ग्रहणकर बलदेवजी के संग मथुरा पुरीमें बिचरतेभये ३१ और माल्लाकारकी बहुतसी मालाओं को ग्रहणकर तिसके अर्थबरदान देतेभये और कुब्जासे सुंदर अनुलेपन को ग्रहणकर तिसको सुंदर रूपवाली बनातेभये ३२ पीछेरंग स- माजमें जाके धनुषको ग्रहणकर मध्यसे तोड़सिंहके शब्दके समान शब्द करतेभये जैसेकल्प के अंतमें बद्दल ३३ पीछे उदग्र रूपवाले कुबलयापीड़ हाथीको मार तिसके दांतो को ग्रहणकर रंग समाज में नाचतेभये और कंसको अतिभय देतेभये ३४ पीछेकंसके देखते हुये महामल्ल चाणूरको मारके यादवों के अर्थप्रीति देतेभये ३५ पीछेशत्रुकेपक्षको मारनेवालाऔरपिताकाबैरी और ऐसेकंसकोमार के उग्रसेनराजाको राज्यपै स्थितकर सांदीपिनि नामगुरूके समीप प्राप्तभये ३६ तहांसंपूर्ण बिद्याको प्राप्तहो और दक्षिणामें गुरू को पुत्रका दान दे बलदेवजी के संगश्रीकृष्ण मथुरा में प्राप्तभये ३७ और नरकासुर दैत्यको मारके और दैत्योंको पीड़ादेके ब्राह्मणमुनि योंके समूह देखते इन्होंकी रक्षाकरते भये ३८ ऐसेबिष्णु भगवान् अबमैंने देखेहै सो मैं कृतकृत्य हुआ और मोक्ष को प्राप्तहूंगा ३६ क्योंकि जिसने साक्षात् बिष्णु देखलिया तिसके हाथमें मुक्तिस्थित है सो यह बिष्णु मेरे सन्मुख स्थित है ४० और मैंने पूर्वजन्म में बहुत धर्मका संचितकिया जिस करके यह बिष्णु भगवान् को मैंने देखतेहैं ४१ और सबकालमें मैं पुण्यवाला और संसारके बंधनोंसे

रहित ऐसामैंहूं और क्यावस्तुमैंइसके अर्थदेऊं औरक्यामैंअबकहूं४२ और हे विष्णो मैं अवक्या करूंगा जो अब बांछितहोसो कहो ४३ वैशंपायन कहतेहैं ऐसे ऊंचे स्वरसे कहके वह पिशाच फिर हंसता भया और नाचताभया ४४ और हे हरे हे केशव हे कृष्ण हेयादवेश्वर तेरे अर्थ नमस्कारहै ऐसे कहताहुआ श्रीकृष्ण के सन्मुख नाना प्रकारसे नाचनेलगा ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांघंटाकर्णकृतविष्णुस्तवेत्रिसप्तत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २७३ ॥

दोसौचौहत्तरका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे ऐसे वह पिशाच बारंबार हंसके पीछे मरे हुये १ ब्राह्मण के शरीरके दो भागकर पीछे पानीसे शुद्धकर सुंदर पात्रमें धर २श्रीकृष्णको नमस्कारकर अंजलीबांध नम्रहोके कहने लगा ३ हेजगन्नाथ हे प्रभो तुम्हारेयोग्य यहभक्ष्य पदार्थहैं इसको ग्रहणकीजिये और हे हरे तुम्हारेसरीखोंको यहपदार्थ सबप्रकारसे ग्रहणकरना चाहिये ४ और हे विष्णो हम भक्तिसे नम्रहै इसमें बिचार नहीं करना चाहिये जो भक्ति नम्र पुरुष देवै वह स्वामीको ग्रहणकरना उचितहै ५ और नवीन अच्छीतरह संस्कारित किया और ब्राह्मणका शरीररूप मुरदा ऐसाभक्ष्यहमारे शास्त्रमें उत्तमकहा है ६ इसवास्ते हे भगवन् जो दोष नहीं होतो आपग्रहण कीजिये ऐसे वारंवार बिकृत कहके और हंसके ७ नहींस्पर्श करनेके योग्य ऐसेउस मुरदेके टुकड़ेकोश्रीकृष्णके अर्थ देनेकीइच्छाकरनेलगा तब तिसपिशाचके अर्थप्रसन्नहुये श्रीकृष्ण तिसको मनसे पूजतेभये ८ और कहनेलगे कि आश्चर्यहै इसका स्नेह मेरेविषे सत्रजगहहै ऐसे मनसे चिंतवन करके श्रीकृष्ण कहनेलगे९ हे पिशाच मैं इस करके पूर्णहुआ और मेरे सरीखे मनुष्योंने ब्राह्मण रूप मुरदाका स्पर्श करना उचित नहींहै १० क्योंकि धर्मकी आकांक्षावाले सब मनुष्यों के सबकालमें ब्राह्मणपूजनेयोग्यहै और घोरकर्मवाले पिशाच ब्राह्मण

के मारनेमें यत्न करताहै ११ और सबकालमें भी ब्राह्मण मारनेके योग्यनहींहै क्योंकि ब्राह्मणका मारनेसे निश्चय नरकहोताहैइसवास्ते हमको यह मुरदा स्पर्श करना योग्य नहींहै इसमें संशयनहींकरना १२ परंतुतेरा कल्याणहो मैं तेरीप्रीतिसे प्रसन्नहुआ और जिस भक्ति से तेरामन निर्मलहुआ और जिसका मन शुद्धिको प्राप्तहो तिसपे मैं प्रसन्न होजाताहूं१३ और इसकीर्त्तनसे निरंतर तेराअंतःकरण शुद्ध प्रतीत होताहै सोमैंतेरेपै अति प्रसन्नहूं ऐसे कहके१४ श्रीकृष्ण उस पिशाचके सब अंगोंको चारोंतर्फसे कोमल हाथसे स्पर्श करतेभये और पापोंसे उस पिशाचको छुटातेभये१५ तबकामदेवके समान रूप और कांतिवाला और लंबेकेशोंवाला और लंबी बाहुवोंवाला और सुंदर नेत्रोंवाला१६ और समान अंगुलियोंवाला और समान नखोंवाला और समान मुखवाला और सम्यक् प्रकार से ऊंची नासिकावाला और कमल के समान नेत्रोंवाला और कमल के वर्णके समान कांतिवाला और कमल के शब्दकी तरह भूषित १७ और केयूर बाजूबंध इन्होंको धारण करनेवाला और रेशमी कपड़ोंको पहनेहुये और ज्ञानमाला और सत्त्वगुणोंसे संपन्न औरसाक्षात् इन्द्रकीतरह मानोदूसराइन्द्र १८ और गंधर्बके समान गानेवाला और सिद्धके समान सिद्ध ऐसा वह पिशाच होताभया१९ अर्थात्श्रीकृष्णके हाथके छुवनेसे जैसा रूप उस पिशाचको मिलातैसारूपकोउग्रतपकरनेवाले मुनिजनभीप्राप्तनहींहोसक्ते २० और ऐसा कौनजनहै कि श्रीकृष्णके आश्रितहोके दुःखित रहे २१ और हेराजन् बिष्णुको नित्यप्रति ध्यान करनेसे पढ़नेसे जपकरनेसे ऐसीकौन बस्तुहै जिसकीप्राप्तिनहीं हो सकतीहै पीछे कामदेवके समानरूपको धारण करनेवाले उस पिशाचसे श्रीकृष्ण कहनेलगे २२ कि जबतक इंद्र स्वर्ग में बसेगा तब तक तूभी स्वर्गमें बसेगा२३ औरजब इन्द्रनष्ट होजावेगा तब तू मेरेसमीपमें प्राप्तहोवेगा और तेरा भ्राताभी तेरेसंग स्वर्गमेंबसेगा २४ और तेरा कल्याण हो जो तेरे मनमेंहो सो तू बरमांग और मैं सब जगह सब बरोंको

दूंगा इसमें संशयनहीं तब घंटाकर्ण कहनेलगा किहेदेव जोनिरंतर इम मेरे तुम्हारे संगमका स्मरणकरे उस मनुष्यकी तेरेबिषे अचल भक्तिहो २५ और तिसके मनकीशुद्धिरहै और तिसके मनमें क्लेश मतरहै यह बरमैंने मांगा २६ तब श्रीकृष्ण कहनेलगे कि ऐसेही होगा और तू स्वर्गमें गमनकर और तू इन्द्रका अतिथि होजा अर्थात् तेरेको देखके इन्द्र खुशीरहेगा २७ ऐसे कहके श्रीकृष्ण पीछे जोपिशाचने मुरदारूप ब्राह्मणका शरीरजोपहलेभेंटमेंदियाथा तिस ब्राह्मणको जिवाके और तिस ब्राह्मण से स्तुतिकिये श्रीकृष्ण तिसी ब्राह्मणको पूजके २८ उसदेशसेउठजहां अग्निहोत्र करनेवाले सिद्ध और मुनि बसेथे तहां प्राप्तभये २९ पीछे वह घंटाकर्णभी श्रीकृष्ण की आज्ञासे स्वर्गमें प्राप्तभया और इसवास्ते हे राजन् जोतूमनकी शुद्धिकी इच्छाकरेहै तौ सबकालमें इसआख्यानकापाठकर ३० और इसके पाठ करनेसे निश्चय मन शुद्ध होजाता है ३१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वणि भाषायांकैलासयात्रायांघंटा कर्णमोक्षेचतुःसप्तत्यधिकद्विशततमोऽध्यायः २७४ ॥

दोसौपचहत्तरका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे पीछे श्रीकृष्णजी पिशाचके संग जो वृत्तांत बीता वह सब मुनियोंके अर्थ कहतेभये १ तब सब मुनि सुनके अति आश्चर्य मानतेभये और आश्चर्यहै कि तेरे दर्शनसे उस पिशाचका जन्म सफलहुआ २ पीछे सबमुनिजनों से अर्चितकिये श्रीकृष्णजी सूर्यके उदय होनेके समयमें ३ गरुड़पै चढ़ कैलासपर्वतको गमन करतेभये और मुनिजनोंसे कहनेलगे कितुम्होंकोभीतहांगमनकरना योग्यहै ४ जहां तपकरनेवाले बिश्वके ईश्वर सिद्धबसतेहैं और जहां साक्षात् कुवेर महादेवजीकी उपासना कररहाहै ५ और जहां मान सरोवर नामहंसोंका स्थानहै और जहां भृंगीऋषि शिवकी उपासना करके ६ गणोंके स्वामी भावको प्राप्तहोके महादेव जी के समीपमें बिचरताहै और जहां सिंह बराह हाथी गैंड़ा मृग ७ ये

आपसमें मित्रभावसे क्रीड़ा करतेहैं और जहां समुद्र में जानेवाली गंगासे आदिलेके नदियें उत्पन्न हुईहैं ८ और जहां महादेवजीब्रह्मा के शिरको काटतेभयेहैं और जहां उत्पन्न हुये बड़ेबड़े वेत्र प्राणियों की दंडताको प्राप्त होतेहैं ६ और जहां पार्वतीके संग नीललोहित रूपवाले महादेवजी बसते हैं और जहां ऋषियोंसे प्रार्थितकिया हिमाचल महादेवके अर्थ अपनी पुत्रीको देताभया १० और जहां बहुत दिनोंतक कमलों करके महादेव जी की उपासना कर बिष्णु भगवान् चक्रको प्राप्त होतेभये ११ और जिसकी गुफाओंमें सिद्ध किन्नर १२ अपनी२स्त्रियोंके संग क्रीड़ा करतेहैं और आनंदित होते हैं और उत्तम मधुकापान करतेहैं और जिसको रावण सबभुजाओं से उठानहींसका १३ ऐसे कैलास पर्वतमें मानसरोवर के उत्तरतीर पै श्रीकृष्ण भगवान् जाके १४ पीछे केशोंको बढ़ानेवाले और चीर रूप कपड़ोंको धारणकरनेवाले और तपके अर्थ चित्तको धारणकरने वाले १५ और मनुष्यके देहको धारण करनेवाले ऐसे श्रीकृष्णगरुड़ से उतरके बारह वर्षतक तपकरनेके १६ अर्थ मनको धारण करने वाले शुद्धभूमि में स्थितहुये और फाल्गुण के महीने में श्रीकृष्ण ने तपका आरंभकिया १७ और शाकोंका भोजन करनेवाले औरमंत्रों को जपनेवाले और वेदोंके अध्ययन में तत्पर ऐसे बिष्णु किसीको उपदेशकर तप करनेलगे १८ तब महादेवके चितवन करनेसे तिस पर्वतमें कोईभी बिघ्ननहीं हुआ १६ और कश्यपका सुत गरुड़ तप करतेहुये श्रीकृष्णके समीप में होमकरने के अर्थ इंधनों को इकट्ठे करताभया २० और सुदर्शन चक्र श्रीकृष्णके समीपमें पुष्पोंको इकट्ठे करनेलगा और सबदिशाओंमें पांचजन्य शंख रक्षा करताभया २१ और यत्नकरके नंदक नाम खड्ग बहुतसी कुशाओं को श्रीकृष्णके समीपल्याके गेरताभया और कौमोदकी गदा श्रीकृष्णकी परिचर्या अर्थात् टहल करतीभई २२ और दैत्योंको भय देनेवालाशार्ङ्ग धनुष श्रीकृष्णके सन्मुख भृत्यके समान स्थितरहा २३ पीछे अनेक प्रकार के काष्ठोंसे और घृत आदिसे हवनकर और अग्निकी पूजा करता

भया २४ औरएकमहीनामें एकदिन पीछे छःमहीनोंमें एकदिन २५ पीछे एकवर्षमें एकदिन ऐसे इसप्रकारसे भोजन करनेवाले २६ श्री कृष्णएकमहीना घाट बारह बर्षतक अग्निमें हवन करतेहुये २७ और मंत्रका पाठ करतेहुये और महादेवजीका ध्यानकरतेहुये और आरणयक विधिको पढ़ते हुये २८ और ओंकारका विचार करतेहुये और ध्यानमें तत्पर ऐसेश्रीकृष्ण स्थितरहे २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायां पंचसप्तत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २७५ ॥

दोसौछिहत्तरका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि तब साक्षात् इन्द्र ऐरावतहाथीपै चढ़के तप करनेवाले बिष्णुके देखनेको प्राप्तहुआ १ पीछे भैंसापै चढ़के धर्मराज अपने दूतोंकरके सहित कैलास पर्वतमें प्राप्तभये २ पीछे श्वेत छत्रको लगानेवाला और श्वेत बीजनासे बीजितऐसावरुण ३ लोकके वासियोंके संग श्री कृष्णको देखनेके अर्थ कैलास पर्वतमें प्राप्तहुआ ४ और हे राजन् अन्यभी देवते और सब आदित्य सबबसु और सबरुद्र ५ सिद्ध मुनि सबनृत्य गीतमें विशारद रूप अप्सरा ६ येभी सब श्रीकृष्णको देखनेके अर्थ कैलास पर्वतमें प्राप्त भये ७ पीछे पर्वत ऋषि नारदऋषि और बिस्मय करके स्थित और चलायमानहैं नेत्र जिन्होंके ऐसे ऋषि और देवगण ८ येभी सब श्रीकृष्णको देखनेके अर्थ कैलास पर्वतमें प्राप्त हुये और सब कहने लगे कि ऐसा आश्चर्य है कि हुआ न होगा तिसको देखो ९ कि योगीजनोंको ध्यान करनेके योग्य और सबकाबड़ा ऐसा श्री कृष्ण आप तप करताहै १० ऐसा समय कब होगा ऐसे सबगण मानते भये ११ पीछे जब बारहवर्ष तपकरते पूर्णहोगये तब सब जगत्का ईश्वर रूप महादेव पार्वती और भूतसंघके संग कृष्णको देखनेके अर्थ गमन करतेभये १२ कुवेर गुह्यक इन्होंके संग और जटाको धारण करनेवाला और पिशाचों करके परिवृत शर और खड्गको

धारण करनेवाला और चंद्रमाको मस्तकमें धारण करनेवाला १३ और एक हाथमें डामके समूहको धारण करनेवाला और दूसरे हाथमें दीपिकाकोधारणकरनेवाला और तीसरेहाथमें बड़ीडिंडिमा को धारण करनेवाला और चौथे हाथमें त्रिशूलको धारण करने-वाला १४ और रुद्राक्षोंकी मालाओंको धारण करनेवाला और पीलीजटाओंको धारणकरनेवाला और पार्बतीसेसंयुक्त और सफेद रंगके बैलसे संयुक्त १५ और पार्बतीजी के दोनों स्तनोंके बीचमें मिलापकरके पीछे अधरामृतको पीड़न करनेवाला और गंगा जल से क्षालित शिरवाला और पार्वतीजीकीतरफ बारंबार देखनेवाला १६ और भस्म आदिसे मुखपै लेप करनेवाला और महासर्पों को जटाओंमें धारणकरनेवालाऔरशिरकी खोपरियोंकरके शोभित१७ और जिसके सांख्यवादी अव्ययमहापुरुष पुरातन ऐसेकहतेहैं और जिसको उत्तम चौबीस तत्त्वगुणहैं १८ और जिसको पुरातन पुरुष कणाद अजमहेश्वर इननामोंसे कहेहैं और दक्षके यज्ञका नाशकर देवता और दैत्योंको मारकेजो सनातनहै १६ और भूतोंकेतत्त्वोंको जाननेवाला भूतेश भूतभावन वामदेव बिरूपाक्ष २० महादेव सह-स्राक्ष कालमूर्त्ति चतुर्भुज रुद्र रोदन बिश्वेश्वर शिव २१ अप्रमेय अनाधार नग्ननागोपबीत नागीअग्निबर्चा २२ शांतशिवआदिसना-तन इननामोंवाला और हे जनार्द्दन जिसकी मूर्त्ति यह पृथ्वीआदि सब पदार्थहैं २३ अर्थात् पृथ्वीजल अग्निबायु आकाश सूर्य चंद्रमा यजमान ऐसे आठ प्रकृतिवाला २४ और महायोगी गिरीश और नील लोहित आदिकर्त्ता महीभर्त्ता शूलपाणि उमापति २५ इन नामोंवाला ऐसा महादेव भूतगणोंके संग बिश्वके ईश्वररूप बिष्णु के देखनेके अर्थ प्राप्तहोनेलगा २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्व्वांतर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांकैलाशयात्रायांषट्सप्तत्य-धिकाद्विशतोऽध्यायः २७६॥

—*—

दोसौसतहत्तरका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि तिस महादेवजीके अगाड़ी हजारभूतोंके संग और घंटाकर्ण विरूपाक्ष कुंडधार कुमुदवह१दीर्घरोमादीर्घभुज दीर्घवाहुनिरंजन उरुवक्र शतमुखशतग्रीवशतोदर२कुंडोदरमहाग्रीव स्थूलजिह्व द्विबाहुक पार्श्ववक्र सिंहमुखउन्नतांस महाहनु३त्रिबाहु पंचवाहु व्याघ्रवक्र शताननइनआदि बहुतसे नामोंवाले और दीर्घ मुखोंवालेऔर दीर्घनेत्रोंवाले ४ और नृत्य करतेहुये और हंसतेहुये और आपसमें स्फोटनकरतेहुये और कितनेक घोररूप और कितनेक विकृत मुखोंवाले ५ और प्रेतोंको भक्षण करनेवाले और प्रेतोंको वहनेवाले मांस और लोहूका भोजनकरनेवाले और बहुतसेमुरदों को भक्षण करनेवाले ६ और घोररूप लोहूको पीनेवाले और बहुतसे मुरदोंको खंडित करनेवाले और कराल और विस्तृत और लंबे और नाड़ी और नसोंसे व्याप्त ७ और नानाप्रकारकी आकृति वाले और बीर और शूलके अग्रभागमें मनुष्योंको लटकाने वाले और शिरोंकी मालाको पहननेवाले और कितनेक आंत्रपाशों को धारण करनेवाले ८ और डिंडिम और अट्टहासों से इसपृथ्वी को शब्दित करनेवाले और कपालोंको धारण करनेवाले और भयदेने वाले और कितनेक जटाको धारण करनेवाले और कितनेक मूंड़ मुड़ाये हुये ९ ऐसे बहुत प्रकार के पिशाच महादेवजी के अगाड़ी स्थित होरहेहैं और बहुतसे मुनिजन परमेश्वरको ध्यावतेहुये १० और वेद और वेदके अंगोंका पठनकरनेवाले और कितनेक कुशाके चीरोंको धारण करनेवाले ११ और कितनेक कौपीनमात्र वस्त्रों को धारण करनेवाले और कितनेक कषाय वस्त्रोंको धारण करनेवाले १२ और कितनेक भक्तिकरके माहेश्वर स्तोत्रों से महादेवजी की स्तुति करनेवाले ऐसे मुनिजनोंके गण और महादेवजीके गण और सिद्ध और अपनी२ स्त्रियों के संग १३ गंधर्व और नृत्यकर्म में और गायन कर्ममें चतुरकन्या और विद्याधर येसब महादेवजीकी स्तुति

कररहेहैं १४ और गमनकरतेहुये महादेवजी के अगाड़ी अप्सराओं के गण नाच रहे हैं ऐसे पिशाच भूत किन्नर १५ मुनि अप्सरा इन्हों के संगजटाको धारण करनेवाले और ओंकारको जपने वाले पार्बती और गंगाजीकर सहित १६ ऐसे महादेवजी जहां बिष्णु तप कररहेथे और लोकपालदेखनेकेअर्थ १७ जो स्थितहुयेहैं जहांतहां महादेवजी श्रीकृष्णको देखने के अर्थ प्राप्तहुये १८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्बांतर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांकैलाशयात्रायांमहादेवागमनेसप्तसप्तत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २७७ ॥

दोसौअठहत्तरका अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहनेलगे इस प्रकार बहुतसे भूत पिशाच उरग इन्होंके संगहुये और बैलपै चढ़ेहुये महादेव आके १ उत्तम तपको तपताहुआ और देवताओंका मालिक और पवित्रहव्य करकेअग्नि में हवन करताहुआ २ और गरुड़जीसे हवनके काष्ठको इकट्ठे कराये हुये और जटाधारण कियेहुये और पुराने बस्त्रको धारण कियेहुये और चक्रसे पुष्पोंको इकट्ठा करतेहुये अपने खड्गसे कुशाको इकट्ठा करताहुआ ३ और अपनी गदासे सम आचार करताहुआ और इन्द्र आदिकदेवताओं के समूहसे और मुनिगणोंसे युक्त ४ और सब जीवोंको अचिंत्य और कछुक ध्यान करताहुआ ऐसे बिष्णु भगवान्‌को देखताभया ५ और पश्चात् प्रसन्न आत्मावाला और मस्तकमें तीसरेनेत्रवाला ऐसा वहशिवजी बैलके ऊपरसे उतरता भया ६ और पश्चात् सबभूत पिशाच राक्षस गुह्यक ७ और ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ मुनिये सब जय शब्द करनेलगे कि हेदेव हे जगन्नाथ हे जनार्द्दन जयहो ८ और हे बिष्णो जयहो और हे इन्द्रियोंके ईश हे नारायण जयहो और हेरुद्र और हे पुण्यात्मन् हेहरेश्वरजयहो ९ और हे आदिदेव और हेशंकरको उत्पन्न करनेवाले हे कौस्तुभमणिको धारनेवाले हे भस्मबिराजित १० और मोतियोंसे प्रकाशित अंगवाले और नागोंका आभूषण करनेवाले देव तुम्हारे अर्थ जय

है २१ ऐसे वे सब मुनि हरिभगवान्‌की स्तुति करनेलगे इन विशेषणों से यहांअभेद दिखायाहै ऐसे स्तुति करनेके पश्चात् वह विष्णु भगवान् २२ वृषकी ध्वजावाले बिरूपाक्ष और शंकर और नील और रक्तवर्ण वाले ऐसे शिवजीको देखके प्रसन्नहोके स्तुति करनेलगे २३ श्रीभगवान् कहतेहैं हे शितिकंठ हे नीलग्रीव हे बेधस हेशोचिष हे उपवासिन् तेरे अर्थ नमस्कारहै २४ और हेमढुष और हेगदिन् तेरे अर्थ नमस्कारहै और हेविश्वतनु हेवृष हेवृषरूपी तेरे अर्थनमस्कारहै १५ और हेअमूर्तदेव हेपिनाकिन् हेकुञ्ज हेकूण्य हे शिवहेशिवरूपिन् तेरेअर्थनमस्कारहै१६ और हेतुंड हेतुण्य हेतुंटितुट तेरे अर्थ नमस्कारहै और शांतरूपी शिव जोतूहै तेरेअर्थ नमस्कारहै और पर्वतमें शयन करनेवाले तेरे अर्थ नमस्कारहै १७ और हे हर हेहिम्र हेहरिहर हे घोर हेअघोर हे घोरघोरप्रिय तेरे अर्थ नमस्कार है १८ और घंटा और अघंटारूप और घटिघटरूप जो तूहै तेरेअर्थ नमस्कार है और शांतरूप सर्वरूपभूतोंका अधिपति ऐसा जो तूहै तेरे अर्थ नमस्कारहै १९ और बिरूपवाला और पुरुरूप को नाशकरनेवाला और आद्य, बिज्ञ, शुचि, अष्टस्वरूपी ऐसाजो तूहै तेरे अर्थ नमस्कारहै २० और पिनाक धनुषको धारणकरनेवाले और शूलखड्गको धारणकरनेवाले औरखट्वाकेअंग अर्थात् पाया आदिको हाथमें धारण करनेवाले और चर्मके बस्त्रोंको धारण करनेवाले ऐसेजोतुमहो सो तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै २१ और हेदेवदेव आकाशमूर्ति हे हरिरूप हे हर तीक्ष्ण तेजको धारणकरनेवाले तेरे अर्थ नमस्कारहै २२ और हे भक्तप्रिय भक्तोंको बरदेनेवाले और भक्त और हेआकाश मूर्तिदेव हे जगत्‌की मूर्तिको धारण करनेवाले देव तेरेअर्थ नमस्कारहै २३ और हे चंद्रदेव हे सूर्यदेव हे प्रधानदेव हेभूतपति तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे कराल हे मुंडरूप हे बिकृत और जटाको धारण करनेवाले हे अज हे भूतभावन तेरे अर्थ नमस्कारहै २४ और हेहरिकेश हेपिंगलरूप हे अभीषु अर्थात् अश्वादिकोंकी रश्मिको हाथमें धारण करनेवाले हर तेरे अर्थ नमस्कार

है २५ और भयंकर रूपको धारण करनेवाले और घोर पुरुषों को भयदेनेवाले और दक्ष प्रजापतिकी यज्ञके नाशकरनेवाले और भग केनेत्रोंको हरनेवाले ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै २६ और हेउमा-पति तेरे अर्थ नमस्कारहै और कैलाशमें स्थान करनेवाला आदिदेव और भव भवरूपी ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कार है २७ और कपाल हाथमें रखनेवाले और त्र्यंबक त्र्यक्ष शिवऐसे तुम्हारेअर्थ नमस्कार है २८ और बरदेनेवाला, बरेण्य, चन्द्रशेखर, इक्ष्मरूप, हबिरूप ध्रुव, कृश, ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कारहै २९ और रक्तियुक्तकेअर्थ नम-स्कारहै और नागफांसी इन्होंका प्रिय, त्रिरूप, सुरूप, भद्रपानप्रिय, ऐसे तेरे अर्थ नमस्कार है ३० और श्मशान में नित्य रति रखने वाला और जय शब्दकेप्रिय, खरप्रिय, बामनरूप खर, खररूपी, ऐसे तेरेअर्थ नमस्कारहै ३१ और भद्रप्रिय, भद्र, भद्ररूपको धारणकरने-वाला ऐसे तेरे अर्थनमस्कारहै और विरूप, स्वरूप, महाघोर ३२ और घंट और घंटभूषी और घंटाका आभूषण करनेवाले और तीव्ररूपी और तीव्रप्रिय, ऐसे तुम्हारे अर्थ नमस्कार है ३३ और नग्न, नग्नरूप, नग्नरूपप्रिय, भूतवास ऐसे तेरे अर्थ नमस्कारहै और सबका बासारूप ३४ और सर्वात्मा और भूतिदायक ऐसे तेरे अर्थनमस्कारहै और बामदेव, महादेव, ऐसे तेरे अर्थनमस्कारहै ३५ और हे स्तुतिमताबर तेरी करनेलायक कौन बाणी है और कौन तेरी स्तुतिकरनेको समर्थहै और तेरी स्तुतिकरनेमें किसकी जिह्वा फुरतीहै ३६ सो हे हर तू क्षमाकर मैं तेराभक्तहूं मेरी रक्षाकर और हे सर्वात्मन् सर्वभूतेश, मेरी निरंतर रक्षाकरो ३७ और हेदेव हे जग-न्नाथ तुम सर्वात्मा करके लोकोंकी रक्षाकरो और हे महादेव हे भक्तप्रिय तुम सदाभक्तों की रक्षाकरो ३८ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलाशयात्रायांईश्वर स्तुतौअष्टसप्तत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २७८॥

―※―

दोसौउनासीका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे फिर वह वृषध्वज और शूली और सत् उमापति शिव चक्रको धारण करनेवाले बिष्णुभगवान् के हाथको हाथसे स्पर्शकरके १ वह भगवान् रुद्र सबदेवता और भावितात्मा वाले मुनियों के सुनतेहुये गरुड़ध्वज केशव के प्रति कहनेलगे २ कि हे देवदेव हे चक्रपाणे हे जनार्दन यहक्याहै किसवास्ते यह तपश्चर्या तुम करतेहो और हे बिभो तुम्हारी क्या प्रार्थनाहै ३ और तुम आपविष्णुहो और हे हरे आपही तपहो और हेदेव और हे जनार्दन तेरी यह तपश्चर्या पुत्र के वास्तेहै ४ सो हे जगत्पते मैंने पहले तुमको पुत्रदियाहै सो हे कारणात्मक इसमें कारणसुनो हे हरे पहले सतयुगमें मैं किसीसमय दशहजार वर्षतक महाघोर तप करनेको प्रवृत्त हुआ ६ और हे देव, पिताहिमाचल करके दई हुई यह वर वर्णिनी उमा अर्थात् पार्वतीमेरी परिचर्या करनेलगी ७ सो हे देव तब भयभीतहुआ इन्द्र मेरेप्रति कामदेवका प्रेरताभया फिर वहकामदेव पुष्प रसों से संयुक्त हुआ मेरे प्रति आवता भया ८ फिर अपने पुष्परूपी बाणों से लक्ष्यरूपी मुझको मारने लगा तब यह पार्वती मुझको पुष्पादिकों से सेवनेलगीतब मैंतिस प्रकार विधिवाले कामदेवको देख क्रोधकरता भया ९ फिर मेरेक्रोधकरते हुये नेत्रों से अग्नि गिरता भया १० सो हे हरे फिर वह अग्नि कामदेवको भस्मकरता भया सो हे बिष्णो पश्चात् इन्द्रका चिकीर्षितअर्थात् यह इन्द्रकोकरनाचाहाथा ११ऐसामैंचिंतवनकरा और मुझकोदयाआनेलगी और हेबिष्णो फिरमुझेब्रह्माप्रेरताहुआ १२सो हे जगत्पते तबमैंनेपुरुषरूपकरके तेराबड़ापुत्र पैदाकराहै और वह प्रद्युम्ननामकरके विख्यातहै १३सोहेदेवउसकोतुमकामदेव जानो इसमेंसंदेहनहींऐसेवहशिवजीकहकेफिर अपनेदेहकोयथात्म्यदिखाने की तरहहुआ और यथात्म्य १४ सुननेकी इच्छावाले मुनियोंके मध्य में विष्णु को उद्देश लेके और हाथों की अंजली बांध के १५

पार्वतीके संगहुआ वहशिवजी यथार्थ आत्माकेबर्णनकरनेकी इच्छा करताभया १६ और मुनि, देव, गंधर्ब, सिद्ध, किन्नर, ये सब देव देवेश्वर विष्णुबिषे अंजली बांधतेभये १७ शिवजी कहनेलगे जोकुछ प्रकृति संज्ञककारण सांख्यके जाननेवाले कहतेहैं और तीनप्रकार जगत्की योनि प्रधानकारणात्मककहतेहैं १८ और सत्त्वगुण रजोगुण तमोगुण इन्होंको कहतेहैं सोइन सबोंका कारण सांख्यके जाननेवाले तुम्हींको कहतेहैं१९और पहलेमहान्अहंकारपैदाहुआ तिसमें माया कारणहै तिसीरूप करके तुम विष्णु परिणामके अधिष्ठाताहौ और तिसमहाघोर अधिष्ठातासे अहंकार पैदाहुआ सो हे जगन्नाथ तुमआदिमें जगत्के परिणामहौ २० और हेप्रभो अहंकारसेमहान् कारणपैदाहुयेहैं औरपश्चात् तन्मात्रा पैदाहुयेहैं और पंचतत्त्वपैदाहुयेहैं २१सोहेजगत्पते तिनपांचतत्त्वोंकोतेराहीरूप कहतेहैं २२और पृथ्वी, बायु, आकाश, जल, अग्नि येपांचतत्त्वहैं और चक्षु घ्राण स्पर्श जिह्बा, श्रोत्र, ये पांचइंद्रियहैं और हेदेव इन्होंके प्रेरनेवाला छठामनहै २३ और हे जनार्द्दन बाक्आदिक अन्यकर्मेन्द्रियहैं इन सबोंको नियतआत्मावाले तुमहीं करतेहौ २४ और हे हरे अपने २ बिषयोंमें इन इंद्रियोंको तुम प्रबेश करतेहौ २५ और जब तुम रजोगुणसे युक्तहोतेहौ तबजीवोंको रचतेहौ और जबसत्त्वगुणसेयुक्त होतेहौ तब तीनों लोकों की पालना करते हौ २६ और जब तमोगुणसे युक्तहोतेहौ तब जगत्का संहार करतेहौ इसप्रकार तीनगुणोंसे युक्तहुये तुमसृष्टि की रक्षा और बिनाश करतेहौ २७ और हेमाधव नियत आत्मावाले तुमतीन प्रकारकी ऐश्वर्यकोप्राप्त होके इन्द्रियोंको इन्द्रियोंकेअर्थमें नियुक्त करतेहौ २८ और हेजगद्गुरो प्राणियोंके उपभोगके वास्ते अन्न रचके फिरसब भोगोंवाले तुमसब जीवोंबिषे बर्ततेहौ २९ और सृष्टि कालमेंतुम ब्रह्माहौ और स्थिति कालमेंबिष्णु हो जातेहौ और संहारसमय तुम रुद्रनामवाले हौ ऐसेतुम तीनधामोंवालेहौ ३०और हेदेवपृथ्वी, बायु, जल, अग्नि, आकाश, ये तेरी प्रकृति मुझसे सर्बत्र भिन्नहैं ३१ और हजारशिरों

वाला,पुरुष अर्थात् ईश्वर, और हजारनेत्रोंवाला हजार पैरोंवाला हजार प्रकारवाला हजारमुख और आत्मावाला और स्वर्गकापति ऐसे तुमहो ३२ और इस सब भूमिको व्याप्त होके और सातोंद्वीप और सागरोंमें व्याप्तहोके और सूक्ष्मरूपसे सब जगह स्थित ३३ जो जगत् होगयाहै और जो होगा सोतुम्हीहो औरहेजनार्दन तुम से विराट्रूप उत्पन्नहै और तुमसेही सम्राट्रूप उत्पन्न है ३४ और हे जगन्नाथ तुम्हारे मुखसे लोकको रक्षाकरनेवाले षट्कर्मों में रत ऐसे ब्राह्मण पैदाहुये हैं ३५ और रक्षा करने में तत्पर ऐसे क्षत्री तुम्हारी बाहुओंसे पैदाहुयेहैं और जांघों से वैश्यपैदा हुये हैं और पैरोंसेशूद्र पैदाभयेहैं ३६ सो हेजगन्नाथ देवऐसे सबवर्ण तुम्हारे देह से पैदाभयेहैं और तुम्हारे मनसे ३७ सब भूतों को सुख करनेवाला और शीतल किरणोंवाला और अमृत के समान ऐसा चंद्रमा पैदाहुआ है और सब प्राणियों के नेत्ररूप ३८ और जिसकी कांतिसे सब जगत् प्रकाश मानहोरहा और किरणोंवाला ऐसासूर्य तुम्हारे नेत्रोंसे पैदाहुआहै और मुखसे जलपैदा हुआहै और अग्नि पैदाहुई है और नासिका से वायुपैदा हुईहै ३९ और पैरोंसे पृथ्वी पैदाहुईहै और हे जगत्पते तुम्हारे कानोंसे दिशा पैदाहुई हैं ऐसे इससब जगत् को तुम रचके फिर तिसीमें व्याप्तहो केअवस्थितहो रहेहो ४० और हेकेशव तुमइन सबलोकोंको व्याप्त होके स्थित होरहेहो क्योंकि इसीवास्ते तुम्हारा विष्णु नामहै कि विष्णु इसशब्दका अर्थमें सबजगह व्याप्त होनेवालाकानामहै४१ और नरानाम जलों के समूहकाहै और उन्होंके अयननाम प्रवृत्त करनेवाले तुमहींहो इसवास्ते तुमको नारायण कहतेहैं ४२ और हे देव तुमजीवोंको हरतेहो इसवास्ते तुमको हरि कहतेहैं और हे देव तुमसदाशं अर्थात् मंगलकरतेहो इसवास्ते तुमको शंकरकहतेहैं ४३ और बृहत् होने से और बृहण अन्योंको बढ़ाने वाले होनेसे तुम ब्रह्मकहातेहो और मधुइंद्रियों का नामहै इसवास्ते तुम मधुनिषूदन कहातेहो ४४ और हृषीकनाम इंद्रियोंका तिनके तुम ईशहो सो

हे केशव तुम इसवास्ते देवताओंमें हृषीकेश नामसे प्रसिद्धहो ४५
और यह ब्रह्माकानाम और सबभूतोंका ईशमैंहूं सो हमदोनोंतुम्हारे
अंगसे पैदाहुयेहैं इसवास्ते तुमको केशव कहतेहैं ४६ और हे-
हरे मानाममायाकाहै सो उसके तुमधव नामस्वामीहो इसवास्ते
तुमको माधव कहतेहैं ४७ और गोनाम बाणीकाहै सो उसकोतुम
जानतेहो इसवास्ते तुमको मुनियोंने गोविंद कहाहै ४८ और त्रि
नाम मुनियोंने तीनवेदोंका कहाहै सो तुमउन्होंके क्रमते नाम उ-
त्साह करातेहो और बढ़ातेहो इसवास्ते तुमको त्रिबिक्रम कहते
हैं ४९ और अणुनाम बामनकाहै सो आपने बामन अवतारधारण
कियाहै इसवास्ते तुमको अणुकहते हैं और मनन करनेसे तुमको
मुनि कहते हैं और यमन करनेसे तुमको यती कहतेहैं ५० और
तुमजो तपका आचरण करतेहो इसवास्ते तुमको तपस्वी कहतेहैं
और तुम्हारे बिषेसब भूतबसतेहैं इसवास्ते तुमको भूताबास कहते
हैं ५१ और हेहरे तुमसब जीवोंके ईशहो इसवास्ते तुमको ईश्वर
कहतेहैं और हे बिभो सब वेदोंका और गायत्री का तुम ओंकार
रूपहो ५२ और अक्षरोंके बीचमेंतुम अकार हो और सब वर्णोंका
आश्रय रूप स्फोट अर्थात स्फूर्तिहो और रुद्रों के बीचमें मेरे रूप
से तुमहो और बसुओंके बीचमें तुम पावक अर्थात् अग्निरूपहो ५३
और वृक्षोंमें तुम पीपलरूपहो और लोकोंके गुरू तुमहीं ब्रह्मा
हो और पर्वतोंके बीचमें तम सुमेरुपर्वत हो और देवऋषियोंके बी-
चमें तुम नारदहो ५४ और दैत्योंके बीचमें तुम ज्ञानवान्प्रह्लाद
हो और सब सर्पोंकेबीचमें तुम बासुकीसंज्ञकहो ५५ और सबगुह्य-
कोंके बीचमें तुम कुबेरहो और जलोंकेराजा तुमबरुणहो औरतुमहीं
गंगाहो ५६ और तुम सबभूतोंके आदिहो और मध्यहो और अंत
हो और तुम्हारेही बिषे यह सब जगत्उत्पन्न होताहै और तुम्हा-
रेहीमें लीनहोजाताहै ५७ और हे जनार्दनमैंहूंसोतुमहो और तुमहो
सोमैंहूं हमारा तुम्हारा अंतर शब्दोंकरके और अर्थोंकरके नहींहै ५८
और हे गोबिंद जो तुम्हारे महान् नाम लोकमें प्रसिद्धहैं वेही मेरे

नामहैं इसमें कुछबिचार नहींहै ५९ और हे गोबिंदजो तुम्हारीउपासनाहै वहीमेरीउपासनाहै और जोतुमसे बैरकरैहै वह मुझसेभीबैर करैहै इसमें संदेह नहींहै ६० और हे हरे तुम्हारा बिस्तारहै इसो वास्ते मैंभूतपतिहैं। सो हेदेव जोतुमसेरहितहो ऐसाकछु नहींहै ६१ और हे जगत्पते जो होताभया और जोबर्तैहै और जो भाविहै सोतुम्हारेविना कुछनहींहै ६२ और हे बिभोतुम्हारीस्तुति देवता अपने २ गुणोंकरके करतेहैं और हे बिभो तुम ऋग्वेदहो और यजुर्बेद हो और सामवेदहो ६३ सो हेदेव मुझसे क्या कहाजाताहै तुमसर्व भूतभावनहो और हेदेव हेविष्णो हे माधव हेकेशव ६४ सर्वात्मा करके तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे सर्वात्मन् तेरे अर्थ नमस्कार करौहौं और हे कमलनाभ तुझकोमैं नमस्कार करताहूं ६५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांविष्णुस्तवे ऊनाशीत्यधिकद्विशतोऽध्यायः२७९ ॥

दोसौअस्सीका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं इस प्रकार वह शिवजी बिष्णुकी स्तुति करके मुनियोंकेप्रति कहनेलगा कि हेविप्रो और हे भक्तो देखनेको आयेहुये तुमयहजानो १ कि यही विष्णुदेव परम बस्तुहै औरतुमको इससे उपरांत कुछनहींहै २ और हे बिप्रो इसीको तुम्हें अपने मनसे सदा ध्यान करना चाहिये ३ और यही तुम्हारा परमकल्याणहै और यही तुम्हारा परम धनहै ४ और यही तुम्हारे जन्मका कृत्यहै और यही तुम्हारे तपका फलहै और यही तुम्हारे पुण्यका स्थानहै और यही सनातन धर्महै ५ और यहीमोक्षका दाताहैऔर यहीमोक्षरूपहैऔरयहीपुण्यका देनेवालाहैऔरयहीसाक्षात्तुम्हारे कर्मोंका फलहै ६ और ब्रह्मको जाननेवाले बिद्वान् इसीकी प्रशंसा करतेहैं और हेविप्रो यहीवेदत्रयीकीगतिहै और इसगतिकीप्रार्थना ब्रह्मको जाननेवालेभीकरतेहैं ७ और सांख्ययोगको आश्रितहुये पुरुषभी इसीको प्रशंसा करतेहैं और ब्रह्मकेजाननेवाले पुरुषोंकामार्ग

यहीहै ऐसे बेदके जाननेवाले पुरुषोंने कहाहै ८ ऐसे तुमकोजानना चाहिये इसमें कुछ बिचार नहीं करना और सतोगुण को प्राप्तहुये तुमको सदा इस एक हरिकाही ध्यान करनाचाहिये ९ और इस बिष्णु नारायणसे उपरांत जगत्में अन्यदेवनहींहै और हेबिप्रो तुम सदापाठकरतेहुये १० और ध्यानकरतेहुये ओं ऐसे कहतेहुये कल्याण को प्राप्तहोवोगे सो इसप्रकार हरिके ध्यानकरने से साक्षात् हरि तुम्हारेपै प्रसन्नहोवेगा ११ और यहहरिसंसारकीउत्पत्ति और नाश में तत्परहै सो हेबिप्रो इच्छासे प्राप्तहुये इस बिष्णुको तुम सदा ध्यावो १२ और यहीसंसारको बिभव देताहै और यही संसारका बिनाशकरैहै और यही संसारका गुरूहै सो हेबिप्रो तीनप्रकार शरीरको धारण करनेवाले बिष्णुका तुम स्मरणकरो १३ और हे बिप्रो यत्नसे अपने मनका सदा संयमनकरो सो शुद्धअंतष्करणहो-नेसेबिष्णु प्रसन्न होवेगा १४ और सब यत्नकरके मेराध्यान करके फिर तुम इसबिष्णुकोजानो और हे बिप्रो इस हरिकी उपासना करनेसे मेरीही उपासना होजातीहै १५ सो मेरे कहनेसे अबतुमको उपासना करनीचाहिये इसमें कुछ संदेहनहींहै और हे बिप्रोमाया वाले इस बिष्णुका यत्न पापोंके नाशके वास्ते तुमसदाकरो १६ क्योंकितुम्हारी सबबुद्धि यत्न करनेसे शुद्धहोजायगी सोहेबिप्रोजैसे यह बिष्णुदेव प्रसन्नहोवे तैसे तुमकरो १७ बैशंपायनजी कहनेलगे ऐसे कहेहुये वे सब पुण्यमेंस्वभाव रखनेवाले मुनि यथार्थ बस्तुको ग्रहण करतेहुये संशयसे रहितहोगये १८ और शिवजीके प्रति यह कहनेलगे कि हे शिव ऐसेही है हमारा सब संदेह दूरहोगया १९ औरहम इसीवास्ते तुम्हारे स्थान पै आयेथे सो अब तुम्हारे दोनोंके संगमसे हमारा सब मोहनष्ट होगया २० और हे देवेश जैसे तुम कहतेहो तैसेही हमारा कल्याणहै और हमवही करेंगे २१ ऐसे वे सब मुनिकहके हरिकेशवको प्रणामकरतेभये २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायां ऋष्युपदेशेऽशीत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २८० ॥

दोसौइक्यासीका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे पश्चात् वह भगवान् रुद्र सब ऋषियों को आश्चर्य कराता हुआ और स्तुति करतेहुये अर्थवाली श्रुतियों करके मुनियोंके देखतेहुये बिश्वेश्वर विष्णुभगवान्‌का स्तोत्र वर्णन करनेलगा १ अबशिवजीसे कहाहुआ बिष्णुस्तोत्रकावर्णन करतेहैं २ महेश्वरउवाच॥नमोभगवतेतुभ्यं बासुदेवायधीमते यस्यभासाजगत् सर्वं भास्यतेनित्यमच्युत ३ नमोभगवतेदेव नित्यसूर्यात्मनेनमः यः शोतयतिशीतांशु लोकान्सर्वानिमान्प्रभुः ४ नमस्तेविष्णवेदेवनित्यंसोमात्मनेनमः यःप्रजाःप्राणयत्येको बिश्वात्माभूतभावनः ५ नमः सर्वात्मनेदेव नमोबाय्वात्मनेहरे योदधारकरेणासौकुशचीरादियत्स दा ६ दधारवेदान्सर्वांश्च तस्मैब्रह्मात्मनेनमः सर्वान्संहरतेयस्तु संहारेविश्वदृक्सदा ७ क्रोधात्मासिविरूपोसि तुभ्यंरुद्रात्मनेनमः सृष्टौसृष्टासमस्तानांप्राणिनांप्राणदायिने ८ अजायविष्णवेतुभ्यं सृष्टे विश्वसृजेनमः आदौप्रकृतिमूलायभूतानांप्रभवायच ९ नमस्तेदेवदेवेशप्रधानायनमोनमः पृथिव्यांगंधरूपेण संस्थितःप्राणिनांहरे १० दृढ़ायदृढ़रूपाय तुभ्यंगंधात्मनेनमः अपांरसायसर्वत्र प्राणिनांसुख हेतवे ११ नमस्तेबिश्वरूपायरसायचनमोनमः तेजसाभास्करोय स्तुघृणोजंतुहितःसदा १२ तस्मैदेवजगन्नाथ नमोभास्कररूपिणेबा योपर्शोगुणोयत्रशीतोष्णसुखदुःखदः १३ नमस्तेवायुरूपायनमःस्पर्शात्मनेहरे आकाशेऽवस्थितःशब्दः सर्वश्रोत्रनिवेशनः १४ नमस्तेभगवन् विष्णोतुभ्यंशब्दात्मनेनमः योदधारजगत्सर्वंमायामानुषदेहवान् १५ नमस्तुभ्यंजगन्नाथ मायिनेमायदायिने नमआद्यायवीजाय निर्गुणायगुणात्मने १६ अचिंत्यायसुचिंत्याय तस्मैचिंतात्मनेनमः हरायहरिरूपायब्रह्मणेब्रह्मदायिने १७ नमोब्रह्मबिदेतुभ्यं तुभ्यंब्रह्मात्मनेनमः नमःसहस्रशिरसेसहस्रकिरणायच १८ नमःसहस्रवक्त्राय सहस्रनयनायच विश्वायबिश्वरूपायबिश्वकर्त्रेनमोनमः १९ बिश्व वक्त्रे नमोनित्यं भूतावासनमोनमः इंद्रियायेन्द्र्यरूपाय विषयायसदा

हरे २० नमोऽश्वशिरसेतुभ्यंवेदाभरणरूपिणे अग्नयेऽग्निपतेतुभ्यं
ज्योतिषांपतयेनमः २१ सूर्यायसूर्यवपुषेतेजसांपतयेनमः नमःसोमा
यसौम्यायनमःशितात्मनेहरे २२ नमोवषट्कृतेतुभ्यंस्वाहास्वधा
स्वरूपिणे नमोयज्ञाथइज्यायहविषेहव्यसंस्कृते २३ नमःस्रुवाय
पात्रायय ज्ञांगायपरायचनमःप्रणवदेहायक्षरायाप्यक्षरायच २४ बेद
रूपायवेदायशास्त्रायशास्त्ररूपिणे गदिनेखड्गिनेतुभ्यं शंखिनेचक्रिणे
नमः२५शूलिनेचर्मिणेनित्यंवरदायनमोनमः बुद्धप्रियायबुद्धायप्रबुद्धा
यसुखायच२६हरयेविष्णवेतुभ्यं नमःसर्वात्मनेगुरोनमस्तेसर्वलोकेश
सर्वज्ञेनमोनमः २७ नमःस्वभावशुद्धायनमस्तेयज्ञशूकरनमोबिष्णो
नमोबिष्णोनमोबिष्णोनमोहरे २८ नमस्तेचास्तुदेवायबासुदेवाय
धीमते नमःकृष्णायसर्वायसर्वावासनमोनमः २९ नमोभूयोनमस्ते
स्तुपाहिलोकान्जनार्दन ३० इसप्रकार इसस्तोत्र करके विष्णु
की स्तुतिकरके फिर वह शिवजी मुनियोंके प्रति कहनेलगा ३१कि
जो इस स्तोत्रका पाठकरेंगे वे नित्य विष्णुको प्राप्तहोवेंगे और सब
भूतोंकारक्षक विष्णु कल्याणकरेगा ३२और जो पापोंका नाशकरने
वाला इसस्तोत्रका पाठकरेगा तिन्होंकेप्रतिभगवान् प्रसन्नहोवेंगे
और सुननेवालोंके प्रतिभी प्रसन्नहोवेंगे ३३ और धर्मात्मा विष्णु
निश्चय कल्याण करेगा इसमें कुछसंशयनहींहै सोतुमअवश्य केशव
भगवान्काध्यानमनसेकरो ३४ क्योंकि जोपैंनेव्रतवालेतुमकल्याण
की इच्छा करते हो इसवास्ते ऐसेकहके वहभगवान् रुद्र अपने
गणके सहित तहां अंतर्द्धान होगया ३५ और पश्चात् वे सब मुनि
परमनिवृत्तहोगये ३६ और तिस नारायणको परमतत्त्वजानकेपरम
बिस्मयको प्राप्तहोके आयेको कृतार्थ मानतेभये ३७ और तबलोक
पाल विष्णुको नमस्कार करके अपनेगणोंसे युक्तहुये अपने अपने
घरोंविषे जातेभये ३८ और पश्चात् बिष्णु भगवान् गरुड़पै चढ़के
और शंखचक्रगदा खड्ग धनुष तूणी तलत्र ३९ इनशस्त्रोंको धारण
किये और अपनी इच्छापूर्बक बदरिकाश्रम अर्थात् वदरीनारायण
में जातेभये और तहां संध्यासमय में प्राप्तहोके ऋषियोंसे सेवित

हुये ४० और तहां यथायोगसे सबको नमस्कारकर और मुनियोंसे सेवितहुये सुखपूर्वक आसन पै बैठते भये ४१ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकैलासयात्रायांकृष्णप्रत्यागमनेएकाशीत्यधिकद्विशततोऽध्यायः २८१ ॥

दोसौबयासीका अध्याय ॥

वैशंपायन जी कहतेहैं इसी कालके अनंतर पौंड्र नाम वाला और वलवान् और सत्व संपन्न और योद्धा और अति पराक्रम वाला १ और यादवोंका शत्रु और कृष्ण से बैर करनेवाला ऐसा एकराजा सबराजाओं को बुलाके अपनी सभामें यह कहनेलगा २ कि मैंने सब पृथ्वी जीतली और सबराजे जीतलिये और ये बल से उन्मत्तहुये यादव कृष्णके आश्रय होके गर्वित होरहे हैं ३ सो ये मुझको करदेवेंगे और जो नहींदेवेंगे तो येमेरेशत्रुहैं और यहकृष्ण चक्रको धारण करके मुझको बिनाजाने स्थित होरहा है ४ और तिसगोपके यहगर्व होरहाहै कि मैं चक्रको धारण करनेवालाहूं और शंखवालाहूं चक्रवालाहूं और गदा शार्ङ्ग धनुष बाण तूणीर इन्होंको धारण करनेवालाहूं ५ ऐसे तिसके गर्भ होरहा है और वासुदेव इसनामसे प्रसिद्ध होरहाहै ६ सोवहगोप मद से युक्तहुआ मेरे नामको ग्रहणकर रहाहै और तिसके नामवाला मेराभी चक्र बड़ा पैनाहै ७ और उसके सुदर्शनचक्रकागर्वका नाश करनेवाला है और हजारफैखड़ियोंवालाहै और तिसकेचक्रकानाशकरनेवालाहै ८ और हेराजाओ मेराभीयहधनुष शार्ङ्ग नामवालाहै और महाशब्द करनेवालाहै ९ और कौमोदकी नामवाली यहमेरीबड़ीगदाहै और यहगदा हजारभार लोहाकी बनीहुई है१० और नंदकनामवाला यह मेरा दृढ़खड्गहै और यह कालकाभी नाश करनेवालाहै और तिस कृष्णके खड्गका नाश करनेवालाहै ११ इसवास्ते मैंगदीहूं और चक्रीहूं और खड्गीहूं और शंख और धनुषको धारण करनेवालाहूं और युद्धमें कृष्णको जीतने वालाहूं इसमें कछु बिचारनहीं है १२

और सेहेराजाओ मुझको तुम गदावालाकहो और चक्रीशंखी शार्ङ्गी और शूरबीर मुझकोही कहो १३ और बासुदेवभी मुझकोही कहो और यदुओंमें उत्तम तिसकृष्णको मतकहो और तिस गोपके पुत्र को मारके मैं एकही बासुदेव जगत्में प्रसिद्ध रहूंगा और यह कृष्णमेरे मित्र नरकासुरको मारनेवालाहै और जो कोई मुझको वासुदेव नहीं कहेगा तो वहसैकड़ों भार १४ सुबर्णके और बहुतसे अन्नोंके भारोंका दंड देने लायक होगा इसप्रकार दुःसह वचनइस राजाके कहनेके १५ पीछेश्रीकृष्णके रस और बलबीर्य इन्होंको जाननेवाले कईक तो बीर्यवान् राजे लज्जासे युक्तहोगये १६ और कईक राजे यहकहने लगे कि आप कहतेहो ऐसेही है और अनेक मदवाले राजेऐसेकहनेलगे कितिसकृष्णको हमरणमेंजीतेंगे १७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांद्व्यशीत्यधिकद्वि शतोऽध्यायः २८२॥

दोसौतिरासीका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहने लगे तिसीकालके अनंतर नारदमुनि कैलास पर्वतसे निकसके पौंड्रराजाके नगरकेप्रतिआताभया १ और आकाशमार्गसेउतरकेतिसराजाकेदरवाजेआगेआके स्थितहोताभया पश्चात् द्वारपाल को खबरदी २ फिर राजा इस नारदमुनिकीपूजा अर्घादिकों से करताभया फिर पूजितहुआ वह नारदमुनिश्रेष्ठ आ· सनपै बैठगया ३ फिर वहश्रेष्ठमुनि कुशल पूछनेलगा पश्चात् वह पौंड्रक राजाबल से गर्वित हुआ यह कहनेलगा ४ कि तुम सर्वत्र चतुरहो और सबकार्योंमें चतुरहो और देवसिद्ध गंधर्व महात्मा इन्होंमें तुम प्रसिद्धहो ५ और सबजगह बिचरनेवालेहो और सब जगह बाधासे रहितहो और हेबिप्रेंद्रतेरेको ब्रह्मांडमें अगम्य कछुभी नहींहै ६ सो हे नारद तुम यहकहो किसिद्ध और लोकमें बिख्यात ऐसातू जहांजहां गयाहै ७ सो तहां पौंड्रराजा बासुदेव नामसे प्रसिद्धहै और शंखधारण करनेवाला चक्र धारण करनेवाला और

गदा धारण करनेवाला और खड्गी शार्ङ्गी तूणी तलत्रवान् ८ और राजरूपी सिंहोंको जीतनेवाला और सब वस्तु को देनेवाला और भोगनेवाला और सवराज्यको बलसे भोगनेवाला और शिक्षा देनेवाला ९ और शत्रुओंकी सेनासेजीतने लायकनहीं और स्वजनों की रक्षाकरनेवाला ऐसा मैं प्रसिद्धहो रहाहूं अथवा जो कि अब यहगोप वासुदेव होरहाहै इसको प्रसिद्ध मानतेहैं १० और इसके वीर्यवलतो मेरे नामसे नहींहोवेंगे और वह गोप वृथा बालकपनसे मेरे नामको धारण करेहै ११ सो तुम यह निश्चयकहो कि मैं बल वाले यदुओंको जीतके अकेलाही प्रसिद्धहोऊं १२ और बलमें इन सब यादवों को जीत के मथुरापुरी को दग्ध करूंगा और हे महामते यदुओंके स्थानोंवाली द्वारकाकोभी मैं जीतूंगा १३ और ये सब बलवाले राजे मेरेपास आरहेहैं और वेगवाले अश्वहैं और वायु सरीखे वेगसे चलनेवाले रथ हैं १४ और मदवाले हजारों ऊंट हैं और दशहजार हाथीहैं सो इससेना करकेयुद्धमें मैं केशवको अर्थात् श्रीकृष्णको मारूंगा १५ सो हेबिभो यह मेरी तेरेसे प्रार्थना है और हेतपोधन तेरेको नमस्कार करताहूं १६ नारदमुनि कहने लगे मैंसदा सबजगह ब्रह्मांड पर्य्यंत विचरताहूं और हे नृपमैंसव कार्योंमें और गमनमें अवार्य अर्थात् किसीसेंनिवारण करनेलायक नहींहूं १७ परंतु हेराजन् तेरेआगे कछुकहनेमें मैं कछु उत्साहनहीं मानताहूं क्योंकि देवताओंकाईश और चक्रधारण करनेवाला १८ और सबजगह विचरनेवाला ऐसा बिष्णु भगवान् दुष्टबांधवों को मारके जबराज्य कररहाहै तबइस हरिके आगेकौन वासुदेव नाम से ठहरेहैं १९ और कृष्णके राज्यकरतेहुये ऐसेकौन नामकाकहताहै और स्वभावसे समर्थ मनुष्य अज्ञानसहो ऐसे कहतेहोंगे २० और सबजगह विचरनेवाले और अचिंत्य बिभववाले और शार्ङ्ग धनुषको धारण करनेवाले और गदाधर २१ ऐसेबिष्णुतेरे अभिमानको दूर करेंगे और हे महाराज यहवार्त्ता तुहास्यकेवास्ते कहताहै २२ और वह श्रीकृष्ण तुझको शार्ङ्ग धनुष तथा महाघोरखड्ग तुझको नहीं

होगा सो हे राजन् यहतेरा हास्यकाल प्राप्तहो रहा है २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्रकनारदसंवादेत्र्यशीत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २८३ ॥

दोसैचौरासीका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं पश्चात् मदबलसे युक्तवह पौंड्रनामवाला राजाक्रोधसे युक्तहोके ब्राह्मणोंमेंश्रेष्ठ तिसनारदके प्रतिकहनेलगा १ कि हेबिप्र ऋषिक्या मैं राजानहींहूं सोहे मुनेतुम अपनी इच्छा से चलेजावो और तुमसदा शापके देनेवालेहो २ सोहे महाबुद्धे तुमसे मैं भयमानताहूं तूइच्छापूर्वक चलाजा ऐसेराजाके कहते वहनारद चुपहोगया ३ पश्चात् जहांश्रीकृष्ण भगवान्थे तहां आकाशमार्ग करके जाताभया और तहांजाके विष्णुके तेजवाले श्रीकृष्णके प्रति सबवृत्तांत वर्णन करताभया ४ और पश्चात् वहविष्णु भगवान् सुनकेयहबोला कि हेद्विजसत्तम उसकाअभिमान हमकहलिके दिन छेदन करेंगे ५ ऐसे कहके तिस बदरिकाश्रम में रमण करतेभये और पश्चात्वह पौंड्रनामवालाराजा बहुतसी सेनाओं करकेयुक्त६ और अनेक हजारअश्व और हाथियोंकरकेयुक्त और किरोड़ों हथियारोंकरके युक्त७और कईयेक हजारोंके सैकड़े प्यादोंसे युक्त और एक लव्यनामआदि अनेक राजाओं से युक्त ८ और आठ हजार रथोंसे युक्त और दशहजार हाथियोंसे युक्त और एकअर्ब पियादों से युक्त इसप्रकार अपनी सेनासे युक्तहुआ ९ वहराजा युद्धमें प्राप्त होताभया और जैसेउदयहोता सूर्य प्रकाशमानहोवै तैसे प्रकाशित होताभया १० और इसतरह सेनासे युक्तहो के अर्धरात्रि के समय द्वारकापुरीबिषे प्राप्तहोताभया और अंधेरासेयुक्त तिसदारुणरात्रि बिषे अपने २ हाथोंबिषे सब दीवट आदि लेतेभये ११ और अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे युक्तहुये शूरबीरों से संपन्न और महाघोर ऐसी द्वारकापुरीमें प्राप्तहोतेभये १२ और बड़ेरथमें बैठके और शस्त्रोंके समूहसे युक्तहुआ और पट्टिश शस्त्र विशेष और खड्ग और गदा

और परिघ १३ और शक्ति और तोमर इनशस्त्रोंसेयुक्त और ध्वजा और मालासे शोभित और किंकिणी और जालियोंसेयुक्त १४ और महाघोर और महारौद्ररूप और युगांत मेघशरीखे रूपवाला और धनुषगदा इन्होंसेयुक्त १५ और अग्नि और सूर्यके समान आकार वालाऐसावह बलवान् राजादीपक आदिकों को ग्रहण किये हुये द्वारका पुरी में प्राप्तहोताभया १६ और महाकांतिवाला वहराजा श्रीकृष्ण को और यादवों को मारने की इच्छा करताहुआ बलवाले योद्धाओं को बुलाके १७ और तिसपुरीके दरवाजोंकेआगे अपनीसेना को स्थित करके सब राजाओं के प्रति यह कहनेलगा १८ कि भेरी आदि बाजे मेरानामलेके बजाओ और यह कहोकि हे यादवो तुम जल्द युद्धकरो और नहीं तो इस राजाको करदेवो और बीर्यवाला पौंड्कनाम राजा तुमसबोंको कृष्णसमेत मारनेकेवास्तेआयाहै १९ ऐसे प्रेरेहुये वे सब सूचक यदुवोंके प्रतिजातेभये और दीपक आदि सैकड़ों हजारों प्रदीप्तहोगये २० और युद्धकी लालसाकरतेहुये राजा जहां तहां युद्धकरनेलगे और शस्त्रवाले वै सबक्षत्री द्वारका पुरी को आगेकरके २१ सिंहशरीखा शब्दकरनेलगे औरशस्त्रोंकेसमूहोंसेयुक्त हुये यहकहनेलगे कियादवोंमेंश्रेष्ठ वहजगत्पतिराजाहुआ श्रीकृष्ण कहांहै २२ और सात्यकि शूरबीर कहांहै और हार्दिक्य कहांहै और यादवोंमें श्रेष्ठ बलदेवकहांहै २३ ऐसे कहतेहुये वै सबराजे बहुतसे शस्त्रोंकोलेके और अपने अपने धनुष बाणोंकोलेके श्रीकृष्ण की द्वारकापुरीके प्रतियुद्धके वास्ते युक्तहोतेभये २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्कस्यद्वारकागमनेचतुरशीत्यधिकद्विशततोऽध्यायः २८४ ॥

दोसौपचासीका अध्याय ॥

वैशंपायनजीकहतेहैंपश्चात्सबयादवतिससेनाकेसमूहकोदेखके और रात्रिविषे महाशस्त्रोंसेसमाकुल प्राप्तहुआ व्यसनकोदेख १ ऐसे देखतेभये किजैसे महावातसे उपजाकल्पके अंतसे समुद्रचढाआता

हो और फिरवेयादवशस्त्रबांधके युद्धकीइच्छाकरतेहुये २ और दीप-
कआदिकोंको ग्रहणकिये हुये और शस्त्रोंसे युद्धकरनेवाले सबआते
भये और सात्यकि बलदेव हार्दिक्य और निशठ ३ महाबुद्धिवाला
उद्धव महाबलवाला उग्रसेन और अन्यसबयादव अपनेअपने कवचों
को पहनेहुये ४ और युद्धमेंकुशल और रात्रिमें अतियुद्ध करनेवाले
और शस्त्रोंकोधारण करनेवाले और खड्गको धारण करनेवाले और
अनेक प्रकारके शस्त्रोंसे युक्त ५ ऐसे बहुतसे बाहुशालीराजे युद्धके
वास्तेआतेभये और रथोंसेयुक्त और हाथियोंसेयुक्त औरहथियारोंसे
युक्त६ और धनुषऔरबाणोंसेयुक्त ऐसे महात्मा अनेक योद्धा नगरसे
बाहिर दीपकआदिकों से युक्तहुये जल्द निकसतेभये ७ और सब
यादव ऐसे कहतेभये पौंड्रराजाकहांहै और दीपकोंसे वहदेशअंधेरा
से रहित होगया ८ और जबचारों तर्फ उजियालाहोगया तब तिन
शत्रुओंके संगयादवोंका घोरयुद्ध मचनेलगा और तब महान् नाद
रोमोंको खड़ा करनेवाला होताभया और अश्व तो अश्वोंके संग
रूपतेभये और हाथीहाथियोंकेसंगरूपतेभये ९ और रथरथोंकेसंग
रूपतेभये और अश्वोंपैचढेहुये पुरुष अश्वोंपै चढ़ेहुयों केसंगलड़ते
भये और तलवारोंवाले तलवारवालों के संग और गदावाले गदा
वालोंके संगयुद्धकरने लगे १० ऐसेआपसमें उन्होंका दारुणयुद्ध
होताभया और तिन महात्माओंका शब्द महाप्रलयके क्षोभसरी
खाहोनेलगा ११ और चारोंतरफ भाजतेहुयों को मारनेलगे और
आपश में ऐसे कहनेलगे कि यहमहाबाहु खड्गको धारण कियेहुये
पड़ाहै १२ और यहघोर बाणोंवाला अतिदारुणहुवा बर्त रहा है
और यहमहाबीर्यवाला गदाकोधारणकिये हुयेहेन्टप हमैंबाधादेता
है १३ और यहरथमें बैठाहुआ सूखी रहमको बाधा देरहाहै और
बाणोंवाला औरगदावाला हमको बाधादेरहाहै १४ और यह तूणी
और तलवार और पट्टिश शस्त्रवाला और करौंत शस्त्रवाला ये सब
हमकोबाधा देरहेहैं १५ औरयहशूलको धारणकियेहुये चारोंतरफ
स्थितहोरहाहै और महान्दंत वाला यहहाथी सवके प्रतिभाजरहा

है १६ और भालावाले पुरुष भालावालोंको हननकरतेहैं और यह एक शूरवीर वायुसरीखे वेगकरके विचरता हुआ वाणोंसे वाणोंको छेदनकररहाहै १७ और दंडों करकेदंडोंको छेदन कररहाहै और परिघ शस्त्रोंको परीघोंसे छेदन कररहेहैं और शूलों करके शूलोंको छेदनकर रहेहैं १८ ऐसे बैशंपायन जी परीक्षितके प्रतिकहते हैं कि हे महाराज इसप्रकार तिन्होंके युद्धकरतेहुये महान् शब्दहोताभया १६ और तिस युद्धमें बहुतसे भूतशब्द करतेहुये और शस्त्रोंकोलिये हुये प्रकटहोतेभये २० और तिस युद्धमें रात्रिके समय महान् रोमोंकोखड़ाकरनेवाला शब्द होताभया और तिन्होंके संगयादवों का दारुणयुद्धहुआ २१ और कईएक महापराक्रमवाले शूर बीर हतहुये प्रथ्वीमें गिरतेभये और कईएक गिरतेहुये युद्ध करनेलगे २२ और कईएकहाथोंमे शस्त्रलिये पृथ्वीमेंगिरते भये और कईएकराजे मर्म स्थानसेभिन्नहुये पृथ्वीमें गिरते भये २३ और आपसमें युद्धकरके वधकरनेकी इच्छाकरतेहुये और शस्त्रोंसे रहितहुये २४ ऐसे अनेक राजे प्राणोंसे रहितहोके पृथ्वीमें गिरतेभये और कई धर्म राजके स्थान को बढ़ातेभये अर्थात् युद्धमें भाजनेलगे इसप्रकार पीथितहुये वेसवजबमरनेलगे २५ तव एकलब्यनामवाला निषादोंकापति और अंतकालके सदृश वर्णवाला २६ ऐसावहयोद्धा अपनेधनुषको ग्रहण करके युद्ध में आताभया और पश्चात् तिनयादवोंको अनेक हजार वाणोंकरके पीड़ा देताभया और मर्मको भेदनकरनेवाले २७ ऐसे अनेक पैने २ वाणोंसे यादवोंकी सब सेनाको पीड़ा देताभया २८ और हाथोंमें शस्त्रलियेहुये जो क्षत्री युद्धकररहेथे तिनको पीड़ादेने लगा २६ और पच्चीसवाणोंसे निसठराजाको पीड़ादेताभया और सारणयादवको बींधता भया और हार्दिक्ययादवको पांच वाणोंसे बींधताभया३०और उग्रसेनको६०वाणोंसेबींधताभया और वसुदेव को ७ वाणों सेपीड़ा देता भया और दशबाणोंसे उद्धवकोपीड़ादेता भया और अक्रूरको पांच वाणोंसे बाधा देता भया ३१ इसप्रकार येसव यादव पैने वाणोंसे हनन किये ३२ और पश्चात् पराक्रम

वालावह एकलव्यराजा ऐसेकहनेलगाकि अबवहसात्यकि शूरबीर कहां जावेगा ३३ और मदसे मत्त हुवा बलदेव हलको धारण करने वाला और गदाको धारण करनेवाला अब कहां जाताहै ३४ ऐसे वहएकलव्यराजा कहके सिंहसरीखे शब्दसे सबोंको आश्चर्य कराता भया ३५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्रकबधेरात्रियुद्धे पंचाशीत्यधिकद्विशतोध्यायः २८५ ॥

दोसौछियासीका अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहतेहैं जबऐसे प्रकार युद्ध करनेसेयदुवों की सेना निवृत्त होगई और भयभीत और हतहोगई १ और दीपक शांतहोगये और सब जगह चुप होगये तबयादवों की सेनाजीतली ऐसा जानके २ वह महा पराक्रम वाला पौंड्रराजा अपनी सेनासे यह कहने लगा कितुह्म सब जल्दजाके इस द्वारकापुरी को भालोंसे और कुठारोंसे और पत्थरोंसे जल्द छेदन करदेवो ३ औरचारों तरफ राजेप्राप्त होजायं और इस नगरीकी ध्वजा और महलों को छेदन कर देवो ४ और यहांकी सबकन्या और दासियोंको ग्रहण करलेवो ५ और मुख्य २ रत्नोंको ग्रहणकरलेवो और सब धनको खोस लेवो ऐसे वहराजा कहताभया फिर सब राजासुनके ऐसेही करेंगे ६ यहकहके पौंड्रककी आज्ञासे चारों तरफ महलोंको और ध्वजाओंको छेदन करनेलगे ७ औरजब वे सबराजापत्थरोंको छेदनकरनेवाला टंकशस्त्रसे ध्वजा आदिकोंको काटनेलगे तब महान् शब्दहोताभया ८ और पूर्वकेदरवाजोंके महलोंकोछेदनकरनेकेशब्द को सात्यकि यादवसुनके क्रोधमें मूर्छितहोताभया ९ और यहबिचार करने लगाकि यादवोंका ईश्वर श्रीकृष्णमेरे भरोसे सबकुछ सौंप के कैलाश पर्वतमें शिवकोदेखने गयाहै १० सो अवश्य यहद्वारका पुरीमेरेही से रक्षित होनीचाहिये ऐसे मनसे चिन्तवन करके जल्द धनुषको ग्रहणकर ११ और बड़े रथमेंबैठ और वहरथ दारुककेपुत्र

से रचाहुआथा और उसरथका सारथी वह दारुकका पुत्र आपही होताभया १२ और पश्चात् तिस महान् धनुषको ग्रहणकर और सर्पके विषके समान उपमावाले बाणोंको ग्रहण करताभया और दृढ़कवच पहिनताभया १४ और अंगदी अर्थात् बाजूबंदको धारण किये और कुंडली अर्थात् कुंडलोंको धारणकियेहुये औरतूण,बाण, धनुष,गदा, खड्ग इन्होंको धारणकर और श्रीकृष्णके वचनों को स्मरणकरताहुआ शनै२ युद्धकेवास्ते चलताभया १५ पश्चात् दीप कोंसे प्रकाशित देशमें वहसात्यकि प्राप्त हुआ और बलदेव भीमा स्वर रथमें बैठ १६ गदा और बाणोंको धारणकर सिंहसरीखा शब्द करताहुआ और भयंकर शब्द करताहुआ युद्धकी इच्छाकर के प्राप्तहोताभया १७ और बलवाला उद्धवभी हाथीपै चढ़के महा घोर शब्द करताहुआ १८ और नीतिबिचारता हुआऔरपरम प्रसन्नहुये तिसरणमें प्राप्त होताभया और भीहार्दिक्य आदिसब यादव युद्धकी लालसाकरके १९ रथोंपै और हाथियोंपै बैठके और दीपकों से युक्तहुये २० और सिंहसरीखा शब्दकरतेहुये औरकेशवके वचनकर स्मरण करतेहुये पूर्वके दरवाजे प्राप्त होके यथा योग्य स्थितहोते भये २१ और पश्चात् दीपकोंसे प्रकाशित देशमें प्राप्त होके वहगदी और शरोचापी और तूणऐसा सात्यकिबीर बायुरूपी अस्त्रकोलेके बाणमें युक्तकरताभया २२ पश्चात् धनुषकोकानपर्य्यंत तानके तिसको छोड़ताभया २३ फिरतिस बायुरूपीशस्त्रसे पराजित हुये सबराजे बायुकेवेगसे निर्धूतहुये पौंड्राजाके समीपजातेभये २४ और फिरवह सात्यकिवीर जहांवे राजे पहले स्थित होरहे थे २५ तहां सर्पसरीखा पैनाबाणलेके जल्द प्राप्तहोताभया और यहकहने लगा २६ कि अबमहा बुद्धिवाला पौंड्राजा कहांहै और मैं धनुष बाणोंको लियेयुद्धके वास्तेखडाहूं २७ और जोमैं दुष्टात्मा नराधम को अवदेखूं तोमारदेऊ और मैं केशवका भृत्यहूं सो यहां पौंड्के मारनेकीइच्छा करेखडाहूं २८ और सबक्षत्रियोंके देखतेहुये तिसके शिरको छेदनकर गीध और श्वानोंके अर्थबलि देऊंगा २९ और

चौरकी तरह सबयादवोंके सोतेहुये ऐसाकर्म करताहै ३० सो यह राजासर्बथाचौरहै और राजबलसे युक्तनहींहै और जोयदियहराजा समर्थहोवे तो ऐसी चोरीका कर्मनहींकरे ३१ सो बड़ाआश्चर्यहै कि यह ऐसाचौर कर्मकरताहै सो अबमैं इसको नहीं जानेदेऊंगा ३२ ऐसे कहके वहसात्यकि बीर हंसताभया और अपनेदृढ़ धनुषपैबाण को चढ़ाताभया ३३ और पश्चात् वह पौंड्रराजा सात्यकिके बचनों कोसुनके ऐसेकहनेलगा कि कहांहै वहगोपालकृष्ण और अबकहां चलागया ३४ और स्त्रियोंको मारनेवाला और पशुओं को मारने वालाऐसा कृष्णको तूस्वामी भावसे सेवताहै और वहअबमेरेनाम कोग्रहण करके अबकहांहै ३५ और मेराप्यारा नरका सुरकोमारने वालाहै सोइसयुद्धमें मैं उसको मारूंगा ३६ और हे बीरतू चला जा मुझसे युद्धकरने लायक नहींहै और जो यदिठहरेहै तो कछुक मेरेबलको देख ३७ घोरबाणों करके तेरेशिरको काटूंगा और तेरे मरनेके पोछेतेरे रुधिरको यहपृथ्वी पीवैगी ३८ और वहगोपकृष्ण भी सुनेगा कि सात्यकि मरगया ऐसे सुननेसे तेरे अभिमान वाला वहकृष्णभी मरजावैगा ३९ और हेमहामते हमनेयह पहलेही सुनलिया है कितेरे बिषे इसपुरीको रक्षासौंप के वहकृष्ण कैलाश पर्वतमें गयाहै ४० सोहे सात्यकि बीरजो तू समर्थहै तोमेरे बाण कोग्रहणकर ४१ ऐसेकहके वहपौंड्रराजा बाणको लैकेयुद्धके वास्ते स्थितहोता भया ४२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्रकबधे रात्रियुद्धेषटशीत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २८६ ॥

दोसैसत्तासीका अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहतेहैं पश्चात् यादवोंमें श्रेष्ठवह सात्यकि बासु देवका स्मरण करता हुआको तरह बचन कहनेलगा १ श्रीकृष्ण को ऐसेबचन कहनेको कौनयुक्तहै और जगत्के नाथको ऐसाबचन कहके कौनअधम नृपजीवनेकी इच्छा करताहै २ सोहे पौंड्र ऐसे

वचन कहतेहुये सर्वथा तुझको मृत्यु प्राप्तहो रहीहै और ऐसावचन कहताहुआ कौतेरी जिह्वाकेसौटुकड़ेकरनाचाहिये ३ और हेपौंड्रक इसतेरे शिरको कायासे नीचेगेरूंगा क्योंकि जोतू बासुदेव अपना नामकर रहाहै ४ और इतनेतेरा शिरकटके पृथ्वीमें गिरेगा इतने तू वासुदेव वनारह पश्चात् प्रातःकालवही श्रीकृष्ण बासुदेव रहैंगे ५ इसमें संदेहनहीं और हेदुरात्मन् सबजगत्काकर्त्ता जगन्नाथ देवएकही होवेगा इसमें संशयनहींहै ६ और हेपौंड्रक जोअबविष्णु भगवान् नहीं आवेंगे तोमैं इसतेरे शिरको काटूंगा ७ और अबतू अस्त्रवीर्य और वलसब मुझको दिखा और हे राजन् और तेराकछु वीर्यनहींहै ८ सो तूसब अपना बल मुझको यत्नकरके दिखामैंयहां शर,चाप,गदा खड्ग इन्होंको धारण कियेसर्बथा खड़ाहूं ९ औरयह नगर मायावी नहींहै यहबातमैं सत्य करके कहाहूं सोतुझ बासुदेव को देखके मैंसर्वथा कृतकृत्यहूं १० और तेरेअंग के छोटे २ टुकड़े करके श्वानोंके वास्ते गेरूंगा ऐसेकहके वह सात्यकि तिसबासुदेव के प्रतिबाण उठाताभया ११ और पश्चात् कानतक धनुषको खींच के पैने २ बाणोंसे तिसराजाको बींधताभया पश्चात् प्रताप वाला वहपौंड्र राजा १२ सात्यकिसे बींधाहुआपैने २नवबाणोंसे सात्यकि को बींधताभया और बहुतसा शब्द करताभया १३ और पश्चात् वहऐश्वर्य बाला वासुदेव राजापैना बाणको धारण करके फिर सात्यकि यादवके मारताभया १४ और रात्रीमें अपनेपुरुषों को प्रसन्न करता भया पश्चात् तिसबाणसे बिंधाहुआवह १५ सात्यकि मस्तककी जगह ढ़ढ़लगनेसे दुःखी होगया और निश्चेष्टकी तरह होनेलगा१६औरपश्चात् वह पौंड्रराजासात्यकिके दशबाण मारता भया और २५ बाण तिसके सारथीके मारताभया और चारों घोड़ों को मारताभया १७ फिरवैघोड़े और वहसारथी रुधिरसे आसक्त हुआ वासुदेवके देखतेहुये बिह्वल होगये १८ और पश्चात् वह बासुदेव अपने रथमें बैठाहुआ सिंहसरीखा शब्द करताभया तिस शब्दसे सात्यकि बोधसे रहित होगया १९ पश्चात् वह बिद्वान्

और महापराक्रमवाला सात्यकि तिसप्रकार घोड़ोंको और सारथि को देख क्रोधकरता भया २० और यहकहनेलगाकि सबतेरेपराक्रम को देखूंगा ऐसेकह बाणको धारणकर पश्चात् तिसराजाकी छाती में मारताभया २१ फिरतिस बाणके लगनेसे वह बासुदेव राजा तिस युद्धमें चलायमान होगया और छातीसे घोररुधिर बहने लगा २२ और रथके उपस्थ भागमें ऐसे गिरता भयाकि जैसे तड़फताहुआ सर्पगिरे तैसे और कृत्यकोभी नहीं जानता भयाफ़कत् दुःख को प्राप्तहोगया २३ और पश्चात् वह सात्यकि दशबाणोंकरकेरथको छेदनकरताभया और भालासे तिसकी ध्वजाको छेदन करताभया २४ और बाणोंकरके चारोंघोड़ोंको मारताभया और सारथिको मारताभया और पश्चात् सारथीके संगवह सात्यकि युद्धकरताहुआ २५ तिससारथि के शिरको कायासेनीचे गेरताभया और तिसके रथकी ग्रन्थीकोछेदन करताभया और घोड़े मृत्युको प्राप्तहोतेभये २६ और वेगसे दशबाणों करके तिसके चक्रके टुकड़े करताभया ऐसे करके फिरवह सात्यकि बासुदेवको बहुतसा हंसने लगा २७ और पीछे यादवों को आनंद देनेवाला वहसात्यकि सबक्षत्रियों के देखतेहुये २८ शब्द करके जल्द ७० सत्तर बाणों करके तिसराजाको पीड़ा देता भया और वे बाण टीड़ियोंके आकार हुये तिसके चारों तरफ गिरतेभये २९ और शिरकेप्रति और पांशुबिषे और पीठबिषे और आगे बाणोंका वनकी तरह समूह होगया ३० और जैसे मनस्वी तपस्वी बिरक्त हुआ खड़ाहो ऐसेवह पौंड्रक राजा खड़ाहोताभया और पश्चात् बलवाला वह बासुदेव राजा क्रोध करता भया ३१ और धनुषको ग्रहण करके युद्धमें सात्यकि को बाधादेनेलगा और आताहुआ सात्यकि को बींधता भया ३२ और पश्चात् तिसधनुष से बिंधाहुआ वह सात्यकि पौंड्रके धनुषको पांचबाणों से छेदन करताभया और सिंहसरीखा शब्दकरनेलगा ३३ फिर बासुदेवगदा को ग्रहणकर और पैरोंतक भ्रमा फिर जल्द सात्यकि को छातीमें मारताभया तब ३४ वह सात्यकि बायेंहाथसे तिस गदाकोखींचके

अपने बाणको ग्रहणकर तिस पौंड्राजाको पीड़ादेताभया ३५ पश्चात् वासुदेवराजा तिस बाणको बीचमेंपकड़के दशशक्तियों करके सात्यकीको हननकरताभया ३६ और पश्चात् तिन्होंसेबींधाहुआ सात्यकिजल्दधनुषको छोड़के हाथमेंगदाकोधारणकरताभया ३७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्रकसात्यकियुद्धे साष्टाशीत्यधिकद्विशततोऽध्यायः २८७ ॥

दोसौअट्ठासीका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहनेलगे पश्चात् गदाको हाथमेंलिये वह यदुनन्दन सात्यकि क्रोधकरकेतीक्ष्णगदासे वासुदेवको मारताभया १ और वह बासुदेव अपनी गदाकरके सात्यकिको हनन करताभया इस प्रकार युद्धकरतेहुये वे दोनोंशूरबीर शोभित होतेभये २ और जैसे वनमें आपसमें मारनेकी इच्छा करके सिंह युद्धकरतेहों ऐसे उन्होंकी शोभाहोतीभई ऐसे युद्धकरतेहुये सात्यकि क्रोधकरतिसके बायें तरफ आताभया ३ फिर वह बासुदेव दाहिने आयाहुआ सात्यकिको अपने स्तनोंकेबीचमें करके पीड़ादेताभया फिर दोनोंयुद्ध करनेलगे और सात्यकि तिसको बाहुओंके बीचमें पीड़ादेनेलगा ४ फिर अच्छीतरह पीड़ितहुआ वहराजा गोड़ोंकेतान पृथ्वीमें गिरताभया और पश्चात् खड़ाहोके सात्यकिके मस्तकमें गदामारताभया ५ पश्चात् तिस गदासे कछुक पीड़ितहुआ सात्यकि पौंड्राजाको गदासे हनन करताभया ६ तबवासुदेव बलीराजा साक्षात् दूसरा मृत्युकी तरहहुआ और नेत्रोंसेजलाताहुआ सात्यकि यादवको गदासे हननकरताभया ७ फिर वहसात्यकि तिसगदा के लगनेसे ताड़ित हुआ पृथ्वीमें गिरताभया जैसे अंतकाल की मृत्यु से ८ गिरे तैसे पीछेसंज्ञाकोप्राप्तहो अपनेहाथोंसे तिसकीगदाको पकड़ ९ लोहाकीतिस भारीगदाके दोटुकड़े करताभया और उछलके सिंहसरीखा शब्दकरताभया १० पश्चात् वह बासुदेवभी उछलके बायें हाथसे सात्यकिको पकड़के दाहिनेहाथकी ११ घोरमुष्टिबांधके बा

सुदेवराजा सात्यकिकेस्तनोंके बीचमें मारताभया १२ पश्चात् वह यादवोंमें उत्तमसात्यकि अपनीगदाको त्यागकर पीछे हाथके तलवे से बासुदेवको हनन करताभया १३ और पश्चात् वह बासुदेवराजा अपनेहाथके तलभागसे सात्यकिपै प्रहार करताभया इस प्रकार उन दोनोंका तलयुद्धमहान्होताभया १४ और गोड़ोंसेगोड़ेभिड़ाने लगे और बाहुओं करके बाहुभिड़ाते भये और शिरसे शिर भिड़ाते भये और छातीसेछाती भिड़ातेभये १५ और हाथोंसे हाथ भिड़ाते भये और पैरोंके तलवों के भिड़ाने का ऐसा शब्द होताभया १६ जैसे वनमेंदो वृक्षोंके घसनेसे अग्नि उत्पन्न होके महान् शब्द होताहो तैसे और पौंड्रक और सात्यकि वे दोनोंशूरबीर १७ तिस रात्रीमें शस्त्रोंको त्यागके इस प्रकार युद्धकरनेलगे कि तैसे अखाड़े में मल्लयुद्ध करतेहोवें तैसे १८ और दोनुओंकी सेना संशयको प्राप्तहोगयी और क्या सात्यकि शूरवीर हत होजायगा और आश्चर्य है १६ हम यह प्रश्न करतेहैं कि क्या बासुदेव हत होजायगा और आपस में बधकरने को इच्छावाले २० महाबीर ये दोनों युद्ध करतेहुये स्वर्ग में प्राप्तहोवेंगे और अन्यथा ये युद्धसे हटेंगेनहीं २१ औरआश्चर्यहै कि इन शूरबीरोंके बड़ाधैर्य है और येही लोकमें महाबलवालेहैं और महाप्रकृतिवालेहैं२२ और ऐसा घोरयुद्धदेवता औरराक्षसोंकाभीहुआसुनाहै सोऐसायुद्धसुनानदेखा है२३ऐसे दोनोंसेनाओंके मनुष्य आपसमें तिस रात्रीके दारुण युद्ध को देखके कहनेलगे २४ और पश्चात् वे शूरबीर अपनी अपनी बाहुओंकरके क्रोधसे गिरतेभये और फिर सात्यकि बासुदेवराजाके दशमुष्टि मारताभया २५ और पांचमुष्टियों करके पौंड्राजा सात्यकिको मारताभया ऐसे तिन्होंका चटचटा शब्द ब्रह्मांडको क्षोभकरानेलायक होताभया २६ और सबको आश्चर्य करानेयोग्य शब्द प्रकट होताभया २७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्रकसात्यकियुद्धे अष्टाशीत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २८८॥

दोसैनवासीका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं इसकालके अनन्तर एकलव्यनाम वाला निषादोंकापति राजा बलदेवको देखजल्द धनुषको धारणकरके १ दशबाणोंकरके तिसके धनुषको सबक्षत्रियोंकेदेखतेहुये छेदनकरता भया २ और दशबाणोंसे सारथिको मार और तीसबाणोंकरकेरथ-को छेदनकर और भालासे ध्वजाको छेदन करताभया ३ फिर वह एक लव्यनिषाद अन्य बड़ाधनुषको लेके तिसमें दृढ़ और १० ताल प्रमाण वाला ४ ऐसा बाण धारणकर पीछे बलदेवको तिसबाणसे बाधादेताभया तब महापराक्रमवाला वह बलदेवभी शेषनागकी तरह श्वासलेता हुआ ५ पृथ्वीके समान भारवाले दशबाणोंसे तिसके धनुषको मुष्टिदेशसे तोड़ताभया ६ फिर वह एकलव्य निषाद जल्दही पैनी और घोर खड्गको ग्रहण कर बलदेवको हनन करने लगा ७ पश्चात् वह बलदेव तिस खड्गके पांचबाणों करके टुकड़े करताभया ८ फिरवह एकलव्य राजा दूसरा महान् खड्गकोलेके बलदेवके सारथीको बाधादेताभया ९ पश्चात् यादवोंमेंश्रेष्ठ और मधुवंशमें होनेवाला वह बलदेव दशबाणों करके तिसकी बाहुओं के मध्यमें बाधादेताभया १० पश्चात् वह राजा घंटा और माला से युक्तहुई शक्तिको बलदेवके सामने फेंकता भया ११ और सिंह सरीखा शब्द करताभया और वह फेंकीहुई शक्ति बलदेवके सामने आतीभयी १२ पीछे प्रतापवाला वह बलदेव पड़तीहुई तिसशक्ति को देख सबको आश्चर्य करातेहुये की तरह १३ तिस शक्ति को अपनेहाथमें थांभ के उलटो तिस एकलव्य राजाकीछातीमें मारता भया फिर वह शूरवीर राजा अपनी शक्तिसे ताड़ितहुआ १४ सब गात्रोंमें विह्वल होताभया और पृथ्वीमें गिरताभया और बलदेव से ताड़ितहुआ वह निषाद प्राणोंके संशयमें होगया १५ पश्चात् तिसके सैकड़ों हजारों निषाद और अट्ठासीहजार तिस राजाके योद्धे १६ गदाको धारणकिये और खड्ग को धारणकिये और महा

बाणों को धारण किये और महाबलवाले १७ और अनेक हज़ार बाणोंको धारणकिये और पट्टिश शस्त्र को धारणकिये और शक्ति और फरसागदा शूलपरिघ प्रास तोमर करौतकुहाड़ा इन शस्त्रोंको धारणकियेहुये १८ वे सब निषाद बलदेव के ऊपर ऐसे प्राप्त होते भये कि जैसे जलतीहुई अग्निबिषे टीड़ी गिर पड़ैतैसे और वह बलदेव ऐसे प्रकाशितहै १९ कि जैसे दूसरा रामचन्द्र होवे तैसे सो पश्चात् वे निषादकईक तो कुहाड़ोंसे और कईक करौंतोंसे २० और कईक फरसाओं से और कईक गदासे और शक्तिसे बलदेवको एक बार मारनेलगे २१ तब वहसाक्षात् हलवाला बलदेव अपने हलसे सबको आकर्षण करताभया २२ और मूसल करके पीड़ादेताभया पश्चात् हननहुये वेपर्बतके समान निषाद२३सैकड़ों हज़ारोंपृथ्वीमें गिरतेभये पश्चात् तिन्हों को अपनेबाणसे हननकरके २४ सिंहसरीखा शब्दकरताभया और तिसोजगह स्थितहोगया पश्चात् तिस रात्रीमें २५ मांसके खानेवाले महाघोर भूतपिशाच प्रकट होतेभये और तिन्होंका मांस खानेलगे और मुरदाके कोठेको छेदनकरै रुधिर पीनेलगे २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरि॰ंशपर्वांतर्गतभबिष्यपर्व्वभाषायांएकलव्यसैन्यबधेऊननवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २८९ ॥

द्वैसौनब्बेका अध्याय ॥

बैशंपायनजी कहनेलगे तिससमय वे सबराक्षसमुरदोंकोभक्षण करनेलगे और हंसतेहुये महान्शब्दकरनेलगे१ औरबहुतरुधिरपीते हुये वे राक्षस तिन मुरदों को शिखापर्यंत भक्षणकरनेलगे २ और रण से प्रसन्नहुये तिस नगरी मे नृत्य करतेभये और काक,बगुले, गीध, सिकरा, गीदड़ ३ ये सबजीव तिन मरेहुओं को भक्षणकरते हुये बिचरनेलगे और दारुण राक्षस बिचरनेलगे फिर इसीकालके अनन्तर वह एकलव्य निषाद संज्ञा को प्राप्तहोके ४ और हत हुये तिन सब निषादों को देख फिर गदाले के क्रोध से बलदेवके प्रति

आताभया ५ फिर आकेबलदेवको शत्रुजानके मारताभया ६ पश्चात् वह मद से युक्तहुआ बलदेव अपनी गदा तिस निषाद के मारता भया इसप्रकार उनदोनों से तुमुलयुद्ध होताभया ७ और तिन्होंके युद्धकाशब्द आकाशमें होताभया जैसे कल्पकेनाशमें समुद्रोंकीझाल काशब्दहोवे तैसे ८ और शेषनाग क्षोभित होताभया और पाताल में नागक्षोभित होतेभये ९ और पृथ्वी और आकाश तिस शब्दसे सब भरपूरहोगया तब रणके जाननेवाला वह पौंड्राजा सात्यकि यादवको १० अपनी गदासे बाधादेनेलगा और सात्यकि तिसपौं ड्रको बाधादेनेलगा ११ ऐसे आपसमें बधकीइच्छा करनेवाले उन दोनोंका तुमुल युद्धहोताभया १२ और ब्रह्मांडमें दारुण शब्दहोता भयापश्चात् युद्ध करतेहुये धूल प्रकटहोनेलगी १३ और तारागण कांतिसे रहितहोगये और अंधेरा का नाश होगया और प्रातःकाल दीखनेलगा १४ और सूर्यभगवान् उदय होताभया और चन्द्रमा क्षयको प्राप्तहोताभया १५ तब तिनको चारबाहुओं का दारुणयुद्ध होनेलगा १६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्रकबधेनवत्यधिक द्विशतोऽध्यायः २९० ॥

दोसौइक्यानबेका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहनेलगे पश्चात् जब प्रभातहोगया तब देवकी के पुत्र श्रीकृष्ण भगवान् बदरिकाश्रम से द्वारका पुरी में आने की इच्छाकरतेभये १ फिरसब मुनियोंको नमस्कारकर और गरुड़पैचढ़ फिरमहान् बेगसे चलते भये पश्चात् द्वारका पुरी को आतेहुये २ श्री कृष्णतिन के युद्धका महान् शब्द सुन यह चिंतवन करने लगे कियह क्या शब्द होरहाहै ३ फिरविचारते भये किपौंड्रकराजा द्वा रकापुरीको आकेप्राप्तहुआहै सोअवश्य तिसकेसंग सात्यकिका युद्ध होरहाहै ४ और यादव शूरवीरोंके युद्धका यह शब्दहै इसमेंकुछसं- देहनहीं ५ ऐसेचिन्तवनकरके फिरवह श्रीकृष्णभगवान् यादवोंको

प्रसन्नकरता हुआ महान् शब्दवाले अपनेपांच जन्यशंखको बजावताभया ६ और तिसशंखकेशब्दसे पृथ्वी और आकाशको पूरणकरताभया और पश्चात् वेयादव तिसशंखके शब्दकोसुन ७ ऐसेमानतेभये किनिश्चय यह श्रीकृष्ण भगवान् आतेहैं ८ और सब यादव निर्भयहोगये फिर तिसीक्षणमें अंबरसे उड़के आताहुआ गरुड़को देख ६ फिर देवकी के पुत्र श्रीकृष्णकोदेखते भयेऔर तिसश्रीकृष्ण के आगेसूत, मागध पुरोहित ये आतेभये १० और पश्चात् कमल सरीखे नेत्रोंवाले श्रीकृष्ण भगवान् की स्तुति करनेलगे और सब यादव श्रीकृष्ण के पीछे २ गमनकरने लगे ११ पश्चात् श्रीकृष्ण गरुड़केप्रति कहतेभये कितू स्वर्गलोक कोजाऐसे बिसर्जनकरतेभये १२ और दारुक सारथिको यह आज्ञा देतेभये कि तूरथले आफिर वहसारथि उसीवक्त रथको ल्याताभया १३ और यहकहनेलगा कि हे भगवन् हे देव यहरथहै और मुझकोक्या करनाचाहिये ऐसे कह प्रणामकर भगवान्के आगे खड़ाहोता भया १४ पश्चात् गरुड़ के जानेकेबाद श्रीकृष्णरथमें जल्दबैठ जहांवहयुद्ध होरहाथा तहांजाते भये १५ और पांचजन्य महाशंखको बजातेभये १६ तब पौंड्राजा यह कृष्ण है ऐसे देखके रणकी लालसा करताहुआ सात्यकि को पीठदेके श्रीकृष्णके साम्हने आताभया १७ फिरवह सात्यकि क्रोध से तिस पौंड्राजा को निवारण करताभया ऐसे कहनेलगा कि हे राजन इस युद्धसे तुझे जाना नहीं चाहिये यह सनातन धर्म नहीं है २० और हेराजन् मुझेजीतके दूसरे से युद्धकरनेजा और तूक्षत्रियहै और मैं तेरे आगेस्थितहूं २१ और इसतेरे सबगर्बका क्षय मैं युद्धमें करूंगा ऐसे कहके वह सात्यकि तिस राजाके आगेखड़ाहोता भया २२ तब श्रीकृष्णके देखतेहुये वहपौंड्राजा सात्यकिकोत्याग के श्रीकृष्ण के सामने आताभया २३ पश्चात् वह सात्यकि तिस राजाको झड़कके क्रोधमें मूर्छितहुआ श्रीकृष्णकेदेखते हुये गदाका प्रहारकरताभया २४ तब श्रीकृष्ण भगवान् यथा प्राण और यथा योग सात्यकिको सत्य पराक्रमवाला देखके प्रशंसा करनेलगे २५

और पश्चात् सात्यकिको निवारणाकरतेभये और ऐसेकहतेभये २६ कि इसको इच्छापूर्वक करनेदे इसप्रकार कृष्णसे निवारण करनेसे वह सात्यकि निवृत्त होगया २७ पश्चात्वह पौंड्राजा श्रीकृष्ण के प्रति कहनेलगा हेयादव गोपाल अवतू कहांचलागया और मैंवासु देवहूं तेरेको देखने आयाहूं २८ सो हे कृष्ण तुझको मैं सेनासहित मारके फिर एकही मैं बासुदेव रहूंगा २६ और हे गोविंद जो तेरे महान् विख्यात् सुदर्शनहै सो यह इसमेरे चक्रसे पीड़ितहोगा और तेरेजो चक्रका अभिमानहै उसकोमैं अब नाशकरूंगा और मुझको तू शार्ङ्ग धनुष वाला जान और तूतोशार्ङ्गी झूठविशेषणहै ३० और हेजनार्दन मैं शार्ङ्गी और गदीहूं और चक्रीहूं सो जाननेवाले शूरवीर मुझकोही कहते हैं ३१ और तूपहले विनावलवाले छत्री बहुतसे बालक इन्होंको मारके और गौओंकोमारके महान् गर्वको प्राप्तहो रहाहै ३२ सो तेरे सबगर्वको मैं छेदनकरूंगा जो यदिमेरे आगेतू स्थित होवेगातो और हे गोविंद जो तू युद्धकरनेमें समर्थ है तो मेरे शस्त्रको ग्रहणकर ३३ ऐसे कहके वह पौंड्राजा जगत् गोपति श्रीकृष्णकेसमीप खड़ाहुआ अपने बाणको चढ़ाताभया ३४ पश्चात् श्रीकृष्ण तिसके ऐसे बचनसुन तिस राजाकेप्रति यह कहनेलगे किहे नृपमैं सदापातकीहूं तू मुझकोइच्छा पूर्वकह ३५ और मैंगोघातीहूं और बालघातीहूं औरस्त्रीहन्ताहूं औरहेनृपसर्वथा तू चक्री और गदी और शार्ङ्गीहोजा ३६ और मेरानाम बासुदेव वृथा है और शार्ङ्गी चक्री गदी शब्दयेभी मेरे नाम वृथा हैं ३७ परंतु हे राजन् मैं कुछ कहताहूं तू सुन जो कि बलवान्क्षत्री मेरे जीवते हुये तुझकोमेरी तरह कहते हैं सोतेरा चक्र महाघोर और असुरों को नाशकरने वाला ३८ ऐसा मेरेचक्र के वृत्त अर्थात् गुलाईमें है और पराक्रममें नहीं और सब शस्त्रोंमें भी नामकी सादृश्यताहै ३६ और हे राजन् मैं सर्वदा गोपहूं अर्थात् सब प्राणियोंको प्राणदेने वालाहूं और रक्षकहूं और दुष्टकोशिक्षा देनेवालाहूं ४० सो हे नृपाधम तुझको जीतकेमेरा कथन करनाचाहिये और तू मेरे जीते

विनाशस्त्रवाला मेरे आगे क्या कथन करताहै ४१ सो हे पौंड्रराज जो यदि तू समर्थहै तौ मुझको मारके कछु कहना और मैं चक्रको धारण कियेहुये और रथ में बैठेहुये और धनुषगदा खड्ग इन्होंको धारणकियेहुये तेरे आगे खड़ाहूं ४२ सो तू रथमें बैठके इस युद्धमें युक्त हो ऐसे कहके श्रीकृष्णभगवान् सिंहसरीखा शब्दकरते भये ४३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वेभाषायांकृष्णपौंड्रकयुद्धे एकनवत्यधिकद्विशतोध्यायः २९१ ॥

दोसौबानबेका अध्याय॥

बैशंपायनजी कहनेलगे पश्चात् श्रीकृष्ण अपने धनुषको धारण कर पैनेबाणसे पौंड्रराजाको हनन करतेभये १ फिर पौंड्रराजा सौ बाणों करके यदुवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णको हनन करताभया २ और पच्चीस बाणोंसे दारुक सारथी को हनन करताभया और दश बाण घोड़ोंके मारताभया और सत्तरबाण श्रीकृष्णके मारताभया ३ पश्चात् केशव भगवान् हंसके और यहपौंड्रराजा अपने मनमेंप्रसन्न होरहाहै ऐसे जानके ४ अपने शार्ङ्ग धनुषको उठाके फिर पैनेबाणसे तिसकी ध्वजाको छेदन करताभया ५ और सारथीका शिरकायासे नीचे गिराताभया और चार बाणोंकरके चारोंघोड़ोंको मारताभया ६ और पश्चात् श्रीकृष्ण तिस राजाकेरथकोछेदनकरऔर समीपके दोनों सारथियोंकोमार और तिसकेचक्रके टुकड़ेकर फिर कछुक हंसतेहुये खड़े होगये ७ फिर पौंड्रराजा रथसेनीचे कूदके पैनाखड्ग कोले केशवकेमारताभया ८ फिर श्रीकृष्ण तिसखड्गके सौटुकड़ेकर चुपहोगये ९ पश्चात् वहराजाकालसमान महाघोर परिघशस्त्रकोउठाके सब क्षत्रियोंके देखतेहुये यादवोंमें शूरवीर श्रीकृष्णके मारताभया १० फिर जगत्केनाथ श्रीकृष्ण तिसकेभीदोटुकड़ेकरतेभये फिर वह राजाहजार पैंकड़ियोंवाला ११ और महाघोर और तीसभार लोहाका बनाहुआ और शत्रुको मारनेवाला ऐसाचक्रको उठाकेश्रीकृष्णके प्रति यह बचन कहनेलगा १२ कि तूइसपैने महाघोर मेरेचक्रको

अपनेचक्रका नाशकरनेवालादेख औरहेगोबिंद इस करके तेराअभि मानमैं खंडितकरूंगा १३ और हे कृष्ण यहचक्रतेरेही वास्तेहै और हेहरे जोतूसमर्थहै १४ तौ इसकोमहान् स्थानरूपको विदारण कर देखेकहके पौंड्राजा तिसचक्रको सौगुनाभ्रमाके १५ श्रीकृष्णके प्रति फेंकताभया और महापराक्रमवाला वहपौंड्राजा १६ तिस जगहसे कूदके अन्यजगहउछलकेस्थितहोगया और सिंहसरीखाशब्द करताभया फिर देवकीकेपुत्र श्रीकृष्णभगवान् विस्मयको प्राप्तहोके १७ यह मानताभया कि अहो इसपौंड्राजाका आश्चर्य और धैर्य दुस्सहहै ऐसे बिचारके रथसेनीचेउतरगया १८पश्चात्वह पौंड्राजा श्रीकृष्णकेप्रति शिलाकोफेंकताभया फिर श्रीकृष्ण तिसीशिलाको उलटी तिस पौंड्राजाके सामने फेंकतेभये १६ ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् तिस पौंड्राजाकेसंग बहुतबार क्रीड़ाकर फिर रक्तकाभोजन करनेवाला २० और पैना और दैत्योंके मांससे बढ़ाहुआ अंगवाला और नारियोंके गर्भको छुटानेवाला और सुवर्णमय और घोर और दैत्योंको नाशकरनेवाला २१ और हजार फैखड़ियोंवालाऔर दैत्योंको भयदिखाने वाली औरअद्भुतऐसी सौ फैखड़ियोंसे युक्तऔर परमऐश्वर्य वाला और देवताओंसेनित्य पूजित २२ ऐसे अपनेसुदर्शनचक्रको फिर तिसचक्रसे पौंड्राजाको मारतेभये २३ और मांसका भोजनकरनेवाला वह चक्रतिसराजाकी देहको फाड़ फिर सर्वेश्वर श्रीकृष्णके हाथमें आताभया २४ फिर वह पौंड्राजा प्राणोंसे हीनहुआ पृथ्वीमें गिरताभया और पश्चात्दुर्विज्ञेय गतिवाले विष्णु भगवान् यादवोंसे पूजितहुये २५ सुधर्मा अर्थात् द्वारकापुरी में प्रवेश होतेभये २६ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्कवधोद्विनवत्यधिकद्विशततोध्यायः २६२ ॥

दोसौतिरानबेका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं फिर बलदेव तिसएक लव्यनिषादराजा

को शक्तिकरके छातीकी जगह हनन करताभया और सिंहसरीखा शब्द करताभया १ पीछे वह निषादोंकापति क्रोधकरके अपनीगदा से बलदेवको हनन करताभया २ फिर तिससे आहतहुआ बलदेव अपनी दोनों भुजाओंसे प्राणोंको नाशकरनेवाली और महाघोरऐसी आवतीहुई तिसगदाको पकड़ताभया पश्चात् वहएक लव्यनिषाद मकरालय समुद्रकेप्रति भाजताभया ३ पश्चात् भाजताहुआ तिस राजाकेपीछे २ बलदेव भी भाजके जहां वह गया तहांहीं प्राप्त होतेभये ४ फिर वह निषाद समुद्रमें प्रवेशहोके भयभीतहुआ पांच योजन जलके भीतर ५ अन्यद्वीपमें जाके प्राप्त होगया फिर वहबलदेव इसप्रकार तिस निषादको जीतके ६ सात्यकिके युद्धसे संसक्तहुई और मणिरत्न इन्होंसे युक्त ऐसी यादवोंकी सभामें वह हलायुध अर्थात् बलदेव प्रवेश होतेभये ७ और तहां अन्यबहुत से यादव यथायोग्य बैठेहुये तिसवक्त श्रीकृष्ण भगवान् सब यादवों को यथायोग्यसराहकै फिर यह बचनकहनेलगे८ कि हमने कैलाश पर्वतदेखा और तहां नील और रक्तबर्ण शिवजीदेखा फिर हैयदुवोंमें श्रेष्ठो प्रसन्नहुआ वह शिवजीमेरेको बरदेताभया ९ और तहांदेवता और तपोधन अर्थात् तपरूपी धर्मवालेमुनि येभीआये और शिवजी प्रसन्नहुआ मेरी स्तुतिकरकै मुझकोप्राप्त होताभया १० और हेया दवो तहांमैंने रात्रिको एकअतिआश्चर्यदेखा कि दोमहाघोरपिशाच मेरी कथाकोकहतेहुये और सदामेरा चिंतवन करतेहुये ११ मृगोंको शिकार खेलतेहुये बिचररहेथे फिर वै मुझको देख प्रसन्नहुये और तपस्वीहुये १२ और भक्तिसे नम्रहुयेऔर महात्माहुये मुझकोप्रणाम करतेभये पश्चात् मैं सब तरह प्रसन्नहुआ तिन्होंको स्वर्गमें प्राप्त करताभया१३ और शिवजीको प्रसन्नकर फिरयहां प्राप्तहुआहूं १४ वैशंपायनजी कहनेलगे पश्चात्वै सबयादव श्रीकृष्णकी प्रशंसाक-रतेभये और केशवके आश्रयहुये सर्वथा कृतकृत्यहोगये १५ और पीछे सबयादव अपने २ घरोंको जातेभये और श्रीकृष्ण भगवान् अपने महलोंमें प्रबेशहो १६ फिर रुक्मिणी और सत्यभामा इन

दोनों रानियों के आगे जो २ वृत्तांतहुये थे सो सब कहतेभये फिरवे दोनों रानी केशव से युक्तहुई प्रसन्न होतीभई १७ वैशम्पायनजी राजाको कहतेहैं कि यह सब श्रीकृष्णका चेष्टित तेरेआगे हमनेकहाहै इसप्रकार श्रीकृष्ण सबपृथ्वीको महाबलवाले दुष्टोंकोमारके शिक्षित करतेभये १८और घोरकर्मकरनेवाला नरकासुर पौंड्रराजा हयग्रीव, निशुंभ, सुंद उपसुंदक इन सब दुष्टोंको मारके १९ फिर ब्राह्मणों से और मुनियों से पूजितहुये भगवान् रक्षाकरतेभये और ब्राह्मणोंके वास्तेधन और गोदान देतेभये २०और अग्निहोत्र कर्म करतेभये और ब्रह्मचर्य करके ब्राह्मणों को और मुनियों को तृप्त करतेभये और देवताओंको अनेक प्रकारकी यज्ञोंकरके प्रसन्नकरते भये २१ और सबपितरोंको स्वधाशब्द करके तृप्त करतेभये इस प्रकार तिनके राज्यकरनेके समय निष्कंटक राज्यहोगया २२ और ब्राह्मण आदिक सबप्रजा सुख पूर्वक जीवतीभई २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांपौंड्रकवधे त्रिनवत्यधिकद्विशतोध्यायः २९३ ॥

दोसौचौरानबेका अध्याय ॥

जनमेजय प्रश्नकरतेभये हे द्विजश्रेष्ठ वैशंपायनजी महाराज मैं शंखचक्र गदा इन्होंको धारण करनेवाले श्रीकृष्ण के चरित्रोंको फिर विस्तार पूर्वक सुननेकी इच्छा करताहूं १ और भगवान्को कथा सुनतेहुये मेरीतृप्ति नहींहोतीहै और देवतावोंका और चक्रको धारण करनेवाला ऐसा भगवान्के नामोंको सुनताहुआ २ औररात्रिदिन स्मरणकरताहुआ कौनतृप्तहोता है और जोहरिको कथाका श्रवणहै यही एक पुरुषार्थहै ३ सो हेमहाराज जगत्केहेतु श्रीकृष्णका और हंस डिंभक इन्होंकायुद्ध जगत्को बिस्मय करानेवाला कैसे होताभया४और बिचक्र दानवका युद्ध श्रीकृष्णकेसंग होताभयाक्योंकि वहदानवतिनका मित्रहुआथा ऐसे हमने सुनाहै ५ और वे दोनों हंस,डिंभक शुक्राचार्यके शिष्य और बड़ेबीर्यसे युक्त और सब अस्त्र

बिद्याओंमें चतुर और शूरबीर और शिवजीसे लब्धबरवाले ६ ऐसे किसके पुत्र उत्पन्नहुयेथे क्योंकि जिनकेसंगअट्ठासीहजार महाबल-वाले दानवोंका७और बिचक्रदानवकीसेना जोकि पैनीशूलको धारणकरनेवाली तिसकामहान्युद्धयुद्धकीइच्छा करनेवालेयादवोंकेसंग महान्युद्धहोताभया ८ और वह बिचक्रनामवाला दानव सदादेवताओंकोजीतताहै ९ तब सदाबिष्णुभगवान् उसकाबधकरतेहैं १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभबिष्यपर्वभाषायांहंसडिंभको
पाख्यानेजन्मेजयबाक्येचतुर्नवत्यधिकद्विशतोध्यायः २९४॥

दोसौपंचानबेका अध्याय॥

बैशंपायनजी कहतेहैं हेजनमेजय शाल्वदेश में एकब्रह्मदत्तनाम वालाराजा होताभया और पवित्र आत्मावाला और सब भूतोंमें दया करनेवाला १ और यज्ञकरनेमें तत्पर और जितात्मा जितेन्द्रिय ब्रह्मको और बेदको जाननेवाला शुभरूप ऐसा वहराजा होता भया २ और तिसके दोरानी रूप और उदारता और गुणोंसे युक्त होतीभई और उन्होंके कछुसंतान पैदा नहीं भई ३ और वह राजाउन्होंके संगइस प्रकाररमण कियाकरताथा किजैसे इंद्राणीके संग इंद्ररमणकरतेहैं तैसे और तिस राजाके मित्र सहनामवाला४ और महायोगी और बेदबेदान्तमें तत्पर ऐसा एक ब्राह्मण मित्र होताभया सो वहभी राजाकी तरह अनपत्य अर्थात् संतानरहितथा५सो पश्चात् वहराजा उनरानियोंके संगहुआ दशबर्षतक एकांतमनसे शिवजीका पूजन करताभया ६ और वह ब्राह्मण बैष्णवयज्ञ करताभया ७ फिरतिसराजा पै प्रसन्नहुआ शिवजी अपने रूपको स्वप्नमे देखाताभया और यहबचन कहता भया ८ कि हेराजन् तेरेऊपर मैं प्रसन्नहुआ तेराकल्याणहो तूबरमांग ९ फिर ऐसे सुन वह राजा हंसताहुआ शिवजीको यह कहताभया किमेरेदोपुत्रहोवें पश्चात् महादेवजीतो अंतर्द्धान होतेभये १० औरवहराजाजागता भयाऔरवहमित्रसह नामवालाब्राह्मण पांचबर्षतक भक्तिकरबिष्णु

भगवान्‌को पूजताभया ११ फिर वहदेवोंकादेव जनार्दन भगवान् पूजतहुआ तिसब्राह्मणकेवास्ते अपनेनामके सदृश एकपुत्रदेताभया फिर वैदोनों राजाकीनारी शिवजीके तेजकरके गर्भको धारणकरती भई १२ और ब्राह्मण की नारी विष्णुतेजको धारणकरतीभई १३ पश्चात् वैराजाकी रानीतो शिवजीकेतेज रूप दोपुत्रोंको जनतीभई पश्चात् वह राजा तिनबालकोंको नामकर्म आदिक क्रिया करता भया १४ और सब कुछबिधिवत् करताभया और ब्राह्मणोंके वास्ते वहुत धनवांटताभया पीछे वहविनीतात्मा ब्राह्मणएकपुत्रकोप्राप्तहो ताभया १५ और पश्चात् साक्षात् विष्णुकीतरह स्थित उसपुत्रका जातकर्मादिककर्म वहब्राह्मण कराताभया १६ फिरवैदोनों राजाके कुंवर और वह ब्राह्मणका लड़का तीनोंसुंदरअंगवाले होतेभये और सबवेदोंको पढतेभये और दंडनीतिको सुनके १७ और धनुर्वेदतथा अस्त्रविद्यामें निपुणहोतेभये और वहराजाका पुत्र वडातो हंसनाम सेप्रसिद्धहुआ और छोटा डिंभकनामसे विख्यातहुआ १८ और वह ब्राह्मणकापुत्र जनार्दननामसेविख्यात होताभया और वैसबबालक आपसमें मित्रहोतेभये १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्याने पंचनवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २९५ ॥

दोसौछानवेका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं फिर हंस डिंभकनामवाले वैदोनों राजाके पुत्रशिवजीका तपकरनेको इच्छाकरके १ हिमवान् पर्वतमें जातेभये फिरतहांजाके हमारेवीर्य और अस्त्रविद्या हो ऐसेमनमें विचार के और एकाग्र मनवालेहोके नीलग्रीव और उमापतिऐसे शिवजी की तपस्या करनेलगे २ और जलका और वायुका आहार करनेलगे ३ और हे देवोंकादेव हेहर हेशिवानन्द हेशर्वनीलग्रीव हेउमापते ऐसे रात्रि दिनध्यान करनेलगे ४ और हे वृषध्वज हे विरूपाक्ष हेत्र्यम्बक हेजगतांपते हेभक्तप्रिय हेगिरिशेश हे वामदेव

हे अच्युत ५ हे सद्योजात हे महादेव हे गुहाशय हे भूतभावन हे भूतेश हे प्रणवात्मन् हे सदाशिव ६ इत्यादिक नामोंकरके शिवजीकी स्तुतिकरनेलगे और हृदयमें शिवजीका ध्यानकरके तत्त्वसें शिवजीका तपकरनेलगे ७ और ममतासे रहित और अहंकारसे रहितहुये और मौनव्रत में तत्परहुये पांचवर्षतक शिवका तप करतेभये ८ पश्चात् तिन्होंकी तपस्याकरने से शिवजी प्रसन्नहोके व्याघ्रचर्मको धारणकियेहुये तिन्होंकोदर्शन देतेभया ९ और शूलको धारणकिये हुये और आधाचन्द्रमाको मस्तक में धारणकिये ऐसा अपनारूप कोदिखातेभये १० पश्चात् वे दोनों शिवजीको देखके नमस्कार करतेभये ११ श्रीमहादेवजी कहनेलगे जोतुम्हारी इच्छाहो सो बर मांगो और तुम्हारा कल्याणहो ऐसे सुनके फिर वेकहतेभये कि जो तुम प्रसन्न हुयेहोतो १२ हमको एकतो प्रथम यहवरदेवो किदेवता और दैत्य,राक्षस,गंधर्व,इन्द्रोंकी सेनासे हमजीतेनहींजावें १३ और दूसराहमकोयहवरदेवो किभयंकर अस्त्रोंकासंग्रहरूपमाहेश्वर अस्त्र हमको देवो १४ और धनुषआदिको जो छेदननहीं होने ऐसाहमको एक कवचदेवो और सदा रक्षाकेवास्ते एक फरसादेवो १५ और हम जबयुद्धमें जावैंतब हमको सहायक अनुचरदेवो एसेसुनके फिर महादेवजी बोले १६ किऐसेही होवेगा और कुंडोदर और विरूपाक्ष यदोनों भूतेश रणके समय तुम्हारे अनुचररहैंगे १७ ऐसे कहके शिवजी भगवान् तहां अंतर्द्धान होगये १८ फिरवीर्य में संपन्नहुये वे दोनों हंस और डिंभकनामवाले अस्त्रविद्या में तत्परहुये और धनुष विद्यामें तत्परहुये १९ और कवचको पहिनेहुये देवता और दानवों से जीतने में असमर्थ ऐसे वे राजाके पुत्र शिवजी में नित्य भक्ति करनेलगे २० और नित्य शिवजी का उत्सव करना और भस्मलगाना और त्रिपुंड तिलक करना और जटा धारणकरें हुये २१ और रुद्राक्षिकीमालाओंसे युक्त और व्याघ्रचर्मको ओढ़ेहुए और नमःशिवाय शांताय महादेवाय धीमते २२ इत्यादिक शिवजीके नामों से शिवजीकी स्तुतिकरते हुए ऐसे वेदोनों साक्षात्

शिवजीकी तरह प्रकाशित होतेभये२३ और पश्चात् तिसतपस्या से निवृत्तहोके अपने पिताकेघर आ पिताके चरणों में गिरतेभये और माताके चरणों में गिरते भये २४ और इसो तरह महाबुद्धि वाला वह ब्राह्मणकापुत्र जनार्द्दनभी विद्याका पारकटताभया २५ और वहपी तांबर धारी विष्णुकी उपासना ब्रह्मतत्त्वमें तत्परहुआ और जितेंद्रियहुआ करताभया २६ और पश्चात् वेदोनों हंस डिंभक कृतदार होतेभये अर्थात् उन्होंका विवाह होता भया और जनार्द्दनका भो विवाह होगया २७ फिरवैतीनोंयज्ञमें और पंचयज्ञमें निरत होतेभये और अपनी स्त्रीमेंरत और गुरूकी शुश्रूषामें रतहोते भये २८ और धर्महो परमश्रेयहै ऐसे मानतेभये २९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्याने षणवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २९६ ॥

दोसौसत्तानबेका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं फिर किसीसमयवेदोनों जनार्द्दनसे सहित रथों करके और घोड़े हाथियोंसे युक्तहुये शिकार खेलनेके वास्ते जातेभये १ फिर वनमें जाके सिंहव्याघ्र आदिकोंको मारने लगे और तीक्ष्णबाणों करके वराहशूकर को मारतेभये २ औरसर्प मृग और हिंसक जोव इन्होंको मारतेभये और श्वानों करके युक्त हुये बिचरतेभये और बडेनेत्रों वाला और बिपुल शरीरवाला यह वाराह आताहै ३ और यहसिंह चलाजाताहै इसको बाणसे छेदन करो और यहवड़े सींगोंवाला महिषाआताहै ४ और येमृगअपने वच्चोंके संग भागरहेहैं और येसफेद शूसेभ्रमरहेहैं ५ और येशूसों के वच्चे स्तनपीरहेहैं सोयेमारनेनहीं चाहिये सोयेसब श्वानोंकरके रोक लेनाचाहिये ६ इत्यादिक शब्दोंको कहते हुए वे दोनों क्षत्रिय औरव्याधोंके भाजतेहुये ७ वनसेमृगऔर व्याघ्रऔर सिंहइन्होंको मारकेमध्यान्हमें श्रमको प्राप्तहोगये ८ और शिकारखेलनेंसे तृप्तहैं हमकोश्रम प्राप्तहोगया ऐसेकहके श्रेष्ठतलावके समीप जातेभये ९

मुनिगणोंसे सेवितऔर पक्षियोंसे शब्दित ऐसे तलावपै प्राप्त होके श्रमसे सुखको प्राप्तहोते भये १० फिर अन्यसब मनुष्य तिसतलाव मेंगोतामारके कमलोंके और पद्मोंके कंद निकास तिन्होंको भक्षणकरवातेभये ११ फिर जनार्दन केसंगहुये वेदोनों हंसडिभक कहीं-कतिसतलाव पै बैठके सब श्रमको त्यागतेभये १२ और सुख पूर्वक तहां तलाव पै बैठेहुये मुनियें से कथन किया हुआ परमब्रह्म को सुनतेभये १३ और ऋषियोंके वेदपाठ करनेका श्रेष्ठस्वरकी ध्वनिको सुनके प्रसन्नहोतेभये १४ फिरमुनिकृत यज्ञ देखनेकी इच्छा करते भये और अपनी सबसेना को वहां स्थापित करतेभये १५ और पश्चात् महापराक्रम वालेकईक शूरबीर बाणोंकोलेके और हंस और डिम्भक १६ और जनार्दनये सब पैदलहोहुये कश्यपमुनिके आश्रम में वैष्णव यज्ञदेखनेको जातेभये १७ और तहां कश्यपजी महाराज जपहोम में तत्परमुनियों के संगपूजन कररहेथे ऐसी वह यज्ञ थी १८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्याने सप्तनवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २९७॥

दोसौअट्ठानबेका अध्याय॥

वैशंपायनजीकहतेहैं फिरधर्मात्मा वहजनार्दनऔरहंसऔरडिंभ-कतिसयज्ञकेस्थानमें प्रवेशहोकेमुनिश्वरोंको प्रणामकरतेभये १ फिर आये हुयेतिन्होंको शिष्यों समेत वेसबमुनितिन्होंको अर्घपाद्य आ-दिक पूजाकरतेभये २ पश्चात् वेदोनों राजाके कवरऔर वहजना र्दनब्राह्मणका पुत्रतिसपूजा को ग्रहणकरके प्रसन्न हुये आसनों पै बैठतेभये ३ फिरवह हंसनामवाला राजाका पुत्रतिन मुनियोंके प्रति यह कहताभया कि हे मुनिश्रेष्ठो मेरापिता यज्ञ करनेको चाहताहै४ सो तुमको तहांयज्ञमें चलना चाहिये और हमराज सूय यज्ञ करके दिग्विजय करके५ फिर अपने पिताकरके यज्ञका पूजनकरवावेंगेसो हेविप्रेंद्रो तुमवहां अपने शिष्यों समेतचलो६ और हम अब निश्चय

दशोदिशाओं को जीतेंगे और हमसेनाओंके समूहको इकट्ठे करने में तत्परहैं ७ और हमारे आगेस्थित होनेमें देवते और दानवभी नहींहैं और हमने शिवजीसे बरलब्ध होरहाहै ८ और हमशत्रुओं से जीतेनहीं जावेंगे ऐसेकहके वह हंसनामवाला राजातहां बिराम करनेलगा ९ मुनि कहतेहैं हेनृपोत्तम जो ऐसेहो हैं तो हमतेरे संग चलैंगे औरअन्यथा नहींहै १० बैशंपायनजी कहनेलगे फिर तहांसे चलके पुष्करसे उत्तर दिशाकी तरफजहां दुर्वासा ऋषि तपरहा था तहांचलनेकी इच्छा करतेभये ११ और ब्रह्ममंत्रका सेवन करते भये और ब्रह्मसूत्र पदमेंसक्त और लोकोंमें तत्पर १२ और ममता से रहित और अहंकार से रहित और कौपीन धारण कियेहुये ऐसेयती जनतहां नियतहुये आत्मा और जगत्की योनि और विश्व के ईश्वर १३ ब्रह्मरूप शुभशांत अक्षर सर्वतोमुख और वेदवेदान्तकी मूर्ति और अव्यक्त अनंत शाश्वत शिव १४ नित्ययुक्त बिरूपाक्ष भूताधार अनामय ऐसे विष्णु देवको मनकरके ध्यातेहुये १५ दुर्वासा ऋषिकरके वेदांत शास्त्रके रसको जानके तत्व के निश्चय से अपने चित्तकोनिर्मलकररहे १६ और तहांहंस और परमहंस ऐसे दुर्वासाके शिष्य स्थितहोरहे १७ सोतहां वे दोनों हंसडिंभक जाके फिरउर्द्ध द्वाररेतस अर्थात् शुक्र जिसके प्राप्तहोरहा और महाबुद्धि वाला और पद २ को चीन्हताहुआ ऐसा दुर्वासा ऋषि को देखते भये १८ और जो यदियह दुर्वासा ऋषिक्रोध में युक्तहो जावे तो तीनलोकोंको दग्धकरनेमें समर्थहै १९ और जिसको क्रोधहुआको देवतेभी देखनेमें समर्थ नहींहैं और जो सदारोष की मूर्तिहै २० और विश्वात्माहै और सबकुछधारण करनेवालाहै २१ औररक्तकौपीनको धारण कियेहुयेहै और परमहंसहै ऐसेइस मुनिकोदेख तिन्होंकी यह बुद्धिहोतीभई २२ कियह महाभूत कषाय वर्णवाला कौननामक है और यह गृहस्थ आश्रमको त्यागके किस आश्रममें होरहा है २३ और गृहस्थीही धर्मात्माहै और धर्मके जानने वालोंमें श्रेष्ठहै और गृहस्थीही धर्मरूपहै और गृहस्थही वर्णहै २४ और गृहस्थ आश्रम

प्राणियोंकी माताहै और जीवनहै सो उसके बिना जोअन्य रूपसे बिचरेवहमूर्खहै २५ सोयह उन्मत्तहै अथवा बिरूपहै अथवामूर्खहै अथवायह ध्यानकरता हुआकी तरह ठगहै २६ और येप्राकृतज्ञान वालेये सब कछुक ध्यान करनेकी तरह क्या कररहेहैं २७ सोहम आश्रमके अंतकरने वाले और दुरारोह और मूढ़ और अज्ञान में तत्परऐसे इनमंदबुद्धिवाले द्विजोंकोगृहस्थआश्रममें बलसे स्थापित करेंगे२८और खोटीतर्कना को ग्रहणकियेहुये और मूर्ख और खोटी मतिवाले ऐसेइन्होंका शास्ताकौन मूढ़है हमनहीं जानते २९ सो हमइन्होंको धर्ममार्गमें प्रवेशकर फिरनिवृत्त हुयेचलैंगे ऐसे वेदोनों चिन्तवन करके ३० तिसजनार्दन के संगहुये और मोहसे और भाग्यके क्षयसे तिसदुर्वासा यतीके समीपजातेभये ३१ फिरसमीप जाके अतींद्रिय तिसदुर्वासाको और अन्य यतियोंको क्रोधमेंआके कहतेभये ३२॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्व्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्याने द्विअष्टनवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः २९८॥

दोसौनिन्नानबेका अध्यय॥

हंस डिंभक दोनोंकहतेहैं हे द्विज ज्ञानके लेश से हीनआत्मा वाले तुझको यह क्या व्यवसित कररक्खाहै और तुझको जो आश्रित कररक्खाहै यहकौन आश्रम है १ और गृहस्थ आश्रम त्याग के यहतुझको क्या साधित कररक्खाहै और तुझको यहशोक विषे दंभही धारण कररक्खाहै और दूसरी बातनहींहै २ और हे मूढ़तू निवृत्तहुआ इनलोकों कासदानाश करताहै औरइनसबोंको तूनरक में गेरेगा ३ और हे मूर्ख तू आपतो नष्टहै और इन्हों कोभी नष्ट करेगा सो हे मंदमति बालाब्राह्मण बड़ाआश्चर्यहै कि तेरेको कोई शिक्षा देनेवाला नहीं है ४ सोसर्वथा तेरेको प्राप्तकरनेवाला पाप है सोहेविप्र इस आश्रमको तूत्याग और गृहस्थी होजा ५ और हे विप्र पांचयज्ञोंको सदाकर और यत्नमें तत्परहोफिर तू स्वर्गमें जा

वेगा और स्वर्गहीमें महान् सुखहै ६ सोहे बिप्र जीवते हुयेजोतुझ को इच्छाहोतो यहीपरम कल्याणहै ऐसेकहतेहुये उनदोनोंको वह धर्मात्मा जनार्दन ब्राह्मण ७ सुनके कहने लगा और तिसदुर्वासा यतीको भयभीतकी तरह प्रणाम करताभया और हे मंदबुद्धिवाले राजा तुम ऐसे मतकहो ८ ऐसेघोर बचन इसलोक में और पर लोकमें सुनानेलायक नहींहै और जोबांधवों समेत जीवनेकी इच्छा करताहो वहकौन ऐसा बचन कहै ९ सोसर्वथा यह तुम्हारा काल प्राप्तहुआहै और मंदचित्तवाले जो तुमहो सोतुम्हारी आयुसमाप्त होचुकी और तुमब्रह्म दण्ड से हतहोगये १० क्योंकिये यतीशुद्ध है और ज्ञानसे दीप्तचित्त वालेहैं और ज्ञानरूपी अग्नि से कर्मों को दग्ध करने वालेहैं और प्राणोंको प्राणोंही में हवन करतेहैं ११ सोतुम्हारे बिनाऐसे बचन कहनेमें कौनसमर्थहै और हमकोअच्छी तरह जानलिया कि तुमने अपना जीवन समाप्त करलिया १२ और हेनृपो ऋषियोंने पहले चार आश्रम विहित कियेहैं कि ब्रह्म चारी १ गृहस्थ २ बानप्रस्थ ३ भिक्षुक ४ । १३ सोतिन्होंका अग्रणी यह चौथाभिक्षुक आश्रमहै सोमहाबुद्धि वालाइसआश्रम में रहताहै औरयही आश्रम अतिपुण्यवालाहै १४ सोतुमकोनीतिवाले वृद्धपुरु- षोंकी तुमने उपासना नहींकीहै और तिनसे तुम को ज्ञानलब्धनहीं कियाहै नहींतो ऐसे क्योंकहते १५ और ऐसेघोर बचनमेरे सुनने लायक नहींहैं सो हेमंदात्मा वालेतुम मित्रहोनेसे मैंक्याकरूं १६ और जोतुमको गुरुओंसे ज्ञानलब्ध कियाहै वहज्ञान यहां केवल दुःखके वास्ते होगया क्योंकि ज्ञानही धर्मको उत्पन्न करने वाला है और बलसे पापको विधान करने वाला होजाताहै १७ सो मैं तुमको त्यागके जांगा अथवा शिलातल में गिरूंगा अथवा महा- घोर विष पीऊं अथवा समुद्रमें डूबजाऊं १८ अथवा देखतेहुयेऔर सुनतेहुओंके आगे अपने आत्माको त्याग देऊं ऐसे कह के विलाप करने लगा और वे दोनों ऐसे कहतेभये कितुम मत बोलो १९ ॥

इतिश्रीहरिवंशतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिभकोपाख्यानेनवनवत्यधिकद्विशतोऽध्यायः२९९॥

तीनसौका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहते हैं फिरवह दुर्वासा ऋषिक्रोध करके मानों इन्होंकेप्राणोंको दग्धकरदेवेगा ऐसे एकभयंकरऔरअग्निरूपआंखि से १ देखताभया और रोषसे व्याकुल इंद्रियोंवाला दुर्वासा यती तिन्होंको ऐसेदेखता भया मांनोंतीनों लोकोंको दग्ध करदेवेगा २ और उसजनार्दन ब्राह्मणको सौम्य दृष्टि करके देखता हुआ यह बचन कहनेलगा कि तुम्हारा नाशहोनाशहो ३ और हेराजाओ तुम यहांसे जाओ देरमतकरो और मैंतुम्हारे बचन काक्रोध धारणकरने मेंसमर्थ नहींहूं ४ अन्यथा मैंसब राजाओंको दग्धकरने में समर्थहूं और क्योंकिमेरेआगेहठ करनेमें कौनसमर्थहै ५ सो तुम्हारे अभिमान कोलोकमें विख्यात और शंखचक्र गदाइन्होंका धारणकरने वाला श्रीकृष्ण खंडित करेगा और अब मैं क्याकहूं ६ ऐसे कह के वह धर्मात्मा दुर्वासा यतितहांसे गमन करनेकी इच्छा करताभया फिर वह हंसराजा तिसकी भुजाको पकड़ ७ कालकीतरह क्रूरहुआ तिस के कौपीनको छेदन करताभया फिर अन्ययती दशो दिशाओंमें भा-जतेभये ८ फिर वह जनार्दन ब्राह्मण हा कष्टहै ऐसे कहताहुआ मित्र भावसे तिस राजाको निवारण करताभया और यह कहताभया कि यह क्या हठ है ९ पश्चात् सत्य धर्म वाला दुर्वासा यती तिसको मारनेको समर्थ भी था परंतु मंद २ ऐसे कहताभया कि राजकुल में अधमरूप तुमको मैं मारनेमें तो समर्थहूं परन्तु हम यतीहैं इस वास्ते तुमको नहीं मारते १० और जो यादवोंका पति और शंख चक्र गदा इन्होंको हाथ में धारण करनेवाला भगवान् है वह तुम्हारे अभिमान का नाश करेगा ११ और यदुओं में श्रेष्ठ और जगत् का पति ऐसे श्रीकृष्ण के होनेमें तुम्हारा जीवना सुजीव है अर्थात् यही जीवना बहुतहै १२ और जरासंध भी तुम्हारा बंधु वह भी कछुक हने की इच्छा नहीं करताहै और ऐसे लोकके बैरमें वह भी युक्तनहीं है १३ और जरासंध सरीखा तुम्हारेबंधु फिर नहीं

होगा सो उसके संगभी तुम्हारा द्वेष होजावेगा और जो ऐसे घोर रूपको सुनके वह तुम्हारा बन्धुभी सहजावेगा तो धर्म का नाश होजावेगा इसमें संदेह नहीं १५ ऐसे कहके वह दुर्वासा यती हंस-राजाको यह कहताभया कि तू चलाजा२ पश्चात् दुर्वासायती उस जनार्दन ब्राह्मणको यह कहता भया १६ कि तेरा कल्याण हो और शंख चक्र गदा इन्होंको धारणकर ने वालेकी तेरी संगतिहो १७ और आज अथवा सबेरे अथवा सदा साधुहै और साधु अर्थात् श्रेष्ठ पुरुष का विनाश दोनों लोकों में नहींहै १८ सो तूजा यह सब वृत्तांतअपने पिताके आगे कह १९ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्याने त्रिशततमोऽध्यायः ३०० ॥

तीनसौएकका अध्याय ॥

वैशंपायनजीकहतेहैं पश्चात् वे दोनों हंसडिंभक क्रोधहुये और कालसे प्रेरेहुये तिन यतियोंके छींके और कमंडलु और इंधन १ और दंड और पात्रविशेष इन सबोंको छीनकर और भेदनकरके फिर तहां व्याधों करके मांसको जलातेभये २ और तहां मांसका भक्षण कर फिर अपनी पुरीको आतेभये और वह धर्मात्मा जनार्दन ब्राह्मण स्नेहसे युक्तहुआ तिन्होंके पीछे पीछे आताभया ३ और येनष्ट होगये ऐसे दुःखित होके मानताभया और जब वे सब चले गये तब दुर्वासायति ४ भाजते हुये सब यतियोंको यह कहताभया कि यहांसे पुष्कर पुण्य स्थानसे चलके ५ और विश्राम करके फिर द्वारकापुरी में प्राप्तहोके शंख चक्र गदा पद्म इन्होंको धारण करने वाला श्रीकृष्णको६ देख फिर तिस ईश्वरके आगेयह सब वृत्तांतसुनावेंगे और वह इस जगत्‌की रक्षा करताहुआ धर्ममार्गमें संस्थितहै ७ और आद्यहै और लोक का गुरू है और विष्णुहै और शांतात्माहै और तत्व जाननेवालों का प्रियहै और सब कंटकों का नाशकरके इस पृथ्वीको रक्षित कराहाहै ८ औरवह प्रभु इन पापियोंकोऔर

घोरकर्म करनेवालोंको सबोंको मारेगा और ज्ञानमें नियत आत्मा वाले हमको रक्षितकरेगा९ सो हेविप्रो यह अब तुम क्षमाकरो अब तुमको तहां गमन करनाचाहिये और उन्होंने जो हठ कियाहै और पात्र छेदनकियेहैं १० यहसब वृत्तांत हमश्रीकृष्णके आगेकहेंगे फिर ऐसे हीहै यह प्रतिज्ञा करके ज्ञानचक्षुवाले वे यति ११ तिन्हों करके छेदनकियेहुयेकाष्ठमयछींके और कौपीन और मृगछाला १२ औरकमंडलु इत्यादिक अनेक बस्तुओं को लेके श्रीकृष्ण को दिखाने के वास्ते तमकी योनि औ ईश्वरकीआत्मासे उत्पन्नहुआ ऐसा १३ वह दुर्वासायति पांच हजार मुनियोंको आगेकरके तहांसे चलता भया १४ फिर वे सब मुनि एक रात दिनमें कृष्णसे पालीहुई द्वारकापुरी में प्राप्तहोतेभये और शांतरूप और माहात्मा और रोमों वाले और केशोंसे बर्जित १५ ऐसे वे यतीश्वर प्रातःकाल वावड़ीमें प्रवेशहो स्नानकर १६ फिरमहान् यत्नसे कंटकोंके नाश में तत्पर ऐसे विष्णुको देखने के वास्ते उद्यत होतेभये और सब इकट्ठे होके तिस द्वारकापुरी में प्रवेशहुये १७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायां हंसडिम्भकोपाख्यानेएकाधिकत्रिशतोऽध्यायः३०१ ॥

तीनसौदोका अध्याय॥

वैशंपायनजी कहतेहैं पश्चात् वे सबयति सर्वेश्वर और विष्णु और कमल सरीखे नेत्रोंवाला और श्यामवर्ण और पीतांबर और शोभावाला १ और मुकट को धारणकिये और लक्ष्मी का पति और नीले वालों वाला और अव्यक्त और शाश्वतदेव और सकल रूप और पीवरूप २ ऐसा वह श्रीकृष्ण कदाचित् क्रीड़ा करने के वास्ते सात्यकी आदि अनेक कुमारों के संग तिस द्वारकापुरीमें गोल क्रीड़ा करतेहुये बिचररहेथे ३ और यह गोल प्रथम मेराहै पश्चात् तेरा होवेगा ऐसे वह श्रीकृष्णसात्यकी के प्रति कहताहुआ क्रीड़ा कर रहा४और बसुदेव और उद्धवआदिअनेक यादवतिन्होंके

समीप स्थित हो रहे ५ भूतात्मा और भूतभावन ऐसे श्रीकृष्ण अन्य व्यापारसे रहितहुये तहां खेलतेभये ६ जैसे पहिले सुग्रीवके संग रामचन्द्र क्रीड़ा करते भये तैसे, ७ और वह विष्णुभगवान् मध्यान्ह समयमें सात्यकी के संग क्रीड़ाकरके श्रांत हो फिर खेलनेसे वंध होताभया ८ और तब वेसवयति पहले दरवाजे के आगे द्वारपालसे रोकेहुये तिस सभाके दरवाजेहीकेआगे स्थितहोगये९ और दीर्घतपवाले वे मुनिदुर्वासा मुनिको आगे कियेहुये श्रीकृष्णको देखतेभये १० और गोलक्रीड़ामें और हाथमें गोलकको लियेहुये और पद्मके पत्तोंके समाननेत्रोंवाला ११ और एकनेत्रसेदेखताभया और एक नेत्रसे तिस गोलक को देखताभया ऐसे श्रीकृष्णको वे सब मुनि देखतेभये १२ पश्चात् सब यादव और श्रीकृष्ण और सात्यकी और वलदेव और बसुदेव और अक्रूर और उग्रसेन १३ और अन्ययादव सब भ्रमकोप्राप्त होतेभये और यहक्याहै २ ऐसे व्यासक्तमनवाले होतेभये १४ और तिन यतियोंके पीछे पीछे गमन करताहुआऔर जैसे त्रिलोकी कोदग्ध करनेकीइच्छा कररहाहो ऐसे होरहा और आधा कौपीनको धारण किये और कछुक स्मरण करता हुआ १५ और अपने हृदय में खेदसे युक्त और खंडितहुआ दंडको धारण कियेहुये और क्रोधसे अंतर जलताहुआ और तिस हंस राजाके पापको प्राप्तहुये १६ और नेत्रोंमें जिसके महाअग्नी उपज रही और यादवोंका ईश्वर श्री कृष्णको देखरहा ऐसे दुर्वासायतिको वे यादव देखतेभये और भयभीत होतेभये १७ और यह क्रोधहुआ क्याकरेगा और हमको क्याकहेगा ऐसे वेसब यादवअंजलीवांधके खड़ेहोतेभये १८ और वे यादव कछुक ऐसेकहतेभये कि यह तुम्हारे वास्ते आसनहै पश्चात श्रीकृष्ण भगवान् तहां प्राप्त होके यह कहता भया १९ यह आसनहै तुम स्थितहो जाओ और हे विप्र मैं यहां स्थितहूं सोक्या करूं २० पश्चात वह दुर्वासा ऋषि आसनपै बैठता भया फिर तिसके आसनपै बैठे पश्चात् कुटिलतासे रहित २१ वेसब यतियथा योग्य आसनों पै

बैठते भये और पश्चात् मुकुट को धारण करनेवाला श्रीकृष्ण तिन्होंको अर्घ्य आदिकविधिकरताभया २२ और फिरश्रीकृष्ण दुर्वासायतिको पूछताभया किहे विप्र तुम्हारा यहां आना कैसेहुआ २३ और तुमको कछु महत कारण देखाहै क्योंकि तुम ब्राह्मणोंमें श्रेष्ठ और पापसेरहित २४ऐसे संन्यासीहो सो तुमको कछु प्रार्थना करनी भीनहींहै और कछुइच्छा भी नहींहै २५और ऐसेतुम इच्छा से प्रेरित कर्मवाले क्षत्री तुम्हारे समीप प्राप्त होतेहैं और तुम्हारे तो हमको कछुभी इच्छानहीं दीखतीहै २६ सो हे ब्रह्मन् तुम्हारे आगमनका कारण हम नहीं जानते परन्तु हम यह अनुमानकरतेहैं कि तुम्हारा किंचित् कारणहै २७ सो आप कहो हम तुमसे सुना चाहतेहैं पश्चात् ऐसे श्रीकृष्ण केकहनेसे २८उस दुर्वासा मुनिके फिर महान् क्रोधपैदाहोताभया और तिसपहिले कोपसे भीज्यादह कोपहोताभया २९ और तीनलोकोंकोदग्धकरनेकीतरहऔर देखता हुआ कोभक्षण करनेकी तरह वहदुर्वासायति रक्तनेत्रों करिकेक्रोध करता भया ३० फिरक्रोधसे मूर्च्छितहुआ श्रीकृष्णके प्रति दुर्वासा कहनेलगा किहेयादवेश्वर मैंनहीं जानता तुमहमको ऐसेक्योंकहते हो ३१ और हेविष्णो तुमश्रेष्ठ देवहो मैं तुमको जानताहूं और हम पुरातन हैं और पहिले वृत्तांतोंको जाननेवालेहैं ३२ सो क्यातू हमको ठगनेकी तरहकहताहै और तूमायासेमनुष्य देहवालादेवदेव है और तूहमसे कैसे गुप्तहोताहै ३३ औरजोब्रह्म जाननेवालोंकापरमपदहै सोतूहै और जोभाविहै सोभीतूहै और हमतेरजानेहुयेहै ३४ और जिससे यह विष्णु पैदा होताहै सो परमपद आपही हो और जो स्थूल रूपकरके तुमको अपनेचित्तसे जानतेहैं ३५ वह ईश्वर भी तूहै सो हे विश्वेश तुम्हाराशरीर हमनेपहिलेही जानलियाहै और जो श्रेष्ठ कर्मसे प्राप्तहोताहै तिसका स्मरण करके हम निवृत्त होरहेहैं ३६ और अन्य मनुष्य प्रत्यक्षभी तुम्हारे रूपको देखतेहुये नहीं जानतेहैं सो हे देव हम तिनसरीखे मूढ़ बुद्धिवाले नहीं हैं ३७ और तुम जो हमको कहतेहो कि मैं तुम्हारा कारणनहीं जानता यह

क्या हठहै और हे केशव जो मूलको जानते हैं उनका किया हुआ चेतन फल जानना क्या है ३८ और वेदांत विषे जो बिख्यात तेरा तेजहै वह बिचारा जाताहै ३९ औरहेप्रभो जो पापों से रहितऔर ज्ञानसे तृप्त योगीजन हैं वे अपने हृदामें तेरे इस शरीरको देखते हैं ४० और वेदों करके जो तेरा तेज सुना जाताहै और ब्रह्म ऐसा प्रतिपादन किया जाता है सो तेरे इस ऐश्वर्य रूपको मैं जानता हूं ४१ औरजो वेदों में परम वैष्णव तेज पढ़ाजाताहै सो हे बिष्णो इस तेरेही शरीरको मैं जानताहूं ४२ और जो ॐ ऐसा शब्द कहा जाताहै और जिसकी बाणीहै ऐसा कहाजाताहै सो हे बिष्णो तूही है४३ फिरमैं नहीं जानता ऐसा मतकह और जो कछु परोक्षहै वह भी आपके कहने लायकहै फिर हे हरे मैंनहीं जानता ऐसाहठ मत कर ४४ और बिष्णु जब उत्पन्न होताहै तब तुमसेही होताहै और क्षय होने के पीछे भी तुम्हारेही में लीन होजाता है ऐसा तुम्हारा ऐश्वर्य तेजको मैं जानताहूं ४५ और हे भूत भव्येश मेरे हृदय में तुम सदा कर्त्ता भान होतेहो और जो जो रूपमें नित्यस्मरण करता हूं ४६ वह सब मेरे हृदयमें तुम्हीं भानहोतेहो और हे बिष्णो जब तुम वा पुरुष करके मेरे हृदामें ध्यान से देखे जातेहो तब तिसी रूपसे मेरे हृदामें तुम स्थितहो ४७ और आकाश विष्णु है ऐसा कदाचित् मेरीबुद्धिमें कियाजाताहै तब मेरे हृदामें तिसीकेरूपसे तुम स्थितहोजातेहो४८ और कदाचित् पृथ्वी विष्णुहै ऐसेमैं जब बिचारताहूं तब मुझको तुम सदा पार्थिव रूपसे भानहोतेहो ४९ और हे देव यह रसहै ऐसे कदाचित् चिन्तवन कियाजाता है तब तुम रसात्म कही मेरे हृदयमें स्थित होतेहो ५० और जब तुमको मैं तेजरूप स्मरणकरताहूं तब तुम तेजरूप मुझको दीखतेहो ५१ और जब चन्द्रमाकी जगह तुमको देखताहूं तब तुमको मैं चांद्रम सरूपसे देखके प्रसन्न होजाताहूं ५२ और तुम्हाराही रूप मैं सूर्यकीजगहदेखताहूं तब तिसी भावना से तुम मुझको सूर्यदीखते हो ५३ सो इसवास्ते सब कुछ तुम्हीं हो ऐसी मेरी मति निश्चल

है ५४ सो इसवास्ते तुमको मेरे से यह नहीं कहनी चाहिये कि मैं नहीं जानता ५५ और हे विष्णो हम इसवास्ते आयेहैं कि तुम हमारी पीड़ाको चिंतवननहीं करतेहो ५६ और हम अत्यन्त दुःखी हुये तुम्हारे आश्रय आये हैं और हमारी जो ऐसी अवस्था हो रहीहै ५७ इसको तुमस्मरण नहीं करते सो हम अपने भागकोनष्ट चिंतवन करतेहैं ५८ और हेविष्णो हम मंदभाग्यहैं जो कि तुम हमको स्मरण नहीं करते सो हेविष्णो कोईक दोक्षत्रिय शिवजीके गर्व सेयुक्त हुये ५६ और हंसडिंभक नामवाले हमारे समीप आके हमको बाधा देनेलगे और हमारी निन्दा करते भये ६० और जहां कहीं भाजते भये और पापके बचन कहते हुये और बहुत से अयुक्तवचन कहते हुये और हमको झड़कते भये ६१ और हेविष्णो और यह असह्य पाप करते भये सो तुम देखो कि बहुतसी हमारी वस्तु छेदन करदी ६२ औरछींके काष्ठकेपात्र और द्विदल और बेणुक इत्यादिक हमारे पात्र खंडित करदिये और तिन्होंके हठका किया हुआ ६३ और यह है कि हमारी यह कौपीन फाड़ दिया है सो यही हमारा परमधन है और हे प्रभो यह कमंडलु छेदन करदिया है ६४ सो क्षत्रधर्म में युक्तहुआ तू हमारी रक्षा नहीं करताहै यह बड़ा आश्चर्य है ६५ सो हम मंदात्मावाले और मंद भाग्यवाले क्या करेंगे और अब हमारा रक्षक कौनहै हे जगतोंकेपति यहतुम कहो ६६ और वे दोनों जीवते रहे तो तीनोंलोक नष्ट होजावेंगे और नहीं तो विप्र रहेंगे और नहीं राजेरहेंगे और वैश्य भी नहीं रहेंगे और शूद्रभी नहीं रहेंगे ६७ और वे दोनों अत्यन्त बलवाले हैं और पैनेदंडोंको धारण करनेवालेहैं और तिन्होंके आगे देवता भी खड़े होनेमें समर्थ नहींहैं ६८ और भीष्म और भयंकर पराक्रम वाला वाहल्लीक राजाये भी उन्हों के आगे खड़े होनेलायक नहीं है ६६ और जो क्षत्रियों को भय देनेवाला जरासंधराजाहै वहभी विशेष करके तिन्होंके आगे स्थित होने में समर्थ नहीं है क्योंकि उन्होंकोशिवजीसे बरलेरक्खाहै औरनित्य तिन्होंकेखोटा संगरहता

है ७० इसवास्ते हे विष्णो उन शूरबीरोंको तुम मारो और इन लोकोंकी रक्षा करो नहीं तो तुम रक्षा करतेहो यह शब्द वृथा होवेगा ७१ सो यहां बहुत कहनेसे क्याहै तुम त्रिलोकीकी रक्षाकरो ऐसे कहके वह दुर्वासा यती क्रोध से मूर्च्छित होता भया ७२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिभकोपाख्यानेद्व्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३०२ ॥

तीनसौतीनका अध्याय ॥

वैशंपायनजी कहतेहैं ऐसेदुर्वासायतीके बचनसुन श्रीकृष्णमंद २ श्वासलेफिर तिस दुर्वासा यतीके प्रति श्रीकृष्ण कहनेलगे १ किहे महाराज मेराही सब दोषहै सो तुमको क्षमाकरनी चाहिये और मेरावचन सुनो फिर क्षमाकरो २ मैं हंस और डिंभक इन दोनों कोरणमें जल्द जीतूंगा और शिवजी वरदेवो अथवा इन्द्र अथवा कुबेर ३ अथवायम अथवावरुण अथवाचारमुखोंवाला ब्रह्मा इनमें को ऐसा वरदेवो परंतु उनदोनोंको मैं सेना सहित मारूंगा और तुमको प्रसन्न करूंगा ४ सो यहबात मैं सत्यकहूंहूं तुमरोष मतकरो और उन दोनों दुष्टराजोंको मारके तुम्हारी रक्षा करूंगा ५ और तुम्हारादोष करनेवाले और खोटे आत्मावाले ऐसे उनदोनुओंकोमैं जानताहूं और यह पहले मुझेभी सुना है कि वे दोनों तीक्ष्णदंड धारण कररहेहैं ६ और अत्यंत बलवाले और मदवाले और शिव के वरसे गर्वित और विशेष धन की साधना वाले और जरासंधसे हितकी इच्छावाले ७ ऐसे उनदोनोंको मैं जानताहूं और वह जरासंधराजा उनदोनुओंके प्राणोंकाभी नाशकरेगा इसमेंसन्देहनहीं ८ सो मुनिजनो उनदोनुओंके जीवने से फिर तुमको कल्याण होवेगा और जहां २ वे जाकेस्थितहोवेंगे ९ वहांही जाके मैं उन्होंकोमारूंगा इसमें कुछसंदेह नहींहै और हे यतिजनो तुम अपने कार्य्यमें परायणहुये इच्छापूर्वकजावो १० और मैं थोड़ेही कालमें उनदोनों को रणमें मारूंगा फिरवह दुर्वासायती प्रसन्नहो यादवेश्वरकृष्ण

के प्रति कहनेलगा ११ कि हेकृष्ण जगतोंको कल्याण देनेवाला जोतूहै सो तेराकल्याणहो और हे केशव तेरेको दुःसाध्यक्याहै १२ और तुम त्रिलोकीके ईशहो और त्रिधाम हो और रचना और संहारके करनेवालेहो और देवताओंकेभी देवहो और सर्वत्रसम दर्शीहो १३ और हेविष्णो हेहरे हे चक्रपाणि तेरेअर्थ नमस्कार है और स्वभावसे शुद्ध १४ और शुद्धरूप और शांतरूप जोतूहै सो तेरे अर्थ नमस्कारहै और हे शब्दगोचर हेदेवेश हेभक्तवत्सल तेरे अर्थ नमस्कारहै और मुझको ज्ञानसे अथवा अज्ञानसे जो कहाहै उसको क्षमाकरो १५ और हे जगन्नाथ तुम्हींकोकहाहै किहमारा तुम्हारा कछुअंतरनहींहै इसवास्ते तुमक्षमाकरो और साधुजनोंके तो क्षमाही सारहै १६ श्रीभगवान् कहतेहैं हेविप्र तुमको क्षमा करनीचाहिये क्योंकि तुम्हारेसदा क्षमाही सारहै और संन्यासियों के क्षमासार होतीहै और उन्होंके क्षमाही परम बलहै १७ और क्षमानित्य मोक्ष करनेवाली है और तत्त्वज्ञानकी तरह क्षमाहै और क्षमाधर्महै और कर्महै और क्षमाहीसत्यहै और क्षमाहीयशहै १८ और क्षमास्वर्गको पैड़ीहै ऐसेवेदके जाननेवाले कहतेहैं इसवास्ते सब यत्नकरके तुम अपने शिष्यआदिकोंको क्षमाकापालन करवाओ १९ और तुमसब यतीश्वरो प्रत्यक्षज्ञानसे संयुक्तहो सो ये सब यती मुझसेपूजाहोनीचाहिये २० सोसब यतियोंकोमेरेभिक्षाका अन्न भोजनकरनाचाहिये २१ पश्चात् वेसबयती अंगीकारकरके श्रीकृष्ण केघर भोजनकरनेकी इच्छाकरतेभये २२ पश्चात्वहविष्णुभगवान् अपने भवन मेंप्रवेशहोके चारप्रकारके भोजन यथाविधिसे करवाके २३ फिर तिनसबयतियोंको भोजन करवाताभया और कोमलरश-मी बस्त्रोंको छेदनकरके २४ तिन्होंके अर्थ कौपीन आदिकों के वास्ते वहश्रीकृष्ण भगवान् देताभया पश्चात् वे सब प्रसन्नहोके जहांसेआयेथे तहांचलेगये २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायां हंसडिभकोपाख्यानेयति भोजनेत्र्यधिकत्रिशततोऽध्यायः ३०३ ॥

तीनसौचारका अध्याय।

वैशंपायनजी कहतेहैं पश्चात् वहदुर्बासा यति तहां अपने आश्रम में नारदमुनिकेसंग ब्रह्मतत्त्वका चिंतवन करताहुआ यथासुखसे बिचरताभया १ और भगवान् भीतिन हंसडिंभको केबासको बिचारताभया फिर वेदोनों हंसडिंभक तिसकाल में २ अपने पिताब्रह्मदत्तराजाको जनोंकी सभामें यहकहतेभये ३ किहे पिता राजसूय महायज्ञको तुमयत्नसेकरो और हे नृपश्रेष्ठ इसमहीनेमें हम यज्ञका यत्नकरेंगे ४ और हमदोनों दशोंदिशा ओंके जीतनेमें तत्परहैं और हाथी घोड़े इत्यादिक सेनासे युक्तहुये हमदशों दिशाओंको जीतेंगे ५ और हेनृपोत्तम यज्ञकी सिद्धिकेवास्ते तुमकोसबवस्तु ल्यानी चाहिये पश्चात् ऐसे सुनके वह ब्रह्मदत्त राजा ऐसेही करेंगे यह कहताभया ६ पश्चात् वह जनार्द्दन ब्राह्मण उन्हों का मित्रभी तिनके हठकोदेखके तिनकी सामर्थनहीं जानता हुआ अपने मित्र हंसकेप्रति कहनेलगा ७ हेहंसमेराबचन तूसुन फिरतू सुनके निश्चयकरके फिर हठका उद्योगकरना ८ कि भीष्मराजा और जरासंध और बाल्हीकराजा और सब यादव शूरबीर इन्होंके होतेहुये तूकैसे सबको जीतेगा ९ और भीष्मराजा बलवान्है और वृद्धहै और सत्यमें युक्तऔरजितेन्द्रियहै और जोभृगुबंशी परसुराम इक्कोसवार इस पृथ्वीको जीतताभयाथा १० तिसकोयह भीष्म सब क्षत्रियोंके देखतेहुये युद्धमें जीतताभया और जरासंधका जो युद्धमें पराक्रमहै उसको तुमजानतेही हौ ११ और जो यादव शूरबीरहैं अस्त्र बिद्यावालेहैं और युद्धमेंदुर्मदहैं तिन्होंमें श्रीकृष्ण शत्रुओंको जीतनेवालेहैं १२ और कृत्यकोकरनेवालेहैं और जरासंधके संग युद्ध करनेमें सदाश्रमनहीं मानतेहैं और उसकेआगेस्थितहुआ कोईजीवनेमेंसमर्थनहींहै १३ और बलदेव मदवालाहै जो यदिक्रोधसे युक्तहोवै तौयुद्धमें इनतीनों लोकोंको जीतलेवै ऐसीमेरी मतिहै १४ और सात्यकियादवभीरणमें शत्रुओंकेजीतनेमेंसमर्थहै और अन्ययादवभी

श्रीकृष्णके आश्रयहोके गर्वित होरहेहैं १५ और हमको जो पहले यतियोंके साथबिरोधकियाथा सोदुर्वासायति सबयतियोंके संगहुआ श्रीकृष्णको देखनेके वास्तेगयाहै १६ हमको ऐसे यह वृत्तांत भोजन करकेआयाहुआ ब्राह्मणसे सुनाहै सो इस प्रकार होनेमेंजैसेतुम्हारा कार्यसिद्धहो तैसेअपनेमंत्रियोंके संगसलाहकरलेवो १७पीछेइसराज सूययज्ञकोहमबिधान करेंगे१८हंसराजाकहनेलगाकि वृद्धऔरहीनबल वालाऔरमंदात्मा ऐसाकौनभीष्महै औरवहवृद्धक्या हमारेआगेयुद्ध में स्थितहोनेकोसमर्थहै१९औरयादवहमारेआगेयुद्धमें स्थितहोनेको समर्थहै यहबड़ाआश्चर्यहै ऐसा तूचिंतवनकर२० औरकौनकृष्णहैजो हमारेस्थितहोऔरमदवालाकौनबलदेवहै और सात्यकि हमारेआगे खड़ाहोनेको समर्थ नहीं२१और धर्मात्मा जरासंधतोमेरा सदा बंधु है२२सो हेविप्रतूजल्दयादवोंमें श्रेष्ठ श्रीकृष्णकेपासजा२३और यहवृ-त्तान्तकहकियज्ञकेवास्तेतुमकोसर्बस्वकरदेना होगा२४और हेकेशव बहुतसे लवणोंकोभेटके वास्तेजल्द तू आऔरतुझकोकछुबिलंब नहीं करनाचाहिये२५और तू यहसबवृत्तान्ततिसयदुवोंमेंश्रेष्ठ श्रीकृष्णके आगेजाके जल्दसुना और तूकछु उत्तर मेरे आगे मतकहै २६तुझको सौगंद देऊं मैं और तू मेरा प्रियहै इसवास्ते तुझको कहताहूं कि यह सब वृत्तांतश्रीकृष्णके आगे कहना२७यहतुझको बारंबार सौगं-द दिवाताहूं ऐसे कहाहुआ वह बिप्रकछु उत्तर नहीं देताभया २८ और बैशंपायन जी कहतेहैं कि हेजनमेजय धर्मात्मा वह जनार्दन ब्राह्मण मित्रभावसे और स्नेहसेयुक्तहुआ नित्यगमन करनेमेंउद्यत होताभया२९औरआजकलअथवापरसों जगत्की योनिऔरशंखचक्र गदा इन्होंको धारणकरनेवाला ऐसादेवको देखनेकोमैंजाऊंगा ३० ऐसेयत्नकरताभयाऔर पश्चात्वहधर्मात्मा अकेलाहीघोड़ेपै असवा रहोके३१प्रातःकालजल्दी द्वारकापुरीकोदेखनेकेवास्ते गमनकरता भयाऔरवहद्विजहरिकृष्णहृषीकेशकोऐसेमनमेंस्मरणकरताभया ३२

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशप्रवांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेद्वारकायांद्व तप्रेषणंचतुरधिकद्विशततोऽध्यायः २०४ ॥

तीनसौपांचका अध्याय ॥

वैशंपायन जीकहतेहैं पश्चात् वह ब्राह्मण घोड़े पै असवारहोके विष्णु भगवान् को जल्द प्राप्तहोताभया १ औरजैसे गरमीसमयमें सूर्य की किरणोंसेपीडितहोकेतिसाया बटेऊ जल देखनेकेवास्तेजल्द जातेहैं २ ऐसे वह बिप्रविष्णु भगवान्को देखनेकेवास्ते जाताभया औरगमनकरताहुआवहघोड़ेको हांकताहुआऐसे चिंतवन करताभया ३ किहंसमेरा मित्रकोमेरांप्रियहितकिया क्योंकिउसका प्रेराहुआ मैं साक्षात्हरिको देखूंगा४ औरमैं सदाधन्यहूं और मुझसे कोई अधिक नहींहैक्योंकिजोमैं द्वारकापुरीमें बसताहुआविष्णु भगवान्कोदेखूं गा ५ और वह मेरीमाताभी धन्यहै जोकि हरिको देख फिर आया हुआको मेरामुखकोदेखेगी सोवह्मनस्वनी सर्वदा कृतार्थ होजावेगी ६ और कमलकी केशर सरीखी कांतिवाले भगवान्केमुखकोदेखूंगा और देवताओंकेदेव औरचक्रधारी और धनुषधारी ७ ऐसे श्रीकृष्ण भगवान् के कमलके पत्तोंसरीखी कांति वाले शरीर को देखूंगा ८ और शंखचक्र गदा शार्ङ्ग धनुषइन्होंसे बिभूषित देखूंगा और पद्म की केशरसरीखी कांतिवाले भगवान्के नेत्रोंको देखूंगा और दीन आत्मावाला मैं तिन्होंको देखके नष्टदुःखवाला होजाऊंगा ९ और वह योगात्मा और सौम्यदृष्टि से मुझको देखेगा और मुझको प्रिय बचनबोलेगाभी और स्वस्तिहै ऐसा बचन भी कहेगा १० और त्रिलोकीकी सदृश भगवान्के शरीर मैं देखूंगा और भगवान् के पैर रूपी कमलोंको मेरामनजल्दीकररहाहै ११ औरफुरतेहुये रत्नोंसेयुक्त ऐसी भगवान्की छातीको मैंदेखताहुआ कौनतरह गमनकरताहूं १२ और पीलेवस्त्रोंको धारण कियेहुये और लंबा हारसे बिभूषित और कछुक हंसाहुआ ओष्ठवाले ऐसे बिष्णु भगवान्को मैं बार बारदेखताहूं १३ औरहरिकेरूपका स्मरणकरतेहुये मेरेरोम खड़े होतेहैं और गमनकरताहुआ के आगे शंख चक्र गदाखड्ग इन्होंको धारणकरने वाला १४ भगवान् मुझको भान होताहै और जगत् के गुरुदेव

बिष्णु मुझको चलते हुयों की तरह दीखते हैं और यह भगवान् है ऐस कहने को मेरी जिह्वा फुरतीहै १५ और मैं यह अति दुःख मानताहूं कि कर देवो मुझको ऐसा बचन कहना होगा १६ सो उस राजा का यह हठहै और हे बिष्णो तुम हंसराजा को कर देवो मैं तिसकी आज्ञा करने आयाहूं ऐसा बचन निर्दयी होके तिस भगवान् के आगेजाके कहूंगा १७ और मैं मूढ़ोंका अग्रिणी हूं ऐसे कहके निर्लज्ज हुआ हे हरे तुम हंसराजा को कर देवो ऐसा बचन कहूंगा १८ और बहुत से लवणों की तुमको कर देनी चाहिये सो ऐसे कहने को तिनके आगे मैं समर्थ नहीं हूं १९ तोभी अपने मित्रभावसे मुझको यहघोर बचन कहनाही चाहिये और कृतात्मा मनुष्योंको मित्रभावका यहकष्टहै २० अथवा बिष्णु भगवान् सबके हृदयकी जानतेहैं और सबप्राणियोंके भावकोजानतेहैं और सबकी शोभा में रतहैं २१ और मित्रभावसे मैंतो कहूंगा मुझको क्यादोषहै और घोरबचन कहनेकोजोमैं युक्तहूं २२ सो मेरी रक्षा विष्णु भगवान्ही को करनी चाहिये और नीली जुल्फों वाले और बालोंवाले श्रीकृष्णको मैं देखूंगा और शंखसरीखी ग्रीवावाले और श्रीवत्स चिन्हसे आच्छादित छातीवाले २३ और पद्मसरीखी बाहुओंवाले और आत्माकी इच्छा करके २४ जगत् की रक्षाकरने वाले और जलपै शयन करनेबाले २५ ऐसेभगवान् को मैं देखूंगा और ऐसे भगवान्को मैं देखके कृतार्थ होऊंगा २६ सोहरि भगवान् केदेखनेसे अब मेरा जन्म सफल होवेगा अबमेरी यज्ञसफल होवेंगी और साक्षात् हरि भगवान् के देखनेसे मेरेनेत्र सफल होवेंगे २७ और घोरकर्म को कहनेवाले मुझको प्रसन्न हुआ बिष्णु भगवान् दोनोंनेत्रोंको कछुक मीचतेहुये देखेंगे २८ और मूल समेत बिष्णु भगवान्को मैं बारंबार देखूंगा और श्रीकृष्ण के शरीर को अपने दोनों नेत्रोंके द्वारापान करूंगा २९ और तिन्होंके पैरोंकी मंगलीक रजकोमैंधारणकरूंगा और पश्चात्मैंकृतार्थहोजाऊंगा औरउन्होंके पैरोंकी रज स्वर्ग का मार्ग है ३० और मेघके शब्द सरीखा गंभीर

ऐसा हरिके स्वरको मैं सुनूंगा और जगत् का पति और चक्रधारी ऐसे विष्णुके पादरूपी कमलोंको मैं देखूंगा ३१ और मैं पूर्ण चंद्रमा के समान कांतिवाला भगवान् के मुखको देखते हुये की तरहहूं और जगतूरूप हरिको देखतेहुये की तरहहूं और मैं जो अपूर्व बचन कहनेकी इच्छा करताहूं ३२ सो मेरेपै विष्णु भगवान् प्रसन्नहो और चंचल कुंडलों वाला देव चंदन से चर्चित ३३ और फुरतेहुये कंकणोंसे युक्त बाहुओंवाला और बायेंहाथमें प्रकाशमान हुआ महाशंखको धारण कियेहुये ३४ और रश्मिजालसे वहशंख शोभित होरहा और तपताहुआ सूर्यके समान बर्णवालाहै ऐसेतिस शंखधारी भगवान्को मैं देखूंगा ३५ और प्रकाशमान कंकणों से युक्त और बाजूबंदसंयुक्त और पीले और कुसुमवाल बस्त्रोंको धारण कियेहुये ३६ और बिस्तार छातीवाला ऐसेबिष्णु भगवान् को मैं अब फिर कदाचित् देखूंगा सोमैं तिनके शरीरके देखने के वास्ते उद्यतहुआ सर्वथा कृतकृत्यहूं ३७ और मेरेअर्थ नमस्कार है नमस्कारहै क्योंकि जो मैं हरि भगवान् को देखनेको उद्यतहूं और जगन्नाथ और बलदेव के संगहुये और जगत् के गुरु ऐसे बिष्णु भगवान् को मैं देखूंगा ३८ और शोभायमान कौस्तुभ मणिसे बिराजितछाती और पीतांबरको धारण कियेहुये कुंडलों को धारण कियेहुये और कमल सरीखे नेत्रोंवाले और मुकुटको धारण करनेवाले और चक्रगदा कमल इन्होंको हाथमें धारण करनेवाले ऐसे बिष्णु भगवान् का शरीरमेरीऐश्वर्य के अर्थहो ३९ और वेदरूपी समुद्रमें शुद्धस्नान कियाहुआ और मन्दिराचलपर्वतपै स्थितहुआ समुद्रके मथन समय प्रकाशमान और देवताओंसे सेवित ऐसेनारायणके नामरूपी अमृतको मैंपीताहूं ४० और मोक्षकी इच्छा करनेवालोंसे ध्यान करने लायक और अनंत और स्थूल और सूक्ष्मरूप ४१ और एक और अनेकरूप और आद्यरूप और त्रिलोकी को पैदाकरने वालीज्योति ४२ और देवताओंसे बंदित ऐसे अच्युत भगवान् मेरीआंखों के आगे दर्शन देवो ५३ इसप्रकार

चिन्तवनकरता हुआ और घोड़ेको प्रेरताहुआ वहबिप्र द्वारकापुरी को प्राप्तहोताभया और अपनेकोकृतार्थ मानताभया४४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्याने जनार्दनस्यद्वारकागमनेपंचाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३०५ ॥

तीनसौछःका अध्याय॥

बैशंपायन जीकहतेहैं पश्चात् वहब्राह्मण द्वारकापुरी में प्रवेश होके भगवान्की सभा के द्वारपालको सबवृत्तांत सुनाफिर तिस सभाके भीतर प्राप्तहोता भया १ और पश्चात् तहांदेव देवेश भगवान्को बलदेवके सहित महान् आसनपै बैठेहुयेको देखताभया २ और श्रीकृष्ण के आगेतो सात्यकि स्थित हो रहा और बराबर में नारद मुनि स्थितहोरहा और दुर्वासाकी कथाको कहरहे और उग्रसेनराजा को आगेकिये हुयेस्थित होरहे ३ और गंधर्व तहांगायन कररहे और अप्सरा नृत्यकररहीं और सूतमागध बन्दि इन्होंकरके श्रीकृष्ण भगवान् सेवित होरहे ४ और उद्गीयमान यशवाला और ब्राह्मणों करके सामवेदका गानहोनेसे तिसहरिका गायन हो रहा ऐसेविष्णु भगवान्को देखके रोमखड़े होतेभये और मैं जनार्दननामवालाहूं ऐसे अपना नामबताके श्रीकृष्ण के चरणों में नमस्कार करताभया ६ और पश्चत् बलदेवको नमस्कार करताभया और श्रीकृष्णके प्रतियह कहताभया कि हेदेव देवेश मैं हंस और डिंभक राजाओंका दूतहूं ७ ऐसे कहताहुआ उसबिप्रको माधव भगवान् कहने लगे कि पहले तू इस आसनपै बैठजा फिर यथार्थ अपने प्रयोजनको तू बर्णनकर ८ पश्चात् वहब्राह्मण तिन्होंके बचनको अंगीकार कर स्थित होताभया फिर श्रीकृष्ण भगवान् तिस ब्राह्मण को बाणी से पूजन करके फिर कुशल पूछतेभये ९ कि हे विप्र ब्रह्मदत्त हंसडिंभक इनराजाओंकी कुशल कहो और उन्होंका पराक्रमभी हमने सुनाहै और प्रयोजनभी सुनाहै १० और हे विप्र अपने पिताकी कुशलकहो ११ जनार्दन विप्रकहने लगा हे केशव

ब्रह्मदत्तकी और मेरेपिताकी कुशलहै और हे जगन्नाथ हंसडिंभक राजाकीभी कुशलहै १२ श्रीभगवान् कहने लगे हेद्विजोत्तम हंस डिंभक दोनोंराजे तुझको क्या कहतेभये सो सब तू बर्णनकर इसमें कछुशंकानहीं करनी १३ और हेद्विजोत्तम कहने लायकहो अथवा अवाच्यहो सो सब तूकहफिर हमसुनके वैसाही बिधान करेंगे १४ औरहेबिप्रतू दूतहै तेरेवाच्यकी और अवाच्यकीकल्पनानहींहै सोजो कछुराजाने कहाहै सो दूतकर्मसे सबकहदे१५ और यहांतुझको कछुसंका नहींकरनी चाहिये जोकछू उन्होंने कहाहै सो तूकह १६ ऐसे श्रीकृष्णसे कहाहुआ वहजनार्दन बिप्रकहने लगा किहेभगवन् तुम बिनाजानने वालकी तरह क्या कहतेहो तुमतोसबप्रत्यक्षदेखने वालेहो १८ और जगत्का वृत्तांत तुम्हारेसे कछुपरोक्ष नहींहै और सबकछु अपनेमनसे देखतेहुये तुममुझसे क्या पूछतेहो १९ औरहे बिष्णोतुम विद्वानोंसे सदाऐसे गायन कियेजातेहोकिदृष्टऔर अदृष्ट विचेतन रूपको तुमप्राप्तहोतेहो २० और इससब जगत् रूपतुमहो और तुम्हारेही विषे यहजगत् स्थितहै और तुम्हारेसे रहित चरा चरएक भी पदार्थ नहींहै २१ और तुम्हारा बिनाजाना कछुनहींहै और तुमसब जगह प्राप्तहोने वालेहो और सब जीवों के पतिहो और संहार कर्म को करनेवाले रुद्र तुम्हींहो २२ और हे बिष्णो सदारक्षा करनेवालेहो और तुम्हीं संसारको पैदाकरनेवालेहो फिर ऐसे मुझको तुम क्या पूछतेहो २३ और तुमको ज्ञानात्मा नाम से विद्वानगाते हैं और हे माधव प्राणों के जाननेवले तेरेको प्राण कहतेहैं २४ और हे पुरुषोत्तम शब्दज्ञतेरे को शब्दकहते हैं सो हे हृषीकेश ऐसे भी तुम मेरेसे क्या पूछतेहो २५ सो हे देवेश तौभी वारम्वार तुम्हारेसे प्रेराहुआ मैं कहताहूं कि राजसूययज्ञ को करने केवास्ते ब्रह्मदत्त राजायुक्तहै सो हंस और डिंभकका मैं भेजाहूं२६ उसयज्ञमें करदेने केवास्ते मुख्ययादवोंको और तुम्हारेको बुलाने को आयाहूंसो हेकेशव यज्ञकेवास्ते तुमबहुतसा लवणदेवो२७ इस वास्ते में उन्होंका भेजाहूं और अन्य भी वृत्तान्त उन्होंसे कहाहुआ

तुमसुनो २८ कि बहुतसे लवणोंको लेके आओ ऐसी उन्होंकी आज्ञाहै २६ पश्चात् ऐसा बचन उसबिप्रदूतका सुनके श्री कृष्णसुंदर तरह हंसतेभये औरउसदूतके प्रतिकहतभये ३० कि हे दूत तूसुन यहबचन मेरेको युक्तहीहै क्योंकिमैं करदेनेही वालाहूं सोउन्होंके वास्ते करदेऊंगा ३१ सो हेबिप्रजो वे मुझसे करलिया चाहतेहैं यह उन्होंका हठहीहै सोबड़ा आश्चर्य है कि उनशूरवीर क्षत्रियोंके ऐसाहठहै और जो बस्तु मुझसेकरमागे ३२ ऐसा तो हमने पहिले नहीं सुनाहै ऐसे श्रीकृष्ण दूतके अर्थकहके फिरयादवों के प्रतिकहने लगा ३३ कि हेयदुश्रेष्ठो यहहास्यहै जो कि मुझसे करलेनाचाहता है और राजसूययज्ञका पूजनवह ब्रह्मदत्तराजा कियाचाहताहै ३४ और वेदोनों हंस डिंभक उसकेपुत्र यज्ञकराया चाहतेहैं और तिन दुरात्माओं की यज्ञमें लवण को प्राप्त करने वाला यदु श्रेष्ठ श्री कृष्णहै ३५ और श्री कृष्णही करदेने वाला है सो हे यदुसत्तमों मैं उन्होंको जीत लियाहूं सो यह बड़ा हास्य है ऐसा तुम बचन सुनो ३६ ऐसे जब श्रीकृष्ण भगवान् कह चुके तब बलदेव आदि अन्य सबयादव ३७ करके देनेवाला श्रीकृष्णहै ऐसे कहतेहुये हसने लगे और आपसमें हथेलियोंसे हथेली भिड़ाके ऊंचे स्वरसे हास्य करते भये ३८ और तिन्होंकी हथेलियों के शब्दसे और हास्य के शब्द से आकाश औरपृथ्वी पूरण होतीभई और वह जनार्दन विप्रमित्र को और अपनी आत्माको निंदा करताहुआ ३६ और आश्चर्यहै २ और कष्ट है २ जो मैंने दूत कर्म किया ऐसे लाजसे युक्त औरनीचे की तर्फ मुख वाला जनार्दनदूत चुपहोताभया॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांषडधिकत्रिंश तोऽध्यायः ३०६॥

तीनसौसातका अध्याय॥

बैशंपायन कहने लगे हासकरने वाले तिन्होंके पीछे शत्रुओंको जीतने वाला श्रीकृष्ण दूतसे कहने लगा कि जल्द गमनकर और

मेरेवचन से वर्णन भीजाकेकर १ अर्थात् हंस और डिम्भक कोकहदे कि शार्ङ्ग धनुष से छुटे पैने बाणोंसे २ और तलवार से जल्दही मैं तुम्हारा अर्थ करदेऊंगापीछे सूदर्शनचक्रसे तुम्हारेशिरको काटूंगा३ और जो महादेवने तुमको बरदानदियाहै अगरमहादेव भी तुम्हारी आके रक्षाकरेगा तबभी मैं महादेवको जीतकर तुमदोनोंको निश्चय मारूंगा ४ और जहांतुम्हारे संगमेरामिलाव होवे वहदेश बताना चाहिये तहांसेना और बाहनोंकोले मैं प्राप्तहोजाऊं ५ और तुमभी निर्भय होके अपनी सेनाको ले तिसी देशमें प्राप्त होजाओ अर्थात् पुष्करमें व प्रयागमें वमथुरामें जहांतुम प्राप्तहोगे ६ तहांमैंभी प्राप्त होजाऊंगा इसमें संशयनहीं और हेदूत जो मित्रभावसे तू कहनेको नहींसमर्थ होवेतो ७ यह सात्यकि तेरेसंग गमन करके तेरासाक्षी होके कहदेगा ८ और हे बिप्र दूत यहतो मैं जानताहूं कि तू मेरे विषेसव कालमें स्नेहकरताहै इसवास्ते तूइससंसार को जीतकर ९ सब काल में मेरीकथा में तत्पररहाकर १० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभकोपाख्यानेकृष्णवाक्येसप्ताधिकत्रिशतोऽध्यायः ३०७ ॥

तीनसौआठका अध्याय ॥

वैशंपायनकहनेलगे किऐसे ब्राह्मणको श्रीकृष्णकह फिर सात्यकि से कहनेलगे हेशैनेय इस ब्राह्मणके संग गमनकर मेरे बचनसेहंस और डिंभक के सन्मुख १ जो मैंने कहाहै वहसब बिस्तार से कह और जैसे मेरेसंगतिन दोनुओं कायुद्धहोजावेऐसी रीतिसेजाकेकह २ और हे यदूत्तम धनुषको ग्रहणकर कवच आदिको धारणकर और एकअश्वपै सवारहोके गमनकर और अन्यकी सहायता को ग्रहण मतकरे ३ ऐसेश्रीकृष्णके बचनको सुन और नमस्कारकर सात्यकि केसंगदूत तब सात्यकिने कहाकिठीकहै पीछेशीघ्र चलनेवले अश्व परचढ़ सहायता सेरहित सात्यकि गमनकी इच्छाकरता भया४पीछेदूतको विदाकर श्रीकृष्ण बोलेकि आश्चर्यहै हंसडिम्भकका अति

हठहै ५ शाल्वनगरकोगमन करताभया ६ पीछे तहांप्रवेशकरके वह धर्मात्मा दूत रूप ब्राह्मण सुंदर आसनको सात्यकि केअर्थदेके ७ आपभी स्थितहुआ पीछे सात्यकि को हंस और डिम्भक के अर्थ दिखाके कहनेलगा ८ कि श्रीकृष्ण की बायीं भुजा रूप यह सात्यकि दूत होके आयाहै तिस ब्राह्मणके बचन को सुन हंस कहने लगा ९ यह सात्यकि पहले भी सुनाथा परंतु अबमैंने देखाहै और धनुर्वेद वेद शास्त्रऔरशस्त्रइन्होंमें १० कुशल और शूर ऐसासात्य कि मैंने सुना अब मेरी दृष्टिके सन्मुख हुआ मेरेअर्थप्रीतिको उपजाता है ११ सो हे सात्यके श्रीकृष्ण और बलदेव मंगल से हैं और सब उग्रसेन आदि सात्वत बंशके पुरुष मंगलरूपहैं १२ तब ऐसेबचन को सुनके मंद मुसकानेवाला सात्यकि कहनेलगा किसबआनंदित हैं पीछे हंस जनार्दन ब्राह्मणसे कहनेलगा १३ कि तैंने कृष्णदेखा और हमारा कार्य सिद्धहुआ सो विस्तार पूर्वक कह वृथा कालको मत गमावे १४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्यानेहंसवाक्येअष्टाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३०८ ॥

तीनसौनवका अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे ऐसे हंसके बचनको सुनकेजनार्दन ब्राह्मण नारायणको स्तुति करताहुआ और हसताहुआ १ जनार्दन कहने लगा किहाथमें चक्र को औरशंखकोधारणकरनेवाले २ औरतप्तसोना करके भूषित अंगवाले और चंचल और प्रकाशित रूप रत्नोंकोधारण करनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण को मैं देखताभया और पुरातन यतियों करके सेव्यमान और मुनिगणों करके सेव्यमान बंदीजन और मागधों करके संस्तूयमान और मंदमुसकानकरकेसहित और मूंगा के समान ओष्ठको धारण करने वाले ३ और पुरातन कवी और देवताओं करके जाननेयोग्य और फूलेहुये कमलों से शोभित ऐसे श्रीकृष्णकोफिरमैं देखताभया ४ और अजन्मा और जगत्कागुरु और

वचन करके यादावों को प्रसन्न करनेवाला और पुरातन मुनिश्वरों करके निरूपित और प्रवृद्धरूप वेदोंके अर्थ का समुद्र ऐसेश्री कृष्ण को मैं वारंबार देखताभया ५ और जगत्के कल्याण कारी और जगत्में कल्याण के अर्थ बसने वाले ६ और कमल के समान नेत्रोंवाले और रुक्मिणी जीके संग बसतेहुये और समुद्रमें शयन करनेवाले और भक्तोंके प्रिय और भक्तजनोंके आश्रय और पापों को हरनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण को मैं फेर देखता भया ७ और यादवेश्वरोंके संग विहार में क्रीड़ा करनेवाले और यादव मुख्योंके संग रमतेहुये ऐसे श्रीकृष्णको ८ वारम्वार देखके और नेत्रों करके तिसके रूपको बारंबार निरखताहुआ ऐसामैं धन्यहुआहूं ९ और जगत् के आद्यप्रभु और विभु और सबसे बड़े और विभावसु आदि रूपोंवाले कृष्ण को देख मैं निर्वृत हुआहूं १० जगत्के स्वामी और छातीपै कौस्तुभमणि को धारण करनेवाले और सैंकड़ों चामरोंसे वीज्यमान ११ और तुम्हारे द्वेषसे संयुक्त चित्तकरके स्मरण करनेवाले विष्णु कहनेलगे किकहां हंस और डिम्भकवेदोनोंहैं १२ और कव मैं उन दोनों मंदोको देखूंगा और कैसे वे मेरे सन्मुख स्थित होंगे ऐसे ध्यान करतेहुये श्रीकृष्ण को देखताभया १३ और मेरे से कर मांगनेवाले हंसको मैं कब देखूंगा नारद और दुर्वासा ऋषिके अर्थ अनेक प्रकारके बचनों को कहनेवाले ऐसे श्रीकृष्ण को मैं देखताभया १४ औ ब्रह्मसूत्र पदरूप वाणीको मुनीश्वरों के अर्थ देनेवाले ऐसे श्रीकृष्णको वार बार देखके हेनृपोत्तममैं बारंबार चिंतवन करताभया १५ कि हंस और डिम्भसे यह श्रीकृष्ण असाध्य है इसवास्ते हे राजन् अबसे अगाड़ी इसकार्यका आरंभमत करो १६ जोतुम्होंनेकथा ग्रहणकरी वहनिवृत्तहोगई और बिस्तार पूर्वक सब ये सात्यकि तेरे अर्थ कहेगा १७ इस बचनको सुन के क्रुद्ध रूपहुआ हंस कहनेलगा १८ हंसकहताहै अरे ब्राह्मण के पुत्र यह तेरी किसतरह की बानीहै त्रिलोकी को जीतनेवाले हम दोनों के सन्मुख ऐसी वाणी कहनी उचितनहीं १९ और लीलाके बि-

धान को जाननेवाला श्रीकृष्णनेतू माया करके अमाया है तिसको देखके तेरेको अति भ्रमहुआ है २० और शंख चक्र गदा धनुषबन माला इन्होसे बिभूषित और वृष्णि बीरोंमें यशको प्राप्त करनेवाला २१ औरसूत मागधोंसे स्तुतिकिया और अद्भुत यशकी राशि करके लोकोंको प्रकाश करनेवाला २२ और चारभुजाओंके बलसे आक्रांत और वृष्णि और यादवों की सभामें अद्भुत ऐसे श्रीकृष्ण को देखके तेरेको भ्रम हुआहै २३ हे मंदात्मन् बिप्र अबभी वह श्रीकृष्ण तेरेको भ्रमाताहै जैसे इन्द्रजालविद्या २४ और हेविप्रयह तेरी चपलताहै तैंने मेरेसमान बर्तनानहींचाहिये २५ हे बिप्रमित्र भावसे तेरा बचन मैंनेसहाहै अन्यथा ऐसे बचनको कौनसहै २६ परंतु हे मंदमते मनोबांच्छित स्थानको चलाजा यहांमतठहरे २७ गोपालकेपुत्र श्रीकृष्णको और बहुतसे यादवोंको जीतके पीछे सब यादवोंको जीतूंगा यह मेरा प्रथमसंकल्पहै २८ और सदा मेरेसंग भोजनकरके शत्रुपक्षकी स्तुति करताहै इसवास्ते हे बिप्रतू यहांबसने योग्यनहींहै २९ और मैंनेकष्टमेंभी ब्राह्मणका बधकरनाउचित नहींहै इस वास्तेजल्द गमनकर ऐसे ब्राह्मणकोकहके फिर हंससात्यकिसे कहनेलगा ३० अरे यादव तू यहां किसवास्ते प्राप्तहुआहै और नंदके पुत्रनें क्याकहाहै क्यामेरेअर्थ करनहीं देताभया ३१ सात्यकि कहनेलगा हे हंसशंखचक्र गदापद्मको धारणकरनेवालेकायह बचनहै कि पैनेबाणोंकरके ३२ और पैनी तलवारकरके तेरेअर्थ कर दूंगा अर्थात्करदान रूपतेरे शिरको काटूंगा ३३ और हे नृपाधम तेरी मूर्खताहै कि जगत् केस्वामीसे तू करमांगताहै ३४ तिसकोघ हीकरहै कि तेरीजिह्वाका छेदन कियाजावेगा और हेमूढ़ तिस श्रीकृष्णने धनुषके शब्दको और शंखके शब्दको सुनके ३४ कौन शत्रु ठहरसकताहै और महादेवके बरकेगर्बसे ऐसे बचनको कौन कहसकेहै ३५ जोतैंने कहा और बलदेवजी आदिहम बहुतसे सहायकहैं अर्थात् प्रथम बलभद्र दूसरामैं सात्यकि ३६ और तीसरा कृतबर्मा और चौथानिशठऔर पांचमांबभ्रू औरछठा उत्कल ३७और

सातवां तारण और आठवांसारंग और नवां विप्रथू ३८ और दश वां उद्धव और ऐसेहम १०योद्धा श्रीकृष्ण के अर्थ सहाय करनेवाले अगाड़ीठहरनेवालेहैं ३६ महादेवकोयुद्धमेंस्थित होनेवाले औरमद और बलसे अन्वित श्रीकृष्ण बलदेव तुमको मारनेवालेहैं ४० और तुम्हारे अर्थ वरदानकर महादेवतौ पर्वतहीमें स्थित हैं और तुमदो नोंको युद्धमें ठहरना होवैगा ४१ साक्षात् ईश्वररूपश्रीकृष्णसे कौन करकी इच्छा करसकताहै इसवास्ते तुमदोनोंको त्रिलोकीको रक्षा करनेवाला ४२ श्रीकृष्ण शार्ङ्गधनुष से स्थितकिये बाणसे नासैगा और यहभी श्रीकृष्णने पूछाहै किहमारा तुम्हारे संग संग्राम किस देशमें होवैगा ४३ अर्थात् पुष्कर गोवर्द्धन पर्वत मथुरा प्रयाग इन क्षेत्रोंमें से एककोईसे मैंअपनीसेनाओंकोले स्थितहोजाओ ४४ और शंखचक्र धर और जगत् के पालक ऐसे श्रीकृष्णके स्थितहुये राज सूयरूप महा यज्ञको कौन करसक्ताहै ४५ और तिसकी कृपाबिना कौन कल्याण और सुखको प्राप्तहोसक्ताहै और यह तुम्हारा बड़ा मूढ़पना और जड़ पनाहै कि ऐसे अद्भुत बचन तुमनेकहा ४६ हे मूढ़जो इसी कर्त्तव्यकी इच्छा रखताहै तौ संसारमेंहास्यताकोप्राप्त होवैगा ऐसे कहके हसताहुआकी तरह सात्यकि स्थितरहा ४७॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभको पाख्यानेसात्यकिवाक्येनवाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३०६॥

तीनसौदसका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे कि ऐसे बचनको सुनकेक्रुद्धरूप औररोस करके व्याकुलित नेत्रोंवाले १ और अन्यराजाओं की तर्फ देख सब दिशाओं को दग्ध करनेवाले और हाथसे हाथको पीड़नकर और तिस बचनको स्मरणकरनेवाले २ और कहां नंदकापुत्रहै औरकहां बलदेवहै ऐसे कहनेवाले हंस और डिंभकसात्यकिसे कहनेलगे ३ अरे मूढ़ हमारे सन्मुखतूक्या बोलताहै हेमंदात्मन् यहांसेनिकसजा तू दूतहै ४ वरनेमाराजाता ऐसे बचनकहने से प्रतीत होताहै कितू

निर्लज्जभीहै ५ और हमोंने सब जगत् जीतलिया ऐसा कौन मनुष्य है मनुष्यलोकमें जिसनेहमोंको करनदिया ६ इसवास्ते सब गोपालोंको मारके और यादवोंको बांधके करकोग्रहणकरेंगे और हेनराधम तू चलाजा ७ दूतताको प्राप्तहुआ तूअवध्यहै और हमारेअर्थ वरका और अस्त्रोंको देनेवाला महादेवहै ८ और युद्ध करनेके वक्त दो महादेवकेगण हमारी रक्षाकरतेहैं और युद्धमें गोपालोंकोमारके पितरोंकेअर्थ यज्ञकरेंगे ९ और जो तैंने कायररूप सबयोद्धा गिनायेहैं युद्धमेंतिन्होंको और सेनाकोमारके पीछे श्रीकृष्णकोजीतेंगे १० और बाण और धनुषोंको धारण करनेवाली और प्राश मूसल कवच ११ रथ गदापरिघ और अनेकप्रकारकेसाधन १२ छत्र ध्वजाघंटा शस्त्र कुटीतोमर १३ इन्होंको धारण करनेवाली सेना तैयारकरो और सेनाके पतियोंकोभी चारोंतर्फ युक्तकरो और तूअवध्यरूपहुआ अबगमनकर १४ औरकहलि यापरसोंपुष्करमें हमारा संग्राम होवैगा तहां श्रीकृष्ण बलदेव आदिजो तैंने योद्धे गिनायेहैं तिन्होंमें और मेरेमेंजो बलहै तिसको हम जानलेंगे १५ सात्यकि कहनेलगा हे राजाओ कलिह यापरसों तुम्हारेको मारनेके अर्थ मैं अब गमन करताहूं और जो मैंदूतभावको नहींप्राप्तहोता तौअभी मेरेसे तुमदोनोंबध्यरूपथे १६ इस वास्ते दूतपनेका होनाहीं मैंने दुःखरूप प्रतीत होताहै १७ अन्य तुम दोनोंको मारके अभीनिवृतीको प्राप्तहोजाता १८ और शंखचक्र गदाकोहाथमें धारण करनेवाला १९ और शार्ङ्ग धनुषवाला और मुकुटको धारण करनेवाला और नीलकुंचित केशोंसे आढ्य और लंबेबाहुओंवाला और लक्ष्मी से परिस्थित २० और सबलोकका उत्पत्ति स्थान और विश्वरूप और सुंदररूप वाला दैत्य और दानओंको मारनेवाला और योगियोंको ध्यान करनेकेयोग्य और पुरातन २१ और कमलकी केशरके समान मुखवाला और श्यामल सत्य पराक्रमवाला और सृष्टिस्थितिप्रलय इन्होंकाकर्त्ता और तीनों लोकोंकापति २२ ऐसा श्रीकृष्ण पैंने शर करके युद्धमें तुम्हारे गर्वको दूर करेगा ऐसे

कहकर घोड़ा पै सवारहोके सात्यकि गमन करताभया २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिंभको पाख्यानेसात्यकिप्रतिप्रयाणेदशाधिकत्रिशततोध्यायः ३१० ॥

तीनसौग्यारहका अध्याय ॥

वैशंपायनजीकहनेलगे किसात्यकिद्वारकामें प्रवेशकर हंसडिम्भ कोंकेसंग जोवृत्तांतवीतासोश्रीकृष्णकेअर्थ कहताभया१ पीछेप्रभात में मंगलकर्मको करनेवालाश्रीकृष्णसेनाकेस्वामियोंने कहनेलगा२ कि रथ हाथीघोड़ा इन्होंवाला और अनेकभेरीनक्कारेप्राश तलवार परिघ ३ ध्वजा पताका अलंकार परिच्छद इन्होंसे युक्त सेनाकोसा वधानकरो तब श्रीकृष्णकेवचनकोसुन ऐसेही करतेभये४ और हल को धारणकरनेवाला और नीलेबस्त्रोंवाला और बनकीमालाओंको धारणकरनेवाला औरश्वेतकांतिवाला औरचंद्रमाकेसमान चमकता हुआ ऐसाबलदेव सेनाकेअग्रभागमेंचलनेलगा५ औरशस्त्रोंको ग्रह णकरनेवा औरक्रोधसेसंयुक्त और महाबली ऐसा सात्यकिभी अग्र- भागमें चलने लगा ६ और अपनेअपने शस्त्रोंकोग्रहण करनेवाले और सिंहके समान शब्दको करनेवाले और शूरबीर ऐसे यादव भी गमन करनेलगे ७और दृढ़ धनुषों को धारणकर और रथ में स्थितहो और कवच आदिसे दंशितहुये सेनाके स्वामीभी अगाडी अगाडी गमन करनेलगे ८ पीछे शार्ङ्ग धनुष को धारण करने वाला ९ और हाथमें चक्रको लेनेवाला और गदा शूल शरतल- वार इन्होंको लेनेवाला और कवचआदिकोपहननेवाला पीले और बस्त्रों वाला १० और कमलोंकी मालाको पहनने वालाऔरनीला बद्दलके समान कांतिवाला और दारुककरिकै सन्नद्ध किये रथमें स्थित और आनन्दितरूप ब्राह्मणों से स्तूयमान ११ और सूत मागध पौंड्र इन्होंसे गीयमान ऐसा श्रीकृष्ण संपूर्ण सेनाको प्राप्तहो उत्तर दिशाको चलनेलगा १२ तब मुखमें पांचजन्य शंख को स्थापितकर ज़ोरसे बजाताभया तब शत्रुओंको भयका देने

वाला शब्द हुआ १३ तब वह शब्द पृथ्वी और आकाश में पूरित होगया १४ पीछे अन्यभी अपनेअपनेशंखको बजानेलगे पीछे भेरी नक्कारे मृदंग येभी बजानेलगे१५तब जैसे वर्षा कालमें बद्दलगर्जताहै तिसकी तरह शब्द होनेलगा पीछे सब यादव पवित्र रूप पुष्कर तीर्थपै आके १६ तीर्थके तीरपै निवेशकर अपनी अपनी तमोटी और तंबुओंमें प्रवेश करतेभये १७ और श्रीकृष्णभी सुन्दर पुष्करतीर्थ को देखके तहां स्नानकर और मुनियोंको प्रणाम कर १८ और हंसडिम्भक के आगमन कोदेखता हुआ और चारों तरफ ब्राह्मणोंके १९ वेदध्वनिको सुनताहुआ और ऐसा श्रीकृष्ण तीरपै सुखपूर्बक स्थित हुआ २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्यानेश्रीकृष्णस्य पुष्करप्रवेशेएकादशाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३११ ॥

तीनसौबारहका अध्याय ॥

बैशंपायन कहने लगे पीछे दशक्षौहिणी सेनाको लेनेवाले और धनुषको धारण करनेवाले १ रथमें स्थित और सबोंसे अग्रभागमें चलनेवाले और पृथ्वीको भस्मसे परिवेष्टित करनेवाले २ और त्रिपुंड्र तिलकको मस्तकमें लगानेवाले और रुद्राक्ष की मालासे परिशोभित और लोकका संहार करनेवाले और मानो दो महादेव आतेहै ३ ऐसे दोनों हंस और डिंभक पुष्करमें प्राप्तभये ४ और हे महाराज तिन दोनोंका मित्र और पर्वतके समान ५ और जिस के सन्मुख इन्द्रभी नहींस्थित होसके ऐसा और जो देवासुर युद्धमें ६ देवताओंको मारके देवेंद्रको जीतताभया ऐसा और जिसने विष्णु के संग पहिले युद्धकिया ७ ऐसा और जो द्वारकामें प्राप्त होके यादवोंको दुःखित करताभया ऐसा विचक्र दैत्य तब युद्धको सुनके ८ अनगणित शस्त्रोंको धारणकरने वाले बहुतसे दैत्योंकी सेनाकोले श्रीकृष्णके द्वेषसे ९ हंस और डिम्भकको सहायकरनेके अर्थ उद्यतहुआ और विचक्र दैत्यका मंत्री हिडिम्बराक्षसेश्वर १०

शिलाशूल तलवार इन्हों को धारणकरने वाले बहुतसे राक्षसोंको लेके विचक्र दैत्यकी रक्षाके अर्थ प्राप्तहुआ ११ तहां शिला और परिघोंको हाथमें धारणकरनेवाले राक्षस अट्ठासी हजारथे १२ तब ऐसी अनेक प्रकारकी सेना पुष्करमें प्राप्तभई १३ और तिस युद्ध में शापके भयसे भीतहुआ जरासन्ध हंसडिम्भककी सहायतानहीं करताभया १४ और सिंहके समान शब्दों को करनेवाले और आपसमें कहनेवाले और मैंहींपहले श्रीकृष्णके संग युद्धकरूंगा१५ ऐसे कहतेहुए बहुतसे राजे पवित्र रूप १६ और मुनियों से जुष्ठ और तपवाले ऋषियों से सेवित और लोकों में अतिमंगलरूप १७ ऐसे पुष्करमें प्राप्तभये और हे राजन् पुष्करतीर्थ और श्रीकृष्ण थे दोनों दर्शनसे और स्पर्शनसे पापको काटनेवाले स्थितहैं १८ और विष्टरश्रवा नामवाले हरिको देखकर और पवित्ररूप पुष्करको देख १९ राजे कहनेलगे कि हेहंस तेरे पापोंका नाश हो चुका २० पीछे तहां अनेक प्रकारकी सेनाको प्राप्तकर अनेक प्रकारके नकारेआदि बजातेगये २१ और युद्धके अर्थ उपस्थितहुये श्रीकृष्ण को देखते भये २२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्याने पुष्करगमनेद्वादशाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३१२ ॥

तीनसौतेरहका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे हे राजन् ऐसे सब सामग्रियों से संयुक्त दोनों सेना आपसमें युद्ध करनेलगी १ तब धनुषों से छोड़ेहुये बाण योद्धाओंके शरीरोंका भेदनकर दूरपड़नेलगे २ और योद्धाओं के बाहुओंसे मुक्तहुई तलवार छातीको काटके टूटनेलगी ३ और योद्धा ओंके बाहुओंसे प्रेरित किये परिघ योद्धाओंके शिरोंको काटके ४ पीछेतिलोंकेसमान टुकड़ेकरनेलगे और आपसमें मारनेकीआकांक्षा वाले ५ दैत्य और राक्षस और राजेशब्द करके युद्ध करनेलगे ६ तब हाथियोंसे हाथी औरघोड़ोंसेघोड़े और रथोंसेरथ और सादियों

से सादि ७ और पट्टिश तलवार बाण भाला शक्तिपरिघ प्राशफर-
सा ८ भिंदिपाल इन्होंकरके आपसमें राक्षसदैत्य और क्षत्रिय चारों
तर्फसे मारते भये ९ और मदवाले हाथीके समान पराक्रमवाले
राक्षस और दैत्य सर्पोंके समान बाणोंसे भेदन करनेलगे १० और
आपसमें जहांतहां भागते हुये शब्द करनेलगे ११ और हे राजन्
कितनेकतलवारोंसे कटेहुये पृथ्वीमें पड़तेभये और कितनेकगदाओं
सेमथित मस्तकोंवाले पृथ्वीमें पड़तेभये १२ और कितनेकपट्टिशऔर
परिघोंसे भग्नरूप ग्रीवावाले धर्मराजके लोकमें प्राप्तभये औरकित
नेक स्वर्गको प्राप्तभये १३ और कितनेक अपने शरीरको देखतेहुये
अप्सराओंकेसंगस्थितहुये और कितनेकअपने औरपरायोंकोमारके
भ्रांतोंकीतरह होतेभये १४ पीछे इसीअंतरमें हेराजन् हजारहांशंख
और हजारहांभेरी और हजारहांमृदंगबजनेलगे १५ औरमध्यान्हमें
सूर्य दग्ध करनेलगा तबबिकृतरूप पिशाच १६ और महाघोररूप
राक्षस प्रसन्नहुये लोहूका पानकरनेलगे १७ औरकितनेक हाथोंमें
तलवार लेनेवाले कबंध उठतेभये १८ और तबमुर्दोंको बाज गीध
बगुला कंक इन आदिपक्षियों को खेंचखेंचके तहांतहां भक्षण करने
लगे १९ और हेराजन् तिससमयमें सत्तासीहजारतो हाथी मरगये
और चालीसहजार घोड़ेमारेगये २० और एकलाख रथियोंके संग
रथोंकानाशहुआ और तीसकिरोड़पियादेमारेगये २१ और कितनेक
निहत हुये पुष्करमें प्रवेश करतेभये २२ और कितनेक पृथ्वीमें
प्राप्तहो हताहता ऐसे कहतेभये और कितनेक खुलेचोटियोंवाले
रथकोत्यागके पड़तेभये २३ ऐसे पुष्कर तीर्थपै अद्भुत महायुद्ध
हुआ २४ जैसे पहले देवते और दैत्योंका हुआथा २५ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भको
पाख्यानेसंकुलयुद्धं त्रयोदशाधिकत्रिशतोऽध्यायः ३१३ ॥

तीनसौचौदाका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे किइसी अंतरमें हे राजन् द्वंद्वयुद्ध प्रवृत्तहुआ

अर्थात् श्रीकृष्ण बिचक्र दैत्यके संग युद्ध करनेलगा १ और हंसके संगबलभद्र और डिंभकेसंगसात्यकि और बसुदेव और उग्रसेनइन दोनोंकेसंग हैडम्भराक्षस २ और शेषरहे शेषोंकेसंग द्वंद्वयुद्ध करने लगेतब श्रीकृष्ण तिहत्तरबाणोंसे दैत्यकीछातीको बींधताभया ३ तब दैत्यभी इन्द्रके देखतेहुये अपने धनुषको कानोंतक खैंचके दृढ़रूप एक पैनें बाणसे ४ श्रीकृष्णके दोनोंस्तनोंके मध्यमें बींधताभया ५ और तिस बाणकरके छातीदेशमें बिद्धहुये श्रीकृष्ण लोहूको थूकते भये जैसे आदि कालमें प्रजा ६ पीछे क्रुद्धरूपहुये श्रीकृष्ण क्षुरप्र शस्त्रकरके दैत्यकी ध्वजाको और तीनबाणों करके चारोंघोड़े और सारथीकोमारके ७ शंखको बजातेभये पीछे क्रोधसे मूर्छितहुआ दैत्य रथसेकूद ८ और महाघोर रूप गदाको ग्रहणकर श्रीकृष्णके मुकुट पै मारताभया ९ और फिर श्रीकृष्ण के मस्तकपै मारके सिंहकी तरह शब्द करनेलगा पीछेदैत्य बड़ी शिलाको ग्रहणकर १० और सौगुणाभ्रमाके श्रीकृष्णकी छातीपै फेंकनेलगा तबआवतीहुईशिला कोदेख और हाथसे ग्रहणकर ११ दैत्यको मारताभया तब पृथ्वी में श्वास लेताहुआ और मराकीतरह होके दैत्य गिरपड़ा १२ पीछे फिरसंज्ञाको प्राप्तहो क्रोधसे दैत्यदुगुना प्रकाशित होके घोररूप परिघको ग्रहणकर श्रीकृष्णसे कहनेलगा १३ कि हे गोबिंद तेरे गर्बकोइस करके काटताहूं तबमेरे बिक्रमको तूजानेगा १४ जोदेवा सुरयुद्धमेंथे वहीदोनोंमेरे भुजाहैं और वहीमैंहूं तथापि हे बीरतूमेरी गैल युद्धकरैहै १५ सो हे महाबाहो मेरीबाहुसे निकसा इस परि- घका निवारणकर ऐसे श्रीकृष्णसे कहके परिघको छोड़ताभया १६ तब सबलोकके देखतेहुये तिसपरिघको अपनी बाहुसेग्रहणकर १७ पैने तलवारसे परिघके टुकड़े बनाताभया और कहने लगा कि मैं देखा १८ तबक्रुद्धरूपदैत्यशतशाखावाला और महाशिखाओंवाला ऐसे वृक्षको उखाड़ १९ तिस करके श्रीकृष्णको पीड़ित करनेलगा तब श्रीकृष्ण अपनी तलवारसे तिसवृक्षके भी टुकड़े करते भये २० ऐसे बहुतकाल तिस दैत्यकेसंग क्रीड़ाकरके फिर श्रीकृष्ण दैत्यको

मारनेकी इच्छाकरताभया २१ सोपैनेबाणको ग्रहणकर और आ-ग्नेय अस्त्रसे संयुक्तकर तिसकरके दैत्यकोमारताभया तब वहशर दैत्य को दग्ध करके सब लोकों के देखतेहुये २२ श्रीकृष्ण के हाथ में प्राप्तहुआ तब मरने से बचेहुये दैत्य दशोंदिशाओं को भागने लगे २३ सो हे जनमेजय समुद्र में गमन करतेहुये अब तक भी निवृत्त नहीं होते हैं २४ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्यानेविचिक्रबधेचतुर्दशाधिकत्रिंशतोऽध्यायः ३१४ ॥

तीनसौपंद्रहका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे बाणोंके धारण करनेवालोंमें श्रेष्ठधर्मात्मा बलदेव भी धनुषको ग्रहणकर दशबाणों से हंसको बींधताभया १ तब हंसभी पांचबाणों करके बलदेवको बींधताभया फिर दशबाणों करके हंसके दोनोंस्तनोंके मध्यमें भेदनकर २ फिरएक बाणसेहंस के मस्तकको बींधताभया तब बहुतकालतक हंसमूच्छित होगया ३ पीछे संज्ञाको प्राप्तहो हंस एक बाणको ग्रहणकर तिससे बलदेव कोबींध ४ देवताओंको आश्चर्य दिखाताहुआ सिंहकी तरहशब्द करनेलगा तब तिसबाणकरके बिद्धहुआ बलदेव ५ अत्यंतलोहूको थूकताहुआ युद्धमें श्वास लेनेलगा पीछेलोहूसे आविष्ट शरीरवाला बलदेव ६ सातहजार बाणोंकरके हंसके समान गमन करनेवाले हंसको बिदारण करनेलगा ७ तब रथमें ध्वजामें धनुषमें छत्रमें तर्कसमें बाण लगतेहुये ८ और हंसको दुःखित करतेभये तबवीर्य मदसे अन्वितहंस९एक बाणसे बलदेवको बींधके और दूसरेबाण से बलदेवके रथकी ध्वजाकोतोड़ और चारबाणसे बलदेवके चारों घोड़ोंको बींध फिर एक बाणसे बलदेव के रथकेसारथीको मारता भया १० तब क्रुद्धहुआ बलदेव गदाकोग्रहणकर शेषनागकीतरह फुंकार मारके ११ हंसकोएक गदाकीचोटदेके पीछेहंसके ध्वजारथ चक्र ईषा सूतइन्होंके टुकड़ेबनायके बारम्बार शब्दकरके १२ फिर

गदासे हंसको मारनेलगा तब हंसभी रथसे कूद गदाकोग्रहण कर ताभया १३ तब लोकमें प्रथिततेजवाले और महारथी१४औरअति अद्भुत और बिक्रांत और आपसमें मारनेकी इच्छावाले और संचित श्रमवाले और युद्धमें सिंहकेसमान गमन करनेवाले १५ और देवासुर युद्धमें इन्द्र औरवृत्रासुरकी तरह युद्धकरनेवाले और लोहू करके भीजेहुये १६ अंगोंवाले औरयुद्धमें परस्पर बलकरके अत्यंत खेदित ऐसे हंस और बलदेव आपसमें युद्ध करनेलगे पीछे दक्षिण मंडल को बलदेव प्राप्तहुआ १७ और बामे मंडल को आपही हंस प्राप्तहुआ तब हाथीके समान पराक्रमवाले १८ दोनोंगदाओं करके मरणकेअर्थ पीड़ितहोनेलगे ऐसे सब देवताओंके देखतेहुये देवासुर युद्धके समान संग्राम प्रवृत्तहुआ १६ सब देवते और मुनि आश्चर्य को प्राप्तहुये २० और आश्चर्य के बशसे देवतेगंधर्व किन्नर कहनेलगे कि ऐसा युद्धनकभीदेखा और नकभी पहलेसुना २१तबदोनों अपने २ मंडलों के अनुसार गोड़ों को नवाय गदासे युद्ध करतेभये २२ अर्थात् सब देवताओंके देखतेहुये अति पराक्रम हुआ २३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभबिष्यपर्वभाषायां हंसडिंभकोपाख्यानेहंस बलदेवयोर्युद्धं पंचदशाधिकत्रिंशततोऽध्यायः ३१५॥

तीनसौसोलहका अध्याय ॥

वैशंपायनकहनेलगेपीछेअति बलवाले और क्षत्रियोंमें बिख्यात १ और युद्धमें अति पराक्रम करनेवाले और निरंतर वृद्धोंको सेवनेवाले ऐसे डिम्भक और सात्यकि आपसमें युद्धकरनेलगे २ तब सात्यकि दशबाणोंसे स्तनके मध्यमें और छाती में डिम्भकको बींधताभया ३ तब युद्ध में गर्बित डिम्भक पांच हजार बाणों से सात्यकि को बींधनेलगा ४ तब तिसी अंतर में सात्यकि तिनबाणों को काट सातबाणों से डिंभकको बींधताभया पीछे डिंभक लाख बाणों से सात्यकि को बींधनेलगा ५ तब तीक्ष्ण छुरे से डिंभक के धनुष को सात्यकि मध्यसे तोडताभया ६ और हे राजन् डिंभक

भो रौद्र रूप क्षुर प्रशस्त्र से सात्यकि को बींधनेलगा ७ तब बहुत से लोहू को झिराता हुआ सात्यकि केसू के वृक्ष की तरह शोभित हुआ तब ८ फिर सात्यकि ने डिंभक का धनुष मध्य से तोड़ दिया फिर डिंभक अन्यधनुषको लेके ९ सब क्षत्रियोंके देखतेहुये बाणों को वर्षाकर ने लगा तबफिर पैनेबाणसे सात्यकिने डिंभकका धनुष तोड़दिया १० तबफिर डिंभकने अन्य धनुषलिया ११ ऐसे डिंभक के एकहजारधनुष सात्यकिनेतोड़े १२ तब सात्यकि सब क्षत्रियों के देखते शब्दकरनेलगा पीछेदोनों धनुषोंको त्यागके १३ उग्ररूप तलवारोंको ग्रहणकर युद्धमेंस्थितहुये१४ और हेराजन् दौश्शासनि सोमदत्त अभिमन्युनकुल सात्यकि डिंभकये१५ खड्गयुद्धकोजान नेवालों मेंश्रेष्ठ कहेहैं १६ इसवास्ते डिंभक और सात्यकि भ्रांत उद्भ्रांत बिद्धप्रबिद्धबहुनिःसृत १७ आकर बिकरभिन्ननिर्मर्याद अ-मानुष संकोचित कुलचितजानु बिजानु १८ आहित चित्रक क्षिप्त कुद्रव लवण धृत सर्वबाहुबिनिर्बाहु सव्येतरउत्तर १९ त्रिबाहुतुंग बाहुसव्योन्नत उदासी पृष्ठगतप्रथित यौधिक प्रथित२० ऐसे बत्ती-सप्रकार खड्गयुद्धमें कहेहैं तिन्होंको बारंबार करतेहुये दोनों परि श्रमकोनहीं प्राप्तभये२१ तब देवते गंधर्व सिद्ध महर्षिदोनोंकी२२ स्तुति करनेलगे आश्चर्यहै किइनदोनों बलवानोंकेयुद्धमें २३ और खड्गयुद्धमेंदोनों समर्थहैं तिन्होंमें डिंभक महादेवका शिष्यहै और सात्यकि द्रोणाचार्य काशिष्यहै २४ और अर्जुन सात्यकि श्री-कृष्णयेतीन युद्धमें बिख्यातहैं २५ और डिंभक स्वामिकार्तिकऔर महादेवयेभी तीनों बिख्यातहैं २६ ऐसे देवगन्धर्व सिद्ध यक्ष सर्प आकाशमें स्थितहुये कहनेलगे २७ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायां हंसडिंभकोपाख्यानेसात्यकिडिंभकयोर्युद्धं षोड़षोढशाधिकत्रिंशतोऽध्यायः ३१६ ॥

तीनसौसत्रहका अध्याय॥

बैशंपायनकहनेलगे कियुद्धमें कुशल और जराकरके जरित सब

अंगोंवाले और पलितरूप अंग और शिर को धारण करनेवाले १ ज्ञान और बिज्ञानमें संपन्न और राज मार्गमें विशारद ऐसे बसुदेव और उग्रसेन हैडंबराक्षस केसंग युद्धकरनेलगे २ तब कैहजारबाणों से हैडंबको बींधते भये ३ और हैडंबराक्षस सब मनुष्यों को खा-ताहुआ और अति प्रवृद्ध और दुष्टात्मा और लंबे बाहुओं वाला और बड़ाठोढ़ीवाला ४ और लंबेउदर वाला और विरूपाक्ष और पिंगरूप केशोंवाला और बड़े नेत्रोंवाला और सिकरा केसमान नासिकावाला और महारौद्र और ऊर्ध्वगत रोमोंवाला और महाभु जाओंवाला५ औरपर्वतके आकार गात्रोंवाला और दीर्घदंष्ट्रावाला और शिवाकेसमान मुखवाला और दीर्घरूपदांतोंवाला और हाथी केसमान ग्रासकरनेवाला६ और बड़ीछातीवालाऔरदीर्घग्रीवा वाला और हाथीके समान उपमावाला ऐसा हैडंबहो के मांसको खाता हुआ और लोहूके समूहको पीताहुआ ७ और हाथियोंको हाथियों से और घोड़ोंको घोड़ोंसे और रथोंको रथोंसे और पियादोंको पिया दोंसे भिड़ाताहुआ ८ अपने अगाड़ी मनुष्योंको देखकितनेक याद-वोंको मारके अपनीनासिकामें चढ़ाताभया और कितनेक यादवों को खाताभया९ अर्थात् जिन्होंको अपने सन्मुख देखे उन्होंको मार डाले और अन्ययादवरूपपियादोंको फेंकनेलगा१० जैसे अंतकाल में क्रुद्धहुआ महादेव प्राणियोंको तब एकक्षणमें बहुतसे यादवोंको खाता भया ११ तबकितनेक भयकोमान वृष्णिदिशाओं को भागते भये और कितने कतिसराक्षसने भक्षण करलिये १२ जैसे कुंभ कर्णने बानरों की सेना तब शेषरही वृष्णियों की सेना चित्रवस्त्र पैस्थितकी तरह रही १३ पीछे इसी अंतर में क्रोध को प्राप्त हुये वसु देवऔर उग्रसेन धनुषोंको धारण कर राक्ष सकेसन्मुख स्थित हुये १४ जैसे क्रुद्धरूप सिंह के सन्मुख क्रुद्धहुये दो मेंढ़े पीछे इन दोनों को देख मुखको फाड़राक्षस भागने लगा १५ तब उग्रसेन और वसुदेव शरों करके राक्षस को बींधने लगे औरजिस जिसतरफ के मनुष्यों को खाताहुआ राक्षस बिचरनेलगा १६ तहां

तहां दोनों यदुबीर बाणों से बींधतेभये १७ पीछे वह राक्षस बाहुओं को पसारके दोनों केधनुषोंको ग्रसके युद्धमें तोड़ताभया १८ और वृद्धों को सेवनेवाला और पृथ्वीको पालनेवाला ऐसे वसुदेव कोग्रहण करनेके अर्थ राक्षस यत्नकरनेलगा १९ हिडिंब कहने लगा हे वसुदेव हे नृपाधम तुम दोनोंको मैं भक्षण करूंगा और हे-उग्रसेन तू किसवास्ते मेरे सन्मुख स्थित है २० यहां आके मेरे मुखमें प्रवेशकरो तुम दोनोंमेरे ग्रासरूपहो और तुमको ब्रह्मा नेमेरे अर्थ रचाहै २१ और बुभुक्षित और श्रमसे पीड़ित और युद्धमेंत्वरित बिक्रम वाला ऐसा जो मैंहूं सोमेरे मुखसे तुम गमन नहीं करोगे अर्थात् बेगसे मेरे मुखमें प्रवेशकरो २२ और तुम दोनोंके लोहूका पानकर मैं तृप्तिको प्राप्तहोऊंगा फिरतुमदोनोंके मांसको सुखपूर्वक खाऊंगा २३ ऐसे कहता हुआ और क्रुद्ध और फाड़े हुये मुखवाला और बड़ी ठोढ़ी वाला ऐसेहि डिंब राक्षस भागने लगा २४ तब भयभीत हुये बसुदेव और उग्रसेन चारों तरफ़कोदेख शस्त्रों सेर हित हुये दिशाओंमें भागने लगे २५ तब इसी अन्तर मेंबसुदेवऔर उग्रसेनको भागतेहुये देख प्रतापवाला बलदेवयुद्ध करतेहुये २६ हंसको श्रीकृष्ण के अर्थसौंप राक्षसके समीप में प्राप्तहो २७ कहने लगा किहे राक्षस साहस मतकरे इनदोनोंको छोड़ मैं स्थित हुआ हूं औरशत्रुको जीतने वाले मेरे से तू युद्ध कर २८ और मैं तेरे को मारूंगा यह तू क्या डराता है ऐसे कहते हुये बलदेवको देख राक्षस तिन दोनोंको छोड़ २९ बलदेवके सन्मुख पहिले की तरह मुखको फाड़भागा तबराक्षस के सन्मुख स्थित हुआ ३० बलदेव धनुष और बाणको त्याग के बाहुको स्फोटन करता हुआ मुष्टीको ग्रहण करनेलगा ३१ तब दुष्टात्मा हिडिंब मुष्टी करके बलदेव की छातीमें मारता भया ३२ पीछे मुष्टीसे ताड़ितहुआ और युद्ध रूप ऐसाबलदेव मुकासे राक्षसको मारनेलगा ३३ तबदोनोंका आपसमें मुष्टियुद्ध प्रवृत्तहुआ ३४ तब चटचटा शब्द प्रकट होता भया पीछेहिडिंब मुकासे बलदेवकी छातीमें मारताभया ३५ जैसे

इन्द्रपीछे बलवाला बलदेव ३६ मुक्कासे हिडिंबकी छातीमें मारनेलगा पीछे दोनोंहाथोंकी धुआथड़से राक्षसके मुखपैमार नेलगा ३७ तब प्राणोंसे रहित कीतरह राक्षस पृथ्वीमेंपड़ा ३८ तबबलदेव दोनोंहाथोंसे राक्षसको ग्रहणकर बाहुके बेगसे भ्रमाके ३९ सबलोकोंके देखतेहुये चारकोसपै फेंकताभया तब वह राक्षस मृत्युको प्राप्तभया ४० और तिसयुद्धमें शेषरहे राक्षस बलदेवजीके भयसे दशोंदिशाओंमें भागतेभये ४१ पीछे सूर्य नारायण अपने तेजोंको ग्रहणकर जब सूर्य अस्तहोनेलगा ४२ तब चंद्रमा उदय हुआ और संध्याका अंधेरा नष्टहोनेलगा ४३ और सब योद्धा कह नेलगे कि प्रभातकाल में किन्नरके गीतोंसेनादित रूपगोबर्द्धनके समीपमें युद्ध होनाचाहिये ऐसे कहतेहुये सबराजे युद्ध को शांत करतेभये ४४॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्यानेहिडिंबबधे सप्तदशाधिकत्रिशतोध्यायः ३१७॥

तीनसौअठारहका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे किहेराजन् हंस और डिम्भक येदोनोंरात्रि मेंगोबर्द्धन पर्वतको जातेभये १ पीछेप्रभातमेंजब सूर्य उदयहोगया तब श्रीकृष्ण २ सात्यकि बलदेव सारण आदि यादव गंधर्व और अप्सराओंसे नादित रूप गोवर्द्धन पर्वत केसमीपमें प्राप्तहुये ३ पीछे यमुना केसमीपमें युद्धप्रवृत्तहुआ ४ तब हंस और डिम्भक को उग्रसेनराजा तिहत्तरि बाणोंसे बींधता भया ५ और बसुदेव सात बाणोंसे बींधताभया और सारण पच्चीस बाणोंसे बींधताभया और कंकदशबाणोंबींधताभया ६ और निशठतिहत्तरिबाणोंसेबींधताभया और सात्यकि सातबाणोंसेबींधताभया और बिप्रथु अस्सीबाणोंसे बींधताभया और उद्धवदश बाणोंसे बींधताभया ७ और प्रद्युम्नतीस बाणोंसेऔर सांब सातबाणोंसे और अनाधृति इकसठिबाणोंसे हंस औरडिम्भकको बींधतेभये ८ ऐसे सब यादवमिलके घोररूप युद्धको

करतेभये ९ पीछे हंस और डिंभक ये भी दोनों सब यादवों को १० दश दश बाणोंसे बींधतेभये ११ तब पीड़ितहुये सब यादव लोहू को झिरातेहुये दीखनेलगे १२ जैसे वैशाख के महीने में फूलेहुये केसू के वृक्ष तब भयभीत हुये यादव भागनेको तैयारहुये १३ तिसी कालमें श्रीकृष्ण और बलदेव युद्ध करनेलगे १४ जैसे स्वामिकार्तिक और इन्द्र आकाशमें तबदेवतेगंधर्वसिद्ध यक्ष महर्षि १५ ये सब विमानों में बैठेहुये इस युद्ध को देखतेभये १६ पीछे महादेवके भेजेहुये दोदूत हंस डिंभक की रक्षाके वास्ते प्रकटभये १७ पीछे हंसके संग श्रीकृष्ण का और डिंभक के संग बलदेव का युद्ध होनेलगा १८ तब सब योद्धा अपने अपने रथमें स्थितहुये शंख बजानेलगे १९ पीछे श्रीकृष्ण पांचजन्य शंखको बजानेलगे २० पीछे महाघोर और लंबे उदर और शरीर वाले २१ दोनों महादेव के दूत शूल को ग्रहणकर श्रीकृष्ण को मारनेके अर्थ भागे २२ और शूलसे श्रीकृष्णको पीड़ित करनेलगे तब श्रीकृष्ण रथसेउतर २३ दोनों दूतों को पकड़ सौगुणा भ्रमाके कैलास का उद्देश कर फेंकताभया २४ तब दोनों फेंकेहुये कैलास पर्वत के शृंगमें जाके पड़े तब बड़े आश्चर्य को प्राप्तहुये २५ पीछे रोषसेलाल नेत्रोंवाला हंस सब देवताओं के देखतेहुये श्रीकृष्णसे कहनेलगा २६ कि हे केशव राजसूय यज्ञमें किसवास्ते विघ्न करता है २७ मेरागुरु ब्रह्मदत्तराजा यज्ञ करेगा तिसके अर्थ तू जो प्राणोंकोइच्छा करै है तो करदे २८ अथवा तू क्षणभर स्थित हो तू बहुतसे करको देगा २९ और मैं सब राजाओंका ईश्वरहूं जैसे देवताओंका महादेव इसवास्ते युद्धमें तेरे वीर्य के विभवको नाशूंगा ३० ऐसेकहके हंस ताड़वृक्ष के समान लंबे धनुषको खैंच और जोरसे तिसपै बाणचढ़ा ३१ श्रीकृष्ण के मस्तकपै मारताभया ३२ तब वह बाण ललामकी तरह हुआ तब श्रीकृष्ण सात्यकि से कहनेलगा ३३ कि हे मित्र तू मेरे रथ को हांक और दारुकको पृष्ठमें बैठा ३४ पीछे श्रीकृष्ण अपने बाणमें आग्नेय अस्त्र को युक्तकर कहनेलगा ३५

...वाणकरके तेरे को दग्ध करूंगा जो तू समर्थहो तो ...र तेरे वहुतसे युद्ध करके क्याहै ३६ और हे शठ तूक्ष- ...हे और जो तू मदसेमत्तहुआ मेरेसे करको चाहताहै ३७ तोअब अपनेपराक्रमकोदिखा ३८ और तैंनेपुष्करमें स्थितहुये पियादेपीड़ित करेहैं ३९ और तू मेरे स्थित होते ब्राह्मणोंको शिक्षा देताहै ४० हेनराधम तेरे सरीखे दुष्ट क्षत्रियों को मारके ब्राह्मणोंके बैरी और दुष्ट क्षत्रियोंको मैं शिक्षादेनेवालाहूं ४१ और मुनियों के शापसे तू तो पहलेही मरगयाहै ४२ परंतु अब तेरेको मृत्युके अर्थ निवेदन कर ब्राह्मणोंकी रक्षा मैं करूंगा ऐसे कहताहुआ श्रीकृष्ण युद्धमें आग्नेय अस्त्रको छोड़ताभया ४३ तब हंस भी बारुणास्त्रकरके आ- ग्नेयास्त्रको शांतकरताभया पीछे फिर श्रीकृष्ण हंसके अर्थ बायव्य अस्त्र को छोड़ताभया ४४ तब हंसराजा माहेन्द्र अस्त्रकरके वायव्य अस्त्र को काटताभया पीछेश्रीकृष्ण माहेश्वर अस्त्रकोछोड़ताभया ४५ तब हंसराजा रौद्र अस्त्र करके माहेश्वरअस्त्र को काटता भया पीछे गांधर्व राक्षस पैशाच ४६ ब्रह्मास्त्र इन्होंको श्रीकृष्ण छोड़ता भया ४७ तब हंस भी कौबेर आसुर याम्य इन अस्त्रोंसे श्रीकृष्ण के चारों अस्त्रों को काटताभया ४८ पीछे क्रोधसे मूर्च्छित हुआ श्रीकृष्ण सब अस्त्रों को नाशनेवाला ब्रह्मशिर अस्त्रको हंसके अर्थ छोड़नेलगा ४९ तब हंस भी ब्रह्मशिर अस्त्रकरके ब्रह्म शिर अस्त्र को निवारण करताभया ५० पीछेश्रीकृष्ण यमुना के जलमें स्नान कर और जिस करके दैत्यों को देवतेमार राज्यको प्राप्तभये ५१ तिस वैष्णव अस्त्र को शर में नियुक्त कर हंसको मारने के अर्थ छोड़ताभया ५२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसडिम्भकोपाख्यानेश्रीकृष्णस्य वैष्णवास्त्रत्यागेऽष्टादशाधिकत्रिशततोऽध्यायः ३१८ ॥

तीनसौउन्नीसका अध्याय ॥

वैशम्पायन कहनेलगे कि महारौद्ररूप वैष्णवास्त्र को देखभय

भीत हुआ हंसराज निश्चेष्टकी तरह होके २
भागा सो जहां श्रीकृष्ण कालीयनाग को मथतेभ
तक ढूंघे गंभीर रूप ह्रद में हंस पड़ताभया ३ जब हं
कूदा तब पड़तेहुये पर्वतों के समान शब्द होनेलगा ४ तबै
कूदके श्रीकृष्ण भी जगत् को आश्चर्य दिखाने की तरह ५ यमुन।
में हंसके ऊपर पड़ताभया और पैरों से प्रहार करताभया ६ तब
कितनेक ऐसे कहते हैं कि श्रीकृष्ण के पैरके प्रहार से हंस राजा
उसीवक्त मरगया और कितनेक कहते हैं ७ कि यमुना के जलके
द्वारा पातालमें प्राप्तभया तबसर्पोंने खालिया परंतु दीखा नहींयह
सुना ८ पीछे फिर श्रीकृष्ण अपने रथमें प्राप्तहोगये और हेराजन्
जनमेजय जब हंस मारागया तबहीं तेरापितामह युधिष्ठिर९राज
रूप यज्ञको करताभया और जो हंसराजा जीवता होता तोराजरूप
यज्ञमें कौन अन्यराजाओंके प्राप्त होसके था १० क्योंकि सबअस्त्र
विद्याओं को जाननेवाला और महादेवसे लब्ध बरवाला ऐसाहंस
राजा था ११ पीछे श्रीकृष्ण ने कालीयह्रदमें हंसराजाकोमारदिया
यह वार्त्ता क्षणभर में पृथ्वी में फैलतीभई पीछे गन्धर्वोंके पतिदेव-
लोकमें दिनरात गानकरते भये १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वान्तर्गतभविष्यपर्वभाषायांहंसवधेऊनविंशत्यधिक
त्रिशतोऽध्यायः ३१९ ॥

तीनसौबीसका अध्याय ॥

वैशंपायन कहनेलगे कि अतिउग्र और बीर्यशाली ऐसे हंसकी
मृत्युको सुन बलदेवके संगयुद्ध करता डिम्भक बलदेव को त्याग१
यमुनाके समीप में प्राप्तहुआ तब तिसके पृष्ठभाग में बलदेव भी
भागा२ पीछेजहांहंस यमुनामें डूबाथा तहांक्रुद्धहुआडिम्भक यमुना
के ३ भीतरपड़ और बारंबार गोतेमार जलको भ्रमाताहुआ४परंतु
कहींभी हंसको नहीं देखता भया पीछे जलसे निकस श्रीकृष्ण को
देख५ डिम्भक कहनेलगा अरेगोपालकेपुत्र वह मेराभाई हंसकहां

कि हे हंस इसबाणकरके लगा हे राजन् अपने भाईकोयमुनासे पूछ ७ निवारण कर तेरे वह सुन डिम्भक राजा फिर यमुनामें प्रवेशकर बहुत त्रियहै और जो तर्फ कोदेख ८ भ्राताहंसको यादकरताहुआ डिम्भक अपनेपर करनेलगा ९ और कहनेलगा किहेराजेंद्रहंस अकेलेभ्राता को छोड़के कहांगया ऐसे बिलापकर भ्रातृ वत्सल डिम्भक १० मरने के अर्थ यमुनाकेहदमें बारंबार गोतेमार ११ और अपनेहाथ से अपनी जीभको खैंच और बारंबार बिलाप कर पीछे जड़सहित जिह्वा को खैंचके १२ यमुनाके जलमें नरकके अर्थ मरताभया जब हंस और डिम्भक दोनों मरगये १३ तब प्राणियों को आश्चर्य दिखाताहुआ श्रीकृष्ण प्रसन्नहोके १४ श्रीकृष्ण और बलदेवकछुक कालतक गोवर्द्धन पर्वतमें बसतेभये १५॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांडिंभकमरणेविंश त्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३२०॥

तीनसैइक्कीसका अध्याय॥

वैशंपायन कहनेलगे कि कृष्णके दर्शनकरनेमें चितवाले यशोदा और नंदगोप गोवर्द्धनमें आयेहुये १ श्रीकृष्ण और बलदेव को सुन के नौनिघृत दही खीर मयूरकी पांखों के बाजूबंध इन्हों को ग्रहण कर २ गोप गोपियोंके संगहोके गोवर्द्धन पर्वतको गये तहां जाके यशोदा और नंद श्रीकृष्णको देखतेभये ३ तब श्रीकृष्णभी यशोदा और नंदगोप को देखके प्रसन्नहुआ ४ श्रीकृष्ण कहनेलगा हेमातः ब्रजमें कुशलताहै ५ और हेतात गोधनोंमें कुशलताहै और हे जनक दूधवाली गायें दूधदेतीहैं और हे पितः बच्छे अच्छीतरहहैं ६ और हे मात ब्रज के बालक और पत्नी अच्छीतरहहैं ७ और हे पितः बहुतरूपोंवाले तृण अच्छीतरह लगरहेहैं ८ और गाड़ेसब अच्छीतरह चलतेहैं और गोपियां पुत्रोंको जनती भईहैं ९ और क्या नित्यप्रति बहुतसेदूधको गायेंदेतीरहतीहैं १० और नौनिघृत दूधदही ये सब नित्यप्रति उपजते रहतेहैं और हे पितः सबगोधन

आरोग्य को प्राप्तरहताहै ११ नंद कहनेलगा कि हे यदु श्रेष्ठ सब कुशलसे और आरोग्यसे बसतेहैं १२ और हेदेवेश तेरीरक्षा से हम सब कुशलरूप होरहेहैं और रोगोंसे रहित गोधन और बछड़े हो रहेहैं १३ और हेकेशव एकही दुःखहै कि जोतेरेको हमनहीं देखते यहदुःख हमारी बुद्धिको हरवक्त शिथिल करता रहताहै १४ वैशंपायन कहने लगेइस आदि वचनोंसे बिलाप करते हुये नंद और यशोदा को कहने लगे हेमातः हेपितः अपने गृहको गमनकरो १५ जोमनुष्य हेमात तुम्हारे को कीर्त्तन करेंगे वे स्वर्गमें प्राप्तहोवेंगे और जो मनुष्य तुम्हारे को नमस्कार करेंगे वे मेरे अत्यंत प्रिय होवेंगे १६ और सबकाल में मेरे भक्त रहेंगे १७ ऐसे माता और पितासे कहके अति प्रीति से मिल और शरीर में स्पर्शकर प्रसन्न हुये मातापिताको श्रीकृष्ण व्रजकेअर्थ भेजताभया १८ तब यशोदा और नंदगोप अपने स्थानपै प्राप्त भये पीछे यादव और वृष्णियों के संग श्रीकृष्ण भी द्वारकापुरीको गमन की इच्छा करतेभये १९ जो मनुष्य नित्यप्रति इस आख्यान को सुनेगा व पढ़ेगा वह पुत्रवान् धनवान् ऐसा होके अंतमें मोक्ष को प्राप्त होवेगा २० ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांयशोदानंदगोपबलभद्रकृष्णसमागमेएकविंशत्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३२१ ॥

तीनसौबाइसका अध्याय॥

वैशंपायन कहने लगे कि यादवों के संग श्रीकृष्ण पुष्करजी में प्राप्तहो मुनिजनोंको देखतेभयेश्तत्र मत्सरता से रहित इकट्ठे हुये सबऋषि श्रीकृष्णको देखअर्घ आदि से पूज २ कहने लगे कि हे विष्णो हेश्रीकृष्ण हेजनार्दन तेरा वीर्य अति अद्भुतहै ३ जिसकरके हंस और डिंभक और देवोंसे दुसह ४ ऐसा बिचक्रदैत्य येसबमारे गये औरतपको करनेवाले हमोंके सबकार्योंमें कुशलहुआ ५ और हे हरे तेरे स्मरणसे पापसे रहित हमहोजावेंगे और तूहीसबदुःखों को हरताहै ६ और तेरा स्मरण जंतुओंको पुण्यका देनेवाला

है और तुही हमारा निरंतर धाताहै और तुहीतपका बिधाताहै ७ और हेहरे तेरे अर्थ नमस्कारहै औरतुही ओंकारहै और तुही वषट्कारहै औरतुहीयज्ञहै और तुही पितामहहै औरतुही ज्योतिहै और तुही ब्रह्मकी मूर्त्ति है और तुही ब्रह्मा और तुही महादेवहै ८ और सब भूतोंका प्राण और अंतरात्मा भी तूही है और यज्ञ और दानों करके सब भूतों का उपास्यभी तुहीहै ९ और बिश्व को रचनेवाला जो तू है सो तेरे अर्थ नमस्कार है और बिश्वमूर्त्ति जो तुहै तेरे अर्थ नमस्कार है औरहे देव ब्राह्मणों के बैरियोंको सबकालमें मार के इसलोक को रक्षाकर १० पीछे ऐसेही मुनियों के बचन को अंगीकार श्रीकृष्णद्वारका पुरीमें जाके वृष्णियोंके संगबसतेभये ११ हे जनमेजय ऐसे श्रीकृष्णकी चेष्टा तेरे अर्थ कही अब तू क्या सुननेकी इच्छा करेहै १२ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांकृष्णस्यद्वारकाप्रत्यागमने द्वाविंशत्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३२२ ॥

तीनसौतेइसका अध्याय ॥

जनमेजय कहनेलगा हे भगवन् बुद्धिमानोंको किस बिधिकर के भारत सुनना चाहिये और सुननेका क्या फलहै और भारतके सुनने में किन देवताओंका पूजन करना चाहिये १ और पर्व पर्व की समाप्तिमें क्या देनाचाहिये और कैसा भारत को बांचने वाला पंडितहोनाचाहिये ये सबमेरे अर्थकहो २ बैशंपायन कहनेलगेहेराजन् जो भारतको श्रवण करनेकी बिधि और फल सुनने से होताहै जो तूमेरेसे पूछेहै तो श्रवणकर ३ हेराजन् देवते क्रीड़ाकेअर्थ पृथ्वी में प्राप्तभये और इस कार्य को करफिर स्वर्गलोक को प्राप्तभये ४ पृथ्वीतल में उत्पन्नहुये ऋषि और देवताओंका संभव मैं कहताहूं तूसावधान होकेसुन ५ सबरुद्र साध्य बिश्वेदेवा सब आदित्यदोनों अश्विनी कुमार लोकपाल महर्षि ६ गुह्यक गंधर्व नाग बिद्याधर सिद्ध धर्मब्रह्मा कात्यायन मुनि ७ सबपर्वत सबसमुद्र सबनदी सब

अप्सराओं के गण सबग्रह सब संवत्सर सब अयन सबऋतु ८ स्थावर और जंगम जगत् सबदेषते और सबराक्षस ये सब भारत में एकजगह स्थित दीखतेहैं ९ इन्हींके नामकर्मोंके अनुकीर्त्तन से प्रतिष्ठानको सुनके घोरपातक सेभी मनुष्य छूट जाता है १० और यथा क्रमसे इसइतिहास को सुनके और भारतके पारको प्राप्त हो ११ तिनपूर्वोक्तोंके अर्थश्राद्धकरने चाहिये और शक्तिके अनुसार भक्ति करके १२ महादान और नानाप्रकार के रत्न गौ कांशिक-दोहना और गहनोंसे भूषितकरी कन्या १३ और नाना प्रकारकी सवारी और नानाप्रकारके स्थान और पृथ्वी वस्त्र सुवर्ण १४ नाना प्रकार के वाहन और घोड़े और मदवाले हाथी शय्या पालकी रथ १५ और जो कछु घरमें सुंदर श्रेष्ठहो वह सब ब्राह्मणों के अर्थ दानदेना चाहिये और आत्मा स्त्री पुत्र इन्हों का भी दान भारतके अन्तमें करै १६ और सुन्दर मनवाला और प्रसन्न और शुश्रूषा करनेवाला १७ सत्य और कोमलतामें रत और दांत और पवित्र औरशौचसे समन्वित और श्रद्धावाला और क्रोध को जीतनेवाला ऐसा सुननेवाला होनाचाहिये १८ और पवित्र और सील से अन्वित आचारोंवाला और श्वेतबस्त्रों वाला और जितेन्द्रिय और संसकार वाला और सब शास्त्रों को जानने वाला और श्रद्धवाला और निंदाको नहीं करनेवाला १९ और रूप वाला और सुन्दर ऐश्वर्य वाला और दांत सत्यवादी दान और मानको ग्रहणकरनेवाला ऐसावाचक अर्थात् भारतको बांचनेवाला पंडितहोनाचाहिये २० और नतौज्यादै बिलंब करै और न ज्यादै बिस्तारकरै और न जल्दकरैऔर धीर्य्यताकरै और अच्छीतरह रस भावसे समन्वित अक्षरपदोंकाउच्चारणकरै २१औरतरेशठ वर्णोंक-रकेसंयुक्त और आठ स्थानोंकरके संयुक्त ऐसे पदकाउच्चारण करै पीछे स्वस्थ होके और सुन्दर आसनपै स्थितहोके और सावधान होकै२२नारायणंनमस्कृत्य नरंचैवनरोत्तमं देवींसारस्वतीं व्यासंततोजयमुदीरयेत् इसश्लोकका प्रथम उच्चारणकरै २३ सोहेराजन्

ऐसे वाचकसे महाभारतको सुन नियममें स्थित होनेवाला और पवित्र ऐसा श्रोता पूरण फलको प्राप्तहोताहै २४ और प्रथम पारण कोप्राप्त हो ब्राह्मणोंके कामनाओंसे तृप्तकर अग्निष्टोमयज्ञ के फलको मनुष्य प्राप्तहोताहै २५ और अप्सराओं के गणोंसे संकीर्ण बिमानमें बैठके औरदेवताओंसे आनन्दित हुआ स्वर्गलोक में जाके बसताहै २६ और द्वितीयपारण को प्राप्तहो अतिरात्रिफलको प्राप्त होताहै तब सबरत्नमय और दिव्य ऐसे बिमानमें २७ दिव्य माल्य और कपड़ों कोधारणकर और दिव्य गंधसे विभूषित और दिव्य बाजु बंधको धारण करने वाला ऐसा मनुष्य स्थितहो देवलोक में बसता है २८ और तृतीय पारण कोप्राप्तहो द्वादशाह फलको प्राप्तहोता है और देवके समान कांतिवाला होके दश हजार बर्षोंतक स्वर्गलोक में बसताहै २९ और चतुर्थ पारणमें वाजपेय यज्ञका फलहोताहै और पांचमें पारणमें दो वाजपेय यज्ञोंका फलहोता है और उदय हुये सूर्यके समान कांतिवाला और अग्निके समान प्रकाशित ३० ऐसे बिमानमें देवताओं के संग स्थितहोके स्वर्गलोक में गमनकर दशहजार बर्षोंतक स्वर्ग लोकमें आनन्दित रहताहै ३१ और छठे पारणमें पूर्वोक्तसे दुगुना फल होताहै और सातमें पारण में पूर्वोक्तसे त्रिगुणा फलहोता है अर्थात् कैलाशके शिखरके समान आकारवाला और बैडूर्यमय बेदियों वाला ३२ औरमणि और विद्रुमोंसे भूषित ऐसे बिमानमें अप्सराओंके संगस्थित होके ३३ दूसरा सूर्य कीतरह सबलोकोंमें बिचरताहै औरआठमेंपारणमेंराजसूय यज्ञकेफलकोप्राप्तहोताहै ३४ तबचंद्रमाकेकांतिकेसमान कांतिवाला और रमणीयऔर चंद्रमाकी किरणोंकेसमान प्रकाशवाले और मनके समानवेगवाले ऐसेघोड़ोंसे संयुक्त ३५ ऐसे विमानमें चन्द्रमाके मुखसेज्यादे मुखवाली सुन्दर स्त्रियोंसे सेव्यमान औरतिन नारियोंके गहनोंकेशब्दसे ३६ सुख पूर्वक शयन करके जागताहै और नौमेंपारणमें सब यज्ञोंमे उत्तम रूप अश्वमेध यज्ञके फलको प्राप्त होताहै ३७तब सुवर्णके स्तंभोंसे

संयुक्त और वैडूर्यमय वेदियोंसेयुक्त और सुवर्णमय दिव्य झिरोखों करके चारोंतरफ़ से परिवृत ३८ और अप्सराओं के समूह और आकाश चारी गंधर्व इन्होंसे सेवित और परम शोभासे प्रज्वलित ३९ ऐसे बिमान में दिव्यमाल्य और बस्त्रों को धारणकरने बाला औरदिव्य चंदनसे भूषित ऐसा देवकी तरह होके देवताओं के साथ आनन्दित होताहै ४० औरदशमें पारणाको प्राप्तहो और ब्राह्मणों को नमस्कारकर किंकिणि जालसें शब्दित पताका और ध्वजाओं से शोभित ४१ वैडूर्य औरमणिरूप तोरणोंसें संयुक्त ४२और गीतों मेंकुशलरूप गंधर्व और अप्सराओं से शोभित और सुकृतियों के बासके योग्य४३ऐसे विमानमें सूर्यके समान वर्णवाले सोनाकेमुकुट से बिभूषित और दिव्य चंदनसे लेपित अंगोंवाले और दिव्यमाला ओंसे बिभूषित ४४ और दिव्य भोगोंसे समन्वित और देवताओं के प्रसाद से उत्तम शोभा करकेयुक्त ४५ ऐसे मनुष्यहोके वहुत वर्षोंतक स्वर्ग लोकमें बसताहै पीछे गंधर्वों से सहित होके इकोस हजार वर्ष इन्द्रके लोकमें इन्द्रके संग आनंदित होताहै ४६ पीछे सूर्य लोकमें बसके पीछे चन्द्र लोकमें बसके४७पीछेशिवलोकमें बस के विष्णुलोकमें बसताहै हे राजन् इसमें संशय नहींहै ४८ और श्रद्धावाले पुरुषको ऐसे श्रवण करना चाहिये ऐसेमेरे गुरूकहतेभये हैं और जो जो मन करके बांछितहो वह२ लेखकके अर्थ देनाचाहिये ४९ और हस्तीघोड़ा रथयान सवारी बाहन कडूले कुंडल ब्रह्मसूत्र अर्थात् सोनेका जनेऊ ५० और बिचित्र बस्त्र गंध इन्होंकरके लेखक और वाचकको पूजा करनेसे ब्रह्मलोक में मनुष्य वास कर सक्ताहै ५१ और हेराजन् जो भारतके पर्वपर्वमें दानकरने उचितहै वे कहताहूं जाती देशसत्व माहात्म्य धर्मब्रती इन्होंको जानके ५२ और आद्यमेंब्राह्मणों को द्वारा स्वस्तिवाचन कराके भारतको सुननेका आरम्भ करना चाहिये ५३ और जब प्रथमपर्व समाप्तहोवे तब अपनी शक्तिसे ब्राह्मणों को पूजाकरै ५४ और आद्य में बस्त्र गंधसे समान्वित बाचकको सुंदरखोरका भोजन कराके ५५ पीछे

मूलफल पूपखीरसहतघृत इन्होंसे भोजनकरावे५६ औरप्रथम पर्वां-
तर्गत आस्तिक पर्वमें गुड़ और ओदनकादान करै ५७ और माल
पुआऔर मोदक आदिका भोजन करावै और हे राजेंद्र सभापर्वमें
ब्राह्मणोंके अर्थ हविष्य भोजनकरावै ५८ और वनपर्वमें मूल और
फलोंसे ब्राह्मणोंको तृप्तकरै और वनपर्वांतर्गत अरण्य पर्वमें जल
से पूरित कलशोंकादानकरै ५९ और वनकेमूल और फलोंकादान
करै और सुंदर अन्नोंका दान ब्राह्मणोंके अर्थदेवै ६० और विराट
पर्वमें नानाप्रकार के वस्त्रोंका दानकरै और उद्योग पर्वमें सर्वकाम
और गुणों से अन्वित ६१ भोजनसे गंधमाल्यसे अलंकृत ब्राह्मणों
को तृप्तकरै और भीष्मपर्वमें उत्तम सवारी कादान करके६२ पीछे
सब गुणोंसेसंयुक्त और संस्कृत ऐसे अन्नकादानकरै और द्रोणपर्व
मेंउत्तम भोजन ब्राह्मणोंको देवै ६३ और बाणधनुषतल वारइन्हों
का दानकरै और कर्णपर्वमें सार्व कामिक औरसंस्कृत ऐसाभोजन
ब्राह्मणोंके अर्थदेवै ६४ और शाल्य पर्वमें मोदक गुड़ चावल ६५
मालपुआ आदि पदार्थ इन्होंसे ब्राह्मणों को तृप्तकरै और गदा
पर्वमें मूंगका भोजनसे ब्राह्मणोंको तृप्तकरै६६ और ऐषिक पर्व में
घृत और चावल का दान करै और स्त्रीपर्व में रत्नों करके ब्राह्म-
णोंको तृप्तकरै ६७ पीछेअनेक प्रकारके अन्नोंसे ब्राह्मणों को
भोजन करावै और शांतिपर्व में हविष्य रूप अन्न से ब्राह्मणोंको
तृप्त करै ६८ और अश्वमेध पर्वमें सार्वकामिक भोजन देवै और
आश्रम निवास पर्वमें हविष्यभोजनदेवै ६९ और मौशलपर्वमेंसब
प्रकारका गंधमाल्य अनुलेपन इन्होंका दानकरै और महाप्रास्था
निक पर्वमें सर्वकाम और गुणोंसे अन्वित ७० गंध और माल्य
अनुलेपन इन्होंका दानकरै और स्वर्गपर्वमें ब्राह्मणों को हविष्य
भोजन करावै ७१ और हरिवंश पर्वके अंतमें हजार ब्राह्मणों को
भोजनकरावै ७२ और सोनासंयुक्त एकगायका दानकरै और जो
सामर्थ नहींहोतो ५०० ब्राह्मण जिमावै ७३ और पर्व पर्वके
अंतमें सुवर्णसे संयुक्त पुस्तक वाचने वाले ब्राह्मणको देवै ७४

और हरिबंश पर्वमें खीरका भोजन देवै और पारण के अंत में ऐसे
होकरै ७५ जब संपूर्ण भारतको सुनचुकै तब रेशमी बस्त्र में पुस्त-
कको बंधवाके ७६ शुभदेश में स्थापित कराके पीछे श्वेतबस्त्रों को
धारण करनेवाला और फूलोंकी मालाको पहननेवाला और पवित्र
और अच्छे गहनोंसे अलंकृत ऐसा यजमानहोके७७ भारतकीपुस्त-
कोंको धूपदीप नैवेद्य आदिसे पूजनकर ७८ बारहतोले सोना गौ
बस्त्र और नानाप्रकारकी दक्षिणा और बारहतोले सोनाअथवा छः
तोले अथवा तीनतोले सोनाकी दक्षिणा देनीचाहिये ७६ और जो
जो अपनेको प्यारालगता होसोसर्बस्व ब्राह्मणके अर्थ दानदेवै ८०
और सबप्रकारसे भक्तिकरके भारतके बांचनेवाले ब्राह्मणको अपना
ईश्वर जानके प्रसन्नकरै और सबदेवताओंका नर और नारायण
अवतारोंका कीर्तनकरै८१पीछेगंध और मालाआदिसे ब्राह्मणोंको
अलंकृतकर नानाप्रकारकी कामनाओंसे और दानोंसे तृप्तकरै ८२
सोअतिरात्रयज्ञके फलकोपर्वपर्वकेसुननेमें प्राप्तहोसक्ताहैऔरबाचने
वाला पंडितजो भारत के अंतमें भविष्य पर्वहै तिसको बांचनेवाला
स्पष्टतासे सुनावै ८३ और जबसब ब्राह्मण भोजनकर चुकैंतबगहने
और बस्त्रोंसे शोभितहुये बांचनेवालेको अति प्रसन्न करके भोजन
करावै८४जब बांचनेवाला प्रसन्नहोता है तब पूर्णफलकोप्राप्तहोता
है और सब कामनाओंसे८५जबतक भारतबांचै तबतक ब्राह्मणोंका
वरण करावै हेराजन् ८६ यहबिधि तेरे अर्थ मैंनेकहा भारत के
सुननेमें सबकाल श्रद्धासे रहना चाहिये ८७ और भारत को नित्य
प्रतिसुनै और भारतको नित्यप्रति कीर्तनकरै और जिसके स्थानमें
भारतका पुस्तकहै तिसके हाथमें जयहै८८और भारतपरम पवित्र
है और भारतमें नाना प्रकारकी कथाहै और देवते भारतको सेवते
हैं और भारत परमपदहै ८६ और सबशास्त्रोंमें उत्तमभारतहै और
भारतसे मोक्षप्राप्त होताहै यह मैं तेरे अर्थ कहताहूं ६० और महा-
भारतका आख्यान पृथ्वी गौ बाणी ब्राह्मण श्रीकृष्ण इन्होंका की-
र्तन करनेसे उत्तमलोकको पुरुषजाताहै६१और वेद रामायणभारत

तिन्होंकी आदिअंत मध्यमें सबजगह हरिकागान कियाजाताहै ६२ औरजहांदिव्यरूपऔर सनातनरूप बिष्णुकी कथाहोतीहै। वहपरम पदकी इच्छा करनेवाले ब्राह्मणको सुननी चाहिये ६३ यह परम पवित्रहै यह उत्तमधर्महै और सबगुणोंसे संयुक्तहै ऐसा महाभारत भूतीकी इच्छा करनेवाले मनुष्यको श्रवण करना उचितहै ६४ और असाररूप संसारमें बांछित मनोरथका कारण हरिबंशका श्रवणहै ऐसेवेद ब्यासने कहाहै ६५ और हजारअश्वमेध और सैकड़ोंबाजपेय यज्ञ इन्होंकेकरनेसे जोफल प्राप्तहोताहै वह हरिबंशके सुननेसेहै ६६ और अजर अमर सबोंके ध्यानकरनेके योग्य और शून्यआदिअंतसे रहितसगुण औरनिर्गुण औरस्थूल और अत्यंतसूक्ष्म और उपमासे रहितऔर अनुमान करनेके योग्य और ज्ञानगम्य और त्रिभुवनका गुरुऐसेबिष्णुके मैंशरणहुआहूं ६७ ऐसे कहनेकेपीछे— सर्वे स्तरतु-दुर्गाणि सर्वेभद्राणिपश्यतु सर्वेषांबांछिताअर्था भवंत्वस्यपारणात् इसमंत्ररूप श्लोक का उच्चारण करै ६८॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिबंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांसर्वपर्वानुकीर्तनेत्र्यो विंश त्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३२३॥

तीनसौचौबीसका अध्याय॥

जनमेजयकहनेलगा हेब्रह्मन् आकाशमेंस्थितरूप तीन पुरोंका महादेवके सकाशसे जोनाशहुआहै वहसुननेकी इच्छाकरूंहूं १ वैशं-पायन कहनेलगे बाहुशाली और सब प्राणियोंके बिरोधी ऐसेदै-त्योंका नाश जो तू पूछताहै वह बिस्तारसेसुन २ हे राजन् तीन शरोंसे दैत्योंका नाश महादेवने कियाहै ३ सो हे पुरुषव्याघ्रबहुत सी धातुओंसे समीरित और आकाशके मध्यमें मेघ समूहकी तरह उत्थित ४ और उत्तमशोभासे प्रकाशित और सोनाके कोटसे और प्रकाशितरूप मणियोंसे और सबरत्नरूप तोरणोंसेसंयुक्त ५ ऐसा त्रिपुर बिख्यातहुआ६ और पाखोंसे संयुक्त और बलसेदर्पित ऐसे घोड़े तिस पुरको वहनेलगे ६ और वह पुर गंधर्व नगरकी तरह

अनेक प्रकारके स्थानोंसे संयुक्त पुर प्रकाशित होताभया जैसे चैत्ररथ बन ७ और तिस पुरमें सूर्य नाभ और चन्द्र नाभ आदि दानव ८ ब्रह्मासे मोहित हुये देवमार्गको और पितृ मार्गको काटते और रोकतेभये ९ और सबोंके भागोंको दूरकरतेभये और तब पुकारतेहुये देवते १० कि भागके छेदन करनेसे शत्रुगणोंने मारदिये ऐसे कहतेहुये ब्रह्माजीके समीपमेंजाके कहनेलगे ११ कि हे देव तिन दैत्योंके मारनेका उपायकहो १२ तिसको जानके हम भी उपायकरें तब सब देवताओंको शांतकर ब्रह्मा कहनेलगा १३ कि हे देवताओ तुमसुनो यह दैत्य महादेव के बिना अन्यके हाथ से अबध्यहै अर्थात् नहींमरसक्ता १४ तब इस बचनको सुनके सब देवते पृथ्वीमें प्राप्तहो १५ बिंध्याचलमें और मेरुमें और मध्यभाग पृथ्वीतलमें उग्र तपकेयोगको जाननवाले १६ सब देवते ब्रह्मसंहिताको जपतेहुये महादेवजीके समीपमें प्राप्तभये १७ और डाभपै शयन करनेलगे और कालेमृगोंकी चर्मको धारणकरनेलगे१८ पीछे आकाश मार्गको प्राप्तहो मायाकरके आवृत्तहुये सब देवते महादेवके कैलाशपर्वतमें प्राप्तहुये १९ तहां महादेवजी को नमस्कार कर प्रकटबिधानसे कहनेलगे २० कि भस्मसे आच्छादित अग्निविषे अज्ञानसे घृतदिया तैसेतैंरे बिमुष हुयेहमारेविषे बरदानदिया २१ और हे देव ब्रह्मका बचनकरो जो ब्रह्माजीने आकाशचारियों के समीपमें कहाहै २२ तब देवताओं के बचनोंसे और भावि अर्थ के बलसे इन्द्रआदि देवताओंके साथ महादेव सावधानहोके २३ युद्धकरनेको तय्यारहुआ और सब आदित्यभी रथमेंप्राप्तहो प्रकाशित होतेभये २४ और महादेवके संग सबरुद्रभी सन्नद्धहुयेप्रकाशित होनेलगे २५ और दानवोंको मारनेके अर्थ बिश्वेदेवभी सावधानहुये २६ इन सबोंकरके चारोंतर्फ से परिवारित महादेव धनुष बाणको ग्रहणकर त्रिपुरसे युद्ध करनेलगा २७ पीछे भिन्नदेहों वाले दैत्य पुरसे पृथ्वी में पड़नेलगे जैसे टूटेहुये पर्वत २८ और कितनेक देवताओंने २९ तलवारों से काटे और कितनेक चक्र

फरसा बाण इन्हों से काटे तब छिन्न भिन्न मुखोंवाले दैत्य जब सूर्य अस्त होनेलगा ३० तब पृथ्वी में पड़नेलगे पीछेदेवते भी दैत्योंकेबाणोंसे कटेहुये पृथ्वीमें पड़नेलगे ३१ पीछे निशाकालमें जयको प्राप्तहोनेवालेदैत्य पैनेबाणोंसे देवताओंको बींधनेलगे ३२ तब जयको प्राप्तहोके राक्षस कहनेलगे कि जयकी आकांक्षाकरने वाले देवते युद्धमें पीड़ित करदियेहैं ३३ और प्रास तलवार भाला इन्होंसे संयुक्त और शुक्राचार्य्यके हवनसे बोधित ऐसे दैत्य जयको प्राप्तभये ३४ तब सब देवताओंसे परिवृत महादेव रथ में स्थित हो ३५ गर्वितरूप दैत्योंको बाणोंसे जलानेलगा जैसे प्रलयमें अ-ग्नि ३६ पीछे मनके समानबेगवाले घोड़ोंसे चलनेवाला ३७ औरबै-लकीध्वजावालाऔर इन्द्रकाबज्रऔरबद्दलकीतरहगर्जनेवाला ३८ ऐसेरथमें महादेवस्थितहुये तब आकाशमें प्राप्तहुये सिद्ध ऋषितप शिवस्तुति करनेलगे ३९ औरदेवताओं केसमूह और गंधर्व गांधर्व स्वरकरके गानेलगे ४० पीछे तब दैत्यबाणोंकी बर्षा करनेलगे और गदा भाला शूल इन्हों करके उग्र कर्मकरनेलगे ४१ और गदाओं करके गदाको और भालों करके भालाओंको काटने लगे ४२ और अस्त्रोंसे अस्त्रोंको और मायाकरके मायाको और शरशक्ति फरसा वज्र इन्होंको माया से रचीहुई तलवारों से काटतेभये ४३ तवबा-णों की बर्षासे देवते मरने लगे और गंधर्व नगरके आकारमहा-देवका रथ दैत्यों के शस्त्रोंसे शिथिल होनेलगा ४४ और अनेकप्र-कारके शस्त्रोंसे इन्द्र स्थित हुआ और तिसके मध्यमें ऋषियोंका और ब्राह्मणोंका दिव्य शब्द प्रकट होनेलगा ४५ और जब महा देवकारथ पड़नेलगा ४६ तब सब प्राणी हाहाकार करनेलगेऔर पर्वतों के अग्रभाग टूटनेलगे ४७ और चलाय मान वृक्ष हुये और समुद्र क्षोभको प्राप्त हुये और दशोंदिशा प्रकाशित हुई ४८ और वृद्धब्राह्मण परब्रह्मको जपनेलगे और योगहेतु करके आ-त्मा में आत्माको लगाके सबोंके देखते हुये ४९ योगको धारण करने वाला विष्णु वृषके रूपको धारण कर उत्तम रथ को बहने

लगा ५० और सींगों से क्रीड़ा करत हुआ शब्दकरने लगा तब वृषके शब्दसे दुःखित हुये दैत्य युद्धकरनेलगे ५१ पीछे धनुष पैचढ़े बाणमें अग्निका संधानकर और ब्रह्मास्त्रसे युक्तकर तीन प्रकारसे दैत्यके नगरोंके अर्थ छोड़ता भया ५२ तब तिनबाणों से अनेक प्रकारके शस्त्र निकस तीनों पुरोंको काट पृथ्वी में प्राप्त कर ते भये ५३ ऐसे ब्रह्मास्त्र करके दग्ध हुये तीनों नगर पृथ्वी में पड़े जब तीनोंपुर पृथ्वीमें गिरपड़े ५४ तब आनन्द से युक्तहुये देवता ओंसे बिष्णु कहनेलगे ५५ कि शत्रुओंको मारो तब सब देवते शत्रुओंको काटतेभये पीछे ऋषि ब्रह्मा महादेव देवते ये सब मिलके बिष्णुकी स्तुतिकरनेलगे ५६ ॥

इति श्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांत्रिपुरबधेचतुर्विंशत्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३२४ ॥

तीनसौपच्चीसका अध्याय॥

बैशंपायन कहनेलगे जो इस हरिबंशमें वृत्तांत कहे गयेहैं वे सब क्रमसे गिनायेजाते हैं तिन्होंमें प्रथम आदिसर्ग पीछे भूत सर्ग १ पीछेपृथुका आख्यान पीछेमनुओंका कीर्तन पीछे बैवस्वत कुलकी उत्पत्ति पीछे धुंधुमारकी कथा २ पीछेगालवकी उत्पत्ति पीछे इक्ष्वाकुके वंशकाकीर्तन पीछेपितृकल्प पीछेचंद्रमाकी उत्पत्ति पीछे बुधकी उत्पत्ति ३ पीछे अमावसूके बंशकाबर्णन पीछे इन्द्रकी उत्पत्ति ४ पीछे दिवोदासकी प्रतिष्ठा पीछेत्रिशंकु काचरित पीछेय-यातिका चरित्र पीछे पुरुबंशका कीर्तन ५ पीछेकृष्णकी संभूतिका कीर्तन पीछे स्यमंतकमणिका कीर्तन पीछे संक्षेपसे बिष्णुके अव-तार६पीछे तारकामययुद्ध पीछे ब्रह्मलोककाबर्णन पीछे योगनिद्रा का उत्थानपीछे ब्रह्मा बिष्णुकी वाक्य ७ पीछेदेवताओंका अंशोंसे अवतरण पीछेनारदकी वाक्य पीछे स्वप्नगर्भ विधि ८ पीछे आर्या-स्तव पीछे कृष्णकी उत्पत्ति पीछे गोव्रजमें बिष्णुका गमन पीछे शकटका निवर्तन ९ पीछे पूतनाकावध पीछे यमलार्जुनका भंग

पीछे वृकदर्शन पीछे वृन्दावन निवेशन १० पीछे प्रावृत ऋतुका वर्णन पीछे यमुनाह्रद दर्शन पीछे कालियका दमन पीछे धेनुकका वध ११ पीछे प्रलंबका निधन पीछे शरदवर्णन पीछे गिरियज्ञ प्रवृत्तिपीछे गोवर्द्धनधारण १२ पीछेगोविंदका अभिषेक पीछेगोपी संक्रीड़न पीछे अरिष्टासुरका बधपीछे अक्रूरका वृन्दावन में भेजना१३पीछेअंधककीवाक्य पीछेकेशीका निधनपीछे अक्रूरकाआगमनपीछे नागलोकका दर्शन १४ पीछे धनुषकाभंग पीछे कंसकी वाक्य पीछे कुवलयापीड़का बध पीछे चाणूरांध्रवध १५ पीछेकंसका निधन पीछेकंसकी स्त्रियोंका बिलाप पीछे उग्रसेनकाअभिषेक पीछेयादवोंका आश्वासन १६ पीछेगुरु कुलसे रामकृष्णकाआगमनपीछे मथुराका उपरोध पीछे जरासंधका निवर्तन १७ पीछे विकद्रु वाक्य पीछे बलदेवकादर्शन और भाषण पीछे गोमंतक रोहण पीछे जरासंध गमन १८ पीछे गोमंत पर्वतका दाह पीछे करबीर पुरमें गमनकर शृगालका बधपीछे मथुरामें आगमन १९ पीछे यमुनाका खैंचना पीछेमथुरा पक्रम पीछे कालयवन का उपाय से वध २० पीछे द्वारावतीका निर्माण पीछे रुक्मिणीका हरण पीछे रुक्मिणीका बिवाह पीछे रुक्मीका बध २१ पीछे बलदेवाह्निक पीछे बल माहात्म्य पीछेनरकका बध पीछे पारिजात काहरण२२ पीछे निकुंभके बधका आख्यान पीछे प्रभावतीका हरणपीछे बज्रनाभवध २३ पीछे फिर विशेष कर द्वारावती का निर्माण पीछे द्वारकामें प्रवेश पीछे सभामें प्रवेश २४ पीछे नारदकी वाक्य पीछे वृष्णिवंशका अनुकीर्तन पीछे षट्पूर्ववधाख्यान पीछे अंधकका निवर्हण २५ पीछे कृष्णकी समुद्रयात्रा पीछे जल क्रीड़ा कुतूहल पीछे मधुपान प्रवर्तन २६ पीछेशालिक्र गंधर्व सुभद्राहरण पीछे भानुमतीका हरण और कीर्तन २७ पीछे शंबरका बधपीछे धन्योपाख्यानपीछे वासुदेवकी माहात्म्य पीछे बाणयुद्ध २८ पीछेभविष्य पीछे पुष्कराख्यान पीछेबाराहनरसिंह बामन २९ इन्होंकेआख्यान पीछे कृष्णकी कैलाश यात्रापीछे पौंड्रकका बध पीछे हंसडिंभक

का बध ३० पीछे त्रिपुरका संहार हेराजन् सबपापोंको नाशने वाला यहवृत्तांत संग्रह तेरेअर्थकहा ३१ जोसावधान होकेप्रभात और सायंकालमें इसवृत्तांतको सुनेवह लब्धकामना वालाहो के ३२ धनयश आयुष्य भुक्ति मुक्ति फलका देनेवाला ऐसा बैष्णवधाम को प्राप्तहोवैगा ३३ ॥

इतिश्रीमहाभारतेहरिवंशपर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहरिवंशवृत्तांतसंग्रहेपंचविंश त्यधिकत्रिशतोऽध्यायः ३२५ ॥

तीनसौछब्बीसका अध्याय॥

जनमेजय कहनेलगा हे मुनिवर हरिबंश पुराणके श्रवणकरने में क्याफल है और क्या देनायोग्य है यह मेरे अगाड़ी बर्णन कर १ बैशंपायन कहने लगे कि हरिबंश पुराण के सुनने से कायिक और बाचिक और मानसिक पापका नाश होताहै जैसे सूर्योदयमें जाड़ा २ और अठारह पुराणोंके सुननेसे जो फलहै ३ वह इसके सुननेसे फल बैष्णवको होताहै इसमें संशयनहीं और हरिवंशका आधाश्लोक व चौथाई श्लोकको ४ श्रद्धासेयुक्त मनुष्य सुनतेहैं वे बैष्णव पदको प्राप्तहोंगे और हेराजन् कलियुगमें जंबू द्वीपके आश्रयहो हरिबंशको सुननेवाले दुर्लभहैं ५ यहमैं सत्यकहूहूं और पुत्रकी कामनावाली स्त्रियोंकोयह बैष्णवयश निश्चैसुनना योग्यहै ६ और इसको सुनके बाचकके अर्थ बहत्तर तोलासोना देनाचाहिये ७ और सोनाके सींगोंवाली और बच्छासेसंयुक्त और बस्त्रोंसे संयुक्त ऐसी कपिलागौ बाचकके अर्थ देनीचाहिये ८ और गहने और बिशेषकरके कानका आभूषण और सवारी पृथ्वीइन्हों का दान ९ ब्राह्मणकेअर्थ देनाचाहिये पृथ्वीके दानकेसमान दान न हुआ नहोगा १० और जो हरिबंशकोसुनै व सुनावैवह सबपापों से निर्मुक्तहो बैष्णवपदमें बसे ११ और अपने एकादशपितर और आत्मा और पुत्रऔरस्त्री इन्होंकर उद्धार होताहै १२ औरसुननेवालेन को दशांश हवन करना चाहिये हेराजन् मैंनेतेरे अगाड़ी संपूर्णकह

दिया है १३ इसको सुननेसे सब पापोंसे मनुष्य छूटजाता है और अपुत्र पुत्रको प्राप्तहोताहै और निर्धन धनको प्राप्तहोता है १४ और नरमेध औरअश्वमेधसे जोफल प्राप्तहोताहै वह इसके सुननेसे निश्चय फलमिलताहै १५ और ब्रह्महत्या से और गर्भहत्यासे और गोहत्यासे और मदिरा पीनेवाले १६ और गुरूकी शय्यापै स्थितहोनेवाले ये सब इस पुराणको एकबार सुननेसेभी पवित्रहोते हैं अन्यथानहीं १७ यह श्रीकृष्णकी माहात्म्य तेरे अर्थ मैंने कहा सो इसको सुननेसे और पठनेसे संसारमें दुर्लभफल प्राप्तहोताहै १८॥

इतिश्रीमहाभारतेशतसाहस्त्र्यांसंहितायांपर्वावैयासिक्यांबरोनिवासकरविदत्तरचितहरिवंश पर्वांतर्गतभविष्यपर्वभाषायांहरिवंशश्रवणफलकीर्तनेषड्विंशत्यधिकत्रिशतोऽध्यायः३२६॥

इति हरिबंश पर्व समाप्तम्

इस पुस्तक को पंडित रामविहारी, पं० रामसेवक, पं० रामेश्वर, पं० गौरीशंकर, पं० रामलाल, पं० गुरुचरणलाल और पं० श्याममनोहर,जीने शुद्ध किया है॥

मुन्शीनवलकिशोर के छापेख़ाने मुक़ाम लखनऊ में छपी

एप्रिल सन् १८८८ ई० ॥

——*——

महाभारत भाषा वार्तिक

आदिपर्व,सभापर्व,बनपर्व,भीष्मपर्व्व,शान्तिपर्व मयराजधर्म,दानधर्म,आप-द्धर्ममोक्षधर्म इनके सिवाय और जो पर्व शेषरहगईहैं वहभी उल्थाहोकर छप होहैं कुछ कालमें छपकर दृष्टिगोचर होंगी ॥

महाभारतदर्पण ॥

जो काशीनरेशकी आज्ञानुसार गोकुलनाथादि कवीश्वरोंने अनेकप्रकारके ल-लितछन्दोंमें अठारहपर्व और उन्नीसवें हरिवंशको निर्माण किया-यह पुस्तक सर्वपुराण और वेदकासारहै वरन बहुधालोग इसविचित्र मनोहर पुस्तकको पंचमवेद बतातेहैं क्योंकिपुराणान्तर्गत कोई कथा व इतिहास और वेदकथित धर्माचारकी कोईबात इससे छूटनहीं गई मानों यह पुस्तक वेद शास्त्रका पूर्ण रूपहै-अनुमान ६०वर्षके बीते कि कलकत्ते में यह पुस्तक छपीथी उस समय यह पोथी ऐसीअलभ्य होगईथी कि अन्तमें मनुष्य५०)रु०देनेपर राज़ी थे पर नहीं मिलती थी पहले सन् १८७३ ई० में इसछापेखाने में छपी थी और क़ीमत बहुतसस्ती यानें वाजिबी १२) थे जैसा कारखाने का दस्तूर है ॥

अब दूसरीबार डबलपैका बड़ेहरफों में छापी गई जिसको अवलोकन करनेवालोंने बहुतही पसन्दकिया है--और सौदागरीके वास्ते इससेभी क़ीमत में किफायत होसक्ती है पैमाना १२ + ८ छपी हुई सन् १८८४ ई० ॥

इस महाभारतके भाग नीचे लिखे अनुसार अलग२ भी मिलते हैं ॥

पहिले भागमें (१) आदिपर्व्व (२) सभापर्व्व (३) बनपर्व्व सफ़े ५२० जुज़ ३२ वर्क़ ६ क़ीमत ३)

दूसरे भागमें (४) विराटपर्व्व (५) उद्योगपर्व्व (६) भीष्मपर्व्व (७) द्रोणपर्व्व सफ़े ४०२ जुज़ २५ वर्क़ १ क़ीमत ३)

तीसरेभागमें-(८)कर्णपर्व्व (९)शल्यपर्व्व (१०) सौप्तिक पर्व्व (११) ऐषिकवविशोकपर्व्व(१२)स्त्रीपर्व्व(१३) शांतिपर्व्वराजधर्म्म आप-द्धर्म्म-मोक्षधर्म्म सफ़े ४५६ जुज़ २८ वर्क़ ४ क़ीमत ३)

चौथेभागमें-(१४) शान्तिपर्व्व दानधर्म्म व अश्वमेध(१५) आश्रम वासिकपर्व्व(१६) मुशलपर्व्व (१७) महाप्रस्थानपर्व्व (१८) स्वर्गारोहण व हरिवंशपर्व्व सफ़े ५५८ जुज़ ३३ क़ीमत ३)

महाभारत के पर्व अलग२ भी मिलते हैं ॥

१ आदिपर्व १ क़ीमत १)
२ सभापर्व २ क़ीमत ।-)
३ वनपर्व ३ क़ीमत १ ≈)
४ विराटपर्व ४ क़ीमत ।)
५ उद्योगपर्व ५ क़ीमत ॥)
६ भीष्मपर्व ६ क़ीमत ॥≈)
७ द्रोणपर्व ७ क़ीमत ॥≡)
८ कर्णपर्व ८ क़ीमत ॥)
९ शल्य व गदा ९ सौप्तिक १० योषिक व विशोक ११ स्त्रीपर्व १२ क़ीमत ।≈)
१० शांतिपर्व १३ राजधर्म्म, आपद्धर्म, मोक्षधर्म्म, दानधर्म्म सफ़े ५५८ .. .. क़ीमत ३)
११ अश्वमेध १४ आश्रमवासिक १५ मुशलपर्व १६ महाप्रस्थान १७ स्वर्गारोहण १८ क़ीमत ।)
१२ हरिवंशपर्व १९ .. .. .. क़ीमत १≈)

महाभारत सबलसिंह चौहानकृत सम्पूर्ण महाभारतकी कथा दोहे चौपाई आदि छन्दोंमें है यह पुस्तक ऐसी सरल है कि कमपढ़े हुये मनुष्यों को भी भली भांति समझमें आतीहै नीचे लिखेहुये पर्व छपेहुये तय्यारहैं यह पुस्तक बहुतहीकम मिलतीहै बड़ी मुश्किलों से जो पर्व मिलेहैं वह छापेगये ॥

आदिपर्व सफ़े ७४ जुज़ ४ वर्क़ ५ क़ीमत ।)
पैमाना ११ + ७ ½ छपी हुई सन् १८८४ ई०

(२) सभापर्व सफ़े ७८ जुज़ ४ वर्क़ ७ क़ीमत ।)
ऊपर लिखेहुये अलंकारों सहित पैमाना ११ + ७ ½ छपीहुई सन् १८८३ ई० ॥

(३) बनपर्व तथा तथा सफ़े ४२ जुज़ २ वर्क़ ५ क़ीमत -)
(४) विराटपर्व तथा तथा सफ़े ७६ जुज़ ४ वर्क़ ६ क़ीमत ।)
(५) उद्योगपर्व तथा तथा सफ़े १४४ जुज़ ९ क़ीमत ।)॥
(६) भीष्मपर्व, द्रोणपर्व, कर्णपर्व, शल्यपर्व वगदापर्व सफ़े १७६ जुज़ ११ कीमत ॥)
(७) स्त्रीपर्व तथा सफ़े २४ जुज़ १ वर्क़ ४ क़ीमत)॥
(८) स्वर्गारोहण तथा सफ़े २८ जुज़ १ वर्क़ ६ क़ीमत -)

बाक़ी जब पर्व इसके मिलेंगे छापे जावेंगे ॥

पर जिस मनुष्य की दृष्टिमें यह पर्वहों या उनकेप्रयत्न से मिलसकें छापेखानेकोइत्तिलादेवें या कृपाकरके भेजदें कि यहप्रसिद्धपुस्तक परिपूर्णहोजावे ॥